प्रकाशक
हिंदी परिषद् प्रकाशन
हिंदी विभाग
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

प्रथम संस्करण १९५० ई०
तृतीय संशोधित संस्करण १९७१ ई०
२२०० प्रतियाँ।
मूल्य तीस रुपये।

मुद्रक
शक्ति आर्ट प्रिन्टर्स,
दरियाबाद, इलाहाबाद

जिनकी प्रतिभा ने रामकथा को भारत तथा निकटवर्ती
देशो के साहित्य मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
स्थान दिलाया और भारतीय सस्कृति
का एक उज्ज्वल प्रतीक बना
दिया, उन

आदिकवि वाल्मीकि

को रामकथा की दिग्विजय का प्रस्तुत विवरण सश्रद्धा समर्पित है।
त्वदीयं वस्तु वाल्मीके तुभ्यमेव समर्प्यते

परिचय

प्राचीन भारत के समान ही आधुनिक यूरोप ज्ञान सम्बधी खोज के क्षेत्र मे अग्रसर रहा है। यूरोपीय विद्वान ज्ञान तथा विज्ञान के रहस्यो के उद्घाटन मे निरतर यत्नशील रहे है। उनकी इस खोज का क्षेत्र यूरोप तक ही सीमित नही रहा वल्कि समार के समस्त भागो पर उनकी दृष्टि पडी। इस महत्वपूर्ण ग्रथ के लेखक फादर बुल्के को हम इन्ही विद्याव्यसनी यूरोपीय अन्वेपको की श्रेणी मे रख सकते है। भारतीय विचार-धारा समझने के लिए इन्होने सस्कृत तथा हिन्दी भाषा और साहित्य का पूर्ण परिश्रम के साथ अध्ययन किया। प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी मे एम० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त आप ने डी० फिल्० के लिए 'रामकथा का विकास' शीर्षक विषय चुना। प्रस्तुत ग्रथ उनका थीसिस ही है जिस पर उन्हे प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल्० की उपाधि मिली है।

सुयोग्य लेखक ने इस ग्रथ की तैयारी मे कितना परिश्रम किया है यह पुस्तक के अध्ययन से ही समझ मे आ सकता है। रामकथा से सम्बन्ध रखने वाली किसी भी सामग्री को आप ने छोडा नही है। ग्रथ चार भागो मे विभक्त है। प्रथम भाग मे 'प्राचीन रामकथा साहित्य' का विवेचन है। इसके अन्तर्गत पाँच अध्यायो मे वैदिक साहित्य और रामकथा, वाल्मीकिकृत रामायण, महाभारत की रामकथा, बौद्ध रामकथा तथा जैन रामकथा सबधी सामग्री की पूर्ण परीक्षा की गई है। द्वितीय भाग का सबंध रामकथा की उत्पत्ति से है और इसके चार अध्यायो मे दशरथ जातक की समस्या, रामकथा के मूल स्रोत के सम्बन्ध मे विद्वानो के मत, प्रचलित वाल्मीकीय रामायण के मुख्य प्रक्षेपो तथा रामकथा के प्रारभिक विकास पर विचार किया गया है। ग्रंथ के तृतीय भाग मे 'अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहावलोकन' है। इसमे भी चार अध्याय है। पहले और दूसरे अध्याय मे सस्कृत के धार्मिक तथा ललित साहित्य मे पाई जाने वाली रामकथा सम्बन्धी सामग्री की परीक्षा है। तीसरे अध्याय मे आधुनिक भारतीय भाषाओ के रामकथा सम्बन्धी साहित्य का विवेचन है। इसमे हिंदी के अतिरिक्त तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, बगाली, काश्मीरी, सिंहली आदि समस्त भाषाओ के साहित्य की छान-बीन की गई है। चौथे अध्याय मे विदेश मे पाये जाने वाले रामकथा के रूप का सार दिया गया है और इस सम्बन्ध मे तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, हिंदचीन, श्याम, ब्रह्मदेश आदि मे उपलब्ध सामग्री का पूर्ण परिचय एक ही स्थान पर मिल जाता है। अतिम तथा चतुर्थ भाग मे रामकथा सम्बन्धी एक-एक

घटना को लेकर उसका पृथक्-पृथक् विकास दिखलाया गया है। घटनाएँ काड-क्रम से ली गई है अतः यह भाग सात काडो के अनुसार सात अध्यायो मे विभक्त है। उपसहार मे रामकथा की व्यापकता, विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता, प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ, विविध प्रभाव तथा विकास का सिंहावलोकन है।

इस सक्षिप्त परिचय से ही स्पष्ट हो गया होगा कि यह ग्रथ वास्तव मे रामकथा सम्बन्धी समस्त सामग्री का विश्वकोष कहा जा सकता है। सामग्री की पूर्णता के अतिरिक्त विद्वान लेखक ने अन्य विद्वानो के मत की यथास्थान परीक्षा की है तथा कथा के विकास के सम्बन्ध मे अपना तर्कपूर्ण मत भी दिया है। वास्तव मे यह खोजपूर्ण रचना अपने ढग की पहली ही है और अनूठी भी है। हिन्दी क्या किसी भी यूरोपीय अथवा भारतीय भाषा मे इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नही है। अतः हिंदी मे इस लोकप्रिय विषय पर ऐसे वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रस्तुत करने के लिए विद्वान लेखक बधाई के पात्र है। आशा है कि भविष्य मे उनकी लेखनी से इस प्रकार के अन्य खोजपूर्ण ग्रथ प्रकाश मे आवेगे। प्रस्तुत अध्ययन का उत्तरार्ध 'राम-भक्ति का विकास' तो शीघ्र ही प्रकाशित होना चाहिए। प्रयाग विश्वविद्यालय हिंदी परिषद् को इस बहुमूल्य कृति के प्रकाशन पर गर्व होना स्वाभाविक है।

नवम्बर, १९५० धीरेन्द्र वर्मा

निवेदन

(प्रथम संस्करण)

भारत तथा निकटवर्ती देशो के साहित्य मे रामकथा की अद्वितीय व्यापकता एशिया के सांस्कृतिक इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस रामकथा का अध्ययन अनेक दृष्टिकोणो से किया जा सकता है। प्रस्तुत निबन्ध मे इसकी उत्पत्ति तथा कथावस्तु के विकास की रूपरेखा अंकित करने का प्रयत्न किया गया है। इस सीमित परिधि के दृष्टिकोण से प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का निरूपण और विश्लेषण क्रमशः प्रथम तथा तृतीय भाग मे किया गया है।

रामकथा की उत्पत्ति तथा मूलस्रोत के सम्बन्ध मे अनेक भ्रामक धारणाएँ विद्वन्मडली मे प्रचलित हो गई हैं। इनका निरूपण तथा खडन द्वितीय भाग का विषय है। यद्यपि निबन्ध के इस भाग मे किसी सर्वथा नवीन निष्कर्ष का प्रतिपादन नही है, किन्तु विवेच्य विषय से सम्बन्ध रखने वाली समस्त प्रकाशित सामग्री का मौलिक रूप से वर्गीकरण तथा स्पष्टीकरण किया गया है।

चतुर्थ भाग मे वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु के क्रमानुसार रामकथा के विभिन्न कथाग के विकास का अलग-अलग वर्णन किया गया है। इसके लिए प्रथम तथा तृतीय भागो मे निरूपित प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक था। यह साहित्य अत्यन्त विस्तृत है और इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन प्रायः सर्वथा मौलिक है, अतः इसमे त्रुटियाँ अवश्य रह गई होगी। इनके लिए मैं विद्वानों से विनयपूर्वक क्षमाप्रार्थना करता हूँ।

राम-भक्ति के पल्लवित होने के साथ-साथ रामकथा का विकास अपनी अतिम परिणति पर पहुँच गया था। अतः पन्द्रहवी शताब्दी के बाद के सस्कृत साहित्य का पूरा निरूपण अनावश्यक था। इसी प्रकार आधुनिक आर्य-भाषाओ का रामकथा साहित्य प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कम महत्त्व रखता है। वास्तव मे यह साहित्य प्रधानतया रामकथा न होकर राम-भक्ति-साहित्य सिद्ध होता है। इसका (विशेषकर हिन्दी राम-साहित्य का) समुचित अध्ययन राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास के पूरे विश्लेषण के पश्चात् ही सभव हो सकेगा। आशा है कि एकाध वर्ष की खोज के बाद मैं 'रामभक्ति' (उत्पत्ति और विकास) नामक ग्रथ प्रकाशित कर सकूँगा। तत्पश्चात् हिन्दी साहित्य की राम-भक्ति-शाखा की रचनाओ का कथा तथा भक्ति दोनो दृष्टिकोणो से विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन करने का मेरा विचार है।

प्रस्तुत निबन्ध प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फ़िल्० उपाधि के लिए स्वीकृत हुआ है। परीक्षकों के सुझाव के अनुसार मैंने कई स्थलों पर भावों का किंचित् स्पष्टीकरण किया है तथा निरीक्षक के इच्छानुसार 'संहार' नामक अंतिम अध्याय पुनः लिखकर अधिक विस्तार में प्रस्तुत किया है।

निबन्ध के तृतीय भाग की सामग्री एकत्र करने में बहुत से भारतीय तथा विदेशी विद्वानों से सहायता मिली है। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित विद्वान् विशेष रूप से मेरे धन्यवाद के पात्र हैं—डॉ० राजेन्द्र हाजरा (पौराणिक साहित्य), श्री एन्० तिरुमलैसामी आयंगर (तमिल); रेवरेण्ड टी० रायण और पी० सत्यनारायण (तेलुगु), डॉ० पी० के० नारायण पिल्लै (मलयालम); श्री एच० लोबो (कन्नड़), श्री प्रह्लाद प्रधान (उड़िया); श्री एन० के० भागवत (मराठी); श्री मनसुखलाल झवेरी (गुजराती); श्री एफ़० मारटिनी और सुश्री एन० कार्पेलेज (हिंदचीन)।

मैं पूज्य डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ, वे मुझे कई वर्षों से हिन्दी के अध्ययन में प्रोत्साहन देते आ रहे हैं। उनकी प्रेरणा से मैं रामकथा की खोज में प्रवृत्त हुआ था और उनके विद्वत्तापूर्ण परामर्शों के फलस्वरूप निबन्ध को प्रस्तुत रूप दे सका हूँ। अपने निरीक्षक डॉ० माताप्रसाद गुप्त के प्रति अपना आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। उन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय देने में कभी संकोच नहीं किया और निबन्ध के प्रत्येक अंश को यथासंभव परिपूर्ण बनाने के लिए समय-समय पर अनेक सुझाव दिये हैं।

डॉ० रघुवंश का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समस्त पाण्डुलिपि पढ़ने का कष्ट उठाया है। श्री रामसिंह तोमर ने प्रूफ़ देखने का भार स्वतः लेकर इस पुस्तक के शीघ्र प्रकाशित होने में सहयोग दिया है उसके लिए मैं उनका सदा आभारी रहूँगा।

रांची
३०-६-१९५०

कामिल बुल्के

(द्वितीय संस्करण)

'रामकथा' के प्रकाशन के बाद बहुत से पाठको ने पत्र लिखकर मुझे प्रोत्साहन दिया है और प्रश्न पूछ-पूछ कर द्वितीय सस्करण की तैयारी मे मेरा पथप्रदर्शन भी किया है। मै उन सबो के प्रति आभार प्रकट करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझता हूँ।

द्वितीय सस्करण मे निम्नलिखित परिवर्द्धन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आदिकवि **वाल्मीकि** विषयक समस्त सामग्री का निरूपण किया गया है। **रावण** तथा **हनुमान** सम्बन्धी सभी वृत्तान्तो का अनुशीलन करने के पश्चात् दोनो के चरित्र का विकास अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। परशुराम, शवरी, त्रिजटा, मदोदरी, विभीषण, इन्द्रजित्, शत्रुघ्न आदि पात्रो से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का भी सकलन किया गया है। रामकथा साहित्य मे **अहल्या** तथा **सौदास** की पौराणिक कथाओं का रामायणीय आधिकारिक कथावस्तु से सम्बन्ध स्थापित किया गया है, अतः मैंने इन दोनो कथाओ के विकास की रूपरेखा अकित की है। प्रथम संस्करण मे जैन रामकथा का समुचित ध्यान रखा गया था; प्रस्तुत सस्करण मे **पउमचरियं** के कथानक के समस्त महत्वपूर्ण प्रसगो का निरूपण दिया गया है। डॉ० दलमुख मालवणिया ने प्रकाशन के पूर्व ही पउमचरियं की अपनी फाइल और डॉ० वी० एम० कुलकर्णी ने बम्बई विश्व-विद्यालय द्वारा स्वीकृत अपना अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध (दि स्टोरी ऑव राम इन जैन लिटरेचर) मेरे पास भेजा है—इसके लिए मैं इन दोनो विद्वानो का आभारी हूँ। प्रथम सस्करण की अपेक्षा **सेरीराम** तथा **रामकेर्ति** के विभिन्न प्रसगो का अधिक ध्यान रखा गया है। डॉ० एफ० मारटिनी (पैरिस) विशेष रूप से मेरे धन्यवाद के पात्र हैं—उन्होंने रामकेर्ति के अविकल फ्रेंच अनुवाद की अपनी पाण्डुलिपि मुझे निरीक्षणार्थ प्रदान की है।

द्वितीय सस्करण के लिए पर्याप्त मात्रा मे नितान्त **नयी सामग्री** भी मिल गई है। डॉ० वी० राघवन् (मद्रास) ने इस दिशा मे मेरी सब से अधिक सहायता की है—**तत्वसंग्रह रामायण, उदात्तराघव** तथा अनेक अप्राप्य प्राचीन राम-नाटको का परिचय उनके सौजन्य से प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित रचनाओ का प्रथम सस्करण मे परिचय नही दिया गया था—**धर्मखंड, बृहत्कोशलखंड, उल्लाघराघव, राघवोल्लास, गोविन्द रामायण, रामायण मसीही** और **ब्रह्मचक्र**।

वाल्मीकि रामायण से भिन्न विविध कथाओ की व्यापकता दिखलाने के उद्देश्य से क्षेत्रीय भाषाओ की सामग्री का अधिक ध्यान रखा गया है। विहार राष्ट्रभाषा-परिषद् की अनुवाद-समिति के सदस्य की हैसियत से मैंने **रंगनाथ रामायण** तथा **कंबरामायण**

के हिन्दी अनुवाद का प्रस्ताव रखा था। फलस्वरूप इन दोनों रचनाओं का हिन्दी रूपान्तर तैयार हो सका। मैं डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' का आभारी हूँ जिन्होंने प्रकाशन के पूर्व ही कवरामायण के हिन्दी अनुवाद के निरीक्षण की मुझे अनुमति दी है। 'विद्यासग्रहणेषु त्यक्तलज्ज' सुखी भवेत्' के अनुसार मैंने क्षेत्रीय भाषाओं की सामग्री के सकलन की धुन मे बहुत से भद्र लोगो को कष्ट दिया है, इसके लिए मैं यहाँ पर विनयपूर्वक क्षमा-याचना करता हूँ। मैं विशेष रूप से निम्नलिखित विद्वानो के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ—श्री एन० वी० राजगोपालन्, एम० ए० (तमिल), रेव०पी० डेटियेन एम० जे० (बगाली), श्री कृष्णचरण साहु, एम० ए० (उडिया), श्री गोपालकृष्ण भट्ट, एम० ए० (कन्नड), सुश्री दुर्गा भागवत (मराठी), डॉ० शैलजा करदीकर (मराठी)।

श्री राघवप्रसाद पाण्डेय, एम० ए० ने पाण्डुलिपि पढी है तथा भाषा को सुबोध-गम्य बनाने मे अमूल्य योगदान दिया है। श्री उमाशकर शुक्ल (हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय) के प्रति पूरा आभार प्रकट करने मे अपने को असमर्थ पा रहा हूँ। आपने मेरे लिए प्रूफ़ देखने की सुविधा का प्रबंध किया और स्वय भी प्रूफ-रीडिंग का कार्य विशेष सतर्कता से सपन्न किया। प्रस्तुत द्वितीय सस्करण के परिष्कृत रूप का समस्त श्रेय उन्ही को है। पुस्तक की सुन्दर रूप-सज्जा के लिए श्री बाल कृष्ण दूबे, एम० ए०, श्री सतीश चद्र तथा टेकनिकल प्रेस के अन्य सभी कर्मचारी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

कामिल बुल्के

रांची
१२-६-१९६२

(तृतीय संस्करण)

पिछले वर्षों मे रामकथा विषयक कई शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हुए है। पत्रिकाओ मे भी इसके विषय मे लेख छपते रहे हैं। इस सामग्री के अनुशीलन के फलस्वरूप 'रामकथा' के प्रस्तुत सस्करण मे यत्र-तत्र परिवर्धन किया गया है। मैंने सहायक पुस्तको की सूची मे तथा पादटिप्पणियो मे उपयोगी सामग्री का निर्देश किया है।

मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा पीएच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत डॉ० टी० एस० कृष्णमूर्ति के शोध-प्रबन्ध—**ए डीटेल्ड स्टडी ऑव दि उत्तरकाण्ड ऑव दि वाल्मीकि रामायण**—मे मुझे कन्नड कवि कुवेपु के दो उल्लेखनीय प्रसग (दे० अनु० ६१० अ तथा ७४१) मिले। डॉ० मूर्ति ने अपना अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध मुझे उपलब्ध किया इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

रांची

१-६-७१

कामिल बुल्के

संकेत-चिन्ह

रा०	वाल्मीकि रामायण (दाक्षिणात्य पाठ)
गौ० रा०	वाल्मीकि रामायण का गौडीय पाठ
दा० रा०	वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ
प० रा०	वाल्मीकि रामायण का पश्चिमोत्तरीय पाठ
अ० रा०	अध्यात्म रामायण
आ० रा०	आनन्द रामायण
इ० ए०	इण्डियन एन्टीक्वेरी
इ० हि० क्वा०	इण्डियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली
इन० रि० ए०	इन्साइक्लोपीडिया ऑव रिलिजन एण्ड एथिक्स
ज० अ० ऑ० सो०	जर्नल अमेरिकन ऑरियेंटल सोसाइटी
ज० ए० सो० ब०	जर्नल एशिआटिक सोसाइटी ऑव बंगाल
ज० ऑ० इ०	जर्नल ऑव दि ऑरियेंटल इंस्टिट्यूट (बडौदा)
ज० ऑ० रि०	जर्नल ऑव ऑरियेंटल रिसर्च (मद्रास)
ज० रा० ए० सो०	जर्नल रायल एशिआटिक सोसाइटी
ना० प्र० प०	नागरी प्रचारिणी पत्रिका
बी० ई० एफ० ई० ओ०	बुलटिन एकोल फ्रांसेस एक्सट्रेम ओरियन
हि० इ० लि०	हिस्ट्री ऑव इण्डियन लिटरेचर (विंटरनित्स)
हि० सं० लि०	हिस्ट्री ऑव संस्कृत लिटरेचर (कीथ)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२१	५	निवर्चोत्तर	निर्वचनोत्तर
२३६	१३	रामकथा विपक रचनाएँ	रामकथा विषयक अन्य रचनाएँ
३६२	२०	घोरमुन्पातत भयम्	घोरमुत्पातज भयम्
	२६	इक्षमाना	ईक्षमाणा
४७१	१५	महावरि चरित	महावीरचरित
६०६	१७	भयिष्यति	भविष्यति
६५६	१३	प्लवने	ल्लवने

विषय-सूची

पृष्ठ

परिचय (डॉ० धीरेन्द्र वर्मा) ... ५

निवेदन ... ७

सकेत-चिह्न .. १२

शुद्धि-पत्र . १२

प्रथम भाग

प्राचीन रामकथा-साहित्य

अध्याय

१. वैदिक साहित्य और रामकथा

क—वैदिक साहित्य मे रामकथा के पात्र: ... १

इक्ष्वाकु, दशरथ, राम, अश्वपति; जनक

ख—वैदिक साहित्य मे सीता: ... ६

सीता सावित्री, सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी

ग—वैदिक साहित्य मे रामकथा का अभाव ... २३

२. वाल्मीकिकृत रामायण

क—वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ ... २५

ख—रामायण का रचनाकाल ... ३०

ग—आदिकवि वाल्मीकि ... ३२

३. महाभारत की रामकथा

क—महाभारत और रामायण ... ४६

ख—महाभारत मे रामकथा ... ४८

(१) अरण्यपर्व, (२) द्रोणपर्व, (३) शातिपर्व;

(४) महाभारत मे रामावतार

ग—रामोपाख्यान ५१

(१) आधार, (२) रामोपाख्यान और रामायण की तुलना

४. बौद्ध रामकथा ... ५६

(१) दशरथ जातक, (२) अनामकं जातकम्,

() दशरथ कथानम्, (४) अन्य बौद्ध साहित्य

५. जैन रामकथा
क—जैन रामकथा की सामान्य विशेषताएँ ... ६३
ख—विमल सूरि की परम्परा ... ६५
ग—गुणभद्र की परम्परा .. ७५

द्वितीय भाग

रामकथा की उत्पत्ति

६. दशरथ-जातक की समस्या
क—पाली जातकट्ठवण्णना की प्रामाणिकता .. ७६
ख—दशरथ जातक की गाथाएँ ... ८०
ग—दशरथ जातक की रामकथा .. ८५
(अ) डॉ० वेबर का मत,
(आ) दशरथ जातक की अंतरंग समीक्षा
घ—पाली तिपिटक और रामायण ... ९३
ङ—रामायण पर बौद्ध प्रभाव ? ... ९९
७. रामकथा का मूलस्रोत
क—ए० वेबर का मत ... १०२
ख—एच० याकोबी का मत .. १०३
ग—दिनेशचंद्र सेन का मत ... १०८
घ—उपसंहार ... १११
परिशिष्ट (१) रामकथा का ऐतिहासिक आधार ... ११३
(२) वानर और राक्षस ... ११७
(३) रामकथा का भूगोल ... १२१
८. प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के मुख्य प्रक्षेप
क—उत्तरकाण्ड ... १२२
ख—बालकाण्ड ... १२४
ग—अवतारवाद ... १२५
(१) सामग्री का निरूपण, (२) तर्क
९. रामकथा का प्रारंभिक विकास
क—रामकथा-संबंधी गाथाएँ और आख्यान-काव्य ... १३३
ख—आदिरामायण की उत्पत्ति .. १३४

ग—आदिरामायण का विकास ... १३८
(१) प्रक्षेप, (२) बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड,
(३) अवतारवाद
घ—रामकथा का व्यापक प्रसार ... १४६

तृतीय भाग

अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का सिंहावलोकन

१०. संस्कृत धार्मिक साहित्य में रामकथा
क—रामभक्ति की उत्पत्ति और विकास ... १४७
ख—पौराणिक साहित्य ... १५३
(१) हरिवंश, (२) महापुराण, (३) उपपुराण
ग—साम्प्रदायिक रामायण ... १६५
(१) योगवासिष्ठ, (२) अध्यात्म रामायण,
(३) अद्भुत रामायण, (४) आनन्द रामायण,
(५) तत्त्वसंग्रह रामायण, (६) कालनिर्णय रामायण,
(७) गौण रामायण
घ—अन्य धार्मिक साहित्य ... १७५
(१) जैमिनी भारत, (२) सत्योपाख्यान, (३) धर्मखंड,
(३) हनुमत्संहिता, (४) बृहत्कोशल खंड
परिशिष्ट । 'हिन्दुत्व' में उल्लिखित रामायण ... १८०
११ संस्कृत ललित साहित्य में रामकथा
क—महाकाव्य ... १८५
(१) रघुवंश, (२) रावणवह (सेतुबंध),
(३) भट्टिकाव्य, (४) जानकीहरण;
(५) अभिनन्दकृत रामचरित, (६) रामायण-
मंजरी तथा दशावतारचरित, (७) उदारराघव,
(८) उत्तरकालीन महाकाव्य: जानकी परिणय,
रामलिंगामृत, राघवोल्लास, रामरहस्य ।
ख—नाटक ... १९६
(१) प्रतिमा नाटक तथा अभिषेक नाटक,
(२) महावीरचरित तथा उत्तररामचरित;
(३) उदात्तराघव, (४) कुन्दमाला,

(५) अनर्घराघव, (६) बालरामायण,
(७) महानाटक, (८) आश्चर्यचूडामणि,
(९) अप्राप्य प्राचीन नाटक, (१०) प्रसन्नराघव;
(११) उल्लाघराघव, (१२) गौण नाटक,
(१३) उत्तरकालीन नाटक
ग—स्फुट काव्य .. २१०
(१) श्लेष-काव्य, (२) नीतिकाव्य, (३) विलोमकाव्य,
(२) चित्रकाव्य, (५) शृंगारिक खडकाव्य,
(६) अन्य स्फुट काव्य
घ—कथासाहित्य ... २१३
१२ आधुनिक भारतीय भाषाओ में रामकथा
क—द्राविड भाषाओ के साहित्य मे रामकथा ... २१७
(१) तमिल, (२) तेलुगु, (३) मलयालम,
(४) कन्नड, (५) आदिवासी कथाएँ
ख—आर्य भाषाओ के साहित्य मे रामकथा २२८
(१) सिंहली, (२) काश्मीरी, (३) असमिया,
(४) बगाली, (५) उडिया, (६) हिन्दी, 243
(७) मराठी, (८) गुजराती, (९) उर्दू-फारसी
१३ विदेश में रामकथा
क—तिब्बत; खोतान ... २५६
ख—हिंदेशिया .. २५९
ग—हिंदचीन, स्याम, बर्मा .. २६७
घ—पाश्चात्य वृत्तान्त .. २७६

चतुर्थ भाग

रामकथा का विकास

१४. बालकाण्ड
१—वाल्मीकि रामायण का बालकाण्ड ... २८०
(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनो पाठो मे
विभिन्नता, बलकाण्ड की उत्पत्ति
२—बालकाण्ड का विकास ... २८४
(क) दशरथ की वंशावली, (ख) दशरथ के विवाह,

(ग) दशरथ की संतति; (घ) अहल्योद्धार, (ङ) परशुराम,

(च) नवीन सामग्री

३—अवतारवाद ... ३१३

(क) दशरथ-यज्ञ, (ख) अवतारवाद का विकास;

(ग) अवतार के कारण: वर, शाप

४—राम का बालचरित ... ३३२

(क) जन्म, (ख) बाललीला, (ग) प्रारंभिक कृत्य

५—राम-सीता-विवाह .. ३४३

(क) धनुर्भंग; (ख) सीतास्वयंवर, (ग) विवाहोत्सव;

(घ) पूर्वानुराग, (ङ) एकपत्नीव्रत

६—सीता की जन्मकथा .. ३५८

(क) जनकात्मजा, (ख) भूमिजा, (ग) सीता और लंका—रावणात्मजा, पद्मजा, रक्तजा; अग्निजा, फल अथवा वृक्ष से उत्पन्न, (घ) दशरथात्मजा

१५ अयोध्याकाण्ड

१—वाल्मीकीय अयोध्याकाण्ड ... ३७६

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनो पाठो मे विभिन्नता, प्रक्षेप

२—अयोध्याकाण्ड का विकास ... ३८०

(क) राम की चित्रकूट-यात्रा, (ख) अंधमुनि-पुत्र-वध,

(ग) भरत की चित्रकूट-यात्रा, (घ) राम का चित्रकूट मे निवास

३—राम का निर्वासन ... ३६१

(क) वनवास के विविध कारण, (ख) कैकेयी की वरप्राप्ति;

(ग) कैकेयी का दोषनिवारण, (घ) मंथरा

१६. अरण्यकाण्ड

१—वाल्मीकीय अरण्यकाण्ड . ४०१

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनो पाठो मे विभिन्नता, प्रक्षेप

२—अरण्यकाण्ड का विकास ... ४०४

(क) दण्डकारण्य-प्रवेश; (ख) लक्ष्मण का संयम, (ग) शूर्पणखा; (घ) जटायु, (ङ) सीता की खोज, (च) शबरी

३—सीताहरण .. ४३३

(क) कारण, (ख) मूलरूप, (ग) कनकमृग, (घ) माया सीता

१७ किष्किंधाकाण्ड

१—वाल्मीकीय किष्किंधाकाण्ड ... ४५८

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनों पाठों में विभिन्नता, प्रक्षेप

२—किष्किंधाकाण्ड का विकास .. ४५६

(क) हनुमान्-सुग्रीव से भेंट, (ख) वालि-सुग्रीव-चरित, (ग) राम की बल-परीक्षा, (घ) वालिवध, (ङ) वर्षा-कालीन साधना, (च) वानरों का प्रेषण

१८ सुन्दरकाण्ड

१—वाल्मीकीय सुन्दरकाण्ड ... ४८६

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनों पाठों में विभिन्नता, प्रक्षेप

२—सुन्दरकाण्ड का विकास ... ४९३

(क) हनुमान् का लंका-प्रवेश, (ख) सीता-रावण-संवाद; (ग) त्रिजटा-चरित, (घ) सीता-हनुमान्-संवाद; (ङ) लंका-दहन, (च) हनुमान का प्रत्यावर्तन

१९ युद्धकाण्ड

१—वाल्मीकीय युद्धकाण्ड ... ५२१

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण: तीनों पाठों में विभिन्नता, प्रक्षेप

२—युद्धकाण्ड का विकास ... ५३०

(क) सेना का अभियान; (ख) विभीषण की शरणागति, (ग) सेतुवध, (घ) लंका का अवरोध, (ङ) नागपाश, (च) हनुमान् की हिमालय-यात्रा, (छ) कुंभकर्ण-वध, (ज) इंद्रजित्-चरित्र, (झ) रावण-वध, (ञ) अग्निपरीक्षा, (ट) वापसी यात्रा, (ठ) नवीन सामग्री

२०. उत्तरकाण्ड

१—वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड ... ६००

(क) कथावस्तु, (ख) विश्लेषण, तीनों पाठों में विभिन्नता,

उत्तरकाण्ड की उत्पत्ति

२—उत्तरकाण्ड का विकास ६०३

(क) शत्रुघ्नचरित, (ख) सौदास की कथा; (ग) शम्बूक-वध, (घ) राम का अश्वमेध, (ङ) नवीन सामग्रीः राम की यात्राएँ और विहार; सीता द्वारा रावण-वध

३—रावण-चरित ... ६२५

(क) वंशावली, (ख) तपस्या, (ग) विवाह, (घ) विवाहोत्तर-चरित : विजययात्राएँ, शिवभक्ति, शाप, पराजय

४—हनुमच्चरित ... ६४६

(क) जन्मकथा और बालचरित : वायुपुत्र, आंजनेय; रुद्रावतार; राम के पुत्र; विष्णु के अंशावतार, (ख) चरित्र-चित्रण का विकास : पराक्रम, बुद्धिमत्ता, चिरजीवत्व; ब्रह्मचर्य, रामभक्ति; देवत्व

५—सीता-त्याग ... ६८६

(क) सीता-त्याग का अभाव, (ख) सीता-त्याग के विविध कारणः लोकापवाद, धोबी, रावण का चित्र; परोक्ष कारण, (ग) अवास्तविक सीता-त्याग

६—कुश-लव-चरित ... ७०३

(क) कुशलवचरित का विकास; (ख) कुश-लव की जन्म-कथा : यमल कुश-लव, वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि; (घ) कुश-लव-युद्ध

७—रामकथा का निर्वहण ... ७११

(क) प्राचीन सुखांत रामकथा; (ख) दुःखान्त रामकथा, (ग) अर्वाचीन सुखांत रामकथा

२१. उपसंहार

१—रामकथा की व्यापकता ... ७२०

२—विभिन्न राम-कथाओं की मौलिक एकता ... ७२४

३—प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ ... ७२८

४—विविध प्रभाव ... ७३३

(क) जैनी रामकथाओं का प्रभाव; (ख) शैव प्रभाव; (ग) शाक्त प्रभाव; (घ) कृष्णकथा का प्रभाव

५—विकास का सिंहावलोकन ... ७३७

परिशिष्ट

क—रामकथा-साहित्य की तालिका ... ७४३
ख—सहायक ग्रंथ .. ७५२
ग—अनुक्रमणिका ... ७७०

प्रथम भाग

प्राचीन रामकथा-साहित्य

अध्याय १

वैदिक साहित्य और रामकथा

क—वैदिक साहित्य में रामकथा के पात्र

१. वैदिक साहित्य मे रामकथा के अनेक पात्रो के नाम मिलते है। इसके आधार पर वैदिक काल मे राम-कथा के प्रचलन का प्रश्न उठाया जा सकता है। इस समस्या का समाधान करने से पहले उन स्थलो का विश्लेपण करना उचित होगा जहाँ उपर्युक्त पात्रो का उल्लेख मिलता है। सीता-सम्बन्धी सामग्री सब से महत्वपूर्ण होने के कारण दूसरे परिच्छेद मे अलग सकलित है। प्रस्तुत पहले परिच्छेद मे रामायण के अन्य पात्रो के उल्लेख दिये जाते हैं।[१]

इक्ष्वाकु

२. ऋग्वेद मे इक्ष्वाकु का एक बार उल्लेख हुआ है (१०, ६०, ४), लेकिन उस सूक्त मे इक्ष्वाकु का नाममात्र दिया गया है, इससे इतना ही प्रतीत होता है कि वह कोई राजा थे। यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान् मराय्येधते (यस्य इक्ष्वाकुः उप व्रते रेवान् मरायी एधते)—जिसकी सेवा मे धनवान् और प्रतापवान् इक्ष्वाकु की वृद्धि होती है।

अथर्ववेद मे भी एक बार इक्ष्वाकु का नाम आया है। उस मंत्र में ज्वर से छुटकारा पाने के लिए कुष्ठ पौधे से प्रार्थना की जाती है। इसके अतर्गत यह वाक्य मिलता है : त्वा वेद पूर्वं इक्ष्वाको यं (१६, ३६, ६)—तू, जिसको इक्ष्वाकु पूर्वकाल मे जानता था। इससे इतना ही पता चलता है कि इस मत्र के रचनाकाल मे इक्ष्वाकु एक प्राचीन वीर माने जाते थे।

---

१. यहाँ रामायण की आधिकारिक कथावस्तु से सीधा संबंध रखने वाले पात्रों का अभिप्राय है। विश्वामित्र, अगस्त्य, वसिष्ठ और भरद्वाज ऋग्वेद के ऋषि हैं। बालकांड और उत्तरकांड की विविध अंतरकथाओ के पात्रो के नाम वैदिक साहित्य मे मिलते हैं। उनका यहाँ पर उल्लेख नही होगा।

दशरथ

३. वैदिक साहित्य मे दशरथ का एक बार उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद (१, १२६, ४) की एक दानस्तुति मे अन्य राजाओ के साथ-साथ दशरथ की भी प्रशसा को गई है : चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणा· सहस्रस्याग्रे श्रेणि नयन्ति—अर्थात् 'दशरथ के चालीस भूरे रंग के घोडे, एक हजार घोडो के दल का नेतृत्व ले रहे हैं।'

इक्ष्वाकु से सम्बन्ध रखने वाले स्थलो के समान उपर्युक्त उद्धरण से भी राजा दशरथ का कोई विशेष परिचय नही मिलता।

मध्यएशिया की एक आर्यजाति का नाम मितन्नि था। इनके एक राजा दशरथ का नाम सुरक्षित है, जिसका शासनकाल १४०० ई० पूर्व के लगभग माना जाता है।[१]

राम

४. राम दाशरथि, परशुराम और बलराम, इन तीनो का उल्लेख पहले पहल रामायण और महाभारत मे हुआ है। फिर भी वैदिक साहित्य से अनेक राम नामक व्यक्तियो का परिचय मिलता है। इनका उल्लेख करने से पहले तैत्तिरीय आरण्यक (५, ८, १३) के एक स्थल का उद्धरण देना है। यहाँ 'राम' शब्द का प्रयोग 'पुत्र' के अर्थ मे हुआ है। प्रवर्ग्य (सोमयज्ञ के पहले की एक विधि विशेष) का अनुष्ठान करने वाले के नियम यो दिए जाते हैं :

संवत्सरं न मांसमश्नीयात्। न रामामुपेयात्। न मृन्मयेन पिबेत्।
नास्य राम उच्छिष्टं पिबेत्।
तेज एव तत्संश्यति ॥

'वह एक वर्ष तक मांस का भक्षण न करे। स्त्री[२] का भोग न करे। मिट्टी के वर्त्तन से पानी न पिए। उसका पुत्र उच्छिष्ट न पिए। इसी तरह उसका (यजमान का) तेज पुंजीभूत होता जाता है'। सायण के अनुसार 'राम' का अर्थ यहाँ 'रमणीय पुत्र' होता है, जो सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है। कालक्रम के अनुसार वैदिक साहित्य के विभिन्न रामो का परिचय नीचे दिया जाता है।

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : दि बंगाली रामायण्स, पृ० ३९।

२. 'रामा' का अर्थ यहाँ पत्नी हो सकता है। अन्य स्थलो पर वह वेश्या के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है (तैत्ति० संहिता ५, ६, ८, ३; काठक० स० २२, ७, जैमिनि उपनिषद् ब्राह्मण ४, ११, ५, १०)। अथर्ववेद (१, २, ३, १), तैत्ति० ब्रा० (२, ४, ४, १) और कौशिक सूत्र (२६, २२-२४) मे 'रामा' एक पौधे का नाम भी है, जिस पर सायण की टीका यो है—'भृङ्गराजाख्या ओषधि.'।

(१) राम, ऋग्वेद का एक राजा

ऋग्वेद मे 'राम' का एक बार उल्लेख हुआ है। उसका नाम अन्य प्रतापी यजमानो के साथ प्रयुक्त होने के कारण प्रतीत होता है कि वह कोई राजा हुआ होगा :

प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु ।
ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥ (१०, ६३, १४)

'मैंने दुःशीम पृथवान, वैन और राम (असुर[1]) इन यजमानो के लिए यह (सूक्त) गाया है। इन्होने पांच सौ (घोडे अथवा रथ) जुतवाए (जिससे) उनका मुझपर अनुग्रह चारो ओर फैल गया है।'

(२) राम मार्गवेय, श्यापर्णीय ब्राह्मण

ऐतरेय ब्राह्मण (७, २७—३४) मे राम मार्गवेय और जनमेजय के विषय मे एक कथा मिलती है, जिससे इतना ही परिचय मिलता है कि श्यापर्ण कुल के ब्राह्मण और जनमेजय के समकालीन थे। उनका रामायण की कथा से कोई सम्बन्ध नितात असभव है। सायण, 'मार्गवेय' की व्युत्पत्ति 'मृगु' से मानते हैं, वेबर इसका संबध मार्गव (मनु की एक जाति १०, १६) से जोडते हैं।

(३) राम औपतस्विनि

शतपथ ब्राह्मण मे 'असुग्रह' नामक यज्ञ के तत्व पर विचार-विनिमय होने पर अन्य आचार्यो के मतो के साथ-साथ राम औपतस्विनि के मत का भी उल्लेख होता है (४, ६, १, ७)। इससे यह पता चलता है कि वह उपतस्विन् के पुत्र और याज्ञवल्क्य के समकालीन थे ।

(४) राम क्रातुजातेय

जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण के दो स्थलो पर राम क्रातुजातेय वैयाघ्रपद्य का उल्लेख मिलता है। दोनो बार उसका नाम दार्शनिक शिक्षा देने वालो की एक नामावली मे दिया जाता है। दोनो स्थलो पर वह शग शाट्यायनि आत्रेय का शिष्य है और शख बाभ्रव्य का शिक्षक (जै० उप० ब्रा० ३, ७, ३, २; ४, ६, १, १)।

इन विभिन्न रामो से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राचीनतम वैदिक काल से ही राजाओ और ब्राह्मणो दोनो मे 'राम' नाम प्रचलित था।

---

१. 'असुर' यहाँ पर राम की उपाधि प्रतीत होता है। यह लुड्विग का मत है। अन्य विद्वानो के अनुसार असुर का अलग उल्लेख होना चाहिए।

अश्वपति

५. शतपथ ब्राह्मण (१०, ६, १, २) और छान्दोग्य उपनिषद् (५, ११, ४) में अश्वपति कैकेय का उल्लेख मिलता है। दोनों ग्रन्थों में प्रसंग एक ही है—कई ब्राह्मण आत्मा और ब्रह्म के विषय में दार्शनिक विवेचन कर रहे हैं। 'वैश्वानर' के तत्त्व के संबंध में वे किसी निश्चय पर नहीं पहुँचते। उनमें से एक यह प्रस्ताव करते हैं, 'अश्वपति कैकेय वैश्वानर तत्त्वतः जानते हैं। उनके यहाँ चलें।' प्रस्ताव स्वीकृत होने पर वे वहाँ जाते हैं और अश्वपति उनको वैश्वानर के तत्त्व के सम्बन्ध में शिक्षा देते हैं।

अश्वपति केकय देश के राजा थे और इतने विद्वान् थे कि वह ब्राह्मणों को भी सिखलाते थे, इतना ही परिचय उपर्युक्त स्थलों से मिलता है। इस प्रसंग में रामायण के अन्य पात्रों से किसी सम्बन्ध की सूचना नहीं होती। फिर भी शतपथ ब्राह्मण और छान्दोग्य उपनिषद् में जनक वैदेह का भी उल्लेख हुआ है, इससे सम्भवतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वे दोनों समकालीन विद्वान् राजा थे।

जनक

६. कालक्रम के अनुसार जनक का पहला परिचय हमें कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्राप्त होता है। सावित्राग्नि-यज्ञ का फल बतलाने के लिए एक आख्यान दिया जाता है जिसमें जनक वैदेह देवताओं से मिलते हैं। देवता उपर्युक्त यज्ञ के अनेक परिणामों का वर्णन करते हैं (३, १०, ६)।

इससे विस्तृत परिचय नहीं मिलता, लेकिन आगे चलकर शतपथ ब्राह्मण में 'जनक वैदेह' का चार भिन्न प्रसंगों में उल्लेख हुआ है। जनक के साथ-साथ याज्ञवल्क्य का भी चारों स्थलों पर उल्लेख हुआ है। जनक इतने विद्वान् तत्त्वज्ञ के रूप में सामने आते हैं कि वे याज्ञवल्क्य को भी शिक्षा देते हैं और स्वयं ब्राह्मण बन जाते हैं। बाद के बृहदारण्यक उपनिषद् में स्थिति बदल गई है। उसमें याज्ञवल्क्य ही जनक को शिक्षा देते हैं।

शतपथ ब्राह्मण का पहला प्रसंग (११, ३, १, २-४) जैमिनि ब्राह्मण में भी मिलता है (१, १९)। इसमें जनक वैदेह अग्निहोत्र के विषय में याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते हैं और उचित उत्तर पाने पर उनको १०० गायों का पुरस्कार देते हैं।

दूसरे प्रसंग में (श० ब्रा० ११, ४, ३, २०) मित्रविंद यज्ञ का गोतम राहूगण के पास से जनक वैदेह के पास जाने का उल्लेख है। जनक अनेक वेदांग-विद् ब्राह्मणों में यह यज्ञ न पाकर उसे याज्ञवल्क्य में पाते हैं और उनको एक सहस्र गायों का पुरस्कार देते हैं।

तीसरे प्रसंग मे जनक के ब्राह्मण बनने की कथा है (श० ब्रा० ११, ६, २, १-१०) । जनक तीन ब्राह्मणो से मिलते हैं, जिनमे से एक याज्ञवल्क्य हैं । जनक तीनों से अग्निहोत्र की विधि पूछते हैं । तीनो मे याज्ञवल्क्य का उत्तर सब से अच्छा होने पर भी पूरा नही है, इसलिए जनक विस्तारपूर्वक अग्निहोत्र रहस्य समझाते है । अत मे याज्ञवल्क्य से एक वर पाकर जनक याज्ञवल्क्य मे यथारुचि प्रश्न पूछने का अधिकार चाहते हैं । 'इस समय से लेकर' यही परिच्छेद का अंतिम वाक्य है, 'जनक ब्राह्मण ही थे ।'

चौथा प्रसंग शतपथ ब्राह्मण को छोडकर अन्यत्र भी पाया जाता है (श० ब्रा० ११, ६, ३, १ आदि; जैमिनि ब्राह्मण २, ७६-७७; बृहदारण्यक उप० ३, १, १-२) । जनक याजको को बहुत दक्षिणा देकर एक यज्ञ का प्रबंध करते हैं और सब से विद्वान् ब्राह्मण को १००० गायो का पुरस्कार देने की प्रतिज्ञा करते है । इसपर शाल्क्य याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते हैं और अधिक जिज्ञासा प्रकट करने के कारण मर जाते हैं । यह वृत्तान्त किंचित् परिवर्तन सहित जैमिनि ब्राह्मण और बृहदारण्यक उपनिषद् मे भी मिलता है ।

इस प्रसग को छोडकर बृहदारण्यक मे जनक और याज्ञवल्क्य के सबंध मे एक और विस्तृत वृत्तान्त मिलता है (बृ० आ० उप० ४, १, १ से ४, ४,७ तक) जिसमे याज्ञवल्क्य ब्रह्म, परलोक और आत्माके विषय मे जनक को शिक्षा देते हैं । अंत मे जनक याज्ञवल्क्य के प्रति अपने आपको तथा अपनी प्रजा को समर्पित करते है ।

बृहदारण्यक उपनिषद् मे दो अन्य स्थलों पर भी जनक का उल्लेख हुआ है । एक स्थल मे जनक गायत्री के विषय मे बुडिल आश्वतराश्वि से कुछ कहते हैं (५, १४, ८) । दूसरा स्थल अधिक महत्वपूर्ण है । इसमे गार्ग्य बालाकि और अजातशत्रु का वार्त्तालाप दिया जाता है जो बृहदारण्यक उपनिषद् (२, १, १) के अतिरिक्त किंचित् परिवर्त्तित रूप मे कौषीतकी उपनिषद् (४, १) और शांखायन आरण्यक (६, १) मे भी मिलता है । गार्ग्य बालाकि अजातशत्रु[1] काशी के राजा के यहाँ जाकर कहते हैं—'क्या मैं ब्रह्म के विषय मे कथन करू ?' अजातशत्रु के उत्तर मे जनक से ईर्ष्या आभासित है : 'इस वचन के लिए मैं एक सहस्र दूंगा क्योकि सब के सब "जनक (वैदेह) जनक (पिता, संरक्षक) ही हैं" कह कर उनके यहाँ दौड कर जाते हैं ।'

उपर्युक्त उद्धरणो से स्पष्ट है कि रामायण के अन्य पात्रो की अपेक्षा जनक वैदेह का वैदिक साहित्य मे कही अधिक उल्लेख होता है । अर्वाचीन रामकथा-साहित्य

---

१. यह अजातशत्रु (काशी के राजा) मगध के राजा (४६१ ई० पू०)से भिन्न है ।

में वैदिक जनक तथा रामायण के जनक अभिन्न माने जाते हैं। वास्तव मे दोनो की अभिन्नता सिद्ध करने के लिए प्रमाण नही दिए जा सकते हैं। स्वीकार करना पडता है कि वैदिक साहित्य मे कही भी इसका उल्लेख नही मिलता कि सीता जनक की पुत्री हैं अथवा राम उनके जामाता हैं।

प्रस्तुत प्रश्न एक अन्य कारण से और जटिल बन जाता है। वाल्मीकि रामायण मे दो भिन्न राजाओ का उल्लेख है जिनका नाम जनक है—एक मिथि का पुत्र है तथा दूसरा ह्रस्वरोमा का पुत्र और सीता का पिता (रा० १, ७१)। जातकों मे भी अनेक जनक नामक राजाओ का उल्लेख है (दे० महाजनक जातक ५३९)। महाभारत मे सीता जनक की पुत्री तो मानी जाती है लेकिन जहाँ-जहाँ जनक का स्वतन्त्र उल्लेख होता है, वहाँ रामकथा से किसी सम्बन्ध का निर्देश मात्र भी नही मिलता। इसके अतिरिक्त इसमे कई भिन्न जनक नामक राजाओ का उल्लेख होता है—जनक, इन्द्रद्युम्न का पुत्र (३, १३३, ४), जनक देवराति (१२, २६८, ४); जनक धर्मध्वज (१२, ३०८, ४); जनक कराल (१२, २९१, ७)।

वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा पुराणो मे 'जनक' मिथिला देश के राजवश का नाम भी माना जाता है :

जनकाना कुले जाता राघवानां कुले वधू (गौ० रा० ५, ३६, २०)
सीतापि सत्कुले जाता जनकानां महात्मनाम् (रा० ७, ४५, ४)
इदं धनुर्वर ब्रह्मञ्जनकैरभिपूजितम् (रा० १, ६७, ८)
तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनको मिथिपुत्रकः।
प्रथमो जनको राजा जनकादप्युदावसुः ॥ (रा० १, ७१, ४)
भो भो राजन् जनकानां वरिष्ठ (महाभारत ३, १३३, १६)
वंशो जनकाना (वायु पुराण ८९, २२)

अतः निष्कर्ष यह है कि मिथिला का कोई भी राजा जनक के नाम से पुकारा जा सकता है। वैदिक साहित्य के जनक तथा सीता के पिता, इन दोनो की अभिन्नता असमव तो नही है, लेकिन उपर्युक्त विश्लेषण पर ध्यान देनें से यह अत्यन्त सदिग्ध प्रतीत होती है। विष्णु पुराण (४, ५, ३०), वायुपुराण (८९, १५), ब्रह्माण्ड पुराण (३, ६४, १५), पद्म पुराण (पाताल खण्ड ५७, ५) आदि मे सीता के पिता, जनक, का नाम सीरध्वज भी बताया जाता है। जनक के भ्राता कुशध्वज का उल्लेख वाल्मीकि रामायण मे किया गया है (दे० १, ७१, १३)।

ख—वैदिक साहित्य में सीता

७. वैदिक साहित्य से दो भिन्न सीताओ की सूचना मिलती है। पहली सीता

कृषि की एक अधिष्ठात्री देवी है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद से लेकर सारे वैदिक साहित्य मे अनेक स्थलो पर होता रहा है। दूसरी सीता का परिचय हमे तैत्तिरीय ब्राह्मण से प्राप्त होता है, जहाँ सीता सावित्री, सूर्य की पुत्री, और सोम राजा का उपाख्यान किंचित् विस्तारपूर्वक दिया गया है। इस सीता का उल्लेख इस स्थान को छोडकर वैदिक साहित्य मे और कही नही मिलता। पहले इस उपाख्यान का थोड़ा विश्लेषण किया जायगा और वाद मे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री पर विचार किया जायगा।

इसके अतिरिक्त 'सीता' शब्द (अर्थात् लांगलपद्धति) का वैदिक साहित्य मे अनेक बार उल्लेख हुआ है। लेकिन उन स्थलो पर सीता में व्यक्तित्व का आरोप नही किया गया है। अतः प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न होने के कारण उन स्थलो का विश्लेषण अनावश्यक है।[१]

सीता सावित्री

८. सीता सावित्री की कथा हमे कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण मे मिलती है (२, ३, १०)। किसी काम्य प्रयोग का प्रभाव दिखलाने के उद्देश्य से सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान उद्धृत किया गया है। इसमे सीता और श्रद्धा दोनो प्रजापति की पुत्रियाँ मानी जाती है। सायण के अनुसार प्रजापति यहाँ पर सविता अर्थात् सूर्य का पर्यायवाची शब्द माना जाना चाहिए। प्रस्तुत उपाख्यान मे सीता सोम राजा के प्रेम को स्थागर नामक अंगराग के द्वारा प्राप्त करती है, यद्यपि सोम पहले सीता को वहुत श्रद्धा से प्रेम करते थे। इस कथा का मूल रूप ऋग्वेद के

---

१. कल्पसूत्रो को छोडकर निम्नलिखित स्थलो पर 'सीता' शब्द का उल्लेख हुआ है :

(१) ऋग्वेद १, १४०, ४।

(२) अथर्ववेद ११, ३, १२।

(३) यजुर्वेदीय संहिताओ मे अश्वमेध के वर्णन के अंतर्गत जहाँ क्षेत्र तैयार करने के लिए हल द्वारा सीताएँ खीची जाती हैं।

काठक सं० २०, ३।

कपिष्ठल सं० ३२, ५-६।

मैत्रायणी सं० ३, २, ४-५।

तैत्तिरीय सं० ५, २, ५, ५,।

(४) शतपथ ब्राह्मण १३, ८, २, ६-७ (श्राद्ध के वर्णन मे सीताएँ खीचने का उल्लेख)।

सूर्यासूक्त मे विद्यमान है (१०, ८५), जहाँसूर्या, सूर्य की पुत्री, का सोम के साथ विवाह वर्णित है। इस सूक्त मे सोम से स्पष्टतया चद्रमा का अभिप्राय है और अनेक विद्वानो के अनुसार सूर्या से उषा निर्दिष्ट है। ऋग्वेद की इस कथा का उल्लेख दोनो ऋग्वेदीय ब्राह्मणो मे मिलता है—'प्रजापति ने सोम राजा को अपनी पुत्री सूर्या सावित्री को दे दिया' (ऐत० ब्रा० ४, ७, कौ० ब्रा० १८, १)। इसके अतिरिक्त तैत्तिरीय संहिता (२, ३, ५) तथा काठक (११, ३) और मैत्रायणी (२, २, ७) संहिताओ के समानान्तर स्थलो पर प्रजापति की तैंतीस पुत्रियों का सोम राजा के साथ विवाह वर्णित है। इनमे से केवल रोहिणी का नाम दिया गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे इस कथा का परिवर्तित रूप इस प्रकार है :

'प्रजापति ने सोम राजा को और इसके पश्चात् तीनो वेदो की सृष्टि की थी। सोम राजा ने इन (वेदो) को हस्तगत किया।

सीता सावित्री सोम राजा को (पतिस्वरूप) चाहती थी (लेकिन) वह (सोम राजा) श्रद्धा (सीता की बहन) को चाहते थे।

सीता ने अपने पिता प्रजापति के पास जाकर कहा, आपको नमस्कार, मैं आपके पास आई हूँ और आपकी शरण लेती हूँ॥ १॥ मैं सोम राजा की (पतिस्वरूप) कामना करती हूँ। वह श्रद्धा को चाहते हैं।

प्रजापति ने उसके लिए स्थागर (नामक सुगंधित द्रव्य को पीसकर) अलंकार (अर्थात् अंगराग) तैयार किया। पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मन्त्र पढ़कर,) दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पंचहोतृ, उत्तर की ओर षड्होतृ, और ऊपरी की ओर से सप्तहोतृ पढ़कर तथा संभार और (देव) पत्नीमन्त्रो से) उस अंगराग को अभिमन्त्रित करके उन्होंने उससे सीता का) मुख अलंकृत किया॥ २॥

(इसके अनन्तर) वह सोम राजा के पास गई। सीता को देखकर (और प्रेम के वशीभूत होकर) उन्होंने कहा, मेरे पास आइए। सीता ने कहा, मेरे साथ भोग कीजिए (लेकिन पहले प्रतिज्ञा कीजिए कि) सदा मेरे ही साथ भोग करेंगे और जो (वस्तु) आपके हाथ मे है (उसको मुझे दे दीजिए)। सोम राजा ने सीता को तीनो वेद दे दिए। इसी तरह स्त्रियाँ भोग के कारण (पुरुषो को) पराजित करती हैं।

यदि कोई (पुरुष) चाहता हो कि मैं प्रेमिका का प्रिय बन जाऊँ॥ ३॥ अथवा यदि कोई (स्त्री) चाहती हो कि जिससे मैं प्रेम करती हूँ वह मुझसे प्रेम करे (तो वह निम्नलिखित प्रयोग करे)—इस स्थागर अलंकार को तैयार करके पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मन्त्र) पढ़कर, दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पंचहोतृ,

उत्तर की ओर षड्ढोतृ, ऊपर को ओर से सप्तहोतृ पढकर, तथा संभार और, (देव) पत्नी मन्त्रो से (इस अगराग को अभिमन्त्रित करके और इससे) अपने मुख को अलकृत करके वह प्रियतम के पास जाए। वह अवश्य प्रेम करने लगेगा ॥ ४ ॥'

९ सीता सावित्री की इस कथा का वाल्मीकि रामायण से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही प्रतीत होता है। फिर भी सम्भव है कि अनसूया के अगराग का वृत्तात इस उपाख्यान से प्रभावित हुआ हो। अत्रि की पत्नी सीता को माला, वस्त्र और आभूषणो के अतिरिक्त एक अनश्वर (असविलष्ट) अगराग भी प्रदान करती है, जिससे सीता का शरीर दिव्य सौन्दर्य को प्राप्त होता है। (रा० २, ११८) :

इदं दिव्यं वरं माल्य वस्त्रमाभरणानि च।
अंगरागं च वैदेहि महार्हमनुलेपनम् ॥१८॥
मया दत्तमिदं सीते तव गात्राणि शोभयेत्।
अनुरूपमसंक्लिष्टं नित्यमेव भविष्यति ॥१९॥
अंगरागेण दिव्येन लिप्तांगी जनकात्मजे।
शोभयिष्यसि भर्तारं यथा श्रीर्विष्णुमव्ययम् ॥२०॥

अध्यात्म रामायण मे भी इस अगराग का उल्लेख है (२, ९) :

अंगरागं च सीतायै ददौ दिव्यं शुभानना।
न त्यक्ष्यतेऽङ्गरागेण शोभा त्वां कमलानने ॥८९॥

रामचरितमानस मे इसका उल्लेख नही है। गोस्वामी तुलसीदास सभवतः तैत्तिरीय ब्राह्मण के उपाख्यान से परिचित थे और उसे सीता की मर्यादा के विरुद्ध समझकर उन्होंने इस अगराग के विषय मे जानबूझकर कुछ नही कहा। वे लिखते है :

दिव्य वसन भूषण पहिराए।
जे नित नूतन अमल सुहाए ॥ (३, ४, २,)

१०. सीता सावित्री की कथा के एक दूसरे प्रभाव की कल्पना की जा सकती है।[१] महाभारत और वाल्मीकि रामायण के समय से लेकर परशुराम और बलराम की कथाएँ भी प्रचलित थी। इसीलिए रामायण के नायक को निर्दिष्ट करने के लिए किसी विशेषण कीआवश्यकता का अनुभव होने लगा था। पहले महाभारत तथा रामायण मे 'राम दाशरथि' का प्रयोग हुआ। आगे चलकर रामभद्र के अतिरिक्त

---

१ दे० ए० वेबर : आन दि रामायण (पृ० २०, २१)।
एम० मोनियेर विलियम्स : इडियन विजडम (पृ० ३६०) और ब्राह्मनिज्म (पृ० ११० टिप्पणी)।
एच० याकोबी : डस रामायण, (पृ० १३७)।

'रामचन्द्र' नाम चल पडा। भवभूति के महावीरचरित ('चन्दमुह रामचन्द' दे० अंक २, २०) तथा उत्तररामचरित (७, १८) मे इस नाम का सबसे पहला उल्लेख मिलता है। बाद मे पद्मपुराण आदि रचनाओ मे रामचन्द्र सब से लोकप्रिय नाम बन गया है। राम दाशरथि को चन्द्र की यह उपाधि क्यो मिली है? इस प्रश्न को सुलझाने के लिए डाक्टर वेबर ने सीता सावित्री के वृत्तान्त का सहारा लिया है। यद्यपि डाक्टर वेबर की कल्पना को निर्मूल सिद्ध करने का मैं साहस नही कर सकता लेकिन 'रामचन्द्र' नाम का कारण वाल्मीकि रामायण मे ढूंढना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है।

राम के सौन्दर्य तथा लोकप्रियता की अभिव्यंजना के लिए वाल्मीकि ने बहुत से स्थलो पर चन्द्रमा से राम की तुलना की है:

(राम) चंद्रमिवोदितम् (२, ४४, २२)
(राममुख) पूर्णचन्द्रमिवोदितम् (६, ३३, ३२)
(रामः) पूर्णचन्द्राननः (२, १, ४४)
(रामः) सोमवत्प्रियदर्शनः (१, १, १८)
(रामः) लोककान्तः शशी यथा (५, ३४, २८)
(रामवदन) उदितपूर्णचन्द्रकान्तम् (६, ११४, १५)

ये उद्धरण सुगमता से बढाये जा सकते हैं। अत. रामचन्द्र नाम का आधार वाल्मीकि रामायण को छोड कर किसी अन्य प्राचीन उपाख्यान मे ढूंढना अनावश्यक है। आदि-काव्य मे राम के सौन्दर्य, लोकप्रियता और सौम्यता की अभिव्यंजना के लिए, उनके कोमल और शान्त स्वभाव के अकन के लिए जो बार-बार चन्द्र की तुलना मिलती है वह 'रामचन्द्र' नाम की उत्पत्ति समझने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त 'रामचन्द्र' का वाल्मीकि रामायण मे एक ही बार प्रयोग हुआ है। राम-रावण-युद्ध के वर्णन मे कहा गया है, कि 'राम-चन्द्र को रावण-राहु ने ग्रस्त देखकर' देवता, वानर आदि घबराते हैं:

रामचन्द्रमसं दृष्ट्वा ग्रस्तं रावणराहुणा (६, १०२, ३२)

यहाँ पर 'रामचन्द्र' तथा 'रावणराहु' स्पष्टतया रूपक मात्र हैं। आगे चलकर 'रामचन्द्र' रूपक न रहकर, साधारण व्यक्तिवाचक सज्ञा के रूप मे चल पडा और आज तक चला आ रहा है।

यदि प्रारम्भ से ही राम के लिए 'रामचन्द्र' नाम का प्रयोग किया जाता तो हम सम्भवत. और आगे बढ सकते और यह कह सकते कि राम के शील और शान्त स्वभाव का कारण यह है कि मूलत वह चन्द्रमा के देवता ही थे। तब सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान राम-कथा का बीज माना जा सकता तथा रामायण

का अंगराग और तैत्तिरीय ब्राह्मण का स्थागर अलकार मूलतः खेत की सीता अर्थात् लागलपद्धति मे पडी हुई ओस होता जिसमें चन्द्रमा प्रतिबिंबित होता है। इसी तरह सीता सावित्र और सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, दोनो का उद्गम एक होता। लेकिन प्रोफेसर वेवर, जिन्होने यह कल्पना की है, स्वय स्वीकार करते हैं कि यह कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि राम सोमवशी न होकर सूर्यवशी ही हैं, अतः उनका सोम से कोई प्राचीन सम्बन्ध बहुत सम्भव नही है।

सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी

११. प्रारभिक वैदिक काल मे जिन देवताओ का उल्लेख है वे अधिकतर प्रकृति के देवता हैं अर्थात् 'प्रभावशाली प्राकृतिक दृश्यो और शक्तियो मे देवताओ की कल्पना कर ली गई है।'[१] कार्यक्षेत्र के अनुसार वे तीन वर्गों मे विभक्त हैं—द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी के देवता। ऋग्वेद मे इन्द्र (२५० सूक्त), अग्नि (२०० सूक्त) और सोम अर्थात् सोम-लता के मादक रस का देवता (१०० से अधिक सूक्त) सर्वप्रधान हैं। फिर भी सूर्य, द्यौ, वायु, उषा, वरुण, मित्र, पर्जन्य आदि बहुत से देवताओ का उल्लेख हुआ है। इन सबका कार्यक्षेत्र विस्तृत था और आर्यों का कुशल-क्षेम इन्ही पर निर्भर माना जाता था।

इनके अतिरिक्त एक दूसरे प्रकार के देवताओ की कल्पना की गई जिनका कार्य-क्षेत्र बहुत सीमित माना जाता था। इनमे क्षेत्रपति, वास्तोष्पति (घर का देवता), सीता और उर्वरा (उपजाऊ भूमि) प्रधान है। धार्मिक चेतना मे इनका स्थान गौण था, क्योकि आर्यों का कुशल-क्षेम पहले प्रकार के देवताओ पर निर्भर माना जाता था। सीता, क्षेत्रपति आदि कृषि-संबंधी देवताओ के कम महत्व का एक और कारण यह है कि प्रारम्भ मे कृषि की अपेक्षा पशु-पालन प्रधान रहा होगा। ऋग्वेद के सबसे प्राचीन अंश मे (२—७ मडल) केवल एक ही सूक्त मे कृषि सम्बन्धी शब्दो का प्रयोग है और यह सूक्त दसवें मंडल के समय का माना जाता है।[२] वह ऋग्वेद का

---

१. दे० वेनीप्रसाद : हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, पृ० ४१। जिस समय भारत-यूरोपीय जातियाँ साथ थी, इन देवताओ का रूप कौन सा था, इस पर यहाँ पर विचार नही किया जा सकता है। इतना ही निर्विवाद है कि वैदिक साहित्य मे ये देवता अधिकतर प्रकृति के देवता हैं।

२ दे० ऋग्वेद ४, ५७। इसमे 'समा' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो १० वे मडल को छोड़कर ऋग्वेद मे और कही नही मिलता। दे० ज० अ० ऑ० सो० १७, पृ०

एकमात्र स्थल है जहाँ सीता में व्यक्तित्व और देवत्व का आरोप किया गया है। इस सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, और सीता सावित्री का अन्तर यह है कि एक तो इसमें देवत्व का आरोप है और दूसरे इसका उल्लेख आगे चल कर बराबर होता रहा। यद्यपि वैदिक साहित्य में उससे सम्बन्ध रखने वाली केवल दो भिन्न प्रार्थनाएं मिलती हैं, फिर भी इसका प्रयोग कृषि-सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त अग्निचयन और पितृमेध के अवसरों पर भी होने लगा। गृह्यसूत्रों में हमें सीता के प्रति दो नई प्रार्थनाएं मिलती हैं। ऋग्वेद से लेकर गृह्यसूत्रों तक इन सब स्थलों का यहाँ पर उल्लेख होगा और महत्त्व के अनुसार इन पर न्यूनाधिक विचार किया जायगा।

(१) ऋग्वेद का सूक्त (४, ५७)

१२. ऋग्वेद के सूक्त प्रायः एक ही देवता से सम्बन्ध रखते हैं। लेकिन जिस सूक्त में सीता का उल्लेख है उसमें कृषि सम्बन्धी अनेक देवताओं से प्रार्थना की जाती है। बहुत सम्भव है कि ये प्रार्थनाएँ अनेक स्वतन्त्र मंत्रों के अवशेष हैं जो एक ही सूक्त में संकलित हो जाने पर बाद में चौथे मंडल के अन्तर्गत रखे गए। पहले तीन छंदों का देवता क्षेत्रपति है, चौथे छंद का देवता शुन (एक देवता जिसके द्वारा कार्य सुखपूर्वक सम्पन्न होता है और जो अगले छन्द के शुन से भिन्न है—शुनाख्यो वाय्विंद्रयोरन्यतमः सुखकृद्देवः—सायण); पांचवे और आठवें छंदों के देवता शुनासीर हैं (शौनक के अनुसार ये इन्द्र और वायु हैं लेकिन यास्क के अनुसार वायु और आदित्य समझना चाहिये); छठे और सातवें छंद की देवी सीता है। सारे सूक्त का भावानुवाद इस प्रकार है:—

हितकारी क्षेत्रपति के साथ हम गौ और अश्व के लिए पुष्टकारक (अन्न) प्राप्त करते हैं। वह (क्षेत्रपति) हम लोगों को उक्त प्रकार का (अन्न) प्रदान करे ॥१॥

हे क्षेत्रपति! जिस तरह से धेनु दूध देती है, इसी तरह तू प्रचुर मात्रा में हम लोगों को मधुस्रावी और घृतसदृश जल प्रदान कर। ऋत के स्वामी (उक्त प्रकार के दान से) हम पर कृपा करें ॥२॥

खेत की ओषधियां हमारे लिए मधुयुक्त हों। द्युलोक, जल-समूह और अंतरिक्ष हम लोगों के लिए मधुयुक्त हों। क्षेत्रपति हमारे लिए मधुयुक्त हों। हम लोग (शत्रुओं से) भयरहित होकर (क्षेत्रपति की) शरण लेते रहें ॥३॥

८५—६। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि सीता आदि देवताओं की कल्पना पुरानी नहीं है इससे केवल यह सिद्ध होता है कि उनका स्थान अपेक्षाकृत गौण था। आगे दिखलाया जायगा कि उनका और विशेष करके सीता का महत्त्व धीरे-धीरे उत्तरोत्तर बढ़ता रहा।

(बैल आदि) वाहन सुख से रहे। कृषक सुख से रहे। हल सुख से जोते। (हल की) रस्सियाँ सुख से बाँधी जाएँ। अकुशको सुख से ऊपर उठा-उठा कर चलाओ ॥४॥

हे शुनासीर ! तुम दोनो हमारी इस स्तुति से प्रसन्न हो जाओ। जो जल तुम दोनो ने आकाश मे बनाया है, उससे इसको (भूमि को) सीचते रहो ॥५॥

हे सौभाग्यवती ! (कृपा दृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो। हे सीते ! तेरी हम वन्दना करते हैं जिससे तू हमारे लिए सुन्दर धन और फल देने वाली होवे ॥६॥

इन्द्र सीता को ग्रहण करे, पूषा (सूर्य) उसका सचालन करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमे (धान्य) प्रदान करती रहे ॥७॥[1]

सुन्दर हल सुखपूर्वक हमारे लिए भूमि को जोते, कृषक वाहनो के पीछे-पीछे सुख से चले। पर्जन्य मधुर जल द्वारा (पृथ्वी को सिक्त करे)। हे शुनासीर ! हम लोगो को सुख प्रदान करो ॥८॥[2]

प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण मे इस सूक्त का महत्व यह है कि इसमें सीता के प्रति सब से प्राचीन प्रार्थना सुरक्षित है। सीता के प्रति जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य मे मिलती है उसकी अधिकांश सामग्री इस सूक्त से ली गई है। तीनो ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रो मे भी 'कृषिकर्माणि' परिच्छेद के अतर्गत इस सूक्त का उल्लेख हुआ है।

(२) सीरा युंजंति

१३. सीता के नाम से जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य मे मिलती है वह 'सीरा युजति' मन्त्र का एक अश है। यह मन्त्र यजुर्वेदीय सहिताओ मे भी मिलता है और अथर्ववेद मे भी। यजुर्वेद मे इसका प्रयोग कृषि को छोडकर एक दूसरे प्रसग

---

१. अवार्ची सुभगे भव सीते वदामहे त्वा।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥६॥
इद्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषानु यच्छतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरा समाम् ॥७॥

सायण के अनुसार 'इद्रः सीतां...' का अर्थ है—'इंद्रः सीता सीताधारकाष्ठां निगृह्णातु' और 'सा न...' का अर्थ, 'द्यौः पयस्वत्युदकवती', जो चिन्त्य प्रतीत होता है।

२. इस सूक्त के अनुवाद के लिए लूड्विग, ग्रासमैन, विलसन और सायण के अतिरिक्त प० रामगोविन्द द्विवेदी के हिन्दी भाष्य से सहायता मिली है। (वैदिक पुष्पमाला, १, भागलपुर)।

मे हुआ है जो मौलिक नही प्रतीत होता। अतः पहले अथर्ववेद के प्रसग का विश्लेषण किया जाता है।

अथर्ववेद के मत्र जीवन की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओ के लिए लिखे गए है। उद्देश्य के अनुसार वे अनेक वर्गों मे विभाजित किए जाते हैं, 'भैषज्यानि' रोग से छुटकारा पाने के लिए, 'आयुष्याणि' स्वास्थ्य और दीर्घ आयु के लिए, 'पौष्टिकानि' व्यापार-कृषि-पशुपालन आदि मे सफलता प्राप्त करने के लिए, 'अभिचारिकाणि' शत्रुओं और भूतो के नाश के लिए।

प्रस्तुत 'सीरा युजति' मत्र 'पौष्टिकानि' मंत्रो मे से एक है (अथर्ववेद, ३, १७)। इसमे कृषि के विभिन्न कार्यों की सफलता के लिए अनेक देवताओ से प्रार्थना की जाती है। ढाई छद को छोडकर इस मत्र की सारी सामग्री ऋग्वेद के दो सूक्तो मे ली गई है।[१]

सीरा युंजंति कवियो युगा वि तन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥१॥

'देवताओ से अनुग्रह प्राप्त करने की आशा मे धीर चतुर (कृषक) हलो को जोडते है और जुओ को अलग-अलग करके दोनो ओर फैलाते हैं।'

युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्य पक्वमा यवन् ॥२॥

'हलो को जोडो, जुओ को फैलाओ और बने हुए खेत मे यहाँ पर बीज बोओ। अन्न की उपज हमारे लिए भरी पूरी होवे और धान्य हँसुए के लिए उत्तरोत्तर बढता जाय।'

लांगलं पवीरवत्सुशीमं सोमसत्सरु।
उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् ॥३॥

'अच्छा फाल वाला, बहुत सुख देने वाला, चिकना मूठवाला हल, गौ, भेड, शीघ्रगामी रथ और हृष्टपुष्ट सुन्दरी उत्पन्न करे (अर्थात् कृषि के द्वारा हर प्रकार का सुख मिल जाय)।'

इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभि रक्षतु :
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥४॥

---

१. छद ३, ६, ५ (उत्तरार्द्ध)—नई सामग्री।
छन्द १ और २--ऋग्वेद १०, १०१। सूक्त के रचयिता ऋत्विजो को यज्ञ के लिए प्रोत्साहित करते हुए यज्ञ की तुलना कृषि के विभिन्न कार्यों से करते हैं (हल जोतना, बीज बोना, फसल लुनना)।
शेष छन्द—ऋग्वेद ४, ५७।

'इन्द्र सीता को ग्रहण करे (दबावे), पूषा (सूर्य) उसकी रखवाली करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमें (धान्य) प्रदान करती रहे।'

शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै ॥५॥

हे हवि से चूनेवाले शुनासीर ! (फाल और हल)[1] इस मनुष्य के लिए सुन्दर फलवाली (जौ आदि) ओषधियाँ उत्पन्न करो।'

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम्।
शुनं वरत्रा बध्यंतां शुनमष्ट्रामुदिंगय ॥६॥

'वाहन सुख से रहें। कृषक सुख से रहें। हल सुख से जोते। (हल की) रस्सियां सुख से बाँधी जाएँ। अंकुश को सुख से ऊपर उठा उठा कर चलाओ।'

शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम्।
यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुप सिंचतम् ॥७॥

हे शुनासीर ! (वायु और आदित्य) तुम दोनों यहीं पर मेरी विनय स्वीकार करो, जो जल तुम दोनों ने आकाश में बनाया है, उससे इस भूमि को सींचते रहो।'

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः ॥८॥

'हे सीता ! तेरी हम वंदना करते हैं, हे सौभाग्यवती ! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो; जिससे तू हमारे लिए हिताकांक्षिणी होवे और जिससे तू हमारे लिए सुन्दर फल देने वाली होवे।'

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ॥९॥

'घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओं और मरुतों से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीता ! ओजस्विनी और घी से सींची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यमान रहे।'[2]

---

१. यास्क के अनुसार 'शुनासीरौ' से वायु और आदित्य का अभिप्राय है, जैसे आगे ७ वें छंद में। तब अनुवाद इस प्रकार होगा—'हे हवि से उत्तेजित शुना और सीर'।

२. पं० जयदेव जी शर्मा (अजमेर, आर्य साहित्य मंडल) का अनुवाद—'हे सीते ! (सा) वह तू (ऊर्जस्वती) पुष्टिकारक अन्न देनेहारी और घृतवत् दूध आदि पदार्थों से (पिन्वमाना) सब को तृप्त करती हुई (पयसा) पुष्टिकारक अन्न और जल सहित (नः अभि-आ-ववृत्स्व) हमारे पास विद्यमान रह'। सारे

मंत्र के अंतिम छंदों में स्पष्ट है कि उच्चारण के साथ-साथ खेत की सीता में घी और मधु का सिंचन किया जाता था। काठक गृह्यसूत्र में जहाँ गोयज्ञ के अंत में इस 'सीरा युजंति' मंत्र का प्रयोग है, भाष्यकार इस सिंचन का स्पष्ट उल्लेख करते हैं :

कर्मणि समाप्ते घृतेन सीतेति चतुर्गृहीतेनाज्यस्य प्रदानम्।

अर्थात् कार्य समाप्त होने पर 'घृतेन सीता' आदि कहकर चार बार घी डाला जाता है।

१४ यजुर्वेद। यजुर्वेद उन मंत्रों का संग्रह है जिन्हें अध्वर्यु और उसके सहायक विविध यज्ञों में पढ़ते थे। कृष्ण यजुर्वेद की चारों संहिताओं में मंत्रों के साथ कुछ गद्य भी मिलाया गया है। शुक्ल यजुर्वेद की एकमात्र वाजसनेयि संहिता में केवल मंत्र दिये गये हैं और उनसे सम्बन्ध रखने वाला गद्य शतपथ ब्राह्मण में संकलित है। इन सब रचनाओं में 'अग्नि चयन' के वर्णन के अंतर्गत उपर्युक्त 'सीरा युजंति' मंत्र किंचित् पाठभेद सहित उद्धृत है।

'अग्निचयन' में हमें उन मंत्रों और कर्मों का विस्तृत वर्णन मिलता है जो अग्नि की वेदी के निर्माण के लिए आवश्यक समझे जाते थे। यह प्रसंग यजुर्वेद का सब से दार्शनिक अंश है। इसमें यज्ञ के तत्त्व और महत्त्व के सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। वेदी के क्षेत्र को तैयार करने के लिए हल द्वारा विशेष युक्ति के अनुसार सीताएँ खींची जाती थीं। उस समय 'सीता युजंति' मंत्र पढ़ा जाता था, जिसमें सीता के प्रति निम्नलिखित प्रार्थना मिलती है :

'हे कामधेनु सीता! मित्र, वरुण, इन्द्र, अश्विन, पूषण, प्रजा और ओषधियाँ, (इन सबों) का मनोरथ पूरा कर।

घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओं और मरुतों से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीता! ओजस्विनी और घी से सींची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यमान रह।'[१]

आगे चलकर श्रौत सूत्रों में 'अग्निचयन' का वर्णन तो मिलता है, लेकिन एकाध सूत्रों को छोड़कर प्रस्तुत मन्त्र का उल्लेख नहीं मिलता।[२]

१५. तैत्तिरीय आरण्यक। कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीय आरण्यक में हमें पहले पहल

मंत्र के अनुवाद के लिए ह्विटनी और वेबर के अतिरिक्त पं० क्षेमकरणदास द्विवेदी (अथर्ववेदभाष्यम्, लूकरगंज, प्रयाग) की सहायता ली गई है।

१. दे० तैत्तिरीय सं० : ४, २, ५, ५-६, काठक सं० : १६, १२, मैत्रायणि सं० : १, ७, १२, कपिष्ठल सं०: २५, ३, शतपथ ब्रा०: ७, २, २।

२. दे० कात्यायन श्रौत सू० १७, २, १० और वैतान सूत्र २८, २६।

उपर्युक्त सामग्री का पितृमेध के अवसर पर प्रयोग मिलता है। अन्त्येष्टि के पश्चात् जलाई हुई हड्डियाँ एक घडे (अस्थिकुम्भ) मे रखी जाती थी और उपयुक्त समय पर गाडी भी जाती थी। इस क्रिया के अनन्तर हल द्वारा उस स्थान पर (जिसे श्मशान कहते थे) अनेक सीताएँ खीची जाती थी।[1] साथ-साथ 'सीरा युंजन्ति' के मन्त्र के छंद पढे जाते थे। इस कार्य की समाप्ति पर सीताओ की ओर देखते हुए पुरोहित कहते थे :

'हे सीता ! तेरी हम वंदना करते हैं, हे सौभाग्यवती ! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो, जिससे तू हमारे लिए सुन्दर धन और फल देने वाली होवे'।

ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चल कर यह प्रयोग सीमित रहा, क्योंकि केवल दो गृह्यसूत्रो मे पितृमेध के अंतर्गत इस प्रार्थना का उल्लेख है।

प्रस्तुत विषय समाप्त करने के पहले हम गृह्यसूत्रो की सामग्री पर भी दृष्टि डालेगे।[2] ये सूत्र श्रुति के अंग तो नही हैं, फिर भी इनका वैदिक साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है और इनका सूत्रपात वैदिक काल के अन्त में हुआ था।

(३) गृह्य सूत्र

१६. वैदिक साहित्य की अपेक्षा गृह्यसूत्र मे सीता से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री कही अधिक विस्तृत है।[3] इससे स्पष्ट है कि वैदिक काल के अन्त मे कृषि का महत्व बढने लगा था। यह सामग्री प्रायः विविध कृषि-कर्मो के वर्णन मे मिलती है। इसका विश्लेषण करने के पहले उन स्थलो का उल्लेख करना है जहां कृषि को छोड़कर किसी दूसरे प्रसग मे सीता से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री मिलती है।

ऊपर कहा गया है कि तैत्तिरीय आरण्यक मे पितृमेध के अवसर पर सीता से प्रार्थना की जाती थी। कृष्णयजुर्वेद के आग्निवेश्य और बोधायन गृह्यसूत्रो में भी इसी

---

१. दे० तैत्तिरीय आर० ६, ६। शतपथ ब्राह्मण मे भी इस क्रिया का वर्णन मिलता है (१३, ८) लेकिन वहाँ किसी मन्त्र का उल्लेख नही है।

२. धर्म और शुल्वसूत्रो मे सीता का उल्लेख नहीं मिलता।

३. निम्नलिखित गृह्यसूत्रो मे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का कोई उल्लेख नहीं है। सामवेद के खदिर और जैमिनि सूत्र और कृष्णयजुर्वेद के आपस्तम्ब, हिरण्यकेशिन्, भारद्वाज, वैखानस और वाराह गृह्यसूत्र। जहाँ 'सीता' अर्थात् लांगलपद्धति का शब्द मात्र आया है उन स्थलों को यहाँ पर उल्लेख नही किया गया है।

प्रसग मे सीता से इस प्रार्थना का उल्लेख है।[1] इन दोनो सूत्रो मे इस स्थल को छोडकर सीता से सम्बन्ध रखने वाली अन्य सामग्री नही मिलती ।

काठक गृह्यसूत्र मे 'सीरा युजति' मंत्र का 'गोयज्ञ' के अवसर पर एक नया प्रयोग हुआ है। अन्य सूत्रो मे इस गोयज्ञ का और पशुपालन से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कार्यों का वर्णन अवश्य मिलता है। लेकिन अन्यत्र इसी प्रसग मे सीता का उल्लेख नही मिलता। गोयज्ञ नई ब्याई गायो के स्वास्थ्य आदि के लिए किया जाता है। इसमे काठक गृह्यसूत्र के अनुसार दो सीताएँ खीची जाती हैं, 'सीरा युजति' मन्त्र पढा जाता और अन्त में सीता मे घी डाला जाता है।[2]

१७. उक्त स्थलो को छोडकर सीता का उल्लेख केवल कृषि कार्यो के वर्णन मे हुआ है। इन कृषि सम्बन्धी कार्यों मे सीता का स्थान समझने के लिए हमे स्मरण रखना चाहिए कि वह कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी नही है। इन विविध यज्ञो और कार्यों मे सीता के साथ-साथ अन्य देवताओ का भी बराबर उल्लेख होता है। इसके अतिरिक्त 'आग्रयण' (अथवा नवयज्ञ) के अवसर पर केवल इन्द्र, अग्नि, विश्वदेवता और द्यौपृथिवी का उल्लेख हुआ है। फिर भी इसी एक यज्ञ को छोडकर कृषि के अन्य यज्ञो मे सीता से अवश्य प्रार्थना की जाती थी। अतः कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी न होने पर भी सीता का स्थान प्रधान माना जाना उचित है। इन विविध कृषिकर्मों का परिचय नीचे दिया जाता है।

'लागलयोजनम्' का वर्णन चारों वेदो के गृह्यसूत्रो[3] मे मिलता है जिनमे से शुक्लयजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र और अथर्ववेद का कौशिक सूत्र सब से अधिक

---

१. दे० अग्निवेश्य गृ० सू०, ३, ८ (लोष्टचिति) और बोधायन गृ० सू०, पितृमेध सूत्रम् १, १८ (श्मशानकरणम्) ।

२ दे० काठक गृह्यसूत्र ७१, १-६ (दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत ग्रन्थमाला ६)।

३. दे० ऋग्वेद के शांखायन गृ० सू० : ४, १३ ; कौषीतक ; शाबव्यकृत : ३, १३ और आश्वलायन गृ० सू० : २, १०, ३-४
सामवेद का गोभिल गृ० सू० : ४, ४, २७-२६
शुक्लयजुर्वेद का पारस्कर गृ० सू० : २, १३
कृष्णयजुर्वेद का मानव गृ० सू० : २, १०, ७
अथर्ववेद का कौशिक गृ० सू० : २०
मानव गृ० सू० मे इस कर्म के दो भिन्न भाग माने जाते हैं, आयोजन (कर्षणसामग्रीकरणम्) और पर्ययन (प्रथमं क्षेत्रगमनम्) ।

विस्तार मे जाते है। लोग खेत ही पर अनेक देवताओ[1] को स्थालीपाक आदि चढ़ाया जाता है। हल द्वारा सीताएँ खीची जाती है और साथ-साथ 'सीरा युंजंति' मन्त्र पढा जाता है और अन्त मे ब्राह्मणो को भोजन दिया जाता है।

'सीतायज्ञ' का उल्लेख तीन सूत्रो[2] मे मिलता है। पारस्कर गृह्यसूत्र मे इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। लोग खेत के उत्तर या पूर्व मे किसी जोते हुए शुद्ध स्थल पर (या गाँव मे) आग जलाते हैं और स्थालीपाक तैयार करते हैं। घृत की आहुति करते समय इन्द्र, सीता और उर्वरा से प्रार्थना की जाती है। इसके अनन्तर सीता, यजा (यज्ञ की देवी), समा (भक्ति की देवी) और भूति (धन की देवी) को स्थालीपाक चढ़ाया जाता है। अन्त मे सीता की रक्षा करने वाले भूतो को (सीतागोप्तृ) भी दर्भ की बलि चढ़ाई जाती है। स्त्रियां भी बलि चढाती है और कार्य समाप्त होने पर ब्राह्मणो को भोजन दिया जाता है।

आहुति करते समय सीता से जो प्रार्थना की जाती है, उसका अर्थ यह है :

'इन्द्रपत्नी[3] सीता का मैं आह्वान करता हूँ, जिसके तत्व मे वैदिक और लौकिक (दोनो प्रकार के) कार्यों की विभूति निहित है। वह (सीता) सब कार्यों मे निरन्तर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा[4]।'

इसके पश्चात् उर्वरा के प्रति यह प्रार्थना पढ़ते थे—'अति प्रशंसित उर्वरा (उपजाऊ भूमि) का मैं इस यज्ञ मे आह्वान करता हूँ, जो अश्व, गाय (आदि संपत्ति प्रदान करने) वाली है, जो प्राणियो का नित्य पालन करती है, जिसके चारो ओर खलियानो की माला (सुशोभित) है। वह स्थिर रहने वाली (उर्वरा) निरन्तर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा।'

काठक गृह्यसूत्र के अनुसार इस यज्ञ मे केवल 'सीरा युंजंति' मन्त्र की यह प्रार्थना पढ़ी जाती है—'घी और मधु से सानी हुई सीता, विश्वदेव-ताओ और मरतो से रक्षित

---

१. पारस्कर गृ० सू० मे ८ देवता, गोभिल गृ० सू० मे ६ देवता और मानव गृ० सू० मे १२ देवता हैं। इनके नाम प्रत्येक सूत्र मे भिन्न हैं, लेकिन इन्द्र और सीता सर्वत्र पाये जाते हैं।

२. दे० पारस्कर गृ० सू० (२, १७), काटक गृ० सू० (७१, ७) और गोभिल गृ० सू० (४, ४, ३०)।

३. कीथ अनुमान करते हैं कि 'इन्द्रपत्नी' विशेषण का कारण यह है कि ऋग्वेद में (८, २१, ३) इन्द्र को 'उर्वरापति' कहते हैं।

४. दे० पारस्कर गृ० सू० (२,१७,४—'यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा'।

होवे। सीता ! ओजस्विनी और घी से सीची हुई तू जल के साथ हमारे पास रह ।' भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि कार्तिक शुक्ल की द्वादशी मे यह सीतायज्ञ आर्यों मे प्रसिद्ध है, यत्र वीरणादिमयी सीता कुमारी देवता विरच्यते—'जब खस आदि (सुगन्धित घास) से सीता कुमारी देवी की मूर्ति बनाई जाती है।'

'लांगलयोजनम्' और 'सीतायज्ञ' के अतिरिक्त निम्नलिखित कृषिकर्मों का उल्लेख मात्र मिलता है—बीजवपनीय यज्ञ, प्रलवन (धान्य के लुनने पर), खलयज्ञ, तन्त्रीयज्ञ (धान्य के साफ किए जाने पर), पर्य्ययण (धान्य के घर पहुँचने पर)[1]। इन सब अवसरो पर इन्द्र, सीता आदि अनेक देवताओ को बलि चढाई जाती थी। मानव गृह्यसूत्र के अनुसार अन्य सब त्योहारो पर भी (सांवत्सरेषु पर्वसु) उन्ही देवताओ की पूजा होनी चाहिए[2]। इससे हम अनुमान कर सकते हैं कि इन कृषि के अधिष्ठाता देवताओ का महत्व बराबर बढ़ता रहा और कृषको के धार्मिक जीवन मे इनका स्थान उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा था। इनमे से सीता को प्रधान समझना चाहिए। यह प्रस्तुत विश्लेषण से सभवत: स्पष्ट हो जाता है।

१८. उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त कौशिक सूत्र के तेरहवे अध्याय मे सीता से जो विस्तृत प्रार्थना की गई है उसका उद्धरण हमने अन्त तक छोड रखा है। कौशिक सूत्र के इस अध्याय की सामग्री सामवेद के अद्भुतब्राह्मण से मिलती जुलती है। अनेक विलक्षण घटनाओ पर अपशकुन के निवारण आदि के लिए जो कर्मकाड आवश्यक समझा जाता था उसका इस अद्भुताध्याय मे वर्णन है। सीता सम्बन्धी सामग्री 'लागलो.ससर्गे' अर्थात् दो हलो के उलझ जाने के प्रसग मे आ गई है। ऐसे अवसर पर पुरोडाश तैयार करके पुरोहित को जंगल मे पूर्व की ओर एक सीता खीचनी पडती थी और उसमे आग जलाकर आहुति करते समय उसे सीता से यह प्रार्थना करनी पडती थी :

वित्तिरसि पुष्टिरसि प्राजापत्याना'[3] त्वाहं मयि
पुष्टिकामो जुहोमि स्वाहा ॥

---

१. बीजवपनीय के लिए दे० काठक गृ० सू० (७१, ८), गोभिल गृ० सू० (४, ४, ३०) और मानव गृ० सू० (२, १०, ७)। शेष यज्ञो का उल्लेख केवल गोभिल (वही) और मानव गृ० सू० (वही) मे मिलता है।

२. भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि यह पूजा कृषको के लिए है—'कृषि-वृत्तिर्जीवनैः'।

३. यह ए० वेबर का पाठ है। दे० अबहैंडलूंगन बर्लिनर एकाडेमी, १८५८, पृ०

कुमुद्वती पुष्करिणी सीता सर्वांगशोभनी ।
कृषिः सहस्रप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि ॥
उर्वी त्वाहुर्मनुष्याः श्रियं त्वा मनवो विदुः ।
आशयेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥
पर्जन्यपत्नि[1] हरिण्यभिजितास्यभि नो वेद ।
कालनेत्रे हविषा नो जुषस्व तृप्तिं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥
याभिर्देवा असुरानकल्पयन्यातून् गंधर्वान् राक्षसंश्च ।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोष सुभगे रराणा ॥
हिरण्यस्रक् पुष्करिणी श्यामा सर्वांगशोभिनी॥
कृषिहिरण्यप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि ॥
अश्विभ्यां देवि सह संविदाना इन्द्रेण राधेन
सह पुष्टया न आगहि ॥
विशस्त्वा रासान्तां प्रदिशोऽनु सर्वहोरात्रार्धमासमासा
आर्तवा ऋतुभिः सह ॥
भर्त्रीदेवानामुत मर्त्यानां भर्त्री प्रजानामुत मनुष्याणाम
हस्तभिरिस्तरासैः क्षेत्रसाराधिभिः सह ॥
हिरण्यैरश्वैरा गोभि प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि ॥

'(हे सीता) तू प्रजापति की संतति को धन और पुष्टि (देने वाली) है, मैं पुष्टि की कामना करके तुझको आहुति देता हूँ । स्वाहा ।

हे कुमुदो और पुष्करों[2] से सुसज्जित सर्वांगशोभिनी सीता, इस सहस्रप्रकारा कृषि की श्री निरन्तर मेरे साथ रहे ।

मनुष्य तुझको उर्वी कहते हैं, बुद्धिमान् तुझको श्री मानते हैं, हमको स्वास्थ्यकर और शक्तिप्रद अन्न प्रचुर मात्रा में दे ।

हे विजयिनी हिरण्यमयी-पर्जन्यपत्नी ! हम पर कृपा कर । हे कालनेत्रे ! हवि से प्रसन्न हो जा और द्विपदो तथा चतुष्पदो के लिए हमको तृप्ति दे ।

जिन (शक्तियों) से देवतागण असुरो, यातुओं, गन्धर्वों और राक्षसो का नियन्त्रण

३७०-७३ । ब्लुमफील्ड के अनुसार प्राजापत्यानां' होना चाहिए । (दे० जर्नल-अमेरिकन ओरियेन्टल सोसाइटी, भाग १४) ।

१. अथर्ववेद में पृथिवी को पर्जन्यपत्नी कहा गया है (१२, १, ४२) ।

२. वेबर के अनुसार इसका अनुवाद है, 'बालियों से सुसज्जित' ।

करते हैं, उन (शक्तियों) के साथ आज प्रसन्न होकर हमारे पास आ और हमको सहस्रविध पुष्टि प्रदान कर।

हे श्यामा ! हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, पुष्करों से सुसज्जित सर्वांगशोभिनी, इस हिरण्यमयी कृषि की श्री निरन्तर मेरे साथ रहे।

हे देवि ! तू आश्विनों, इन्द्र, और राध (नक्षत्र) के साथ मघबद्ध है, पुष्टि (कारक अन्न) के साथ हमारे पास आ।

सब दिशाओं में वैश्य तेरी देख-रेख करते हैं। दिन, रात, अर्द्धमास, पूर्णमास और ऋतुएँ (सब तेरी देख-रेख करती हैं)।

'मनुष्यों और देवताओं, दोनों का तू पालन करती है। विविध आसन से युक्त हाथी, क्षेत्रसारथि, हिरण्य, अश्व, गोधन, यह (सारी) सम्पत्ति निरन्तर मेरे साथ रहे।'

इस प्रार्थना में सर्वाङ्गशोभिनी, हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, कालनेत्रा, श्यामा, हिरण्यमयी पर्जन्यपत्नी सीता का मानवीकरण अत्यन्त स्पष्ट है।

१९. ऋग्वेद से लेकर गृह्यसूत्रों तक उपर्युक्त सीता-संबंधी सामग्री देख कर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि इस सीता का व्यक्तित्व शताब्दियों तक कृषि करने वाले आर्यों की धार्मिक चेतना में जीता रहा। महाभारत आदि में भी इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। द्रोणपर्व के जयद्रथवध पर्व के अंतर्गत ध्वजवर्णन नामक अध्याय में (७, ८०) कृषि की अधिष्ठात्री देवी, सब बीजों को उत्पन्न करने वाली सीता का उल्लेख हुआ है :

मद्रराजस्य शल्यस्य ध्वजाग्रेऽग्निशिखामिव।
सौवर्णीं प्रतिपश्याम सीतामप्रतिमां शुभाम् ॥ १८ ॥
सा सीता[1] भ्राजते तस्य रथमास्थाय मारिष।
सर्वबीजविरूढेव यथा सीता श्रिया वृता ॥ १९॥

हरिवंश के द्वितीय भाग में दुर्गा की एक लम्बी स्तुति के अंतर्गत कहा गया है, 'तू कृषकों के लिए सीता है तथा प्राणियों के लिए धरणी' :

कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणीति च (२, ३, १४)।

बौद्ध अभिधर्म महाविभाषा के चीनी अनुवाद में यों लिखा है :

'यदि कृषक बीज बोने के बाद शरत्काल में प्रचुर शस्य प्राप्त करता है, तब वह कहता है, यह (शस्य) श्री, सीता और समा इन देवियों का वरदान है।'[2]

---

१. सीता का अर्थ यहाँ पर 'लांगल का अग्रभाग' होता है। पद्मपुराण में भी 'सीता' इस अर्थ में प्रयुक्त है (दे० पातालखंड, अध्याय ५७)।

२. दे० ज० रा० ए० सो०: १९०७, पृ० १०२। महाविभाषा का रचनाकाल

वाल्मीकि रामायण पर भी सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का प्रभाव पड़ा है। यद्यपि इसका रामायण मे कोई स्पष्ट उल्लेख नही है फिर भी अयोनिजा सीता के जन्म और तिरोधान के जो वृत्तान्त मिलते हैं, वे संभवतः इस वैदिक सीता के व्यक्तित्व से प्रभावित हैं। इसका विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायगा।

ग—वैदिक साहित्य में रामकथा का अभाव

२०. विस्तृत वैदिक साहित्य की बहुसंख्यक रचनाओ मे जहाँ कही रामकथा के पात्रो के नाम मिलते हैं, उन सब स्थलो का उल्लेख और महत्वानुसार उनके प्रसंग का वर्णन प्रस्तुत अध्याय के पहले दो परिच्छेदो मे किया गया है। सारी सामग्री का सिंहावलोकन करने पर वैदिक साहित्य और राम-कथा के सम्बन्ध के विषय में हम किस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं इसका इस अन्तिम परिच्छेद मे निर्णय करना है।

ऋग्वेद में इक्ष्वाकु, दशरथ और राम, इन तीनो का एक-एक बार उल्लेख हुआ है। वे प्रभावशाली ऐतिहासिक राजा थे, इतना ही परिचय इन स्थलो से मिल सकता है। इनका पारस्परिक सम्बन्ध असम्भव नही है, लेकिन इसका कोई निर्देश नही मिलता। आगे चलकर इनका वैदिक साहित्य मे और कही उल्लेख नहीं हुआ है। ऋग्वेद मे सीता का भी एक बार उल्लेख हुआ है। लेकिन इस सीता का रामायण के उपर्युक्त अन्य ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्ध असम्भव ही है, क्योकि उसका व्यक्तित्व ऐतिहासिक न होकर सीता अर्थात् लांगलपद्धति के मानवीकरण का परिणाम है।[1] इस सीता का उल्लेख वैदिक काल के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बराबर होता रहा है।

ब्राह्मणों से राम मार्गवेय, राम औपतस्विनी तथा राम क्रातुजातेय इन तीनो का परिचय मिलता है। इनके ऐतिहासिक होने मे सदेह नही किया जा सकता है, लेकिन उनका रामायण के राम से कोई भी सम्बन्ध संभव प्रतीत नही होता।

ब्राह्मणों तथा प्राचीन उपनिषदो मे अश्वपति और जनक का पहले पहल उल्लेख मिलता है। अश्वपति का रामायण के पात्रो से कोई सम्बन्ध निर्दिष्ट नही हुआ है। इतना ही प्रतीत होता है कि वे ऐतिहासिक राजा थे, जो सम्भवतः जनक के समकालीन थे। ब्राह्मणो के जनक और रामायणीय जनक की अभिन्नता की समस्या का निर्णय करना असम्भव प्रतीत होता है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। रामायण का

तीसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध माना जाता है (दे० कर्न मेन्युअल ऑव बुद्धिज्म पृ० १२१)।

१. तैत्तिरीय ब्राह्मण की सीता सावित्री का भी रामायण की कथा-वस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

रचयिता सीता के पिता जनक का प्रसिद्ध वैदिक जनक से सम्बन्ध जोडता है, यह स्पष्ट है और स्वाभाविक भी है। लेकिन इस अभिन्नता के लिए वैदिक साहित्य से कोई प्रमाण नही निकाला जा सकता। जनक के सारे वृत्तांत मे रामकथा का कोई भी संकेत विद्यमान नही है।

इस तरह हम देखते है कि वैदिक रचनाओ मे रामायण के एकाध पात्रो के नाम अवश्य मिलते हैं, लेकिन न तो इसके पारस्परिक सम्बन्ध की कोई सूचना दी गई है और न इनके विषय मे रामायण की कथावस्तु का किंचित् भी निर्देश किया गया है। जनक और सीता का बार-बार उल्लेख होने पर भी दोनो का, पिता-पुत्री-सम्बन्ध कही भी निर्दिष्ट नही हुआ है।

अतः वैदिक काल मे रामायण की रचना हुई थी अथवा राम-कथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रसिद्ध हो चुकी थी, इसका निर्देश समस्त विस्तृत वैदिक साहित्य मे कही भी नही पाया जाता। अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियो के नाम रामायण के पात्रो के नामो से मिलते है; इससे इतना ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये नाम प्राचीनकाल मे भी प्रचलित थे।

अध्याय २

वाल्मीकिकृत रामायण

२१. वाल्मीकिकृत रामायण के पूर्व राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान प्रचलित थे। इसका आभास महाभारत के द्रोणपर्व और शांतिपर्व के संक्षिप्त राम-चरित से तथा अन्य निर्देशो से भी मिलता है (दे० नीचे अनु० ४४, ४५, १३०)। ये आख्यान आजकल अप्राप्य हैं और इस प्रकार वाल्मीकिकृत रामायण राम-कथा की प्राचीनतम विस्तृत रचना सिद्ध होती है। प्रबन्ध के द्वितीय भाग मे वाल्मीकि रामायण के मूल स्वरूप पर विचार किया जायगा तथा चौथे भाग मे प्रचलित रामायण की कथावस्तु के साथ-साथ प्रत्येक कांड का विश्लेषण किया जायगा। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद मे रामायण के भिन्न-भिन्न पाठों की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद रामायण के रचनाकाल पर विचार किया गया है। अंतिम परिच्छेद मे आदि-कवि वाल्मीकि से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री एकत्र की गई है।

क—वाल्मीकिकृत रामायण के तीन पाठ

२२. वाल्मीकिकृत रामायण का पाठ एकरूप नही है। आजकल इस रचना के तीन पाठ प्रचलित हैं :

(१) दाक्षिणात्य पाठ : गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई), निर्णय सागर प्रेस (बम्बई) तथा दक्षिण के संस्करण। यह पाठ अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित और व्यापक है।

(२) गौडीय पाठ : गोरेसियो (पैरिस) तथा कलकत्ता सस्कृत सिरीज़ के संस्करण।

(३) पश्चिमोत्तरीय पाठः दयानन्द महाविद्यालय (लाहौर) का संस्करण, जो आजकल साधु आश्रम, होशिआरपुर (पंजाब) से प्राप्य है।

प्रत्येक पाठ में बहुत से श्लोक ऐसे मिलते हैं जो अन्य पाठो मे नही पाये जाते। दाक्षिणात्य तथा गौडीय पाठो की तुलना करने पर देखा जाता है कि प्रत्येक पाठ मे श्लोको की एक तिहाई संख्या केवल एक ही पाठ में मिलती है। इसके अतिरिक्त जो श्लोक तीनो पाठो में पाए जाते हैं उनका पाठ भी एक नहीं है और इनका क्रम भी

अनुचित न होगा। आर्ष प्रयोगो की अपेक्षाकृत कमी के अतिरिक्त, निम्नलिखित विषय उदीच्य पाठ के अपने ही प्रतीत होते हैं (ये केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में पाये जाते हैं):

१. एक तीसरी अनुक्रमणिका, जिसमे सात कांडो को सामग्री का उल्लेख मिलता है (दे० गौ० रा० १,४ तथा प० रा० १, ३)। दाक्षिणात्य पाठ में केवलदो अनुक्रमणिकाएँ दी गई हैं।

२. शान्ता दशरथ की पुत्री का स्पष्ट उल्लेख (दे० गौ० रा० १, १० तथा प०रा० १, ६)।

३. भरत तथा शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह मे निवास दो सर्गों मे वर्णित है। (दे० गौ० रा० १, ७६-८० तथा प० रा० २, १-२)। दाक्षिणात्य पाठ में इसका उल्लेख मात्र किया गया है।

४. ब्राह्मण कैकेयी को शाप देता है। (दे० गौ० रा० २, ८, ३३ आदि तथा प० रा० २, ११, ३७ आदि)।

५. सीता जनक तथा मेनका की पुत्री हैं। (दे० गौ० रा० ३, ४ तथा प० रा० ३, २।

६. सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाना (दे० गौ० रा० ४, ६२ तथा प० रा० ४, ५५)।

७. केशरी का दिग्गज धवल का वध करना और वरस्वरूप हनुमान को प्राप्त करना (दे० गौ० रा० ५, ३ तथा प० रा० ४, ५८)।

८. राम के प्रति तारा का शाप। (दे० गौ० रा० ४, २०, १५-१६ प० रा० ४, १६, ३६-४०)।

९. निकषा का विभीषण से अनुरोध करना कि वह रावण को समझावे (दे० गौ० रा० ५, ७६ तथा प० रा० ५, ७५)।

१०. दशरथ तथा सागर की मैत्री (दे० गौ० रा० ५, ६४, २१-२२ तथा प० रा० ५, ६६, ४६-६८)।

११. कुम्भकर्ण रावण से कहता है—'नारद ने मुझसे कहा था कि देवताओं ने विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण-वध की आयोजना की थी। (दे० गौ० रा० ६, ४०-४१, प० रा० ६, ४१-४२)।

१२. हनुमान-कालनेमि का वृत्तान्त तथा हनुमान का गन्धर्वों से युद्ध करना (दे० गौ० रा० ६, ८२-८३ तथा प० रा० ६, ८१)।

उदीच्य पाठ जो सम्भवतः पहली शताब्दी ई० से दाक्षिणात्य पाठ से भिन्न होने लगा

था, बाद मे पुनः दो पाठो मे विभक्त होने लगा, अर्थात् गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। डॉ० लेवि का अनुमान है कि कम से कम ५०० ई० से ये दोनो पाठ भिन्न होने लगे थे।[१]

गौडीय पाठ

२४. गौडीय पाठ के निम्नलिखित वृत्तान्त अन्य दो पाठो मे नही मिलते :

(१) विभीषण रावण से अलग होने के बाद पहले कैलास पर अपने भाई वैश्रवण से मिलता है और बाद मे राम की शरण लेता है। (दे० गौ० रा० ५, ८९)।

(२) औषधि के लिए जाते समय भरत से हनुमान की भेंट। (दे० गौ० रा० ६, ८२, ९० आदि)।

(३) सीताहरण के पूर्व जटायु राम से अपने सम्बन्धियो के यहाँ जाने की आज्ञा लेकर घर जाता है। (दे० गौ० रा० ३, २१, ३--१०)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ

२५. पश्मिोत्तरीय पाठ तथा गौडीय पाठ बहुत निकट हैं, यह उपर्युक्त उदीच्य पाठ के विश्लेषण से स्पष्ट है। फिर भी पर्याप्त सामग्री पश्चिमोत्तरीय तथा दाक्षिणात्य पाठ, दोनो में मिलती है। इसका कारण यह होगा कि बाद मे पश्चिमोत्तरीय पाठ को परिपूर्ण बनाने के उद्देश्य से प्रचलित तथा व्यापक दाक्षिणात्य पाठ का सहारा लिया गया है। इस तरह वर्षा-ऋतु का एक विस्तृत वर्णन दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय दोनो पाठो मे मिलता है। (दे० दा० रा० ४, २८, १४-५२, और प० रा० ४, २१); यह वर्णन त्रिष्टुभ मे है।

ब्रह्मास्त्र द्वारा द्रुमकुल्य का विनाश भी दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलता है (दे० दा० रा० ६, २२, तथा प० रा० ५, ९६)। अनेक वृत्तान्त- केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे ही पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ :

(१) कैकेयी का एक ब्राह्मण से विद्यावल प्राप्त करना, जिसके द्वारा वह संग्राम में अपने पति की रक्षा करने मे समर्थ हुई। (दे० प० रा० २, ११, ४२ आदि)।

(२) हनुमन्मगल : एक पूरा सर्ग जिसमे वानर हनुमान् की वीरता की प्रशंसा करते हैं। (दे० प० रा० ४, ५९)।

---

१. जूर्नल ऐसिएटिक, पैरिस : १९१८, पृ० १ आदि।

(३) समुद्र का राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना। (दे० प० रा० ५, ६६)।

(४) नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना। (दे० प० रा० ६, २७)।

(५) मन्दोदरी-केश-ग्रहण : विभीषण के द्वारा पता चलता है कि रावण होम कर रहा है। यदि यह यज्ञ पूर्ण हो सका तो रावण अजेय सिद्ध हो जायगा। वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँच कर उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ है। अन्त मे अंगद मन्दोदरी को केशो से खीच कर उसे रावण के पास ले आता है। इस पर रावण उत्तेजित हो जाता है और यज्ञ समाप्त नही हो पाता। (दे० प० रा० ६, ८२)।

दाक्षिणात्य पाठ

२६. जो श्लोक तीनो पाठो मे मिलते हैं, उनके लिए दाक्षिणात्य पाठ साधारणतया अधिक प्राचीन माना जाना चाहिए। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। फिर भी इस पाठ मे भी बहुत प्रक्षेप पाये जाते हैं। निम्नलिखित वृत्तान्त न तो गौडीय पाठ मे मिलते हैं और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे :

(१) रामादि की जन्मतिथि (चैत्रे नावमिके तिथौ) तथा उसी अवसर पर राशियो के संगम। (दे० दा० रा० १, १८, ८ आदि)।

(२) बालकाड की अनेक पौराणिक कथाएँ : कश्यप की तपस्या जिसके फलस्वरूप वह हरि को वामनावतार में पुत्र-स्वरूप प्राप्त कर सका (२६, १०-१७); जह्नु का गंगा को पीना (४३, ३४-४१); विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत ले जाना (४५, ४०-४३); विष्णु का कूर्मावतार वर्णन (४५, २७-३२); इन्द्र का ब्राह्मण के रूप मे विश्वामित्र से अन्न माँगना (६५, ३-१०); सगर के जन्म की कथा (७०, २८-३७)।

(३) कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (२, ३५)।

(४) सीता की यमुना से प्रार्थना (२, ५५; १३-२१)।

(५) वाल्मीकि से राम, लक्ष्मण और सीता की भेट (२, ५६, १६-१७)।

(६) अकपन का रावण को जनस्थान की घटनाओ का हाल देना और रावण का मारीच के पास जाना (३, ३१)।

(७) राक्षसी अयोमुख का वृत्तान्त (३, ६६; ११-१८)।

(८) सुग्रीव का लक्ष्मण को शान्त करने के लिए तारा को उनके पास भेजना (४, ३३, २५-६२)।

(९) लंका देवी से हनुमान का युद्ध (५, ३, २०-५१)।
(१०) सुग्रीव-रावण-युद्ध (६,४० तथा ६,४१, १-१०)।
(११) अगस्त्य का राम को सूर्यस्तव देना (६, १०५)।
(१२) तारा तथा अन्य वानर-पत्नियों को अयोध्या ले जाने की राम से सीता की प्रार्थना (६, १२३, २१-३८)।

ख—रामायण का रचनाकाल

२७. एक शताब्दी के पूर्व रामायण पहले पहल पश्चिम मे विख्यात होने लगा, उस समय अनेक विद्वानो का मत था कि इसकी रचना अत्यन्त प्राचीन काल मे हुई थी—ए० श्लेगेल के अनुसार ११ वी श० ई० पू० तथा जी० गोरेसियो के अनुसार लगभग १२ वी श० ई० पू०।[१] इस मत के प्रतिक्रियास्वरूप जी० टी० ह्वीलर तथा डॉ० वेबर ने रामायण पर यूनानी तथा बौद्ध प्रभाव मान कर उसकी रचना अपेक्षाकृत अर्वाचीन समझी है।[२] इन दोनो के मत का खंडन निबन्ध के द्वितीय भाग में किया जायगा।

आगे चलकर रामायण के रचनाकाल के विषय मे लिखते हुए विद्वान् प्रायः आदि रामायण (वाल्मीकि की प्रामाणिक रचना) तथा प्रचलित वाल्मीकि रामायण का अलग-अलग रचना-काल निर्धारित करते हैं।

रामायण के भिन्न-भिन्न पाठों की तुलना करने पर स्पष्ट है कि उत्तरकाण्ड बाद का लिखा हुआ है। वास्तव मे उत्तरकाण्ड तथा बालकांड दोनो वाल्मीकिकृत रचना मे विद्यमान नही थे, इसके लिए द्वितीय भाग में प्रमाण दिये जायेंगे (दे० ८ वां अध्याय)। वाल्मीकिकृत आदि रामायण (कांड २-६) तथा प्रचलित वाल्मीकि रामायण में जो अन्तर पाया जाता है, इसके लिए बहुत काल की आवश्यकता है। छोटे-मोटे प्रक्षेपो को छोडकर प्रस्तुत प्रचलित वाल्मीकि रामायण का वर्तमान रूप (१-७ कांड) कम से कम दूसरी शताब्दी ई० का है, यह बहुसंख्यक विद्वानो का मत है।

एम० विंटरनित्स इस प्रश्न का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद एच० याकोबी के परिणाम पर पहुँचते हैं। एच० याकोबी पहली अथवा दूसरी शताब्दी ई० को प्रचलित रामायण का काल मानते हैं, एम० विंटरनित्स दूसरी शताब्दी ई० अधिक समीचीन

---

१. दे० ए० डब्लू० श्लेगेल : जर्मन ओरियन्टल जर्नल, भाग ३, पृ० ३७९।
जी गोरेसियो : रामायण भाग १० भूमिका।
२. जी० टी० ह्वीलर: हिस्ट्री ऑव इंडिया, भाग २ (लन्दन १८६९)।
ए० वेबर : आन् दि रामायण (बम्बई (१८७३)।

समझते हैं[1]। सी० वी० वैद्य[2] इसका काल दूसरी श० ई० पू० तथा दूसरी शताब्दी ई० के बीच मे मानते हैं, यद्यपि वह पहली श० ई० पू० अधिक संभव समझते हैं। कालिदास के समय मे रामायण ने अपना प्रचलित रूप धारण कर लिया था तथा महाभारत के आरण्यक-पर्व के रचनाकाल मे बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड की कुछ सामग्री प्रचलित हो गई थी। अतः अधिक संभव है कि प्रचलित रामायण का रूप दूसरी श० ई० के बाद का नही है[3]। आदि रामायण प्रचलित रामायण से इतना भिन्न है कि इस महत्वपूर्ण विकास के लिए कई शताब्दियो की आवश्यकता प्रतीत होती है। अतः वाल्मीकिकृत रचना कम से कम तीसरी श० ई० पू० की होगी। कई विद्वान् वाल्मीकि का काल और प्राचीन मानते हैं।

प्रामाणिक वाल्मीकिकृत रामायण मे बौद्ध धर्म की ओर निर्देश नही मिलता। अतः इसकी रचना बुद्ध के पूर्व ही अथवा पाँचवी श० ई० पू० मे हुई होगी। यह एम० मोनियेर विलियम्स तथा सी० वी० वैद्य का प्रधान तर्क प्रतीत होता है[4]। लेकिन प्राचीन बौद्ध साहित्य तथा जातकों की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि तिपिटक के रचना काल मे राम-कथा सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन रामायण की रचना नही हो पाई थी (दे० नीचे अनु० ८२)।

डॉ० याकोबी रामायण का रचनाकाल पाँचवी श० ई० से पूर्व, छठी और आठवी श० ई० पू० के बीच मे मानते हैं[5]। ए० ए० मैकडोनेल ने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास (लंदन १९०५, पृ० ३०९) मे याकोबी के तर्क स्वीकार कर रामायण को बुद्ध के पूर्व का माना था। बाद मे उन्होंने छन्दःशास्त्र की दृष्टि से पाली गाथाओं तथा रामायण के श्लोको की तुलना के आधार पर माना है कि वाल्मीकि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई० पू० के मध्य मे हुई थी। उनके अनुसार रामायण दूसरी श० ई० के अंत तक अपना वर्तमान रूप धारण कर चुका था (दे० इन० रि० ए०, भाग १०, पृ०

---

१. एच० याकोबी : डस रामायण, पृ० १००।
 एम० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग १, पृ० ५००, ५१७।
२. सी० वी० वैद्य : दि रिडिल ऑव दि रामायण, पृ० २० और ५१।
३. किन्तु इसके बाद भी पौराणिक कथाओ तथा अन्य प्रक्षेपों का सम्मिश्रण हुआ होगा। अतः इन अर्वाचीन अंशों के कारण समस्त बालकाण्ड का समय चौथी श० ई० निर्धारित करना तर्कसंगत नही है। दे० डब्लू किर्फेल : रामायण बालकाण्ड उण्ड पुराण।
४. एम० एम० विलियम्स : इण्डियन एपिक पोइट्री (लन्दन १८६३) पृ० ३।
५. दे० एच० याकोबी : वही. पृ० १०१ आदि।

४. ६६)¹। डॉ० कीथ तथा डॉ० जकोबी के मत के बाद पर्याप्त बाद उनके ग्रंथों का विस्तृत विवेचन करके लुडविग आदि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई० पू० में मानते हैं। डा० विंटरनित्स प्रायः डॉ० कीथ से सहमत हैं लेकिन वे वाल्मीकि को तीसरी शताब्दी ई० पू० का मानते हैं। अतः अधिक संभव प्रतीत होता है कि वाल्मीकि ने लगभग ३०० ई० पू० अपनी अमर रचना की सृष्टि की है। इस निर्णय की पुष्टि इससे भी होती है कि पाणिनि ने रामायण, वाल्मीकि अथवा रामायण के प्रमुख पात्रों (दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि) का उल्लेख नहीं किया। लेकिन उनके समय में रामकथा प्रचलित हुई होगी क्योंकि सूत्रों में कैकेयी (४. १. २), कौसल्या (४. १. १५५) तथा शूर्पणखा (८. ४. ३९) की ओर संकेत मिलते हैं। महाभाष्य में परिवर्तन होता रहा, अतः महाभाष्य के उल्लेखों पर तर्क आधारित नहीं किया जा सकता है; इसमें रामकथा के मुख्य पात्रों के नाम (राम, लक्ष्मण, भरत, रावण आदि) आते हैं।

ग—आदिकवि वाल्मीकि

३०. बुद्धचरित की उक्ति (दे० अनु० ३, टिप्पणी १०४) को छोड़कर प्राचीन वाल्मीकिकृत रामायण में वाल्मीकि की ओर से कहीं निर्देश नहीं मिलता। बालकाण्ड, उत्तरकाण्ड और महाभारत में वाल्मीकि को रामायण का रचयिता माना गया है, इस प्राचीन परम्परा के विरोध में कोई भी युक्तिसंगत तर्क नहीं दिया जा सकता है। किन्तु यह अवश्य मानना पड़ेगा कि इस महान् कवि के जीवनवृत्त के संबंध में प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है।

(क) आदिकवि से भिन्न तीन अन्य वाल्मीकि

३१. तैत्तिरीय प्रातिशाख्य में एक वैयाकरण वाल्मीकि¹ का उल्लेख है जो निश्चित रूप से आदिकवि से भिन्न है। यह एक वैदिक² तथा एक आचार्य³ आदि विद्वानों में एक है। इससे इस बात का पता चलता है कि 'वाल्मीकि' नाम प्राचीन

1. दे० तैत्ति० प्रा० ५. ३६; ९. ४ (पृ० ३१०–३५८)। हि० ए० ऑफ़ दि [illegible]।
2. दे० [illegible] पृ० ३५६।
3. [illegible] (१६६१२३०) [illegible] पर वाल्मीकि का उल्लेख है—३, ३३. ३, ४; १८, ६।
4. दे० [illegible] रामायण, पृ० [illegible]।
5. दे० [illegible] रामायण, पृ० ३३ टि०।

काल मे प्रचलित था। अत· हमें कोई आश्चर्य नही होना चाहिए यदि अन्यत्र भी वाल्मीकि नामक व्यक्तियो का उल्लेख मिल जाए।

महाभारत के उद्योगपर्व मे गरुडवशी विष्णु-भक्त सुपर्ण पक्षियो की सूची मे वाल्मीकि का भी नाम आया है। सुपर्ण वश सभवत. सप्तसिन्धु की एक यायावर आर्य जाति थी[1]। महाभारत मे इनके सम्बन्ध मे कहा गया है कि ये कर्म से क्षत्रिय थे—कर्मणा क्षत्रिया. (दे० ५, ६६, ६)। सुपर्ण वाल्मीकि तथा आदिकवि वाल्मीकि की अभिन्नता के पक्ष मे कोई भी प्रमाण नही मिलता। अभिन्नता के विरोध मे यह तर्क दिया जा सकता है कि सुपर्ण वश महाभारत मे विष्णुभक्त माना गया है (दे० ५, ६६, ८) किन्तु कवि वाल्मीकि के विषय मे कहा गया है कि उन्होंने शिव की शरण ली थी (दे० आगे अनु० ३३)। अत. अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि सुपर्ण वाल्मीकि तथा आदिकवि भिन्न ही है।

महाभारत मे केवल द्रोणपर्व (११८, ४८) तथा शातिपर्व (२००, ४) के अन्तर्गत वाल्मीकि को स्पष्ट शब्दो मे कवि माना गया है, इसके अतिरिक्त शातिपर्व (५७, ४०) मे भार्गव कवि का तथा अनुशासन पर्व (१८, ८-१०) मे एक वाल्मीकि का उल्लेख है जिसके विषय मे कहा है कि उनका यश श्रेष्ठ होगा। महाभारत के अन्य पर्वों मे बहुत से स्थलो पर महर्षि वाल्मीकि का उल्लेख है, उदाहरणार्थ—आदि पर्व ५०, १४, सभापर्व ७, १४, वनपर्व ८३, १०२, उद्योग पर्व ८१, २७। विशेषज्ञो (हॉप्किन्स, सुकठणकर) के अनुसार द्रोण पर्व का वर्त्तमान रूप बहुत ही परिवर्द्धित है और शाति पर्व तथा अनुशासन पर्व निश्चित रूप से अर्वाचीन है। डॉ० एस० के० दे ने पूनासस्करण मे द्रोण पर्व की रामकथा को प्रक्षिप्त माना है। अतः बहुत सभव है कि महाभारत के व्यासो ने अपेक्षाकृत अर्वाचीन काल मे कवि वाल्मीकि का परिचय प्राप्त किया है और ये बहुसख्यक स्थल आदि कवि वाल्मीकि से भिन्न किसी अन्य वाल्मीकि नामक ऋषि से सम्बन्ध रखते हो। जो कुछ भी हो इन स्थलो पर जीवन-वृत्त विषयक सामग्री नही मिलती। इस प्रकार हमे आदिकवि से भिन्न तीन अन्य वाल्मीकियो का पता मिल गया है—वैयाकरण वाल्मीकि, सुपर्ण वाल्मीकि तथा महर्षि वाल्मीकि।

(आ) बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड

३०. बालकाण्ड के रचनाकाल के समय तक आदिकवि वाल्मीकि तथा प्राचीन ऋषिवर वाल्मीकि की अभिन्नता सर्वमान्य होने लगी थी तथा वाल्मीकि को रामायण की घटनाओ का समकालीन माना गया था।

१ दे० ए० सी० दास, ऋग्वेदिक इण्डिया, पृ० ६५ और १४८।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

के दक्षिण मे ही थी, क्योकि लक्ष्मण और सीता अयोध्या से आकर गगा पार करने के वाद ही वाल्मीकि के आश्रम के निकट पहुँचते हैं (दे० सर्ग ४७)। शत्रुघ्न के विषय मे कहा जाता है कि वाल्मीकि-आश्रम से पश्चिम की ओर जाते हुए वह 'यमुनातीरम्' पर उतरते है (सर्ग ६६, १५)। वाद मे एक अन्य परम्परा प्रचलित होने लगी, जिसके अनुसार वाल्मीकि का आश्रम गगा के उत्तर मे माना जाता था ; रामायण के टीकाकार कतक तथा गोविन्दराज उपर्युक्त 'यमुनातीरम्' के स्थान पर 'गगातीरम्' शुद्ध मानते है।

रामायण के दाक्षिणात्य पाठ[1] के एक प्रक्षेप के अनुसार जो अन्य दो पाठो मे नही मिलता, राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट के निकट ही वाल्मीकि के आश्रम मे पहुँचते हैं .

इति सीता च रामस्य च लक्ष्मणश्च कृतांजलिः।
अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभिवादयन् ॥१६॥
(अयोध्याकाड, सर्ग ५६)

इसके अनुसार अध्यात्म रामायण (२, ६), आनन्द रामायण (१, ६), रामचरित-मानस (२, १२४) आदि वहुसख्यक अर्वाचीन राम-कथाओ मे वाल्मीकि का आश्रम यमुना के पार चित्रकूट के पास ही स्थित है । आजकल भी यह बाँदा जिले मे माना जाता है।

(इ) भार्गव वाल्मीकि

३२. प्रचलित वाल्मीकि-रामायण मे भार्गव च्यवन का दो प्रसगो मे उल्लेख हुआ है—वालकाण्ड मे सगर की कथा के अतर्गत (सर्ग ७०, ३२) तथा उत्तरकाण्ड मे लवणवध के वृत्तान्त मे (सर्ग ६०-६४)। इन स्थलो पर भार्गव च्यवन तथा वाल्मीकि के किसी सम्वन्ध का सकेत नही मिलता, किन्तु फिर भी उत्तरकाण्ड के रचनाकाल के समय तक वाल्मीकि का सम्वन्ध भार्गवो से जोडा गया था क्योकि वाल्मीकि को प्रचेता का दसवाँ पुत्र माना गया है[2]। वाद मे वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई है।

---

१. केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० २, १०५, १४) मे भरत के वाल्मीकि आश्रम होकर चित्रकूट पहुँचने का उल्लेख है ।

२ प्रचेता तथा वरुण एक है (दे० कुमारसभव २, २१), ऋग्वेद (६, ६५ और १०, १६) मे भृगु का नाम वारुणि माना गया है तथा शतपथ व्राह्मण मे इसका स्पष्ट उल्लेख है कि भृगु वरुण के पुत्र है (दे० ११, ६, १, १)। भागवत पुराण मे कहा गया है कि वरुण की पत्नी चर्पणी से दो पुत्र, भृगु तथा वाल्मीकि उत्पन्न हुए थे (दे० ६, १८, १)।

महाभारत में रामचरित के रचयिता भार्गव का जो उल्लेख है वह वाल्मीकि ही प्रतीत होता है क्योंकि जिस श्लोक का उल्लेख है वह प्रचलित रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के एक श्लोक से मिलता जुलता है :

श्लोकश्चायं पुरा गीतो भार्गवेण महात्मना ।
आख्याते रामचरिते नृपति प्रति भारत ॥४०॥
राजानं प्रथम विन्देत् ततो भार्या ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकस्य कुतो भार्या कुतो धनम् ॥४१॥
(शांतिपर्व ५७)

अराजके धनं नास्ति नास्ति भार्याप्यराजके ।
इदमत्याहितं चान्यत्कुतः सत्यमराजके ॥११॥
(अयोध्याकाण्ड ६७)

परवर्ती रचनाओं में वाल्मीकि को बहुधा भार्गव[1] माना गया है, उदाहरणार्थ विष्णुपुराण (३, ३, १८) और मत्स्यपुराण (१२, ५१)। ऐसा प्रतीत होता है कि भार्गव च्यवन तथा वाल्मीकि के वृत्तान्तों के सम्मिश्रण से वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई हो। 'वाल्मीकि' की व्युत्पत्ति प्रायः 'वल्मीक' से मानी जाती है, अतः यह कथा प्रचलित होने लगी कि वाल्मीकि वास्तव में वल्मीक (दीमकों की बाँबी) से निकला था। अब ध्यान देने योग्य है कि भार्गव च्यवन के विषय में इस प्रकार की कथा व्यापक रूप से प्रचलित थी। महाभारत के आरण्यक पर्व के अनुसार भृगु के पुत्र च्यवन तपस्या करते हुए इतने समय तक निश्चल खड़े रहे कि उनका शरीर वल्मीक से आच्छादित हो गया था। राजपुत्री सुकन्या ने उनको अंधा बना दिया और बाद में उससे विवाह भी कर लिया (अध्याय १२२)। यह वृत्तान्त भागवत पुराण (९, ३), स्कंद पुराण (आवन्त्य खण्ड, चतुरशीतिलिंग माहात्म्य, अध्याय २० और प्रभास खण्ड, प्रभासक्षेत्र माहात्म्य, अध्याय २८१), देवी भागवत पुराण (६, २-३) और पद्मपुराण (पातालखण्ड, अध्याय १४) में भी मिलता है।

वाल्मीकि तथा च्यवन दोनों के विषय में माना गया कि वे वल्मीक से निकले थे, इसी कारण दोनों की कथाओं का सम्मिश्रण स्वाभाविक प्रतीत होता है। एक ओर से वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि दी गई है तथा दूसरी ओर च्यवन का संबंध रामकथा से जोड़ा गया। कृत्तिवास रामायण में तो वाल्मीकि को च्यवन का पुत्र बना

---

१ रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ में अन्तिम श्लोक में वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि दी गई है (उ० ७, १२२, ३१)।

दिया गया है। अश्वघोष अपने बुद्धचरित मे कहते है कि जिस काव्य की रचना करने मे च्यवन समर्थ नही थे, उसकी वाल्मीकि ने सृष्टि की :

वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्य
जग्रन्थ यन्न च्यवनो महर्षि.[1] ॥१,४३॥

(इ) दस्यु वाल्मीकि

३३ एक परम्परा के अनुसार वाल्मीकि पहले डाकू थे और दीर्घकालीन तपस्या के पश्चात् ही रामायण की रचना करने मे समर्थ हुए, इस कथा की प्राचीनता के सम्बन्ध मे सन्देह है। स्कद पुराण मे इसका पहले पहल विकसित रूप मिलता है, इस पुराण की अधिकाश सामग्री आठवी शताब्दी ई० के बाद की है, और इसमे बहुत से प्रक्षेप जोडे गए है जिनका रचनाकाल अज्ञात है[2]। फिर भी महाभारत के अनुशासन पर्व मे प्रस्तुत कथा का एक प्रकार से प्रथम आभास विद्यमान है। वाल्मीकि युधिष्ठिर से कहते है कि किसी विवाद मे मुनियो ने मुझको ब्रह्मघ्न कहा था। इस कथन मात्र से मैं पापी बन गया था। मैंने शिव की शरण ली और उन्होंने मुझको पाप से मुक्त करके कहा—"तेरा यश श्रेष्ठ होगा" :

वाल्मीकिश्चाह भगवान्युधिष्ठिरमिदं वचः ।
विवादे साग्निमुनिभिर्ब्रह्मघ्नो वै भगवानिति ॥८॥
उक्तः क्षणेन चाविष्टस्तेनाधर्मेण भारत ।
सोऽहमीशानमनघममोघं शरण गतः ॥९॥
मुक्तश्चास्मि ततः पापैस्ततो दुःखविनाशनः ।
आह मां त्रिपुरघ्नो वै यशस्तेऽग्र्यं भविष्यति ॥१०॥
(अध्याय १८)

इस उद्धरण मे एक वाल्मीकि की चर्चा है, जिसके बारे मे कहा जाता है कि उनका यश श्रेष्ठ होगा, अतः उसे आदिकवि मानना युक्तियुक्त ही है। उनको अग्निहोतृ मुनियो के शाप से ब्रह्महत्या का दोष लगा था, आगे चलकर उनका वास्तव मे ब्रह्मघ्न तथा दस्यु माना जाना अनुशासन पर्व के इस प्रसंग का स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है।

३४. स्कंद पुराण मे वाल्मीकि के विषय मे चार कथाएँ सुरक्षित हैं। वैष्णव खंड के वैशाखमासमाहात्म्य मे एक व्याध का वृत्तान्त मिलता है, जिसका नाम नही दिया

---

१. ई० एच० जॉन्स्टन का सस्करण (कलकत्ता १९३५), ई० बी० कावेल के सस्करण मे पाठ इस प्रकार है—"वाल्मीकिनादश्च ससर्ज पद्यम्"।
२. दे० आर० सी० हाजरा, पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० १६५।

गया है। वह रामनाम का जप करने के फलस्वरूप यह वरदान प्राप्त कर लेता है कि वह अपने अगले जन्म में वल्मीक नामक ऋषि के कुल में उत्पन्न होगा तथा वाल्मीकि का नाम धारण कर यशस्वी बन जाएगा। कृणु नामक तपस्वी के शरीर के चारों ओर वल्मीक बन गया था जिससे उसका नाम वल्मीक ही पड़ा था। व्याध उसी वल्मीक के पुत्र के रूप में प्रकट हुआ, वाल्मीकि के नाम से विख्यात होने लगा और दिव्य रामकथा की रचना करने में समर्थ हुआ (दे० अध्याय २१)।

प्रस्तुत कथा में वाल्मीकि अपने पूर्वजन्म में ही व्याध थे तथा उनके पिता के शरीर में वाल्मीक बन गया था। स्कंद पुराण की अन्य कथाएँ लोकप्रसिद्ध वृत्तान्त के अधिक निकट हैं, किन्तु उनमें रामनाम-जप का उल्लेख नहीं है। अवंतीखंड के आवन्त्य क्षेत्रमाहात्म्य (अध्याय २४) में अग्नि शर्मा की कथा वर्णित है। वह डाकू था; किसी दिन सात ऋषियों से उसकी भेंट हुई। वह उनको मार डालना ही चाहता था कि ऋषियों ने उसे उसके परिवार से यह पूछने भेजा कि "क्या तुम लोग मेरे पाप-कर्म के भागी बनने के लिए तैयार हो?" इस पर परिवार ने इनकार किया। अग्नि शर्मा ऋषियों के पास लौटा और उनका परामर्श हृदयंगम कर ध्यान तथा मंत्रजप करने लगा। १३ वर्ष के बाद सात ऋषि फिर उस स्थान पर पहुँचे और उन्होंने उसके शरीर के चारों ओर वल्मीक बना हुआ देख लिया। तब उन्होंने उसको निकालकर उसका नाम वाल्मीकि रखा और उसको रामायण लिखने का आदेश दिया।

नागर खंड में लोहजंघ नामक द्विज की कथा मिलती है (दे० अध्याय १२४)। वह पितृमातृपरायण होने के कारण अकाल के समय अपने परिवार का पालन करने के लिए दस्यु बन जाता है। सप्तर्षियों से भेंट होती है तथा अन्य वृत्तान्तों की भाँति उसका परिवार उसके पाप का भागी बनने से इनकार करता है। वह ऋषियों के पास लौटता है और वे उसको "जाटघोट" मंत्र पढ़ाकर चले जाते हैं। बाद में सप्तर्षि उस जगह होकर लौटते हैं; वे लोहजंघ को कुमंत्र द्वारा भी सिद्धि-प्राप्त पाते हैं तथा उसका शरीर वल्मीक से समावृत देखकर उसे वाल्मीकि नाम देते हैं।

प्रभासखंड के प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य (दे० अध्याय २७८) में निम्नलिखित कथा है। शमीमुख नामक ब्राह्मण का पुत्र वैशाख चोरी द्वारा अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। सप्तर्षियों से भेंट होने पर वह अपने परिवार से सुन लेता है कि वे उसके दोष के भागी नहीं बनना चाहते हैं। इस पर वह वैरागी बनकर हजारों वर्ष तक तपस्या और जप करता है तथा उसका शरीर वल्मीक से समावृत हो जाता है। सप्तर्षि लौटते हैं और उसका नाम वाल्मीकि रखकर भविष्यवाणी करते हैं कि वह रामायण की रचना करेगा :

स्वच्छन्दा भारती देवी जिह्वाग्रे ते भविष्यति ।
कृत्वा रामायणं काव्यं ततो मोक्षं गमिष्यसि ॥

३५ उपर्युक्त कथाओं का सबसे प्रचलित रूप[1] अध्यात्म रामायण के अयोध्या काड (सर्ग ६, श्लोक ४२-८८) में मिलता है । राम, लक्ष्मण और सीता निर्वासित होकर चित्रकूट के पास पहुँचे, उन्होंने अपना निवास-स्थल निश्चित करने के लिए वाल्मीकि का परामर्श माँगा . वाल्मीकि ने राम की स्तुति करने के पश्चात् रामनाम-माहात्म्य दिखलाने के उद्देश्य से अपनी कथा सुनाई :

अहं पुरा किरातेषु किरातैः सह वर्धितः ।
जन्ममात्रद्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा ॥६५॥

"मैं पहले किरातों के साथ रहा करता था और निरन्तर शूद्रों के आचरण में रत रहने के कारण मेरा ब्राह्मणत्व जन्म मात्र का था । शूद्रा के गर्भ से मेरे बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए । चोरों के कुसग से मैं भी चोर बन गया था और सदा धनुष-बाण धारण किये रहता था । एक दिन मैंने सात मुनियों को जाते देखा और उनके वस्त्र इत्यादि छीनने के उद्देश्य से उन्होंने घोर वन में रोक लिया : मुनियों ने कहा कि जिन कुटुम्बियों के लिए तुम नित्य पाप सचय करते हो उनसे जाकर पूछ लो कि वे तुम्हारे अधर्म के भागी बनने के लिये तैयार हैं कि नहीं । मैंने जाकर पूछा और मुझे उत्तर मिला—"यह पाप तो तुम्हीं को लगेगा; हम केवल धन के ही भोगने वाले हैं" । यह सुनकर मुझे वैराग्य उत्पन्न हुआ और मैंने उन मुनियों की शरण ली । हे राम ! मुनियों ने आपस में परामर्श किया और आपके नामाक्षरोंको उलटा कर मुझसे कहा—तुम इसी स्थान पर एकाग्रचित्त होकर निरन्तर 'मरा' का जप करो (एकाग्रमनसात्रैव मरेति जप सर्वदा) । मैंने ऐसा ही किया । निश्चल खड़ा रहने के फलस्वरूप मेरे ऊपर वल्मीक बन गया । एक सहस्त्र युग बीतने पर वे ऋषि लौटे और उन्होंने मुझको निकलने का आदेश देकर कहा—"हे मुनिवर ! तुम वाल्मीकि हो । इस समय तुम वल्मीक से निकले हो, अतः तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ ।"

रामचरित मानस के कई स्थलों पर उपर्युक्त कथा की ओर सकेत मिलते हैं —

जान आदि कवि नाम प्रतापू ।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥५॥
(बालकाण्ड, दोहा १९)

---

१. मद्रास कैटालॉग (आर ३८१४) में जैमिनी रामायण की पुष्पिका इस प्रकार है—इति जैमिनीरामायणे रामनाममाहात्म्ये व्याधस्य सप्तर्षिदर्शनम् ।

उलटा नामु जपत जगु जाना।
बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥८॥
(अयोध्याकाण्ड, दोहा १९४)

गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना (छंद)
(उत्तरकाण्ड, दोहा १३०)

३६ तत्वसंग्रह रामायण मे जो दस्यु वाल्मीकि की कथा मिलती है इसमे कई अलौकिक घटनाओ का सन्निवेश किया गया है। जब व्याध अपने परिवार की ओर से निराश होकर सप्तर्षियो के पास पहुँचा, तो वे व्याध को राम की महिमा समझाने लगे। उस समय एक आकाशवाणी सुनाई दी और सप्तर्षियो को आदेश मिला कि वे व्याध को 'म-रा' मत्र सिखावे। इसके बाद व्याध तपस्या करने लगा और उसके शरीर के चारो ओर वल्मीक बनने लगा। यह देखकर इन्द्र घबराने लगे किन्तु बृहस्पति ने उनको समझाया कि वह तपस्वी महर्षि बनकर रामायण की रचना करने वाला है। बहुत समय बीत जाने पर जब सप्तर्षि लौटे तब देवता भी आ पहुँचे और विष्णु ने वाल्मीकि को आशीर्वाद दिया कि वह रामायण के रचयिता बन जायेंगे। इस पर वाल्मीकि ने नारायण की स्तुति की तथा वह जाकर तमसा नदी के तट पर रहने लगे। वही पर उन्होंने नारद से राम-कथा सुनकर रामायण लिखने का निर्णय किया (दे० अयोध्या काण्ड, अध्याय २२–३०)[१]।

३७. आनन्द रामायण के राज्यकाण्ड (अध्याय १४) मे जो विस्तृत कथा मिलती है, उसमे वाल्मीकि के तीन पहले जन्मो का वर्णन किया गया है। पहले जन्म मे वह स्तभ नामक ब्राह्मण है, द्वितीय जन्म मे वह व्याध है, तीसरे जन्म मे वह कृणु का पुत्र है और तपस्या करने के पश्चात् वाल्मीकि बन जाता है। इस वृत्तान्त की अधिकाश सामग्री अध्यात्म रामायण तथा स्कद पुराण के वैष्णव खड की कथाओ से ली गई है। आनन्दरामायण के वृत्तान्त का साराश इस प्रकार है: शाकल नगर का निवासी, श्रीवत्सगोत्र का स्तभ नामक ब्राह्मण महापापी था। एक वेश्या मे आसक्त होने के कारण वह नित्यक्रिया छोड़कर शूद्रवत् आचार किया करता था। फिर भी किसी दिन उसके यहाँ एक ब्राह्मण का आतिथ्य-सत्कार हुआ और उसी पुण्य के फल-स्वरूप उसका उद्धार सभव हुआ। स्तभ अपनी मृत्यु-शय्या पर उस गणिका का स्मरण

१. तत्वसग्रह रामायण के उत्तरकाण्ड मे वाल्मीकि विषयक एक अन्य कथा मिलती है जो सीतात्याग के परोक्ष कारणो से सम्बन्ध रखती है। (दे० चतुर्थ भाग, अनु० ७२६)।

करते-करते चल वसा, इसी कारण से उसे व्याध-का जन्म मिला और वह वेश्या भिल्लिनी के रूप मे प्रकट होकर उसकी पत्नी वन गई। किसी दिन इस व्याध ने पषातीर के पास शख नामक ब्राह्मण का सर्वस्व लूट लिया। वाद मे यह देखकर कि पथरीली जमीन पर चलने मे ब्राह्मण को बहुत कष्ट हो रहा है उसने उनको उनके जूते लौटाए। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया और व्याध को यह भी वतलाया कि पूर्वजन्म मे ब्राह्मण के आतिथ्यसत्कार के पुण्य के फल-स्वरूप उसे आज जूते लोटाने की सद्बुद्धि उत्पन्न हो गई है। इसके वाद ब्राह्मण ने भविष्य का उद्घाटन किया—"कृणु नामक मुनि घोर तपस्या करेगे, उनके नेत्रो से वीर्य वह जायगा, जिसे एक साँपिन खाकर गर्भवती होगी। उस सर्पिणी से तुम्हारा जन्म होगा, किरात लोग तुम्हारा पालन करेगे और तुम भी किरात वन जाओगे। तुमने आज जो मेरे उपानह लौटाए इस पुण्य के प्रभाव से सात मुनियो से तुम्हारी भेट होगी। उनके आशीर्वाद से तुम वाल्मीकि वनकर राम-कथा लिखोगे।" ऐसा ही हुआ, व्याध सर्पिणी के गर्भ से जन्म लेकर किरातो-द्वारा पाला गया। यहाँ से लेकर अध्यात्म रामायणकी उपर्युक्त समस्त कथा प्राय. एक ही शब्दावली मे दुहराई जाती है। अत मे रामायण की उत्पत्ति के विषय मे कहा गया है कि शभु ने ब्रह्मा को रामचरित सुनाया था, नारद ने उसे ब्रह्मा से सुन लिवा और वाद मे उसे वाल्मीकि को सुनाया। तव क्रौंचवध के अवसर पर श्लोक की उत्पत्ति के पश्चात् वाल्मीकि ने **'शतकोटिविस्तरम्'** रामायण की रचना की।

३८. **कृत्तिवासीय रामायण** मे अध्यात्म रामायणकी कथा का किंचित परिवर्द्धित रूप पाया जाता है। व्याध का नाम **रत्नाकर** है और वह च्यवन का पुत्र माना जाता है—**च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर**। सात मुनियो के स्थान पर ब्रह्मा और नारद से भेट होने का वर्णन है। वैराग्य उत्पन्न होने के वाद रत्नाकर ब्रह्मा के कहने पर नदी मे नहाने जाता है। नदी पर उसकी दृष्टि पडते ही वह सूख जाती है। तव ब्रह्मा रत्नाकर को रामनाम का जप करने का परामर्श देते है किन्तु उसका पापी मुँह इस पावन नाम का उच्चारण करने मे असमर्थ है। इस पर रत्नाकर को **'म-रा'** जपने का परामर्श दिया जाता है।

तोरवे रामायण (१,२) के अनुसार भरद्वाज ने क्रौंच नामक वन मे रहने वाले व्याध को आशीर्वाद दिया। वाद मे उस व्याध ने वहुत समय तक तपस्या की और ब्रह्मा ने उसे परमर्षित्व प्रदान किया। वह वल्मीक (वाँवी) से निकला, जिससे वह वाल्मीकि कहलाने लगा।

एक अन्य कथा के अनुसार शिव और नारद से व्याध की भेट होती है[1]। डे

१. दे० इ' ए० भाग ३१, पृ० ३५।

पोलिये के अनुसार वाल्मीकि दो ऋषियो के कहने पर बारह वर्ष तक तपस्या करके 'भावी रामायण' लिखने मे समर्थ हुए[1]। डब्लू० क्रूक[2] ने इस कथा का एक और रूप पाया था, इसके अनुसार परमेश्वर ने गुरु नानक को वाल्मीकि के पास भेजा था, गुरु नानक के अनुरोध पर वाल्मीकि ने अपनी पत्नी से पूछा—क्या तुम मेरे लिए प्राण देने को तैयार हो? नकारात्मक उत्तर सुनकर वाल्मीकि तपस्वी के रूप मे चंडालगढ (चूनार, उ० प्र०) के गदा पहाड पर निवास करने लगे। वह स्थान बाद मे भगियो का तीर्थ-स्थान बन गया। बलरामदास के उत्तर काण्ड मे वाल्मीकि की पत्नी का नाम धर्मवती है।

३६ उपर्युक्त कथा मे वाल्मीकि तथा भगियो का जो सम्बन्ध सूचित किया गया है वह कई शताब्दियो से चला आ रहा है। भक्तमाल (कवित्त-७२) मे वाल्मीकि को श्वपच कहा गया है तथा गोस्वामी तुलसीदास भी अपनी विनय पत्रिका मे लिखते हैं—स्वपच-खल-भिल्ल-जमनादि हरि लोकगत नामबल (दे०४६,६)। आजकल उत्तर भारत के हिन्दू भगी अपने को वाल्मीकि के भक्त मानकर उनकी पूजा करते हैं[3]। पजाब मे यह कथा प्रचलित है कि जब तक नागरिक भगियो की ओर देखने से इनकार करते थे तब तक वाल्मीकि की लाश प्रति-दिन बनारस मे दिखाई पडती थी[4]। मुसलमान भगी अपने को लालबेगी कहकर पुकारते हैं, उर्दू लिपि मे वाल्मीकि को आसानी से लालबेग पढा जा सकता है। डॉ० हरदेव बाहरी[5] ने कई कथाओ का सकलन किया है, जिनमे लालबेग की उत्पत्ति वाल्मीकि से जोडी जाती है। एक कथा के अनुसार ब्रह्मा ने वाल्मीकि को अपने सिंहासन के सामान झाडने का कार्य सौंपा था। एक दिन ब्रह्मा ने वाल्मीकि को एक कपडा भेट दिया था जिसे वाल्मीकि ने घर जाकर एक कोने मे रख दिया। उसमे से एक बच्चा निकलते देखकर वाल्मीकि ब्रह्मा के पास दौडे। ब्रह्मा ने समाचार सुनकर कहा—"तुम बूढे हो चले हो, तुम्हारे मरने के बाद यह बालक भगियो का गुरु

---

१. दे० मिथॉलॉजी डेस इ दू, भाग १, पृ० १७८। इस वृत्तान्त मे वाल्मीकि को ब्रह्मा का अवतार माना गया है। दे० आगे अनु० ३६।

२ दे० ट्राइब्स एड कास्ट्स, भाग १, पृ० २६२-३।

३ कलकत्ते मे अनुसूचित जातियो द्वारा हर साल आश्विन पूर्णिमा (कार्तिक-स्नानारम्भ) के दिन वाल्मीकि की जयन्ती धूमधाम से मनाई जाती है।

४. दे० आर० सी० टेपल, लेजंड्स ऑव दि पजाब, भाग १, पृ० ४२६ और इं० ऐं०, भाग २७, पृ० ११२।

५. दे० लाल बेग की उत्पत्ति; जनपद (बनारस) भाग १; अक ३, पृ० १६-२१।

बन जायगा"। वाल्मीकि ने उसका पालन किया और वह बाद मे लालबेग के नाम से विख्यात हुआ।

ब्रह्मा और वाल्मीकि का सम्बन्ध अपेक्षाकृत प्राचीन है। सारलादास के उडिया महाभारत[1] के अनुसार वाल्मीकि का जन्म इस प्रकार हुआ था • ब्रह्मा किसी समय गगातट के मनुमेखला नामक स्थान पर तपस्या करने गये थे। वहाँ आठ देवकन्याओं को स्नान के पश्चात् गगा से निकलते देखकर ब्रह्मा का वीर्यपात हुआ था। उन्होंने वीर्य का एक अंश मेरु पर्वत पर फेक दिया जिससे मेरुशूल ऋषि की उत्पत्ति हुई ; शेष वीर्य नदी के वालू पर फेका गया और उससे वाल्मीकि उत्पन्न हुए। उडिया मे वालू को वालि कहते हैं ; सभव है वालि और वाल्मीकि का सादृश्य इस कथा की कल्पना मे सहायक हुआ हो। इस कथा मे वाल्मीकि एक तपस्वी के तेज से उत्पन्न होता है। श्री रघुराज सिंह की रामरसिकावली मे भी ऐसा माना गया है। वाल्मीकि की कथा के अन्तर्गत कहा है कि एक मुनिराज की तपश्चर्या मे किसी अप्सरा के विघ्न डालने के फलस्वरूप उस मुनि का वीर्यपात हुआ था। उर्वशी ने वीर्य एक कुम्भ मे रख दिया और उससे अगस्त्य और वसिष्ठ का जन्म हुआ। किन्तु तेज का कुछ अश घास पर गिर गया और गया और उससे एक शिशु उत्पन्न हुआ, जिससे एक किरातिनी ने अपना लिया :

रेत शेष रहिगो कुश माही।
ताते एक शिशु भयो तहाँ ही॥
ताहि किरातिनि लै घर आई।
अपनी विद्या सकल पढ़ाई॥

भगियो द्वारा जो वाल्मीकि की पूजा होती है, इसकी प्राचीनता तो सदिग्ध है, फिर भी इसमे सन्देह नही है कि पाँचवी शताब्दी ई० तक राम की भाँति वाल्मीकि को भी विष्णु का अवतार माना गया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण की रचना पाँचवी श० ई० मे हुई थी , इसके प्रथम खण्ड मे लिखा है कि त्रेता युग के अन्त मे विष्णु वाल्मीकि के रूप मे जन्म लेकर रामायण लिखने वाले थे (दे० अध्याय ७४, ३८)। इस रचना के तृतीय खण्ड मे कई स्थलो पर[2] वाल्मीकि की पूजा का उल्लेख हुआ तथा प्रतिमा-लक्षणम् के अतर्गत वाल्मीकि की मूर्ति के विषय मे लिखा है -

गौरस्तु कार्यो वाल्मीकिर्जरामंडलदुर्दशः।
तपस्यभिरतः शान्तो न कृशो न च पीवरः॥६४॥
(खंड ३, अध्याय ८५)

---

१. दे० सभा पर्व, पृ० २५०। प्रकाशक-राधारमण पुस्तकालय, कटक, १९५२।

२. दे० अध्याय ११८, ८ ; ११९, ५ , १२०, ५। ११८ वे अध्याय मे कहा गया है कि "विद्याकामोऽथ वाल्मीकि व्यास चाप्यथ पूजयेत्।"

बृहद्धर्म पुराण (१३ वीं शत०) के मध्य खण्ड (अध्याय ११) में सती विष्णु को वह वरदान देती है कि वह वाल्मीकि के रूप में महाकाव्य की रचना करें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्द चीन में जो वाल्मीकि मंदिर में वाल्मीकि की मूर्ति तथा उनके विष्णु-अवतार होने का शिलालेख मिला है वह भारत में प्रचलित विश्वास पर आधारित है (दे० आगे अनु० ३२३)।

(उ) संहार

४०. प्रस्तुत विवेचन का निष्कर्ष यह है कि वैयाकरण वाल्मीकि तथा सुपर्ण वाल्मीकि के अतिरिक्त महाभारत के प्राचीनतम पर्वों में जिन महर्षि वाल्मीकि की चर्चा है वह आदि-कवि वाल्मीकि से भिन्न प्रतीत होते हैं।

रामायण के बालकाण्ड से पता चलता है कि लगभग प्रथम शताब्दी ई० पू० से आदि-कवि वाल्मीकि तथा महर्षि वाल्मीकि की अभिन्नता सर्वमान्य होने लगी थी तथा वाल्मीकि को रामायण की घटनाओं का समकालीन बना दिया गया था। उत्तरकाण्ड के रचना काल में वाल्मीकि का अयोध्या के राजवंश से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया गया था। वाल्मीकि दशरथ के सखा माने गए, उनके आश्रम में सीता के पुत्र उत्पन्न हुए और उनके शिष्य बन गए तथा राम के अश्वमेध के अवसर पर वाल्मीकि ने सीता के सतीत्व का साक्ष्य दिया। उस समय तक उनको ब्राह्मण की उपाधि भी मिल गई थी और वह प्रचेता के दसवें पुत्र माने जाने लगे। बाद में उनको विष्णु का अवतार भी माना गया है।

वाल्मीकि नाम की व्युत्पत्ति के आधार पर यह प्रसिद्ध होने लगा कि तपस्या करते समय उनका समस्त शरीर वाल्मीक से समावृत हो गया था। दूसरी ओर महाभारत के अनुसार भार्गव च्यवन के विषय में भी इस प्रकार की कथा प्राचीन काल से ही प्रचलित थी। इससे संभवतः च्यवन और वाल्मीकि के वृत्तान्तों का सम्मिश्रण हुआ और वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि मिल गई।

महाभारत के अनुशासन पर्व में वाल्मीकि को किसी विवाद में एक बार 'ब्रह्मघ्न' कहे जाने का उल्लेख है। क्या वाल्मीकि की इस निन्दा के वृत्तान्त में उनकी नीच जाति प्रतिध्वनित है? क्या इसीलिए रामायण के उत्तरकाण्ड में उनके हजारों वर्ष तक तपस्या करने पर इतना बल दिया गया है? यह कष्ट-कल्पना नहीं कही जा सकती है। बालकाण्ड में इसका स्पष्ट उल्लेख है कि वाल्मीकि के शिष्य कुशीलव ही थे और कुशीलवों का समाज में कोई विशेष आदर नहीं था, जैसे कि उनके नाम ही से (कु-शील) प्रतीत होता है[1]। जो कुछ भी हो अनुशासन पर्व के इस प्रसंग से उन कथाओं का विकास हुआ

---

१. अर्थशास्त्र में लिखा है कि शूद्रों का धर्म है—द्विजाति की सेवा, वार्ता,

होगा जिनमे तपस्या करने के पूर्व वाल्मीकि के दस्यु होने का वर्णन है। उन कथाओ के मूल रूप मे रामनाम का उल्लेख नही है, रामभक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् ही वाल्मीकि का यह वृत्तान्त रामनाम के गुणगान मे परिणत कर दिया गया है।

शिल्प तथा कुशीलव-कर्म (शूद्रास्य द्विजातिशुश्रुषा वार्त्ता कारुकुशीलवकर्म, प्रकरण १, पद ३)। गणिकाध्यक्ष नामक प्रकरण मे इसका उल्लेख है कि आठ वर्ष तक राजा के लिए कुशीलव-कर्म करने से वेश्या पुत्र अपने को मुक्त कर सकता है (प्रकरण ४३, २)। बाद मे कुशीलवो ने राम के पुत्रो के नाम कुश और लव रखकर अपने ही नाम की एक नयी व्युत्पत्ति की कल्पना की है।

अध्याय ३

महाभारत की रामकथा

क—महाभारत और रामायण

४१ रामायण मे महाभारत के वीरो का निर्देश भी नही मिलता। दूसरी ओर महाभारत मे न केवल राम-कथा का वरन् वाल्मीकिकृत रामायण का भी उल्लेख पाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि रामायण की रचना के पश्चात् ही महाभारत को अपना वर्तमान रूप मिला है। फिर भी बहुत सभव है कि भारत (अर्थात् महाभारत का प्राचीनतम रूप) रामायण के पूर्व उत्पन्न हुआ था। चतुर्विंशतिसाहस्री भारतसहिता (दे० १, १, ६१) तथा 'शतसहस्रम्' (दे० १, ५६, १३ ३२) महाभारतम्, इन दो सोपानो का महाभारत ही मे उल्लेख मिलता है। प्राय. समस्त विद्वानो की सम्मति से रामायण का रचनाकाल भारत तथा महाभारत के बीच मे माना जाता है[1]। शाखायन आदि सूत्रो तथा पाणिनि मे भारत के विषय मे निर्देश मिलते है, रामायण के विषय मे नही। अत ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की रचना रामायण के पूर्व हो चुकी थी। यह निर्विवाद है कि भारत तथा रामायण स्वतन्त्र रूप से उत्पन्न हुए—भारत पश्चिम मे तथा रामायण पूर्व मे। दोनो के सपर्क के पश्चात् भारत ने महाभारत का रूप धारण कर लिया है[2]।

महाभारत मे रामकथा के जो विभिन्न रूप मिलते हैं, उनका निरूपण अगले परिच्छेद मे किया जायगा। यहाँ पर महाभारत मे रामायण तथा वाल्मीकि-सबन्धी उल्लेखो पर विचार किया जाता है।

आरण्यकपर्व मे भीम हनुमान के विषय मे कहते हैं कि वह रामायण मे प्रसिद्ध है :

भ्राता मम गुणश्लाघ्यो बुद्धिसत्त्वबलान्वितः ।
रामायणेऽतिविख्यातः शूरो वानरपुंगवः ।।११।।

(अध्याय १४७)

---

१ दे० पी० वी० काणे, ऐनल्स ऑव दि भण्डारकर ऑरियेटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट। भाग ४७, पृ० २० और २६।

२ दे० ई० डब्लू० हॉप्किस—दि ग्रेट एपिक्, पृ० ५८ आदि, वी० एस० सुकठणकर : एनल्स भडारकर इन्टीट्यूट, भाग १८, पृ० १-७६, एम० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग १, पृ० ५०० आदि।

स्वर्गारोहणपर्व मे भी रामायण का स्पष्ट उल्लेख मिलता है :

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भारतर्षभ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ॥९३॥
(अध्याय ६)

यह श्लोक हरिवंश पुराण मे दुहराया गया है (दे०३, १३२, ९५)। महाभारत मे वाल्मीकि का अनेक स्थलों पर तपस्वी तथा महर्षि के रूप मे उल्लेख मिलता है (दे० ऊपर अनु० २६)। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि को कवि भी माना गया है। रामचरित्र के रचयिता भार्गव कवि विषयक श्लोक ऊपर उद्धृत हुआ है (दे० अनु० ३२), एक अन्य स्थल पर वाल्मीकि नामक कवि का भी स्पष्ट उल्लेख हुआ है -

अपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि।
पीडाकरममित्राणां यत्स्यात्कर्तव्यमेव तत् ॥४८॥
(द्रोणपर्व, अध्याय ११८)[1]

इस श्लोक का उत्तरार्द्ध रामायण के उदीच्य पाठ[1] से उद्धृत है (दे० गौ० रा० ६, ६०, २४ तथा प० रा० ६, ५६, २६)। शांतिपर्व मे गोविन्द की महिमा गाने वालों का जो उल्लेख किया गया है इसमे असित, देवल तथा मार्कण्डेय के साथसाथ वाल्मीकि का भी नाम लिया गया है (दे० अध्याय २००, ४)। इससे स्पष्ट है कि महाभारत के रचयिता वाल्मीकिकृत रामायण से अभिज्ञ थे। इसके अतिरिक्त रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण पर निर्भर है (दे० आगे अनु० ४८) तथा नलोपाख्यान के अन्तर्गत भी सुदेव का स्वगत भाषण रामायण से उद्धृत किया गया है[2]। फिर भी महाभारत के प्राचीनतम पर्व न तो रामायण और न कवि वाल्मीकि का उल्लेख करते हैं। इन पर्वों मे केवल राम-कथा के पात्रो की ओर निर्देश किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के कवि राम-कथा और उसके प्रधान पात्रो से परिचित थे। बाद मे महाभारत के रचयिताओ ने वाल्मीकि की रचना से परिचय प्राप्त किया था।

---

१. दा० रा० मे इसका रूप किंचित् भिन्न है (दे० ६, ८१, २८)। तीनो पाठों मे इसके पहले—'न हन्तव्याः स्त्रियः ...'' आता है, यह वाक्यांश महाभारत की बहुत सी उदीच्य हस्तलिपियो मे भी पाया जाता है। पूना संस्करण ने उसे प्रक्षिप्त माना है।

२. दे० वी० एस० सुकठणकर : दि नल एपिसोड ऐंड दि रामायण। ए वाल्यूम ऑव ईस्टर्न ऐण्ड इ डियन स्टडीज, पृ० २९४-३०३।

ख—महाभारत मे रामकथा

४२. महाभारत मे रामकथा का चार स्थलो पर वर्णन किया जाता है। रामोपाख्यान इनमे सब से विस्तृत और महत्वपूर्ण होने के कारण इसका तृतीय परिच्छेद मे अलग विश्लेषण किया जाएगा।

इन चार राम-कथाओ के अतिरिक्त रामकथा तथा रामकथा के पात्रो का उपमाओ आदि के लिए लगभग पचास स्थलो पर उल्लेख हुआ है।[1] युद्ध-सम्बन्धी पर्वो मे द्रोणपर्व सब से अर्वाचीन है। इसमे रामकथा के १४ उल्लेख मिलते है लेकिन अन्य युद्ध-सबधी पर्वो मे (भीष्म, कर्ण तथा शल्य पर्व मे) कुल मिलाकर केवल पाँच उल्लेख किए गए है। आरण्यक पर्व मे राम-कथा का दो बार वर्णन हुआ है और इसके अतिरिक्त रामकथा की ओर पद्रह सकेत मिलते हैं। यह पर्व अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और कथाओ तथा उपाख्यानो का भडार है। नलोपाख्यान, रामोपाख्यान, सावित्री की कथा आदि—ये सब आरण्यक पर्व मे सम्मिलित किए गए हैं। इस पर्व मे राम के अवतार होने का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ४६)।

(१) आरण्यक पर्व की रामकथा (३, १४७, २८-३८)

४३ रामोपाख्यान के अतिरिक्त आरण्यक पर्व मे एक रामकथा और उद्धृत है। भीम-हनुमान् के सवाद के अतर्गत हनुमान् ग्यारह श्लोको मे वनवास और सीताहरण से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी रामकथा सक्षेप मे कहते हैं। इसमे रामावतार तथा राम का ११००० वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख है। वालकाड और उत्तरकाड की सामग्री, लकादहन तथा सीता की अग्निपरीक्षा का कोई उल्लेख नही है।

(२) द्रोणपर्व की रामकथा

४४ द्रोणपर्व तथा शातिपर्व की रामकथा षोडशराजोपाख्यान के अतर्गत मिलती है। पुत्र के मरण के कारण शोकातुर सृञ्जय को सान्त्वना देने के उद्देश्य से नारद ने उनको सोलह राजाओ की कथा सुनाई थी। ये राजा महान् होते हुए भी अपने-अपने समय पर सबके सब मर गये थे (स चेन्ममार सृंजय)। द्रोणपर्व मे अभिमन्युवध के कारण शोकसतप्त युधिष्ठिर को धैर्य देने के लिए व्यास उनको षोडशराजोपाख्यान सुनाते हैं। द्रोणपर्व का यह षोडशराजकीय वास्तव मे शातिपर्व पर निर्भर है। पूना के प्रामाणिक सस्करण मे उसे क्षेपक मानकर परिशिष्ट मे दिया गया है। (दे० परिशिष्ट १, न० ८, पृ० ४३७-४८२ और गोरखपुर सस्करण ७, अध्याय ५६)।

१ डब्लू० हॉप्किस : जर्नल अमेरिकन ओरिएटल सोसाइटी, भाग ५० (१६३०), पृ० ८५-१०३।

इन सोलह राजाओ मे से एक राम भी थे। नारद राम की महिमा का वर्णन करते हुए अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड के अन्त तक रामकथा की रूपरेखा खीचते है। प्रसग के अनुसार रामकथा की अपेक्षा रामराज्य की समृद्धि तथा राम की महिमा को अधिक महत्व दिया गया है। वनवास से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी कथा का वर्णन १० श्लोको मे समाप्त किया जाता है। इसके अनन्तर राम का अभिषेक, राम के गुणो की उत्कृष्टता, रामराज्य मे दुष्टो का अभाव, राम का ११००० वर्ष का शासनकाल तथा उनकी मृत्यु (स चेन्ममार सृंजय)—इन सब का वर्णन २१ श्लोको मे दिया जाता है। इस रामकथा मे भी न तो बालकाड तथा उत्तरकाड की सामग्री सम्मिलित है और न सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख किया गया है। राम सब प्राणियो, ऋषियों, देवताओ तथा मनुष्यो से महान् कहे जाते हैं, फिर भी रामावतार का कही भी उल्लेख नही मिलता।

(३) शांति पर्व की रामकथा (१२, २६, ४६-५५)

४५. प्रसग द्रोणपर्व के समान है लेकिन यहाँ पर कृष्ण युधिष्ठिर को षोडशराजोपाख्यान सुनाते है। द्रोणपर्व तथा शातिपर्व की रामकथाओ का अन्तर यह है कि शांति पर्व मे राम-कथा की सामग्री नही के बराबर है। केवल रामराज्य तथा राम की महिमा का वर्णन किया गया है। फिर भी चौदह वर्ष के वनवास का उल्लेख किया गया है जिससे स्पष्ट है कि लेखक रामकथा से अनभिज्ञ नही था। उसने प्रसग के अनुसार (महान् होते हुए भी मर जाना—स चेन्ममार सृञ्जय, दे० श्लोक ५५) केवल राम तथा उनकी महिमा पर ध्यान दिया है। यहाँ पर भी रामावतार का सकेत नही मिलता किन्तु राम के अश्वमेध तथा १०००० वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख किया गया है :

दशाश्वमेघाञ्जारूथ्यानाजहार निर्गलान् ।।५३।।
दश वर्षसहस्राणि रामो राज्यमकारयत् ।।५४।।

(४) महाभारत में रामावतार

४६. आरण्यकपर्व मे तीन स्थलो पर रामावतार का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। भीम-हनुमान-संवाद मे हनुमान यों कहते है :

अथ दाशरथिर्वीरो रामोनाम महाबलः।
विष्णुर्मानुष्यरूपेण चचार वसुधामिमाम् ।।२८।।
(३, १४७)

रामोपाख्यान मे ब्रह्मा देवताओ से कहते है कि 'विष्णु मेरे आदेश के अनुसार अवतार लेकर रावण की हत्या करेंगे'

तदर्थमवतीर्णोऽसौ मन्नियोगाच्चतुर्भुजः ।
विष्णुः प्रहरतां श्रेष्ठः स कर्म तत्करिष्यति ।।५।।

(३, २६०)

आरण्यक पर्व के अन्तिम अध्याय मे कहा गया है कि विष्णु ने दशरथ के गृह मे रह कर रावण का वध किया है :

विष्णुना वसता चापि गृहे दशरथस्य वै ।
दशग्रीवो हतश्छन्नं संयुगे भीमकर्मणा ।।१८।।

(३, २९९)

इसके अतिरिक्त दशरथ के विषय मे कहा जाता है कि वह मयस्य जेता नमुचेश्च हन्ता (३, २६, ९) है। इससे भी राम के अवतार होने का पता चलता है।

उपर्युक्त उद्धरण महाभारत के पूना सस्करण मे मिलते है। बम्बई के निर्णय-सागर प्रेस से प्रकाशित महाभारत मे इसी आरण्यकपर्व के अन्तर्गत रामावतार के दो और उल्लेख किए गए है (दे० ३, ९९, ३४ और ३, १५१, ७)।

आरण्यकपर्व के अतिरिक्त रामावतार का उल्लेख शातिपर्व मे दो वार मिलता है। वाल्मीकि के विषय मे कहा गया है कि उन्होंने गोविन्द की महिमा का वर्णन किया है :

असितो देवलस्तात वाल्मीकिश्च महातपाः ।
मार्कण्डेयश्च गोविन्दे कथयत्यद्भुतं महत् ।।४।।

(१२, २००)

हरि अपने अवतारो का वर्णन करते हुए कहते है

संधौ तु समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च ।
रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पतिः ।।७८।।

(१२, ३२६)

प्रचलित स्वर्गारोहण पर्व मे जो रामावतार का सकेत किया गया है, वह पूना सस्करण मे प्रक्षिप्त माना गया है—

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ।।२३।।

(१८, ६)

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाभारत के रचयिता रामावतार से परिचित थे, यह आरण्यकपर्व तथा शातिपर्व के प्रामाणिक उद्धरणो से असदिग्ध है। नायसाथ उत्तरकाड का किंचित् परिचय भी मिला होगा क्योंकि रामोपाख्यान मे रावण की कथा का वर्णन मिलता है तथा शातिपर्व में शम्बूकवध का उल्लेख हुआ है -

श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारकः ।
जीवितो धर्ममासाद्य रामात्सत्यपराक्रमात् ।।६२।।
(१२, १४६)

ग—रामोपाख्यान

४७. रामोपाख्यान का प्रसंग इस प्रकार है: द्रोपदी के हरण तथा उसको पुनः प्राप्त करने के पश्चात् युधिष्ठिर अपने दुर्भाग्य पर शोक प्रकट कर इस प्रकार कहते हैं—अस्ति नूनं मया कश्चिदल्पभाग्यतरो नरः; क्या मुझसे भी कोई अधिक अभागा है ? (३, २५७, १०) इस पर मार्कण्डेय राम का उदाहरण देकर युधिष्ठिर को धैर्य बँधाने का प्रयत्न करते है । युधिष्ठिर के रामचरित सुनने की इच्छा प्रकट करने पर मार्कण्डेय रामोपाख्यान सुनाते है । पूना के प्रामाणिक संस्करण मे इस रामचरित का विस्तार ७०४ श्लोको का है, जिसमे से पूरे २०० श्लोक युद्ध के वर्णन के लिए प्रयुक्त हुए है ।

रामोपाख्यान का आधार

४८ इस विस्तृत रामचरित तथा वाल्मीकिकृत **रामायण** का क्या सम्बन्ध है ? डॉ० वेबर इस समस्या के सम्बन्ध मे किसी निर्णय तक पहुँचने मे असमर्थ है[1] । इनके अनुसार निम्नलिखित चार सभावनाएँ हैं :

१: रामोपाख्यान रामायण का आधार है

२. रामोपाख्यान एक ऐसे रामायण पर निर्भर है जो प्रचलित रामायण का पूर्व रूप है ।

३ रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण का स्वतन्त्र सक्षिप्त रूप है ।

४ रामोपाख्यान तथा रामायण दोनो किसी एक सामान्य मूलस्रोत के स्वतत्र विकास माने जा सकते है ।

ई० हाप्किन्स तथा ए० लूड्विग का मत है कि रामोपाख्यान रामकथा का एक स्वतत्र रूप है, जो **रामायण** को छोडकर किसी अन्य प्राचीन राम-चरित पर निर्भर है ।[2] रामोपाख्यान तथा **रामायण** मे जो अन्तर पाये जाते हैं, वे यह सिद्ध करते हैं कि रामोपाख्यान **रामायण** का सक्षिप्त रूप नही हो सकता । यह इस मत का मुख्य तर्क है । डॉ० याकोबी का प्रत्युत्तर यह है कि रामोपाख्यान के रचयिता ने **रामायण** की किसी हस्तलिपि का सहारा नही लिया है, लेकिन अपने प्रदेश मे प्रचलित **रामायण** उसे

१ ए० वेबर : ऑन दि रामायण, पृष्ठ ६५ ।

२ इ० डब्लू हाप्किस : दि ग्रेट एपिक, पृष्ठ ६३ आदि ।
ए० लुड्विग : ऊबर डस रामायण, पृष्ठ ३० आदि ।

कठस्थ रहा होगा। इस कथा का सक्षिप्त वर्णन करने मे छोटे-मोटे अंतर सहज ही आ गए होंगे। अतः डॉ० याकोबी का मत है कि रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत रामायण के किसी प्राचीन रूप का स्वतत्र सक्षेप मात्र है। अधिकाश विशेषज्ञ डॉ० याकोबी का पक्ष लेते है।[1] महाभारत के सम्पादक डॉ० सुकठणकर ८६ स्थल उद्धृत करते हैं जिनमे रामोपाख्यान तथा रामायण मे शाब्दिक साम्य मिलता है। दूसरी ओर रामोपाख्यान मे अनेक प्रसग (इद्रजित् का यज्ञ, काक का वृत्तान्त आदि) रामायण के बिना समझ मे नही आ सकते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि रामोपाख्यान का वृत्तान्त मौलिक नही है। इसके अतिरिक्त महाभारत मे रामायण तथा कवि वाल्मीकि का उल्लेख हुआ है (दे० ऊपर अनु० ४१)। अत रामायण को रामोपाख्यान का आधार मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।

रामोपाख्यान तथा रामायण की तुलना

४६. दोनो वृत्तान्तो की तुलना सुबोधगम्य रखने के लिए वाल्मीकिकृत रामायण के काण्डो के अनुसार सामग्री का विभाजन किया जाता है।

बालकांड। रामोपाख्यान मे केवल निम्नलिखित प्रसगो का उल्लेख हुआ है (दे० अध्याय २५८, २६०, २६१)·

राम तथा उनके भाइयो का जन्म (लेकिन पुत्रेष्टि यज्ञ तथा पायस का उल्लेख नही है)।

सीता, जनक की पुत्री (कही भी अयोनिजा का उल्लेख नही है)।

ब्रह्मर्षि, देवता आदि रावण से सत्रस्त होकर ब्रह्मा की शरण लेते है। ब्रह्मा रामावतार का रहस्य प्रकट करते है। ब्रह्मा के आदेश के अनुसार देवता विष्णु की सहायता के लिए ऋक्षो तथा वानरो की स्त्रियो से पुत्र उत्पन्न करते हैं।

चारो भाइयो की शिक्षा तथा विवाह (३ श्लोक), सीता को छोडकर अन्य पत्नियो के नाम नही मिलते।

अयोध्या कांड। इस काड की सारी सामग्री ३४ श्लोको मे सक्षेप मे दी गई है (अध्याय २६१)। गुह तथा अत्रि का उल्लेख नही होता। कैकेयी को केवल एक वर

---

१ एच्० याकोबी : डस रामायण, पृष्ठ ७२।
एम्० विंटरनित्स : हिस्ट्री ऑव इडियन लिटरेचर, भाग १, पृष्ठ ३८४,
एच० ओल्डेनबेर्ग . डस महाभारत, पृष्ठ ५४ आदि।
वी० एस्० सुकठणकर . रामोपाख्यान एड महाभारत, काणे कॉमेमोरेशन वाल्यूम, पृ० ४७२-८८।

मिला था। मन्थरा के विषय मे कहा जाता है कि वह एक गधर्वी दुन्दुभी का अवतार है।

अरण्य कांड। रामोपाख्यान इस कांड की सामग्री अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से देता है (दे० अध्याय २६१-२६३)। इसमे कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन नही हुआ है। विराध, सुतीक्ष, अगस्त्य, अयोमुखी तथा शबरी, इनसे सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का अभाव है।

किष्किधा कांड। राम-सुग्रीव की मैत्री, वालिवध तथा वानरो का प्रेषण और उनका पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर की दिशा से प्रत्यागमन—अर्थात् किष्किंधाकाड के प्रथम ४७ सर्गों की सामग्री। इसमे निम्नलिखित परिवर्तन मिलते है (दे० अध्याय २६४):

सुग्रीव के साथ सख्य करने के लिए राम के बल की परीक्षा नही होती।

वालि तथा सुग्रीव के केवल एक द्वन्द्वयुद्ध का उल्लेख हुआ है।

सुन्दर कांड। किष्किंधाकांड के अन्तिम भाग (सर्ग ४८—६७) तथा सुन्दरकांड के प्रथम ६० सर्ग, अर्थात् हनुमान् और उसके साथियो की यात्रा का समस्त वृत्तान्त रामोपाख्यान का रचयिता स्वय वर्णन नही करता। हनुमान् राम के पास लौटकर उसे सुनाते है। रामोपाख्यान (अध्याय २६५-२६६) तथा रामायण की इस सामग्री मे कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही है। रामोपाख्यान की एक विशेषता यह है कि इसमे अविंध्य को अधिक महत्व दिया जाता है।

रामायण मे सीता हनुमान से अविंध्य का उल्लेख करती हैं और इसके वाद अविंध्य के विषय मे और कुछ नही कहा जाता है।

अविंध्यो नाम मेधावी विद्वान्राक्षसपुंगवः।
धृतिमाञ्छीलवान्वृद्धो, रावणस्य सुसंमतः ॥१२॥
रामक्षयमनुप्राप्तं रक्षसां प्रत्यचोदयत्।
न च तस्य स दुष्टात्मा शृणोति वचनं हितम् ॥१३॥
(सुन्दरकांड, सर्ग ३७)

रामोपाख्यान मे त्रिजटा सीता को सान्त्वना देकर अविंध्य का सदेश सुनाती है—राम, सुग्रीव के साथ मैत्री करके शीघ्र आने वाले हैं, रावण नलकूवर के शाप के कारण सीता का सतीत्व नष्ट करने मे असमर्थ है।

अविंध्यो नाम मेधावी वृद्धो राक्षसपुंगवः।
स रामस्य हितान्वेषी....................॥
(अध्याय २६४, ५५ आदि)

इसके अतिरिक्त सीता हनुमान से अविंध्य के इस सदेश का उल्लेख करती हैं (अध्याय २६६)। इन्द्रजीत के वध के वाद अविंध्य रावण को सीता की हत्या करने

से रोकता है (अध्याय २७३): रामचरित में हनुमान को यह कार्य सौंपा जाता है (युद्धकांड, सर्ग ९२)।

रावण के पश्चात् विभीषण तथा अविन्ध्य सीता को राम के पास ले जाते हैं (अध्याय २७५)।

युद्धकांड। युद्ध की सामग्री ३२२ श्लोकों में समाप्त की गई है (अध्याय २६७-२७५)। इस सामग्री में अपेक्षाकृत अधिक परिवर्तन किए गए हैं। युद्धकांड की सामग्री की अतिशयता को ध्यान में रखकर यह निःसंकोच कहा जा सकता है। दोनों वृत्तान्तों की तुलनात्मक तालिका इस प्रकार है—

सर्ग १-४० : अध्याय २६७ :

रावण की मन्त्रणा, राम का समुद्रतट शिविर, रावण-सुग्रीव युद्ध, इन सब का रामोपाख्यान में अभाव है। सेतुकांड के वृत्तान्त में समुद्र राम को स्वप्न में दर्शन देता है और सहायता की प्रतिज्ञा करता है। राम का समुद्र के प्रति बाण चलाना आदि इसका रामोपाख्यान में उल्लेख नहीं हुआ है।

सर्ग ४१-४३ : अध्याय २६८ :

अंगद का दूतत्व, लंका—अवरोध, प्रथम युद्ध।

सर्ग ४४-५८ :

प्रहस्त-वध, द्वन्द्वयुद्ध। रामोपाख्यान में इस सामग्री का अभाव है।

सर्ग ५९ : अध्याय २६९ :

द्वन्द्वयुद्ध। राम-रावण युद्ध।

सर्ग ६०-६८ : अध्याय २७०-२७१ :

रामोपाख्यान के अनुसार कुम्भकर्ण का वध लक्ष्मण द्वारा किया जाता है।

सर्ग ६९-७९ :

अन्य-युद्ध तथा औषध-पर्वत। रामोपाख्यान में इस सामग्री का अभाव है।

सर्ग ८०-९२ : अध्याय २७२-२७३ :

रामचरित में इन्द्रजित् एक मायासीता की हत्या करता है। रामोपाख्यान में इसका उल्लेख नहीं है, नागपाश का वृत्तान्त रामचरित में दो बार मिलता है। रामोपाख्यान में केवल एक बार, और इसमें विभीषण राम और लक्ष्मण को प्रज्ञास्त्र से स्वस्थ कर देता है, तब राम को कुबेर का भेजा हुआ जल देता है। इस जल से आँखें धोकर राम अदृश्य प्राणी देख सकते हैं (अंतर्हितानां भूतानां दर्शनार्थम् - दे० २७३, १०)। हनुमान के औषधि-पर्वत के लाने का रामोपाख्यान में उल्लेख नहीं होता।

सर्ग ९३-९८

मूलबल, जिसका उल्लेख रामोपाख्यान में नहीं है।

सर्ग ९९-१११ : अध्याय २७४ ;

रामोपाख्यान मे लक्ष्मण के शक्ति लगने का वृत्तान्त नही मिलता। इसमें रावण माया द्वारा राम और लक्ष्मण का रूप धारण किए हुए मायामय राक्षसो को उत्पन्न करता है। राम इनकी हत्या करते है और इसके बाद ब्रह्मास्त्र द्वारा रावण को इस तरह जलाते हैं कि राख भी शेष नही रहती (**न च भस्माप्यदृश्यत,** दे० श्लोक ३१)

सर्ग ११२-१२८ : अध्याय २७५ ;

इस सामग्री मे अतर यह है कि रामोपाख्यान मे सीता की अग्निपरीक्षा नही होती।

उत्तरकांड । रामोपाख्यान राम के अयोध्या मे प्रत्यागमन तथा उनके अभिषेक पर समाप्त होता है, लेकिन उत्तरकाड की कुछ सामग्री रामोपाख्यान के प्रारभ मे दी गई है। रावणवश, रावण और उनके भाइयो की तपस्या तथा वरप्राप्ति, वैश्रवण की हार, रावण का पुष्पक पर अधिकार प्राप्त करना—इनका सक्षेप मे वर्णन किया गया है (अध्याय २५८-२५९)। रामोपाख्यान मे विश्रवा की तीन पत्नियो का उल्लेख है—

पुष्पोतकटा – कुभकर्ण और रावण की माता।

मालिनी—विभीषण की माता।

राका—खर तथा शूर्पणखा की माता।

रामायण मे कैकसी (सुमाली की पुत्री) रावण, कुभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण की माता मानी जाती है।

अध्याय ४

बौद्ध रामकथा

५०. प्राचीन काल से बौद्धों ने रामकथा अपनाई है और उसे जातक-साहित्य में स्थान दिया है। जातक एक ऐसी कथा है जिसमें महात्मा बुद्ध अपने असख्य पूर्वजन्मों में मनुष्य अथवा पशु के रूप में, भाग लेते हैं। इस उपाय के द्वारा बौद्ध धर्मोपदेशक प्रचलित कथाओं और लोकप्रिय आख्यानों को अपनाने में समर्थ हुए हैं। प्राचीन बौद्ध साहित्य में रामकथा-सम्बन्धी तीन जातक सुरक्षित हैं, जिनमें से दशरथ-जातक सबसे अधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है, इस कारण इसका वर्णन यहाँ पहले किया गया है।

दशरथ-जातक

५१. दशरथ-जातक को लेकर बहुत वादविवाद हुआ है, क्योंकि कई विद्वानों का मत यह है कि इसमें रामकथा का मूलरूप सुरक्षित है। निबन्ध के द्वितीय भाग में इस विवादग्रस्त विषय का पूरा विश्लेषण किया जाएगा। यहाँ पर इतना ही कहना पर्याप्त है कि यह जातक जिस जातकट्ठवण्णना में पाया जाता है। वह पाँचवीं शताब्दी ई० की एक सिंहली पुस्तक का पाली अनुवाद है। इस सिंहली पुस्तक में जो कथाएँ पाई जाती हैं, वे प्राचीन पाली गाथाओं की टीका के रूप में लिखी गई हैं।

प्रत्येक जातक में पहले 'वर्त्तमान कथा' (पच्चुप्पन्न वत्थु) दी जाती है जिसमें यह बतलाया जाता है कि किस अवसर पर महात्मा बुद्ध ने इस जातक को कहा है।

इसके बाद 'अतीत कथा' (अतीतवत्थु) उद्धृत है, जिसे वास्तविक जातक मानना चाहिए।

अन्त में महात्मा बुद्ध 'जातक का सामजस्य' (समोधान) प्रस्तुत करते हैं जिसमें वह वर्त्तमान कथा और अतीत कथा के पात्रों की अभिन्नता प्रकट करते हैं।

गाथाएँ प्राय: अतीत कथा ही में मिलती हैं, लेकिन वे कभी वर्तमान कथा और कभी समोधान में भी विद्यमान हैं। इनके लिए एक टीका जोडी गई है जिसमें गाथा के प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया गया है।

पाली जातकट्ठवण्णना[1] के दशरथ-जातक की रामकथा का सक्षेप इस प्रकार है :

---

१. दे० फॉसबाल : दि जातक, भाग ४, १२३, न० ४६१।

वर्त्तमान कथा : महात्मा बुद्ध ने यह जातक जैतवन मे कहा। किसी गृहस्थ का पिता मर गया था। इस पर उसने शोक के वशीभूत होकर अपना सारा कर्त्तव्य छोड दिया। यह जान कर बुद्ध ने उससे कहा कि प्राचीन काल के पडित लोग (**पोराणक पडिता**) अपने पिता के मरण पर किंचित् भी शोक नही करते थे। इसके अनन्तर दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देने के लिए महात्मा बुद्ध ने दशरथ-जातक सुनाया।

अतीत कथा : दशरथ महाराज वाराणसी मे धर्मपूर्वक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महिषी के तीन सतान थी : दो पुत्र (राम-पडित और लक्खण) और एक पुत्री (सीता देवी)। इस महिषी के मरने के पश्चात् राजा ने एक दूसरी को ज्येष्ठा के पद पर नियुक्त किया (**अग्गमहेसिट्ठाने ठपेसि**)। उसके भी एक पुत्र (भरत कुमार) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी, रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य माँगा। राजा ने स्पष्ट इनकार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनों भी पुनः-पुन. इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यन्त्रो के भय से अपने दोनो पुत्रो को बुलाकर कहा—'यहाँ रहने से तुम्हारा अनर्थ होने की समावना है। किसी अन्य राज्य या वन मे जाकर रहो. और मेरे मरने के बाद लौटकर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो'। तब राजा ने ज्योतिषियो को बुलाकर उनसे अपनी मृत्यु की अवधि पूछी। बारह वर्ष का उत्तर पाकर उन्होंने कहा—'हे पुत्रो, बारह वर्ष के बाद आकर (राज) छत्र को उठाना'। पिता की वंदना करके दोनो भाई चले जाने वाले ही थे कि सीता देवी भी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो ली। तीनों के साथ-साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिए। उनको लौटाकर तीनो हिमालय पहुँच गये और वहाँ आश्रम बनाकर रहने लगे।

नौ वर्ष के बाद दशरथ पुत्रशोक के कारण मर जाते है। रानी भरत को राजा बनाने मे असफल होती है, क्योंकि अमात्य और भरत भी इसका विरोध करते हैं। तब भरत चतुरंगिणी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन को चले जाते है। आश्रम के पडोस मे सेना छोडकर भरत थोडे अमात्यो के साथ राम के पास जाते है। उस समय राम अकेले ही है। भरत उनसे पिता के देहान्त का सारा वृत्तान्त कह कर रोने लगते हैं। राम पडित न तो शोक करते और न रोते है (**रामपंडितो नेव सोचि न रोदि**)।

संध्या समय लक्खण और सीता लौटते हैं। पिता का देहान्त सुनकर दोनों अत्यन्त शोक करते है। इस पर रामपडित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मो-

पदेश सुनाते हैं[1]। उसे सुनकर सबों का शोक मिट जाता है (निस्सोका अहोसि) ।

बाद में भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी रामपंडित यह कहकर वन में रहने का निश्चय प्रकट करते है—'मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त मे राज्य करने का आदेश दिया है। अब लौटकर मैं उनकी आज्ञा का पालन नही कर सकूँगा। मैं तीन वर्ष के बाद लौट आऊँगा' ।

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते हैं तब रामपंडित अपनी तृण की पादुकाएँ (तिणपादुका) देकर कहते है, 'मेरे आने तक ये शासन करेंगी' ।

खड़ाउओं को लेकर भरत, लक्ष्मण और सीता अन्य लोगों के साथ बाराणसी लौटते हैं। अमात्य इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते है। अन्याय होतेही पादुकाएँ एक दूसरे पर आघात करती हैं (परिहणन्ति) और ठीक निर्णय होने पर वे शांत रहती हैं ।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर रामपंडित लौटकर अपनी बहन सीता से विवाह करते है । सोलह सहस्र वर्ष तक धर्मपूर्वक राज्य करने के बाद वे स्वर्ग चले जाते है ।

समोधान - इसमे पहले राम के १६००० वर्ष तक शासन करने के विषय मे एक गाथा उद्धृत है और इसके बाद में महात्मा बुद्ध जातक का सामंजस्य यों बैठाते है—उस समय महाराज सुद्धोदन महाराज दशरथ थे, महामया (बुद्ध की माता) राम की माता, यशोधरा (राहुल की माता) सीता, आनन्द भरत थे और मैं रामपंडित था ।

अनामकं जातकम्

५२. तीसरी शताब्दी ई० मे अनामकं जातकम् का काग-सेंग-हुई द्वारा चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था। मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। चीनी अनुवाद लियेऊ तू त्सी किंग नामक पुस्तक मे सुरक्षित है (दे० चीनी तिपिटक का तैशो सस्करण न० १५२)। इस जातक में किसी भी पात्र के नाम का उल्लेख नही हुआ है, लेकिन राम और सीता का वनवास, सीता-हरण, जटायु का वृत्तान्त, वालि और सुग्रीव का युद्ध, सेतुबन्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, इन सबों के संकेत मिलते हैं। इसमे एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि राम की विमाता के कारण पिता द्वारा वनवास नही दिया जाता। वे अपने मामा के आक्रमण की तैयारियाँ सुनकर स्वेच्छा से अपना राज्य छोड देते हैं। वालिवध का वृत्तान्त भी बदल गया है—राम के धनुषसंधान को देखते ही वालि भयभीत होकर भागता है और उसका आगे चल कर कोई उल्लेख नही है। यह परिवर्तन स्वाभाविक है। राम

१ रामपंडित का सारा उपदेश गाथाओं मे है। इसका विश्लेषण निबन्ध के द्वितीय भाग मे किया जायगा (दे० अनु०. ६६ आदि) ।

ने अर्थात् बोधिसत्त्व ने वालि का वध किया है, इसकी कल्पना बौद्धो के लिये असह्य हुई होगी। अनामकं जातकम् का वृत्तान्त इस प्रकार है[1] :

किसी समय बोधिसत्त्व एक महान् राजा था। वह सदैव चार गुणो से (दान, प्रियवचन, न्याय, समदर्शिता) समस्त जीवो की रक्षा करता था। उसका मामा भी राजा हो गया था। वह निर्लज्ज, लोभी, निर्दयी तथा दुष्ट था। बोधिसत्त्व का राज्य छीनने के लिये उसने एक सेना तैयार की।

बोधिसत्त्व के राज्य-सचालकों ने भी सेना एकत्र की। बोधिसत्व ने सेना का निरीक्षण करके कहा—'केवल अपने स्वार्थ के लिये मैं असख्य मनुष्यो का जीवन नष्ट करूँगा। यदि मैं बाहर चला जाऊँ तो समस्त देश की रक्षा हो जायगी'।

मन्त्रियों को राज्यभार सौंपकर वह अपनी रानी के साथ वन चला गया। उसके मामा ने राज्य मे प्रवेश कर देश पर अधिकार कर लिया। जनता को इससे बहुत कष्ट हुआ।

बोधिसत्त्व पहाडी वन मे निवास करता था। समुद्र मे दुष्ट नाग रहता था। उसने ऋषि का छद्म-वेष धारण कर लिया। जिस समय राजा फल लेने गया था, नाग रानी का अपहरण कर भाग निकला। समुद्र की ओर उसका पथ दो घाटियो के तग रास्ते से था। पहाडी पर एक विशाल पक्षी रहता था। उसने अपने पख फैला कर रास्ता रोक लिया। नाग ने पक्षी को मारा और उसका दाहिना पख तोड डाला। अन्त मे वह समुद्र मे स्थित अपने द्वीप को लौट गया।

फल तोडकर राजा लौटा। अपनी रानी को न पाकर वह बहुत दुखी हुआ और धनुष-बाण लेकर रानी की खोज मे पर्वतो मे इधर-उधर घूमने लगा। एक नदी के स्रोत पर पहुँच कर राजा ने एक बडे बन्दर को देखा जो उदास और खिन्न था। पूछने पर बन्दर ने कहा 'मैं राजा था। मेरे चाचा ने मेरा राज्य छीन लिया है। अब मेरा कोई साथी नही रहा।' राजा ने भी अपना सब वृत्तान्त कहा। पारस्परिक सहायता के लिये वचनबद्ध होकर दोनो ने मैत्री कर ली। दूसरे दिन बन्दर ने अपने चाचा से युद्ध किया। राजा (बोधिसत्त्व) ने धनुष में बाण सधाना जिसे देखते ही बन्दर का चाचा मारे डर के भाग निकला।

बन्दर ने अपने साथियो को बोधिसत्व की रानी की खोज लगाने की आज्ञा दी।

---

१. अंग्रेजी अनुवाद, दे० चीन रामायण : सरस्वती विहार ग्रन्थमाला ८ (१९३८ ई०)। फ्रेंच अनुवाद, दे० बुलेटिन एकाल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन : भाग ४ (१९०४), पृ० ६९८-७०१।

एक-एक कर वे सभी चल पडे। वन्दरो ने एक आहत पक्षी देखा। पक्षी ने वताया कि एक नाग ने रानी को चुराया है।

कपिराज ने अपनी सेना को समुद्र पार करने मे असमर्थ पाया। इन्द्र ने छोटे वन्दर का रूप धारण कर कहा—'प्रत्येक वन्दर को पर्वत का एक-एक टुकडा लाने की आज्ञा दो। समुद्र पर इस प्रकार एक मार्ग वन जायगा और आप द्वीप मे पहुँच जायेंगे।

वन्दरो ने ऐसा करके समुद्र पार किया। सव वन्दरो ने नाग-द्वीप को घेर लिया। नाग ने एक विषैला घना कुहरा उत्पन्न किया जिससे सभी पृथ्वी पर गिर पडे। छोटे वन्दर (इन्द्र) ने एक दैवी औषधि सवकी नाको मे लगाई और सव स्वस्थ हो कर जाग पडे।

अव नाग ने आँधी और वादल से सूर्य छिपा लिया। विजली चमकने लगी। छोटे वन्दर (इन्द्र) ने वतलाया कि विजली ही नाग है। इस पर राजा ने एक वाण से नाग को मार गिराया।

छोटे वन्दर ने रानी को मुक्त किया। राजा अपने मामा का देहान्त सुनकर अपने देश चला गया। राजा ने रानी से कहा–'पति से अलग, दूसरे के घर निवास करने पर लोग स्त्री के आचरण पर सन्देह करते है। तुम्हे स्वीकार करने मे परम्परा के अनुसार कहाँ तक औचित्य है?' रानी ने उत्तर दिया—'मैं एक नीच की गुफा मे रही, किन्तु फिर भी मैं इसमे पकज की तरह रही। यदि मुझमे सतीत्व है, तो पृथ्वी फट जाय'। पृथ्वी फटी और रानी ने कहा, 'मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ।' राजा और रानी के प्रभाव के कारण सव वर्ण अपने-अपने धर्म का पालन करने लगे। वुद्ध ने भिक्षुओ से कहा, 'तव मैं राजा था, गोपा रानी थी, देवदत्त मामा था और मैत्रेय इन्द्र था'। वोधिसत्व के आचरण मे शांति की पारमिता असीम है।

दशरथ कथानम्

५३ चीनी तिपिटक के अन्तर्गत त्सा-पौ-त्संग-किंग नामक १२१ अवदानो का सग्रह है[1]। यह संग्रह ४७२ ई० मे चीनी भाषा मे अनूदित हुआ था। अप्राप्य मूल भारतीय ग्रथ की रचना दूसरी शताब्दी ई० के वाद हुई थी, क्योकि इसमे राजा कनिष्क अनेक कथाओ के प्रधान पात्र माने गए हैं। इनमे एक दशरथकथानम् भी मिलता है,

---

१. दे० चीनी तिपिटक : तैशो सस्करण, नं ०२०३।
फ्रेंच अनुवाद : दे० सिल्वान लेवी, एल्वम केर्न, पृ० २७६ आदि।
अग्रेजी अनुवाद : दे० चीन रामायण, सरस्वती विहार ग्रन्थमाला ८।
हिन्दी अनुवाद : दे० ना० प्र० प०, वर्ष ५४, पृ० २८६-८६।

जिसकी विशेषता यह है कि इसमे सीता या किसी भी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नही हुआ है। कथावस्तु यो है :

प्राचीन काल मे जव कि मनुष्य की आयु दस सहस्र वर्ष होती थी, जम्बू द्वीप मे दशरथ नाम का एक राजा राज्य करता था । उसकी प्रधान महिषी के राम नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ । दूसरी रानी के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम रामण (लोमन-लक्ष्मण) था। राम मे नारायणीय शक्ति थी । तीसरी रानी से भरत और चौथी से शत्रुघ्न उत्पन्न हुए ।

तीसरी रानी पर राजा का अत्यधिक प्रेम था । एक दिन राजा ने कहा—'तुम्हारी किसी भी इच्छा की पूर्ति के लिए मैं अपना सपूर्ण धन और कोष देने मे सकोच नही करूँगा' । रानी ने उत्तर दिया—'मुझे इस समय कोई आवश्यकता नही है।' राजा बीमार पडे । उन्होंने राम का राज्याभिषेक करवाया । राम को राजपद पर आसीन होते देखकर छोटी रानी ने ईर्ष्यावश राजा से कहा—'मैं अब आपके दिए हुए वर की पूर्ति चाहती हूँ । राम गद्दी से उतार दिए जाएँ और मेरे पुत्र का राज्याभिषेक हो, यही मेरी इच्छा है ।' यह सुनकर राजा दुखित हुआ । राजधर्म के अनुसार वह अपने वचन को नही तोड सकता था । इस समय रामण (लक्ष्मण) ने राम से अपनी शक्ति और साहस दिखलाने की प्रार्थना की । राम ने कहा— 'अपने पिता की आज्ञा भग कर कोई भी पुत्र पितृ-भक्त नही कहला सकता' ।

तव दशरथ ने दोनो पुत्रो को वनवास दे दिया और १२ वर्ष वाद लौटने की आज्ञा दी । भरत उस समय विदेश मे थे । दशरथ की मृत्यु के पश्चात भरत लौटे । उन्हे अपनी माता के कार्यों से घृणा हो गई । वह सेना के साथ उस पर्वत पर गए, जहाँ राम निवास करते थे । भरत ने राम से का—'मैं आपसे राजधानी लौटने और शासन का भार ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ ।' राम ने कहा—'वनवास के लिए पिता की आज्ञा हो चुकी है । उसे तोडने पर मैं आज्ञाकारी पुत्र नही कहलाया जाऊँगा ।'

तव भरत ने राम को चमडे की खडाऊँ माँगी और अयोध्या लौट गए । खडाउओ को राजसिंहासन पर रखकर भरत शासन की देख-भाल करने लगे । प्रति दिन प्रात. और सध्या वह पादुकाओ की पूजा करते थे और उनसे आज्ञा लेते थे ।

धीरे-धीरे वनवास की अवधि समाप्त हुई । राम अपने देश को लौट आए । भरत ने राम से राज्य भार ग्रहण करने की प्रार्थना की । पहले राम ने अस्वीकार किया परन्तु भरत के बहुत आग्रह करने पर राम ने राज्यभार स्वीकार किया । सव लोग अपने-अपने धर्म का पालन करने लगे । सर्वत्र शान्ति और समृद्धि का राज्य था ।

अन्य बौद्ध साहित्य

५४. ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चलकर बौद्धो मे रामकथा की लोकप्रियता घटने लगी। अवदान-शतक (दूसरी श० ई०), दिव्यावदान (चीनी अनुवाद २६५ ई०), आर्यशूर की जातकमाला, कल्पद्रुम-अवदान, रत्नावदानमाला, द्वाविंशति अवदान, इन सबों मे रामकथा सम्बन्धी सामग्री नही मिलती। लंकावतार-सूत्र के प्रथम अध्याय मे लकापति रावण और महात्मा बुद्ध का धर्म के विषय मे वार्त्तालाप दिया गया है, परन्तु इसमे रामकथा का निर्देश भी नही पाया जाता है। खोतानी रामायण तथा श्याम के राम-जातक और ब्रह्मचक्र में बुद्ध अपने पूर्वजन्म मे राम थे, ऐसा कहा जाता है लेकिन वास्तव मे ये रचनाएँ बौद्ध साहित्य के अग नही है। इनका उल्लेख निवन्ध के तृतीय भाग मे किया जायगा (दे० अनु० ३१२, ३२७, ३२८)।

अध्याय ५

जैन रामकथा

क—जैन रामकथा की सामान्य विशेषताएँ

५५. बौद्धों की भाँति जैनियों ने भी रामकथा अपनाई है। अन्तर यह है कि जैन कथा-ग्रन्थों में हमें एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा साहित्य मिलता है। बौद्ध महात्मा बुद्ध को राम का पुनरवतार मानते हैं। इसी तरह जैनियों ने रामकथा के पात्रों को अपने धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। राम (या पद्म), लक्ष्मण और रावण न केवल जैन-धर्मावलम्बी माने जाते हैं लेकिन तीनों को जैनियों के त्रिषष्टि महापुरुषों में भी रखा गया है। इन त्रिषष्टि महापुरुषों का वर्णन इस प्रकार है २४ तीर्थंकर (जैन धर्मोपदेशक), १२ चक्रवर्ती (भारत के ६ खंडों के सम्राट्) तथा ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रति-वासुदेव। इनकी जीवनियाँ जैन धर्म में महाभारत, रामायण तथा पुराणों का स्थान लेती हैं।

त्रिषष्टि महापुरुषों का विस्तृत वर्णन संभवतः पहले-पहल त्रिषष्टिलक्षण-महा-पुराण में मिलता है। इस रचना के दो भाग हैं, जिनसेनकृत आदिपुराण (नवीं श० ई०) तथा गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (८९७ ई०), लेकिन नवीं शताब्दी से बहुत पहले इन जीवनियों की सामग्री तैयार हो चुकी थी, विशेष करके तिलोयपण्णत्ति (पाँचवीं श० ई०) में। पउमचरियं (चौथी श० ई०) में कहा गया है कि पद्मचरित अर्थात् राम-चरित विमल सूरि के पूर्व 'नामावलियनिबद्ध' (१.८) था।

प्रत्येक कल्प के त्रिषष्टि महापुरुषों में से नौ बलदेव, नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव होते हैं। ये तीनों सदैव समकालीन रहते हैं। राम, लक्ष्मण और रावण क्रमशः आठवें बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव माने जाते हैं[१]। बलदेव (बलभद्र) और वासुदेव (नारायण) किसी राजा की भिन्न-भिन्न रानियों के पुत्र हैं। वासुदेव अपने बड़े भाई बलदेव के साथ प्रतिवासुदेव (प्रतिनारायण) से युद्ध करते हैं और

१. दे० एम्० विंटरनित्स : हि० इ० लि०, भाग १, पृष्ठ ४९७। एच वान् ग्लाज-नैप : डेर जैनिजमुस, बर्लिन, १९२५, पृष्ठ २४७। हरिसत्य भट्टाचार्य : नारायण, प्रतिनारायण एंड बलभद्र, दि जैन एन्टीक्वेरी, भाग ८, पृष्ठ ३६।

अन्त मे प्रतिवासुदेव का वध करते हैं। इसके बाद वह दिग्विजय करके भारत के तीन खण्डो पर अधिकार प्राप्त करते है और इस प्रकार अर्द्धचक्रवर्ती बन जाते है। मरने पर वासुदेव को प्रतिवासुदेव-वध के कारण नरक जाना पड़ता है। नौ वासुदेवो मे लक्ष्मण और कृष्ण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बलदेव अपने भाई की मृत्यु के कारण शोकाकुल होकर जैन दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त करते हैं (जैसे राम और बलराम)। प्रति-वासुदेव सदैव वासुदेव का विरोध करते है तथा वासुदेव के चक्र से मारे जाते है (जैसे रावण और जरासंध)।

५६. जैन रामकथा की एक दूसरी विशेषता यह है कि इसमे वानर और राक्षस दोनो विद्याधर-वंश की भिन्न-भिन्न शाखाएँ माने जाते है[1]। प्राचीन बौद्ध-गाथाओ (दे० जातक ५१०, ४३६) तथा महाभारत के कई स्थलो पर विद्याधर का अर्थ है (आकाशगामी तथा कामरूपी) ऐंद्रजालिक। अलौकिक शक्ति से विभूषित माने जाने के कारण कथासरित्सागर (अत. बृहत्कथा मे भी), रामायण[2] तथा महाभारत (दे० १, ५१, ६) मे विद्याधर देवयोनियो के अन्तर्गत रखे गए है। फिर भी रामायण तथा महाभारत मे वे किसी भी कथा मे कोई महत्वपूर्ण भाग नही लेते। कथासरित्-सागर तथा जैन कथा-साहित्य मे इनका बहुत उल्लेख होता है। विद्याधरो की उत्पत्ति जैन-ग्रन्थो के अनुसार इस प्रकार है—श्री ऋषभ (जैन-धर्म-संस्थापक) ने तपस्या करने के उद्देश्य से अपने सौ पुत्रो मे से भरत को ही अपना राज्य सौंपा था और दीक्षा ली थी। बाद मे नमि और विनमि उनके पास पहुँचे और राज्यलक्ष्मी माँगने लगे। उनको विविध विद्याएँ मिल गई तथा वैताढ्य (रविषेण के अनुसार विजयार्ध) पर्वत पर, अर्थात् विन्ध्य प्रदेश मे अपना राज्य स्थापित करने का परामर्श दिया गया। ये दो राजकुमार विद्याधरो के पूर्वज है (दे० पउमचरियं, पर्व ३)। जैनियो के अनुसार विद्याधर मनुष्य ही माने जाते हैं। उन्हे कामरूपत्व, आकाशगामिनी आदि अनेक विद्याएँ सिद्ध होती हैं। इससे उनका नाम विद्याधर पड़ा। वानर-वंशी विद्याधरो की ध्वजाओ,

---

१ एच् लुडर्स : जर्मन ओरियेण्टल सोसाइटी जर्नल, भाग ९३ (१९३९), पृष्ठ ८६ आदि।
एच० याकोबी इनसाइक्लोपीडिया ऑव रिलिजन एंड एथिक्स ब्राह्मनिज्म।
ए० चक्रवर्ती : दि जैन गज़ेट, भाग २२ (१९२६), पृ० ११७।

२ निम्नलिखित स्थलो पर विद्याधरो का उल्लेख है—
१, १७, ५ २२ २४, २, ६४, १२, ४, ६७, ४५, ५, १, २२ २६ १६६, ५, १२, २०, ५, ५६, ४६ ४८, ६, ६६, ६८, ६, ७१, ६५, ७, २६, ८।

महलो तथा छतो के शिखर पर वानरो के चिह्न विद्यमान थे, अतः वे वानर कहलाए (दि० पउमचरियं ६, ८६)।

५७. जैन राम-कथा की एक तीसरी विशेषता यह है कि उसमे प्रारभ से ही उन लौकिक ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है, जिनमे राम का शिकार करना, रावण आदि का मांसाहारी होना, कुम्भकर्ण की छः महीने की निद्रा, रावण के राक्षस तथा सुग्रीव के वानर होने आदि की असत्य कथाएँ पाई जाती हैं। इससे स्पष्ट है कि जैन रामकथा वाल्मीकि रामायण के बाद उत्पन्न हुई है। जैन रामकथा के दो भिन्न रूप प्रचलित है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में तो केवल विमलसूरि की रामकथा का प्रचार है, लेकिन दिगम्बर सम्प्रदाय मे इसके दो रूप मिलते हैं, अर्थात् विमलसूरि तथा गुणभद्र दोनो की रामकथा प्रचलित है, यद्यपि विमलसूरि की परम्परा को अधिक महत्व मिला है। इन दो रूपो का अलग-अलग परिचय नीचे दिया जाता है।

ख—विमलसूरि की परम्परा

५८. विमलसूरि ने **पउमचरियं** लिखकर पहले-पहल लोकप्रिय रामकथा को जैन धर्म के साँचे मे ढालने का प्रयत्न किया है।[1] कवि का कहना है कि यह पद्मचरित आचार्यों की परम्परा से चला आ रहा था, नामावलीवद्ध था (१,८) और साधु-परम्परा (साहुपरम्पराएँ; ११८, १०२) द्वारा लोकप्रसिद्ध हो गया था। इसका अर्थ यह हो सकता है कि रामचरित केवल नामावली के रूप में रहा होगा अर्थात् "उसमे कथा के प्रधान-प्रधान पात्रों, उनके माता-पिताओ, स्थानो और भवान्तरो आदि के नाम ही होंगे। वह पल्लवित कथा के रूप में न होगा और उसी को विमलसूरि ने विस्तृत चरित के रूप मे रचना की होगी" (नाथूराम प्रेमी, जैन साहित्य और इतिहास, पृ० २८०)। फिर भी कवि का कहना है कि नारायण तथा बलदेव की कथा पूर्वगत (**पुव्वगए**; ११८, ११८) मे वर्णित थी और मैंने वही कथा अपने गुरु से सुनी थी। वह पूर्वगत आजकल अप्राप्य है।

विमलसूरि का काल असंदिग्ध नही है। जैन परम्परा के अनुसार (पउमचरिय ११८, १०३) **पउमचरियं** ७२ ई० की है, लेकिन भाषा के आधार पर डॉ० याकोवी आदि विद्वान् **पउमचरियं** को तीसरी अथवा चौथी शताब्दी ई० की रचना मानते है[2]।

---

१. पउमचरिय, भवनगर १९१४। एच० याकोवी का संस्करण।

२. एच० याकोवी : इन० रि० ए०, भाग ७ और माडर्न रिव्यू १९१४, दिसम्बर। ए० कीथ : हिस्टरी सं० लि०, पृष्ठ ३४। ए० सी० वूलनर : इन्ट्रोडक्शन टु प्राकृत।

यह ग्रन्थ शुद्ध जैन महाराष्ट्री मे लिखा है। इसका सस्कृत रूपान्तर रविषेणाचार्य ने ६६० ई० मे किया है, जो पद्मचरित[1] के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दी खडी बोली के इतिहास मे इस पद्मचरित का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योकि स० १८१८ मे दौलतराम ने इसका भाषा मे अनुवाद किया था।

रविषेण ने मौलिकता का किंचित् भी प्रदर्शन नही किया है। उनकी समस्त रचना **पउमचरियं** का पल्लवित छायानुवाद मात्र प्रतीत होती है। दोनो रचनाओ का कथानक एक ही है। आगे चलकर जैन कवियो ने रविषेण का अनुकरण किया है, उनकी रचनाओ मे प्राय. कथानक का कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर नही है। विमलसूरि तथा रविषेण की राम-कथा-परपरा की मुख्य रचनाएँ निम्नलिखित तालिका मे दी जाती है। इस विस्तृत साहित्य से जैनियो मे राम-कथा की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। सघदासकृत **वसुदेवहिण्डि** मे जो सक्षिप्त राम-कथा मिलती है, वह विमलसूरि की अपेक्षा वाल्मीकि के अधिक निकट है, अत इसका परिचय कथा-साहित्य के अतर्गत दिया जायगा (दे० आगे अनु० २५३)। हस्तिमल्लकृत **मैथिली-कल्याण** तथा **अंजनापवनंजय** नाटक का परिचय सस्कृत ललित साहित्य नामक अध्याय मे दिया जायगा (दे० अनु० २३६)।

५६ **(१) प्राकृत—**

(१) विमलसूरिकृत **पउमचरिय** (तीसरी-चौथी श० ई०)।

(२) शीलाचार्यकृत चउपन्नमहापुरिसचरिय के अंतर्गत **रामलक्खणचरियम** (नवी श० ई०)। यह राम-कथा विमलसूरि की परम्परा के अनुसार होते हुए भी वाल्मीकीय कथा से प्रभावित है।

(३) भद्रेश्वरकृत कहावली (११ वी श० ई०) के अतर्गत **रामायणम्**।

(४) भुवनतुङ्ग सूरि कृत **सीयाचरियं** तथा **रामलक्खणचरियं**।

(२) संस्कृत—

(१) रविषेणकृत **पद्मचरित** (६७८ ई०)। प्राचीनतम जैन सस्कृत ग्रन्थ।

(२) हेमचन्द्रकृत त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित (१२ वी श० ई०) के अतर्गत **जैन-रामायण**। कलकत्ता स० १६३०।

(३) हेमचन्द्रकृत योगशास्त्र की टीका के अतर्गत **सीतारावणकथानकम्**।

---

१ दे० मानिक चन्द्र जैन ग्रन्थमाला, न० २६-३१, पद्मचरितम्, बम्बई, वि० स० १६८५।

(४) जिनदासकृत **रामायण** अथवा **रामदेवपुराण** (१५ वी श०)। दे० एम्० विंटरनित्स, हि० इ० लि०, भाग २, पृ० ४९९।

(५) पद्मदेवविजयगणिकृत **रामचरित** (१६ वी श० ई०)। दे० राजेन्द्र लाल मित्र : नोटिसस संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, भाग १०, पृ० १३४ और भडारकर, रिपोर्ट १८८२-८३, पृ० ८२।

(६) सोमसेनकृत **रामचरित** (१६ वी श० ई०), इसकी हस्तलिपि जैन सिद्धात भवन, आरा मे सुरक्षित है।

(७) आचार्य सोमप्रभकृत **लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित**।

(८) मेघविजयगणिवरकृत **लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र** (१७ वी श० ई०)।

इन रचनाओ के अतिरिक्त जिनरत्नकोष मे धर्मकीर्त्ति, चन्द्रकीर्त्ति, चन्द्रसागर, श्रीचन्द्र, पद्मनाभ आदि द्वारा रचित विभिन्न **पद्मपुराण** अथवा **रामचरित्र** नामक ग्रन्थों का उल्लेख है। **सीताचरित्र** के तीन रचयिताओ के नाम मिलते है—ब्रह्मनेमिदत्त, शातिसूरि तथा अमरदास। अधिकाश सामग्री अप्रकाशित है।

दसवी शताब्दी के हरिषेणकृत **कथाकोष** मे **रामायणकथानकम्** (न० ८४) तथा **सीताकथानकम्** (न० ८९) पाया जाता है। इस अतिम रचना मे विमलसूरि के अनुसार सीता की अग्निपरीक्षा वर्णित है, लेकिन **रामायणकथानकम्** (५७ श्लोक) अधिकाश मे वाल्मीकीय कथा पर निर्भर है। रामचन्द्र मुमुक्षुकृत **पुण्याश्रवकथाकोष** (१३३१ ई०, हिन्दी अनुवाद, निर्णयसागर प्रेस, १९०७ ई०) मे जो लव-कुश की कथा मिलती है, वह भी विमलसूरि की परम्परा पर निर्भर है। हरिभद्रकृत **धूर्त्ताख्यानम्** (८ वी श० ई०) तथा अमितगतिकृत **धर्मपरीक्षा** (११ वी० श० ई०) मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित हनुमान के समुद्रलघन जैसी घटनाओ को असभव और हास्यास्पद बताया गया है। धनेश्वरकृत **शत्रुंजय माहात्म्य** के नवे सर्ग मे राम-कथा विमलसूरि के अनुसार है, किन्तु कैकेयी राम और लक्ष्मण दोनो के वनवास का वर माँग लेती है (१४ वी श० ई०)।

(३) अपभ्रंश—

(१) स्वयभूदेवकृत **पउमचरिउ** अथवा **रामायणपुराण** (८ वी श० ई०)। भारतीय विद्या भवन, बम्बई, स० २००९।

(२) रइधू अथवा रयधू **पद्मपुराण** अथवा **बलभद्रपुराण** (१५ वी श० ई०)। दे० हरिवंश कोछड, अपभ्रंश साहित्य, पृ० ११९ तथा रामसिंह तोमर, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य, पृ० १५४।

(४) कन्नड़—

(१) नागचन्द्र (अभिनव पम्प) कृत **पम्परामायण** या **रामचन्द्र-चरित पुराण** (११ वी श० ई०)। यह रचना कन्नड भाषा के कई रामचरित-सम्बन्धी ग्रन्थो का आधार है (दे० इ० हि० क्वा०, भाग २५, पृ० ५७४-८४)।

(२) कुमदेन्दुकृत **रामायण** (१६ वी श० ई०)।

(३) देवप्पकृत **रामविजयचरित** (१६ वी श० ई०)।

(४) देवचन्द्रकृत **रामकथावतार** (१८ वी श० ई०)।

(५) चन्द्रसागर वर्णीकृत **जिनरामायण** (१९ वी श० ई०)।

६० विमलसूरि की कथा तथा वाल्मीकि रामायण की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि मुख्य कथावस्तु की दृष्टि से दोनो मे कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही है। राम-कथा के विभिन्न प्रसगो मे जो अतर विमलसूरि की रचना मे मिलते हैं, इनका विश्लेषण प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायगा। विमलसूरि ने राम को पउम (पद्म) कहा और तदनुसार अपनी रचना का नाम पउमचरिय (पद्मचरित) रखा है। जैन साहित्य मे कृष्ण के भाई बलराम को भी राम कहा जाता था। सभवतः विमलसूरि ने इसलिए राम का नाम बदल दिया। यद्यपि वह उन्हे राम, राहव (राघव), रामदेव आदि भी कहते है। पद्म नाम का कारण यह है कि अपराजिता ने **"पउमसरिसमुहं"** (२५,७) पुत्र को उत्पन्न किया और दशरथ ने **'पउमुप्पलदलच्छो'** (पद्मकमल दल नेत्र वाले, २५,८) पुत्र को देख कर उसका नाम 'पउम' रखा। समस्त कथानक को छह भागों मे विभक्त कर पउमचरिय का सार नीचे दिया गया है।

रावण-चरित (पर्व १-२०)

राजा सेणिय (श्रेणिक) किसी दिन महावीर के प्रधान शिष्य गोयम (गौतम) से राम-कथा का यथार्थ रूप जानने की इच्छा प्रकट करता है। इस पर गोयम पउमचरिय सुनाता है। प्रारभ मे विद्याधर लोक, राक्षसवश तथा वानरवश का वर्णन दिया जाता है[1]।

रावणचरित वाल्मीकि के उत्तरकाण्ड से सम्बन्ध रखते हुए भी पर्याप्त मात्रा मे भिन्न है। राक्षस-राजा रत्नश्रवा तथा केकसी की चार सन्तान हैं—दशमुख (रावण), भानुकर्ण (कुम्भकर्ण), चन्द्रनखा (सूर्पणखा) और विभीषण। जब रत्नश्रवा ने

१ ऊपर इसका उल्लेख हो चुका है कि राक्षस तथा वानर, दोनो विद्याधर-वश की भिन्न-भिन्न शाखाएँ हैं (दे० ऊपर अनु० ५६)।

पहले-पहल अपने पुत्र को देखा था, तब शिशु माला पहने हुए था, इस माला मे पिता को बालक के दस सिर दिखाई पडे और इसीलिए शिशु का नाम दशमुख रखा गया (दे० ७, ६६)। अपने मौसरे भाई वैश्रमरण (वैश्रवरण) का विभव देखकर दशमुख अपने भाइयो के साथ तप करने जाता है तथा विभिन्न विद्याएँ प्राप्त कर लेता है। अनन्तर मन्दोदरी तथा अन्य ६००० विद्याधर-कन्याओ के साथ रावरण के विवाह का वर्णन किया गया है। बाद मे रावरण वैश्रमरण तथा यम को परास्त करता है और पुष्पक प्राप्त कर लका मे प्रवेश करता है (पर्व ८)।

रावरण-वालि सघर्ष का वृत्तान्त इस प्रकार है। रावरण वालि के पास दूत भेजकर उसकी बहन श्रीप्रभा को पत्नीस्वरूप माँगता है तथा वालि को आकर प्ररणाम करने का आदेश देता है। वालि जिनवरेंद्र को छोडकर किसी को प्ररणाम करने से इनकार करता है और अपने भाई सुग्रीव को राज्य देकर जैन दीक्षा लेने जाता है (पर्व ६)। सुग्रीव रावरण को प्ररणाम करता है तथा श्रीप्रभा का रावरण के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है। बाद मे वालि द्वारा रावरण की पराजय के वृत्तान्त को सर्वथा नवीन रूप दिया गया है, जिसमे वालि रामायरणीय कथा के शिव का स्थान लेकर रावरण द्वारा उठाए हुए पर्वत को अपने पैर के अगूठे से दबा देता है (दे० आगे अनु० ६५५)।

रावरण की बहुत सी विजय-यात्राओ का वर्णन किया गया है, जिनमे वह सहस्र-किरण, नलकूबर, इन्द्र, वरुण आदि को परास्त करता है (दे० आगे ६५२)। ध्यान देने योग्य है कि यम, इन्द्र, वरुण आदि देवता न होकर साधारण राजा माने जाते हैं। खरदूषण किसी विधाधर वश का राजकुमार है, जो रावरण की बहन चन्द्रनखा से विवाह करता है। आगे चलकर उनकी पुत्री अनंगकुसुमा तथा उनके पुत्र शम्बूक का उल्लेख होगा।

रावरण का चरित्र-चित्ररण वाल्मीकि रामायरण से बहुत भिन्न है—वह एक धर्म-भीरु जैनी है, जो जिन-मन्दिरो का जीर्णोद्धार करता है तथा ऐसे यज्ञो पर रोक लगाता है, जिनमे पशुओ को मारा जाता है (पर्व ११)। वह नलकूबर की पत्नी उपरभा का प्रेम प्रस्ताव अस्वीकार करता है (पर्व १२) तथा अनन्तवीर्य का धर्मोपदेश सुनकर व्रत लेता है कि वह विरक्त परनारी के साथ रमरण नही करेगा (दे० आगे अनु० ५४२)।

हनुमच्चरित का पर्याप्त विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। वह पवजय तथा अजना सुन्दरी के पुत्र हैं (दे० आगे अनु० ६६६), वरुण के विरुद्ध रावरण की सहायता करते हैं तथा चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा को पत्नी के रूप मे प्राप्त कर लेते है, इसके अतिरिक्त वे और बहुत से विवाह करते हैं (दे० आगे अनु० ६६६)।

रावरण-चरित के अन्त मे जिनवरो, तीर्थंकरो, बलदेवो, वासुदेवों और प्रतिवासु-देवो की नामावलियाँ दी गई हैं (दे० पर्व २०)।

राम और सीता का जन्म और विवाह (पर्व २१-३२)

रामायण की आधिकारिक कथावस्तु का वर्णन जनक तथा दशरथ की वशावली से प्रारभ होता है (पर्व २१-२२)। दशरथ के अपराजिता तथा सुमित्रा के साथ विवाह के उल्लेख के अनन्तर निम्नलिखित कथा मिलती है। किसी दिन नारद ने दशरथ के पास पहुँचकर समाचार दिया कि विभीषण उनको इसीलिए मारना चाहता है कि एक नैमित्तिक ने कहा है—"सागर के मार्ग से आकर दशरथ का पुत्र जनक की पुत्री सीता के कारण रावण को युद्ध मे मारेगा"। इसके वाद नारद ने जनक को भी सावधान किया। दोनो राजा अपना-अपना राज्य छोड कर पृथ्वी पर भ्रमण करने लगे। मत्रियो ने दशरथ तथा जनक के प्रतिरूप वनवाकर उन्हे उनके-उनके महल मे रखवा दिया। वाद मे विभीषण ने दशरथ की मूर्ति का सिर कटवाया (पर्व २३)[1]। परदेश मे दशरथ तथा जनक कैकेयी के स्वयवर मे पहुँचे, स्वयवरा ने दशरथ के गले मे माला डाल दी। इस पर अन्य राजाओ के साथ युद्ध हुआ, जिसमे कैकेयी ने वडे कौशल से दशरथ का रथ हाँका। विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् दोनो राजा अपनी-अपनी राजधानी लौटे। घर पहुँचकर दशरथ ने कैकेयी को एक वर दिया किन्तु कैकेयी ने कहा—अवसर आने पर माँग लूँगी। दशरथ की सन्तति इस प्रकार वताई जाती है—राम अथवा पद्म अपराजिता (कौशल्या) से जन्म लेते हैं, लक्ष्मण सुमित्रा से और भरत तथा शत्रुघ्न, दोनो ही कैकेयी से। [रविषेण के अनुसार शत्रुघ्न सुप्रभा नामक दशरथ की एक चतुर्थ महिषी के पुत्र हैं, जैन लेखक प्राय रविषेण का अनुसरण करते है]।

राजा जनक की विदेहा नामक महारानी के एक पुत्री सीता और एक पुत्र भामडल उत्पन्न हुआ। राम म्लेच्छो के विरुद्ध जनक की सहायता करते हैं, जिसके फलस्वरूप राम तथा सीता का वाग्दान हुआ, वाद मे सीता-स्वयवर के अवसर पर राम ने धनुष चढाया और राम-सीता का विवाह सम्पन्न हुआ। इसके वाद दशरथ को वैराग्य हुआ। उस समय कैकेयी ने अपने वर के वल पर भरत के लिए राज्य माँग लिया। यह सुनकर राम, लक्ष्मण और सीता दक्षिण की ओर चले जाते हैं। पश्चात्तापिनी कैकेयी के अनुरोध पर भरत वन मे जाकर राम से राज्य को स्वीकार करने का अनुरोध करते है। राम के इनकार करने पर वह अयोध्या लौटकर स्वय राज्य-भार ग्रहण करते हैं, वाद मे भरत किसी मुनि के समक्ष यह प्रतिज्ञा करते है कि राम के प्रत्यागमन पर मैं दीक्षा ग्रहण करूँगा।

---

१ रविषेण के अनुसार विभीषण दशरथ तथा जनक, दोनो की मूर्तियो का सिर कटवाता है (दे० पर्व २३, ५६)।

वनभ्रमण (पर्व ३३-४२)

यद्यपि पर्व ३३ के प्रारंभ मे चित्रकूट का उल्लेख है, फिर भी पउमचरियं का यह अंश वाल्मीकीय वृत्तान्त से नितान्त भिन्न है। इसमे राम अथवा लक्ष्मण द्वारा निम्नलिखित राजाओ की पराजय का वर्णन मिलता है—वज्रकर्ण के विरोधी सिंहोदर (पर्व ३३), म्लेच्छो का राजा, जिसने कल्याणमालिनी के पिता को कारावास मे रखा था (३४), भरत के विरोधी अतिवीर्य (३७)। कई अवसरो पर लक्ष्मण को कन्याएँ विवाह मे दी जाती हैं, वह सबो को स्वीकार कर कहते है कि लौटते समय उन्हे ले जाऊँगा। इस प्रकार वज्रकर्ण ८ कन्याओ को तथा सिंहोदर आदि राजा ३०० कन्याओ को प्रदान करते है। इनके अतिरिक्त लक्ष्मण वनमाला, रतिमाला तथा जितपद्मा को भी प्राप्त कर लेते है।

कपिल नामक ब्राह्मण (पर्व ३५) और देवभूषण तथा पद्मभूषण नामक मुनियो (पर्व ३९) से भी भेंट का वर्णन किया गया है। राम की आज्ञा से राजा सुरप्रभ ने वंश पर्वत पर बहुत से मन्दिर बनवाए, जिससे इसका नाम रामगिरि रखा गया (पर्व ४०)। दण्डकारण्य मे प्रवेश करने के पश्चात् एक मुनिवर ने सीता से निवेदन किया कि वह जटायु की रक्षा करे (दे० आगे अनु० ४७२)।

सीता-हरण और खोज (पर्व ४३-५३)

सीताहरण का कारण विमलसूरि के अनुसार इस प्रकार है—शम्बूक ने (चन्द्रनखा तथा खरदूषण का पुत्र) सूर्यहास खग की सिद्धि के लिए १२ वर्ष तक साधना की थी। उसकी साधना सफल हुई और खग प्रकट हुआ। लक्ष्मण सयोग से वहाँ पहुँचते हैं। खंग को देखकर वह उसे उठाते है और पास के बाँस को काट कर शम्बूक का सिर भी काट लेते है। चन्द्रनखा अपने मृत पुत्र को देखकर विलाप करते-करते वन में फिरने लगती है। राम और लक्ष्मण के पास पहुँचकर वह उनसे उनकी पत्नी बनने का प्रस्ताव करती है। असफल होकर वह पति के पास लौट कर अपने पुत्र के वध का समाचार सुनाती है। रावण को भी सूचना भेजी जाती है। इतने मे लक्ष्मण अकेले ही खरदूषण की सेना को रोक लेते हैं। रावण पहुँचकर और सीता को देखकर उनपर आसक्त हो जाता है। वह अवलोकनी विद्या से जानता है कि लक्ष्मण ने राम को बुलाने के लिए उन्हे सिंहनाद का सकेत बताया है। अतः वह सिंहनाद करके और इस प्रकार राम को लक्ष्मण के पास भेज कर सीता का हरण करने मे सफल होता है।

सीता-हरण के बाद राम और सुग्रीव के सख्य का वर्णन किया जाता है। सुग्रीव की विपत्ति वाल्मीकीय रामायण के वृत्तान्त से भिन्न है। साहसगति ने सुग्रीव का

रूप धारण कर उसकी पत्नी और राज्य को छीन लिया था। राम साहसगति को मार-कर सुग्रीव को उसका राज्य लौटाते हैं। सुग्रीव राम के प्रति अपनी १३ कन्याओं को समर्पित करते है, किन्तु सीता के वियोग मे दुःखित राम को उनकी सगति मे सुख नहीं मिलता। सुग्रीव की आज्ञा से विद्याधर सीता की खोज करने जाते हैं। खोजते हुए सुग्रीव रत्नजटी से सुनता है कि रावण ने सीता का हरण किया है। यह सुनकर सब विद्याधर रावण से डर कर युद्ध करने से इनकार करते है। तब उनको अनन्तवीर्य का वह कथन स्मरण आता है, जिसमे उसने रावण से कहा था कि जो कोटि-शिला उठा सकेगा, उससे तेरी मृत्यु होगी। अतः विमान पर चढकर सब वहाँ जाते है और लक्ष्मण कोटि-शिला उठाते हैं। लेकिन विद्याधर अब भी रावण से डरते है और हनुमान् को रावण के पास भेजने की सलाह देते है कि वह विभीषण की सहायता से रावण को समझाये। हनुमान् इस यात्रा मे अपने नाना महेन्द्र को परास्त करते है (क्योंकि महेन्द्र ने उसकी माता अंजना को अपने घर से निकाला था) और दधिमुख नगर के राजा की तीन कन्याओ से भेट करते है, जिनका विवाह साहसगति को मारने वाले से निश्चित हुआ। लका के पास पहुँचकर वह विभीषण द्वारा निर्मित प्राचीर पार कर पहले वज्रमुख का वध करते है और अनन्तर उसकी कन्या लकासुन्दरी को परास्त कर उसके साथ रात भर क्रीडा करते है। तब वह लका मे प्रवेशकर विभीषण तथा सीता से मिलते है। बाद मे वह लका मे उद्यानो तथा महलो का विध्वस करने लगते है और इन्द्रजित् द्वारा बाँधे जाकर रावण के सामने उपस्थित किए जाते है। वह रावण को धमकाकर अपने बन्धनो को तोडते है और रावण का महल ध्वस्त करके सीता का सन्देश राम के पास ले जाते है।

युद्ध (पर्व ५४-७७)

वाल्मीकीय वृत्तान्त को दृष्टि मे रखकर युद्धकाण्ड की घटनाओ के वर्णन में निम्नलिखित परिवर्तन उल्लेखनीय है—

(१) सेतुबन्ध के स्थान पर समुद्र नामक राजा की कथा दी गई है—वह वानरो की सेना रोक लेता है तथा नल द्वारा पराजित होकर लक्ष्मण को अपनी चार कन्याओ को समर्पित करता है (पर्व ५४)।

(२) विभीषण के अनुरोध करने पर कि सीता को लौटाया जाय, रावण ने उसे नगर से निकालने का आदेश दिया। इस पर विभीषण ने अपनी समस्त सेना के साथ हसद्वीप मे राम की शरण ली। उसी समय सीता के भाई भामडल भी युद्ध मे भाग लेने के लिए राम के पास आ पहुँचे (पर्व ५५)।

(३) राम और लक्ष्मण के स्थान पर सुग्रीव और भामण्डल इन्द्रजित् के नागपाश मे बाँधे गए तथा गरुड़केतु लक्ष्मण द्वारा मुक्त हुए (पर्व ६०) ।

(४) लक्ष्मण को रावण की शक्ति लगने पर द्रोणमेघ की कन्या विशल्या उनकी चिकित्सा करती है और अनन्तर लक्ष्मण तथा विशल्या का विवाह सम्पन्न हो जाता है। दोनो के पूर्वजन्म की कथा भी वर्णित है, जिसके अनुसार वे पहले पुनर्वसु तथा अनंगशरा थे (पर्व ६१-६४) ।

(५) रावण सामन्त नामक दूत को भेजकर सन्धि का प्रस्ताव करता है। रावण राम को अपने राज्य का एक अश तथा ३००० कन्याओ को इस शर्त पर देने को तैयार है कि वह सीता को त्याग दे और कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् तथा मेघवाहन को मुक्त कर दे (पर्व ६५) ।

(६) रावण बहुरूपा नामक विद्या को सिद्ध करने के लिए शातिनाथ के मन्दिर मे साधना करने जाता है। वानर सैनिको के द्वारा ध्यान भग किए जाने के निष्फल प्रयत्न के बाद रावण अपनी साधना मे सफलता प्राप्त करता है (पर्व ६६-६८) ।

(७) बहुरूपा विद्या सिद्ध करने के पश्चात् रावण फिर सीता से मिलने गया तथा उसने धमकी दी कि अब राम का वध करके मैं तुम्हारे साथ अवश्य ही रमण करूँगा। सीता ने उत्तर दिया कि मेरा जीवन राम के जीवन पर अवलवित है और वह मूर्च्छा खाकर पृथ्वी पर गिर गई। राम के प्रति सीता का अटल प्रेम देखकर रावण पछताने लगा और उसने संग्राम मे राम तथा लक्ष्मण को हराकर उन्हे सीता को लौटाने का सकल्प किया (पर्व ६६) ।

(८) लक्ष्मण (नारायण) ही रावण (प्रतिनारायण) का वध करते है (पर्व ७३) ।

(९) कुम्भकर्ण तथा रावण के पुत्र इन्द्रजित् तथा मेघवाहन, जो युद्ध मे कैदी हो गए थे, रावण-वध के पश्चात् मुक्त किए जाते हैं। वे विरक्त होकर तपस्या करने जाते हैं। मन्दोदरी, चन्द्रनखा आदि ८००० युवतियाँ भी महल को छोड़कर साधना का जीवन अपनाती है (पर्व ७५) ।

(१०) लंका मे प्रवेशकर राम सर्वप्रथम सीता से मिलने जाते है। देवता दोनो का मिलन देखकर पुष्पवृष्टि करते है तथा सीता के निर्मल चरित्र का साक्ष्य देते हैं, राम के किसी सन्देह अथवा सीता की अग्निपरीक्षा की ओर सकेत मात्र भी नही मिलता (पर्व ७६) है।

(११) राम-लक्ष्मण अब रावण के महल मे ठहरते है तथा उन कन्याओ को बुला भेजते हैं, जिनके साथ उनकी मँगनी हो चुकी है। लंका में ही उनके साथ विवाह सम्पन्न

हो जाता है। इसके बाद राम-लक्ष्मण के छः वर्ष तक लका मे निवास करने का उल्लेख किया गया है (पर्व ७७)।

उत्तरचरित (पर्व ७८-११८)

नारद लका मे राम के पास पहुँचकर पुत्र-वियोग के कारण दु.खित अपराजिता की दशा का वर्णन करते हैं, जिससे राम तथा लक्ष्मण साकेत लौटने का निश्चय करते हैं (पर्व ७८)। उनके आगमन के पश्चात् भरत को वैराग्य हुआ, वे दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं (पर्व ८०-८४)। अनन्तर लक्ष्मण के राज्याभिषेक तथा विद्याधर राजाओ पर विजय का वर्णन किया गया है। लक्ष्मण की १६००० पत्नियाँ (जिनमे से विशल्या आदि ८ पटरानियाँ हैं) तथा राम की ८०००' पत्नियाँ बताई जाती हैं, जिनमे से सीता, प्रभावती, रतिनिभा तथा श्रीदामा प्रधान हैं (पर्व ८५-६१)। सीता-त्याग की कथा वाल्मीकि से बहुत भिन्न नही है (दे० आगे अनु० ७१८)। सीता के पुत्रो के नाम लवण (अथवा अनग-लवण) तथा अकुश (अथवा मदनाकुश) माने गए हैं (पर्व ६७)। वे नारद के भडकाने पर अयोध्या मे राम और लक्ष्मण से युद्ध करने आते हैं (दे० आगे अनु० ७४६)। इस युद्ध के बाद सुग्रीव, हनुमान्, विभीषण आदि के अनुरोध पर राम सीता को बुला भेजते हैं, किन्तु वह सीता से सतीत्व का प्रमाण चाहते हैं। सीता अग्नि-परीक्षा मे सफल होकर दीक्षा लेती है और स्वर्ग मे इन्द्र बन जाती है (दे० आगे अनु० ६०१ और ७५३)।

राम-कथा का निर्वहण इस प्रकार है। किसी दिन दो देवता बलभद्र (राम) और नारायण (लक्ष्मण) का स्नेह परखने के लिए लक्ष्मण को विश्वास दिलाते हैं कि राम का देहान्त हुआ है। इस पर लक्ष्मण शोकातुर होकर मरते हैं और नरक जाते हैं। लक्ष्मण की अन्त्येष्टि के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते हैं और १७००० वर्ष तक साधना करके निर्वाण प्राप्त करते हैं। अन्त मे लक्ष्मण, रावण तथा सीता के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि उनको भी अनेक बार जन्म लेने के बाद मुक्ति मिल जायगी (पर्व ११०-११८)।

६१ परवर्ती जैन राम-कथाओ का सब से महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि हरिभद्र-कृत **उपदेशपद**, भद्रेश्वरकृत **कहावली**, हेमचन्द्रकृत **जैनरामायण** तथा देवविजय-गणिकृत **रामचरित** मे रावण का चित्र सीता के परित्याग का कारण माना गया है (दे० आगे अनु० ७२२)। हेमचन्द्रकृत **सीता-रावण कथानकम्** मे कैकेयी अपने एक दूसरे वर के बल पर राम-लक्ष्मण-सीता के लिए १४ वर्ष तक बनवास माँग लेती है। हेमचन्द्र की इस राम-कथा मे उत्तरचरित का अभाव है।

ग—गुणभद्र की परम्परा

६२ जैन राम-कथा का दूसरा रूप हमे पहले-पहल गुणभद्रकृत उत्तरपुराण मे मिलता है। गुणभद्र जिनसेन के शिष्य तथा कर्नाटक प्रान्त के निवासी थे। इन्होंने अपने गुरु के आदिपुराण के अंतिम १६२० श्लोक रचकर उसे समाप्त कर दिया और इसके बाद उत्तरपुराण अर्थात् त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण का द्वितीय भाग भी लिखा है। इस उत्तरपुराण के अन्तर्गत आठवे बलदेव, नारायण तथा प्रतिनारायण (अर्थात् राम-लक्ष्मण-रावण) का चरित्र ६७ वे तथा ६८ वे पर्व मे १११७ श्लोको मे वर्णित है (दे० स्याद्वाद ग्रन्थमाला, न० ८, इन्दौर, सं० १९७५)। यह राम-कथा विमलसूरि तथा वाल्मीकि के कथानक से बहुत भिन्न है, इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमे सीता को रावण तथा मंदोदरी की औरस पुत्री माना गया है। सीता-जन्म का यह रूप पहले-पहल संघदास के वसुदेवहिण्डि मे प्रस्तुत किया गया है (दे० आगे अनु० ४१२)।

गुणभद्र का आधार बहुत कुछ अज्ञात है। किन्तु वह विमलसूरि तथा संघदास की रचनाओं अथवा उनकी परम्परा से अवश्य परिचित थे। जिनसेन अपने आदिपुराण मे कवि परमेश्वर की गद्य-कथा का उल्लेख करते हैं और उसे अपनी रचना का आधार मानते हैं। गुणभद्र जिनसेन की रचना पूरी करते हैं। अतः बहुत संभव है कि वह भी कवि परमेश्वर की कथा पर निर्भर रहे हो। कवि परमेश्वर की रचना अप्राप्य है लेकिन तिब्बती रामायण तथा अन्य ग्रन्थो मे भी सीता मन्दोदरी की पुत्री मानी जाती है। अतः राम-कथा का यह रूप संभवतः जनसाधारण मे प्रचलित हुआ होगा और कवि परमेश्वर या गुणभद्र ने उसे जैन-धर्म के ढाँचे मे ढालकर अपनी रचना मे स्थान दिया होगा। श्री नाथूराम प्रेमी[1] गुणभद्र की राम-कथा के आधार के विषय मे यह लिखते हैं—'हमारा अनुमान है कि गुणभद्र से बहुत पहले विमलसूरि ही के समान किसी अन्य आचार्य भी जैनधर्म के अनुकूल सोपपत्तिक और विश्वसनीय स्वतन्त्र रूप से राम-कथा लिखी होगी और गुणभद्राचार्य को गुरु-परम्परा द्वारा मिली होगी।' गुणभद्र की गुरु-परम्परा के दो और नाम कन्नड भाषा के कवि चामुण्ड राय की रचना मे मिलते है। चामुण्डराय त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण के लेखकों की निम्नलिखित सूची देते है—कूचि भट्टारक, नन्दिमुनीश्वर, कविपरमेश्वर, जिनसेन, गुणभद्र। गुणभद्र की राम-कथा अन्य जैन रचनाओं में भी ज्यो की त्यो मिलती है।

---

१. दे० नाथूराम प्रेमी · जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ २८२।

६३ संस्कृत—गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (नवी श० ई०)[1]

कृष्णदास कविकृत पुण्यचन्द्रोदय पुराण (१६ वी० श० ई०)

प्राकृत—पुष्पदन्तकृत महापुराण, संधियाँ ६६-७६ (१० वी श० ई०)

कन्नड—चामुण्डरायकृत त्रिषष्टिशलाकापुरुषपुराण (१० वी श० ई०)

बंधुवर्मा का जीवनसंबोधन (१२०० ई०)

नागराजकृत पुण्याश्रवकथासार (१३३१ ई०)

पुण्यचंद्रोदय पुराण छोड़कर उपर्युक्त रचनाओ मे राम-कथा के अतिरिक्त अन्य ६३ महापुरुषो के चरित भी मिलते है। गुणभद्र की राम-कथा का सक्षिप्त कथानक इस प्रकार है :

६४. दशरथ (वाराणसी के राजा) के चार पुत्र उत्पन्न होते है—राम सुबाला के गर्भ से, लक्ष्मण कैकेयी के गर्भ से और बाद मे जब दशरथ अपनी राजधानी को साकेतपुर स्थापित कर चुके है तब भरत और शत्रुघ्न, किसी अन्य रानी के गर्भ से, जिसका नाम नही दिया जाता है। दशानन विनमि विद्याधर वश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमितवेग की पुत्री मणिमती को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना मे विघ्न डालने का प्रयत्न करता है। मणिमती निदान करती है : 'मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूँगी।' मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मदोदरी के गर्भ मे आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते है कि वह आप का नाश करेगी। अत. रावण ने भयभीत होकर मारीचि को आज्ञा दी कि वह उसे कही छोड दे। कन्या को एक मजूषा मे रखकर मारीचि उसे मिथिला देश मे गाड आता है। हल को नोक से उलझ जाने के कारण वह मजूषा दिखलाई पडती है और लोगो द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है। जनक मजूषा को खोल कर एक कन्या को देखते है और उसका नाम सीता रखकर उसे पुत्री की तरह पालते हैं। बहुत समय के बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते है। इस यज्ञ के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम सात

[1] भारतीय ज्ञानपीठ काशी का सस्करण (सन् १९५४)। मल्लिषेणकृत महापुराण (११ वी श० ई०) प्रकाशित नही है। १३०० ई० के आशाधर कृत 'त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्रम्' (मानिकचन्द जैन ग्रन्थमाला न० ३६) में जिनसेन तथा गुणभद्र का सार मिलता है। राम-कथा ८१ श्लोको मे समाप्त की जाती है।

अन्य कुमारियो से विवाह करते है और लक्ष्मण पृथ्वी देवी आदि १६ राज-कन्याओं से। दोनो दशरथ से आज्ञा लेकर वाराणसी में रहने लगते हैं।

नारद से सीता के सौंदर्य का वर्णन सुनकर, रावण उसे हर लाने का संकल्प करता है। सीता का मन जाँचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असभव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका मे विहार करते हैं तब मारीचि स्वर्ण मृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है। इतने मे रावण राम का रूप धारण कर सीता से कहता है कि मैंने मृग को महल भेजा है और उनको पालकी पर चढने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव मे पुष्पक है, जो सीता को लका ले जाता है। रावण सीता का स्पर्श नही करता है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जायेगी।

दशरथ को एक स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया है और वह राम के पास यह समाचार भेजते है। इतने मे सुग्रीव और अणुमान वालि के विरुद्ध सहायता माँगने के लिए पहुँचते है। हनुमान् लका जाते हैं और सीता को सान्त्वना देकर लौटते हैं। इसके बाद लक्ष्मण द्वारा वालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। सेतु-बन्ध का प्रसग छोड दिया गया है, वानरो और राम की सेना विमान से लका पहुँचाई जाती है। युद्ध के अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन के अन्त मे लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काटते है। राम परीक्षा लिए बिना सीता को स्वीकार करते है। इसके बाद लक्ष्मण राम के साथ ४२ वर्ष तक दिग्विजय-यात्रा करते हैं और अर्द्ध चक्रवर्ती बनकर अयोध्या लौटते हैं। अनन्तर दोनो का सम्मिलित अभिषेक सम्पन्न हो जाता है। लक्ष्मण की १६,००० और राम की ८,००० रानियाँ बताई जाती हैं। कुछ वर्ष बाद राम तथा लक्ष्मण, अपने भाइयों भरत तथा शत्रुघ्न को राज्य देकर वाराणसी चले आए। सीता के विजयराम आदि आठ पुत्र उत्पन्न होते हैं (सीता-त्याग का उल्लेख नही मिलता)। लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मरकर रावण-वध के कारण नरक जाते हैं। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीचन्द्र को राज्य-पद पर और सीता के कनिष्ठ पुत्र अजितंजय को युवराज पद पर अभिषिक्त कर सुग्रीव, अणुमान, विभीषण आदि पाँच सौ राजाओ तथा १८० पुत्रो के साथ साधना करने जाते हैं, ३९५ वर्ष बीत जाने पर राम को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। सीता भी अनेक रानियो के साथ दीक्षा लेती हैं। अन्त मे राम तथा अणुमान की मोक्ष प्राप्ति का उल्लेख किया गया है, सीता स्वर्ग मे पहुँचती हैं तथा लक्ष्मण के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि नरक से निकल कर वह भी संयम धारण करेंगे तथा मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे।

द्वितीय भाग

रामकथा की उत्पत्ति

अध्याय ६

दशरथ-जातक की समस्या

६४ दशरथ-जातक में राम-कथा का जो रूप विद्यमान है, उसे अनेक विद्वान् रामायण की कथा का मूलरूप समझते हैं। डॉ० वेबर ने पहले-पहल इस मत का प्रतिपादन किया था। यद्यपि डॉ० याकोबी ने इसका खंडन किया था, फिर भी आधुनिक काल तक दिनेशचन्द्र सेन आदि डॉ० वेबर का मत मानते चले आ रहे हैं[1]। प्रस्तुत अध्याय में इस विवादग्रस्त विषय से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का पूरा विश्लेषण करना अनुचित नहीं होगा।

दशरथ-जातक पाली जातकट्ठवण्णना में सुरक्षित है। इस पुस्तक की प्रामाणिकता पर पहले परिच्छेद में प्रकाश डाला गया है और इसके बाद के दो परिच्छेदों में

---

1. दे०—ए० वेबर : ऑन दि रामायण।
दिनेशचन्द्र सेन : दि बंगाली रामायन्स, पृ० ७ आदि।
ग्रियर्सन : ज० रा० ए० सो०, १९२२ पृ० १३५-३६।
डब्ल्यू स्टुटरहाइम : राम लेगेन्डन उंड राम-रेलिफ्स इन इंडोनेशियन, पृ० १०५।
जे० प्रिजुल्स्की : इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टर्ली, भाग १५, पृ० २८९।
डी० ए० नरसिंहाचार का मत है कि इस प्रश्न का निर्णय करना असंभव है (वही, पृ० ५८०)।
निम्नलिखित विद्वान् एच० याकोबी के अनुसार दशरथ जातक में राम-कथा का विकृत रूप देखते हैं—
एम० मोनियर विलियम्स : इंडियन विज़डम, पृ० ३१६ टि०।
सी० वी० वैद्य : दि रिडिल ऑव दि रामायण, पृ० ७३।
एम० विंटरनित्स : हि० इं० लि०, भाग १, पृ० ५०८।
सी० लैस्सन ने पहले-पहल इस मत का प्रतिपादन किया था। दे० इंडियन एल्टरटुम्सकुंडे, भाग ३ (१८७४), पृ० १०२-३।

दशरथ-जातक की गाथाओ और गद्य का अलग-अलग विश्लेषण किया गया है। अध्याय के अन्त मे रामायण और बौद्ध-साहित्य के पारस्परिक प्रभाव पर विचार किया जायगा।

क—पाली जातकट्ठवण्णना की प्रामाणिकता

६६ बौद्ध तिपिटक (बौद्ध धर्म की श्रुति) तीसरी शताब्दी ई० पू० मगध देश मे पाली भाषा मे लिपिवद्ध किया गया था। इसके द्वितीय पिटक (सुत्त पिटक) के पाँचवे भाग का नाम खुद्दक-निकाय है। इसी खुद्दक-निकाय के अन्तर्गत जातको की गाथाएँ दी गई है और तीसरी शताब्दी ई० पू० से सुरक्षित है।[1] इन गाथाओ के साथ-साथ प्रारम्भ ही से गद्य की टीका भी प्रचलित हुई होगी, क्योकि इसके बिना वहुत-सी गाथाएँ अपूर्ण और अवोधगम्य है। वर्तमान पाली जातकट्ठवण्णना पाँचवी शताब्दी ई० की एक सिहली पुस्तक का अनुवाद है। मूल सिहली पुस्तक, जिसमे केवल गाथाएँ पाली मे दी गई थी, आजकल अप्राप्य है। इसके अज्ञात लेखक का कहना है कि मैंने अनुराधपुर की परम्परा के आधार पर अपनी रचना की है।[2]

उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट है कि गाथाओ की अपेक्षा जातको का गद्य वहुत कम महत्वपूर्ण और प्रामाणिक है। ये कथाएँ पाँचवी ई० मे परम्परा के आधार पर लिपिवद्ध की गई हैं। शताब्दियो तक अस्थिर रहने के कारण इनमे परिवर्तन और परिवर्द्धन की संभावना रही है। इस गद्य को तीसरी श० ई० पू० की अखड परम्परा मानना और इसके आधार पर रामायण के मूलरूप के सम्वन्ध मे किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करना अवैज्ञानिक है। वास्तव मे जातकट्ठवण्णना मे अनेक स्थलो पर गाथाओ और गद्य मे विरोध और असगति दिखलाई पडती है। एक जातक (न० २५३) विनयपिटक और जातकट्ठवण्णना, दोनो मे मिलता है। गाथा तो एक ही है लेकिन गद्य दोनो ग्रन्थो मे भिन्न है, जिससे स्पष्ट है कि जातको के गद्य की प्रामाणिकता सदिग्ध है।[3]

---

१. दे० टी० डब्लू रिजडेविड्स बुद्धिस्ट इडिया, पृ० १८३।
एम० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग २, पृ० ११५।
फिर भी इन गाथाओं मे कही-कही परिवर्द्धन हुआ है। दे० इडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली, भाग ४, पृ० ११-१२।

२. अनुराधपुर की यह परम्परा आजकल एक अप्राप्य पाली जातकट्ठ-कथा पर निर्भर है; इसका अनुवाद सिहली मे हुआ था।

३. हेर्टेल : जर्मन आरियन्टल जनरल, भाग ६०, पृ० ३६६ आदि। शार्पेंटिये, वही, भाग ६२, पृ० ७२५ आदि। विंटरनित्स : हि० इं० लि०, भाग २, पृ० ११६ टि०।

ख—दशरथ जातक की गाथाएँ

६७ दशरथ-जातक मे जो राम-कथा मिलती है, वह रामायणीय कथा का विकृत रूप माना जाना चाहिए। इसके प्रमाण तीसरे परिच्छेद मे दिए जाएँगे। हमारे तर्कों का एक महत्वपूर्ण आधार यह है कि इस जातक की सारी कथाएँ गद्य मे दी गई है और पुरानी गाथाओ से कोई विशेष सम्बन्ध नही रखती। प्रस्तुत परिच्छेद मे इन गाथाओ का अलग विश्लेषण किया गया है।

ये गाथाएँ स्वाभाविक रूप से तीन भागो मे विभक्त की जा सकती हैं अर्थात् जलक्रिया, अनित्यता का उपदेश और राम का राज्य-काल[१]।

६८ जलक्रिया (गाथा १)

एय लक्खण सीता च उभो ओतरथोदक।
एवायं भरतो आह राजा दशरथ मतो ॥१॥

'लक्ष्मण और सीता दोनो जल मे उतरें, क्योकि भरत कहते हैं—राजा दशरथ मर गए।'

यह पहली गाथा स्पष्टतया रामायण मे वर्णित जलक्रिया से सम्बन्ध रखती है। रामायण के निम्नलिखित श्लोक प्रस्तुत गाथा से मिलते-जुलते हैं। राम लक्ष्मण मे कहते हैं :

भरतो दुःखमाचष्टे स्वर्गतिं पृथिवीपतेः ॥१५॥
जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः ॥२०॥
सीता पुरस्ताद् व्रजतु त्वमेनामभितो व्रज।
अहं पश्चाद् गमिष्यामि गतिर्ह्येषा सुदारुणा ॥२१॥
(रा० २, १०३)

पाली जातकट्ठवण्णना मे इस गाथा को एक भिन्न अर्थ देने का प्रयत्न किया गया है। प्रसग निम्नलिखित है :

लक्ष्मण और सीता की अनुपस्थिति मे भरत ने वनवासी राम के पास आकर उनको दशरथ के देहान्त का समाचार सुनाया है। शाम को लक्ष्मण और सीता वन से

---

१ दे० एन्० वी० उतगिकर : ज० रा० ए० सो०, सेन्टीनरी सप्लीमेंट, पृ० २०३-२१। एच० लूडर्स : जर्नल गटीगन लर्नेड सोसाइटी, १८९७, पृ० ४० और जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ५८, पृ० ६८७ आदि।
इस परिच्छेद मे इन दोनो विद्वानो से विशेष सहायता मिली है। पाठ के लिए, दे० फासबाल, दि जातक, भाग ४, न ४६१।

लौटते हैं। इसके वाद वृत्तान्त का अनुवाद इस प्रकार है—

'राम पडित ने सोचा, ये दोनो जवान हैं और मेरे समान बुद्धिमान नही है। सहसा पिता का मरण सुनने पर इस (समाचार) का शोक उनके लिए असह्य होगा और न जाने उनका हृदय विदीर्ण हो जाए। किसी उपाय से मैं दोनो को पानी मे उतरने के लिए कहूँगा और फिर समाचार सुनाऊँगा। तव सामने का जलाशय दिखलाकर राम ने कहा—तुम दोनो अधिक देर से आए हो। यह तुम्हारा दण्ड है, इस पानी मे उतर कर वहाँ खड़े रहो। तव उन्होंने अर्द्धगाथा सुनाई :

'लक्ष्मण और सीता दोनों जल मे उतरें'।

राम के इसी शब्द को सुनकर दोनो पानी मे उतर कर खड़े रहे। इसके अनन्तर गाथा का उत्तरार्द्ध सुनाकर राम ने उनको समाचार दिया।

'भरत कहते हैं : राजा दशरथ मर गए'।

पिता के देहान्त का समाचार सुनकर दोनो मूर्छित होकर गिर पड़े। राम ने उनसे फिर यही कहा और वे पुनः मूर्छित हो कर गिर गए। जब दोनो तीसरी बार मूर्छित हो कर गिरे तव अमात्यो ने उनको उठाया और जल से निकाल स्थल पर बिठाया।'

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि जातक का प्रसंग मौलिक नही है। लेखक संभवतः रामायण मे उल्लिखित जलक्रिया मे अपरिचित था और इसलिए उसने यह कष्ट कल्पना की होगी।

६६. अनित्यता का उपदेश (गाथा २-१२)

केन रामप्पभावेन सोचितब्बं न सोचसि।
पितरं कालकतं सुत्वा न तं पसहते दुखं ॥२॥

'हे राम! शोक का कारण होते हुए भी आप किस धैर्य के बल पर शोक नही करते। पिता का देहान्त सुनने पर भी आप दुःख के वशीभूत नही होते।'

यं न सक्का पालेतुं पोसेन लपतं बहुं।
स किस्स विञ्ञु मेधावी अत्तानं उपतापये ॥३॥

'बहुत विलाप करने पर भी जो रखा नही जा सकता, उसके लिए बुद्धिमान् शोक नही करता।'

दहरा च हि वृद्धा च ये बाला ये च पंडिता।
अड्ढा चेव दलिद्दा च सब्बे मच्चुपरायना ॥४॥

'बालक और वृद्ध, मूर्ख और पंडित, धनी और दरिद्र सबों का मरण निश्चित है।'

फलानमिव पक्कानं निच्चं पपतना भयं ।
एवं जातानं मच्चानं निच्चं मरणतो भयं ॥५॥

'जिस तरह से पक्के फलो के गिरने का नित्य भय होता है, उसी तरह जन्म लिए हुए मनुष्यो को मरण का भय बना रहता है ।'

सायमेके न दिस्सति पातो दिट्ठा वहुज्जना ।
पातो एके न दिस्सति सायं दिट्ठा वहुज्जना ॥६॥

'बहुत से लोग, जो प्रात.काल दृष्टिगत होते हैं, इनमे कई सायकाल नही दिखलाई देते है और बहुत से लोग, जो सायकाल दृष्टिगत होते है, इनमे से कई प्रातःकाल नही दिखलाई देते हैं ।'

परिदेवयमानो चे कंचिदत्थं उदब्बहे ।
सम्मूल्हो हिंसमत्तान कयिर चेनं विचक्खणो ॥७॥

'अपने आप को दु ख देने वाले मूर्ख को यदि विलाप करने से कुछ अर्थ प्राप्त होता, तो बुद्धिमान् भी यही करता ।'

किसो विवण्णो भवति हिंसमत्तानमत्तनो ।
न तेन पेता पालेंति निरत्था परिवेदना ॥८॥

'अपने आप को दु.ख देने से देह कृश और विवर्ण हो जाता है । इससे मृत पुनर्जीवित नही होते, (अतः) विलाप निरर्थक है ।'

यथा सरणमादित्तं वारिना परिनिब्बये ।
एवमपि धीरो सुतवा मेधवी पंडितो नरो ।
खिप्पमुप्पतितं सोक वातो तूलं व धंसये ॥९॥

'जिस प्रकार जलता हुआ घर पानी के द्वारा बुझाया जाता है, उसी प्रकार धीर, श्रुतिमान्, बुद्धिमान् और पडित शीघ्र ही अपने शोक का उसी भाँति उन्मूलन करते है, जिस भाँति पवन कपास को छितराता है ।'

एको व मच्चो अच्चेति एको व जायते कुले ।
सञ्जोगपरमा त्वेव संभोगा सब्बपाणिनं ॥१०॥

'मनुष्य अकेला मर जाता है और अकेला कुल मे जन्म लेता है । सब प्राणियो का सुख एक दूसरे के सम्बन्ध पर निर्भर रहता है (अथवा सब प्राणियो के सुख का उ[illegible] है, उनका सयोग या मैत्री) ।'

तस्सा ही धीरस्स वहुस्सुतस्स
सम्पस्सतो लोकमिमं परं च ।
अञ्ञाय धम्मं हृदय मन च
सोका महंतापि न तापयंति ॥११॥

अतः जो इहलोक और परलोक (का यथार्थ रूप) देखने वाले और धर्म को जानने वाले[1] धीर और श्रुतिमान् मनुष्य होते है, इनका हृदय और मन महान् शोक से भी संतप्त नही होता।'

सोहं दस्सं च भोक्खं च भरिस्सामि च नातके।
सेसं सपालयिस्सामि किच्चमेवं विजानतो ॥१२॥

'सो मैं (दान) दूंगा और (स्वय भी धन का) उपभोग करूंगा तथा अपने सबंधियों का भरण-पोषण करूंगा। दूसरो का भी (अथवा जो जीवित है, उनका) मैं पालन करूंगा—यही बुद्धिमान् का कर्त्तव्य है।'

७० इस उपदेश की प्रथम गाथा मे राम से यह प्रश्न किया जाता है कि पिता का मरण सुनकर आप किस धैर्य के बल पर शोक नही करते। इसके बाद की गाथाओं मे[2] शोक की व्यर्थता पर एक उपदेश उद्धृत किया गया है। जातक के गद्य के अनुसार ये राम के शब्द हैं लेकिन इस सारे उपदेश मे कही भी राम-कथा की ओर किंचित् भी निर्देश नही मिलता। डॉ० विंटरनित्स का कहना है कि रामायण मे राम अपने पिता के देहान्त का समाचार सुनकर अत्यन्त शोक करते हैं (रा० २, १०३, १ आदि) और केवल बाद मे भरत को सांत्वना देते हैं (रा० २, १०५, १५-४२)। जातक में राम किंचित् भी शोक नहीं करते। इसमे बौद्ध प्रभाव स्पष्ट है। डॉ० विंटरनित्स[3] अनुमान करते है कि पुरानी गाथाओ मे भी राम अत्यन्त शोकातुर दिखलाए गए थे और बौद्धो ने उन गाथाओ को नया रूप दिया है। राम के शोक से सम्बन्ध रखने वाली गाथाएँ छोड दी गई है, इतना ही हम स्वीकार कर सकते है। लेकिन गाथाओ का वर्तमान रूप बौद्धो द्वारा निर्मित है, यह मानने की कोई आवश्यकता नही होती। मृत सम्बन्धियो के कारण शोक करना व्यर्थ है, यह कोई विशेष बौद्ध धारणा नहीं है। महाभारत के अनेक स्थलो पर 'शोकापनोदनम्' के अंतर्गत प्रस्तुत गाथाओ से मिलते-जुलते श्लोक पाए जाते है। भगवद्गीता मे लिखा है :

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ (२, २७)

इस प्रकार के और बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। अत. जातक की गाथाओं

---

१ अथवा—'और इसका (इहलोक और परलोक का) तत्व जानने वाले।'

२ गाथा ११ से उपदेश समाप्त प्रतीत होता है। गाथा १२ का न तो कोई पूर्वापर सम्बन्ध है और न इसमे रामकथा की ओर निर्देश मिलता है। जातक मे यह गाथा उपदेश का अंश मानी जाती है।

३ दे० हि० इं० लि०. भाग १, पृ० ५०८।

की शिक्षा बौद्धो की अपनी नही है। जलक्रिया. सबधी गाथा की तरह ये गाथाएँ भी बौद्धो द्वारा ज्यो की त्यो अपना ली गई होगी। फिर भी उन गाथाओ मे से केवल एक ही रामायण मे मिलती है :

यथा फलानां पक्वानां नान्यत्र पतनाद् भयम् ।
एवं नरस्य जीतस्य नान्यत्र मरणाद् भयम् ।

(रा० २, १०५, १७)

अत हमे मानना पडेगा कि दशरथ-जातक की गाथाएँ वाल्मीकि-रामायण पर निर्भर नही हो सकती। इनका मूलस्रोत कोई प्राचीन आख्यान रहा होगा।[1]

७१. राम का राज्य-काल (गाथा १३)

दस वस्ससहस्सानि सट्ठि वस्ससतानि च ।
कबुगीव माहाबाहु रामो रज्जमकारयि ॥१३॥

'कबुग्रीव महाबाहु राम ने सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य किया।'

वाल्मीकि रामायण, महाभारत और हरिवंश, तीनो मे इस गाथा का सस्कृत रूप पाया जाता है। रामायण मे :

दशवर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च ।
भ्रातृभिः सहित श्रीमान् रामो राज्यमकारयत् ॥

(६, १३१, १०६, दक्षिण संस्करण)

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
रामो राज्यमुपासित्व ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ॥ (१, १, ९७)

महाभारत मे—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।
राज्यं कारितवान्रामस्ततस्तु त्रिदिवं गतः ॥ (३, १४७, ३८)
श्यामो युवा लोहिताक्षो मत्तवारणविक्रमः ॥
दश वर्षसहस्राणि रामो राज्यमकारयत् ॥ (१२, २९, ५४)

हरिवंश में—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
अयोध्याधिपतिर्भूत्वा रामो राज्यमकारयत् ॥ (१,४१,१५१)

---

१ डॉ० लूडर्स (दे० गैटिंगन जर्नल, १८९७, पृष्ठ १३०) के अनुसार यह पाली मे था, डॉ० याकोबी मूल रूप को सस्कृत मे मानते हैं।

इन उद्धरणो से स्पष्ट है कि पाली गाथा और संस्कृत श्लोक का मूलस्रोत एक ही है। यह पाली गाथा दशरथ-जातक के समोधान मे दी जाती है। यह समोधान, इस एक गाथा को छोडकर, गद्य मे ही लिखा गया है—इससे डॉ० याकोबी अनुमान करते है कि यह गाथा कही से उद्धृत की गई है। इस जातक की वर्तमान कथा मे 'पोराणकपडिता' का उल्लेख है, अत प्रस्तुत गाथा का मूलस्रोत कोई प्राचीन काव्य रहा होगा और बहुत सभव है कि यह 'वाल्मीकिकृत' रामायण ही हो। डॉ० याकोबी का यह अनुमान चिंत्य अवश्य है। जातक की अधिकाश गाथाओ का मूलस्रोत वाल्मीकिकृत रामायण नही हो सकती, यह ऊपर दिखलाया गया है, अत. इस गाथा के विषय मे भी हम निश्चयपूर्वक नही कह सकते है कि रामायण ही इसका मूलस्रोत है। फिर भी इसमे सन्देह नही है कि यह किसी प्राचीन राम-सम्बन्धी उपाख्यान या गीत से बौद्धो द्वारा अपनाई गई है[1]। जातक मे जो 'पोराणकपडिता' का उल्लेख मिलता है इससे इस निर्णय की पुष्टि होती है।

७२ **दशरथ-जातक** की गाथाओ का विश्लेषण ऊपर किया जा चुका है। इनमें कही भी बौद्धो द्वारा कल्पित सामग्री हो, यह मानने की कोई भी आवश्यकता नही है। इसके अतिरिक्त पहली गाथा के प्रसग-परिवर्तन से स्पष्ट है कि इनका मूलस्रोत बौद्ध साहित्य को छोडकर ब्राह्मण धर्म के वातावरण मे निर्मित पुराने आख्यान-साहित्य में और राम सम्बन्धी प्राचीन गीतो मे ढूँढना चाहिए।

ग—दशरथ-जातक की राम-कथा

(अ) डॉ० वेबर का मत

७३ डॉक्टर वेबर[2] के अनुसार **दशरथ-जातक** मे राम-कथा का पूर्व-रूप रक्षित है। इसके अतिरिक्त वे पाँचवी शताब्दी ई० की दो अन्य बौद्ध रचनाओ मे इस कथा के प्राचीनतम तत्व पाते है।

धम्मपद की टीका[3] मे निम्नलिखित कहानी मिलती है। यह ज्यो की त्यों **पाली जातकट्ठवण्णना** मे भी उद्धृत है (दे० न० ६ देवधम्म जातक)।

---

१ डॉ० लूडर्स का मत है कि मूल पाली मे ही था : "दशरथ-जातक की गाथा १३ रामायण आदि के संस्कृत श्लोक का अनुवाद है इसके लिए कोई प्रमाण नही दिया जा सकता है"।

२ दे० ए० वेबर : आन दि रामायण।

३ दे० एच० सी० नार्मन : कमेंटरी ऑन धम्मपद, भाग ३, ७३, बर्लिनगेम, हार्वर्ड ओरियेंटल सीरिज़, भाग २८, पृ० ३०८।

वाराणसी के राजा[1] के दो पुत्र थे—महिसान(क) और चन्द। उनकी माता के मरने पर राजा ने फिर विवाह किया। नई महिषी के सूर्य नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसी अवसर पर राजा से उसको एक वर भी मिला। जब सूर्य युवावस्था को प्राप्त हुआ तब रानी ने वर के बल पर अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन का अधिकार माँगा। राजा ने स्पष्ट अस्वीकार किया। लेकिन महिषी के षड्यन्त्रों से भयभीत होकर उन्होंने अपने पुत्रों को यह कह कर वनवास दिया—'मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करना।' सूर्य अपने दोनों भाइयों के साथ स्वेच्छा से चला गया।

राजा के मरने के पश्चात् तीनों बनारस लौटते हैं। महिसानक राजा बन जाते हैं, चंद उपराजा और सूर्य सेनापति।

यही संक्षेप में धम्मपद टीका की कथा है। डॉ० वेबर के अनुसार यह दशरथ-जातक का प्रथम रूप है। आगे चलकर हम बुद्धघोष की सुत्तनिपात-टीका[2] में वर्णित शाक्य तथा कोलिय वंशों की उत्पत्ति की कथा में (२, १३) दशरथ-जातक का द्वितीय रूप देखते हैं। इस कथा के चार भाग हैं, जिनमें से पहले दो भाग हमारे विषय से सम्बन्ध रखते हैं।

७४. (१) **शाक्यों की उत्पत्ति :** वाराणसी की पटरानी की नौ संतानें थीं—चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ। उसके मर जाने के बाद अवट्ठ राजा ने नया विवाह किया और अपनी युवती पत्नी को पटरानी बनाया (अग्गमहेसि ट्ठाने ठपेसि)। नई पटरानी के पुत्र उत्पन्न होने पर राजा ने उसको एक वर दिया और उसने अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन माँगा। राजा ने पहले अस्वीकार किया फिर भी उसने अपने नौ पुत्र-पुत्रियों को यह कह कर वनवास दिया, 'मेरी मृत्यु के पश्चात् आओ और राज्य पर अधिकार प्राप्त करो।' बहुत से लोग उनके साथ चल दिए और सबों ने वन में एक नगर बनाया। नगर को 'कपिलवत्थु' नाम दिया गया, क्योंकि उसी स्थान पर कपिल नामक तपस्वी तपस्या करते थे। राजसन्तान से विवाह करने योग्य वन में कोई नहीं था, इसलिए चारों राजकुमार अपनी बहनों से ही विवाह करने के लिये बाध्य हुए। ज्येष्ठा कन्या पिया अविवाहित रह कर सबों की माता मानी जाने लगी। यही शाक्यों की उत्पत्ति की कथा है।

(२) **कोलियों की उत्पत्ति :** कुछ समय बाद अविवाहित पिया को कुष्ट रोग हो गया। इस पर वह वन के किसी एकांत स्थान पर छोड़ दी गई। इसी वन में राम

१. देवधम्म जातक में इनका नाम 'ब्रह्मदत्त' भी दिया जाता है।
२. दे० इंडिशा स्टुडियेन : भाग ५, पृ० ४१२ आदि। एच० स्मिथ : सुत्त-निपात कामेंटरी (परमत्थजोतिका) पाली टेक्स्ट सोसाइटी, १६१६।

नामक एक राजा रहते थे। कुष्ट रोग के कारण राजा राम भी, अपने पुत्र को राज्य देकर, वन मे आए थे और औषधीय पौधो का सेवन कर स्वस्थ हो गए थे। इन्ही पौधों द्वारा पिया की चिकित्सा करके, राम ने इससे विवाह किया और ३२ पुत्र उत्पन्न किए (१६ यमल)। इसके वाद उसने वन मे 'कोलनगर' वसाया और शाक्य राजकुमारियों से अपने पुत्रो का विवाह करवाया। यही कोलिय वश की उत्पत्ति की कथा है।

(३) **शाक्यों और कोलियो का युद्ध :** कोलिय-वंश मे उत्पन्न भगवत वुद्ध ने, शाक्यो और कोलियो मे जो युद्ध प्रारभ हुआ था, उसे शात कर दिया।

(४) शाक्य तथा कोलिय प्रत्येक वश के २५० राजकुमार भिक्षु वन गए थे। वे अपने वैराग्य मे दृढ न होकर लौटने की अभिलाषा करते है। तव महात्मा वुद्ध उनको **महा-कुणाल-जातक** सुनाकर, उनकी ससार मे आसक्ति को दूर करते हैं।[1]

७५. डॉ० वेवर के अनुसार राम-कथा का विकास इस प्रकार हुआ[2]—**धम्मपद** और **सुत्तनिपात** की टीकाओ मे विमाता की ईर्ष्या के कारण राजसतति को वनवास दिया जाता है, भाई-वहन का विवाह होता है और राम के नाम का भी उल्लेख होता है।

दशरथ-जातक मे विमाता के कारण वनवास और भाई-वहन के विवाह के साथ-साथ दशरथ, लक्ष्मण, भरत और सीता, ये नाम भी मिलते हैं और राम, पराए न होकर, राजकुमारो के ज्येष्ठ भाई वन जाते हैं।

रामायण मे राजकुमारो की राजधानी वाराणसी से अयोध्या वन जाती है, वनवास का स्थान हिमालय से दडकारण्य मे वदल जाता है और राम तथा सीता भाई-वहन न होकर प्रारभ ही से विवाहित होते है। इन परिवर्त्तनो के अतिरिक्त सीता-हरण और रावणवध, ये नये वृतान्त भी जोडे गए हैं।

रामायण मे सीता के वनवास के अन्त तक कोई सतान नही होती, डॉ० वेवर के अनुसार यह **दशरथ-जातक** की कथा का प्रभाव है, जिसमे वनवास के वाद ही उनका विवाह होता है। वाराणसी का अयोध्या वनना भी वौद्ध कथाओ के कारण हुआ। शाक्य और कोलिय वशो की राजधानियाँ क्रमश: कपिलवस्तु और कोलनगर

---

१ तीसरे और चौथे भाग के लिए दे० कुणाल जातक की वर्त्तमान कथा, जातक न० ५३६।

२ रचनाकाल के अनुसार तीनो रचनाओ का क्रम यो है—१. वुद्धघोषकृत सुत्त-निपात टीका (४१०-४३२ ई०), २. जातकट्ठवण्णना, ३. धम्मपद टीका (४५० ई०)। दे० हार्वर्ड ओरियेटल सीरिज़, भाग २८, पृ० ५८।

थी; दोनो नगर अयोध्या के पडोस मे थे। वनवास का स्थान इसलिए वदल गया है कि सीता-हरण और रावणवध का वृत्तान्त जोडना था। (अतिम विषय का आधार यूनानी कवि होमर की रचना है, दे० आगे अनु० ६२)।

७६. श्री दिनेशचन्द्र सेन भी दशरथ-जातक मे राम-कथा का आधार और पूर्व-रूप देखते है[1]। वह दशरथ-जातक को छठी शताब्दी ईसा पूर्व का मानते हैं, रामायण मे एकाध पाली गाथाओ का सस्कृत अनुवाद पाते है और अन्तरग प्रमाण भी देते है— 'रामायण और बौद्ध कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि विश्वकवि वाल्मीकि ने कितने कौशल से इस अपरिष्कृत बौद्ध-कथा को उत्कर्ष की सीमा तक पहुँचाया है।' इस तर्क का इस तरह प्रत्युत्तर दिया जा सकता है : 'रामायण तथा बौद्ध-कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि बौद्धो ने रामायण के कारुणिक कथानक को शोक की व्यर्थता के एक उपदेश मात्र मे वदल दिया है।'

७७. डॉ० वेवर तथा श्री दिनेशचन्द्र सेन जातको की गाथाओ और गद्य, इन दोनो की प्रामाणिकता मे कोई भेद नही मानते यद्यपि दोनो के रचनाकाल मे शताब्दियो का अन्तर है। यह तर्क दशरथ-जातक के विषय मे विशेष महत्वपूर्ण है क्योकि इसमे प्राय. समस्त कथा गद्य मे ही दी गई है। पहली गाथा का जो प्रसग दशरथ-जातक मे दिया गया है, वह मौलिक नही है और अन्य गाथाओ का मूल स्रोत भी कोई पुराना रामायण से मिलता-जुलता उपाख्यान रहा होगा, यह सम्भवतः गाथाओ के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है।

इसके अतिरिक्त डॉ० वेवर के मत का खडन करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते है :

(१) दशरथ-जातक की राम-कथा की अन्तरग समीक्षा करने पर वह रामायण की कथा का विकृत रूप मात्र सिद्ध होती है (दे० अगला परिच्छेद)।

(२) डॉ० वेवर का मत इस धारणा पर निर्भर प्रतीत होता है, 'जिस कथा मे अपेक्षाकृत कम पात्र, कम घटनाएँ, कम तत्व मिलते है, वह निस्सन्देह पूर्वकृत होगी'। ऐसी धारणा निर्मूल है। इसका प्रमाण दशरथ-कथानम् मे मिलता है। यह कथा एक सग्रह मे पाई जाती है, जिसकी रचना दूसरी श० ई० के वाद हुई थी। इस दशरथ-कथानम् में सीता का या किसी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नही है।

रामकथा का यह रूप दूसरी श० ई० के वाद भी बौद्ध जगत् के किसी प्रदेश मे प्रचलित रहा होगा। अतः डॉ० वेवर के अनुसार राम-कथा के विकास के विभिन्न सोपान निर्धारित करने की युक्ति अत्यन्त अनुपयोगी सिद्ध होती है। दशरथ-कथानम् के

१. दे० दि बगाली रामायन्स, पृ० ७ आदि।

रचनाकाल मे वाल्मीकि रामायण भारतवर्ष मे प्रसिद्ध हो चुका था। फिर भी डॉ० वेबर की युक्ति के अनुसार दशरथ-कथानम् के वृत्तान्त मे इन सब रचनाओ के पहले की राम-कथा का रूप विद्यमान है।

(३) राम-कथा का विकसित रूप, जो वाल्मीकि रामायण मे भी पाया जाता है, वह प्राचीन काल मे ही बौद्धो मे प्रचलित था। इसके सकेत पाली जातकट्ठवण्णना की अन्य गाथाओ से मिलते है (दे० नीचे, अनु० ८३)। अनामकं जातकम् मे भी राम-कथा का विकसित रूप मिलता है (दे० अनु० ५२)। इस जातक का २५४ ई० मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था।

इसके अतिरिक्त अश्वघोष, अभिधर्म महाविभाषा आदि प्राचीन बौद्ध ग्रन्थो मे वाल्मीकि रामायण के निर्देश मिलते है।

७८. अश्वघोष। बुद्धचरित महाकाव्य से पता चलता है कि अश्वघोष (दूसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध) न केवल ब्राह्मण राम-कथा से लेकिन वाल्मीकिकृत रामायण के पाठ से भी परिचित थे और इससे अपनी सारी रचना मे प्रभावित हुए है[१]।

राम का आज्ञापालन (६, २५), उनका वन से लौटना[२] (६, ६७), दशरथ का पुत्रवियोग के कारण शोक (८, ७९,८१)—इन सब मे राम-कथा के किसी निश्चित रूप की ओर निर्देश नही है। लेकिन वनवासी राम से वामदेव की भेट (९,९), वाल्मीकि (१, ४८) तथा सारथि सुमन्त्र (६, ३६, ८, ८) का उल्लेख—यह रामायणीय राम-कथा (विशेष करके अयोध्या काड) से सम्बन्ध रखता है[३]।

---

१. दे० सी० डब्लू गर्नर : अश्वघोष एड दि रामायण। जर्नल एंड प्रोसीडिंग्स एसियाटिक सोसाइटी, भाग २३, पृ० ३४७-६७।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर, पृ० ५६।
एम० विटरनित्स हि० इ० लि०, भाग १, ४६० और भाग २, २६२।
कावेल : दि बुद्धचरित ऑव अश्वघोष, भूमिका, पृ० १२।
ई० एच० जान्स्टन : बुद्धिचरित, भूमिका।

२. राम के वन से लौटने का एक अन्य उल्लेख भी मिलता है।
मही विप्रकृतामनार्यैस्तपोवनादेत्य ररक्ष रामः। (६, ५६)
'पृथ्वी को अनार्यो से पीडित देखकर राम ने वन से लौट कर उसकी रक्षा की।' इसमे दशरथ-जातक तथा रामायण को छोडकर राम-कथा के किसी अन्य रूप की ओर निर्देश है। यह संभवतः अनामक जातकम् हुआ होगा।

३. रामायण (५, ९-११) मे रावण की सोती हुई पत्नियो का जो चित्र अकित किया गया है, इससे अश्वघोष सिद्धार्थ के शयनागार के वर्णन मे प्रभावित प्रतीत होते हैं (५, ४८-६२)। (अगले पृष्ठ पर भी देखें)

इसके अतिरिक्त अश्वघोष के सौन्दरनन्द मे वाल्मीकि को सीता के दोनों पुत्रों का शिक्षक बताया गया है। इससे यह ध्वनि निकलती है कि अश्वघोष उत्तर- कांड की कथावस्तु से परिचित थे।

बुद्धचरित के अनेक स्थलों पर रामायण की कथावस्तु से बहुत कुछ समानता मिलती है। सिद्धार्थ के बिना छंदक के कपिलवस्तु में लौटने का सारा वर्णन सुमंत्र के प्रत्यागमन से प्रभावित हुआ है। कवि स्वयं दोनो वृत्तान्तो की तुलना करते हैं—

त्वामरण्ये परित्यज्य सुमंत्र इव राघवं। (६, ३६)

और

मुमोक्ष बाष्पं पथि नागरो जनः पुरा रथे दाशरथेरिवागते (८, ८)

गौतमी के विलाप में (८, ५१-५८), जो राजमहल और वनवास का विरोध चित्रित किया गया है, वह रामायण में दशरथ (२. १२. ९७-१०१; २. ५८, ५-९) और कौशल्या के विलाप (२. ४३. १-२०) का स्मरण दिलाता है। दोनों में वनवासी पुत्र के पैदल जाने, भूमि पर शयन करने आदि का उल्लेख हुआ है।

प्रलंबबाहुर्मृगराजविक्रमो महर्षभाक्षः कनकोज्ज्वलद्युतिः।
विशालवक्षा घनदुन्दुभिस्वनस्तथाविधोऽप्याश्रमवासमर्हति॥

(बुद्धचरित ८, ५३)

नागराजगतिर्वीरो महाबाहुर्धनुर्धरः।
वनमाविशते नूनं सभार्यः सलक्ष्मणः॥

(रा० २. ४३, ६)

शुचौ शयित्वा शयने हिरण्मये प्रबोध्यमानो निशि तूर्यनिस्वनैः।
कथं बत स्वप्स्यति सोऽद्य मे व्रती पटैकदेशांतरिते महीतले॥

(बु० ८, ५८)

गजेन्द्रमृदिताः फुल्ला लता इव महावने। (रा० ५ ९ ४७)
गजभग्ना इव कर्णिकारशाखा। (बु० ५, ५१)
इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनसे स्पष्ट है कि दोनो वर्णनो का मूल-स्रोत एक है। यह वर्णन बुद्धचरित का एक आवश्यक अंश माना जाना चाहिए परन्तु रामायण में यह अनावश्यक लगता है। अतः इस वृतान्त का मूल-स्रोत बुद्धचरित ही है और यह रामायण मे प्रक्षिप्त है—यह कोवेल और विंटरनित्स का तर्क है। कीथ मानते हैं कि अश्वघोष इसमें रामायण का अनुकरण करते हैं। यह अन्तिम मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

दुःखस्यानुचितो दुःखं सुमंत्र शयनोचितः ।
भूमिपालात्मजो भूमौ शेते कथमनाथवत् ।।

(रा० २, ५८, ६)

७९ तीसरी श० ई० उत्तरार्द्ध की **अभिधर्ममहाविभाषा** मे **रामायण** का उल्लेख किया गया है। यह रचना चीनी अनुवाद मे सुरक्षित है।[1] इसमे लिखा है— 'रामायण नामक ग्रन्थ मे १२००० श्लोक हैं। मे श्लोक केवल दो विषयो से सम्बन्ध रखते हैं, (१) रावण द्वारा सीता का हरण और (२) राम द्वारा सीता की पुन:प्राप्ति तथा (अयोध्या मे) प्रत्यागमन। बौद्ध-ग्रन्थ इतने सरल नही होते। इनमे अपरिमित प्रकार की रचनाएँ मिलती है और इनके अर्थ असख्य होते हैं।'

इसके अतिरिक्त तीन बौद्ध रचनाएँ और मिलती है, जिनसे पता चलता है कि **रामायण** का बौद्धो मे पर्याप्त प्रचार था[2]। कुमारलातकृत **कल्पनामंडितिका** मे (तीसरी श० ई० का अत) **महाभारत** और **रामायण** का उल्लेख हुआ है। वसुबन्धु (चौथी श० ई०) की जीवनी मे भी यह कहा गया है कि वसुबन्धु **रामायण** की कथा सुना करते थे। **सद्धर्मस्मृत्युपाख्यानसूत्र** मे **रामायण** का दिग्वर्णन उद्धृत है। यह रचना पहली शताब्दी ई० की मानी जाती है। इसका छठी शताब्दी मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था।

(आ) दशरथ-जातक की अन्तरंग समीक्षा

८० राम-कथा का जो रूप पाली **दशरथ-जातक** के गद्य मे मिलता है, वह या तो **रामायण** ही पर अथवा **रामायण** से मिलती-जुलती किसी अन्य राम-कथा पर निर्भर है। यह **दशरथ-जातक** की अन्तरग परीक्षा से सिद्ध होता है।[3]

रामायण मे कैकेयी ने वर के बल पर राम के लिए चौदह वर्ष तक वनवास माँग लिया था, अतः दशरथ के मरने के बाद राम का वन मे रहना स्वाभाविक और आवश्यक है। लेकिन **दशरथ-जातक** मे इसके लिए कोई समीचीन कारण नही मिलता।

---

१. दे० केर्न : मेन्युल ऑव बुद्धिज्म, पृ० १२१, ज० रा० ए० सो०, १९०७, पृ० ९९-१०३।

२ तीनो रचनाएँ केवल चीनी अनुवाद मे सुरक्षित हैं।
दे० एम० विंटरनित्स : हि० इ० लि०, भाग २, पृ० २६९।
ए० बी० कीथ : सस्कृत लिटरेचर, पृ० ८ (भूमिका), ५६।
के० वतानबे : ज० रा० ए० सो०, १९०७, पृ० ९९-१०३।
एस० लेवी : जूर्नल अजियटिक, १९१८, पृ० १ आदि।

३ दे० एच० याकोबी . वही पृ० ८५। सी० वी० वैद्य : वही, पृ० ७३।

दशरथ ने राम और लक्ष्मण से कहा था कि वे उनकी मृत्यु के पश्चात् लौटें। तब उन्होंने ज्योतिषियो से अपना अंतकाल पूछा था। यह समझ कर कि मैं बारह वर्ष तक जीता रहूँगा, उन्होंने अपने पुत्रो से इस अवधि के अन्त मे आने के लिए कहा था। फिर दोनो को एक ही आदेश मिला था। तब लक्ष्मण क्यो नौ वर्ष के बाद लौटते हैं ?

रामायण की कथा मे सीता का अपने पति के साथ चले जाना स्वाभाविक है। दशरथ-जातक मे इसके लिए कोई ऐसा कारण नही है। सीता को विमाता के षड्यन्त्रो की कोई आशंका नही थी। जातक मे सीता दशरथ के मरने पर लक्ष्मण के साथ राजधानी को लौट आती हैं और राम तथा सीता का तीन वर्षों के वियोग के बाद विवाह होता है। इसमे सम्भवतः रामायण के सीताहरण के पश्चात् दोनो का संयोग प्रतिबिंबित है।

८१. अब प्रश्न यह उठता है कि यदि दशरथ-जातक ब्राह्मण राम-कथा पर निर्भर है तो दोनो मे इतना अन्तर क्यो ? इसके तीन मुख्य कारण स्पष्ट हैं। एक तो दशरथ-जातक का जो रूप जातकट्ठवण्णना मे प्रस्तुत है, वह शताब्दियो तक अस्थिर रहने के बाद पाँचवी शताब्दी ई० मे लिपिबद्ध किया गया है। अत. इसमे परिवर्तन की संभावना रही है, विशेष करके दूर सिंहलद्वीप मे, जहाँ रामायण की कथा उस समय कम प्रचलित थी। दूसरे, बौद्ध आदर्श और शैली का प्रभाव भी पड़ना अत्यन्त स्वाभाविक है। तीसरे, दशरथ-जातक की वर्तमान कथा के अनुसार महात्मा बुद्ध ने पिता के मरण से शोकातुर पुत्र को धैर्य देने के लिए दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देकर यह जातक कहा था। इस उद्देश्य के लिए सीताहरण का उल्लेख अनावश्यक था। इसके अतिरिक्त इस जातक के अनुसार महात्मा बुद्ध ही अपने पूर्व जन्म मे राम पंडित थे, अत: बौद्ध आदर्श के प्रतिकूल होने के कारण रावण-वध का अभाव स्वाभाविक है।

बौद्ध जातको की शैली के अनुसार राजधानी, अयोध्या न होकर वाराणसी है। वनवास का स्थान हिमालय है, जो बौद्ध कथाओ मे अत्यन्त लोकप्रिय है और जिसका उल्लेख जातको मे निरन्तर होता रहता है।

वनवास का कारण विमाता के षड्यन्त्रो का भय है, जो अनेक अन्य बौद्ध कथाओ मे भी मिलता है। राम और सीता, भाई-बहन का विवाह, महत्वपूर्ण परिवर्तन कहा जा सकता है, लेकिन इसके लिए भी बौद्ध साहित्य मे कई उदाहरण प्रस्तुत थे (दे० ऊपर अनु० ७३-७४ और कुणालजातक न० ५३६)।

दशरथ के अंतकाल के विषय मे ज्योतिषियो का कथन असत्य सिद्ध होता है। इसमे भी चिन्तामणि वैद्य बौद्ध प्रभाव देखते है। बौद्धो की ज्योतिषियो से जो अरुचि थी, यह इस भूल मे प्रकट की गई है।

साराश यह है कि दशरथ-जातक में जो आंतरिक असगति मिलती है, वह वाल्मीकीय कथा का इस जातक का आधार होना सिद्ध करती है। दूसरी ओर जातक तथा रामायण मे जो अतर पाए जाते हैं, वे भी उपर्युक्त कारणो से स्वाभाविक प्रतीत होते है।

घ—पाली तिपिटक और रामायण

८२. ऊपर के विश्लेषण से सिद्ध होता है कि **दशरथ-जातक** के गद्य मे जो वृत्तान्त प्रस्तुत हुआ है, वह तो वाल्मीकीय राम-कथा का विकृत रूप है ही और इस जातक की गाथाओ का भी मूलस्रोत बौद्ध नही है। फिर भी इनका आधार प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण भी नही हो सकता। अतः ये गाथाएँ पुराने आख्यानकाव्य पर निर्भर होगी (दे० अनु० ७२)।

अब प्रश्न यह उठता है कि पाली तिपिटक की गाथाओं में जो थोडी सी राम-कथा सम्बन्धी सामग्री सुरक्षित है, क्या वह **रामायण** का आधार माने जाने के लिए पर्याप्त है? इस प्रश्न को सुलझाने से पहले **दशरथ-जातक** को छोड़कर अन्य राम-कथा से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का निरूपण करना है, जो पाली तिपिटक मे मिलती है।

८३ राम-कथा-संबंधी गाथाएँ। **दशरथ-जातक** की गाथाओ को छोड कर पाली जातकट्ठवण्णना मे दो गाथाएँ और मिलती हैं, जिनमे राम और सीता का उल्लेख हुआ है। इनसे पता चलता है कि गाथाओं के कवि वाल्मीकीय राम-कथा से परिचित थे।

जयद्दिस-जातक (नं० ५१३) की गाथा १७ के अनुसार राम का वनवास हिमालय प्रदेश मे न होकर दण्डकारण्य मे है। एक माता अपने पुत्र से कहती है:

> **यं दण्डकारञ्ञगतस्स माता**
> **रामस्सका सोत्थानं सुगत्ता**
> **तं ते अहं सोत्थानं करोमि ॥**

"जिस तरह से दण्डकारण्यवासी राम की सुन्दर माता ने (अपने पुण्य द्वारा पुत्र का) कल्याण किया है, इस तरह मैं तेरा कल्याण (सोत्थान स्वस्त्ययन) करती हूँ।" लेकिन दशरथ जातक के अनुसार राम के निर्वासन के समय उनकी माता का देहान्त हुआ था। **वेस्संतर जातक** (न० ५४७) मे मद्दी, वेस्सतर की पत्नी कहती है:

> **अवरुद्धस्सहं भरिया राजपुतस्स सिरीमतो।**
> **तं चाहं नातिमञ्ञामि रामनि सीता वनुब्बता॥** (गाथा ५४१)

'मैं एक प्रतापवान् निर्वासित राजकुमार की भार्या हूँ। अनुगामिनी सीता जिस तरह से राम का आदर करती थी, इस तरह मैं इनका आदर करती हूँ।' इससे यह ध्वनि

निकलती है कि वनवास के समय राम और सीता का सम्बन्ध भाई-बहन का न होकर पति-पत्नी का था।

८४ **सामजातक।** **सामजातक** (न० ५४०) का वृत्तान्त[1] **रामायण** की अंध-मुनि-पुत्रवध सम्बन्धी कथा (दे० २, ६३-४) का एक अन्य रूप मात्र है। बौद्ध जगत् में इस जातक की लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि साँची और अमरावती के स्तूपों पर तत्सम्बन्धी चित्र अंकित किए गए हैं। पाली **जातकट्ठवण्णना** के अतिरिक्त यह जातक **महावस्तु** (२, २०९) में **श्यामक जातकम्** के नाम पर और **चरियापिटक** (३, १३) में **सुवण्णसामचरियम** के नाम पर पाया जाता है। लेकिन इन दोनों का वृत्तान्त बहुत संक्षिप्त है और इनका आधार स्पष्टतया **सामजातक** ही है।

दूसरी ओर **रामायण** के अतिरिक्त अंध-मुनि-पुत्र के वध की कथा **रघुवंश** (नवाँ सर्ग) आदि में भी मिलती है। परन्तु ये वृत्तान्त **रामायण** की तत्सम्बन्धी कथा पर निर्भर हैं और **सामजातक** से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रखते। अतः यहाँ पर पाली जातक और **रामायण** की कथा की तुलना पर्याप्त है। **सामजातक** का संक्षिप्त वृत्तान्त इस प्रकार है—निषादों के कुल में उत्पन्न दुकूलक और पारिका हिमालय प्रदेश के किसी आश्रम में तपोमय जीवन बिताते हैं। विवाहित होकर भी वे ब्रह्मचारी ही रहते हैं। बोधिसत्त्व अलौकिक रीति से पारिका के गर्भ से जन्म लेते हैं और साम कहलाते हैं। साम के १६वें वर्ष में दुकूलक और पारिका दोनों को एक सर्प अन्धा कर देता है। उसी समय से साम अपने माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा करने लगते हैं।

एक दिन साम नदी से पानी लेने जाता है। उस स्थल पर वह काशी के राजा (पिलियक) के विषैले बाण से विद्ध होता है। राजा के पहुँचने पर उसे तनिक भी क्रोध नहीं आता किन्तु अपने अन्धे माता-पिता के भाग्य पर वह फूट-फूट कर रोने लगता है। राजा अन्धे माता-पिता के पास आकर उनके पुत्र के वध का समाचार देता है, जिसे सुनकर दुकूलक और पारिका रोने लगते हैं। उनके कहने से राजा दोनों को पुत्र के मृत शरीर के पास ले जाता है। माता-पिता मर्म-स्पर्शी विलाप करते हुए शपथ (सच्च-

---

१ दे० जे० शार्पेंटिये : वियेना ओरियेन्टल जर्नल, भाग २७, पृ० ६४, भाग २४, पृ० ३६७।

एच० ओल्डेन्बेर्ग : जातक स्टुडियन, जर्नल गेटिंगन सोसाइटी, १९१८, पृ० ४५६ आदि।

एम० विंटरनित्स : हि० इ० लि०, भाग १, पृष्ठ ५०६, भाग २, पृष्ठ १४७ आदि।

दिनेशचन्द्र सेन : वही, पृष्ठ १५ आदि।

क्रिया) करते है। पारिका कहती है—यदि मेरा पुत्र माता-पिता का सच्चा भक्त था तो विष लुप्त हो जाय। दुकूलक भी अपने और अपनी पत्नी के नाम पर 'सच्चक्रिया' करता है। वनदेवी भी उसी तरह करती है। साम उठ बैठता है और राजा का स्वागत करता हुआ कहता है—'मैं केवल मूर्छित हुआ था। जो माता-पिता की सेवा करते हैं, वे दोनों लोको मे सुख पाते है।' इसके वाद साम राजा पिलियक को राजधर्म का उपदेश देता है।

रामायण की कथा मे आहत मुनि-पुत्र अधिक उत्तेजित हो जाता है, उसके माता-पिता का विलाप अधिक हृदयस्पर्शी तथा करुणाजनक होता है और अन्त मे वह पुनर्जीवित नही होता है। फिर भी दोनो वृत्तान्तो का पारस्परिक सबध सदिग्ध नही कहा जा सकता।

कथा के अतिरिक्त शाब्दिक साम्य भी पाया जाता है .

अयं एकपदो राज (गाथा २६)
इयमेकपदी राजन् (रा० २, ६३, ४४)
अद्रूसक पितापुत्ता तयो एकूसुना हता (गा० ३६)
वृद्धौ च मातापितरावहं चैकेषुणा हतः। (रा० २, ६३, ३२)

वृद्ध पिता के विलाप मे एक पूरी गाथा भी रामायण के एक श्लोक से वहुत मिलती-जुलती है,

को दानि भुंजयिस्ससि वनमूलफलानि च
सामो अयं कालकतो अंधानं परिचारक॥

(गा० ८५)

कंदमूलफलं हृत्वा यो मां प्रियमिवातिथिम्
भोजायिष्यत्यकर्म्मण्यमप्रग्रहमनायकम्॥

(रा० २, ६४, ३४)

ऐसा प्रतीत होता है कि सामजातक के सरल वृत्तान्त मे इस कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है[1]। यह वृत्तान्त रामकथा से स्वतत्र रूप मे प्रचलित था। आगे चल कर रामायण की कथा मे उसे एक नया और काव्यात्मक रूप मिला है।

८५. वेस्सन्तर जातक। यह जातक वौद्ध जगत मे सवसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय था। इसकी ७८६ गाथाओ मे राजकुमार वेस्सन्तर की दानवीरता का चित्रण हुआ है।

---

१. यही ओल्डेनवेर्ग-और विंटरनित्स का मत है। शार्पेन्टिये रामायण की कथा पूर्वकृत मानते है।

कथावस्तु इस प्रकार है[1]—राजकुमार वेस्सन्तर ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं कोई भी माँगी हुई वस्तु देने से इनकार नही करूँगा। देश की भलाई का ध्यान न रखते हुए उसने एक अलौकिक हाथी दान मे दिया। दड-स्वरूप उसको वनवास दिया गया। उसकी पतिभक्त पत्नी मद्दी और दो पुत्र उसके साथ गए। वह चार घोडों के रथ मे चले। पथ मे एक ब्राह्मण भिखारी ने रथ माँगा। वेस्सन्तर ने उसे निस्सकोच दे दिया। अन्त मे चारो एक कुटी मे पहुँच कर वही निवास करने लगे। तब सक(शक्र) एक कुरूप ब्राह्मण के वेश मे दिखाई पडे और उन्होंने वेस्सन्तर के दोनो पुत्रो को दास के रूप मे माँगा और प्राप्त किया। तत्पश्चात् ब्राह्मण ने पत्नी को भी माँग लिया। इस पर ब्राह्मण अपना परिचय देता है और कथा आनन्दपूर्वक समाप्त होती है।

इस जातक मे अनेक स्थलो पर राम-कथा से मिलते-जुलते प्रसग मिलते हैं—राम के समान वेस्सन्तर का वनवास के पहले दान देना, कौशल्या का तथा वेस्सतर की माता का विलाप, वन और कुटी का वर्णन। मद्दी और सीता, दोनो अपने पति के साथ वन जाने के लिए अनुरोध करती हैं :

अग्गिं निज्जालयित्वान एकजालसमाहितम्।
तत्थ मे मरणं सेय्यो यं चे जीवे तया विना॥

(गाथा ७३)

यदि मां दुःखितामेवं वनं नेतुं न चेच्छसि।
विषमग्निं जलं वाहमास्थास्ये मृत्युकारणात्॥

(रा० २, २६, २१)

लेकिन दोनो रचनाओ मे कही भी अक्षरशः एकरूपता नही मिलती। जो समानता मिलती है, वह सभवतः आधिकारिक वस्तु के सादृश्य के कारण उत्पन्न हुई है। इस जातक तथा रामायण के पारस्परिक प्रभाव के प्रमाण नही दिए जा सकते हैं। इतना ही असदिग्ध है कि वेस्संतर जातक का रचयिता रामकथा से परिचित था। (दे० ऊपर अनु० ८३ मे उद्धृत गाथा ४५१), लेकिन वह रामायण भी जानता था, इसके लिए वेस्संतर जातक मे कोई आधार नही मिलता।

८६ संबुला जातक। संबुला जातक (न० ५१६) मे पतिभक्त सबुला का वृत्तान्त दिया गया है। अपने कुष्टरोगी पति राजकुमार सोत्थिसेन के साथ वनवासी वन

---

१ दे० जातकट्ठवण्णना का अतिम जातक, न० ५४७। इसका उल्लेख मिलिंद पान्ह (४, १, ३५, ४, ८, १) और चरिय-पिटक (१,६) में हुआ है। दे० विंटरनित्स · हि० इ० लि०, भाग २, पृष्ठ १५१-२।

कर वह उसकी सेवा मे अपना जीवन बिताती है। किसी दिन एक दानव सबुला को वन मे देखता है और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। सबुला अस्वीकार करती है और सक्क (शक्र) द्वारा बचाई जाती है। इस घटना का वृत्तान्त सुनकर सोत्थिसेन अपनी पत्नी के सतीत्व पर सदेह करता है। यह देखकर सबुला एक 'सच्चकिरियम्' (सच्च-क्रिया) द्वारा अपने पति को नीरोग कर देती है।

> तथा मं सच्चं पालेतु पालयिस्सति चे ममं
> यथानं नाभिजानामि अञ्ञं पियतरं तया
> एतेन सच्चवज्जेन व्याधि ते वूपसम्मति (उपशमति)।
>
> (गाथा २७)

इसके बाद दोनो राजधानी लौट जाते है। कृतघ्न सोत्थिसेन अन्य स्त्रियो के साथ विलास करके अपनी पत्नी को दु.ख देता है। अन्त मे अपने पिता के कहने पर वह संबुला से क्षमा माँगता है और दोनो का जीवन सुखमय बन जाता है।

संबुला और सीता, दोनो वनवासी पति की सेवा करती हैं। सबुला की सच्च-क्रिया सीता की अग्निपरीक्षा के समय की शपथ का स्मरण दिलाती है। दानव और रावण, दोनो की धमकी मे भी शाब्दिक समानता मिलती है: 'यदि तुम मेरी महिषी बनने के लिए सहमत नही हुई तो तुम मेरा प्रात का भोजन (पातरासाय—प्रातराश) बन जाओगी।'

> नो चे तुवं महेसेय्यं संबुले कारयिस्ससि।
> अलं त्वं पातरासाय मञ्ञे भक्खा भविस्ससि॥
>
> (गाथा १०)

> द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्तारं मामनिच्छतीम्।
> मम त्वां प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यंति खंडशः॥
>
> (रा० ५, २२, ९)

८७. महासुतसोम जातक। इस जातक (न० ५३७) मे एक गाथा पाई जाती है, जिसमे 'महामत्तो' (बोधिसत्व) एक 'पोरिसाद' (पुरुषाद) को भर्त्सना देकर कहते हैं—

> पंच पंच नखा भक्खा खत्तियेन पजानता।
> अभक्खं राजा भक्खेसि तस्मा अधम्मिको तुव॥
>
> (गाथा ५८)

यह राम के प्रति वालि की उक्ति का स्मरण दिलाता है:

> पंच पंचनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्रेण राघव॥
>
> (रा० ४, १७, ३९; मनु० ५, १७)

८८. आदिच्चुपट्ठान जातक[1]। इस जातक (न १७५) में किसी वानर की कथा है। वह ब्राह्मणों को परोसा जाने वाला भोजन पाने के लिए उनके समान सूर्य की उपासना करता है। इस कथा में एक ही गाथा उद्धृत है, जिसका रामायण अथवा महाभारत में कहीं भी रूपान्तर नहीं मिलता। यह गाथा राम-कथा से कोई सम्बन्ध रखती हो, इसके लिए कोई भी प्रमाण नहीं दिया जा सकता है। पाली गाथा इस प्रकार है :

सव्वेसु किर भूतेषु सन्ति सीलसमाहिता,
पस्स साखामिगं जम्मं आदिच्चं उपतिट्ठति।

"प्राणियों की प्रत्येक जाति में कोई न कोई धार्मिक पाया ही जाता है : इस नीच वानर को देख लो, जो सूर्य की उपासना कर रहा है।"

पतंजलि के महाभाष्य में इस गाथा का संस्कृत रूपान्तर विद्यमान है, इसमें 'वानर सेना' का भी उल्लेख है, जिससे प्रतीत होता है कि बाद में इस गाथा का सम्बन्ध रामायण से जोड़ा गया है। वास्तव में 'उपस्था' के परस्मैपद तथा आत्मनेपद प्रयोग दिखलाने के लिए इस गाथा को उद्धृत किया गया है :

बहुनामप्यचित्तानामेको भवति चित्तवान्
पश्य वानरसैन्येऽस्मिन्यदर्कमुपतिष्ठते ॥
मैवं मंस्थाः सचित्तोऽयमेषोऽपि हि यथा वयम्
एतदप्यस्य कापेयं यदर्कमुपतिष्ठति ॥
(उपान्मन्त्रकरणे १।३।२५)

८९. उपसंहार। श्री दिनेशचन्द्र सेन[2] का अनुमान है कि जातकों के साहित्य से वाल्मीकि ने अपनी सामग्री प्राप्त की है और इसे अपनी अमर रचना के नए साँचे में ढाला है' यह मत चिन्त्य है। तिपिटक की गाथाओं में राम-कथा से सीधा संबंध रखने वाली सामग्री इस प्रकार है :

'शोकापनोदन' का एक छोटा सा भाषण,
जलक्रिया के विषय में एक गाथा,
राम के राज्यकाल के विषय में एक गाथा,
राम के दण्डकारण्य में वनवास का उल्लेख, और
सीता के अपने पति के साथ वनगमन का उल्लेख।

इसके अतिरिक्त वेस्संतर जातक की कथा-वस्तु रामायण के वृत्तान्त से कुछ मिलती-जुलती है। संबुला तथा महासुतसोम जातक में एक-एक गाथा पाई जाती है, जिसका

---

१. ज० रा० ए० सो०, बम्बई ब्रँच, १९२८, पृ० १३३।
२. दे० वही, पृ० २२ और एम० विंटरनित्स, वही, भाग १, पृ० ५०८।

रूपान्तर रामायण मे भी मिलता है। सामजातक का वृत्तान्त संभवतः दशरथ द्वारा अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का आधार माना जा सकता है।

इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह निःसकोच कहा जा सकता है कि समस्त रामायण का आधार पाली गाथाओ मे ढूंढना व्यर्थ है। रामायण राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य पर निर्भर है और इस आख्यान-काव्य की थोडी सी सामग्री पाली गाथाओ मे आ गई है। इसका अर्थ यह है कि जिस समय पाली तिपिटक बनता रहा (चौथी शताब्दी ई० पू०), उस समय रामकथा के विषय मे पर्याप्त मात्रा मे आख्यान-काव्य की रचना हो चुकी थी। क्या आगे बढकर यह भी कहा जा सकता है कि रामायण की भी रचना हो चुकी थी ?

उपर्युक्त सामग्री से ऐसा प्रतीत नही होता। सामजातक के अतिरिक्त पाली तिपिटक में केवल पाँच गाथाओ मे रामायण के श्लोको से शाब्दिक समानता पाई जाती है। यदि रामायण जैसे महाकाव्य की रचना हुई होती तो गाथाओ के कवि इससे कही अधिक प्रभावित हुए होते। इसके अतिरिक्त रामायण की अपेक्षा पाली तिपिटक की सामग्री पुराने आख्यान-काव्य की शैली और छद से कही अधिक निकट है। साम-जातक के वृत्तान्त मे भी संभवतः अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है।

तिपिटक के ५४७ जातको मे यक्ख, दानव, नाग, रक्खस, वन्दर और अन्य असंख्य पशु आदि के विषय मे कितनी ही कहानियाँ मिलती हैं परन्तु कही भी राक्षस रावण अथवा हनुमान् आदि रामायण के अन्य कपियो का उल्लेख नही हुआ है।[1]

निष्कर्ष यह है कि तिपिटक के रचनाकाल मे राम-कथा सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन रामायण की रचना उस समय नही हो पाई थी।

ङ—रामायण पर बौद्ध प्रभाव

६०. पिछले परिच्छेद के निर्णय के अनुसार पाली तिपिटक की रचना रामायण के पहले हुई थी। अतः रामायण पर बौद्ध धर्म का प्रभाव पडना असम्भव नही कहा जा

---

१. कई जातको मे मिथिला के जनक नामक राजाओ का उल्लेख पाया जाता है (मखादेव जातक, न० ६; महाजनक जातक नं० ५३६, निमिजातक न० ५४१)।

इनका सम्बन्ध वैदिक साहित्य की जनक सम्बन्धी सामग्री से सदिग्ध नही है लेकिन इन जातको मे राम-कथा का निर्देशमात्र भी नही पाया जाता।

सकता है। कई विद्वान् इस प्रभाव को आवश्यकता से अधिक महत्व देते हैं[1]।

दशरथ-जातक मे एक प्राचीन बौद्ध कथा सुरक्षित है, जिसमे बौद्ध आदर्श के अनुसार धैर्य्यवान् राम शोक पर विजय प्राप्त करते हैं। रामायण इस कथा पर निर्भर है और इसी तरह रामायण का मूलस्रोत बौद्ध ही है। डॉ० वेबर के इस मत का निरूपण तथा खडन प्रस्तुत अध्याय मे हो चुका है। यहाँ पर इसका उल्लेख मात्र पर्याप्त है।

श्री दिनेशचन्द्र सेन का अनुमान है कि वाल्मीकि ने एक विशेष उद्देश्य से दशरथ जातक का सरल वृत्तान्त विकसित कर दिया है। बौद्ध तपस्या और भिक्षुपन की प्रतिक्रियास्वरूप आदिकवि ने रामायण मे हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श अपने पाठको के सामने रखा है।

ह्वीलर[2] भी रामायण का उद्देश्य बौद्धो से जोडते हैं। इनके अनुसार रामायण का समस्त काव्य ब्राह्मण और बौद्ध दोनो धर्मों के सघर्ष का प्रतीक है। राक्षसो से बौद्धो का अभिप्राय है। लका पर जो आक्रमण का वर्णन किया जाता है, उसमे सिहल द्वीप के बौद्धो के प्रति वाल्मीकि का विरोध और द्वेष प्रकट हुआ है।

इस मत के विरुद्ध कहना पडता है कि एक तो लका और सिंहल द्वीप की अभिन्नता सदिग्ध है (दे० आगे अनु० ११३)। दूसरे, यदि वाल्मीकि ने राक्षसो के वर्णन में बौद्धो का चित्रण करना चाहा तो स्वीकार करना पडेगा कि उन्हे अपने अभिप्राय को छिपाने मे पूर्णतया सफलता मिली है। राक्षस ब्राह्मणो के विरोधी अवश्य हैं, लेकिन वे स्वय भी यज्ञ करते हैं और नरभक्षी भी कहे जाते हैं। रामायण मे जो राक्षसो का चित्रण मिलता है, उसमे उनके बौद्ध होने का कोई भी निर्देश नही मिलता।

समस्त रामायण मे महात्मा बुद्ध का एक बार उल्लेख हुआ है। जाबालि वृत्तान्त के अन्तर्गत, राम बुद्ध को चोर और नास्तिक कहते हैं,

यथा हि चोरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि।

(रा० २, १०९, ३४)

ह्वीलर के अनुसार जाबालि बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि है और राम उनके विरुद्ध ब्राह्मण धर्म का पक्ष लेते हैं। लेकिन जाबालि बौद्ध धर्म का पक्ष न लेकर लोकायत दर्शन

---

१. दे० एच याकोबी : वही पृ० ८८।
एम० विटरनित्स : वही, भाग १, पृ० ५०९।
दिनेशचन्द्र सेन : वही, पृ० २३।

२. दे० जे० टी० ह्वीलर : दि हिस्ट्री ऑव इडिया, भाग २, पृ० ७४ (भूमिका) और पृ० २२७ आदि।

का प्रतिपादन करते है और राम इसका खंडन करते हुए नास्तिको के प्रसग मे बुद्ध का उल्लेख मात्र करते हैं। इसके अतिरिक्त जाबालि का सारा वृत्तान्त निश्चित रूप से क्षेपक है और जिस अंश मे बुद्ध का उल्लेख हुआ, वह इस वृत्तान्त के अन्तर्गत एक नया क्षेपक प्रतीत होता है (दे० आगे अनु० ४३१)। बुद्ध सबन्धी श्लोक न तो गौडीय पाठ मे मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे। अतः आदिरामायण मे न तो बुद्ध का कोई उल्लेख हुआ था और न बौद्ध धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव का कही भी असदिग्ध निर्देश मिलता था।

रामायण पर बौद्ध धर्म के परोक्ष प्रभाव के प्रश्न के विषय मे इतना निश्चयात्मक उत्तर नही दिया जा सकता। रामायण की अपेक्षा **महाभारत** मे कही अधिक कटु भाव, उग्र रणोत्सुकता, घोर युद्ध, अदमनीय विद्वेष आदि दिखलाई देते है। इसका कारण यह हो सकता है कि **महाभारत** की रचना पश्चिम भारत मे हुई थी और **रामायण** की कौशल मे, जहाँ सभ्यता तथा सस्कृति का विकास आगे बढ चुका था। परन्तु इसके एक अन्य कारण की कल्पना की जा सकती है।

रामायण के रचनाकाल मे कोशल मे बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था, अतः यह असभव नही है कि वाल्मीकि ब्राह्मण धर्म के वातावरण मे रहते हुए भी परोक्ष रूप से बौद्ध आदर्श से प्रभावित हुए थे। सीता का हिंसा के विरुद्ध भाषण (**रौद्रं परप्राणाभिहिंसनम्** आदि, दे० रा० ३, ६), जो बौद्ध अहिंसा का स्मरण दिलाता है, प्रक्षिप्त माना जा सकता है (दे० आगे अनु० ४५७)। लेकिन राम का अत्यन्त शांत और कोमल स्वभाव, उनकी सौम्यता आदि ध्यान मे रखकर स्वीकार करना पडता है कि वे मुनि पहले है, क्षत्रिय बाद में। अतः इनके चरित्र-चित्रण मे किंचित् परोक्ष बौद्ध प्रभाव देखना निर्मूल कल्पना नही प्रतीत होती है।

अध्याय ७

रामकथा का मूल स्रोत

६१ आदिकवि वाल्मीकि के पूर्व राम-कथा संबंधी आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने रामायण लिखा है, इसके सम्बन्ध में आजकल बहुत मतभेद नही है। लेकिन अनेक विद्वानो की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले-पहल दो अथवा तीन नितान्त स्वतन्त्र आख्यान एक ही कथासूत्र मे ग्रथित करके राम-कथा की सृष्टि की है। प्रस्तुत अध्याय मे इन विद्वानो के मत का निरूपण तथा खंडन किया गया है।

क—ए० वेबर का मत

६२. डॉ० वेबर के अनुसार राम-कथा का मूलरूप बौद्ध दशरथ-जातक मे सुरक्षित है। इस कथा मे सीताहरण तथा रावण से युद्ध का कोई उल्लेख नही मिलता। डॉ० वेबर का अनुमान है कि सीताहरण की कथा का मूल स्रोत संभवतः होमर मे वर्णित पैरिस द्वारा हेलेन का हरण है और लंका मे जो युद्ध हुआ, उसका आधार संभवतः यूनानी सेना द्वारा ट्राय का अवरोध है।[1]

इस मत के अनुसार राम-कथा के दो प्रधान मूलस्रोत होते हैं। दशरथ-जातक तथा होमर का काव्य। पिछले अध्याय मे दशरथ-जातक की समस्या का पूरा विश्लेषण करने पर इस निर्णय पर पहुँचा गया है कि दशरथ-जातक की राम-कथा वाल्मीकीय राम-कथा का विकृत रूप मात्र है। अतः यहाँ पर केवल डॉ० वेबर के दूसरे मूलस्रोत पर विचार करना पर्याप्त होगा।

दशरथ-जातक राम-कथा का एक आधार है, इससे अब तक कई विद्वान सहमत हैं लेकिन होमर के काव्य को रामायण अथवा राम-कथा का एक आधार मानने के लिए डॉ० वेबर को छोड़कर कोई भी तैयार नही है[2]। प्रारम्भ से ही

---

१. ए० वेबर : ऑन दि रामायण, पृ० ११ आदि।

२. के० टी तेलांग : रामायण कॉपीड फ्रॉम होमर, बम्बई १८७३।
एम० मोनियर विलियम्स : इंडियन विज़डम, पृ० ३१६ टि० १।
एच० याकोबी : वही, पृ० ९४ आदि।
ए० ए० मैकडॉनल : संस्कृत लिटरेचर, पृ० ३०८।

प्रायः सब विद्वानो ने इसका विरोध किया है[1]। यवनों, पह्लवो तथा शको आदि का समस्त प्रामाणिक **रामायण** मे कही भी उल्लेख नही हुआ है। होमर के काव्य मे नावों को बहुत महत्व दिया गया है। यदि वाल्मीकि इससे परिचित होते तो उन्होंने सेना को समुद्र के पार पहुँचाने के लिए सेतु के स्थान पर नावो का सहारा अवश्य लिया होता। होमर तथा वाल्मीकि की रचना मे जो साम्य मिलता है (स्त्री का हरण तथा धनुष-संधान), वह इतना सामान्य और साधारण है कि जब तक अन्य विशेषताओं मे कोई साम्य नही मिलता तब तक पारस्परिक प्रभाव मानने की आवश्यकता नही है। डॉ० वेबर ने बौद्ध साहित्य मे होमर के अन्य वृत्तान्त भी दिखलाए है लेकिन ये उद्धरण पहले-पहल महावंश तथा बुद्धघोष की रचना मे विद्यमान है। ये दोनो ग्रन्थ पाँचवी श० ई० के है, अतः इनकी रचना वाल्मीकि से आठ शताब्दियो के बाद हुई थी। इनसे वाल्मीकि के मूलस्रोत के लिए कोई प्रमाण नही मिल सकता।

ख—एच० याकोबी का मत

६३. डॉ० वेबर की भाँति डॉ० याकोबी भी राम-कथा के दो प्रधान आधार मानते हैं। उनका कहना है कि **रामायण** की राम-कथा स्पष्टतया दो स्वतन्त्र भागों के सयोग से उत्पन्न हुई है। प्रथम भाग अयोध्या की घटनाओ से सम्बन्ध रखता है और इसमे दशरथ प्रधान नायक है। द्वितीय भाग मे दण्डकारण्य तथा रावणवध सम्बन्धी कथा मिलती है, इसका मूलस्रोत वेदो की देवतासम्बन्धी कथाएँ प्रतीत होती है। बहुत से विद्वान् डॉ० याकोबी के इस मत का आज-कल भी समर्थन करते है[2]।

डॉ० याकोबी **रामायण** का प्रथम भाग, अर्थात् अयोध्या की घटनाये, ऐतिहासिक मानते हैं। यह भाग किसी निर्वासित इक्ष्वाकुवंशीय राजकुमार की कथा पर निर्भर है। मूलकथा संभवतः इस प्रकार थी—कोई राजकुमार घर से निर्वासित होकर इक्षुमति के तट को छोडकर सरयू के तटवर्ती कोशलदेश पर अधिकार प्राप्त करता है। बाद मे जब इक्षुमति पर उसके निवास का स्मरण न रहा तब अयोध्या से ही निर्वासित माना गया।

रामायण के द्वितीय भाग का आधार निर्धारित करने के लिए डॉ० याकोबी वैदिक साहित्य का सहारा लेते हैं। वैदिक साहित्य मे जो राम-कथा सम्बन्धी सामग्री

१. दे० एच० याकोबी : वही, पृ० ८६, १२७ टि०।
ए० ए० मैकडॉनल : वही, पृ० ३११।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर, पृ० ४३।

२. चद्रभान : वैदिक साहित्य मे राम-कथा का बीज। नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५५, पृ० ३०१-३०५

मिलती है, उसका विस्तृत निरूपण तथा विश्लेषण निबन्ध के प्रथम अध्याय में किया गया है। निष्कर्ष यह है कि वैदिक काल मे न तो **रामायण** था और न राम-कथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रचलित थी। डॉ० याकोबी इस निर्णय से असहमत नहीं हैं। लेकिन यह स्वीकार करते हुए भी कि सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का वैदिक साहित्य में न तो कोई चरित्र-चित्रण मिलता है, न इनके विषय मे कोई कथावस्तु ही मिलती है और न इनकी ऐतिहासिकता का ही कोई प्रमाण है; फिर भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व से **रामायण** की-सीता विकसित हुई और वैदिक साहित्य मे राम-कथा के द्वितीय भाग का सूत्रपात मिलता है, यही डॉ० याकोबी तथा कुछ अन्य विद्वानो का मत है।[1]

६४. डॉ० याकोबी की धारणा यह है कि **रामायण** के प्रधान पात्रो का प्रतिबिंब वैदिक साहित्य के देवताओं मे देखा जा सकता है। उनके अनुसार **रामायण** की सीता तथा वैदिक सीता की अभिन्नता असंदिग्ध है। इसके अतिरिक्त गृह्यसूत्रो में सीता 'पर्जन्यपत्नी' तथा इन्द्रपत्नी कही गई हैं। इससे स्पष्ट है कि राम इन्द्र का एक अन्य रूप मात्र है। वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यों के देवता 'इन्द्र' बाद के कृषको के लिए परिवर्तित होकर 'राम' बन गए हैं। पूर्व भारत में वह 'राम दशरथि' के रूप मे तथा पश्चिम मे 'बलराम' के रूप मे स्वीकृत किए गए थे। बलराम और इन्द्र दोनों मद्यप है। यह विशेषता उनकी मौलिक अभिन्नता की ओर निर्देश करती है। राम दाशरथि और इन्द्र की अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए डॉ० याकोबी इन्द्र के दो प्रसिद्ध कार्यों का प्रतिबिम्ब **रामायण** मे देखते हैं।

इन्द्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रासुर का वध वैदिक साहित्य मे प्रसिद्ध है (ऋग्वेद १, ३२)। इन्द्र इस वृत्रासुर को (जो ऋग्वेद मे 'अहि' कहा गया है) मारते हैं और पर्वतो मे रोका हुआ पानी विमुक्त कर देते हैं। सायण के अनुसार वृत्र का अर्थ मेघ है, जिसमे पानी वृत्र ही के द्वारा रोका जाता है[2]। इन्द्र और वृत्र का यह वृत्तान्त राम और रावण के युद्ध के रूप मे प्रतिबिंबित होता है। अतः रावण और वृत्र का मूलरूप एक है। इसके अन्य लक्षण भी मिलते हैं—रावण के पुत्र मेघनाद की उपाधि इन्द्रजित् है और उसका भाई कुम्भकर्ण एक गुफा मे रहकर वृत्र का स्मरण दिलाता है।

इन्द्र का दूसरा कार्य पणियो द्वारा चुराई हुई गायो की पुनःप्राप्ति है (ऋग्वेद २, १२)। देवशुनी सरमा, रसा नदी को पार करके इन गायो का पता लगाती है (ऋग्वेद

---

१. दे० रमेशचन्द्र दत्त : ए हिस्ट्री ऑव सिविलाइज़ेशन इन एन्शन्ट इंडिया, पृ० २११।

एस० के० बेलवलकर : उत्तररामचरित, भूमिका, पृ० ५६।

२. एक अन्य मत के लिए दे० विटरनित्स : वही, भाग १, पृ० ८३।

१०, १०८)। वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यों के लिए गायो का जो स्थान था, वही कृषको के लिए खेतों की सीता का था। फलस्वरूप गायों का हरण सीताहरण मे बदल गया। जिस तरह से सरमा इन्द्र की सहायता करती है, उसी तरह हनुमान् राम के लिए सीता की खोज करते हैं।

६५ आजकल हनुमान् विशेषकर गाँवो मे लोकप्रिय है। इनका रामायण मे जो चरित्र-चित्रण हुआ है, वह इस लोकप्रियता का एक मात्र कारण नही हो सकता। अतः डॉ० याकोबी अनुमान करते हैं कि हनुमान् कृषिसम्बन्धी कोई देवता थे, सभवतः वर्षाकाल का अधिष्ठाता देवता। वह तो वायु का पुत्र है[1], बादलो के समान कामरूपी है और आकाश मे उडता है। वह दक्षिण की ओर से, जहाँ से वर्षा आती है, सीता अर्थात् कृषि के सम्बन्ध मे शुभ समाचार लिए राम के पास पहुँचता है। इसके अतिरिक्त इन्द्र का एक नाम 'शिप्रवत्' (ऋग्वेद ६, १७ २) है। निरुक्त मे लिखा है—शिप्रे हनू नासिके वा, अतः इससे इन्द्र और हनुमान् इन दोनो वर्षा-देवताओ का सम्बन्ध निर्दिष्ट होता है।

लक्ष्मण राम के सहायक मात्र हैं। वे कही भी घटनाओं की प्रगति को बदलने की चेष्टा नही करते। फिर भी उनका वैदिक देवता मित्र से सम्बन्ध असम्भव नही है क्योकि वे तो सुमित्रा के पुत्र ही है।

रामायण के अन्य पात्रो और घटनाओ के विषय मे डॉ० याकोबी बहुत ढूँढने पर भी वैदिक साहित्य मे कोई समानता न पा सके।

६६ डॉ० याकोबी के इस मत के विरुद्ध हम सामान्य रूप से कह सकते है कि इसमे कल्पना प्रधान है, लेकिन इस कल्पना को प्रमाणित करने के लिए तर्क कम दिए जाते हैं।

रामायण की सीता के वृत्तान्त पर हम भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व का प्रभाव मानते है। लेकिन दोनों मे जो भिन्नता है, वह समानता की अपेक्षा कही अधिक महत्वपूर्ण है।

राम और इन्द्र की अभिन्नता बहुत चिन्त्य है। रावणवध और वृत्रवध तथा सीताहरण और गायों के चुराए जाने मे जो थोडी सी समानता है, वह इस अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नही है। वैदिक काल के अन्त मे सीता अवश्य एक बार पर्जन्यपत्नी और एक बार इन्द्रपत्नी कही गई है, लेकिन इस कारण इन्द्र और राम का

---

१. इससे उनका नाम 'मारुति' भी है। यह नाम वृत्र के विरुद्ध इन्द्र तथा मारुतों के सघ का स्मरण दिलाता है।

मूलरूप एक मानना नितान्त अनावश्यक है[1]। वैदिक साहित्य मे बहुत सी कथाएँ और वृत्तान्त मिलते है, जिन से स्पष्ट है कि साधारण प्रवृत्ति यह है कि जो देवता और पात्र प्रारम्भ मे भिन्न थे उनसे सम्बन्ध रखने वाली घटनाएँ बाद मे मिला दी जाती हैं। डॉ० याकोबी हमको विपरीत दिशा मे ले जाना चाहते हैं। फिर यदि राम और इन्द्र का मूलरूप एक है, तब यह समझना कठिन हो जाता है कि राम के चित्रण मे इन्द्र के अत्यन्त स्पष्ट व्यक्तित्व की असख्य विशेताओ का लोप क्यो हो गया है[2]। रावण और वृत्रासुर मे वध किए जाने के अतिरिक्त कोई विशेष समानता नही है। वृत्र ऋग्वेद मे कही भी इद्रजित् के अत्यन्त अनुपयुक्त नाम से विभूषित नही किया जाता है। यदि हमको मेघनाद को इन्द्रजित् अर्थात् रामजित् समझना है तो यह नाम भी उचित नही है।

हनुमान् के सम्बन्ध मे भी डॉ० याकोबी का यह अनुमान ठीक है कि उनकी व्यापक लोकप्रियता का एकमात्र कारण उनका रामायण मे चरित्र-चित्रण नही हो सकता। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि प्राचीन यक्ष-पूजा के साथ हनुमान् का सम्बन्ध स्थापित किया गया है (दे० अनु० ७१०) : वर्षाकाल के किसी अधिष्ठाता देवता अथवा इद्र से हनुमान् की अभिन्नता का कही भी प्रमाण क्या, सकेत मात्र भी नही मिलता।

इन सब आपत्तियो को ध्यान मे रख कर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि रामायण की उत्पत्ति और इसके मूलरूप के सम्बन्ध मे डॉ० याकोबी का मत समीचीन नही प्रतीत होता।

६७ ई० हॉपकिन्स के अनुसार महाभारत के शान्ति पर्व मे जो राम-कथा मिलती है, इससे डॉ० याकोबी के मत की पुष्टि होती है। इस कथा मे जो राम का चरित्र मिलता है वह किसी प्राचीन देवता सम्बन्धी आख्यान पर निर्भर होगा। बाद मे इससे सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी की कथा जोड दी गई है और अन्त मे वाल्मीकि ने रावण, हनुमान्, लका आदि के वृत्तान्त लेकर उसे और बढाया है।[3]

राम का व्यक्तित्व इन्द्र की कथाओ से विकसित हुआ हो, यह तो शाति-पर्व के प्रसङ्ग के विरुद्ध है। वहाँ १६ राजाओ के सक्षिप्त वृत्तान्त दिए जाते हैं—सब महान् थे, लेकिन सबके सब मर गए। अतः सृजय को अपने पुत्र की मृत्यु के कारण शोक नही करना चाहिए।

---

१ दे० एच० ओल्डेन्बेर्ग : डी रलिगियोन डेस वेद, पृ० ५७ टि०।

२ दे० वॉन नेगेलाइन : वियेना ओरियन्टल जर्नल, भाग १६, पृष्ठ २४८।

३ ई० डब्लू हॉप्किस : ज० अ० ऑ० सो०, भाग ५०, पृष्ठ ८५ आदि।

इसके अतिरिक्त शांतिपर्व के वृत्तान्त मे एक वाक्य मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि वह विकसित राम-कथा पर निर्भर है :

स चतुर्दशवर्षाणि वने प्रोष्य महातपाः।
दशाश्वमेधां जारूथ्यानाजहार निरर्गलान् ॥

(म० भा० १२, २६, ५३)

इसमे चौदह वर्ष तक वनवास के बाद अश्वमेधो का स्पष्ट उल्लेख है। ई० हॉपकिन्स के अनुसार वनवास का अभिप्राय यहाँ वानप्रस्थाश्रम से है। लेकिन एक तो चौदह वर्ष राम-कथा का स्मरण दिलाता है और दूसरे वनवास के बाद ही अश्वमेध का उल्लेख है। अतः यहाँ राम के वानप्रस्थ बनने का अर्थ असभव है।

६८. डॉ० वान नेगेलैन के अनुसार भी राम-कथा वैदिक साहित्य की सामग्री से विकसित हुई है। वास्तव मे उनका मत कष्टकल्पना के अतिरिक्त और कुछ नही है। अतः उसका विस्तृत निरूपण यहाँ अनावश्यक है।[1] सार यह है कि पुरूरवा-उर्वशी (ऋग्वेद १०, ९५) आदि अप्सराओ का मनुष्यो के साथ विवाह राम-कथा का बीज है। सीता के सौंदर्य और उनके अलौकिक जन्म का उल्लेख उनके अप्सरा होने का निर्देश है। सीता पृथ्वी के मानवीकरण का परिणाम है। राम और पृथु वैन्य (ऋग्वेद १, ११२, १५ आदि) अभिन्न है। पृथु पृथिवी का पुलिंग मात्र है। इत्यादि।

६९. राम-हुवास्त्र। डॉ० याकोबी ने अपने उपर्युक्त मत के प्रतिपादन के पश्चात् आगे चलकर अनुमान किया है कि इरानीय राम-हुवास्त्र तथा भारतीय इन्द्र-राम का मूल-स्रोत एक है। लेकिन वह स्वय स्वीकार करते हैं कि 'अवेस्ता' के देवताओ के अस्पष्ट और धुंधले व्यक्तित्व के कारण इस प्रश्न का निर्णय असंभव है।[2]

राम-हुवास्त्र (ह्वास्त्र) का उल्लेख 'जेद अवेस्ता' मे प्रायः वायु तथा मिथ्र के साथ होता है[3]। राम का अर्थ है 'शांति, विश्राम', हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह',— राम-हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह मे विश्राम।[4] प्रारम्भ मे वायु तथा मिथ्र से राम-हुवास्त्र (अर्थात् चरागाह मे विश्राम) के लिए प्रार्थना की जाती थी। बाद मे राम-हुवास्त्र स्वय देवता बन गया। वायु दो प्रकार का माना जाने लगा, एक भला और

१. दे० वान नेगेलाइन : वियेना ओरियेंटल जर्नल, भाग १६, पृष्ठ २२६। एम्० विंटरनित्स : वही, भाग १, पृष्ठ ५१६।
२. दे० एच० याकोबी : वही, पृष्ठ १३६।
३. दे० सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट, भाग २३ और ३१।
४. दे० वही, भाग ३१, पृष्ठ ३२३, छंद १५।

एक बुरा। राम-ह्वास्त्र तथा अच्छा वायु अभिन्न है।[1] इस राम-ह्वास्त्र के नाम पर एक पूरा यश्त जेद अवेस्ता मे मिलता है। इसका रचनाकाल चौथी श० ई० पू० माना जाता है।[2] इस यश्त मे भी राम-ह्वास्त्र का कोई स्पष्ट व्यक्तित्व अंकित नही है और इस देवता की उत्पत्ति ध्यान मे रखकर हम निस्संकोच कह सकते है कि ईरानीय राम-ह्वास्त्र तथा भारतीय राम-दाशरथि का कोई सबन्ध नहीं होता।

१००. यहाँ एक अन्य राम नामक देवता का उल्लेख असंगत नही होगा। एक असिरियन देवता का नाम है रम्मन अथवा रम्मानु, (हीब्रू मे इसका नाम रिमोन है तथा सिरियन मे हदाद)। रमानु की धातु का अर्थ है मेघगर्जन और वह वज्रपात, आंधी तथा वृष्टि का देवता माना जाता था।[3]

हीब्रू मे 'राम' धातु का अर्थ है ऊँचा, श्रेष्ठ। बाइबिल मे इस धातु से अनेक नगरो के नाम तथा दो तीन व्यक्तियो के नाम भी मिलते हैं।[4]

ग—दिनेशचन्द्र सेन का मत

१०१. डॉ० वेबर तथा डॉ० याकोबी की भाँति दिनेशचन्द्र सेन भी रामकथ के दो प्रधान मूल स्रोत मानते हैं।[5] एक तो दशरथ-जातक जो उत्तर भारत मे प्रचलित था तथा दूसरे रावण-सम्बन्धी आख्यान जो मुख्यतया दक्षिण मे प्रचलित थे। इन दोनो के सयोग से रामकथा उत्पन्न हुई है। एक तीसरा लेकिन गौण आधार हनुमान्-सम्बन्धी सामग्री है, जिसमे प्राचीन वानर-पूजा का अवशेष देखा जा सकता है।

दशरथ-जातक रामकथा का पूर्व रूप तथा आधार नही हो सकता है, इसके प्रमाण पिछले अध्याय मे दिए गए हैं। यहाँ दिनेशचन्द्र के दो अन्य आधारो पर विचार किया जायेगा।

---

१. दे० डारमेस्टटेर : एटुड इरानियेन (भाग २, १६३) और ले जेंड अवेस्ता (भाग २, ३०६)।

२. ई० एम० कागा : दि एज ऑव यश्तस, ए वाल्यूम ऑव ईस्टर्न एड इण्डियन स्टडीज, पृष्ठ १३४-४०।

३. दे० ए० उगनड : बैबीलोनियन-एसिरियन डिक्शनरी।
आर० डुसो : ले देकुवेर्ट द रास शकरा (पेरिस १६४१) और ले रलिजियो द बैबिलोनी ए दासिरी (पेरिस १६४५) पृ० ६८।

४. दे० एफ० विगुरु : दिकसियोनेर द ला बिबल, पेरिस।

५ दे० दिनेश चन्द्र सेन : वही, पृष्ठ ३, ७, २६-४१, ५६।

रावण-सम्बन्धी स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, जिनका प्रधान विषय था, रावण की धार्मिकता, तपस्या तथा महत्व। इस मत को सिद्ध करने के लिए बौद्ध तथा जैन साहित्य का सहारा लिया जाता है। जैन राम-कथा मे (दिनेशचन्द्र सेन केवल हेमचन्द्र का उल्लेख करते हैं) राक्षसवश तथा वानरवश का जो विस्तृत वर्णन मिलता है, यह इस बात को पुष्ट करता है कि राम की अपेक्षा राक्षस तथा वानर अधिक लोकप्रिय थे। लंकावतार सूत्र मे रावण तथा बुद्ध का धर्म के विषय मे सवाद उद्धृत है और इस ग्रथ मे कही भी रावण-राम युद्ध की ओर निर्देश मात्र भी नही मिलता। अत. रावण (लका का राजा) राम-कथा की उत्पत्ति के पहले प्रसिद्ध हो चुका था। धर्मकीर्ति (६ ठी श० ई) भी आदर्श बौद्ध राजा रावण को रामायण के दोषारोपण से बचाने का प्रयत्न करता है। यही सक्षेप मे दिनेशचन्द्र सेन का तर्क है।

१०२ सबसे पहले कहना है कि रावण जैनियो के अनुसार जैन-धर्मावलम्बी था और बौद्धो के अनुसार बौद्ध था। अतः दोनो मे से कम से कम एक धारणा भ्रामक है।

जैनियो के साहित्य मे रावण की कथा स्वतन्त्र रूप से नही मिलती। रावण का उल्लेख केवल राम-कथा मे ही किया जाता है और जैन राम-कथा स्पष्टतया वाल्मीकीय राम-कथा पर निर्भर है (दे० ऊपर अनु० ५७)। अतः जैन साहित्य मे राम-कथा का मूल स्रोत ढूंढना व्यर्थ है।

बौद्ध लंकावतार सूत्र (अथवा सद्धर्म-लंकावतार सूत्र) के विषय मे दिनेशचन्द्र सेन का तर्क अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह रचना दूसरी श० ई० की मानी जाती थी और इसका प्रथम अध्याय (जिसमे लकापति रावण तथा बुद्ध का सवाद मिलता है) प्रामाणिक माना जाता था। लेकिन आजकल इसके प्रमाण मिलते हैं कि लंकावतार सूत्र चौथी शताब्दी ई० का है और उसका प्रथम अध्याय प्रक्षिप्त है।[1] मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। गुणभद्र ने उसका ४४३ ई० मे अनुवाद किया था। इस चीनी अनुवाद मे रावण-बुद्ध-संवाद नही मिलता और रावण का कोई उल्लेख नही है। ५१३ ई० मे इस रचना का पुनः चीनी भाषा मे अनुवाद किया गया है और इस छठी शताब्दी के अनुवाद मे एक नया प्रथम अध्याय मिलता है, जिसमे रावण धर्म के विषय मे बुद्ध से प्रश्न करता है। इस अध्याय के प्रक्षिप्त होने के अतरंग प्रमाण भी मिलते हैं। अन्य अध्यायो में गद्य और पद्य का सम्बन्ध ऐसा है कि पद्य गद्य का अर्थ दुहराता है, तथा सारी रचना बुद्ध तथा बोधिसत्व महामति

१. एम्० विंटरनित्स : वही, भाग २, पृ० ३३७।
डी० टी० सुजुकि : स्टडीज इन दि लकावतार सूत्र, लन्दन, १६३०।

के सवाद के रूप मे है। उनमे कही भी रावण का उल्लेख नही मिलता। केवल प्रथम अध्याय मे पद्य गद्य का अर्थ नही दुहराता और इसमे कोई ऐसी सामग्री नही है, जो सूत्र को समझने के लिए आवश्यक हो। डी० टी० सुजुकि का अनुमान है कि रामकथा की लोकप्रियता के कारण लकावतार सूत्र का सम्बन्ध इससे जोडा गया है। लकावतार का अर्थ है बुद्ध का लका मे अवतार। लका दक्षिण मे मानी जाती थी। इसके अतिरिक्त रामकथा विषयक कोई भी निर्देश नही मिलता।

रावण सिहल द्वीप का राजा हुआ हो, इसके लिए भी वहाँ के प्राचीनतम ग्रथों मे कोई प्रमाण नही पाया जाता। **दीपवंश** (चौथी श० ई०) तथा **महावंश** (पाँचवी श० ई०) सिहल द्वीप के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक काव्य है। इनमे रामकथा का निर्देश मिलता है (दे० महावश ६४, ४२)। लेकिन सिहल द्वीप के राजा रावण का कही भी उल्लेख नही पाया जाता है।

१०३. वाल्मीकि के पहले हनुमान् के विषय मे आख्यान-काव्य प्रचलित रहा होगा और वाल्मीकि ने उसका प्रयोग अपनी रामकथा के लिए किया होगा, दिनेशचन्द्र की इस धारणा के लिए कोई प्रमाण नही मिलता। यह अनुमान मात्र ही है। वैदिक साहित्य मे हनुमान् का कही भी उल्लेख नही हुआ है। बौद्ध तिपिटक के जातको मे भी हनुमान् का नाम नही आया, अतः उनके विषय मे रामकथा के पहले स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, यह बहुत सदिग्ध है। 'समुग्ग-जातक (जातक न० ४३६) मे एक वायुस्स पुत्त[1] नामक विद्याधर का उल्लेख मिलता है, जो ऐद्रजालिक था लेकिन इसके सम्बन्ध मे न तो हनुमान् का उल्लेख हुआ है और न किसी अन्य वानर का।

'हनुमान्' शब्द सभवतः एक द्रविड शब्द का सस्कृत रूपातर है (आण-नर, मन्दि-कपि) जिसका अर्थ है 'नरकपि'। इसी कारण अनुमान किया गया है कि वृषाकपि तथा हनुमान् दोनो किसी प्राचीन द्रविड देवता के नाम के रूपान्तर हैं।[2] इस अनुमान का आधार निर्मूल है। वृषाकपि का अर्थ नरकपि न होकर वाराह अथवा एकशृग वाराह होता है। महाभारत मे वृषाकपि को अनेक आर्य देवताओ (विष्णु, शिव, इद्र आदि) से अभिन्न माना गया है।[3] ऋग्वेद (दे० १०, ८६) मे जो वृषाकपि का

---

१ अन्यत्र भी वायुस्स पुत्त का अर्थ ऐद्रजालिक है। दे० जर्मन ओरियेन्टल जर्नल . भाग ६३, पृ० ८६।

२. एफ० ई० पार्गीटर : ज० रो० ए० सो०, १९११, पृ० ८०३ और १९१३, पृ० ३९६।

३ जर्नल ओरियेटल इस्टिट्यूट (वडौदा), भाग ८, पृ० ४१-७१।

उल्लेख है, वह सभवत: एक सूर्य देवता है, जिसका प्रतीक वाराह था।[1] अत: ऋग्वेदीय वृषाकपि का द्रविड सभ्यता के साथ कोई भी सवध प्रमाणित नही होता। यह अवश्य बहुत ही सभव है कि 'हनुमान्' नाम एक द्रविड शब्द का सस्कृत रूपान्तर है और इसका अर्थ नरकपि है। कारण यह है कि रामायण के अन्य वानरो की तरह हनुमान् भी वानर-गोत्रीय आदिवासी थे (दे० आगे अनु० ११०)। वह एक प्राचीन द्राविड देवता थे, इसके लिए सकेत भी नही मिलता। रामायण मे हनुमान् की शक्ति के वर्णन मे अतिशयोक्ति का सहारा तो लिया गया है; फिर भी उनके देवता होने का कही भी उल्लेख नही हुआ है[2]।

घ—उपसंहार

१०४ उपर्युक्त मतो की सामान्य विशेषता यह है कि रामकथा का मूल स्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतत्र कथाओ की कल्पना की जाती है। दशरथ-जातक के विषय मे डॉ० वेवर का मत संभवत: इस प्रवृत्ति का मूल कारण है।

पिछले अध्याय से स्पष्ट हो गया होगा कि दशरथ-जातक का वृत्तान्त ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप मात्र है और प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि रामकथा के पूर्व रावण अथवा हनुमान् के विषय मे स्वतंत्र आख्यानो का कोई भी प्रमाण नही मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि रामकथा के कारण ही दशरथ, रावण, हनुमान् आदि प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। आगे चलकर भी इनका उल्लेख प्राय: केवल रामकथा विषयक सामग्री मे मिलता है। यदि कही इनका स्वतन्त्र उल्लेख होता है तो यह निश्चित रूप से एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचना अथवा किसी प्रक्षेप मे है, जैसे लकावतार सूत्र मे।

रामायण की अतरग समीक्षा करने पर बहुत से विद्वान् इस परिणाम पर पहुँचते है कि अयोध्याकाण्ड की घटनाएँ अत्यन्त स्वाभाविक है किंतु दण्डकारण्य तथा लका की घटनाएँ अलौकिक और काल्पनिक प्रतीत होती है। वास्तव मे रामकथा के इन दो भागो मे अन्तर अवश्य पाया जाता है, लेकिन इसे समझने के लिए रामकथा के भिन्न-भिन्न आधार मानने की आवश्यकता नही है। **रामायण** के इस द्वितीय भाग का प्रधान विषय है स्त्रीहरण और उसके कारण युद्ध। अयोध्या से राम के निर्वासन के समान

१. दे० श्री क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय, इलाहाबाद युनिवर्सिटी स्टडीज, भाग १, पृ० ६७-१५६।

२. परवर्ती रचनाओ मे हनुमान् तथा वृषाकपि का सम्बन्ध अवश्य जोडा गया है (दे० ब्रह्मपुराण, ८४, १६)।

यह भी एक अत्यन्त साधारण घटना प्रतीत होती है। अत: कथावस्तु के दृष्टिकोण से दो भागो मे कोई मौलिक अतर नही है। लेकिन इन दोनो भागो के वर्णन मे अंतर का आ जाना एक प्रकार से अनिवार्य था। लोकप्रिय नायक को विकट जगलो मे निवास करना पडता है, एक क्रूर आदिवासी राजा उसकी पत्नी हर लेता है, और नायक असभ्य जातियो की सहायता से युद्ध करके उसे पुनः प्राप्त करता है। इस कथानक के काव्यात्मक वर्णन मे अतिशयोक्ति का प्रयोग कितना स्वाभाविक था। प्रतिनायक की क्रूरता, सहायको की वीरता, युद्ध की तीव्रता आदि अकित करने के लिए किसी भी देश अथवा भाषा का कवि अनिवार्य रूप से अतिशयोक्ति का सहारा लेता है। कवि मात्र की यह विशेषता ध्यान मे रख कर रामकथा के दो सर्वथा भिन्न भाग मानने की कोई आवश्यकता नही पडती।

परिशिष्ट १

रामकथा का ऐतिहासिक आधार

१०५. डॉ० याकोवी केवल अयोध्याकाड की घटनाओ के लिए ऐतिहासिक आधार मानते है। लेकिन अयोध्याकांड तथा रामायण के अन्य काडो के कथानक मे कोई मौलिक अन्तर मानने की आवश्यकता नही है। यह सभवतः प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण से स्पष्ट हो चुका है। अतः समस्त रामायण की प्रधान कथा-वस्तु के लिए ऐतिहासिक आधार मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए, यही अनेक विद्वानों का मत है।[1] वाल्मीकि-रामायण पढ कर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को अपने कथानक की ऐतिहासिकता के विषय मे कोई सदेह नहीं है। फिर भी डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का कहना है कि राम की ऐतिहासिकता प्राचीन भारत के किसी भी गंभीर विद्यार्थी को स्वीकार्य नही है।[2]

१०६. डॉ० वेवर के अनुसार रामायण का समस्त काव्य एक रूपक मात्र है, जिसके द्वारा दक्षिण की ओर आर्य सभ्यता और कृषि का प्रचार दिखलाया जाता है।[3] प्रधान पात्र सीता, जिसका हरण और पुनःप्राप्ति काव्य की कथा-वस्तु है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति न होकर, खेत की सीता (लांगलपद्धति) का मानवीकरण मात्र है, जिसे आर्य कृषि का प्रतीक मानना चाहिए। वैदिक सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी और रामायण की सीता अभिन्न हैं। रामायण मे सीता के जन्म और तिरोधान संबंधी वृत्तान्त इसकी ओर निर्देश करते है। उसकी वहन उर्मिला के नाम का अर्थ लहराता हुआ खेत समझना चाहिए। भवभूति के उत्तररामचरित मे भी उसके पिता जनक का

१ दे० एम० मोनियेर विलियम्स : इडियन एपिक पोइट्री, पृ० ८।
एस० के० वेल्वलकर : वही, पृ० ४०।
एम० नारायण शास्त्री : इ० ए०, भाग २६, पृ० ८-२७।

२. दे० ज० ए० सो० ब०, भाग १६ (१९५०), पृ० ७६।

३ दे० ए० वेवर : वही, पृ० १४ आदि और हिस्ट्री ऑफ़ इडियन लिटरेचर, पृ० १९२। ए० वेवर का मत अशतः निम्नलिखित ग्रन्थो मे मिलता है—
रमेशचन्द्र दत्त : वही, पृ० २११।
ए० बी० कीथ : सस्कृत लिटरेचर, पृ० ४३।
जे० पिक्फर्ड : महावीर चरित, लन्दन, १८७१, पृ० ८ (भूमिका)।

एक विशेषण 'सीरध्वज' मिलता है, जो कृषि से संबंध रखता है। (डॉ० वेलवलकर[1] उसके पुत्र का भी उल्लेख करते हैं—कुश एक घास का नाम है और लव लुनने से आता है)। आदिवासियो के आक्रमणो से इस सीता, आर्य कृषि के प्रतीक, की रक्षा राम पर निर्भर है। डॉ० वेवर के अनुसार राम दाशरथि और वलराम (हलभृत्) का सवध स्वय-सिद्ध है। प्रारभ मे ये एक थे, वाद के विकास मे वे दो भिन्न-भिन्न पात्रो के रूप मे प्रसिद्ध हो गए। राम का वनवास हेमत ऋतु का प्रतीक है, जव प्रकृति और विशेषकर कृषि का कार्य स्थगित होता है।[2] इसके अतिरिक्त महाभारत मे जहाँ रामराज्य का वर्णन है, वहाँ इस वात का विशेष उल्लेख मिलता है कि कृषि की असाधारण उन्नति हुई थी। वास्तव मे महाभारत के द्रोणपर्व और शातिपर्व मे रामराज्य का वर्णन किया जाता है। इस वर्णन के अनेक श्लोक रामायण मे मिलते हैं (दे० रा० ६, १२८)। शातिपर्व (अध्याय २६) मे कृषि का उल्लेख हुआ है ·

कालवर्षाश्च पर्जन्याः सस्यानि रसवन्ति च।
नित्य सुभिक्षमेवासीद्रामे राज्यं प्रशासति ॥४८॥
नित्यपुष्पफलाश्चैव पादपा निरुपद्रवाः ।
सर्वा द्रोणदुघा गावो रामे राज्यं प्रशासति ॥५२॥

'पर्जन्य यथासमय जल वरसाकर शस्य उत्पन्न करता था। इससे राम के राज्य-शासन के समय किसी भाँति का दुर्भिक्ष नही पडता था......वृक्ष सदा फल-फूलो से युक्त रहते थे, गाएँ घडे परिमाण दूध देती थी।'

१०७. डॉ० वेवर का उपर्युक्त मत वहुत समीचीन नही प्रतीत होता है। राम-दाशरथि और वलराम की अभिन्नता के लिए वे कोई प्रमाण नही दे सके हैं। इस अभिन्नता के विरुद्ध यह कहा जा सकता है कि भारत मे ये दोनो भिन्न ही माने जाते है। वैदिक साहित्य मे अनेक राम नामक व्यक्तियो का उल्लेख हुआ है, जिससे स्पष्ट है कि 'राम' नाम प्रचलित हो चुका था (दे० ऊपर अनु० ४)।

इसके अतिरिक्त राम की दक्षिण की यात्रा के फलस्वरूप रावण और वालि के स्थान पर उनके भाई विभीषण और सुग्रीव तो राजा वनाए जाते है, लेकिन दक्षिण की सभ्यता या कृषि मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्त्तन हुआ हो, यह रामायण मे कही भी नही दिखलाया जाता।[3] अतः हमे मानना पडेगा कि जिस उद्देश्य की पूर्ति दिखलाने के लिए

---

१ उत्तररामचरित · भूमिका, पृ० ५६।

२ किंतु भारतवर्ष मे ग्रीष्मकाल मे कृषि नही हो सकती। हेमन्त मे अवश्य होती है।

३ ए० ए० मैक्डानल · वही, पृ० ३११। एच० याकोवी : वही, पृ० १२६।

यह काव्य लिखा गया है, वह पूरा न हो सका। यदि सचमुच कवि के मन में कृषि तथा कृषि सबंधी देवताओं का विचार सर्वोपरि था तो यह समझ मे नही आता कि कृषि को इतना कम महत्व क्यो दिया गया।[1] वास्तव मे रामकथा तथा कृषि का कोई विशेष सम्बन्ध मानने की कोई आवश्यकता नही है। यह भी स्मरण रखने योग्य है कि आर्यो के आगमन के पहले ही कृषि भारतवर्ष तथा दक्षिण मे विद्यमान थी।

१०८. जे० टी० ह्वीलर मानते है कि रामकथा ब्राह्म और बौद्ध धर्म दोनों के सघर्ष का प्रतीक है। दिनेशचन्द्र सेन का भी विश्वास है कि वाल्मीकि ने बौद्ध भिक्षुपन की प्रतिक्रिया स्वरूप गृहस्थ जीवन का आदर्श पाठको के सामने रखने के उद्देश्य से **रामायण** लिखा था (इन दोनो मतो के खडन के लिए दे० ऊपर अनु० ६०)।

रामायण की परवर्ती प्रतीकवादी व्याख्याएँ सभवतः साहित्य मे प्रयुक्त रूपको से विकसित हुई है। रामकथा-विषयक रूपको के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

तीर्त्वा मोहार्णवं हत्वा रागद्वेषांश्च राक्षसान्।
शान्तिसीतासमायुक्त आत्मरामो विराजते ॥ ५० ॥
(शकराचार्यकृत आत्मबोध)

दशेन्द्रियाननं घोरं यो मनोरजनीचरम्।
विवेकशरजालेन शमं नयति योगिनाम् ॥
(सात्वत सहिता, अ० १२, १५१)

दर्पोदग्रदशेन्द्रियाननमनो नक्तंचराधिष्ठिते
देहेऽस्मिन्भवसिधुना परिगते दीनान्दशामास्थितः।
अद्यत्वेहनुमत्समेन गुरुणा प्रख्यापितार्थः पुमान्
लंकारुद्धविदेहराजतनयान्यायेन लालप्यते ॥ ७२ ॥
(सकल्पसूर्योदय, अ० १)

आनन्दरामायण के विलासकाड के देहरामायण नामक तृतीय सर्ग मे रामकथा की समस्त घटनाओं का प्रतीकात्मक अर्थ प्रतिपादित किया गया है—**मनोवृत्तिघातश्च ताटिकाया वधोऽत्र सः, मनोवेगस्य यो भंगः स धनुर्भंग उच्यते; अविवेकवधः प्रोक्तश्चात्र वालिवधस्त्वया; अज्ञानतरणोपयः सेतुबंधो महोदधौ; मदस्य निग्रहस्तत्र कुंभकर्णवधस्त्वया, तत्राहंकारघातश्च रावणस्य वधस्त्वया; हृदयाकाशगमनम् अयोध्यागमनं पुनः।** तुलसी साहब ने भी अपने घटरामायन मे रामकथा को शरीर के अन्दर ही अवतारित कर दिया है—**"घट मे रावन राम जो लेखा। भरत सत्रुगुन दसरथ पेखा"**

१. ई० डब्लू० हॉप्किस : एपिक मिथोलॉजी, पृ० ११-१२।

(घटरामायण, पृ० ११)। बलरामदास का उडिया ब्रह्माण्डभूगोल, देहरामायण, घटरामायण आदि की श्रेणी मे आता है।

येदातोरे सुब्बराव के अनुसार रामायण का अर्थ दार्शनिक है[1], रामायण के भौगोलिक स्थान सचमुच योगशास्त्र के चक्र है। ई० मूर भी रामकथा मे एक दार्शनिक शास्त्र का प्रतिपादन देखते हैं।[2]

इतना ही निश्चित है कि ये कल्पनाएँ आदिकवि के मन से कोसो दूर थी। इनमे इतना ही तत्व है कि ऐतिहासिक घटनाओ के साथ-साथ कवि निश्चित रूप से आज्ञाकारी राम, पतिव्रता सीता, भ्रातृ-भक्त लक्ष्मण आदि का आदर्श अपने पाठको के सामने रखना चाहता था। इसी तरह राम नैतिकता के प्रतीक बन गए हैं तथा रावण अधर्म का, लेकिन सारी कथा मे रूपक अथवा प्रतीक मात्र देखने के लिए कोई समीचीन कारण नही है।

१०६. रामकथा का ऐतिहासिक आधार मानते हुए भी एम० वेकटरत्नम् का विश्वास है कि यह वास्तव मे मिस्र देश के रैमसेस नामक राजा का इतिहास है।[3] रैमसेस के विषय मे आधुनिकतम खोज के आधार पर जो कुछ ज्ञात हुआ है, उससे स्पष्ट है कि वाल्मीकि-रामायण से उस राजा का कोई संबध नही हो सकता। मिस्र देश की प्राचीनतम पौराणिक कथाओ के अनुसार नू (आकाश) तथा गेब (पृथ्वी) के सयोग से रा अथवा रे (सूर्य) उत्पन्न हुआ।[4] रैमसेस का अर्थ है—'रा ने उसे जन्माया' (मस धातु का अर्थ है जन्म लेना)।[5] रैमसेस (१२६८-१२३२ ई० पू०) मिस्र देश के महान् सम्राटो मे से एक है। अपने शासनकाल के पूर्वार्द्ध मे उसको हिटैटसंघ के विरुद्ध युद्ध करना पडा। उसकी पहली विजय कादेश (सिरिया) में हुई थी (१२६४ ई० पू०), लेकिन इसके पश्चात् भी १२७८ ई० पू० तक युद्ध होता रहा। अत मे रैमसेस ने विजय प्राप्त कर एक हिटैट की राजकन्या से विवाह किया और इसके बाद १२३२ ई० पू० तक एक विशाल राज्य का शातिपूर्वक शासन किया।[6]

---

१. दे० क्वार्टर्ली जर्नल मिथिक सोसाइटी : भाग २२, पृ० ५१४।

२. दे० ई० मूर : द-हिन्दू पथेयॉन, पृ० ३२६ टि०।

३. दे० वेकटरत्नम् : राम दि ग्रेटेस्ट फेरो ऑव ईजिप्ट, १६३४।

४. जे० वान्डिवे : ला रलिजियाँ एजिपशियेन, पेरिस, १६४४।

५. दे० एट्रुडस : भाग १७३ (१६२२), पृ० १४७।

६. ए० मोरे : हिस्टवार दि लोरियन, पेरिस, १६३६, भाग २, पृ० ५४७ आदि।

परिशिष्ट २

वानर और राक्षस

११०. रामकथा के वानर, ऋक्ष और राक्षस विंध्य प्रदेश तथा मध्य-भारत की आदिवासी अनार्य प्रजातियाँ थी। इसके विषय मे प्रायः मतभेद नही हैं। यद्यपि वाल्मीकि-रामायण मे इन आदिवासियो को वास्तव मे वानर, ऋक्ष आदि कहा गया है, फिर भी आदि-काव्य के अनेक स्थलो से पता चलता है कि प्रारभ मे ये सब मनुष्य ही माने जाते थे[1]। रामायण के वानर मनुष्यो की तरह बुद्धिसम्पन्न है, मानवीय भाषा बोलते है, कपडे पहनते है, घरो मे निवास करते है, विवाह-सस्कार को मान्यता देते हैं और राजा के शासन के अधीन रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि कवि की दृष्टि मे वे निरे वानर नही है। उनकी अपनी-अपनी सस्कृति और सामाजिक व्यवस्था है। वास्तव मे वे वानर, ऋक्ष आदि जनजातियाँ थे। 'वानर' नाम की उत्पत्ति की समस्या सुलझाने के लिए अनेक अनुमान प्रस्तुत किए गए हैं। सी० वैद्य के अनुसार वानर जाति के लोग सचमुच वानर के समान दिखलाई पडते थे और इससे उनका यह नाम पडा।[2] अन्य विद्वान् जैन रामायणो के अनुसार मानते है कि वानर, ऋक्ष आदि नाम उन जातियो की ध्वजा के कारण उत्पन्न हुए—'जिस जाति की ध्वजा पर वन्दर का चिह्न था, वह वानर जाति कहलाती थी, जिसकी ध्वजा पर रीछ का चिह्न था, वह रीछ कहलाती थी, जैसा आजकल रूसियो की ध्वजा पर रीछ तथा अग्रेज जाति की ध्वजा पर सिह का चिह्न होने से उन देशो के वीरो को ब्रिटिश लॉयन्स और रस्सियन वयर्स कहते हैं। जैनो की राम-रावण-कथा मे वानरचिह्नाकित ध्वजा मुकुटधारी जाति वानरवशीय कही गई है।[3] यह मत असभव नही कहा जा सकता है, फिर भी जैनियो ने अनेक स्थलों पर रामकथा मे अनेक चित्य परिवर्त्तन किये हैं। अतः जैन साहित्य का उपयोग करने मे हमे सतर्क रहना चाहिए (दे० ऊपर, पाँचवाँ अध्याय)। सब से स्वाभाविक अनुमान

---

१. दे० रामायण ६, ६६, ५ और जी० रामदास, दि ऐबॉरिजिनल ट्राइब्स इन दि रामायण, मैन इन इडिया, भाग ५, पृ० २८-५५ और ऐबॉरिजिनल नेम्स इन दि रामायण, जर्नल बिहार-उडीसा रिसर्च सोसाइटी, भाग ११, पृ० ४१-५३।

२. दे० सी० वी० वैद्य : वही, पृ० १५३।

३. दे० शिवनन्दन सहाय : तुलसीदास, पृ० ४१६।

यह है कि आजकल के आदिवासियों के समान उन जातियों के विभिन्न कुल विभिन्न पशुओं और वनस्पतियों की पूजा करते थे। जिस कुल के लोग जिस पशु या वनस्पति की पूजा करते थे, वे उसी के नाम से पुकारे जाते थे। इस पशु अथवा वनस्पति को आजकल के विद्वान् 'टोटम' कहते हैं। आधुनिक भारत के आदिवासियों में ऐसे 'टोटम' या गोत्र विद्यमान् हैं, जिनका उल्लेख रामायण में हुआ है, अर्थात् वानर, ऋक्ष (जाम्बवान) और गीध (जटायु, सम्पाति और रावण)। आर० वी० रसेल[1] के अनुसार बंदर और रीछ तेरह सर्वाधिक प्रचलित टोटमों में सम्मिलित हैं।

छोटानागपुर में रहने वाली उरांव[2] तथा मुण्डा[3] जातियों में तिग्गा, हलमान, बजरंग और गडी नामक गोत्र मिलते हैं, इन सब का अर्थ बन्दर ही है। इसी प्रकार रेड्डी[4], बरई, बसोर, भैना और खंगार[5] जातियों में भी वानर-द्योतक गोत्र मिलते हैं। सिंहभूम की भुइया जाति हनुमान् के वंशज होने का दावा करती है, वे अपने को पवन-वंश कहकर पुकारते हैं।[6] 'हनुमान्' नाम वास्तव में एक द्राविड शब्द 'आणमदि' अथवा 'आण्-मति' का संस्कृत रूपान्तर मात्र प्रतीत होता है, अण् का अर्थ है नर, और मद का अर्थ है कपि (दे० ऊपर अनु० १०३)।

ऋक्ष-सूचक गोत्र रेड्डी[7], बरई, गदबा, केवत, सुध[8] आदि जातियों में मिलते हैं। इसी प्रकार भैना[9], उरांव[10] और बिर्होर[11] जातियों में गिद्ध या गिधि गोत्र प्रचलित है। ध्यान देने योग्य है कि उरांव, असुर तथा खरिया आदि आदिम जातियों

---

१ दे० दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑव दि सेंट्रल प्रॉविंसेस, भाग १, पृ० ९०।

२. दे० शरच्चन्द्र राय. दि उराओंस ऑव छोटानागपुर (राँची १९१५), पृ० २२।

३ दे० एन्साइक्लोपिडिया मुंडारिका (किलि, गोत्र शब्द के अंतर्गत)।

४ दे० सी० वॉन फ्रूरर-हाइमेंडार्फ दि रेड्डीस ऑव दि बाइसन हिल्स, पृ० ३२६।

५ बरई, बसोर, भैना, खंगार के लिए दे० आर० वी० रसेल, वही, क्रमशः भाग २, पृ० १९४, पृ० २१०, पृ० २२८, भाग ३, पृ० ४४१।

६. दे० डॉलटन : एथनॉलॉजी ऑव बंगाल, पृ० १४०।

७ दे० सी० वॉन फ्रूरर-हाइमेंडार्फ : वही।

८ बरई, गदबा, केवत और सुध के लिए दे० आर० वी० रसेल: वही, क्रमशः भाग २, पृ० १९४, भाग ३, पृ० १०, पृ० ४२४, भाग ४, पृ० ५१५।

९ दे० आर० वी० रसेल वही, भाग २, पृ० २२८।

१० दे० पी० डेहो : रेलिजन एण्ड कस्टम्स ऑव दी उराओंस, मेम्वायर्स ऑव दि एसियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल, भाग १, पृ० १६०।

११ दे० शरच्चन्द्र राय : दि बिर्होर्स, (राँची, १९२५), पृ० ९१।

की भाषा मे 'रावना' का अर्थ गीध ही है।[1] हाल मे मुझे पता चला कि राँची जिले के रयडीह थाने के कटकर्यां गाँव मे एक 'रावना' नामक परिवार अब तक विद्यमान है। यह गोत्र कम प्रचलित है, इसके स्थान पर प्रायः 'गिधि' नाम चलता है। निष्कर्ष यह है कि 'हनुमान्' की तरह 'रावण' का नाम भी एक वास्तविक अनार्य नाम का सस्कृत रूपान्तर ही प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त रायपुर जिले मे रहने वाले गोंड अपने को रावण के वशज मानते हैं।[2] उराँव भी मानते हैं कि रावण से उनकी जाति की उत्पत्ति हुई थी[3] और इसीलिए उनको 'उराँव' नाम मिला था।[4] इन सब बातो को ध्यान मे रखकर स्पष्ट है कि आदिवासियो का रामकथा के साथ सबध अवश्य ही है तथा यही अधिक संभव प्रतीत होता है कि रामायण के वानर-ऋक्ष-गीध वास्तव मे वानर-ऋक्ष-गीध-गोत्रीय आदिवासी थे।

१११. वैदिक साहित्य, विशेष करके अथर्ववेद मे रक्षस्, राक्षस, पिशाच आदि भूतो का उल्लेख मिलता है। ये मनुष्य के शत्रु हैं, इनके विरुद्ध अथर्ववेद मे बहुत से मत्र दिए गए हैं। इसी तरह राक्षस एक प्रकार से अनिष्ट, अशुभ, हिंसा और पाप का प्रतीक बन गया था और बाद मे रावण के क्रूर और हिंसात्मक अनुयायियो को भी यह नाम मिला। रामायण में राक्षसो का जो वर्णन किया जाता है, वह ऋग्वेद मे अनार्य दस्युओ के वर्णन से बहुत कुछ मिलता है। उनके मनुष्य होने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है (दे० ६, ३७, ३३)। कवि वास्तविक नामो से अपरिचित था। अतः जो नाम मिलते हैं, वे सब के सब वर्णनात्मक हैं—कुंभकर्ण, मेघनाद, दशग्रीव, विभीषण, प्रहस्त (लंबे हाथ वाला) इत्यादि।

११२. यह सब होते हुए भी रामायण मे कवि ने अद्भुत रस तथा अतिशयोक्ति का बार-बार सहारा लिया है और इस कारण रामकथा को काल्पनिक ठहराने के लिए समालोचको को आधार अवश्य मिलता है। रावण के दस सिर थे, हनुमान् समुद्र लाँघते हैं और आकाश मे उड़कर ओषधि-पर्वत ले आते हैं, इस प्रकार के कथन बहुतायत से पाए जाते हैं। फिर भी रावण का केवल एक सिर था, ऐसा वर्णन भी रामायण के कई स्थलो पर मिलता है।[5] दशग्रीव नाम पहले रूपक के रूप मे प्रयुक्त हुआ होगा (दशग्रीव

१. डब्लू० व्वेन : उबर दि लितेरातूर देर बोरारिशे स्तेम्मे इदियेस (बेर्लिन, १९५२), पृ० ४४।

२. दे० आर० वी० रसेल : वही, भाग १, पृ० ४०२।

३ दे० पी० डेहो : वही, पृ० १२२।

४. दे० शरच्चन्द्र राय : दि उराओस पृ० १४।

५ उदा० ५, सर्ग १०, २२ और ४२, दे० चिन्ताहरण चक्रवर्ती : इ० हि० क्वा०, भाग १, पृ० ७७९ और एस० एन० व्यास, ज० ओ० इ०, भाग ४, पृ० १।

अर्थात् जिसकी ग्रीवा दश अन्य साधारण ग्रीवाओं के समान बलवान हो) और बाद मे वस्तुतः दशग्रीव धारण करने वाले प्राणी के अर्थ मे लिया जाने लगा।

अथर्ववेद मे एक दशास्य (दशमुख), दशशीर्ष ब्राह्मण का उल्लेख है।[१] इसका प्रभाव भी रावण के स्वरूप की कल्पना पर पडा, यह असभव नही कहा जा सकता है। उद्धरण इस प्रकार है

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः।
स सोम प्रथमः पपौ स चकारारस विषम्॥

(अथर्ववेद ४, ६, १)

हनुमान् के समुद्रलघन की कथा सभवत किसी आश्चर्यजनक लघन के आधार पर उत्पन्न हुई है। जब स्पेन की सेना को मेक्सिको से हटना पडा तब अलवाराडो नामक सिपाही एक अत्यन्त चौडा नाला लाँघने मे समर्थ हुआ था। यह देखकर मेक्सिको निवासी बोल उठे 'यह सचमुच सूर्य का पुत्र है'। इसी तरह हनुमान् की कथा भी उत्पन्न हुई होगी, यह सी० वी० वैद्य का अनुमान है।[२] मेरा अपना अनुमान है कि समुद्रलघन का वर्णन क्षेपक ही है (दे० आगे अनु० ५३१)।

---

१ इस उद्धरण के लिए मैं डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल का आभारी हूँ।

२ दे० वही, पृष्ठ १६०।

परिशिष्ट ३

रामकथा का भूगोल

११३. वाल्मीकि दक्षिण तथा मध्य भारत के भूगोल से अपरिचित थे, इस का प्रमाण रामायण को पढकर मिलता है। अतः रामायण के भूगोल के विषय मे जो विस्तृत साहित्य प्रकाशित हो चुका है और हो रहा है, वह अधिकाश अनुमान और कल्पना के आधार पर निर्भर है।

सिहलद्वीप का सबसे प्राचीन नाम 'टप्रोवाने' है, जो यूनानियो मे प्रचलित था। अशोक के शिलालेखो मे भी यह 'तम्बपम्नि' के नाम से पुकारा जाता है। इसके बाद सिहल नाम प्रचलित होने लगा। इतना ही निश्चित है कि सस्कृत काव्य मे सिहल तथा लका भिन्न-भिन्न देश समझे जाते थे। भवभूति, मुरारि, राजशेखर आदि सिहलदेश को लका से भिन्न मानते है। वाराह-मिहिर की बृहत्-संहिता मे भी दोनो का अलग उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध साहित्य मे पहले-पहल सिहल के लिए लंका नाम प्रयुक्त होने लगा था (दे० दीपवश ६, १) और सभवतः दशवी शताब्दी ई० से इसका प्रयोग व्यापक होने लगा।[1]

अधिकांश आधुनिक लेखक रामायण को लंका तथा किष्किन्धा दोनो को मध्य भारत मे रखते है।[2]

---

१. दे० एच० याकोबी : वही, पृ० ९०-९३।

२. दे० एम० वी० कीबे : ई० हि० क्वा०, भाग ४, पृ० ६९३-७०२। हीरालाल : झा कामेमोरेशन वाल्यूम, पृ० १५१-६१, कोशोत्सव-स्मारकग्रथ, पृ० १५। राय कृष्णदास : राम-वनवास का भूगोल, ना० प्र० प०, वर्ष ५४, अक १ और ३; ऋष्यमूक-किष्किधा की भौगोलिक अवस्थिति, वही, भाग ५२, अक ४। इस साहित्य के सिंहावलोकन के लिए दे० एपिक एण्ड पुरानिक स्टडीज। भडार-कर इस्टिट्यूट, पृ० १३७-८।

अध्याय ८

प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के मुख्य प्रक्षेप

११४. रामकथा के प्रारंभिक विकास की रूपरेखा अंकित करने के पूर्व प्रचलित वाल्मीकि-रामायण की अंतरंग समीक्षा द्वारा मुख्य प्रक्षिप्त अंशो का पता लगाना है। यही प्रस्तुत अध्याय का विषय है। चतुर्थ भाग मे प्रत्येक कांड के विश्लेषण के साथ-साथ गौण प्रक्षेपो का भी उल्लेख किया जायगा।

क—उत्तरकांड

११५. रामायण के प्राय. समस्त समालोचक उत्तरकाड को प्रक्षिप्त मानते हैं और इसके लिए भिन्न-भिन्न तर्क प्रस्तुत करते हैं।[1] सब से महत्वपूर्ण प्रमाण इस प्रकार हैं :

(१) वाल्मीकिकृत रामायण के तीन प्रचलित पाठो की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि उत्तरकाड की रचना अन्य काडो के पश्चात् हुई थी (दे० ऊपर अनु० २२-२६)।

(२) युद्धकाड के अंत मे जो फलश्रुति मिलती है, उससे यह प्रमाणित होता है कि इसके रचनाकाल तक रामायण की परिसमाप्ति यही मानी जाती थी (रामायणमिदं कृत्स्नं, दे० ६, १२८, ११७)।

(३) वालकाड के प्रथम सर्ग मे एक अनुक्रमणिका मिलती है, जिसमे केवल अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक के विषयो का उल्लेख किया जाता है। बाद मे इस अनुक्रमणिका की अपूर्णता का अनुभव हुआ और फलस्वरूप एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना की गई, जिसमे वालकाड की सामग्री के साथ-साथ उत्तरकाड का भी निर्देश मिलता है :

स्वराष्ट्ररंजनं चैव वैदेह्याश्च विसर्जनम् ॥ २८ ॥
अनागतं च यत्किंचिद्रामस्य वसुधातले।

---

१ दे० एच० याकोबी : डस रामायण, पृ० २८ आदि, ६४।
हृदयनारायण सिंह : क्या उत्तरकाड वाल्मीकि-रचित है ?
नागरीप्रचारिणी पत्रिका : १७, पृ० २५६-२८६।
ज० ऑ० रि० ; भाग १८, पृ० १५७।

तच्चकारोत्तरे काव्ये वाल्मीकिर्भगवानृषिः ॥ २६ ॥

(बडौदा सस्करण, सर्ग ३)

इसके अगले[1] सर्ग मे भी उत्तरकाण्ड का उल्लेख है :

प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषिः ।
चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमात्मवान् ॥ १ ॥
कृत्वा तु तन्महाप्राज्ञः सभविष्यं सोत्तरम् ।

(बडौदा स०, सर्ग ४) ।

इन दो उद्धरणो से स्पष्ट है कि बालकाण्ड की इस भूमिका के रचनाकाल मे उत्तरकाण्ड की सृष्टि प्रारभ हो चुकी थी । फिर भी सीतात्याग को छोडकर किसी अन्य विषय का उल्लेख न होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरकाण्ड उस समय अपना वर्तमान रूप और विस्तार नही प्राप्त कर पाया था । इस तर्क की पुष्टि इससे भी होती है कि बाद मे वाल्मीकि-रामायण के उदीच्य पाठ मे एक तीसरी अनुक्रमणिका जोडी गई है, जिसमे सात काण्डो की सामग्री का ध्यान रखा जाता है (दे० ऊपर अनु० २३) ।

(४) उत्तरकाण्ड की रचना-शैली अन्य प्रामाणिक काडो की शैली से सर्वथा भिन्न है । प्रारभिक ३३ सर्गो मे रावण तथा हनुमान् की कथाओ के बाद ही रामचरित का वर्णन आगे बढा दिया गया है और तब भी असगत अतर्कथाओ के कारण कथानक मे कोई प्रवाह नही है (दे० नृग, निमि, ययाति, श्वेत, इन्द्र, इल आदि के वृत्तान्त) । शेष सामग्री, जो आधे से भी कम है, रामचरित से सबध तो रखती है, लेकिन इसमे भी एकता का अभाव खटकता है । सीतात्याग, शत्रुघ्न-चरित, शम्बूक-वध, राम का अश्वमेध, सीता का तिरोधान आदि मे कोई विशेष सबध नही है । इसके अतिरिक्त उत्तरकाड मे वर्णित अवतारवाद की व्यापकता भी इस काड को बाद की रचना सिद्ध करती है ।

(५) उत्तरकाड तथा अन्य काडो मे पारस्परिक विरोधी बाते भी मिलती है । उदाहरणार्थ युद्धकाड के अतिम सर्ग मे सुग्रीव, विभीषण आदि के चले जाने का स्पष्ट उल्लेख हुआ है । फिर भी उत्तरकाण्ड मे पुनः इनके प्रस्थान का वर्णन किया जाता है (दे० सर्ग ४०) ।

उत्तरकाड मे वेदवती का वृत्तान्त दिया जाता है (दे० सर्ग १७) । इसके अनुसार सीता अपने पूर्वजन्म मे वेदवती ही थी । यदि यह वृत्तान्त प्रक्षिप्त न होता तो

१. जिस श्लोक मे रामायण का विस्तार २४००० श्लोक बताया गया था, उसे बडौदा के प्रामाणिक सस्करण मे प्रक्षिप्त माना गया है ।

इसका उल्लेख रामायण के अन्य काडो मे, जहाँ सीता-जन्म का प्रसग आया है, अवश्य किया जाता।

(६) वाल्मीकिकृत रामायण के इन अतरग प्रमाणो के अतिरिक्त एक वात और ध्यान देने योग्य है। महाभारत का रामोपाख्यान रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है (दे० ऊपर अनु० ४८)। इसके प्रारभ मे रावणचरित की कुछ सामग्री अवश्य मिलती है किंतु वह आदिरामायण की तरह रामाभिषेक तथा रामराज्य की स्तुति पर समाप्त होती है। आदिरामायण तथा रामोपाख्यान के कारण एक काव्य-परम्परा चल पडी और शताब्दियो तक चलती रही, जिसके अनुसार राम-चरित का वर्णन उनके अभिषेक पर समाप्त किया जाता है।

उदाहरणार्थ—रावणवह, भट्टिकाव्य, कुमारदासकृत जानकीहरण, अभिनन्द-कृत रामचरित, भासकृत अभिषेक नाटक, मुरारि का अनर्घराघव, राजशेखर का वालरामायण, कम्बनकृत प्राचीनतम तमिल रामायण, तेलगु द्विपद रामायण तथा जावा का रामायण ककविन्।

ख—बालकांड

११६. उत्तरकाड की भाति वालकाड भी आदिरामायण का अग नही था। डॉ० याकोवी[1] की यह धारणा सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते हैं :

(१) रामायण की पहली अनुक्रमणिका (सर्ग १) मे वालकाड की सामग्री का सर्वथा अभाव है। इस अभाव को पूरा करने के उद्देश्य से एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना कर ली गई है (दे० ऊपर अनु० ११५)। सुन्दरकाण्ड के ३१ वे सर्ग मे हनुमान् सीता को रामायण का सार सुनाते है। उसमे दशरथ तथा राम के परिचय के पश्चात् तुरत अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु प्रारभ हो जाती है। रामायण के आमुख के विषय मे आगे विचार किया गया है—दे० अनु० १३६।

(२) वालकाड की शैली उत्तरकाड की शैली से वहुत कुछ मिलती-जुलती है। इसका प्रायः आधा भाग रामचरित से सम्वन्ध नही रखता। सगर-कथा, समुद्रमथन, विश्वामित्र की कथा आदि वृत्तान्त पुराणो की शैली पर लिखे गए हैं।[2] रामायण के प्रामाणिक काडो मे कही भी ऐसी पौराणिक कथाएँ नही मिलती।

(३) वालकाड मे जो सामग्री रामचरित से सम्वन्ध रखती है इसका आगे चल-कर प्रामाणिक काडो मे कही भी उल्लेख नही मिलता। यही नही, वल्कि इससे विरोधी

१. दे० एच० याकोवी : वही, पृ० ५० आदि।

२ दे० वी० लेस्नी : उवर डस पुराण-आर्टिगे गेप्रेग डेस वालकाड, जर्मन ओरियेन्टल जर्नल, भाग ६७, पृ० ४९७-५००।

बाते भी पाई जाती है। बालकाड मे लक्ष्मण और उर्मिला का विवाह वर्णित है, लेकिन अयोध्याकाड आदि मे कही भी उर्मिला का उल्लेख नही होता (यद्यपि तीनो निर्वासितो का प्रस्थान विस्तार से चित्रित किया गया है), वरन् अरण्यकाड मे लक्ष्मण को अविवाहित भी कहा जाता है (अकृतदार दे० ३, १८, ६)।

अयोध्याकांड मे भरत की अवस्था के विषय मे कहा जाता है:

बाल एव तु मातुल्यं भरतो नायितस्त्वया। (२, ८, २८)।

लेकिन बालकाड मे युधाजित् मिथिला मे पहुँचकर कहते हैं कि कैकय भरत को सस्त्रीक देखना चाहते हैं। इसके बाद चार भाइयो के विवाह का वर्णन किया जाता है, लेकिन मिथिला मे युधाजित् का और उल्लेख नही होता। बालकाड के अन्तिम सर्ग मे दशरथ भरत को युधाजित् के साथ राजगृह भेज देते है और इसके बाद बहुत समय बीत जाने का उल्लेख है (बहूनृतून् दे० १,७७,२५)। फिर भी रामाभिषेक की तैयारी के समय भरत को बालक कहा गया है।

ग—अवतारवाद

११७ रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** की सब से महत्वपूर्ण प्रक्षिप्त सामग्री अवतारवाद से सबध रखती है। अगले अध्याय मे अवतारवाद की उत्पत्ति और रामकथा के विकास मे उसके महत्व पर विचार किया जाएगा। प्रचलित **रामायण** मे इसके विस्तार तथा इसे प्रक्षिप्त मानने के कारण पर विचार करना ही इस परिच्छेद का उद्देश्य है[1]। प्रस्तुत विश्लेषण की विशेषता यह है कि इसमे **रामायण** की अवतारवादी समस्त सामग्री के साथ-साथ उसकी भिन्न-भिन्न पाठो मे उपस्थिति अथवा अभाव का उल्लेख भी किया जाता है।

(१) सामग्री का निरूपण

११८. **बालकांड**। (१) पुत्रेष्टि-यज्ञ (सर्ग १५-१८), इसमे विष्णु का अवतार लेना विस्तार से वर्णित है। ये सर्ग बालकाड के प्रक्षेप है (दे० आगे अनु० ३३३)।

(२) परशुराम राम से कहते है कि मैं आप को विष्णु मानता हूँ। आप से पराजय पाना कोई लज्जा की बात नही है। ये श्लोक तीनो पाठो मे पाए जाते है।

१ दे० एच० याकोबी : वही, पृ० १३८।
ई० डब्लू हाप्किन्स : एपिक मिथोलॉजी, पृ० २११।
जे० म्यूर : ओरिजिनल सस्कृत टेक्स्ट्स, (दूसरा सस्करण), भाग ४, पृ० ४४१-९१, और नोट डी।
महाराष्ट्रीय : श्री रामायण समालोचना ; दूसरा भाग, पृ० २४५-५०।

अक्षय्यं मधुहन्तारं जानामि त्वां सुरेश्वरम् ॥ १७ ॥
न चेयं तव काकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति ।
त्वया त्रैलोक्यनाथेन यदहं विमुखीकृतः ॥१६॥ (सर्ग ७६)

यद्यपि बालकांड स्वयं प्रक्षिप्त है, फिर भी इसमे केवल इन दो स्थलो पर राम के अवतार होने का उल्लेख है। दाक्षिणात्य पाठ मे राम के दिव्य तेज के विषय मे जो वाक्यांश—दिव्येन स्वेन तेजसा (१८, ६) मिलता है वह गौडीय पाठ मे अपने मूल रूप में सहजेन च तेजसा (२२,१०) सुरक्षित है।

मूल बालकांड के रचनाकाल में राम अवतार नहीं माने जाते थे, इसके बालकांड मे स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। राम का उत्कर्ष प्रथम सर्ग का वर्ण्य विषय है, फिर भी इसमे उनके अवतार होने का उल्लेख नही है, केवल विष्णु से उनकी तुलना की जाती है (विष्णुना सदृशो वीर्ये-श्लोक १८) और अन्त मे कहा जाता है कि राम अपना राज्य भोग कर ब्रह्मलोक जायेंगे—

रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति। (श्लोक ६७)

यदि कवि राम को विष्णु का अवतार मानता होता तो उनकी इहलीला समाप्त होने पर उनके ब्रह्मलोक जाने का उल्लेख नही करता। इस तर्क की सगति इससे स्पष्ट है कि उदीच्य पाठ मे "ब्रह्मलोकं" के स्थान पर "विष्णुलोकं" रखा गया है (दे० बड़ौदा सस्करण के पाठान्तर)।

विश्वामित्र राम से ताटका के वध करने का अनुरोध कर विष्णु द्वारा भृगु-पत्नी के वध का उदाहरण देते हैं (२५,२१) तथा सिद्धाश्रम के विषय मे कहते हैं कि विष्णु ने वहाँ तप किया था।

इह राम महाबाहो विष्णुर्देवनमस्कृतः।
वर्षाणि सुबहूनीह तथा युगशतानि च ॥ २ ॥
तपश्चरणयोगार्थमुवास सुमहातपाः। (सर्ग २६)

इससे स्पष्ट है कि विश्वामित्र राम के अवतार होने से अनभिज्ञ हैं।

११६. अयोध्याकांड। प्रथम सर्ग के ३५ आरम्भिक श्लोक प्रक्षिप्त हैं (दे० आगे अनु० ४३१)। इनमे राम के अवतार होने का उल्लेख है :

स हि देवैरुदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णुः सनातनः ॥ (१, ७)

यह श्लोक तीनो पाठो मे मिलता है। इसके अतिरिक्त अयोध्याकाड मे अन्यत्र रामावतार का निर्देशमात्र भी नही मिलता। 'लोकनाथ' (११०, २) राम के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन यह राजा की भी उपाधि है और जिस सर्ग मे यह शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह भी प्रक्षिप्त है (दे० आगे अनु० ४३१)।

१२० अरण्यकाण्ड। (१) राम के पराक्रम का वर्णन करते हुए अकपन कहते हैं कि राम समस्त लोको का नाश कर सब की पुनः सृष्टि करने मे समर्थ हैं—

संहृत्य वा पुनर्लोकान्विक्रमेण महायशाः।
शक्तः श्रेष्ठः स पुरुषः स्रष्टुं पुनरपि प्रजाः ॥२६॥ (सर्ग ३१)

यह प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे विद्यमान है।

(२) दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण राम के दिव्य तथा मानवीय पराक्रम का उल्लेख करते है—दिव्यं च मानुषं चैवमात्मनश्च पराक्रमम् (६६, १९)

लेकिन गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे राम के दिव्य तथा मानुषिक अस्त्रो का उल्लेख है—

दिव्यं त्वं मानुषं चास्त्रमात्मनश्च पराक्रम्
(गौ० रा० ३, ७१, १६)

(३) दाक्षिणात्य पाठ मे शवरी राम को देववर कहती है—त्वयि देववरे राम पूजिते पुरुषर्षभ (दा० रा० ३, ७४, १२)। परन्तु अन्य पाठो मे इस श्लोक का सर्वथा अभाव है।

(४) एक अन्य स्थल पर (जो तीनों पाठो मे मिलता है) राम सारा जगत् नष्ट करने की धमकी देते हैं (दे० दा० रा० ३, ६४, ७०), लेकिन इसमे उनके अवतार की ओर निर्देश देखना अनावस्यक है। यह तो उनको दिए हुए दिव्य अस्त्रो का प्रभाव माना जा सकता है।

१२१. किष्किंधाकांड। इस कांड मे अवतार सम्बन्धी कोई सामग्री नही मिलती। सुग्रीव तो लक्ष्मण से राम के विषय मे 'तस्य देवस्य' शब्द का प्रयोग करते हैं (३६, ६), लेकिन इसमे अवतारवाद की भावना देखना व्यर्थ है। आदरार्थ इस शब्द का राजाओ, ब्राह्मणो आदि के लिए प्रयोग होता है।

१२२. सुन्दरकांड। (१) दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार हनुमान् अशोकवन मे प्रवेश करने के पहले देवताओ की तथा राम-लक्ष्मण और सीता की स्तुति करते हैं—

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्राग्निमरुद्गणेभ्य ॥
(दा० रा० ५, १३, ५७)

केवल इस दीर्घ छन्द का, लेकिन सारे प्रसङ्ग (दा० रा० ५, १३, ५४-६७) का गौडीय पाठ मे अभाव है।

(२) हनुमान्-रावण सवाद का एक अश (दा० रा० ५, ५१, ३६-४५) गौडीय

तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे नही मिलता। इसमे हनुमान् राम के विषय मे कहते हैं कि वह विष्णुतुल्यपराक्रम, सर्वलोकेश्वर, लोकत्रयनाथ आदि हैं।

१२३. युद्धकांड। उत्तरकाड के बाद इसमे अवतारवादी सामग्री सबसे अधिक मिलती है। यह अस्वाभाविक भी नही प्रतीत होता है क्योंकि युद्धकाड सबसे अधिक विस्तृत है तथा इसमे अपेक्षाकृत अधिक प्रक्षेप भी जोडे गए है।

(१) रावण से युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए मत्री कहता है:

लंघनं च समुद्रस्य दर्शनं च हनूमतः।
वधं तु रक्षसां युद्धे कः कुर्यान्मानुषो युधि॥

(दा० रा० ३४, २२, अन्य पाठो मे भी है)

डॉ० याकोबी के अनुसार यह सर्ग एक विस्तृत प्रक्षेप (सर्ग २३-४०) मे आया है (दे० आगे अनु० ५६२)।

(२) सुग्रीव विभीषण से कहते हैं कि राम और लक्ष्मण गरुड पर अधिष्ठित हैं:

गरुडाधिष्ठितावेताव् भौ राघवलक्ष्मणौ। (दा० रा० ५०, २२)

यह श्लोक अन्य दोनो पाठो मे नही मिलता।

(३) सर्ग ५६ अनेक कारणो से प्रक्षिप्त माना जाता है (दे० आगे अनु० ५६३)। इसमे दो स्थलो पर कहा गया है कि लक्ष्मण तव-सज्ञा प्राप्त करते हैं जब वह अप विष्णु का अंश होने का स्मरण करते हैं (दे० दा० रा० ६, ५६, ११० १२० तथ अन्य पाठो के समानान्तर स्थल)।

(४) मदोदरी-विलाप तीनो पाठो मे मिलता है। दाक्षिणात्य पाठ मे इसक विस्तार १२६ श्लोक का है, गौडीय पाठ मे ८२ का तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे केवल ६३ का। तीनो मे राम को विष्णु का अवतार कहा गया है, लेकिन दाक्षिणात्य पाठ मे जिन श्लोको मे इसका उल्लेख हुआ है, वे अन्य पाठो मे नही मिलते और अन्य पाठो के अवतारसबन्धी श्लोक दाक्षिणात्य मे नही पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ—

गौडीय पाठ मे:

अथवा रामरूपेण विष्णुश्च स्वयमागतः।
तव नाशाय मायाभिः प्रविश्यानुपलक्षितः॥ (९५, ९)

दाक्षिणात्य पाठ मे:

अथवा रामरूपेण कृतान्तः स्वयमागतः।
मायां तव विनाशाय विधायाप्रतितर्किताम्॥ (१११, ९)

इससे यह ध्वनि निकलती है कि स्वतत्र रूप से तीनो पाठो मे अवतारवादी सामग्री बाद मे आ गई है।

(५) अग्निपरीक्षा के समय देवता आकर राम की विष्णुरूप मे स्तुति करते हैं (दे० दा० रा० सर्ग ११७ तथा अन्य पाठो के समानान्तर स्थल)। इस सर्ग के प्रक्षेप होने मे कोई सदेह नही है (दे० आगे अनु० ५६५)। इसमे सीता और लक्ष्मी की अभिन्नता का भी उल्लेख है (दे० श्लोक २७)।

(६) दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ राम से कहते है कि वह पुरुषोत्तम ही हैं (दे० ११६, १७)—

इदानी च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरैः।
वधार्थं रावणस्येह पिहित पुरुषोत्तमम् ॥

गौडीय पाठ मे इस श्लोक मे अवतार का उल्लेख नही है—

इदानी च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरैः ॥ १८ ॥
वधार्थं रावणस्येह त्व वनवासाय दीक्षितः । (सर्ग १०४)

दोनों की तुलना करने से स्पष्ट हैं कि किस तरह श्लोक को बदल कर अवतारवादी सामग्री जोडी गई है।

इसके बाद दशरथ लक्ष्मण को भी सबोधित करके राम को पुरुषोत्तम, अक्षर ब्रह्म आदि मानते है। यह अश तीनो पाठो मे तो मिलता है, लेकिन वह राम-दशरथ-सवाद का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है (दे० ११६, २७-३५)।

(७) दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ की फलश्रुति मे विष्णु और राम की अभिन्नता मानी जाती है—

प्रीयते सतत रामः स हि विष्णुः सनातनः।
आदिदेवो महाबाहुर्हरिर्नारायणः प्रभुः ॥ (दा० रा० १२८,११७)

गौडीय पाठ मे यह श्लोक नही मिलता।

(८) उपर्युक्त उद्धरणो के अतिरिक्त कुछ और सामग्री का उल्लेख करना है, जो दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलती—

पश्चिमोत्तरीय पाठ मे, नागपाश के वृत्तान्त मे, नारद राम के पास पहुँचकर उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते है (दे० प० रा० ६, २७, ७-४१)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे एक सर्ग मिलता है, जिसमे रावण से अनुरोध किया गया है कि वह राम से युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य नही है (दे० गौ० रा० सर्ग ३३, प० रा० सर्ग ३५)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे कुम्भकर्ण का एक भाषण उद्धृत है, जिसमे वह कहता है कि नारद ने उसे विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण-वध का रहस्य बतलाया था (दे० गौ० रा० सर्ग ४०, प० रा० सर्ग ४१)।

१२४. उत्तरकांड । उत्तरकाड मे राम के अवतार होने का उल्लेख निम्नलिखित सर्गों मे मिलता है—८, १७, २७, ३०, ५१, ७९, ६८, १०४, १०६, ११०, १११, ३७ प्र० २-४, ५६ प्र० २-३ ।

इसके अतिरिक्त नागरिको की राम के प्रति दृढ भक्ति का उल्लेख किया जाता है (दे० दा० रा० १०७, १९ और ३७ प्र० ३) ।

दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षिप्त सर्ग (३७ प्र० ३) मे जो अन्य पाठो मे नही मिलता, सीता को भी लक्ष्मी का अवतार कहा गया है ।

(२) तर्क

१२५. उपर्युक्त सामग्री के निरूपण से स्पष्ट है कि प्रामाणिक काडो की अवतारवादी सामग्री, जो तीनो पाठो मे मिलती है, नही के बराबर है। और जो सामग्री तीनो पाठो मे मिलती है, वह एक ऐसे अश मे पाई जाती है, जो स्पष्टतया प्रक्षिप्त है।

अवतारवाद को बाद की भावना मानने के लिए यही सबसे महत्वपूर्ण तर्क प्रतीत होता है । फिर भी इसके अतिरिक्त और प्रमाण दिये जा सकते हैं ।

१२६. रामायण के प्रधान पात्र राम के अवतार होने से परिचित नही हैं । इस तर्क के विरुद्ध सभवत- कहा जा सकता है कि यह आवश्यक नही है कि वे राम को अवतार समझे । फिर भी उत्तरकालीन राम-काव्य मे प्राय सब पात्र राम को अवतार मानकर उनसे प्रार्थना करते हैं, जिससे स्पष्ट है कि इस तर्क मे कुछ तत्व है ।

सीता अपने-आपको साधारण स्त्री मानती हैं और अपने इस जन्म के दु खो का कारण पूर्वजन्म के किये हुए पाप समझती हैं (दे० रा० ५, २५, १८, ६, ११३, ३६-३७; ७, ४८, ३-४) । यही नही, राम का अवतार होना भी उनसे छिपा हुआ है । वह राम की तुलना विष्णु से करती हैं (५, २१, २८, ५, ३८, ६५) । राक्षसो के प्रति राम की हिंसात्मक प्रवृत्ति देखकर वह राम के परलोक के विषय मे चिंतित हैं (३, ९, १२) और जब रावण उनसे अनुरोध करता है कि वह राम, साधारण मनुष्य को, छोड दे (दे० ३, ४८, १४), तो वह उत्तर नही देती कि राम साधारण मनुष्य नही हैं । युद्ध के समय भी वह राम को अमर नही समझती ।

लक्ष्मण भी राम को सान्त्वना देते हुए कहते है :

प्राप्स्यसे त्व महाप्राज्ञ मैथिलीं जनकात्मजां ।
यथा विष्णुर्महाबाहुर्बलिं बद्ध्वा महीमिमा ॥ (३, ६१, २४)

हनुमान् राम की तुलना विष्णु से करते है (५, ३४, २९, ५, ३७, २४) और राम से कहते है कि जिस तरह विष्णु गरुड पर आरूढ होते है, इसी तरह आप मेरी पीठ पर चढिए—

मम पृष्ठं समारुह्य राक्षसं शास्तुमर्हसि ॥ १२२ ॥
विष्णुर्यथा गरुत्मन्तमारुह्यामरवैरिणम्। (६, ५६)

राम का दूत बनकर हनुमान् रावण से कहते है कि मैं विष्णु की ओर से नही आया हूँ, बल्कि राम की ओर से—

विष्णुना नास्मि चोदितः ॥ १३ ॥
केनचिद्रामकार्येण आगतोऽस्मि तवान्तिकम् ॥ १८ ॥ (रा० ५, ५०)

इसी तरह और उदाहरण दिए जा सकते है। अगस्त्य राम को विष्णु का धनुष देते हुए राम और विष्णु की अभिन्नता से परिचित नही है—

इदं दिव्य महच्चाप हेमवज्रविभूषितम् ।
वैष्णव पुरुषव्याघ्र निर्मितं विश्वकर्मणा ॥ ३२ ॥ (३, १२)

१२७ उपर्युक्त तर्क राम पर भी लागू होता है। राम न केवल नारायण तथा मधुसूदन (दे० २, ६, ३ ७) से प्रार्थना करते है, विधाता के विरुद्ध अपराध करने से डरते हैं (दे० २, २२, १४), अधर्म और परलोक के भय से राज्याधिकार नही प्राप्त करते (२, ५३, २६), वरन् वह अपने-आप को साधारण मनुष्य समझ कर विश्वास करते है कि पूर्वजन्म के किए हुए पापो का मुझे इसी जन्म मे फल भोगना है :

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि...(३, ६३, ४)
किं मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि। (६, १०१, १८)

रावणवध के बाद राम सीता से कहते हैं

या त्वं विरहिता नीता चलचित्तेन रक्षसा।
दैवसंपादितो दोषो मानुषेण मया जितः ॥ ५ ॥ (६, ११५)

इसके अतिरिक्त अवतारवाद की भावना की नवीनता ब्रह्मा के प्रति राम की उक्ति से स्पष्ट है—'मै तो अपने-आप को मनुष्य, दशरथ का पुत्र, समझता हूँ। वास्तव मे मै कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, इसे आप मुझसे कहिए' :

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ।
सोऽहं यश्च यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे ॥ (६, ११७, ११)

१२८. ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि रामायण के अनेक पात्र राम की तुलना विष्णु से करते है। इसका अर्थ यह है कि वे राम और विष्णु को भिन्न समझते हैं। अन्य स्थलो पर भी कवि स्वय इस तुलना का प्रयोग करते है (१, ७८, २६, ६, ५६, १२५) अथवा अन्य पात्रो द्वारा करवाते हैं अनसूया (२, ११८, २०), देवता (३, २३, २६, ३, २४, २२, ३, ३०, ३२), अयोध्या-निवासी (२, २, ४३) । न केवल राम की वरन् अन्य पात्रो की भी तुलना विष्णु से की जाती है । उदाहरणार्थ : रावण

(७, २०, ५), अतिकाय (६, ७१, ८), इन्द्रजित् (६, ७३, ७), हनुमान् (६, ५६, ३८) ।

दूसरी ओर राम की तुलना अन्य देवताओं से भी की जाती है—इन्द्र; ब्रह्मा (१, १. १३; १. ७८. २५: २. ३०. २७ २, ९९. २८, ३, २३, ४; ४, २६, २ आदि); रुद्र (४, १८. ३८ आदि), बृहस्पति (१, १, ३२; १. १, ३९, २ २, ३० आदि, कुबेर या वैश्रवण (२, १६. ८; १, १, १९ २, १६, ४६ आदि), वरुण (३, ३७, ३ आदि). धर्म (१ १ १९), कामदेव (३, ३४, ६ आदि), अग्नि (५ ३९, ५३), यम (२, १, ३९). पर्जन्य (२, १. ३९; २, ३, २९) ।

विष्णु तथा इन्द्र से जो तुलना की गई है उससे स्पष्ट है कि आदिरामायण में विष्णु की अपेक्षा इन्द्र का स्थान ऊँचा माना गया था । राम की तुलना विष्णु से १८ बार की जाती है, इन्द्र से ६७ बार । कई स्थलों पर राम तथा लक्ष्मण की तुलना क्रमशः इन्द्र तथा विष्णु से की गई है, जिससे स्पष्ट है कि विष्णु की अपेक्षा इन्द्र श्रेष्ठ माने जाते हैं (६. ९९ १२; ६, २३. २८; ३. ६८, २८) । एक उदाहरण पर्याप्त होगा—

ततो राममभिक्रम्य सौमित्रिरभिवाद्य च ।
तस्थौ भ्रातृसमीपस्थः शक्रस्येवेन्द्रानुजो यथा ॥ (६, ९१ ४)

इस उद्धरण में वैदिक साहित्य के अनुसार विष्णु इन्द्र के अनुज माने जाते हैं । वैदिक साहित्य के अनुसार भी प्रामाणिक आदिरामायण में इन्द्र सर्वश्रेष्ठ देवता थे । राम की विजय इन्द्र की सहायता से होती है (दे० ६, १०२), यह भी इन्द्र की श्रेष्ठता सूचित करता है ।

अरण्यकांड में इसका एक ज्वलंत उदाहरण और मिलता है । इन्द्र शरभंग से बातचीत करते हुए और राम को आते देख कर साथ के देवताओं से कहते हैं—'राम इधर आ रहे हैं । उनके यहाँ आने से पूर्व ही हम लोग यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि राम मुझको देखने के योग्य नहीं हैं । जब राम रावण पर विजय प्राप्त करेंगे तब उनको मुझसे भेंट होगी' (दे० रा० ३. ५. २२) ।

गौडीय पाठ इससे अधिक सजीव है :

यास्याम्यहमयं रामो यावन्मां नाभिभाषते ।
कृतार्थमेनमचिराद् द्रष्टास्म्यहमरिंदमम् ॥ (गौ० रा० ३, ९, १७)

इस वृत्तान्त से जो ध्वनि निकलती है, वह विष्णु-नारायण-अजर ब्रह्म के अवतार राम (६ ११७) की भावना से कितनी दूर है ।

अध्याय ६

रामकथा का प्रारंभिक विकास

क—रामकथा-संबंधी गाथाएं और आख्यान-काव्य

१२६. वैदिक साहित्य मे आख्यान, इतिहास तथा पुराण मिलते हैं। ये ब्राह्मणो के अर्थवाद के एक आवश्यक अंग समझे जाते थे। प्राचीन काल से धार्मिक संस्कारों तथा यज्ञो के अवसर पर ऐतिहासिक तथा पौराणिक इन्हे सुनाते थे[1]। अर्वाचीन वैदिक साहित्य मे ये पाँचवे वेद कहे जाते हैं—अथर्वणं चतुर्थम्, इतिहास-पुराणं पंचमम् (छान्दोग्य उप० ७, १, २)॥

आख्यानो के गद्य के साथ जो पद्य दिया जाता था, उसे गाथा कहा गया है। प्रारम्भ से ही दानस्तुति-स्वरूप 'नाराशंसी' गाथाओं का उल्लेख मिलता है (दे० ऋग्वेद १०. ८५, ६) और इनके विषय मे कहा जाता है कि ये झूठी हैं ('गाथानृत नाराशंसी', दे० काठक संहिता १४, ५)। इस नाराशंसी गाथा-साहित्य के रचयिता तथा रक्षक राजदरबारो मे रहनेवाले सूत थे। इनके अतिरिक्त कुशीलव जनसाधारण मे इन गीतो का प्रचार करते थे[2]।

१३०. वाल्मीकि के पूर्व रामकथा संबंधी गाथाएँ प्रचलित हो चुकी थी। इसका प्रमाण हमे बौद्ध तिपिटक मे मिलता है। एक ओर रामकथा सम्बन्धी गाथाएँ रामायण पर नही निर्भर हो सकती हैं और दूसरी ओर बौद्ध गाथाओ मे जो रामकथा संबंधी सामग्री मिलती है, वह रामायण के आधार के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः रामायण तथा रामकथा-विषयक बौद्ध गाथाएँ दोनो प्राचीन रामकथा संबंधी आख्यान-काव्य पर निर्भर हैं (दे० ऊपर अनु० ८६)। दशरथ-जातक की वर्तमान कथा मे जो 'पौराणिक पंडिता' शब्द आया है, इनसे भी इस निर्णय की पुष्टि होती है। इसके अतिरिक्त हरिवंश के एक श्लोक मे रामकथा के इस मूलस्रोत का उल्लेख मिलता है। रामकथा के अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन के पश्चात् इस प्रकार लिखा है—

> गाथा अप्यत्र गायंति ये पुराणविदो जनाः।
> रामे निबद्धतत्त्वार्था माहात्म्यं तस्य धीमतः॥ (१, अध्याय ४१, १४६)

---

१. दे० शतपथ ब्राह्मण : १३, ४, ३; शांखायन गृ० सू०: १, २२, ११ आदि।

२. दे० एम्० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग १, पृ० ३१४।

इसमे अवश्य **रामायण** की ओर निर्देश देखा जा सकता है। फिर भी इसमे **रामायण** के पूर्व की प्राचीन गाथाओ का निर्देश देखना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है। वाल्मीकि के दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख किया गया है कि नारद से कथा-वस्तु सुनने के बाद वाल्मीकि ने इसका अन्वेषण किया—**व्यक्तमन्वेषते भूयो यद् वृत्तम्** (१, ३, १)। अन्य पाठो (गौ० रा० १, ३, १ तथा प० रा० १, ४, १) मे तत्सबधी श्लोक अधिक स्पष्ट है और लोक मे प्रचलित सामग्री के सकलन की ओर निर्देश करता है—

श्रुत्वा पूर्वं काव्यबीजं देवर्षेर्नारदादृषिः
लोकादन्विष्य भूयश्च चरितं चरितव्रतः।

१३१ इस राम-सम्बन्धी गाथा-साहित्य की उत्पत्ति इक्ष्वाकु वश मे हुई थी। **रामायण** मे लिखा है :

इक्ष्वाकूणामिदं तेषां राज्ञां वंशे महात्मनाम्।
महदुत्पन्नमाख्यानं रामायणमिति श्रुतम्। (रा० १, ५,३)

राम इक्ष्वाकुवशीय थे अत इक्ष्वाकुवश के सूतो ने इनके विषय मे गाथाएँ तथा व्याख्यान सुनाये होंगे। इसी तरह राम का चरित्र लेकर स्फुट आख्यान-काव्य का एक विस्तृत साहित्य बढने लगा।[१] महाभारत के द्रोणपर्व तथा शातिपर्व मे जो सक्षिप्त राम चरितं मिलता है, वह इस प्राचीन आख्यान-काव्य पर निर्भर प्रतीत होता है। साथ-साथ **महाभारत** मे रामकथा की उपस्थिति इस बात को प्रमाणित करती है कि राम सम्बन्धी आख्यान-काव्य का प्रचार कोशल प्रदेश तक ही सीमित नही था वरन् पश्चिम की ओर भी फैलने लगा था, जहाँ महाभारत की रचना हुई थी। पाली तिपिटक के रचनाकाल (चौथी शताब्दी ई० पू०) मे इस रामकथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य का पर्याप्त प्रचार हो चुका था (दे० ऊपर अनु० ८६)। दूसरी ओर विस्तृत वैदिक साहित्य मे रामकथा सम्बन्धी गाथाओ का कही भी निर्देश नही मिलता (दे० ऊपर अनु० २०)। अत. वैदिक काल के बाद और चौथी श० ई० पू० के पहले, सभवत. छठी श० मे इस राम-कथा सम्बन्धी आख्यान-काव्य की उत्पत्ति हुई थी। वास्तव मे इसका निश्चित रचनाकाल निर्धारित करने के लिए कोई आधार नही मिलता।

ख—आदिरामायण की उत्पत्ति

१३२ जिस दिन किसी कवि ने रामकथा-विषयक स्फुट आख्यान-काव्य का सकलन

---

१. ध्यान देने योग्य है कि वाल्मीकि का आदिरामायण सूतो की सम्पत्ति न बनकर काव्योपजीवी कुशीलवो द्वारा पहले जनता मे लोकप्रियता प्राप्त करने लगा और बाद मे दरबारो मे प्रवेश कर सका। ऐसा ही बालकाड के चतुर्थ सर्ग मे प्रतीत होता है।

कर उसे एक ही कथा-सूत्र मे ग्रथित करने का प्रयास किया था, उस दिन रामायण उत्पन्न हुआ। वह कवि कौन था ? प्राचीनतम परम्परा वाल्मीकि को आदिकवि मानती है। युद्धकाड की फलश्रुति मे लिखा है -

आदिकाव्यमिद चार्षं पुरा वाल्मीकिना कृतम् ॥ १०५ ॥ (सर्ग १२८)

कालिदास ने भी वाल्मीकि को आद्य कवि की उपाधि प्रदान की है—कवेराद्यस्य शासनात् (रघुवश १५, ४१)। वाल्मीकि द्वारा श्लोक की सृष्टि की कथा (दे० बालकाड सर्ग २) मे इतना ऐतिहासिक सत्य अवश्य ही होगा कि वाल्मीकि ने इस छन्द को परिष्कृत किया है।

वास्तव मे वाल्मीकि के पूर्व किसी कवि ने एक आदिरामायण की रचना की है, इसके लिए कोई तर्कसगत प्रमाण नही मिलता । बुद्धचरित मे रामकथा के प्रसग मे जो च्यवन का उल्लेख हुआ है, इसके विषय मे ऊपर विचार किया गया है (दे० अनु० ३२)। पतजलि के महाभाष्य मे जिस प्राचीन गाथा का सस्कृत रूपान्तर मिलता है, इसका मौलिक प्रसग रामकथा से सबध नही रखता है और इसमे किसी प्राचीन **रामायण** का अवशेष देखना अनावश्यक है (दे० ऊपर अनु० ८८)।

१३३. **आदिरामायण** के विषय मे एक अन्य प्रश्न यह है कि इसमे राम के चरित्र का कितना अश वर्णित था। पिछले अध्याय से स्पष्ट है कि **आदिरामायण** मे न तो उत्तरकाड था, न बालकाड और न अवतारवाद। कई विद्वान् और आगे बढकर मानते हैं कि राम, रावण तथा हनुमान् के विषय मे पहले स्वतन्त्र आख्यान-काव्य प्रचलित थे और इनके सयोग से **रामायण** की उत्पत्ति हुई है। सातवे अध्याय मे यह दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि इस मत को सिद्ध करने के लिए कोई समीचीन प्रमाण नही दिए जा सकते है। अत. **आदिरामायण** के लिखे जाने मे जो भिन्न-भिन्न सोपान माने जाते हैं, इनके लिए भी कोई आधार नही मिलता।[1] इस मत के अनुसार **रामायण** के विकास के प्रथम सोपान मे राम को हिमालय प्रदेश मे निर्वासित किया जाता है तथा सीता और लक्ष्मण उनके साथ जाते हैं। द्वितीय सोपान मे वनवास का स्थान गोदावरी के तट पर माना जाता है और राम आदिवासियो के आक्रमणो से तपस्वियो की रक्षा करते हैं। तृतीय सोपान मे दक्षिण के निवासियो को अधीन करने के आर्यो के प्रारंभिक प्रयत्नो का वर्णन मिलता है। अन्तिम सोपान सिहलद्वीप की जानकारी के कारण उत्पन्न हुआ। इसमे राम द्वारा सिहल की विजययात्रा का वर्णन **रामायण** मे जोडा गया है। राम के कारण दक्षिण अथवा लंका के निवासी आर्यो के अधीन हो गए थे, इसकी ओर

---

१ देखिए सी० लैस्सन : इडिशे आलटरतुम्सकुडे, १८७४, भाग २, पृ० ५०५।

रामायण मे कोई निर्देश नही है। इसके अतिरिक्त लका तथा सिंहल की अभिन्नता भी अत्यन्त सदिग्ध है (दे० ऊपर अनु० ११३)।

इसी तरह आदिरामायण के न तो भिन्न-भिन्न मूलस्रोत और न इसके लिखने मे उपर्युक्त सोपान मानने की कोई आवश्यकता प्रतीत होती है। अत. आदिरामायण रामसम्बन्धी स्फुट आख्यान काव्य के आधार पर लिखा गया है और इसमे अयोध्या-कांड से लेकर युद्धकांड तक की कथावस्तु विद्यमान थी। इसका अर्थ यह नही है कि प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के इन पाँच कांडो मे आदिरामायण का मूल रूप सुरक्षित है। इनमे भी बहुत से प्रक्षेप तथा परस्पर विरोधी बातें पायी जाती है। प्रक्षेप जोडने की प्रवृत्ति प्रारम्भ ही से विद्यमान थी, यह रामायण के भिन्न-भिन्न काडो की तुलना से स्पष्ट है (दे० ऊपर अनु० २२-२६) और शताब्दियो तक बनी रही (यह मध्यकालीन टीकाकारो के साक्ष्य से ज्ञात है)। निबन्ध के चतुर्थ भाग मे प्रत्येक काड के विकास और प्रक्षिप्त सामग्री पर विचार किया जायगा।

आदिरामायण के विस्तार के विषय मे अभिधर्म महाविभाषा मे कहा जाता है कि रामायण मे १२००० श्लोक मिलते है (दे० ऊपर अनु० ७९)। अत आदिरामायण के विकास मे एक ऐसा समय हुआ, जब इसका विस्तार आजकल प्रचलित रामायण का आधा था।

राय कृष्णदास[1] ने रामायण के प्रक्षेपो का अध्ययन करने के बाद रामायण के विकास के ये तीन सोपान निर्धारित किये हैं—(१) ३००० श्लोक वाला आदिरामायण अर्थात् वाल्मीकि रचित रामायण का सर्वप्रथम रूप, (२) ६००० श्लोको वाला आर्ष रामायण, जिसमे बालकाड तथा उत्तरकांड की कथाएँ नही थी, (३) काव्य रामायण अर्थात् रामायण का विद्यमान २४००० श्लोक वाला सस्करण। यद्यपि यह वर्गीकरण रामायण के क्रमिक विकास पर आधारित है फिर भी वाल्मीकि द्वारा रचित काव्य की श्लोक-सख्या निर्धारित करना असभव-सा प्रतीत होता है। इसमे कोई सदेह नही है कि यह संख्या अपेक्षाकृत कम ही रही होगी।

१३४. आदिरामायण क्षत्रियो की सम्पत्ति थी। इसमे आदर्श क्षत्रिय सत्यसंध राम की महिमा प्रतिपादित की गई थी। मोक्ष तथा वैराग्य के स्थान पर आदर्श अत-गति स्वर्ग माना जाता था और इसे प्राप्त करने के लिए ब्राह्मणो की सहायता की आवश्यकता नही होती थी। बाद मे सारे काव्य को ब्राह्मण ढाँचे मे ढाल कर सर्वथा

१. राय कृष्णदास : वाल्मीकिकृत आदिरामायण, भारती (वाराणसी) नं० ६, पृ० १०५-१३१।

नवीन रूप दिया गया है। यह डॉ० रूबन का मत है[1]। इसके लिए कोई समीचीन प्रमाण नहीं दिया गया है। डॉ० रूबन के उदाहरण (ऋष्यशृंग तथा विश्वामित्र की कथा, उत्तरकांड के अश्वमेध) स्पष्टतया प्रक्षेप हैं। इनसे इतना ही ज्ञात होता है कि रामायण के अर्वाचीन प्रक्षेपों में ब्राह्मणों का प्रभाव स्पष्ट है। इस सामग्री से आदि-रामायण के रूप के विषय में कोई तर्क नहीं लिया जा सकता है। फिर भी डॉ० रूबन के इस मत में कुछ तत्त्व है। रामकथा सम्बन्धी आख्यान-काव्य क्षत्रिय इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुआ और इसका बहुत काल तक इन क्षत्रियों के दरबारों तथा जनता में भी (दे० अनु० १३०) प्रचार रहा था।

वाल्मीकि ने उस स्फुट आख्यान काव्य को एक ही प्रबन्ध-काव्य में संकलित करके लगभग ३०० ई० पू० में आदिरामायण की रचना की है। यह रचना बहुत कुछ प्राचीन आख्यान-काव्य से मिलती-जुलती रही होगी। बाद के प्रक्षेपों की भावधारा स्पष्टतया भिन्न है (दे० आगे अनु० १३८)।

१३५. आदिरामायण की भाषा के विषय में भी संदेह किया गया है। मूल रचना की भाषा प्राकृत रही होगी। बाद में पहली शताब्दी ई० से इसका संस्कृत रूपान्तर चल पड़ा।[2] डॉ० याकोबी ने अकाट्य तर्कों से इस मत का खंडन किया है। आजकल कोई भी इस मत का प्रतिपादन नहीं करता।[3] डॉ० याकोबी के मुख्य तर्क इस प्रकार हैं :

(अ) भारत में प्राकृत मूलरामायण तथा इसके संस्कृत रूपान्तर के विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता।

(आ) यदि केवल पहली श० ई० में रामायण का संस्कृत में अनुवाद किया गया था, तो आर्ष प्रयोग कैसे संभव होते?

(इ) प्राकृत साहित्य की मुख्य विशेषता है—शृंगार तथा अद्‌भुत् रस का बाहुल्य (दे० कथासरित्सागर)। इसके अतिरिक्त पाली तथा प्राकृत की शैली बहुत अपरिष्कृत है। अतः प्राकृत-साहित्य उपर्युक्त कारणों से संस्कृत काव्य का आधार तथा आदर्श होने के नितान्त अनुपयुक्त सिद्ध होता है।

१३६. आठवें अध्याय में बालकांड को प्रक्षिप्त सिद्ध किया गया है। डा० याकोबी[4] के अनुसार आदिरामायण का प्रारंभ बालकांड के निम्नलिखित श्लोकों में सुरक्षित है :

---

१. डब्लू० रूबेन : स्टुडियन त्सूर टेक्स्ट गेशिख्टे डेस रामायण, पृ० ६६।

२. बार्थ : बुलेटीन दे रलिजियाँन दे लिन्द, पृ० २८८ आदि। ए० बी० कीथ : इंडियन एंटीक्वेरी, भाग २३, पृ० ५२ आदि।

३. दे० एच० याकोबी : जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ४८, पृ० ४०७-४१७।

४. दे० एच० याकोबी : डस रामायण, पृ० ५० आदि।

रामायण की स्तुति	सर्ग ५,१-४
कोशल तथा अयोध्या की स्तुति	५,५-६
दशरथ की स्तुति	५,६;६,२-४
दशरथ के पुत्रों का उल्लेख	१८,१६ २१ (उत्तरार्ध. २२)
पुत्रो की स्तुति	१८,२५ (अथवा अयो० १, ५)
राम की श्रेष्ठता	१८,२४ २६ १२ (अथवा अयोध्या १, ६ ८)

इस भूमिका के बाद काव्य की मुख्य कथावस्तु का वर्णन प्रारंभ होता था (अयोध्या० १,३६)। डॉ० याकोबी का यह अनुमान निराधार नही था। पश्चिमोत्तरीय पाठ के चौदहवे सर्ग की कथावस्तु इस प्रकार है—दशरथ तथा उनकी पत्नियो का परिचय ; उनके चार पुत्रो का जन्म, शिक्षा तथा वयस्क हो जाने पर विवाह, चारो भाइयो का प्रेम, ननिहाल से बुलावा आने पर भरत का प्रस्थान, राम तथा सीता का बहुत समय तक विहार। सर्ग का अन्तिम श्लोक (३३) बालकाण्ड के अंतिम श्लोक से मिलता-जुलता है (प० रा० १, ७२, १६)। अत इसके बाद अयोध्याकाड प्रारंभ होता था।

यह सर्ग अपने मे पूर्ण है। इसका पिछले अथवा अगले सर्गों से कोई सम्बन्ध नहीं है। सर्ग ६ मे अश्वमेध तथा सर्ग १०-१३ मे पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन है। सर्ग १४ मे पुन. कथा का प्रारंभ मिलता है और दशरथ तथा उनकी पत्नियो का परिचय दिया जाता है। सर्ग १५ मे वानरो की उत्पत्ति और सर्ग १६ मे चारो भाइयो का जन्म वर्णित है।

यह सब ध्यान मे रख कर इसमे संदेह नही रह जाता कि यह (सर्ग १४) वाल्मीकि रामायण का कोई प्राचीन आमुख है (दे० राधाकृष्णदास, आर्ष रामायण का आमुख, ना० प्र० प० वर्ष ६७, अंक ३, पृ० १४२)।

ग—आदिरामायण का विकास

१. प्रक्षेप

१३७ आदिरामायण का विकास समझने के लिए उसके प्रचार की रीति को ध्यान मे रखना परमावश्यक है। बालकाड (सर्ग ४) तथा उत्तरकाड मे लिखा है कि वाल्मीकि ने अपने शिष्यो को रामायण सिखला कर उसे राजाओ, ऋषियो तथा जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया :

कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां परया मुदा ॥४॥
ऋषिवाटेषु पुण्येषु ब्राह्मणावसथेषु च ।
रथ्यासु राजमार्गेषु पार्थिवानां गृहेषु च ॥५॥ (उत्तरकाड ६३)

इससे ज्ञात होता है कि रामायण मौखिक रूप मे प्रचलित था। कुशीलव सारे देश मे

उसे गाकर सुनाते थे और इस प्रकार अपनी जीविका चलाते थे। वे काव्योपजीवी ही थे, रामायण उनको कण्ठस्थ था और वे उसे अपने पुत्रो को सिखलाते थे। रामायण का कोई ग्रंथ प्रचलित नही था और प्राचीन फलश्रुति श्रवणफल-स्तुति ही है .

श्रुत्वा रामायणमिदं दीर्घमायुश्च विन्दति। (६, १२८, १०६)

बाद मे रामायण के पढने तथा लिखने का भी उल्लेख मिलता है :

रामायणमिदं कृत्स्नं शृण्वतः पठतः सदा ॥११६॥
भक्त्या रामस्य ये चेमां संहितामृषिणा कृताम् ।
ये लिखन्तीह च नरास्तेषां वासस्त्रिविष्टपे ॥१२०॥ (६, १२८)

लेकिन फलश्रुति का यह अन्तिम अश गौडीय पाठ मे नही मिलता। टीकाकार कतक ने भी उसे प्रक्षिप्त माना है।

कुशीलव रामायण को गाते-गाते अपने श्रोताओ की रुचि का भी ध्यान रखते होंगे। जिन गायको मे काव्यकौशल था वे लोकप्रिय अशो को बढाते थे और इसी तरह आदिरामायण का कलेवर बढने लगा।[1]

१३८. चतुर्थ भाग मे इन प्रक्षेपो का निरूपण किया जायगा, अत यहाँ इनकी सामान्य विशेषताओ का उल्लेख पर्याप्त है।

(१) बहुत से प्रक्षेप पुनरुक्ति मात्र से उत्पन्न हुए है। एक ही घटना का वर्णन दुहराया जाता है अथवा मूल घटना के समान अन्य घटनाओ की कल्पना कर ली जाती है। उदाहरणार्थ :
रावण का मारीच के यहाँ जाना (३, सर्ग ३१ और ३५)।
रावण के गुप्तचरो का वृत्तान्त (६, २० और २५-३०)।
सीता की गगा तथा यमुना से प्रार्थना (२, ५२ और ५५)।
आश्रमो मे आगमन। अत्रि, वाल्मीकि, शरभग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य के आश्रमो का उल्लेख आदिरामायण मे नही मिलता था।

विराध, अयोमुखी आदि राक्षसो का वध।
राम के मायामय सिर का वृत्तान्त (६, ३१) मायामयी सीता-वध के वृत्तान्त (६, ८१) का अनुकरण मात्र है।

(२) अद्भुत रस की सामग्री
लकादहन, जिसमे हास्य रस का भी समावेश है।
ओषधिपर्वत का ले आना (इसका दो बार वर्णन होता है, दे० अनु० ५६४)।
अग्निपरीक्षा।

---

१. दे० एच० याकोबी : इस रामायण, पृ० ६२-३।

(३) करुणात्मक स्थलो की पुनरुक्ति :
विलाप (दे० अरण्यकाण्ड, सर्ग ६०, ६२ और ६३)।
हनुमान् का सीता से विदा लेना (५, ५८-६०)।
हनुमान् द्वारा सीता मे भेंट का वर्णन (५, ६६-६८)।

(४) काव्यात्मक तथा अलकारपूर्ण वर्णन :
गंगा का वर्णन (२, ५०)।
वर्षा ऋतु का वर्णन (४, २८)।
शरद् ऋतु का वर्णन (४, ३०)।

(५) रामायण को ज्ञान का भन्डार बनाने की प्रवृत्ति :
नीति का उपदेश (२, १००)
जावालि का लोकायत दर्शन प्रस्तुत करना (२, १०८)।
दिग्वर्णन (४, ४०-४३)।

(६) आदर्शवाद का प्रभाव :
राम का वालि-वध को न्यायसगत सिद्ध करने का प्रयत्न (४, १७-१८)।

(२) बालकांड और उत्तरकांड

१३६. आदिरामायण की कथावस्तु न केवल बीच के पक्षेपो के कारण बढने लगी वरन् राम कौन थे, सीता कौन थी, इनका विवाह कब और कैसे हुआ आदि नितान्त स्वाभाविक प्रश्न थे। जनसाधारण की इस जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए बालकांड की रचना की गई।

यह बाद की रचना ही है, अत. इसमे एक नवीन वातावरण का आ जाना आश्चर्यजनक नही है। इसकी शिथिल शैली पर आदिकवि की छाप नही है। राम के बालचरित के अतिरिक्त उसकी मुख्य नवीन सामग्री पौराणिक कथाएँ (जिनमे ब्राह्मणो का प्रभाव स्पष्ट है) और अवतारवाद की भावना (दे० पुत्रेष्टि-यज्ञ तथा परशुराम का वृतान्त) है। आठवे अध्याय मे दिखलाया गया है कि अवतारवाद मूल बालकाड का अंश नही हो सकता। उत्तरकांड मे यह अवतारवाद अत्यन्त व्यापक है। इससे स्पष्ट है कि यह कांड बालकांड के बहुत बाद रचा गया है। उत्तरकाड मे रामायण के प्रति-नायक रावण का पूर्वचरित सकलित है और इसके बाद राम का उत्तरचरित दिया जाता है—सीता-त्याग और सीता का भूमि-प्रवेश, राम का अश्वमेध तथा स्वर्गारोहण। इस काड मे भी बहुत सी पौराणिक कथाएँ उद्धृत हैं और ब्राह्मणो की श्रेष्ठता बहुत से स्थलों पर प्रतिपादित है (दे० शम्बूक वध, अश्वमेध)। चतुर्थ भाग मे बालकाड और उत्तर-

काड, दोनो के विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न किया जायगा (दे० आगे० अनु० ३३३ और ६१८)।

यहाँ स्मरण दिलाना अनुचित नही होगा कि रामकथा के विकास मे **आदि-रामायण** के प्रक्षेप अर्थात् बालकाड, उत्तरकाड, अवतारवाद मूल **आदिरामायण** के प्रामाणिक अशो से कम महत्वपूर्ण नही है। द्वितीय अध्याय मे दिखलाया गया है कि दूसरी शताब्दी ई० से लेकर **रामायण** अपना प्रचलित रूप धारण कर चुका था और उस समय से लेकर कवियो तथा जनसाधारण ने प्रामाणिक तथा प्रक्षिप्त सामग्री मे कोई अन्तर नही माना है। इस सामग्री की सबसे महत्वपूर्ण भावना अवतारवाद ही है। इसकी उत्पत्ति पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है।

(३) अवतारवाद

१४०. अवतारवाद[1] की भावना हमे पहले-पहल शतपथ ब्राह्मण मे मिलती है। प्रारभ मे विष्णु की अपेक्षा प्रजापति को इस सम्बन्ध मे अधिक महत्व दिया जाता था। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने ही मत्स्य (दे० १, ८, १, १), कूर्म (७, ५, १, ५, १४, १, २, ११) तथा वाराह (१४, १, २, ११) का अवतार लिया था। प्रजापति के वाराह का रूप धारण करने की कथा तैत्तिरीय सहिता (७,१, ५, १), तैत्तिरीय ब्राह्मण (१, १, ३, ६), तैत्तिरीय आरण्यक (१०, १, ८) तथा

१ हे० एच० याकोबी . इनकार्नेशन, इन्साइक्लोपीडिया ऑव रिलीजन एण्ड एथिक्स, भाग ७।
काणे : हिस्टरी ऑव धर्मशास्त्र, जिल्द २, भाग २, पृ० ७१७ आदि।
एम० मोनियेर विलियम्स : इ० विज़डम, पृ० ३१८ आदि।
एच० राय चौधरी : अर्ली हिस्ट्री ऑव वैष्णव सेक्ट, पृ० ९६।
ज़ेन्द अवेस्ता मे भी अवतारवाद की भावना विद्यमान है।
वहराम यश्त (रचनाकाल चौथी श० ई० पू०) मे विजय के देवता वरथ्रघ्न के दस अवतारो का वर्णन है (दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि ईस्ट, भाग २३, पृ० २३६)। अधिक सभव है कि वरथ्रघ्न (वृत्रघ्न) का सम्बन्ध इद्र से है। फारसी मे वरथ्रघ्न का नाम वहराम है, इनके दस अवतार सभवतः राशिचक्र के नक्षत्रो से सबद्ध हैं (दे० जे० सी० कोयाजी, कल्ट्स एड लेजेड्स ऑव एसियन्ट ईरान एड चाइना, बम्बई १९३६, पृ० ४५)। ज़ेन्द अवेस्ता के आठवे यश्त मे एक नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता का भी उल्लेख है, जो मनुष्य, वृषभ तथा अश्व के रूप मे प्रकट हो जाता है और वह अनावृष्टि के अपदेवता को परास्त करता है।

काठक संहिता (८, १) मे भी प्रारंभिक रूप मे विद्यमान है। रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख है :

तत: समभवद् ब्रह्मा स्वयंभूर्दैवतै: सह ॥३॥
स वराहस्ततो भूत्वा प्रोज्जहार वसुंधराम् ।
(अयोध्या काण्ड, सर्ग ११०)

अन्य दो पाठो मे इस स्थल पर परवर्ती भावना के अनुसार विष्णु का नाम लिया गया है (दे० गौ० रा० २, ११६ और प० रा० २, ११३)।

शतपथ ब्राह्मण के अतिरिक्त तैत्तिरीय आरण्यक मे भी कूर्म को प्रजापति का अवतार माना गया है (दे० १, २३, ३)। महाभारत मे समुद्र-मथन के प्रसग मे कूर्म-राज का उल्लेख तो हुआ है किंतु इसमे कही भी किसी देवता की ओर निर्देश नहीं मिलता। सुरासुर कूर्मराज से निवेदन करते है कि वे मन्दराचल के आधार बनने की कृपा करे :

ऊचुश्च कूर्मराजानमकूपार सुरासुरा ।
गिरेरधिष्ठानमस्य भवान्भवितुमर्हति ॥१०॥
(आदिपर्व, अध्याय १६)

रामायण के उदीच्य पाठ मे समुद्र-मथन के वृत्तान्त मे कूर्म का उल्लेख नही है (दे० गौ० रा० १, ४६, प० रा० १, ४१) किंतु दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप मे इस अवसर पर विष्णु के वाराह अवतार लेने की कथा मिलती है (दे० रा० १, ४५ २७-३२)।

मत्स्य अवतार तथा प्रजापति का सबंध महाभारत मे उल्लिखित है

अहं प्रजापतिर्ब्रह्मा मत्पर नाधिगम्यते ।
मत्स्यरूपेण यूय च मयास्मान्मोक्षिता भयात् ॥ ४८ ॥
(आरण्यक पर्व, अध्याय १८५)

विष्णु पुराण मे भी मत्स्य, कूर्म तथा वाराह तीनो को प्रजापति का अवतार माना गया है

तोयान्तःस्थां महीं ज्ञात्वा जगत्येकार्णवीकृते ।
अनुमानात्तदुद्धार कर्तुकाम· प्रजापति· ॥ ७ ॥
अकरोत्स्वतनूमन्यां कल्पादिषु यथा पुरा ।
मत्स्यकूर्मादिकां तद्वद्वाराह वपुरास्थित· ॥ ८ ॥ (१, अध्याय ४)

किंतु विष्णुपुराण मे विष्णु तथा ब्रह्मस्वरूप नारायण की अभिन्नता का प्रति-पादन किया जाता है, अतः इसी चतुर्थ अध्याय मे विष्णु के रूप मे वाराह की स्तुति की

गयी है तथा एक अन्य अध्याय मे कूर्म को भी विष्णु का ही अवतार माना गया है (दे० १, ६)।

इस प्रकार हम देखते है कि मत्स्य, कूर्म तथा वाराह अवतार प्रारभ मे प्रजापति से सबंध रखते थे किंतु बाद मे विष्णु का महत्त्व बढ जाने के कारण तीनो विष्णु के ही अवतार माने जाने लगे। महाभारत के नारायणीय उपाख्यान (दे० १२,३२६, ७२ तथा १२, ३३७, ३६) तथा हरिवंशपुराण (दे० १, ४१) मे वाराह तथा विष्णु का सबध मान लिया गया है। आगे चलकर तीनो का नाम लेकर एक-एक महापुराण की सृष्टि हुई, जिसमे विष्णु से उनकी अभिन्नता प्रतिपादित है (दे० मत्स्य, कूर्म तथा वाराह पुराण)।

१४१ अन्य मुख्य अवतारो के प्राचीनतम उल्लेख इस प्रकार है। वामनावतार तथा नृसिंह अवतार प्रारभ मे विष्णु से ही सबध रखते हैं। वामनावतार का उल्लेख तैत्तिरीय सहिता (२ १,३,१), शतपथ ब्राह्मण (१,२,५,५), तैत्तिरीय ब्राह्मण (१,७, १७) और ऐतरेय ब्राह्मण (६,३,७) मे हुआ है। यह अवतार ऋग्वेद की एक कथा से विकसित माना जाता है (दे० ऋग्वेद १, २२ और शतपथ ब्राह्मण १,२,५,१)। नारायणीय उपाख्यान (दे० महाभारत १२, ३२६, ७५) तथा हरिवंश पुराण (दे० १, ४१) मे इसका विष्णु के अन्य अवतारो के साथ उल्लेख हुआ है। नृसिंहावतार की कथा पहले-पहल तैत्तिरीय आरण्यक के परिशिष्ट (१०, १,६) मे मिलती है। नारायणीय उपाख्यान (दे० १२, ३२६, ७३ और ३३७, ३६) तथा हरिवंश पुराण (दे० १, ४१) मे इसका उल्लेख है तथा विष्णुपुराण मे नृसिंह की कथा वर्णित है (दे० १, १६)।

परशुराम-विषयक प्रारभिक कथाओ मे इनके अवतार होने का निर्देश नही मिलता (उदा० दे० महाभारत ३, ११५-११७), किंतु नारायणीय उपाख्यान (दे० १२, ३२६, ७७), हरिवंश पुराण (१, ४१, ११२-१२०) तथा विष्णुपुराण (१, ६, १४३) मे उनको विष्णु का अवतार माना गया है।

१४२ प्रस्तुत सिंहावलोकन का निष्कर्ष यह है कि ब्राह्मणो मे तथा अन्य प्राचीन साहित्य मे अवतारवाद विद्यमान है किन्तु उन ग्रन्थो के रचनाकाल मे न तो अवतारो की विशेष पूजा की जाती थी और न इसमे विष्णु का प्राधान्य था। कृष्णावतार के साथ-साथ अवतारवाद के विकास मे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन प्रारभ हुआ—उस समय से लेकर अवतारवाद भक्ति-भाव से ओतप्रोत होने लगा।

वासुदेव कृष्ण भागवतो के इष्टदेव थे। प्रारम्भ मे उनका तथा विष्णु का कोई भी सबध नही था। डॉ० हेमचन्द्र राय चौधरी[1] का अनुमान है कि सभवतः

१ दे० अर्ली हिस्टरी ऑव दि वैष्णव सेक्ट, पृ० ६३।

तीसरी शताब्दी ई० पू० से वासुदेव कृष्ण और विष्णु की अभिन्नता की भावना उत्पन्न हुई थी। अवतारवाद के इस विकास का कारण प्राय: बौद्ध धर्म से जोड़ा जाता है।[1] बौद्ध धर्म तथा भागवत सम्प्रदाय का भक्तिमार्ग, दोनो समान रूप से ब्राह्मण साहित्य के कर्मकाण्ड तथा यज्ञ-प्रधान धर्म की प्रतिक्रिया के रूप मे उत्पन्न और विकसित हुए। इसके फलस्वरूप धर्म के क्षेत्र मे ब्राह्मणो का एकाधिकार लुप्त हो गया था। बौद्ध धर्म का अधिकाधिक प्रसार देखकर ब्राह्मणो ने भागवतो को अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से भागवतो के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण को विष्णु-नारायण का अवतार मान लिया है।[2]

इससे अवतारवाद को बहुत प्रोत्साहन मिला। साथ-साथ विष्णु का भी महत्व बढने लगा। इस तरह अवतारवाद की सारी भावना धीरे-धीरे विष्णु-नारायण मे केन्द्रीभूत होने लगी और वैदिक साहित्य के अन्य अवतारो के कार्य विष्णु मे ही आरोपित किए गए।

१४३. एक ओर तो अवतारवाद की भावना फैलती जा रही थी, दूसरी ओर कई शताब्दियो से राम का आदर्श चरित्र भारतीय जनता के सामने रहा था। रामायण की लोकप्रियता के साथ-साथ राम का महत्व भी बढता रहा। उनकी वीरता के वर्णन मे अलौकिकता की मात्रा भी बढने लगी। रावण पाप और दुष्टता का प्रतीक बन गया और राम पुण्य और सदाचरण का। अत. इस विकास की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाँति राम भी विष्णु के अवतार माने जाने लगे। राम तथा विष्णु की अभिन्नता की धारणा कब उत्पन्न हुई, इसका ठीक समय निर्धारित करना असभव है। फिर भी अवतारवाद उत्तरकाण्ड मे इतना व्याप्त है कि इसे उत्तरकाण्ड की अधिकाश सामग्री के पूर्व का मानना चाहिए। अत बहुत सभव है कि पहली शताब्दी ई० पू० से ही रामावतार की भावना प्रचलित होने लगी थी। रामायण के प्रक्षेपो के अतिरिक्त (दे० ऊपर अनु० ११७-१२४), महाभारत (दे० ऊपर अनु० ४६) तथा वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, हरिवश आदि प्राचीनतम पुराणो मे अवतारो की तालिका मे राम दाशरथि का भी नाम आया है।

---

१ दे० एच० चौधरी, वही, पृ० ६३।
एम० मोनियेर विलियम्स, वही, पृ० ३२८।
सी० वी० वैद्य, वही, पृ० २५।

२ तैत्तिरीय आरण्यक (१०, १, ६) मे वासुदेव तथा विष्णु की अभिन्नता का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।

१४४. अवतारवाद के विकास मे छठी या सातवी शताब्दी ई० से महात्मा बुद्ध भी विष्णु के अवतार माने जाने लगे।[१] प्राचीन साहित्य तथा पुराणो मे ८०० ई० तक अवतारो की सख्या तथा नामो मे भी एकरूपता नही मिलती। **नारायणीय उपाख्यान** मे विष्णु के ६ अवतारो की सूची इस प्रकार है—वाराह, नृसिह, वामन, भार्गव राम, दाशरथि राम और वासुदेव कृष्ण (दे० महाभारत १२, ३२६, ७२-६२)। इसी उपाख्यान के एक अन्य स्थल पर केवल चार अवतारो का उल्लेख है अर्थात् वाराह, नृसिह, वामन तथा मनुष्यावतार (दे० ३३७, ३६)[२]। **विष्णु पुराण** के एक स्थल पर प्रजापति के मत्स्य, कूर्म और वाराह अवतारो का उल्लेख है (दे० १, ४, ७-८), एक अन्य स्थल पर आदित्य, भार्गव, राम तथा कृष्ण नामक विष्णु के चार अवतारो की सूची दी गई है (दे० १, ६, १४३-१४४)। इसके अतिरिक्त उस पुराण मे वाराह (१, ४, १२ आदि), कूर्म (१, ६, ८८), मोहिनी (१, ६, १०६), नृसिह (१, १६), राम दाशरथि (४, ४) तथा कृष्ण (भाग ५) सब का सबध विष्णु से ही माना गया है तथा उनकी कथाओ का न्यूनाधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। **हरिवंश पुराण** मे चार बार विष्णु के अवतारो की सूची मिलती है, किन्तु निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कि उसमे एकरूपता का अभाव है :

(१) पौष्कर, वाराह, नृसिह, वामन, दत्तात्रेय, परशुराम, राम, कृष्ण, वेदव्यास, कल्कि[३] (दे० १, ४१)।

(२) वामन, नृसिह, परशुराम, वाराह, मोहिनी, राम, कृष्ण (दे० २, २२)।

(३) वाराह, नृसिह, वामन, परशुराम, कृष्ण (दे० २, ४८)।

(४) वाराह, नृसिह, वामन, राम, कृष्ण (दे० २, ७१)।

भागवत पुराण मे अवतारो की सूचियो मे दो बार बाईस और एक बार इक्कीस अवतारो के नाम गिनाए गए है, किन्तु वहाँ भी न तो नामो मे एकरूपता मिलती है और न क्रम मे (दे० १, ३; २, ७; ११, ४)।

---

१. दे० आर० सी० हाजरा : एनल्स भडारकर इस्टिट्यूट, भाग १८, पृ० ३२१। काणे : वही, पृ० ७२१।

२. नारायणीय उपाख्यान मे जो दस अवतारो की सूची मिलती थी, उसे पूना के प्रामाणिक सस्करण ने प्रक्षिप्त माना है; दे० अध्याय ३२६, ६५ तथा ३२६, ७१ की टिप्पणियाँ।

३. यह कल्कि का प्राचीनतम उल्लेख प्रतीत होता है। किन्तु हरिवश का प्रामाणिक संस्करण अब तक नही तैयार हो सका।

विष्णु के दस मुख्य अवतारो की भावना तथा उनके निश्चित क्रम की परम्परा (मत्स्य से कल्कि तक) ८०० ई० से ही सर्वमान्य होने लगी।[1]

घ—रामकथा का व्यापक प्रसार

१४५. रामकथा-विषयक गाथाओ से लेकर वाल्मीकि रामायण के प्रचलित रूप तक रामकथा के प्रारभिक विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न प्रस्तुत अध्याय मे किया गया है। यह उत्तरोत्तर विकास ही रामकथा की लोकप्रियता का प्रमाण है। निबन्ध के अन्तिम अध्याय मे इसके समस्त विकास के सिंहावलोकन के साथ-साथ रामकथा की सामान्य विशेषताओ पर भी विचार किया जायगा। यहाँ रामकथा के प्रारभिक व्यापक प्रसार की ओर सकेत करना है।

महाभारत की सामग्री से स्पष्ट है कि रामकथा न केवल कोशल प्रदेश मे प्रचलित थी वरन् इसका प्रचार पश्चिम की ओर भी हो चुका था। हरिवंश से ज्ञात होता है कि रामायण की कथा को लेकर प्राचीन काल से नाटको का अभिनय भी हुआ करता था :

रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्य नाटक कृतम् ।
जन्म विष्णोरमेयस्य राक्षसेंद्रवधेप्सया ॥६॥

(विष्णुपर्व, अध्याय ९३)

रामकथा की लोकप्रियता का एक और महत्वपूर्ण प्रमाण बौद्ध तथा जैन साहित्य से मिलता है। बौद्धो ने ईस्वी सन् के कई शताब्दियो पहले राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा की लोकप्रियता और आकर्षकता का साक्ष्य दिया है (दे० चौथा अध्याय)। जैनियो ने भी वाल्मीकि की रचना को मिथ्या कहकर रामकथा के एक नये रूप मे राम को अपनाने का प्रयत्न किया है (दे० पाँचवाँ अध्याय)।

इसी तरह रामकथा प्रारम्भ से ही भारत की सस्कृति मे इतनी फैल गई कि राम ने उस समय के तीन प्रचलित धर्मो मे एक निश्चित स्थान प्राप्त किया—ब्राह्मण धर्म मे विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म मे बोधिसत्व तथा जैन धर्म मे आठवे बलदेव के रूप मे। आगे चलकर साहित्य की प्रत्येक शाखा मे, अन्य भारतीय भाषाओ के साहित्य मे, भारत के निकटवर्ती देशो मे सर्वत्र रामकथा का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है।

---

१ आर० सी० हाजरा, पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० ८८ और ९० हि० क्वा०, भाग ११, पृ० १२०-२७।

तृतीय भाग

अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहावलोकन

अध्याय १०

संस्कृत धार्मिक साहित्य में रामकथा

क—रामभक्ति की उत्पत्ति और विकास

१४६. अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे अवतारवाद की उत्तरोत्तर बढती हुई व्यापकता के साथ-साथ भक्ति-भावना भी उत्पन्न हुई और धीरे-धीरे विकसित होने लगी। अतः राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है।

भारतीय भक्तिमार्ग का सूत्रपात और विकास राम-भक्ति के शताब्दियों पूर्व हुआ था। वेदो में इसका बीजारोपण हुआ और भागवत धर्म मे वह पल्लवित हुआ। बौद्ध-धर्म तथा जैनधर्म की भाँति भागवतो का भक्तिमार्ग भी कर्मकाड तथा यज्ञ-प्रधान ब्राह्मण धर्म की प्रतिक्रिया के रूप मे उत्पन्न हुआ था। लेकिन इसमे वेदो की निन्दा को स्थान नही मिला और इस प्रकार वाद मे ब्राह्मण तथा भागवत धर्म के समन्वय से वैष्णव धर्म की उत्पत्ति सम्भव हो सकी। इसमे भागवतो के देवता वासुदेव-कृष्ण प्राचीन वैदिक देवता विष्णु के अवतार माने गए हैं और भक्ति-भावना इन्ही विष्णु-नारायण-वासुदेव-कृष्ण मे केन्द्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। विष्णु के अन्य अवतार भी माने जाने लगे, जिनमे से रामावतार भारतीय सस्कृति के दृष्टिकोण से सबसे महत्त्वपूर्ण है (दे० ऊपर अनु० १४३)। फिर भी भक्तिमार्ग के इतिहास मे, भागवत-धर्म तथा पाच-रात्र के साहित्य मे, शाडिल्य-भक्ति सूत्र, नारदीय भक्ति-शास्त्र, रामानुज, निम्बार्क, मध्व तथा वल्लभाचार्य के सम्प्रदायो मे कृष्णावतार को प्रायः एकाधिकार मिला है।[1]

१४७. प्राचीन रामकथा-साहित्य के निरूपण से ज्ञात हुआ है कि रामायण के प्रक्षिप्त अशो मे तथा महाभारत के कई स्थलो पर रामावतार का उल्लेख मिलता है। युद्धकाण्ड के एक प्रक्षिप्त सर्ग में सीता को भी लक्ष्मी का अवतार बताया गया है (दे०

१. भक्तिमार्ग के विकास के लिए दे०—

इनसाइक्लोपीडिया ऑव रिलीजन एण्ड एथिक्स, 'भक्तिमार्ग'।

हेमचन्द्र राय चौधरी : अर्ली हिस्टरी ऑव वैष्णव सेक्ट।

बलदेव प्रसाद मिश्र : तुलसी दर्शन, पृ० ४१।

सर्ग ११७, २७), लेकिन प्राचीन राम-साहित्य मे कही भी राम-भक्ति का निरूपण नही मिलता। हरिवश तथा प्राचीन पुराणो मे भी राम-भक्ति का उल्लेख नही हुआ है। अतः रामावतार की भावना के बहुत काल बाद राम-भक्ति तथा राम-पूजा का आविर्भाव हुआ है। सर रामगोपाल भण्डारकर का कहना है कि यद्यपि ईसवी सन् के प्रारभ से राम विष्णु के अवतार माने गये थे, किन्तु उनकी विशेष रूप से प्रतिष्ठा ग्यारहवी शताब्दी के लगभग ही प्रारभ हुई थी।[१] डॉ० श्राडर का भी निर्णय यह है कि जिन वैष्णव सहिताओ मे राम अथवा राधा की एकातिक पूजा प्रतिपादित की गई है, ये अर्वाचीन हैं और पाचरात्र के प्रामाणिक साहित्य के अनुकरण से उत्पन्न हुई है।[२] फिर भी गुप्तकाल मे विष्णु के अन्य अवतारो की भाँति राम की भी पूजा प्रचलित थी। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[३] तथा वराह मिहिर की बृहत्संहिता[४] मे राम-मूर्ति के निर्माण के लिए नियम मिलते है। वाकाटक महारानी प्रभावती[५] के विषय मे प्रसिद्ध हैं कि वह भगवत् रामगिरि स्वामी की भक्तिन थी। अधिक सभव है कि वह रामगिरि स्वामी राम दाशरथि से अभिन्न है। अग्नि पुराण[६] मे भी मत्स्यादिप्रतिमा लक्षण नामक ४९वे अध्याय में राम की मूर्ति का उल्लेख हुआ है। गुप्तकाल के मदिरो मे रामायण सम्बन्धी फलक भी मिलते हैं।[७]

ऐसा प्रतीत होता है कि राम-भक्ति का पल्लवन दक्षिण भारत मे हुआ है।

---

१ सर भण्डारकर के तर्क अकाट्य प्रतीत होते हैं, दे० 'वैष्णविज्म शैविज्म', पृ० ४७ आदि।

२. दे० डॉ० श्राडर इट्रोडक्शन टु दि पाचरात्र (मद्रास १९१६, पृ० १६)।

३ ३, ८५, ६२, रचना-काल पाँचवी श० ई०।

४ दे० ५८, ३०, रचना-काल छठी श० ई०।

५. इनका जीवन-काल पाँचवी शताब्दी ई० है। दे० दि क्लासिकल एज, पृ० ४१७ (वम्बई १९५४)।

६. रचना-काल ८०० ई० के वाद।

७ दे० रत्नचन्द्र अग्रवाल : उत्तर भारत की मूर्तिकला मे रामकथा (राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ११, अक १, पृ० ५१) और राजस्थान के शिलालेखो व मूर्तिकला मे रामकथा की अभिव्यक्ति (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८५५)। भास्करनाथ मिश्र . देवगढ और इलोरा के रामायण सवधी दृश्य (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८०६)। मजुलाल र० मजूमदार : शामला जी मदिर मे रामायण से सम्बन्धित दृश्य (मैथिलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८१४)।

तमिल आल्वारों की रचना, अर्थात् नालायिर-प्रबन्ध में भगवान् विष्णु तथा उनके अवतारों के प्रति असीम भक्ति तथा आत्म-समर्पण की भावना का हृदयस्पर्शी निरूपण मिलता है।[1] यद्यपि विष्णु के अवतार कृष्ण को अधिक महत्त्व दिया गया है परन्तु प्राचीनतम आल्वारों के स्तोत्रों में राम का उल्लेख है और परवर्ती आल्वारों में निरन्तर मिलता है (आठवीं श० ई०)।

आल्वार कुलशेखर की रचना में सम्भवतः प्रौढ़ रामभक्ति का प्राचीनतम निरूपण सुरक्षित है (नवीं श० ई० पूर्वार्द्ध)। यद्यपि उनके भी अधिकांश पद कृष्णावतार सम्बन्धी हैं, परन्तु उनकी रचना का पाँचवाँ अंग रामावतार से सम्बन्ध रखता है और इसमें राम के प्रति अत्यन्त कोमल और हृदयस्पर्शी भक्ति अंकित की गई है।[2]

१४८ रामभक्ति के काव्यात्मक तथा भावात्मक निरूपण के अतिरिक्त वैष्णव संहिताओं तथा उपनिषदों में रामभक्ति तथा रामपूजा का शास्त्रीय प्रतिपादन भी किया गया है। ऐसे ग्रन्थों की रचना पहले-पहल रामानुज सम्प्रदाय में हुई है। रामानुज ने तो स्वयं रामभक्ति पर नहीं लिखा है, परन्तु अपने श्रीभाष्य में उन्होंने विभवों अर्थात् अवतारों में राम तथा कृष्ण का विशेष उल्लेख किया है (श्रीभाष्य २, २, ४२)। उनके सम्प्रदाय में निम्नलिखित राम-सम्बन्धी वैष्णव संहिताओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें राम के प्रति दास्य भक्ति का प्रतिपादन किया गया है—**अगस्त्य-संहिता, कलिराघव, बृहद्राघव, और राघवीय संहिता**[3]। तीन रामभक्ति सम्बन्धी साम्प्रदायिक उपनिषदें सुरक्षित हैं—**रामपूर्वतापनीय, रामोत्तरतापनीय** तथा **रामरहस्योपनिषत्**[4]। तीनों रामोपासना से सम्बन्ध रखती हैं तथा इनमें राम-यन्त्र, राम-मन्त्र, सीता-मन्त्र आदि का उल्लेख है। राम परमपुरुष तथा सीता मूल प्रकृति मानी जाती हैं। **उत्तरतापनीय** (२, १८) तथा **रामरहस्योपनिषद्** (५, १६) में अद्वैत भक्ति भी प्रतिपादित की गई है

---

१ दे० टी० ए० गोपीनाथ राव हिस्टरी ऑव दि श्री वैष्णवस। पंचम आल्वार शठकोप की रचना (तिरुवाय्मोलि) का संस्कृत अनुवाद 'सहस्रगीति' बम्बई के वेंकटेश्वर प्रेस द्वारा तथा नवम आल्वार आण्डाल की रचना (तिरुप्पावै) का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद 'गोदा-गीतावली' पटना की बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्रकाशित है (१९६७)।

२ जर्नल श्री वेंकटेश्वर ओरियेंटल इन्स्टिट्यूट, तिरुपति, भाग ३ (१९४२), पृ० १६६।

३ दे० डॉ० श्राडर. वही, न० २६, १०१, १३३।

४ दे० वैष्णव उपनिषदें (अडयार) और दस्सेन, सेकजिग उपनिषद्स, पृ० ८०२।

सदा रामोऽहमस्मीति तत्वत. प्रवदन्ति ये ।
न ते संसारिणो नूनं राम एव न संशयः ॥

रामतापनीय के अनेक स्थलो पर अध्यात्मरामायण के रामहृदय तथा रामगीता से साम्य पाया जाता है।[1] इसमे एक सक्षिप्त रामचरित भी दिया गया है (दे० ४, १७-२६), जिसके अनुसार रावण ने मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीता का हरण किया था (स्वनिवृत्यर्थम्), राम और लक्ष्मण सीता की खोज के मिस (व्याजेन) पृथ्वी का भ्रमण करते थे तथा सुग्रीव ने सीता को ले आने की आज्ञा दी थी। निम्नलिखित अन्य वैष्णव उपनिषदो में भी राम का उल्लेख हुआ है—कलिसंतरण, कृष्ण (जिसमे राम मुनियो को कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का आश्वासन देते हैं), गोपालोत्तरतापनीय, तारसार, त्रिपाद-विभति-महानारायण तथा मुक्तिकोपनिषद्। इनमे रामचरित का कोई वर्णन नहीं किया गया है।

इन रचनाओ मे प्रायः वेदांत तथा भक्ति का समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है तथा राम को परमब्रह्म से अभिन्न माना गया है। मुक्तिकोपनिषद् मे हनुमान् परमात्मा के रूप मे राम की स्तुति करने के पश्चात् (राम त्वं परमात्माऽसि सच्चिदानन्द, दे० अध्याय १, ४) उनसे निवेदन करते है कि वह अपने स्वरूप का तात्त्विक निरूपण करे—त्वद् रूपं ज्ञातुमिच्छामि तत्त्वतो राम मुक्तये (१, ५)। इसपर राम वेदान्त-ज्ञान को सायुज्य मुक्ति का साधन बताते हैं तथा हनुमान् को निर्गुण भक्ति की साधना करने का उपदेश देते हैं—अनामगोत्रं मम रूपमीदृशं भजस्व (२, ७३)।

अड्यार लाइब्रेरी बुलेटिन (भाग १९, पृ० ३१३-२६) मे एक शाक्त सीतोपनिषद् प्रकाशित हुई है, जिसमे सीता को प्रकृति, साक्षात् शक्ति, योगशक्ति, भोगशक्ति, वीरशक्ति आदि के रूप मे चित्रित किया गया है। इन सब ग्रन्थो का रचना-काल निर्धारित करना असभव प्रतीत होता है। डॉ० वेबर ने राम-तापनीय उपनिषद् का प्राचीनतम काल ११वीं शताब्दी माना है। उस समय से लेकर राम-भक्ति-विषयक साहित्य का निर्माण होने लगा था। स्तोत्रो के अतिरिक्त रामोपासना के विषय मे भी बहुत सी रचनाओ का उल्लेख मिलता है, जिनमे से एकाध हस्तलिपि के रूप मे सुरक्षित हैं, जैसे रामार्चनसोपान (राजेन्द्र लाल मित्र, सस्कृत कैटालॉग, भाग ६, पृ० १०२), सर्वसिद्धान्त (वही ७, ९९), रामार्चनपद्धति (हरप्रसाद शास्त्री, सस्कृत कैटालॉग, भाग १, पृ० ३२३) और रामपूजापद्धति (वही)।

भगवद्गीता के अनुकरण पर रचित अनेक रामगीता नामक ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है, जिनमे वेदान्त के आधार पर राम के परमब्रह्मत्व का प्रतिपादन किया गया

१. दे० ए० वेबर : मेम्वायर बर्लिन एकाडेमी, १८६४, पृ० २८३।

है। मद्रास से प्रकाशित (सन् १६०२) **श्रीरामगीता** गुरुज्ञानवासिष्ठ **तत्त्वसारायण** का भाग माना जाता है। गीता की भाँति इसमे भी १८ अध्याय है, जो राम-हनुमान्-संवाद के रूप मे प्रस्तुत किए गए हैं। सगुण-भक्ति के विषय मे कहा है (अध्याय ११) कि सात्त्विक भक्त परम पद प्राप्त करते हैं, राजभक्त सालोक्य मुक्ति के भोगो के पश्चात् ब्राह्मण के रूप मे जन्म लेते हैं तथा तामसभक्त, जो आर्थिक लाभ के कारण राम का आश्रय लेते है (**वित्तार्थं भजंति माम्**) नरक जाते है तथा बाद मे कुत्ते आदि के रूप मे प्रकट होते है (**श्वादिजन्म प्रपद्यन्ते**)। कलकत्ता संस्कृत कॉलेज मे एक **रामगीता सटीका** (कैटालॉग भाग ४, नं० २६०) सुरक्षित है, जो स्कद पुराण के निर्वाणखड का अश माना जाता है और जिसके तीन अध्यायों मे राम का परब्रह्मत्व प्रतिपादित है। हरप्रसाद शास्त्री के संस्कृत कैटालॉग मे भी (भाग १, न० ३१४) एक **रामगीताटीका** का उल्लेख है, जो उपर्युक्त रामगीता सटीका से भिन्न है।

१४६. इन सब रचनाओ का अब तक विश्लेषण नही हुआ है। राम-भक्ति के विकास मे उनका क्या महत्त्व है, उनका **रामानन्द** की रचनाओ से क्या सबध है आदि प्रश्नो पर खोज की अपेक्षा है। इतना ही स्पष्ट है कि दर्शन की दृष्टि से रामानन्द का सबध रामानुज सम्प्रदाय से ही रहा है। उनकी प्रामाणिक रचनाओ अर्थात् **वैष्णव-मताब्ज-भास्कर** तथा **श्री रामार्चनपद्धति** से पता चलता है कि भक्ति के क्षेत्र मे उन्होंने (रामानुज के) विष्णु-लक्ष्मी के स्थान पर राम-सीता को अपना आराध्य माना है तथा उनके प्रति दास्य भक्ति का ही प्रचार किया है। भक्तमाल के कथनानुसार रामानन्द के गुरु राघवानन्द ने चारो वर्णो और आश्रमो के लिए भक्ति का द्वार खोल दिया था। रामानन्द के शिष्यो की परम्परागत सूची देखकर यह विश्वास दृढ हो जाता है कि रामानन्द भी अत्यधिक उदार थे। उनके हिन्दी पदो की प्रामाणिकता असदिग्ध नही है किन्तु उनसे प्रेरणा पाकर कई शिष्यो ने राम-भक्ति के प्रचार मे हिन्दी का उपयोग किया है[1]। रामावत सम्प्रदाय के प्रचार के कारण राम-भक्ति जनसाधारण मे फैलने लगी, आगे चलकर गोस्वामी तुलसीदास ने इस राम-भक्ति को अपने अमर **रामचरित-मानस** मे एक काव्यात्मक तथा हृदयग्राही रूप दिया है।

राम-भक्ति के विकास के साथ-साथ रामकथा को भक्ति के साँचे मे ढालने की आवश्यकता का भी अनुभव हुआ; फलस्वरूप बहुत से साम्प्रदायिक रामायणो की सृष्टि होने लगी, जिनमे **अध्यात्मरामायण**, **आनन्दरामायण**, **अद्भुतरामायण** प्रमुख हैं (दे० आगे अनु० १७५-१७७)। **अध्यात्मरामायण** का स्पष्ट उद्देश्य है शकराचार्य के

---

१. दे० बदरीनारायण श्रीवास्तव का **रामानन्द-सम्प्रदाय** (प्रयाग, सन् १६५७ ई०)।

सुप्रसिद्ध वेदान्त के आधार पर राम-भक्ति का प्रतिपादन करते हुए वाल्मीकीय रामकथा को किंचित् परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करना। इसका रचना-काल सम्भवतः १५वीं शताब्दी ई० है। यद्यपि इसकी रचना रामानन्दी सम्प्रदाय के बाहर हुई होगी, फिर भी अध्यात्म-रामायण शीघ्र ही इस सम्प्रदाय मे प्रतिष्ठा पाने लगा और उसे रामचरितमानस का मुख्य आधार-ग्रंथ बनने का गौरव भी प्राप्त हुआ है।

१५० भारतीय भक्ति-मार्ग के इतिहास मे कृष्ण तथा बाद में कृष्ण और राधा का स्थान निर्विवाद रूप से प्रधान है। अतः राम-भक्ति पर कृष्ण-भक्ति का प्रभाव पड जाना स्वाभाविक था। राम के प्रति दास्य-भक्ति के अतिरिक्त माधुर्य भक्ति का भी प्रतिपादन किया गया है और इस माधुर्य भक्ति के आधार पर रसिक सम्प्रदाय का संभवत १५ वीं श० ई० मे प्रवर्तन हुआ था। डॉक्टर भगवती प्रसाद सिंह ने इस रसिक साधना के विकास की रूपरेखा अंकित की है।[1]

यहाँ केवल रामकथा पर कृष्ण-लीला का प्रभाव विचारणीय है। वाल्मीकि रामायण, उत्तररामचरित, जानकीहरण, हनुमन्नाटक आदि मे जो राम-सीता के सयोग शृंगार का वर्णन हुआ है, वह न तो कृष्ण-लीला के अनुकरण पर हुआ है और न माधुर्य-भक्ति-भाव की प्रेरणा से।

अध्यात्मरामायण की बाल-लीला पर कृष्ण की बाल-लीला का प्रभाव सुस्पष्ट है· आनन्दरामायण, सत्योपाख्यान आदि मे जो राम-सीता की विलास-क्रीडाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है, वह भी कृष्ण-लीला से प्रभावित है किन्तु कृष्ण-कथा के अनुकरण की चरम सीमा यह है कि भुशुण्डीरामायण (दे० आगे अनु० १८०), महा-रामायण (अनु० १८१), हनुमत्संहिता (अनु० १६०), बृहत्कोशल खंड (अनु० १६१), संगीत-रघुनन्दन (अनु० २५०) आदि ग्रन्थो मे राम की रासलीला की भी कल्पना कर ली गई है। विवाह के पूर्व तथा विवाह के पश्चात् राम अयोध्या के आस-पास रास-लीला करते हैं तथा वनवास के समय चित्रकूट मे भी। आगे चलकर कृपानिवास, मधुराचार्य आदि रसिक सम्प्रदाय के आचार्यो ने रामकथा मे एक और परिवर्तन कर दिया है— "वास्तव मे न तो सीता का हरण हुआ और न स्वय ब्रह्म राम ने एक तुच्छ राक्षस के वध के लिए धनुष-बाण ही धारण किया"।[2] "वनयात्रा के समय राम, लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट से आगे नहीं गये। वे स्वय ब्रह्म रूप मे अपनी आह्लादिनी शक्ति सीता जी के साथ चित्रकूट मे विहार करते रहे। इस विहार-लीला मे कैंकर्य और व्यवस्था लक्ष्मण जी करते थे, जो जीव तत्त्व के प्रतिनिधि थे। चित्रकूट से आगे लक्ष्मी,

---

१. दे० राम-भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० ७६ आदि।

२. दे० वही, पृ० २८२।

नारायण और शेप उनके वेष मे गये थे और परात्पर ब्रह्म की आज्ञा से उन्होंने ही रावण का वध कर सीतारूप लक्ष्मी का उद्धार किया था। चित्रकूट मे राम का यह विलास तव तक चलता रहा, जव तक विभीषण को राज्य देकर नारायण, लक्ष्मी और शेप सहित पुनः चित्रकूट नही लौट आये। कृपानिवास जी ने स्वरचित रामायण मे यह कथा विस्तारपूर्वक लिखी है। मधुराचार्य जी ने राज्याभिषेक के अनन्तर सीता-वनवास की घटना को इसी प्रकार राम की प्रकाशलीला माना है"।[1]

रसिक-सम्प्रदाय मे राम के वहुत से विवाहो का उल्लेख किया गया है (दे० आगे अनु० ४०४)। वाल-लीला के वर्णन मे राम द्वारा दैत्यो का मारा जाना भी कृष्ण-कथा का प्रभाव माना जा सकता है (दे० अनु० ३८०)।

ऐसा प्रतीत होता है कि राम-भक्ति की मधुर उपासना प्रधानतया मध्यदेश मे विकसित हुई, किन्तु वगाल मे भी इस प्रकार का विकास हुआ है।

जगतराम राय के अद्भुतरामायण के एक काड का नाम रामरास ही रखा गया है (दे० आगे अनु० २८७), उसी लेखक के आत्मवोध नामक ग्रंथ के १२वे अध्याय मे राम को रसराज कहकर पुकारा गया है। वगीय सहजिया सम्प्रदाय मे यह नाम कृष्ण के लिए प्रयुक्त होता है। वगीय साहित्य परिषद् पत्रिका मे रामराम-विषयक व्रजवुली के दो पदो का प्रकाशन हुआ है, इनका रचना-काल अनिश्चित है।[2] आसाम के गीतिरामायण मे माना गया है कि राम ने चित्रकूट मे एक मायामय अयोध्या की सृष्टि करके चैत्रचतुर्दशी का पर्व मनाया था (दे० अनु० ४४०)।

ख—पौराणिक साहित्य

(१) हरिवंश

१५१. हरिवंश का रचना-काल ४०० ई० के लगभग माना जाता है।[3] इसमे एक सक्षिप्त रामचरित मिलता है, जिसमे रामवतार के उल्लेख के वाद वनवास से लेकर रावण-वध तक रामकथा की मुख्य घटनाओ का वर्णन दिया गया है। अनन्तर राम-

---

१. दे० वही, पृष्ठ २९७।

२ दे० भाग २, पृ १२५-१२६। वगीय साहित्य के उपर्युक्त उद्धरणो के लिए मैं श्री देवीपाद भट्टाचार्य (यादवपुर विश्वविद्यालय) का आभारी हूँ।

३ आर० सी० हाजरा : इण्डियन कल्चर, भाग २, पृ० २३७ और न्यू इडियन एटिक्वेरी, भाग १, पृ० ५२२।

राज्य की प्रशसा की गई है। इस वृत्तान्त मे दशरथ के यज्ञ का अथवा अयोनिजा सीता का कही उल्लेख नही हुआ है।[1]

हरिवंश के दो स्थलो पर रामायण का (दे० २, ६३, ६, ३, १३२, ६५) तथा दो स्थलो पर वाल्मीकि के काव्य का निर्देश मिलता है—गीतं च वाल्मीकिमहर्षिणा (१, १, ६) और सरस्वती च वाल्मीके (२, ३, १८)। अवतारो की चार तालिकाओ मे राम का नाम भी दिया गया है (दे० ऊपर अनु० १४४)। इसके अतिरिक्त अन्य स्थलो पर भी राम अथवा रामकथा का उल्लेख किया गया है (उदा०—१, १५, २६, १, ५४. २६; २, ६०, ३५; ३, ७६, २४)।

(२) प्रधान महापुराण

१५२. पौराणिक साहित्य के काल-निर्णय के विषय मे प्रस्तुत निबन्ध मे डॉ० राजेन्द्र हाजरा की पुस्तक[2] तथा उनके अन्य लेखो का सहारा लिया गया है। उनके अनुसार प्राचीनतम महापुराण कालक्रमानुसार निम्नलिखित है—मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड, विष्णु, वायु, मत्स्य, भागवत तथा कूर्म पुराण।

मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड तथा मत्स्य पुराण मे रामचरित का कही वर्णन नही किया गया। अन्य अवतारो के साथ ब्रह्माण्ड तथा मत्स्य पुराण मे राम का नाम भी लिया गया है (दे० मत्स्य पु० अध्याय ४७, ब्रह्माण्ड पुराण ३, अध्याय ७३)। इसके अतिरिक्त ब्रह्माण्ड के मैथिल वश के वर्णन मे सीता के अलौकिक जन्म का उल्लेख दिया गया है (दे० ३ अध्याय ६४, १५)। इस पुराण का काल चौथी शताब्दी ई० माना जाता है।

१५३. विष्णु पुराण (चौथी शताब्दी ई०) मे भी अयोनिजा सीता का उल्लेख मिलता है (४, अध्याय ५) और रामकथा का सक्षिप्त रूप भी उद्धृत किया गया है (४, अध्याय ४)। हरिवश की रामकथा की अपेक्षा इसमे कुछ अधिक सामग्री मिलती है, विशेषकर ताटकावध, अयोनिजा सीता तथा राम आदि चार भाइयो के पुत्रो का उल्लेख। एक अन्य स्थान पर लवणासुर-वध का वर्णन किया गया है (१, १२, ४)।

१५४. वायु पुराण (पाँचवी श० ई०) की रामकथा विष्णु-पुराण की रामकथा से भिन्न नही है (दे० राम-चरित. अध्याय ८८, १६१-२०० तथा अयोनिजा सीता का जन्म, अध्याय ८६, २२)।

---

१. दे० १, ४१, १२१-५५। हरिवंश के सदर्भ गीता प्रेस, गोरखपुर के सस्करण के है।

२. आर० सी० हाजरा : पुरानिक रेकार्ड्स आँन हिन्दू राइट्स एड कस्टम्स, ढाका १६४०।

१५५. भागवत पुराण (छठीं अथवा सातवी श० ई०) के राम-चरित मे पौराणिक साहित्य में पहले-पहल सीता लक्ष्मी का अवतार मानी गई है, सीता-स्वयवर के अवसर पर राम धनुष तोडते है, राम ही शूर्पणखा को विरूपित करते हैं तथा धोबी के कारण सीता-त्याग का वर्णन किया गया है (दे० स्कध ६, अध्याय १०-११)। इस पुराण मे एक दूसरी अत्यन्त सक्षिप्त रामकथा (२, ७, २३-२५) मिलती है, जिसमे समुद्र राम को देख कर उन्हे तुरन्त मार्ग देता हे (दे० आगे अनु० ५७३)।

१५६. कूर्म पुराण (सातवी श० ई०) मे रामकथा सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री पाई जाती है (वेकटेश्वर प्रेस सस्करण)—

राक्षस-वश-वर्णन (पूर्व विभाग, अध्याय १६)।

सूर्यवश के वर्णन के अतर्गत राम-चरित का वर्णन, जिसमे सीता को जनकात्मजा माना गया है और रावण-युद्ध के पश्चात् राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख है (पूर्वविभाग, अध्याय २१)।

पतिव्रतोपाख्यान मे माया-सीता के हरण का वृत्तान्त (उत्तरविभाग, अध्याय ३४)।

(३) गौण महापुराण

१५७ शेष महापुराणो मे प्राचीन सामग्री के साथ-साथ बहुत से प्रक्षेप भी पाए जाते है। कई महापुराणो का अनेक बार रूपान्तर भी किया गया है। अन्तिम रूपान्तर का काल डॉ० राजेन्द्र हाजरा के अनुसार दिया गया हे।

वाराह पुराण (रचना-काल लगभग ८०० ई०) मे पूरी रामकथा तो मिलती ही नही किंतु एक स्थल पर दुर्जयकृत श्रीरामस्तवन (अध्याय १२) उद्धृत है और एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि वसिष्ठ के परामर्श से दशरथ ने राम-द्वादशी-व्रत का पालन किया था, जिसके फलस्वरूप उनको रामादि पुत्र प्राप्त हुए (दे० अध्याय ४५)। अध्याय १६३ (रचना-काल ८००-१००० ई०) मे वाराह-मूर्ति की कथा भी मिलती है (दे० आगे अनु० ७८०)।

प्रचलित अग्नि पुराण की रचना ८०० ई० के पश्चात् हुई है, लेकिन इसकी बहुत कुछ सामग्री और बाद की माननी चाहिए[1]। अग्निपुराण की रामकथा वाल्मीकि रामायण के सात काडो का सक्षेप मात्र है (दे० अग्निपुराण, अध्याय ५-११), इसमे राम का मथरा पर अत्याचार करना वनवास का कारण बताया गया है तथा राम द्वारा माल्यवत् पर्वत पर चातुर्मास्य यज्ञ करने का उल्लेख है।

लिंग पुराण (रचना-काल दशवी शताब्दी के पूर्व) के इक्ष्वाकुवश-वर्णन के अन्तर्गत राम-चरित का अत्यन्त सक्षिप्त रूप दिया गया है (पूर्वार्द्ध ६६, ३५-३६); अबरीष

---

१. आर० सी० हाजरा : इडियन हि० क्वा०, भाग १२, पृ० ६८३ आदि।

उपाख्यान मे राम तथा उनके भाइयो के अवतारत्व का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३६१)।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन वामन पुराण (३७, ८-१२) मे वेदवती तीर्थ के प्रसग मे रावण द्वारा अपमानित वेदवती की सीता के रूप मे उत्पत्ति का उल्लेख है।

भविष्य पुराण का वर्तमान रूप अर्वाचीन है। इसके प्रतिसर्ग पर्व मे दशरथ की वशावली (दे० आगे अनु० ३३६) के अतिरिक्त हनुमान् की जन्मकथा, हनुमान्-रावण-मल्लयुद्ध तथा हनुमान की रामभक्ति विषयक सामग्री मिलती है (दे० आगे अनु० ६७१, ६६८ और ७०४)।

१५८ प्राचीन नारदीय पुराण अप्राप्य है, प्रचलित नारदीय महापुराण दसवी श० ई० का माना जाता है लेकिन वाद मे इसमे बहुत से प्रक्षेप जोड दिए गए हैं।[1] पूर्वखड मे एक सक्षित राम-चरित के वाद (वालकाड से युद्धकाड तक) राम द्वारा द्रविड देश मे ब्राह्मणो से बाँधे हुए विभीषण की मुक्ति की कथा दी गई है (दे० अध्याय ७९) तथा उत्तरकाड मे वालकांड से उत्तरकांड तक समस्त वाल्मीकीय रामायण की सक्षिप्त रामकथा दी गई है, जिसमे राम-लक्ष्मणादि नारायण-सकर्षणादि के अवतार वताए गए हैं (दे० अध्याय ७५)।

१५९ ब्रह्मपुराण की अधिकांश सामग्री भिन्न-भिन्न अन्य पुराणो से ली गई है। २१३वे अध्याय का राम-चरित ज्यो का त्यो हरिवश के ४१वें अध्याय से उद्धृत किया गया है। १७६ वे अध्याय मे रावणचरित के अन्तर्गत रावण की तपस्या के वर्णन के वाद एक सक्षिप्त रामकथा भी पाई जाती है, जिसमे रावण द्वारा अमरावती से चुराई हुई वासुदेवप्रतिमा का वृत्तान्त दिया गया है। रावण-वध के वाद राम ने समुद्र को यह मूर्ति समर्पित कर दी, लेकिन वाद मे कृष्ण ने उसे पुरुषोत्तम-क्षेत्र मे स्थापित किया। ब्रह्म पुराण की शेष रामकथा-सम्बन्धी सामग्री गौतमी माहात्म्य (अध्याय ७०-१७५) के अन्तर्गत मिलती है। यह माहात्म्य प्रारभ मे एक स्वतन्त्र ग्रन्थ था, जिसकी रचना १०वी शताब्दी मे अथवा इसके वाद हुई थी।[2] इसमे भिन्न-भिन्न तीर्थो का महत्त्व दिखलाने के लिए बहुत सी कथाओ का सकलन किया गया है। राम-तीर्थ-माहात्म्य (अध्याय १२३) मे रामकथा का वर्णन मिलता है, जिसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं · कैकेयी द्वारा देव-दानव-युद्ध मे तीन वरो की प्राप्ति, श्रवणकुमार-वध के प्रायश्चित्त स्वरूप दशरथ का अश्वमेध-यज्ञ करना तथा उसमे आकाश-वाणी द्वारा उसे पुत्रोत्पत्ति का आश्वासन दिया जाना, वनवास के समय गौतमी-तट पर राम के पिड-दान द्वारा नरक से दशरथ की मुक्ति।

---

१. आर० सी० हाजरा : इडियन कल्चर, भाग ३, पृ० ४७७।

२. वही, भाग २, पृ० २३५।

सहस्र-कुड माहात्म्य (दे० अध्याय १५४) मे सीता-त्याग का उल्लेख है और इसके बाद वियोगी राम के गौतमी-तट के सहस्र-कुड पर तपस्या करने का वर्णन किया गया है।

किष्किधा-तीर्थ-माहात्म्य (अध्याय १५७) मे रावणवध के बाद अयोध्या की यात्रा करते हुए गौतमी-तट पर राम के पाँच दिन तक निवास तथा शिवलिंग-पूजा का उल्लेख किया गया है।

१६० गरुड़ पुराण का रचना-काल सम्भवतः दसवी शताब्दी ई० है, लेकिन इसमे जो रामायण, महाभारत तथा हरिवंश का वर्णन किया गया है उसे बहुत अर्वाचीन प्रक्षेप मानना चाहिए।[1] गरुड पुराण की रामकथा की विशेषता यह है कि इसमे राम स्वय शूर्पणखा को विरूप कर देते हैं तथा अयोध्या लौटने के बाद पितृकर्म के लिए गयाशिर जाते हैं (दे० अध्याय १४३, वेकटेश्वर सस्करण)।

१६१ स्कंद पुराण की अधिकांश सामग्री की सृष्टि आठवी शताब्दी के बाद[2] हुई है, लेकिन इसमे बहुत से प्रक्षेप मिलते है, जिनका रचना-काल अज्ञात है। वेकटेश्वर प्रेस के सस्करण मे निम्नलिखित रामकथा विषयक सामग्री पाई जाती है।

(१) माहेश्वर खंड (अ) केदारखंड

अध्याय ८—रावण-चरित के बाद रामावतार-वर्णन तथा राम द्वारा रावण-वध।

(आ) माहेश्वर खंड

अध्याय ६—गौतम-पत्नी की कथा (दे० आगे अनु० ३४५)।

(२) वैष्णव खंड

(अ) कार्तिकेय माहात्म्य

अध्याय २०-२५—अवतारकारण के वर्णन के अतर्गत वृन्दा-शाप तथा धर्मदत्त और कलहा की कथा। धर्मदत्त का पुनर्जन्म में दशरथ होना।

(आ) वैशाखमासमाहात्म्य

अध्याय २१—वाल्मीकि की जन्म-कथा।

(इ) अयोध्यामाहात्म्य

अध्याय ६—राम का स्वधामगमन।

(३) ब्राह्मखंड।

(अ) सेतुमाहात्म्य

अध्याय २—एक सक्षिप्त राम-चरित, जिसमे सेतुबन्ध का विशेष रूप से वर्णन किया गया है।

---

१. आर० सी० हाजरा : पुरानिक रेकार्ड्स, पृ० १४४ और एनल्स भं० ओ० रि० इ०, भाग १६, पृ० ६८-७५।

२. दे० आर० सी० हाजरा—पुरानिक रेकार्ड्स, पृ० १६५।

अध्याय ७—समुद्रवधन के पूर्व शिवप्रतिष्ठा का वर्णन।

अध्याय २२—सीता की अग्निपरीक्षा, अग्नि द्वारा सीता के सतीत्व की प्रशंसा।

अध्याय २७—रावणवध के बाद ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त के लिए राम द्वारा कोटि-तीर्थ पर शिवलिंग की स्थापना।

अध्याय ३०—विभीषण द्वारा सेतु को तोड़ने के लिए राम से प्रार्थना।

अध्याय ४४-४७—रामोपाख्यान पर आधारित एक संक्षिप्त राम-चरित, रावण-वध के प्रायश्चित्त-स्वरूप राम द्वारा रामेश्वर-लिंग की स्थापना, हनुमान् का शिवलिंग ले आने के लिए कैलाश भेजा जाना तथा मुहूर्त बीत जाने की आशंका से राम द्वारा सैकत लिंग की स्थापना।

(आ) धर्मारण्यखंड

अध्याय ३०-३१—एक संक्षिप्त काल-निर्णय रामायण (दे० आगे० अनु०१७६)।

अध्याय ३२-३५—राम द्वारा धर्मारण्य की तीर्थ-यात्रा।

(४) काशीखंड। इसमे रामकथा का अभाव है।

(५) अवंतीखंड। (अ) आवन्त्य क्षेत्रमाहात्म्य

अध्याय २१—शिवलिंग ले आने के उद्देश्य से हनुमान् की लंका-यात्रा।

अध्याय २४—वाल्मीकि की जन्मकथा।

(आ) चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य

अध्याय ७९—हनुमान् का चरित, इसमे हनुमान् को रुद्रावतार माना गया है।

(इ) रेवा खंड

अध्याय ८३—ब्रह्महत्यादोष के निवारण के लिए हनुमान् की तपस्या।

अध्याय १३६—अहल्योद्धार की कथा, राम से उद्धार पाने के पश्चात् अहल्या नर्मदा तीर्थ पर शिव की पूजा करने जाती है।

अध्याय १६८—रावणादि भाइयो की तपस्या तथा शिव द्वारा वरदान।

(६) नागर खंड।

अध्याय २०—लक्ष्मण का स्वामिद्रोह तथा तपस्या।

अध्याय ९६-९८—शनि से दशरथ द्वारा वर प्राप्ति, दशरथ-इन्द्र की मैत्री, दशरथ का कार्तिकेयपुर मे पुत्र के लिए तपस्या करना। चार पुत्रो तथा एक पुत्री का जन्म।

अध्याय ९९-१०३—राम का स्वर्गारोहण, विभीषण को राम द्वारा धर्मोपदेश, राम द्वारा सेतुभंग, अनेक तीर्थों मे राम द्वारा शिवप्रतिष्ठा।

अध्याय १२४—वाल्मीकि की कथा।

अध्याय २०८—अहल्योद्धार, अहल्या की तीर्थयात्रा तथा शिवपूजा ।

(७) प्रभासखंड । प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य ।

अध्याय १११-११३—रामेश्वर-तीर्थ मे राम-लक्ष्मण द्वारा शिवप्रतिष्ठा ।

अध्याय १२३—रावण द्वारा रावणेश्वर-तीर्थ मे शिवप्रतिष्ठा ।

अध्याय १७१—दशरथेश्वर मे दशरथ द्वारा शिवप्रतिष्ठा (पुत्रप्राप्ति के उद्देश्य से) ।

अध्याय २७८—वाल्मीकि की कथा ।

१६२ पद्मपुराण के खडो का अलग-अलग रचना-काल माना जाता है। पाताल खंड, जिसमे बहुत-सी रामकथा-सम्बन्धी सामग्री मिलती है, बारहवी शताब्दी का माना जाता है । उत्तरखण्ड अपना वर्त्तमान रूप १५०० ई० के लगभग प्राप्त कर सका । इसमे भी राम-चरित का पूरा वर्णन किया गया है[1] ।

पातालखण्ड का एक गौडीय पाठ सुरक्षित है, जिसमे प्रारम्भ के २८ अध्यायों मे कालिदासकृत रघुवश से बहुत कुछ मिलती-जुलती कथा दी गई है[2] । आनन्दाश्रम सस्करण के पाताल खण्ड मे रामाश्वमेध का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० अध्याय १-६८) । इस वर्णन की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है :

—रावण की तपश्चर्या तथा वरप्राप्ति (अध्याय ७) ।

—एक राम-चरित, जिसमे मुख्य घटनाओ की सब तिथियो का उल्लेख है । यह स्कन्द पुराण से उद्धृत किया गया है[3] (अध्याय ३६, ६-८०) ।

—हनुमान् की वीरता का वर्णन (अध्याय ४४) ।

—राम तथा शिव के अभेद का प्रतिपादन (अध्याय ४५-४६) ।

—धोबी-कथन के फलस्वरूप सीता-त्याग (अध्याय ५५-५८) ।

—कुश-लव की उत्पत्ति तथा उनका राम की सेना से युद्ध करना (अध्याय ५९-६६) ।

—राम-सीता का सम्मिलन, जिसमे रामकथा सुखात बना दी गई है (अध्याय ६७-६८) ।

पातालखंड के १०० वे अध्याय मे राम द्वारा बाँधे हुए विभीषण की मुक्ति की कथा दी गई है (दे० ऊपर अनु० १५८) तथा ११२ वे अध्याय मे एक 'पुराकल्पीय-रामा-

---

१. आर० सी० हाजरा : इण्डियन कल्चर, भाग ४, पृष्ठ ७३ आदि ।

२. दे० ढाका विश्वविद्यालय की हस्तलिपि न० १६२३ ।

३. दे० महाराष्ट्रीय श्री रामायण समालोचना, भाग २, पृ० ३६८ । राजा आरण्यक ने यह राम-चरित लोमश ऋषि से सुना था ।

यण' का विवरण भी दिया गया है। उस रामकथा में दशरथ की चार पत्नियों (कौशल्या, सुमित्रा, सुरूपा तथा सुवेषा) का उल्लेख है; बाल-लीला का किंचित् वर्णन किया गया है, सीता-स्वयंवर में इन्द्र, रावण आदि के असफल प्रयत्न के पश्चात् राम के धनुर्भंग करने का उल्लेख मिलता है, शिव के दिए हुए अजगव धनुष पर वानर-सेना के समुद्र को पार करने की कथा दी गई है तथा कुंभकरण-वध रावण-वध के पश्चात् माना गया है। ११३वें अध्याय में राम शिव से शिव-भक्ति का वरदान मांगते हुए दिखलाए गए हैं (भक्तिरस्तु स्थिरा त्वयि-श्लोक १७६)।

सृष्टिखंड में कोई विस्तृत राम-चरित नहीं मिलता है। केवल निम्नलिखित प्रसंगों का वर्णन किया गया है:

अध्याय २८ : राम द्वारा दशरथ का श्राद्ध तथा लक्ष्मण का स्वामिद्रोह (दे० अनु० ४६२)।

अध्याय ३५ : शम्बूक-वध की कथा।

अध्याय ३६-३८ : राम-अगस्त्य-संवाद, जिसमें वाल्मीकीय उत्तरकांड (सर्ग ७६-८३) के पाँच सर्गों की सामग्री उद्धृत की गई है।

अध्याय ३६ : राम का विभीषण को धर्मोपदेश देना तथा मथुरा में वामन की प्रतिष्ठा करना।

अध्याय ५१ : अहल्या की कथा।

उत्तर-खंड में वृन्दा-शाप (अध्याय १६ और १०५), रामरक्षास्तोत्र (अध्याय ७४) तथा शम्बूक-वध-कथा (अध्याय २३०) के अतिरिक्त राम-चरित का एक पूरा वृत्तान्त भी मिलता है (दे० अध्याय २६६-२७१)[1]। प्रारम्भ में रामावतार-कारण के वर्णन में स्वयंभू मनु की तपस्या का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप वह तीन जन्मों में विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त कर सके। शेष कथा वाल्मीकि रामायण के सात कांडों का संक्षिप्त रूप मात्र है। अंतर यह कि इसमें अवतारवाद अधिक व्यापक है। राम के अपनी माता को अपना विष्णु-रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है; राम और सीता विष्णु और लक्ष्मी के पूर्णावतार माने जाते हैं तथा लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमानुसार अनन्त, सुदर्शन और पाञ्चजन्य के अंशावतार कहे गए हैं। इस कथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था।

(१६३) ब्रह्मवैवर्त पुराण की रचना संभवतः ७०० ई० के पूर्व हुई थी, लेकिन

---

१. उत्तरखंड की इस कथा के गौडीय पाठ के लिए दे० जर्नल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, १८४२, पृ० ११२०-२८।

उसका वर्त्तमान रूप सोलहवी शताब्दी ई० का है।[1] इसमे वेदवती-वृत्तात के वर्णन के बाद सीता-हरण की कथा दी गई है, जिसमे अग्नि द्वारा एक मायामय सीता की सृष्टि करने का उल्लेख किया गया है (दे० प्रकृतिखण्ड, अध्याय १४)। यह कथा श्रीमद्देवी-भागवत के वृत्तान्त से अभिन्न है (स्कध ६, अध्याय १६)।

कृष्ण-जन्म खण्ड मे अहल्योद्धार के वर्णन के प्रसगवश एक सक्षिप्त रामकथा (अध्याय ६२) मिलती है, जिसमे शूर्पणखा के कुब्जा के रूप मे प्रकट होने का वृत्तान्त पाया जाता है तथा हनुमान् को रुद्र का अशावतार माना गया है। इसी खण्ड (अध्याय ५६) मे जय-विजय के तीन जन्मो का भी उल्लेख है।

(४) उपपुराण

१६४ विष्णुधर्मोत्तर पुराण की रचना सभवत: पाँचवी शताब्दी के लगभग काश्मीर मे हुई थी।[2] इसमे लवण-वध की कथा के बाद (खण्ड १, अध्याय २००) भरत के गधर्वों के विरुद्ध युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है (अध्याय २०२-२६६)। इसके अतर्गत एक रावण-चरित मिलता है, जिसमे राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमानुसार नारायण-सकर्षण-प्रद्युम्न-अनिरुद्ध के अवतार बताए गए है (दे० अध्याय २१२)।

१६५. नृसिह पुराण (४००-५०० ई०)[3] मे छ. अध्याय मिलते है, जिनमे वाल्मीकि रामायण के प्रथम छः काण्डो की कथा किंचित् परिवर्तन सहित सक्षेप मे दी गई है (अध्याय ४७-५२)। अवतारवाद को अधिक महत्त्व दिए जाने के कारण राम नारायण के पूर्णावतार तथा लक्ष्मण शेष के अवतार बताए गए हैं। अहल्या अपने पति के शाप से 'पाषाणभूता' कही गई है। सीता के स्वयवर के बाद अन्य क्षत्रिय राजाओ के राम पर आक्रमण का वर्णन किया गया है। सीता-हरण का ऐसा रूप प्रस्तुत किया गया है, जिसमे रावण सीता का स्पर्श नही करता (दे० आगे अनु० ५०२)। रावणवध के पश्चात् राम के यज्ञो का तथा उनके स्वर्गारोहण का उल्लेख किया गया है। सीता-त्याग का कोई भी निर्देश नही मिलता है। रावणवश का वर्णन वृत्तान्त के आरभ मे दिया गया है (अध्याय ४७)।

---

१ दे० आर० सी० हाजरा : पुराणिक रेकार्ड्स, पृ० १६६ और एनल्स ओ० इ०, भाग १९, पृ० ७६।

२ दे० आर० सी० हाजरा . स्टडीज इन दि उपपुराण, भाग १, पृ० २१२।

३ आर० सी० हाजरा . वही, भाग १, पृ० २४२।

१६६ वह्नि पुराण की सं० १६८६ की एक हस्तलिपि लन्दन में सुरक्षित है।[1] इसमें एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा मिलती है, जिसमें बालकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक समस्त रामायण की कथावस्तु का वर्णन दिया गया है। प्रारंभ में रामावतार और सीता-हरण के कारण (भृगु और पृथ्वी का शाप) तथा रावण-कुंभकर्ण की जन्म-कथा (मधु-कैटभ, हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष) का उल्लेख किया गया है। 'पाषाणभूता' अहल्या का (पृ० १८२ अ) तथा हनुमान् के मूषिका-रूप में लंका प्रवेश का भी उल्लेख मिलता है। शेष कथा (पृ० २६६ अ) में किसी मौलिकता का नाम भी नहीं है।

१६७. शैव स्कन्द पुराण को छोड़कर उपर्युक्त पुराणों तथा उपपुराणों में जो रामकथा मिलती है, उस पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव कम पड़ा है। अन्य शैव तथा शाक्त उपपुराणों में इस साम्प्रदायिकता की गहरी छाप स्पष्ट है। राम शिव अथवा देवी-भक्त के रूप में दिखाई पड़ते हैं तथा शिव अथवा देवी के प्रसाद से रावण पर विजय प्राप्त करने में समर्थ माने जाते हैं।

वेंकटेश्वर प्रेस द्वारा प्रकाशित शिवमहापुराण की रुद्र संहिता (१४ वीं श०)[2] में रामकथा सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री मिलती है।

सृष्टि खण्ड—नारद-मोह की कथा (अध्याय ३-४)।

सती खण्ड—सती द्वारा राम की परीक्षा तथा राम का सती से कहना कि शंकर की आज्ञा से मैंने अवतार लिया है (अध्याय २४-२६)।

युद्धखण्ड—वृन्दा-शाप की कथा (अध्याय २३)।

इसके अतिरिक्त शतरुद्रसंहिता (१४वीं श० ई०) में शिव के वीर्य से हनुमान् के जन्म की कथा (अध्याय २०) भी दी गई है तथा उमासंहिता में राम द्वारा शिवपूजा तथा उनसे वरप्राप्ति का वर्णन मिलता है (अध्याय ३)।

गणपति कृष्णजी प्रेस के शिवपुराण के संस्करण में, धर्मसंहिता के अन्तर्गत एक संक्षिप्त रामकथा उद्धृत की गई है (अध्याय १३-१४), तथा ज्ञानसंहिता के अन्तर्गत वनवास के समय सीता द्वारा दशरथ के लिए पिंडदान का वर्णन किया गया है (अध्याय ३०) और सागर को पार करने के लिए राम द्वारा शिव से सहायता की प्रार्थना का उल्लेख है (अध्याय ५७)।

---

१ इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी कैटालॉग, पृ० १२९४। डॉ० हाजरा के अनुसार यह प्रामाणिक आग्नेय पुराण है, जिसका वर्तमान वैष्णव रूप पाँचवीं श० ई० का है। दे० ज० ऑ० इं०, भाग ५, पृ० ४११-१६।

२. दे० आँवर हेरिटेज (कलकत्ता), भाग १, पृ० ६५। शिवपुराण सबंधी डॉ० हाजरा का निबंध।

१६८. श्रीमद्देवीभागवत पुराण[1] के नवरात्रमाहात्म्य की रामकथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था। शेष कथा रामायणीय कथा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। अन्तर यह है कि सीता-हरण के बाद नारद की शिक्षा के अनुसार राम रावण पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से नवरात्रोपवास करते है। इसके अन्त मे 'सिंहारूढा देवी भगवती' राम को दर्शन देकर रावण पर विजय का आश्वासन देती है। अनन्तर राम विजया-पूजा करके वानर-सेना सहित समुद्र की ओर प्रस्थान करते है (दे० स्कध ३, अध्याय २८-३०)। इस पुराण के नवे स्कध मे वेदवती-वृत्तान्त तथा छाया-सीता की कथा (अध्याय १६) तथा समस्त रामकथा का सक्षेप (अध्याय २५,१०-२१) भी मिलता है।

११६ डॉ० राजेन्द्र हाजरा के अनुसार[2] महाभागवत पुराण (गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई, १६१३) की रचना दसवी-ग्यारहवी शताब्दी के लगभग पूर्व बगाल अथवा पश्चिम कामरूप मे हुई थी। इसमे एक रामोपाख्यान मिलता है (अध्याय ३७-४६), जिसकी कथावस्तु वाल्मीकीय रामकथा से बहुत भिन्न नही है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है। विभीषण धर्मदेव के अवतार है। जब देवता रावण-वध करने के लिए विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना करते है, विष्णु उनसे कहते हैं कि जब तक देवी लका मे निवास करती है, मैं रावण को पराजित नही कर सकता। अनन्तर सब मिलकर कैलास पर देवी के पास जाते हैं। देवी सीता-हरण के कारण लका को छोड देने की प्रतिज्ञा करती है तथा शिव हनुमान् का रूप धारण कर राम की सहायता करने का वचन देते है। युद्ध के वर्णन मे राम के देवी से प्रार्थना करने का अनेक स्थलो पर उल्लेख है, अत मे राम देवी से अमोघ शस्त्र ग्रहण कर रावण को मारने मे समर्थ होते है (दे० अध्याय ४७, ६६)। ब्रह्मा भी राम की विजय के लिए देवी की मृण्मयी मूर्ति बनाकर उनकी पूजा करते है। इस वृत्तान्त मे सीता मदोदरी के गर्भ से उत्पन्न मानी गई है (दे० अध्याय ४२, ६४)। इस पुराण मे अन्यत्र मायासीता के हरण तथा नारद-शाप. दोनो का उल्लेख हुआ है (दे० अध्याय ११, १०७-११२)।

१७० बृहद्धर्म पुराण (१३वी श० ई०)[3] की रामकथा महाभागवत (देवी) पुराण से बहुत भिन्न नही है। इसमे महाभागवत पुराण की उपर्युक्त विशेषताओ के

---

१ रचना-काल ११वी अथवा १२ वीं शताब्दी ई०। दे० ज० ऑ० रि०, भाग २१, पृ० ६८।

२ दे० इ० हि० क्वा०, भाग २८ (१६५२), पृ० १७-२८।

३ आर० सी० हाजरा : स्टडिस इन दि उपपुराणस्, भाग २, पृ० ३६६। इस रचना के अनुसार सदर्भ दिये गये है।

अतिरिक्त सीता-हरण का वृत्तान्त नृसिंह पुराण की कथा से मिलता-जुलता है, तथा हनुमान् विडाल का रूप धारण करके लंका में प्रवेश करते हैं (दे० पूर्वखंड, अध्याय १८-२२)। रामकथा के वर्णन के पश्चात् रामायणोत्पत्ति का वृत्तान्त दिया गया है, जिसमें श्लोकोत्पत्ति आदि के बाद रामायण के उत्कर्ष-वर्णन के प्रसंग में रामायण के महाभारत तथा पुराणों का बीज होने का उल्लेख किया गया है (दे० पूर्वखंड, अध्याय २५-३०)। मध्यखण्ड (अध्याय ११) में वाल्मीकि को विष्णु का अवतार माना गया है।

१७१ सौर पुराण (६५०-१०५० ई०)[1] में पौलस्त्य-संतति (अध्याय ३०, १४-१६) तथा सूर्यवंश (अध्याय ३०, ४८-६६) का किंचित् वर्णन किया गया है। इनके अन्तर्गत की रामकथा में राम को 'महादेवपरायण' कहा गया है तथा शंकर के प्रसाद-स्वरूप राम के अपना पद प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है। जनक ने गौरी को संतुष्ट करके सीता को (जो पार्वती के अंश से उत्पन्न हुई हैं) प्राप्त किया था, ऐसा कथन भी मिलता है।

१७२ कालिका पुराण (दसवीं-ग्यारवीं श० ई०)। डॉ० हाजरा[2] ने इस पुराण के वेंकटेश्वर संस्करण के आधार पर इसकी कथावस्तु का विश्लेषण किया है। रामकथा विषयक सामग्री निम्नलिखित है—सीता की जन्म कथा (अध्याय ३८, दे० आगे अनु० ४०६), हनुमान की एक जन्मकथा से मिलती-जुलती सामग्री (अध्याय ४८-५३, दे० आगे अनु० ६४७), राम की विजय के लिए ब्रह्मा द्वारा दुर्गा की पूजा (अध्याय ६२, २०-३८)।

१७३ दो अपेक्षाकृत अर्वाचीन पुराणों में रामकथा विषयक किंचित् सामग्री मिलती है। आदि पुराण[3] का वर्ण्य विषय वसुदेव-विवाह से लेकर यमलार्जुन-वृत्तान्त तक कृष्ण-चरित है। "नन्ददृष्ट स्वप्न वर्णन" नामक १६वें अध्याय में कृष्ण-जन्म के पश्चात् नन्द के एक स्वप्न का विवरण है, जिसमें एक संक्षिप्त रामकथा के अतिरिक्त इसका भी उल्लेख किया गया है कि नन्द ने पूर्व-जन्म में भक्तिपूर्वक भगवान् से प्रार्थना की थी, जिसके फलस्वरूप रामावतार में तथा अब कृष्णावतार में उनको भगवान् के पिता हो जाने का वरदान प्राप्त हुआ था। आदि पुराण का राम-चरित वाल्मीकीय रामकथा के अनुरूप है, इसकी एक विशेषता यह है कि कनक-मृग को देखकर राम स्वयं कहते हैं कि यह अवश्य ही कोई मायावी राक्षस है।

---

१. आर० सी० हाजरा : न्यू इंडियन एंटिक्वेरी, भाग ६, ११२०।

२ स्टडिस इन दि उपपुराण्स, भाग २, पृ० १६४।

३ बम्बई से सं० १९८६ में प्रकाशित। रचना-काल १३वीं तथा १६वीं शताब्दी के बीच। दे० हाजरा, स्टडीस इन दि उपपुराण्स, पृ० २८८।

कल्कि पुराण[1] की सक्षिप्त रामकथा (अश ३, ३, २६-५८) की विशेषता है कि इसमे राम-सीता के पूर्वानुराग की झलक मिलती है (दे० आगे अनु० ४०३)। एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख है कि सीता ने अशोकवन मे रुक्मिणीव्रत किया था, जिसके फलस्वरूप वह राम से पुनः मिल सकी (दे० ३, १७, ४०)।

ग——साम्प्रदायिक रामायण

योगवासिष्ठ

१७४ योगवासिष्ठ रामायण वास्तव मे साम्प्रदायिक रामायण नही है, लेकिन इसका उल्लेख यहाँ अन्य साम्प्रदायिक रामायणो के साथ अधिक सुविधाजनक है। एम० विटरनित्स तथा एस० एन० दासगुप्त योगवासिष्ठ को आठवी शताब्दी ई० का मानते है[2] लेकिन डॉ० वी० राघवन् के अनुसार उसकी रचना ११०० ई० और १२५० ई० के बीच मे हुई थी[3]। इस ग्रन्थ का मुख्य विषय वसिष्ठ-रामचन्द्र-सवाद है, जिसमे वसिष्ठ राम को मोक्ष-प्राप्ति पर एक विस्तृत उपदेश देते है। वाल्मीकि ने अरिष्टनेमि को यह सवाद सुनाया था तथा योगवासिष्ठ मे अगस्त्य सुतीक्ष्ण की शिक्षा के लिए वाल्मीकि-अरिष्टनेमि-सवाद दुहराते है।

इसके प्रारम्भ मे रामावतार के चार कारण बताए जाते है—सनत्कुमार, भृगु, वृन्दा तथा देवशर्मा ब्राह्मण के शाप (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग १, ६०)। तब राम के जीवन्मुक्त होने, विद्याभ्यास करने तथा उनकी तीर्थ-यात्रा का वर्णन है (सर्ग ३)। अनन्तर राम के सोलह वर्ष की अवस्था मे विरक्त हो जाने की कथा दी गई है (सर्ग ५)। विश्वामित्र के कहने पर वसिष्ठ ने एक विस्तृत उपदेश दिया, जिसके फलस्वरूप राम निर्लिप्त होकर अपने कर्त्तव्य के पालन के लिए तत्पर हुए।

अन्तिम प्रकरण मे काकभुशुण्डी के जन्म तथा उसके सुमेरु पर निवास की कथा दी गई है। इस कथा मे राम तथा भुशुण्डी का कोई विशेष सबध नही सूचित किया गया है (दे० निर्वाण प्रकरण, पूर्वार्ध, सर्ग १४-२४)। आगे चलकर समस्त रामकथा का

---

१ जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता, १८९०। डॉ० हाजरा (वही, पृ० ३०८) के अनुसार इसकी रचना १७०० ई० के पूर्व हुई थी।

२ दे० क्रमश हि० इ० लि० भाग ३, पृ० ४४३ और हि० इ० फिलॉसफी, भाग २, पृ० २३०।

३ दे० जर्नल ऑव ओरियेण्टल रिसर्च, भाग १३, पृ० १००-१२८। शिवप्रसाद भट्टाचार्य इसे अभिनन्द (१०वी श० ई०) की रचना मानते हैं। दे० इ० हि० क्वा०, भाग २४, पृ० २०१-१२।

सिंहावलोकन भी किया गया है (दे० निर्वाण प्रकरण, पूर्वार्ध, सर्ग १२८,६८-७३)।

अध्यात्म रामायण

१७५ साम्प्रदायिक रामायणो मे अध्यात्म रामायण निर्विवाद रूप से सब मे महत्त्वपूर्ण है। इसके रचना-काल तथा रचयिता के विषय मे खोज की अपेक्षा है। इस ग्रन्थ की रामानन्द सम्प्रदाय मे बहुत प्रतिष्ठा है और इसका प्रभाव आनन्द रामायण, रामचरितमानस तथा एकनाथ के मराठी रामायण आदि पर प्रत्यक्ष है। एकनाथ ने (१६ वी श० ई०) अध्यात्म रामायण को एक आधुनिक रचना कहा है। अत. इसकी प्राचीनता मे बहुत सन्देह है।[1] सबसे अधिक सभव यह है कि इसकी रचना १४वी अथवा १५वी शताब्दी मे हुई थी। रामानन्द को भी इसके रचयिता सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।[2] अध्यात्म रामायण मे रामानुज द्वारा प्रतिपादित समुच्चयवाद का स्पष्ट शब्दो मे विरोध किया गया है और विशिष्टाद्वैत का कही भी समर्थन नही हुआ। अत. ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी रचना श्री सम्प्रदाय तथा रामावत सम्प्रदाय से अलग रहते हुए किसी स्वतन्त्र दार्शनिक कवि द्वारा हुई थी।

राम-भक्ति के विकास मे इस ग्रन्थ का अधिक महत्त्व है, रामकथा के विकास मे इसका स्थान अपेक्षाकृत गौण है। इसका मुख्य उद्देश्य है वेदान्त दर्शन के आधार पर राम-भक्ति का प्रतिपादन। प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है—

—समस्त रचना पार्वती-शकर-सवाद के रूप मे दी गई है। नारद ने ब्रह्मा से इस सवाद को सुना था।

—अवतारवाद की व्यापकता . राम, सीता तथा लक्ष्मण के परब्रह्म, मूल-प्रकृति (योगमाया) तथा शेष के अवतार होने का निरन्तर उल्लेख किया गया है। विश्वामित्र वसिष्ठ, जनक, कौशल्या, कुम्भकर्ण, रावण आदि रामावतार के रहस्य से परिचित हैं।

—बालकाड मे भागवत का अनुकरण (दे० राम का कौशल्या को अपना विष्णुरूप दिखलाना तथा राम की बाल-लीला, सर्ग ३)।

—अहल्योद्धार के अनन्तर केवट का वृत्तान्त, जिसे तुलसीदास ने अयोध्याकाड मे रखा है (दे० १, ६)।

—युवराज-अभिषेक के पूर्व राम-नारद-सवाद (दे० २, १) तथा मथरा मे सरस्वती का प्रवेश (दे० २, २)।

---

१ दे० कलकत्ता संस्कृत सीरीज, भाग ११, भूमिका।

२ दे० दि आथरशिप ऑव दि अध्यात्म रामायण, जर्नल गगानाथ झा रिसर्च इंस्टीट्यूट, भाग १, पृ० २१५-३६।

—राम-नाम-माहात्म्य दिखलाने के लिए वाल्मीकि का अपनी आत्म-कथा सुनाना (दे० २, ६)।
—मायामयी सीता के हरण का वृत्तान्त (दे० ३, ७)।
—लक्ष्मण का १२ वर्ष तक उपवास करना (दे० ३, ४ तथा ६, ८)।
—राम द्वारा सेतु-बध के पूर्व शिवलिंग की स्थापना (६, ४)।
—कालनेमि का वृत्तान्त (६,६)।
—रावण का शुक्र के परामर्श के अनुसार यज्ञ करना तथा अगद द्वारा उसका भग किया जाना (६, १०)।
—रावण के नाभिदेश मे स्थित अमृत का उल्लेख (६, ११, ५३)।
—वैकुण्ठ जाने के उद्देश्य मे रावण के सीताहरण करने का उल्लेख (७, ४, ६)।

अद्भुत रामायण

१७६ ऐसा प्रतीत होता है कि अद्भुत रामायण अथवा अद्भुतोत्तरकाड की रचना अध्यात्म रामायण के कुछ काल बाद हुई।[१] भूमिका मे समस्त वृत्तान्त वाल्मीकि-भारद्वाज-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है (दे० सर्ग १)। इसकी कथावस्तु तीन भागो मे विभाजित की जा सकती है।

[अ] अवतार के कारण (सर्ग २-८)

नारद तथा पर्वत द्वारा विष्णु को दिया हुआ शाप रामावतार का कारण बताया गया है। इस कथा के अनुसार अबरीष की पुत्री श्रीमती को भी शाप दिया जाता है। वह जानकी बनकर राक्षस द्वारा चुरायी जायेगी (सर्ग २-४)।

अनन्तर सीता के अवतार के कारण के विषय मे एक नई कथा दी गई है। इसके अनुसार नारद ने स्वर्ग मे अपमानित किए जाने के कारण लक्ष्मी को शाप दिया था, जिसके फलस्वरूप वह मदोदरी की पुत्री बन गई (दे० सर्ग ५-८ तथा आगे अनु० ३७३)।

[आ] वाल्मीकीय राम-चरित (सर्ग ६-१६)

इसमे परशुराम के तेजोभग से लेकर रावण-वध के बाद अयोध्या मे प्रत्यागम तक समस्त रामकथा का सक्षिप्त वर्णन किया गया है। इस रामकथा के अनुसार राम

---

१ दे० वी० राघवन : म्युसिक इन दि अद्भुत रामायण, जर्नल म्युसिक एकेडमी, भाग १६, पृ० ६६।
जी० ग्रियर्सन : आन दि अद्भुत रामायण, बुलेटिन स्कूल ओरियन्टल स्टडिस, भाग ४, पृ० ११।
प्रस्तुत परिचय वेंकटेश्वर प्रेस सस्करण पर निर्भर है।

ने परशुराम को तथा सीता-हरण के बाद हनुमान् को अपना विश्वरूप दिखलाया था। इसके अधिकांश सर्गों (११-१९) में राम तथा हनुमान् का भक्ति के विषय में एक विस्तृत संवाद है। सेतुबंध के प्रसंग में कहा है कि लक्ष्मण ने समुद्र सुखाया तथा राम ने उसे अपने आँसुओं से फिर भर दिया था (दे० आगे अनु० ५७३)।

[इ] सहस्रमुखरावण-वध (सर्ग १७-२७)

इस अन्तिम भाग में देवी-माहात्म्य का स्पष्ट अनुकरण किया गया है। देवी का रूप धारण कर सीता द्वारा पुष्कर-निवासी सहस्र-स्कंध रावण का वध इसका वर्ण्य विषय है (दे० आगे अनु० ६६६)।

आनन्द रामायण

१७७. आनन्द रामायण[1] की रचना अध्यात्म रामायण के बाद तथा एकनाथ (१६ वीं श० ई०) के पूर्व हुई थी। अतः बहुत सम्भव है कि यह १५ वीं शताब्दी में लिखा गया हो। इसमें अनेक स्थलों पर अध्यात्म रामायण के उद्धरण[2] मिलते हैं तथा बहुत सी विचित्र कथाओं को भी स्थान दिया गया है। १२२५२ श्लोकों के इस विस्तृत ग्रन्थ की कथा-वस्तु का यहाँ अत्यन्त संक्षिप्त निरूपण किया जाता है। इसमें शिव-पार्वती-संवाद का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत द्वितीय कांड के तृतीय सर्ग में रामदास-विष्णुदास का उपसंवाद मिलता है।

(१) सारकांड (१३ सर्ग)

दशरथ-कौशल्या-विवाह का वृत्तान्त, जिसके अन्तर्गत रावण द्वारा कौशल्या-हरण की कथा मिलती है। देव-दानव युद्ध में कैकेयी को वर-प्राप्ति। श्रवण-वध। दशरथ-यज्ञ तथा कैकेयी के पायस का एक काक द्वारा चुराया जाना तथा अंजनी-पर्वत पर फेंका जाना (सर्ग १)।

इसके बाद के सर्गों में राम-जन्म से लेकर उत्तरकांड के प्रथम ४० सर्गों तक की समस्त वाल्मीकीय रामकथा का वर्णन। निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :

बाललीला-वर्णन (सर्ग २) तथा अहल्योद्धार के अनन्तर नाविक का वृत्तान्त (सर्ग ३. ७४-८८)। दोनों वृत्तान्त अध्यात्म रामायण से लिए गए हैं।

सीता-स्वयंवर में रावण की उपस्थिति (सर्ग ३)।

अग्निजा सीता की जन्म-कथा (सर्ग ३. १८८ आदि)।

---

१. दे० गोपाल नारायण (बम्बई) का संस्करण।

२. दे० महाराष्ट्रीय : श्री रामायण समालोचन, भाग २, पृ० ४२४।

वृन्दा-शाप तथा कलहा-धर्मदत्त का कैकेयी-दशरथ के रूप मे अवतार (सर्ग ४)।
सीताहरण के बाद सीता का रूप धारण कर उमा का राम की परीक्षा करना (सर्ग ७)।
रावण का शिव से आत्मलिंग तथा पार्वती को प्राप्त करने तथा दोनो को खो बैठने की कथा (सर्ग ६)।
ऐरावण तथा मैरावण का राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाना तथा हनुमान् द्वारा उनकी मुक्ति (सर्ग ११)।
सुलोचना की कथा (सर्ग ११, २०५ आदि)।
मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से रावण के सीता-हरण करने का उल्लेख (सर्ग १३, ११६ आदि)।

[२] यात्राकांड (६ सर्ग)

वाल्मीकि रामायण की उत्पत्ति (दे० १, २-१२ आदि) तथा वाल्मीकि द्वारा शतकोटिश्लोक रामायण की रचना का उल्लेख (सर्ग १-२)।

इसके बाद आनन्द रामायण की अधिकांश सामग्री नवीन है। इस काड के अन्तर्गत चारो दिशाओ मे राम की तीर्थ-यात्रा का वर्णन मिलता है।

[३] यागकांड (६ सर्ग)।

राम के एक अश्वमेध का वर्णन।

[४] विलासकांड (६ सर्ग)।

शंकरकृत रघुवीर-स्तव (सर्ग १), सीता का नख-शिख वर्णन, सीतालंकार, जल-क्रीडा, सीता-राम-दिनचर्या (सर्ग २-६)।

एकपत्नीव्रत रखने के पुरस्कारस्वरूप अगले अवतार मे बहुत सी पत्नियो को प्राप्त करने का राम को आश्वासन (सर्ग ७, १-२८)।

राम का कामपीडिता देवपत्नियो को कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का आश्वासन देना (सर्ग ७, २६ आदि)।

कृष्णावतार के समय सत्यभामा तथा कुब्जा बन जाने का गुणवती तथा पिंगला को राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ८)।

सीता सहित राम की कुरुक्षेत्र-यात्रा (सर्ग ६)।

[५] जन्मकाड (६ सर्ग)।

राम द्वारा सीता-त्याग की कथा-(सर्ग १-३, दे० आगे अनु० ७३३)।
कुश-जन्म तथा वाल्मीकि द्वारा लव की सृष्टि (सर्ग ४)।
कुश-लव का राम-सेना से युद्ध करना, सीता की-शपथ से पृथ्वी देवी का प्रगट

होना तथा राम से भयभीत होकर पृथ्वी का सीता को लौटा देना, उर्मिला, माडवी तथा श्रुतकीर्ति के दो-दो पुत्र उत्पन्न होना (सर्ग ६-९)।

[६] विवाहकांड (९ सर्ग)।

राम-लक्ष्मण आदि के आठ पुत्रो के भिन्न-भिन्न विवाहो का वर्णन।

[७] राज्यकांड (२४ सर्ग)

राम के राज्यशासन के इस विस्तृत वृत्तान्त मे कई विजय-यात्राओं का तथा राजनीति का वर्णन किया गया है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इन पर कृष्ण-लीला का गहरा प्रभाव पडा है। राम को देखकर स्त्रियाँ प्राय. कामातुर हो जाती है और राम उनको कृष्णावतार मे उनकी लालसा पूरी करने की प्रतिज्ञा करते है (दे० शतनारीवर-प्रदान, सर्ग ४, द्विज-कन्याचतुष्टय-वरदान, सर्ग ११, षोडश सहस्र स्त्रियो को वरदान, सर्ग १२, राम-दासी को राम का ताम्बूल-रस खाने के पुरस्कारस्वरूप राधा बन जाने का वरदान, सर्ग २१)। इसके अतिरिक्त कई स्थलो पर कृष्ण तथा रामोपासको का विरोध आभासित है (दे० सर्ग ३) तथा रामावतार की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है (सर्ग २०)।

शतस्कध रावण द्वारा राम की पराजय तथा सीता द्वारा उसके वध की कथा मे (सर्ग ४, ८८ आदि) तथा चडी का रूप धारण कर सीता द्वारा मूलकासुर-वध के वृत्तान्त मे शाक्त सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट है। सर्ग १४ मे वाल्मीकि के पूर्वजन्मो की विस्तृत कथा मिलती है।

[८] मनोहरकाड (१८ सर्ग)

इस काड मे रामकथा-सम्बन्धी सामग्री नही मिलती। इसके वर्ण्य विषय रामोपासना-विधि, रामनाममाहात्म्य, चैत्रमहिमा, रामकवच आदि हैं।

[९] पूर्णकांड (९ सर्ग)

इस अन्तिम काड मे सोमवशी राजाओ के आक्रमण तथा युद्ध और अनन्तर उनसे सधि के वर्णन के अतिरिक्त कुश के अभिषेक तथा रामादि के वैकुण्ठारोहण की कथा दी गई है।

तत्त्वसंग्रह रामायण

१७८ तत्त्वसंग्रह रामायण की रचना सभवत १७वीं श० ई० मे राम ब्रह्मानन्द द्वारा हुई थी। मेरा निवेदन स्वीकार कर डॉ० राघवन ने इस अत्यन्त विस्तृत रामायण की हस्तलिपि का निरीक्षण किया तथा इसकी कथावस्तु का निरूपण एनल्स ऑव ओरियन्टल रिसर्च (मद्रास १९५३) मे प्रकाशित किया। रामकथा के अतिरिक्त

इस रचना मे रामायण के प्रमुख पात्रो के विषय मे प्रचलित कथाओ का सग्रह हुआ है तथा रामकथा के तत्त्व (अर्थात् राम के परमब्रह्मत्व) पर प्रकाश डाला गया है, अत· इसका नाम **तत्त्वसंग्रह रामायण** रखा गया है। राम ब्रह्मानन्द ने एक **रामायण तत्त्व दर्पण** की भी रचना की है, इसका मुख्य उद्देश्य है राम के परब्रह्मतत्व का प्रतिपादन। तत्त्वसग्रह रामायण की भूमिका मे राम को विष्णु के अतिरिक्त निम्नलिखित देवताओ का अवतार माना गया है : (१) शिव, (२) ब्रह्मा, (३) हरि-हर, (४) त्रिमूर्ति, (५) परब्रह्म। बाद मे रामायण के गायत्री-स्वरूप का भी स्पष्टीकरण हुआ। इसके बाद पार्वती-सवाद के रूप मे समस्त रामकथा का वर्णन किया गया है। इस रचना की एक विशेषता यह है कि इसमे राम की दास्य भक्ति के अतिरिक्त अद्वैत रामोपासना का भी उल्लेख हुआ है। अद्वैत उपासना (दे० ऊपर अनु० १४८) का राममत्र इस प्रकार है— रामोऽहम् (दे० बालकाण्ड, अध्याय १६-२२), कई तीर्थो का महत्त्व सिद्ध करने के उद्देश्य मे उनका सम्बन्ध राम के साथ जोडा गया है, अर्थात् वाराणसी (२, २०), गया (२, २१), गोदावरी (३, १७), धनुष्कोटि (६, ३५), रगनाथ (७, १२-१४)।

इस रचना के निम्नलिखित प्रसग धर्मखण्ड (दे० आगे १८६) पर आधारित है : सीता-स्वयवर मे शिव की उपस्थिति, कैकेयी का पश्चात्ताप, सीता-हरण (हस्तरेखा दिखलाने के लिये सीता लक्ष्मण द्वारा खीची हुई रेखा का उल्लघन कर रावण के पास जाती है), अशोकवन मे रावण-सीता-सवाद के समय हनुमान् का प्रकट होना तथा रावण पर प्रहार करना, मृत्यु द्वारा मायासीता का रूप धारण करना।

तत्त्वसग्रह रामायण के कुछ अन्य प्रसग उल्लेखनीय है[1]·

—वाल्मीकि की कथा का एक किंचित् परिवर्तित रूप तथा गगातट पर उनकी तपस्या के फलस्वरूप सीता को अपने आश्रम मे शरण देने की वर-प्राप्ति (२, २२-३०, ७, ६)।

—सुतीक्ष्ण के आश्रम से विदा लेते समय सीता भूमि देवी से रत्नजटित पादुकाओ का एक जोडा ग्रहण करती है, उन्हे पहनकर राम पाद-पीडा तथा भूख से मुक्त होंगे (३, ६)।

—मायासीता का वृत्तान्त, जिसके अनुसार वास्तविक सीता राम के वक्षस्थल मे छिप जाती है (३, १३)।

—रावण तथा जटायु का युद्ध (दे० आगे ४७०)।

—राम का सुग्रीव को अपना विश्वरूप दिखाना (४, ३)।

---

१ सभवत· इनमे से अनेक धर्मखण्ड पर आधारित है। दुर्भाग्यवश धर्मखण्ड की पूरी प्रतिलिपि मेरे पास नही है।

—हनुमान की उत्पत्ति, जिसके अनुसार पार्वती उनकी माता मानी जाती है (५. १२)।

—सीता द्वारा शतानन रावण का वध (३. १-२)।

—रावण के पूर्वजन्म की कथा (७. ३)।

कालनिर्णय रामायण

१७९. रामायणों का एक ऐसा वर्ग मिलता है, जिनकी विशेषता यह है कि इनमें रामकथा की प्रधान घटनाओं की तिथियाँ दी गई हैं।

स्कन्दपुराण (दे० ब्रह्म खण्ड के अन्तर्गत धर्मारण्यखण्ड, तीसवाँ अध्याय) तथा पद्मपुराण (दे० पातालखण्ड, छत्तीसवाँ अध्याय) में संक्षेप में इस प्रकार की सब से प्राचीन रामकथा सुरक्षित है। पद्मपुराण में अगस्त्य ऋषि इस तालिका के वक्ता माने जाते हैं। अगस्त्य के नाम से इस प्रकार का एक ग्रन्थ भी प्रचलित है, जिसके अनेक संस्करण मिलते हैं, उदाहरणार्थ:

अगस्त्योक्त-रामायण (त्रिवेन्द्रम् कैट०, विस्तार : १०४ श्लोक)

रामायणतिथि-रामायण (इंडिया आफिस कैट०, विस्तार : ४०३ श्लोक)

कालनिर्णय-रामायण (त्रिवेन्द्रम् कैट०, विस्तार : ८१ श्लोक)

औफ्रेख्त के कैटलॉग में अगस्त्योक्त रामायणसुधानिधि (भाग १, पृ० ३८) तथा रामायणसार (भाग २, पृ० १२५) का उल्लेख मिलता है: इस ग्रन्थ का विस्तार ७०० श्लोक बताया गया है। मद्रास कैटलॉग में अगस्त्योक्त १५० श्लोकों के विस्तार के रामायणकाल का उल्लेख है (दे० सं० १२८८०)। अगस्त्य रामायण में कथा के वृत्तान्त से कोई विशेषता नहीं है। घटनाओं की तिथियों के अतिरिक्त राम तथा सीता की अवस्था का भी उल्लेख मिलता है। विवाह के समय राम तथा सीता की अवस्था क्रमानुसार १५ तथा ६ वर्ष की थी, वनवास के समय २७ और १८ वर्ष की तथा राज्याभिषेक के समय ४० और ३३ वर्ष की।

कोश तथा अगस्त्योक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त निम्नलिखित कालनिर्णय-ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है:

अष्टरामायण (दे० कल्पद्रुम का पादटिप्पणी पृ० ३०३)

श्रीरामचन्द्र रामायणानुमानर्षदीपिका (मद्रास कैटलॉग, क्र० १४१६८)

रामायणप्रधानकालनिर्णयचन्द्रिका (मद्रास कैटलॉग, क्र० १२८०६)

श्रीनिवासचन्द्रकृत रामायणसंग्रह (मद्रास कैटलॉग, क्र० २२३४ बी)

अन्य रामायण

१८०. अर्वाचीन रामकथा-साहित्य में बहुसंख्यक रामायणों के नामों का उल्लेख

मिलता है--रामायणादेव नाना सति रामायणानि हि (दे० आनन्द रामायण, मनोहर-काड, सर्ग ८, ६२)। ये नाम सभवत- अधिकाश कल्पित है और यदि उनकी रचना भी हुई हो तो इसमे बहुत सदेह नही है कि ये ग्रथ अपेक्षाकृत अर्वाचीन ही है।

इनमे से **भुशुण्डीरामायण** का सबसे अधिक उल्लेख किया जाता है। इसके दो अन्य नाम भी प्रचलित है, **मूलरामायण**[1] और **आदिरामायण**। अयोध्या के श्रावण कुज तथा लक्ष्मण किले मे और अन्यत्र भी इसकी हस्तलिपि सुरक्षित होने का आश्वासन दिया जाता है। इसमे चार खण्ड (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर) बताए जाते है, जिसके प्रथम खण्ड मे अवतार, बाल-चरित, रास-क्रीडा, सीता-स्वयवर का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत लेखक इस रचना का अब तक निरीक्षण न कर सका। डॉ० भगवती-प्रसाद सिंह को इसकी पूरी प्रति मिल गई है। बडौदा के ओरियेटल इस्टिट्यूट मे इसके तीन खण्डो (दक्षिण, पश्चिम, उत्तर) की अर्वाचीन हस्तलिपियाँ विद्यमान है। जयपुर में दो रामायण है, जिनके वक्ता भुशुण्डी ही है, एक **आदिरामायण** (ब्रह्मा-भुशुण्डी-सवाद), जो बडौदा के आदि रामायण तथा डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के भुशुण्डी रामायण से अभिन्न प्रतीत होता है और दूसरा **ब्रह्मरामायण** (भुशुण्डी-गरुड-सवाद), जिसमे भी राम-रास-लीला का वर्णन है। इण्डिया ऑफिस से जो **चित्रकूट-माहात्म्य** मुझे मिला है, इसमे इसके **आदिरामायण** का एक अश होने का उल्लेख किया गया है (दे० इण्डिया ऑफिस कैटा-लॉग न० ३७०४)। **चित्रकूट-माहात्म्य** की हस्तलिपि मे रचना अथवा लिपि काल का उल्लेख नही है लेकिन यह मैकेजी महोदय के सग्रह की है, अत' कम से कम डेढ सौ साल पुरानी है। इसमे भरत-अत्रि-सवाद भुशुण्डी द्वारा शाडिल्य को सुनाया जाता है। चित्र-कूट तथा उसके आस-पास के तीर्थों के वर्णन के अतिरिक्त इसके माहात्म्य का रहस्योद्-घाटन भी किया गया है। चित्रकूट के सांतानक वन मे एक सरोवर है, जिसके मध्य मे एक रम्य मण्डप बना हुआ है, जहाँ एक वेदिका पर सीता और उनकी सखियो के साथ राम नित्य रास-क्रीडा करते है (दे० अध्याय ४ और ५)। डॉ० भगवती प्रसाद अपने 'रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय' मे भुशुण्डी रामायण के कथानक के विषय मे लिखते है—"रावण द्वारा भेजे गए राक्षस, बाल्यावस्था मे ही राम को समाप्त करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु वे स्वय मारे जाते है। उनके डर से दशरथ राम को गुप्त स्थान पर भेज देते हैं। सरयूपार गोपप्रदेश मे गोपेन्द्र सुखित और उनकी स्त्री मागल्या राम का पालन-पोषण करते है। विवाह के पूर्व अयोध्या के प्रमोदवन मे देवावतार गोपियो और अपनी पराशक्ति सीता के साथ राम रासलीला करते है। मिथिला पहुँचकर एक पक्षी द्वारा वे सीता के पास अपना चित्र भेजते हैं। चित्र-दर्शन से सीता उन्हे प्राप्त करने के लिए उत्क-

१. प्रकाशित मूलरामायण वाल्मीकिकृत रामायण का प्रथम सर्ग मात्र है।

ठिन होती हैं। दशरथ के अश्वमेध यज्ञ मे विजित राजाओ की सहस्रो कन्याओ को वे स्वीकार करते हैं। चित्रकूट मे गोप-गोपिकाओ के साथ रास-क्रीडा का आयोजन होता है। इसी प्रकार की अनेक शृगारी लीलाओ के वर्णन इसमे आए हैं।......सीता के अतिरिक्त 'सहजा' सखी का राम की पत्नी के रूप मे उल्लेख। सहजा जनकवशी कन्या कही गई है।. .. सीता, ज्ञानपरक भक्ति और सहजा, प्रेमाभक्ति की प्रतीक मानी गई है।" (दे० पृ० ६७)।

१८१ **महारामायण** का उल्लेख श्री रामदास गौड कृत 'हिन्दुत्व' मे किया गया है (दे० आगे अनु० १९२)। इसके पाँच अध्याय (४८-५२) अयोध्या मे सवत् १९-८५ मे छपे हैं। इनका वर्ण्य-विषय इस प्रकार है—रामचरणो की ४८ रेखाओ का वर्णन और उनके समस्त सृष्टि के उत्पत्ति-स्थान होने का उल्लेख (अध्याय ४८), रामोपासको के सस्कारो का वर्णन, जिनमे से एक धनुर्बाण सस्कार माना गया है (अध्याय ४९), राम के निरक्षरातीत ब्रह्म होने का तथा उनकी सखीभाव से उपासना की जाने का उल्लेख (अध्याय ५०), सीता की तैंतीस शक्तियो की नामावली तथा उनके कार्य-वर्णन (अध्याय ५१), रामनाम के महत्त्व-वर्णन के प्रसग मे रम् धातु से राम नाम की व्युत्पत्ति का प्रतिपादन तथा राम की राम-क्रीडा का उल्लेख (अध्याय ५२)। सभव है यह महारामायण भुशुण्डी रामायण से अभिन्न हो।

१८२ **मंत्ररामायण** (वेंकटेश्वर प्रेस) के प्रारम्भ मे रामरक्षास्तोत्र उद्धृत किया गया है किन्तु इसका मुख्य उद्देश्य है रामायण के वेदमूलत्व का प्रतिपादन। वेदो मे ही रामकथा निहित है, यह विश्वास एक प्रसिद्ध श्लोक द्वारा व्यक्त किया जाता है, जिसे रामायण का पाठ करने के पूर्व भक्तगण उच्चरित करते है, इसका आशय यह है कि राम के प्रकट होने के साथ-साथ वेद भी रामायण के रूप मे प्रकट हुए

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना॥

मत्ररामायण मे नीलकण्ठ ने वैदिक मत्रो का एक सग्रह प्रस्तुत किया है जिनका परोक्ष अर्थ रामकथा से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार उन्होंने बालकाण्ड से लेकर, उत्तरकाण्ड तक की समस्त कथा वैदिक मत्रो मे देखने का प्रयास किया है। उदाहरणार्थ वह ऋग्वेद के दसवे मण्डल का ९९ वे सूक्त, जिसमे इन्द्र की स्तुति की गई है, रामकथा का साराश समझते हैं। इस सूक्त के ऋषि वम्र वाल्मीकि का बोध कराते है, इन्द्र राम का, रुद्रगण हनुमान् तथा उनके साथियो का, आदि। मत्र रामायण का रचयिता अपने समालोचको को लक्ष्य करते हुए लिखता है—"नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति" (पृ० २९)।

मत्ररामायण के प्रथम श्लोक मे रामायण के गायत्री-स्वरूप का उल्लेख किया

गया है। गायत्रीरामायण[1], विद्यारण्यकृत रामायणरहस्य (श्री शकर गुरुकुल पत्रिका, भाग २), तत्त्वसग्रहरामायण (बालकाण्ड, सर्ग ५), गोविन्दराज की भूषण नामक टीका[2] आदि मे रामायण के गायत्री-स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है। तर्क यह है कि रामायण के २४००० श्लोको मे से प्रत्येक सहस्र के प्रथम श्लोक का पहला अक्षर उद्धृत करने से गायत्री मत्र बन जाता है—प्रतिश्लोकसहस्रादौ मन्त्रवर्णाः समुद्धृताः (दे० रामायणरहस्य, ६३)। वास्तव मे कोई भी गायत्री रामायण प्रत्येक सहस्र समूह का प्रथम श्लोक उद्धृत नही करता। विद्यारण्य ने वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग को भी गायत्री-स्वरूप प्रतिपादित किया है (दे० रामायणरहस्य, ४७-५६)।

१८३. वेदान्त रामायण (लहरी प्रेस, बनारस स० १९६४) मे परशुराम के जन्म तथा चरित्र का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि ने राम के सदेह का निवारण करने के लिए इस कथा को सुनाया था। राम ने पूछा था कि परशुराम ने क्यो क्षत्रियो का नाश किया था और क्षत्रियवश का लोप क्यो नही हुआ।

१८४ उपर्युक्त प्राप्य रचनाओ के अतिरिक्त सस्कृत हस्तलिपि-सूचीपत्रो मे और बहुत से ग्रन्थो का उल्लेख किया गया है। ये अधिकाश १७ वी शताब्दी अथवा इसके बाद की रचनाएँ प्रतीत होती है। श्री रामदास गौड ने अपने हिन्दुत्व नामक ग्रन्थ में बस्ती-निवासी प० धनराज शास्त्री की दी हुई टिप्पणियो के आधार पर उन्नीस रामायणो की कथावस्तु का सक्षिप्त परिचय दिया है (दे० पृ० १३१ आदि)। प्रस्तुत अध्याय के परिशिष्ट मे उन रामायणो के नाम उद्धृत किए जाएँगे।

घ—अन्य धार्मिक साहित्य

जैमिनि-भारत

(अ) जैमिनीय अश्वमेध

१८५. ऐसी अनेक रचनाएँ मिलती है, जो जैमिनि-भारत की अश मानी जाती हैं। इस ग्रथ की रचना भागवत पुराण के बाद तथा १३ वी श० ई० के पूर्व हुई थी, क्योकि जैमिनीय अश्वमेध[3] मे भागवत पुराण का उल्लेख किया गया है तथा इसका १३ वी शताब्दी मे कन्नड भाषा मे अनुवाद हुआ था।[4] इसका मुख्य विषय युधिष्ठिर के

---

१ के० एस० रामस्वामी शास्त्री अपने 'स्टडिस इन दि रामायण' नामक ग्रथ मे इस गायत्री रामायण के दो रूप उद्धृत करते है (दे० परिशिष्ट ४)।

२. दे० गायत्र्याश्च स्वरूपं तद्रामायणमनुत्तमम् (७, १११, १८)।

३. दे० वेकटेश्वर प्रेस का सस्करण।

४ दे० एम० विटरनित्स : वही, पृ० ५८४।

अश्वमेध का वर्णन है। इसमें कुशलवोपाख्यान (अध्याय २५-३६) भी दिया गया है, जिसकी कथावस्तु इस प्रकार है—धोबी के कथन के फलस्वरूप सीता-त्याग, कुश-लव का जन्म तथा यज्ञाश्व के कारण राम-सेना से युद्ध, अनन्तर राम और सीता का सम्मिलन। यह वृत्तान्त रामकथा पद्मपुराण के पातालखंड के वृत्तान्त से बहुत कुछ मिलती-जुलती है (दे० अध्याय ५५-६८)।

(आ) मैरावणचरित (मद्रास मैनुस्क्रिप्ट कैटालॉग, डी २०८८२) अथवा हनुमद्विजय (वही, डी १२२१५)।

१८६. यह एक स्वतन्त्र रचना प्रतीत होती है फिर भी अध्यायों की पुष्पिका में इसे जैमिनि-भारत का एक अंश माना गया है। इसमें मैरावण पर हनुमान् की विजय का वर्णन अगस्त्य द्वारा राम को सुनाया जाता है। मेघनाद-वध के बाद मैरावण राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता है और हनुमान् अपने पुत्र मत्स्यराज की सहायता से मैरावण का वध करके दोनों को छुड़ाते हैं।

(इ) सहस्रमुखरावणचरित्रम् (मद्रास कैटालॉग, डी २०९८)

१८७. यह रचना जैमिनि भारत के आश्वमेधिकपर्व का एक अंश मानी जाती है। इसकी कथावस्तु उपर्युक्त अद्भुत रामायण के वृत्तान्त से मिलती-जुलती प्रतीत होती है। रावण पर सीता की विजय के विषय में एकाध और हस्तलिपियों का पता मिला है—सीताविजय (वही आर ३१४ और आर, १४८) जो वासिष्ठोत्तर रामायण का एक भाग माना जाता है और जिसमें सीता का शतमुख रावण पर विजय का वर्णन किया गया है। इस प्रकार की एक और हस्तलिपि का उल्लेख है, जिसका शीर्षक है शतमुखरावणचरित्रम् (वही आर ६४७ डी)।

सत्योपाख्यान

१८८. सत्योपाख्यान (वेंकटेश्वर प्रेस) में वाल्मीकि-मार्कण्डेय-संवाद वर्णित है। इसकी कथावस्तु से पता चलता है कि इसकी रचना अध्यात्म रामायण के बहुत बाद हुई थी जब रामकथा तथा राम-भक्ति पर कृष्ण-लीला का गहरा प्रभाव पड़ने लगा था। संक्षेप में इसका वर्ण्य विषय इस प्रकार है: राम-लक्ष्मण आदि के विष्णु-शेष-सुदर्शन और शंख के अवतार होने के उल्लेख के बाद (अध्याय १-२) मंथरा-कैकेयी-संवाद दिया गया है, जिसमें दशरथ-कैकेयी के विवाह की कथा मिलती है (अध्याय ३-९): अनन्तर मंथरा के पूर्वजन्म की कथा का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और विष्णु की आज्ञा से इन्द्र द्वारा वज्र से मारी गई थी (अध्याय १०-१५)। पूर्वार्द्ध के शेष अध्यायों (१६-४९) में राम की बाल-लीला का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं:

—देवताओ का अयोध्या मे आगमन तथा दशरथ द्वारा उनका स्वागत (अध्याय १७-२३)।

—काकभुशुण्डी का राम की रोटी (शुष्कलि) चुराना, बाद मे उनका राम से क्षमा माँगना, राम मे निश्चल भक्ति की प्रार्थना करना तथा उनके द्वारा गरुड को रामतत्व सिखलाने का उल्लेख (अध्याय २६)।

—रत्नालका और उसके पति का वृत्तान्त, अगले जन्म मे उनको नन्द और यशोदा बनने का आश्वासन (अध्याय २९-३०)।

—नवमीमाहात्म्य (अध्याय ३१-३५)।

—राम का गुह से मृगया की शिक्षा पाना (अध्याय ४३)।

उत्तरार्द्ध मे सीतास्वयवर का वर्णन किया गया है, जिसमे प्रहस्त की उपस्थिति का उल्लेख भी है। राम-सीता-विवाह के बाद उनकी तीर्थयात्रा का उल्लेख हुआ है तथा जलविहार, वनविहार, सीता की मानलीला, होलिकोत्सव आदि का शृङ्गारात्मक वर्णन किया गया है।

धर्मखण्ड

१८९. धर्मखण्ड की कई हस्तलिपियाँ मद्रास के राजकीय ओरियेंटल पुस्तकालय मे सुरक्षित हैं। यह रचना स्कन्द पुराण का एक अश मानी जाती है तथा तत्व-सग्रह रामायण (दे० ऊपर अनु० १७८) के मुख्य आधार ग्रन्थो मे से एक है। इसका रचना-काल १५-१६ वी शताब्दी प्रतीत होता है। यह एक शैव ग्रन्थ है, अत: इसकी रामकथा मे शिव को विशेष रूप से महत्व दिया गया है। वह पार्वती के साथ सीता-स्वयवर मे उपस्थित होकर राम को धनुष तोडने का आदेश देते हैं। इस रचना के कई स्थलो पर शिव और राम की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है। राम के वनवास के लिए प्रस्थान करने के पश्चात् शिव ब्राह्मण का रूप धारण कर उनसे मिलते हैं, सवाद मे राम सुस्पष्ट शब्दों मे अपने तथा शिव मे अभेद व्यक्त करते है—"शिव मा प्रतिजानीहि नावयरोरन्तर द्विज" (अध्याय ३८)। अन्यत्र कहा गया है कि राम ने हनुमान् को भेजते समय उनसे कहा—'तुम शिव के अवतार हो, मैं स्वय शिव हूँ' (अध्याय ९८)। धर्म-खण्ड की रामकथा की अन्य निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं :

—कैकेयी का पश्चात्ताप (अध्याय ३८)।

—सीताहरण का वृत्तान्त (अध्याय ८१)।

—अशोकवन मे रावण-सीता-सवाद के समय हनुमान् का प्रकट होना तथा रावण को भगा देना (अध्याय १०५)।

—मृत्यु द्वारा मायामयी सीता का रूप धारण करना (अध्याय १३०)।
इन प्रसगो का निरूपण आवश्यकतानुसार प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे किया जायेगा।

हनुमत्संहिता

१६०. हनुमत्संहिता की सवत् १७१५ की एक हस्तलिपि का उल्लेख राजेन्द्रलाल मित्र के कैटालॉग मे किया गया है (दे० भाग ७, पृ० २५०)। इस रचना का महारासोत्सव के नाम से प्रकाशन भी हुआ है (लखनऊ, सन् १६०४)।

इसमे हनुमान्-अगस्त्य-सवाद के रूप मे सरयू-तट पर राम की रासलीला तथा जलविहार का वर्णन किया गया है। विशेषता यह है कि सीता अपने शरीर से १८१०८ नारियो की सृष्टि करती हैं तथा इनके साथ रास करने के लिए राम, कृष्ण की भाँति, इतने ही रूप धारण कर लेते है। इसका विस्तार ३६० श्लोक का है।

रामकथा पर कृष्णलीला का यह प्रभाव अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। फिर भी, हनुमत्संहिता की स० १७१५ की इस हस्तलिपि से पता चलता है कि गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-काल मे ही इसका सूत्रपात अवश्य हुआ था।

बृहत्कोशल खण्ड

१६१. राजेन्द्र लाल मित्र ने बृहत्कोशल की एक हस्तलिपि (लिपि-काल स० १७१४) का विवरण दिया है (दे० वही, भाग ७, पृ० ५२), जिसे उन्होंने बेतिया (चम्पारण) मे देखा है और उसका विस्तार ३०७२ श्लोको का बताया है। स० २००१ मे लाहौर के श्री रोशनलाल अग्रवाल ने हिन्दी टीका सहित इसकी १८० प्रतियाँ छपवायी। यह हिन्दी 'रसवर्द्धिनी' टीका श्री रामवल्लभाशरण महाराज की लिखी हुई है।

वेदव्यासकृत बृहत्कोशलखण्ड ब्रह्मरामायण[1] का अंश माना जाता है और इसके पन्द्रह अध्यायो का कथानक तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है

(१) विवाह के पूर्व राम की लीला (अध्याय १–५)

प्रारम्भ मे यज्ञोपवीत-सस्कार तथा विद्याभ्यास के पश्चात् सखारास का वर्णन किया गया है। राम के सखा (जिनमे रुद्र भी शामिल हैं) स्त्री का रूप धारण कर राम के साथ रासलीला का आयोजन करते हैं (अध्याय १)। अनन्तर गोपिकाओ, देवकन्याओ तथा राजकन्याओ के साथ रास का वर्णन किया गया है। किसी अवसर पर राम को देखकर गोपियो का मन आकर्षित हुआ और वे उनको पतिस्वरूप प्राप्त करने के उद्देश्य से तप तथा पार्वती की पूजा करने लगी। पिता की आज्ञा लेकर राम शिकार करने के

१ जयपुर वाले ब्रह्मरामायण मे भुशुण्डी-गरुड-सवाद है। यहाँ पर केवल सूत-शौनक-सवाद का उल्लेख है।

वहाने यमुना तट पर पहुँचते हैं। शिव की आज्ञा से निकुभ आँधी उत्पन्न करता है, जिससे गोधन भाग जाता है तथा गोप उसका पीछा करते-करते चले जाते हैं। इतने मे राम गोपियो के पास पहुँचकर उनके साथ वसन्तोत्सव मनाते है तथा रासलीला भी करते है। इसमे लक्ष्मी, सरस्वती, उमा आदि मालिन का रूप धारण कर भाग लेती हैं। अन्त मे गोपियो को विदा कर राम अपने सखाओ को योगनिद्रा से जगाकर अयोध्या लौटते है (अध्याय २)। अगले अध्याय में दशरथ राम को दही का कर वसूल करने के लिए गोपो के यहाँ भेज देते है, जो राम को अपनी पुत्रियाँ समर्पित करते हैं। राम सबसे विवाह कर उनको अयोध्या ले आते है। अनन्तर सान्तानिक वन की लताओ से देवकन्याएँ प्रकट होकर राम के साथ विविध विलास करती है तथा अन्त मे उनकी रासलीला का भी विधान होता है (अध्याय ३)। अब देवता अयोध्या पहुँचकर राम से निवेदन करते है कि वह उनकी कन्याओ को भी विवाह मे ग्रहण करे। इसके बाद दशरथ राम को शम्बरासुर का वध करने के लिए भेज देते है। राम उसका वैजयन्त नामक पुर घेर कर उसके पुत्र का वध करते हैं तथा शम्बरासुर द्वारा हरण की हुई राज, गधर्व, किन्नर, यक्ष आदि कन्याओ को मुक्त कर सब को अयोध्या ले आते है तथा उनके साथ भी रासक्रीडा करते है (अध्याय ४-५)।

(२) राम-सीता का विवाह (अध्याय ६-७)

एक तपस्विनी से राम के कार्यो का वर्णन सुनकर अष्टवर्षीय सीता विरह से व्याकुल होने लगती है। महेश्वर जनक को स्वप्न मे दिखाई पडते है तथा परामर्श देते है कि स्वयवर का आयोजन किया जाए— जो उनका धनुष चढाने मे समर्थ हो, वही सीता का पति बनने योग्य है। बहुत से राजा असफल होकर जनक से युद्ध करते है, किन्तु पराजय के बाद वे अपनी पुत्रियो को जानकी की सखी बनने के लिए मिथिला मे ले आते हैं। सीता राम का रूप धारण कर अपनी सखियो के साथ रासलीला करती है (अध्याय ६)। नारद राम के पास जाकर सीता के वियोग का वर्णन करते है तथा उनके स्वयवर का समाचार सुनाकर चले जाते है। शिव की प्रेरणा से विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को मिथिला ले जाते है, जहाँ राम धनुष तोडकर सीता तथा कन्या-धन प्राप्त करते हैं [भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न का विवाह भी उल्लिखित है]।

(३) विवाह के पश्चात् राम की लीला (अध्याय ८-१५)

विवाह के बाद राम सीता तथा असख्य कन्याओ के साथ विश्वकर्मा-निर्मित प्रासाद मे निवास करते हैं, समय-समय पर विविध उत्सव मनाते है और वन मे जाकर रासलीला करते है। इन सब रासलीलाओं का विवरण यहाँ अनावश्यक है, क्रम इस प्रकार है—गोपकन्या, देवकन्या, गधर्वकन्या, किन्नरसुता, विद्याधरकन्या, सिद्धकुमारी,

राजकन्या, साध्यसुता, गुह्यक देवकन्या, यक्षकन्या, नागकन्या-रास-। राम-रासलीला के वर्णन मे कृष्ण की रासलीला का स्पष्ट अनुकरण किया गया है—उदाहरणार्थ, राम का बहुत से रूप धारण करना, अन्तर्द्धान हो जाना, सीता की मान-लीला आदि। अन्तिम अध्याय मे नगर की वधुएँ भी आकर राम के होलिकोत्सव मे भाग लेती हैं, दशरथ एक दूती द्वारा समझाते हैं कि पुरागनाओ के साथ विहार करना अनुचित है और राम उनको उनके घर भेज देते हैं। इस रचना मे राम की शृंगार-चेष्टाओ का खुला वर्णन किया गया है, अत. इस बात पर बल दिया जाता है कि सबो को यह रामलीला नही सुनानी चाहिए—लीलेयं नहि लोकसंग्रहपरा गुप्तेति (अध्याय १५,१८६)।

परिशिष्ट

'हिन्दुत्व' में उल्लिखित रामायण[1]

१९२. **महारामायण**

शकर-पार्वती सवाद

विस्तार—३,५०,००० श्लोक

विशेषता—कनकभवन-विहारी राम की ९९ रासलीलाओ का वर्णन ।

१९३. **संवृत रामायण**

नारद-कृत

विस्तार—२४,००० श्लोक

विशेषता—स्वायभुव-शतरूपा की तपस्या तथा दशरथ-कौशल्या के रूप मे उनका आविर्भाव ।

१९४. **लोमश रामायण**

लोमश ऋषि-कृत[2]

विस्तार—३२,००० श्लोक

विशेषता—राजा कुमुद और वीरमती के दशरथ और कौशल्या-के रूप मे जन्म लेने की कथा । जालधर शाप के फलस्वरूप रामावतार ।

१९५. **अगस्त्य रामायण**

अगस्त्य-कृत

विस्तार—१६,००० श्लोक

---

१. दे० ऊपर, अनु० १८४ ।

२. ध्यान देने योग्य है कि लोमश ऋषि का उल्लेख रामकथा के वक्ता के रूप मे अन्यत्र भी मिलता है । महाभारत मे जो प्रक्षिप्त परशुराम-तेजोभग का वर्णन पाया जाता है (दे० आगे अनु० ३५१), उसके वक्ता लोमश ही हैं । पद्मपुराण के पाताल खड मे आरण्यक का कहना है कि मैंने लोमश से रामकथा सुनी थी (दे० अध्याय ३६) । रामचरितमानस मे भी भुशुण्डी कहते हैं कि मुझे यह कथा लोमश ऋषि से मिली थी (दे० उत्तर काण्ड, ११३) । रसिक सम्प्रदाय मे एक लोमश संहिता प्रचलित है, जिसमे मुनि पिप्पलाद-लोमश का सवाद है (दे० राम-भक्ति साहित्य मे मधुर उपासना, पृ० १४८) । सत्योपाख्यान मे लोमश द्वारा अयोध्यावासियो को मंथरा की कथा सुनाने का उल्लेख है (दे० भाग १, अध्याय १०) ।

विशेषता—भानुताप अरिमर्दन की कथा तथा राजा कुन्तल और सिंधुमती के दशरथ और कौशल्या के रूप में जन्म लेने का वृत्तान्त।

१९६. मंजुल रामायण

सुतीक्ष्ण-कृत

विस्तार—१,२०,००० श्लोक

विशेषता—भानुप्रताप-अरिमर्दन की कथा तथा शबरी के प्रति राम द्वारा नवधा-भक्ति-विवरण।

१९७. सौपद्म रामायण

अत्रि ऋषि-कृत

विस्तार—६२,००० श्लोक

विशेषता—वाटिकाप्रसंग।

१९८. रामायण महामाला

शिव-पार्वती-संवाद

विस्तार—५६,००० श्लोक

विशेषता—भुशुण्डी द्वारा गरुड़-विमोह-निवारण।

१९९. सौहार्द रामायण

शरभंग ऋषि-कृत

विस्तार—४०,००० श्लोक

विशेषता—राम-लक्ष्मण के वानरी भाषा समझने और बोलने का उल्लेख।

२००. रामायण मणिरत्न

वसिष्ठ-अरुन्धती-संवाद

विस्तार—३६,००० श्लोक

विशेषता—मिथिला तथा अयोध्या में राम का वसन्तोत्सव आदि मनाना।

२०१. सौर्य-रामायण

हनुमान्-सूर्य-संवाद

विस्तार—६२,००० श्लोक

विशेषता—शुक-चरित्र तथा शुक का रजक बन जाना और इसके कारण सीता-त्याग होना।

२०२. चान्द्र-रामायण

हनुमान्-चंद्रमा-संवाद

विस्तार—७५,००० श्लोक

विशेषता—केवट की पूर्व-जन्म-कथा।

२०३. **मैन्द-रामायण**

मैन्द-कौरव-सवाद

विस्तार—५२,००० श्लोक

विशेषता—वाटिका-प्रसग

२०४ **स्वायंभुव-रामायण**

ब्रह्मा-नारद-सवाद
विस्तार—१८,००० श्लोक
विशेषता—मदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म।

२०५. **सुब्रह्म-रामायण**

विस्तार—३२,००० श्लोक।

२०६ **सुवर्चस रामायण**

सुग्रीव-तारा-सवाद

विस्तार—१५,००० श्लोक

विशेषता—सुलोचना की कथा। धोबी-धोबिन का सवाद तथा रावण के चित्र के कारण शान्ता की चुगली। शान्ता के प्रति सीता का शाप तथा उसको पक्षी-योनि की प्राप्ति। महारावण-वध।

२०७ **देव-रामायण**

इन्द्र-जयन्त-सवाद

विस्तार—१,००,००० श्लोक।

२०८. **श्रवण-रामायण**

इन्द्र-जनक-सवाद

विस्तार—१,२५,००० श्लोक

विशेषता—मथरा की उत्पत्ति। चित्रकूट मे भरत की यात्रा के समय जनक का आगमन।

२०९ **दुरंत रामायण**

वसिष्ठ-जनक-सवाद

विस्तार—६१,००० श्लोक

विशेषता—भरत की महिमा का वर्णन

२१०. **रामायण-चम्पू**

शिव-नारद-सवाद

विस्तार—१५,००० श्लोक

विशेषता—शीलनिधि राजा के यहाँ स्वयंवर।

अध्याय ११

संस्कृत ललित साहित्य में रामकथा

३३३. [illegible] है कि [illegible]) । बृहद्धर्मपुराण में भी [illegible] है :

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ।

[illegible]

बृहद्धर्मपुराण के [illegible] है [illegible] :

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] :

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible]

बृहद्धर्मपुराण के [illegible] है । [illegible] न केवल संस्कृत साहित्य [illegible] के [illegible]

व्यापक हो सकी[1]। कवियो ने स्वयं इस बात का अनुभव किया है। प्रसन्न-राघव की प्रस्तावना मे नट सूत्रधार से पूछता है—'ये सब कवि क्यो रामचन्द्र का पुन:-पुन: वर्णन करते है।' इस पर सूत्रधार कहता है कि यह कवियो का दोष न होकर गुणो का दोष है, जिन्होंने राम ही मे अपने लिये एकमात्र आश्रय बनाया है, जिसके फलस्वरूप कवित्वरूपी वृक्ष रामप्रसंगरूपी फल के बिना किसी महत्व का नही हो पाता है।

नट—कथ पुनरमी कवय सर्वे रामचन्द्रमेव वर्णयन्ति।

सूत्रधार—नाय कवीना दोषः। यत·

स्वसूक्तीना पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां
कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुणः।
यदेतैर्निश्शेषैरपरगुणलुब्धैरिव जग-
त्यसावेकश्चक्रे सततसुखसंवासवसतिः॥ १२॥

अपि च। भो

बीजं यस्य चिरार्जितं सुचरितं प्रज्ञा नवीनोऽङ्कुरः
काण्डः पंडितमंडलीपरिचयः काव्यं नवः पल्लवः।
कीर्तिः पुष्पपरम्परा परिणतः सोऽयं कवित्वद्रुमः
किं वन्ध्यः क्रियते विना रघुकुलोत्तंसप्रशंसाफलम्॥ १३॥

क—महाकाव्य

२१२ रामकथा सम्बन्धी प्राचीन महाकाव्यो मे कथानक के दृष्टिकोण से कोई महत्वपूर्ण परिवर्त्तन नही मिलता। उनकी एक विशेषता यह है कि उनमे वाल्मीकि की रचना की अपेक्षा शृंगार को अधिक स्थान दिया गया है। पहले यह शृंगारिक वर्णन राक्षसो के विषय मे किया गया है (दे० सेतुबंध, सर्ग १०, भट्टिकाव्य, सर्ग ११)। लेकिन आगे चलकर कुमारदास ने कुमारसभव के अनुकरण पर राम-सीता के सभोग शृंगार का वर्णन भी किया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है। अपेक्षाकृत अर्वाचीन राम काव्यो मे भी शृंगारात्मक वर्णनो का अभाव नही है। उदाहरणार्थ लक्ष्मणाध्वारि कृत रामविहारकाव्यम् (१२ सर्ग, १७ वी शताब्दी) के

१ रामकथा-सम्बन्धी काव्यो के रचनाकाल तथा उनकी साहित्यिक समालोचना के लिए दे०
एम्० विंटरनित्स · हि० इ० लि०, भाग ३।
एस० के० दे . हिस्टरी ऑव संस्कृत काव्य लिटरेचर।
ए० बी० कीथ · हि० स० लि० और संस्कृत ड्रामा।

दसवें सर्ग में सीता तथा राम के उद्यान-विहार तथा ग्यारहवें सर्ग में उनकी जलक्रीड़ा तथा मधुपान का वर्णन किया गया है। धनंजय-कृत राघवपाण्डवीय के १५ वें सर्ग में कपि-सेना के शृंगार तथा जलक्रीड़ा का चित्रण किया गया है।

कालिदासकृत रघुवंश (४०० ई० के लगभग)

२१३. रघुवंश के नवें सर्ग में दशरथ के राज्य के वर्णन के अन्तर्गत मुनिपुत्र-वध का उल्लेख मिलता है (श्लोक ७३-८२)। अनन्तर समस्त राम-चरित का छः सर्गों में वर्णन किया गया है (दे० सर्ग १०-१५); कथानक वाल्मीकिकृत रामायण पर निर्भर है। सीतात्याग, लवणवध, कुश-लव-जन्म, शम्बूक-वध, लक्ष्मण-मरण तथा स्वर्गारोहण के उल्लेख से स्पष्ट है कि कालिदास प्रचलित उत्तरकांड की कथावस्तु से परिचित थे (दे० सर्ग १४-१५)। अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा तो मिलती है लेकिन कहीं भी सीता के लक्ष्मी के अवतार होने की ओर निर्देश नहीं किया गया है। काकवृत्तान्त का वृत्तान्त भरत के चित्रकूट से चले जाने के बाद दिया गया है। वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख भरत के आने के पहले किया गया है। अहल्या के विषय में कहा गया है कि वह वास्तव में शिला बन गई थी। वाल्मीकि के अनुसार रावण ने ब्रह्मा को अपने शीर्षों को समर्पित कर दिया था। कालिदास के अनुसार उसने शिव को उन्हें समर्पित किया था। शेष कथा वाल्मीकि से भिन्न नहीं है।

रावणवह अथवा सेतुबन्ध (५५०-६०० ई०)

२१४. महाराष्ट्री प्राकृत में लिखित रावणवह[1] की रचना राजा प्रवरसेन अथवा उनके दरबार के किसी कवि द्वारा हुई थी। इसका रचनाकाल प्रायः छठीं शताब्दी ई० माना जाता है। डॉ० सुशील कुमार दे उक्त रचना को पाँचवीं शताब्दी की मानते हैं। इसके रचयिता के विषय में एक भ्रामक धारणा प्रचलित है कि कालिदास ने उसे लिखा था। प्रवरसेन प्रायः काश्मीर के राजा माने जाते हैं। यद्यपि यह असंभव नहीं कहा जा सकता है कि वाकाटक वंश के प्रवरसेन द्वितीय (शासनकाल ५ वीं शताब्दी का मध्य) सेतुबन्ध के रचयिता हैं, किन्तु इसके विरोध में जो तर्क दिए जाते हैं, वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।[2]

रावणवह के पन्द्रह सर्गों में वाल्मीकिकृत युद्धकाण्ड की कथावस्तु का अलंकृत शैली में वर्णन मिलता है। कथानक में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं किया गया है।

---

१. राजकमल प्रकाशन ने डॉ० रघुवंश का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है।

२. दे० दि क्लॉसिकल एज, पृ० १८२-१८४।

समुद्र-बन्धन के वर्णन मे मछलियो के द्वारा सेतु को नष्ट करने का उल्लेख है। आगे चलकर इस घटना के विषय मे अनेक कथाओ की कल्पना कर ली गई है (दे० अनु० ५७८)। रावणवह की एक अन्य विशेषता यह है कि 'कामिनीकेलि' नामक दसवे सर्ग मे राक्षसियो का सभोग वर्णन मिलता है। इसका मूलस्रोत सभवतः पउमचरियं है। बाद मे इस वर्णन का अनुकरण भट्टिकाव्य, जानकी-हरण, अभिनन्दन कृत रामचरित, कम्बकृत तमिल रामायण, रामलिंगामृत तथा जावा के प्राचीनतम रामायण आदि मे किया गया है (दे० आगे अनु० ६११)।

भट्टिकाव्य अथवा रावणवध (५००-६५०)

२१५ भट्टिकाव्य की रचना कच्छ मे छठी अथवा सातवी शताब्दी मे हुई थी। इसके २२ सर्गो मे व्याकरण के नियमो के निरूपण के साथ-साथ वाल्मीकिकृत रामायण के प्रथम छः काडो की कथावस्तु का किंचित् परिवर्तन सहित वर्णन किया गया है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है.

दशरथ के शैव होने का उल्लेख (सर्ग १,३)।

पुत्रेष्टि-यज्ञ मे कोई देवता प्रकट नही होते वरन् दशरथ की पत्नियाँ हुतोच्छिष्ट खाती है (सर्ग १, १३)।

बला और अतिबला के स्थान पर जया तथा विजया नामक विद्याओ का उल्लेख है (सर्ग २, २१)।

केवल राम तथा सीता के विवाह का उल्लेख किया गया है (सर्ग २,४३)।

राम तथा लक्ष्मण दोनो खरदूषण तथा १४,००० राक्षसो का वध करते है (सर्ग ३, ३३)।

लक्ष्मण का सीता को शाप देना (सर्ग ५,६०)।

सीता-हरण के पश्चात् राम पहले-पहल जटायु से मिलते हैं (सर्ग ६, ४१)।

राक्षसियो का सभोग-वर्णन (सर्ग ११)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार विभीषण की माता उससे अनुरोध करती है कि वह रावण को समझावे (सर्ग १२, १), रावण की केवल एक ही सभा का वर्णन है, जिसमे रावण विभीषण पर पाद-प्रहार करता है (सर्ग १२,७६)।

ब्रह्मा के स्थान पर शिव राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते हैं (सर्ग २३, १६)।

जानकीहरण (८०० ई० के लगभग)

२१६ सम्पूर्ण जानकीहरण बहुत समय तक अप्राप्य था। अब वह हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो गया है (मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद १९६७)। इस ग्रन्थ की

पुष्पिका में कवि का नाम नहीं है। उसके पिता के विषय में कहा है कि उनका नाम मानित था और कि वह लङ्कानरेश कुमारमणि का सेनानी था। कवि बचपन से व्याधिग्रस्त और अनाथ था क्योंकि उसका पिता युद्ध में मारा गया था। सिंहलद्वीप की एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन दंतकथा के अनुसार कुमारदास छठी शताब्दी ई० में वहाँ के राजा थे। आधुनिक समालोचक इस कथा पर विश्वास न रखकर जानकीहरण के रचयिता को आठवीं शताब्दी के अन्त का और नवीं शताब्दी के प्रारम्भ का कवि मानते हैं। जानकीहरण की कथावस्तु वाल्मीकिकृत रामायण के प्रथम छः काडों पर निर्भर है। कथानक में अहल्या के शिला (सर्ग ६, १४) बन जाने के अतिरिक्त कोई अन्य परिवर्तन नहीं किया गया है किन्तु अन्धमुनि-पुत्र का वध प्रथम सर्ग में वर्णित है (दे० आगे, अनु० ४३३)। यद्यपि केवल राम के विवाह का वर्णन किया गया है किन्तु अन्य भाइयों के विवाह का भी निर्देश मिलता है (दे० सर्ग ६)। प्रथम सर्ग में दशरथ-राज्य-वर्णन के अन्तर्गत उनके हिमालय में मृगया खेलने तथा मुनि-पुत्र का वध करने का किंचित् विस्तार सहित वर्णन किया गया है (दे० सर्ग १, ४५-६०)। इस रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके २० सर्गों में शृङ्गारात्मक वर्णनों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। उदाहरणार्थ : दशरथ और उनकी पत्नियों के विहार, जलक्रीड़ा आदि का वर्णन (सर्ग ३); राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वर्णन (सर्ग ७, १-३४), मिथिला में विवाह के पश्चात् राम तथा सीता का संभोगवर्णन, जिसमें कुमार-संभव का प्रभाव स्पष्ट है (समस्त सर्ग ८); सेतुबंध के अनुकरण पर युद्ध के पूर्व राक्षसों की केलि का वर्णन (सर्ग १६)।

अभिनन्दकृत रामचरित (नवीं शताब्दी)

२१७. गौडीय पालवंश के युवराज हारवर्ष की प्रेरणा से अभिनन्द ने नवीं शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध में रामचरित की रचना की थी। इसके ३६ सर्गों में राम-लक्ष्मण के प्रस्रवण पर्वत के वर्षा-निवास (दे० रामायण ४, २७) से कुम्भ-निकुम्भ-वध तक (दे० वही ६, ७६) की वाल्मीकीय रामकथा का वर्णन मिलता है। भीम नामक कवि ने चार सर्गों का परिशिष्ट लिखकर युद्धकाड की कथावस्तु पूरी की है। इस राम-चरित में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

वर्षा ऋतु के पश्चात् सुग्रीव अपने आप राम के पास आता है और लक्ष्मण को भेज देने की आवश्यकता नहीं होती (सर्ग ५)।

अभिज्ञानस्वरूप राम हनुमान् को अंगूठी के अतिरिक्त एक नूपुर और स्तनोत्तरीय भी देते हैं तथा दिलीप, रघु, अज, दशरथ की वंशावली भी सिखलाते हैं (सर्ग ८)।

हनुमान् आदि के गुफा में प्रवेश करने की वाल्मीकिकृत किष्किन्धाकांड की कथा

मे (दे० रा० ४, ५०-५२) बहुत कुछ परिवर्तन किया गया है। कदरा के प्रवेश-पथ पर सोते हुए दुर्दम नामक राक्षस का अगद द्वारा वध किया जाता है। भीतर जाकर हनुमान् एक वानर-वरसुन्दरी का प्रेम-प्रस्ताव दो बार अस्वीकार करते हैं। स्वयप्रभा के गुफा मे निवास करने का कारण भी रामायण मे दिये हुए वृत्तान्त से कुछ भिन्न है (सर्ग १०-१२)

रावण के संभोग का भी विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० 'दशाननपानकेलि-वर्णनम्' नामक १८वां सर्ग)।

वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ के अनुसार रावण का विभीषण पर पाद-प्रहार करने का तथा विभीषण के राम की शरण लेने के पहले अपने भाई कुबेर के पास जाने का उल्लेख हुआ है (दे० सर्ग २३, ८७ तथा सर्ग २४, १३५)।

रामायणमंजरी तथा दशावतारचरित (११वी श० ई०)

२१८. काश्मीर-निवासी क्षेमेन्द्र ने १०३७ ई० मे वाल्मीकिकृत रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ का ५३८६ श्लोको मे सक्षेप किया था और अपनी रचना का नाम **रामायणमंजरी** रखा था। इसमे क्षेमेन्द्र ने किसी मौलिकता का प्रदर्शन नही किया है, लेकिन **दशावतारचरितम्** नामक अपने एक अन्य ग्रथ मे, जिसकी रचना १०६६ ई० मे हुई थी, उन्होंने २९४ छन्दो के रामावतार-वर्णन मे रामकथा का एक नवीन रूप प्रस्तुत किया था।

इसकी विशेषता यह है कि समस्त कथा का वर्णन रावण के दृष्टिकोण से किया गया है। प्रारम्भ मे रावण की तपस्या, वरप्राप्ति, अत्याचार आदि का कुछ चित्रण मिलता है (छन्द १-६९)। अनन्तर रावण लक्ष्मी के अवतार पद्मजा सीता को पुत्री स्वरूप ग्रहण करता है (दे० छन्द ७०-१०४ और आगे अनु०४१८)।

१०५वे छन्द से रामायण की कथावस्तु का प्रारम्भ होता है। शूर्पणखा रावण के पास आकर अपने विरूपीकरण तथा खरदूषण-वध का वृत्तान्त सुनाती है। इस पर रावण मारीच के यहाँ जाकर उससे जन्म से लेकर वनवास तक की विष्णुअवतार राम की कथा सुनता है (१०५-१३०)।

अनन्तर रावण मारीच की सहायता से सीता को हर लेता है (१३१-१५१)। इसके बाद सुकेतु नामक गुप्तचर मारीच-वध से लेकर (सुग्रीव-सख्य, वानरो का प्रेषण, हनुमान् का समुद्रलघन, अशोकवाटिका-भजन आदि) लकादहन तक की कथा रावण को सुनाता है (१५२-१९४)।

सुकेतु तथा विभीषण, दोनो रावण से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते हैं। विभीषण रावण की दुर्बुद्धि देखकर राम की शरण लेता है। अनन्तर रावण

एक गुप्तचर से विभीषण-अभिषेक, सेतुबन्ध तथा राम के त्रिकूटागमन की कथा (२०७-२१३) तथा प्रतिहारपति से नागपाश द्वारा राम-लक्ष्मण के बन्धन तथा कुम्भकर्ण को जगाने का वृत्तान्त सुनता है (२१४-२२३)। प्रतिहारपति-रावण-संवाद के बाद कवि द्वारा शेष राम-चरित का वर्णन किया गया है। कुम्भकर्ण-वध से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की समस्त वाल्मीकीय कथा संक्षेप में दी गई है।

उदारराघव (१४ वीं श० ई०)

२१९. उदारराघव की रचना १४ वीं श० ई० के मध्य शाकल्यमल्ल नामक कवि द्वारा हुई थी। कवि के अन्य नाम भी प्रचलित हैं—मल्लाचार्य, कविमल्ल और मल्लयाचार्य। इस रचना का विस्तार १८ सर्गों का बताया जाता है लेकिन इसके केवल नौ सर्ग सुरक्षित तथा प्रकाशित हैं, जिनमें शूर्पणखा-विरूपीकरण तक का वर्णन मिलता है। कथानक वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

अवतारवाद के विषय में कुछ परिवर्तन किया गया है। राम विष्णु के पूर्णावतार माने गए हैं तथा लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमशः शेष-सुदर्शन-शंख के अंशावतार। सीता वन-गमन के लिए राम से अनुरोध करते हुए कहती हैं कि मैंने बहुत से रामायण सुने हैं लेकिन उनमें राम कहीं भी सीता के बिना वन नहीं गये हैं :

रामायणानीह पुरातनानि पुरातनेभ्यो बहुशः श्रुतानि।
न क्वापि वैदेहसुतां विहाय रामो वनं यात इति श्रुतं मे ॥
(सर्ग ५, ४८)

सारी रचना की शैली कृत्रिम और अलंकृत है तथा इसमें वाल्मीकि के काव्य की अपेक्षा शृंगार को अधिक स्थान दिया गया है, उदाहरणार्थ—मिथिला की स्त्रियों का वर्णन (सर्ग ३); वनवास के समय वनविलास का प्रसंग (सर्ग ६, ३३); शूर्पणखा का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४६३)।

उत्तरकालीन महाकाव्य

२२०. पंद्रहवीं शताब्दी से लेकर बहुत सी रचनाओं का उल्लेख मिलता है जो अधिकांश अप्रकाशित ही हैं। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इन परवर्ती काव्यों का कथानक की दृष्टि से कोई विशेष महत्त्व नहीं है। वामन भट्टबाण (अभिनव बाणभट्ट) का रघुनाथचरित (३० सर्ग) १५वीं शताब्दी का है। रामपाणिवादकृत राघवीय (२० सर्ग) अठारहवीं श० ई० की रचना है और अड्यार लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित है। १८०० ई० के लगभग रघुनाथ उपाध्याय ने रामविजय महाकाव्य लिखा, जो १९३२ ई० में वाराणसी में प्रकाशित भी हुआ था। त्रिवेन्द्रम संस्कृत सीरिज़ में प्रकाशित

रघुवीरचरित (१७ सर्ग) का रचयिता अज्ञात है।[1] उदाहरणार्थ यहाँ पर चार अर्वाचीन रचनाओ की कथावस्तु का परिचय दिया जाता है।

२२१. चक्रकविकृत **जानकी-परिणय**[2] (१७ वी श० ई०) मे वाल्मीकीय बालकाण्ड के अनुसार दशरथ-यज्ञ से लेकर परशुराम-तेजोभग तक की प्रधान घटनाओ का ८ सर्गों मे वर्णन किया गया है। अहल्या के शिला बन जाने के उल्लेख के अतिरिक्त कथानक मे कोई भी परिवर्त्तन नही किया गया है। छठे सर्ग मे दशरथ की मिथिला-यात्रा के वर्णन मे उनकी विलासक्रीडाओ का किंचित् विस्तार सहित चित्रण किया गया है। जानकीहरण तथा कम्ब-कृत तमिल रामायण मे भी दशरथ की इस यात्रा का विस्तृत वर्णन मिलता है।

२२२ **रामलिंगामृत** की रचना बनारस-निवासी अद्वैत नामक कवि द्वारा सन् १६०८ ई० मे हुई थी।[3] हिन्दी साहित्य के दृष्टिकोण से इसका महत्व यह है कि इसकी रचना उस समय हुई थी जब गोस्वामी तुलसीदास वाराणसी मे विद्यमान थे। अत रामलिंगामृत की कथावस्तु अपेक्षाकृत विस्तार से दी जाती है।

सर्ग १—उपोद्घात

मगलाचरण के पश्चात् गोकुल की दो गोपिकाओ का सवाद उद्धृत है। दोनों मे से एक का जन्म रघुकुल मे हुआ था, जिससे उसे रामकथा की विशेष जानकारी है। अपनी सखी के अनुरोध से वह रघुवशीय गोपिका राम-चरित का वर्णन करती है (१-२४)। कथानक रावण-चरित से प्रारम्भ होता है। जय-विजय भृगु द्वारा दिए हुए शाप के फलस्वरूप राक्षसयोनि प्राप्त कर रावण तथा कुभकर्ण बन जाते है। प्रह्लाद के विभीषण बन जाने का भी उल्लेख है। अनन्तर रावण तथा कुभकर्ण की शिवाराधना और वरप्राप्ति तथा देवताओ द्वारा विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना का वर्णन मिलता है (२५-६४)।

सर्ग २—रामबाललीला (१-७०)।

रामादि भाइयो का जन्म, जातकर्म, स्तनपान, राम का अपनी माता को अपना विश्वरूप दिखलाना, बाललीला, वनक्रीडा, अध्ययन, यज्ञोपवीत-सस्कार तथा विश्वामित्र के राम और लक्ष्मण को ले जाने का वर्णन।

---

१ दे० सुशील कुमार दे (हिस्टरी ऑव सस्कृत लिटरेचर, पृ० ६३०)। डॉ० आप्टे मल्लिनाथ को इसका रचयिता मानते है।

२. त्रिवेन्द्रम सस्कृत सीरिज (सन् १६१३) में प्रकाशित।

३. इसकी हस्तलिपि लन्दन मे सुरक्षित है। दे० इडिया ऑफ़िस कैटालॉग नं० ३६२०।

सर्ग ३—रावणपराभव (१-६४)

दोनो भाइयो का विश्वामित्र के साथ सीतास्वयवर मे पहुँचना, सीता-सखियो द्वारा राम के सौन्दर्य का वर्णन, राजाओ, देवताओ तथा राक्षसो की उपस्थिति, रावण का धनुष को चढाने का प्रयत्न, राम द्वारा धनुर्भंग।

सर्ग ४—सीतास्वयंवर (१-१०३)

दशरथ के कौशल्यादि के साथ आने के बाद विवाहोत्सव का वर्णन दिया गया है। राम को देखने की स्त्रियो की उत्सुकता के वर्णन मे कालिदास आदि कवियो का अनुकरण किया गया है। उदाहरणार्थ एक शार्दूलविक्रीडित छन्द उद्धृत किया जाता है

काचिन्मगलघोषहृष्टहृदया गेहात्सखीसवृत्ता
व्यग्रा व्यस्तसमस्तभूषणगणान्सीघ्रं[1] दध राध्वगा
सीतारामसुखारविंद-ज-रसोन्मत्ता गलन्मालती
केशे कर्णतिका चलत्कुचयुगा द्वारोर्ध्वभागे स्थिता ॥ ८६॥

इन्द्र आदि देवगण के आगमन तथा इन्द्र की आज्ञा से विश्वकर्मा द्वारा निर्मित एक दिव्य नगर का उल्लेख है, जिनमे लक्ष्मी सीता को रामावतार का रहस्य बताती हैं।

सर्ग ५—रामारण्यगमन (१-६३)

मिथिला से प्रस्थान तथा मार्ग मे परशुराम तेजोभग के वर्णन के बाद राम की अवस्था १५ वर्ष की तथा जानकी की ६ वर्ष की बताई जाती है, यद्यपि चौथे अध्याय मे सीता की १६ वर्ष की अवस्था का उल्लेख हुआ था। अनन्तर वाल्मीकि के अनुसार राम के निर्वासन का वर्णन किया गया है (२५-६३)।

सर्ग ६— रामारण्यगमन (१-८१)

इसमे भगवान् माया-मनुष्य हरि (छन्द ४) के पचवटी मे निवास का वर्णन है, जहाँ खग, मृग, व्याघ्र आदि अपने 'स्वभाव वैर' का परित्याग कर रहते थे (छन्द ५)।

शूर्पणखा के विरूपीकरण के उल्लेख के बाद नारद द्वारा रावण के पास जाकर सीता के सौंदर्य के वर्णन की कथा मिलती है, जिसके फलस्वरूप रावण मारीच की सहायता से सीता का हरण करता है। सीता की खोज के वर्णन मे शिलामयी अहल्या का उद्धार और केवट के राम-चरण धोने के आग्रह की कथा दी गई है। कबधवध के उल्लेख के बाद सीता को प्राप्त करने के लिए राम की शिव-पूजा का वर्णन किया गया है :

सीतासंगमनार्थाय रामो लिंगस्य पूजनं।
चक्रे तेन महादेव सीताशुद्धि चकार ह ॥ ७६ ॥

---

१ शीघ्रं के स्थान पर 'सीघ्र' ही लिखा है।

अन्त मे वानरो से राम के सख्य करने का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ७—रामविभीषणदर्शन (१-६२)

इसमे हनुमान सीता के पास जाकर उनको एक अँगूठी के अतिरिक्त राम का एक पत्र देते हैं। लकादहन के उल्लेख के बाद हनुमान् राम को सीता का समाचार देते हैं। अनन्तर अगद के दूतकार्य का वर्णन किया गया है, जिसमे महानाटक के रावण-अगद-सवाद का अनुकरण स्पष्ट है। अन्त मे सेतुबध तथा विभीषणागमन का उल्लेख किया गया है।

सर्ग ८—युद्धकाड (१-६१)

इसमे राक्षसो की केलि के वर्णन के बाद अहीमहीरावण राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाते है। हनुमान् मकरध्वज की सहायता से दोनो को छुडाते है।

सर्ग के अन्त मे कुम्भकर्ण-वध, लक्ष्मण को शक्ति लगने का तथा लक्ष्मण-इन्द्रजित्-युद्ध का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ९—अहीरावणमहीरावणवध (१-४५)

इस सर्ग की कथावस्तु शीर्षक के अनुसार नही है, इसमे सुलोचना की कथा तथा युद्ध के लिए रावण के प्रस्थान का वर्णन मिलता है।

सर्ग १०—शिवलिंग वर्णन (१-८३)

रणक्षेत्र मे राम को देखने पर रावण का एक विस्तृत भाषण दिया गया है (१-३५), जिसमे वह राम को राक्षसवश का नाश करने के लिए विष्णु का अवतार मानता है, विष्णु द्वारा वध किये जाने के कारण अपने भाग्य की प्रशसा करता है, राम द्वारा की हुई शिवपूजा को उनकी विजय का कारण मानता है और साथ-साथ रामनाम के सामर्थ्य का वर्णन करता है, जिसके स्मरण मात्र करने से वानरसेना समुद्र को पार करने के समर्थ हो सकी।

अनन्तर राम रावण को अपना शिव-रूप दिखलाते हे तथा शिवलिंग का वर्णन करते है। रावण के सर्वत्र राम के रूप को देखने का भी उल्लेख हुआ है (६४)।

सर्ग ११—रावणवध (१-८१)

रावण-वध के बाद सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नही है, लेकिन रावण-वध सुनकर सीता के आनन्द तथा मदोदरी के विलाप का उल्लेख किया गया है, अनन्तर विभीषण के अभिषेक का वर्णन मिलता है।

सर्ग १२—रामराज्याभिषेक (१-७५)

प्रारम्भ मे राम आदि की अयोध्या-यात्रा का और अनन्तर राम के आगमन से अयोध्यावासियो के आनन्द का वर्णन किया गया है। कैकेयी राम से मिलकर कहती है

कि देवेन्द्र की प्रेरणा से मैंने आपको रावण का वध करने के लिए वन भेजा था। सर्ग के अन्त मे राम का अभिषेक वर्णित है।

सर्ग १३—श्री जानकीरामक्रीडाह्निक (१-५२

राम और सीता के संभोगवर्णन के बाद (१-२०) प्रातःशृंगार, भोजन आदि का उल्लेख किया गया है। सभा मे नारद राम की स्तुति करते हैं

श्रीराम जगदाधार ब्रह्मानंद सुखप्रद।
त्वन्नामस्मरणेनैव तरिष्ये भवसागरं।

अन्त मे गर्भवती सीता की दोहद का उल्लेख है।

सर्ग १४—३८ छन्दों के इस सर्ग मे (जिसका कोई नाम नहीं रखा गया है) वाल्मीकि आश्रम मे कुश-लव के जन्म और शिक्षा का वर्णन है। (सीता-त्याग का उल्लेख नही है)। नारद से समाचार पाकर राम सेना-सहित आश्रम जाते है तथा युद्ध के बाद सीता और कुश-लव के साथ अयोध्या लौटते है (दे० आगे अनु० ७४६)।

सर्ग १५—कुम्भगर्भवध (१-३४)

इसमे सीता द्वारा कुम्भकर्ण के पुत्र कुंभगर्भ के वध का वर्णन किया गया है (दे० आगे अनु० ६४१)।

सर्ग १६—श्रीरंगवर्णन (१-४१)

इस सर्ग मे श्रीरंग-मूर्ति की कथा के अतिरिक्त राम द्वारा उसके पूजन का वर्णन किया गया है।

सर्ग १७—श्रीरामस्य स्वरूपवर्णन (१-८०)

वसिष्ठ की आज्ञा से राम द्वारा अश्वमेध-यज्ञ, जिसमे देवता आकर राम तथा सीता की स्तुति करते है (१-३३)। अनन्तर सरयूतीर्थ माहात्म्यसहित राम-सीता और अयोध्यासमाज का परलोकगमन वर्णित है (३४-५६)। अन्त में अद्वैतमंजरी मिलती है, जिसमें जीव, ब्रह्म, ईश्वर, माया आदि का निरूपण किया गया है (५७-८०)।

सर्ग १८—खिल (१-६०)

इसमें रामकथा नही मिलती। रामपूजा-विधि तथा रामकीर्ति के निरूपण के पश्चात् राम-शंकर की तथा राम-कृष्ण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है।

अन्त में रचना-काल (शक १५३०), ग्रन्थकार (अद्वैत) आदि का उल्लेख है।

२२३. राघवोल्लास[1] महाकाव्य की रचना भी एक अद्वैत नामक संन्यासी द्वारा वाराणसी मे ही हुई थी; संन्यास लेने के पूर्व कवि का नाम मुरारि था (दे० १२, १००)।

---

१ दे० राघवप्रसाद पांडेय, तुलसीदासकालीन राघवोल्लास काव्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ, पृ० ७०२।

संभव है यह रामलिंगामृत के रचयिता से अभिन्न हो। इस महाकाव्य की हस्तलिपि लंदन में सुरक्षित है (दे० इण्डिया ऑफिस कैटालॉग, न० ३६१५)। इसके तीन प्रारंभिक सर्ग अप्राप्य है। शेष नौ सर्गों में लगभग १००० छन्द है (प्रायः इन्द्रवज्रा)। लिपिक का नाम है मानसाहि कायस्थ तथा लिपि-काल सन् १६२५ ई०। इस काव्य की विशेषता है कवि की कोमल रामभक्ति जो इसे राम का सौंदर्य बारम्बार अंकित करने के लिए प्रेरित करती है तथा राम की स्तुति प्रायः सब पात्रों द्वारा करवाती है। रामचरितमानस की भाँति मर्यादित शृंगार इस काव्य की एक अन्य विशेषता है—राम-सीता-पूर्वानुराग का वर्णन करते हुए कहीं भी सीता का नखशिख वर्णन नहीं दिया गया है। कथानक राम-जन्म से प्रारंभ होकर विवाह के पश्चात् अयोध्या में प्रत्यागमन पर समाप्त हो जाता है।

सर्ग ४—राम का जन्म; रामसौंदर्य-वर्णन, चतुर्भुज-दर्शन। संक्षिप्त बाललीला।

सर्ग ५—विश्वामित्र द्वारा रामावतार की व्याख्या। दशरथ की मूर्छा, राम द्वारा शरीर की नश्वरता का उपदेश।

सर्ग ६—ताडका, सुबाहु, मारीच। विश्वामित्र द्वारा राम-नाम-महिमा का वर्णन। पाषाणभूता अहल्या का उद्धार।

सर्ग ७—अहल्या द्वारा राम की स्तुति। जनकपुर में आगमन।

सर्ग ८—सीता का पूर्वानुराग (दे० आगे अनु० ४०३), धनुर्भंग।

सर्ग ९—दशरथ का स्वागत।

सर्ग १०-११—विवाह।

सर्ग १२—कौतुकलीला (सीता राम के ललाट पर केसर का तिलक लगाती है), विदाई, परशुराम का तेजोभंग, अयोध्या में आगमन

२२४ मोहन स्वामी कृत **रामरहस्य** अथवा **रामचरित** की एक हस्तलिपि लंदन में सुरक्षित है (लिपिकाल सन् १७५० ई०, दे० इण्डिया ऑफिस कैटालॉग, न० ३६१७)। इस रचना के तेरह क्रीडोपकरणों की अधिकांश सामग्री ज्यों-की-त्यों अध्यात्म-रामायण से उद्धृत की गई है। द्वितीय उपकरण में सुमंत्र द्वारा स्वायंभू मनु तथा उनकी पत्नी की तपस्या का वर्णन मिलता है, जिसके फलस्वरूप वे तीनों जन्मों में विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त करने का वरदान पाते हैं। दोनों अब दशरथ-कौशिल्या है और आगे चलकर वसुदेव-देवकी तथा कलियुग में हरिव्रत-देवप्रभा के रूप में जन्म लेंगे। सूर्यवंश-वर्णन से लेकर रामचन्द्र स्वर्गारोहण तक के इस कथानक में कहीं भी मौलिकता का नाम नहीं है। विशेषता यह है कि विवाह के पश्चात् अयोध्या में पहुँचकर नवदम्पति का संभोग-वर्णन के रूप में महानाटक का समस्त द्वितीय अंक उद्धृत किया गया है। अंगद के कार्य-वर्णन में भी महानाटक से एक विस्तृत अंश (अंक ८, ४-२०) ले लिया गया है।

ख—नाटक

२२५ रामकथा को लेकर नाटको के अभिनय की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका निर्देश नवें अध्याय में उद्धृत किये हुए हरिवंश के एक श्लोक मे मिलता है (दे० अनु० १४५)। इन प्राचीन नाटको का लोप हुआ है, लेकिन आगे चलकर भी राम सम्बन्धी नाटको की रचना होती रही। यह इस परिच्छेद मे वर्णित सामग्री से स्पष्ट है।[1] महाकाव्यो की अपेक्षा रामकथा सबधी नाटको मे कथानक के दृष्टिकोण से अधिक परिवर्तन किया गया है तथा अनेक नये पात्रो की सृष्टि भी की गई है, जिससे रामायण की आधिकारिक कथावस्तु (वनवास, सीताहरण, रावणवध) को अपेक्षाकृत कम स्थान मिल सका है।[2] दसवी शताब्दी के पूर्व के नाटको मे से केवल उत्तररामचरित और कुन्दमाला मे उत्तरकाण्ड सबधी सामग्री का वर्णन किया गया है और दोनो मे नाटक को सुखान्त बनाने के लिए सीता के भूमिप्रवेश की कथा बदल दी गई है। रामकथा का यह महत्वपूर्ण परिवर्तन कथासरित्सागर, जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण तथा आनन्द-रामायण मे भी मिलता है। छलितराम और रामानन्द नामक नाटक भी उत्तररामचरित से सबध रखते हैं किन्तु दोनो अप्राप्य हैं। प्रतिमानाटक, मैथिलीकल्याण, दूताङ्गद, उन्मत्त-राघव जैसे नाटको को छोडकर प्राय. सब अन्य रामकथा विषयक नाटक रामाभिषेक पर ही समाप्त हो जाते है।

प्रत्येक नाटक की विशेषताओ का अलग-अलग विवरण किया जायेगा। यहाँ राम-कथा सम्बन्धी नाटको की सामान्य विशेषताओ की ओर निर्देश करना है। रामायण की आधिकारिक कथावस्तु को अपेक्षाकृत कम महत्व मिलने के अतिरिक्त इन नाटको मे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं :

(१) विस्तृत वर्णन और सवाद, जिससे कही-कही नाटक की गति मे रुकावट पडी है।

(२) आदर्शवाद का प्रभाव। उदाहरणार्थ : वालिवध का महावीरचरित, अनर्घराघव तथा महानाटक मे परिवर्तित रूप, प्रतिमानाटक, महावीरचरित, अनर्घराघव तथा बालरामायण मे कैकेयी का दोषनिवारण, छलितराम मे सीतात्याग का तथा कृत्या-रावण मे सीताहरण का नवीन रूप।

---

१ रामकथा सबधी नाटको की साहित्यिक समालोचना के लिए दे० एस० लेवी . ल थेआत्र इडियेन, पृ० २६७ आदि।

२ सभवत. इन परिवर्तनो को ध्यान मे रखकर आनन्दवर्धन अपने ध्वन्यालोक मे कहते है कि रामायण जैसी सिद्धरस कथाओ मे स्वेच्छा से रसविरोधी परि-वर्तन नही करना चाहिए (दे० ३, ११ की वृत्ति)। इस सदर्भ मे वह यशो-वर्मा कृत रामाभ्युदय का यह उद्धरण देता है—कथामार्गे न चातिक्रम.।

(३) शृगार की व्यापकता । उदाहरणार्थ : बालरामायण मे रावण का विरह-वर्णन, मैथिलीकल्याण मे राम-सीता के पूर्वानुराग का चित्रण (अक १-४) तथा महानाटक मे राम-सीता का सभोग-वर्णन, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है (अक २)।

(४) अद्भुत-रस का प्रवेश । उदाहरणार्थ : प्रसन्नराघव (अक ६), आश्चर्य-चूडामणि, अद्भुत दर्पण ।

(५) पात्रो का अन्य पात्रो का रूप धारण कर लेना । उदाहरणार्थ : महावीरचरित तथा अनर्घराघव मे शूर्पणखा मथरा का रूप धारण कर लेती है, उदात्तराघव मे सुग्रीव को धोखा देने के उद्देश्य से एक राक्षस हनुमान् के रूप मे उनके पास आता है तथा अतिम अक मे कई छद्मवेषी राक्षस भरत और राम मे छल-कपट करने का निष्फल प्रयास करते है; बालरामायण मे मायामय शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमश. दशरथ, कैकेयी तथा मथरा का रूप धारण कर लेते है, महानाटक मे रावण अपने हाथ मे अपने दस शीर्ष लिए हुए राम के रूप मे सीता के पास जाता है, आश्चर्य-चूडामणि मे रावण और उसका सारथि राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता का हरण करते है और शूर्पणखा सीता के रूप मे राम के पास जाती है ।

प्रतिनानाटक तथा अभिषेकनाटक

२२६ सभव है कि प्रतिमानाटक तथा अभिषेकनाटक भासकृत न होकर किसी दक्षिण भारत-निवासी अन्य कवि द्वारा कालिदास के बहुत कुछ बाद रचित हुए हो ।[1]

प्रतिमानाटक मे कालिदास के अनुसार राम की वशावली (दिलीप, रघु, अज, दशरथ) तथा अभिषेकनाटक मे सीता के लक्ष्मी के अवतार होने के उल्लेख से भी उपर्युक्त मत की पुष्टि होती है । फिर भी दोनो नाटको को यहाँ पहला स्थान दिया गया है ।

भास के नाम पर सन् १९४१ मे प्रकाशित यज्ञफल[2] एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचना है । इसके सात अको मे राम के बालचरित तथा विवाह का वर्णन किया गया है । दशरथ राम-विवाह के पूर्व ही राम को युवराज बनाने की इच्छा प्रकट करते है और इसके लिए उनकी तीनो रानियाँ अपनी सहमति देती है (अक २) । रावण (माया द्वारा अदृश्य रह कर) राम को अयोध्या मे देखने आता है (अक ३) । विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा के पश्चात् मिथिला मे राम तथा सीता के पूर्वानुराग का चित्रण किया गया है

---

१ दे० एम० कुप्पुस्वामी की आश्चर्यचूडामणि की भूमिका (कलामनोरमा सिरीज़, मद्रास) ।

२ दे० ए० डी० पुसलकर : भास, ए स्टडी (दिल्ली, १९६८) ।

(अंक ६)। अन्तिम अंक में, जनक के यज्ञ के पश्चात् परशुराम मिथिला पहुँचते हैं किन्तु राम में देवत्व के लक्षण देखकर उन्हें श्रद्धापूर्वक अपना धनुष अर्पित करते हैं।

प्रतिमानाटक के सात अंकों में वाल्मीकीय अयोध्याकांड की कथावस्तु तथा सीता-हरण का वर्णन किया गया है। प्रथम अंक में राम को वनवास दिये जाने की कथा मिलती है। इसकी विशेषता यह है, कि शत्रुघ्न उस समय अयोध्या में उपस्थित हैं।

द्वितीय अंक में दशरथ के मरण का वर्णन है, इसके अनुसार मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए दशरथ को उनके पूर्वजों (दिलीप-रघु-अज) के दर्शन होते हैं, जो उनको परलोक ले जाने आए हैं।

तृतीय अंक में भरत के प्रत्यागमन का वर्णन है। प्रतिमागृह में अयोध्या के मृत राजाओं की मूर्तियों को देखकर भरत जान जाते हैं कि दशरथ की मृत्यु हुई है और वे राज्य-सिंहासन ठुकराकर राम के पास जाने का संकल्प करते हैं। इसमें भरत को लक्ष्मण का अनुज बताया गया है।

चतुर्थ अंक में वाल्मीकि के अनुसार भरत की चित्रकूट-यात्रा का वर्णन मिलता है तथा पंचम अंक में सीता-हरण का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है (दे० आगे अनु० ४६५)।

छठे अंक के अनुसार भरत सुमन्त्र से सीताहरण का समाचार सुनकर कैकेयी की भर्त्सना देते हैं, जिस पर कैकेयी अपने निर्दोष होने का प्रमाण देती है। महर्षिशाप की रक्षा करने के लिए वसिष्ठ वामदेव आदि से परामर्श लेकर कैकेयी ने राम को वनवास दिलाया था (दे० आगे अनु० ४५२)। अनन्तर भरत रावण के विरुद्ध सेना-संचालन की आज्ञा देते हैं।

रावण-वध के बाद जनस्थान के आश्रम में भरत आदि से राम की भेंट का वर्णन अंतिम अंक में किया गया है। इस वृत्तान्त के अनुसार राम का अभिषेक भी जनस्थान में हुआ था, जिसके बाद सब पुष्पक से अयोध्या लौट गए।

२२७. अभिषेक नाटक में वालिवध से लेकर रामाभिषेक तक की वाल्मीकीय कथा का अपेक्षाकृत कम परिवर्तन सहित वर्णन किया गया है। सेतुबन्ध के स्थान पर समुद्र विभक्त हो जाता है और सेना समुद्रतल से पार उतरती है (अंक ४)। राम तथा लक्ष्मण दोनों के मायामय शीर्ष सीता को दिखलाए जाते हैं-(इस परिवर्तन का महानाटक, जावा के प्राचीन रामायण तथा मलय के सेरी राम में अनुकरण किया गया है)। सीता की अग्निपरीक्षा के समय अग्निदेव प्रकट होकर सीता के लक्ष्मी होने का रहस्योद्घाटन करते हैं :

> इमां भगवतीं लक्ष्मीं जानीहि जनकात्मजाम्।
> सा भवन्तमनुप्राप्ता मानुषीं तनुमास्थिता ॥ ३८ ॥ (अंक ६)

प्रतिमानाटक मे राम को मनुष्य के रूप मे देखा गया था, इस नाटक मे राम के विष्णुत्व का अनेक स्थलो पर उल्लेख है। राम का अभिषेक लका मे आयोजित है (अक ६)।

भवभूति-कृत महावीरचरित तथा उत्तररामचरित

२२८. कन्नौज के दरबार के वातावरण मे रहने वाले भवभूति ने आठवी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध मे महावीरचरित तथा उत्तररामचरित की रचना की थी।

महावीरचरित के सात अको मे राम-सीता-विवाह से लेकर रामाभिषेक तक की कथा का वर्णन किया गया है। इसमे निम्नलिखित परिवर्तन मिलते है :

विश्वामित्र के आश्रम मे राम-लक्ष्मण सीता-उर्मिला से मिलते हैं। आश्रम मे रावण के दूत के आ जाने का तथा धनुर्भंग का भी वर्णन किया गया है (अक १)।

विवाह के पश्चात् परशुराम के मिथिला ही मे आने का वर्णन है (अक २)।

कैकेयी का एक जाली पत्र लेकर शूर्पणखा मथरा के रूप मे मिथिला पहुँचती है। इस पत्र मे कैकेयी वर के बल पर राम का वनवास माँगती है, जिसके फलस्वरूप राम भरत को अपनी पादुकाएँ देकर मिथिला ही से सीता तथा लक्ष्मण के साथ वन के लिए प्रस्थान करते हैं (अक ४)।

माल्यवान् की प्रेरणा से वालि राम को मार्ग मे रोक लेता है और द्वन्द्वयुद्ध मे राम द्वारा मारा जाता है।

२२९. **उत्तररामचरित** के सात अको मे वाल्मीकीय उत्तरकाड की सामग्री का एक नवीन रूप प्रस्तुत है।

लोकापवाद के कारण सीतात्याग का वर्णन इस प्रकार है। सीता-सहित अपने वनवास के चित्रो का दर्शन करने तथा गर्भवती सीता को गगातट के आश्रमो को दिखलाने का आश्वासन देने के पश्चात् राम सीता के विषय मे लोकापवाद की कथा दुर्मुख से सुनते है तथा सीता का त्याग करने का निश्चय करते हैं (अक १)।

कुश-लव के जन्म की तथा शम्बूक-वध की कथा दोनो वाल्मीकि से कुछ भिन्न है (दे० आगे अनु० ७४१ और ६२६)। राम-सेना से कुश-लव के युद्ध करने का भी वर्णन किया गया है (दे० आगे अनु० ७४८)। इस युद्ध के पूर्व वाल्मीकि-आश्रम मे जनक तथा कौशल्या की भेट चतुर्थ अक मे वर्णित है। कथा के दृष्टिकोण से नाटक की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता अतिम अक मे मिलती है। वाल्मीकि के आश्रम मे राम तथा अयोध्या की जनता के सामने सीता-चरित-सम्बन्धी (त्याग, कुश-लव-जन्म आदि) एक वाल्मीकिकृत नाटक का अभिनय वर्णित है, जिसके फलस्वरूप समस्त प्रेक्षकगण सीता की निर्दोषता पर विश्वास करते है और सीता तथा कुश-लव के साथ राम अयोध्या

होते हैं। रामकथा के इस प्रकार निर्दिष्ट की उत्पत्ति और विकास का २० वें अध्याय में विश्लेषण किया जायगा (दे० अनु० ७५४-७९३)।

उदात्तराघव

२३०. उदात्तराघव[1] की रचना संभवतः नवीं शताब्दी ई० में अनंगहर्ष मायुराज (मातृराज) द्वारा हुई थी। इसके ६ अंकों में राम के निर्वासन से लेकर राज्याभिषेक के बाद तक की कथा प्रस्तुत की गई है। कथानक की विशेषताओं में से तीन का वर्णन हो चुका है (दे० अनु० ४८६)। इसके अतिरिक्त कई राक्षस और असुर राम से युद्ध करते समय मायावी रूप धारण करते हैं। चतुर्थ अंक में एक राक्षस हनुमान का रूप धारण कर सुग्रीव को रावण द्वारा सीता-हरण का समाचार देता है। इस पर सुग्रीव अंगद को राज्य सौंपकर चिता में प्रवेश करना चाहते हैं किन्तु वास्तविक हनुमान ठीक समय पर पहुँचकर उनको बचाते हैं। अंतिम अंक में एक राक्षस वसिष्ठ का रूप धारण कर भरत को संदेश देता है कि लक्ष्मण युद्ध में मारे गए हैं। अनन्तर एक असुर नारद के रूप में पहुँचकर कहता है कि राम का भी देहान्त हुआ है और अन्त में एक राक्षसी सीता का रूप धारण कर इन दोनों के कथन का समर्थन करती है। भरत अग्नि में कूद कर मरने पर हैं किन्तु हनुमान शुभ समाचार ले कर आते हैं और उनको रोकते हैं। हनुमान ने बताया है कि एक असुर ने मुनीश्वर का रूप धारण कर राम को समाचार दिया था कि भरत मर गए हैं। तृतीय अंक में एक राक्षसी राम के पास जटायु का पत्र लेकर आती है जटायु ने अपनी चोंच की सहायता से उस पत्र को अपने रक्त से एक पत्ती पर लिखकर कहा है कि राम को लक्ष्मण छोड़कर सहायता में जाना चाहिए।

कुन्दमाला

२३१. डॉ० कालीकुमार दत्त[2] कुन्दमाला के रचयिता तथा रचनाकाल के विषय में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करने के बाद इन निष्कर्षों पर पहुँचे हैं—(१) कवि का नाम धीरनाग, दिङ्नाग, नागदत्त अथवा वीरनाग न होकर दिङ्नाग ही है (२) रचना-काल संबंधी सामग्री का अभाव है (३) कुन्दमाला उत्तररामचरित से पहले की रचना है।[3]

---

१. मूल उपलब्ध नहीं है; इसका अध्ययन उद्धरणों के ही आधार पर निर्भर है। इसको उदात्तराघव की एक हस्तलिपि प्राप्त हुई है।
२. डॉ० कालीकुमार दत्त : कुन्दमाला (संस्कृत कॉलेज कलकत्ता १९६४)।
३. एस० डी० बंद्योपाध्याय (कुन्दमाला एवं उत्तररामचरित, अ० रि० ई०, भा० १८, पृ० ३२६-३३१) भी दिङ्नाग को भवभूति का पूर्ववर्ती मानते हैं।

कुन्दमाला की कथावस्तु उत्तररामचरित से मिलती-जुलती है। वह सीतात्याग से आरभ होती है और राम-सीता-मिलन पर समाप्त हो जाती है। तृतीय अक मे राम तथा लक्ष्मण वाल्मीकि-आश्रम के पास गौतमी के तट पर एक कुन्दमाला देखते है, जिसकी बनावट सीता के कौशल का स्मरण दिलाती है। आगे बढकर उन्हे सीता के चरण-चिह्न भी दिखलाई पडते है।

चतुर्थ अक के प्रारम्भ मे बताया जाता है कि राजसेना को निकट जानकर वाल्मीकि ने अपने तपोबल द्वारा आश्रम की स्त्रियो को अदृश्य हो जाने का वरदान दिया है। इसी तरह सीता अदृश्य होकर राम से मिलती है, राम सीता की छाया को जल मे देखकर विरह के कारण मूर्च्छित हो जाते हैं।

अतिम अक मे कुश-लव के रामायणगान के पश्चात् सीता सभा मे शपथ खाती है, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता की निर्दोषिता का साक्ष्य देती है। इसपर राम सीता को स्वीकार करते है तथा पृथ्वी देवी अन्तर्द्धान हो जाती है।

मुरारिकृत अनर्घराघव

२३२ अनर्घराघव की रचना ६०० ई० के लगभग मुरारि द्वारा हुई थी। इसकी कथावस्तु विश्वामित्र के आगमन से लेकर अयोध्या मे रामाभिषेक तक का वृत्तान्त है। तृतीय अक मे रावणदूत शौष्कल के मिथिला मे आकर रावण की ओर से सीता को माँगने का उल्लेख है। महावीरचरित मे भी रावण का एक दूत विश्वामित्र के आश्रम मे सीता को रावण की ओर से माँगता है। अनर्घराघव मे वाल्मीकीय कथा के जो अन्य परिवर्तन मिलते है, वे सब महावीरचरित पर निर्भर है। उदाहरणार्थ, शूर्पणखा का मथरा के वेष मे कैकेयी के एक जाली पत्र के बल पर राम का निर्वासन माँगना (अक ४), परशुराम का मिथिला ही मे आगमन (अक ४) तथा राम-वालि-द्वन्द्व-युद्ध (अक ५)।

राजशेखर-कृत बालरामायण

२३३. रामकथा-सम्बन्धी सबसे विस्तृत नाटक बालरामायण की रचना १० वी शताब्दी मे हुई थी। इसके १० अको मे सीतास्वयवर से लेकर रामाभिषेक तक की कथा भवभूति तथा मुरारि के अनुकरण पर वर्णित है। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से राजशेखर ने मौलिकता का भी प्रदर्शन किया है।

रावण स्वय प्रहस्त के साथ सीता के स्वयंवर मे पहुँचकर धनुष-परीक्षा करना अस्वीकार करता है तथा सीता के पति को अपना शत्रु घोषित कर लौटता है (अक १)। अनन्तर वह परशुराम से सहायता के लिए निष्फल प्रार्थना करता है (अक २) तथा लका मे पहुँचकर सीता के विरह के कारण अत्यन्त व्याकुल हो जाता है। उसका

मन बहलाने के लिए सीता-स्वयंवर में अन्य राजाओं के प्रयत्नों के बाद राम की सफलता का अभिनय किया जाता है (अंक ३)। बाद में सीता और उसकी सखियों (कुल-कन्या) की कठपुतलियाँ बनवाकर तथा उनके मुँह में सारिकाएँ स्थापित करके माल्यवान् द्वारा किन्हीं रावण को सान्त्वना देने का एक और निष्फल प्रयत्न किया जाता है (अंक ५)।

भवभूति तथा मुरारि के अनुसार परशुराम मिथिला में आते हैं; किंतु यहाँ वे विष्णु के धनुष पर अधिकार जताते हैं (अंक ४)। राम के निर्वासन की कथा कुछ भिन्न है। अयोध्या में दशरथ तथा कैकेयी की अनुपस्थिति का अवसर पाकर मायामय शूर्पणखा तथा एक पारिचारिका मन्थरा, दशरथ, कैकेयी तथा मंथरा का रूप धारण कर लेते हैं और राम को निर्वासित करने में सफल होते हैं (अंक ६)।

सेतुबन्ध के अवसर पर सीता के मायामय शीर्ष का प्रसंग और रावण-पुत्र सिंहनाद तथा एक सर्पिणी नामक राक्षसी के वध का वर्णन मिलता है (अनु० ५३६)। राक्षसियों द्वारा सेतु को नष्ट करने के प्रयत्न का भी उल्लेख होता है (अंक ७)। त्रिजटा सीता के साथ अयोध्या जाती है (अंक १०)।

महानाटक अथवा हनुमन्नाटक

३३४. महानाटक के प्रथम रूप की रचना संभवतः नवीं शताब्दी में हुई है।[1] लेकिन इसमें १४वीं शताब्दी तक प्रक्षेप जोड़े गये हैं, जिनके फलस्वरूप आजकल दो बहुत भिन्न पाठ प्रचलित हैं—दामोदर मिश्र का तथा (बंगाल में) मधुसूदन का। दामोदर मिश्र का पाठ मूल रचना के अधिक निकट और प्राचीन है।[2]

इस नाटक के स्वरूप को लेकर बहुत वाद-विवाद हुआ है। यह तो निश्चित है कि इसकी रचना रंगमंच पर अभिनय करने के उद्देश्य से नहीं हुई थी। अधिक संभव है कि इसका पाठ सभाओं में किया जाया करता था। दामोदर मिश्र के १४ अंकों के अनुसार, इसके कथानक में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

अंक १. सीता-स्वयंवर : सीता-स्वयंवर में रावण का एक दूत उपस्थित है तथा परशुराम मिथिला ही में आकर पराजित होते हैं।

अंक २. रामजानकीविलास : इसमें विवाह के अनन्तर राम और सीता का संभोग वर्णन किया गया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है।

अंक ३. मारीचवध : राम के वनवास के पश्चात् अयोध्या में विलाप

1. देखिए एस० के० डे : दि प्रॉब्लम ऑफ़ दि महानाटक, इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली, भाग ७, पृष्ठ ५३७ आदि।
2. देखिए एस्टेलर : दि रिसेन्शन्स ऑफ़ दि महानाटक, जर्नल ओरियेन्टल सोसाइटी, १९३३।

होने का उल्लेख है (छद ५) तथा अहल्योद्धार का वृत्तान्त अगस्त्याश्रम से पचवटी की ओर जाते समय वर्णित किया गया है (२०)। सीता के रक्षणार्थ भूमि पर धनुष से रेखा खीचकर राम लक्ष्मण को साथ लेकर, मायामृग को मारने जाते है (२७)।

अक ४ सीताहरण : राम तथा लक्ष्मण मृग का शिकार करने के लिए साथ-साथ चले जाते है।

अक ५. वालिवध : महावीरचरित आदि के अनुसार वालि स्वय राम को ललकारता है। इसमे हनुमान् को रुद्रावतार माना गया है (३३), अगले अक मे भी इसे 'रुद्राश' कहा गया है।

अक ६. हनुमद्विजय : इसमे सीता हनुमान्‌को तीन अभिज्ञान देती है—चूडामणि, काक की कथा तथा राम द्वारा सीता को तिलक-प्रदान (३६)।

अक ७ सेतुबंध : राम के बाण चलाने का उल्लेख नही है।

अंक ८. अंगदाधिक्षेपण : अपने पिता के वध के कारण राम से वैर रखकर अगद रावण को युद्ध मे प्रवृत्त करने के उद्देश्य से रावण का अपमान करता है (छन्द २)।

अंक ९. मंत्रिवाक्य : लका की सभा का वर्णन।

अक १० रावणप्रपंच : रावण पहले राम तथा लक्ष्मण के मायामय शीर्ष सीता को दिखलाता है (अभिषेक नाटक के अनुसार); अनन्तर रावण राम का रूप धारण कर तथा अपने दस मायामय शीर्ष हाथ मे लेकर सीता को ठगने का प्रयत्न करता है।

अक ११ कुम्भकर्णवध : इसमे अगद द्वारा राक्षसी प्रमजती के वध का भी उल्लेख है।

अक १२ इन्द्रजित्‌वध :

अक १३. लक्ष्मणशक्तिभेद : इसमें हनुमान् को हटाने के लिए ब्रह्मा द्वारा नारद को भेज देने का उल्लेख है। इस तरह रावण लक्ष्मण को आहत करने का अवसर पाता है और उनकी चिकित्सा के लिए रावण के वैद्य सुषेण को लका से लाया जाता है। ओषधि-पर्वत के आनयन के वृत्तान्त मे भरत हनुमान को बाण मार कर गिराते हैं (दे० आगे अनु० ५८८)।

अक १४. श्रीरामविजय : प्रारम्भ मे लोहिताक्ष नामक रावणदूत के राम के पास आने का वर्णन है। रावण राम से सधि का प्रस्ताव करता है तथा जामदग्न्य के परशु के लिए सीता को लौटाना चाहता है। राम इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं। रावणवध के वाद अगद अपने पित के

वध का प्रतिकार लेने के लिए समस्त सेना को ललकारता है, जिस पर एक आकाशवाणी द्वारा कहा जाता है कि कृष्णावतार मे वालि व्याध के रूप मे राम-कृष्ण का वध करेगा (७५)।

शक्तिभद्रकृत आश्चर्यचूडामणि

२३५ दक्षिण भारत का यह नाटक नवी शताब्दी का माना जाता है, लेकिन इसकी इतनी प्राचीनता बहुत संदिग्ध है।[1] इसमे शूर्पणखा के आगमन से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा तक की कथा का सात अंको मे वर्णन मिलता है। इसकी विशेषता यह है कि राम तथा सीता के पास मुनियो से प्राप्त एक अँगूठी तथा चूडामणि है, जिनके स्पर्श-मात्र से छद्मवेषी राक्षस अपना वास्तविक रूप धारण कर लेते हैं। इससे नाटक का नाम **आश्चर्यचूडामणि** रखा गया है (अंक ३, छंद ८)।

राम का रूप धारण करने वाला रावण, लक्ष्मण का रूप धारण करने वाले अपने सारथि की सहायता से, सीता को हर लेता है। इतने मे शूर्पणखा सीता के रूप मे राम से बातचीत करती है तथा मारीच राम के रूप मे लक्ष्मण से।

राम-सम्बन्धी प्राचीन अप्राप्य नाटक

२३६ काव्यशास्त्र-विषयक ग्रन्थो के उद्धरणो से अनेक प्राचीन रामकथा सम्बधी अप्राप्य नाटको का पता चलता है। क्षेमेन्द्रकृत **कनकजानकी** के कई उद्धरण **कविकण्ठाभरण** मे मिलते है। इसकी कथावस्तु सीता त्याग से सम्बन्ध रखती है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। क्षीरस्वामीकृत **अभिनव-राघव** (दसवी श०) का उल्लेख हेमचन्द्र के शिष्यो द्वारा हुआ है। रामचन्द्र (हेमचन्द्र के शिष्य) के दो नाटक अप्राप्य है, अर्थात् **रघुविलास** तथा **राघवाभ्युदय** (१२वी श०)।

कुछ अन्य अप्राप्य प्राचीन नाटको के विषय मे डॉ० राघवन् ने निम्नलिखित सामग्री एकत्र की है।[2] **रामाभ्युदय** तथा **स्वप्नदशानन** को छोडकर सबो के रचयिता अज्ञात है।

(१) यशोवर्मन का **रामाभ्युदय** (८वी श० पूर्वार्द्ध)।[3] इसका कथानक (६ अंक) वाल्मीकि रामायण के अनुसार है। वह शूर्पणखा-विरूपीकरण से प्रारम्भ होकर राम-अभिषेक पर समाप्त हो जाता है।

(२) रामानन्द की रचना सन् ९०० ई० के पूर्व हुई थी। कथावस्तु उत्तर-

---

१ सुशील कुमार दे हिस्टरी ऑव काव्य लिटरेचर, पृ० ३०२।

२ डॉ० राघवन : सम ओल्ड लोस्ट राम प्लेज (अन्नामलाई १९६१ ई०)

३ दे० इ० हि० क्वा०, भाग ३०, पृ० ३७९-८१।

रामचरित से सम्बन्ध रखती है। शारदातनय एक अन्य रामानन्द नामक नाटक का उल्लेख करते हैं, जिसमे विभीषण का परिचय सीता-हरण के पूर्व ही मिलता है—

प्रागेव सीताहरणाद् यद् विभीषणवर्णनम् (दे० भावप्रकाश ८)

(३) **छलितराम** (नवी शताब्दी) का कथानक रावण-वध के पश्चात् राम के अयोध्या मे आगमन से प्रारम्भ होकर उनके अश्वमेध-यज्ञ पर समाप्त हो जाता है। सीता-त्याग का कारण अयोध्या की जनता का अपवाद नही है, लवण दो राक्षसो को राम के पास भेज देता है, जो राम के अतरग सखा बनकर उनको सीता के प्रति उकसाते हैं। लवण के इस छल-कपट से नाटक का नाम छलितराम ही रखा गया है।

लव-कुश-युद्ध का वर्णन भी मौलिक है, लक्ष्मण लव को कैदी बनाकर उनको राम के दरबार मे ले जाते हैं। लव अश्वमेध-मण्डप मे सुवर्णमयी सीता को देखकर अपनी माता सीता को पहचानता है। इसमे राम को पता चलता है कि सीता जीवित है।

(४) **कृत्यारावण** की रचना सम्भवत. नवी शती पूर्वार्द्ध मे हुई थी। इसमे सीताहरण से लेकर सीता की अग्नि-परीक्षा तक की कथा सात अको मे प्रस्तुत की गयी है। शीर्षक रावण की कृत्या (माया) की ओर निर्देश करता है। मायामृग के अतिरिक्त राक्षसी माया का परिचय हमे शूर्पणखा के विभिन्न रूपो से तथा सीता के सामने राम-वध के प्रदर्शन से मिलता है। कथानक का मुख्य परिवर्तन सीताहरण का एक नवीन रूप है, जिसमे सीता लक्ष्मण के प्रति कटु शब्दो का प्रयोग नही करती, शूर्पणखा ही सीता का रूप धारण कर लक्ष्मण की भर्त्सना करती है (दे० आगे अनु० ४९९)। छठे अक मे दारुणिका राक्षसी को सीता का वध करने का आदेश दिया जाता है। दारुणिका सीता को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से उनके सामने एक मायामय राम का वध करवाती है। अपने स्वामी की हत्या देखकर सीता अग्नि मे प्रवेश करने का निश्चय करती हैं (इस निश्चय का समाचार राम को दिया जाता है, नाट्यदर्पण मे, जो सीता-विपत्ति-श्रवण का उद्धरण मिलता है, वह इस प्रसग की ओर निर्देश करता है)।

(५) **जानकीराघव** एक शृगार रस प्रधान नाटक है जिसके सात अको मे सीता-स्वयवर से लेकर रामाभिषेक तक की समस्त रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। रावण को सीतास्वयवर मे उपस्थित माना गया है।

(६) **राघवाभ्युदय** का कथानक अरण्यकाण्ड की घटनाओ से प्रारम्भ होकर सीता की पुनःप्राप्ति पर समाप्त हो जाता है। युद्ध के प्रारम्भ मे **रावण का संधिप्रस्ताव** इस नाटक की विशेषता है, रावण के आदेश पर जालिनी नामक राक्षसी सीता का रूप धारण कर लेती है और रावण उसे ही राम को समर्पित करना चाहता है। यह प्रस्ताव सुनकर राम किंकर्त्तव्यविमूढ हो जाते हैं क्योंकि वह विभीषण को लका का राजा बनाने

की प्रतिज्ञा कर चुके है। उसी समय इन्द्र के रूप मे एक दूसरा राक्षस रावण का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए राम से अनुरोध करता है। अत मे लक्ष्मण रावण की माया का रहस्योद्घाटन करते है।

(७) **मायापुष्पक** के प्रारम्भ मे अत्रमुनि का शाप मनुष्य का रूप धारण कर रगमच पर आता है। प्राप्त उद्धरणो से पता नही चलता कि रावण किस तरह एक मायावी पुष्पक-विमान का उपयोग करता है। यह १०वी शताब्दी से पहले की रचना है।

(८) **स्वप्नदशानन** का रचयिता **भीमट** है। उसके पाँच नाटको मे से स्वप्न-दशानन ही श्रेष्ठ कहा जाता है। यह भी १०वी शताब्दी से पहले की रचना है।

(९) **मारीचवंचित** के पाँच अको मे रावणवध तक की रामकथा प्रस्तुत की गई है।

(१०) **रामविक्रम** के द्वितीय अक मे इसका वर्णन किया गया है कि जनक को किस प्रकार राम-सीता के वनवास का समाचार मिला था।

(११) **राघवानन्द**। रचनाकाल १०वी शताब्दी से पहले। शृगारप्रकाश मे इसके दो उद्धरण है।

(१२) **अभिजातजानकी**। इसका तृतीय अक सेतु-निर्माण से सम्बन्ध रखता है।

(१३) उपर्युक्त नाटको के अतिरिक्त डॉ० राघवन् निम्नलिखित अको का भी उल्लेख करते हैं :

अयोध्याभरत, कैकयीभरत, दशरथाक, प्रावृडक, विभीषणनिर्भत्सनाक, शक्त्यक, सपात्यक। अब तक इसका पता नही चल सका कि ये अक किन-किन नाटको के है। सम्पात्यक मे मायावती नामक राक्षसी अगद-हनुमानादि वानरो को धोखे मे डालने का प्रयत्न करती है। रामयण ककविन, भट्टिकाव्य तथा तिब्बती रामायण मे स्वयप्रभा वानरो को भुलाने का प्रयत्न करती है (दे० अनु० ५२६), सम्पात्यक की मायावती सभवत स्वयप्रभा से अभिन्न है।

जयदेवकृत प्रसन्नराघव

२३७ महादेव के पुत्र जयदेव ने १२वी अथवा १३ वी शताब्दी मे **प्रसन्नराघव** की रचना की थी, जिसमे सीता-स्वयवर से लेकर राम के रावण-वध के बाद अयोध्या मे प्रत्यागमन तक की कथा का सात अको मे वर्णन किया गया है। इस रचना पर मुरारि कृत अनर्घराघव का स्पष्ट प्रभाव पडा है। कथानक के दृष्टिकोण से इसमे निम्न-लिखित विशेषताएँ मिलती है :

सीतास्वयवर मे रावण तथा बाणासुर की उपस्थिति और उनके धनुष-सधान के निष्फल प्रयत्न। उस अवसर पर रावण का सीताहरण करने का सकल्प प्रकट करना (अक १)।

धनुर्भंग के पूर्व राम और सीता का मिथिला के चण्डिकायतन मे मिलना (अंक २)। मिथिला मे पहले परशुराम के दूत और बाद मे परशुराम का आगमन (अक ४)।

विविध नदियो (यमुना, गगा, सरयू, गोदावरी) का मानवीकरण तथा उनका सागर के तट पर मिलकर अपने भूमिभाग से सम्बन्ध रखनेवाली रामकथा सुनाना (अक ५)।

विद्याधर रत्नशेखर का विरह-व्याकुल राम को लका की घटनाएँ इन्द्रजाल द्वारा दिखलाना (अक ६)।

उल्लाघराघव

२३८ गुजरात के निवासी सोमेश्वर ने उल्लाघराघव की रचना १३वी शती ई० पूर्वार्द्ध मे की थी। इसकी अपूर्ण हस्तलिपि भण्डारकर इंस्टिट्यूट (पूना) मे सुरक्षित है, कैटालॉग मे इसका नाम **रामायणनाटक** रखा गया है। सपूर्ण नाटक बडौदा के ऑरियेटल सीरिज़ मे प्रकाशित हुआ है (१९६१)। उल्लाघराघव मे वाल्मीकीय बाल काण्ड के अन्त से लेकर युद्धकाण्ड के अन्त तक का कथानक आठ अंको मे प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अक मे राम-सीता-विवाह के पश्चात् मिथिला से प्रस्थान का वर्णन किया गया है तथा इसके बाद कचुकी हरिदत्त परशुराम के तेजोभग की कथा सुनाते है। एक अपवाद को छोडकर वाल्मीकीय कथानक मे कही भी परिवर्तन नही किया गया है। अन्तिम अक के प्रारम्भ मे राम की पुष्पक-यात्रा को प्रस्तुत किया गया है। अनन्तर लवण का एक गुप्तचर मुनि का रूप धारण कर अयोध्या मे यह समाचार फैलाता है कि रावण राम-लक्ष्मण का वध करने के बाद अयोध्या पर आक्रमण करने आ रहा है। सेना को बुलाया जाता है तथा कौशिल्या और सुमित्रा अग्नि मे प्रवेश करने की तैयारियाँ कर रही है। पुष्पक के पहुँचने पर भरत विभीषण पर बाण चलाना चाहते है किन्तु वसिष्ठ उनको रोकते हैं। यह प्रसङ्ग उदात्तराघव के षष्ठ अक का स्मरण दिलाता है (दे० ऊपर अनु० २३०) किन्तु उल्लाघराघव पर अनर्घराघव का सर्वाधिक प्रभाव पडा है।[1]

राम-सम्बन्धी गौण नाटक

हस्तिमल्ल कृत मैथिलीकल्याण तथा अंजनापवनजय

२३९ जैन कवि हस्तिमल्ल ने १२९० ई० के लगभग सीता-विवाह-सम्बन्धी **मैथिलीकल्याण** की रचना की थी।[1] इस शृगारात्मक नाटक के प्रथक चार अको मे राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वर्णन किया गया है। दोनो स्वयवर के पूर्व मिथिला के कामदेवमन्दिर मे (अक १) और माधवी वन मे (अक २) मिलते है, अनन्तर दोनो के विरह-वर्णन तथा चन्द्रकान्तधर-गृह मे अभिसारिका सीता का भी चित्रण किया गया

१. माणिक चन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, न० ५।

है (अंक ३-४)। अन्तिम अंक का वर्ण्य विषय धनुर्भंग तथा राम-सीता-विवाह (अंक ५) है।

अंजनापवनंजय[1] विमलसूरि की रामकथा पर निर्भर है। इसके सात अंकों में अंजना-पवनंजय के चरित्र का इस प्रकार वर्णन किया गया है—

अंक १ अंजना के स्वयंवर की तैयारियाँ।

अंक २ स्वयंवर, पवनंजय-अंजना-विवाह, युद्ध के लिये पवनंजय का प्रस्थान।

अंक ३. पवनंजय का रात्रि के समय अंजना से मिलना तथा प्रातः छिपकर युद्ध-क्षेत्र में लौट जाना।

अंक ४ गर्भवती अंजना का अपने मायके महेन्द्रपुर भेजा जाना।

अंक ५ वरुण की पराजय के बाद पवनंजय घर के रास्ते में अंजना के विषय में सुनते हैं। वह तुरन्त ही महेन्द्रपुर के लिए प्रस्थान करते हैं। वहाँ पहुँचने के पूर्व पता चलता है कि अंजना ने मायके न जाकर मातंग-मालिनी वन में प्रवेश किया है। पवनंजय उसकी खोज करने जाता है।

अंक ६ गंधर्वराजा मणिचूड ने अंजना के प्राण बचाकर उसको अपने राज्य में शरण दी है, जहाँ हनुमान् का जन्म हुआ है। पवनंजय तथा अंजना का मिलन।

अंक ७ पवनंजय का यौवराज्याभिषेक तथा विजयार्ध पर्वत का राज्य उसको सौंपा जाना।

विमलसूरि के पउमचरियं में इस बात को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है कि पवनंजय अंजना के साथ विवाह करने के पश्चात् २२ वर्ष तक उसके प्रति उदासीन ही रहा तथा युद्ध-क्षेत्र में अचानक इस प्रकार उसके प्रति आकर्षित हुआ कि रात के समय छिपकर अंजना से मिलने आया था (दे० आगे अनु० ६६६)। हस्तिमल्ल ने इस अस्वाभाविक प्रसंग को छोड़कर तथा अंजना के स्वयंवर का वर्णन कर (जिसका पउमचरियं में उल्लेख नहीं होता) मौलिकता का प्रदर्शन किया।

सुभट्टकृत दूतांगद

२४० १३ वीं शताब्दी की इस रचना में सुभट्ट ने अंगद के दूतत्व का प्रथम दो अंकों में वर्णन किया है। विशेषता यह है कि एक माया-मैथिली आकर अंगद के सामने ही रावण की गोद में बैठ जाती है, जिससे अंगद अत्यन्त क्रुद्ध हो जाता है। अन्त में रावण की पराजय के पश्चात् राम के विजयोत्सव का चित्रण किया गया है।

भास्करभट्टकृत उन्मत्तराघव

२४१ भास्करभट्ट (१४ वीं शताब्दी) के **उन्मत्तराघव** (निर्णयसागर प्रेस,

---

१ माणिक चन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला नं० ४३।

बम्बई सन् १६२५ ई०) नामक प्रेक्षणक मे विक्रमोर्वशीय के चतुर्थ अंक का स्पष्टतया अनुकरण किया गया है।

दुर्वासा के शाप से सीता के मृग रूप मे बदल जाने पर राम का सर्वत्र सीता को ढूंढना तथा अगस्त्य की सहायता से उनको पुनः प्राप्त करना इस रचना का वर्ण्य विषय है।

विरूपाक्षकृत उन्मत्तराघव

२४२ भास्कर भट्ट की भाँति विरूपाक्षदेव ने १५ वी शती के प्रारम्भ मे एक उन्मत्तराघव नामक प्रेक्षणक लिखा है, उसमे भी विप्रलंभ शृंगार प्रधान रस है (अड्यार सन् १६४६ ई०)। सीताहरण का वर्णन वाल्मीकीय कथा के अनुसार है, किन्तु कनक-मृग मारने के बाद सीता को न पाकर राम उन्मत्त हो जाते है और लक्ष्मण अकेले ही जाकर वानरो की सहायता से रावण को मार डालते है तथा सीता को राम के सामने उपस्थित करते है।

व्यासमिश्रदेव-कृत रामाभ्युदय

२४३ व्यासमिश्रदेव ने १५ वी शताब्दी पूर्वार्द्ध मे रामाभ्युदय की रचना की थी, जिसके दो अंको मे लंका का युद्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, पुष्पक मे अयोध्यागमन तथा राम का अभिषेक वर्णित है।

उत्तरकालीन नाटक

२४४ पन्द्रहवी शताब्दी के पश्चात्, विशेष कर सत्रहवी मे, विस्तृत रामकथा सम्बन्धी नाटक-साहित्य की सृष्टि हुई है। अधिकांश सामग्री अब तक अप्रकाशित है (दे० मद्रास तथा तंजूर संस्कृत कैटालॉग)।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन नाटको मे अद्भुत रस को उत्तरोत्तर महत्त्व दिया गया है। उदाहरणार्थ यहाँ दो रचनाओ का उल्लेख किया जाता है।

निर्णयसागर मे प्रकाशित सत्रहवी शताब्दी के दक्षिण निवासी महादेवकृत अद्भुतदर्पण (दस अंक) मे राम को एक ऐंद्रजालिक द्वारा दर्पण के माध्यम से लंका की घटनाएँ दिखलाई जाती हैं।

उसी काल के जानकी-परिणय (जिसकी रचना दक्षिणनिवासी रामभद्र दीक्षित द्वारा हुई थी) मे इतने पात्र एक दूसरे का रूप धारण कर लेते है कि समस्त नाटक हास्यप्रधान बन गया है। सीता का हरण करने के उद्देश्य से विराध राम का रूप धारण कर लेता है तथा शूर्पणखा राम को रोकने के उद्देश्य से सीता का रूप धारण करती है। दोनो आश्रम के पास पहुँच कर एक दूसरे को नही पहचानते हैं और फलस्वरूप विराध शूर्पणखा को ले जाता है। इस प्रकार के और अनेक वृत्तान्त मिलते हैं। अन्त मे छद्मवेशी शूर्पणखा राम-वध का झूठा समाचार लेकर हनुमान् के पूर्व ही अयोध्या मे पहुँच जाती है तथा भरत और शत्रुघ्न को आत्महत्या के लिए प्रेरित करती है।

ग—स्फुट काव्य

श्लेषकाव्य

२४५. (१) संस्कृत साहित्य का प्रथम विस्तृत श्लेषकाव्य रामकथा से सम्बन्ध रखता है। संध्याकर नन्दि ने बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में रामचरित की रचना की थी। इसके २२० आर्याछन्दों में समस्त रामकथा की प्रधान घटनाओं का वर्णन श्लेषात्मक शब्दों में किया गया है, जिसमें साथ-साथ बंगीय राजा रामपाल का चरित्र भी वर्णित है। इसमें वाल्मीकि रामायण के कथानक से कोई भिन्नता नहीं है। इस रचना के अतिरिक्त निम्नलिखित राम सम्बन्धी श्लेषकाव्यों का उल्लेख मिलता है।

(२) दिगम्बर जैन धनंजयकृत राघवपाण्डवीय (बारहवीं श० पूर्वार्द्ध), जिसके १८ सर्गों में रामायण तथा महाभारत की कथा का वर्णन किया गया है। पुत्रेष्टियज्ञ का अभाव (सर्ग ३), वालिवध के पश्चात् सुग्रीव द्वारा अपनी पुत्री कल्याणी का राम को अर्पित करना (सर्ग ६), लक्ष्मण द्वारा कोटिशिला का ऊपर उठाना (सर्ग १२)—यह सब जैनी रामकथा के अनुसार है (दे० ऊपर अनु० ६०)।

(३) कविराज माधव भट्ट अथवा कविराज पंडित कृत राघवपाण्डवीय (१२वीं शताब्दी उत्तरार्ध), जिसके १३ सर्गों में रामायण तथा महाभारत की कथा वर्णित है।

(४) हरदत्त सूरि-कृत राघवनैषधीय, जिसमें राम तथा नल का चरित्रवर्णन मिलता है।

(५) चिदंबर कृत राघवपाण्डवयादवीय (१६०० ई० के लगभग), जिसमें रामायण, महाभारत तथा भागवतपुराण की कथा का साथ-साथ वर्णन किया गया है।

(६) गंगाधर महाडकर-कृत संकटनाशनस्तोत्र (१८वीं शती), जो राम तथा कृष्ण से सम्बन्ध रखता है।

नीति-काव्य

२४६. राम कवि कृत सन्नीति रामायण १५वीं श० का है। प्रत्येक श्लोक का पूर्वार्द्ध नीति-सम्बन्ध है, उत्तरार्द्ध रामकथा विषयक है। इस प्रकार सात काण्डों में समस्त रामकथा प्रस्तुत की गई है (दे० जर्नल त्रावणकुर युनिवर्सिटी ओरियेण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, भाग ७ अंक १-२)।

एक उदाहरण इस प्रकार है :

धर्मार्थसाधकं कुर्यात् व्यापारं स्वकुलोचितम्।
इक्ष्वाकुवंशजोऽरक्षत् क्षोणीं दशरथोऽखिलाम्॥

विलोम-काव्य

२४७ (१) सूर्यदेवकृत रामकृष्णविलोमकाव्य (सन १५४० के लगभग)।

इसके ३६ छदो मे अक्षरो का स्वाभाविक क्रम राम से सम्बन्ध रखता है तथा विपरीत क्रम (दाहिने से बाएँ) कृष्ण से।

(२) वेंकटाध्वरिन्-कृत **यादवराघवीय** (१७वी श० पूर्वार्द्ध)। इसके ३०० छदो मे अक्षरो के स्वाभाविक क्रम से रामकथा तथा विपरीत क्रम से कृष्ण-कथा का वर्णन किया गया है (दे० मद्रास कैटालॉग न० डी ११८६१)।

(३) **राघवयादवीय**। इसका विस्तार ६४ छदो का है तथा कथावस्तु उपर्युक्त यादवराघवीय के समान है (दे० मद्रास कैटालॉग न० डी ७१५८ तथा इन्डिया ऑफिस कैटालॉग न० ७१३३)।

चित्रकाव्य

२४८ (१) कृष्णमोहनकृत **रामलीलामृत** के १२० छदो मे विश्वामित्र-आगमन से लेकर रावण-वध तक की रामकथा का वर्णन किया गया है। इस अपेक्षाकृत आधुनिक काव्य मे मम्बन्ध, पद्मबन्ध, सोपान, गोमूत्र आदि चित्रालकारो का व्यापक प्रयोग मिलता है (दे० हरप्रसाद शास्त्रीकृत सस्कृत कैटालॉग, भाग १, न० ३१७)।

(२) आध्रदेश निवासी वेंकटेशकृत **चित्रबंधरामायण** का भी उल्लेख मिलता है। ६ सर्गो मे विभक्त इसका विस्तार ६२० छद है (दे० तजूर कैटालॉग न० ३७७२)।

शृङ्गारिक खंडकाव्य

२४९ राम सम्बन्धी शृगारिक खंडकाव्य की सृष्टि विशेषकर मेघदूत तथा गीतगोविन्द के अनुकरण पर हुई है।

मेघदूत के अनुकरण पर रचित निम्नलिखित ग्रथो का उल्लेख मिलता है।

(१) **हससंदेश अथवा हंसदूत**—इसके रचयिता के कई नाम पाए जाते है; वेंकटदेशिक, वेंकटनाथ, वेदाताचार्य और श्री वेदान्तातेशिक। उन्होने १३वी शती ई० मे हससदेश को लिखकर राम-काव्य के एक नवीन रूप का प्रवर्त्तन किया। इसमे यह कल्पना की गयी है कि लका से हनुमान के लौटने के बाद विरही राम ने एक राजहस को अपना दूत बनाया और उसे लका का मार्ग समझाकर सीता के लिए अपना सदेश दिया।

(२) **भ्रमरदूत**—(१७वी श० ई०)। नैयायिक रुद्र वाचस्पति अथवा रुद्रन्याय-पंचानन कृत। कथावस्तु हससदेश जैसी है, किन्तु हस के स्थान पर भ्रमर को सम्बोधित किया जाता है।

(३) **कपिदूत**—इसमे हनुमान को भेजा जाता है (दे० ढाका यूनीवर्सिटी मैनुस्क्रिप्ट, न० ९७५ बी)।

(४) कोकिलसदेश—वेंकटाचार्य-कृत ३०० छदो की १७ वी शती की रचना (दे० तजूर कैटालॉग न० ३८६२)।

(५) चंद्रदूत—कृष्णचन्द्र तर्कालकार की रचना (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसेस, भाग २, पृ० १५३)।

(६) वातदूत—(१९वी श० ई०)। न्यायपचानन कृष्णनाथ भट्टाचार्य कृत। विरहणी सीता वायु को दूत बनाकर अशोकवन से राम के पास सदेश भेजती है।

(७) नित्यानन्द शास्त्री कृत हनुमद्दूत इसका प्रमाण है कि बीसवी श० ई० तक इस प्रकार की रचनाओ का क्रम चलता रहा। इनमे राम द्वारा सीता के पास सदेश भेजने का वर्णन है। यह मेघदूत के पदो के चतुर्थ चरण की समस्यापूर्तिपरक रचना है।

२५०. गीतगोविन्द के अनुकरण पर भी बहुत से राम-सीता-विषयक काव्यो की रचना हुई है। उदाहरणार्थ—(१) रामगीत-गोविन्द (वेंकटेश्वर प्रेस)। यह काव्य भूल से जयदेवकृत माना जाता है। इसमे गीतगोविन्द का स्पष्टतया अनुकरण किया गया :

> यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।
> मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् ॥३॥
>
> (गीतगोविन्द, सर्ग १)

> यदि रामपदाम्बुजे रतिर्यदि वा काव्यकलासु कौतुकम्।
> पठनीयमिदं तदीजना रुचिरं श्रीजयदेवनिर्मितम् ॥ ४ ॥
>
> (रामगीतगोविन्द, सर्ग १)

प्रस्तुत रचना के छः सर्गो (२४ गीत) मे विष्णु-अवतार राम के जन्म से लेकर रावण-वध के पश्चात् अयोध्या मे राम के अभिषेक तक समस्त रामकथा को सक्षेप मे प्रस्तुत किया गया है। गीतगोविन्द का अनुकरण होते हुए भी सीता के सौन्दर्य का वर्णन नही हुआ, शृंगारात्मक स्थल अत्यन्त मर्यादित है तथा समस्त काव्य शुद्ध राम-भक्ति से ओतप्रोत है। कथानक की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं :

—जन्म के पश्चात् राम का अपना विष्णु-रूप दिखलाना।

—मिथिला मे ही परशुराम का तेजोभग।

—कैकेयी दशरथ-रथ का भग्न अक्ष सँभालती है।

—कई स्थलो पर रामचरितमानस का सादृश्य। विवाह मे देवता लोग उपस्थित है तथा जनक राम के चरण धोते है, जयन्त सीता के पैर पर चोच मारता है : शक्रसूनुरगमत् खगाकृतिः ॥२॥ विददार पदांगुष्ठम् (सर्ग ४); पपासर के तट पर नारद-राम-सवाद।

(२) **गीतराघव** के नाम से दो रचनाएँ प्रचलित हैं, एक हरिशंकरकृत तथा अन्य प्रभाकरकृत (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसस, भाग २, पृ० ४३)।

(३) **जानकीगीता**। श्रीहर्य्याचार्य कृत। हरिनाथ कृत एक **राम-विलास** नामक रचना का उल्लेख मिलता है, जो सभवत: **जानकीगीता** से अभिन्न हो।[1]

(४) **सगीतरघुनंदन**। इस १८वी श० की विश्वनाथ सिंह की रचना मे **गीत-गोविंद** के अनुकरण के साथ-साथ सीता-राम की युग्मभक्ति का भी प्रतिपादन किया गया है। इसमे रामचन्द्र के गृहरास (सर्ग २), वसन्त रास (सर्ग ३) आदि का भी वर्णन मिलता है (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसस, भाग ३, न० ३२४)।

(५) **राघवगीतम् या रामगीतम्** (१८ वी श० ई०)। इसका रचयिता श्रीकृष्ण भट्ट जयपुर के राजा के आश्रय मे रहता था तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास मे लाल कवि के नाम से प्रसिद्ध है। राघवगीतम् के कारण उसे राजा की ओर से रामरासाचार्य की उपाधि मिली थी। इस रचना के १२ सर्गों मे प्रमुख रूप से राम, सीता तथा सीता की सखियो (ग्रामवधूटियो) की चित्रकूट-रासलीला का वर्णन है (दे० नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ७१, अक ३-४, पृ० २६३-३०६)।

अन्य स्फुट काव्य

२५१ उपर्युक्त रचनाओ के अतिरिक्त साहित्यदर्पण के रचयिता विश्वनाथ कृत **राघवविलास**, मुद्गलभट्ट कृत **रामार्याशतक**, कृष्णेन्द्रकृत **आर्यारामायण** आदि का उल्लेख भी मिलता है, जिनमे रामकथा के दृष्टिकोण से नई सामग्री नही मिलती, लेकिन जिनसे रामकथा की लोकप्रियता तथा समस्त काव्य मे व्यापकता का प्रमाण मिलता है। सोमेश्वर कृत **रामशतक** मानता है कि अहल्या वास्तव मे पाषाण बन गयी थी। रचना १३ वी शताब्दी की है तथा बडौदा के ऑरियेंटल सीरिज मे प्रकाशित है (१९६५)।

घ—कथा-साहित्य

२५२. दशकुमारचरित, वासवदत्ता, हर्षचरित, कादम्बरी आदि की आख्यायिका-शैली मे किसी विस्तृत राम-सम्बन्धी रचना की सृष्टि नही हो पाई है। कारण यह होगा कि इस शैली की रचनाओ का कथानक कल्पित माना जाता था। फिर भी कथा-साहित्य की सब से प्राचीन रचना, गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** मे (जिसकी रचना सभवत: प्रथम श० ई० पूर्व[2] हुई थी) रामकथा भी वर्णित थी, ऐसा अनुमान किया जा सकता

१. दे० मोनियेर विलियम्स . इडियन विजडम, पृ० ३६८।

२ दे० एल० ऐल्सदॉर्फ : प्राच्य विद्या का १६वाँ अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन, पृ० ३४६।

है। इस अनुमान का आधार यह है कि बृहत्कथा के जो दो विस्तृत रूपान्तर मिलते हैं, उनमें रामकथा भी सम्मिलित की गई है, अर्थात् जैनियों का वसुदेवहिण्डि (पाँचवीं श० ई० अथवा इसके पूर्व) तथा सोमदेवकृत कथासरित्सागर। गुणाढ्य की रचना का संक्षेप क्षेमेन्द्र तथा बुधस्वामी द्वारा भी किया गया है। बुधस्वामी के बृहत्कथा-श्लोक संग्रह (लगभग ८०० ई०) में रामकथा नहीं मिलती, लेकिन क्षेमेन्द्र की बृहत्कथा-मंजरी में रामकथा अति संक्षिप्त रूप में वर्णित है।

२५३. वसुदेवहिण्डि (वसुदेव-भ्रमण) अथवा वसुदेवचरिय में संघदास ने जैन महाराष्ट्री गद्य में बृहत्कथा का जैनी रूप प्रस्तुत किया है[1]। इसमें जो संक्षिप्त रामकथा मिलती है, वह जैनी रामकथा से प्रभावित होते हुए भी वास्तव में गौण परिवर्तनों के साथ वाल्मीकीय कथा ही है। रामकथा के विकास की दृष्टि से वसुदेवहिण्डि की रामकथा इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसमें पहले-पहल सीता का जन्म लंका में माना गया है।

कथानक रावण की अत्यन्त संक्षिप्त कथा से प्रारंभ होता है—वंशावली (जो कूर्म पुराण से संबंध रखती है); लंका में प्रवास, मन्दोदरी से विवाह। अनन्तर दशरथ तथा उनकी संतति का उल्लेख हुआ—कौशल्या के पुत्र राम, सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण तथा कैकेयी के पुत्र भरत तथा शत्रुघ्न। इसके बाद मन्दोदरी तथा रावण की पुत्री सीता की जन्म-कथा का वर्णन किया गया है, जिसके अनुसार परित्यक्ता बालिका जनक की दत्तक पुत्री बन जाती है (दे० अनु० ४१२)। सीता स्वयंवर में किसी धनुष की चर्चा नहीं है, सीता बहुत से राजाओं में से राम को चुनती हैं, अन्य भाइयों के विवाह का भी संकेत मिलता है। राम के १२ वर्ष के निर्वासन के वर्णन में मंथरा तथा कैकेयी के दो वरों का उल्लेख है (दे० अनु० ४४७)। भरत दशरथमरण के बाद अयोध्या पहुँच कर राम के पास जाते हैं। उसी अवसर पर कैकेयी पश्चात्ताप करते हुए राम से राज्य स्वीकार करने का निवेदन करती है। शूर्पणखा का विरूपीकरण, मारीच का कनक-मृग बनना, सीताहरण, जटायु-रावण-युद्ध, सुग्रीव से मैत्री, वालिवध, हनुमान् का सीता का पता लगाना, सेतुबंध, विभीषण की शरणागति, रावण-वध के बाद विमानों पर अयोध्या का प्रत्यागमन, यह सब वाल्मीकि की कथा के अनुसार ही वर्णित है। जैनी रामकथा का प्रभाव इसमें परिलक्षित है कि लक्ष्मण ही रावण का वध करते हैं तथा उसी अवसर पर देवताओं द्वारा आठवें वासुदेव घोषित किए जाते हैं। इनके अतिरिक्त संघदास विमलसूरि के अनुसार वानरों और राक्षसों को विद्याधर की पदवी देते हैं, भरत तथा शत्रुघ्न को सहोदर भाई मानते हैं तथा कैकेयी के पश्चात्ताप का उल्लेख करते हैं।

---

१. दे० जैन आत्मानन्द सभा (भावनगर) का संस्करण, भाग २, पृ० २४०-२४५ और वी० एम० कुलकर्णी दि रामायण वर्सियन ऑव संघदास, ज० ऑ० इं०, भाग २, पृ० १२८-१३८।

सीताजन्म के नवीन रूप के अतिरिक्त दो अन्य स्थलो पर संघदास का वृत्तान्त मौलिक प्रतीत होता है—सुग्रीव का निमंत्रण स्वीकार कर भरत की सेना युद्ध में भाग लेती है (दे० आगे अनु० ५६७), कैकेयी के दो वरो के लिए दो भिन्न अवसरो की कल्पना कर ली गई है (दे० अनु० ४८७)।

परवर्ती जैन राम-साहित्य पर सघदास का प्रभाव पडा है क्योंकि गुणभद्र उत्तर-पुराण मे रावण की वशावली तथा सीता की जन्म-कथा बहुत कुछ वसुदेवहिण्डि की रामकथा के अनुसार है।

२५४. सोमदेव ने ग्यारहवी शताब्दी मे कथासरित्सागर की रचना की थी। इसमे दो स्थलो पर रामकथा का वर्णन किया गया है। चौदहवी लम्बक की तरग १०७ के अन्तर्गत वनवास से लेकर रावणवध के बाद राम की अयोध्या-यात्रा तक की अत्यन्त सक्षिप्त कथा मिलती है (१२-२६)। इसमे वाल्मीकीय कथानक से कोई भिन्नता नही पाई जाती है, लेकिन कथासरित्सागर की अन्य रामकथा मे इसका एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है। अलकारवती लबक मे काचनप्रभा नामक विद्याधरी विरहव्याकुल नरवाहन को सान्त्वना देने के उद्देश्य से रामकथा का वर्णन करती है (दे० निर्णयसागर प्रेस सस्करण ६, ५१, ५८-११२)।

प्रारभ मे विष्णु के अशावतार राम के निर्वासन, सीताहरण तथा रावणवध का अत्यन्त सक्षिप्त वर्णन है (दे० ५६-६५)। अनन्तर धोबी-वृत्तान्त से मिलती-जुलती सीता-त्याग की कथा दी गयी है (६६-७१), जिसका वर्णन निबध के बीसवे अध्याय मे किया जायेगा (दे० अनु० ७१६)।

शेष वृत्तान्त की निम्नलिखित विशेषताएँ है :

—वाल्मीकि के आश्रम मे सीता की परीक्षा, जिसमे पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को टिट्टिभसर के उस पार पहुँचाती है (दे० आगे अनु० ६०१)।

—लव के जन्म के बाद कुश के अलौकिक जन्म की कथा (दे० आगे अनु० ७४३)।

—लव और कुश का राम-सेना से युद्ध (दे० आगे अनु० ७४७)।

—राम तथा सीता का सम्मिलन, जिसके कारण यह रामकथा सुखान्त है (दे० आगे अनु० ७५६)।

२५५ रामकथा को लेकर पन्द्रहवी शताब्दी के बाद एक विस्तृत चम्पू-साहित्य की सृष्टि की गई है, जिसकी अधिकाश सामग्री अप्रकाशित है। सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रचलित राम-सम्बन्धी चम्पू की रचना ग्यारहवी शताब्दी मे विदर्भ के राजा भोज द्वारा हुई थी। इस चम्पूरामायण मे कही भी कथानक के दृष्टिकोण से परिवर्तन नही किया गया है। इसका आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है। यह निम्नलिखित

वृत्तान्तो से स्पष्ट है—अयोमुखी का विरूपीकरण (पृ० २५०; चौखम्बा विद्याभवन संस्करण, १९५६): लंकादेवी-हनुमान-सवाद (पृ० ३२१); विभीषण की पुत्री अनला का उल्लेख (पृ० ३४२), सुग्रीव-रावण-द्वन्द्वयुद्ध (पृ० ५८४)। इसके केवल पांच कांड भोजकृत है, लक्ष्मण भट्ट ने युद्धकांड रचकर इस ग्रंथ को समाप्त किया था। कालिदास के रघुवंश का भी इस रचना पर प्रभाव पड़ा है।

दिवाकर कृत अमोघराघव चम्पू (१३ वी श० ई०) के अतिरिक्त वेंकटाध्वरिन् का उत्तररामचरितचंपू (१६ वी श० ई०) उल्लेखनीय है। इसमे वाल्मीकि के उत्तरकांड के आधार पर रावण तथा हनुमान के चरित्र का वर्णन है।

२५६ वासुदेव ने सत्रहवी शताब्दी ई० उत्तरार्द्ध मे रामकथा को लिखकर वाल्मीकिरामायण के प्रथम ६ काडो की कथा सक्षिप्त रूप से गद्य में लिखी थी। इसमे महाभारत के रामोपाख्यान के अनुसार मंथरा एक दुन्दुभी नामक गंधर्वी का अवतार है। कथानक वाल्मीकीय कथा से भिन्न नही है, लेकिन उनमे अहल्या के वास्तव मे पत्थर बन जाने का उल्लेख किया गया है। पिटर्सन की सस्कृत हस्तलिपियों की सूची मे एक अन्य रामकथा सबधी गद्य रचना का नाम मिलता है अर्थात् अनन्तभट्ट कृत रामकल्पद्रुम।

अध्याय १२

आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकथा

क—द्राविड़ भाषाओं के साहित्य में रामकथा

तमिल रामायण ✓

२५७. द्राविड भाषाओ का रामकथा-सम्बन्धी सबसे प्राचीन काव्यग्रन्थ कम्बकृत रामायण है, जिसकी रचना बारहवी शताब्दी ई० मे हुई थी।[1] इसमे वाल्मीकि-कृत रामायण के प्रथम छः काडो की समस्त कथावस्तु स्वतन्त्र रूप से वर्णित है और अनेक नये वृत्तान्त भी जोडे गए है। ऐसा कहा जाता है कि कम्बर के पूर्व ओट्टक्कूतन ने तमिल भाषा मे रामायण लिखा था, लेकिन कम्बर की रचना सुनकर वे अपना काव्य नष्ट करने लगे। यह सुनकर कम्बर उनके पास गये लेकिन वे उत्तरकाड ही बचा सके। इस विषय मे इतना ही निश्चित है कि तमिल रामायण का उत्तरकांड कम्बकृत नही है। इसकी रचना बाद मे ओट्टक्कूतन द्वारा हुई थी।[2] तमिल उत्तरकाड मे राम धोबी के कथन के कारण सीता का परित्याग करते है, शेष कथानक प्रचलित वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

कंबर की रचना के मगलाचरण आदि से ज्ञात होता है कि वह शैव थे।[3] उन्होने अपने काव्य के प्रारम्भ मे कहा है कि मैं वाल्मीकि तथा दो अन्य कवियो के आधार पर लिख रहा हूं। इन दोनो मे से एक सस्कृत कवि कुमारदास प्रतीत होते है, क्योकि अनेक वाल्मीकीय रामायण से भिन्न वृत्तान्त जानकीहरण (८वी शताब्दी ई०) तथा तमिल रामायण दोनो मे मिलते है।

कम्बर वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ से परिचित थे, यह निम्नलिखित प्रसगो से स्पष्ट है :

समुद्रमथन के समय विष्णु का मोहिनी-रूप धारण करना (१,६ और अनु० ३३२), अयोमुखी का वृत्तान्त (३, १० और अनु० ४५६), लक्ष्मण-तारा-सवाद (४,

---

१. एस० वैयपुरी पिल्लै का कहना है कि सातवी श० ई० मे वाल्मीकि रामायण का तमिल मे पद्यात्मक अनुवाद हुआ था। यह अनुवाद अप्राप्य है (दे० हिस्टरी ऑव तमिल लैंग्विज एण्ड लिटरेचर, मद्रास, १९५६, पृ० १०३)।

२ वी० एम० गोपाल कृष्णाचारियर : कंब-रामायण बालकाड, पृ० ६।

३. एम० एस० पूर्णलिंग पिल्ले : तमिल लिटरेचर, पृ० २२३।

१० और अनु० ५१०), द्रुमकुल्य का विनाश (६, ६ और अनु० ५७४, २), सुग्रीव-रावण का द्वन्द्व युद्ध (६, ८ और अनु० ५८४), वानरियो की अयोध्या-यात्रा (६, ३७ और अनु० ६०६)। रणभूमि मे कुभकर्ण-विभीषण-सवाद (६, १५) का प्रसग सभवत. पश्चिमोत्तरीय पाठ के आधार पर लिखा गया है, किन्तु यह प्रसग अध्यात्मरामायण, रगनाथ रामायण आदि मे भी विद्यमान है अत. कम्बर का आधार निश्चित करना असम्भव है।

कथानक के दृष्टिकोण से कम्ब-रामायण के निम्नलिखित प्रसङ्ग विशेष रूप से उल्लेखनीय है :

(१) राम-लक्ष्मण के विश्वामित्र के साथ मिथिला मे प्रवेश का स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। मिथिला नगर के विस्तृत वर्णन के पश्चात् राम और सीता के एक-दूसरे को देखने का तथा फलस्वरूप रात मे दोनो के विरह का भी चित्रण किया गया है (बालकाड, सर्ग १०)। इसके बाद जनक द्वारा राम का स्वागत तथा सीता-स्वयवर वर्णित है (सर्ग १२)। यह प्रसङ्ग बहुत कुछ जानकीहरण के वृत्तान्त से मिलता-जुलता है (दे० अनु० ४०३)।

(२) कम्बर के बालकाड मे दशरथ की मिथिला-यात्रा का पाँच सर्गो मे वर्णन किया गया है। दशरथ के साथ सेना, अन्त पुर की रमणियाँ आदि भी है। उनके विलास का विस्तृत चित्रण किया गया है—पुष्पचयन, जलक्रीडा, आपानकेलि आदि। जानकीहरण मे भी दशरथ का अपनी पत्नियो के साथ विहार विस्तारपूर्वक वर्णित है।

(३) सीताहरण के वृत्तान्त मे रावण सीता को स्पर्श करने के भय से पृथ्वी खोदकर भूमिभाग के साथ-साथ उन्हे ले जाता है (अरण्य काण्ड, सर्ग ८)।

(४) युद्धकाण्ड मे नारायणावतार राम मे युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए विभीषण रावण को नृसिंहावतार की कथा सुनाता है। किसी भी अन्य रामकथा मे ऐसा वर्णन नही मिलता (सर्ग ३)।

(५) महोदर की आज्ञा से मरुत्त नामक एक राक्षस जनक का रूप धारण कर लेता है और रावण को पतिस्वरूप स्वीकार करने का सीता से अनुरोध करता है। इस मायाजनक व्यक्ति का अन्यत्र उल्लेख नही है (सर्ग १६)।

(६) सेतुबन्ध तथा जानकीहरण के अनुकरण पर युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो का सभोग भी वर्णित है (सर्ग २४)।

कम्ब-रामायण की कथावस्तु के और बहुत से स्थलो पर वाल्मीकि रामायण से भिन्नता[1] पाई जाती है। उदाहरणार्थ—इन्द्र का विडाल का रूप धारण करना (अनु०

---

१. गौण परिवर्तनो के लिए पाठक अनु० ३६५, ४३३, ४३४, ४६४ और ५१५ भी देख ले।

३४५), इन्द्र तथा अहल्या के प्रति गौतम का शाप (अनु० ३४६), मथरा के वैर का कारण (अनु० ४५४), निद्रादेवी का मानवीकरण (अनु० ४६१), शरभग-मोक्ष की कथा (अनु० ४५६), हनुमान के आभूषणो का उल्लेख (अनु० ५१२), लक्ष्मण द्वारा दुदुभि के अस्थिकङ्काल का प्रक्षेपण (अनु० ५१७), राम (अनु० ५२५) तथा सीता (अनु० ५५०) द्वारा प्रदत्त अभिज्ञान, स्वयप्रभा (अनु० ५२६) तथा सम्पाति (अनु० ५२७) की कथा, विभीषण की पुत्री के रूप मे त्रिजटा का उल्लेख (अनु० ५४७), मन्दोदरी का सहगमन (अनु० ५४४); लक्ष्मण मात्र का नागपाश (अनु० ५८६) तथा ब्रह्मास्त्र (अनु० ५८७) द्वारा पराजित होना, मायासीता-वध के पश्चात् विभीषण का मधुमक्खी का रूप धारण कर लका मे प्रवेश करना (दे० अनु० ५६१), कुभकर्ण-वध (अनु० ५८६) तथा इन्द्रजित्-वध (अनु० ५६३) के वर्णन मे मौलिकता, भरत द्वारा आत्महत्या-विचार (अनु० ६०६)।

तेलुगु रामायण

(अ) द्विपद रामायण

२५८. तेलुगु साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण रामकथा-विषयक ग्रन्थ रगनाथकृत **द्विपद रामायण** है, जिसकी रचना १४वी शताब्दी मे हुई थी। इसके रचयिता के विषय मे मतभेद है, क्योकि रगनाथ कवि गोनबुद्ध रेड्डी के आश्रित थे और उनकी रचना का श्रेय उनके आश्रयदाता गोनबुद्ध राजु को दिया गया है। फिर भी यह रगनाथ रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।

लोकप्रिय द्विपद नामक छन्द तथा सरल भाषा के कारण इस रामायण का तेलुगु जनसाधारण मे बहुत प्रचार है, यद्यपि मोल्लकृत रामायण इससे अधिक प्रचलित है। द्विपद रामायण के छः काडो मे वाल्मीकि रामायण के प्रथम छः काडो की कथावस्तु का वर्णन किया गया है। इसका प्रधान आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है। राम की जन्मतिथि का उल्लेख, बालकाड की पौराणिक कथाएँ, कैकेयी के अपने पति द्वारा अपमानित किए जाने की कथा, अकपन, अयोमुखी तथा लकादेवी के वृत्तान्त, रावण-सुग्रीव-युद्ध, अगस्त्य द्वारा राम को सूर्यस्तव-प्रदान, ये समस्त प्रसङ्ग जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलते है, रगनाथ रामायण मे विद्यमान है (दे० अनु० २६)। समुद्र-लघन के वृत्तान्त मे मैनाक, सुरसा और सिहिका का क्रम (दे० अनु० ५३१) तथा रावण की द्वितीय सभा का वर्णन (दे० अनु० ५५७) दाक्षिणात्य के अनुसार ही है।

फिर भी वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो की निम्नलिखित सामग्री रगनाथ रामायण मे विद्यमान है।

उदीच्य पाठ—यज्ञदत्त का नाम (दे० अनु० ४३३), दशरथ-सागर की मैत्री का

वर्णन, रावण-मदोदरी-सवाद, नारद-कुभकर्ण-सवाद और कालनेमि-वृत्तान्त (दे० अनु० ५५८)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ—कैकेयी के विद्याबल प्राप्त करने की कथा (दे० अनु० ४३०), नारद-वाक्य, कुभकर्ण-वाक्य और मन्दोदरी के केश-ग्रहण का वृत्तान्त (दे० अनु० ५६०)।

गौडीय पाठ—भरत-हनुमान-सवाद (दे० ५५६)।

इसके अतिरिक्त द्विपद रामायण के कुछ प्रसङ्ग वाल्मीकि रामायण के किसी भी पाठ मे नही मिलते, उदाहरणार्थ

(१) इन्द्र ने मुर्गे का रूप धारण कर रात्रि मे ही बाँग दी और इस प्रकार गौतम को भ्रम मे डाला (दे० अनु० ३४५)।

(२) सीता-स्वयवर के अवसर पर जनक कहते हैं कि यज्ञ के लिए हल चलाते समय मैंने सीता को एक मजूषा मे पाया था।[1]

(३) मथरा के वैर के कारण (दे० अनु० ४५४)।

(४) लक्ष्मण के जागरण के वृत्तान्त मे निद्रादेवी का मानवीकरण (दे० अनु० ४६१)।

(५) शूर्पणखा के पुत्र जम्बुमालि की कथा (दे० अनु० ६३२)।

(६) राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण द्वारा कुटी के चारो ओर सात रेखाएँ खीची जाने का वृत्तान्त (दे० अनु० ४९८)।

(७) हनुमान के आभूषणो का उल्लेख (दे० अनु० ५१२)।

(८) समुद्र-मथन के समय वालि-सुग्रीव द्वारा देवताओ की सहायता तथा तारा की उत्पत्ति (दे० अनु० ५१५)।

(९) नल द्वारा वर-प्राप्ति (दे० अनु० ५७५) तथा हनुमान से उसका सघर्ष (दे० अनु० ५७६)।

(१०) सेतु-निर्माण मे गिलहरी की सहायता (दे० अनु० ५७७)।

(११) रावण के छत्र-चामरो पर बाण चलाने का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८४)।

(१२) सुलोचना के सहगमन की कथा (दे० अनु० ५९४)।

(१३) रावण की नाभि मे अमृत की स्थिति (दे० अनु० ५९८)।

(१४) अयोध्या की वापसी यात्रा मे शिवप्रतिष्ठा (दे० अनु० ५८०)।

---

१ दे० बालकाड, अध्याय ३२। प्रस्तुत ग्रथ के समस्त संदर्भ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित रंगनाथ रामायण के हिन्दी अनुवाद के अनुसार दिए गए हैं।

(१५) सेतु-भग का वृत्तान्त (दे० अनु० ६०७)।
(१६) हनुमान् का राम के पत्तल मे भोजन करना (अनु० ७०७)।

(आ) अन्य रामायण

२५९. तेलुगु रामसाहित्य[1] की सर्वप्रथम रचना तिक्कन्न कृत **निर्वचोत्तर रामायण** (निर्वचन का अर्थ है गद्यविहीन) है। इसकी कथावस्तु वाल्मीकि के उत्तरकाण्ड के अनुसार है और यह १३वी श० ई० की मानी जाती है। रगनाथ रामायण मे उत्तर-काड की कथावस्तु का अभाव है। अत काचविभुड्ड तथा विट्ठलराजु ने द्विपद छन्द मे **उत्तररामायण** की रचना करके प्रचलित रामायण की कथा पूरी की थी। इसके अति-रिक्त ककटि-पापराजु (१८वी श०) ने भी एक **उत्तररामायण** नामक चम्पू की रचना की है।

२६०. चौदहवी शताब्दी का **भास्कर रामायण** सबसे अधिक कलात्मक तथा साहित्यिक माना जाता है। यह **वाल्मीकि रामायण** का सस्कृत-गर्भित तेलुगु मे स्वतन्त्र अनुवाद कहा है, किन्तु इसमे रगनाथ रामायण के कुछ वृत्तान्तो का समावेश किया गया है, उदाहरणार्थ—अहल्या का शिला बन जाना, शबरी बैर का कारण, जम्बुकुमार की कथा। भास्कर के अतिरिक्त उनके पुत्र, मित्र, शिष्य आदि अनेक व्यक्तियो ने इस रामायण के कुछ अश लिखे हैं।

२६१. १६वी श० ई० की निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय हैं—रामभद्र कृत **रामाभ्युदयम्** (चम्पू), पिगलि सूरनार्य कृत **राघवपांडवीयं** (श्लेषकाव्य) और कट्टुकूरि रुद्रकृत **सुग्रीव-विजयमु**। तेलुगु जनसाधारण का सबसे लोकप्रिय रामायण **मोल्ल रामायण** है, जिसकी रचना लगभग १६०० ई० मे एक मोल्ल नामक कुम्हारिन कुमारी द्वारा हुई थी। यह बहुत सक्षिप्त है और भक्तिभाव से ओत-प्रोत है किन्तु कथानक वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

२६२ सत्रहवी श० ई० मे कट्ट वरदराजु ने एक विस्तृत **द्विपद रामायण** की रचना की है, सम्पादक का कहना है कि कट्ट वरदराजु प्रायः वाल्मीकीय कथा ही प्रस्तुत करते हैं (दे० श्री रामायणमु ऑव कट्ट वरदराजु, मद्रास यूनिवर्सिटी, १९५०, भूमिका)। एक ही परिवर्तन का उदाहरण दिया जाता है—पाषाणभूता अहल्या का उद्धार। इस शताब्दी का **रघुनाथ रामायण** पूरा उपलब्ध नही है।

२६३ अठारहवी शताब्दी की रचनाएँ वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखी गयी हैं—चम्पू शैली में रचित **गोपीनाथ रामायण**, द्विपद छन्द का **एकोजी रामायण**

---

१. दे० डॉ० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति : हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यो का तुलनात्मक अध्ययन (१९६९)।

तथा ठेठ तेलुगु का प्रथम तेलुगु रामायण । अंतिम रचना का लेखक कूचिमंच तिम्म कवि है।

मलयालम रामायण

२६४. यद्यपि मलयालम साहित्य की प्राचीनतम रचना रामचरित से सम्बन्ध रखती है, किन्तु मलयाली कवियों ने रामकथा के वर्णन में किसी मौलिकता का प्रदर्शन नहीं किया है। १७ वीं शताब्दी तक निम्नलिखित राम-सम्बन्धी रचनाओं का उल्लेख मिलता है।

रामचरितम् : दक्षिण तिरुवांकुर की एक संस्कृत उपभाषा में लिखने वाले राम नामक कवि ने चौदहवीं शताब्दी में **रामचरितम्** की रचना की थी, जो मलयालम साहित्य का प्राचीनतम सुरक्षित ग्रन्थ है। इस रचना का वास्तविक नाम है इरामचरित। एक दन्तकथा के अनुसार इसके रचयिता तिरुवांकुर के एक राजा थे. लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण नहीं मिलता।[1] अपनी रचना के प्रारम्भ में कवि ने वाल्मीकि का उल्लेख किया है और अपने काव्य के बहुत से स्थलों पर वाल्मीकि का अक्षरशः अनुवाद भी किया है। इसकी कथा वस्तु केवल वाल्मीकि के युद्धकांड से सम्बन्ध रखती है। अय्यिप्पिल्लैआशान का रामकथप्पाट्टु भी उसी समय का माना जाता है और वह इरामचरित की भाँति राम-रावण-युद्ध मात्र प्रस्तुत करता है।

२६५ **कण्णश्श रामायण** : पन्द्रहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध की यह कण्णश्श पणिक्कर कृत रचना वाल्मीकि रामायण का अनुवाद मात्र है: कण्णश्श ने प्रचलित रामायण के अनेक अनावश्यक वृत्तान्त छोड़ दिये हैं।

२६६ लगभग १५०० ई० में पुनम् नंपूतिरि ने रामायण चम्पू मणिप्रवालम् शैली में लिखा है। इस शैली में संस्कृत मिश्रित मलयालम का प्रयोग किया जाता है।

२६७. **अध्यात्म रामायण** : इसकी रचना १५७५ और १६५० के बीच में एषुत्तच्छन द्वारा हुई थी।[2] यह ग्रंथ मलयालियों में सबसे अधिक लोकप्रिय रामायण है।

२६८. **केरल वर्मा रामायण** : राजा वीर केरल वर्मा की यह रचना भी वाल्मीकि रामायण का स्वतंत्र अनुवाद है।

कन्नड़ रामायण

२६९. ११वीं शताब्दी में कन्नड़ भाषा में एक विस्तृत जैन रामकथा-साहित्य की सृष्टि होने लगी थी। इसका उल्लेख ऊपर (अनु० ५६ और ६२) हो चुका है। उस

१. दे० आर० नारायण पणिक्कर : भाषा साहित्य चरित्रम्, भाग १, १९२२।

२. दे० चो० ए० मेनोन : एषुत्तच्छन एन्ड हिज़ एज। यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, १९४०।

जैन राम-साहित्य की अपेक्षा ब्राह्मण कन्नड राम साहित्य अर्वाचीन है। १६ वी शताब्दी मे तोरवे निवासी नरहरि ने अपना रामायण लिखा था, जो तोरवे रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।[1] इस रचना के अतिरिक्त नरहरि कृत मैरावण कालग (मैरावण का युद्ध) का भी उल्लेख मिलता है, जिसकी चार सधियों मे हनुमान द्वारा मैरावण-वध की कथा मिलती है।

तोरवे रामायण के बाद कन्नड भाषा मे रामकथा विषयक एक अत्यन्त समृद्ध साहित्य की सृष्टि हुई किन्तु इसमे रामकथा के विकास की दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री नही मिलती है।[2] सोलहवी शताब्दी का जैमिनी भारत कर्नाटक मे अत्यन्त लोकप्रिय है, इसकी रचना सस्कृत जैमिनी भारत के आधार पर लक्ष्मीश नामक कवि द्वारा हुई थी (दे० अनु० १८५)। इसमे सीता वनवास का अत्यन्त करुणापूर्ण चित्र अकित किया गया है।

तोरवे रामायण के छः काण्डो मे बालकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक की वाल्मीकीय कथा का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे से यह रचना दाक्षिणात्य पाठ से अधिक साम्य रखती है, यह निम्नलिखित प्रसगो से स्पष्ट है : लक्ष्मण सीता के नूपुर मात्र पहचान लेते है (अनु० ४६२), लकादेवी की पराजय (अनु० ५३५), रावण की दो सभाएँ (५६८, ३), रावण-सुग्रीव-युद्ध (अनु० ५८४)। वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो की भी कुछ सामग्री तोरवे रामायण मे मिलती है किन्तु इसका आधार आनन्द रामायण प्रतीत होता है, यह सामग्री इस प्रकार है—कालनेमि का वृत्तान्त (अनु० ५८७), हिमालय-यात्रा के समय हनुमान-भरत के परस्पर दर्शन (अनु० ५८८), मन्दोदरी-केशग्रहण (अनु० ५९७)। उदीच्य पाठो का एक अन्य प्रसग अर्थात् शरणागति के पूर्व विभीषण का अपनी माता से भेट करना आनन्द रामायण मे नही मिलता किन्तु यह रगनाथ तथा भावार्थ रामायण मे भी विद्यमान है जिससे स्पष्ट है कि यह दक्षिण भारत मे पर्याप्त मात्रा मे प्रचलित था।

---

१ आर० नरसिंहाचार्य के अनुसार नरहरि १५०० ई० के लगभग जीवित थे (दे० कर्णाटक कवि चरिते, भाग २, पृ० १४२)। इ० पी० रैस के अनुसार तोरवे रामायण की रचना १५६० के लगभग हुई थी। नरहरि अपने को कुमार वाल्मीकि कहते है। एक अन्य मत के अनुसार कवि का वास्तविक नाम अज्ञात है, वे अपने गाँव के देवता नरसिंह के अनन्य भक्त थे, इसीसे उनका नाम नरहरि माना गया है।

२. दे० श्री हिरण्मय . कन्नड साहित्य मे रामकथा परम्परा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ, पृ० ७५१।

अन्य मध्यकालीन रचनाओं की भाँति मराठी तोरवे रामायण भक्ति-भाव से ओत-प्रोत है। उदाहरणार्थ अतिकाय कुम्भकर्ण आदि राक्षस वैकुण्ठ-धाम से रणक्षेत्र में आ पहुँचते हैं तथा लक्ष्मण द्वारा मारे जाने पर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं (दे० ६. नदि ६४)।

तोरवे रामायण के अनेक प्रसंग केवल आनन्द रामायण[1] में मिलते हैं, उदाहरणार्थ रावण का शिव-धनुष के नीचे दब जाना (दे० अनु० ३६०); ... के कारण वालि की अवहेलना (अनु० ५०२); ... ने अनुरोध करना, हनुमान का अपनी पूँछ बढ़ाना ... , रावण की दाढ़ी जल जाना (दे० अनु० ५१८)। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सामग्री आनन्द रामायण तथा तोरवे रामायण, दोनों में मिलती है, यद्यपि वह अन्यत्र भी पाई जाती है : पाषाणभूता अहल्या तथा ... (अनु० ३४६); सीता के स्वयंवर में पराजित राजाओं के साथ राम का युद्ध (अनु० ४०२); चित्रकूट में कैकेयी का पश्चात्ताप (अनु० ४५३), ... (अनु० ४६१); वालि की मुक्ति-प्राप्ति (अनु० ५२०); सीता-रावण-संवाद में ... की उपस्थिति (अनु० ५४३); अंगद का अपनी पूँछ की कुण्डली बनाकर उस पर रावण-सभा में बैठ जाना तथा बाद में रावण पर प्रहार करना (अनु० ५८१); सेतु-बन्ध का उल्लेख (अनु० ६०७), लक्ष्मण द्वारा सुलोचना के पुत्र का वध (अनु० ६६०); हनुमान का ... का उच्छिष्ट खाना (अनु० ७०३)।

इससे स्पष्ट है कि नरहरि आनन्द रामायण से सुपरिचित थे। फिर भी तोरवे रामायण में बहुत ऐसी सामग्री भी मिलती है जो न तो वाल्मीकि और न आनन्द रामायण में विद्यमान है, उदाहरणार्थ रघुवंश के अनुसार दशरथ की वंशावली (अनु० ३३६); राम-परशुराम के युद्ध का रूप (अनु० ३७१); जटायु के ... का वृत्तान्त (अनु० ४८०), मायासीता की कथा (अनु० ५०६); वालि-सुग्रीव-अंजना की जन्म-कथा (अनु० ५१४); ... के पश्चात् ... से हनुमान की भेंट (अनु० ५३१); सेतु पर मछलियों का आक्रमण (अनु० ५७८), रावण-सभा में पहुँचकर अंगद का रावण को पहचानने में असमर्थ होना (अनु० ५८२), मायासीता-वध की सच्चाई की परीक्षा के लिए हनुमान का लंका में प्रवेश करना (अनु० ६२१)। यह सामग्री किसी-न-किसी रूप में अन्य रामकथाओं में भी पाई जाती है किन्तु तोरवे रामायण की निम्नलिखित सामग्री अन्यत्र नहीं मिली है।

---

१. ये प्रसंग अतः आनन्द रामायण पर निर्भर मराठी भावार्थ रामायण में भी पाये जाते हैं; दे० अनु० २०४।

अंधमुनि पुत्र का ताण्डव नाम (अनु० ४३३); अत्रि द्वारा जयंत को शाप (अनु० ४३६); विष्णु-माया के अवतार के रूप मे मथरा का उल्लेख (अनु० ४५४); जावालि का वन मे राम से मिलने आना (अनु० ४७६); अभिज्ञान स्वरूप चित्रकूट मे राम-सीता की जलक्रीडा का उल्लेख (अनु० ५२५); हनुमान का लंका जाकर अंगद को राम के पास ले आना (अनु० ५८५), कुम्भकर्ण के जीवरत्न का उल्लेख (अनु० ५८६, ८); ओषधि पर्वत का अपने आप अन्तर्द्धान हो जाना (अनु० ५८७), विभीषण के स्पर्शमात्र से माया-सीता के शव का ओझल हो जाना (अनु० ५६१)।

आदिवासी कथाएँ

२७० आदिवासियो का साहित्य सुरक्षित न रह सका, केवल उनकी कुछ दन्त-कथाएँ मिलती है। उन कथाओ मे रामकथा का मूल रूप ढूंढना व्यर्थ है। ऊपर (दे० अनु० ११०) यह दिखलाने का प्रयास किया गया है कि रामायण के वानर, ऋक्ष, राक्षस आदि वास्तव मे आदिवासी ही हैं। यहाँ पर उदाहरणार्थ कुछ आदिवासी कथाओ का उल्लेख किया जाता है, जिनका विवरण आवश्यकतानुसार चतुर्थ भाग में दिया जायेगा। कई जातियों मे शवरी-विषयक दन्तकथाये प्रचलित हैं (दे० आगे अनु० ४८०) बोडो जाति में सीता-त्याग के विषय मे धोबी वृत्तान्त का विकृत रूप पाया जाता है (दे० अनु० ७२० पाद-टिप्पणी)। उराँव जाति मे लका-दहन की कथा का एक नवीन रूप प्रचलित है (दे० अनु० ५५२)।

२७१. बिहार और बगाल की सथाल नामक आदिवासी जाति मे प्रचलित रामकथा[1] की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

(१) गुरु की आज्ञानुसार आम खाकर दशरथ की पत्नियो का गर्भवती हो जाना (दे० अनु० ३५४)।

(२) कैकेयी के गर्भ से भरत और शत्रुघ्न का जन्म।

(३) रावणवध के बाद लौटकर राम ने सथालो के यहाँ रहकर एक शिव-मन्दिर बनाया तथा उसमे वे नित्यप्रति सीता के साथ पूजा करने आते थे।

इसके अतिरिक्त[2] सीता की खोज करते समय राम गिलहरी और बेर को वरदान तथा बगुले को दण्ड देते हैं (दे० अनु० ४७४), लक्ष्मण हनुमान से भेंट होने

१. दे० गोपाल लाल वर्मा, संथाली लोक-गीतो मे श्रीराम, सारंग (दिल्ली, ७ फरवरी १९६०, पृ० ४३-४५)।

२. आदित्य मित्र 'सताली', सीता की खोज (राँची आकाशवाणी द्वारा प्रसारित ५-११-५७)।

पर उनसे द्वन्द्व युद्ध करते हैं (दे० अनु० ५१२), हनुमान राम-बाण के सहारे समुद्र पार करते हैं (दे० अनु० ५३१) तथा लका-दहन के बाद अपना ही मुँह जलाकर काला कर लेते हैं (दे० अनु० ५५२)।

२७२. शरच्चंद्र राय कृत 'दि बिर्होर्स' नामक ग्रन्थ मे इस जाति मे प्रचलित एक रामकथा उद्धृत है (पृ० ४०५-४२७), जिसमे भगवान् के अवतार राम के जन्म से लेकर रावण तथा कुम्भकर्ण के वध तक का वृत्तान्त सक्षेप मे वर्णित है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं

(१) दशरथ की सात पत्नियो का उल्लेख।

(२) दशरथ का ब्राह्मण (अर्थात् विश्वामित्र) के साथ पहले भरत-शत्रुघ्न को भेज देना तथा ब्राह्मण को इस धोखे का पता लगना। यह वृत्तान्त कृत्तिवास मे भी मिलता है। (दे० आगे अनु० ३८८)।

(३) सीता का आँगन को लीपने के लिए शिव का धनुष उठाना।

(४) लक्ष्मण के १२ वर्ष तक के उपवास का कुछ परिवर्तित रूप। इसके अनुसार लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते थे। (दे० आगे अनु० ४६१)।

(५) सीता-हरण के पहले राम की सहायता करने जाते समय लक्ष्मण का सीता को राई के दाने देना, उनके द्वारा सीता का रावण को भस्मीभूत करना (दे० आगे अनु० ४९८)।

(६) सीता की खोज मे राम का बेर वृक्ष तथा गिलहरी को वर प्रदान करना और बगुले को दड देना। (दे० आगे अनु० ४७४)।

(७) हनुमान का शुक के रूप मे लका मे प्रवेश करना।

(८) राम-लक्ष्मण का हनुमान के पुच्छ पर समुद्र पार करना (दे० आगे अनु० ५७३)।

(९) लक्ष्मण द्वारा रावण-वध।

(१०) रावण-वध के पश्चात् लक्ष्मण द्वारा कुम्भकर्ण के वध का उल्लेख।

२७३ मुण्डा जाति मे एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमे बिर्होर जाति की उपर्युक्त राम-कथा के अनुसार सीता की खोज का कुछ वर्णन किया गया है। बगुला राम की सहायता करना अस्वीकार करता है और राम दण्डस्वरूप उसकी गर्दन खींचते हैं। बेर वृक्ष राम को सीता की साडी के कुछ टुकडे देता है और अमरत्व का वरदान प्राप्त करता है। गिलहरी सीता का मार्ग बताती है और राम उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खींचते हैं[१]।

---

१. दे० एम० सी० मित्र जर्नल ऑव डिपार्टमेंट ऑव लेटर्स, कलकत्ता, भाग ४, पृ० ३०३-३०४।

२७४ डॉ० डब्ल्यू रूबेन ने छोटा नागपुर की **असुर** नामक जाति मे प्रचलित दन्तकथाओ का सकलन किया है[१]। उनकी रचना से पता चलता है कि अन्य आदिवासी जातियों की भाँति असुरो के यहाँ भी सीता की खोज करते समय राम के बगुले को दण्ड देने की कथा प्रचलित है (दे० आगे अनु० ४७४)। इसके अतिरिक्त उनके यहाँ हनुमान के अपने ही बाण पर समुद्र पार करने की कथा (दे० अनु० ५३१) तथा आदिवासियो के मनोविज्ञान के अनुसार लकादहन का एक परिवर्तित रूप भी मिलता है (दे० अनु० ५५२, १४)।

२७५ नर्मदा घाटी की **परधान** जाति[२] मे एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमे सीता लक्ष्मण के सयम की परीक्षा लेती है और लक्ष्मण खरे ही उतरते है (दे० अनु० ४६२)।

२७६. मध्यप्रदेश की **बैगा-भूमिया** नामक जाति मे प्रचलित एक दन्तकथा मे सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी से सबध रखती हैं (दे० ऊपर अनु० ११-१६)। इसके अनुसार माता जानकी के हाथ मे छः उँगलियाँ भी थी, उन्होने छठी उँगली काट कर भूमि मे रोप दी थी। कुछ समय के बाद उससे एक बाँस पैदा हुआ जिसके काडो की गाँठों के बीच सब प्रकार के बीज छिपे हुए थे। उस जाति के यहाँ हनुमान की एक जन्मकथा भी मिलती है जिसमे हनुमान शिव के वीर्य से उत्पन्न माने जाते हैं (अनु० ६७३)[३]।

२७७. टी० बी० नायक ने आदिवासियो मे प्रचलित रामायण-विषयक दन्त-कथाओ का सर्वेक्षण किया है।[४] उनके निबध मे एक **भिलोदी रामायण** की चर्चा है जिसकी रचना लगभग बीस साल पहले एक समाज-सेवक द्वारा हुई थी। इस रामायण मे कथानक की दृष्टि से कोई विशेष परिवर्तन नही किया गया है। टी० बी० नायक मध्यप्रदेश की **आगारिया** जाति मे प्रचलित सहस्र-स्कध-रावण के वध की कथा का भी उल्लेख करते है (दे० आगे अनु० ६३६)।

२७८. भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्रो मे रामकथा का निम्नलिखित विकृत रूप प्रचलित है : किसी राजा की पुत्री उसके हाथ की सूजन से पैदा हुई थी। एक आठ

---

१. दे० आइसनस्मीडे एण्ड डेमोनेन इन इण्डियन (लाइदन, १६३६ पृ० ७८)।

२. दे० शामराव हिवाले : दि परधान्स ऑव दि अपर नर्मदा वैली।

३. दे० एस्० फुक्स : दि गोंड एंड भूमिया ऑव ईस्टर्न मडला, बम्बई (१६६०), पृ० ४२१-४२२।

४. दे० बुलेटिन ऑव दि ट्राइबल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (छिन्दवारा), भाग १, अक २। रामकथा एमाँग दि प्रिमिटिफ ट्राइब्स।

सिर वाले राक्षस ने उस पुत्री का हरण किया था, जिस पर उस राक्षस को मार कर राजा अपनी पुत्री को घर ले आया। बाद मे एक अन्य राक्षस उसे समुद्र पार ले गया। राजा उसकी खोज मे निकला और असफल होकर उसने वानरो के राजा की सहायता माँगी। वानर-राजा राजकुमारी का पता लगाने के लिए उस राक्षस के गाँव मे जा पहुँचा। राक्षस ने उसे पकड कर उसकी पूँछ जलाने का प्रयत्न किया। इस पर वानर-राजा ने गाँव मे इधर-उधर दौड कर सब घरो मे आग लगा दी और लोगो की घबराहट से लाभ उठाकर वह राजकुमारी के साथ भाग निकला और उसे उसके पिता के घर ले गया। राजा ने वानर-राजा को एक सुनहला महल भेंट मे दिया। उस महल मे प्रवेश करते ही उस वानर के बाल गिर गये, उसके चमडे का रग बदलकर गोरा हो गया तथा वह प्रथम अग्रेज बन गया।[1]

ख—आर्य भाषाओ के साहित्य मे रामकथा

२७६. आधुनिक आर्य-भाषाओ के राम-साहित्य की रचना १४-१५ वी शताब्दी से प्रारभ होती है लेकिन अधिकाश इसके बाद ही हुई है, जब राम-भक्ति के आविर्भाव और प्रचार के साथ-साथ रामकथा का विकास भी अन्तिम परिणति पर पहुँच चुका था। अतः रामकथा के दृष्टिकोण से इस साहित्य का महत्व गौण है। फिर भी, भिन्न भिन्न वृत्तान्तो की व्यापकता दिखलाने के उद्देश्य से इसका किंचित् निरूपण अपेक्षित है। पहले एक सिहली वृत्तान्त और इसके बाद काश्मीरी रामायण का परिचय दिया जाता है, क्योकि सम्भव है कि दोनो का आधार सिंहल द्वीप तथा काश्मीर मे प्रचलित प्राचीन रामकथा हो। प्राचीनतम असमिया रामायण १४वी शताब्दी का माना जाता है, अत. पूर्वी राम-साहित्य का उल्लेख हिन्दी-राम-साहित्य के पहले किया जाता है। अन्त में अन्य आर्य भाषाओ के साहित्य का भी महत्त्वानुसार वर्णन किया गया है। मैथिली तथा पजाबी राम-साहित्य का उल्लेख हिन्दी राम-साहित्य के सिंहावलोकन मे किया गया है। सिंधी मे केवल आधुनिक काल मे ही राम-कथा-विषयक सामग्री मिलती है अत इसका वर्णन छोड दिया गया है। नेपाली-राम-साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना भानुभट्टकृत रामायण है, यह अध्यात्म रामायण का पद्यानुवाद है, जो सन् १८५२ ई० मे पूरा हुआ था। इसके पूर्व ही रघुनाथ उपाध्याय ने रामायण सुन्दरकाण्ड लिखा था। अधिकाश समालोचक केवल वाल्मीकि रामायण तथा अपने प्रान्तीय साहित्य की तुलना करके सर्वत्र मौलिकता देखते हैं। इस तरह श्री दिनेशचन्द्र सेन लक्ष्मण के १४

१ दे० वेरियर एलविन, मिथ्स ऑव दि नॉर्थ ईस्टर्न फ्रॉटियर आव इण्डिय पृ० १३१-१३२।

वर्ष तक के उपवास को एक मौलिक बंगाली वृत्तान्त मानते हैं[1]। वास्तव में वाल्मीकि से भिन्न ये अधिकांश कथाएँ पन्द्रहवीं शताब्दी से पूर्व बहुत व्यापक रूप से प्रचलित थीं और अनेक प्रान्तों तथा विदेश में भी किंचित् परिवर्तन सहित पाई जाती है।

सिंहली रामकथा

२८०. सिंहल द्वीप में एक कोहोम्या 'यक्कम' नामक धार्मिक विधि है, जिसका सूत्रपात ५वीं शताब्दी ई० पू० का माना जाता है, लेकिन जिसका साहित्य में पहला वर्णन १५वीं शताब्दी ई० का है[2]। इस विधि के समय काव्यात्मक कथाओं का पाठ होता है, जिनमें से सिंहल के प्रथम राजा विजय तथा नाग-राजकुमारी कुवेणी की और सीतात्याग की कथा, ये दो प्रधान हैं।

सिंहली रामकथा में राम अकेले ही वनवास करते हैं; उनकी अनुपस्थिति में सीता का हरण होता है। वालि हनुमान का स्थान लेता है; वह लंका का दहन करके सीता को राम के पास ले जाता है। रावण-चित्र के कारण सीतात्याग के उल्लेख के बाद (दे० आगे अनु० ७२४) सीता के पुत्र के जन्म का तथा वाल्मीकि द्वारा दो बालकों की सृष्टि का वर्णन किया गया है। अन्त में इन तीनों का राम सेना से युद्ध करने का भी उल्लेख मिलता है (दे० आगे अनु० ७४५ और ७५१)।

काश्मीरी रामायण

२८१. **काश्मीरी रामायण** अर्थात् **रामावतारचरित** की रचना १८वीं शताब्दी के अन्त में दिवाकर प्रकाश भट्ट द्वारा हुई थी। यद्यपि इसका आधार कई शताब्दियों से चली आई हुई परम्परा हो सकती है, किन्तु आधुनिक काल में लिपिबद्ध होने के कारण इसमें रामकथा के विकास के अन्तिम सोपान के लक्षण स्पष्ट दिखलाई देते हैं। यह **काश्मीरी रामायण** की निम्नलिखित विशेषताओं से प्रतीत होता है :

(१) समस्त काव्य का शिव-पार्वती-संवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाना (दे० नं० २)[3]।

(२) अवतारवाद की व्यापकता ; राम पूर्णावतार माने जाते हैं तथा लक्ष्मण,

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : वही, पृ० १७६, जहाँ इस उपवास के विषय में लिखा है—ए प्युर्ली बंगाली टेल।

२. दे० ज० रॉ० ए० सो० (१९४६, पृ० १४-२२, १८५-९१) तथा एलफाबेटिकल गाइड टु सिंगालीज फोक्लॉर (इं० ए० भाग ४५, सप्लेमेंट)।

३. दे० दि काश्मीरी रामायण, जी० ए० ग्रियर्सन का संस्करण, कलकत्ता १९३०।

भरत और शत्रुघ्न क्रमश- शेष, शख और सुदर्शन के अवतार (दे० न० १३)।

(३) अयोध्याकांड के वृत्तान्त के प्रारम्भ मे नारद का राम के पास आकर राम को उनके अवतार होने का स्मरण दिलाना (दे० न० ८)।

यद्यपि **काश्मीरी रामायण** मे दशरथ-यज्ञ से लेकर सीता के भूमि-प्रवेश तथा राम के स्वर्गारोहण तक की समस्त कथा बहुत कुछ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार है, किन्तु इसमे बहुत से परिवर्तन तथा परिवर्द्धन भी किए गए हैं। कथानक के दृष्टिकोण से इनमे से चार वृत्तान्त अधिक महत्वपूर्ण हैं -

(१) मदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म (न० २४)।
(२) रावण के चित्र के कारण सीता का त्याग (न० ६३)।
(३) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (न० ६९)।
(४) कुश-लव का राम-सेना से युद्ध (न० ७१)।

ये वृत्तान्त अन्यत्र भी पाये जाते है। इनके विकास का विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग में किया जायेगा (दे० आगे १४वाँ और २०वाँ अध्याय)। इनके अतिरिक्त **काश्मीरी रामायण** मे कुछ और विशेषताएँ मिलती है, जिनका निरूपण महत्वानुसार चतुर्थ भाग मे किया जायगा। इनका यहाँ उल्लेख मात्र पर्याप्त है :-

(१) राम का दशरथ के लिए पिंडदान करना (न० १८)।
(२) वनवास के समय अहल्या से भेंट (न० १९)।
(३) सीता के कहने पर रावण का जटायु को पत्थर खिलाना (न० २४)।
(४) नारद का लंका मे सीता की खोज करते हुए हनुमान को रावण-चरित सुनाना (न० २९)।
(५) नल की कथा जिसमे उसके फेंके हुए पत्थरो के पानी पर तैरने का कारण बताया गया है (न० ३९)।
(६) युद्ध के समय निराश रावण की कैलास-यात्रा (न० ४७)।

असमिया साहित्य मे रामकथा

२८२. भारत की प्रादेशिक आर्य भाषाओ का प्राचीनतम राम-साहित्य असमिया, बंगाली तथा उडिया मे सुरक्षित है। तीनो भाषाओ मे एक-एक रामायण सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सका ; असमिया मे माधव कदली का, बगाली मे कृत्तिवास का तथा उडिया मे बलरामदास का रामायण। इनमे से १४वी शताब्दी ई० के अन्त का माधव कदली कृत रामायण सबसे प्राचीन है, अतः यहाँ पर पहले असमिया राम-

साहित्य का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है[1]।

असमिया, बंगाली तथा उड़िया राम-साहित्य की एक सामान्य विशेषता यह है कि वह प्रायः वाल्मीकि के गौडीय पाठ पर आधारित है, इसके अतिरिक्त इस साहित्य में कुछ ऐसे वृत्तान्त भी विद्यमान है जो प्रचलित वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलते और अन्यत्र भी दुर्लभ है। कुछ ही उदाहरण यहाँ पर्याप्त होंगे। दशरथ के प्रति शनि के वरदान की कथा कृत्तिवास, बलरामदास तथा माधवदेव के बालकाण्ड में समान रूप से मिलती है (दे० अनु० ४७२)। सारलादास का महाभारत, कृत्तिवास रामायण तथा माधवदेव का बालकाण्ड तीनों दशरथ की ७०० से अधिक पत्नियों का उल्लेख करते हैं (दे० अनु० ३४०), सुपार्श्व द्वारा सीता का हरण करते हुए रावण को चुनौती देने का वृत्तान्त माधव कदली तथा कृत्तिवास दोनों में पाया जाता है (दे० अनु० ५००), माधवदेव का बालकाण्ड विशेष रूप से कृत्तिवास रामायण से प्रभावित हुआ। सारलादास तथा बलरामदास की रामकथा कृत्तिवास के रामायण से साम्य रखती है (दे० अनु० २६२-२६३)।

२८३. असमिया राम साहित्य का मुख्य ग्रंथ प्रचलित **माधवकंदली-रामायण** है। वस्तुतः वह तीन लब्धप्रतिष्ठ कवियों द्वारा लिखा गया है। पाँच ही काण्ड (अयोध्या से युद्ध तक) माधवकंदलीकृत माने जाते हैं, शंकरदेव ने इसके उत्तरकाण्ड की रचना की है तथा शंकरदेव के शिष्य माधवदेव ने आदिकाण्ड लिखा है। माधवकंदलीकृत पाँच काण्डों में वाल्मीकीय रामायण के गौडीय पाठ को प्रामाणिक माना गया है; यह निम्नलिखित प्रसंगों से स्पष्ट है—राम की कुश-पादुकाओं का उल्लेख (दे० अनु० ४३६); सीता की जन्म-कथा में मेनका का वृत्तान्त (दे० अनु० ४०६), राम के प्रति तारा का शाप (दे० अनु० ७२६), विभीषण पर रावण का पाद-प्रहार (दे० अनु० ५६८); शरणागति के पूर्व विभीषण द्वारा अपनी माता से तथा अपने भाई कुबेर से भेंट (दे० अनु० ५६८), कालनेमि का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८७), समुद्रलंघन के वर्णन में सुरसा का प्रथम स्थान में उल्लेख (दे० अनु० ५३१), सम्पाति के पास सुपार्श्व का आगमन (दे० अनु० ५२७)। माधवकंदली की रचना में वर्णित थोड़े ही वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलते है। जैसे :

(१) सीताहरण के समय सुपार्श्व का रावण को रोकना (दे० अनु० ५००)।

---

१. ऐस्पेक्ट्स ऑव ओल्ड असामीस लिटरेचर (गौहाटी युनिवर्सिटी, १९५२), उ० च० लेखारु, असमिया रामायण साहित्य (१९४८)। विष्णुकान्त शास्त्री, असमिया में राम-साहित्य (मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८३१-३६)।

(२) हनुमान का लका की वाटिका का विध्वस करने के पूर्व वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे रावण से भेंट करना (दे० अनु० ५५२)।

(३) नल को दिये हुए वरदान का यह स्पष्टीकरण कि उसके स्पर्श से पत्थर नही डूबेंगे (दे० अनु० ५७५)।

शकरदेव ने अपने उत्तरकाण्ड मे सीता-वनवास से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की वाल्मीकीय कथा किसी उल्लेखनीय परिवर्तन के बिना प्रस्तुत की है। सर्ग १४ मे अगस्त्य रावण-चरित का किंचित् वर्णन करते हैं किन्तु वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के प्रारभ का विस्तृत रावण-चरित छोड दिया गया है। शकरदेव ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है कि भक्ति-मार्ग का प्रचार मेरा उद्देश्य है।

माधवदेवकृत असमिया बालकाण्ड को सबसे बडी विशेषता यह है कि वह कृत्तिवासीय रामायण पर आधारित है। निम्नलिखित वृत्तान्त कृत्तिवास तथा असमिया बालकाण्ड दोनो मे विद्यमान है : सूर्यवश का वर्णन, कैकेयी का स्वयवर, सुमित्रा का सिंहल के राजा की पुत्री के रूप मे उल्लेख ; पायस के विभाजन के समय सुमित्रा की प्रतिज्ञा, गुह और बालक राम की मैत्री, सीता के पूर्वानुराग की कथा। रामादि के जन्म के पूर्व रानियो के स्वप्न की कल्पना सभवतः कालिदास के रघुवश पर निर्भर है (दे० अनु० ३७५)। सीताजन्म (दे० अनु० ४१०) तथा अहल्या (अनु० ३४६) के विषय मे माधवदेव का असमिया बालकाण्ड मौलिक प्रतीत होता है।

२८४. यद्यपि असमिया साहित्य मे राम की अपेक्षा कृष्ण को अधिक महत्त्व दिया गया है, फिर भी आसाम के कवि राम-कथा की उपेक्षा नही कर सके, यह असमिया राम-साहित्य की निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :

१४वीं शताब्दी ई०

(१) हरिहर विप्रकृत **लवकुशर युद्ध** (सीता-त्याग से उनके पाताल-प्रवेश तक की कथा)। इस रचना की एक विशेषता यह है कि वास्तविक त्याग के पूर्व ही राम ने स्वप्न देखा था जिसमे उन्होंने लोकापवाद के कारण सीता को वनवास दिया था। (दे० आगे अनु० ७१७)।

(२) माधवकदलीकृत **रामायण**।

१६वीं शताब्दी

(१) दुर्गावरकृत **गीतिरामायण**। इसमे माधवकदली के आधार पर रामकथा के चुने हुये प्रसगो को, विशेषकर अरण्यकाण्ड की घटनाओ को, भावपूर्ण गीतो मे प्रस्तुत किया गया है। कथानक की दृष्टि से सीता द्वारा पिंडदान का प्रसग (दे० अनु० ४३५) तथा चित्रकूट मे एक मायामय अयोध्या की सृष्टि (दे० अनु० ४४०) उल्लेखनीय है।

(२) अनन्तकदली कृत जीवस्तुति-रामायण, महीरावण-वध, पातालखण्ड रामायण, सीतार पाताल प्रवेश नाटक । अनन्तकदली ने स्वयं लिखा है—"माधवकदली ने राम की सामान्य कथा लिखकर रामभक्ति को कम महत्त्व दिया था, मैं इसीलिये राम-कथा लिखता हूँ कि पाठक राम को परब्रह्म के रूप मे स्वीकार करे।"

(३) शकरदेवकृत उत्तर काण्ड और रामविजय नाटक (अथवा सीता-स्वयंवर) रामविजय मे विश्वामित्र के आगमन से प्रारंभ होकर राम-विवाह के बाद अयोध्या मे प्रत्यावर्तन तक की कथा वर्णित है। सीता-स्वयवर के अवसर पर राजाओ का राम पर आक्रमण (अनु० ४०२) तथा अयोध्या के मार्ग में राम-परशुराम का द्वन्द्व-युद्ध परम्परागत कथानक के मुख्य परिवर्तन है। (अनु० ३५१)।

(४) माधवदेव कृत बाल काण्ड तथा रामभावना नाटक

(५) अनन्त ठाकुर आता का श्रीरामकीर्त्तन।

१७वां तथा १६वीं शताब्दी

(१) धनजयकृत गणकचरित (हनुमान के लका प्रवेश विषयक खण्डकाव्य, दे० अनु० ५४२)।

(२) गगारामदास कृत सीतावनवास।

(३) भवदेव विप्र का श्रीरामचन्द्र अश्वमेध।

(४) श्रीचन्द्र भारती कृत महीरावणवध।

(५) रघुनाथ महत कृत कथारामायण (कथा-वाचक की गद्यशैली मे) तथा अद्भुत रामायण (इसमे हनुमान के पराक्रम के अतिरिक्त राम-कथा के निर्वहण का एक नया रूप प्रस्तुत किया गया है (दे० अनु० ७५७)।

बगाली साहित्य मे रामकथा[1]

(अ) कृत्तिवास रामायण

२८५ [कृत्तिवास ओझा ने बगाली साहित्य के प्रथम एव सर्वाधिक लोकप्रिय रामायण अथवा श्रीरामपांचाली[2] की रचना] १५वी श० ई० के अन्त मे पयार छन्द

---

१ दे० सुकुमार सेन; बागाला साहित्येर इतिहास, भाग १ (सन् १६४८); दिनेश चन्द्र सेन, दि बगाली रामायण्स (१६२०) और हिस्ट्री ऑव बगाली लैंग्विज ऐंड लिटरेचर (१६२१)।

२ पाचाली का अर्थ यहाँ पर आख्यान-काव्य है।

मे की थी। इसका पाठ अनिश्चित है, इसमे न केवल बहुत सी प्रक्षिप्त सामग्री मिलती है बल्कि कृत्तिवास की मूल भाषा को भी कथाकार और लिपिकार बदलते रहे हैं। क्षेपको का पता लगाना दु:साध्य है क्योंकि इस रचना की कोई भी हस्तलिपि २०० वर्ष से अधिक पुरानी नही है। राक्षसो की रामभक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अश सर्वसम्मति से प्रक्षिप्त माने जाते है। ये अश सभवत १८वी श० ई० में कविचन्द्र द्वारा लिखे गये है। कृत्तिवास का प्रथम सस्करण श्रीरामपुर मिशन प्रेस द्वारा सन् १८०३ ई० मे प्रकाशित किया गया था, इसमे अद्भुताचार्य के रामायण के बहुत से अश जोड दिए गए थे। बाद मे वगीय साहित्य-परिषद् ने अयोध्याकाण्ड (सन् १९०० ई०) तथा उत्तरकाण्ड (सन् १९०३ ई०) का सम्पादन किया था तथा सन् १९३६ ई० मे नलिनीकान्त भट्टशाली ने आदिकाण्ड सम्पादित किया था। सम्पूर्ण कृत्तिवास रामायण के प्रामाणिक सस्करण की अपेक्षा है।[1]

प्रचलित कृत्तिवास रामायण के कथानक की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

(१) कृत्तिवास रामायण वाल्मीकीय रामायण के गौडीय पाठ पर निर्भर है। निम्नलिखित सामग्री दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलती किन्तु वह गौडीय पाठ तथा कृत्तिवास रामायण, दोनो मे समान रूप से पाई जाती है— दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख (दे० आगे अनु० ३४३) ; सीता की जन्मकथा मे एक अप्सरा का उल्लेख (दे० आगे अनु० ४०६), शापमोहिता कैकेयी का दोषनिवारण (दे० अनु० ४५१), राम के प्रति तारा का शाप (दे० अनु० ७२६), केसरी द्वारा धवल-वध तथा सम्पाति के पुत्र सुपार्श्व का प्रस्ताव (दे० अनु०, ५१०), सरमा-वाक्य (दे० अनु० ५२६), निकषा-वाक्य (दे० अनु० ५५८), सभा मे रावण द्वारा विभीषण पर पाद-प्रहार (दे० अनु० ५६८), कालनेमि का वृत्तान्त (दे० अनु० ५८७), विभीषण की कैलास-यात्रा (दे० अनु० ५६८), भरत-हनुमान-सवाद (दे० अनु० ५८८), विभीषण-निकषा-सवाद (दे० अनु० ५६८)।

(२) कृत्तिवास का प्रारम्भिक कथानक पद्म पुराण-पातालखंड के गौडीय पाठ से प्रभावित है।[2] कृत्तिवास के बालकाण्ड के पूर्वार्द्ध मे रघुवश के राजाओ

---

१ इसके अभाव में प्रस्तुत ग्रन्थ के समस्त सन्दर्भ पूर्णचन्द्र दे द्वारा सम्पादित तथा चक्रवर्ती, चटर्जी ऐड क० द्वारा प्रकाशित कृत्तिवास रामायण के चतुर्थ सस्करण (कलकत्ता, सन् १९४६) की ओर निर्देश करते हैं। इस सस्करण मे प्रत्येक काण्ड अध्यायो मे विभाजित है।

२ दे० ऊपर अनु० १६२, जहाँ इसका उल्लेख हुआ है कि उस गौडीय पाठ तथा कालिदास के रघुवश का गहरा सम्बन्ध है।

का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। निम्नलिखित सामग्री बंगीय पातालखण्ड तथा कृत्तिवास दोनों मे मिलती है—हरिश्चन्द्र, सौदास, दिलीप, रघु, अज-इन्दुमती की कथा, दशरथ-जटायु की मित्रता (दे० अनु० ४७२), दशरथ द्वारा शनि से वर-प्राप्ति[1] (अनु० ४७२), अन्ध मुनि पुत्र का नाम सिन्धु (अनु० ४३३), मथरा तथा दुदुभी की अभिन्नता (दे० ४५४) अहल्या का शापवश शिला बन जाना (दे० ३४६)।

(३) रामभक्ति के प्रभाव के कारण भी परम्परागत कथानक मे बहुत कुछ परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है, उदाहरणार्थ—वाल्मीकि के उद्धार की कथा (दे० ऊपर अनु० ३८), वामदेव के प्रति वसिष्ठ का शाप (दे० अनु० ३८४), केवट का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४३२), हनुमान के वक्षस्थल पर राम-नाम अंकित होने की कथा (दे० अनु० ७०६)। राक्षसो की राम-भक्ति का भी अनेक स्थलो पर उल्लेख किया गया है। रावण का पुत्र वीरबाहु रणभूमि मे राम को विष्णु-चिन्हो से आभूषित देखकर अपना धनुष फेंक देता है, तथा राम की स्तुति करने लगता है (दे० युद्धकाण्ड, अध्याय ५४)। विभीषण का पुत्र तरणी-सेन वैष्णव तिलक लगाये रणक्षेत्र मे आता है, उसके शरीर, रथ तथा पताका पर राम-नाम अंकित है (दे० ६, ५३)। रावण भी रणक्षेत्र मे राम के सामने नतमस्तक होकर उनके अवतारत्व तथा दयालुता मे विश्वास प्रकट करता है (दे० ६, १०५)। रामजन्म के वर्णन मे शुक-सारण की राम-भक्ति का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३७५)। नागपाश के वृत्तान्त मे कृष्णभक्ति की भी झलक मिलती है (दे० अनु० ५८६)।

४) कृत्तिवासीय कथानक पर शैव तथा शाक्त सम्प्रदायो की भी गहरी छाप है। हनुमान शिव के अवतार माने जाते है (दे० अनु० ६७०) तथा महीरावण की कथा मे राम तथा शिव की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ३६२)। सेतुवध के वृत्तान्त मे राम द्वारा शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख है (दे० अनु० ५८०)। लकावरोध के पश्चात् पार्वती रावण की सहायता करने के लिए शिव से अनुरोध करती है (दे० ६, १४)। लंका-देवी का वृत्तान्त बदल दिया गया है—चामुंडा ही हनुमान को लका

---

१. यह प्रसग स्कद पुराण के नागर खण्ड मे भी वर्णित है (दे० ऊपर अनु० १६१)।

में प्रवेश करने से रोक देती है (दे० अनु० ५३७)। राम की विजय भी उनकी देवी-पूजा का परिणाम माना गया है (दे० अनु० ७८५)।

(५) कृत्तिवास रामायण के निम्नलिखित प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलते हैं किन्तु ये अन्य राम कथाओं में विद्यमान हैं—राम तथा लक्ष्मण के स्थान पर भरत तथा शत्रुघ्न को विश्वामित्र के साथ भेजने का दशरथ का प्रयत्न (दे० अनु० ३८८), सीता का पूर्वानुराग (दे० अनु० ४०३); कैकेयी द्वारा दो भिन्न अवसरों पर वरप्राप्ति (दे० अनु० ४४७), राम के निर्वासन के पूर्व राम-गुहक की मैत्री (दे० अनु० ३८४), सीता द्वारा दशरथ को पिण्डदान (दे० अनु० ४३५), लक्ष्मण का राम की सहायता करने जाने के पूर्व कुटी के चारों ओर रेखाएँ खींचना (दे० अनु० ४६८), तारा का शाप कि वालि भिल्ल के रूप में कृष्णावतार में राम का वध करेंगे (दे० अनु० ५२०), नल की वरप्राप्ति की कथा तथा हनुमान-नल-कलह (दे० अनु० ५७५ और ५७६), लक्ष्मण का संयम जिसके बल पर वह इन्द्रजित् को हराने में समर्थ हुए (दे० अनु० ४६१), भस्मलोचन (अनु० ६१३) तथा महीरावण की कथा (दे० अनु० ६१४), सेतुभंजन का वृत्तान्त (दे० अनु० ६०७), मन्दोदरी से विभीषण का विवाह (दे० अनु० ५७२), रावण-चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु० ७२३), कुश-लव का युद्ध (दे० अनु० ७४६)।

(६) कृत्तिवासीय कथानक के कुछ वृत्तान्त बंगाल में ही पाये जाते हैं—राम-सीता विवाह के अवसर पर चन्द्रमा का नृत्य (अनु० ४००), हनुमान का लंका से ब्रह्मास्त्र ले आना (अनु० ५६८), राम का मन्दोदरी को आशीर्वाद देना जिसके फलस्वरूप रावण की चिता जलती रहती है (दे० अनु० ५६६), सीता के प्रति मन्दोदरी तथा अन्य राक्षसियों के शाप (दे० अनु० ६०२)।

(आ) सत्रहवीं शताब्दी का बंगाली राम-साहित्य

२८६. बंगाली राम-साहित्य पर कृत्तिवास की श्रीरामपांचाली की सबसे गहरी छाप है। फिर भी परवर्ती राम-साहित्य पर अन्य तत्त्वों का भी प्रभाव पड गया। वास्तव में सत्रहवीं शताब्दी की राम-कथा विषयक-सामग्री तीन वर्गों में विभक्त की जा सकती है: (१) रामलीला पदावलियाँ, (२) अद्भुत रामायण के अनुवाद; (३) अध्यात्म रामायण के अनुवाद।

राधाकृष्ण भक्ति के प्रभाव से १६वीं शताब्दी के अन्त में श्रीरामपांचाली क

कीर्तन के तौर पर गान हुआ करता था। इसके फलस्वरूप सत्रहवी शताब्दी मे बहुत से रामलीला-विषयक पदों की रचना होने लगी। इन रामलीला पदावलियों पर राधा-कृष्ण पदावलियो का सुस्पष्ट प्रभाव है।

संस्कृत अद्भुत रामायण (दे० अनु० १७६) मे सीता देवी का रूप धारण कर लंकापति के बडे भाई सहस्र-स्कध रावण का वध करती हैं, संभवतः इसी कारण बंगाल मे अद्भुत रामायण इतना लोकप्रिय सिद्ध हुआ था। निम्नलिखित रचनाएँ अद्भुत रामायण पर आधारित मानी जाती है :

(१) वडु नित्यानन्द आचार्य (अद्भुताचार्य) का **आश्चर्य रामायण** अथवा **अद्भुताश्चर्य रामायण**। यह रचना बहुत समय तक बंगाल मे अत्यन्त प्रसिद्ध थी।

(२) रामेश्वर दत्त का **अद्भुत रामायण**, जिस पर कृत्तिवास का भी प्रभाव पडा है।

(३) वर्दवान मे सुरक्षित एक हस्तलिपि जिसका रचयिता भूल से कृत्तिवास ही माना जाता है।

(४) चन्द्रावती की **रामायण गाथा**। इसमे कैकेयी की पुत्री कुकुआ की चर्चा है, जिसके अनुरोध से सीता रावण का चित्र खीचती है और इसके परिणामस्वरूप परित्यक्त की जाती हैं (दे० अनु० ७२३)।

सत्रहवी शताब्दी की दो रचनाएँ अध्यात्म रामायण पर आधारित हैं—द्विज भवानीनाथ कृत श्रीरामपाचाली अथवा **अध्यात्म रामायण पांचाली** तथा द्विज श्री लक्ष्मण का **अध्यात्म रामायण** जिसका अब तक केवल आदि काण्ड मिल सका है।

(इ) अर्वाचीन बंगाली राम-साहित्य

२८७. परवर्ती बगाली राम-साहित्य मे अद्भुत रामायण पर आधारित बहुत सी रचनाओं का उल्लेख मिलता है। अद्भुत रामायण की भाँति रामानन्दकृत **रामलीला** के विस्तृत बालकाण्ड मे अम्बरीष की पुत्री श्रीमती के स्वयंवर का वर्णन मिलता है। संभव है यह रामानन्द वास्तव मे रामानन्द घोष हैं जिन्होंने १८वी शताब्दी मे एक रामायण लिखा है। **श्रीरामपांचाली** के रचयिता **रामानन्द यति** संभवतः इसी रामानन्द घोष से अभिन्न हैं।

जगतरामराय (१८वी श०) के **अद्भुत रामायण** मे युद्धकाण्ड तथा उत्तर काण्ड (जिसका नाम रामरास उत्तरकाण्ड भी रखा गया है) के बीच मे एक पुष्करकाण्ड मिलता है जिसमे सहस्रस्कध रावण का सीता के द्वारा वध वर्णित है। १९वी शताब्दी का **कमललोचन दत्तकृत रामभक्तिरसामृत** अद्भुत रामायण पर आधारित है, इसके अतिरिक्त उस शताब्दी मे ही अद्भुत रामायण का चार बार बगाली मे अनुवाद हुआ है—पद्य

ने हरिमोहन गुप्त तथा द्वारकानाथ कुण्डू द्वारा तथा गद्य में कृष्णकान्त न्यायभूषण तथा दुर्गाचरण वन्द्योपाध्याय द्वारा।

२८८. अठारहवीं शताब्दी में शंकरचक्रवर्ती (कविचन्द्र) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी अध्यात्म रामायण पांचाली विष्णुपुरी रामायण के नाम से विख्यात है। इसी रचना के कुछ अंश कृत्तिवास रामायण में स्थान पा चुके हैं, उदाहरणार्थ : अंगदेर रायबार (अंगद के दूतकार्य का वर्णन तथा तरणीसेन-वध)।

२८९. अर्वाचीन बंगाली राम-साहित्य की एक अन्य विशेषता रायबार नामक रचनाओं का बाहुल्य है। १८वीं शताब्दी के निम्नलिखित ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं

फकिर रामकविभूषण का अंगद रायबार।
रामचन्द्र का विभीषणेर रायबार।
रामनारायण (द्विज राम) का विभीषणेर छोट्टा रायबार।
कासीराम का कालनेमिर रायबार।
द्विज तुलसी का अंगद रायबार।
हारायन दास का अंगद रायबार।

२९०. साहित्यिक दृष्टिकोण से कृत्तिवास के पश्चात् रघुनन्दन गोस्वामी का रामरसायन (१८३१ ई०) सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसका प्रधान आधार वाल्मीकि रामायण है, फिर भी इस पर कृष्णलीला का भी स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। १९वीं तथा २०वीं शताब्दी में बंगाली में वाल्मीकि रामायण का अनुवाद अथवा रामकथा पर आधारित मौलिक ग्रन्थों की रचना होती रही। जगद् मोहन राम का रामायण (१८३८ ई०) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। २०वीं शताब्दी में राजशेखर वसु ने वाल्मीकि रामायण को गद्य में प्रस्तुत किया है किन्तु इस शताब्दी का सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ राम-काव्य माइकल मधुसूदन कृत मेघनादवध ही है।

उड़िया

२९१. उड़िया साहित्य[1] के प्राचीनतम रामकथा-कार १५वीं शताब्दी के सिद्धेश्वर परिडा हैं। उन्होंने अपनी इष्टदेवी सारला चंडी के कारण अपना नाम सारलादास ही रखा था और वे इसी नाम से विख्यात हैं। उनकी रचनाओं में से महाभारत तथा चण्डी पुराण प्रकाशित हैं। उनका रामायण अप्राप्य है, अतः उनके महाभारत ही के आधार पर अगले अनुच्छेद में सारलादास की रामकथा की रूपरेखा प्रस्तुत की जायेगी। बिलंका रामायण की रचना १७०० ई० के लगभग सिद्धेश्वर दास द्वारा हुई थी।

१. दे० कृष्णचरण साहु : उड़िया राम लिटरेचर (रांची विश्वविद्यालय; १९६४; अप्रकाशित)।

सिद्धेश्वर परिडा (सारलादास) तथा सिद्धेश्वर दास के नाम-साहश्य के कारण विलका रामायण को सारलादासकृत माना गया है, जो भ्रामक है। विलका रामायण का प्रधान वर्ण्य विषय है सीता द्वारा (पूर्व-खण्ड में) सहस्र स्कन्ध रावणवध तथा (उत्तर खण्ड में लक्षस्कध रावण-वध। यह उत्तरखण्ड नितान्त अप्रामाणिक तथा अर्वाचीन है (दे० आगे अनु० ६३६-६४०)।

उडिया साहित्य के सब से प्रसिद्ध रामायण की रचना उत्कल-वाल्मीकि बलराम-दास द्वारा १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई थी। इस ग्रन्थ के कई नाम प्रचलित है. जगमोहन रामायण (रचयिता का दिया हुआ), दाण्डि रामायण (छन्द के नाम पर) और बलरामदास रामायण (लेखक के नाम पर)। यद्यपि वाल्मीकि रामायण इसका प्रधान आधार है, फिर भी इसमे रामकथा के विकास की दृष्टि से बहुत से परिवर्तन मिलते हैं। (दे० नीचे अनु० २९३)।

बलरामदास की रामकथा-विषयक रचनाएँ निम्नलिखित है—

(१) दो संदेश काव्य। कान्तकोइलि (३४ छन्द) में अशोकवन की विरहिणी सीता एक कोयल को सम्बोधित कर अपने हरण के बाद की घटनाओं का वर्णन करती हैं। काकपोइ (३४ छन्द) मे वह एक काक को सम्बोधित कर अशोकवन मे अपने दुःख का वर्णन करती है और राम के पास एक लिखित संदेश भेजती है।

(२) दो बारहमासे। सीतांक बारमासी भावना मे अशोकवन मे रहने वाली सीता राम के साथ अपने अतीत जीवन का स्मरण करती है। बारमासी का विषय वही है, किन्तु इसमे वह कान्हु को सम्बोधित करती है।

(३) ब्रह्माण्ड भूगोल मे समस्त रामकथा को शरीर मे अवतारित किया गया है (दे० ऊपर अनु० १०८)।

(४) हनुमन्त चउतीसा। ३४ छन्दों मे सीता-हनुमान-संवाद।

(५) कर्णदान (२४० छन्द)। इसकी कथावस्तु आगे अनु० ६५८ मे देख ले।

नीलाम्बरदास कृत ठिका रामायण (१६वीं श० ई०) मे समस्त रामकथा का वर्णन है। निम्नलिखित वृत्तान्त बलरामदास रामायण मे नही मिलते—महीरावण की कथा, रावण के चित्र के कारण सीता त्याग, लव-कुश-युद्ध। अर्जुनदास का रामविभा (राम विवाह) सोलहवीं शताब्दी उत्तरार्ध की रचना है।

सत्रहवीं शताब्दी की पाँच रामकथा-विषयक रचनाएँ उल्लेखनीय है—

(१) धनजय का सर्गबद्ध रघुनाथ-विलास।

(२) शकरदास कृत बारमासी कोइलि। इसमे बारहमासे की शैली मे वनवासी राम के प्रति कौशल्या का विरह वर्णन है।

(३) महेश्वरदास कृत टीका रामायण। शीर्षक का कारण यह है कि यह

रचना एक प्रकार से बलरामदास की टीका है। इसमे राम-सुग्रीव भेंट के विषय मे एक कथा है, जो सेरी राम तथा रामकेर्ति के वृत्तान्तो से साम्य रखती है (दे० आगे अनु० ५१२)।

(४) कान्हुदास का **रामरसामृतसिन्ध**।

(५) हलधरदास कृत अध्यात्म रामायण का उड़िया अनुवाद।

अठारहवी शताब्दी का राम-साहित्य अपेक्षाकृत समृद्ध है। दो रचनाओ का वर्ण्य विषय है सहस्र-स्कन्ध रावण का वध, अर्थात् सिद्धेश्वरदास कृत **विलङ्का रामायण** और वारानिधिदास कृत **विलङ्का खण्ड**। **विचित्र रामायण** नामक दो रचनाएँ मिलती हैं; एक विश्वनाथ खुँटिया की तथा दूसरी भुइंआ माधवदास की। भुइंआ माधवदास सिद्धेश्वरदास को अपना गुरु मानते हैं, उनके कथानक की कई विशेषताएँ हैं—दशरथ की २१ पटरानियो का उल्लेख (दे० अनु० ३४०), शान्ता की जन्मकथा (अनु० ३४३), डाकिनियो से वानर-सेनापतियो का जन्म (अनु० ३५७), लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र जयासुर का वध (अनु० ६३२), रामकथा के निर्वहण का किंचित् परिवर्तित रूप (अनु० ७५३)। उसी शताब्दी मे उपेन्द्र भज ने **रामलीलामृत, बोल पोइ** (सोलह छन्द), **वैदेहीश विलास** तथा **अवना-रस-तरङ्ग** की रचना की है। **वैदेहीश विलास** वाल्मीकि, अध्यात्म रामायण, भोजकृत चम्पूरामायण, महानाटक आदि पर आधारित एवं पाण्डित्य-पूर्ण है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित काव्य-ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है: रामदास का **रामरसामृत**; गोपीनाथ कवि भूषण कृत **रामचन्द्र विहार** (८० सर्ग); त्रिपुरारिदास का **रामकृष्णकेलिकल्लोल** (श्लेष काव्य); ब्रजबधु सामन्तराय का **रामलीलामृत काव्य**; ईश्वरदासकृत **रामलीला**; लक्ष्मीधरदासकृत **अङ्गदपड़ि** (अंगद के दूत कार्य का वर्णन), मागुणी पट्टनायक का **रामचन्द्र विहार**। गोवर्धनदासकृत **पचीसा पोई** (युद्ध-काण्ड विषयक), विशु ईश्वरदासकृत **नलराम चरित**। उस शताब्दी मे तेलेंगा गोपाल, नरहरि कविचन्द्र, सुर्यमणि-च्याउ पट्टनायक तथा सारलादास[1] ने अध्यात्म रामायण का अनुवाद किया है और हरिहर कवि के पुत्र वनमालीदास ने भोजकृत चम्पू रामायण अनूदित कर उसका नाम **सुचित्र रामायण** रखा है। १८वी शताब्दी मे नाट्य-साहित्य का प्रवर्तन हुआ था, वैश्य सदाशिव की **रामलीला** तथा रघुनाथदास का **छन्द रामायण** उल्लेखनीय हैं।

१९वी तथा २०वी शताब्दी मे भी रामकथा-विषयक रचनाओ की सृष्टि होती

---

१. यह सारलादास महाभारत के रचयिता से भिन्न हैं, इनका काल अनिश्चित है।

रही।[1] १९वी शताब्दी मे कृष्णचरण पट्टनायककृत **रामायण**, भुवनेश्वर कविचन्द्र का **सीतेश विलास**, केशव पट्टनायक (केशव हरिचन्दन) का **नृत्यरामायण** (केशव रामायण) तथा केशव त्रिपाठी का **पूर्ण रामायण** उल्लेखनीय हैं। **हलिआ रामायण** हल चलाते समय के गीतो का सकलन है। नाट्य-साहित्य की तीन **रामलीला** नामक रचनाएँ मिलती है, जिनके लेखक पीताम्बर राजेन्द्र, अनग नरेंद्र तथा विक्रम नरेंद्र हैं।

२९२. सारलादास ने अपने महाभारत मे बहुत से स्थलो पर रामकथा-विषयक सामग्री का समावेश किया है तथा आदि, वन और उद्योग पर्वों मे समस्त रामायण का सक्षिप्त रूप भी प्रस्तुत किया है।[2] वन-पर्व की रामकथा अगस्त्य द्वारा विलंका के राजा को सुनाई जाती है। सारलादास की रामकथा की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं :

(१) रामकथा तथा कृष्णकथा के पात्रो की अभिन्नता का प्रतिपादन ; उदा० राम = कृष्ण ; सीता = द्रौपदी ; अगद = जारा (दे० आगे० अनु० ५२१); अजना = कुन्ती ; सुग्रीव-अर्जुन , वालि = कर्ण, लक्ष्मण = बलराम; वालि = भीम, सुग्रीव = दुशासन। लक्ष्मण तथा भरत भी राम के अन्तरग सखा होने के नाते अर्जुन से अभिन्न माने गये है।

(२) अवतारवाद का एक नया रूप जिसके अनुसार विष्णु राम मे, इन्द्र भरत मे, ब्रह्मा शत्रुघ्न मे तथा ईश्वर (महादेव) लक्ष्मण मे अवतरित माने जाते है (दे० वन पर्व पृ० २२८, आदि पर्व पृ० १९७)।

(३) लक्षशिर, सहस्रशिर, शतशिर दशशिर रावणो का उल्लेख जो विभिन्न कल्पो मे राम द्वारा मारे जाते हैं।

(४) बंगाल मे प्रचलित रामकथा का सादृश्य। कृत्तिवास में विद्यमान निम्नलिखित सामग्री सारलादास रामायण मे भी है : दशरथ की ७५० पत्नियो का उल्लेख (अनु० ३४०), दशरथ की पुत्री शान्ता का वृत्तान्त (दे० अनु० ३४३) ; दशरथ का विश्वामित्र के साथ भरत तथा शत्रुघ्न को भेज देने का प्रयास (दे० अनु० ३८८), सीता द्वारा पिंडदान (दे० अनु० ४३५) नल-हनुमान-कलह (दे० अनु० ५७६)।

---

१. दे० देवीप्रसन्न पट्टनायक, उडिया मे राम साहित्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७७०-७७७।

२. दे० राधारमण पुस्तकालय (कटक १९५२) का सस्करण तथा कृष्णचरण साहु, रामकथा इन सारलादास महाभारत, जर्नल ऑव हिस्टॉरिकल रिसर्च (राँची), भाग १, पृ० ५०-५९।

(५) सारलादास के निम्नलिखित वृत्तान्त रामकथा के विकास की दृष्टि से महत्व रखते हैं - लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (दे० अनु० ६३२), वालि तथा सुग्रीव का अहल्या की सन्तान के रूप मे उल्लेख (दे० अनु० ५१४) , हनुमान का रुद्रावतार माना जाना (दे० अनु० ६७२); हनुमान के वज्र-कौपीन का उल्लेख (दे० अनु० ६६७), ब्रह्मा के वीर्य से वाल्मीकि की उत्पत्ति (दे० अनु० ३६), अर्जुन के गर्व-निवारण की दो कथाएँ (दे० अनु० ६८५), रावण-वध के वाद राम का वानरो के साथ किष्किन्धा होकर पैदल ही अयोध्या वापस जाना (दे० अनु० ६०६) ।

२६३. वलरामदास के रामायण की निम्नलिखित विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं :

(१) वह मुख्यतया वाल्मीकि रामायण के **गौडीय पाठ** पर निर्भर है । वलरामदास की निम्नलिखित सामग्री इसका प्रमाण है—दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख , सीता की जन्म-कथा मे मेनका का प्रसग, शापदोष-मोहिता कैकेयी का दोष-निवारण , राम की कुश-पादुकाओ की चर्चा, राम के प्रति तारा का शाप , जटायु गरुड का पुत्र है , सम्पाति से वानरो की भेट के प्रसग मे सुपार्श्व का आगमन , विभीषण पर रावण का पाद-प्रहार, हनुमान की हिमालय-यात्रा के वर्णन मे कालनेमि तथा भरत का उल्लेख ।

(२) समस्त ग्रन्थ शिव-पार्वती-सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है ।

(३) वलरामदास का अवतारवाद अनिश्चित है । पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन के अनुसार चारो भाई तो विष्णु के अवतार हैं किन्तु अन्यत्र लक्ष्मण को शेष का अवतार माना गया है तथा भरत, शत्रुघ्न को क्रमश चक्र और शख का । अरण्यकाण्ड मे वलरामदास लक्ष्मण को रुद्र, भरत को सूर्य तथा शत्रुघ्न को चन्द्र मानता है । अनुसूया लक्ष्मण को शूलधारी कहती है । उत्तरकाण्ड मे सीता तथा सरस्वती की अभिन्नता का उल्लेख है तथा यह भी कहा जाता है कि स्वर्ग मे राम तथा सीता नारायण और लक्ष्मी के रूप मे मिलते हैं किन्तु एक अन्य स्थल पर राम, सीता और लक्ष्मण क्रमश- जगन्नाथ, सुभद्रा तथा वलभद्र भी माने गये हैं (दे० अनु० ३६२) ।

(४) सारलादास की रामकथा की भाँति वलरामदास रामायण भी वगाली रामकथा से सादृश्य रखता है । दशरथ के प्रति शनि का वरदान , सीता का पूर्वानुराग , राम-गुह-वधुत्व , केवट-प्रसग , विभीषण-मन्दोदरी-

विवाह ; यह सब सामग्री कृत्तिवास तथा बलरामदास दोनों में मिलती है (दे० अनु० २८५) ।

(५) वाल्मीकि कथानक के निम्नलिखित परिवर्तन रामकथा के विकास की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं :
माया-सीता का वृत्तान्त (अनु० ५०५), वेदवती की कथा (अनु० ४१०), नारद-मोह की कथा (अनु० ३७३); रावण का सीता-स्वयंवर देखने आना (अनु० ३६७), सुरभि के अवतार, मथरा का वैर (अनु० ४५४), सीता के प्रति लक्ष्मण का शाप (अनु० ४८६); राम का मुनियों को गोपी बन जाने का वरदान देना (दे० अनु० ७८७) ।

हिन्दी साहित्य में रामकथा

(अ) गोस्वामी तुलसीदास की रामकथा

२६४. गोस्वामी तुलसीदास की समस्त रचनाएँ उनके इष्टदेव राम से संबंध रखती है, लेकिन इनमे से **रामचरितमानस** सबसे अधिक लोकप्रिय प्रमाणित हुई है। इसी एक रचना के द्वारा हिन्दी प्रदेश मे रामभक्ति की धारा फैल गई और आज तक प्रवाहित होती रही । अतः रामभक्ति के विकास मे **रामचरितमानस** का महत्व अद्वितीय है ।

रामकथा के विकास के दृष्टिकोण मे **रामचरितमानस** तथा तुलसीदास की अन्य रचनाओ मे कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नही मिलते । ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभ में तुलसीदास **वाल्मीकि रामायण** से अधिक प्रभावित थे और अपनी बाद की रचनाओं मे अन्य रामकथा साहित्य से भी । मिथिला की वाटिका मे राम और सीता के परस्पर दर्शन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **जानकी-मंगल** मे नही है, लेकिन वह **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** मे मिलता है। मिथिला मे रावणदूत के आगमन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** मे नही मिलता, लेकिन **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** मे पाया जाता है । **रामाज्ञाप्रश्न, जानकी-मंगल** तथा **गीतावली** के अनुसार परशुराम तथा राम की भेंट बारात की वापसी मे होती है, किन्तु **रामचरितमानस** तथा **कवितावली** मे परशुराम के मिथिला मे आगमन का वर्णन किया गया है ।

चित्रकूट मे जनक के आगमन का वर्णन तथा सेतुबंध के समय शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख केवल **रामचरितमानस** मे मिलते हैं , **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** मे नही ।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही सीतात्याग तथा लव-कुश की कथा **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** मे दी गई है । **रामचरितमानस** मे इन प्रसंगो का उल्लेख नहीं मिलता ।

गीतावली की समस्त रचना मे कृष्ण-काव्य का प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है। इस कारण उत्तरकाण्ड मे राम सीता के दोलोत्सव, वसतविहार आदि का वर्णन भी किया गया है। इस रचना मे वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ के अनुसार राम की शरण लेने के पूर्व विभीषण के अपने भाई कुवेर के पास जाने का वर्णन भी किया गया है।

अत. विषय-निर्वाह मात्र के दृष्टिकोण से इन ग्रन्थो का रचना-क्रम इस प्रकार प्रतीत होता है : **रामाज्ञाप्रश्न, जानकीमंगल, गीतावली**[1], **रामचरितमानस, कवितावली**।

२६५. हिन्दी रामसाहित्य मे **रामचरितमानस** सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से इसके कथानक की विशेषताओ का उल्लेख अपेक्षित है। आध्यात्मिक विचारो के दृष्टिकोण से इस पर **अध्यात्म रामायण** का सबसे अधिक प्रभाव पडा, लेकिन कथानक मे भी अध्यात्म-रामायण का प्रभाव स्पष्ट है। अध्यात्म-रामायण की भाँति **रामचरितमानस** शिव-पार्वती के सवाद के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। अध्यात्म-रामायण की दार्शनिक व्याख्याएँ तथा भक्ति सम्बन्धी अश (स्तोत्र आदि) प्राय. सबके सब किंचित् परिवर्तन सहित रामचरितमानस मे भी मिलते हैं। अतर यह है कि रामचरितमानस मे शास्त्रीय प्रतिपादन को इतना स्थान नही दिया गया है। अत. रामचरितमानस का प्रधान आधार अध्यात्म-रामायण सिद्ध होता है।

प्रस्तुत निवन्ध के दृष्टिकोण से **रामचरितमानस** के निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :

(१) अवतारहेतु : जयविजय की कथा, जालधर की पत्नी वृन्दा का शाप, नारद-मोह ; मनु-शतरूपा की तपस्या, प्रतापभानु की कथा। इन कथाओ का तुलनात्मक अध्ययन १४वे अध्याय मे किया जायगा (दे० अनु० ३६६-३७३)।

(२) **अध्यात्म रामायण** के अनुसार राम का अपनी माता को अपना विष्णु-रूप दिखलाना तथा उनकी वाललीला का कुछ वर्णन (दे० अध्यात्म-रामायण १, ३, ४४-५३)। वाद मे **भगवद्गीता** (११,७) तथा **भागवत पुराण** (१०, ७, ३५-३७) के अनुकरण पर वालक राम का अपनी

१. कालक्रम निर्धारित करने के लिए विषय-निर्वाह के अतिरिक्त शैली, वहि.साक्ष्य आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक है। इस प्रकार के सर्वतोमुखी अध्ययन के पश्चात् डॉ० माताप्रसाद गुप्त का विचार है कि गीतावली की रचना रामचरितमानस के वहुत वाद हुई थी। दे० तुलसीदास, तृतीय स०, पृ० २७६।

माता के सामने अपना विराट् रूप प्रकट करना। राम के जन्मोत्सव के अवसर पर शिव तथा भुशुण्डी का मानव रूप धारण कर अयोध्या का भ्रमण करना।

(३) मिथिला की वाटिका मे राम तथा सीता का परस्पर दर्शन, (दे० आगे अनु० ४०३) तथा मिथिला मे ही परशुराम का तेजोभग (दे० आगे अनु० ३५१)।

(४) अयोध्या मे तथा पपासरोवर के तट पर नारद का आगमन। नारद का स्थान अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है (दे० आगे अनु० ४४३ और ४७६)।

(५) राम के निर्वासन के लिए सरस्वती का अयोध्या भेजा जाना (दे० अध्यात्म रामायण २, ३, ४४-४६)।

(६) अयोध्याकाण्ड मे केवट का वृत्तान्त अध्यात्म तथा आनन्द रामायण दोनो मे इसका उल्लेख अहल्योद्धार के अनन्तर हुआ है।

(७) चित्रकूट की यात्रा करते हुए राम की एक तापस के द्वारा वन्दना। श्री रामचन्द्र शुक्ल का अनुमान है कि 'इस ढग से कवि ने अपने को ही तापस रूप मे राम के पास पहुँचाया है'।[1]

(८) भरत-राम-मिलाप के समय चित्रकूट मे जनक का आगमन।

(९) माया-सीता का वृत्तान्त (दे० अनु० ५०५)।

(१०) सेतुबन्ध के समय शिव-प्रतिष्ठा (दे० अध्यात्म रामायण ६, ४)।

(११) हनुमान की हिमालय-यात्रा के वर्णन मे हनुमान द्वारा कालनेमि-वध तथा भरत से उनकी भेंट का वृत्तान्त।

(ये दोनो कथाएँ वाल्मीकिकृत रामायण के गौडीय पाठ मे पाई जाती हैं)।

(१२) रावण-होम की कथा (दे० अध्यात्म रामायण ६, १०)।

(१३) भुशुण्डी-चरित। (दे० आगे अनु० ३८१)।

२९६. **रामचरितमानस** के बहुत से सस्करणो मे प्रक्षेप मिलते है, जिनमे से कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं—बालक राम और हनुमान की सगति, सुलोचना की कथा, अहिरावण-वध तथा लव-कुश-काण्ड के अन्तर्गत सीता-त्याग, लवकुश का जन्म तथा राम-सेना से युद्ध।

(आ) अन्य हिन्दी राम-साहित्य

२९७ हिन्दी रामकथा साहित्य मे तुलसीदास का एक प्रकार से एकाधिकार है—"तुलसी की प्रतिभा और काव्यकला इतनी उत्कृष्ट प्रमाणित हुई कि उनके बाद

१. दे० हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० १४८। दे० आगे अनु० ४३२।

किसी भी कवि की रामचरित सम्बन्धी रचना उन्हें मानस की तुलना में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सकी......मानस के सामने कोई भी प्रबन्ध-काव्य आदर की दृष्टि से न देखा गया ।[1] अत: यहाँ पर अन्य हिन्दी राम-साहित्य का सिंहावलोकन मात्र प्रस्तुत किया गया है[2] । अंत में दो लोकप्रिय अपेक्षाकृत सम्पूर्ण प्रबंध काव्यों की कथानक सम्बन्धी विशेषताओं की सूची भी दी गई है (दे० अनु० ३०४-३०६) । आधुनिक हिन्दी साहित्य के विषय में डॉ० [illegible] सिंह का 'तुलसीपूर्व राम-साहित्य' (रचना प्रकाशन, इलाहाबाद १९६८) और राम की माधुर्य भक्ति के सम्बन्ध में डॉ० भगवती प्रसाद सिंह का शोध-प्रबन्ध, रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय (बलरामपुर सं० २०१४) विशेष उपयोगी है ।

२९८. तुलसीदास के पूर्व का हिन्दी-राम-साहित्य अधिक विस्तृत नहीं है। सर्वप्रथम विष्णुदास कृत 'भाषा वाल्मीकि रामायण' का उल्लेख होना चाहिए । यह १५वीं शताब्दी के मध्य की रचना है इसका कथानक वाल्मीकि के अनुसार ही है किन्तु यह हिन्दी चौपाइयों में वाल्मीकि रामायण का स्वतंत्र अनुवाद है । रामानन्द के कुछ भक्ति-विषयक पद सुरक्षित हैं तथा सूरदास ने सूरसागर में वाल्मीकि रामायण के क्रमानुसार रामकथा के प्रसंगों पर लगभग १५० पदों की रचना की है ।[3] इसमें केवट-वृत्तान्त रामचरितमानस की भाँति वनवास की कथा में रखा गया है (अन्यान्य रामायणों में यह वृत्तान्त अहल्योद्धार के अनन्तर ही मिलता है) और राम की सहायता करने जाने से पूर्व लक्ष्मण के द्वारा कुटी के चारों ओर रेखा खींचने का उल्लेख हुआ है । 'पृथ्वीराजरासो' के द्वितीय सम्मय में दशावतार कथा के अन्तर्गत रामकथा विषयक लगभग १०० छन्द मिलते हैं,[4] जिनमें लंका युद्ध के वर्णन को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है । । ईश्वरदास[5] (१६वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध) ने भरत-मिलाप में अयोध्या काण्ड

१. डॉ० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ० ३४४ ।

२. द्रष्टव्य 'हिन्दी साहित्य कोश' में हिन्दी राम-साहित्य शीर्षक लेख तथा डॉ० माता प्रसाद गुप्त का 'रामकाव्य' (हिन्दी साहित्य, द्वितीय खंड भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग, १९५९ : पृ० ३००-३३१)

३. दे० ना० प्र० सभा संस्करण, दूसरा खण्ड, नवम स्कंध, पद ४६०-६१३

४. कुछ संस्करणों में रामावतार-विषयक केवल ३८ छंद मिलते हैं । दे० विपिनविहारी त्रिवेदी पृथ्वीराजरासो में रामकथा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रन्थ पृ० ६७७ ।

५. दे० ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ६१ (सं० २०१३), अंक १ और हिन्दुस्तानी भाग २४, अंक ३, पृ० ११७ ।

की कथावस्तु का दोहा-चौपाइयों मे वर्णन किया गया है और इसमे भरत को **आदर्श** दास्य भक्त के रूप मे चित्रित किया गया है। इनके **'रामजन्म'** तथा **'अंगदपैज' भी** सुरक्षित हैं, ये सब एक ही विस्तृत ग्रन्थ के अश प्रतीत होते है, जिसमे रामचरितमानस का पूर्वाभास मिलता है।

२६६ तुलसीदास के समकालीन कवियो मे रामसाहित्य के विकास की दृष्टि से अग्रदास तथा नाभादास प्रमुख हैं। उनकी रचनाओं से पता चलता है कि तुलसीदास के समय मे राम की माधुर्यभक्ति का प्रचलन हुआ था। कई अनुसन्धानकर्त्ताओं की यह धारणा निराधार है कि प्राचीन सस्कृत रामसाहित्य के श्रृगारात्मक वर्णनो मे राम की मधुरोपासना का सूत्रपात देखा जा सकता है (दे० अनु० १५०)। राम की मधुरोपासना के विषय मे कोई प्राचीन रचना उपलब्ध नही है, इसके अभाव मे यह मानना पडेगा कि उपासना की यह पद्धति सम्भवत: १५वी शताब्दी ईस्वी मे कृष्णभक्ति के अनुकरण पर चलायी गयी है। अग्रदास के **अष्टयाम** मे राम की रासक्रीडा का वर्णन है। इनकी **'पदावली'** तथा **'ध्यानमंजरी'** मे मँजी हुई भाषा के भक्तिपूर्ण पद मिलते है। अग्रदास के शिष्य नाभादास ने भी राम-सीता-चरित को लेकर **'अष्टयाम'** की रचना की है।

भक्तिकाल की कुछ अन्य रचनाएँ इस प्रकार है :

(१) **रामचन्द्रिका** (दे० आगे अनु० ३०२)।

(२) सोढ़ी मेहरवान का **'आदिरामायण'** (हिन्दी मिश्रित पजाबी)।

(३) सस्कृत महानाटक पर आधारित हृदयरामकृत **हनुमन्नाटक** (सन् १६२३ ई०) कवित्त-सवैये मे है और उन्नीसवी शताब्दी तक लोकप्रिय रही।

(४) लालदास कृत **अवध विलास**।

(५) राजस्थानी मे एक विस्तृत जैनी राम साहित्य मिलता है। समयसुन्दर की **सीताराम चौपाई**[1] विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैनेतर रचनाओं मे **लक्ष्मणायण** १६वी शताब्दी का है तथा नरहरिदास के **अवतार-चरित** का रामावतार विषयक अश रामचरितमानस और रामचन्द्रिका पर निर्भर है।

---

१ रचनाकाल सवत् १६७७ तथा १६८३ के बीच मे। इस रचना की स० १७३८ की एक हस्तलिपि बीकानेर के भारतीय विद्यामन्दिर, शोध प्रतिष्ठान मे सुरक्षित है। राजस्थानी मे जैनी रामसाहित्य की विस्तृत सूची के लिये दे० श्री अगरचन्द नाहटा, राजस्थानी भाषा मे रामकथा सबधी ग्रन्थ। मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८४०-८४३।

३००. रीतिकाल का रामसाहित्य महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी भक्तिकाल की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। यहाँ पर उन रचनाओ की नामावली देने की अपेक्षा, रीतिकालीन रामसाहित्य की सामान्य विशेषताओ का उल्लेख किया जायेगा[1] :

(१) शृंगार की व्यापकता तथा कृष्णकाव्य की गहरी छाप उस साहित्य की प्रथम विशेषता है , विशेष रूप से रसिक सम्प्रदाय की रचनाओ मे जहाँ राम तथा सीता की शृगारमय चेष्टाओ का खुलकर वर्णन किया गया है।[2]

(२) रीतिकाल मे प्रसिद्ध सस्कृत रामकाव्यो का अनुवाद भी हुआ है, उदाहरणार्थ वाल्मीकि रामायण, जैमिनी पुराण, रामाश्वमेध (पद्मपुराण), अध्यात्मरामायण, योगवसिष्ठ आदि के अनुवाद ।

(३) विश्वनाथ सिह, केशव कवि, भगवन्त राय खीची, मनियार सिह, गणेश, खुमान आदि कवियो ने हनुमद्भक्तिपरक रचनाओ की सृष्टि की है।

(४) प्रारम्भिक हिन्दी नाट्य साहित्य मे कृष्णकथा की अपेक्षा रामकथा को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिला है।

(५) खडी बोली गद्य की प्राचीनतम प्रौढ रचनाओ मे से तीन ग्रन्थ रामसाहित्य से सबन्ध रखते हैं : रामप्रसाद निरजनी का **भाषा योग वासिष्ठ** (१७४१ ई०), दौलतराम का **पद्मपुराण** (सन् १६६१ ई०, जैनी रामकथा) तथा सदल मिश्र का **रामचरित** (सन् १८०७ ई० ; अध्यात्म रामायण का अनुवाद , दे० सदल मिश्र ग्रन्थावली , विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्) ।

३०१. आधुनिक काल मे रामकथा विषयक गद्य तथा नाटक साहित्य उपेक्षणीय नही हैं, फिर भी इस काल का राम-काव्य कही अधिक महत्वपूर्ण होता है। पुरानी धारा के कवियो ने **रामभक्तिपरक** मुक्तक काव्य के अतिरिक्त प्रवन्ध काव्यो की भी रचना की है, उदाहरणार्थ रसिकविहारी का **रामरसायन**, रघुनाथदास का **विश्रामसागर** (रामायण खण्ड), रघुराजसिह का **रामस्वयवर**, वाघेली कुँवरि का **अवधविलास**, वलदेव प्रसाद मिश्र का **कोशल किशोर** तथा मैथिली मे चदा झा का **रामायण** । सन् १९०० ई० के बाद भी यह धारा प्रवाहित होती रही, उदाहरण : शिवरत्न शुक्ल का **श्रीरामा-**

---

१. गोविन्द रामायण के लिए दे० नीचे अनु० ३०३ । डॉ० गोपीवल्लभ नेमा ने नागरीप्रचारिणी पत्रिका (वर्ष ६६, अक ३, पृ० ३९५) मे कृपानिवास कृत रामरसामृतसिंधु नामक विस्तृत प्रवन्ध काव्य का परिचय दिया है।

२. दे० डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, ईस्ट इण्डिया कपनी-कालीन राम-काव्य, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८२१-८२६ ।

वतार८, वशीधर शुक्ल का **राम मड़ैया** तथा रामनाथ ज्योतिषी का **श्रीरामचन्द्रोदय**।

खड़ी बोली का रामकाव्य अपेक्षाकृत समृद्ध है। निम्नलिखित महाकाव्य साहित्यिक मूल्य रखते है : रामचरित उपाध्याय का **रामचरित चिन्तामणि** (सन् १६२० ई०); मैथिलीशरण गुप्त का **साकेत** (सन् १६२६ ई०), अयोध्या सिह उपाध्याय का **वैदेही वनवास** (१६३६ ई०), वलदेव प्रसाद मिश्र कृत **साकेत सन्त** (१६४६ ई०), केदारनाथ मिश्र कृत **कैकेयी** (१५५० ई०), वालकृष्ण शर्मा नवीन कृत **ऊर्म्मिला** (१६५७)। इन महाकाव्यो की तीन प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

(१) मूलभूत दृष्टिकोण—अवतारवाद को कम महत्व दिया गया है अथवा राम को पूर्णतया मानव मात्र के रूप मे चित्रित किया गया है।

(२) भक्तिकालीन धार्मिक भावना और रीतिकालीन शृंगारिकता के स्थान पर नवीन सामाजिक तथा राजनीतिक आदर्श।

(३) पूर्ववर्ती रामकाव्य के उपेक्षित अथवा कम विकसित पात्रो को नायक-नायिका वनाने की प्रवृत्ति। उदा०—साकेत (लक्ष्मण-उर्मिला), साकेत-सन्त (भरत-माण्डवी), कैकेयी, ऊर्म्मिला।

३०२ गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन केशवदास की **रामचन्द्रिका** मे कोई प्रवन्धात्मकता नही मिलती। कथानक के दृष्टिकोण से इसमे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं :

(१) सीतास्वयवर मे वाणासुर-रावण-सवाद, जो प्रसन्नराघव के आधार पर लिखा गया है।

(२) मिथिला मे परशुराम का तेजोभग।

(३) रावण-वध के पश्चात् अयोध्या मे लौटकर राम की विरक्ति तथा वासिष्ठ का समझाना (दे० २५वाँ प्रकाश)। इस वृत्तान्त का आधार योगवसिष्ठ का राम-वैराग्य-वर्णन है।

(४) महानाटक के आधार पर राम से अगद का वैर (दे० २६वाँ प्रकाश)।

(५) पद्मपुराण तथा जैमिनीय अश्वमेध के अनुसार सीता-त्याग, लव-कुश का जन्म और राम-सेना से युद्ध (दे० आगे अनु० ७४६)।

३०३. सिक्खो के दसवे गुरु गोविन्द सिह ने सन् १६६८ ई० मे एक रामकथा विषयक काव्य की रचना की, जो सन् १९५३ ई० मे **गोविन्द रामायण** के नाम से प्रकाशित हुई है। कथानक की दृष्टि से निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं :

—राम सीता का पूर्वानुराग (दे० अनु० ४०३) तथा अयोध्या मे भी परशुराम का तेजोभंग (दे० अनु० ३५१)।

—राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण का कुटी के चारो ओर रेखा खीचना (अनु० ४६८)।

—सीता का नागमत्र पढकर राम तथा लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करना (दे० अनु० ५८६)।

—वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४३)।

—लव-कुश-युद्ध के अन्त मे सीता का अपने सतीत्व की शपथ खाकर समस्त राम-सेना को जिलाना तथा राम के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान करना। (दे० अनु० ७४६)।

—रावण-चित्र के कारण राम का सीता पर सन्देह तथा फलस्वरूप सीता का भूमि-प्रवेश (दे० अनु० ७५३)।

मराठी

३०४. मराठी साहित्य की प्राचीनतम रामकथा एकनाथ कृत **भावार्थ रामायण** है, जिसकी रचना १६वी शताब्दी के अन्त मे हुई थी। इसका उत्तरकाण्ड एकनाथ के किसी शिष्य द्वारा लिखा हुआ है। एक दन्तकथा के अनुसार एकनाथ ने युद्धकाण्ड के केवल ४४ अध्याय लिखे थे और गवब ने उसे पूरा किया था किन्तु आधुनिक मराठी समालोचको का विश्वास है कि एकनाथ ने अहि-महिरावण-वृत्तान्त को छोडकर समस्त युद्धकाण्ड की रचना की है। अहि-महिरावण की कथा जयरामसुत द्वारा लिखी मानी जाती है।

एकनाथ के तीन मुख्य आधार वाल्मीकि, अध्यात्म तथा आनन्द रामायण है। भावार्थ रामायण के कथानक को वाल्मीकि के ढाँचे के अनुसार प्रस्तुत किया गया है, समस्त रचना मे जो भक्ति का वातावरण है उसका आधार अध्यात्म रामायण है तथा उसकी वाल्मीकि से भिन्न नवीन सामग्री मुख्यतया आनन्द रामायण पर आधारित है।

एकनाथ वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ से परिचित थे। भावार्थ रामायण के निम्नलिखित प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलते किन्तु गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे विद्यमान है : दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख (अनु० ३४३), तारा का शाप (अनु० ७२६), निकषा-वाक्य (अनु० ५६८,३), रावण द्वारा विभीषण पर पाद-प्रहार (अनु० ५-८,५), नारद-कुम्भकर्ण-सवाद (अनु० ५८६,५) और कालनेमि का वृत्तान्त (अनु० ५५८,६)। भावार्थ रामायण के कुछ अन्य प्रसग केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे पाए जाते हैं, उदाहरणार्थ - विभीषण-निकषा-संवाद, नारद-वाक्य, कुम्भकर्ण-वाक्य और मन्दोदरी-केश-ग्रहण (दे० अनु० ५६०)। भरत हनुमान-सवाद केवल गौडीय पाठ मे विद्यमान है किन्तु एकनाथ ने सभवतः आनन्द रामायण के आधार पर इस प्रसग का वर्णन किया है (दे० अनु० ५८८)।

वाल्मीकि से भिन्न सामग्री जो समान रूप से भावार्थ रामायण तथा अध्यात्म-रामायण मे विद्यमान है, वह आनन्द रामायण मे भी पाई जाती है, सामग्री इस प्रकार है : नवजात शिशु राम द्वारा विष्णु रूप-प्रदर्शन (अनु० ३७५), लक्ष्मण का सयम (अनु० ४६१), रावण का छत्रभग (अनु० ५८४), रावण की नाभि मे अमृत की स्थिति (अनु० ५९८), रावण की मुक्ति (अनु० ५९९)।

एकनाथ के कथानक पर आनन्द रामायण की गहरी छाप है। निम्नलिखित सामग्री न तो वाल्मीकि रामायण और न अध्यात्म रामायण मे मिलती है किन्तु वह समान रूप से आनन्द रामायण तथा भावार्थ रामायण मे विद्यमान है—दशरथ-कौशल्या-विवाह की कथा (अनु० ३३७); भरत और शत्रुघ्न सहोदर हैं (अनु० ३४१), पाषाणभूता अहल्या की कथा (अनु० ३४६); बालक राम की तीर्थ-यात्राएँ (अनु० ३८५); परशुराम से शिव-धनुष का सम्बन्ध तथा सीता द्वारा धनुष के उठाये जाने की कथा (अनु० ३९२), सीता-स्वयवर मे रावण की उपस्थिति (अनु० ३९७), अग्निजा सीता की जन्म-कथा (अनु० ४२२), भरत द्वारा मथरा का पीटा जाना (अनु० ४३४); लक्ष्मण का कुटी के चारो ओर रेखा खीचना (अनु० ४९८), पार्वती द्वारा राम की परीक्षा (अनु० ४७५), रावण की बहन क्रौंचा का वध (अनु० ५३१), हनुमान का विभीषण को रामकीर्तन मे सलग्न देखना (अनु० ५३८), लका मे हनुमान के उत्पात (अनु० ५३९), लकादहन के वर्णन मे साम्य, विशेषकर रावण की दाढी जल जाने की कथा (अनु० ५५२), हनुमान की वीरता विषयक ब्रह्मा का पत्र (अनु० ५५४), रेती की लका मे विभीषण का अभिषेक (अनु० ५७१), नल (अनु० ५७६) तथा हनुमान (अनु० ५८०) का गर्व-निवारण, अगद का अपनी कुडलाकार पूँछ पर बैठना तथा मण्डप की छत राम के पास ले आने की कथा (अनु० ५८५), सुलोचना (अनु० ५९४) तथा मन्दोदरी (अनु० ५९९) का सहगमन, अहि-महिरावण की कथा (अनु० ६१४), हनुमान के पुत्र की उत्पत्ति (अनु० ६१५), लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (अनु० ६३२); रावण मन्दोदरी के विवाह की कथा (अनु० ६५०), दशरथ-यज्ञ के पायस से हनुमान की उत्पत्ति (अनु० ६७७), रामकथा-श्रवण मे सर्वत्र उपस्थित रहने की हनुमान द्वारा वरप्राप्ति (अनु० ७०२)।

एकनाथ के कुछ प्रसग उपर्युक्त तीन आधार ग्रन्थो (अर्थात् वाल्मीकि, अध्यात्म और आनन्द रामायण) मे नही मिलते है, उदाहरणार्थ : पउमचरिय के अनुसार भरत तथा शत्रुघ्न का कैकेयी की सन्तान के रूप मे उल्लेख (अनु० ३४१), योग वासिष्ठ के आधार पर राम के वैराग्य का वर्णन (अनु० ३८६); भरत की चित्रकूट यात्रा के प्रसंग मे भरत-लक्ष्मण युद्ध तथा वाल्मीकि द्वारा रामायण का गान (अनु० ४३४); जयन्त के स्थान पर सुदमुख गधर्व का उल्लेख (अनु० ४३९), अनावृष्टि के

कारण इन्द्र के विरुद्ध युद्ध करते समय दशरथ की सहायता करने से कैकेयी की वर-प्राप्ति (अनु० ४४७), मथरा को उभाडने के उद्देश्य से ब्रह्मा द्वारा विकल्प का प्रेषण (अनु० ४५४), लक्ष्मण की जितेन्द्रियता की कथा (अनु० ४६२), नृसिंह पुराण की भाँति शूर्पणखा के प्रसग मे राम के पत्र का उल्लेख (अनु० ४६४), माया-सीता की कथा का एक नवीन रूप (अनु० ५०५), राम द्वारा हनुमान की पराजय (अनु० ५१२), वालि-सुग्रीव की जन्म कथा मे पार्वती के शाप का उल्लेख (अनु० ५१३), हेमा की कथा (अनु० ५२६), सीता-मन्दोदरी-सवाद (अनु० ५४४), हनुमान का रावण-सभा मे कुण्डलाकार पूँछ पर वैठना (अनु० ५५२), द्रुमकुल्य के स्थान पर मरुदैत्य का वध (अनु० ५७४, ५), सेतु के पत्थरो को राम के चरणस्पर्श से वचाने की युक्ति (अनु० ५८१), लक्ष्मण का वैराग्य (अनु० ६१०)।

अन्य काण्डो की अपेक्षा भावार्थ रामायण का उत्तरकाण्ड वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड से अधिक साम्य रखता है। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार भृगुशाप का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ७२५)। निम्नलिखित प्रसग आनन्द रामायण पर आधारित तीत होते है - स्त्रीराज्य मे हनुमान का प्रेषण (अनु० ६८७), वलि के यहाँ रावण की पराजय (अनु० ६५५), लव-कुश-युद्ध के पश्चात् राम के साथ सीता का अयोध्या लौटना (अनु० ७४७), सीता द्वारा मूलकासुर-वध (अनु० ६४१)। अन्य उल्लेखनीय नवीन सामग्री इस प्रकार है—सीता-वनवास का परोक्ष कारण (अनु० ७२८); कौपीन पहनकर हनुमान का जन्म (अनु० ६६७), कैकेयी के दोषारोपण के कारण सीता का भूमि-प्रवेश (अनु० ७५३)।

३०५ शेष मराठी रामसाहित्य की एक विशेषता सीता स्वयंवर नामक रचनाओ का वाहुल्य है। १६वी शताव्दी मे जनी जनार्दन और विठा रेणुकानन्दन; १७वीं शताव्दी मे रामदास, वेणावाई, वामन और जयराम स्वामी वडगाँवकर, १८वी शताव्दी मे आनन्दतनय, गोसावीनन्दन, नागेश और विट्ठल ये सव किसी सीता स्वयवर के रचयिता माने जाते हैं।

सत्रहवी शताव्दी की निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय हैं: कृष्णदास मुग्दल का **युद्धकाण्ड**; मुक्तेश्वर का **सक्षेप रामायण** तथा **अहि-महिरावण-वध**, माधव स्वामी के दो **रामायण**; समर्थ रामदास का लघु **रामायण**, **सुन्दरकाण्ड** तथा **युद्धकाण्ड**; वेणावाई का रामायण।

परवर्ती राम-साहित्य की सवसे लोकप्रिय रचना श्रीधर कृत **रामविजय** (रचनाकाल १७०३ ई०) है। इसके कथानक पर भावार्थ रामायण की गहरी छाप है। भावार्थ रामायण की प्रायः समस्त उपर्युक्त विशेषताएँ रामविजय मे भी पाई जाती हैं। महल्या-गौतम-विवाह की कथा ब्रह्मपुराण के अनुसार दी गई है। **मोरोपन्त**

(मराठी साहित्य के केशवदास) के ७४ रामायण प्रकाशित हैं; कथानक प्रायः वाल्मीकीय रामायण के अनुसार ही है। अमृतराव ओक ने १६वी शतब्दी मे **शतमुख-रावणवध** की रचना की है।

गुजराती

२०६: गुजराती साहित्य मे रामकथा की अपेक्षा कृष्णकथा को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। "श्रीकृष्ण के चरित्र से सम्बन्धित महाभारत का अश गुर्जराज के व्यावहारिक और कौतूहलप्रिय आत्मा को जितना खीच सका उतना रामायण खीच भी नही सका।"[1] फिर भी गुजराती साहित्यकारो की सूची से पता चलता है कि सन् १३७० ई० से सन् १८५२ ई० तक ३७२ कवियो मे से पचास कवियो ने रामकथा-विषयक साहित्य की सृष्टि की है।

कृष्ण-काव्य मे प्रवन्धात्मकता का अभाव है। सम्भवत इसके प्रभाव के कारण अधिकाश गुजराती रामकथा-संवधी साहित्य भी पदावली के रूप मे अथवा आख्यान शली मे लिखा गया है। उदाहरणार्थ : आशाएत (असाईत) कृत **रामलीला ना पदो** (१४वी श०); भालणकृत **रामविवाह** और **रामबालचरित** (१५वी शताब्दी); मत्री कर्मण कृत **सीताहरण** (१५वी श०); भीमकृत **रामलीला ना पदो** (१५वी श०); माडण बधारो का **रामायण** (१५वी श०), लावण्यसमय कृत **रावण-मन्दोदरी संवाद** (१६वी श०), उद्धवकृत **सीता-हनुमान-संवाद,** नाकर का **लवकुशाख्यान** (१६वी श०); प्रेमानन्द कृत **रणयज्ञ** (१७वी श०) तथा हरिदास कृत **सीता विरह** (१७वी श०) आदि।

भालण के पुत्रो—उद्धव और विष्णुदास—ने १६वी शताब्दी मे समस्त रामायण की रचना की थी लेकिन वह अधिक प्रचलित नही हो सकी है; आजकल गुजरात मे १६वी शताब्दी का **गिरधरदासकृत रामायण** सब से श्रेष्ठ माना जाता है और सबसे लोकप्रिय भी है।

आधुनिक काल मे योगवासिष्ठ, अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस आदि का गुजराती मे अनुवाद किया गया है।

गुर्जरात प्रान्त मे प्रचलित रामकथा का निरूपण नर्मदा कृत **रामायणनोसार** (१६वी श०) मे मिलता है। इस रचना से पता चलता है कि वाल्मीकि रामायण तथा

---

१ दे० प्रल्हाद चन्द्रशेखर दीवान जी, गुजरात मे रामायण (कल्याण का रामायणाक पृ० ३६८)। उसी लेखक का गुजराती राम-साहित्य का सिंहावलोकन द्रष्टव्य है—ज० ओ० इ० भाग ४ (१६५४), पृ० ४६-५७। इसके अतिरिक्त श्री शान्ति आँकडियाकर, मध्यकालीन गुजराती साहित्य का तिथि-क्रम। साहित्य (पटना), वर्ष १०, अक १, पृ० ५२-५७।

अध्यात्म रामायण के अतिरिक्त अन्य रचनाओ का भी गुजराती राम-साहित्य पर प्रभाव पडा, यद्यपि इन दोनो का प्रभाव प्रधान है। रामायणसार मे सीता-त्याग के दो कारण बतलाये जाते हैं (धोबी वृत्तान्त तथा रावण-चित्र की कथा) तथा राम-सेना से लव-कुश के युद्ध का भी वर्णन किया गया है।

उर्दू-फ़ारसी रामायण

३०७. राम-कथा-विषयक उर्दू साहित्य अधिक महत्त्वपूर्ण नही है। उर्दू साहित्य के इतिहासकार इसके सबध मे प्रायः मौन ही रहते हैं। १९वी शताब्दी उत्तरार्द्ध के निम्नलिखित चार रामायण उल्लेखनीय हैं -

(१) मुशी जगन्नाथ खुश्तर का रामायण खुश्तर। इस सर्वोत्तम तथा सबसे लोकप्रिय उर्दू रामायण की रचना १८६४ ई० मे हुई थी।

(२) मुशी शकरदयाल 'फर्हत' का रामायण मंजूम।

(३) बाँकेबिहारी लाल 'बहार' का रामायण बहार।

(४) सूरज नारायण मेह्र का रामायण मेह्र।

इनकी रचना के लिए रामचरितमानस, वाल्मीकि रामायण आदि प्रसिद्ध रामायणो का सहारा लिया गया है, फिर भी इन ग्रन्थो को स्वतन्त्र-काव्य-ग्रन्थ मानना उचित होगा।

३०८ उर्दू की अपेक्षा फ़ारसी रामकथा-साहित्य अधिक प्राचीन है। अकबर के आदेशानुसार अल बदायूनी (अब्दुल कादिर इब्न-इ-मुलूक शाह) ने सन् १५८४--१५८९ ई० मे वाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद किया था।

जहाँगीर के राज्यकाल मे तुलसीदास के समकालीन गिरिधरदास[1] ने वाल्मीकि रामायण का सक्षिप्त पद्यानुवाद प्रस्तुत किया था तथा मुल्ला मसीह ने अपने रामायण मसीही (दे० अनु० ३०९) की रचना की थी। शेष उपलब्ध फारसी राम-साहित्य इस प्रकार है : रामायण फैजी (शाहजहाँ के समय का गद्यानुवाद), गोविन्द-पुत्र गोपाल कृत तर्जुमा-इ-रामायण (१७वी श० ई० उत्तरार्द्ध), चन्द्रभान बेदिल का वाल्मीकि रामायण का सक्षिप्त गद्यानुवाद (१६८५ ई०) तथा पद्यानुवाद (१६९३ ई०), लाला

1. ई० एस० ए० एच० अबीदी - द स्टोरी ऑफ रामायण इन इन्डोपर्सियन लिटरेचर (इन्डो-इरैनिका, कलकत्ता, भाग १७, पृ० १७-२९। इस लेख मे १९वीं श० की भी अनेक फारसी रामायणो का उल्लेख है। देवीदास ने उसी शताब्दी मे फ़ारसी गद्य मे रामचरितमानस का अनुवाद किया था और राय मुशी परमेश्वरी सहाय तथा लाला चदा मल चद ने इसका सक्षिप्त फारसी पद्यानुवाद।

अमरसिंह का गद्यात्मक रामायण अमर प्रकाश (रचनाकाल १७०५ ई०) तथा लाला अमानत राय कृत वाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद (रचनाकाल सन् १७५४ ई०)।

३०६ रामायण मसीही की रचना जहाँगीर के समय मे मुल्ला मसीह द्वारा हुई थी, नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) ने उसे सन् १८९८ ई० मे प्रकाशित किया था। मुल्ला मसीह मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के निकट किराना गाँव के निवासी थे। वह सभवतः ईसाई थे क्योंकि रामायण मसीही मे ईसा, मरियम आदि बाइबिल के पात्रों का उपमान के रूप मे बहुधा उल्लेख हुआ है। इस रचना के ५००० छन्दो मे दशरथ-यज्ञ से लेकर लव-कुश-युद्ध के बाद सीता के भूमि-प्रवेश तक की समस्त रामकथा प्रस्तुत की गई है। कथानक [१] की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय है:

(१) पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा अरण्यकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ३४८)।
(२) विश्वामित्र सीता की जन्म-कथा सुनाते हैं, इसके अनुसार सीता एक मजूषा मे पाई गई थी (दे० अनु० ४१३)।
(३) रावणवध के पश्चात् मन्दोदरी स्वय सीता को राम के पास ले आती है (अनु० ६०२)।
(४) राम की बहन सीता को दशमुख रावण का चित्र अंकित करने के लिए प्रेरित करती है और बाद मे राम के पास जाकर कहती है कि सीता दिन-रात उसी चित्र की पूजा करती है। (दे० अनु० ७२३)।
(५) वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४३)।
(६) लव-कुश-युद्ध मे राम को भी पराजित तथा अचेत किया जाता है किन्तु वाल्मीकि जल छिडक कर राम को होश मे लाते हैं (दे० अनु० ७४६)।
(७) रामकथा का निर्वहण मौलिक प्रतीत होता है (दे० अनु० ७५३)।

---

२. मैं प्रो० हीरालाल चोपडा, एम० ए० का आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे साथ बैठकर मुझे रामायण मसीही का कथानक समझा दिया है। एशियाटिक सोसाइटी के कैटालॉग मे इस रचना का नाम हदीस-इ-राम-उ सीता रखा गया है, लेखक का नाम इस प्रकार है—सादुल्लाह कैरानवी तखल्लुस मसीह।

अध्याय १३

विदेश में रामकथा

३१० पिछले तीन अध्यायों में भारतीय संस्कृति में रामकथा की व्यापकता का अनुमान किया जा सकता है। न केवल भारत किन्तु निकटवर्ती देशों की संस्कृति तथा साहित्य में भी रामकथा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है, यह प्रस्तुत अध्याय से स्पष्ट होगा। रामकथा की एक धारा उत्तर की ओर फैल गई, उनका प्रमाण हमें तिब्बती तथा खोतानी रामायणों में मिलता है। यह सामग्री अपेक्षाकृत प्राचीन है अत इसका निरूपण प्रथम परिच्छेद में किया गया है। एक दूसरी धारा भारत से हिंदेशिया तक पहुँच गई थी और वहाँ से हिन्द-चीन और उसके पश्चात् स्याम तक तथा स्याम से बर्मा तक फैल गई थी। इसका वर्णन द्वितीय तथा तृतीय परिच्छेदों में किया गया है। अंत में पाश्चात्य वृतान्तों का भी किंचित् निरूपण किया जायेगा। प्रस्तुत अध्याय में रामकथा के पात्रों के नाम प्राय. संस्कृत रामायण के अनुसार ही दिये जायेंगे।

क—तिब्बत खोतान

तिब्बती रामायण

३११ बौद्ध रामकथा के निरूपण में अनामक जातकम् तथा दशरथकथानम् का उल्लेख हुआ है, जिनका क्रमश. तीसरी और पाँचवी शताब्दी ई० में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था (दे० ऊपर अनु० ५२-५३), अत रामकथा प्राचीन काल से उत्तर की ओर फैलने लगी थी। तिब्बती भाषा में भी अनेक हस्तलिपियाँ प्राप्त हैं जिनमें रावण-चरित्र से लेकर सीता-त्याग और राम-सीता-सम्मिलन तक की समस्त कथा मिलती है, जो सम्भवत: आठवीं अथवा नवीं शताब्दी की है।[1] प्रारम्भ में रावणचरित का कुछ वर्णन किया गया है, अनन्तर विष्णु दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेने की प्रतिज्ञा करते हैं। दशरथ की केवल दो पत्नियाँ है, विष्णु कनिष्ठा के गर्भ से जन्म लेते हैं और रामन कहलाते है, तीन दिन बाद विष्णु के पुत्र ज्येष्ठा से जन्म लेते हैं और उनका नाम लक्षण रखा जाता है।

---

१ दे० एफ० डब्लू० थॉमस ए रामायण स्टोरी इन तिब्बतन, इंडियन स्टडिस पृ० १९३। एम० लालू · जर्नल अजियाटिक, १९३६, पृ० ५६०।

गुणभद्र के उत्तरपुराण की भाँति इनमे भी सीता रावण की पुत्री मानी जाती हैं। दशग्रीव की पटरानी के एक कन्या उत्पन्न होती है जिसके जन्मपत्र मे लिखा है कि वह अपने पिता का नाश करेगी। फलस्वरूप वह समुद्र मे फेकी जाती है और बचने पर भारत के कृषको द्वारा पाली जाती है, इसका नाम लीलावती है। (लेकिन अन्य हस्त-लिपियो मे 'सीता' नाम का भी उल्लेख है)।

दो पुत्रो मे से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्त्तव्य-विमूढता देखकर रामन स्वेच्छा से किसी आश्रम मे तपस्या करने जाते हैं, और लक्षण को राज्य दिलवाते है। कृषको के अनुरोध से रामन तपस्या छोड़कर लीलावती (सीता) से विवाह करते हैं, और इसके बाद राज्यशासन ग्रहण करते है।

गुणभद्र मे सीता का हरण राजधानी के पास के अशोकवन से होता है। तिब्ब-तीय रामायण मे भी ऐसा प्रतीत होता है, क्योकि इसका वर्णन बनवास के बाद मिलता है। इस वर्णन मे विशेषता यह है कि रावण सीता का स्पर्श नही करता तथा जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाकर मार डालता है। (दे० आगे अनु० ५०२ और ४७०)।

अनन्तर सीता की खोज, वानरो से मैत्री, हनुमान का प्रेषण आदि रावण-वध तक का वर्णन मिलता है। इसमे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है; वालि-सुग्रीव द्वन्द्व मे माला के स्थान पर सुग्रीव की पुच्छ मे दर्पण बाँधा जाता है, हनुमान आदि एक दूसरे की पुच्छ पकड कर स्वयप्रभा की गुफा मे प्रवेश करते है, रावण का मर्मस्थान उसका अँगूठा बताया गया है।

उत्तरकाण्ड से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री (धोबी के कारण सीता-त्याग, कुश की वाल्मीकि द्वारा सृष्टि तथा अन्त मे राम-सीता सम्मिलन) कथा-सरित्सागर के अनु-सार है,-अन्तर यह है कि लव तथा कुश का जन्म सीता-त्याग के पूर्व होता है (दे० अनु० ७२१)।

खोतानी रामायण

३१२. खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान) की रामकथा, जो नवी शताब्दी ई० की मानी जाती है, तिब्बती रामायण से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। फिर भी तिब्बती तथा खोतानी रामायण एक दूसरे का एकमात्र आधार नही हो सकते है, क्योकि एक ओर तिब्बती रामायण का उत्तररामचरित खोतानी रामायण मे नही पाया जाता है और दूसरी ओर खोतानी रामायण मे अनेक वृत्तान्त मिलते हैं, जिनका तिब्बती रामायण मे अभाव है।[1]

1 दे० बुलेटिन स्कूल ऑव ओरियन्टल स्टडिस, भाग १०, पृ० ५५६।

तिब्बती तथा खोतानी रामायण की निम्नलिखित बातों में समानता पाई जाती है :—

राम तथा लक्ष्मण, केवल दो भाइयों का उल्लेख।
सीता (दशग्रीव की पुत्री) की जन्म-कथा।
वनवास के समय सीता का विवाह।
रावण जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाता है।
द्वन्द्वयुद्ध के समय विजेता वानर की पुच्छ में दर्पण बाँधे जाने की कथा।
रावण के मर्मस्थान का उल्लेख।

खोतानी रामायण की निम्नलिखित विशेषताएँ तिब्बती रामायण में नहीं मिलती :

(१) बौद्ध प्रभाव : प्रारम्भ में एक बौद्ध प्रस्तावना दी गई है, जिसमें शाक्यमुनि द्वारा बौद्धधर्म के प्रचार का उल्लेख है। जातकों की शैली के अनुसार महात्मा बुद्ध वक्ता हैं तथा अन्त में रामकथा तथा बौद्ध इतिहास के पात्रों की अभिन्नता प्रकट करते हैं। रामकथा के समय बुद्ध राम थे तथा मैत्रेय लक्ष्मण : अतः खोतानी रामायण में अवतारवाद का उल्लेख नहीं हुआ है। बौद्ध प्रभाव के कारण राम की चिकित्सा के के लिए बौद्ध वैद्य जीवक को (जो जातकों में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं) बुलाया जाता है, तथा आहत रावण का वध नहीं किया जाता है।

(२) रावणचरित के बाद अर्जुन कार्तवीर्य सहस्रबाहु तथा परशुराम की कथा मिलती है, लेकिन इसमें राम दाशरथि तथा परशुराम की कथा का मिश्रण हुआ है। दशरथ का पुत्र सहस्रबाहु परशुराम के पिता की धेनु चुराता है, जिसके कारण परशुराम सहस्रबाहु को मारते हैं। सहस्रबाहु के दो पुत्र राम और लक्ष्मण होते हैं : इनकी माता दोनों को बारह वर्ष तक पृथ्वी में छिपाती है और इसके बाद राम परशुराम का वध करते हैं।

(३) राम और लक्ष्मण दोनों वन में निवास करते हैं (निर्वासन का कारण नहीं दिया गया है) तथा दोनों सीता से विवाह करते हैं। यह उन देशों के बहुपतित्व की प्रथा का प्रभाव है।

(४) सीताहरण के वृत्तान्त में सीता के रक्षणार्थ कुटी के चारों ओर रेखाएँ खींची जाने का उल्लेख है।

(५) सम्पाति-वृत्तान्त का परिवर्तित रूप (दे० आगे अनु० ५२७ टि०)।

(६) सेतुबन्ध के समय कश्मीरी रामायण से मिलता-जुलता एक वृत्तान्त मिलता है, जिसमें नल के फेंके हुए पत्थरों के न डूबने का कारण बताया गया है।

(७) आहत रावण कर चुकाने की प्रतिज्ञा करता है और उसको बचाया जाता है। (दे० अनु० ५६५) ।

(८) अन्त मे सीता के विषय मे लोकापवाद तथा सीता के भूमि प्रवेश का निर्देश मिलता है।

इन विशेषताओ के कारण तिब्बती रामायण खोतानी रामायण का आधार नही हो सकता है। **महानाटक** की रामकथा मे भी सीता के रक्षणार्थ रेखाएँ खीची जाने का तथा रावण के वैद्य सुषेण के बुलाए जाने का उल्लेख हुआ है तथा **काश्मीरी रामायण** मे भी नल की कथा मिलती है। अत: **खोतानी रामायण** के अधिकाश वाल्मीकि से भिन्न वृत्तान्त भारत मे भी पाये जाते है। यह चतुर्थ भाग के विश्लेषण से और स्पष्ट होगा।

ख—हिन्देशिया

३१३ हिन्देशिया मे रामकथा प्राचीन काल से विदित है, इसका प्रमाण नवी शताब्दी के एक शिव-मन्दिर के शिला-चित्रो से मिलता है। बाद मे जावा तथा मलय मे एक विस्तृत राम-साहित्य की रचना की गई है, जिसमे रामकथा के दो भिन्न रूप मिलते है : (१) जावा के प्राचीन रामायण का रूप जो वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है तथा (२) अर्वाचीन रामकथा जिसमे वाल्मीकि से बहुत भिन्नता पाई जाती है। इन दोनो रूपो का प्रस्तुत परिच्छेद मे अलग वर्णन किया जाता है। इनकी सामान्य विशेषता यह है कि इसमे राम-भक्ति का भाव नही आया है। जावा के प्राचीनतम रामायण के रचयिता शैव थे तथा जिन दो मन्दिरो मे रामकथा की विस्तृत शिला-चित्र-माला है, वे भी दोनो शिव-मन्दिर हैं।

३१४ हिन्देशिया की प्राचीनतम राम-सम्बन्धी साहित्यिक रचना **रामायण ककविन** है, जो दसवी शताब्दी की मानी जाती है। आधुनिकतम खोज[2] से सिद्ध हुआ है कि योगीश्वर इसके रचयिता नही हैं। **रामायण ककविन** का लेखक अज्ञात ही है। डच अनुवाद[1] से पता चलता है कि इसका मुख्य आधार **भट्टिकाव्य**[3] है। ग्यारहवे अध्याय मे **भट्टिकाव्य** के कथानक की जितनी विशेषताओ का उल्लेख हुआ है वे सब **रामायण ककविन** मे भी पाई जाती हैं। प्रारम्भिक बारह सर्गो का विभाजन **भट्टि-**

---

१. दे० सी० हॉयकास, दि ओल्ड जवनीस रामायण। ऐम्सटेरडैम, १६५८।

२. दे० डच ओरियेन्टल जर्नल, भाग ७३-६४।

३. श्री मनमोहन घोष ने इस विशेषता की ओर विद्वानो का ध्यान आकर्षित किया है। दे० जर्नल ऑव ग्रेटर इंडिया सोसाइटी, भाग ३, पृ० ११३।

(३) अर्जुनविजय (१४वी श०), जिसकी आधिकारिक कथावस्तु अर्जुन सहस्रबाहु द्वारा रावण की पराजय है।

३१६ जावा का आधुनिक सेरत राम भी रामायण ककविन की भाँति वाल्मीकीय कथा से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। प्रारम्भ मे रावण-चरित का वर्णन दिया गया है, जो **रामायण** मे नही पाया जाता है। सेरत राम पद्य मे है, कवि का नाम यस दि पुरा है।

३१७. मध्य जावा के परमबनन (परमब्रह्म) नामक स्थान पर नवी शताब्दी ई० का एक शिव-मन्दिर है। इस मन्दिर के चारो ओर की ऊँची दीवारो पर **रामायण** की समस्त घटनाओ को शिला-चित्रो मे अकित किया गया है। इसमे जिस रामकथा का वर्णन किया गया है वह बहुत कुछ वाल्मीकीय कथा से मिलती-जुलती है। अनेक गौण बातो मे अवश्य **रामायण ककविन** से भिन्नता पाई जाती है, लेकिन हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा की अधिकाश विशेषताओ का इसमे निर्देश नही मिलता। **सेरी राम** के अनुसार भरत सीताहरण के बाद ही राम से मिलकर उनकी पादुकाएँ अयोध्या ले जाते हैं किन्तु परमबनन मे भरत-मिलाप का स्थान **रामायण ककविन** के अनुसार सीताहरण के पूर्व ही माना गया है। वाल्मीकीय रामायण से जो किंचित् विभिन्नता इसमे है, इसका प्राय: भारत मे भी उल्लेख पाया जाता है, उदाहरणार्थ :

जटायु द्वारा राम को सीता की अगूठी दी जाने का वृत्तान्त **महानाटक** मे है।

मछलियो के सेतु नष्ट करने की कथा **सेतुबंध** तथा **बालरामायण** मे भी पाई जाती है।

दशरथ की पुत्री (शान्ता) का उल्लेख **रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ, भवभूति के **उत्तररामचरित** आदि मे किया गया है।

लक्ष्मण के तरकश मे सुग्रीव के आँसुओ का पानी जमा होना तथा इस तरह सुग्रीव का पता लगाया जाना, इससे मिलता-जुलता वृत्तान्त महेश्वरदास कृत **टीकारामायण** मे मिलता है (दे० अनु० ५१२)

३१८. पूर्व जावा के पनतरन नामक स्थान के चौदहवी शताब्दी पूर्वार्द्ध के एक शिव-मदिर मे भी रामकथा शिला-चित्रो मे अङ्कित की गई है। यह कथा प्राचीन **रामायण ककविन** के कथानक से अभिन्न है, जिससे पता चलता है कि यद्यपि बाद मे अर्वाचीन रामकथा अधिक लोकप्रिय हुई फिर भी **रामायण ककविन** का भी कुछ महत्त्व बना रहा।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा

सिंहावलोकन

३१६. रामायण ककविन की प्राचीन परम्परा के अतिरिक्त हिन्देशिया में राम-कथा का एक अर्वाचीन रूप भी प्रचलित है जो अधिक लोकप्रिय है और जिसके आधार पर आधुनिक समय तक सुमात्रा और जावा में रामकथा सम्बन्धी नाटकों का अभिनय होता है। जावा का नाटक-साहित्य प्रायः सेरत कांड तथा राम केलिंग पर आधारित है। बाली का "वायांग वोंग" नामक नाटकों का पूरा वर्ग (जिसमें अभिनेता चेहरा नहीं पहनते) केवल रामायण के दृश्य ही प्रस्तुत करता है। रामकथा का यह अर्वाचीन रूप हिन्देशिया से हिन्दचीन, श्याम और ब्रह्मदेश तक फैल गया है।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा[1] के विस्तृत साहित्य की सामग्री का परिचय निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

(अ) मलयन अर्वाचीन रामकथा।

हिकायत सेरीराम के तीन साहित्यिक पाठ :

(१) रोरडा वान ऐसिंगा का संस्करण (ऐमस्टरडैम, १८४३)।

(२) शेलाबेर का संस्करण (ज० राँ० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रैंच, भाग ७१, दिसंबर १९१५)। इसका अंग्रेजी संक्षेप भी प्रकाशित है (दे० ज० राँ० ए० सो०, एस० बी०, भाग ७०, पृष्ठ १८०-२०७)।

(३) राफ्ल्स मलय हस्तलिपि का पाठ। (ज० राँ० ए० सो० १९४४, पृ० ९६)। इसका कथानक प्रथम दो संस्करणों से अधिक भिन्न नहीं है। प्रारम्भ में रावण का पूर्वचरित्र दिया गया है, जो अन्य पाठों में नहीं मिलता। इस कथा की एक अन्य हस्तलिपि[2] का परिचय सन् १९६३ ई० में मिला। इसमें रावण के पूर्व-चरित (अत्याचार, पराभव, तपस्या) के विषय में अतिरिक्त सामग्री है तथा हनुमान की एक जन्मकथा है जो महाशिवपुराण के वृत्तान्त से साम्य रखता है (दे० आगे अनु० ६७३)। राफ्ल्स के पाठ की एक विशेषता यह है कि राम की आज्ञानुसार लक्ष्मण शूर्पणखा से विवाह करते हैं।

इसके अतिरिक्त सेरी राम पर निर्भर अनेक कथाएँ जनसाधारण में प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ :

---

१. प्रस्तुत परिच्छेद में मुख्यतया दो रचनाओं से सहायता मिली है :—
(१) डब्लू० स्टुटरहाइम : राम लेजेंडन एंड रामरेलिफ्स इन इंडोनेशियन।
(२) ए० चीसनिस : डी राम साग बाई डेन मलाइयन।

२. दे० बुलेटिन ऑव स्कूल ऑव ओरियंटल स्टडिस, भाग २६, पृ० ५३१।

(४) हिकायत महाराज रावण (ज० रॉ० ए० सो०, मलयन ब्रॅंच, भाग ११)। इसका कथानक सेरी राम से बहुत मिलता-जुलता है। विशेषता यह है कि इसमे रावण की पुत्री सोती हुई सीता के वक्षस्थल पर रावण का एक चित्र रख देती है और इसके कारण राम सीता को त्याग देते है (दे० आगे अनु० ७२३)।

(५) श्रीराम । डब्लू ई० मैक्सवेल द्वारा सम्पादित (दे० ज० रॉ० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रॅंच, भाग १७, १८८६)। अत मे (पृ० ८५-११५) इस रचना का अँगरेजी सक्षेप भी दिया गया है। इसमे हनुमान के जन्म से लेकर लका मे राम की विजय तक की कथा हिकायत सेरी राम के आधार पर दी गई है।

अंतरग प्रमाण के आधार पर यह अधिक से अधिक १६वी श० ई० की रचना हो सकती है।[1]

(६) रामकथा का पातानी पाठ (दे० आगे अनु० ३२१)।

(आ) जावा की अर्वाचीन रामकथा।

(१) राम केलिग। इस रचना मे मलयन सेरी राम से कोई महत्वपूर्ण विभिन्नता नही मिलती।

(२) सेरत काण्ड (दे० आगे अनु० ३२२)।

इसके अतिरिक्त जावा मे और बहुत सी काण्ड नामक रचनाएँ मिलती है लेकिन डॉ० स्टुटरहाइम सेरत काण्ड को जावा की अर्वाचीन रामकथा का वास्तविक और सर्वाधिक प्रचलित रूप मानते है।

इस साहित्य के रचनाकाल का ठीक निर्णय नही हुआ है। अधिकांश विशेषज्ञो का मत है कि इसकी रचना पन्द्रहवी या सोलहवी शताब्दी मे हुई थी[2] फिर भी सम्भव है इसके पहले सेरी राम आदि की कुछ सामग्री प्रचलित हुई हो। सेरी राम की प्राचीनतम हस्तलिपि १६३३ की है।

हिंदेशिया के अर्वाचीन रामकथा-साहित्य के इस सिंहावलोकन के पश्चात् मुख्य रचनाओ का परिचय दिया जाता है।

हिकायत सेरी राम

३२०. इस विस्तृत रचना मे रावण-चरित से लेकर सीतात्याग के बाद राम-सीता-सम्मिलन तक की कथा वर्णित है। निबन्ध के अन्तिम भाग मे वाल्मीकि से भिन्न

---

१. दे० सरावाक म्यूसीयम जर्नल, भाग १४, पृ० ४६८-४८५।
२. आर० ओ० विन्स्टेड, दि मलय वर्शन ऑव दि रामायण। वी० सी० लॉ वाल्यूम, भाग २, पृ० १।

प्रसगो का तुलनात्मक अध्ययन किया जायगा। यहाँ सारी रचना का ढाँचा तथा प्रमुख विशेषताएँ प्रस्तुत करनी हैं। सेरी राम का कथानक निम्नलिखित भागो मे विभक्त किया जा सकता है :

(१) **रावण-चरित**। दुराचार के कारण रावण अपने पिता द्वारा निर्वासित किया जाता है।[1] रावण-निर्वासन के इस वर्णन मे सिंहलद्वीप के विजय नामक प्रथम राजा की कथा का मिश्रण हुआ है (विजय की कथा महावंश के छठे सर्ग मे मिलती है)। सिंहलद्वीप मे पहुँचकर रावण तपस्या करके (नबी आदम के अनुरोध से) अल्लाह से चार लोको का राज्याधिकार प्राप्त करता है। प्रत्येक लोक की किसी राजकुमारी से विवाह कर रावण अनेक पुत्रो को उत्पन्न करता है, जो बाद मे राजा बन जाते हैं :

इन्द्रजित्—देवलोक का राजा
पाताल महारायन (महिरावण) —पाताल का राजा
गगा महासूरी—नागलोक का राजा

इसके बाद रावण पृथ्वी प. लौटकर लकापुरी बसाता है और इसमे अपने भाइयो कुम्भकर्ण, विभीषण तथा शूर्पणखा के पति बर्गासीगा को क्रमशः सेनापति, ज्योतिषी तथा प्रधान गुप्तचर के पद पर नियुक्त करता है।

(२) **राम का जन्म**। दशरथ के मदूदारी तथा बलियादारी के साथ विवाह के वर्णन के बाद उनके पुत्रेष्टि यज्ञ का उल्लेख है, जिसमे एक काक बलियादारी का पायस चुराकर उसे लका ले जाता है (दे० अनु० ३५७)। अनन्तर अंधमुनि-पुत्र-वध और (राम, लक्ष्मण, बर्दन, चित्रदन) चार पुत्रो तथा (कीकवी नामक) एक पुत्री का जन्म वर्णित है।

(३) **सीता का जन्म और विवाह**। मदूदारी के सौंदर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे दशरथ से माँगता है तथा एक माया मदूदारी को लका ले जाता है, जिसके गर्भ से सीता उत्पन्न होती हैं (दे० आगे० अनु० ४२८)। अशुभ जन्मपत्र के कारण सीता समुद्र मे फेकी जाती हैं तथा महारेसि (महर्षि) कली द्वारा पाली जाती है। महारेसि कली के यहाँ सीता के स्वयवर मे रावण अन्य राजाओ के असफल प्रयत्नो के पश्चात् राम परीक्षा मे सफल होकर सीता से विवाह करते है (दे० आगे अनु० ३९९)। विश्वामित्र-आगमन तथा परशुराम-तेजोभग के वृत्तान्त भी दिये गये है।

(४) **राम का वनवास**। बलियादारी के अनुरोध से दशरथ उसके पुत्र बर्दन (भरत) को राज्य देने का निश्चय करते है। राजा के सोते समय बलियादारी राम को

---

१ रावण का पूर्व इतिहास राफ्ल्स मलय हस्तलिपि मे वर्णित है, दे० अनु० ६४६ टि० और ६४८ टि०।

बुलाकर दशरथ के इस निश्चय का समाचार सुनाती है। यह सुनकर राम प्रसन्न होकर ऋषि बनने के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ वन को प्रस्थान करते है। वन मे पहुँच कर और कुटी बनाकर राम कुश-घास से सात लडकियो तथा पाँच लडको की सृष्टि करते है। ये नौकर बनकर घर का काम करते है, जिससे राम, लक्ष्मण, सीता निश्चिन्त होकर साधना कर सकते हैं।

रावण द्वारा शूर्पणखा के पति वर्गासीगा के वध के बाद उसका पुत्र दर्सासीगा अलौकिक खग सिद्ध करने के लिए तपस्या करने जाता है। अनन्तर वालि-रावण-युद्ध और अगद (मदोदरी के पुत्र) का जन्म वर्णित है। इसके बाद अजनी-वालि-सुग्रीव की उत्पत्ति (तीनो गौतम की सन्तान है, दे० आगे अनु० ५१४) तथा हनुमान्-जन्म का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार हनुमान् राम के वीर्य से उत्पन्न हुए है (दे० आगे अनु० ६७५)।

(५) **सीता का हरण और खोज**। किसी दिन लक्ष्मण तपस्या करते हुए शूर्पणखा के पुत्र दर्सासीगा का सयोग से वध करते है (दे० आगे अनु० ६३२)। बाद मे शूर्पणखा अपने पुत्र से मिलने आती है और लक्ष्मण द्वारा विरूपित होकर अपने भाई रावण के पास जाती है। शेष कथानक बहुत कुछ वाल्मीकि के क्रम के अनुसार है। वालि के मित्र सम्बूरान की कथा हिन्दचीन तथा श्याम मे भी मिलती है (दे० अनु० ५२४)।

(६) **युद्ध**। युद्धकाण्ड की सामग्री में वाल्मीकि से कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही पाया जाता है। बगाली रामायण की भस्मलोचन की कथा तथा महिरावण की कथा दोनो यहाँ भी किंचित् परिवर्तन सहित दी गई हैं। इन्द्रजित् की पत्नी सती बनने का तथा रावण के मर्मस्थान (दाहिने कान के पीछे उसका एक छोटा ग्यारहवाँ सिर) का भी उल्लेख किया गया है। युद्ध के बाद आहत रावण का शरीर सेरन्दीव पर्वत के तल मे पडा रहता है और सारी सेना उसको देखने जाती है। विभीषण (जो राम के मन्त्री बन जाते हैं) राम की बहन कीकवी देवी से विवाह करते हैं। एक और विशेषता यह है कि कुम्भकर्ण-वध के बाद तथा इन्द्रजित्-वध के बाद भी युद्ध चालीस-चालीस दिन के लिए स्थगित किया जाता है।

(७) **सीता-त्याग तथा राम-सीता सम्मिलन**। इस अन्तिम भाग मे रावण के चित्र के कारण सीता-त्याग का वर्णन मिलता है (दे० आगे अनु० ७२३)। अनन्तर ल। के जन्म तथा महर्षि कलि द्वारा कुश की सृष्टि की कथा दी गई है। लक्ष्मण से कुश-लव के युद्ध के बाद राम-सीता-सम्मिलन वर्णित है। अत मे कुश, लव तथा वानर-सेना के अनेक सेनापति राक्षसियो से विवाह करते है।

हिन्देशिया की प्राचीन रामकथा के मुख्य आधार के विषय मे सदेह की गुन्जा-यश नही होती (दे० अनु० ३१४), किन्तु सेरी राम का मूलस्रोत निर्धारित करना असं-

भव सा प्रतीत होता है। फिर भी इतना स्पष्ट है कि सेरी राम मे, जो वाल्मीकि से भिन्न बहुसख्यक प्रसग मिलते है, उनका आधार प्राय. भारतीय ही है। जैनी (अनु० ४४६, ५८५, ६०५, ६३२, ६५५ और ७२३) तथा बगाली (अनु० ३४३, ३८८, ५५२, ५७६, ५६८, ६१३, ६१४ और ७२३) रामकथाओ का प्रभाव निर्विवाद है। उडिया राम-साहित्य, रगनाथ रामायण तथा कम्ब रामायण अर्थात् भारत के पूर्वी तट की रचनाओ का प्रभाव भी सेरी राम पर पडा है (दे० अनु० ४५४, ४७४, ५१२, ५१४, ५१६, ५५२, ५७८, ५८३, ५८५, ५६१ और ६७५)। सेरी राम के अनेक प्रसग आनन्द रामायण (अनु० ३५०, ४२८, ५१७, ५३६ और ५५२), कथासरित्सागर (अनु० ७४५, ७५६), मैरावणचरित (अनु० ६१४) अथवा तोरवे रामायण (अनु० ५१३) मे विद्यमान हैं। सेरी राम पर रामायण ककविन (अनु० ४६६, ५७४, और ५८३) तथा मुसलमानी धर्म (अनु० ३३६ और ६४६) का जो प्रभाव पडा है, वह एक प्रकार से अनिवार्य ही था।

पतानी रामकथा

३२१ पातानी रामकथा[1] मे सेरी राम के अनेक पात्रो का महासिकु नामक तपस्वी मे एकीकरण हुआ है। प्रारंभ मे उनकी पत्नी की चार सन्तानो का वर्णन है · एक पुत्री, वालि, सुग्रीव और विलो। दूसरे भाग मे महासिकु की दत्तक पुत्री मदुदकी की कथा मिलती हैं। मदुदकी रावण से विवाह करती है और उसके गर्भ से सीता का जन्म होता है। सीता के त्यक्त किये जाने पर महासिकु उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण करते हैं। उनका एक और मेरावी नामक (राम) दत्तक पुत्र है, जिसको महासिकु सीता पर अनुरक्त होने के कारण घर से निकालते है।

अनन्तर सीता के स्वयवर का वर्णन दिया गया है, जिसमे रावण भी आया था। शेष कथानक सेरी राम के अनुसार है। लेकिन इसमे केवल रावण-वध तक की कथा मिलती है।

जावा का सेरत कांड

३२२ सेरतकांड की रामकथा सेरी राम से वहुत भिन्न नही है। इसमे विशेषता यह है कि इसकी विस्तृत भूमिका मे नवी आदम की कथा के वाद जावा के प्राचीन राजाओ की वशावली के वर्णन के अन्तर्गत देवताओ की अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती हैं।

---

१. रायल वतेवियन सोसाइटी का जयन्ती ग्रन्थ। वतेविया (१६२६), पृ० ४२३।

अनन्तर रावण-चरित का वर्णन किया गया है, जिसमे वाल्मीकीय उत्तरकाड का प्रभाव स्पष्ट है। क्रमानुसार निम्नलिखित विषय पाए जाते है : राक्षस-वशावली के बाद रावण का जन्म, निर्वासन (सेरी राम के अनुसार), तप, वरप्राप्ति (सेरी राम के अनुसार) तथा वैश्रवण पर विजय। अपने पिता की पराजय के फलस्वरूप विलमनरज (विमान), वैश्रवण का पुत्र, रावण का वाहन बन जाता है।

इसके बाद रावण द्वारा विष्णु पर विजय तथा विष्णु के अनेक अवतारो से (परविजय, कार्तवीर्य आदि) युद्ध का वर्णन किया गया है। रामावतार का वर्णन इस प्रकार है। विष्णु, वासुकी तथा श्री अवतार लेने के उद्देश्य से पृथ्वी की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग मे रावण उनसे युद्ध करता है, विष्णु तथा वासुकी भागकर दशरथ के पुत्रो के रूप मे प्रकट होते है। रावण से डरकर श्री अपने को एक अडे मे बदल देती है। रावण इसे खाता है और फलस्वरूप श्री मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लेती है।

शेष कथानक बहुत कुछ सेरी राम की कथा से मिलता-जुलता है। सीतात्याग (रावण-चित्र के कारण) के पश्चात् सीता के केवल एक पुत्र बुतलव का उल्लेख है, जो लक्ष्मण आदि से युद्ध करता है। अनन्तर राम-सीता का सम्मिलन होता है। लव को राज्यभार सौंपकर राम (सीता, लक्ष्मण आदि के साथ) तपस्या करने जाते है। अत मे एक अनल नामक वानर अपने को अग्नि मे बदल देता है और इसमे प्रवेश कर राम, सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अगद आदि सब भस्मीभूत हो जाते हैं। हनुमान् को आहत रावण पर पहरा देने का कार्य दिया गया था। अत वह दूसरो के साथ अग्नि मे प्रवेश नही करते।

ग—हिन्दचीन, श्याम, ब्रह्मदेश

हिन्दचीन

३२३. इतिहासज्ञो का अनुमान है कि पहली शताब्दी ई० से लेकर भारतीय व्यापारी अपने यहाँ की सस्कृति का प्रचार हिंदचीन मे करने लगे थे। फलस्वरूप पूर्व हिन्दचीन मे चम्पा राज्य की स्थापना हुई थी, जिसके सातवी शताब्दी के शिलालेखो से पता चलता है कि **वाल्मीकि रामायण** का वहाँ पर्याप्त प्रचार हुआ होगा। राजा प्रकाश धर्म (सातवी श० ई० उत्तरार्ध) के समय के एक वाल्मीकि-मदिर मे वाल्मीकि की एक मूर्ति मिली है। इस मदिर के एक शिलालेख मे श्लोकोत्पत्ति तथा वाल्मीकि के विष्णु-अवतार होने का उल्लेख किया गया है[1] :

---

१. दे० बुलेटिन एकोल फासेस एक्सट्रेम ओरियन, भाग २८, पृ० १४७। जर्नल ओरियेन्टल रिसर्च, भाग ६, पृ० ११७।

यस्य शोकात् समुत्पन्नं श्लोकं ब्रह्माभिपूज (ति)
विष्णोः पुंसः पुराणस्य मानुषस्यात्मरूपिणः ॥

उस समय का कोई साहित्य सुरक्षित नही है। अनाम मे अठारहवी शताब्दी की एक सक्षिप्त रामकथा का प्रचार था, जिसका कथानक वाल्मीकि रामायण से बहुत भिन्न नही है। अन्तर यह है कि दशानन का राज्य अनाम के दक्षिण भाग मे तथा दशरथ का राज्य अनाम के उत्तरीय भाग मे माना जाता है और रावण सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण कर सीता को हर लेता है।[1]

प्रथम श० ई० मे भारतीयो ने दक्षिण कम्बोदिया मे ख्मेर जाति के बीच मे फूनान राज्य स्थापित किया था। छठी श० ई० मे एक अधीनस्थ राजा ने फूनान के विरुद्ध विद्रोह कर उत्तर मे कम्बुज नामक राज्य स्थापित किया, जो १४वी श० ई० तक फलता-फूलता रहा।[2] चीनी इतिहास मे उस राज्य का नाम चेन-ला रखा गया है। वहाँ सैकडो मदिरो के खण्डहर मिलते है, जिनका काल नवी और तेरहवी शताब्दी के बीच का माना जाता है। प्राचीन राजधानी अगकोरवाट के एक विशाल मन्दिर मे रामायण, महाभारत तथा हरिवश की कथाओ को लेकर बहुत से शिला-चित्र अकित किए गए है, जिन पर जावा की कला का प्रभाव स्पष्ट है। इस मदिर का समय ११वी-१२वी श० ई० है।

३२४ ख्मेर साहित्य की सबसे कलात्मक रचना रामकेर्ति[3] है, जिसका रचयिता तथा रचनाकाल अज्ञात है। प्राचीनतम हस्तलिपियाँ १७वीं शताब्दी की हैं किन्तु वे अपूर्ण है। कथानक विश्वामित्र-यज्ञ के वर्णन से प्रारम्भ होकर इन्द्रजित्-वध पर रुक जाता है (सर्ग १-१०)। इसके बाद सीता-त्याग से लेकर लव-कुश-युद्ध तक का वर्णन ६ सर्गों मे किया गया है (दे० सर्ग ७५-८०) किन्तु रामकियेन (श्याम के रामायण) से तुलना करने पर अनुमान किया जा सकता है कि सर्ग ८० रामकेर्त्ति का अन्तिम सर्ग नही है।

रामकेर्त्ति के फ्रेच अनुवाद[4] से इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती है

(१) लेखक कोई धार्मिक बौद्ध है, जो राम को नारायण का अवतार मानते

---

१ दे० बुलेटिन एकोल फ्रासेम एक्सट्रेम ओरियन, भाग ५, पृ० १३८।

२ दे० ए० फुशे सर आशुतोष मुकर्जी वाल्युम, भाग ३, पृ० १ आदि।

३ इसका उच्चारण रेआमकेर अथवा रियामके होता है।

४ मैं अनुवादक श्री एफ्० मारटिनी का आभारी हूँ, जिन्होने मुझे अपनी अप्रकाशित पाण्डुलिपि निरीक्षणार्थ दी है।

हुए भी, उनको वोधिसत्त्व की भी उपाधि देता है तथा कई स्थलो पर बौद्ध शब्दावली का प्रयोग करता है।

(२) यद्यपि **रामकेर्त्ति** पर **सेरी राम** की गहरी छाप है, फिर भी लेखक ने **वाल्मीकि रामायण** तथा **सेरी राम** की कथाओ का समन्वय करने का प्रयत्न किया है, फलस्वरूप **सेरी राम** की अपेक्षा **रामकेर्त्ति वाल्मीकीय रामायण** के अधिक निकट है। **सेरी राम** मे दशरथ की केवल दो रानियो का उल्लेख है। **रामकेर्त्ति** मे तीनो के नाम वाल्मीकि के अनुसार ही दिये गये है। **रामकेर्त्ति** मे रावण की सीता-स्वयवर मे उपस्थिति की ओर सकेत नही मिलता, सेरी राम के अनुसार रावण भी इसमे आया था। **सेरी राम** मे राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते है, जबकि **राम-केर्त्ति** मे कैकसी (कैकेयी) के अनुरोध से राम को निर्वासित किया जाता है। **सेरी राम** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र के वध का वृत्तान्त मिलता है, जिसका उल्लेख **रामकेर्त्ति** मे नही है। **ख्मेर रचना** मे सीता जनक की दत्तक पुत्री मानी जाती है तथा राम द्वारा परित्यक्त होने पर वाल्मीकि के आश्रम मे निवास करती है। **सेरीराम** मे सीता महारेसि कली की दत्तक पुत्री है तथा त्याग के वाद उनके यहाँ रहती है। **सेरी राम** मे हनुमान राम के पुत्र माने जाते है किन्तु **रामकेर्त्ति** के अनुसार वह वायु और अजना की सन्तान है।

(३) निम्नलिखित सामग्री का मिलता-जुलता रूप **मलयन सेरी राम** मे भी मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि **ख्मेर रामायण** तथा **सेरी राम** का गहरा सम्बन्ध है।

—एक असुर, काक का रूप धारण कर विश्वामित्र-यज्ञ भङ्ग करने का प्रयत्न करता है और विश्वामित्र उसे मारने के लिए राम तथा लक्ष्मण को धनुष-वाण देते है (दे० अनु० ३८६)।

—जटायु-रावण-युद्ध मे सीता की अँगूठी का उल्लेख (दे० अनु० ४७१)।

—लक्ष्मण द्वारा १४ वर्ष तक नीद तथा भोजन का त्याग (दे० अनु० ४६१)।

—लक्ष्मण-हनुमान का युद्ध (दे० अनु० ५१२)।

—सुग्रीव को अपने सामर्थ्य का विश्वास दिलाने के लिए राम सात तालो का एक ही वाण से भेदन करते है। ये सात ताल महाराज नाग की पीठ पर स्थित है (दे० अनु० ५१६)।

—सम्बूरानू का वृत्तान्त, जिसे हनुमान् राम के पास ले आते हैं। (दे० अनु० ५२४)।

—सेतु बाँधने के समय मछलियों का उत्पात। (दे० अनु० ५७८)।

—रावण के चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु० ७२४)। वाल्मीकि द्वारा सीता के एक पुत्र की सृष्टि (दे० अनु० ७४४)। राम-सेना से सीता के पुत्रों का युद्ध (अनु० ७५०)।

(४) कथा का निर्वहण मौलिक है (दे० अनु० ७५७)।

श्याम

३२५. श्याम देश में रामकथा राम कियेन (अर्थात् रामकीर्त्ति) के नाम से विख्यात है। अपेक्षाकृत प्राचीनकाल से वहाँ के नाटकों में रामकथा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रारम्भिक नाटकों के दो वर्गों (खोन, जिसमें अभिनेता चेहरा लगा लेते हैं और रवम) का एक मात्र विषय रामकथा ही था और एक तीसरा वर्ग (नाग अर्थात् छाया-नाटक) प्रधानतया रामकथा के दृश्य प्रस्तुत करता था।[1] १८वीं शताब्दी में नाटकों के एक नवीन रूप का प्रचलन हुआ (वेयुक रोग), जिसकी कथावस्तु रामकियेन पर आधारित थी। १८वीं तथा १९वीं शताब्दी के रामकथा विषयक नाट्य-साहित्य की कुछ सामग्री सुरक्षित है।

राम कियेन की प्राचीन हस्तलिपियाँ १७वीं शताब्दी की हैं। इस रामायण के दो भिन्न संस्करण १८वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में निकाले गये हैं तथा इसका एक तीसरा संस्करण नाटक के रूप में १९वीं श० पूर्वार्द्ध में प्रकाशित हुआ था। बाङ्कोक के बिड़ला ओरियेंटल सीरीज़ में रामकियेन का अंग्रेजी संक्षेप रामकीर्त्ति के नाम से प्रकाशित किया गया है। अगले अनुच्छेद में जो रामकियेन के कथानक का विश्लेषण किया गया है, वह उस रामकीर्त्ति के दूसरे संस्करण (सन् १९४१) पर निर्भर है।

१७वीं शताब्दी की अनेक छोटी रचनाओं का उल्लेख मिलता है, जिनकी कथा-वस्तु रामायण की किसी घटना से सम्बन्ध रखती है, उदाहरणार्थ : वालि का सुग्रीव को उपदेश देना कि किस प्रकार राम के दरबार में व्यवहार करना चाहिए तथा दशरथ का राम को राजनीति तथा धर्म के विषय में शिक्षा देना।

१८वीं तथा १९वीं शताब्दी में कई कवियों ने रामकियेन नामक महाकाव्यों की रचना की है, उदाहरणार्थ थोनबुरी, फुत्तायोत्फा (इनका रामकियेन सर्वाधिक विस्तृत है) तथा फुत्तालेत्ला।

---

१. दे० पी० श्वाइसगुठ, एटुड सुर ला लिटेराटुर सियामॉइस (पैरिस, १९५१), पृ० ६०-६१।

३२६. रामकियेन का सक्षिप्त अग्रेजी रूपान्तर ४५ अध्यायो मे विभक्त किया गया है।[1] प्रथम अध्याय मे अयोध्या के राजवश का परिचय मिलता है तथा द्वितीय अध्याय मे राम तथा उनके भाइयो के जन्म का वर्णन दिया गया है। अनन्तर लका का निर्माण, रावण के कृत्य तथा रामकथा के अनेक पात्रो की जन्मकथा मिलती है, अर्थात् वालि-सुग्रीव, हनुमान्, अगद और सीता (अध्याय ३-११)। इसके वाद विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर सीता-त्याग के पश्चात् राम-सीता-सम्मिलन की समस्त कथा प्रस्तुत की गई है (अध्याय १२-४५)। **रामकियेन** के कथानक की निम्नलिखित विशेपताएँ उल्लेखनीय हैं:

(१) रामकियेन के पात्र सवके सव स्याम देश के निवासी है तथा रामायण का घटना-स्थल स्याम मे ही माना गया है।

(२) इसका मुख्य आधार ख्मेर भाषा का रामकेर्ति है। दोनो मे कथा का निर्वहण सदृश है (दे० ७५७)। रामकेर्त्ति की भाँति रामकियेन भी सेरी राम की अपेक्षा वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है। रामकेर्त्ति तथा वाल्मीकि रामायण की तुलना करते हुए रामकेर्त्ति की जितनी विशेषताओ का उल्लेख हुआ है (दे० ऊपर अनु० ३२४), वे प्राय. सव रामकियेन मे भी विद्यमान है। अन्तर यह है कि रामकियेन मे हनुमान् को अजना तथा शिव का पुत्र माना गया है तथा लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध वर्णित है। रामकियेन का एक अन्य प्रसग, राम-सीता का पूर्वानुराग, न वाल्मीकि रामायण मे मिलता है और न रामकेर्त्ति मे किंतु कुछ वातो मे रामकियेन रामकेर्त्ति की अपेक्षा वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है—अयोमुखी का वृत्तान्त रामकेर्त्ति मे नही है किन्तु वह रामकियेन मे विद्यमान है। रामकियेन के अनुसार सीता-स्वयवर का धनुष ईश्वर (शिव) का है, जवकि रामकेर्त्ति मे जनक स्वय उस इद्रजाल से वनाते हैं। रामकियेन मे वाल्मीकीय कथा के अनुसार अगस्त्य राम का दिव्य अस्त्र प्रदान करते है किन्तु इसका उल्लेख रामकेर्त्ति मे नही हुआ है। उपर्युक्त विश्लेषण का निष्कर्ष यह है कि रामकेर्त्ति के अतिरिक्त रामकियेन पर वाल्मीकि रामायण का भी सीधा प्रभाव पडा है।

(३) रामकेर्त्ति की भाँति रामकियेन भी बहुत से अर्वाचीन वृत्तान्तो के लिए मलयन सेरी राम पर निर्भर है। वाल्मीकि से भिन्न, जो सामग्री सामान्य

---

१ विस्तृत विवरण के लिए, दे० जर्नल ऑव दि असम रिसर्च सोसाइटी, भाग १५ (१९६३ मे प्रकाशित)

रूप से रामकेर्त्ति तथा सेरी राम मे मिलती है (दे० ऊपर अनु० ३२४, ३), वह प्राय. सब रामकियेन मे भी पाई जाती है। अन्तर यह है कि रामकियेन मे सुग्रीव से मैत्री करने के पूर्व राम की किसी परीक्षा का उल्लेख नही है और लक्ष्मण के सयम का भी निर्देश नही मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि रामकियेन पर सेरी राम का सीधा प्रभाव भी पडा है, क्योकि निम्नलिखित सामग्री रामकेर्त्ति मे नही है किन्तु वह रामकियेन तथा सेरी राम दोनो मे विद्यमान है[1]

—महिरावण का राम को पाताल ले जाना (दे० अनु० ६१४)।

—भस्मलोचन की कथा से मिलता-जुलता वृत्तान्त (दे० अनु० ६१३)।

—वालि-सुग्रीव-अजना का अहल्या की सन्तान के रूप मे उल्लेख (दे० अनु० ५१४)।

—अगद की जन्मकथा, जिसके अनुसार वह वालि तथा मन्दोदरी का पुत्र है (अनु० ६५५)।

—सीता का लका मे जन्म (अनु० ४१५-४१६)।

—हनुमान तथा नल का कलह (अनु० ५७६)।

(४) रामकेर्त्ति, वाल्मीकि रामायण तथा सेरी राम के अतिरिक्त रामकियेन का कोई और आधार ग्रन्थ रहा होगा कि नही इस प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर तभी सभव होगा, जब रामकेर्त्ति की कोई पूरी हस्तलिपि मिल जायेगी। रामकियेन मे विभीषण-मन्दोदरी के विवाह का उल्लेख मिलता है, यह प्रसग सेरी राम अथवा रामकेर्त्ति मे नही आया है किन्तु वह अनेक भारतीय राम-कथाओ मे उल्लिखित है। निम्नलिखित सामग्री श्याम देश को छोडकर अब तक और कही नही मिली है :

—सेतुबन्ध के पूर्व रावण का तपस्वी के रूप मे राम के पास पहुँचना और युद्ध छोड देने के लिए उनसे अनुरोध करना (अध्याय २५)।

—रावण के इस निष्फल प्रयत्न के अनन्तर बेजकाया (विभीषण की पुत्री) का सीता का रूप धारण कर मृतवत् राम के शिविर के पास की नदी के ऊपर बह जाना (अध्याय २५)।

—रावण का ब्रह्मा को बुला भेजना, लका मे ब्रह्मा का आगमन, रावण द्वारा राम पर अभियोग। ब्रह्मा का राम को बुलाना और बाद

---

१. रामकेर्त्ति की अपूर्ण हस्तलिपियो के कारण इस समस्या का अन्तिम निर्णय नही हो पाता है।

से सीता को भी। अन्त मे ब्रह्मा का सीता को लौटाने की आज्ञा देना तथा रावण के अस्वीकार करने पर ब्रह्मा का रावण को शाप देना (अध्याय ३२)।

—रावण-वध तथा राम के अयोध्या मे प्रत्यागमन के बाद रावण के एक पुत्र का विभीषण के विरुद्ध विद्रोह करना। भरत तथा शत्रुघ्न का राम-सेना के साथ लका की ओर प्रस्थान करना और रावण के पुत्र को पराजित कर विभीषण को पुन: राज्य दिलाना। इस युद्ध का विस्तृत वर्णन प्रथम युद्ध की पुनरावृत्ति मात्र है। यह प्रसंग रामकीर्त्ति मे तो तो नही मिलता किन्तु सर्ग ७६ मे इसकी ओर सकेत किया गया है। इसका आधार भारतीय है (दे० अनु० ६४१)।

—समस्त युद्ध की इस पुनरावृत्ति के अतिरिक्त और बहुत से वृत्तात दुहराये गये है। इन्द्रजित् के यज्ञ-भग के अतिरिक्त रामकियेन मे ऐसा वर्णन कुम्भकर्ण (अध्याय २८), रावण (अध्याय ३१) तथा मन्दोदरी (अध्याय ३४) के विषय मे भी मिलता है।

(५) रामकियेन की एक अन्तिम विशेषता यह है कि इसमे हनुमान् की बहुत सी प्रेमलीलाओ का वर्णन किया गया है। स्वयप्रभा (अध्याय २३), बेंजकाया (अध्याय २५), नागकन्या सुवर्णमच्छा (अध्याय २६), अप्सरा वानरी (अध्याय ३१) के अतिरिक्त वह मन्दोदरी के साथ भी क्रीडा करते हैं। मन्दोदरी के संजीवन-यज्ञ को भग करने के लिए वह दशकठ के रूप मे मन्दोदरी के पास पहुँचकर उसका आलिंगन करते है (अध्याय ३४)। एक अन्य अवसर पर वह रावण के पास पहुँच कर राम की भर्त्सना करते हैं तथा रावण की ओर से युद्ध करने का प्रस्ताव करते है। वास्तव मे वह एक दिन तक ऐसा करते हैं और पुरस्कारस्वरूप इन्द्रजित् की समस्त सम्पत्ति के अतिरिक्त मन्दोदरी को भी रावण से प्राप्त कर रात भर उसके साथ क्रीडा करते है (अध्याय ३५)।

३२७. स्याम के उत्तरपूर्वीय प्रातो मे लाओ भाषा बोली जाती है। लाओ साहित्य के पचतत्र मे दशरथ द्वारा अन्धमुनि-पुत्र-वध तथा राम के पास विभीषण की शरणागति का उल्लेख मिलता है।[1] इसके अतिरिक्त सोलहवी शताब्दी मे राम जातक की रचना लाओ भाषा मे की गई है।[2] रामकियेन की भाँति इस जातक मे समस्त

१. दे० बुलेटिन एकोल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन, भाग १७, पृ० १०१।

२ दे० दि राम-जातक : जर्नल स्याम सोसाइटी, भाग ३६, पृ० १।

कथा का घटनास्थल स्याम देश मे ही माना गया है। पूर्वार्द्ध मे रावण तथा राम की जन्मकथा दी गई है, जिसके अनुसार राम तथा रावण चचेरे भाई हैं। राम के केवल एक ही भाई लक्ष्मण तथा एक वहन शान्ता का उल्लेख है। रावण शान्ता का अपहरण करता है तथा राम-लक्ष्मण द्वारा पराजित किया जाता है (दे० अनु० ३३६)।

उत्तरार्द्ध मे वाल्मीकीय रामायण का समस्त कथानक रामकियेन से मिलते-जुलते रूप मे प्रस्तुत किया गया है। सीता को इन्द्राणी का अवतार माना गया है (दे० अनु० ३६५) किन्तु इनकी शेष जन्मकथा रामकियेन के वृत्तान्त के सदृश है। रावण सीता-स्वयवर मे उपस्थित है। सीता की खोज के समय के दो वृत्तान्त अपेक्षाकृत विस्तार-पूर्वक वर्णित हैं .

(१) राम का वानर रूप धारण कर अजना से हनुमान् को उत्पन्न करना। यह कथा सेरी राम के वृत्तान्त पर आधारित है (दे० अनु० ६७५)।

(२) राम का वालि की विधवा से विवाह करना तथा अगद का पिता वनना। यह कथा और कही नही मिलती।

हनुमान् और अगद दोनो मिलकर सीता की खोज मे लंका जाते हैं और वहाँ उत्पात भी मचाते हैं। विभीषण रावण की विधवा (शान्ता) से विवाह करते हैं (दे० अनु० ५७२) वेजकाया के स्थान पर केले का एक वृक्ष सँवार कर और उसे सीता का रूप देकर राम के शिविर के पास की नदी मे वहाया जाता है (दे० अनु० ५७६)।

कथानक की अन्य विशेषताएँ रामकियेन मे भी मिलती हैं—नागकन्याओ का सेतु नष्ट करने का प्रयास (दे० अनु० ५७८); महिरावण की कथा (दे० अनु० ६१४), रावण-चित्र के कारण सीता-त्याग (दे० अनु ७२४); वाल्मीकि द्वारा एक शिशु की सृष्टि, जिसका सीता पुत्रवत् पालन करती हैं (दे० अनु० ७४४), लव-कुश-युद्ध (अनु० ७५०) तथा कथानक का सुखान्त निर्वहण (दे० अनु० ७५६)।

अन्त मे जातक शैली के अनुसार राम-बुद्ध, रावण-देवदत्त, दशरथ-शुद्धोदन, लक्ष्मण-आनन्द, सीता-उप्पलवण्णा (भिक्षुणी) आदि रामकथा तथा वौद्ध इतिहास के पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है।

रामजातक का एक अन्य रूप पालक-पालाम के नाम से विख्यात है।[1] राम-

---

१. दे० पी० वी० लाफो, पालक-पालाम, एकोल फ्रासेस एक्सट्रेम ओरियन (१९५७)। एच० देदिए, दि रामायण इन लाओस, ज० ऑ० रि०, भाग २२, पृ० ६४-६६ और लेस ऑरिजिन ए ला नेसाँस द रावण, वी० ई० एफ० ई० ओ०, भाग ४४, १४१ आदि।

जातक के कथानक से इतना अन्तर है कि ब्रह्मा को रावण मे (दे० अनु० ६४७ तथा बोधिसत्व को राम और लक्ष्मण मे अवतारित माना गया है (दे० अनु० ३६२)।

३ ८. सन् १९५३ ई० के पहले एच० देदिये ने लाओस मे तीन और रामकथा-विषयक रचनाओ का पता लगाया था—बुआलाफी (दुदुभि), लंकानीय (इसमे सीता को रावण की पुत्री माना जाता है) तथा पोम्मचका (ब्रह्मचक्र)।[1] इनकी अकाल मृत्यु के कारण इन रचनाओ का प्रकाशन नही हो पाया है, किन्तु एक अन्य विद्वान् ने ब्रह्मचक्र की एक हस्तलिपि प्राप्त की है तथा इसके कथानक का सार सन् १९५७ ई० मे प्रकाशित किया है।[2] यह रामकथा जातक के रूप मे है इसमे ब्रह्मचक्र अर्थात् रावण (अनु० ६४७), राम (दे० अनु० ३६२) तथा सीता (दे० अनु० ४२५) की जन्म-कथाओ का वर्णन मिलता है। इसके बाद सीता-स्वयवर का वृत्तान्त दिया गया है, जिसके अनुसार अन्य राजाओ की उपस्थिति मे राम धनुष चढाते हैं। हनुमान की जन्म-कथा (अनु० ६६८) तथा सीता-हरण का वृत्तान्त (दे० अनु० ४६३) दोनो मौलिक हैं। राम का वनवास, वालि-वध, हनुमान् की लका-यात्रा लका-दहन, सेतु-बन्ध, विभीषण की शरणागति, अगद का दूतकार्य, महिरावण की कथा, यह सब सामग्री अन्य रामकथाओ के समान ही है। सीता की अग्नि-परीक्षा (दे० अनु० ६०२) तथा सीता-त्याग (दे० अनु० ७२४) मे कुछ नये तत्व पाये जाते हैं। लव के जन्म के बाद वाल्मीकि एक दूसरे शिशु कुश की सृष्टि करते हैः लव और कुश बाद मे राम और लक्ष्मण से युद्ध करते है। रामकियेन तथा रामजातक की भाँति रामकथा को सुखान्त बना दिया गया है (दे० अनु० ७५६)। अन्त मे राम-बुद्ध, दशरथ-शुद्धोदन, लक्ष्मण-आनन्द आदि की अभिन्नता का उल्लेख है।

बर्मा

३२९. बर्मा का रामकथा-साहित्य बहुत अर्वाचीन है।[3] बर्मा के एक राजा ने १७६७ ई० मे श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर दिया था। इस विजय के बाद राजा ने बहुत से बन्दियो को अपने साथ ले लिया था, जो बर्मा मे श्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। श्याम की रामकथा के आधार पर यू तो ने १८०० ई० के लगभग राम-यागन की रचना की थी, जो बर्मा का सबसे महत्वपूर्ण काव्य

१. प्रस्तुत लेखक के नाम २२ जून, १९५३ का पत्र।
२. दे० पी० बी० लाफो, पोम्मचक, ई० एफ० ई० ओ०, १९५७।
३. दे० जी० पी० कानोर : दि रामायण इन बर्मा, जर्नल बर्मा, रिसर्च सोसाइटी, भाग १५, पृ० ८०।
के० बी० आयर : याम-प्वे, त्रिवेणी, भाग १४, पृ० २३९ आदि।

माना जाता है। आजकल राम-नाटक, जिसे वहाँ की भाषा मे यामप्वे कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। इसकी एक विशेषता यह है कि अभिनेता बहुमूल्य चेहरे पहनते हैं और अभिनय के दिन इन चेहरो की पूजा भी करते हैं। श्याम के रामकियेन पर निर्भर होते हुए भी कथानक म कही-कही मौलिकता पाई जाती है। सीता-हरण वहाँ के अभिनय का एक बहुत लोकप्रिय विषय है। इसमे शूर्पणखा (जिनका नाम गाम्वी रक्खा गया है) मृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाती है और राम से आहत किये जाने पर अपने राक्षसी रूप से प्रकट होती है। राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण द्वारा कुटी के चारो ओर तीन रेखाएँ खीचने का भी उल्लेख है, जो भारत तथा हिंदेशिया आदि मे भी मिलता है।

घ—पाश्चात्य वृत्तान्त

३३०. पन्द्रहवी शताब्दी से लेकर पाश्चात्य यात्रियो तथा मिशनरियो की भारत-सम्बन्धी रचनाओ मे रामकथा के विषय में बहुत कुछ सामग्री मिलती है। अर्वाचीनता तथा लेखको की अपेक्षाकृत कम जानकारी के कारण यह साहित्य महत्त्वपूर्ण नही है, फिर भी उसकी उपेक्षा नही की जा सकती है। अतः उसका यहाँ बहुत सक्षेप मे किंचित् निरूपण किया जाता है। चतुर्थ भाग मे रामकथा के भिन्न-भिन्न प्रसगो के तुलनात्मक अध्ययन मे इन वृत्तान्तो का भी निम्नलिखित सख्याओ के अनुसार उल्लेख किया जायगा :

(१) जे० फेनिचियो (१६०९ ई०)

एक जेसुइट मिशनरी जे० फेनिचियो ने १६०९ मे लिव्रो डा सैटा की रचना की थी, जिसमे दशावतार-निरूपण के अन्तर्गत दक्षिण की उस समय की एक रामकथा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।[१] दशरथ के यज्ञ से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा के प्रारम्भ तक का वृत्तान्त इसमे मिलता है। इसके बाद हस्तलिपि के कई पन्ने खो जाने के कारण रामकथा का पूरा वर्णन नही हो पाया है। अधिकाश कथानक वाल्मीकि के अनुसार है, फिर भी इसमे अनेक स्थलो पर वाल्मीकीय कथा से विभिन्नता पाई जाती है। इसकी एक विशेषता यह है कि रावणचरित का वर्णन अरण्यकाड की कथा के अतर्गत किया गया है। अग्निजा सीता और हनुमान् की जन्म-कथाएँ तथा राम के स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करने का वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है।

(२) ए० रोजेरियुस (१७वी श० ई०)

ए० रोजेरियुस डच ईस्ट कम्पनी के पादडी की हैसियत से पुलिकत मे ग्यारह वर्ष तक रहे (१६३१-४१)। उनकी रचना दि ओपन दोरे का प्रकाशन १६५१ मे हुआ

१. दे० लिव्रो डा सैटा (उप्साला १९३३), पृ० ६९-१३३।

था। अवतारवर्णन के अन्तर्गत रावणचरित से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक राम-कथा का वर्णन वाल्मीकि के अनुसार किया गया है।

(३) पी० बलडेयुस (१७वी श० ई०)

बलडेयुस १६५८ ई० से लेकर छः वर्ष तक सिंहलद्वीप तथा दक्षिण भारत मे रहे। उनकी डच भाषा की रचना **आफगोडेरैय डर ओस्ट इण्डिशे हाइडेनन**[1], जो अधिकाश उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है, १६७२ मे प्रकाशित हुआ था। रावण-चरित से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की कथा इसमे पाई जाती है। अग्नि-परीक्षा के अतिरिक्त सीता की और अनेक परीक्षाओ का उल्लेख इस रचना की एक विशेषता है।

(४) ओ० डैप्पर (१७वी श० ई०)

डॉ० ओ० डैप्पर की **असिया** नामक रचना वृत्तान्त न० २ और ३ पर निर्भर है। इसका प्रकाशन हॉलैंड मे १७वी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे हुआ था।

(५) डे फ़रिया (१७वी श० ई०)

डे फरिया की स्पैनिश रचना **असिया पोर्तुगेसा** का प्रकाशन १६७४ मे हुआ है। इसमे जो रामकथा मिलती है, वह उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है।[2] इसमे रावण के चित्र के कारण सीता के परित्यक्त किये जाने का वर्णन किया गया है।

(६) रलासियों डेस एरयर (१६४४ ई०)

फ्रेंच भाषा की यह रचना सभवत. डे नोबिलि के नोट्स के आधार पर लिखी गई है।[3] इसकी रामकथा (पृ० १२-७) बहुत सक्षिप्त है। इसमे धोबी के वृत्तान्त के कारण सीता-त्याग का उल्लेख किया गया है।

(७) ला जानिटिलिटे डु बेंगाल (१६६८ ई०)

फ्रेंच भाषा की इस रचना की रामकथा एक पुर्त्तगाली वृत्तान्त (दे० न० ८) से बहुत भिन्न नही है। इसका रचयिता अज्ञात है।

(८) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, क. (१६७० ई०)

डॉ० कालेड ने तीन पुर्त्तगाली रचनाओ का प्रकाशन करके साथ-साथ इनका डच मे अनुवाद भी किया है।[4] डॉ० कालेड के अनुसार वृत्तान्त क० सम्भवत: १६७० ई० का है। इसकी रामकथा मे (पृ० १०-१६) उत्तरकाण्ड की सामग्री का भी वर्णन किया गया है।

---

१. दे० नया प्रकाशन; (दि हेग, १९१७), अध्याय ४।

२. दे० भाग २, पृ० ६६६ आदि।

३ इसका प्रकाशन वृत्तान्त न० ७ के साथ-साथ डब्लू० कालेड द्वारा १९२३ मे हुआ है।

४. दे० ड्री औडे पार्तगेशे वरहैडलिंगन, एमस्टरडम, १९१५।

(६) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ख (१७७४ ई०)

इस रचना की रामकथा (पृ० ५६-६४) की विशेषता यह है कि सीता अग्नि से उत्पन्न होती हैं। (दे० आगे अनु० ३२४)।

(१०) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ग. (१७२३ के पूर्व)

इस रचना की रामकथा फ्रेंच वृत्तान्त नं० ६ पर निर्भर है।

(११) जे० बी० टावर्नियें (१७वी श० ई०)

जे० वी० टावर्नियें ने अपनी भारत की यात्रा का वर्णन १६७६ ई० मे फ्रेंच भाषा मे प्रकाशित किया था[1], जिसके अन्तर्गत एक सक्षिप्त रामकथा मिलती है।

(१२) एम० सोनेरा (१८वी श० ई०)

एम० सोनेरा ने अपनी रचना वोयाज् ओस इण्ड ओरियन्टाल १७८२ मे पैरिस मे प्रकाशित की थी। इसमे एक अत्यन्त सक्षिप्त रामकथा मिलती है (पृ० १८३), जिसकी विशेषता यह है कि राम १५ वर्ष की अवस्था मे अयोध्या छोडकर सीता तथा लक्ष्मण के साथ चित्रकूट मे तपस्या करने जाते हैं।

(१३) डे पोलिये (१८वी श० ई०)

डे पोलिये की रचना मियोलोजी डेस इण्डू १८०९ ई० मे पैरिस मे प्रकाशित हुई थी। इसमे एक विस्तृत राम-चरित (भाग १, पृ० २९०-३६४) मिलता है, जिसे डे पोलिये ने लखनऊ मे १८वी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे विलियम जोन्स के भूतपूर्व पण्डित से सुना था। इस राम-चरित मे बहुत सी कथाएँ पाई जाती हैं, जो वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है, लेकिन जो प्राय- अन्य अर्वाचीन वृत्तान्तो मे भी मिलती हैं, उदाहरणार्थ : रक्तजा सीता की जन्म-कथा, महिरावण के राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाने की कथा आदि।

(१४) जे० ए० डुब्वा (१९वी श० ई०)

जे० ए० डुब्वा की प्रसिद्ध रचना हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एंड सेरेमोनिस मे एक सक्षिप्त रामकथा मिलती है (पृ० ६१९-२४, तीसरा संस्करण) जो वाल्मीकीय कथा से अनेक स्थलो पर भिन्न है, उदाहरणार्थ : कैकेयी राम से अनुरोध करती है कि वह अपना राज्याधिकार भरत को प्रदान करे, हनुमान् समुद्र की धारा पर चलकर लङ्का पहुँचते हैं।

अंतिम को छोडकर निम्नलिखित रचनाओ मे कोई पूर्ण रामकथा नही पाई जाती, लेकिन इनमे राम-चरित के किसी न किसी तत्त्व की ओर निर्देश किया गया है।

---

१. दे० जी० वी० टावर्नियें : ट्रावल्स इन इडिया (लन्दन १८८९), भाग २, पृ० १९१-१९५।

(१५) बोले ले गोज् (१७वी श० ई०)

बोले ले गोज की रचना मे (रैजे एन ऑपटेकनिग, एमस्टरडम १६६०) सीता-हरण तथा हनुमान् के लङ्का से सीता को राम के पास ले आने की कथा मिलती है।

(१६) पी० एफ० विनजेनजा मरिया (१७वी श० ई०)

इनकी रचना इल वियाजियो अल इन्डिये ओरियेन्टालि रोम मे १६७२ ई० में प्रकाशित हुई थी। इसमे सीता का जन्म लका मे माना गया है।

(१७) चीगेनवाल्ग (१८वी श० पूर्वार्द्ध)

इनकी रचना का अग्रेजी अनुवाद १८६६ मे मद्रास से प्रकाशित किया गया है। मूल जर्मन रचना, जो १८वी शताब्दी के प्रारम्भ मे लिखी गई थी, १८६७ ई० मे ही प्रकाश मे आ सकी।

(१८) एन्० मानुच्ची

इनकी स्टोरिया डी मोगोर (१६५३-१७०८) मे धोबी के कारण सीता-त्याग का उल्लेख किया गया है तथा राम परमेश्वरी के पुत्र माने गए है।

(१९) लेट्रस एडिफियन्ट

यह जेसुइट मिशनरियो के पात्रो का सग्रह है, जो पेरिस मे प्रकाशित किया गया है। १३वे भाग (१७१८ ई०) मे अग्निजा सीता का जन्म-वृत्तान्त (पृ० १४०) तथा शूर्पणखा-पुत्र-वध का एक नया रूप (पृ० १७२) मिलता है।

(२०) दिओगो गोसाल्वेस (सन् १६१५ ई०)।

इन्होने अपना हिस्तोरिया दो मालावार केरल मे लगभग सन् १६१५ ई० मे लिखा था। इसका सम्पादन तथा प्रकाशन सन् १९५५ ई० मे मुस्टर से हुआ है। द्वितीय भाग के नवे अध्याय मे रावण के अत्याचार तथा विष्णु के अवतार होने से प्रारम्भ होकर रावण-वध के बाद रामेश्वर-तीर्थ की स्थापना तक वाल्मीकीय कथानक का सक्षेप प्रस्तुत किया गया है। अन्तर यह है कि राम विष्णु के अवतार तथा लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न क्रमशः शेष, शख और चक्र के अवतार माने जाते है। लक्ष्मण शूर्पणखा के कान और नाक के अतिरिक्त उसके स्तन भी तलवार से काटते हैं, राम हनुमान के कानो मे कुण्डल देखते है, जिससे हनुमान राम की सेवा स्वीकार करते हैं, क्योकि उनकी माता ने उनसे कहा था : जब तुम अपना स्वामी देखोगे, तभी तुम्हारे कान मे कुण्डल दिखाई देगे। हनुमान् के कुण्डलो का प्रसग पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, **सेरी राम, रामकेर्त्ति** तथा **रामकियेन** मे भी मिलता है (दे० अनु० ५१२)।

चतुर्थ भाग

रामकथा का विकास

अध्याय १४

बालकांड

१—वाल्मीकि रामायण का बालकांड

३३१. क—बालकांड की कथावस्तु

(१) भूमिका (सर्ग १-४)

नारद का वाल्मीकि से अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक की रामकथा का कथन (सर्ग १), श्लोकोत्पत्ति, नारद से सुनी हुई रामकथा को श्लोकबद्ध करने की वाल्मीकि को ब्रह्मा की आज्ञा (सर्ग २), अनुक्रमणिका (सर्ग ३), वाल्मीकि का कुश-लव को अपना काव्य सिखाना और उनका राम के सम्मुख उसे सुनाना (सर्ग ४)।

(२) दशरथयज्ञ (सर्ग ५-१७)

अयोध्या का वर्णन, राजा, नागरिक, मत्री और पुरोहितो का वर्णन (सर्ग ५-७)।

अश्वमेधयज्ञ का सकल्प (सर्ग ८); ऋष्यशृंग की कथा (सर्ग ९-११), ऋष्यशृंग द्वारा अश्वमेध (सर्ग १२-१४)।

ऋष्यशृंग द्वारा पुत्रेष्टियज्ञ, देवताओ की विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना, पायस प्राप्त कर दशरथ का उसे अपनी पत्नियो मे बाँटना (सर्ग १५-६), देवताओ का अप्सराओ और गर्धावियो से वानरो की उत्पत्ति करना (सर्ग १७)।

(३) राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कृत्य (सर्ग १८-३१)

राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म। विश्वामित्र का आगमन (सर्ग १८) और अपने यज्ञ की रक्षा के लिए दशरथ से राम-लक्ष्मण को माँगना (सर्ग १९-२१)।

राम-लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ गमन; सरयू तट पर विश्वामित्र से बला और अतिबला की प्राप्ति (सर्ग २२), गंगा-सरयू के सगम पर विश्वामित्र द्वारा काम दहन की कथा (सर्ग २३), मलद और करूप की कथा (सर्ग २४)।

ताटका की कथा (सर्ग २५) , राम द्वारा उसका वध (सर्ग २६) , राम को दिये गये आयुधो की सूची (सर्ग २७-२८) ; सिद्धाश्रम पर वामनावतार की कथा (सर्ग २९) , मारीच का समुद्र मे निक्षेप और सुबाहु का वध (सर्ग ३०) , मिथिला के लिए प्रस्थान (सर्ग ३१) ।

(४) पौराणिक कथाएँ (सर्ग ३२-६५)

विश्वामित्र के वंश की कथा (सर्ग ३२-३४) , हिमवान् की पुत्रियाँ , गगा का स्वर्गारोहण ; उमा का शिव से विवाह , कार्तिकेय-जन्म (सर्ग ३५-३७) ।

सगर-पुत्रो का पाताल मे भस्म होना , भगीरथ द्वारा गगावतरण , जह्नु द्वारा गगा का पिया जाना और मुक्त होकर भगीरथ का अनुसरण करते हुए पाताल में सगर-पुत्रो का उद्धार करना (सर्ग ३८-४४) ।

समुद्रमंथन की कथा (सर्ग ४५-४७) ; गौतम द्वारा इन्द्र और अहल्या को दिए गए शापो की कथा , अहल्योद्धार (सर्ग ४८-४९) , जनक द्वारा विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण का स्वागत (सर्ग ५०) ।

विश्वामित्र की कथा : शतानन्द द्वारा विश्वामित्र के ब्राह्मण बनने की कथा, राजा विश्वामित्र का वसिष्ठ को परास्त न कर सकने के कारण ब्राह्मण बनने का निश्चय (सर्ग ५१-५६), उनका राजर्षि बनना, त्रिशकु की कथा (सर्ग ५७-६०) । अबरीष के यज्ञ मे शुन शेप का बलिदान , विश्वामित्र का ऋषि बनना, मेनका की सफलता एव रभा की असफलता और अत मे विश्वामित्र का ब्रह्मर्षि बनना (सर्ग ६१-६५) ।

(५) राम-विवाह (सर्ग ६६-७७)

धनुर्भंग : जनक द्वारा धनुष तथा सीता के अलौकिक जन्म की कथा, उनकी सीता-विवाह-विषयक प्रतिज्ञा । राजाओ की असफलता और उनका आक्रमण (सर्ग ६६) । राम द्वारा धनुर्भंग । दशरथ का बुलावा और मिथिला मे उनका आगमन (सर्ग ६७-६९)

विवाह : वसिष्ठ द्वारा दशरथ के वंश का परिचय, जनक का अपना वंश-वर्णन । चारो भाइयो का विवाह (सर्ग ७०-७३) ।

परशुराम : उत्तरीय पर्वतो पर विश्वामित्र का गमन । दशरथ के मार्ग में अपशकुन और परशुराम का आगमन । वैष्णव धनुष चढाकर राम द्वारा परशुराम की पराजय (सर्ग ७४-७६) , अयोध्यागमन , भरत और शत्रुघ्न का प्रस्थान ; राम की लोकप्रियता (सर्ग ७७) ।

ख—बालकांड का विश्लेषण

तीन पाठों में विभिन्नता :

३३२. प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे रामादि की जन्म-

तिथि (चैत्रे नावमिके तिथौ दे० १८, ८) तथा उसी अवसर पर राशियो के सङ्गम का उल्लेख किया गया है, जो अन्य दोनो पाठो मे नही मिलता।[1]

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पौराणिक कथाएँ केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाई जाती है—कश्यप की तपस्या, जिसके फलस्वरूप उन्होने वामनावतार मे हरि को पुत्र-स्वरूप प्राप्त किया था (२६, १०-१७), जह्नु का गगा-पान (४३, ३४-४१), विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत चुराना (४५,४०-४३), विष्णु का कूर्मावतारवर्णन (४५, २७-३२)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे शाता को दशरथ की पुत्री माना गया है (दे० आगे अनु० ३४३) तथा उनमे एक तीसरी अनुक्रमणिका पाई जाती है, जिसमे रामायण के सात काडो की कथावस्तु की ओर निर्देश किया गया है (गौ० रा० सर्ग ४, प० रा० सर्ग ३)। इसके अतिरिक्त इन दोनो पाठो मे दो सर्ग मिलते है, जिनमे भरत और शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह मे निवास का कुछ विस्तार सहित वर्णन किया गया है (दे० गौ० रा० बालकाण्ड सर्ग ७६-८० तथा प० रा० अयोध्याकाड सर्ग १-२)। दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख मात्र मिलता है।

बालकाड की उत्पत्ति

३३३ आठवे अध्याय मे समस्त बालकाड के प्रक्षिप्त माने जाने के कारण दिए गए है, अत बहुत सम्भव है कि वाल्मीकिकृत रचना मे अयोध्या, दशरथ तथा उनके पुत्रो के परिचय के बाद अयोध्याकाड की कथावस्तु का वर्णन प्रारम्भ हुआ हो (दे० ऊपर अनु० १३६)। महाभारत के द्रोणपर्व, हरिवंश, विष्णु-पुराण आदि के प्राचीन वृतान्तो मे भी वनवास से ही लेकर रावण-वध तक की रामकथा का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत बालकाड के निरीक्षण से उसकी उत्पत्ति और विकास के भिन्न-भिन्न सोपानो का कुछ आभास मिलता है। दो स्थलो को छोडकर बालकाड मे और कही भी अवतारवाद की ओर निर्देश नही किया गया है। यही नही, वरन् उसकी शेष सामग्री से भी स्पष्ट है कि मूल बालकाड के रचनाकाल मे राम विष्णु के अवतार नही माने

---

१ यह पाँचवी श० ई० अथवा इसके बाद का प्रक्षेप है। दे० क्वाटर्ली जर्नल मिथिक सोसायटी, भाग १२, पृ० ७३।
कथानक के दृष्टिकोण से पाठो की विस्तृत तुलना के लिए, दे० प्रस्तुत लेखक का निबन्ध · दी जेनेज़िस ऑव दी वाल्मीकि रामायण रिशन्शन्स, ज० ऑ० इ० भाग ५, पृ० ६६-६४, वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५८, पृ० १-३५।

जाते थे, इसके प्रमाण आठवे अध्याय मे दिए गए है। अत. ये दोनो स्थल (अर्थात् दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ तथा राम-परशुराम भेट का वर्णन) बालकाड के अन्तिम विकास के समय जोड दिए गए होगे। पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रक्षिप्त होने के स्पष्ट प्रमाण बालकाड मे मिलते है। सर्ग ८ मे दशरथ सुतार्थ अश्वमेध यज्ञ करवाने का सकल्प करते है। सर्ग १३ और १४ मे इस अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है। १४वे सर्ग मे ब्राह्मणो को दक्षिणा दिए जाने के उल्लेख के बाद ऋष्यशृग दशरथ को आश्वासन देते हैं कि उनके चार पुत्र उत्पन्न होगे—

भविष्यंति सुता राजश्चत्वारस्ते कुलोद्वहाः ।। ५६ ।।

ऋष्यशृग के इस आश्वासन के पश्चात् पुत्रेष्टि की कोई आवश्यकता नही प्रतीत होती है। फिर भी इसके अनन्तर पुत्रेष्टियज्ञ का वर्णन प्रारम्भ होता है (सर्ग १५-१७) जिसमे विष्णु के अवतार लेने का विस्तृत वर्णन किया गया है। यह होते हुए भी १८वे सर्ग के प्रारम्भ मे अश्वमेध ही की समाप्ति पर (निवृत्ते तु क्रतौ तस्मिन्हयमेधे) देवताओ तथा राजाओ के प्रस्थान का उल्लेख किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि पहले १४वे सर्ग के पश्चात् १८वाँ सर्ग ही आता था।

पौराणिक कथाओ का बाहुल्य बालकाड तथा उत्तरकांड की एक विशेषता है। गगावतरण सर्ग (३८-४४) एक स्वतन्त्र काव्य था, जो बाद मे अपने श्रवणफल सहित बालकाड की अन्य पौराणिक कथाओं के साथ रखा गया है। विश्वामित्र की कथा (सर्ग ५१-६५) ने अशुद्ध श्लोको का बाहुल्य उसे एक स्वतन्त्र रचना सिद्ध करता है।[1] बालकाड की अन्य पौराणिक कथाएँ भी रामकथा से कोई सम्बन्ध नही रखती है, अतः बहुत सम्भव है कि वे भी प्रारम्भिक बालकाड मे विद्यमान नही थी। ६वे सर्ग से लेकर १२वे तक मे ऋष्यशृग की जो पौराणिक कथा है वह ८वे सर्ग की पुनरावृत्ति मात्र है।

३३४ उपर्युक्त प्रक्षेपो को हटाकर जो निम्नलिखित सामग्री रह जाती है, इसे हम बालकाड का प्रारम्भिक रूप मान सकते है।

सर्ग १-४	भूमिका।
सर्ग ५-७	अयोध्या का वर्णन।
सर्ग ८, १३ और १४	दशरथ के अश्वमेध का वर्णन।
सर्ग १८-३१	राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कार्य। (ताटका वध, विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा)।
सर्ग ६६-७३	राम का विवाह।
सर्ग ७७	अयोध्या में प्रत्यागमन।

१. एच० याकोबी : डस रामायण, पृ० २६।

२—बालकांड का विकास

३३५. अयोध्याकाड से लेकर युद्धकाड तक की राम कथा पर आदि कवि की छाप स्पष्ट दिखलाई पडती है। घटनाएँ इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि आधिकारिक कथा-वस्तु की गति अबाध रूप से आगे बढ रही है। अत: बाद की रामकथाओ मे इन काडो के कथानक का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। बालकाड तथा उत्तरकाड की परिस्थिति दूसरी है। प्रारम्भ ही से इनकी कथावस्तु की कोई विशेष एकता नही थी। फलस्वरूप इन दोनो काडो मे सबसे अधिक परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है।

निम्नलिखित बालकाड-सम्बधी विषयो मे इतनी विभिन्नता पाई जाती है अथवा इनके विकास का वर्णन इतना विस्तृत है कि तत्सम्बधी सामग्री अलग-अलग परिच्छेदों मे रखी गई है : अवतारवाद, राम का बालचरित, राम-सीता-विवाह, सीता की जन्म-कथा। बाद की राम-कथाओ मे प्राय: बालकाड की पौराणिक कथाओ (दे० सर्ग ३२-६५) का अभाव है, अत- इनका कोई विकास नही हो पाया है। यहाँ पर बालकाड की शेष कथावस्तु के विकास पर प्रकाश डालना है।

क। दशरथ की वशावली

३३६ इक्ष्वाकु-वशावली के निरूपण मे पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। अधिकाश पुराणो तथा वाल्मीकि रामायण मे प्रधान अतर यह है कि पौराणिक साहित्य मे इक्ष्वाकु से राम तक ६३ राजाओ के नाम दिये जाते है किन्तु रामायण मे इनकी सख्या केवल ३६ है। इसके अतिरिक्त रामायण के ३६ नामो मे से केवल १८ नाम दोनो वशावलियो मे विद्यमान है। सभव है कि रामायण मे केवल उन राजाओ के नाम उल्लिखित हैं, जिनका राज्याभिषेक हुआ था।[1]

राम-साहित्य की दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्राचीन रचनाओ मे भी वशावली के विषय मे एकरूपता नही है। वाल्मीकि की सूची के अनुसार २३वाँ नाम दिलीप है; २६वाँ रघु, ३८वाँ अज तथा ३९वाँ दशरथ (दे० बालकाड, सर्ग ७०)। कालिदास के रघुवंश तथा हरिवश पुराण (१, १५, २४-२६) के अनुसार दिलीप, रघु, अज और दशरथ मे क्रमश. पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। श्री रायकृष्णदास[2] के अनुसार इसका समन्वय यह है कि इस वश मे दिलीप तथा रघु नामक दो-दो राजा रह चुके हैं, द्वितीय दिलीप का नाम खट्वाग तथा द्वितीय रघु का नाम दीर्घबाहु था। इस प्रकार रघुवश का क्रम ठीक सिद्ध हो जाता है। जो कुछ भी हो, बहुत सी परवर्ती रचनाओ मे कालि-दास की वशावली ही प्रामाणिक मानी गई है, जैसे प्रतिमा-नाटक (अक २), अभि-

१ दे० पुराणम् (वाराणसी) भाग २, पृ० १३७ और भाग ४, पृ० २३।

२. दे० पुराणम्, भाग २, पृ० १४४-१४७।

पुराण (ककुत्स्थ, रघु, अज, दशरथ, अध्याय ५, ३), लिंग-पुराण (१, ६६), ब्रह्म पुराण (८, ८५-८६), पद्मपुराण का गौडीय पाताल खण्ड, भविष्यपुराण (प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खड, अध्याय २, ३-६), उदारराघव, कृत्तिवास रामायण (१, ६२) तोरवे रामायण (१, ३) आदि।

पउमचरियं (पर्व २१-२२) मे दशरथ की विस्तृत वशावली इस प्रकार है (वाल्मीकि रामायण मे दिये हुए नाम रेखांकित है) विजय,[१] पुरन्दर, कीर्तिधर, सुकोशल, हिरण्यगर्भ, नघुष, सौदास, सिहरथ, बधरथ, चतुर्मुख, हेमरथ, यशोरथ पद्मरथ, मृगरथ, शशिरथ, रविरथ, मान्धाता, उदयरथ, प्रतिवचन, कमलबन्धु, रविशत्रु, वसन्ततिलक, कुबेरदत्त, कुथु, शरभ, विरथ, रथनिर्घोष, मृगारिदम, हिरण्यनाभ[१], पजस्थल, ककुत्स्थ, रघु, अनरण्य, दशरथ। अनरण्य के दो पुत्र माने जाते हैं—अनन्तरथ तथा दशरथ किन्तु अनन्तरथ अपने पिता अनरण्य के साथ दीक्षा ले लेते हैं, जिससे दशरथ को राज्याधिकार मिलता है।[२]

खोतानी रामायण मे सहस्त्रबाहु दशरथ के पुत्र माने गये है तथा राम-लक्ष्मण सहस्त्रबाहु के ही पुत्र है। **सेरी राम** मे नामावली इस प्रकार है : नबी आदम, दशरथ रामन, दशरथ चक्रवर्ती तथा दशरथ। श्याम के **रामजातक** मे दशरथ को रावण का चाचा माना गया है—ब्रह्मा के पुत्र तप्परमेस के दो पुत्र थे, दशरथ तथा विरुल्होक (विश्रवा)। तप्परमेस यह देखकर कि दशरथ अच्छा योद्धा नही है, अपने कनिष्ठ पुत्र को ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते है, जिससे दशरथ राज्य छोडकर अन्यत्र अपनी एक नई राजधानी का निर्माण करते है। (इस कथा मे वैश्रवण तथा दशरथ का एकीकरण किया गया है)। दशरथ का भतीजा रावण भी एक नई राजधानी (लका) का निर्माण करता है तथा दशरथ की पुत्री को हर लेता है। बाद मे दशरथ के दो पुत्र राम तथा लक्ष्मण अपनी बहन शान्ता के अपहरण का प्रतिकार करने के लिए रावण को पराजित करते हैं। रावण की राजधानी को यात्रा मे तथा वापसी मे भी राम और लक्ष्मण दोनो अनेक विवाह करते है। उन विवाहो से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे दूसरे राम-रावण युद्ध मे राम की सहायता करेंगे, ऐसा उल्लेख है। बाद मे रावण के साथ सधि की जाती है तथा रावण और शाता का विवाह सम्पन्न हो जाता है।[३] इस भूमिका के पश्चात् ही रामायण की कथा प्रारम्भ होती है, जिसमे रावण द्वारा सीताहरण के कारण एक नया युद्ध छिड जाता है।

---

१. ये नाम पुराणो मे भी मिलते हैं

२ रविषेणकृत पद्मचरित की वशावली इससे भिन्न है।

३. पालक पालाम मे भी इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है (दे० अनु० ३२७)।

परवर्ती रामकथाओ मे दशरथ के पूर्व-जन्मो की भी चर्चा होती है। इसके अनुसार दशरथ अपने पूर्व जन्म मे कश्यप (अनु० ३६७), स्वायंभूमनु (३६८), धर्मदत्त (३६९), राजा कुमुद (१९४) अथवा राजा कुन्तल (१९५) थे।

ख। दशरथ के विवाह

३३७ दशरथ के विवाहो के विषय मे अनेक कथाएं मिलती है, जिनका यहां सक्षेप मे वर्णन किया जाता है।

आनन्द रामायण (१, १, ३२-७४) मे दशरथ-कौशल्या विवाह का विस्तृत वर्णन किया गया है। ब्रह्मा रावण के पास जाकर कहते है कि दशरथ तथा कोशल नरेश की पुत्री कौशल्या का विवाह शीघ्र ही होने वाला है, इन दोनो का पुत्र तुम्हारा वध करेगा। इस पर रावण सरयू मे दशरथ की नौका तोड़कर उनको पराजित करता है। दशरथ तथा सुमत्र एक नौका-खण्ड पर समुद्र की ओर बह जाते है। इतने मे रावण कौशल्या को हर लेता है और उसे एक पेटिका मे रखकर तिमिंगल नामक मत्स्य की रक्षा मे छोड़ देता है। तिमिंगल उस पेटिका को एक द्वीप पर रखकर किसी अन्य मत्स्य से युद्ध करता है। दशरथ तथा सुमत्र उस द्वीप मे पहुँचते हैं और पेटिका को देखकर उसे खोल देते है। तदुपरान्त दशरथ तथा कौशल्या गाधर्व विवाह करते है और तीनो पेटिका मे छिप जाते है। अनन्तर रावण ब्रह्मा के सामने डींग मारता है कि उनकी भविष्यवाणी झूठी सिद्ध हुई। ब्रह्मा से यह सुनकर कि उन दोनो का विवाह हो चुका, रावण पेटिका को मँगवाता है और उसे खोलकर कौशल्या, दशरथ तथा सुमत्र को देखता है। ब्रह्मा रावण को तीनो का वध करने से रोक लेते है। अनन्तर पेटिका साकेत भेजी जाती है, जहां सुमित्रा, कैकेयी तथा सात सौ अन्य स्त्रियो से भी दशरथ विवाह करते हैं। भावार्थ रामायण (५, ६), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, स्वायंभुव रामायण तथा रामचरितमानस के कुछ सस्करणो के एक प्रक्षेप मे इस कथा का भी उल्लेख किया गया है।

पउमचरिय (२२, १०६-१०७) के अनुसार पद्म (राम) की माता का नाम अपराजिता था और वह अरुहस्थल के राजा सुकोशल तथा अमृत प्रभा की पुत्री थी। गुणभद्र के **उत्तर पुराण** मे राम की माता का नाम सुबाला माना गया है। पूर्व जन्म विषयक कथाओ के अनुसार कौशल्या पहले अदिति (दे० अनु० ३६७), शतरूपा (अनु० ३६८), कलहा (३६९), वीरमती (१९४) अथवा सिन्धुमती (१९५) थी।

३३८ वाल्मीकि रामायण मे केकय की पुत्री कैकेयी के स्वयवर का उल्लेख नही मिलता। **पउमचरियं** (पर्व २४) मे इस स्वयवर का पहले-पहल वर्णन हुआ है। इसके अनुसार कौतुकमगल नगर के राजा शुभमति तथा उसकी पत्नी पृथ्वीश्री की पुत्री कैकेयी के स्वयवर का आयोजन किया गया था।

उस समय दशरथ तथा जनक रावण के भय से गुप्त वेश मे भिन्न-भिन्न देशो का भ्रमण कर रहे थे और सयोग से कैकेयी के स्वयवर मे भी पहुँच गये। कैकेयी ने दशरथ को चुन लिया। इस पर स्वयवर मे आये हुए अन्य राजाओ के साथ दशरथ का युद्ध होने लगा, जिसमे कैकेयी दशरथ का रथ हाँकने लगी।

विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् दशरथ और जनक अपनी-अपनी राजधानी लौटे। घर पहुँचकर दशरथ ने कैकेयी से सग्राम मे रथ हाँकने के पुरस्कार स्वरूप एक वर माँगने के लिए कहा। कैकेयी ने उत्तर दिया "इस समय तो कोई वर माँगने की आवश्यकता नही है, जब माँगूगी तभी देना।"

कृत्तिवास रामायण (१, २५) के अनुसार गिरिराज नगर मे आयोजित कैकेयी के स्वयवर मे पृथ्वी भर के राजा आमन्त्रित हुए थे किन्तु इसमे युद्ध का उल्लख नहीं है। माधवदेवकृत **असमिया बालकांड** (अध्याय ८-१०) मे भी कैकेयी के स्वयवर का वर्णन मिलता है।

सत्योपाख्यान मे कैकेयी तथा दशरथ का विवाह इस प्रकार वर्णित है। किसी दिन नारद दशरथ के पास पहुँचकर केकय की पुत्री के सौदर्य की प्रशसा करते हैं तथा यह भी कहते है कि कैकेयी की हस्तरेखा से प्रतीत होता है कि उसे एक महान् पुत्र उत्पन्न होगा। बाद मे दशरथ एक देवयोगिनी को कैकेयी के पास भेजते है, जो कैकेयी से दशरथ की प्रशसा करके दशरथ की पत्नी बनने की इच्छा उसके मन मे उत्पन्न करती है। कैकेयी विरह के कारण उदासीन हो जाती है, जिसपर उसकी माता, कारण जानकर, केकय से दशरथ-कैकेयी का विवाह करवाने का अनुरोध करती है। बाद में केकय दशरथ को बुलाकर इस शर्त पर अपनी पुत्री देते हैं कि कैकेयी के पुत्र को राज्य अवश्य दिया जाय (दे० अध्याय ५-७)।

३३६ सुमित्रा के हाथ दशरथ के विवाह का वाल्मीकि रामायण के दक्षिणात्य पाठ मे न तो कोई वर्णन किया गया है और न सुमित्रा का परिचय मिलता है। उदीच्य पाठ (गौ० रा० १, १६, ६; प० रा० १, १४, ४) मे उसे वामदेव की 'करणी सुता' (दत्तक पुत्री) कहा गया है। प्राचीन काल से वह मगध नरेश की पुत्री मानी गई है (दे० रघुवश ६, १७)। **पउमचरियं** (१२, १०७-१०८) के अनुसार वह कमलसकुलपुर के राजा सुबंधुतिलक की कैकेयी नामक पुत्री थी, दशरथ ने उसके साथ विवाह किया तथा उसका नाम सुमित्रा रखा। **कृत्तिवास रामायण** (१, २६) मे इसके विवाह का वर्णन मौलिक प्रतीत होता है। सिहल के राजा सुमित्र ने अपनी पुत्री सुमित्रा के विवाह का निमन्त्रण दशरथ को भेजा था। कौशल्या तथा कैकेयी से यह कह कर कि मैं मृगया खेलने जाता हूँ, दशरथ ने सुमित्रा का निमन्त्रण स्वीकार किया। विवाह की द्वितीय रात को दशरथ ने अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान

किया। वगाल में उस रात को अशुभ मानकर उसे काल रात्रि कहते हैं। उस अशुभ रात्रि को दशरथ ने सुमित्रा के साथ विताया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वह बाद में दशरथ द्वारा उपेक्षित हुई। सुमित्रा के अन्तःपुर में प्रवेश करते समय कौशल्या और कैकेयी को आशका हुई, वे सोचने लगी—"यह हमसे सुन्दर है, दशरथ हमारी उपेक्षा करेंगे।" अत दोनो ने पार्वती-शकर की पूजा करके वर माँगा कि सुमित्रा अभागिनी हो। बाद मे सुमित्रा को प्रमाद हुआ, जिससे सब सपत्नियों में सुन्दर होते हुए भी दशरथ उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगे तथा कैकेयी को सबसे अधिक चाहने लगे। असमिया बालकाड (अध्याय ११) में भी सिहल द्वीप के राजा सुमित्र की कन्या का दशरथ के साथ विवाह वर्णित है।

३४०. वाल्मीकि रामायण तथा अधिकाश परवर्ती रामकथाओं के अनुसार दशरथ की तीन पटरानियों का उल्लेख है और उनके नाम प्राय कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी ही रखे गये हैं। पउमचरिय के अनुसार राम की माता अपराजिता थी तथा गुणभद्र के अनुसार उसका नाम सुबाला था।

कुछ जैन तथा बौद्ध रामकथाओं मे पटरानियों की सख्या चार तक बढा दी गई है। इसका कारण यह है कि पुत्रो की सख्या चार थी। रविषेण, हेमचन्द्र आदि के अनुसार दशरथ की ये चार रानियाँ थी—अपराजिता (कौशल्या), सुमित्रा, कैकेयी तथा सुप्रभा (शत्रुघ्न की माता)। पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११५) मे चार पटरानियों के नाम मिलते हैं, भरत की माता का नाम सुरूपा है तथा शत्रुघ्न की माता का नाम है सुवेषा। दशरथ कथानम् तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ मे भी चार पटरानियों का उल्लेख है, किन्तु इनके नामों का अभाव है।

रामकथाओं का एक अन्य वर्ग मिलता है, जिसमे दशरथ की केवल दो महिषियों की चर्चा है। इसका प्राचीनतम उदाहरण प्रसिद्ध दशरथ जातक है। तिब्बती तथा खोतानी रामायणों के अनुसार भी दशरथ की केवल दो पटरानियाँ थी। इसी प्रकार हिन्देशिया की रामकथाओं मे दशरथ के केवल दो विवाहो का उल्लेख मिलता है। सेरी राम तथा हिकायत महाराज रावण मे दशरथ अपनी नई राजधानी का निर्माण करते समय बाँसो के समूह मे सिंहासन पर बैठी हुई एक सुन्दर स्त्री को देखते हैं, जिसका नाम मदूदारी है। दशरथ तथा मदूदारी के विवाहोत्सव मे बल्यादारी नामक एक उपपत्नी टूटने वाली पालकी को सँभालती है। इस पर दशरथ उसे अपनी धर्मपत्नी बनाकर उसके भावी पुत्र को राज्य दिलाने की प्रतिज्ञा करते हैं। जावा के सेरत काण्ड मे दशरथ बाँस के समूह मे पहले बलियादारू नामक अप्सरा को देखकर उसके साथ विवाह करते हैं तथा बाद मे उसी स्थान पर बादोदारी को भी प्राप्त करते हैं। बादोदरी अपना नाम देवोरागो मे बदल देती है। रावण द्वारा उसे प्राप्त करने के

प्रयत्न का वर्णन सीता की जन्म-कथा के अन्तर्गत किया जायेगा (दे० आगे० अनु० ४२८)। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ११ में भी दशरथ की केवल दो पटरानियों का उल्लेख है। भुइआ माधवदास के उडिया विचित्र रामायण मे २१ पटरानियो की चर्चा है, जिनमे से तीन श्रेष्ठ है।

दशरथ की स्त्रियो की सख्या मे वहुत मतभेद है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने वनवास के लिए प्रस्थान करते समय अपनी ३५० माताओ से विदा ली थी (२, ३९, ३६)। पउमचरिय (२८, ७१) दशरथ की ५०० उत्तम स्त्रियो का उल्लेख करता है। आनन्द रामायण के अनुसार दशरथ ने तीन महिषियो के अतिरिक्त ७०० और विवाह किए थे (१, १, ७२)। कृत्तिवास रामायण (१, २६) तथा सारलादास के महाभारत मे दशरथ की ७५० स्त्रियाँ मानी गई हैं। असमिया वालकाण्ड (अध्याय ११) मे इनकी संख्या ७०० है। दशरथ जातक में दशरथ की १६००० स्त्रियो की चर्चा है।

विर्होर जाति की रामकथा मे दशरथ की स्त्रियो की संख्या सात है तथा जावा के सेरत काण्ड मे दो महिषियों के अतिरिक्त छः और पत्नियो का उल्लेख किया गया है।

ग। दशरथ की सन्तति

३४१. वाल्मीकि रामायण मे दशरथ के चार पुत्रो का वर्णन किया गया है, जिनमे से लक्ष्मण और शत्रुघ्न यमल माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त उदीच्य पाठ में उनकी एक पुत्री शान्ता का भी उल्लेख है, शान्ता विषयक सामग्री का अलग विश्लेषण किया जायगा (दे० आगे अनु० ३४३)।

विमल सूरि के पउमचरियं (दे० २५, १४) मे पहले-पहल भरत तथा शत्रुघ्न यमल माने गये है, वाद की कुछ रामकथाओ मे भी भरत तथा शत्रुघ्न सहोदर भाई कहे गये हैं; उदाहरणार्थ सघदास की वसुदेवहिण्डि, गुणभद्र का उत्तरपुराण, आनन्द-रामायण (१, २, १०), सथाली रामकथा, मराठी भावार्थ रामायण (१, ६)। रामचरितमानस के लक्ष्मण विषयक कथन—'निज माता के एक कुमारा' (६, ६१, १४) से भी यही ध्वनि निकलती है। जावा के सेरत काण्ड मे दशरथ की दो पत्नियो के दो-दो पुत्र उत्पन्न होते हैं, ज्येष्ठा के राम-भरत तथा कनिष्ठा के लक्ष्मण-शत्रुघ्न। हिकायत महाराज रावण मे राम-लक्ष्मण कनिष्ठा के पुत्र माने जाते है और भरत-शत्रुघ्न ज्येष्ठा के पुत्र। सेरी राम मे भी राम और लक्ष्मण मन्दूदारी के पुत्र माने जाते है, इस रचना में दशरथ की एक पुत्री की भी चर्चा है, जो भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी है और जिसकी माता का नाम वलियादारी है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार लक्ष्मण भाई न होकर राम के सखा मात्र हैं तथा राम स्वयं विष्णु के सेनापति के पुत्र हैं। एक अन्य विकृत वृत्तान्त के अनुसार राम परमेश्वरी के पुत्र माने जाते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त, न० १८, भाग ३, पृ० ३४३)।

भरत तथा लक्ष्मण मे से कौन ज्येष्ठ है, इसके विषय मे वाल्मीकि रामायण के पाठो मे मतभेद है। दशरथ-जातक की भाँति उदीच्य पाठ मे भरत कनिष्ठ माने जाते हैं (दे० गौ० रा० १, १९, १०, प० रा० १, १४, ५)। लेकिन दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न कनिष्ठ है (रा० १, १८, १३-१४)। फिर भी दाक्षिणात्य पाठ के एक स्थल से ऐसा प्रतीत होता है कि भरत कनिष्ठ ही थे। युद्ध के बाद राम से मिलने के अनन्तर भरत ही लक्ष्मण का अभिवादन करते है :

ततो लक्ष्मणमासाद्य वैदेहीं च परंतपः।
अथाभ्यवादयत्प्रीतो भरतो नाम चाब्रवीत् ॥४१॥ (६, १२७)

पउमचरिय, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, दशरथ जातक, दशरथ कथानम्, विष्णुपुराण, पद्मपुराण तथा प्रतिमा नाटक (दे० अक ३) मे भी भरत लक्ष्मण के अनुज माने गये है। फिर भी अपेक्षाकृत प्राचीन काल से अधिकाश रामकथाओ के अनुसार भरत लक्ष्मण के अग्रज है, उदाहरणार्थ अग्निपुराण, कूर्मपुराण, क्षेमेन्द्र की रामायणमजरी। रघुवश मे भी ऐसा माना गया है, इसके फलस्वरूप युद्ध के पश्चात् लक्ष्मण ही भरत का अभिवादन करते हैं (दे० १३, ७३)।

भरत तथा लक्ष्मण के विषय मे उपर्युक्त विभिन्नता को लेकर **भरतज्येष्ठ्य-निर्णय** की रचना की गई है, जिसमे भरत को ज्येष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है (दे० मद्रास कैटालॉग न० आर० ३४९२ सी)।

३४२. बहुत सी विदेशी रामकथाओ मे दशरथ के केवल दो पुत्रो का उल्लेख किया गया है। तिब्बती रामायण मे दशरथ की दो पत्नियो के एक-एक पुत्र होता है। खोतानी रामायण मे भी राम और लक्ष्मण का उल्लेख किया गया है। किन्तु इस रचना में दोनो सहस्रबाहु के पुत्र तथा दशरथ के पौत्र माने जाते है। इसी प्रकार सेरी राम की राफल्स हस्तलिपि मे केवल राम-लक्ष्मण की चर्चा है। राम जातक तथा पालक पालाम मे भरत-शत्रुघ्न का निर्देश नही मिलता, लेकिन इनमे राम-लक्ष्मण के अतिरिक्त शान्ता का भी उल्लेख पाया जाता है।

दशरथ जातक के अनुसार दशरथ की महिषी के तीन सन्ताने थीं—राम, लक्ष्मण तथा सीता। इस महिषी की मृत्यु के पश्चात् ही दशरथ ने एक दूसरी को महिषी के पद पर नियुक्त किया था। उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। मुनिचन्द्र सूरि (१२वीं श० ई०) के द्वारा हरिभद्र कृत उपदेशपद की टीका मे कौशल्या, सुमित्रा तथा

कैकेयी के एक-एक पुत्र का उल्लेख मिलता है, अर्थात् राम, लक्ष्मण तथा भरत (दे० गाथा १४)। इसी प्रकार ब्रह्मचक्र मे दशरथ की तीन महिषियो के एक-एक पुत्र की चर्चा है। जावा के सेरत काण्ड मे राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न के अतिरिक्त दशरथ की छः और सन्तानो का उल्लेख किया गया है।

३४३. वाल्मीकीय रामायण के विभिन्न पाठों मे शान्ता के विषय मे मतैक्य नही है[1]। दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ तथा रोमपाद की घनिष्ठता की ओर निर्देश किया गया है (अगराजेन सख्यं १, ११, ३, सख्य संबधकं चैव तदा तं प्रत्यपूजयत १, ११, १८)। साथ-साथ इसका भी स्पष्ट शब्दों मे उल्लेख किया गया है कि शाता रोमपाद की ही पुत्री थी (दे० १, ६, १३ और १, ११, १६), जिसे रोमपाद ने ऋष्यशृंग को पत्नीस्वरूप प्रदान किया था (दे० १, १०, ३२)। सुमत्र के परामर्श के अनुसार दशरथ रोमपाद के यहाँ जाकर निवेदन करते हैं कि ऋष्यशृंग अयोध्या मे अश्वमेध का अनुष्ठान करे। अत. ऋष्यशृंग सपत्नीक दशरथ के साथ अयोध्या आते है, इस अवसर पर कही भी सकेत मात्र भी नही मिलता कि शान्ता अपने मायके वापस आ गई है (१, ११, ३०)। इसके अतिरिक्त दशरथ को 'अनपत्य' कहा गया है (१, ११, ५)। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे भी शांता लोमपाद[2] की पुत्री मानी गई है—शांता स्वकां दुहितरम् (दे० गौडीय रामायण १, ८, २६; प० १, ८, २५)।

महाभारत मे लोमपाद को 'सखा दशरथस्य' कहा है (३, ११०, १६) तथा इसका कई स्थलो पर स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि लोमपाद ने अपनी पुत्री शान्ता ऋष्यशृंग को प्रदान किया था (दे० ३, ११०, ५, १२, २२६, ३५; १३, १३७, २५)।

हरिवंश-पुराण (१, ३१, ४६), मत्स्य पुराण (४८, ६५), वायु पुराण (११, १०३) तथा ब्रह्म पुराण (१३, ४०), इन सब मे शान्ता को लोमपाद की ही पुत्री मान गया है। फिर भी यह असभव नही कहा जा सकता है कि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के कुछ द्व्यर्थक स्थलो के कारण ही शान्ता दशरथ की पुत्री मानी जाने लगी। सुमत्र दशरथ से कहते है कि—ऋष्यशृंगस्तु जामाता पुत्रांस्तव विधास्यति (दे०, १, ६, १६)। यहाँ पर सदर्भ के कारण ऋष्यशृंग को रोमपाद का जमाता समझना चाहिए किन्तु व्याकरण की दृष्टि से वह दशरथ के जमाता भी हो सकते है। इसी कारण

---

१. शशाक चट्टोपाध्याय ने शान्ता-समस्या का विस्तृत विश्लेषण किया है। दे० दि प्रॉब्लेम ऑव शातास पैरेंटज, आवर हेरिटेज (कलकत्ता), भाग २, (१९५४), पृ० ३५३-३७४।

२. उदीच्य पाठो मे रोमपाद के स्थान पर लोमपाद ही रक्खा गया है।

टीकाकार गोविन्दराज लिखते हैं—"जामाता रोमपादस्य दशरथस्यापि वा। दशरथस्यौरसी शांता दत्ता रोमपादस्य।"

इसके अतिरिक्त सर्ग ११ का निम्नलिखित उद्धरण ध्यान देने योग्य है :

इक्ष्वाकूणां कुले जातो भविष्यति सुधार्मिकः।
नाम्ना दशरथो राजा श्रीमान्सत्यप्रतिश्रव.॥ २॥
अंगराजेन सख्यं च तस्य राज्ञो भविष्यति।
कन्या चास्य महाभागा शान्ता नाम भविष्यति॥ ३॥

इसमे 'अस्य' स्पष्ट रूप से अगराज से सम्बन्ध रखता है किन्तु अमरेश्वर ठाकुर के सस्करण से पता चलता है कि वगाल तथा अन्यत्र (दे० वडौदा सस्करण १, १०, ३ की टिप्पणी) की कुछ हस्तलिपियो मे 'अस्य' के स्थान पर 'तस्य' मिलता है, जिससे शान्ता दशरथ की पुत्री सिद्ध होती है। इसी श्लोक के अनन्तर गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे दशरथ द्वारा अपनी पुत्री शान्ता को प्रदान करने का वृत्तान्त दिया गया है :

अंगराजोऽनपत्यस्तु लोमपादो भविष्यति।
स राजानं दशरथं प्रार्थयिष्यति भूमिपः॥ ४॥
अनपत्याय मे कन्यां सखे दातुं त्वमर्हसि।
शान्तां शांतेन मनसा पुत्रार्थं वरवर्णिनीं॥ ५॥

(गौ० रा० सर्ग १०; प० रा० सर्ग ६)

उदीच्य पाठो के उसी सर्ग मे लोमपाद ऋष्यशृग के पास जाकर दशरथ के विषय मे कहते हैं :

अनेन मे ऽनपत्याय दत्तयं वरवर्णिनी।
याचते पुत्रकृत्याय शान्ता प्रियत्मात्मजा॥ २५॥

अतः स्पष्ट ही है कि गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार शान्ता दशरथ की ही पुत्री थी, जिसे दशरथ ने अपने निःसन्तान सखा लोमपाद को प्रदान किया था। उदीच्य पाठो की यह धारणा दाक्षिणात्य पाठ की द्व्यर्थता से उत्पन्न तो हो सकी है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इसका वास्तविक कारण अन्यत्र ढूढना चाहिये। हरिवश, मत्स्य, वायु तथा ब्रह्म नामक पुराणो के अनुसार अगराज चित्ररथ के पुत्र के दो नाम थे : दशरथ तथा लोमपाद। अतः शान्ता पहले अगराज दशरथ की पुत्री तो मानी गई थी, किन्तु अयोध्यानरेश (अज-पुत्र) दशरथ कही अधिक विख्यात थे, अतः शान्ता बाद मे उन्ही दशरथ की पुत्री मानी जाने लगी होगी। हरिवश का उद्धरण इस प्रकार है :

अथ चित्ररथस्यापि पुत्रो दशरथोऽभवत्।
लोमपाद इति ख्यातो यस्य शांता सुताऽभवत्॥ ४६॥

(पर्व १, अध्याय ३१)

परवर्ती रचनाओं में बहुधा अयोध्यानरेश दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख किया गया है; उदाहरणार्थ विष्णु पुराण (४, १८, १८) ; भागवत पुराण (६, २३, ८) ; भवभूति का उत्तर-रामचरित (अंक १ की प्रस्तावना) ; स्कद पुराण (नागर खण्ड, अध्याय ६८) ; पद्मपुराण के गौडीय पातालखण्ड (अध्याय १२) ; आनन्द रामायण, (१, १, १६-१७) ; असमिया बालकाण्ड (अ० १८) ; मराठी भावार्थ रामायण, सारलादास का उडिया महाभारत । बलराम दास रामायण मे शाता कौशल्या की पुत्री है । भावार्थ रामायण मे इंद्र दशरथ को शाता तथा ऋष्यश्रृंग का विवाह सम्पन्न करने का परामर्श देते हैं (१, १,) ।

ऊपर गोविन्दराज का उद्धरण दिया गया है (१, ६, १६), जिसमे वह शान्ता को दशरथ की औरसी पुत्री मानता है । इसी प्रकार सर्ग ११ मे रोमपाद तथा दशरथ के जो 'संबधकम्' का उल्लेख है, उसे राम वर्मा तथा गोविन्दराज यह अर्थ देते है कि शान्ता दशरथ की पुत्री थी, जिसे उन्होंने रोमपाद को प्रदान किया था (दे० १, ११, १८) ।

कृत्तिवास (१, २६) के अनुसार दशरथ ने निस्सन्तान लोमपाद को अपनी पहली सन्तान देने की प्रतिज्ञा की थी । अतः जब उनकी पत्नी (भार्गव राजा की पुत्री) एक कन्या को जन्म देती है, दशरथ उसका नाम हेमलता रखकर उसे लोमपाद के यहाँ भेजते है । बाद मे हेमलता नाम का उल्लेख नही मिलता, किन्तु दशरथ द्वारा दी हुई कन्या का नाम शान्ता ही माना जाता है ।[1] बङ्गाल की रामकथाओ मे दशरथ की पुत्री का प्रायः उल्लेख मिलता है । अद्भुताचार्य के रामायण मे इसका नाम शान्ता ही है, किन्तु चन्द्रावती कृत रामायण मे कुकुआ नामक कैकेयी की एक पुत्री की चर्चा है (दे० दिनेशचन्द्रसेन, पृ० १६७) । कहा जाता है कि सुवर्चस रामायण मे शान्ता के प्रति सीता के शाप तथा उसके पक्षि-योनि प्राप्त करने की कथा पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० २०६) ।

विदेश की कुछ ही रामकथाओ मे दशरथ की पुत्री का उल्लेख है । हिन्देशिया के सेरी राम मे इसका नाम कीकवी है और वह भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी मानी जाती है । स्याम के राम जातक तथा पालक पालाम मे दशरथात्मजा शाता का विवाह रावण के साथ सम्पन्न हो जाता है (दे० अनु० ३३६) । दशरथ जातक मे सीता को दशरथ की पुत्री माना गया है (दे० ऊपर अनु० ५१) ।

शान्ता की जन्मकथा माधवदासकृत विचित्र-रामायण के अनुसार इस प्रकार

१. बंगवासी संस्करण (१३२१) के पृ० ४५ की पादटिप्पणी मे एक छद उद्धृत है, जिसमें इसका नाम 'कान्ता' रखा गया है ।

है। इन्द्र के यहाँ जाते समय दशरथ ने उतावली के कारण गोमाता तथा मुनि ताराक्ष्य की अवज्ञा की थी और मुनि ने उन्हे निस्सन्तान होने का शाप दिया था। लौटते समय दशरथ फिर उस मुनि से मिले। दशरथ की अनुनय-विनय को सुनकर मुनि ने शाप बदलकर कहा—तुम्हारी पहली सन्तान एक लडकी होगी, तुमको उसे ऋष्यशृंग को देना चाहिये। ऋष्यश्रग से यज्ञ करवा कर तुम्हे पुत्र उत्पन्न होंगे। वाद मे शान्ता के स्वयवर के अवसर पर परशुराम आ पहुँचते हैं तथा ऋष्यश्रग के साथ कन्या का विवाह कराने का आदेश देते है, इस पर एक वेश्या को भेजा जाता है, जो ऋष्यश्रग को ले आती है और ऋष्यश्रग तथा शान्ता का विवाह सम्पन्न हो जाता है।

घ। अहल्या का उद्धार

३४४ शतपथ ब्राह्मण से लेकर वैदिक साहित्य के अनेक ग्रन्थो मे इन्द्र और अहल्या की कथा का बीज मिलता है, क्योकि इनमे इन्द्र को अहल्यायार कहकर पुकारा गया है।[1] वैदिक साहित्य के टीकाकारो ने अहल्या की कथा को रूपक मात्र माना है तथा उस रूपक की अनेक प्रकार से व्याख्या की हैं। अहल्या भूमि (जिसमे हल नही चलाया गया है) तथा वर्षा के अधिष्ठाता देवता इन्द्र का सवध स्वाभाविक ही प्रतीत होता है। परवर्ती साहित्य मे अहल्या की कथा का पर्याप्त विकास हुआ तथा उसके उद्धार का सवध राम से जोडा गया है।

महाभारत मे गौतम को अहल्या का पति माना गया है (दे० आगे अनु० ३४६)। वास्तव मे वैदिक साहित्य मे लिखा है कि इन्द्र अपने को गौतम कहलवाते थे: कौशिक ब्राह्मण गौतम ब्रुवाणेति (शतपथ ब्रा० ३, ३, ४, १८, जैमिनीय ब्रा० २, ७६)। षड्विंश ब्राह्मण (१, १, २४) मे इसके विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है: देवता तथा असुर युद्ध कर रहे थे। गौतम दोनो सेनाओ के बीच तपस्या कर रहे थे। इन्द्र ने उनके पास जाकर निवेदन किया कि वे देवताओ के गुप्तचर बन जाये। गौतम ने अस्वीकार कर दिया, जिसपर इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर गुप्तचर बन जाने का प्रस्ताव रखा, गौतम ने इसे स्वीकार किया। इस कथा के आधार पर तथा इन्द्र के 'अहल्यायार' नाम को दृष्टि मे रखकर यह माना जाने लगा होगा कि अहल्या के पति

---

१. दे० शतपथ ब्राह्मण (३, ३, ४, १८); मैकडॉनल-कीथ, वेदिक इडेक्स-अहल्या; डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, अहल्या-उद्धार की कथा का विकास, विचारधारा, पृ० २६-३४। जैमिनीय ब्राह्मण (२, ७६) तथा षड्विंश ब्राह्मण (१, १, २०) में अहल्या को मैत्रेयी की उपाधि दी गई है।

का नाम गौतम ही था।[1]

अहल्या की वंशावली के विषय में हरिवंश पुराण (१, ३२, २९–३२) में माना गया है कि मुद्गल, मौद्गल, इन्द्रसेन और वध्र्यश्व में क्रमशः पिता-पुत्र का संबंध था। वध्र्यश्व तथा मेनका की दो सन्तान थी—दिवोदास तथा अहल्या। अहल्या ने गौतम की पत्नी बनकर शतानन्द को जन्म दिया। अहल्या के पिता का नाम विष्णु पुराण (४, १९, ६१) मे वृहदश्व, मत्स्यपुराण (५०, ६) में विन्ध्याश्व तथा भागवत पुराण (९, २१, ३४) मे मुद्गल ही माना गया है।

वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड मे पहले-पहल अहल्या की उत्पत्ति तथा गौतम-अहल्या के विवाह के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। ब्रह्मा ने दूसरे प्राणियों के सर्वश्रेष्ठ अग लेकर एक ऐसी स्त्री का निर्माण किया, जिसमे 'हल' (कुरूपता) का सर्वथा अभाव था और उसका नाम अहल्या रखा। इन्द्र अहल्या की अभिलाषा करते थे, किन्तु ब्रह्मा ने उसे धरोहर के रूप मे गौतम ऋषि के यहाँ रखा। बहुत वर्षों के बाद गौतम ने उसे ब्रह्मा को लौटाया और ब्रह्मा ने तपस्वी गौतम की सिद्धि देखकर उन्हे अहल्या को पत्नीस्वरूप प्रदान किया।[2]

ब्रह्मपुराण (अध्याय ८७) मे इस वृत्तान्त का विकसित रूप पाया जाता है। इसके अनुसार ब्रह्मा ने गौतम को अहल्या के पालन-पोषण का भार सौंपा था। अहल्या की यौवन-प्राप्ति पर समस्त देवता, मुनि, दानव, यक्ष तथा राक्षस उसे माँगने लगे, किन्तु इन्द्र ने विशेष आग्रह किया। यह देखकर ब्रह्मा ने कहा : जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके सर्वप्रथम मेरे पास आये, उसी को अहल्या दी जायेगी। इसपर समस्त देवता पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने निकले, किन्तु गौतम ने अर्धप्रसूता सुरभि तथा शिव-लिंग की प्रदक्षिणा

---

१. ऋग्वेद (१, १०, ११) के समय से कौशिक इन्द्र का एक नाम रहा है। अतः षड्विंश ब्राह्मण का वाक्यांश—कौशिको हि स्मैनां ब्राह्मण उपन्यैति (१, १, २२) का अर्थ नही है कि इन्द्र कौशिक का रूप धारण कर अहल्या से मिलने जाया करते थे। इस अर्थ के आधार पर सायण मानते हैं कि अहल्या के पति का नाम कौशिक ही था।

२. कृत्तिवास रामायण के अनुसार (१, ५६) ब्रह्मा ने पहले १००० सुन्दरियो की सृष्टि की थी और बाद मे उनके सौंदर्य से अहल्या का निर्माण किया। ब्रह्मा द्वारा अहल्या की सृष्टि होने के कारण उसे ब्रह्मा की पुत्री भी कहा जाता है (दे० अध्यात्म रामायण १, ५, ३५)। रामकियेन मे गौतम-अहल्या-विवाह का एक अन्य रूप मिलता है (दे० आगे अनु० ५१४)।

की ओर अहल्या को प्राप्त किया। आनन्द रामायण मे इस कथा की ओर संकेत किया गया है—ब्रह्मणा निर्मिताऽहल्या द्विमुखी गोःपरिक्रमात् दत्ता पुरा गौतमाय(१, ३, १८)।

पउमचरियं (पर्व १३) के अनुसार अहल्या ज्वलनसिंह तथा वेगवती की पुत्री है, जिसने अपने स्वयंवर के अवसर पर राजा इन्द्र को ठुकराकर राजा नन्दिमाली (अथवा आनन्दमालिवर) को चुन लिया था। बाद मे नन्दिमाली को वैराग्य हुआ और उन्होंने दीक्षा ली थी। किसी दिन इन्द्र ने उस ध्यानस्थ नन्दिमाली को बाँधा था, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्द्र रावण से हार गये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे अहल्या को भूल से विश्वामित्र की पत्नी माना गया है।

गौतम तथा अहल्या की सन्तति के विषय मे विभिन्न उल्लेख मिलते हैं। महाभारत मे उनके पुत्र चिरकारी (दे० १२, २५८, ४) तथा एक पुत्री की चर्चा है, जिसका विवाह गौतम ने अपने प्रिय शिष्य उत्तक के साथ कराया था (दे० प्रचलित महाभारत, पर्व १४, अध्याय ५६)। इसके अतिरिक्त गौतम-पुत्र शरद्वान्[1] का भी उल्लेख है, जो सरकण्डो के साथ उत्पन्न हुआ था (दे० आदि पर्व, १२०, २)। वाल्मीकि रामायण (दे० १, ५१, २) तथा महावीरचरित आदि राम-नाटको मे जनक के पुरोहित शतानन्द को गौतम तथा अहल्या का पुत्र माना गया है। रामकथाओ का एक अन्य वर्ग भी मिलता है, जिसके अनुसार अजना, वालि तथा सुग्रीव अहल्या की सन्तान हैं (दे० आगे अनु० ३४७)।

३४५. गौतम-पत्नी के साथ इन्द्र के दुराचार का वर्णन पहले-पहल महाभारत मे मिलता है, जहाँ चिरकारिता की प्रशंसा करते हुए गौतम के पुत्र चिरकारी का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।[2] अपनी स्त्री के व्यभिचार से क्रुद्ध होकर गौतम ने चिरकारी को अहल्या का वध करने का आदेश दिया तथा वन चले गये। अपने स्वभाव के अनुसार चिरकारी ने अपने पिता की इस आज्ञा पर बहुत समय तक विचार किया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि माता निर्दोष है क्योकि इन्द्र गौतम के वेश मे उसके पास गये थे (३७)। इतने मे गौतम वन मे सोचने लगे कि मैंने अपनी निर्दोष पत्नी के वध का आदेश देकर अच्छा नही किया। इन्द्र ब्राह्मण के वेष मे मेरे आश्रम आये, उसने उनका आतिथ्य-सत्कार किया। बाद मे जो दुःखद घटना हुई, उसमे मेरी स्त्री का कोई

१. हरिवंश पुराण (१, ३२, ३२) मे अहल्या-पति का नाम शरद्वान् माना गया है। महाभारत में अहल्या-पुत्र शरद्वान् गौतम भी कहलाता है (दे० १ १२०, ५)।

२. दे० शांतिपर्व, अध्याय २५८। उद्योग पर्व में इन्द्र के दुराचार का उल्लेख मात्र किया गया है; दे० ५, १२, ६।

दोष नही था—**अत्र चाकुशले जाते स्त्रिया नास्ति व्यतिक्रमः** (२५८, ४६)। अतः वह घर लौटे तथा अपनी पत्नी को सकुशल पाकर अपने पुत्र की चिरकारिता की प्रशसा करने लगे। महाभारत के कई स्थलो पर इन्द्र के प्रति गौतम के शाप का उल्लेख है, किन्तु अहल्या को महाभारत में सर्वत्र निर्दोष ही माना गया है। वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ३०) के अनुसार भी अहल्या निर्दोष है किन्तु बालकाण्ड (सर्ग ४८) मे कहा गया है कि जिज्ञासा से प्रेरित होकर अहल्या ने इन्द्र को गौतम के वेष मे पहचानते हुये भी उनका प्रस्ताव स्वीकार किया था :

मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात् ॥ १६ ॥

स्कंदपुराण (माहेश्वरखड, कौमारखड, अध्याय ६, ८०-१६१) मे भी चिरकारी की कथा पाई जाती है। इसमे बहुत से श्लोक महाभारत के ही हैं; फिर भी इस कथा मे दो महत्वपूर्ण अतर है। गौतम-पत्नी[1] का अपराध यह है कि वह अपने स्त्री-स्वभाव के अनुसार कौशिकी के तट पर वलि नामक राजा की ओर देखती रही।[2] अपनी पत्नी के वध का आदेश देने के कारण गौतम दुखी थे; इतने मे इन्द्र ब्राह्मण के वेश मे उनके पास आए और उन्होंने गौतम को स्त्री की स्वाभाविक दुर्बलता के विषय मे एक गाथा सुनायी :

अनृता हि स्त्रियः सर्वाः सूत्रकारो यदब्रवीत् ॥ ११० ॥
अतस्ताभ्यः फलं ग्राह्यं न स्याद्दोषेक्षणः सुधीः।

यह सुनकर गौतम अपने चिरकारी पुत्र के पास गये और अपनी पत्नी को जीवित देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। वह अपने पुत्र तथा भार्या के साथ चिरकाल तक अपने आश्रम मे रहकर अत मे स्वर्ग सिधारे :—ततश्चिरमुपास्याथ दिवं यातश्चिरं मुनिः (१३१)।

परवर्ती कथाओं मे इस बात पर प्रायः बल दिया जाता है कि अहल्या ने इन्द्र को नही पहचाना था।[3] ब्रह्मपुराण (अध्याय ८७) का वृत्तान्त इस प्रकार है। गौतम

१. चिरकारी की कथा के अन्तर्गत अहल्या का नाम न तो महाभारत मे और न स्कदपुराण में मिलता है।

२. दे० श्लोक १०८। यह रेणुका के अपराध का स्मरण दिलाता है; पत्नी सहित जलक्रीडा करते हुए चित्ररथ को देखकर रेणुका उसकी ओर आकर्षित हुई थी (दे० महाभारत, आरण्यकपर्व ११६, ६-७)।

३. दिनेश चन्द्र सेन द्वारा सम्पादित कृत्तिवास रामायण के अनुसार इन्द्र अपने ही रूप में आकर अहल्या की बुद्धि को भ्रष्ट करने मे सफल हैं। कंब रामायण (१, ६), रगनाथ रामायण (१, २६) तथा तेलुगु कवि एरेन्न के महाभारत (अरण्यपर्व) में अहल्या को दोषी माना गया है।

अपनी पत्नी के साथ ब्रह्मगिरि पर तप करते थे। अहल्या के विवाह के पहले से ही इन्द्र उस पर आसक्त हुये थे, अतः गौतम की अनुपस्थिति में इन्द्र गौतम का रूप धारण कर अहल्या के पास आया करते थे, किन्तु अहल्या उन्हें गौतम समझती थी—**न बुबोध त्वहल्या तं जारं मेने तु गौतमम्** (श्लोक ४४)। किसी दिन संयोगवश आश्रम में दोनो ही गौतम दिखाई पड़े। आश्रमवासी यह आश्चर्य देखकर तथा इसे तप का प्रभाव समझकर गौतम से कहने लगे :

भगवन्किमिदं चित्रं बहिरन्तश्च दृश्यते।
प्रिययाऽन्तः प्रविष्टोऽसि तथैव च बहिर्भवान्
अहो तपःप्रभावोऽयं नानारूपधरो भवान् ॥४८॥

यह सुनकर गौतम अपने घर गए तथा इन्द्र ने गौतम के आगमन पर बिडाल का रूप धारण कर लिया।[1]

वाल्मीकीय बालकाण्ड के अनुसार इन्द्र ने देवताओं के पास जाकर कहा था कि गौतम की तपस्या में विघ्न डालकर तथा उनमें क्रोध उत्पन्न कर मैंने देवताओं का उपकार किया है (दे० १, ४९, २)। परवर्ती रचनाओं में इन्द्र के इस उद्देश्य को अधिक महत्त्व दिया गया है। असमिया बालकाण्ड (अध्याय ३८) के अनुसार इन्द्र गौतम की घोर तपस्या देखकर डर गये थे। वह उस तपस्या में विघ्न डालने के विचार से उनके आश्रम में आ गए, किन्तु अहल्या को देखकर आसक्त हो गए। रंगनाथ रामायण (१, २९) में भी माना गया है कि गौतम की तपस्या में विघ्न डालने के उद्देश्य से इन्द्र ने अहल्या का सतीत्व नष्ट किया था।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में इन्द्र के दुराचार का दो स्थलों पर वर्णन किया गया है (दे० कृष्ण-जन्म खण्ड, अध्याय ४७ और ६१)। दोनो वृत्तान्त अहल्या को निर्दोष मानते हैं। अध्याय ६१ के अनुसार इन्द्र कामशास्त्र में अपनी पहुँच का उल्लेख करते हुए अहल्या को प्रलोभन देते हैं तथा शची को अहल्या की दासी बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं। अहल्या अविचलित रहकर घर जाती है और गौतम को सब कुछ बतलाती है। बाद में इन्द्र गौतम का रूप धारण कर अहल्या के साथ रमण करते हैं, किन्तु सर्वज्ञ मुनि घर लौटकर उनको शाप देते हैं।[2]

---

१. बिडाल का रूप धारण करने की कथा कथासरित्सागर (दे० आगे अनु० ३४७), पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ५१, ५७); कम्ब रामायण (१, ९, ७९), बलरामदास रामायण आदि में भी मिलती है। पद्मपुराण के अनुसार गौतम [illegible] होकर इन्द्र का पाप जान लिया था।

२. बलरामदास रामायण में भी इन्द्र पहले अपने ही रूप में तथा बाद में गौतम के रूप में अहल्या के पास आते हैं।

कृत्तिवास रामायण (१, ५९) में इन्द्र को गौतम का प्रियतम शिष्य माना गया है, उन्होंने गौतम का वेष धारण कर अहल्या के साथ रमण किया। बाद में गौतम घर पहुँचे और अहल्या के शरीर पर शृंगार के लक्षण देखकर इन्द्र का दुराचार जान गए। इन्द्र आश्रम मे ही निवास करते थे तथा बुलाये जाने पर पुस्तके काँख मे दबाये गौतम के पास आए।

रगनाथ रामायण (१, २९) तथा तत्त्वसग्रह रामायण (१, २५) के अनुसार इन्द्र ने मुर्गे का रूप धारणकर रात्रि मे ही बाँग दी और गौतम को भ्रम मे डाला, कि पौ फटने पर है।[1]

३४६. अधिकाश रचनाओ के अनुसार गौतम अचानक घर पहुँचकर इन्द्र तथा अहल्या, दोनो को शाप देते है, कुछ ही वृत्तान्तो मे उनकी पुत्री भी उनका कोपभाजन बन जाती है (दे० आगे अनु० ३४७)। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार गौतम शाप देकर अपने ही आश्रम मे निवास करते है, किन्तु बालकाण्ड के अनुसार उन्होंने अहल्या को वहाँ छोडकर हिमालय की ओर प्रस्थान किया।[2]

गौतम के शाप के कई रूप मिलते है। महाभारत के अनुसार इस शाप के कारण इन्द्र की दाढी पीली पड गयी थी—अहल्याधर्षणनिमित्तं हि गौतमाद्धरिश्मश्रुतामिन्द्रः प्राप्तः।[3] वाल्मीकीय उत्तराकाण्ड मे लिखा है कि गौतम ने इन्द्र को पराजित होने का शाप दिया, जिसके फलस्वरूप मेघनाद ने इन्द्र को हरा दिया था। इसके अतिरिक्त गौतन ने कहा कि मनुष्यो के इस प्रकार के पापो का आधा दोष इन्द्र का ही रहेगा और इन्द्र (अथवा किसी भी भावी सुरेन्द्र) का पद कभी स्थिर नही हो पायेगा (दे० सर्ग ६०, ३२-३५)। लिग पुराण (अध्याय २९) मे किसी शाप का उल्लेख नही है, किन्तु यह माना गया है कि गौतम ने इन्द्र का वृषण काट कर भूमि पर फेक दिया था :

इन्द्रस्यापि च धर्मज्ञ छिन्नं तु वृषणं पुरा।
ऋषिणा गौतमेनोर्व्यां क्रुद्धेन विनिपातितम् ॥ २७ ॥

---

१. हिन्दी विश्रामसागर मे भी इस प्रकार का निर्देश मिलता है—सुनि मुनि गे तमचुर सम बानी (अध्याय ७)।

२. अध्यात्म रामायण मे भी गौतम हिमालय जाते हैं (१, ५, ३३)।

३. दे० शांति पर्व ३२९, १४ (१)। महाभारत के एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि अहल्या के कारण इन्द्र को शाप दिया गया था, दे० १३, १५३, ६ (यह संदर्भ गीता प्रेस के संस्करण का है)।

वाल्मीकि के बालकाण्ड के वृत्तान्त मे गौतम शाप द्वारा इन्द्र को नपुसक बना देते हैं।[1] बालकाण्ड के इस शाप का उल्लेख परवर्ती रचनाओ मे तो मिलता है,[2] किन्तु गौतम-शाप का सर्वाधिक प्रचलित रूप यह है कि इन्द्र के शरीर में सहस्र भग प्रकट हुये, दे० ब्रह्मपुराण (८७, ५६) , स्कन्द-पुराण (नागरखण्ड, अ० २०७), कथा-सरित्सागर (३, १७), पद्मपुराण (५, ५१, २८), अध्यात्म रामायण (१, ५, २६), कंब रामायण (१, ६); रगनाथ रामायण (१, २६), ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ४७ और ६१), आनन्द रामायण (१, ३, १६), वलरामदास रामायण; तत्वसग्रह रामायण (१, २५), तोरवे रामायण (१, १२); कृत्तिवास रामायण (१, ५६) । इन सव रचनाओ मे प्राय: इसका उल्लेख मिलता है कि इन्द्र वाद मे सहस्र भगवान् से सहस्रनयन वन गये । ब्रह्मपुराण के अनुसार गौतमी नदी मे स्नान करने से इन्द्र मे यह परिवर्तन हो सका था किन्तु ब्रह्मवैवर्त्त पुराण मे इन्द्र को इसके लिए एक सहस्र वर्ष तक सूर्य की आराधना करनी पडी । इस रचना मे गौतम के दो अन्य शापो का भी उल्लेख है—'पूर्णवर्षं च सततं योनिगंधं त्वमाप्नुहि' और 'भ्रष्टश्री भव' (दे० अध्याय ४७, ३१-३२) । वलरामदास तथा कंब रामायण के अनुसार गौतम ने ब्रह्मा के अनुरोध पर अपना शाप वदलकर इन्द्र को सहस्रनयन वना दिया था ।[3] कृत्तिवास (दे० १, ६०) के अनुसार इन्द्र के अश्वमेध-यज्ञ करने पर उनमे यह परिवर्तन आ गया है । पद्मपुराण (५, ५१, ४८) के अनुसार देवी के वरदान के फलस्वरूप इन्द्र सहस्राक्ष वन गये थे ।

माधवदेवकृत असमिया वालकाण्ड (अध्याय ३८) मे इस सवध मे निम्न-

---

१ इस शाप के कारण इन्द्र का वृषण भूमि पर गिर गया (सर्ग४८) । अगले सर्ग मे देवताओ द्वारा इन्द्र को मेष का वृषण दिलाने का वर्णन है । महाभारत के अनुसार विश्वामित्र ने ही इन्द्र को इस प्रकार का शाप दिया था—कौशिकनिमित्तं चेंद्रो मुष्कवियोगं मेषवृषणत्वं चावाप (दे० शांति पर्व, ३२६, १४ (२) ।

२. दे० पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड-५१, २६), वलरामदास रामायण, तत्व-सग्रह रामायण आदि ।

३ वास्तव मे सहस्रनयन अथवा सहस्राक्ष उपाधि महाभारत के आदिपर्व से लेकर इन्द्र के लिए प्रयुक्त हुई है (दे० अध्याय २१, १२) । इसकी उत्पत्ति की भी कथा दी गई है; तिलोत्तमा को देखने की अभिलाषा मे इन्द्र स्वतः सहस्राक्ष वन गये थे (दे० आदिपर्व २०३, २६)।

लिखित कथा मिलती है। इन्द्र भिक्षार्थी ब्राह्मण का रूप धारण कर गौतम के आश्रम से चले गये थे। रास्ते मे गौतम से भेंट होने पर इन्द्र कांपने लगे, गौतम को यह देखकर सन्देह हुआ और उन्होंने इन्द्र को पहचान कर उन्हे (नपुंसक तथा सहस्रभगवान बनने का) दोहरा शाप दिया। इन्द्र अपनी यह लज्जाजनक दशा देख कर एक पद्मकोष मे छिप गये। बहुत दिनो के बाद शची ने बृहस्पति से पूछा कि इन्द्र कहाँ है। दुर्गा से इन्द्र के छिपने का स्थान जानकर बृहस्पति ने वहाँ जाकर उन्हे दुर्गा की पूजा करने का परामर्श दिया। इन्द्र की पूजा से सन्तुष्ट होकर दुर्गा ने कहा कि मैं शाप दूर करने मे असमर्थ हूँ, किन्तु मैं उसे बदल सकती हूँ, इस पर दुर्गा ने इन्द्र को सहस्रनयन बना दिया था। घर पहुँच कर इन्द्र ने अश्विनीकुमारो को बुलाया और उन्होंने इन्द्र को अज का अण्डकोष लगाया। इसी कारण से अज पवित्र हो गया है तथा पितृकार्य मे इसका मास चढाया जाता है।

महाभारत मे अहल्या के प्रति किसी शाप का उल्लेख नही है। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार गौतम ने अहल्या से कहा कि तुम्हारे सौन्दर्य के कारण यह अनर्थ हुआ है, अत. अब से लेकर तुम अकेली ही सुन्दर नही होगी, सभी लोग तुम्हारे सौदर्य के भागी बन जायँगे ·

तस्माद्रूपवती लोके न त्वमेका भविष्यसि।
रूपं च ते प्रजाः सर्वा गमिष्यन्ति न संशयः॥ (सर्ग-३०, ३७-३८)

वालकाण्ड (सर्ग ४८) के वृत्तान्त मे गौतम अहल्या को आदेश देते हैं कि वह अदृश्य होकर राम के पहुँचने तक तपस्या करे :

इह वर्षसहस्राणि बहूनि निवसिष्यसि ॥ २९ ॥
वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन्वसिष्यसि ॥ ३० ॥

पद्मपुराण (सृष्टिखड ५१, ३३) मे अहल्या को मासहीन, अस्थिचर्मावशिष्ट हो जाने का शाप दिया जाता है—

अस्थिचर्मसमाविष्टा निर्मांसाऽनखवर्जिता।
चिरं स्थास्यसि चैकाऽपि त्वां पश्यन्तु जनाः स्त्रियः॥

वाल्मीकि के वालकाण्ड मे गौतम यह भी कहते हैं कि राम का आतिथ्य-सत्कार करने के पश्चात् तुम पूर्ववत् अपना शरीर धारण कर मेरे पास आओगी अर्थात् अपने पूर्वरूप मे मेरे साथ रहोगी—स्वं वपुर्धारयिष्यसि (४८, ३२)। सम्भवतः इस वाक्यांश के कारण यह धारणा उत्पन्न हुई कि अहल्या शापवश शिला बन गई थी। शाप का यह परिणाम पहले-पहल रघुवंश (११, ३४) मे पाया जाता है। आगे चलकर पाषाणभूता अहल्या का बहुत सी रचनाओ मे उल्लेख मिलता है; उदाहरणार्थ :

नृसिंह पुराण (अध्याय ४७); स्कंदपुराण (रेवाखण्ड, अ० १३६, नागरखण्ड, अ० २०८); जानकीहरण (६, १४); कथासरित्सागर (३, १७); महानाटक (३, १७); वह्निपुराण (पृ० १८२); उदारराघव (३, २६); सोमेश्वरकृत रामशतक (१८); कंब रामायण (१, ६); रंगनाथ रामायण (१, २६); सारलादासकृत महाभारत (मध्य पर्व पृ० २०३); कृत्तिवास रामायण (१, ५६); ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अ० ४७ और ६१); गणेश पुराण[1]; पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, अ० २६९ तथा गौडीय पातालखण्ड, अ० १६), आनन्द रामायण (१, ३, १६); राघवोल्लास काव्य (सर्ग ३); तोरवे रामायण (१, १२); रामचरितमानस (१, २१०); गीतावली (१, ५७); असमिया बालकाण्ड; सूरसागर (नवम स्कंध, पद ४६६); सत्योपाख्यान (२, ५); मराठी भावार्थ रामायण (१, १४), तत्त्वसंग्रह रामायण (१, २५); पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १० आदि।

रामकियेन के अनुसार गौतम ने अहल्या को इसी उद्देश्य से पत्थर बनने का शाप दिया था कि नारायण के रामावतार के समय वह सेतु बनाने के काम में आ जाये और इस प्रकार लंका के लिए सागर में बनाया जाय (अध्याय ३)।

गौतम के शाप का एक अन्य रूप भी प्रचलित है; इसके अनुसार अहल्या नदी बन गई थी। ब्रह्मपुराण (८७, ५६) में शाप इस प्रकार है— शुष्कनदी भव पापे। आनन्द रामायण (१, ३, २३) के अनुसार अहल्या जनस्थान में नदी के रूप में प्रकट हुई।[2] पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ५१, ३३) के अनुसार गौतम के शाप के कारण अहल्या का शरीर सूख गया था—अस्थिचर्मसनाविष्टा निर्मला।

योगवासिष्ठ के रचयिता ने पौराणिक कथा के अनुकरण पर एक अन्य अहल्या तथा इन्द्र को एक दूसरे के अनन्य प्रेमियों के रूप में चित्रित किया है। कथा इस प्रकार है :

इन्द्रद्युम्न नामक राजा की पत्नी अहल्या ने किसी दिन गौतम की पत्नी अहल्या तथा इन्द्र की कथा सुनी, जिससे वह अपने नगर के सुन्दर ब्राह्मण-कुमार इन्द्र पर आसक्त हुई। रानी ने ब्राह्मण-कुमार को देखना चाहा। एक सखी इन्द्र को रानी के पास ले आई जिससे दोनों में परम अनुराग उत्पन्न हुआ और वे उस समय से गुप्त मिलते थे। राजा ने वृत्तान्त सुनकर दोनों को दण्ड दिया, किन्तु एक दूसरे के प्रेम में

१. दे० सातवलेकर, श्री रामायण महाकाव्य का बालकाण्ड (१९४३), पृ० ५५६।

२. अपभ्रंश में सिर (शिला) का अर्थ 'शिला' तथा 'नदी' दोनों हो सकता है; संभव है इसी कारण से गौतम के शाप का यह रूप प्रचलित हुआ।

मग्न रहने के कारण उनको इस शारीरिक दण्ड का अनुभव ही नही हुआ। यहाँ तक कि हाथियो के पैरो के नीचे डाले जाने पर अथवा अग्नि मे फेंके जाने पर भी उनको दु.ख नही हुआ। दोनो का प्रेम नष्ट करने मे असफल होकर राजा भरत नामक ऋषि के पास गए और उन्होने उनसे दोनो को शाप देने की प्रार्थना की। भरत ने ऐसा ही किया और दोनो के शरीर शापवश भूमि पर गिर पडे। दोनो मृगयोनि मे उत्पन्न होकर साथ ही रहते थे। बाद मे दोनो पक्षी बने और इसके बाद ब्राह्मण-दम्पत्ति के रूप मे प्रकट होकर एक-दूसरे मे अनुरक्त रहे। इसके पीछे भी उनके अनेक जन्म हो गए, लेकिन दोनो प्रत्येक जन्म मे एक दूसरे से प्रेम करते रहे (दे० उत्पत्ति प्रकरण, सर्ग ८९)।

३४७ अहल्या की कथा का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमे अजनी उसकी पुत्री मानी गई है। इस कथा का बीज कथासरित्सागर मे विद्यमान है, जहाँ अजना का उल्लेख नही है। गौतम ऋषि दिव्य ज्ञान द्वारा अपनी पत्नी अहल्या का इन्द्र के साथ व्यभिचार जानकर अकस्मात् घर पहुँचे, इस पर इन्द्र ने मार्जार का रूप धारण कर लिया। गौतम के पूछने पर अहल्या ने प्राकृत मे—**एसो ठिओ खु मज्जारो (एष स्थितः खलु मार्जारः)**; इसके दो अर्थ हैं—यह मार्जार है अथवा यह मेरा जार है। उत्तर सुनकर गौतम ने इन्द्र और अहल्या दोनो को शाप दिया; अहल्या को शिला बन जाने का तथा इन्द्र को सहस्रयोनि हो जाने का (दे० ३, १७)। इस वृत्तान्त पर आधारित अजनी के विषय मे निम्नलिखित कथा पजाब मे प्रचलित है—गौतम ने गगा-स्नान से लौटकर अपनी पुत्री अंजनी से पूछ लिया था कि घर मे कौन है। अजनी ने उत्तर दिया—'माजार' (मार्जार अथवा माँ का जार)। इस द्व्यर्थता के कारण गौतम ने अपनी पुत्री को गर्भवती हो जाने का शाप दिया और फलस्वरूप उसने हनुमान को जन्म दिया (दे० मैकॉलिफ, दि० सिख रेलिजन, भाग ६, पृ० ५२ और अनु० ६७२)। इस कथा के विकसित रूप में गौतम की पत्नी अहल्या की तीन सन्ताने है—अजनी (गौतम की पुत्री) और दो पुत्र वालि और सुग्रीव, जिन्हे गौतम तो अपनी सतान समझते हैं, किन्तु वास्तव मे वे इन्द्र और सूर्य के पुत्र है (दे० आगे अनु ५१४)।

३४८. महाभारत मे अहल्या की कथा के प्रसग मे राम का उल्लेख नही होता। राम द्वारा अहल्योद्धार का प्राचीनतम रूप वाल्मीकि रामायण मे सुरक्षित है। उत्तरकाण्ड के अनुसार गौतम ने अहल्या को आश्वासन दिया कि विष्णु-अवतार राम के दर्शन-मात्र से वह पवित्र हो जायेगी (तं द्रक्ष्यसि यदा भद्रे ततः पूता भविष्यसि; सर्ग ३०, ४३)। बालकाण्ड के वृत्तान्त (सर्ग ४९) मे राम के विष्णुत्व की ओर निर्देश नही किया गया है। गौतम ने अहल्या से कहा—'तपस्या करो तथा राम के आने पर

उनका आतिथ्य-सत्कार करने के बाद मेरे पास लौटो।' राम के आगमन तक वह शाप के प्रभाव से अदृश्य होकर तपस्या करती है। विश्वामित्र ने यह कथा सुनकर राम तथा लक्ष्मण आश्रम में प्रवेश करते हैं। उसी समय शाप की अवधि समाप्त हो जाती है, अतः वे अहल्या को देखने में समर्थ हैं और ऋषि-पत्नी के पैर छूते हैं : राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुस्तदा।[1]

राम-लक्ष्मण का आतिथ्य-सत्कार करने के पश्चात् (पाद्य मर्घ्यं तथातिथ्यं चकार सुसमाहिता) अहल्या अपने पति के पास लौट जाती है (सर्ग ४६)।

अधिकांश परवर्ती रचनाओं के अनुसार अहल्या वास्तव में शिला बन गई थी और राम उसे अपने चरण के स्पर्श से पुनर्जीवन प्रदान करते हैं, उदाहरणार्थ : महानाटक (३, १७), आनन्द रामायण (१, ३, २०), ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णखण्ड अध्याय ४७ और ६१) आदि। कृत्तिवास के अनुसार राम ने अहल्या के मस्तक पर ही अपना पैर रखकर उसे पाषाण में से प्रकट किया था।

उदारराघव (३, २६-४१) के अनुसार राम के चरण-स्पर्श से पत्थर से स्त्री बनते देखकर विश्वामित्र और दोनों राजकुमार विस्मित हो गये। इस पर अहल्या अपनी कथा सुनाती, राम-सीता-विवाह की भविष्यवाणी करती और विश्वामित्र से अनुरोध करती है कि वह राम-लक्ष्मण को मिथिला ले जाये। गौतम अपनी पत्नी ग्रहण करते हैं और वे दोनों भी विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी जाते हैं।

स्कन्द पुराण की कथा में शैव सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट है। इसके अनुसार राम ने हाथ से शिला का स्पर्श करके अहल्या का उद्धार किया और उसे विभिन्न तीर्थों की यात्रा करने का आदेश दिया। अहल्या ने ऐसा किया और अनेक तीर्थों में हर्लिंग की स्थापना की (दे० नागरखण्ड, अ० २०८)।

पद्मपुराण के अनुसार गौतम ने अपने शाप के अन्त के विषय में अहल्या को आश्वासन दिया कि राम किसी दिन सीता तथा लक्ष्मण के साथ इस आश्रम में आयेंगे तथा तुमको 'शुष्करूपा प्रतिमा' के रूप में देखकर वसिष्ठ से पूछ लेंगे कि यह मूर्ति क्या है। वसिष्ठ से पूर्व वृत्तान्त सुनकर राम तुमको निर्दोष घोषित करेंगे, तब तुम दिव्य रूप धारण कर मेरे पास आओगी : दिव्यरूपं समास्थाय मद्गृहं चागमिष्यसि (दे० सृष्टिखण्ड, अध्याय ५१)।

---

१. दे० श्लोक १७। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार अहल्या ने भी राम-लक्ष्मण के पैर छुए—'स्मरन्ती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा हि तौ'। यह अर्द्धश्लोक प्रक्षिप्त है; इसके स्थान पर उदीच्य हस्तलिपियों में प्रायः मिलता है—'सा च तौ पूजयामास स्मृत्वा गौतमभाषितम्।"

नदी-रूपा अहल्या का उद्धार दो प्रकार से वर्णित है। ब्रह्मपुराण मे राम का उल्लेख नही है, गौतमी नदी से मिलने पर अहल्या ने अपना पूर्व रूप धारण किया था—**तया तु संगता देव्या (गौतम्या) अहल्या गौतमप्रिया पुनस्तद्रूपमभवत्** (८७, ६६)। आनन्द रामायण के अनुसार राम ने मिथिला जाते समय पाषाणभूता अहल्या का उद्धार किया था, किन्तु उस रचना मे कल्पभेद का भी उल्लेख है, जिसके अनुसार राम ने वनवास के समय नदी-रूपा अहल्या का स्पर्श करके उसको शाप मुक्त किया था : **रामेण भ्रमतारण्ये स्वांघ्रिस्पर्शात्समुद्धृता नदीरूपा अहल्या** (१, ३, २१)।

रामभक्ति से अनुप्राणित रचनाओ मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वातावरण नितान्त बदल गया है। अध्यात्म रामायण का रचयिता पाषाणभूता अहल्या की कथा से अनभिज्ञ नही था (दे० केवट वृत्तान्त १, ६, ३) फिर भी उसने माना है कि अहल्या शिला पर खड़ी होकर तपस्या करती रही (**तिष्ठ दुर्वृत्ते शिलायामाश्रमे मम**; १, ५, २७)। राम ने उस आश्रयशिला का अपने चरण से स्पर्श किया और उसको अपना विष्णु-रूप दिखाया। अहल्या ने राम का विधिवत् पूजन किया और अनन्तर एक विस्तृत स्तुति मे राम के ब्रह्मस्वरूप का निरूपण किया तथा भक्ति का वरदान माँगा (१, सर्ग ५)। अहल्या की स्तुति को राघवोल्लास काव्य (सर्ग ७) तथा रामचरितमानस मे भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। इस तरह "अहल्या-उद्धार की यह प्रसिद्ध पौराणिक कथा ब्राह्मण-ग्रन्थो के अहल्याजार इन्द्र से प्रारभ होकर अनेक रूप धारण करने के उपरान्त अहल्या-तारक राम की भक्ति मे लय हो जाती है।"[1]

अधिकाश रचनाओ के अनुसार राम ने मिथिला की यात्रा मे अहल्या का उद्धार किया था। फिर भी अनेक रामकथाओ मे राम के वनवास के समय इस घटना का वर्णन किया गया है। महानाटक मे अगस्त्याश्रम से चले जाने के उपरान्त राम अहल्या का उद्धार करते है (दे० अक ३)। रामलिगामृत मे राम सीता की खोज करते हुए शिलामयी अहल्या को शाप से मुक्त कर देते है (दे० सर्ग ६)। आनन्द रामायण मे भी वनवास के समय इसका वर्णन किया गया है। रामायण मसीही के अरण्यकाण्ड मे राम द्वारा पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा मिलती है। काश्मीरी रामायण के अरण्यकाण्ड के प्रारभ मे राम सीता से अहल्या का परिचय कराते है।

नाटककारो ने रामकथा को बदलने मे कभी सकोच नही किया है। जानकी-परिणय मे अहल्योद्धार की कथा इस प्रकार है। सीता-स्वयवर के पूर्व राक्षसो द्वारा निर्मित एक माया-सीता के प्राणो को संकट मे देखकर राम आत्महत्या करने के उद्देश्य

१. दे० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : विचारधारा, पृ० ३४।

से एक चट्टान पर से नीचे कूदना चाहते है। लेकिन राम के स्पर्श से इस चट्टान से प्रकट होकर अहल्या राम को राक्षसी माया का रहस्य बताती है।[1]

ङ। परशुराम

३४६ वाल्मीकि रामायण मे परशुराम के तेजोभग का प्रसग बालकाण्ड के विकास के अन्तिम सोपान का है, इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ३३३)। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा विमलसूरि के पउमचरिय मे इस घटना की ओर कही भी निर्देश नही मिलता। महाभारत के अनेक स्थलो पर परशुराम की कथा का वर्णन किया गया है, किन्तु पूना के प्रामाणिक सस्करण मे राम द्वारा उनके तेजोभग का उल्लेख कही भी नही किया गया है। अत. यह प्रसग अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रतीत होता है।

रामकथाओ मे प्राय परशुराम के दो कार्यो की ओर निर्देश किया जाता है, एक मातृवध तथा दूसरा क्षत्रियो का विनाश। दोनो का वर्णन पहले-पहल महाभारत मे किया गया है। परशुराम जमदग्नि तथा रेणुका के पाँचवे पुत्र थे। किसी दिन उन्होंने जमदग्नि की आज्ञा शिरोधार्य कर अपने परशु[2] से अपनी माता का मस्तक काट डाला और अपने इस आज्ञापालन के फलस्वरूप वर पाकर उसे फिर जिलाया था-(दे० ३, अध्याय ११६)। महाभारत के अनुसार परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय-विहीन कर दिया : **त्रिःसप्तकृत्व पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां पुरा** (दे० १, ५८, ४)। कथा इस प्रकार है। कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन ने जमदग्नि की कामधेनु के बछड़े को चुराया था, जिसपर परशुराम ने उनका वध किया था। बाद मे सहस्रार्जुन के पुत्रो ने परशुराम की अनुपस्थिति मे जमदग्नि को मार डाला। प्रतिकारस्वरूप परशुराम ने पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियविहीन कर उसे कश्यप को प्रदान किया और महेन्द्र पर्वत पर निवास करने लगे (दे० वनपर्व, अध्याय ११३-११७, शातिपर्व, अध्याय ४६)।

अर्वाचीन रामकथाओ मे परशुराम का कई अवसरो पर उल्लेख होता है।

---

१ केवट का वृत्तान्त (दे० आगे अनु० ४३२) पाषाणभूता अहल्या के उद्धार पर आधारित है, इसी वृत्तान्त के फलस्वरूप कुछ रचनाओ मे यह कल्पना कर ली गई है कि वानर-सेना ने राम को पैरों से सेतु का स्पर्श नही करने दिया (दे० आगे अनु० ५८१)।

२ प्रचलित महाभारत के एक श्लोक के अनुसार परशुराम ने गधमादन पर्वत पर महादेव को सन्तुष्ट कर अत्यन्त तेजस्वी कुठार तथा अनेक प्रकार के शस्त्र प्राप्त किये थे। पूना का प्रामाणिक सस्करण यह श्लोक प्रक्षिप्त मानता है, दे० १२, ४६, २६, पाद-टिप्पणी।

वेदान्त रामायण मे वाल्मीक राम को परशुराम की कथा सुनाते है (दे० ऊपर अनु० १८३)। शान्ता-स्वयवर (दे० अनु० ३४३) तथा दशरथयज्ञ (अनु० ३५८) के अवसर पर परशुराम के आगमन का वर्णन किया गया है। कृत्तिवास रामायण के अनुसार परशुराम ने दशरथ को शब्दभेदी बाण चलाना सिखलाया था (दे० १, २३) तथा शिव की आज्ञा से जनक के पास शिव-धनुष ले आये थे (दे० अनु० ३६२)। भावार्थ रामायण के अनुसार उन्होने सीता-स्वयवर के अवसर पर जनक को धनुप की परीक्षा लेने का परामर्श दिया था (दे० १, १७)।

३५०. वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम-परशुराम के सघर्प का कारण यह है कि क्षत्रिय-विरोधी परशुराम दाशरथि राम के पराक्रम तथा उनके द्वार धनुर्भंग के विषय मे सुनकर उनके साथ द्वन्द्व-युद्ध करना चाहते है। वे विष्णु-चाप लिए आते हैं और राम से निवेदन करते है कि इसे चढाकर वह अपने को योग्य प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध करे। विष्णु-चाप का इतिहास इस प्रकार है: विश्वकर्मा ने दो धनुषो का निर्माण किया था, एक शिव के लिए और एक विष्णु के लिए। किसी दिन विष्णु तथा शिव मे युद्ध होने वाला था कि विष्णु के हुँकार मात्र से शिव का यह धनुष ढीला पड गया और शिव हार गये। बाद मे शिव ने अपना धनुप विदेह के राजा देवरात को दे दिया तथा विष्णु ने अपना धनुप भृगुवशी ऋचीक को (बालकाण्ड, सर्ग ७५)। महाभारत के शातिपर्व (अध्याय २७८) मे माना गया है कि शिव ने अपने शूल को ही झुकाकर पिनाक मे परिणत कर दिया था:

आनतेनाथ शूलेन पाणिनामिततेजसा।
पिनाकमिति चोवाच शूलमुग्रायुध प्रभुः ॥ १८॥

अनुशासनपर्व के दाक्षिणात्य पाठ (गीताप्रेस गोरखपुर सस्करण, पृ० ५६१५) के अनुसार ब्रह्मा ने एक ही बास से पहले दो धनुष बनाये, एक शिव के लिए और दूसरा विष्णु के लिए। बाद मे उन्होंने उसी बास के अवशेप से गाण्डीव बना कर उसे सोम को प्रदान किया। अर्जुनदास ने भी मान लिया है कि ब्रह्मा ने एक ही बाँस से पिनाक, वैष्णव धनुष तथा गाण्डीव तीनो का निर्माण किया था।

वाल्मीकि तथा अधिकाश रामकथाओ के अनुसार राम-परशुराम-सघर्ष का कारण यह है कि परशुराम एक सुयोग्य प्रतिद्वन्द्वी क्षत्रिय से युद्ध करना चाहते है। नृसिंह पुराण मे पहले-पहल एक अन्य कारण का उल्लेख मिलता है। परशुराम राम को यह चुनौती देते हैं: या तो राम नाम छोड दो अथवा मेरे साथ युद्ध करो (**त्यज त्वं रामसंज्ञां तु मया वा समरं कुरु**; अध्याय ४७, १४६)। अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण मे जो कारण दिया गया है, वह वाल्मीकीय बालकाण्ड तथा नृसिंह पुराण के कारणो का सम्मिलित रूप है; परशुराम कहते है:

त्वं राम इति नाम्ना मे चरसि क्षत्रियाधम ॥
द्वन्द्वयुद्धं प्रयच्छाशु यदि त्वं क्षत्रियोऽसि वै ।

(अध्यात्म १, ७, ११ आनन्द रा० १ ३. ३५०)

हिन्देशिया के सेरी राम तथा कम्बोडिया की रामकेर्ति मे राम नाम ही संघर्ष का कारण माना गया है।

राम-नाटको मे इसका एक तीसरा कारण मिलता है। अध्यात्म रामायण मे परशुराम शिव के धनुष की अवज्ञा करते हुये कहते है कि यह तो पुराना तथा जर्जर है—पुराणं जर्जरं चापं भंक्त्वा त्वं कत्थसे मुधा (१, ७, १२), किन्तु राम-नाटको मे परशुराम को शिव का शिष्य माना गया है और वे अपने गुरु के प्रति किये हुए अनादर का प्रतिकार करने आते है। इस कारण का प्रथम उल्लेख महावीरचरित मे मिलता है—रावण-मत्री माल्यवान के उकसाने पर (अक २, १२) परशुराम हरचापभजक राम का दमन करने के लिए मिथिला मे आ पहुँचते हैं (अक २, १७)। असमिया बालकाण्ड मे भी परशुराम के क्रोध का कारण यह है कि उनके गुरु शिव का धनुष तोडा गया है (अध्याय ४४)। परवर्ती रचनाओ मे परशुराम को बहुधा शिव के शिष्य अथवा शैव-सन्यासी के रूप मे चित्रित किया गया है, उदाहरणार्थ : अनर्घ-राघव (४, ३२), बाल रामायण (अक ४), महानाटक (१, १८), प्रसन्नराघव (इसमे धनुर्भग के पूर्व भी परशुराम का दूत आकर जनक से निवेदन करता है कि शिव-धनुष का अनादर न किया जाय। दे० अक ३, ३८), रामगीतगोविन्द (सर्ग २, १२), रामचरितमानस (१, २६८)। कृत्तिवास दो कारणो का उल्लेख करते हैं—परशु-राम के गुरु शिव के धनु का अपमान तथा राम का नाम (मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम, दे० १, ६३)। रंगनाथ रामायण (१, ३७) मे तीनो कारणो की चर्चा है।

३५१ वाल्मीकि रामायण (तथा अधिकाश परवर्ती रामकथाओ) के अनुसार परशुराम विवाह के पश्चात् अयोध्या की यात्रा मे राम को चुनौती देने आते हैं। वास्तव मे दोनो का युद्ध होता ही नही, क्योकि ज्यो ही राम विष्णु-चाप चढाते हैं, परशुराम निस्तेज होकर राम को विष्णु के रूप मे प्रणाम करते हैं। राम चढे हुए बाण से परशुराम के तपोबल द्वारा सचित लोक[1] नष्ट करते हैं और परशुराम महेन्द्र पर्वत की ओर प्रस्थान करते है (सर्ग ७६)।

---

१. भावार्थ रामायण (१, २६) मे इस घटना को एक आध्यात्मिक अर्थ दिया गया है। राम ने परशुराम का अहकार नष्ट किया था, जिससे परशुराम को अपने तप द्वारा सचित लोक मे जाने की इच्छा नही रही।

अद्‌भुत रामायण (सर्ग ६) तथा महाभारत के एक प्रक्षिप्त[1] अश मे राम ने धनुष चढाकर परशुराम को अपना विराट् रूप दिखलाया और अनन्तर वाण छोडकर उनका तेज ले लिया, जिससे परशुराम ने होश मे आकर राम को विष्णु-अवतार मानकर प्रणाम किया तथा उनकी आज्ञा लेकर वह महेन्द्र पर्वत को चले गये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ के अनुसार राम ने क्षत्रिय-विध्वस के प्रायश्चित्त के लिए तप करने के उद्देश्य से परशुराम को महादेव के पास भेज दिया। रामकेर्ति मे रामपरमसू को एक क्रूर यक्ष माना गया है, राम उनसे कहते है कि मैं नारायण का अवतार हूँ। इसपर रामपरमसू प्रमाण के रूप मे चाहते हैं कि राम उनका चाप उठा ले। राम लीलापूर्वक वाये हाथ से उस धनुष को उठाकर वाण चढाते हैं, जिसपर रामपरमसू घुटने टेककर क्षमा माँगते है तथा राम को अपना धनुष तथा अपने ऐन्द्रजालिक वाण भी अर्पित करते है।

कृत्तिवास के रामायण मे सीता यह देखकर कि परशुराम धनुष लिए आते है, इस प्रकार आशका प्रकट करती हैं—एक धनुष तोडकर रघुनाथ ने मेरे साथ विवाह किया, अब भृगु मुनि एक और धनुष लाये है। न जाने मेरी कितनी सपत्नियाँ होगी (१, ६३)। गोविन्द रामायण मे सीता की यह आशका इस प्रकार व्यक्त की गई है :

तोर शरासन संकर को जिमि
मोहिं वर्‌यो तिमि और वरंगे (पृ०३४)

अध्यात्म रामायण (१, ७), आनन्द रामायण (१, ३, ३७७), राघवोल्लास काव्य (सर्ग १२), रामचरितमानस आदि मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वातावरण नितान्त वदल दिया गया है। तेजोभग के पश्चात् परशुराम द्वारा राम की स्तुति को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है और परशुराम अचल रामभक्ति का वरदान प्राप्त कर चले जाते है। राघवोल्लास काव्य मे परशुराम राम की प्रभावपूर्ण वातो से ही शान्त हो जाते है। राम को उनका धनुष नही चढाना पडता है। परशुराम अपने सभी अस्त्र-शस्त्रो को वही राम के चरणो पर छोडकर प्रस्थान करते है। कंब रामायण (१, २२) के अनुसार परशुराम-तेजोभग के पश्चात् देवता लोग आकाश मे दिखाई देकर पुष्पवृष्टि करते हैं और राम विष्णु-धनुष वरुण को अर्पित कर देते हैं।

महावीरचरित से लेकर अधिकाश राम-नाटको मे परशुराम के मिथिला मे आगमन का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ . अनर्घराघव, वालरामायण, महानाटक, प्रसन्नराघव और यज्ञफल। इन नाटकों के प्रभाव के कारण रामचरितमानस, रामचन्द्रिका

१. दे० प्रचलित महाभारत ३, ६६, ३४ आदि तथा पूना का प्रामाणिक सस्करण, आरण्यक पर्व, परिशिष्ट १, न० १४।

तथा गोविन्द रामायण मे तेजोभग-वर्णन मिथिला मे ही रखा गया है।

इन वृत्तान्तो की एक अन्य विशेषता यह है कि इस प्रसग को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया जाता है तथा राम-परशुराम के वाग्युद्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है। परशुराम का क्रोध बहुत उग्र रूप धारण कर लेता है और वह बार-बार राम का वध करने की धमकी देते है (दे० महावीरचरित २, ३२, ३, १६ आदि)। प्रस्तुत प्रसग के प्रारम्भिक वर्णनो के अनुसार लक्ष्मण इसमे कोई भाग नही लेते।

राजशेखर के बालरामायण के अनुसार दशरथ तथा इसके अनन्तर परशुराम भी राम-सीता-विवाह के पश्चात् ही मिथिला पहुँचते हैं। विश्वामित्र का आदेश पाकर लक्ष्मण ही नारायणीय धनुष पर प्रत्यचा चढाते है, जिस पर जनक लक्ष्मण और ऊर्मिला के विवाह का प्रस्ताव करते हैं (अक ४, ७५)। इसके बाद विश्वामित्र के सुझाव के अनुसार भरत-माण्डवी तथा शत्रुघ्न-श्रुती-कीर्त्ति के विवाह भी निश्चित हो जाते है।

प्रसन्नराघव (तथा उस पर आधारित रामचरितमानस तथा कृत्तिवास रामायण) मे लक्ष्मण राम-परशुराम के वाग्युद्ध मे भाग लेकर परशुराम का अपमान करते है। रामचन्द्रिका मे भरत (७, २२) तथा शत्रुघ्न (७, २८) भी परशुराम को सम्बोधित करते है तथा अन्त मे महादेव स्वय आकर दोनो रामदेवो को समझाकर शात कर देते है (७, ४३)।

भारतीय रामकथाओ मे प्रायः राम-परशुराम के किसी युद्ध का वर्णन नही किया गया है, फिर भी **महावीरचरित** (अक ३, ४८), **अनर्घराघव** (अक ४, ५६) और **प्रसन्नराघव** (अक ४, ४२) के अनुसार राम तथा परशुराम युद्ध करने के उद्देश्य से रगमच से चले जाते है।[1] राम के वैष्णव धनुष चढाने पर परशुराम का तेज नष्ट हो जाता है, जिससे युद्ध की नौबत नही आती, परशुराम राम का यथार्थ स्वरूप पहचानकर तपस्या करने जाते है। शकरदेवकृत **रामविजय** मे कथा इस प्रकार है . अयोध्या के रास्ते मे परशुराम ने राम का वध करने का प्रयत्न किया, क्योकि राम ने उनके गुरु का धनुष तोड डाला था। द्वन्द्वयुद्ध मे राम ने परशुराम को पराजित किया तथा उनका स्वर्ग जाने का मार्ग सदा के लिए बन्द कर दिया था। **तोरवे रामायण** (१, १७) के अनुसार राम ने अपने तोमर से परशुराम का परशु आकाश मे फेक दिया तथा बाद मे अपने रथ से उतरकर परशुराम के हाथो से वैष्णव धनुष भी छीन लिया।

विदेशी रामकथाओ मे राम तथा परशुराम का सघर्ष और उग्र रूप धारण कर

---

१. अनर्घराघव मे लिखा है : **विमर्दक्षमं प्रदेशान्तरमवतराव.;** प्रसन्नराघव मे : **समरक्षमां क्षमामवतरामः**। गोविन्दरामायण मे दोनो सेनाओ का तुमुल युद्ध वर्णित है, किन्तु राम-परशुराम का कोई द्वन्द्व-युद्ध नही होता।

लेता है। खोतानी रामायण के अनुसार राम ने वाण मारकर परशुराम का वध किया। कथा इस प्रकार है : किसी दिन दशरथ ने परशुराम के पिता के आश्रम पर उनकी कामधेनु को देखा था तथा बाद मे उनका पुत्र सहस्रबाहु उसे चुराने आया। अपने पिता के प्रति किये हुए अन्याय का प्रतिकार करने के उद्देश्य मे परशुराम ने तपस्या की, कुठार प्राप्त किया तथा दशरथ के पुत्र सहस्रबाहु का वध किया। बाद में सहस्रबाहु के पुत्र राम तथा लक्ष्मण परशुराम की खोज मे निकले, अन्त मे राम ने वाण चलाकर उन्हे मार डाला।

हिन्देशिया के सेरी राम के अनुसार पुष्पराम राम को आदेश देते हैं कि वह अपना नाम छोड दे। राम के अस्वीकार करने पर दोनो का द्वन्द्वयुद्ध दोपहर से सन्ध्या तक चलकर अनिश्चित रहता है। अगले दिन राम का वाण पुष्पराम का पीछा करता है, स्वर्ग, पाताल तथा महासागर पारकर पुष्पराम राम की शरण लेते हैं और उनको विष्णु का अवतार मानकर क्षमा-याचना करते हैं। रामकियेन के अनुसार राम ने द्वन्द्व-युद्ध के अन्त मे अपने को नारायण के रूप में प्रकट किया। इस पर रामासुर ने राम को ईश्वर का धनुष प्रदान किया। राम ने उसे ले लिया और आकाश मे फेक दिया, जिससे आवश्यकता पडने पर वह धनुष उनके काम आ सके (दे० अध्याय १३)।

३५२. महाभारत मे परशुराम की कथा का अनेक स्थलो पर वर्णन किया गया है, किन्तु इनमे कही भी उनके विष्णुत्व की ओर सकेत नही मिलता। फिर भी नारायणीय उपाख्यान मे विष्णु के अवतारो मे उनका उल्लेख किया गया है (दे० १२, ३२६, ७७)। परवर्ती रचनाओ मे विष्णु के अवतारो की सूची मे उनका नाम प्राय आया है, दे० हरिवंश (१, ४१, ११२-१२०, २, २२, २, ४८), विष्णु पुराण (१, ६, १४३), भागवत पुराण (१, ३, २०, २, ७, २२)।

वाल्मीकि रामायण मे परशुराम-तेजोभग के वर्णन से परशुराम के विष्णुत्व का उल्लेख नही मिलता। नृसिंह पुराण प्राचीनतम रचना है, जिसमे उनके तेजोभग के प्रसंग मे परशुराम का अवतार होने का सकेत किया गया है। राम के धनुष चढाने पर परशुराम का वैष्णव तेज उनके शरीर से निकल कर राम के मुख मे प्रविष्ट हुआ—**परशुरामस्य देहान्निष्क्रम्य वैष्णवं पश्यतां सर्वभूतानां तेजो राममुखेऽविशत्** (दे० अध्याय ४७, १४८-१४९)। अध्यात्म रामायण (१, ७, २४), आनन्द रामायण (१, ३, ३६४-३६६), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, २६६, १६२), रामचन्द्रिका[1] तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी तेजोभंग के प्रसग के अन्तर्गत ही परशुराम के अंशावतार होने

१. महादेव स्वयं आकर परशुराम को यह कहकर शात करते है : "एकै तुम दोऊ और न कोऊ एकै नाम कहाये", दे० रामचन्द्रिका ७, ४५।

का उल्लेख किया गया है।

च । नवीन सामग्री

३५३. वाल्मीकि के पश्चात् की रामकथाओ मे बालकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत प्रचुर मात्रा मे सर्वथा नवीन सामग्री रखी गई है।

(१) भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमिकाओ के अतिरिक्त प्रायः अवतार के कारणो का विस्तृत निरूपण किया गया है (दे० आगे अनु० ३६६-३७४)।

उन भूमिकाओ मे बहुधा सूर्यवश अथवा इक्ष्वाकुवंश के राजाओ का इतिहास भी दिया गया है। कालिदासकृत रघुवश, बगीय पद्मपुराण का पातालखण्ड, कृत्तिवास रामायण इसके विशिष्ट उदाहरण है। रावण की कथा बहुत-सी रचनाओ मे प्रारम्भ मे ही वर्णित है (दे० आगे अनु० ६४३)।

(२) दशरथ के विभिन्न विवाहो का तथा अन्ध-मुनि-पुत्र-वध का भी प्रायः रामकथा के प्रारम्भ मे वर्णन किया जाता है (दे० अनु० ३३७-३४० और ४३३)।

(३) कृष्ण बाललीला के अनुकरण पर बहुधा राम की बाललीला का भी किंचित् वर्णन मिलता है (दे० अनु० ३७६-३८०)। इसके अतिरिक्त भुशुण्डी तथा हनुमान् के साथ बालक राम की मित्रता की भी कल्पना कर ली गई है (दे० ३८१-३८२)।

(४) राम के प्रारभिक कृत्यो के वर्णन मे अनेक सर्वथा नवीन प्रसग आ गये है, उदाहरणार्थ म्लेच्छो से युद्ध, गुह से मैत्री, तीर्थ-यात्राएँ, वैराग्य, रासलीला (दे० अनु० ३८३-३८७)।

(५) सीता-स्वयवर (अनु० ३९४-३९८) तथा राम-सीता के पूर्वानुराग (दे० अ० ४०३) का भी बहुधा वर्णन किया जाता है, जो वाल्मीकि रामायण मे नही मिलता।

(६) बालकाण्ड की कथावस्तु के अन्तर्गत आगे चलकर शृगार रस का भी प्रवेश हुआ है। जानकीहरण (सर्ग ८) और महानाटक (अक २) मे विवाह के उपरान्त राम और सीता के सभोग का वर्णन किया गया है। जानकीहरण (सर्ग ३), जानकीपरिणय (अक ६) तथा कम्ब रामायण (१, १३-१७) मे दशरथ की क्रीडा का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। सत्योपाख्यान के उत्तरार्द्ध मे राम तथा सीता के जल-विहार (सर्ग २० और २६), वन-विहार (सर्ग २१), अशोकवन मे सीता की मानलीला (सर्ग २५), होलिकोत्सव (सर्ग २८) आदि का चित्रण किया गया है। बृहत्कोशलखंड (अध्याय १-५) तथा उडिया नृसिंह रामायण (तृतीय रत्नाकर) मे विवाह के पूर्व राम की रासलीला का वर्णन किया गया है। हनुमत्सहिता का मुख्य विषय है राम की रासलीला तथा जलविहार (दे० ऊपर अनु० १९०)।

३—अवतारवाद

क । दशरथ-यज्ञ

३५४ वाल्मीकि रामायण मे दशरथ के पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन के अन्तर्गत अवतारवाद का विस्तृत निरूपण किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद मे (दे० ऊपर अनु० ३३३) उस पुत्रेष्टि-यज्ञ का समस्त प्रसग प्रक्षिप्त होने के तर्क दिए गए है। पुत्रेष्टि-यज्ञ का विकास दिखलाने के पूर्व यहाँ पर पहले उन रचनाओ का उल्लेख करना है, जिनमे दशरथ के यज्ञ का कोई निर्देश नही मिलता।

पश्चिमोत्तरीय पाठ के चौदहवे सर्ग का विश्लेषण ऊपर हो चुका है (दे० अनु० १३६)। इसमे चार पुत्रो के जन्म के उल्लेख मे किसी यज्ञ की ओर निर्देश नही है—**ततोऽस्य जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारोऽमितविक्रमाः** (श्लोक ५)। राय कृष्णदास की पाडुलिपि मे इसका पाठ इस प्रकार है—**राज्ञः पुत्रा महात्मानश्चत्वारो जज्ञिरे पृथक्**।

महाभारत के रामोपाख्यान मे अवतारवाद का उल्लेख तो किया गया है, लेकिन उसमे कही दशरथ के किसी भी यज्ञ का सकेत नही मिलता (दे० ३, २६०)। प्राचीन महापुराणो मे अर्थात् हरिवंश, विष्णु पुराण, वायुपुराण, गरुड तथा भागवत पुराण मे जो सक्षिप्त रामकथाएँ मिलती है, उनमे कही भी दशर-यज्ञ की ओर निर्देश नही किया गया है। पश्चिमोत्तरीय पाठ के एक प्रक्षिप्त स्थल के अनुसार देवताओ के लिए युद्ध करने के पश्चात् दशरथ ने एक वर प्राप्त किया था। उन्होंने देवताओ से एक पुत्र माँगा और देवताओ ने कहा कि तुम्हारे चार पुत्र होंगे (दे० ५, ६६, ५३-६०)।

बौद्ध तथा जैन रामकथाओ मे अवतारवाद का अभाव स्वाभाविक है, फलस्वरूप इन रचनाओ मे दशरथ के किसी यज्ञ का निर्देश नहीं मिलता है।

वाल्मीकि रामायण मे इसका उल्लेख हुआ है कि पुत्र-प्राप्ति के लिए तपस्या करते हुए भी दशरथ के कोई पुत्र नही था :

सुतार्थं तप्यमानस्य नासीद्वंशकरः सुतः ॥ १ ॥ (वालकाण्ड, सर्ग ८)

स्कंद पुराण के दो स्थलो पर दशरथ की इस तपस्या का वर्णन किया गया है। नागरखड मे दशरथ के शनैश्वर से युद्ध करके के वाद इन्द्र उनसे कहते है कि **अपुत्रस्य गतिर्नास्ति**। इसपर दशरथ १०० वर्ष तक कार्तिकेयपुर मे तप करने जाते हैं। इसके अन्त मे जनार्दन प्रकट होते हैं और चार रूप धारण कर दशरथ के पुत्र बनने की प्रतिज्ञा करते हैं (**कृत्वा रूपचतुष्टयम्**)। वाद मे दशरथ को चार पुत्र और एक पुत्री के प्राप्त होने का उल्लेख किया गया है (दे० अध्याय ६६-६८)। प्रभासखण्ड मे भी पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रभास मे दशरथ के तप करने तथा शिवलिंग स्थापित करने का निर्देश किया गया है (दे० अध्याय १७१)।

वाराह पुराण (अध्याय ४५) में इसका उल्लेख किया गया है कि दशरथ ने वसिष्ठ के परामर्श के अनुसार रामद्वादशी व्रत का पालन किया था, जिसके फलस्वरूप विष्णु उनकी सन्तान के रूप में प्रकट हुए। सारलादास के उड़िया महाभारत में दशरथ की पुत्र-प्राप्ति की कथा इस प्रकार है: इन्द्र के यहाँ से लौटते समय दशरथ ने नन्दिनी का अपमान किया था तथा नन्दिनी ने उन्हें शाप दिया था। बाद में दशरथ नन्दिनी को बाघ के आक्रमण से बचाते हैं तथा उससे यह वरदान प्राप्त करते हैं कि उनके चार पुत्र उत्पन्न होंगे।[1]

ग्रामगीतों में भी दशरथ तथा कौसल्या के तपस्या करने तथा किसी योगी के प्रसाद से पुत्र प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है (दे० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित ग्राम-साहित्य, भाग १, पृ० ६१, कविता-कौमुदी, भाग ५, पृ० १४ और १६)। सिंहली रामकथा के अनुसार किसी ब्राह्मण को अपने ज्येष्ठ पुत्र देने की प्रतिज्ञा करने के बाद दशरथ उनके जादू द्वारा चार पुत्र प्राप्त करते हैं। बंगाल आदि में प्रचलित कथा के अनुसार दशरथ ने किसी योगी से चार आम प्राप्त कर उन्हें अपनी पत्नियों को खिलाया और फलस्वरूप तीनों पत्नियाँ गर्भवती हुईं। ब्रज लोकसाहित्य में भी इससे मिलती-जुलती कथा का संकेत पाया जाता है (दे० भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २, अंक ३, पृ० ६२)।

जावा के सेरत काण्ड, तिब्बती तथा खोतानी रामायणों में भी दशरथ के किसी यज्ञ का उल्लेख नहीं किया गया है। तिब्बती रामायण के अनुसार दशरथ ने ५०० हिमालय-निवासी ऋषियों से पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। उन्होंने दशरथ को एक फल दिया था जिसे उनकी दो पत्नियों ने खाया था। फलस्वरूप दोनों को गर्भ रह गया। असमिया बालकाण्ड में कश्यप मुनि का, [illegible] दशरथ की पुत्र-प्राप्ति में सहायक माना गया है (दे० अनु० ५३३)। सेरी राम के एक पाठ के अनुसार एक योगी ने दशरथ को सन्तान-प्राप्ति के उद्देश्य से चार 'ग्रान्दूर' नामक पत्थर प्रदान किये थे; एक अन्य पाठ के अनुसार दशरथ को एक सहस्र हाथियों का वध करने का परामर्श दिया गया था (दे० आगे अनु० ४३३)। ये पत्थर कुछ जानवरों के आमाशय में उत्पन्न होते हैं, पहले चिकित्सा में उनका उपयोग होता था।

३४५. वाल्मीकि रामायण में दशरथ के दो यज्ञों का वर्णन किया गया है।

---

१. इस घटना का वर्णन पद्मपुराण (गौडीय पाताल खण्ड, अध्याय ५-६; उत्तरखण्ड, अध्याय १६८-१६९) तथा रघुवंश के प्रथम सर्ग में दिलीप के विषय में किया गया है। [illegible] की [illegible] में भी यह प्रसंग आ गया है (दे० अनु० ३४३)।

सुमत्र के परामर्श के अनुसार दशरथ अगराज के यहाँ जाकर ऋष्यशृंग[1] को अयोध्या ले आते है और पुत्र प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके द्वारा अश्वमेध-यज्ञ करवाते है (दे० सर्ग ८–१४)। अनन्तर ऋष्यशृंग पुत्रेष्टि-यज्ञ भी करते है (सर्ग १५–१६)। उसी अवसर पर देवता, गधर्व, सिद्ध, परमर्षि आदि अपना-अपना हविर्भाग ग्रहण करने के उद्देश्य से (**भागप्रतिग्रहार्थम्**) एकत्र होकर ब्रह्मा से निवेदन करने लगे कि आप के दिये हुये वर के वल पर रावण हम लोगो को तग करता है (**सर्वान्नो वाधते**), आप उसके वध का उपाय निकालिये। ब्रह्मा उत्तर देते है कि मनुष्य से उसका वध सभव है। उसी समय विष्णु आ पहुँचे तथा उन्होंने देवताओ का यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि वह दशरथ की सन्तति वन कर रावण का वध करे। तदनुसार पुत्रेष्टि-यज्ञ की अग्नि से एक विशालकाय 'महद् भूतम्' (१६, ११) प्रकट हुआ जो अपने को 'प्राजापत्य नर' (१६, १६) कहता है और दशरथ को पायस प्रदान करता है। टीकाकार उस 'महद् भूतम्' को 'पुरुषविशेष' मानते है, जिसे प्रजापति ने भेज दिया और अन्य टीकाकार उसे 'अग्निरेव मूर्तिमान्' समझते है। **नृसिह पुराण** (अ० ४७), **अध्यात्म रामायण** (१, ३, ७), **आनन्द रामायण** (सारकाण्ड, सर्ग १, १०२) तथा **रामचरित मानस** (प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे, १, १८९, ६) मे अग्नि का उल्लेख है। दशरथ उस पायस को अपनी तीन पत्नियो मे बाँट देते हैं, जिससे तीनो गर्भवती हो जाती है (पायस के विभाजन के विषय मे दे० अनु० ३५६)। अनतर विष्णु-अवतार राम की सहायता करने के लिए देवता ब्रह्मा की आज्ञानुसार अप्सराओ और गन्धर्वियो से वानरो की उत्पत्ति करते है (सर्ग १७)।

३५६ वाल्मीकि रामायण मे पहले दशरथ के अश्वमेध-यज्ञ ही का वर्णन किया गया था, वाद मे पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन भी जोड दिया गया है (दे० ऊपर अनु० ३३३)। परवर्ती रामकथाओ मे प्राय: केवल पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन किया गया है; उदाहरणार्थः रघुवश, नृसिंह पुराण (अ०४०), भट्टिकाव्य, रामायण ककविन्, जानकी-हरण, सेरी राम, रामकियेन, पद्मपुराण (पातालखण्ड, अध्याय ११२ तथा उत्तर-खण्ड, अध्याय २६९), अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस आदि।

---

1. महाभारत के वनपर्व मे ऋष्यशृंग की उत्पत्ति, तपोभग, लोमपाद के यहाँ अनावृष्टि–निवारण के लिए यज्ञ तथा शाता से उसका विवाह वर्णित है (दे० वनपर्व, अध्याय ११०–११२)। **अलम्बुस जातक** (५२३) मे इसिंसिग की उत्पत्ति और तपोभग की कथा मिलती है, **नलिनिका जातक** (५२६) मे यही विषय है, किन्तु इसमे तपोभग का उद्देश्य है अनावृष्टि का निवारण।

जानकीहरण (४, १-२) मे दशरथ के पूर्ववर्ती अनफल यज्ञो का भी उल्लेख है।

ब्रह्मपुराण मे दशरथ वसिष्ठ से परामर्श करते है कि श्रवणकुमार-वध का प्रायश्चित्त किस प्रकार किया जाये। इसपर अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा यज्ञ के समय एक आकाशवाणी सुनाई पडती है कि राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र के प्रसाद से पापमुक्त हो जायेंगे (दे० अध्याय १२३)। अन्य रामकथाओ[1] मे भी दशरथ का यज्ञ, जिसके फलस्वरूप उन्होने रामादि पुत्रो को प्राप्त किया था, वास्तव मे अध-मुनिपुत्र-वध के प्रायश्चित्त के लिए आयोजित किया गया था। अध-मुनिपुत्र-वध के कई वृत्तान्तो मे दशरथ को पुत्र-प्राप्ति के लिए यज्ञ करवाने का परामर्श दिया जाता है (दे० अनु० ४३३)।

३५७. आगे चलकर पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन मे हनुमान, विभीषण, सीता और वानर-सेनापतियो के जन्म की ओर भी निर्देश किया गया है। आनन्द रामायण के अनुसार एक गीध ने कैकेयी का पायस उसके हाथ मे छीन लिया तथा उसे अजनी पर्वत पर फेक दिया, इस पर अन्य रानियो ने अपने पायस का कुछ अश कैकेयी को दे दिया (दे० १, १)। भावार्थ रामायण मे इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है (दे० अनु० ६७७)। अन्य रचनाओ मे कहा जाता है कि कैकेयी को क्रोध हुआ था, क्योकि दशरथ ने सर्वप्रथम उसे पायस नही दिया था। वह मान कर रही थी कि एक चील ने आकर उसके हाथ से पायस को छीन लिया और उसे अजनी के मुख मे गिरा दिया। फलत. अजनी को गर्भ हुआ और उसने हनुमान जी को जन्म दिया।[2]

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे यज्ञ के पश्चात् ऋषि ने दशरथ से उनकी पत्नियो के नाम पूछे थे। भूल से दशरथ के मुंह से कैकसी (रावण की माता) का नाम निकला। इसपर ऋषि ने पायस के चार भागो के पाँच भाग बना दिये। जब दशरथ अपनी पत्नियो के यहाँ जा रहे थे, तो एक काक ने पायस का एक भाग चुरा लिया और वह उसे कैकसी के पास लाया। उसे खाने के फलस्वरूप कैकसी ने विभीषण को जन्म दिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न०१)।

सेरी राम तथा रामकियेन मे सीता के जन्म का सबध पुत्रेष्टि-यज्ञ से स्थापित किया गया है। सेरी राम मे एक काक पायस का षष्टमाश चुराता है। इसपर याजक कहता है कि यह काक दशरथ की पत्नी के पुत्र राम के द्वारा मारा जायेगा तथा जो इस पायस को खायेगा, उसे एक पुत्री उत्पन्न होगी, जिसका विवाह राम के साथ होगा।

---

१ दे० आनन्द रामायण (१, १, ६६), भावार्थ रामायण (१, १), पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १३, ई० मूर, दि हिन्दू पथेयॉन, पृ० ३१५, पी० थोमस, लेजेड्स ऑव इडिया, पृ० ८०।

२ दे० ई० मूर, वही, पी० थोमस, वही।

बाद मे रावण उस पायस को खाता है। **रामकियेन** के अनुसार दशरथ-यज्ञ के पायस की सुगन्ध लका तक पहुँच गई। मन्दोदरी ने रावण से उसे माँगा। उसपर रावण ने काकना नामक राक्षसी को पायस चुराने का आदेश दिया। राक्षसी ने काक का रूप धारण कर पायस का अष्टमाग चुराया और उसे मन्दोदरी को दे दिया। फलस्वरूप मन्दोदरी ने सीता को जन्म दिया (दे० अध्याय १०)। भुइआ माधवदास कृत **विचित्र रामायण** के अनुसार डाकिनियाँ आकर पुत्रेष्टि-यज्ञ के धुएँ का पान करती है। वे गर्भवती हो जाती है और वानर-सेना के २५ सेनापतियो को जन्म देती है।

३५८ परवर्ती रचनाओ के दशरथ-यज्ञ-वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन किये गये है।

भट्टिकाव्य तथा रामायण ककविन् मे दशरथ-यज्ञ का वर्णन तो किया गया है, लेकिन किसी दिव्य पुरुष द्वारा दिए गए पायस का उल्लेख नही मिलता। भट्टिकाव्य मे रानियाँ यज्ञ के पश्चात् पायस के स्थान पर हुतोच्छिष्ट का कुछ अश खाती है (दे० सर्ग १)। अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे अग्नि के स्थान पर विष्णु स्वय यज्ञाग्नि मे से प्रकट होकर पायस प्रदान करते है, उदाहरणार्थ : पद्मपुराण का पातालखण्ड (अध्याय ११२, २३) और उत्तरखण्ड (अध्याय २६६, ४७), कृत्तिवास रामायण (१, ४१), बलरामदास रामायण, रामरहस्य (२, १४२)। तिलक नामक वाल्मीकि रामायण की टीका अपेक्षाकृत अर्वाचीन है, उसमे 'भूतम्' (दे० ऊपर अनु० ३५५) का अर्थ विष्णु ही माना गया है।

बृहद्धर्मपुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय १८) के अनुसार जब विष्णु देवताओ को आश्वासन देते है कि मैं दशरथ के पुत्र राम के रूप मे अवतार लूँगा, उसी अवसर पर शिव हनुमान के रूप मे राम की सहायता करने की प्रतिज्ञा करते हैं। **अध्यात्म रामायण** का वृत्तान्त इस प्रकार है : रावण आदि राक्षसो के भार से व्यथित होकर पृथ्वी गौ का रूप धारण कर देवताओ तथा मुनियो के साथ ब्रह्मा की शरण लेती है।[1] इसपर ब्रह्मा सब को ले जाकर क्षीरसमुद्र के तट पर विष्णु के पास आते हैं, उनकी स्तुति करते है तथा उनसे निवेदन करते हैं कि वह मनुष्य का रूप धारण कर देवशत्रु का वध करे। विष्णु कश्यप को प्रदत्त वर का उल्लेख करते हुए लक्ष्मी सहित अवतार

---

१ विष्णु पुराण (अश ५, अध्याय १) के अनुसार पृथ्वी ने दैत्यगण के भार से पीडित होकर देवताओ तथा ब्रह्मा के साथ विष्णु की शरण ली थी तथा कृष्णावतार का आश्वासन प्राप्त किया था। भागवत पुराण (स्कध १० अध्याय १) मे इसी अवसर पर पृथ्वी के गौ का रूप धारण करने का उल्लेख है।

लेने की प्रतिज्ञा करते हैं। तब ब्रह्मा वाल्मीकि रामायण के अनुसार देवताओं को आज्ञा देते हैं कि वे अपने-अपने अंश से वानर वंश में पुत्र उत्पन्न करें (बालकांड, अध्याय २)।

पद्मपुराण के गौडीय पाताल खण्ड में शान्ता अपने पिता दशरथ के पास आकर अपने पति ऋष्यशृंग की शक्ति का वर्णन करती है। यह सुनकर दशरथ ऋष्यशृंग द्वारा पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाने का संकल्प करते हैं (दे० अध्याय १४)। पद्मपुराण के एक अन्य स्थल पर नामदेव नामक साधु दशरथ को पुत्रेष्टि-यज्ञ की विधि बतलाते हैं (दे० पाताल खण्ड, अध्याय ११२)।

कृत्तिवास रामायण (१, ३५) के अनुसार दशरथ अपने मंत्रियों को बुलाकर कहते हैं—"मेरी अवस्था अब ६००० वर्ष की हो गई है; अन्धक मुनि ने मुझे वर दिया था कि ऋष्यशृंग द्वारा यज्ञ का आयोजन कर पुत्र प्राप्त करूँगा। यह ऋष्यशृंग कौन है?" इस पर वसिष्ठ ऋष्यशृंग की कथा सुनाते हैं। तब दशरथ लोमपाद के यहाँ जाकर ऋष्यशृंग को अयोध्या ले आते हैं तथा यज्ञ सम्पन्न हो जाता है (अध्याय ३६)। सारलादास के उड़िया महाभारत (वन पर्व, पृ० २२८) में ऋष्यशृंग लोमपाद की राजधानी में दशरथ के लिए यज्ञ करते हैं और दशरथ पायस अयोध्या ले जाते हैं। माधवदास के विचित्र रामायण के अनुसार परशुराम पुत्रेष्टि-यज्ञ के अवसर पर आ पहुँचते हैं तथा आदेश देते हैं कि जो ज्येष्ठ पुत्र होगा, उसे मेरा ही नाम देना। काश्मीरी रामायण में नारायण स्वप्न में दशरथ को दर्शन देकर कहते हैं कि मैं तेरा पुत्र बन जाऊँगा। अनन्तर वसिष्ठ से परामर्श लेकर दशरथ पुत्रेष्टि-यज्ञ का आयोजन करते हैं। पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १ के अनुसार विश्वामित्र ने वन में दशरथ के लिए यज्ञ चढ़ाया था (दे० अध्याय १)।

ख। अवतारवाद का विकास

३५६. अवतारवाद के प्रथम रूप के अनुसार विष्णु ने चार अंशों में अवतार धारण किया था। पायस के विभाजन में अवश्य पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है, फिर भी चारों भाई विष्णु के ही अंशावतार माने गये हैं। दाक्षिणात्य पाठ में कहा गया है कि पायस के विभाजन के समय कौशल्या को आधा भाग मिला था, सुमित्रा को एक चतुर्थांश और एक अष्टमांश तथा कैकेयी को एक अष्टमांश (दे० सर्ग १६, २६)[1]।

---

१. उदीच्य पाठ (तथा रामचरितमानस) में पायस का विभाजन इस प्रकार है—कौशल्या को आधा, कैकेयी को एक चतुर्थांश और सुमित्रा को दो अष्टमांश। रघुवंश, रामायण मंजरी, अध्यात्म रामायण तथा कृत्तिवास में भी चारों भाई एक-एक चतुर्थांश से जन्म लेते हैं। अभिनन्दकृत रामचरित (८, ६२) के अनुसार दशरथ ने कौशल्या तथा कैकेयी को पायस का आधा-आधा दे दिया और दोनों ने सुमित्रा को अपने पायस का कुछ अंश दिया।

किन्तु आगे चलकर तीनो भाई भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न विष्णु के एक-एक चतुर्थांश से समन्वित माने जाते हैं (दे० सर्ग १८, १३-१४)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अन्तिम रूप सबसे प्राचीन है और चारो भाई ही विष्णु के चतुर्थांश माने जाते थे। हरिवंश, विष्णु पुराण, वायु पुराण आदि मे विष्णु के चार रूपो मे प्रकट होने का उल्लेख मिलता है :

कृत्वात्मानं महबाहुश्चतुर्धा प्रभुरीश्वरः। (हरिवंश १, ४१, १२२)

फिर भी प्रारम्भ ही से राम को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया था तथा महाभारत मे विष्णु के राम-रूप मे ही प्रकट होने का उल्लेख किया गया है।

३६०. अंशावतार का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमे पाचरात्र के एक सिद्धान्त का सहारा लिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार नारायण चतुर्व्यूह के रूप मे आविर्भूत है अर्थात् वासुदेव, सकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध। विष्णुधर्मोत्तर पुराण (अध्याय २१२) तथा नारद पुराण (उत्तरखण्ड, अध्याय ७५) के अनुसार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमशः उपर्युक्त चतुर्व्यूह से अभिन्न हैं।

३६१. बाद की अधिकांश रचनाओ मे राम विष्णु के पूर्णावतार माने गये हैं।[1] प्रारम्भ मे भरत तथा शत्रुघ्न को छोडकर केवल लक्ष्मण के अवतारवाद का उल्लेख किया जाता है। तिब्बती रामायण मे राम तथा लक्ष्मण क्रमश. विष्णु तथा विष्णु के पुत्र के अवतार माने गये है। अन्य रचनाओ मे केवल राम तथा लक्ष्मण का उल्लेख है, जो विष्णु तथा शेष के अवतार है, उदाहरणार्थ नृसिह पुराण (अध्याय ४७), देवीभागवत (३, ३०), जावा का सेरत काण्ड, रामचरिमानस, पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १३। परवर्ती साहित्य मे लक्ष्मण को प्रायः शेष का अवतार माना गया है।

अर्वाचीन रचनाओ मे भरत तथा शत्रुघ्न के अवतारत्व के विषय मे सर्वाधिक प्रचलित धारणा यह है कि वे क्रमशः पाचजन्य शख तथा सुदर्शन चक्र के अवतार हैं। अध्यात्म रामायण मे लिखा है—भरतशत्रुघ्नौ शखचक्रे (दे० १, ४, १८), शंखचक्रे द्वे भरत सानुजं (दे० ३, २, १६)। आनन्द रामायण मे भी इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है :

शंखो बभूव भरतः श्रीविष्णोः सव्यसत्करे।
वामे करे बभूवाय शत्रुघ्नश्च सुदर्शनम्॥ (६, ६, १६)

निम्नलिखित रचनाओ मे इसी प्रकार का निर्देश मिलता है—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २६६, ६३–६५), सत्योपाख्यान (२, ४-५), रामरहस्य (अध्याय ३)।

---

१. सेरी राम के पाठ मे राम को विष्णु से अभिन्न माना गया है, दूसरा पाठ उन्हे विष्णु का वंशज मानता है। प्रथम पाठ मे इसका भी उल्लेख किया गया है कि राम क्रुद्ध हो जाने पर सहस्रस्कध विष्णु का रूप धारण कर लेते है (१००० सिर, २००० भुजाये, २००० पैर)।

अध्यात्म रामायण के एक अन्य स्थल पर भरत को चक्र का तथा शत्रुघ्न को शंख (दर) का अवतार माना गया है—शङ्खचक्रधरौ च दिव्यौ कैकेयीसुतलवणान्तकश्च (उत्तरकाण्ड ५. ३७)। उदारराघव (सर्ग ७) तत्त्वसंग्रह रामायण (१. १४), काश्मीरी रामायण (८. ३६) तथा बलरामदास के रामायण में भरत-शत्रुघ्न को चक्र-शंख का अवतार माना गया है।

भरत तथा शत्रुघ्न के अवतारत्व के विषय में लिंगपुराण (२. ५. १४७-१४८) और अद्भुत रामायण ने लिखा है कि विष्णु की दाईं तथा बाईं बाँह क्रमशः भरत तथा शत्रुघ्न के रूप में प्रकट हुई थीं (दे० सर्ग ४, ३६-३७)। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ के अनुसार चक्र तो भरत में अवतरित हुआ, किन्तु अनन्त ने लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न दोनों में अवतार लिया था (दे० अध्याय १)। श्याम के रामकियेन में भरत को चक्र का तथा शत्रुघ्न को गदा का अवतार माना गया है (दे० अध्याय २)।

दाक्षिणात्यपाठ के महाभारत के अनुसार विष्णु राम में अवतरित हुए, ब्रह्मा शत्रुघ्न में, इन्द्र भरत में तथा महादेव लक्ष्मण में (दे० वनपर्व, पृ० २२८)। दीनकृष्णदास कृत ओड़िया रसविनोद में लक्ष्मण के अवतार-तत्त्व के विषय में यह कथा मिलती है। शिव गोहत्या के प्रायश्चित्त के लिए तप कर रहे थे और विष्णु ने उन्हें त्रेतायुग में लक्ष्मण के रूप में जन्म लेने का वरदान दिया। वह मेघनाद की शक्ति से आहत होने के कारण गोहत्या-दोष से मुक्त हो जायेंगे।

३३२. रामभक्ति के विकास के साथ अवतारवाद का भी विकास हुआ। रामतापनीय उपनिषद् से लेकर समस्त रामभक्ति-विषयक रचनाओं में राम को विष्णु के अवतार के अतिरिक्त परब्रह्म का भी अवतार माना गया है (दे० अध्यात्म रामायण, बालकाण्ड, अध्याय १)।

बहुत सी रचनाओं में राम तथा शिव की अभिन्नता पर विशेष रूप से बल दिया गया है। पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ४६) में राम शिव से कहते हैं—जो लोग हम दोनों में अन्तर देखते हैं, वे न केवल मूर्ख हैं, किन्तु उनको नरक की यातना भी भोगनी पड़ेगी :

ममास्ति हृदये शर्वो भवतो हृदये त्वहम्।
आवयोरन्तरं नास्ति मूढाः पश्यन्ति दुर्धियः॥ २०॥
ये भेदं विदधत्यद्धा आवयोरेकरूपयोः।
कुम्भीपाकेषु पच्यन्ते नराः कल्पसहस्रकम्॥ २१॥

कृत्तिवास रामायण के माहिरावण-वध प्रसंग के अन्तर्गत दुर्गा हनुमान से कहती हैं कि राम शिव के गुरु हैं तथा दोनों में वस्तुतः अन्तर नहीं है—**शिवरामे अभेद कहेन शूलपाणि** (दे० ६, अध्याय ८४)।

इसी प्रकार स्कंद पुराण (माहेश्वर खण्ड, केदार खण्ड, ८, २०), आनन्द रामायण (मनोहरकाण्ड सर्ग ७ और १२), रामलिंगामृत (सर्ग १६) तथा धर्मखण्ड (अध्याय ६८) में राम तथा शिव के अभेद का प्रतिपादन किया गया है।

अध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड के प्रथम सर्ग मे नारद राम को स्मरण दिलाते है कि वह विष्णु, शिव, ब्रह्मा तथा सूर्य से अभिन्न है तथा तदनुसार लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती तथा प्रभा सीता मे अवतरित है :

त्वं विष्णुर्जानकी लक्ष्मीः शिवस्त्वं जानकी शिवा।
ब्रह्मा त्वं जानकी वाणी सूर्यस्त्वं जानकी प्रभा ॥ १३ ॥

आनन्द रामायण के राज्यकाड मे राम तथा कृष्ण की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है—राम एवात्र कृष्णश्च कृष्ण एवात्र राघवः ॥ उभयोर्नान्तरम् (सर्ग ३, ११५)। तत्त्व-संग्रह रामायण के प्रारम्भ मे लिखा है कि विभिन्न रचनाओ मे राम निम्नलिखित देवताओ के अवतार माने जाते है–शिव, ब्रह्मा, हरिहर, त्रिमूर्त्ति, सच्चिदानन्द परब्रह्म। बलरामदास तो विष्णु को रामादि चार भाइयो मे अवतरित मानते है तथा लक्ष्मी को सीता मे, किन्तु अरण्यकाण्ड के मंगलाचरण तथा दण्डकारण्य के वृत्तात मे उन्होने उडीसा के लोकप्रिय देवताओ से राम, सीता और लक्ष्मण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया है। तदनुसार राम, सीता, लक्ष्मण क्रमश जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलभद्र से अभिन्न है।[1] बौद्ध रचनाओ मे राम को बोधिसत्त्व माना जाता है तथा बौद्ध इतिहास और रामकथा के अन्य पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख होता है।[2] श्याम देश के पालक पालाम (दे० अनु० ३२७) के अनुसार दशरथ ने देवताओ से एक ऐसे पुत्र की याचना की थी जो रावण को पराजित करने मे समर्थ हो। इस पर इन्द्र ने बोधिसत्त्व को भेज दिया, जो दशरथ के दोनो पुत्रों मे प्रकट हुए। ब्रह्मचक्र (अनु० ३२८) के अनुसार लका की जनता को रावण के शासन से पीड़ित देखकर इन्द्र ब्रह्मा के पास गये तथा उन्होने रावण से युद्ध करने की आज्ञा मांगी। ब्रह्मा ने अनुमति दी तथा कई देवताओ को, जिनमे बुद्ध भी सम्मिलित थे, पृथ्वी पर भेज दिया। ये देवता राम-लक्ष्मण तथा भरत के रूप मे जन्म लेते है।

३६३ जैन साहित्य मे रामकथा के प्रधान पात्रो के पूर्वजन्म की कथाओ को

---

१. आनन्द रामायण (६, ५, ४४) मे भी लक्ष्मण-बलराम की अभिन्नता का उल्लेख है।

२ दे० दशरथ जातक (अनु० ५१), अनामक जातकम् (अनु० ५२), दशरथ कथानम् (अनु० ५३), खोतानी रामायण (अनु० ३१२), रामकीर्त्ति (अनु० ३२४), रामजातक (३२७)।

अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। पउमचरियं के अनुसार राम के तीन पूर्व जन्मो का उल्लेख है, इसके अनुसार वह क्रमशः एक व्यापारी का पुत्र धनदत्त, विद्याधर राजकुमार नयनानन्द तथा राजकुमार श्रीचन्द्र कुमार थे। लक्ष्मण किसी पूर्व जन्म मे धनदत्त (राम) का भाई वसुदत्त था, बाद मे वह हरिण के रूप मे प्रकट हुआ तथा कई बार जन्म लेने के पश्चात् वह दशरथ के पुत्र मे अवतरित हुआ।[1]

गुणभद्र के उत्तरपुराण मे जो कथा मिलती है, उसमे राम-लक्ष्मण अपने पूर्व जन्म मे भाई न होकर अन्तरंग मित्र माने जाते हैं। लक्ष्मण राजा प्रजापति का पुत्र चन्द्रचूल था तथा राम राजमंत्री का विजय नामक पुत्र। दुराचरण के कारण राजा ने दोनो को प्राणदण्ड की आज्ञा दी थी, किन्तु मंत्री उनको एक महाबल नामक साधु के पास ले गया। साधु ने कहा कि ये तो वासुदेव तथा बलदेव बनने वाले हैं। चन्द्रचूल तथा विजय दीक्षा लेकर तप करने लगे तथा स्वर्ग मे क्रमशः मणिचूल तथा सुवर्णचूल देवता बन गए, अगले जन्म मे वे लक्ष्मण तथा राम के रूप मे प्रकट हुए (दे० नाग ६७, ६० आदि)।

३६४ सीता का लक्ष्मीत्व राम के विष्णुत्व का एक स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है। सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन सर्ग मे पाया जाता है, जिसमे अग्नि-परीक्षा के अवसर पर देवता आकर राम की विष्णु-रूप मे स्तुति करते हैं (दे० ६ सर्ग ११७, २७)। इस सर्ग मे राम, कृष्ण तथा विष्णु तीनो की अभिन्नता का भी उल्लेख किया गया है। यह वाल्मीकि रामायण का एकमात्र स्थल है, जहाँ कृष्ण का नाम आया है। उत्तरकांड मे कुशध्वज की पुत्री वेदवती की कथा मिलती है, जिसके अनुसार वेदवती सीता के रूप मे प्रकट होती है (दे० सर्ग १७)। इस कथा की रचना उस समय की गई होगी जब सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की भावना व्यापक नहीं हो पाई थी।

सीता के लक्ष्मीत्व का उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ के उत्तरकाड के ३७वे सर्ग के बाद के प्रक्षिप्त सर्गों मे भी मिलता है, लेकिन ये सर्ग अन्य पाठो मे नहीं पाये जाते (दे० ७, ३७ प्र० सर्ग ३ और ४)।[2]

वायु, ब्रह्मांड और विष्णु जैसे प्राचीन महापुराणों मे तथा रघुवंश मे सीता

---

१. दे० पर्व १०३। लक्ष्मण तथा रावण का कई जन्मो तक परस्पर विरोध चलता रहा। दे० आगे अनु० ४१०।

२. वेदवती की कथा का जैनी रूप आगे अनु० ४१० मे देखे। सीता के पूर्व-जन्म की एक अन्य कथा गुणभद्र के उत्तरपुराण मे मिलती है (दे० अनु० ४१२)।

तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की ओर निर्देश नही किया गया है, यद्यपि इन रचनाओ मे राम विष्णु के अवतार माने गये है। हरिवंश (१, अध्याय ४१), भागवत पुराण (६, अध्याय १०), ब्रह्मपुराण (२१३, १२६,), देवीभागवत पुराण (३, २८, १३), अभिषेक नाटक (अनु० २२७), रामकियेन (अध्याय २ और १०), पद्मपुराण (६, २६६, ६६), सेरत काड (दे० ऊपर अनु० ३२२) तथा अधिकाश अर्वाचीन रचनाओ के अनुसार सीता तथा लक्ष्मी अभिन्न ही है।

रामतापनीय उपनिषद् मे पहले-पहल सीता तथा प्रकृति की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है। बाद के साम्प्रदायिक साहित्य मे लक्ष्मी के अतिरिक्त सीता मूल-प्रकृति, योगमाया तथा परमशक्ति (दे० अध्यात्म रा० १, ७, २७) भी मानी जाती हैं :

एषा सा जानकी लक्ष्मीर्योगमायेति विश्रुता ।। ११ ।।

(अध्यात्म रामायण २, ५)

मूलप्रकृतिरित्येके प्राहुर्मायेति केचन ।। २२।।

(वही ३, ३)

३६५ सीता के अवतार-तत्त्व[1] के विषय मे अन्य उल्लेख भी मिलते है। **सौर पुराण** मे कहा गया है कि जनक ने तपस्या द्वारा पार्वती को सन्तोष दिया था और फलस्वरूप पार्वती उनकी पुत्री के रूप मे प्रकट हुई।

पार्वत्यंशसमुद्भवा जनकेन पुरा गौरी तपसा तोषिता यतः ।

(अध्याय ३०, ५१)

महाभागवत पुराण के अनुसार सीता और लक्ष्मी अभिन्न तो हैं, लेकिन लक्ष्मी स्वय देवी के अग से उत्पन्न मानी जाती हैं (दे० अध्याय ३६)। **स्कन्द पुराण** के माहेश्वर खण्ड के अनुसार ब्रह्म-विद्या सीता के रूप मे अवतरित हुई (दे० अध्याय ८, ६५)। इसी पुराण के ब्रह्मखड (सेतुमाहात्म्य के अग्नितीर्थ प्रसग) मे कहा है कि सीता परशुराम-अवतार मे धरणी, राम-अवतार मे सीता तथा कृष्ण-अवतार मे रुक्मिणी है। **अध्यात्म रामायण** के अनुसार सीता निम्नलिखित देवियो से अभिन्न है : लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती और प्रभा (दे० ऊपर अनु० ३६२)। **आनन्द रामायण** मे सीता तथा दुर्गा की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है (दे० मनोहरखड, अध्याय १२, श्लोक २६ और ३६)।

श्याम के **राम-जातक** मे रावण इन्द्र का रूप धारण कर स्वर्ग की रानी को धोखा देते है। रावण से प्रतिकार लेने के लिए वह सीता के रूप मे प्रकट होती हैं। इसके अनुसार इन्द्राणी सीता मे अवतरित है (अनु० ४१७)। **पालक पालाम** मे भी इस

---

१. सीता और सुभद्रा की अभिन्नता का अनु० ३६२ में उल्लेख हो चुका है।

प्रकार की कथा मिलती है। अद्भुत रामायण में अम्बरीष की पुत्री श्रीमती सीता के रूप में प्रकट हुई (दे० आगे अनु० ३७३)।

ग। अवतार के कारण

३६६ प्रारम्भ में रावण-वध ही विष्णु के राम के रूप में प्रकट होने का उद्देश्य कहा गया है (दे० वाल्मीकि रामायण १, १६)। बाद में भगवद्गीता के अनुकरण पर रामावतार के विषय में विष्णु अवतारों के सामान्य उद्देश्य का भी उल्लेख होने लगा :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

(भगवद्गीता, अध्याय ४)

रामभक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् इसका भी प्रायः उल्लेख मिलता है कि अपने भक्तों को भवसागर के पार पहुँचाने अथवा उनको अपना सगुण रूप दिखलाने के उद्देश्य से निर्गुण ब्रह्म राम के रूप में प्रकट हो जाते हैं।[1]

रामावतार के इन उद्देश्य के अतिरिक्त विष्णु के अवतार धारण करने के कई कारणों का उल्लेख मिलता है। इनके सम्बन्ध में अनेक वरों अथवा शापों की कथाएँ पाई जाती हैं।

(अ) वर

३६७ कश्यप-अदिति का सम्बन्ध पहले-पहल वामनावतार मात्र के साथ माना जाता था बाद में कृष्ण और राम की कथाओं के प्रसंग में भी उनका उल्लेख मिलता है। विकास की रूपरेखा इस प्रकार है। वामनावतार की प्राचीनतम कथाओं में (दे० अनु० १४१) कश्यप-अदिति की चर्चा नहीं है किन्तु महाभारत के आदि पर्व (१, २७)

---

१. अर्वाचीन रामकथाओं में प्रायः कहा गया है कि जय-विजय नामक विष्णु के द्वारपाल सनकादि के शाप से वशीभूत होकर रावण-कुम्भकर्ण के रूप में प्रकट हो गये थे। रामचरितमानस में इसका भी उल्लेख मिलता है कि इन दोनों के हित के लिए भगवान् ने राम का अवतार धारण कर लिया।

मुकुत न भए हते भगवाना। तीनि जन्म द्विज बचन प्रवाना।
एक बार तिन्ह के हित लागी। धरेउ सरीर भगत अनुरागी।

(बालकाण्ड, १२३, १-२)

रावण-कुम्भकर्ण के पूर्व जन्म की अन्य कथाओं के लिए दे० आगे अनु० ६४८।

मे कश्यप तथा विनता की तपस्या का वर्णन किया गया है जिसके फलस्वरूप उनको दो पुत्र (अरुण तथा गरुड) प्राप्त हुए। महाभारत के अन्य स्थलो पर अदिति की आराधना (३, १३५, ३) तथा तपस्या (१३, ८३, २६-२७) का उल्लेख मिलता है, जिसके फलस्वरूप वह विष्णु की माँ बन सकी।[1] **हरिवंश पुराण** (३, अध्याय ६७-६९) मे देवता, कश्यप तथा अदिति सब मिलकर १००० वर्ष तक तपस्या करते हैं और अन्त मे विष्णु से यह वरदान प्राप्त करते है कि वह वामन के रूप मे अदिति के गर्भ से जन्म लेकर वलि को परास्त करेगे। **वाल्मीकि रामायण** के दाक्षिणात्य पाठ (१, २९, १०-१७) तथा **वामन पुराण** (अध्याय २४-२८) मे भी कश्यप तथा अदिति की तपस्या एव वरप्राप्ति का वर्णन किया गया है।

महाभारत के शाति पर्व मे विष्णु के विषय मे लिखा है—**अदित्या. सप्तरात्रं तु पुराणे गर्भतां गतः** (१२, ४३, ६), बहुत सी हस्तलिपियो मे 'सप्तरात्र' के स्थान पर 'सप्तधा' पाठ मिलता है। सभव है इसी कारण से वामनावतार के अतिरिक्त अदिति का सम्बन्ध अन्य अवतारो से भी जोडा गया है। **मत्स्य पुराण** (अध्याय ४७, ९), **ब्रह्मांड पुराण** (२, ७१, २०० और २३८), **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (कृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ७) आदि मे कश्यप-अदिति को वसुदेव-देवकी से अभिन्न माना गया है।

भागवत् पुराण के अनुसार सुतपा तथा वृश्नि ने स्वायम्भू मन्वन्तर मे १२००० वर्ष तक तपस्या कर भगवान से वर प्राप्त किया कि वह तीन बार उनके पुत्र बन जाएँ। फलस्वरूप भगवान् वृश्निगर्भ (सुतपा-पुत्र), उपेन्द्र अथवा वामन (कश्यप-पुत्र) तथा कृष्ण (वसुदेव पुत्र) के रूप मे अवतरित हुए (दे० स्कन्ध १०, अध्याय ३, ३२-४५)।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे कश्यप-अदिति के दशरथ-कौशल्या के रूप मे प्रकट होने का उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—**अध्यात्म रामायण** का बालकाण्ड (२, २५, ३, ३२, ४, १४-१६), **रामचरितमानस** (१, १८७), **काश्मीरी रामायण** (अयोध्या काण्ड, न० १३)। **आदि पुराण** मे नन्द के एक स्वप्न का विवरण दिया गया है, जिसके अनुसार वह अपने पूर्वजन्म मे दशरथ था (अध्याय १६)। **कृत्तिवास रामायण** मे विष्णु कश्यप-अदिति की ओर निर्देश करते हुए देवताओ से कहते है कि दशरथ तथा कौशल्या ने मेरी सेवा की और मैं उनको यह वर दे चुका हूँ कि मैं तुम्हारे घर मे जन्म लूंगा (दे० बालकाण्ड, अ० ३९)। अच्युतानन्द (१६ वीं० श० ई०) के उडिया **हरिवंश** के अनुसार गोमाता ने कश्यप तथा अदिति को विभिन्न युगो मे जन्म लेने का शाप दिया था।

---

१. मत्स्य पुराण मे भी अदिति की यह तपस्या उल्लिखित है (दे० अध्याय २४३, ९)।

तथा दशरथ-कौशल्या की अभिन्नता का उल्लेख है।

३६९ स्कन्दपुराण के वैष्णवखण्ड (अध्याय २४), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, अध्याय १०६) तथा आनन्द रामायण (सारकाण्ड सर्ग ४, ११७-१७० तथा सर्ग ५,१-२८) मे विष्णुभक्त धर्मदत्त तथा कलहा की कथा दी गई है, जिसके अनुसार दोनो क्रमशः दशरथ तथा कैकेयी के रूप मे प्रकट हुए है। सवृत रामायण मे भी इस प्रकार का वृत्तान्त मिलता है (दे० ऊपर अनु० २६३)।

(आ) शाप

३७०. भृगु-शाप की कथा के प्राचीनतम रूप मे किसी अवतार विशेष का उल्लेख नही किया गया है। मत्स्यपुराण के अनुसार भृगु की पत्नी का वध करने के कारण भृगु ने विष्णु को सात वार मनुष्यो मे अवतार धारण कर लेने का शाप दिया— **तस्मात्त्वं सप्तकृत्वेह मानुषेषूपपत्स्यसे** (अध्याय ४७, १०६)। लिंगपुराण मे भृगु के शाप के फलस्वरूप विष्णु के दस अवतारो का उल्लेख है :

भृगोरपि च शापेन विष्णुः परमवीर्य्यवान्।
प्रादुर्भावान् दश प्राप्तो दुःखितश्च सदा कृतः ॥२६॥

(अध्याय २६)

वायुपुराण (अध्याय ९७), ब्रह्माण्ड पुराण (२, अध्याय ७२) और देवीभागवत पुराण (४, अध्याय १२) मे भी ऐसी कथा मिलती है। वाल्मीकि रामायण के एक स्थल के अनुसार, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, भृगु ने विष्णु को बहुत वर्षों तक पत्नी-वियोग सहने का शाप दिया था। इस शाप के फलस्वरूप रामावतार मे सीता-त्याग की घटना हुई थी (दे० उत्तरकाण्ड, सर्ग ५१)। वह्नि पुराण मे भृगु शाप रामावतार का कारण माना गया है (दे० पृ० १७०)। योगवासिष्ठ के अनुसार विष्णु ने भृगु की पत्नी का वध किया था और इसपर भृगु ने शाप दिया कि तुम भी स्त्री के वियोग से व्याकुल हो जाओगे। इस शाप के वशीभूत विष्णु राम के रूप मे प्रकट हुये (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग १, ६१)।

३७१. योगवासिष्ठ मे दो अन्य शापो का भी उल्लेख किया गया है, जिनके कारण विष्णु को राम का रूप धारण करना पडा। किसी दिन विष्णु ब्रह्मपुरी गये थे, जहाँ सनत्कुमार को छोडकर सबो ने उनका स्वागत किया था। इसपर विष्णु ने सनत्कुमार को कामातुर बन जाने का शाप दिया तथा प्रत्युत्तर मे सनत्कुमार ने विष्णु को 'अज्ञानी' हो जाने का शाप दिया (दे० १, १, ५९-६०)। एक अन्य अवसर पर नृसिंहरूपधारी विष्णु ने देवशर्मा की पत्नी को डराया था, जिससे वह मर गई थी। इसपर देवशर्मा ने विष्णु को पत्नी-वियोग भोगने का शाप दिया था (दे० योगवासिष्ठ १, १, ६३-६४)।

३७२. स्कन्द पुराण (वैष्णव खण्ड, कार्तिकमास माहात्म्य, अध्याय २०-२१), शिवमहापुराण (रुद्र संहिता, युद्ध-खण्ड, अध्याय २३), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय १६ और १०५), योगवासिष्ठ रामायण (१, १, ६२) आनन्द रामायण (१,४, ८०-११२) तथा लोमश रामायण (दे० अनु० १६४) में वृन्दा-शाप का वर्णन किया गया है। दैत्य जलधर शिव से युद्ध करते हुए अपनी पत्नी वृन्दा के सतीत्व के कारण अजेय है। इसपर विष्णु ने जय विजय की सहायता से वृन्दा का सतीत्व नष्ट कर दिया था। वृन्दा ने जय-विजय को, जिन्होंने उसे राक्षस के रूप में डराया था, राक्षस बन जाने का शाप दिया तथा विष्णु को, जिन्होंने उसे जलधर के रूप में धोखा दिया था, यह शाप दिया कि तुम मनुष्य बनोगे और ये दोनो तुम्हारी पत्नी का हरण करेंगे। तत्वसंग्रह रामायण में राम स्वय वृन्दा-शाप को सीता-हरण का कारण मानते है (दे० ३, १६)।

स्कन्दपुराण (अध्याय २२) में वृन्दा का शाप इस प्रकार है :

यौ त्वया मायया द्वा:स्थौ स्वकीयौ दर्शितौ मम।
तावेव राक्षसौ भूत्वा भार्यां तव हरिष्यन्तः ॥२८॥

पद्मपुराण के उत्तर खण्ड (अध्याय १६) में यह शाप बदल दिया गया है :

अहं मोहं यया नीता त्वया मायातपस्विना।
तथा तव वधूं मायातपस्वी कोऽपि नेष्यति ॥५५॥

रामचरितमानस में विष्णु द्वारा वृन्दा का सतीत्व नष्ट किये जानेका उल्लेख मात्र किया गया है। कथा में इस प्रकार परिवर्तन किया गया है कि जलधर ही रावण के रूप में प्रकट होकर और राम के हाथ से मरकर परमपद प्राप्त कर लेता है।

छल करि टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मरम तब, स्राप कोप करि दीन्ह ॥१२३॥
तासु स्राप हरि कीन्ह प्रवाना। कौतुक-निधि कृपाल भगवाना ॥
तहाँ जलंधर रावन भएऊ। रन हति राम परम पद दएऊ ॥
(बालकाण्ड)

३७३. नारद के मोह तथा विष्णु के प्रति उनके शाप की कथा अर्वाचीन है, किन्तु उस कथा के तत्त्व प्राचीन साहित्य में विद्यमान हैं। महाभारत में नारद तथा पर्वत का अनेक स्थलो पर साथ-साथ उल्लेख किया गया है। नारद-पर्वत का सम्बन्ध मामा-भानजे का माना जाता है—मातुलो भागिनेयश्च (१२, ३०, ५)। दोनो द्रौपदी-स्वयवर के अवसर पर आकाश में दर्शक बनकर उपस्थित हैं (१, १७८, ७) तथा साथ-साथ इन्द्रलोक की यात्रा करते हैं (३, ५१, १२)। शान्ति पर्व में दोनो सृंजय के यहाँ पहुँचते हैं तथा उनकी पुत्री के कारण एक दूसरे को शाप देते है। नारद पर्वत की स्वर्ग-गति रोक लेते हैं तथा पर्वत शाप देते हैं कि नारद सृंजय की पुत्री के साथ विवाह

करने के पश्चात् 'वानरमुख' हो जायेंगे। नारद सृंजय की पुत्री से विवाह कर वास्तव में 'वानर-मुख' वन जाते हैं, किन्तु वाद मे नारद-पर्वत मिलकर एक दूसरे को शापमुक्त करते है (दे० अध्याय ३०-३१)।[1]

महाभागवत पुराण प्राचीनतम रचना प्रतीत होती है, जिसमे नारद का शाप सूर्यवश मे विष्णु के जन्म तथा सीता-हरण का कारण माना गया है (दे० ११, १०७-११२)। अद्भुत रामायण मे कथा इस प्रकार है। अम्बरीष की पुत्री श्रीमती को देखकर नारद तथा पर्वत दोनो उसको अम्वरीष से माँगते है। अम्बरीष कहते है कि कन्या जिसे चुन लेगी वही उसका पति वन जायेगा। इस पर नारद तथा पर्वत दोनो अलग-अलग विष्णु के पास जाकर एक दूसरे को 'वानरमुख' दिखलाते है। विष्णु हँसकर दोनो की प्रार्थना पूरी करते है। स्वयवर के समय श्रीमती नारद तथा पर्वत को न देखकर केवल दो वानरो को तथा दोनो के वीच मे सुन्दर युवक के रूप मे विष्णु को देखती है। वह विष्णु के गले मे माला डाल देती है और विष्णु उसे वैकुठ ले जाते है। वाद मे नारद तथा पर्वत विष्णु और श्रीमती को राम और सीता के रूप मे प्रकट होने का शाप देते है।[2] शिवमहापुराण मे जो कथा मिलती है वह रामचरितमानस के वृत्तान्त के अधिक निकट है। श्रीमती को प्राप्त करने के लिए नारद ने विष्णु के पास जाकर हरिरूप मांगा। विष्णु ने उसे हरि अर्थात् वानर का मुख दिया और स्वय श्रीमती के स्वयवर मे जाकर उसे प्राप्त किया। उस स्वयवर मे दो शिवगणो ने नारद का उपहास किया और नारद के शाप के कारण वे रावण और कुभकर्ण वन गये। नारद ने विष्णु को यह शाप दिया—तुम मनुष्य वनकर वानरो के साथ विरह का दु ख भोगो

१ जैन रामकथाओ मे नारद-पर्वत के यज्ञ-विषयक विवाद का विस्तृत वर्णन मिलता है। पर्वत हिंसात्मक यज्ञ का पक्ष लेता है तथा नारद इसका विरोध करते है (दे० पउमचरिय, पर्व ११, गुणभद्र का उत्तरपुराण सधि ६७, २५६ आदि)। पउमचरिय के अनुसार नारद ब्राह्मण ब्रह्मरुचि तथा वरकुर्मी के पुत्र हैं, जृंभक नामक देवता नारद को शास्त्र तथा आकाशगामिनी विद्या सिखलाते हैं और नारद देवर्षि वन जाते है। पउमचरिय ने नारद को ब्राह्मण कथाओ के अनुसार सगीतज्ञ, विनोदी तथा कलहप्रिय के रूप मे चित्रित किया।

२ दे० सर्ग ३-४। लिंग पुराण (उत्तरार्द्ध, अध्याय ५) मे भी विष्णु की माया के कारण श्रीमती नारद-पर्वत को वानर के रूप मे देखती है तथा विष्णु को माला प्रदान करती है, किन्तु इस वृत्तान्त मे नारद के किसी शाप का उल्लेख नही मिलता।

(दे० रुद्रसंहिता, सृष्टिखण्ड, अध्याय ३-४)। रामचरितमानस मे अम्बरीष की पुत्री श्रीमती के स्थान पर सीलनिधि की पुत्री विश्वमोहिनी का उल्लेख किया गया है (दे० बालकांड १३०, ७-४)। बलरामदास के रामायण मे अम्बरीष की पुत्री का नाम लीलावती है (दे० किष्किन्धा कांड)।

अद्भुत रामायण के एक अन्य स्थल के अनुसार लक्ष्मी ने किसी अवसर पर स्वर्ग मे नारद का अपमान किया था, इस पर नारद ने उनको राक्षसो के यहाँ जन्म लेने का शाप दिया, जिसके फलस्वरूप लक्ष्मी मंदोदरी की पुत्री बन गई (दे० सर्ग ६)। बलरामदास के अनुसार लक्ष्मी ने जय-विजय के साथ अन्याय किया था और इसी कारण उनको सीता के रूप के अवतार लेना पड़ा (दे० अनु० ६४८)।

३७४ प्रामाणिक वाल्मीकीय रामायण मे नारद का उल्लेख नहीं था किन्तु प्रचलित रामायण से लेकर परवर्ती रामकथाओ की एक विशेषता यह है कि इनमे नारद का महत्त्व बढ़ता जाता है।

प्रचलित रामायण के सर्वप्रथम सर्ग मे नारद वाल्मीकि को रामचरित का सार सुनाते है। उत्तरकाण्ड के अनुसार नारद ने किसी दिन रावण को यम पर आक्रमण करने के लिए उकसाया था (दे० सर्ग २०-२१) तथा ब्राह्मण-कुमार की अकाल मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया था (दे० सर्ग ७४)। पश्चिमोत्तरीय पाठ मात्र मे शर-पाश के प्रसग मे नारद की चर्चा की गई है—नारद राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलवाकर गरुड को बुलाने का परामर्श देते है (दे० प० रा० ६, २७, ७-१४)। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे कुम्भकर्ण के जगाये जाने के पश्चात् उनका एक अपेक्षाकृत लम्बा भाषण उद्धृत किया गया है, जिसमे वह कहता है कि नारद ने मुझे विष्णु-अवतार द्वारा रावण-वध की योजना से अवगत कराया था (दे० गौ० रा० ६, ४०, प० रा० ६, ४१)। दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप के अनुसार नारद ने रावण को श्वेत द्वीप मे भेजा, जहाँ रावण स्त्रियो द्वारा बुरी तरह से हराया जाता है (दे० ७ ३७ प्रक्षिप्त सर्ग ५)।

परवर्ती रामकथाओ मे नारद के हस्तक्षेप का बार-बार उल्लेख मिलता है। वह दस्यु वाल्मीकि के हृदय-परिवर्तन का साधन बन जाते है (दे० अनु० ३८), दशरथ तथा जनक को विभीषण के आक्रमण मे बचाते है (दे० अनु० ३३८), अनावृष्टि के समय दशरथ को परामर्श देते है (दे० कृत्तिवास रामायण १, २७), उनके शाप के कारण राम, सीता, रावण तथा कुम्भकर्ण प्रकट हो जाते है (दे० ऊपर अनु० ३७३), उनके परामर्श पर जनक पुत्रेष्टि यज्ञ करते है (अनु० ४०७) तथा मन्दोदरी अपनी पुत्री को स्वर्णपेटिका मे बन्द कर किसी दूर देश मे गाडने का आदेश देती है (अनु० ४१८ और ४१०)।

पउमचरिय, अध्यात्म रामायरण, पद्म पुराण (पाताल खण्ड) तथा बृहत्कोशल खण्ड मे सीता-स्वयवर के अवसर पर नारद के हस्तक्षेप का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ३९४, ३९५, ४०३)।

नारद राम और रावण के बीच मे सघर्ष उत्पन्न करने के उद्देश्य से पृथ्वी पर उतरते है (दे० वाल रामायरण, अक २, विष्कभ), अयोध्या मे पहुँचकर राम को अवतार का उद्देश्य स्मरण दिलाकर उनसे अनुरोध करते हैं कि वह राज्याभिषेक अस्वीकार करे (अनु ४४३), जयत को राम के पास भेज देते है (अनु० ४३६)। सीता-हरण के लिए रावण को उकसाते है (अनु० ४८६), सीता को माया-सीता की सृष्टि करने का परामर्श देते है (अनु० ५०५), पपा सरोवर के तट पर विरही राम से भेट करने जाते हैं (अनु० ४७६) और वालि-वध के वाद राम को देवी-पूजा करने का उपदेश देते है (अनु० ५२३)। समुद्रलंघन के वाद हनुमान् उनके आश्रम मे पहुँचते हैं (अनु० ५३१) और लका मे ही सीता की खोज करते हुये नारद से भेट करते है (अनु० ५३८ और अनु० ६४३)। कुम्भकर्ण-वध के वाद नारद आकर राम की स्तुति करते है (अनु० ५८६) तथा रावण-वध के वाद देवताओ के लिए रावण की मुक्ति का रहस्योद्घाटन करते है (दे० अनु० ५९९)। पउमचरिय के अनुसार वह लका मे विलव करते हुए राम को उनकी माता का विरह समझाते है (अनु० ६०५)। तोरवे रामायरण मे शम्बूक-वध के एक नवीन रूप मे नारद का उल्लेख मिलता है (अनु० ६३२) तथा पउमचरिय के अनुसार नारद ही लव-कुश-युद्ध के लिए उत्तरदायी है (दे० अनु० ७४६)। आनन्द रामायरण के अनुसार नारद ने शत्रुघ्न के पुत्र यूपकेतु तथा मदनसुन्दरी के विवाह का प्रवन्ध किया था (दे० विवाह कारण्ड, सर्ग ८) तथा सीता को तुलसी-पत्र-सन्धि की शिक्षा दी थी (दे० राज्यकाण्ड, सर्ग २२)।

तुलसीदास ने नारद को एक आदर्श रामभक्त के रूप मे चित्रित किया है। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड मे कहा गया है कि नारद अयोध्या आया करते थे तथा वहाँ नये-नये चरित्र देखकर ब्रह्मलोक मे उनका गुणगान करते थे :

बारबार नारद मुनि आवहिं। चरित पुनीत राम के गावहिं॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं। ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं॥

(दे० ७, ४२, २३)। तुलसी ने एक अन्य स्थल पर नारद की राम-स्तुति उद्धृत की है (दे० ७, ५१)। इसके अतिरिक्त गरुड-चरित के अन्तर्गत इसका उल्लेख किया गया है कि नारद ने राम को नागपास से मुक्त करने के उद्देश्य से गरुड को लका भेजा था तथा वाद मे मोह-ग्रस्त गरुड को ब्रह्मा के यहाँ जाने का आदेश दिया (७, ५८-५९)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रामाणिक रामायरण मे भले ही नारद का नाम तक न आया हो, किन्तु परवर्ती रामकथाओ मे हमे पग-पग पर नारद के दर्शन मिलते हैं।

४—राम का बालचरित

क । जन्म

३७५ वाल्मीकीय रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षिप्त अर्वाचीन प्रक्षेप मे राम तथा उनके भाइयो की जन्मतिथि चैत्र शुक्ल नवमी बताई गई है (दे० ऊपर अनु० ३३२)। परवर्ती रचनाओं मे इस तिथि का प्रायः उल्लेख किया जाता है। उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (१, ३), आनन्द रामायण (१, २, ४), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय २६९), कृत्तिवासीय रामायण (१, ४२), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (१, १९१) , भावार्थ रामायण (१, ६)।

राम-जन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाओं का वर्णन प्राचीन काल से हो रहा है। **पउमचरियं** (पर्व २५) मे राम तथा लक्ष्मण के जन्म के पूर्व उनकी माताओं के शुभ स्वप्नो का उल्लेख मिलता है। राम की माता ने स्वप्न मे सिंह, सूर्य तथा चन्द्रमा को देखा था, दशरथ ने सुनकर कहा था—हे सुन्दरी, ये स्वप्न उत्तम पुरुष का जन्म सूचित करते है (**इमे वरपुरिसं सुन्दरि पुत्तं निवेएन्ति**)। इसी प्रकार सुमित्रा ने हाथ मे कमल धारण करती हुई लक्ष्मी को तथा किरणों से प्रज्वलित चन्द्र और सूर्य को स्वप्न मे देखा , इसके अतिरिक्त उसने पर्वत के शिखर पर स्थित होकर सागर तक फैली हुई पृथ्वी को देखा। पद्मचरित के अनुसार राम की माता ने 'महापुरुषवेदी' (महापुरुष का जन्म सूचित करने वाले) स्वप्न देखे थे। प्रथम स्वप्न मे उन्होंने सफेद हाथी, दूसरे मे सिंह, तीसरे मे सूर्य और चौथे मे चन्द्रमा देखा था। सुमित्रा ने स्वप्न मे देखा कि लक्ष्मी और कीर्ति आदरपूर्वक सिंह का अभिषेक कर रही है। फिर देखा कि मै स्वयं किसी ऊँचे पर्वत पर चढकर समुद्र रूपी मेखला से अलंकृत पृथ्वी को देख रही हूँ। इसके बाद उन्होंने देदीप्यमान किरणों से युक्त, सूर्य के समान सुशोभित, रत्नों से खचित घूमता हुआ सुन्दर चक्र देखा था।[1]

यह असंभव नहीं कहा जा सकता है कि पउमचरियं के प्रभाव से कालिदास ने रघुवंश (१०,६०-६४) मे लिखा है कि रामादि के जन्म के पूर्व दशरथ की रानियो को यह स्वप्न दिखाई देता था कि कमल, शंख, गदा, धनुष और चक्र लिए कोई बौना-सा

---

१ दे० पर्व २५, १-१८। गुणभद्र के उत्तरपुराण मे भी राम की माता के शुभ स्वप्नो का (दे० ६७, १४८) तथा कैकेयी के पांच महाफल देने वाले स्वप्नो का (६७, १५१) उल्लेख किया गया है—सरःसुर्येन्दुकलमक्षेत्र-सिंहान् महाफलान् स्वप्नान्। परवर्ती जैन साहित्य मे भी इन स्वप्नो को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है।

पुरुष हमारी रक्षा कर रहा है, गरुड हमे आकाश मे उडाकर ले जा रहे हैं, लक्ष्मी हाथ मे कमल का पखा लेकर हमारी सेवा कर रही हैं और सप्तर्षि भी वेद-पाठ करते हुए हमारी उपासना कर रहे है। अपनी रानियो से स्वप्नो के विषय मे सुनकर दशरथ प्रसन्न हुए और समझ गए कि मैं जगद्गुरु का पिता वन रहा हूँ। **असमिया वालकांड** (अध्याय २३) मे भी इसका उल्लेख है कि रामादि के जन्म के पूर्व तीनो माताओ ने गरुड पर आरूढ नारायण को स्वप्न मे देखा था।

कालिदास ने राम-जन्म का अत्यन्त काव्यमय वर्णन किया है। "बालक के तेज से सूतिकागृह के दीपको की ज्योति मन्द पड गई थी" तथा उस समय "ससार के सारे दोष भाग गए और चारो ओर गुण ही गुण फैल गए मानो स्वर्ग भी विष्णु भगवान् का अनुसरण करता हुआ पृथ्वी पर उतर आया हो"—**अन्वागादिव हि स्वर्गो गां गतं पुरुषोत्तमम्** (१०, ७२)। अनन्तर कालिदास लका मे उस समय घटने वाले अपशकुनो का उल्लेख करते हुए कहते है कि रावण के मुकुटो से कुछ मणि पृथिवी पर गिर पडे मानो राक्षसो की लक्ष्मी अपने दुर्भाग्य पर आँसू वहा रही हो :

दशाननकिरीटेभ्यस्तत्क्षणं राक्षसश्रियः।
मणिव्याजेन पर्यस्ताः पृथिव्यामश्रुविन्दवः ॥७५॥

कृत्तिवास ने इस प्रसग को आगे वढाकर लिखा है कि उस समय रावण का मुकुट भूमि पर गिर गया तथा अन्य अपशकुनों के अतिरिक्त एक आकाशवाणी भी सुनाई पडी कि दशरथ के घर मे विष्णु का जन्म हुआ है। इसपर रावण ने विचार किया कि शैशव में ही उन्हे मारने मे मेरा कल्याण है और उसने पता लगाने के उद्देश्य से शुक-सारण को अयोध्या भेज दिया। दोनो राक्षस जाकर शिशु को प्रणाम करते है, भक्ति का वरदान माँगकर लका लौटते है तथा रावण को आश्वासन देते है कि उसकी आशंका निर्मूल ही है (दे० १, ४५)।

अध्यात्म रामायण (१, ३, १३-३५) प्राचीनतम रचना है जिसमे इसका वर्णन किया गया है कि शिशु राम जन्म लेते ही अपनी माता के सामने अपने विष्णु-रूप मे प्रकट हुए। कौशल्या **"नीलोत्पलदलश्यामः पीतवासाश्चतुर्भुजः"** वालक को देखकर भगवान् के रूप मे उनकी स्तुति करने लगती है तथा अन्त मे उनसे निवेदन करती हैं कि वह अपना सुकोमल शिशुरूप ग्रहण करें। इसपर राम अपनी माता को उनके पूर्वजन्म की तपस्या तथा वर-प्राप्ति (दे० ऊपर अनु० ३६७) का स्मरण दिलाकर वालक का रूप धारण कर लेते है। इस प्रसग का आधार स्पष्टतया **भागवत पुराण** (१०, ३) है, जिसमे वालक कृष्ण द्वारा वसुदेव-देवकी के सामने विष्णु-रूप प्रदर्शन, वसुदेव-देवकी द्वारा उनकी स्तुति, देवकी द्वारा वालक-रूप ग्रहण करने का निवेदन तथा कृष्ण द्वारा पूर्व-जन्म में वसुदेव-देवकी की तपस्या और वर-प्राप्ति का उल्लेख

बहुत कुछ एक ही शब्दावली में वर्णित है। अध्यात्म रामायण के अनुकरण पर परवर्ती रामकथाओं में भी प्रायः कौशल्या के सामने राम के अपने विष्णु-रूप में प्रकट हो जाने की कथा मिलती है, उदाहरणार्थ—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २६६, ८० आदि), आनन्द रामायण (१, २, ४), रामचरितमानस (१, १६१), रामरहस्य (सर्ग ३), भावार्थ रामायण (१, ६), राघवोल्लास काव्य (सर्ग ४), तत्वसंग्रह रामायण (१, १४)।

रघुवंश की भाँति रामलिंगामृत (सर्ग २) तथा कृत्तिवास रामायण (१, ४१) के अनुसार राम जन्म के पूर्व ही एक स्वप्न में अपनी माता कौशल्या को विष्णु रूप में दिखाई पड़े।

रामचरितमानस के अनुसार काक भुशुण्डी तथा शिव दोनों मनुष्य का रूप धारण कर रामजन्ममहोत्सव[1] के अवसर पर अयोध्या आये थे (दे० १, १६५, ४)।

३७६ भगवद्गीता (अध्याय ११) के अनुसार कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखलाया था तथा भागवत पुराण (१०, ७, ३५-३७) के अनुसार यशोदा ने बालक कृष्ण के मुँह में समस्त ब्रह्माण्ड देखा था। कुछ अर्वाचीन रचनाओं में इस प्रकार की कथा राम के विषय में भी मिलती है। रामलिंगामृत (सर्ग २, २४) तथा रामचरितमानस (१, २०१-२०२) में राम के अपनी माता कौशल्या को अपना विराट् रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है। पद्म पुराण के उत्तरखण्ड (२६६, ८०) के अनुसार राम ने अपना विष्णु-रूप प्रकट करते समय अपने विश्व-रूप का भी उद्घाटन किया था।

अन्य अर्वाचीन रचनाओं में इसका उल्लेख मिलता है कि राम ने रामायण के अनेक अन्य पात्रों को भी अपना दिव्य रूप दिखलाया था, उदाहरणार्थ—परशुराम को (दे० अनु० ३५१), हनुमान को (दे० अनु० ५१२), भुशुण्डी को (दे० अनु० ३८१), अभिषेक के अवसर पर अपने अतिथियों को (पद्मपुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय २७०, ४२)।

कृष्णकथा का यह प्रभाव बाललीला की अन्य घटनाओं में भी परिलक्षित है, विशेषकर राम की नटखटी के वर्णन में (दे० अनु० ३७६), राक्षसों के आक्रमण के वृत्तान्तों में (दे० अनु० ३८०) तथा वनक्रीडा और रासलीला के प्रसंग में (दे० अनु० ३८७)।

३७७ वाल्मीकि रामायण में वसिष्ठ द्वारा नामकरण के अवसर पर राम तथा लक्ष्मण के नामों के विषय में कहा गया है—**रामस्य लोकरामस्य** (१, १८, २६),

---

१. इस जन्मोत्सव का प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायण में मिलता है :

लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धन. (१, १८, २८) तथा लक्ष्मणो लक्ष्मिसंपन्नो (१, १८, ३०)।

अर्वाचीन रचनाओ मे चारो नामो का स्पष्टीकरण किया जाता हे। अध्यात्म रामायण की धारणा सर्वाधिक प्रचलित है[1]—रमणाद् राम इत्यपि ॥ भरणाद् भरतो नाम लक्ष्मणं लक्षणान्वितं शत्रुघ्नं शत्रुहन्तारमेव गुरुरभाषत (१, ३, ४०-४१)। पद्म-पुराण के पाताल खण्ड मे ब्रह्मा स्वय आकर जातकर्म सम्पन्न करते हैं, इस प्रसग मे राम की 'त्रिभुवनाभिरामता' तथा लक्ष्मण की 'रूपशौर्यादिलक्ष्मीयोग्यता' का उल्लेख किया गया है। दूसरे भाइयो के विषय मे लिखा है—भवं भारात्तारयतीति भरतः शत्रून्हन्तीति शत्रुघ्नः (दे० अध्याय ११२, ३३-३४)। पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय २६६) के अनुसार वसिष्ठ द्वारा जातकर्म सम्पन्न होता है, केवल राम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के नामो का कारण बताया गया है। राम के विषय मे लिखा है :

श्रियः कमलवासिन्या रमणोऽयं महाप्रभुः।
तस्माच्छ्रीराम इत्यस्य नाम सिद्धं पुरातनम् ॥४७॥

इसके बाद लक्ष्मण को 'शुभलक्षण' तथा शत्रुघ्न को 'देवशत्रुप्रतापन' कहा गया है।

कृत्तिवास ने भरत के सम्बन्ध मे लिखा है :

पृथिवीर भार सहिबेन अविरत।
तेंइ हेतु ताँर नाम हइल भरत ॥ (१, ४७)

ख। बाललीला

३७८ वाल्मीकि रामायण मे एक ओर राम-लक्ष्मण और दूसरी ओर भरत-शत्रुघ्न की विशेष आत्मीयता का उल्लेख किया गया है (दे० १, १८, २९-३२)। प्रायः सभी परवर्ती रामकथाओ मे भी इसकी चर्चा मिलती है और यह भी बताया जाता है कि पायस का जो अश कौशल्या ने सुमित्रा को दिया था उससे लक्ष्मण उत्पन्न हुए थे और यही राम-लक्ष्मण की घनिष्ठता का कारण है, यह भरत-शत्रुघ्न पर भी लागू है (दे० अध्यात्म रामायण—पायसांशानुसारतः १, ३, ४२)। कृत्तिवास रामायण

---

१ तुलसीदास ने अध्यात्म रामायण के आधार पर लिखा है :
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा ॥
बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा। नाम सत्रुहन वेद प्रकासा ॥
लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ॥
गुरु वसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥१९७॥
(बालकाण्ड)

में इस प्रसंग को और विस्तार दिया गया है। इसके अनुसार दशरथ ने सुमित्रा की उपेक्षा करके केवल कौशल्या तथा कैकेयी को पायस प्रदान किया था।[1] सुमित्रा को उदास देखकर कौशल्या ने यह कहकर उसको अपने पायस का आधा भाग दिया था—अगर तुमको पुत्र हुआ तो वह मेरे पुत्र के साथ रहा करेगा, जिस पर सुमित्रा ने प्रतिज्ञा की थी—मेरा पुत्र तुम्हारे पुत्र का दास होगा। अनन्तर कैकेयी ने भी यही शर्त रखकर सुमित्रा को अपने पायस का आधा भाग प्रदान किया (दे० १, ४१)। भावार्थ बालकांड (अध्याय २३) में भी सुमित्रा को इसी शर्त पर पायस के दो भाग मिलते हैं।

३७९. वाल्मीकि के बाद की रचनाओं में राम की बाललीला के वर्णन में भागवत पुराण की कृष्ण-बाललीला का अनुकरण किया गया है। अध्यात्म रामायण में राम की नटखटी, मक्खन की चोरी, बरतनों का फोड़ना आदि वर्णित हैं (दे० १, ३, ४५-५८), जो स्पष्टतया भागवत पुराण पर निर्भर हैं (दे० दशम स्कंध, नवाँ अध्याय)। यह वर्णन आनन्द रामायण (१. २) और रामरहस्य (सर्ग ३) में भी पाया जाता है। पद्मपुराण (पातालखण्ड, अ० ११२) में लिखा है कि बालक राम ने दशरथ पर अन्न फेंक दिया—अन्नं बालकरेण गृहीत्वा राजनि चिक्षेप। सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध, अ० २५) में राम द्वारा जलपात्र में प्रतिबिंबित चन्द्रमा को पकड़ने की चेष्टा का वर्णन है।

तुलसीदास ने भी अपनी कवितावली (१, १-७) तथा गीतावली (१, ७ आदि) में राम की बाललीला के वर्णन में सूरसागर की कृष्ण-बाललीला का अनुकरण किया है।

३८०. कई रचनाओं में बालक राम पर राक्षसों के आक्रमण का भी वर्णन किया गया है। पद्मपुराण के पाताल खण्ड (अध्याय ११२, ३९-४६) के अनुसार एक ब्रह्मराक्षस बाघ का रूप धारण कर आता है और राम को गिराकर मूर्च्छित कर देता है। वसिष्ठ मंत्र पढ़कर राक्षस को शाप से मुक्त करते हैं। ब्रह्मराक्षस अपना परिचय देकर कहता है कि मैं वेदशास्त्रवित् ब्राह्मण था और परधन हथियाने के कारण ब्रह्मराक्षस बन गया था। पद्मपुराण के गौडीय पाताल खण्ड (अध्याय १५) में बालक राम एक पुष्पनिर्मित धनु से एक राक्षस को मार डालता है जो मृग के रूप में आया था। भुशुण्डी रामायण में भी भागवत पुराण का प्रभाव स्पष्ट है। "रावण द्वारा भेजे गये राक्षस बाल्यावस्था में ही राम को समाप्त करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु वे स्वयं मारे जाते हैं। इनके डर से दशरथ राम को किसी गुप्त स्थान भेजते हैं।

---

१ सुमित्रा के दुर्भगा होने का कारण ऊपर स्पष्ट किया गया है (दे० अनु० ३३६)।

सरयूपार गोपप्रदेश मे गोपेंद्र सुखित और उनकी स्त्री मागल्य राम का पालन पोपरण करते है ।"[1] कृत्तिवास मे ये राक्षस रामभक्त वन जाते है (दे० अनु० ३७५)।

३८१. काक भुशुण्डी की कथा का पहले-पहल **योगवासिष्ठ** मे वर्णन किया गया है । इसके अनुसार काक भुशुण्डी और उसके भाइयो का पिता चड नामक काक (अलवसा देवी का वाहन) है तथा उनकी माताएँ ब्राह्मी भगवती के रथ की हसियाँ हैं । पिता के कहने से वे सुमेरु पर्वत पर निवास करने गए जहाँ भुशुण्डी के सब भाई मर गए, लेकिन भुशुण्डी निर्विकार और चिरजीव रहे (दे० निर्वाण-प्रकरण, सर्ग १४-२४) । योगवासिष्ठ के इस भुशुण्डी-उपाख्यान मे कही भी उसके पूर्वजन्म अथवा उसकी राम-भक्ति का उल्लेख नही किया गया है । **रामचरितमानस** के उत्तरकाड मे उसके पूर्वजन्मो की भी कथा दी गई है, पूर्व कल्प के एक कलियुग मे वह अयोध्यावासी शूद्र था । गुरु का सत्कार न करने के कारण वह शिव-शाप से सर्प हो गया । वाद मे वह गुरु तथा शिव की कृपा से सगुणरूप राम का उपासक ब्राह्मण वन गया और अत मे लोमस-ऋषि के शाप से उसे काक-योनि प्राप्त हुई (दे० दो० ९५-११४) ।

रामचरितमानस के अनुसार काक भुशुण्डी तथा शिव, दोनो मनुष्य के रूप मे राम-जन्म-उत्सव के उपलक्ष्य मे अयोध्या गए थे (दे० १, १९५, ४) **सत्योपाख्यान** मे रामभक्त काक भुशुण्डी राम को शष्कुलि (एक प्रकार की पूरी) खाते देखकर उनके नारायणत्व पर सदेह करता है । परीक्षा करने के उद्देश्य से वह उसे राम के हाथ से छीन कर भाग जाता है । लेकिन राम गरुड पर आरूढ होकर तीनो लोको मे उसका पीछा करते है । अत मे काक राम की शरण लेता है और निश्चल भक्ति का वरदान पाकर अपने आश्रम लौटता है । अनन्तर शिव तथा भुशुण्डी, दोनो के ब्राह्मण के वेश मे राम को देखने के लिए अयोध्या जाने का उल्लेख है (दे० २९वाँ अध्याय) ।

रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड (दो० ७५) मे भुशुण्डी गरुड से कहता है कि मेरा इष्टदेव वालक राम है । वह प्रत्येक रामावतार मे राम की वाललीला देखने जाता है तथा पाँच वर्ष तक वालक राम की सगति मे विताता है । अनन्तर वह अपने मोह की कथा सुनाता है—किसी दिन राम की वाललीला देखकर (**प्राकृत सिसु इव लीला देखि**) भुशुण्डी के मन मे उनके नारायणत्व के विपय मे सन्देह उत्पन्न हुआ । इसपर

---

१ दे० भगवती प्रसाद सिंह, रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ९७ । सारलादास कहते है कि परशुराम के डर से दशरथ ने अपने पुत्रो को सात वर्प की उम्र तक छिपाया । खोतानी रामायण के अनुसार रानी ने राम और लक्ष्मण को परशुराम के आक्रमण से बचाने के उद्देश्य से उनको १२ वर्ष तक भूमि के अन्दर छिपा रखा था (दे० अनु० ३५१) ।

राम भुशुण्डी को पकडने आगे बढे और भुशुण्डी भाग गया, किन्तु वह आकाश मे दूर तक उडता हुआ भी राम की भुजा अपने पास ही देखता रहा। अन्त मे भयभीत होकर भुशुण्डी ने अपनी आँखे बन्द कर ली और अपने को अयोध्या मे पाया। राम उनके सामने हँसते हुये खडे थे और भुशुण्डी ने उनके मुख मे प्रवेश कर राम के शरीर के अन्दर बहुत से ब्रह्माण्ड देख लिये। इस प्रकार भुशुण्डी का मोह दूर हुआ (दे० दो० ७७-८३)।

३८२ बालक राम तथा हनुमान् की मित्रता की कथा का कोई प्राचीन आधार नही मिलता। रामचरितमानस के अप्रामाणिक सस्करणो के एक क्षेपक तथा विश्राम-सागर (बीसवाँ सस्करण, सन् १९५६ ई०, पृ० ४१८) मे इसका वर्णन किया गया है।

अर्वाचीन रचनाओ मे यह प्रसग अपेक्षाकृत विस्तार सहित वर्णित है।[1] शकर मदारी बन कर हनुमान् को अयोध्या ले आते हैं। बालक राम बन्दर को देखकर उसपर मुग्ध हो जाते है। मदारी बन्दर को अयोध्या मे छोडकर चला जाता है। हनुमान् राम के साथ रहकर बहुत दिनो तक उनकी सेवा तथा मनोरजन करते हैं तथा बाद मे राम द्वारा किष्किन्धा भेजे जाते है।

ग। प्रारम्भिक कृत्य

३८३ वाल्मीकि रामायण (१, १८, ३१) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि जब राम मृगया खेलने जाते हैं, लक्ष्मण धनुष लेकर उनका साथ देते हैं तथा उनकी रक्षा करते है। अध्यात्म रामायण (१, ३, ६२-६३) के अनुसार राम नित्यप्रति लक्ष्मण के साथ दुष्ट पशुओ को मारने के लिए वन जाते थे। रामचरितमानस मे उन पशुओ को पवित्र कहा गया है तथा उनके स्वर्ग जाने का भी उल्लेख है—पावन मृग मारहिं. जे मृग रामबान के मारे, ते तनु तजि सुरलोक सिधारे (दे० १, २०५, १-२)। सत्योपाख्यान मे इस आखेट का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन मिलता है। राम और उनके भाई अनेक पशुओ को मारते है जो वध किये जाने पर दिव्य रूप धारण कर अपना परिचय देते हैं। राम का मारा महिष अपने को नारद द्वारा शापित विल्व बताता है (दे० पूर्वार्द्ध, अध्याय ४१), इसी प्रकार भरत का मारा सिह भरद्वाज द्वारा शापित कलिंग देश निवासी शकर नामक ब्राह्मण (दे० अध्याय ४७) तथा शत्रुघ्न का मारा हुआ हाथी ऋषि सुदर्शन द्वारा शापित एक 'मद्यपाननिरत' ब्राह्मण था (दे० अध्याय ४८)।

इन सबो के शापो की अवधि रामावतार के कारण समाप्त हो जाती है। इस प्रकार राम का आखेट भी मुक्तिप्रद माना गया है। सत्योपाख्यान मे राम द्वारा एक

---

१ दे० शान्तनुबिहारी द्विवेदी का 'भक्तराज हनुमान्,' पृ० १३, सत्यदेव चतुर्वेदी का 'अमितवेग' पृ० १६ तथा सुदर्शन सिंह का 'श्री हनुमान् चरित', पृ० २८।

किरात की मुक्ति का भी वृत्तान्त मिलता है। किसी दिन राम मृगया के समय एक नराकृति वल्मीक देखते हैं, जो उनके स्पर्शमात्र से दिव्य देह धारण कर अपना परिचय देता है। वह डिडिर नामक किरात था जो साधुओ के सदुपदेश से तपस्या करने लगा था। वह रामावतार का रहस्य जानता है तथा राम द्वारा रावण-वध की भविष्यद्-वाणी करता है। अन्त मे राम उसको वैकुण्ठ-वास का वरदान देते है (दे० अध्याय ४२)। किसी दिन चारो भाई आखेट करते हुए ऋष्यशृग के आश्रम मे पहुँचकर अपनी वहन शान्ता से भी मिलते है (दे० अध्याय ४६)।

कृत्तिवास रामायण मे मृगया के वर्णन मे दो नए तत्व मिलते है। किसी दिन राम मारीच को देख लेते हैं जो अपने को मृग मे बदलकर जनक के राज्य मे शरण लेने भाग जाता है (दे० १, ४६)। कृत्तिवास के अनुसार ब्रह्मा ने मृगया के कारण राम-लक्ष्मण की थकावट देखकर इन्द्र को भेजा कि वह मृणाल मे अमृत भर दे जिसे दोनो भाई खाने वाले है। इस प्रकार वनवास के समय उनको भूख नही लगेगी—**मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा सुधापाने रामेर ना लागिबेक क्षुधा** (दे० १, ४६)। यह इन्द्र द्वारा सीता को प्रदत्त हवि का स्मरण दिलाता है (दे० अनु० ५००)।

विश्वामित्र के आगमन के पूर्व ही राम की वीरता के विषय मे **वृहत्कोशल खण्ड** तथा **पउमचरियं** मे कुछ सामग्री मिलती है। वृहत्कोशल खण्ड के अनुसार दशरथ ने राम को शम्बरासुर का वध करने भेजा था (दे० अध्याय ४) तथा पउमचरिय के अनुसार राम तथा लक्ष्मण ने म्लेच्छो को हरा दिया था, जो जनक के राज्य पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहे थे (दे० पर्व २७)।

३८४. **वाल्मीकि रामायण** के अयोध्याकाण्ड मे गुह के विषय मे कहा गया है कि वह राम का सखा है—**तत्र राजा गुहो नाम रामस्यात्मसमः सखा** (२, ५०, ३३)। **सत्योपाख्यान** मे यह माना गया है कि राम ने वनवास के पूर्व ही गुह से मृगया की शिक्षा प्राप्त की थी (दे० पूर्वार्द्ध, अध्याय ४३)। **वलरामदास रामायण** मे राम शिकार खेलते समय अपनी सेना से अलग हो जाते है तथा गुह से मिलकर उनके साथ सख्य करते है। राम-गुह-सख्य का विस्तृत वर्णन **कृत्तिवासीय रामायण** मे मिलता है।

किसी दिन दशरथ अपने पुत्रो के साथ गगा-स्नान करने गये। गुहक चाण्डाल तीन करोड़ चाण्डालो को साथ लेकर दशरथ की सेना को रोक लेता है तथा राम को देखने की इच्छा प्रकट करता है। दशरथ राम को रथ मे छिपाकर गुहक से युद्ध करते है और गुहक को हराकर तथा उसके हाथ बाँधकर रथ पर रखवाते है। इसपर गुहक पैर के अँगूठे से बाण मारता है। राम जिज्ञासा से प्रेरित होकर यह कौतुक देखने आते हैं। तब गुहक राम के दर्शन पाकर उनको अपने पूर्व-जन्म की कथा सुनाता है कि उस जन्म मे मैं वसिष्ठ का पुत्र वामदेव था। जिस दिन दशरथ ने अंध-मुनि-पुत्र सिन्धु का

वध किया था और अपने उस पाप के प्रायश्चित्त का उपाय पूछने के लिए वह वसिष्ठ से मिलने आये थे उस समय मेरे पिता वसिष्ठ घर पर नहीं थे, मैंने ही दशरथ को तीन बार राम-नाम का जप करने का परामर्श दिया। बाद मे मैंने अपने पिता को यह सब बताया, इसपर वसिष्ठ ने क्रुद्ध होकर मुझे चाण्डाल बन जाने का शाप दिया— "एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे। तिन बार रामनाम बलालि राजारे॥" अन्त मे वसिष्ठ ने मुझसे कहा कि दशरथ के घर मे राम का जन्म होगा, उनके चरणस्पर्श से तुम शाप से मुक्त होगे। मैं वही वसिष्ठ-पुत्र वामदेव हूँ और पिता के शाप के कारण ही गुहक के रूप मे उपस्थित हूँ। गुहक से यह कथा सुनकर राम दशरथ की अनुमति से गुहक के बंधन अपने हाथ से काटते हैं तथा लक्ष्मण की जलाई हुई अग्नि को साक्षी बना कर गुहक से मित्रता करते हैं (दे० १, ५३)।

माधवदेवकृत असमिया बालकाण्ड (अध्याय २७) मे इस वृत्तान्त का एक अन्य रूप मिलता है। दशरथ किसी दिन अपने चार पुत्रो के साथ गगा की तीर्थ-यात्रा करने गये थे। जहाँ राजकुमार स्नान करते थे वहाँ एक गुह नामक चाडाल ने भी स्नान करने का दुःसाहस किया था। राजा के अनुचरो ने उसे पकड कर राजा के सम्मुख उपस्थित किया। राम भी वहाँ थे और राम को देखकर गुह को अपना पूर्व जन्म याद आया। उसने कहा—"मैं ब्राह्मण था, किन्तु गगा की उपेक्षा करने के कारण गगा ने मुझे यह शाप दिया कि अभी चाडाल बन जाओ, किन्तु बाद मे राम को देखकर मुक्त हो जाओगे।"

३८५. योगवासिष्ठ रामायण (वैराग्य प्रकरण, सर्ग ३), आनन्द रामायण (१, २, २६) तथा भावार्थ रामायण (१, ७) मे विश्वामित्र के आगमन के पूर्व राम की तीर्थयात्राओ का उल्लेख किया गया है। सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध, अध्याय १८) में इसका वर्णन विवाह के पश्चात् ही रखा गया है, अन्य रचनाओ मे रावण-वध के बाद राम की तीर्थयात्राओ का वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६३७)। सेरी राम के अनुसार राम तथा लक्ष्मण विवाह के पूर्व तीन महीने तक नीलपुर्व नामक मुनि के यहाँ रहकर तपस्या करते है तथा उनसे जादू सीख लेते है। नीलपुर्व उनको एक धनुष तथा नागस्कन्द पतील देव नामक तपस्वी उनको तीन बाण प्रदान करते हैं।

३८६ योगवासिष्ठ रामायण मे राम के १६ वर्ष की अवस्था मे विरक्त हो जाने तथा वसिष्ठ के उपदेश के प्रभाव से फिर अपने कर्त्तव्य-पालन के लिए तत्पर होने का वर्णन किया गया है (दे० वैराग्य प्रकरण, सर्ग ५)। उदारराघव (सर्ग २) तथा भावार्थ रामायण (१, ८) मे भी राम के इस वैराग्य का उल्लेख मिलता है। रामचन्द्रिका मे रावण-वध के बाद अयोध्या मे पहुँचकर राम के विरक्त हो जाने की चर्चा है (दे० प्रकरण २४)।

३८७ रामलिंगामृत के द्वितीय सर्ग मे राम की बाललीला के अनन्तर उनकी वन-क्रीडा का भी उल्लेख किया गया है। कृष्णकथा का यह अनुकरण उडिया नृसिंह पुराण (तृतीय रत्नाकर) और बृहत्कोशल खण्ड मे और आगे बढा दिया गया है तथा विवाह के पूर्व राम की रासलीला का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० अध्याय १-५)।

३८८. वाल्मीकि रामायण मे विश्वामित्र सबाहु तथा मारीच से अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम की सहायता माँगने आते है (दे० १, १९)। सत्योपाख्यान के अनुसार विश्वामित्र ने शिव के आदेश के अनुसार ही ऐसा किया था (दे० उत्तरार्द्ध अध्याय ४)। कृत्तिवास मे विश्वामित्र के आगमन का कारण यह माना गया है कि राक्षसो के उत्पात से मिथिला-प्रदेश को यज्ञ-हीन देखकर जनक ने विश्वामित्र से निवेदन किया कि वह राम को ले आये (दे० १, ५४)। रामकीर्त्ति विश्वामित्र-यज्ञ के प्रसग से ही प्रारम्भ होता है। एक असुर महाकाय काक का रूप धारण कर विश्वामित्र के यज्ञ मे विघ्न करता है। इस 'काकनासुर' का वध कराने के लिए विश्वामित्र अयोध्या जाकर राम तथा लक्ष्मण को अपने यहाँ ले आते है। रामकियेन (अध्याय ११) मे भी राम द्वारा काकनासुर के वध का वर्णन मिलता है, किंतु इस रचना मे स्वाहु (सुबाहु) और मारिश (मारीच) दोनो काकनासुर के पुत्र माने जाते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस अवसर पर दशरथ द्वारा विश्वामित्र को धोखा देने के प्रयत्न की कथा पूर्व भारत मे उत्पन्न हुई है तथा वहाँ से हिन्देशिया तक फैल गई है। यह वृत्तान्त कृत्तिवास रामायण, सारलादास महाभारत, बिर्होर नामक आदिवासी जनजातियो की रामकथा तथा सेरी राम मे मिलता है। कृत्तिवास रामायण (१, ५६) के अनुसार दशरथ ने राम तथा लक्ष्मण के स्थान पर भरत तथा शत्रुघ्न को विश्वामित्र के साथ भेज दिया। सरयूतट पर पहुँचकर विश्वामित्र ने राजकुमारो से कहा—यहाँ से दो पथ है, पहले पथ से जाने मे हमे तीन दिन लगेगे, दूसरे पथ से हम तीसरे पहर पहुँच जायेंगे किन्तु इस पथ पर ताडका राक्षसी का भय रहता है। भरत ने उत्तर दिया—"दूसरे पथ से हमे क्या प्रयोजन है।" यह सुनकर विश्वामित्र समझ लेते हैं कि दशरथ ने उनको धोखा दिया है और वह अयोध्या लौटकर राम को माँग लेते है। एक आदिवासी कथा (दे० अनु० २७२) मे विश्वामित्र का प्रस्ताव इस प्रकार है—पहला मार्ग सुगम है और सुन्दर नगर की ओर ले जाता है, दूसरा मार्ग भयकर वन की ओर ले जाता है जहाँ व्याघ्र, ऋक्ष आदि हिंसक पशु रहते हैं।

सेरी राम मे महारीसी कली (सीता के पोष्य पिता) स्वय आकर दशरथ से निवेदन करते है कि उनके पुत्र सीता के स्वयवर मे भाग ले। दशरथ भरत तथा शत्रुघ्न को उनके साथ भेज देते है। कली उनको चार मार्गों मे से चुनने देते हैं, जिनमें क्रमशः १७, २०, २५, और ४० दिन लगेगे। अन्तिम मार्ग निरापद है, अन्य मार्गो में क्रमशः

राक्षसी, गैंडे और नागिन का भय रहता है। भरत और शत्रुघ्न लम्बा मार्ग चुन कर अयोग्य ठहरते हैं; कली लौटकर दूसरी बार राम और लक्ष्मण को साथ ले जाते हैं; राम १७ दिन का मार्ग चुनकर नगीन नामक राक्षसी का वध करते हैं।

३८६. वाल्मीकि रामायण में विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण के प्रस्थान से लेकर मिथिला में पहुँचने तक का वृत्तान्त ३४ सर्गों में वर्णित है। इनकी अधिकांश सामग्री पौराणिक कथाएँ है, जिनका प्रायः उन प्रदेशों से कोई सम्बन्ध है जिसे विश्वामित्र पार कर रहे हैं। यात्रा के पूर्वार्द्ध में विश्वामित्र कामदहन (सर्ग २३), ताटका (सर्ग २४) तथा वामनावतार (सर्ग २६) की कथाएँ और मिथिला के रास्ते में विश्वामित्र-वंश, गंगा का स्वर्गारोहण, शिव-उमा-विवाह, गंगावतरण, समुद्र-मंथन तथा अहल्या की कथा सुनाते हैं (सर्ग ३२-४८)। मिथिला में शतानन्द विश्वामित्र के ब्राह्मण बनने का वृत्तान्त सुनाते हैं (दे० सर्ग ५१-६५)। इन कथाओं में से केवल अहल्या की कथा का रामकथा के साथ सीधा सम्बन्ध है, इसका विकास ऊपर निरूपित किया जा चुका है (दे० अनु० ३४४-३४८)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार वसिष्ठ दशरथ को समझाते हुए कहते हैं कि विश्वामित्र के अस्त्र कृशाश्व तथा प्रजापति दक्ष की जया तथा सुप्रभा नामक कन्याओं के पुत्र हैं (रा० १, २१, १३-१५)। अगले सर्ग में इसका उल्लेख है कि विश्वामित्र ने सरयू-तट पर पहुँचकर राम को बला तथा अतिबला नामक मंत्र प्रदान किये जिन्हें जपकर राम को श्रम, ज्वर, भूख-प्यास का अनुभव नहीं होगा, उनके रूप में विपर्यय नहीं आयेगा और वह ज्ञान प्राप्त करेंगे। इस सर्ग में बला तथा अतिबला पितामह की पुत्रियाँ कही गयी हैं (रा० २२, १३-१४)। बाद में विश्वामित्र द्वारा राम को विभिन्न अस्त्र दिए जाने का वर्णन किया गया है (सर्ग २७-२८)। कुछ परवर्ती रचनाओं ने बला-अतिबला के स्थान पर जया-विजया का उल्लेख है (दे० भट्टिकाव्य २, २१ और बलरामदास रामायण)। असमिया बालकांड (अध्याय २७) के अनुसार दशरथ ने किसी अवसर पर अपने चार पुत्रों के साथ भारद्वाज-आश्रम की यात्रा की थी। वहाँ राम ने स्वप्न में देखा कि इन्द्र मेरा अभिषेक कर मन्त्र सिखलाते हैं और धनुष-बाण भी प्रदान करते हैं। जागने पर राम ने अपने हाथों में धनुष देखा और मन में मन्त्र का उच्चारण किया।

सिद्धाश्रम पहुँचने के पूर्व विश्वामित्र राम को सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी तथा मारीच की माता ताटका की कथा सुनाते हैं। अगस्त्य ने सुन्द को मार डाला और मारीच को राक्षस तथा ताटका को एक विकराल नरभक्षिणी यक्षी बन जाने का शाप दिया। अनन्तर राम द्वारा ताटका के वध का वर्णन दिया जाता है (सर्ग २५-२६)। आश्रम में यज्ञ-रक्षा करते समय राम सुबाहु और अन्य राक्षसों को मार डालते है तथा मारीच पर मानवास्त्र चला कर उसको शतयोजन की दूरी पर समुद्र में फेंकते

है। परवर्ती रचनाओ मे राम के इन प्रारम्भिक कृत्यों मे अधिक परिवर्तन नही किया गया है। प्रधान विकास यह है कि वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के बाणो से विद्ध ताटका भूमि पर गिरकर मर जाती है किन्तु अध्यात्म रामायण (१, ४), पद्म पुराण (उत्तरखड, अध्याय २६६, १२१), रामचरितमानस आदि मे ताटका के दिव्य रूप धारण कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान करने का वर्णन मिलता है। कृत्तिवास के अनुसार राम द्वारा मारे हुये राक्षसो की सख्या तीन करोड है। सेरी राम मे राम द्वारा जगीन (ताटका) के अतिरिक्त महाकाय गैंडे तथा सूरनागिन का वध करने का वर्णन है। ऊपर इसका उल्लेख हो चुका है कि रामकीर्ति मे ताटका, सुबाहु आदि के स्थान पर काकनासुर के वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३८८)।

५——राम-सीता-विवाह

क। धनुर्भंग

३९० प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे राम द्वारा धनुर्भंग के पश्चात् चारो भाइयो के विवाह का वर्णन किया गया है। महाभारत के रामोपाख्यान मे, जो रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है, न तो धनुर्भंग और न राम को छोडकर अन्य भाइयो के विवाह का निर्देश किया गया है (दे० ३, २९१)। अत: ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ मे केवल राम-सीता-विवाह का उल्लेख मिलता था। धनुर्भंग तथा अन्य भाइयो का वृत्तान्त बाद मे जोड दिया गया होगा। इस अनुमान की पुष्टि इस बात से होती है कि वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाड मे लक्ष्मण को स्पष्ट शब्दो मे अविवाहित कहा गया है।[1]

वाल्मीकि के कथानक का विकास दिखलाने के पूर्व उन रचनाओ का उल्लेख करना है जिनमे महाभारत की भाँति धनुर्भंग का प्रसग नही मिलता। गुणभद्रकृत उत्तर-पुराण मे विश्वामित्र के स्थान पर जनक ही दशरथ से राम तथा लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए माँगते है तथा राम को पुरस्कारस्वरूप अपनी दत्तक पुत्री सीता प्रदान करते है। तिब्बती रामायण के अनुसार सीता कृषको द्वारा पाली जाती है, इन्ही

---

१ दे० ३, १८, ३। अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त अश मे लक्ष्मण-ऊर्मिला की चर्चा है, दे० आगे अनु० ४३१ (७)। सुन्दरकाण्ड मे इसका उल्लेख किया गया है कि राम का साथ देने के लिए लक्ष्मण ने अपूर्व सुख-सम्पदा तथा वरागनाओ का परित्याग किया था——प्रिया याश्च वरांगना. (दे० ५, ३८, ५४)। भरत राम के पूर्व ही विवाह कर चुके थे, इसका निर्देश बालकाड मे मिलता है (दे० १, ७३, ४)। अयोध्याकाड मे एक स्थल पर भरत के विवाहित होने का उल्लेख किया गया है (दे० २, ५३, ११)।

कृषकों के अनुरोध से वनवासी राम अपनी तपस्या छोड़कर सीता के साथ विवाह करते है। खोतानी रामायण में वनवास के समय सीता से राम तथा लक्ष्मण, दोनो के विवाह का उल्लेख किया गया है। दशरथ जातक मे राम वनवास के पश्चात् अपनी सहोदरी बहन के साथ विवाह करते है। दोनो अन्य बौद्ध कथाओ मे राम के विवाह का उल्लेख नही किया गया है (दे० अनामक जातकम् तथा दशरथ कथानकम्)।

३६१ वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्वामित्र जनक के यज्ञ के अवसर पर राम-लक्ष्मण को मिथिला ले जाते हैं (सर्ग ३१) और वहाँ पहुँचकर जनक से शिव-धनुष दिखलाने की प्रार्थना करते है। इस पर जनक कहते हैं कि शिव ने मेरे पूर्वज देवरात को यह धनुष दे दिया था। सीता के भूमि से प्रकट होने के पश्चात् जनक ने प्रण किया था कि जो शिव-धनुष चढा सके, उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जायेगी। बहुत से राजाओ ने प्रयत्न किया तथा असफल होने पर उन्होंने मिथिला का अवरोध किया। जनक ने देवताओ की भेजी हुई सेना से उनको पराजित किया (सर्ग ६६)। अनन्तर राम धनुष चढाकर उसे तोडते हैं जिस पर दशरथ को बुलाया जाता है तथा राम के अतिरिक्त लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न भी क्रमश- ऊर्मिला, माडवी तथा श्रुतकीर्ति से विवाह करते हैं (सर्ग ६७-७३)।

राम-विवाह के इस वृत्तान्त मे धनुर्भंग को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। उपर्युक्त रचनाओ को छोडकर सब रामकथाओ मे धनुर्भंग का वर्णन प्राय वाल्मीकि के अनुसार किया गया है। महावीरचरित के अनुसार विश्वामित्र के आश्रम मे ही राम-लक्ष्मण सीता-ऊर्मिला को देखकर उनकी ओर आकर्षित हो जाते है। उसी आश्रम मे रावण एक दूत द्वारा सीता को माँगता है तथा राम द्वारा धनुर्भंग भी किया जाता है (दे० अक १)। अनर्घराघव मे भी रावणदूत शौष्कल मिथिला मे आकर रावण की ओर से सीता को माँगता है तथा धनुष-परीक्षा को रावण के अयोग्य बताता है। राम के धनुर्भंग के पश्चात् चारो भाइयो के विवाह का निश्चय हो जाने पर शौष्कल रावण के पास लौटता है (अक ३)। सत्योपाख्यान मे वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता-स्वयंवर का वर्णन किया गया है, जिसमे बहुत से राजा धनुष-परीक्षा मे असफल होते है। लेकिन इसमे प्रहस्त के आगमन का भी उल्लेख किया गया है, जो कहता है कि शिव के प्रति श्रद्धा रखने के कारण रावण धनुष-परीक्षा मे सम्मिलित होना अस्वीकार करता है। उस स्वयंवर के पश्चात् ही वाल्मीकि के अनुसार राम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन मिलता है (दे० उत्तरार्द्ध, सर्ग ३)। देवीभागवत पुराण मे रावण सीता से कहता है कि मैंने तुमको जनक से माँगा तक, किन्तु उन्होंने धनुष-परीक्षा मे सफलता ही विवाह की शर्त रखी थी। शिवचाप के भय से मैं तुम्हारे स्वयंवर मे सम्मिलित नही हुआ (रुद्रचापभयान्नाहं सम्प्राप्तस्तु स्वयंवरे; दे० स्कन्ध ३, अध्याय २८)।

उपर्युक्त वृत्तान्तो तथा रघुवश आदि अधिकाश प्राचीन रामकथाओ मे वाल्मीकि के अनुसार धनुर्भंग के अवसर पर अन्य राजाओ की उपस्थिति का उल्लेख नही किया गया है तथा प्राय. चारो भाइयो के विवाह का निर्देश मिलता है ।

३६२. **वाल्मीकि रामायण** के बालकाण्ड के अनुसार देवताओ ने देवरात को शिव का धनुप दे दिया था (दे० १, ३१ तथा १, ६६), किन्तु परशुराम के तेजोभग के प्रसग मे कहा गया है कि शिव ने स्वय ही देवरात को अपना धनुप दिया था (दे० ऊपर अनु० ३५०) । अयोध्याकाण्ड मे सीता अनुसूया से कहती है कि देवरात से प्रसन्न होकर वरुण ने उसे एक धनुष प्रदान किया था (दे० २, ११८, ३६) । **भट्टि-काव्य, बाल-रामायण** (४, ५४), **अध्यात्म रामायण** (१, ६, ७०), **आनन्द रामायण** (१, ३, ५६), **पद्मपुराण** के वगीय उत्तरखण्ड[1] तथा **रामकियेन** (अध्याय १२) आदि मे ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि शिव ने उस धनुष से त्रिपुर को नष्ट किया था ।

सत्योपाख्यान (उत्तरार्द्ध, अध्याय २) तथा **वृहत्कोशलखण्ड** (अध्याय ६) मे शिव जनक को स्वप्न मे दर्शन देकर कहते है कि धनुर्भंग करने वाला ही सीता के साथ विवाह करे ।

अनेक रामकथाओ के अनुसार जनक ने ही उस धनुष को प्राप्त किया था । **पद्मपुराण** के पाताल खण्ड के अनुसार जनक को चिन्ता होती है कि राम के साथ सीता का विवाह किस प्रकार निश्चित हो । वह शिव-पार्वती से प्रार्थना करते हैं और शिव उसे अजगव[2] नामक धनुप प्रदान करते है, जिसे तोडने मे राम ही समर्थ होगे (दे० अध्याय ११२) । **कृत्तिवास** मे भी जनक ही यह धनुप शिव से प्राप्त करते है । ब्रह्मा ने शिव से निवेदन किया था कि वह ऐसी युक्ति निकाल ले जिससे राम को छोडकर किसी अन्य वर के साथ सीता का विवाह न हो । इसपर शिव ने परशुराम को अपना धनुष देकर आदेश दिया—मेरा यह धनुष लेकर जनक के घर मे रख देना तथा जनक से कहना कि वही सीता के साथ विवाह करे जो इस धनुष को तोड सके (दे० १, ५१) । **काश्मीरी रामायण** के अनुसार शिव ने जनक को इस शर्त पर एक धनुष दिया था कि जो उसे चढ़ा सके, वही सीता के साथ विवाह करे (दे० वालकाण्ड न० ५) । **सेरी राम** के अनुसार देवताओ ने यह धनुष किसी महर्षि की हड्डियो से बनाया था, शिव ने उसे ब्रह्मा को दिया और ब्रह्मा ने उसे सीता के पोष्य पिता को समर्पित किया था । जावा के सेरत

---

१ ज० ए० सो० ब० १८४२, पृ० ११२१ ।

२ शकरदेव कृत असमिया **रामविजय** के अनुसार एक आकाशवाणी ने यह घोषित किया था कि शिव के अजगव नामक धनुप पर शर-सधान करने वाला ही सीता का पति बन सकता है ।

काण्ड मे भी सीता के पोष्य पिता को आकाश से गिरा हुआ एक धनुष प्राप्त होने का उल्लेख किया गया है। रामकीर्त्ति के अनुसार जनक ने सीता का अपूर्व सौदर्य देखकर मत्रो द्वारा एक दिव्य धनुप की सृष्टि की थी तथा यह प्रण किया था कि जो यह धनुष उठाने मे समर्थ हो, उसी को मैं सीता को प्रदान करूँगा (सर्ग १)।

आनन्द रामायण (१, ३, ५७) तथा भावार्थ रामायण (१, १७) मे कहा गया है कि जो शिव-धनुष जनक के पास है, उससे परशुराम ने क्षत्रियो का २१ बार नाश किया था। जैन पउमचरियं के अनुसार विद्याधर चद्रगति वज्रावर्त्त नामक धनुष मिथिला पहुँचा देते है और इससे राम के बल की परीक्षा होती है (दे० सर्ग २८)। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सीता धनुष के साथ-साथ यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न हुई थी (दे० आगे अनु० ४२४)।

आनन्द रामायण (१, ३, ५८), भावार्थ रामायण (१, १७), बिर्होर रामकथा, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ आदि बहुत-सी अर्वाचीन रामकथाओ[1] के अनुसार सीता के शिव-धनुष को उठा लेने के पश्चात् ही जनक ने प्रण किया था कि जो उस धनुष को तोडेगा उसी से सीता का विवाह होगा। आनन्द रामायण (१, ३, ६०) मे कहा गया है कि सीता के उस कार्य से जनक ने सीता के लक्ष्मी-अवतार होने का रहस्य जान लिया। भावार्थ रामायण (१, १७) के अनुसार परशुराम ने जनक के महल मे सीता को धनुष के साथ खेलते हुए देखा तथा जनक को यह सुझाव दिया कि जो यह धनुप भग करने में समर्थ हो, वही सीता का पति बन जाये।

---

१. दे० रामनरेश त्रिपाठी . कविताकौमुदी ५वाँ भाग, पृ० १४६, ग्रामसाहित्य, भाग १, पृ० २७६। राम इकबाल सिंह राकेश कृत मैथिली लोकगीत, पृ० १२३। डब्लू वार्ड, व्यू ऑव दि हिस्ट्री, लिटरेचर एड मियोलोजी ऑव दि हिन्दूस, भाग ३, पृ० १८०। शिवनन्दन सहायकृत 'श्री गोस्वामी तुलसीदास जी' मे सीता के धनुष उठाने की निम्नलिखित प्रचलित कथाओ का उल्लेख किया गया है (पृ० ४०६)—

क सीता ने सखियो के सग खेलते समय उठा लिया।

ख खेलते समय उनकी ओढनी मे लगकर हट गया।

ग यह समझकर कि धनुष की पूजा के लिए पिता जी को दूर जाते कष्ट होता है सीताजी उसे घर उठा लाईं।

घ माता के सावकाश नही रहने से धनुष के स्थान को पूजा के निमित्त एक दिन लीपने गईं और उसे हटा कर उन्होने चौकोर चौका लगा दिया।

ख । सीता-स्वयंवर

३६३. वाल्मीकि रामायण मे सीता के स्वयवर का उल्लेख किया गया है, उस अवसर पर बहुत से राजा शिव-धनुष को चढ़ाने मे असमर्थ ही रहे और उन्होंने बाद मे मिथिला पर आक्रमण किया। उस घटना के बहुत काल बाद (सुदीर्घस्य तु कालस्य) राम ने धनुष तोड़ दिया और सीता से विवाह किया (दे० बालकांड, सर्ग ६६ तथा अयोध्याकांड, सर्ग ११८)।

बाद की रामकथाओं मे सीता-स्वयवर तथा राजाओं के आक्रमण, दोनो घटनाओं का राम से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। सीता-स्वयवर मे रावणदूत अथवा रावण ही के आगमन का भी प्रायः उल्लेख मिलता है।

३६४. पउमचरियं प्राचीनतम रचना है, जिसमे राम सीता-स्वयवर मे धनुष चढाते हैं। कथा इस प्रकार है : राम ने म्लेच्छो के विरुद्ध जनक की सहायता की थी और जनक ने उन्हे सीता को देने की प्रतिज्ञा की थी। यह सुनकर कि सीता तथा राम का विवाह निश्चित हुआ है नारद को सीता के दर्शन करने की अभिलाषा हुई। मिथिला जाकर नारद ने सीता के भवन में प्रवेश किया। उन्हे अचानक आते देखकर सीता भयभीत हुई[1], वह भागकर छिप गई तथा नारद को महल से निकाला गया। प्रतिकार करने के उद्देश्य से नारद ने भामण्डल के उद्यान मे सीता का चित्र बना दिया, जिसे देखकर भामण्डल सीता पर आसक्त हुआ। बाद मे नारद भामण्डल से मिलकर बताते है कि यह चित्र किसका है। भामण्डल की विरहावस्था देखकर उसके पालक पिता चन्द्रगति ने एक विद्याधर को यह आदेश देकर मिथिला भेजा कि जनक को किसी-न-किसी तरह यहाँ ले आओ। वह विद्याधर मायावी घोडे का रूप धारण कर जनक को ले आया तथा चन्द्रगति ने जनक के सामने भामण्डल तथा सीता के विवाह का प्रस्ताव रख दिया। जनक ने उत्तर दिया कि मैं राम से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। चन्द्रगति के अनुरोध करने पर जनक राम-सीता-विवाह की यह शर्त स्वीकार करते है कि राम को पहले वज्रावर्त्त-धनुष चढाना होगा। इसपर चन्द्रगति ने जनक तथा धनुष, दोनो को मिथिला पहुँचा दिया। स्वयवर का आयोजन हुआ तथा सभी राजाओं को बुलाया गया। राम भी लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के साथ मिथिला आए और उन्होने स्वयवर में धनुष चढा दिया। बाद मे लक्ष्मण ने भी ऐसा ही किया[2], उनका पराक्रम देखकर विद्याधर राजाओ

---

१. स्वयभूदेव के पउमचरिउ के अनुसार सीता ने दर्पण मे नारद का प्रतिबिम्ब देखा था तथा मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडी, उनकी सहेलियाँ चिल्लाने लगी तथा नारद को बाहर निकाल दिया गया (सधि २१)।

२. रविषेण के पद्मचरित मे दो चापो की चर्चा है, राम वज्रावर्त्त को चढाते

ने लक्ष्मण को १८ कन्याओ को प्रदान किया (दे० पर्व २८) ।

३६५ परवर्ती रचनाओ मे राम प्राय. अन्य राजाओ की उपस्थिति मे अर्थात् सीता-स्वयवर के अवसर पर धनुष चढाते है। उदाहरणार्थ—नृसिह पुराण (अध्याय ४७); भागवत पुराण (६, १०), अध्यात्म रामायण (१, ६, २४), कव रामायण (१, १२); द्विपद रामायण (१, २८), मैथिली-कल्याण (अक ५), सूरसागर (६, ४६७), रामकेर्त्ति (सर्ग १) । अध्यात्म रामायण के अनुसार नारद जनक के पास पहुँचकर राम तथा सीता के अवतार का रहस्य प्रकट करते है तथा दोनो के विवाह का आयोजन करने को कहते हैं (दे० १, ६, ६५), इसपर जनक सीता-स्वयवर की घोषणा करते है । पद्मपुराण (पाताल खण्ड) मे नारद के अनुरोध पर सीता-स्वयवर का आयोजन किए जाने का वर्णन मिलता है। अपने पुत्रो का विवाह करने के उद्देश्य से दशरथ ने नाना देशो मे दूतो को भेज दिया। इनमे से एक शीघ्र ही लौट कर यह समाचार ले आया कि विदर्भ (!) देश के राजा विदेह की पुत्री वैदेही राम के सर्वथा योग्य है । इसपर वसिष्ठ को भेजा जाता है जो लग्न निश्चित करके अयोध्या लौटते है । अनन्तर दशरथ विवाह-मगल गाती हुई युवतियो आदि के साथ मिथिला के लिए प्रस्थान करते है, जनक उनका स्वागत करते हैं तथा उनको विदेह नगर के पश्चिम के एक महल मे ठहराते हैं । अब नारद आ पहुँचते है और वे अगले दिन होने वाले विवाह के लिए जनक द्वारा निमन्त्रित किए जाते हैं, नारद उत्तर देते है कि यह विवाह के लिए उपयुक्त मुहूर्त नही है । नारद, गार्ग्य आदि के साथ परामर्श करने के बाद जनक दशरथ की अनुमति से सीता-स्वयवर के लिए अन्य राजाओं को भी बुला भेजते है । उसी रात को जनक शिव से अजगव नामक धनुष प्राप्त कर लेते हैं जिसे राम को छोडकर कोई भी राजा चढाने मे असमर्थ होगा (दे० अध्याय ११२, ४६-६०) ।

३६६ ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि महावीरचरित, अनर्घराघव तथा सत्योपाख्यान मे एक रावणदूत की चर्चा है, जो सीता को माँगने आता है (दे० अनु० ३६१) । निम्नलिखित रचनाओ मे सीता-स्वयवर मे ही रावणदूत[1] के आगमन तथा उसी अवसर पर राम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन मिलता है—महानाटक (१, २१-२२); देवीभागवत पुराण (३, २८), राम-रहस्य (४, ५८) ।

३६७ अधिकाश अर्वाचीन रचनाओ मे राम तथा रावण दोनो सीता-स्वयवर मे विद्यमान है । प्राचीनतम रचना जिसमे उस अवसर पर रावण की उपस्थिति का

वही है तथा लक्ष्मण सागरावर्त्त को (पर्व २८) । रामकियेन मे लिखा है कि लक्ष्मण ने सीता के प्रति राम का प्रेम जानकर धनुष चढाना अस्वीकार किया (अ० १२) ।

१ इसका नाम प्राय. शौष्कल माना जाता है ।

उल्लेख है राजशेखर कृत **बालरामायण** है। इस नाटक के अनुसार रावण ने धनुष-परीक्षा को अस्वीकार किया था।

प्रसन्नराघव मे रावण तथा बाणासुर दोनो आकर धनुष चढाने का असफल प्रयत्न करते है, इसपर रावण सीता का हरण करने का सकल्प प्रकट कर चला जाता है। **पद्मपुराण** का पातालखण्ड (अध्याय ११२), **बलरामदास रामायण, रामचरितमानस, कवितावली, जानकीमंगल, रामचन्द्रिका** आदि रचनाएँ भी सीता-स्वयवर में रावण तथा बाणासुर के आगमन का उल्लेख करती है।

निम्नलिखित रामकथाओ मे सीता-स्वयवर के अवसर पर राम तथा रावण की उपस्थिति का निर्देश मिलता है—जानकीरावच (दे० ऊपर अनु० २३६), आनन्द रामायण (१, ३, ३०), भावार्थ रामायण (१, १८), रामलिंगामृत (सर्ग ३), धर्मखण्ड (अध्याय २८); तोरवे रामायण (१, १५), गुजराती रणयज्ञ, हिकायत सेरी राम, पातानी रामा-कथा, जावा का सेरत काण्ड, ब्रह्मचक्र, रामजातक, पाश्चात्य वृतान्त नं० ३, ४, ७, ८, १३। **आनन्द रामायण** (१, ३, ७७-८५) के अनुसार रावण ने धनुष उठाने का प्रयत्न किया, किन्तु धनुष उलट गया और रावण उसके नीचे दबकर छटपटाने लगा। जब कोई भी धनुष नही उठा सका तब विश्वामित्र ने राम को रावण के प्राण बचाने का आदेश दिया। **तोरवे रामायण** का वृत्तान्त इससे मिलता-जुलता है।

बलरामदास रामायण के अनुसार रावण पुष्पक मे बैठा हुआ राम द्वारा धनुर्भंग देखकर डरता है और लका वापस जाता है। वलरामदास तथा कृत्तिवास के अनुसार रावण ने राम के आगमन के पूर्व ही धनुष चढाने का प्रयास किया था (दे० १, ५२)। सेरी राम मे इसका उल्लेख मिलता है कि इन्द्रजिए भी विद्यमान है, किन्तु वह इसीलिए धनुष के पास नही जाता कि वह 'पुत्री-कोमाल-देवी' नामक अपनी प्राणप्यारी सहधर्मिणी को एक सपत्नी देने के लिए तैयार नही है।

३९८. अर्वाचीन रामकथाओ मे बहुधा स्वयवर के वर्णन मे देवताओ की उपस्थिति का भी उल्लेख हुआ है। **पद्मपुराण** के पाताल-खण्ड (अध्याय ११२, ९९-१०३) के अनुसार महेन्द्र, सूर्य और वायु ने धनुप चढाने का निष्फल प्रयास किया था। **बलरामदास रामायण** मे इन्द्र मात्र के असफल प्रयास का वर्णन किया गया है। **रामकेर्ति** मे भी ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, वायु, अग्नि आदि ३३ देवताओ की चर्चा है जो एक-एक करके धनुष-परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होकर चले जाते है।

कुछ रचनाओ मे अन्य राजाओ की असफलता के पश्चात् शिव राम को धनुष तोड़ने का आदेश देते है—उदाहरणार्थ धर्मखण्ड (अध्याय २८) और तत्त्वसग्रह रामायण (१, २९)।

कम्ब रामायण (१, २१), रामलिंगामृत (सर्ग ३) और रामगीतगोविन्द मे भी

स्वयवर के अवसर पर देवताओं की उपस्थिति का उल्लेख है। रामचरितमानस मे तुलसीदास देवताओ के मनुष्य का रूप धारण करने की चर्चा करते हैं तथा अन्य देवताओ के आकाश मे स्थित स्वयवर देखने का उल्लेख करते हैं:

देखहिं सुर नभ चढ़े विमान (१, २४६)
देव दनुज धरि मनुज सरीरा (१, २५१)

३९९ सुग्रीव द्वारा राम की परीक्षा का वृत्तान्त हिन्देशिया की रामकथाओ मे सीता-स्वयवर ही के अवसर पर रखा गया है। सेरत कांड के अनुसार सीता के पोष्य पिता रेसिकल ने आकाश से गिरा हुआ एक धनुष प्राप्त किया और संकल्प किया कि जो उस धनुष के चलाये हुए वाण से सात ताल वृक्ष विद्ध कर सकता है, उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जायेगी। रावण केवल छः वृक्षो का छेदन कर सकता है। लक्ष्मण की सहायता से राम सफलता प्राप्त करते हैं, ये सात ताल एक साँप की पीठ पर चक्राकार खडे हैं और लक्ष्मण ने उस साँप को दवाकर उसे सीधा किया था। पातानी पाठ की कथा इस वृत्तान्त से मिलती-जुलती है।[1]

सेरी राम तथा हिकायत महाराज रावण मे ७ वृक्षो के स्थान पर चालीस का उल्लेख किया गया है, जिनमे रावण केवल ३८ को छेदने मे समर्थ है। सेरी राम मे महरीसी कली राम की एक अन्य परीक्षा भी लेते हैं। सीता को मूर्तिवत् खड़ी रहने का आदेश देकर महरीसी कली उनको एक मन्दिर मे छिपाते हैं जहाँ एक सहस्र मूर्तियाँ है। राम सीता की खोज करते हुये मन्दिर मे पहुँचते हैं और मूर्तियो को गुदगुदाकर सीता का पता लगाते हैं। एक अन्य पाठ के अनुसार राम मूर्तियो की आँखो पर पुष्प मारकर सीता को खोज निकालते है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे धनुष चढाने के अतिरिक्त लक्ष्य-भेदन की भी परीक्षा होती है, जिसमे रावण के निष्फल प्रयत्न के वाद राम सफलता प्राप्त कर लेते है।

सेरी राम मे सीता के पोष्य पिता विवाह के पूर्व राम से काकासुर का वध करने का निवेदन करते हैं। यह काकासुर यज्ञ मे प्रयुक्त होने वाला दूध पीकर यज्ञो मे विघ्न डाला करता है। राम का वाण काक का पीछा करता हुआ समुद्र पार कर एक टापू पर पहुँच जाता है, काक भयभीत होकर प्रतिज्ञा करता है कि आगे चलकर वह महरीसी कली को कष्ट नही देगा। राम का वाण काक का यह सन्देश लेकर मिथिला वापस आता है। इसके वाद विवाह का आयोजन होता है।

ग। विवाहोत्सव

४००. वाल्मीकीय वालकाण्ड मे धनुर्भंग के पश्चात् दशरथ को बुलाया जाता है

---

१. इस प्रसग का मूल स्रोत भारतीय है, दे० आगे अनु० ५१७।

और वह वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, मार्कण्डेय तथा अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ मिथिला आते है। वहाँ राम-सीता के अतिरिक्त अन्य तीन भाइयो के विवाह भी सम्पन्न किये जाते है। लक्ष्मण सीता की बहन ऊर्मिला से तथा भरत-शत्रुघ्न क्रमशः जनक के भाई कुशध्वज की पुत्रियो माडवी-श्रुतकीर्त्ति से विवाह करते है (दे० सर्ग ७३)। प्रायः सभी रामकथाओ मे ऐसा ही वर्णन मिलता है, किन्तु इस सामान्य नियम के अपवादो का अभाव नही होता। वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग १४) मे जनक को राम-भरत का और कुशध्वज को लक्ष्मण-शत्रुघ्न का ससुर कहा गया है—

जनकः श्वसुरो राजा रामस्य भरतस्य च।
कुशध्वजसुताभ्यां च सुमित्रानन्दनौ पती ॥ २० ॥

गुणभद्र के उत्तरपुराण, तिब्बती रामायण, खोतानी रामायण तथा बौद्ध जातकों का उल्लेख हुआ है जिनमे सीता ही का विवाह वर्णित है (दे० ऊपर अनु० ३६०)। निम्नलिखित रचनाओ मे भी केवल राम तथा सीता के परिणय का उल्लेख हुआ है— भट्टिकाव्य (२, ४३), रामायण ककविन; सेरी राम, रामकेर्ति, रामकियेन, रामलिंगामृत, दामोदर मिश्र द्वारा सम्पादित महानाटक। कुछ अन्य रामकथाओ मे राम तथा लक्ष्मण मात्र के विवाह का उल्लेख है—उदाहरणार्थ वह्निपुराण (पृ० १८३), पद्मपुराण का गौडीय उत्तर खण्ड। पउमचरियं मे राम के अतिरिक्त भरत के विवाह का वर्णन मिलता है। राम-सीता-विवाह के कारण भरत को उदास देखकर कैकेयी ने भरत-सुभद्रा के विवाह का प्रस्ताव किया, सुभद्रा[1] जनक के भाई कनक की कन्या है। इसपर सुभद्रा के स्वयं-वर का आयोजन होता है जिसमे वह भरत को चुन लेती है। अनन्तर राम तथा भरत दोनो का विवाहोत्सव मनाया जाता है (दे० पर्व २८)।

राम के विवाह के वर्णन मे कवियो ने प्रायः अपने समाज की तत्कालीन लोक-रीतियो का निरूपण किया है, इसका विश्लेषण रामकथा से सीधा सम्बन्ध नही रखता।

कम्ब रामायण (१, १३), उदार राघव (३,१०३) और बलरामदास, धनंजय भज तथा उपेंद्र भज की उडिया रामकथाओ के अनुसार दशरथ अपनी रानियो को भी मिथिला ले जाते हैं।

कुछ अर्वाचीन रचनाओ मे विवाहोत्सव मे देवताओ के आगमन का उल्लेख मिलता है। तत्वसंग्रह रामायण शिव तथा ब्रह्मा की उपस्थिति का उल्लेख करता है (१, ३०)। रामचरितमानस के अनुसार देवता विमान पर चढकर राम का विवाह देखने आते है

१. रविषेण के पद्मचरित के अनुसार उसका नाम लोक सुन्दरी था (दे० २८, २५८)।

देवताओ से उनकी विनय का वर्णन मिलता है ।

रामकथाओ के एक अन्य वर्ग के अनुसार सीता ने राम को मिथिला मे प्रवेश करते देख लिया था तथा उसी क्षण उनके हृदय में राम के प्रति प्रेम अकुरित हुआ था। तमिल **कम्ब रामायण** मे इस प्रकार का प्रथम वर्णन मिलता है—राम के मिथिला मे प्रवेश करते समय राम और सीता एक दूसरे को देखते है और दोनो मे प्रेम उत्पन्न होता है ।

"कल्पनातीत सौन्दर्य से युक्त सीता इस प्रकार कन्याभवन पर खडी थी कि राम-लक्ष्मण विश्वामित्र मुनि के पीछे-पीछे उसी कन्याभवन के निकट होकर गये । सयोगवश राम की दृष्टि सीता पर पडी और इसी समय सीता की दृष्टि भी राम पर पड गई । फिर क्या था ? नेत्रो ने नेत्रो को ग्रस लिया । अत्यन्त सुरुचिपूर्ण होने के कारण एक दूसरे का रसास्वादन करने लगे । इसी के द्वारा दोनो के चित्त भी जुडकर एक हो गये । तदनन्तर दोनो अपनी सुध-बुध खो, एक-दूसरे के परवश हो, महान् व्यक्ति राम ने भी सीता को निहारा और उसने भी राम को निहारा" (१, १०, ३५) ।[1]

कम्बर ने उसी दशवे पटल मे सीता तथा राम दोनो के रात्रि मे विरह का विस्तृत वर्णन किया है । **गोविन्द रामायण** मे भी सीता प्रासाद की छत पर से राम को मिथिला मे पहुँचते देखती हैं और राम-सीता मे पारस्परिक प्रेम उत्पन्न होता है । **असमिया बालकाण्ड** (अध्याय ३६) मे इसका वर्णन किया गया है कि मिथिला मे प्रवेश करते हुए राम को देखकर सीता मुग्ध हो गई थी तथा उन्होने राम के साथ ही विवाह करने का प्रण किया था । **रामकियेन** (अध्याय १२) के अनुसार राम जनक की राजधानी मे पहुँचकर सीता को महल के झरोखे मे देखते हैं जिसके फलस्वरूप दोनो उसी क्षण एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते है । उपेन्द्र भज के वैदेहीश विलास तथा त्रिपुरारिदासकृत रामकृष्णकेलिकलोल मे भी इसका उल्लेख है । रामकियेन मे कहा है कि सीता के प्रति राम का प्रेम जान कर लक्ष्मण धनुष चढाने मे समर्थ होते हुए इसे नही उठाते हैं ।

राम-सीता के पूर्वानुराग के चित्रण मे कुछ कवियो ने पुष्पवाटिका मे राम और सीता के साक्षात्कार की कल्पना की है । **प्रसन्नराघव** (दे० अनु० २३७) मे राम सीता को चडिकायतन की ओर जाते हुये देखते है तथा छिपकर सीता और उनकी सखियो की बातचीत सुनते है, बाद मे दोनो के एक दूसरे को देखकर आकर्षित हो जाने का वर्णन किया गया है । **मैथिलीकल्याण** नाटक (दे० अनु० २३६) मे सीता तथा राम के पूर्वानुराग, दोनो के विरह-वर्णन तथा अभिसारिका सीता का भी चित्रण किया गया

---

१ दे० डॉ० सु० शकर राजू नायडू, कम्बर और तुलसी, (मद्रास १९५६), पृ० ६२ ।

किया गया है—दे० कालनिर्णय रामायण (अनु० १७६), अध्यात्म रामायण (१, १, ३७), आनन्द रामायण (१, ५, १३१), पद्मपुराण का उत्तरखण्ड (२६६, १८०)। आनन्द रामायण के अनुसार राम ने छः वर्ष की अवस्था के पूर्व ही विवाह किया था (दे० १, ४, २५)।

४०२ नृसिंह पुराण (अध्याय ४७) से लेकर अनेक रामकथाओ मे सीता स्वयवर के पश्चात् अन्य राजाओ के आक्रमण का वर्णन किया गया है। अपने भाइयो की सहायता से राम उन राजाओ को पराजित करते हैं। पद्मपुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११२), तोरवे रामायण (१, १५), असमिया वालकांड (अध्याय ४१), असमिया रामविजय तथा मलय के सेरी राम मे इस युद्ध का उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण (१, ४) मे इस युद्ध का वर्णन एक अन्य अवसर पर रखा गया है। जनक ने दशरथ को कुटुम्ब के साथ दीवाली के अवसर पर निमन्त्रित किया था। उत्सव के पश्चात् अयोध्या के रास्ते मे स्वयवर मे पराजित राजाओ ने आक्रमण किया तथा राम ने अपने भाइयो की सहायता से उनको हरा दिया था।

घ। पूर्वानुराग

४०३ आठवी शती ई० से लेकर विवाह के पूर्व राम तथा सीता के पारस्परिक आकर्षण और प्रेम का उल्लेख मिलता है। **महावीरचरित** मे विश्वामित्र सीता और ऊर्मिला को अपने आश्रम मे बुलाते है, जहाँ राम और लक्ष्मण उनको देखकर आकर्षित हो जाते हैं (दे० अक १)। **जानकीहरण** मे धनुर्भंग के बाद, किन्तु विवाह के पूर्व, सीता के विरह का वर्णन किया गया है (दे० सर्ग ७)। परवर्ती रचनाओ मे इस पूर्वानुराग के वर्णन मे उत्तरोत्तर विकास हुआ है। रामकथाओ का एक वर्ग है जिसमे स्वयवर मे ही राम को देखकर सीता के अनुरक्त हो जाने का वर्णन किया गया है। **महानाटक** के प्रथम अक मे कहा गया है कि धनुष की कठोरता तथा राम की कोमलता देखकर सीता ने अपने पिता की प्रतिज्ञा पर खेद प्रकट किया था और इसका भी उल्लेख है कि राम ने धनुर्भंग के पूर्व ही सीता की प्रेममय मुस्कुराहट देखी थी (**स्मरस्मेरं**, छद १६)। **कल्कि पुराण** (३, ३, २६) के अनुसार राम सीता के कटाक्ष से प्रेरणा लेकर धनुप चढाते है (**जनकजेक्षितैरच्चितः**)। **आनन्द रामायण** (१, ३, १११-१२०) मे कहा गया है कि स्वयवर के समय राम को सभा के आगन मे देखकर सीता प्रेमविह्वल हो जाती है, वह अपनी सखी से कहती है कि यदि पिता जी राम को छोडकर किसी अन्य पुरुष से मेरे विवाह का आयोजन करेगे तो मै जीवित नही रह सकूंगी। तव वह देवताओ से प्रार्थना करती है कि वे राम के लिए धनुष को पुष्पवत् वना दे तथा राम के सफल होने पर चौदह वर्ष तक वनवास करने का व्रत लेती है। **कृत्तिवास रामायण** (१, ६०-६१) तथा **बलरामदास रामायण** मे भी स्वयवर के समय राम को देखकर सीता की प्रेमदशा तथा

ङ । राम का एकपत्नीव्रत

४०४ वाल्मीकि ने राम को 'सत्यपराक्रम' क्षत्रिय, आज्ञाकारी पुत्र तथा, 'स्व-दारनिरत' पति के रूप मे चित्रित किया है। परवर्ती रामकथाओ मे राम को प्राय. 'एकपत्नीव्रत' भी माना गया है, यह वाल्मीकीय आदर्श का स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है।

प्रस्तुत विषय का विश्लेषण करते समय हमे स्मरण रखना चाहिए कि उच्चाशय मानव का चित्र अंकित करते हुए भी वाल्मीकि का दृष्टिकोण यथार्थवादी ही है, अत उनकी रचना मे यत्र-तत्र ऐसी उक्तियाँ भी मिल जाती है जो परवर्ती रामकथाओ के मर्यादावाद को आघात पहुँचा सकती है। अयोध्याकाण्ड के एक स्थल पर राम की 'स्त्रियो' की ओर संकेत किया गया है, कैकेयी को उभाडती हुई मथरा कहती है कि राम के अभिषेक के बाद उनकी स्त्रियाँ फूली नही समायेगी—**हृष्टाः खलु भविष्यन्ति रामस्य परमाः स्त्रियः**।[1] समुद्र के तट पर प्रायोपवेशन के वर्णन मे 'अनेकधा परम नारियो की भुजाओ से स्पृष्ट राम की बाँह' का उल्लेख मिलता है—**"भुजैः परमनारीणामभिमृष्टमनेकधा"** (६, २१, ३)। यद्यपि असख्य स्थलो पर सीता के प्रति राम के प्रेम की चर्चा है फिर भी कैकेयी से भरत के युवराजाभिषेक का समाचार सुनकर राम कहते है कि पिता की आज्ञा पर मैं भरत को अपना राज्य, अपनी सम्पत्ति, अपना जीवन तथा सीता को भी सहर्ष अर्पित कर सकता हूँ :

अह हि सीतां राज्यं प्राणानिष्ठान्धनानि च।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्या भरताय प्रचोदितः ॥७॥

(२, सर्ग १६)

शरपाश मे बद्ध लक्ष्मण के लिए विलाप करने वाले राम की यह उक्ति[2] प्रसिद्ध ही है :

---

१ दे० २, ८, १२। उदीच्य पाठ के कुशीलवो ने इस श्लोकार्ध का सीधा अर्थ आपत्तिजनक समझकर इसे इस प्रकार बदल दिया है—**ऋद्धियुक्ता श्रिया जुष्टा रामपत्नी भविष्यति** (गौ० ७, ६, प० रा० १०, ६)। दाक्षिणात्य पाठ के कुछ टीकाकार मानते हैं कि यहाँ आदर के कारण सीता ही के लिए बहुवचन का प्रयोग हुआ है—**सीताबहुत्वमादरार्थम्** (रामायण शिरोमणि)। अन्य टीकाकारो के अनुसार 'स्त्रिय.' का अर्थ है सीता की सखियाँ—**बहुवचनेन सीता सख्यः** (तिलक)।

२ अग्नि-परीक्षा के समय सीता के प्रति राम के कठोर शब्द यहाँ अप्रासगिक है, क्योकि अग्नि-परीक्षा का समस्त वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६५)।

है। प्रसन्नराघव के आधार पर रामचरितमानस तथा गीतावली मे तुलसीदास ने जनकपुर की वाटिका मे राम-सीता के पारस्परिक दर्शन का वर्णन किया है। मौपद्य रामायण (दे० अनु० १६७), धनजय भज के रघुनाथ विलास तथा मैद रामायण (दे० अनु० २०३) मे भी वाटिका-प्रसग मिलता है।[1]

साहित्य दर्पण मे विप्रलम्भ-पूर्वराग के दो कारण अर्थात् श्रवण तथा दर्शन उल्लिखित है। काव्यशास्त्र के ग्रन्थो मे कई प्रकार के दर्शन माने जाते हैं—प्रत्यक्ष-दर्शन, स्वप्नदर्शन तथा चित्रदर्शन। राम-सीता-पूर्वराग के प्रसग मे इन सब कारणो की चर्चा मिल जाती है। प्रत्यक्षदर्शन-विषयक कथाओ का उल्लेख ऊपर हो चुका है। राघवोल्लास काव्य के द्वादश सर्ग मे स्वप्न-दर्शन को सीता के पूर्वराग का कारण माना गया है। "सीता सवेरे रोती-रोती जगकर रात मे देखे स्वप्न को अपनी प्रिय सखी को सुनाती है—एक सुन्दर पुरुष-रत्न स्वप्न मे मुझे मिला था, कोमल स्वच्छ तुलसीदल की माला उसके गले मे थी।......उसी समय जनक-पुत्री ने कोलाहल सुना। पूछा कि यह कैसा कोलाहल हो रहा है। शीघ्र ही पता लगाकर एक मृगनयनी ने कहा—अरी विशाल भाल वाली जनकनन्दिनी, घर के भीतर क्या छिपी हो, इधर गवाक्ष पर आकर देखो। एक सुन्दर पुरुष आ रहा है, उसका नाम राम है, अलौकिकसौन्दर्य समन्वित है। सीता सखियो के साथ राम को देखती है। राम की रूपमाधुरी पर मुग्ध होकर चेतना शून्य हो जाती हैं।...अन्त मे किसी प्रकार सीता होश मे लाई जाती है। राम को देखने के लिए पुनः गवाक्ष पर जाना चाहती हैं, सखियो के मना करने पर उत्तर देती है कि राम के दर्शन से तो शायद प्राण निकले, किन्तु उनके वियोग से तो मरण निश्चित है—**रामेक्षणं प्राणहरं कदाचित् ध्रुवं मृतिं दास्यति तद्वियोगः।**[2]

भुशुण्डी रामायण के अनुसार राम मिथिला मे पहुँचकर एक पक्षी द्वारा सीता के पास अपना चित्र भेज देते हैं, चित्र-दर्शन से सीता उन्हे प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित होती हैं।[3] **वृहत्कोशलखण्ड** मे गुण-श्रवण पूर्वराग का कारण माना गया है। एक तपस्विनी से राम के कार्यो का गुणगान सुनकर अष्टवर्षीय सीता विरह से व्याकुल होने लगती है; जिस पर महादेव जनक को स्वप्न मे दिखाई पडते है तथा स्वयवर का आयोजन करने को कहते हैं (दे० अध्याय ६)।

---

१. साकेत (सर्ग १) मे पुष्पवाटिका के प्रसग मे लक्ष्मण-ऊर्मिला के पूर्वानुराग का भी चित्रण है।

२ दे० राघवप्रसाद पाण्डेय, तुलसीदासकालीन राघवोल्लास काव्य, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७०४।

३. दे० भगवती प्रसाद सिंह, रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० ६८।

(५, २६, ३६)। राम को निर्वासन दिलाने वाली कैकेयी भरत की उपर्युक्त आशका सुनकर उत्तर देती है—**न रामः परदारांश्च चक्षुर्भ्यामपि पश्यति** (२, ७२, ४८)।

आदिकाव्य मे राम के इस चरित्र-चित्रण के आधार पर उत्तरकाण्ड के व्यासो ने यह माना है कि सीता-त्याग के बाद राम ने दूसरा विवाह नही किया (दे० ७, ९९, ८)। अत एकाध अपवादो को छोडकर परवर्ती रामकथाओ की धारणा यह है कि राम एकपत्नीव्रत थे। भागवत पुराण मे राम के विषय मे लिखा है—**एकपत्नीव्रतधरो राजर्षिचरितः शुचि.** (९, १०, ५५)। आनन्द रामायण मे राम स्वय कहते है कि सीता को छोडकर सभी नारियाँ उनके लिये कौशल्या के समान ही है :

अन्यत्सीतां विनाऽन्या स्त्री कौशल्या सदृशी मम ॥
न क्रियते परा पत्नी मनसाऽपि च चिंतये ॥१३॥
(विलास काण्ड, सर्ग ७)

आनन्द रामायण के उसी सर्ग मे यह भी माना गया है कि रामावतार मे एकपत्नीव्रत रखने के फलस्वरूप कृष्णावतार मे उनको बहुत सी पत्नियाँ मिलेगी। राम-चरित्र के इस आदर्श को न स्वीकार करनेवाली प्राचीनतम रचनाएँ जैन रामायण है। विमलसूरि के पउमचरिय (अनु० ६०) तथा गुणभद्र के उत्तरपुराण (अनु० ६४) और उनपर आधारित जैन रामकथाओ मे लक्ष्मण की १६००० तथा राम की ८००० पत्नियो की चर्चा है। रसिक सम्प्रदाय के राम-साहित्य पर कृष्णलीला की गहरी छाप है, अत उसमे राम को बहुपत्नीक माना गया है। भुशुण्डी रामायण मे राम की दो पटरानियो के अतिरिक्त सहस्रो पत्नियो का उल्लेख है (दे० अनु० १८०), बृहत्कोशलखण्ड (दे० अनु० १६१) मे भी राम के बहुत से विवाहो का वर्णन किया गया है।[1] विदेश की रचनाओ मे राम को प्राय. एकपत्नीव्रत ही माना गया है, रामजातक इसका एकमात्र अपवाद प्रतीत होता है (दे० अनु० ३२७)। एक ही रचना मे अर्थात् खोतानी रामायण मे सीता राम तथा लक्ष्मण दोनो से विवाह करती है, उस देश के बहुपतित्व के आधार पर इस प्रकार की कल्पना उत्पन्न हुई होगी।

६—सीता की जन्म-कथा

४०५ प्रारम्भिक रामकथाओ मे सीता के कुल-परम्परा सम्बन्धी तथ्यो के अभाव के कारण अनेक प्रकार की एक दूसरी से सर्वथा भिन्न कथाएँ प्रचलित हो गई हैं। जनक, रावण और दशरथ तीनो सीता के पिता माने गए है। अतः रामकथा के विकास मे

---

१ डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के अनुसार नृत्यराघवमिलन मे राम की पटरानियो की सख्या ८ मानी गई तथा सिद्धान्त तत्त्वदीपिका मे उनकी असख्य विवाहित स्त्रियो की चर्चा है (दे० राम-भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० २६०)।

किं नु मे सीतया कार्यं लब्धया जीवितेन वा ।
शयानं योऽद्य पश्यामि भ्रातरं युधि निर्जितम् ॥५॥
शक्या सीतासमा नारी मर्त्यलोके विचिन्वता ।
न लक्ष्मणसमो भ्राता सचिवः सांपरायिकः ॥६॥

(युद्धकाण्ड, सर्ग ४९)

अपनी माता से राम के वनवास का समाचार सुनकर भरत यह आशका प्रकट करते है—**कच्चिन्न परदारान्वा राजपुत्रोऽभिमन्यते** (२, ७२, ४५) ।

उपर्युक्त उद्धरणो का उत्तरदायित्व वाल्मीकि का है अथवा रामायण के प्राचीन गायको का, इसका निर्णय करना असभव है । इस समस्या का जो भी समाधान हो किन्तु विवाह-सबध के विषय मे तथा सीता के प्रति राम के निश्चल प्रेम के विषय मे जो सामग्री रामायण मे मिलती है, इस पर परवर्ती रचनाओ के 'एकपत्नीव्रत' का आदर्श आधारित है ।

आदिकाव्य के एक स्थल पर 'एकपत्नीव्रत' की प्रशसा की गई (दे० २, ६४, ४३) । राम के साथ वन जाने के लिए अनुरोध करते समय सीता यह तर्क देती हैं कि धर्म-विधि के अनुसार विवाह होने पर स्त्री परलोक मे भी अपने पति की होकर रहती है[1] .

इहलोके च पितृभिर्या स्त्री यस्य महाबल ।
अद्भिर्दत्ता स्वधर्मेण प्रेत्यभावेऽपि तस्य सा ॥१८॥ (२, २९)

वाल्मीकि रामायण मे सीता के प्रति राम के प्रेम का बहुत से स्थलो पर चित्रण किया गया है, सीता से उनका वियोग तथा सीता के लिए उनका विलाप अनेक सर्गो का वर्ण्य-विषय है (दे० ३, ६०-६६, ३, ७५, ४, २७-२८, ४, ३०, ५, ६६, ६, ५) । सीता राम को **'स्वदारनिरत'** (३, ९, ६) तथा अपने प्रति **'स्थिरानुराग'** (२, ११८, ४) मानती हैं तथा यह विश्वास प्रकट करती है कि राम का प्रेम कभी नष्ट नही हो सकता

युद्ध-काड का १०१वाँ सर्ग भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३५), इसमे राम कहते हैं—**देशे देशे कलत्राणि......तं तु देश न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः** (दे० १०१, १४) । इसी प्रकार जिस सर्ग मे सीता राम के चरित्र पर सन्देह प्रकट करती है (५, २८, १४), अधिक सभव है कि वह भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३०) । इसी सर्ग मे सीता अपना एकपत्नीत्व व्यर्थ बताती है—एकपत्नीत्वमिद निरर्थकम् (श्लोक १३) ।

१. वसिष्ठ की यह उक्ति भी द्रष्टव्य है—**आत्मा हि दारा· सर्वेषां दारसंग्रह-वर्तिनाम्** (२, ३७, २४) ।

(५) राम कियेन, (रामकेर्त्ति ?)।
(६) रामजातक, पालकपालाम।

(आ) पद्मजा

(१) दशावतारचरित (११ वी श० ई०), तोरवे रामायण।
(२) गोविंदराज का वाल्मीकि रामायण का पाठ।

(इ) रक्तजा

(१) अद्भुत रामायण (१५वी श० ई०)।
(२) सिंहल द्वीप की रामकथा, विविध भारतीय वृत्तान्त।

(ई) अग्निजा

(१) आनन्द रामायण (१५वी श० ई०), भावार्थ रामायण।

(उ) फल अथवा वृक्ष से उत्पन्न

(१) पाश्चात्य वृत्तान्त न० १९।
(२) पाश्चात्य वृत्तान्त न० १।
(३) ब्रह्मचक्र।

घ। दशरथात्मजा

(१) दशरथ जातक।
(२) जावा के राम केलिंग, मलय के सेरी राम तथा हिकायत महाराज रावण।

— — —

क। जनकात्मजा सीता

४०७ बहुत सम्भव है कि रामकथा-सम्बन्धी प्राचीन गाथाओ मे तथा आदि रामायण मे भी सीता जनक की औरस पुत्री मानी जाती थी। महाभारत मे चार राम-कथाएँ पायी जाती है, किन्तु अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है। सर्वत्र वह जनकात्मजा है। रामोपाख्यान के आरम्भ मे लिखा है : विदेहराजो जनकः सीता तस्यात्मजा विभो (३, २५८, ९)।

हरिवंश (१, ४१) की रामकथा मे भी सीता की अलौकिक उत्पत्ति का तनिक भी उल्लेख नही मिलता। कूर्मपुराण (पूर्वभाग, अध्याय २१, १८) का यह अर्धश्लोक द्रष्टव्य है—रामस्य भार्या सुभगा जनकात्मजा शुभा। कथासरित्सागर (९, १, ६०) मे भी सीता को जनक की आत्मजा कहा गया है—सीता तस्याभवद् भार्या प्राणेशा जनकात्मजा। प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे भूमिजा सीता के जन्म का प्राचीनतम वर्णन पाया जाता है। प्रामाणिक काडो (२-६) मे उसका उल्लेख केवल निम्नलिखित तीन स्थलो पर किया गया है—अनसूया-सीता-सवाद, अशोकवन मे सीता को देखने पर

सीता-जन्म के वैभिन्न की एक अलग समस्या प्रतीत होती है। इसे सुलझाने के लिए उन भिन्न-भिन्न रूपो की प्राचीनता और सापेक्षिक महत्त्व को ध्यान मे न रखने के कारण अनेक विद्वानो ने वहुत चित्य प्रस्ताव किए है। उनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री और राम की सहोदरी वहन मानी जाती थी। इसके वाद वह रावण की पुत्री वनाई गई है और अत मे अयोनिजा सीता (जनक की दत्तक पुत्री) की कल्पना कर ली गई है। प्रस्तुत परिच्छेद मे इस जन्म-कथा के भिन्न-भिन्न रूपो के सक्षिप्त वर्णन के साथ-साथ इसके विकास की रूप-रेखा खीचने का भी प्रयत्न किया जाएगा। आरम्भ मे उन कारणो का स्पष्टीकरण किया जायेगा जो इस विश्वास की पुष्टि करते है कि सीता पहले जनक की औरस पुत्री मानी जाती थी, तदुपरान्त वाल्मीकि के अनुसार भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म का वर्णन किया जायेगा। यह आख्यान सर्वाधिक प्रचलित तथा महत्त्वपूर्ण है और सीता की अर्वाचीन जन्म-कथाओ का भी आधार प्रमाणित हुआ है। वाल्मीकि से भिन्न कथाओ मे एक वात प्रायः सर्वत्र वर्णित है और वह यह है कि मिथिला मे परित्यक्त होने के पूर्व सीता का सम्वन्ध लका से भी स्थापित किया जाता है। अत मे दशरथ जातक तथा हिंदेशिया की जन्म-कथाओ का वर्णन किया जाएगा जिनमे दशरथ सीता के पिता माने गए है। इनके कम महत्त्व का प्रमाण यह है कि शताब्दियो तक अज्ञात होने के कारण इन कथाओ का भारत पर कोई प्रभाव नही पड सका।

४०६ सीता की जन्म-कथा के भिन्न-भिन्न रूपो का परिचय निम्नलिखित तालिका मे दिया जाता है :

क। जनकात्मजा

महाभारत, हरिवंश, कूर्मपुराण, पउमचरियं, आदि वाल्मीकि रामायण।

ख। भूमिजा

(१) **प्रचलित वाल्मीकि रामायण** तथा अधिकाश रामकथाएँ।

(२) दशरथ तथा मेनका की मानसी पुत्री : **वाल्मीकि रामायण** के उदीच्य पाठ।

(३) वेदवती अथवा लक्ष्मी के अवतार।

ग। सीता और लंका

(अ) रावणात्मजा

(१) **वसुदेव हिण्डि; गुणभद्रकृत उत्तरपुराण; महाभागवत पुराण।**

(२) **काश्मीरी रामायण,** पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६।

(३) **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायण।**

(४) **सेरत काण्ड, सेरीराम** का पातानी पाठ।

एक दिन जव कि राजा जनक यज्ञ-भूमि तैयार करनेके लिए हल चला रहे थे, एक छोटी सी कन्यका मिट्टी से निकली। उन्होने उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण किया तथा उसका नाम सीता रखा। मीता-जन्म का यह वृत्तान्त अधिकाश रामकथाओ मे मिलता है। विष्णु-पुराण मे यह भी कहा गया है कि जिस यज्ञ के लिए जनक भूमि तैयार कर रहे थे वह 'पुत्रार्थम्' था। जनक की उस पुत्रकामेष्टि का उल्लेख पद्मपुराण के उत्तरखड के वगीय पाठ मे भी मिलता है। उस वृत्तान्त के अनुसार भूमि मे एक सुवर्ण धनुष मिला था जिसे खोल देने पर जनक ने एक कन्यका को देखा तथा उसे सीता का नाम देकर ग्रहण किया।

सम्भव है कि भूमिजा सीता की अलौकिक जन्म-कथा सीता नामक कृषि की अधिष्ठात्री देवी के प्रभाव से उत्पन्न हुई हो। कृषि की उस देवी से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का वर्णन प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय मे किया गया है। मैं यह नही कहता कि यह वैदिक देवी और रामायणीय सीता अभिन्न है। वैदिक सीता ऐतिहासिक न होकर मीता अर्थात् लागल-पद्धति के मानवीकरण का परिणाम है। किन्तु यह असम्भव नही है कि किसी निश्चित कुलपरम्परा के अभाव मे ऐतिहासिक राजकुमारी सीता की जन्म-कथा पर कृषि की अधिष्ठात्री देवी सीता के व्यक्तित्व का प्रभाव पडा हो।

साथ भी यह भी सर्वथा सम्भव प्रतीत होता है और ऐसा मानना निश्चय ही अधिक स्वाभाविक भी है कि 'सीता' नाम के कारण ही, जिसका अर्थ ही लागलपद्धति (हल से खीची हुई रेखा) है, लोगो ने यह कल्पना की है कि वह लागलपद्धति से निकली थी। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते है कि किसी का नाम उसकी जन्म-कथा का कारण बन गया है (दे० अनु० ७७९)। तैत्तिरीय ब्राह्मण की सीता सावित्री की कथा से ज्ञात होता है कि प्राचीन वैदिक काल मे ही कन्याओ के नामो में सीता भी एक नाम था (दे० ऊपर अनु० ८)।

४०६ वाल्मीकि रामायण के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे उपर्युक्त भूमिजा सीता की जन्म-कथा का परिवर्द्धन किया गया है। तीनो पाठो मे सीता स्वय अत्रि की पत्नी अनसुइया को अपनी जन्म-कथा बताती है। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे यह वर्णन अधिक विस्तृत है।[1] कथा इस प्रकार है :

'राजा जनक को कोई सन्तान नही थी। एक दिन जब वह यज्ञ की भूमि मे हल चला रहे थे उन्होने आकाश मे लावण्यमयी अप्सरा मेनका को देखा और मन मे सन्तानार्थ उसके साहचर्य्य की अभिलाषा की। इस पर एक आकाशवाणी सुनाई दी जिससे उन्हे विश्वास दिलाया गया कि मेनका के ·ारा उन्हे एक पुत्री प्राप्त होगी जो सौंदर्य मे अपनी माता मेनका के समकक्ष होगी। आगे बढकर जनक ने भूमि से निकली हुई सीता

१. दे० गौ० रा० ३, ४, प० रा० ३, २।

हनुमान का विलाप तथा अग्निपरीक्षा । अनसूया-सीता-सवाद तथा अग्निपरीक्षा, ये दो वृत्तान्त समुचित कारणो से प्रक्षिप्त माने जाते हैं (दे० आगे अनु० ४३१ और ५६५) । हनुमान का विलाप सुन्दरकाड के १६ वे सर्ग मे दिया गया है । इस सर्ग मे हनुमान १५वे सर्ग के विषय को ही दुहराते और विस्तार देते हैं, अतः इस सर्ग को वाद का विकास मानने मे कोई विशेष आपत्ति नही होनी चाहिए ।

उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार वहुत सम्भव है कि आदि रामायण मे सीता मिथिला की राज-कन्या और जनक की पुत्री के रुप मे वर्णित थी । वास्तव मे रामायण के अनेकानेक स्थलो पर[1] इसका उल्लेख किया गया है कि सीता जनक के कुल मे उत्पन्न हुई थी । जैन **पउमचरियं** के अनुसार जनक की पत्नी विदेहा से सीता अपने यमल भ्राता भामडल के साथ उत्पन्न हुई थी (पर्व २६) । जन्म होते ही इस भामडल को एक देवता ने उठा लिया था और किसी अन्य राजा के यहाँ छोड दिया था । **वाल्मीकि रामायण** मे जनक के किसी पुत्र का कही उल्लेख नही है, किन्तु **ब्रह्माण्डपुराण** (३, ६४, १८), **विष्णुपुराण** (४, ५, ३०) तथा **वायुपुराण** (८६, १२) आदि मे भानुमान जनक का पुत्र कहा गया है । अतः सम्भव है कि **पउमचरियं** के वृत्तान्त मे ऐतिहासिक तत्त्व विद्यमान हो । **कालिका पुराण** (अध्याय ३८) मे ऐसा उल्लेख है कि नारद निस्सन्तान जनक को यज्ञ कराने का परामर्श देते हुए कहते है कि यज्ञ के प्रभाव से दशरथ को चार पुत्र उत्पन्न हुए है । तद्नुसार जनक यज्ञ के लिए क्षेत्र तैयार करते समय एक पुत्री के अतिरिक्त दो पुत्रो को भी प्राप्त करते हैं ।

ख । भूमिजा सीता

४०८. सीता की अलौकिक उत्पत्ति का वर्णन **वाल्मीकि रामायण** मे दो वार कुछ विस्तारपूर्वक किया गया है, कतिपय अन्य स्थलो पर भी इसके सकेत मिलते हैं ।[2]

---

१. दे० १, १, २७, ५, १३, १४, २, २८, ३, ३, ४७, ३ । लोक-साहित्य मे भी सीता को जनक की औरसी पुत्री माना गया है । उदाहरणार्थ व्रज प्रदेश मे एक गीत प्रचलित है जिसके अनुसार सीता भाट की वेटी थी । शिकार खेलते समय राम उनका परिचय प्राप्त कर लेते है तथा वाद मे अपने पिता 'जसरथु' से जनक के पास पत्र लिखवाते है । उत्तर मे जनक कहते हैं—**"हम तौ के भाट-भिखारिया और तुम राजा महाराज, हमें तुमें कैसें होइगी सजनई"** (दे० भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २, अक ३, पृ० ७४) ।

२. दे० १, ६६ तथा २, ११८ (वर्णन के लिए) और ५, १६; ६, ११६, ७, १७, ७, ६८, ७, ३७ प्र० ३, ५ (उल्लेख के लिए) ।

वह रावण को शाप देकर भविष्यद्वाणी करती है कि मैं तुम्हारे नाश के लिए अयोनिजा के रूप मे पुनः जन्म ग्रहण करूँगी। अन्त मे वह अग्नि मे प्रवेश करती है और बाद मे जनक की यज्ञभूमि मे उत्पन्न होती है।'

श्रीमद्देवीभागवत पुराण (६, १६) तथा **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (प्रकृति खड, अध्याय १४) मे इस कथा मे परिमार्जन किया गया है। कुशध्वज और उसकी पत्नी मालवती लक्ष्मी की उपासना करते है और उनसे उनको पुत्रीस्वरूप मे प्राप्त करने का वर पाते है। जन्म ग्रहण करते ही लक्ष्मी वैदिक मत्रो का गान करती है, इस कारण उन्हे वेदवती का नाम दिया जाता है। कुछ समय के उपरान्त वह हरि को पतिरूप मे वरण करने के लिए तप करने लगती है तथा रावण द्वारा अपमानित हो जाने पर वह उसे शाप देती है कि मै तेरे विनाश का कारण बन जाऊँगी। अनन्तर वह योग के बल पर अपना शरीर त्याग देती है और बाद मे सीता के रूप मे उत्पन्न होती है। यह स्पष्ट है कि सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता के विश्वास की प्रेरणा से वेदवती की कथा को यह नवीन रूप दिया गया है।[1]

कृत्तिवास रामायण (७, १७) के अनुसार कुशध्वज जिस समय वेदपाठ कर रहे थे उस समय उनके मुँह से एक कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम उन्होने वेदवती ही रखा था। शुभ नामक दैत्य ने कुशध्वज को मार डाला और वेदवती तपस्या करने गई। रावण से अपमानित हो जाने पर वह अग्नि तैयार कर उसमे प्रवेश कर गई तथा सीता के रूप मे प्रकट हुई। **बलरामदास रामायण** के अनुसार वेदवती सागर के तट पर तपस्या करती थी, रावण के अपमान के पश्चात् वह उसे शाप देती है तथा अपने तपोबल द्वारा आग उत्पन्न करके उसमे प्रवेश करती है। कुछ दिन बाद रावण वहाँ आकर देख लेता है कि वेदवती का शरीर नही जला है, अत वह उसे पुष्पक पर लाद कर लका ले जाता है। घर पहुँच कर वह मदोदरी को आदेश देता है कि उसका मास भोजन के लिए तैयार किया जाय। नारद के परामर्श से मन्दोदरी दूसरा माँस तैयार करती है तथा वेदवती की लाश समुद्र मे बहा देती है। वरुण उसे जम्बूद्वीप मे पहुँचाता है, जहाँ जनक उसे सीता के रूप मे हल चलाते समय प्राप्त कर लेते है। **पउमचरिय** का वेदवती-वृत्तान्त स्पष्टतया वाल्मीकीय कथा का विस्तार मात्र है। सागरदत्त की पुत्री गुणमती की सगाई धनदत्त (भावी राम) के साथ हुई थी। उसकी माता रत्नप्रभा उसे धनी श्रीकान्त (भावी रावण) को देना चाहती थी। फलस्वरूप धनदत्त के भाई वसुदत्त (भावी लक्ष्मण) तथा श्रीकान्त द्वन्द्वयुद्ध मे एक दूसरे का वध करते हैं। दोनो हरिण बन जाते है तथा गुणमती भी मर कर एक ही प्रदेश मे हरिणी के रूप मे प्रकट हो

---

१. सीता के अवतारत्व के विषय मे ऊपर देख ले, अनु० ३६४-३६५।

को देखा। पुनः यह आकाशवाणी सुनाई दी—**मेनकायाः समुत्पन्ना कन्येयं मानसी तव** (मेनका से उत्पन्न यह कन्या तुम्हारी मानस पुत्री है)।'

क्षेमेंद्रकृत **रामायणमंजरी** (दे० ३४४-३४६) मे भी यह कथा पाई जाती है। इस कथा से यह आभास मिलता है कि प्राचीन काल मे सीता की समुत्पत्ति के विषय में कोई एक वृत्तान्त सर्वप्रामाणिक नही माना जाता था। ईस्वी की प्रारम्भिक शताब्दियों से लेकर वाल्मीकि रामायण की सीता-जन्म-कथा की अपूर्णता का अनुभव होने लगा था। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ का उपर्युक्त वृत्तान्त उस कथा को पूर्ण बनाने का प्राचीनतम प्रयत्न प्रतीत होता है।

माधवकंदली कृत असमिया रामायण (३, १) मे सीता की जन्म-कथा वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ से मिलती-जुलती है, किन्तु **कृत्तिवास** ने प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नया रूप दिया है। मेनका के स्थान पर जनक ने उर्वशी को देख लिया था तथा काम-मोहित हो जाने के कारण उनका तेज भूमि पर गिर गया था, जिससे पृथ्वी गर्भवती हुई। बहुत समय बाद जनक ने हल जोतते समय भूमि मे से एक डिम्ब प्राप्त कर लिया था और उसमे से सीता निकली थी।[1] **बलरामदास** (अरण्यकाण्ड) लिखते है कि हल जोतते समय जनक ने मेनका को देखकर उसी के समान एक कन्या प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की थी। मेनका ने उनकी यह इच्छा जानकर उनको आश्वासन दिया कि मुझसे भी सुन्दर कन्या तुझको प्राप्त होगी।

४१० **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाण्ड (सर्ग १७) मे जो वेदवती की कथा मिलती है वह भी उस समय उत्पन्न हुई होगी। इस वृत्तान्त मे सीता के पूर्व जन्म का वर्णन किया गया है, अतः उसकी उत्पत्ति के समय सीता के लक्ष्मी के अवतार होने का सिद्धान्त सर्वमान्य नही था। कथा इस प्रकार है :

'ऋषि कुशध्वज की पुत्री वेदवती नारायण को पतिरूप मे प्राप्त करने के उद्देश्य से हिमालय मे तप करती है। उसके पिता की भी ऐसी ही अभिलाषा थी। किसी राजा को अपनी पुत्री प्रदान करने से इनकार करने पर कुशध्वज का उस राजा द्वारा वध किया गया था। किसी दिन रावण की दृष्टि उस कन्या पर पडती है। उसके रूप-लावण्य से विमोहित होकर वह उसे उसके केशो से पकडता है। अपना हाथ असि के रूप में बदलकर वेदवती उससे अपने केशो को काटकर अपने को विमुक्त करती है। अनन्तर

---

१. दे० १, ४०। यह प्रसग पूर्णचन्द्र दे, पूर्णचंद्र शील, ताराचाँद दास, वंग-वासी प्रेस, सुबोधचन्द्र मजूमदार आदि के सस्करणो मे मिलता है। दिनेश-चन्द्र ने उसे छोड दिया है किन्तु उनके सस्करण मे भी जनक को पृथ्वी मे से एक डिंब मिल जाने का उल्लेख है।

संबध चार सर्वथा भिन्न रूप धारण करता है। साहित्य मे उल्लेख के काल-क्रमानुसार इनका यहाँ निरूपण किया जाता है।

(अ) रावणात्मजा

४१२. सीता-जन्म की कथाओ मे, जिनका हमे यहाँ पर विश्लेषण करना है, सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रचलित कथा वह है जिसमे सीता को रावण की पुत्री माना गया है। भारत, तिब्बत, खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान), हिन्देशिया और श्याम मे हमे यह कथा मिलती है। भारतवर्ष मे इस कथा का प्राचीनतम रूप वसुदेवहिण्डि (दे० ऊपर अनु० २५३) मे सुरक्षित है। इसके अनुसार विद्याधर मय ने रावण के पास जाकर उसके साथ अपनी पुत्री मन्दोदरी के विवाह का प्रस्ताव रखा। शरीर के लक्षणो का ज्ञान रखने वालो ने कहा कि मन्दोदरी की पहली सन्तान अपने कुल के नाश का कारण बनने वाली है (कुल-क्षयहेतु)। रावण मन्दोदरी का सौंदर्य देखकर मोहित हो चुका था, अतः उसने उसकी पहली सन्तान को त्याग देने का निर्णय कर उसके साथ विवाह किया। बाद मे मन्दोदरी ने एक पुत्री को जन्म दिया तथा उसे रत्नो के साथ एक मजूषा मे रखकर मन्त्री को आदेश दिया कि उसे कहीं छोड दिया जाय। मन्त्री ने उसे जनक के खेत मे रख दिया। बाद मे जनक से कहा गया कि यह बालिका हल की रेखा से उत्पन्न हुई है। जनक ने उसे ग्रहण किया तथा महारानी धारिणी को सौप दिया। गुणभद्र के उत्तरपुराण की निम्नलिखित कथा मे वेदवती वृत्तान्त तथा वसुदेवहिण्डि की कथा का समन्वय किया गया है—'अलकापुरी के राजा अमितवेग की पुत्री राजकुमारी मणिमती विजयार्ध (विन्ध्य) पर्वत पर तप करती थी। रावण ने उसे प्राप्त करने का प्रयास किया। सिद्धि मे विघ्न उत्पन्न होने के कारण मणिमती ने क्रुद्ध होकर निदान किया कि मैं रावण की पुत्री बनकर उसके नाश का कारण बन जाऊँगी। उस निदान के फलस्वरूप वह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुई। उसका जन्म होते ही लका मे भूकम्प आदि अनेक अपशकुन होने लगे। यह देखकर ज्योतिषियो ने कहा कि यह कन्या रावण के नाश का कारण होगी। इसपर रावण ने मारीच को यह आदेश दिया कि वह उसे किसी दूर देश मे छोड़ दे। मन्दोदरी ने कन्या को द्रव्य तथा परिचयात्मक पत्र के साथ-साथ एक मजूषा मे रख दिया। मारीच ने उसे मिथिला देश की भूमि मे गाड दिया जहाँ वह उसी दिन कृषको द्वारा पाई गई। कृषक उसे जनक के पास ले गए। मंजूषा को खोलकर जनक ने उसमे से कन्यका को निकाल लिया तथा उसे पुत्रीवत् पालने का आदेश देकर अपनी पत्नी वसुधा को सौंप दिया।"[1]

---

१. दे० पर्व ६८। सोमसेन के रामचरित में पउमचरियं तथा उत्तरपुराण के

जाती है। उसी के कारण दोनो फिर एक दूसरे को मार डालते है। अनेक जन्मो के वाद गुणमती पुरोहित श्रीभूति की वेदवती नामक कन्या वन जाती है।[1] स्वायभू नामक राजकुमार वेदवती को पत्नीस्वरूप चाहता है, किन्तु श्रीभूति उसे अपनी पुत्री को देना अस्वीकार करता है। इसपर स्वायभू श्रीभूति की हत्या कर वेदवती के साथ वलात्कार करता है। वेदवती उसे शाप देकर (मैं तेरे नाश का कारण वनूँगी) श्राविका का जीवन अपनाती है, वाद मे वेदवती तथा स्वायभू क्रमशः सीता तथा दशमुख के रूप मे जन्म लेते है (पर्व १०३)।

माधवदेव कृत असमिया वालकांड मे सीता की जन्म-कथा भूमिजा सीता तथा वेदवती की कथाओ का मिश्रित रूप है। कथा इस प्रकार है—भगवान ने राम के रूप मे अवतार लेने की प्रतिज्ञा की थी, इसके वाद लक्ष्मी ने उनसे पूछ लिया था कि मैं क्या करूँ। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम जनक के यहाँ जन्म लो (अध्याय २२)। वाद मे लक्ष्मी पृथ्वी पर उतरकर एक पर्वत के शिखर पर बैठ गईं। रावण उन्हे देखकर आसक्त हुआ और नीचे उतरकर उनके पास आ पहुँचा। लक्ष्मी ने रावण को डाँटा—तुमको मारने के लिए भगवान पृथ्वी पर उत्पन्न हो चुके हैं। यह कहकर वह सागर में कूदकर अतर्द्धान हो गईं। तव सागर मे सौ योजन का द्वीप ऊपर आया और लक्ष्मी उसपर विराजमान थी। अनन्तर वसुमती ने आकर लक्ष्मी को आदरपूर्वक अपने गर्भ मे धारण कर लिया। वाद मे लोगो ने यज्ञ के लिए हल जोतते समय पृथ्वी मे एक रक्तमय डिम्ब पाया तथा उसे द्वीप के पास के मिथिला नगर मे ले गए। राजा जनक ने डिम्ब तोडकर उसमें से एक कन्या को निकाला (दे० अध्याय २६)।

ग। सीता और लंका

४११ रामायण की अलौकिक सीता-जन्म-कथा मे परिवर्द्धन किया जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। भूमि मे पडी हुई कन्यका आखिर आई कहाँ से? वह रावण के नाश का कारण क्यो सिद्ध हुई? वेदवती की कथा मे इन प्रश्नो का उत्तर मिलता है; इस कथा में सीता-हरण के पूर्व ही सीता-रावण-संवध का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है। वाद की वहुत सी रामकथाओं मे यह सवध अधिक निकट हो जाता है। जनक द्वारा प्राप्त होने के पूर्व किसी-न-किसी तरह सीता का सवध लका से स्थापित किया गया है। वलरामदास रामायण की कथा के अतिरिक्त (दे० ऊपर अनु० ४१०) यह

---

१. किसी दिन वेदवती ने सुदर्शन मुनि की निन्दा की थी, इससे वह अपने अगले जन्म मे लोकापवाद का शिकार वनी।

हुई ।'[1]

४१४. भारत के निकटवर्ती देशो की रामकथाओ मे इससे मिलती-जुलती कथाएँ पाई जाती हैं। तिब्बती और खोतानी रामायणो मे (जो सम्भवतः नवी शताब्दी के हैं) रावण की पुत्री अपनी जन्मकुडली के कारण परित्यक्त की जाती है और उसे एक पेटिका मे रखकर जल मे फेक दिया जाता है। किन्तु जनक के स्थान पर तिब्बती ग्रंथ के अनुसार एक कृषक तथा खोतानी ग्रन्थ के अनुसार एक ऋषि उस कन्या की रक्षा और भरण-पोषण करते हैं।

४१५. जावा के सेरत कांड मे भी रावण की महिषी एक पुत्री को जन्म देती है जो श्री का अवतार थी। माता को मालूम हुआ था कि यदि उसकी सतान पुत्री है तो वह भविष्य मे रावण की प्रेमिका बनेगी। इस कारण माता अपनी पुत्री को एक पेटिका मे बन्द करके समुद्र मे फेकवाती है। बाद मे मतिलि निवासी कल नामक एक ऋषि उस शिशु को पाते है, उसे पालते हैं और उसका नाम सीता रखते हैं। समुद्र मे प्रक्षिप्त शिशु की स्थानपूर्ति के लिए विबीसन (विभीषण) नामक जादूगर बादलो से एक शिशु को खीचता है, इससे उसका नाम मेघनाद रखा जाता है। इस कथा मे 'मतिली' शब्द मिथिला का स्मरण दिलाता है। इस तरह स्पष्ट होता है कि इस वृत्तान्त का सबध वाल्मीकीय सीता-जन्म-कथा से है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार रावण की महिषी एक कन्यका को जन्म देती है जिसके मुँह का तालू काला है। इस कारण ज्योतिषी कन्या को अशुभ मानते हैं और वह समुद्र मे फेकी जाती है। एक मकर उसे डूबने से बचाता है और मरुतो से प्रार्थना करता है कि वह उसे उठा ले जाये। इस पर मरुत उसे एक ऋषि की वाटिका में एक पद्म पर रख देते हैं। ऋषि उसे प्राप्त कर उसका पुत्रीवत् पालन करते हैं। इस वृत्तान्त पर पद्मजा सीता की कथा का भी प्रभाव पड़ा है (दे० अनु० ४१८)।

४१६. कम्बोदिया के **रामकेर्ति** के अनुसार जनक यमुना के तीर पर यज्ञ के लिए हल चलाते हुए सीता को एक बेडे पर देखते है और उसे प्राप्त करके पुत्री के रूप मे स्वीकार करते हैं। इस कथा मे इसका निर्देश नही किया गया है कि सीता कहाँ से आई किन्तु एक तो **रामकेर्ति** की हस्तलिपियाँ अपूर्ण है तथा दूसरे **राम कियेन** मे, जो **रामकेर्ति** पर निर्भर माना जाता है, लका का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। अतः **रामकेर्ति** की कथा भी सीता-जन्म की कथाओ के प्रस्तुत वर्ग के अतर्गत रखी जा सकती है।

श्याम देश के **राम कियेन** मे सीता की जन्म-कथा का विस्तार-सहित वर्णन किया

---

१ दे० सी० नीबुहर : वायाज अन अरावी, भाग २, पृ० २२।

स्पष्ट है कि यह वृत्तान्त वेदवती की कथा पर आधारित है और सीता की धर्म्म-माता वसुधा का नाम यह भी सूचित करता है कि रचयिता वाल्मीकि की उस कथा से परिचित था जिसमे सीता को पृथ्वी की पुत्री माना गया है। महाभागवत पुराण (अध्याय ४२, गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, १९१३) मे भी इसका उल्लेख है कि सीता मन्दोदरी से उत्पन्न हुई थी —

सीता मंदोदरीगर्भे संभूता चारुरूपिणी ।
क्षेत्रजा तनयाप्यस्य रावणस्य रघूत्तम ॥६४॥

तेलुगु रंगनाथ रामायण (१, ३२), रामायण मसीही (दे० ऊपर अनु० ३०६) तथा दक्षिण भारत की एक अन्य कथा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १७) मे भी सीता के एक मजूषा मे पाये जाने का उल्लेख किया गया है, यद्यपि उन रचनाओ मे रावण का निर्देश नही है। स्वायम्भू रामायण मे मन्दोदरी के गर्भ से सीता के जन्म का वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० २०४)।

४१३ सीता की जन्म-कथाओ का एक ऐसा वर्ग भी मिलता है जिसके अनुसार रावण की पुत्री जन्म के पश्चात् समुद्र अथवा नदी मे फेकी जाती है। काश्मीरी रामायण में कथा इस प्रकार है—'मन्दोदरी रावण की अनुपस्थिति मे एक पुत्री को जन्म देती है। जन्मपत्र से पता चलता है कि यह बालिका अपने पिता की मृत्यु का कारण बनेगी और यदि उसका विवाह हुआ तो वह वनवासिनी बनकर लका का नाश करेगी। यह सुनकर मन्दोदरी उसके गले मे एक पत्थर बाँधकर उसे किसी नदी मे फेकवा देती है।' एक अन्य कथा के अनुसार रावण स्वय उस कन्यका को मजूषा मे बन्द कर समुद्र मे फेकने की आज्ञा देता है और जनक उसे समुद्र-तट पर प्राप्त करते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न १६)। उपर्युक्त कथा का निम्नलिखित रूप भी मिलता है—'एक ब्राह्मण ने किसी बालिका के विषय मे रावण से कहा था कि यह तुम्हारे निधन का कारण बनेगी। उस समय से रावण ने उसपर कडा पहरा लगा दिया। जब यह कन्यका केवल छः मास की थी, तो किसी दिन इतने जोरो की वर्षा हुई कि उसके पास के समस्त व्यक्ति पानी मे डूबकर मर गये किन्तु वह कन्यका मजूषा मे होने के कारण जल प्रवाह के द्वारा सिंहलद्वीप से दूर किसी नदी के पुलिन पर पहुँच गई। कहा जाता है कि इस कन्या ने बाद मे उस राम से विवाह कर लिया, जिसके द्वारा रावण की हत्या

वृत्तान्तो का समन्वय किया गया है। सीता रावण और मन्दोदरी की पुत्री थी और मिथिला मे गाडी गई। जिस दिन जनक की रानी से भामडल उत्पन्न हुआ और एक देव द्वारा उठा लिया गया था उसी दिन एक कृषक ने जनक को वह मंजूषा दे दी जिसमे सीता पडी थी।

ने सम्भवत. पद्मजा सीता की कथा की आधारभूमि तैयार की हो।

रावण एक विशिष्ट स्थान पर बार-बार जाता है। वह आरम्भ मे वहाँ एक पर्वत देखता है, तत्पश्चात् नगर देखता है, फिर जगल देखता है, उसके बाद एक विस्तृत गड्ढा और अत मे कमलयुक्त एक सुन्दर सरोवर। वहाँ एक लिंग स्थापित कर रावण सरोवर के कमलो से शिव की उपासना करता है। एक कनकपद्म पर उसे एक कन्यका दृष्टिगत होती हैं जो लक्ष्मी ही है। वह उसे पुत्री के रूप मे ग्रहण कर लका ले आता है और मदोदरी को दे देता है। नारद एक दिन मदोदरी के यहाँ पहुँचते है और उसकी गोद मे उस कन्यका को देखकर कहते हैं कि यह कन्या बाद मे रावण की प्रेमपात्री बनेगी (**कन्या भविष्यति अभिलाषभूमि चपलेंद्रस्य**)। यह सुनकर मदोदरी उस कन्यका को स्वर्ण पेटिका मे बद करके किसी दूर देश मे गाड आने का आदेश देती है। यज्ञ के लिए स्वर्ण हल चलाते हुए जनक उसे प्राप्त करते हैं (दे० ७०-१०४)।

तोरवे रामायण (१, १६) का निम्नलिखित वृत्तान्त सभवतः इस कथा से प्रभावित हुआ है। हल जोतते समय जनक ने पृथ्वी के नीचे कमलो का एक सरोवर पाया तथा वहाँ एक सुवर्ण पद्म पर विराजमान एक शिशु को देखा। इस अलौकिक दृश्य से भयभीत होकर जनक लक्ष्मी के इस पवित्र स्थान को छोड देने की बात सोच रहे थे कि नारद आ पहुँचे। मुनि ने जनक को यह आदेश दिया—"सीता नाम रखकर इस शिशु का पालन करो, विष्णु भी अवतार लेने वाले हैं और सीता को पत्नीस्वरूप ग्रहण करेंगे। समय आने पर तुम इसके स्वयवर का आयोजन करना तथा शिवधनुष चढाने वाले को इसका पति घोषित करना।"

४१९　सीता की उत्पत्ति की यह कथा बहुत प्रचलित नही है। फिर भी **सेरीराम** के पातानी पाठ तथा **राम कियेन** के वृत्तान्तो पर इसका प्रभाव पडा है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण के टीकाकार गोविंदराज के पाठ मे भी यह पाई जाती है। उसके अनुसार वेदवती एक पद्म मे पुनः उत्पन्न होती है। रावण उसे पद्म पर बैठे हुए देखता है और अपने यहाँ ले जाता है। एक लक्षणज्ञ मत्री उसे चेतावनी देता है कि वह कन्या उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। यह सुनकर रावण उसे समुद्र मे फेंक देता है। कन्या बच जाती है और जनक द्वारा पाई जाती है।[1]

(इ) रक्तजा सीता

४२०　सीता-जन्म की अनेक अर्वाचीन कथाओ मे सीता ऋषियो के रक्त से

---

१. दे० रामायणम्। गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, उत्तर कांड, सर्ग १७, श्लोक ३३ के बाद का प्रक्षेप।

गया है। दशरथ-यज्ञ के पायस का अष्टमाग खाकर मदोदरी एक कन्यका को जन्म देती है जो वास्तव मे लक्ष्मी का अवतार है (दे० ऊपर अनु० ३५७)। विभीषण आदि ज्योतिषियो से यह जानकर कि यह कन्यका मेरे वंश का नाश करेगी रावण उसे विभीषण को देता है। विभीषण उसे एक घडे मे रखकर नदी मे फेकवाता है। नदी मे एक कमल उत्पन्न होता है जो घडे का आधार बन जाता है। लक्ष्मी की दिव्य शक्ति से यह घडा जनक के पास पहुँचता है। जनक उस समय वन मे नदी के किनारे पर तप करते हैं। घडा उठाकर वह उसे वन ले जाते हैं तथा एक पेड के नीचे खोदकर यो प्रार्थना करते है—'यदि यह कन्या राजा के रूप मे नारायणवतार की रानी बनने वाली है, तो इस स्थान पर एक कमल उत्पन्न हो जो उस घडे को ग्रहण कर सके।' उसी क्षण एक कमल उत्पन्न होता है, जनक उस पर घडा रखकर और उसे मिट्टी से ढककर पुनः तपस्या करने जाते है। इस तपस्या मे सतोष न पाकर जनक १६ वर्ष के बाद अपनी राजधानी लौटने का निश्चय करते है, किन्तु ढूंढने पर भी वह उस घडे को कही भी नही पाते है। सेना बुलाई जाती है लेकिन सैनिक भी खोज मे असफल है। अत में जनक हल चलाने जाते है और घडा अपने आपसे हलपद्धति मे प्रकट होता है। इसमे एक अत्यन्त सुन्दर युवती पद्म पर बैठी हुई दिखाई पडती है। सीता से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम सीता रखा जाता है (दे० अध्याय १०)। इस मिश्रित वृत्तान्त में गुणभद्रकृत उत्तर-पुराण तथा हिंदेशिया की सीता-जन्म की कथाओ के समन्वय का प्रयत्न किया गया है तथा साथ-साथ पद्मजा सीता के वृत्तान्त का भी सहारा लिया गया है।

४१७ श्याम के रामजातक तथा पालक पालाम मे सीता को इन्द्राणी का अवतार माना गया है। रामजातक के अनुसार रावण ने इन्द्र का रूप धारण कर इन्द्राणी को धोखा दिया। प्रतिकार के उद्देश्य से वह मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लेती है। विभीषण के परामर्श के अनुसार शिशु को त्यक्त किया जाता है और एक ऋषि उसे प्राप्त करके उसका पालन-पोषण करते है। पालक पालाम मे रावण इन्द्र के यहाँ इन्द्रजाल की शिक्षा ले रहा था। इन्द्राणी ने सीता के रूप मे जन्म लेकर अपने पिता रावण पर छुरी का प्रहार किया, इस पर बालिका को बेडे पर रखकर समुद्र मे बहाया जाता है तथा किसी टापू पर रहने वाले ऋषि उसको पुत्रीवत् पालते हैं।

(आ) पद्मजा सीता

४१८ क्षेमेंद्र-कृत दशावतार-चरित मे सीता के जन्म की एक सर्वथा भिन्न कथा वर्णित है। रामायण की भूमिजा सीता की कथा इसमे स्वीकृत है, साथ ही सीता और लक्ष्मी का अभेद भी। लक्ष्मी के अनेक नामो मे एक नाम पद्मा है और इस नाम

सीता दिखलाई पड़ती है। इसके बाद सब अनर्थ शांत हो जाते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३)। अन्यत्र भी इसका उल्लेख किया गया है कि मिथिला मे रक्त गाडा गया था, कन्या नही।[1]

(ई) अग्निजा सीता

४२२. लंका के साथ सीता के सम्बन्ध का अंतिम रूप आनन्द रामायण में उपलब्ध है। सीता-जन्म का यह वृत्तान्त वेदवती की कथा पर आधारित प्रतीत होता है। कठोर तपस्या के उपरान्त राजा पद्माक्ष ने लक्ष्मी को पुत्रीरूप मे प्राप्त किया था और उसका नाम पद्मा रखा था। पद्मा के स्वयंवर के अवसर पर युद्ध हुआ और उसका पिता पद्माक्ष मारा गया। यह देखकर पद्मा ने अग्नि मे प्रवेश किया। एक दिन वह अग्निकुड से निकलकर रावण द्वारा देखी जाती है, जिस पर वह शीघ्र ही अग्नि मे प्रवेश करती है। किन्तु रावण अग्नि को बुझा देता है और उसकी राख मे पांच दिव्य रत्न देखकर उन्हे एक पेटिका मे रख देता है और लका ले जाता है। लंका में कोई भी उस पेटिका को उठा नही सकता है। उसे खोला जाता है और उसमे एक कन्यका मिलती है। मंदोदरी के परामर्श से यह पेटिका मिथिला से गाड़ दी जाती है। बाद मे उसे एक शूद्र पाता है जो एक ब्राह्मण के लिए खेती कर रहा था। वह ब्राह्मण जनक को वह पेटिका प्रदान करता है और उसे खोलकर तथा उसमे एक कन्या को देखकर जनक उसे पुत्रीरूप में स्वीकार करते हैं।[2]

(उ) फल तथा वृक्ष से उत्पन्न

४२३ दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार लक्ष्मी एक फल से उत्पन्न होती हैं और वेदमुनि नामक एक ऋषि द्वारा उनका पालन-पोषण होता है। उनका नाम सीता है और बाद में वह समुद्रतट पर तपस्या करने जाती हैं। उनके सौंदर्य के विषय में सुनकर रावण उनके पास पहुँचता है जिस पर वह अग्नि मे प्रवेश कर भस्मीभूत हो जाती हैं। राख को एकत्र कर वेदमुनि उसे एक स्वर्णयष्टि मे बंद कर देता है। बाद में यह

१. दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि हिन्दूस, वही, दूसरी कथा। बिर्होर रामकथा में भी उपर्युक्त कथा का निर्देश मिलता है, क्योकि इनमे कहा गया है कि अनावृष्टि के निवारण के लिए हल जोतते हुए जनक को सीता मिल गई थी।

२. दे० आ० रा० १, ३, १८८-२७५। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६ मे भी यही कथा पाई जाती है लेकिन वह अपूर्ण रह गई। भावार्थ रामायण की अग्निजा सीता विषयक कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है (दे० १, १५)।

उत्पन्न मानी जाती है। अद्भुत रामायण मे इस कथा का प्रथम तथा विस्तृत वर्णन मिलता है (दे० सर्ग ८)।

रावण दिग्विजय करते-करते दण्डकारण्यवासी ऋषियो से राजकर लेता है। द्रव्य के अभाव मे वे रावण को रक्त की कुछ बूँदे प्रदान करते है जिन्हें ऋषि गृत्समद के पात्र में एकत्र किया जाता है। उस पात्र मे कुश का किंचित् रस था जिसमे गृत्समद के मंत्रो के फलस्वरूप लक्ष्मी विद्यमान थी। रावण उस पात्र को लका ले जाता है और मन्दोदरी को उसे यह कह कर दे देता है: 'इसमें तीव्र विष भरा है।' कुछ समय बाद रावण दूसरी विजययात्रा के लिए चला जाता है। यह सुनकर कि रावण परस्त्रियों के साथ रमण करता है मन्दोदरी आत्महत्या के विचार से उस रक्त का पान कर लेती है और गर्भवती हो जाती है। इस पर वह तीर्थयात्रा के लिए निकलती है और गर्भपात करके कुरुक्षेत्र मे भ्रूण गाड देती है। बाद में जनक के यज्ञ के लिए वहाँ हल जोतते समय एक कन्या भूमि से निकलती है। जनक उसे पुत्रीवत् ग्रहण कर उसका नाम सीता रखते है।

४२१. उपर्युक्त कथा का निर्देश सिंहल द्वीप की रामकथा में भी मिलता है।[1] भारत मे इसके भिन्न-भिन्न रूप पाए जाते है। एक कथा के अनुसार मन्दोदरी केवल जिज्ञासा से प्रेरित होकर कतिपय रक्तबिंदुओं का पान कर लेती है और फलस्वरूप बाद मे एक कन्या को जन्म देती है। रावण के कोप की आशका से वह उस शिशु को उसी रक्त पात्र मे रखकर समुद्र में छोड देती है। जनक के राज्य मे पहुँचकर कन्या कृषकों द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है।[2]

उत्तरभारत की एक अन्य कथा इस प्रकार है। जनक ने महादेव के धनुष के प्रभाव से रावण को कई बार पराजित किया था। अद्भुत रामायण के वृत्तान्त के अनुसार रावण राजस्व के स्थान पर ऋषियो का रक्त लेता है। इस पर ऋषि शाप देते हैं कि इस रक्त से तुम्हारा नाश होगा। रावण उस शाप की अवज्ञा करता है और उस रक्त को एक घडे मे रखकर उसे लका ले जाता है। उस समय से लका राज्य में अनावृष्टि आदि अनिष्ट घटित होते हैं। शास्त्री रावण से कहते है कि जब तक यह रक्त लका मे विद्यमान है विपत्तियो का अन्त नहीं होगा। यह सुनकर रावण जनक से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से उस घड़े को मिथिला मे गड़वाता है। अब वहाँ भी वे ही अनिष्ट घटित होने लगते हैं। मन्त्री राजा को रानी के साथ जाकर हल जोतने का परामर्श देते है। ऐसा करते हुए जनक उस घडे को प्राप्त करते हैं जिसमें ऋषिरक्त से उत्पन्न

---

१ दे० इं० ए० भाग ४५, सप्लेमेंट।

२. दे० सेक्रेड बुक्स ऑव दि हिन्दूज, भाग २६, पृ० २३६।

राजा ने जाकर उसे प्राप्त किया तथा उसमे से कन्या को निकालकर अपनी ही पुत्री की तरह उसका पालन-पोषण किया।

(ऊ) उपसंहार

४२६ सीता जन्म के ये समस्त विभिन्न रूप वाल्मीकि रामायण मे वर्णित भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की घटना को स्वीकार करते हैं। इन वृत्तान्तो पर वेदवती की कथा की प्राय: गहरी छाप पाई जाती है, जिनमे यह प्रभाव स्पष्ट नही है वे सीता तथा लक्ष्मी के अभेद को स्वीकार करते है और उनकी उत्पत्ति वाल्मीकि के बहुत बाद ही सम्भव हुई होगी। अत: वाल्मीकि रामायण मे वर्णित भूमिजा सीता की जन्मकथा और वेदवती के वृत्तान्त को ही सबसे प्राचीन और अन्य जन्मकथाओ का बीज तथा आधार मानना सर्वथा युक्तिसगत प्रतीत होता है। वेदवती का वृत्तान्त भूमिजा सीता की जन्मकथा की एक पूर्तिमात्र है। सम्भवत: सीता की कुल परम्परा-सम्बन्धी तथ्यो के अभाव की पूर्ति करने के उद्देश्य से भूमिजा सीता के वृत्तान्त की सृष्टि की गई हो। सम्भव है कि सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी के व्यक्तित्व का प्रभाव भूमिजा सीता के वृत्तान्त पर पडा है। किन्तु अधिक सम्भव यह है कि सीता के नाम के कारण (उसका अर्थ लागलपद्धति है) भूमिजा सीता का वृत्तान्त उत्पन्न हुआ है।[1]

घ] दशरथात्मजा

४२७ दशरथ जातक मे राम, लक्ष्मण और सीता दशरथ की महिषी की सन्तान हैं। उस महिषी के मरने के पश्चात् ही नवीन पटरानी भरत को जन्म देती है। सर्वप्रथम डॉ० ए० वेबर ने और उनके बाद बहुत से विद्वानो ने दशरथ जातक को रामकथा का प्राचीनतम रूप माना है। इस समस्या का पूरा विश्लेषण निबन्ध के छठे अध्याय मे किया गया है। निष्कर्ष यह निकला है कि दशरथ जातक का कथानक या तो रामायण पर ही अथवा रामायण से मिलती-जुलती किसी अन्य रामकथा पर निर्भर है। प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट है कि सीता-जन्म-सम्बन्धी कथाएँ जो वाल्मीकि रामायण से भिन्न है और विशेष रूप से वे कथाएँ जिनमे रावण सीता का पिता माना गया है इन सब कथाओ का आधार वाल्मीकि रामायण का वेदवती का वृत्तान्त ही है। अत: उन विद्वानो का यह मत जिसके अनुसार सीता प्रथम दशरथ की पुत्री, बाद

---

१. अत मे सिंहलद्वीप की एक कथा का उल्लेख भी आवश्यक है जिसके अनुसार स्नान करते समय एक देवी के वस्त्र चुरा लिए गये थे, राम ने उसे अन्य वस्त्र देकर उससे विवाह कर लिया। दे० इ० ए० भाग ४५, सप्लेमेट।

यष्टि रावण के पास पहुँच जाती है जो उसे अपने कोषागार में रख देता है। कुछ समय के उपरान्त उस यष्टि से आवाज सुनाई पड़ती है। उसे खोला जाता है और उसमें एक लघु कन्यका के रूप मे परिणत सीता दिखाई देती है। ज्योतिषी कहते हैं कि यह कन्या सिंहल के नाश का कारण सिद्ध होगी, इस कारण रावण उसे एक स्वर्ण मञ्जूषा में बंद करके समुद्र मे फेंक देता है। यह मजूषा लहरो पर तैरती हुई बगाल की ओर बह जाती है और गगा मे प्रविष्ट होकर एक खेत तक पहुँच जाती है। वहाँ कृषक उसे देखते हैं और अपने राजा को दे देते हैं।[1]

इस कथा मे वेदवती के वृत्तान्त का प्रभाव स्पष्ट है। जिस फल से सीता का जन्म माना गया है वह अवश्य सीताफल ही है।

४२४. अच्युतानंद के हरिवंश (पृ० ९९०) तथा दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में द्रौपदी की उत्पत्ति की कथा का अनुकरण किया गया है। महाभारत में द्रौपदी वेदी से उत्पन्न मानी गई है (दे० १, १५५, ४१, कुमारी चापि पांचाली वेदिमध्यात्समुत्थिता)। वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठ की जन्मकथा ऊपर (अनु० ४०९) दी गयी है। इसके अतिरिक्त यह अर्धश्लोक भी मिलता है—अयोनिजा समुत्पन्ना वेदीमध्यात् सुमध्यमा (गौ० रा० १, ७३, २१, प० रा० १, ६७, २१)। अच्युतानन्द के अनुसार सीता जनक की पुत्रेष्टि के अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुई थी। दक्षिण भारत की कथा इस प्रकार है। योगी का रूप धारण कर ईश्वर लंका मे निवास करते हैं और उसमें अनेकानेक उत्पात करते हैं। बाद में वह नगर के एक फाटक पर पहरा देना स्वीकार करते हैं। वहाँ वह बहुत राख एकत्र करते हैं जिसमे से एक बहुत ऊँचा पेड़ उत्पन्न होता है। इसके बाद योगी चले जाते हैं और रावण उस पेड को चार टुकडो मे काटकर समुद्र मे बहा देने का आदेश देता है। एक टुकड़ा जनक के राज्य मे पहुँचता है। मंत्री उसे यज्ञ की अग्नि मे जलाने का परामर्श देते हैं। ऐसा किये जाने पर सीता एक धनुष के साथ-साथ अग्नि से उत्पन्न हो जाती है। धनुष में लिखा है—जो धनुष तोड़ेगा उसी के साथ इस कन्या का विवाह होगा (दे० पा० वृ० न० १)।

४२५ ब्रह्मचक्र (दे० अनु० ३२८) की कथा मे भी यह माना गया है कि सीता एक वृक्ष से उत्पन्न हुई थी। रावण की वाटिका के एक वृक्ष से किसी दिन एक कन्यका पैदा हुई। माली उसे रावण के पास ले गया। रावण को देखकर कन्या ने यक्षिणी का रूप धारण कर लिया। इस पर रावण ने उसे घडे मे बन्द कर समुद्र मे बहा दिया। वह घडा कन्नक नामक नगर के पास समुद्रतट पर जा पहुँचा। वहाँ के राजा को कोई सन्तान नही थी, किसी ऋषि ने उस राजा को उस घड़े का रहस्य बता दिया।

---

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १९, भाग १२, पृ० १३९।

अध्याय १५

अयोध्याकांड

१—वाल्मीकि रामायण का अयोध्याकाण्ड

४२९ क । अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु

(१) राम का निर्वासन (सर्ग १-४४)

पुनरावृत्तिः भरत और शत्रुघ्न का अश्वपति के यहाँ रहना, राम की लोकप्रियता और गुणकथन (सर्ग १, १-३४)।

राम के युवराज्याभिषेक की तैयारी (सर्ग १, ३५ से सर्ग ६ तक)।

मंथरा-कैकेयी-संवाद—दो वर माँगने के विषय मे मंथरा की सफलता (सर्ग ७-९)।

दशरथ-कैकेयी-संवाद—दशरथ द्वारा दो वरो की स्वीकृति (सर्ग १०-१४)।

दशरथ के पास राम का आगमन—दशरथ के सम्मुख कैकेयी का समाचार-कथन (सर्ग १५-१९)।

राम-कौशल्या-संवाद—लक्ष्मण और कौशल्या द्वारा निर्वासन का विरोध। राम का उनको समझाना। कौशल्या द्वारा विदा और मंगलाकांक्षा (सर्ग २०-२५)।

राम-सीता-संवाद—वन की भयंकरता से राम का सीता को भयभीत करना, अंत मे साथ चलने की स्वीकृति देना (सर्ग २६-३०)। लक्ष्मण का आग्रह और राम द्वारा साथ ले चलने की स्वीकृति (सर्ग ३१)।

प्रस्थान—दान-वितरण, राम का राजा के पास जाना (सर्ग ३२-३४), सुमंत्र के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना (सर्ग ३५), दशरथ का राम के साथ सेना भेजने का प्रस्ताव, कैकेयी की आपत्ति (सर्ग ३६)। कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल का धारण करना (सर्ग ३७)। दशरथ द्वारा कैकेयी की भर्त्सना (सर्ग ३८)। सुमंत्र का रथ लाना, कौशल्या द्वारा सीता को शिक्षा, विदा (सर्ग ३९-४०)। विलाप-कलाप, दशरथ की मूर्च्छा, कौशल्या का विलाप और सुमित्रा का सान्त्वना देना (सर्ग ४१-४४)।

(२) चित्रकूट की यात्रा (सर्ग ४५-५६)

अयोध्यानिवासी—उनका रथ के साथ जाना, तमसा के पास रात्रि-निवास, उनके सोते समय तीनों का सुमंत्र के साथ प्रस्थान (सर्ग ४५-४६)। लोगों का विलाप और अयोध्या लौटना (सर्ग ४७-४८)।

गुह—वेदश्रुति और गोमती के पार गुह का मिलन (सर्ग ४९-५०)। लक्ष्मण और गुह

मे रावण की पुत्री और अन्त मे अयोनिजा मानी गई हैं सर्वथा निर्मूल सिद्ध होता है।[1]

४२८ अन्त मे सीता जन्म का एक अन्य रूप भी प्रस्तुत करना है जिसमे वह दशरथ की पुत्री मानी गई है। यह रूप हिंदेशिया की निम्नलिखित रामकथाओ मे मिलता है : जावा का राम कैलिंग, मलय का सेरी राम तथा हिकायत महाराज रावण। इसका अन्यत्र कही भी उल्लेख नही किया गया है, कथा इस प्रकार है :

दशरथ की पटरानी मन्दोदरी के सौदर्य का वर्णन सुनकर रावण दशरथ के पास जाता है और मदोदरी की याचना करता है। मदोदरी यह देखकर कि उसका पति उसे दे देने को समुद्यत सा हो रहा है अपने भवन मे जाती है और जादू के द्वारा एक दूसरी मदोदरी उत्पन्न करती है जिसे रावण ले जाता है। बाद मे वास्तविक मदोदरी से सच वृत्तान्त सुनकर दशरथ घबडाते है। यह नई मदोदरी अक्षतयोनि है जिससे रावण को धोखे का पता चलेगा। अनन्तर दशरथ लका जाते है और छिपकर उस नवीन मदोदरी से मिलते है। बाद मे रावण-मदोदरी का विवाह मनाया जाता है और मदोदरी के एक पुत्री उत्पन्न होती है। उसकी जन्मकुडली से पता चलता है कि उसका पति रावणहृता सिद्ध होगा, अत. उसे पेटिका मे बन्द करके समुद्र मे फेका जाता है। महर्षि कली उसे पाते हैं और उसका पालन-पोषण करते हैं।

ये महर्षि कली जावा के सेरत कांड के ऋपिकल ही प्रतीत होते है, जिसको वहाँ मतिलि (मिथिला) का निवासी बताया गया है। दशरथ की पत्नी के रूप मे मदोदरी का उल्लेख अन्यत्र कही भी नही मिलता। यह असम्भव नही है कि ऐसी कल्पना दशरथ जातक के कारण उत्पन्न हुई हो जिसमे सीता को दशरथ की पुत्री माना गया है। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यह वृत्तान्त रावण द्वारा पार्वती के स्थान पर मदोदरी को प्राप्त करने की कथा का विकृत रूप है (दे० आगे अनु० ६५०)।

इस कथा का उत्तरार्द्ध जावा के सेरत कांड से और उपर्युक्त अन्य कथाओ से मिलता-जुलता है, जिनमे सीता रावण-मदोदरी की पुत्री मानी गई है।

---

१ दे० डब्लू० स्टुटरहाइम : राम-लेगेन्डन उड राम-रेलिफ्स इन इडोनेजियन, पृ० १०५। जे० चिलुस्की : इ० हि० क्वा० भाग १५, पृ० २८६। उडीसा मे वहाँ के मुख्य इष्टदेवताओ के कारण सीता को सुभद्रा से अभिन्न माना गया है (दे० ऊपर अनु० ३६२)। इसमे दशरथ जातक का प्रभाव देखना अनावश्यक है।

१०५-१०७)। जावालि-वृत्तान्त (सर्ग १०८-१०६), वसिष्ठ का आग्रह, भरत द्वारा प्रायोपवेशन की धमकी। लौटने पर राज्यग्रहण का राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ११०-१११)। ऋषियो की आकाशवाणी सुनकर भरत का पादुकाएँ लेकर वापस जाना (सर्ग ११२)।

भरत का प्रत्यागमन—भरद्वाज से मिलकर भरत का जन-शून्य अयोध्या मे लौटना। राज्यसिंहासन पर पादुकाएँ स्थापित कर भरत का नन्दिग्राम मे निवास (सर्ग ११३-११५)।

(५) राम का चित्रकूट से प्रस्थान

राक्षसो के उपद्रव से तपस्वियो का चित्रकूट-त्याग और राम से भी आग्रह, राम का अस्वीकार करना (सर्ग ११६)। बाद मे चित्रकूट त्याग कर राम का अत्रि के आश्रम मे जाना। सीता-अनसूया-संवाद, अनसूया का माला-वस्त्र-आभूषण-अगराग प्रदान करना, सीता का अपना जीवन-वृत्तान्त कहना (सर्ग ११७-११८)। प्रस्थान (सर्ग ११६)।

ख। अयोध्याकांड का विश्लेषण

तीनों पाठो मे विभिन्नता

४३०. कथानक के दृष्टिकोण से अयोध्याकाड के तीन पाठो मे कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नही पाया जाता है। निम्नलिखित वृत्तान्त केवल दाक्षिणात्य पाठ से मिलते हैं :

(१) कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (सर्ग ३५)।

(२) प्रातः राम को न देखकर अयोध्यावासियो का विलाप (सर्ग ४७)।

(३) वाल्मीकि से राम, सीता तथा लक्ष्मण की भेंट (सर्ग ५६, १६-१७)।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ का ६८ वाँ सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलता तथा १०६ वे सर्ग का पश्चिमोत्तरीय पाठ मे अभाव है।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे एक ब्राह्मण द्वारा कैकेयी को शाप दिये जाने का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप शापदोषमोहिता कैकेयी ने मथरा पर विश्वास किया था (गौ० रा० ८, ३३-३७ तथा प० रा० ११, ३७-४१)।

केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे कैकेयी के विद्यावल प्राप्त करने की कथा मिलती है, जिससे वह दशरथ को बचाने मे समर्थ हुई थी (प० रा० ११, ४२ आदि)।

प्रक्षेप

४३१. अयोध्याकाड का कोई भी महत्त्वपूर्ण कथाश प्रक्षिप्त नही है। निम्नलिखित प्रक्षेप उल्लेखनीय है :

(१) प्रथम सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक (१-३५) वालकाड के अतिम श्लोको की

का राम का गुणकथन करते हुए रात्रि व्यतीत करना (सर्ग ५१)। सुमंत्र को विदा करके गुह की नौका पर गगा पार करना (सर्ग ५२)।

भरद्वाज—राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना, यमुना और गगा के सगम पर भरद्वाजाश्रम मे जाना, भरद्वाज की चित्रकूट-निवास की मत्रणा (सर्ग ५३-५४)। यमुना को पार करना, चित्रकूट पहुँचना, वाल्मीकि से मिलन, लक्ष्मण द्वारा एक पर्णशाला का निर्माण (सर्ग ५५-५६)।

(३) दशरथ-मरण (सर्ग ५७-७८)

सुमंत्र का लौटना—सुमंत्र से राम का सदेश सुनकर दशरथ की मूर्च्छा और विलाप। सुमंत्र द्वारा कौशल्या को सान्त्वना (सर्ग ५७-६०)।

दशरथ-मरण—कौशल्या की भर्त्सना से दशरथ का मूर्च्छित होना (सर्ग ६१-६२)। दशरथ द्वारा अन्धमुनि-पुत्र-वध की कथा, दशरथ-मरण, विलाप (सर्ग ६३-६६)।

भरत का राज्य अस्वीकृत करना—भरत का बुलाया जाना और अयोध्या-आगमन; कैकेयी द्वारा राज्य-ग्रहण का अनुरोध। भरत की भर्त्सना और मन्त्रियो के सम्मुख राज्य को अस्वीकृत करना तथा उनका कौशल्या को अपने निरपराधी होने का आश्वासन (सर्ग ६७-७५)।

दशरथ की अन्त्येष्टि—भरत द्वारा अन्त्येष्टि-क्रिया और दान-वितरण। भरत और शत्रुघ्न का विलाप, शत्रुघ्न द्वारा मथरा की ताडना (सर्ग ७६-७८)।

(४) भरत की चित्रकूट-यात्रा (सर्ग ७९-११५)

प्रस्थान—भरत का पुनः राज्य को अस्वीकार करना और यात्रा की आज्ञा देना, सभा मे वसिष्ठ का भरत को समझाना परन्तु उनका न मानना, प्रस्थान और शृगवेरपुर आगमन (सर्ग ७९-८३)।

गुह और भरद्वाज—भरत द्वारा गुह का सदेह-निवारण, गुह का लक्ष्मण की वार्ता का उल्लेख करना तथा राम का शयन-स्थल दिखलाना (सर्ग ८४-८८), गगा पार करना। भरद्वाज का तप शक्ति से आतिथ्य-सत्कार (सर्ग ८९-९२)।

चित्रकूट आगमन—चित्रकूट को देखकर भरत का सेना रोकना (सर्ग ९३)। राम द्वारा चित्रकूट और मदाकिनी की शोभा का वर्णन, सेना को निकट आते देख लक्ष्मण का आक्रोश और राम का उनको शात करना (सर्ग ९४-९७)। भरत और शत्रुघ्न का राम के निकट जाना, राम का कुशल-प्रश्न (सर्ग ९८-१००)।

राम द्वारा प्रत्यागमन की अस्वीकृति—भरत का दशरथ-मरण का समाचार देना और राम से राज्य-ग्रहण का अनुरोध। राम का अस्वीकार करना (सर्ग १०१-१०२)। राम का विलाप और दशरथ के लिए जल-क्रिया करना (सर्ग १०३)। माताओं का आना (सर्ग १०४)। सभा मे भरत का अनुरोध और राम की अस्वीकृति (सर्ग

सुनाकर राज्यभार स्वीकार करने के लिए राम से अनुरोध करते हैं (सर्ग ११०)।

(७) डॉ० याकोबी के अनुसार चित्रकूट से प्रस्थान करने के पश्चात् राम आदि के अत्रि के आश्रम में जाने का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (सर्ग ११७, ५ से कांड के अंत तक)। प्रामाणिक रामायण में बालकांड की घटनाओं का निर्देश नहीं मिलता, लेकिन सीता-अनसूया-संवाद के अंतर्गत लक्ष्मण-ऊर्मिला के विवाह का उल्लेख किया गया है, यद्यपि अरण्यकांड में लक्ष्मण को अविवाहित कहा गया है। इसके अतिरिक्त इस अंश में अयोनिजा सीता का तथा दक्ष-यज्ञ के अवसर पर वरुण के देवरात को धनुष देने का उल्लेख मिलता है। अन्यत्र देवताओं द्वारा देवरात को धनुष-दान का उल्लेख किया गया है।

(८) उपर्युक्त प्रक्षेपों के अतिरिक्त अन्य स्थलों पर भी परस्पर-विरोधी बातें पाई जाती हैं, जिससे स्पष्ट है कि आदि-कवि की रचना अपने मूल रूप में हमारे सामने नहीं है। उदाहरणार्थ, राम कौशल्या से कहते हैं कि मैं वन में मांस का सेवन नहीं करूँगा:

कन्दमूलफलैर्जीवन्हित्वा मुनिवदामिषम् (सर्ग २०, २९)

लेकिन आगे चलकर राम के मांस खाने का कई स्थलों पर उल्लेख किया गया है (दे० अयोध्या कांड ५२, १०२, ५४, १७; ५५, ३२; ९६, १-६)।

२—अयोध्याकाण्ड का विकास

४३२. अयोध्याकाण्ड के कथानक का अधिक विकास नहीं हुआ है। इसकी प्रधान कथावस्तु राम का निर्वासन है, इससे सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री तीसरे परिच्छेद में रखी गई है। यहाँ पर अयोध्याकाण्ड के कुछ अन्य प्रसंगों पर विकास की दृष्टि से विचार किया जायेगा।

क। राम की चित्रकूट-यात्रा

पउमचरिय को छोड़कर, जहाँ वन-भ्रमण का विस्तृत वर्णन किया गया है (पर्व ३३-४२), राम की इस यात्रा के वर्णन में मौलिक परिवर्तन नहीं मिलता।

(१) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीन पाठों के अनुसार दशरथ ने अयोध्या में ही राम को विदा किया था (दा० रा० सर्ग ४२, गौ० रा० सर्ग ४१, प० रा० सर्ग ४५), किन्तु बालकांड के प्रथम सर्ग में दशरथ दूर तक राम के साथ जाते हैं—**पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च** (श्लोक २८)। यह अधिक मौलिक है क्योंकि अयोध्याकाण्ड में भी इसका अवशेष मिलता है—

इत्येवं विलपन् राजा जनौघेनाभिसंवृतः।
अपस्नात इवारिष्टं प्रविवेश पुरोत्तमम्॥

(बड़ौदा संस्करण ३७, २९)

यह श्लोक गौण पाठ भेदों सहित तीन पाठों में विद्यमान है (दा० रा० ४२, २२; गौ०

पुनरावृत्ति मात्र होने के कारण प्रक्षिप्त माने जाते हैं ।

(२) डॉ० याकोबी का अनुमान है कि आदिरामायण मे राम के प्रस्थान के अनन्तर उनकी चित्रकूट तक की यात्रा का वर्णन किया गया था । अत· सम्भव है कि सर्ग ४१-४६ प्रक्षिप्त हो । सर्ग ५० के प्रारम्भ से पता चलता है कि राम उस समय अयोध्या के निकट ही थे ।

(३) ऐसा प्रतीत होता है कि अधमुनि-पुत्र-वध का प्रसग आदिरामायण के पूर्व ही प्रचलित था । अतः वहुत सभव है कि सर्ग ६३-६४ की अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त हो (दे० आगे अनु० ४३३) ।

(४) दशरथ की मृत्यु से लेकर भरत के चित्रकूट मे आगमन तक की कथा (सर्ग ६६-६३) अपेक्षाकृत अधिक विस्तारपूर्वक वर्णित है तथा इसमे वहुत पुनरावृत्तियाँ भी पाई जाती है । अतः यह स्पष्ट है कि यह अश वाल्मीकिकृत रामायण मे इतना विस्तृत नही था ।

(५) १०० वाँ सर्ग स्पष्टतया प्रक्षिप्त है । इसमे राम भरत से उनके राज्य के विषय मे वहुत से प्रश्न पूछते है मानो भरत दीर्घकाल तक शासन कर चुके हो, अनन्तर १०१ वे सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक मे कहा गया है कि राम प्रश्न पूछने लगे (प्रष्टु समुपचक्रमे) । वास्तव मे १००वे सर्ग की सामग्री महाभारत (दे० सभापर्व, अध्याय ५०) से उद्धृत की गयी है, जहाँ नारद युधिष्ठिर को सवोधित करते है ।

(६) जावालि का वृत्तान्त भी निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है । राम के अयोध्या न लौटने के दृढ सकल्प

> प्रवेक्ष्ये दंडकारण्यमहमप्यविलम्बयन् ।
> आभ्यां तु सहितो वीर वैदेह्या लक्ष्मणेन च ॥ (१०७, १६)

के पश्चात् भरत के प्रत्युपवेशन का प्रसग आना चाहिए :

> एवमुक्तेन रामेण भरतः प्रत्यनन्तरम् ।
> उवाच विपुलोरस्कः सूतं परमदुर्मनाः ॥१२॥
> इह तु स्थण्डिले शीघ्रं कुशानास्तर सारथे ।
> आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे संप्रसीदति ॥१३॥ (सर्ग १११)

प्रचलित पाठो मे राम के सकल्प के पश्चात् जावालि लोकायत दर्शन का प्रतिपादन करने लगते है (सर्ग १०८) । राम जावालि को प्रत्युत्तर देकर अपना सकल्प पुनः प्रकट करते हैं (सर्ग १०६ १-२६) । इसके अनन्तर राम के प्रत्युत्तर का साराश उपजाति छदो मे दोहराया जाता है (सर्ग १०६,३०-३६), इस अश मे, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, राम वुद्ध को चोर और नास्तिक कहते है । यह समस्त १०६ वाँ सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ में नही मिलता । इसके अनन्तर वसिष्ठ राम की वशावली

रा० ४१, २०, प० रा० ४५, २१)।

(२) जावा के रामायण ककविन् (३, १५) के अनुसार राम ने सुमंत्र को भी अन्य नागरिको के साथ छोड दिया और वह लक्ष्मण तथा सीता के साथ छिपकर वन की ओर चल दिए। सेरी राम मे अयोध्या से राम के चले जाने के तुरन्त बाद दशरथ मर जाते है किन्तु राम उनकी अन्त्येष्टि के लिए लौटना अस्वीकार करते है। रात मे राम अपना दिव्य रथ अयोध्या वापस भेजकर सीता और लक्ष्मण के साथ वन की ओर प्रस्थान करते है। प्रात काल जनता राम को न देखकर रथ के चिह्नो पर चलते हुये अयोध्या मे लौटती है।

(३) महाभारत के रामोपाख्यान मे गुह का उल्लेख नही किया गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम चित्रकूट की यात्रा करते समय अपने सखा गुह (निषादो के राजा) के यहाँ पहुँचकर वहाँ रात बिताते है। गुह लक्ष्मण तथा सुमन्त्र के साथ रात भर सोते हुये राम और सीता की रक्षा करता है तथा अगले दिन नौका मगाकर राम-सीता-लक्ष्मण को गगा के उस पार पहुँचाता है। अनेक परवर्ती रचनाओ मे इस स्थान पर केवट का वृत्तान्त रखा गया है और इसी की नौका पर राम गगा पार करते है। सेरी राम के अनुसार राम ने बहुत समय तक किकूकन तथा उनकी पत्नी माई रानी सूरी का आतिथ्य-सत्कार ग्रहण किया था। रामचरितमानस के अनुसार गुह यमुना तक राम के साथ चला आया था।

राम तथा गुह की मैत्री का वर्णन तथा गुह के पूर्वजन्म की कथा बालकांड के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ३८४)। अध्यात्म रामायण (६, १६, १८) तथा परवर्ती रामकथाओ मे राम के अभिषेक के अवसर पर गुह की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है।

(४) राम के चरण धोने का अनुरोध करने वाले केवट का प्राचीनतम उल्लेख महानाटक मे मिलता है (दे० ३, २०)। उस नाटक मे अहल्योद्धार का वृत्तान्त राम की चित्रकूट-यात्रा के वर्णन मे रखा गया है तथा अहल्योद्धार के अनन्तर ही केवट का प्रसंग आ गया है। अधिकाश रचनाओ मे अहल्या के उद्धार की कथा बालकाण्ड मे मिलती है। अतः केवट का वृत्तान्त भी बहुधा उसी काण्ड के अतर्गत रखा गया है, उदा० अध्यात्म रामायण (१, ६), आनन्द रामायण (१, ३, २४-२८), रामरहस्य (सर्ग ४), कृत्तिवास रामायण (१, ६०)। सारलादास महाभारत (सभापर्व पृ० २१७), बलरामदास रामायण, सूरसागर, रामचरितमानस तथा कवितावली मे महानाटक के अनुसार ही केवट की कथा चित्रकूट यात्रा के अन्तर्गत मिलती है। रामलिंगामृत मे इसका वर्णन राम और लक्ष्मण द्वारा सीता की खोज के अन्तर्गत रखा गया है (सर्ग ६)। कहा जाता है कि चान्द्र रामायण मे केवट के पूर्वजन्म की कथा मिलती है (दे० ऊपर अनु० २०२)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पास आने का निमंत्रण देकर स्वर्ग चला गया। अनन्तर अन्धमुनि मुझे यह शाप देता हुआ अपनी पत्नी के साथ चिता की अग्नि मे प्रवेश कर गया :

पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम सांप्रतम्।
एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि ।।५४।। (सर्ग ६४)

रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे उस पुत्र के नाम का कोई उल्लेख नही है, लेकिन अन्य पाठो, अग्निपुराण, रामायणमंजरी आदि मे उसका नाम यज्ञदत्त रखा गया है (दे० गौ० रा० ६६, ६, प० रा० ७०, ६)। आगे चलकर उसके अन्य नाम भी प्रचलित हो गये है—श्रवण (आनन्द रामायण १, १, ८८), श्रवणकुमार (दे० ब्रह्मपुराण अध्याय १२३) अथवा श्रावण (दे० काश्मीरी रा०, भावार्थ रा० आदि), सिंधु (दे० पद्मपुराण, गौडीय पाताल खण्ड, अध्याय १४, कृत्तिवास का रामायण, माधवदेव का असमिया बालकाण्ड), सुरेचन,[1] ताण्डव (तोरवे रामायण)।

वाल्मीकि रामायण के तीनों पाठो के अनुसार उसकी माता शूद्रा है, केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ उसके पिता को ब्राह्मण मानते हैं—ब्राह्मणेन त्वहं जातः शूद्रायां (गौ० रा० ६५, ४३)। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार इसका पिता वैश्य ही माना गया है—शूद्रायां वैश्येन जातो नरवराधिप (दा० रा० ६३, ५१)।

आगे चलकर इसका प्रायः उल्लेख किया गया है कि वह ब्राह्मण नही है :

द्विजेतरतपस्विसुत (रघुवंश ९, ७६)।
न ब्रह्महा त्वं (उदारराघव सर्ग १)।

ब्रह्महत्या स्पृशेन्न त्वां वैश्योऽहं तपसि स्थितः (अध्यात्म रा० २, ७, २७)। आनन्द रामायण मे भी उसे वैश्य माना गया है (दे० १, १, ८८)।

परवर्ती वृत्तान्तो मे इस कथा को अनेक प्रकार से विस्तार दिया गया है। रघुवंश के अनुसार दशरथ ने विवाह के पश्चात् मुनिपुत्र को मारा था और क्योंकि उसे उस समय तक पुत्र प्राप्त नही हो सका, उसने मुनि से कहा कि मैं आपका शाप वरदान ही समझता हूँ—शापोऽप्यदृष्टतनयाननपद्मशोभे सानुग्रहो भगवता मयि पातितोऽयम् (९, ८०)। रंगनाथ रामायण (२,२२) मे यज्ञदत्त विमान पर से अपने पिता से निवेदन करता है कि वह दशरथ पर क्रोध न करे। असमिया बालकाण्ड (अध्याय १५) मे अंधकमुनि ऋष्यशृंग को बुलाकर पुत्र-प्राप्ति के उद्देश्य से यज्ञ करने का परामर्श दशरथ को देते है। इसके अतिरिक्त वह दशरथ को एक श्रीफल प्रदान करते हुये कहते हैं कि इसे खाकर उनकी रानियाँ गर्भवती हो जायेगी। दशरथ ने घर पहुँचकर यह श्रीफल कौशल्या को दे दिया

---

१. दे० कम्बरामायण २, ७६। सुरेचन के तीन पूर्वजन्मो का भी उल्लेख है, जिनमें उसका नाम क्रमशः काश्यप, वृत्रेश और चलभोज था।

राम के अस्वीकार करने पर वे उनकी पादुकाएँ माँग कर तथा उनको अपने मुकुट पर धारण कर राजधानी लौटते है। दूसरे पाठ के अनुसार दशरथ के देहान्त के पश्चात् भरत-शत्रुघ्न राम को राज्य अर्पित करने के लिए किष्किन्धा आते हैं।

४३५. वाल्मीकि रामायण मे कौशल्या दशरथ के लिए राम द्वारा अर्पित इगुदी की खली का **पिण्डदान** देखकर विलाप करने लगती हैं (दे० २, १०४)। परवर्ती रचनाओ मे राम अथवा सीता द्वारा पिण्डदान का विभिन्न अवसरो पर उल्लेख किया गया है।

ब्रह्मपुराण (अध्याय १२३) के अनुसार दशरथ अपने निर्वासित पुत्रो को दर्शन देकर ब्रह्महत्या के कारण अपनी नरक-यातना का वर्णन करते है और उनसे गौतमी-तट पर पिण्डदान करने का निवेदन करते है। अनन्तर राम द्वारा पिण्डदान का उल्लेख है जिसके फलस्वरूप दशरथ नरक से मुक्ति प्राप्त करते है। **काश्मीरी रामायण** का वृत्तान्त ब्रह्मपुराण पर निर्भर प्रतीत होता है, दशरथ से उनकी नरक-यातना के विषय मे सुनकर राम यमलोक जाते हैं और तक्षक का वध करके दशरथ को पितृलोक मे पहुँचाते हैं (अयोध्या काड, न० ११५)। **स्कन्द-पुराण** के प्रभास-क्षेत्र-माहात्म्य मे दशरथ राम को स्वप्न मे दिखाई देते हैं और राम ब्राह्मणो से परामर्श कर उनके द्वारा पिण्डदान की धर्मक्रिया करवाते हैं (अध्याय १११)। **पद्म पुराण** के सृष्टिखड (अध्याय २८, ४८-६०) मे भी वनवास के समय राम के इसी स्वप्न-दर्शन तथा फलस्वरूप श्राद्ध के आयोजन का वर्णन मिलता है। **गरुड पुराण** (दे० अध्याय १४३) के अनुसार राम अयोध्या मे लौट आने के पश्चात् पितृ-कर्म के लिए गयागिर जाते हैं। **प्रतिमानाटक** मे दशरथ का श्राद्ध योग्य रीति से सम्पन्न करने की राम की चिन्ता का उल्लेख मिलता है (दे अनु० ४६५)।

अनेक अपेक्षाकृत अर्वाचीन रामकथाओ मे राम के स्थान पर **सीता द्वारा पिण्डदान** होने का वर्णन किया गया है। शिव महापुराण (ज्ञान सहिता, अध्याय ३०) मे राम और लक्ष्मण दशरथ के श्राद्ध की सामग्री ले आने के लिए गाँव जाते है। विलम्ब होने पर सीता, श्राद्धकाल की किंचित् अवधि शेष समझकर स्वय श्राद्ध की क्रिया करती हैं। अनन्तर दशरथ प्रकट होकर कहते है—मैं दशरथ हूँ, तुम्हारे सफल श्राद्ध से मैं तृप्त हुआ। बाद मे राम के अर्पण करने पर दशरथ उनसे कहते हैं—**किमर्थं हूयते पुत्र ह्यनया तर्पिता वयम्।**

आनन्द रामायण मे गरुड पुराण की तरह राम अपने अभिषेक के बाद सीता के साथ तीर्थयात्रा करते हुये गया पहुँचते है। सीता फल्गु मे स्नान करने जाती है तथा महेश्वरी की पूजा करने के उद्देश्य से १०८ बालूपिण्ड तैयार करती है। इस अवसर पर धरती मे से दशरथ का हाथ प्रकट हो जाता है और सीता एक-एक करके १०८ पिण्ड

राज्य अस्वीकृत करना[1]; दशरथ की अन्त्येष्टि तथा भरत की चित्रकूट-यात्रा विस्तार-पूर्वक वर्णित है (सर्ग ५७-११५)। परवर्ती रामकथाओ मे इस सामग्री मे अपेक्षाकृत कम परिवर्तन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार शत्रुघ्न मंथरा को पीटते हैं, किन्तु आनन्द रामायण (१, ६, ८६) तथा भावार्थ रामायण (२, ११) मे भरत यह कार्य स्वय करते है। भावार्थ रामायण के अनुसार भरत ने दशरथ की अन्त्येष्टि के वाद राम की पादुकाओं को सिंहासन पर रख कर चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया। चित्रकूट पहुँच कर भरत तथा लक्ष्मण के युद्ध तथा राम द्वारा दोनो को अलग करने का भी वर्णन मिलता है (भावार्थ रामायण २, १५)। वाल्मीकि रामायण मे भी भरत के आगमन पर भरत और कैकेयी का वध करने के लिए लक्ष्मण उद्यत है (२, ८६,२३-२६)। भावार्थ रामायण के अनुसार भरत तभी वापस जाने के लिए तैयार हो जाते हैं जव वाल्मीकि आकर पूरा रामायण सुनते हैं, जिसके अनुसार भरत का अयोध्या लौटना राम की महिमा के लिए आवश्यक है (दे० २,१७)। रामचन्द्रिका (१०,३६) मे मंदाकिनी स्त्री का रूप धारण कर भरत को समझाती हैं। कवरामायण (२, १२, १३१) मे एक आकाशवाणी भरत को उनके कर्तव्य के विषय मे उपदेश देती है।

महावीरचरित मे भरत मिथिला मे ही राम की पादुकाएँ ग्रहण करते हैं और राम वही से वन के लिए प्रस्थान करते है, वाद मे भरत की किसी वन-यात्रा का उल्लेख नही मिलता। कृत्तिवास रामायण (२, १६) मे कैकेयी भरत से इतना डरती हैं कि वह मथरा के साथ अयोध्या मे ही रह जाती है। रामचरितमानस मे जनक के चित्रकूट मे आगमन का विस्तृत वर्णन किया गया है। कहा जाता है कि श्रवण रामायण (दे० ऊपर अनु० २०८) के अनुसार भी जनक चित्रकूट गये थे। इस प्रसग का अन्यत्र उल्लेख नही मिलता।

सेरी राम मे भरत का आगमन वालिवध के पश्चात् वर्णित है। एक पाठ के अनुसार राम-लक्ष्मण की माता सीताहरण का समाचार सुनकर मर जाती है। अन्त्येष्टि के वाद भरत-शत्रुघ्न किष्किन्धा आकर राम से राज्य सभालने का अनुरोध करते है।

---

१ वाल्मीकि ने भरत को 'नि स्वार्थ' की मूर्त्ति के रूप मे प्रस्तुत किया है। उसी कारण से वाद मे भरत को दास्य भक्ति का आदर्श माना गया है, यह विशेष रूप से तुलसीदास के भरत के विषय मे कहा जा सकता है। फिर भी वाल्मीकि के यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण आदिकाव्य के एकाध स्थलो पर राम के मन मे भरत के प्रति सन्देह होने का उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ राम सीता से कहते है कि भरत के सामने तुम मेरी कभी भी प्रशसा न करो (२, २६, २४)।

के किनारे खेलती हैं और दशरथ दर्शन देकर कहते हैं—भूख की पीड़ा असह्य हो उठी है, रेत का पिण्ड देकर मेरी भूख शान्त कर दो। बाद में ब्राह्मण, तुलसी और फल्गु सीता के पक्ष में साक्ष्य देना अस्वीकार करते हैं जिससे सीता उनको शाप देती हैं। वटवृक्ष मात्र सीता का समर्थन करता है और राम तथा सीता दोनों से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है।[1]

दुर्गावरकृत असमिया गीतिरामायण में भी इस प्रसंग का वर्णन मिलता है। इसमें सीता चन्द्रमा, सूर्य, वायु, पृथ्वी, फल्गु तथा ब्राह्मणों को शाप देती हैं। बलरामदास रामायण का तद्विषयक वृत्तान्त आनन्द रामायण की उपर्युक्त कथा से मिलता-जुलता है किन्तु राम स्वयं फल्गु नदी को 'अंतःसलिला' बन जाने का शाप देते हैं; फल्गु के अनुनय करने पर सीता उसे यह वरदान देती हैं कि तुम वर्षा ऋतु में अवश्य प्रकट होगी। ब्राह्मणों ने जब दक्षिणा के लिए अनुरोध किया, तब राम ने यह शाप दिया कि जो कोई गया में मर जायेगा वह अपने अगले जन्म में गधा बन जायेगा (अरण्यकाण्ड)।

४३६. राम की पादुकाओं का वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण के तीन पाठों में कुछ भिन्न है, जिससे यह आभास मिलता है कि यह प्रसंग सम्भवतः बाद में जोड़ दिया गया हो।

दाक्षिणात्य पाठ में भरत राम की हेमभूषित पादुकाएँ ले जाने की राम से प्रार्थना करते हैं (दे० वा० रा० २, ११२, २१)। गौड़ीय पाठ में भरत के प्रस्थान के समय शरभंग राम को कुशपादुकाओं का एक जोड़ा भेज देते हैं, और वसिष्ठ के अनुरोध से राम भरत को इन्हें प्रदान करते हैं। माधवकंदली तथा बलरामदास के रामायणों में भी कुशपादुकाओं की चर्चा है।

पश्चिमोत्तरी पाठ में न तो शरभंग का और न कुशपादुकाओं का उल्लेख हुआ है, लेकिन वसिष्ठ के कहने पर राम भरत को अपनी पादुकाएँ देते हैं।

दशरथ जातक में कहा जाता है कि अमात्य राम की इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं। अन्याय होते ही पादुकाएँ एक दूसरे पर आघात करती हैं तथा ठीक निर्णय होने पर वे शान्त रहती हैं।

घ। राम का चित्रकूट में निवास

४३७. दाक्षिणात्य पाठ में चित्रकूट की केवल एक पर्णशाला का उल्लेख है (दे० ५६, २०), लेकिन गौडीय (दे० ५६, २०) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० ६० २०) में

१. राम कहते हैं—अमर अक्षय हो। सीता कहती है—शीतकाल में उष्ण ग्रीष्मकाल में शीतल तथा सर्वदा पत्रों से विभूषित बने रहो।

दशरथ के हाथ मे रख देती है। सीता भयभीत होकर यह वृत्तान्त छिपा रखती है। बाद मे राम पिण्ड चढाने जाते है किन्तु दशरथ का हाथ प्रकट नही होता जिससे सब को आश्चर्य होता है। तब सीता अपना रहस्य प्रकट कर कहती है कि दशरथ मुझसे पिण्ड ग्रहण कर चुके है। राम साक्षी चाहते है, इस पर सीता एक-एक करके आम वृक्ष, फल्गु नदी, ब्राह्मणो, विडाल, गाय तथा अश्वत्थ से अपने पक्ष मे साक्ष्य देने का निवेदन करती है। सब अस्वीकार करते है और सीता से अभिशप्त हो जाते है।[1] अन्त मे सूर्य सीता का समर्थन करते है, जिस पर दशरथ विमान पर आ पहुँचते है तथा राम को आश्वासन देते है—**प्राह त्वया तारितोऽहं नरकादतिदुस्तरात् मैथिल्याः पिंडदानेन जाता मे तृप्तिरुत्तमा** (यात्रा काण्ड सर्ग ६, १११)।

सारलादास के महाभारत तथा कृत्तिवास के रामायण मे जो वृत्तान्त मिलता है, वह आनन्द रामायण की कथा से अधिक भिन्न नही है, किन्तु इन दोनो रचनाओ मे माना गया है कि यह घटना वनवास के समय की है। सारलादास के अनुसार चित्रकूट निवास के समय राम अनेक तीर्थ यात्राएँ करते है। किसी दिन वह 'रामगया' पहुँचते है तथा पितृकर्म के लिए गैडा आवश्यक समझकर वह लक्ष्मण के साथ उसी की खोज मे शिकार खेलने जाते है। सीता ब्रह्मा के पुत्र फल्गु नदी के सरक्षण मे रामगया मे रह गई; राम को समय पर न आते देखकर सीता ने राम के पूर्वजो को सात बालू-पिण्ड समर्पित किए। दशरथ का हाथ प्रकट हुआ जिससे सीता को मालूम हुआ कि दशरथ का देहान्त हो चुका है। सीता ने फल्गु से निवेदन किया कि वह इस घटना को राम से छिपा रखे। इस पर फल्गु ने सीता से अनुचित प्रस्ताव किया और ठुकराये जाने पर ब्राह्मणो से कहा कि सीता ने पिण्डदान किया है। ब्राह्मण दक्षिणा के लिए अनुरोध करने लगे तथा राम के प्रत्यागमन तक प्रतीक्षा करना अस्वीकार किया। इस पर सीता ने अपने कपडे दे दिये तथा पद्मपत्रो से अपना शरीर ढँक लिया। वापस आकर सारा वृत्तान्त जान लेने पर राम ने फल्गु तथा गया के ब्राह्मणो को शाप दिया।[2] **कृत्तिवास** (२, २२) के अनुसार दशरथ की मृत्यु के एक वर्ष बाद उनका श्राद्ध उचित रीति से सपन्न करने के लिए राम और लक्ष्मण अगूठी बेचने चले जाते है। इतने मे सीता फल्गु

१. उस शाप के फलस्वरूप आम वृक्ष फलहीन, फल्गु अधोमुखी (अन्त.सलिला), विडाल की पूछ अस्पृश्य, गाय का मुख अपवित्र तथा अश्वत्थ 'अचलदल' बन गया। सीता ने ब्राह्मणो से कहा—युष्माक नाऽत्र सतृप्तिः कदा द्रव्यैर्भविष्यति ॥१०३॥ द्रव्यार्थं सकलान् देशान् भ्रमध्व दीनरूपिण.।

२ दे० कृष्णचरण साहु, रामकथा इन सारला महाभारत। जर्नल आँव हिस्टोरिकल रिसर्च, भाग १, अक २, पृ० ५६।

[illegible] ने राम ने तुष्टि निवेशी (दे० अयोध्याकांड, संधि ७)। देव-रामायण में जयंत के काक के रूप में परिवर्तन की कथा का विशेष वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० २०३)। भावार्थ रामायण (२. १४) के अनुसार काक एक सुन्मुख नामक गंधर्व है।

अध्यात्मरामायण के अनुसार काक ने सीता के पैर के अँगूठे को फाड़ डाला था (सव्यपादांगुष्ठमारक्तं विददारामिषाशया, दे० ५, ३, ५४)। आनन्द रामायण (१. ३. ८३), रामगीतगोविंद (सर्ग ४) तथा रामचरितमानस में भी ऐसा वर्णन है।

हिन्देशिया के सेरी राम तथा सेरत काण्ड में काक-वृत्तान्त का एक परिवर्तित रूप मिलता है (दे० अनु० ३६६)। रामकीर्ति तथा रामकियेन में विश्वामित्र यज्ञ के समय में राम द्वारा काकासुर-वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३८८)। इसके अतिरिक्त सीताहरण के ठीक पहले राम एक अन्य काकासुर का वध करते हैं (दे० अनु० ४६२)।

४४०. रसिक सम्प्रदाय की रचनाओं में चित्रकूट में राम की रासलीला का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० १८० और १८१)। दुर्गादत्त कृत अनन्तिय गीतिरामायण में वनवास के समय चैत्र चतुर्दशी के अवसर पर एक मायामय अयोध्या की सृष्टि का वर्णन किया गया है। राम, सीता और लक्ष्मण पिचकारी हाथ में लिए अयोध्यावासियों के साथ वसन्तोत्सव[1] मनाते हुए चित्रित किये गये हैं। इस रचना में राम और सीता का चौपड़ खेलना भी वर्णित है।

४४१. वाल्मीकि रामायण में राम के चित्रकूट से प्रस्थान करने के दो कारण बताये गये हैं :

इह मे भरतो दृष्टो मातरश्च सनागराः।
सा च मे स्मृतिरन्वेति तान्नित्यमनुशोचतः ॥२॥
स्कंधावारनिवेशेन तेन तस्य महात्मनः।
हयहस्तिकरीषैश्च उपमर्दः कृतो भृशम् ॥३॥ (२,११७)

एक तो चित्रकूट को देखकर भरत आदि का स्मरण आता है और दूसरे, भरत की सेना ने इस स्थान को मैला कर दिया है। महाभारत के रामोपाख्यान में जो कारण दिया गया है, उसका [illegible] बहुत उल्लेख है। राम इसलिए चित्रकूट को छोड़ देते हैं कि भरत उनके पास न आ सकें (पुनरागमन पौरजानपदागमम् दे० ३, २६१, ३६)। अध्यात्मरामायण, आनंदरामायण तथा रामचरितमानस में यही कारण दिया गया है।

1. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' नामक पुस्तक (बम्बई १९५२) में इस उत्सव का वर्णन किया है (दे० पृ० १०८-११२)।

लक्ष्मण द्वारा **दो पर्णशालाओं** का निर्माण हुआ था, ऐसा उल्लेख है ।

४३८. जावा के **सेरी राम** के अनुसार राम घास से सात लडकियो तथा पाँच लडको की सृष्टि करते है, जिससे राम, सीता लक्ष्मण तीनो निश्चित होकर एकाग्रता से साधना कर सकते है ।

४३९ सुन्दरकाड मे सीता अभिज्ञान-स्वरूप हनुमान् को काक-वृत्तान्त सुनाती है । किसी दिन राम सीता की गोद मे सो रहे थे, उस समय एक मासलोभी काक (इद्र का पुत्र) सीता के स्तनो पर आघात करने लगा । जागकर राम ने ब्रह्मास्त्र पर दर्भ रखकर उसे काक पर चलाया । कही भी शरण न पाकर काक राम के पास[1] लौटा और एक आँख ब्रह्मास्त्र को देकर बच गया (दे० रा० ५, ३८) । हनुमान् राम के पास लौट कर इसी वृत्तान्त को दोहराते है (दे० रा० ५, ६७) ।

इस वृत्तान्त का आदिरामायण के अयोध्याकाड मे उल्लेख नहीं था । दाक्षिणात्य पाठ के सस्करणो मे सर्ग ९५ के बाद एक प्रक्षिप्त सर्ग रखा जाता है, जिसमे काक-वृत्तान्त का किंचित् भिन्न रूप से वर्णन किया गया है । भोजन के बाद सीता कौवो को खिला रही थी, कि एक काक उन्हे कष्ट देने लगा । इस पर राम ने ईषीकास्त्र चलाकर काक को भगाया । अन्त मे काक ने राम की शरण ली और अस्त्र को एक आँख समर्पित कर बच गया । गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे यह सर्ग प्रक्षिप्त नही माना गया है, इसकी गणना अन्य सर्गों के साथ-साथ हुई है (दे० गौ० रा० २, १०५, प० रा० २, १०६) । इस सर्ग मे राम द्वारा सीता के ललाट पर **तिलक** लगाने तथा बाद मे भीमकाय वानर को देखने से भयविह्वला सीता द्वारा इस तिलक के राम के वक्षस्थल पर अकित हो जाने का वर्णन भी मिलता है ।

वाल्मीकि रामायण मे यह सर्ग भरत के चित्रकूट मे आगमन के पूर्व रखा गया है, कालिदास ने काक-वृत्तान्त का वर्णन भरत के प्रस्थान के पश्चात् किया है (दे० रघुवश, सर्ग १२) । फलस्वरूप बहुत सी रामकथाओं मे इस घटना का उल्लेख कालिदास के क्रमानुसार किया जाता है, उदाहरणार्थ नृसिहपुराण, सध्याकरनन्दिकृत रामचरित, रामायण मजरी, पद्मपुराण (उत्तरकाड अध्याय २६९), रामचरितमानस, काश्मीरी रामायण ।

जयन्त स्थूलशिर के शाप के कारण काक बन गया था, ऐसा कथन पद्मपुराण के उत्तरकाड के गौडीय पाठ मे मिलता है ।[2] कन्नड तोरवे रामायण के अनुसार अत्रि ने जयन्त को काक बन जाने का शाप देते हुए उसे आश्वासन दिया था कि सीता के चरण-

---

१ रामचरितमानस मे नारद जयत को राम के पास भेज देते है (दे० ३, २, ५) ।

२. दे० जर्नल एसियाटिक सोसाइटी ऑव बगाल १८४२, पृ० ११२० ।

तथा उनको अवतार के उद्देश्य का स्मरण दिलाते हैं (दे० २, १ और आनन्द रामायण, १, ९; काश्मीरी रामायण, रामरहस्य, अध्याय ६; तत्वसंग्रहरामायण, २, ४, रामचरितमानस के अनेक संस्करणों का क्षेपक)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के साथ वन जाने के लिये अनुरोध करते हुए सीता आत्महत्या की धमकी देती है (रा० २, ३०, १६) और यह भी कहती हैं, ब्राह्मणों ने मेरा वनवास अनिवार्य बताया है (वस्तव्यं किल मे वने दे० सर्ग २६, ८; और अध्यात्म रा० २, ४, ७६)। आगे चलकर सीता यह भी कहती है कि मैंने जितने रामायण सुने हैं, उन सब में सीता राम के साथ वन जाती हैं (अध्यात्म रामायण २, ४, आनन्द रामायण १, ६, उदारराघव सर्ग ५)। इसके अतिरिक्त आनन्द रामायण में सीता एक तीसरा तर्क देकर कहती हैं—मैंने स्वयंवर के समय राम को पतिस्वरूप प्राप्त करने के लिये १४ वर्ष तक वनवास का व्रत किया था। वाल्मीकि रामायण में राम के वनवास के कई अन्य परोक्ष कारणों का उल्लेख किया गया है—दशरथ द्वारा प्राणियों का वध (२, ३६, ४) और अंधमुनि-पुत्र-वध (दे० २, ६३, ११), पूर्व जन्म में कौसल्या द्वारा गायों के स्तनों का काटना (दे० २, ४३, १७) तथा स्त्रियों को पुत्रहीन करना (दे० २, ५३, १६)।

प्रचलित रामायण में एक श्लोक मिलता है, जो बड़ौदा संस्करण में प्रक्षिप्त माना गया है। इस में दशरथ अपने मंत्रियों से अयोध्या में होने वाले अपशकुनों का उल्लेख करते हैं और इसलिए अनुरोध करते हैं कि राम को अभिषेक दिया जावे—दिव्यन्तरिक्षे भूमौ च घोरमुत्पाततं भयम् (२, १, ४३)। महानाटक में भी अपशकुनों की चर्चा है, किन्तु वहाँ सीता पर इनका दोष लगाया जाता है (दे० आगे अनु० ४४४)। तोरवे रामायण में राम अभिषेक के दिन वसिष्ठ से कहते हैं, "मैंने स्वप्न देखा कि मैं सीता के साथ वन में भटक रहा था।"

राजशेखर के बालरामायण (अंक ६, छन्द २५) में वनवास के प्रसंग में पहले पहल ऊर्मिला की ओर संकेत किया गया है। उद्धरण इस प्रकार है—

दयितमनुसरन्तीं मैथिलीम् इक्षमाना
गृहिणमनुयियासुर् जानकी सा कनिष्ठा।
गुरुगुरुजनलज्जा-नम्रवक्त्राम्बुजेन
भ्रुकुटिपुटनिबन्धाद् वारिता लक्ष्मणेन॥

क। वनवास के भिन्न-भिन्न कारण

४४४ वाल्मीकि रामायण के अनुसार कैकेयी ने अपने दो वरों के बल पर भरत के लिये राज्य तथा राम के लिये १४ वर्ष का वनवास दशरथ से माँग लिया था। अतः

३—राम का निर्वासन

४४२. अयोध्याकाड की प्रधान घटना राम का निर्वासन है। केवल दो राम-कथाओ मे इसका उल्लेख नही किया गया है। गुणभद्रकृत जैन उत्तर पुराण मे रावण राजधानी के निकट के अशोकवन से सीता को हर लेता है, तथा अनाम की रामकथा मे दशानन सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करके सीता को अपने साथ ले जाता है।

शेष रामकथाओ मे वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के निर्वासन का वर्णन किया गया है। फिर भी राम के वनवास के भिन्न-भिन्न कारणो की कल्पना कर ली गई है। इसके अतिरिक्त कैकेयी की वरप्राप्ति की अनेक कथाएँ प्रचलित हो गई है, तथा कैकेयी के दोष-निवारण के लिए भी अनेक उपायो का सहारा लिया गया है। इन वातो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री पर अलग विचार किया जायगा। इसके पहले यहाँ पर गौण परिवर्तनो की ओर निर्देश किया जाता है।

४४३ महानाटक के अनुसार निर्वासन के समय भरत अयोध्या मे थे (अक ३,५), तथा प्रतिमानाटक मे भरत शत्रुघ्न के विना अपने ननिहाल गए थे (अक ३)। अनामकम् जातकम् तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६ और ६ मे केवल राम और सीता के वनवास का उल्लेख है तथा दशरथ कथानम् मे केवल राम और लक्ष्मण वन के लिए प्रस्थान करते है। सिहली रामकथा तथा तिब्बती रामायण मे राम अकेले ही वन जाते है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार प्राय: सभी रामकथाएँ वनवास की अवधि १४ वर्ष की मानती है। दशरथ जातक मे वनवास का स्थान हिमालय-प्रदेश है तथा इसकी अवधि १२ वर्ष की है। इसी तरह दशरथकथानम्, सघदास की वसुदेवहिण्डि, पाश्चात्य वृत्तान्त १, २, ३, ७, १३ आदि वनवास वारह वर्ष का मानते है। स्वयभूदेव के पउमचरिउ (२३, ६) मे राम लक्ष्मण को १६ वर्ष तक वनवास करने का निमन्त्रण देते हैं। महाभारत के रामोपाख्यान, पउमचरियम् तथा अनामकम् जातकम् मे वनवास की किसी निश्चित अवधि का उल्लेख नही है।

वाल्मीकि के अनुसार दशरथ ने राम के युवराज्याभिषेक के सम्बन्ध मे पहले अपने मन्त्रियो के साथ परामर्श किया (रा० २, १, ४२) और अनन्तर राजपरिषद की अनुमति ली (रा० २, २, १७)। प्रचलित रामायण (२, २, १८) मे जनता की स्वीकृति का भी उल्लेख है। किन्तु वडौदा के सस्करण में तत्सम्वन्धी श्लोक प्रक्षिप्त माना गया है। यज्ञफल-नाटक मे दशरथ राम-विवाह से पहले ही अपनी तीनों पत्नियों से उनके अभिषेक की अनुमति प्राप्त कर लेते है।

अध्यात्म रामायण तथा उसके परवर्ती अनेक रामकथाओ मे नारद के आगमन का उल्लेख किया गया है, जो राज्य अस्वीकृत करने के लिए राम से अनुरोध करते है

हिंदेगिया के सेरी राम में मंथरा को पीटने के कारण राम की बदनामी हो चुकी थी। सीता-स्वयंवर के समय भरत को राज्य दिये जाने का समाचार सुनकर राम राजधानी न लौटकर सीता तथा लक्ष्मण के साथ सीधे वन के लिए प्रस्थान करते हैं।

सेरी राम के एक अन्य पाठ के अनुसार राम स्वयंवर के पश्चात् घर जाते हैं। बाद में, किसी परिचारिका के अनुरोध से भरत-शत्रुघ्न की माता दशरथ से अपने पुत्रों के लिए राज्य माँग लेती है। दशरथ के सोते समय वह राम को बुलाती है, और उनको राज्य से वंचित होने का समाचार सुनाती है। यह सुनकर राम बहुत प्रसन्न होते हैं और ऋषि बनने के लिए सीता तथा लक्ष्मण के साथ वन में तपस्या करने जाते हैं।

सिंहली रामकथा में शनि की अशुभ दशा के दुष्परिणाम से बचने के उद्देश्य से राम सीता को राजधानी में छोड़ कर सात वर्ष तक वन में रहते हैं।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार राम ताड़का-वध के प्रायश्चित्त के लिए तपस्या करने जाते हैं। दशरथ उनसे बारह वर्ष के पश्चात् लौटने की प्रार्थना करते हैं। नागरिक राम के पीछे हो लेते हैं, लेकिन राम उनको लौटने का आदेश देकर सीता और लक्ष्मण के साथ ही वन में प्रवेश करते हैं।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १२ में कहा गया है कि राम १५ वर्ष की अवस्था में सीता तथा लक्ष्मण के साथ तपस्या करने गये थे।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ के अनुसार राम को एक ब्राह्मण ने शाप दिया था जिसके फलस्वरूप उनका ईश्वरीय ज्ञान लुप्त हो गया था। बाद में कैकेयी की प्रार्थना स्वीकार कर राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते हैं। वनवास के परोक्ष कारणों का ऊपर उल्लेख हो चुका है (अनु० ४४३)।

ख। कैकेयी की वरप्राप्ति

४४७ कैकेयी के वरों की संख्या तथा उनको प्राप्त करने के ढंग के विषय में भी पर्याप्त मात्रा में विभिन्नता पाई जाती है।

दो वर। वाल्मीकि रामायण के अनुसार देवासुर-युद्ध में दशरथ, इन्द्र के लिए, शम्बासुर के विरुद्ध युद्ध करते हैं तथा आहत होकर कैकेयी द्वारा रणभूमि से हटाये जाते हैं। इसके लिए कैकेयी दशरथ से दो वर प्राप्त करती है और बाद में इन दोनों वरों के बल पर भरत के लिए राज्य तथा राम के लिए वनवास माँग लेती है (दा० रा० २, ९, १५-१७)। उदीच्य पाठों (गौ० रा० २. ८, १५; प० रा० २, ११, १५) के अनुसार कैकेयी ने अपने 'शत्रुपरिक्षत' पति को रणभूमि से हटाकर उनकी चिकित्सा की थी—व्रणसंरोहणं चास्य तत्र देवि त्वया कृतम्।

पश्चिमोत्तरीय पाठ में कैकेयी के सामर्थ्य का कारण भी बताया गया है। उसने एक ब्राह्मण को प्रसन्न कर दिया था और पुरस्कारस्वरूप उनसे विद्याबल पाया

राम के निर्वासन का यह कारण सब से प्राचीन और बाद मे सब से प्रचलित और प्रामाणिक माना गया है। रामकीर्त्ति (सर्ग १) मे कैकेयी राम और लक्ष्मण दोनो के लिये १४ वर्ष का वनवास माँगती है। यह सुनकर लक्ष्मण कैकेयी का वध करना चाहते हैं, किन्तु राम उनको शान्त करते है। वाल्मीकि रामायण (सर्ग २१) के अनुसार भी लक्ष्मण ने दशरथ को मार डालने का प्रस्ताव किया था और कौशल्या ने लक्ष्मण के इस प्रस्ताव का समर्थन किया था। सभी रामकथाओ मे राम इस परीक्षण मे खरे उतर कर अपने पिता की आज्ञा के पालन मे दृढ रहते है।

उदारराघव मे दशरथ स्वयं लक्ष्मण से अनुरोध करते हैं कि वह विद्रोह कर राम को बलपूर्वक राजा बनाये—**वीरोऽसि मौलैः सह लक्ष्मण त्वं रामं प्रतिष्ठापय राज्यपीठे** (४, १०५)।

महानाटक मे कैकेयी दशरथ से कहती है कि सीता 'अमंगली वधू' है, क्योंकि **"अस्या आगमनमात्रेण महोत्पाताः सम्भवन्ति"** और इन उत्पातो की शांति के लिए राम को सीता के साथ वन भेजना चाहिए (३,३)। भट्टिकाव्य (३, ९), महावीरचरित (४, ४१) तथा अनर्घराघव (४, ६९) मे कैकेयी राम, लक्ष्मण तथा सीता का वनवास माँगती है।

४४५ दशरथ जातक तथा दशरथ कथानम् मे भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत के लिए राज्य माँग लेती है। बाद मे भरत की माता के षड्यन्त्रो के भय से दशरथ अपने दो पुत्रो (राम और लक्ष्मण) को वन भेज देते है, और बारह वर्ष के पश्चात् लौटने को कहते है। अतः इन बौद्ध कथाओ के अनुसार **सौतेली माँ के षड्यन्त्रों** का भय निर्वासन का कारण माना जाता है।

४४६. रामकथाओ का एक तीसरा वर्ग मिलता है, जिसमे राम **स्वेच्छा** से वन के लिए प्रस्थान करते है। इसी प्रकार के प्राचीनतम वृत्तान्त बौद्ध तथा जैन साहित्य मे पाये जाते हैं।

अनामकं जातकं मे कथा इस प्रकार है। अपने मामा के आक्रमण की तैयारियो के विषय मे सुन कर राजा (राम) संघर्ष के निवारण के लिए स्वेच्छा से रानी के साथ पहाडी वन में जाकर निवास करने लगे।

पउमचरियं तथा अन्य जैन रामकथाओ के अनुसार दशरथ को वैराग्य हुआ और भरत को राज्य दिया गया। यह सुनकर राम स्वेच्छा से सीता तथा लक्ष्मण के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है।

तिब्बती रामायण के अनुसार दोनो पुत्रो मे से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्तव्यविमूढता के विषय मे सुनकर राम स्वेच्छा से किसी आश्रम मे जाकर तपस्या करने लगते है।

वर उनको कामशास्त्र मे निपुणता के कारण दिया जाता है (राया कैकईए सयणोवयार-रवियक्खणाए तोसिओ—राजा कैकेय्या शयनोपचारविचक्षणया तोषित.)। दूसरे वर की कथा इस प्रकार है। किसी दिन एक सीमावर्ती राजा ने दशरथ को युद्ध मे कैदी बना लिया था। यह सुनकर कैकेयी ने सेना का नेतृत्व लेकर विरोधी राजा को हराया तथा दशरथ को मुक्त किया था।

४४८ एक वर। महाभारत (दे० ३, २६१, २१), रामकियेन तथा पद्म-पुराण के उत्तर काण्ड के गौडीय पाठ मे (पृ० ११२२) कैकेयी के केवल एक वर का उल्लेख किया गया है लेकिन इसी एक वर के बल पर वह भरत के लिये राज्य तथा राम के लिये वनवास माँग लेती है।

पउमचरिय के अनुसार कैकेयी ने अपने स्वयवर के बाद दशरथ का रथ हाँक कर अन्य राजाओ के विरुद्ध दशरथ की सहायता की थी और इस प्रकार एक वर प्राप्त किया था (दे० ऊपर अनु० ३३८)।

दशरथ जातक तथा दशरथकथानम् दोनो मे भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत को राज्य दिलवाती है। दशरथ जातक मे कहा गया है कि भरत के जन्म के अवसर पर दशरथ ने इस वर को दिया था।

४४९ तीन वर। ब्रह्मपुराण मे देवासुर-युद्ध मे कैकेयी ने अपने हाथ से दशरथ के रथ का टूटा हुआ अक्ष सभाला था। दशरथ केवल बापसी मे देखते हैं कि कैकेयी क्या कर रही हैं। इस पर प्रसन्न होकर दशरथ उनको तीन वर प्रदान करते हैं (दे० अध्याय १२३)।

ग। कैकेयी का दोष-निवारण

४५० आदिकवि वाल्मीकि ने कैकेयी की दुष्टता और कुटिलता का स्पष्ट शब्दो मे चित्रण किया है।[1] चित्रकूट की यात्रा करते समय राम आशका करते है कि कैकेयी कही भरत को राज्य दिलाने के लिए दशरथ के प्राण न ले तथा कौशल्या-सुमित्रा को विष न खिला दे (सर्ग ५३)

सा हि देवी महाराज कैकेयी राज्यकारणात्।
अपि न च्यावयेत्प्राणान्दृष्ट्वा भरतमागतम् ॥७॥
परिदद्याद्धि धर्मज्ञ गरं ते मम मातरम् ॥१८॥

सीता भी कैकेयी को कलहशीला कहकर उनकी निन्दा करती हैं :

---

१. सुमन्त्र द्वारा कैकेयी की निन्दा तथा उनकी माता के त्यक्त किए जाने की कथा केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलती है (दे० अनु० ४३०)।

था, जिसके द्वारा वह अपने पति को बचाने मे समर्थ हुई। तेलुगु द्विपद रामायण (२, २) मे कहा गया है कि शम्बर ने दशरथ से युद्ध करते हुए माया का सहारा लिया था, लेकिन ववलग से सीखी हुई माया द्वारा कैकेयी ने शम्बर की माया का प्रभाव नष्ट करके दशरथ को बचाया था।

बहुत से ऐसे वृत्तान्त भी मिलते है, जिनके अनुसार कैकेयी ने देवासुर युद्ध में दशरथ के रथ का अक्ष टूटा हुआ देखकर उसमे अपना हाथ रख दिया था (दे० ब्रह्म पुराण, अध्याय १२३, पद्मपुराण[1], अध्यात्म रामायण २, १, ६६, आनन्द रामायण १, १, ८५, रामकियेन, अध्याय १४)। आनन्द रामायण (१, १, ८३) के अनुसार एक मुनि ने बालिका कैकेयी की सेवा से संतुष्ट होकर उसे यह वरदान दिया था कि समय पडने पर तुम्हारा हाथ वज्रकठिन बन जाएगा।

भावार्थ रामायण (१, १) के अनुसार अश्वमुनि के शाप के फलस्वरूप दशरथ के राज्य मे अनावृष्टि हुई। दशरथ कैकेयी को साथ ले जाकर इन्द्र के विरुद्ध युद्ध करने गये। युद्ध मे शुक्र ने अक्ष तोड़ा किन्तु कैकेयी ने अपने भुजा से रथ सम्हाला जिससे इन्द्र की पराजय हुई।

बाद मे कैकेयी के दो वरो के लिए दो भिन्न घटनाओ का उल्लेख किया गया है। कृत्तिवास रामायण (१, ३३-३४) तथा असमिया बालकाण्ड (अध्याय १६) मे शम्बर-युद्ध के अवसर पर कैकेयी को एक वर मिला था और दूसरा वर उसे दशरथ के व्रण की पीव चूसने के लिए मिला था।[2] पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३ के अनुसार कैकेयी ने बिच्छू से डसे हुए दशरथ को स्वस्थ कर अपना दूसरा वर प्राप्त किया था। सेरी राम मे भरत और शत्रुघ्न की माता बल्यादारी दशरथ की कमर के फोडे को पीव चूसकर दशरथ से यह आश्वासन पाती है कि उनके पुत्रो को राज्य मिलने वाला है।[3] प्रथम बार उनको यह आश्वासन दशरथ तथा मदूदारी के विवाहोत्सव के अवसर पर मिला था। उस समय उसने उन दोनो की पालकी सभाली थी (दे० अनु० ३४०)।

सघदास की वसुदेवहिण्डि मे कैकेयी की वरप्राप्ति का वर्णन मौलिक है। प्रथम

---

१ दे० उत्तरकाण्ड, वगीय पाठ, जर्नल एसियाटिक सोसाइटी, १८४२, पृ० ११२२।

२ पाश्चात्य वृतान्त न० ३ मे भी कैकेयी द्वारा दशरथ के अगूठे की चिकित्सा करने का उल्लेख है। लोकगीतो मे कैकेयी दशरथ के पैर से काटा निकाल कर वर प्राप्त करती है (दे० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित ग्राम साहित्य, पहला भाग, पृ० २१७ तथा कविता कौमुदी, ५ वाँ भाग, पृ० १०३)।

३ हिकायन महाराज रावण मे इससे मिलती-जुलती कथा पायी जाती है।

प्रतिमानाटक में कैकेयी के दोष-निवारण के लिए एक अन्य नयी कल्पना [illegible] है। ऋषि-शाप के फलस्वरूप पुत्रवियोग के कारण दशरथ का मरण अनिवार्य जानकर कैकेयी ने इस शाप की रक्षा करने के लिए राम वन को [illegible] और [illegible] बिताने के कराने के लिए वसिष्ठ, वामदेव आदि के परामर्श करने के पश्चात् राम को वन भिजवाना था। यह सुनकर भरत कहते हैं कि आपने १४ वर्ष का निर्वासन क्यों दिलाया है? इस पर कैकेयी उत्तर देती है कि भूल से '१४ दिनों' के स्थान पर '१४ वर्ष' मुँह से निकला था।

भवभूति के महावीरचरित तथा मुरारि के अनर्घराघव में कैकेयी के किसी दोष का उल्लेख नहीं हुआ है। माल्यवान् के कहने पर शूर्पणखा मंथरा के वेष में मिथिला पहुँचकर दशरथ को कैकेयी का एक पत्र देती है जिसके वर के बल पर राम का निर्वासन माँगा गया था। फलस्वरूप राम, भरत को अपनी पादुकाएँ देकर, मिथिला ही से वन के लिए प्रस्थान करते हैं (दे० अंक ४)।

बालरामायण में महावीरचरित के वृत्तान्त का किंचित् विकसित रूप पाया जाता है। उस समय कैकेयी के साथ दशरथ मिथिला गये थे। इन दोनों की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमानुसार दशरथ, कैकेयी तथा मंथरा का रूप धारण कर लेते हैं और राम निर्वासन दिलाने का प्रयत्न सफल करते हैं (दे० अंक ३)।

अध्यात्म रामायण (२, २, ४४-४६) में मंथरा तथा कैकेयी दोनों को मोहित करने के उद्देश्य से सरस्वती को अयोध्या भेजे जाने का उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण (दे० ८, २, ४६), रामचरितमानस आदि में भी कैकेयी का दोष सरस्वती पर डाला गया है। बलरामदास रामायण के अनुसार [illegible] नामक देवता दशरथ में तथा [illegible] नामक देवता कैकेयी में प्रवेश करते हैं। रामलिंगामृत (सर्ग १२) में कैकेयी राम से कहती है कि देवेन्द्र से प्रेरित होकर मैंने रावण का वध करने के लिए आपको वन भेज दिया था।

४४६. वाल्मीकि रामायण के अनुसार चित्रकूट में कैकेयी मौन रहती है। बाद में संभवतः पउमचरियं के अनुकरण पर अध्यात्म रामायण (२, ९, ५३-६०), आनन्द रामायण (१, ६, १९७), तोरवे रामायण (२, ३), रामलिंगामृत (सर्ग १२) तथा रामचरितमानस में कैकेयी के इस अवसर पर पश्चात्ताप प्रकट करने तथा क्षमा माँगने का वर्णन किया गया है। अध्यात्म रामायण के अनुसार उस समय राम ने कैकेयी से कहा था कि (निर्वासन के लिए अनुरोध करने वाली) वाणी मुझसे प्रेरित होकर तुम्हारे मुँह से निकली थी।

मयैव प्रेरिता वाणी तव वक्त्राद्विनिर्गता। (२, ९, ६३)

कुलमुत्सादितं सर्वं त्वया कलहशीलया (६, ३२, ४)।

४५१ वाल्मीकि रामायण ही मे कैकेयी के दोष-निवारण का प्रयत्न किया गया है। भरद्वाज राम से कहते है कि कैकेयी को दोष नही देना चाहिए क्योकि राम का निर्वासन सबो के हित का कारण सिद्ध होगा :

देवानां दानवानां च ऋषीणां भावितात्मनाम्।
हितमेव भविष्यद्धि रामप्रव्राजनादिह ॥३१॥ (सर्ग ९२)

चित्रकूट मे जब भरत कैकेयी की भर्त्सना करते हैं, राम स्वय कैकेयी का पक्ष लेकर भरत को स्मरण दिलाते है कि दशरथ ने विवाह के अवसर पर कैकेयी के पुत्र को राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी :

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।
मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम् ॥३॥ (रा० २, १०७)

कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिये दशरथ की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे ब्राह्मण-शाप का उल्लेख किया गया है (अनु० ४३०)। कैकेयी ने किसी ब्राह्मण की निन्दा की थी और ब्राह्मण ने कैकेयी को शाप दिया था कि तुम्हारी भी निन्दा की जायेगी। इस कारण 'शापदोषमोहिता' कैकेयी मंथरा के जाल मे फँस गई थी। इस शाप का उल्लेख रामायणमजरी और कृत्तिवास तथा बलरामदास के रामायणो मे भी मिलता है।

४५२ विमलसूरि के अनुसार कैकेयी ने भरत का वैराग्य दूर करने के उद्देश्य से उनके लिये राज्य माँगा था, उन्होने राम के वनवास के विषय मे कुछ नही कहा था। सीता और लक्ष्मण के साथ जब राम स्वेच्छा से चले जाते हैं तब कैकेयी अपनी सपत्नियो को शोकातुर देखकर भरत को भेज देती है कि वह राम को वापस ले आये। भरत के प्रस्थान के बाद वह स्वय राम के पास जाकर क्षमा माँगती है तथा लौटने के लिये राम से अनुरोध करती है। राम अस्वीकार करते हैं तथा भरत को राज्याभिषेक देकर अयोध्या भेजते है (सर्ग ३२)। वसुदेवहिण्डि मे भी कैकेयी के पश्चात्ताप का वर्णन है। धर्मखण्ड (अध्याय ३८) तथा तत्त्वसंग्रहरामायण (२, ११) के अनुसार कैकेयी अयोध्या-वासियो का दुःख देखकर द्रवित हो जाती है। वह राम के पास जाकर उनकी आराधना करती हैं तथा क्षमा माँगती हुई वापस आने के लिये अनुरोध करती है। राम उनको यह कहते हुये क्षमा प्रदान करते है—देवकृते कोऽपराधः। त्वं मे मातृसमा देवि त्वयि मे नास्ति दुर्मनः।

जानकीहरण (१, ४२) मे कैकेयी की प्रशसा इसीलिए की गई है कि उनके दोष के कारण राक्षसो का नाश हुआ था—यस्या दोषोदपि भुवनत्रयस्य रक्षोभयनाशाय हेतुर्बभूव।

शैशवे किल रामेण पुरा प्रणयकोपतः ।
चरणेनाहता तत्र चिरं कोपमुवाह सा ॥ (१, ६६७)

बलरामदास के अनुसार मथरा ने विवाह के अवसर पर राम का उपहास किया था और राम ने उसे पीटा था। कवरामायण (२, २, ४१, ५, ८, ३२) मे इसका उल्लेख मिलता है कि लडकपन मे राम ने मिट्टी के ढेलो को अपने धनुप पर चढाकर मथरा के कूवर पर मारा था।

तेलुगु रगनाथ रामायण (१, १४, २, २) के अनुसार राम ने बचपन मे मथरा की एक टाग को तोड दिया था, सेरी राम और रामकियेन (अध्याय १४) के अनुसार राम ने उसके कुब्ज मे बाण चलाया था। तेलुगु भास्कर रामायण से माना गया है कि राम ने मथरा को लात मारी थी।

(५) सत्योपाख्यान (अध्याय १०-१४) के अनुसार मन्थरा ने पूर्व-जन्म के वैर के कारण राम को वनवास दिलाया था। वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और दैत्य-देवता-युद्ध मे उसने पाशो से देवताओ के विमान और वाहन वाँधे थे। इसपर विष्णु की आज्ञा से इन्द्र ने उसे वज्र द्वारा मारा था (दे० अध्याय १०-१४)।

मन्थरा के अगले जन्म का भी उल्लेख किया गया है। आनन्द रामायण के अनुसार वह कृष्णावतार के समय पूतना के रूप मे प्रकट होगी और कृष्ण द्वारा मार डाली जायगी (दे० ६, ५, ३५), लेकिन इसी रचना के एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि वह कस के यहाँ कुब्जा के रूप मे अवतार लेगी (दे० १, २, ३)।

घ । मंथरा

४५४. मथरा द्वारा कैकेयी के भडकाये जाने का वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे कोई विशेष कारण नही दिया गया है । अन्य वृत्तान्तो मे इसके लिए भिन्न-भिन्न कारणो की कल्पना की गई है ।

(१) महाभारत के रामोपाख्यान (दे० ३, २६०, १०) मे जब राम की सहायता करने के लिए देवताओ द्वारा ऋक्षो तथा वानरो की स्त्रियो से पुत्र उत्पन्न करने का उल्लेख किया गया है, गधर्वी दुंदुभी के मथरा के रूप मे प्रकट होने की चर्चा मिलती है । पद्मपुराण के पाताल खण्ड के गौडीय पाठ (अध्याय १५), आनन्द रामायण (दे० १, २, २), कृत्तिवास रामायण (२, ४), वसुदेवकृत रामकथा आदि मे भी इसका निर्देश किया गया है । तोरवे रामायण मे मथरा को विष्णु माया का अवतार माना गया है । बलरामदास के अनुसार मथरा वास्तव मे गोमाता सुरभि है जिसे देवताओ ने पृथ्वी पर भेजा था ।

(२) बाद के अनेक वृत्तान्तो मे मथरा को मोहित करने के लिए सरस्वती के भेजे जाने का वर्णन मिलता है (दे० अध्यात्म रामायण २, २, ४४, आनद रामायण १, ६, ४१, रामचरितमानम, काश्मीरी रामायण) । भावार्थ रामायण के अनुसार ब्रह्मा ने मथरा के मन मे ईर्ष्या उत्पन्न करने के उद्देश्य से विकल्प को भेजा था ।

(३) वाल्मीकि रामायण मे शत्रुघ्न राम के निर्वासन के कारण मथरा को पीटते हैं (दे० २, ७८) । बाद मे राम द्वारा मथरा का उत्पीड़न वनवास का कारण बताया गया है :

पादौ गृहीत्वा रामेण कर्षिता साऽपराधतः ।
तेन वैरेण सा रामं वनवासं च कांक्षति ॥ ८ ॥

(अग्निपुराण, अध्याय ५)

(४) वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठ की कुछ हस्तलिपियो मे मथरा के पूर्व-वैर का उल्लेख इस प्रकार है—

रामे सा निश्चिता पापा पूर्ववैरमनुस्मरन् ।
कस्मिंश्चिदपराधे हि क्षिप्ता रामेण सा पुरा ।
चरणेण क्षितिं प्राप्ता तस्माद्वैरमनुत्तमम्

(दे० बडौदा सस्करण, अयोध्याकाड, सर्ग ७, ६ की पाद टिप्पणी)

रामायणमजरी मे भी राम के प्रति मथरा के वैर का कारण उल्लिखित है :

का वध (सर्ग २५-३०)। अकपन का रावण को समाचार देने और सीता-हरण के लिए प्रोत्साहित करना, मारीच से मन्त्रणा (सर्ग ३१)।

शूर्पणखा-रावण-संवाद—शूर्पणखा का लका जाकर रावण की भर्त्सना करना और सीता के सौदर्य का वर्णन करना, रावण का सीताहरण का निश्चय (सर्ग ३२-३४)।

(३) सीताहरण (सर्ग ३५-५६)

रावण-मारीच-सवाद—रावण का मारीच के सम्मुख सीता-हरण का प्रस्ताव रखना। मारीच का समझाना, वाद मे चेतावनी देकर स्वीकार करना (सर्ग ३५-४१)।

कनक-मृग—मारीच के कनक-मृग-रूप को देखकर सीता का उसके लिए प्रार्थना करना। सीता को लक्ष्मण की रक्षा मे छोडकर राम का मृग के लिए जाना। दूर जाने पर राम का मारीच को मारना। मरते समय उसका राक्षस रूप मे 'सीता-लक्ष्मण' शब्द करना, सीता की लाछना से लक्ष्मण का प्रस्थान (सर्ग ४२-४५)।

सीता-हरण—परिव्राजक के रूप मे रावण का सीता से जीवन-वृत्तान्त सुनना। प्रकट होकर रावण का वलपूर्वक सीता को अपने रथ पर ले चलना। सीता द्वारा पुकारे जाने पर जटायु का युद्ध करना और आहत होना (४६-५१)। सीता के आभूषणो का गिरना, पाँच वन्दरो की ओर सीता का आभूषण फेकना, लका में सीता का अशोकवन मे राक्षसियो के नियत्रण मे रहना (सर्ग ५२-५६)। (एक प्रक्षिप्त सर्ग· इन्द्र का सीता के लिए हवि ले आना)।

(४) सीता की खोज (सर्ग ५७-७५)

शून्य पर्णशाला—लौटते समय राम का लक्ष्मण से मिलना और शकाकुल होकर लक्ष्मण को दोष देना (सर्ग ५७-५९)। शून्य कुटी देखकर राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना। गोदावरी तट पर खोज। पुष्प तथा आभूषणो का मिलना, जटायु-युद्ध के चिह्न दिखाई देना (सर्ग ६०-६४), लक्ष्मण की सान्त्वना (सर्ग ६५-६६)।

जटायु—मरण के पूर्व जटायु का रावण द्वारा सीता-हरण तथा दक्षिण की ओर प्रस्थान का उल्लेख (सर्ग ६७-६८)।

कवंध—लक्ष्मण का अयोमुखी को विरूप करना। कवध का वाहुविच्छेद, उसके विपय मे स्थूलशिर तथा इन्द्र के शाप का उल्लेख, चिता के प्रज्वलित होने पर कवध का दिव्य रूप मे सुग्रीव के पास जाने की मन्त्रणा देना (सर्ग ६९-७३)।

शवरी—पम्पासर स्थित आश्रम मे शवरी का स्वागत और उसका स्वर्गारोहण। पपा-वर्णन और राम का विलाप (सर्ग ७४-७५)।

अध्याय १६

अरण्यकांड

१—वाल्मीकि रामायण का अरण्यकांड

४५५ क । अरण्यकाड की कथावस्तु

(१) दण्डकारण्य-प्रवेश (सर्ग १-१६)

विराध—दडकारण्य-निवासी ऋषियो का स्वागत (सर्ग १), विराध द्वारा सीता-अपहरण तथा राम-लक्ष्मण का उसे परास्त करना (सर्ग २-४)।

शरभंग—राम को देख इद्र का आश्रम से प्रस्थान। शरभग का राम को सुतीक्ष्ण के आश्रम भेजना। राम द्वारा राक्षसो के विरुद्ध सहायता देने की प्रतिज्ञा (सर्ग ५-६)।

सुतीक्ष्ण—सुतीक्ष्ण के आश्रम मे रात्रि व्यतीत कर प्रस्थान (सर्ग ७-८)। सीता द्वारा अहिंसा का आग्रह, राम द्वारा राक्षसो के विरुद्ध सहायता करने की प्रतिज्ञा का उल्लेख (सर्ग ६-१०)।

अगस्त्य—पचाप्सर-तडाग पर आगमन। राम का तडाग के चारो ओर के आश्रमो मे दस वर्ष तक निवास। सुतीक्ष्ण से अगस्त्य-आश्रम का मार्ग पूछना। अगस्त्य द्वारा इल्वल और वातापि के वध की कथा का राम द्वारा उल्लेख। अगस्त्य का स्वागत और विष्णु-धनुष प्रदान, फिर गोदावरी-तट पर स्थित पचवटी का पथ-प्रदर्शन (सर्ग ११-१३)।

जटायु—दशरथ के मित्र और सम्पाति के भाई का जटायु से मिलना (सर्ग १४)। पचवटी मे लक्ष्मण द्वारा पर्ण-कुटी-निर्माण। लक्ष्मण का कैकेयी को दोष देना। राम का उन्हे रोक कर भरत-गुण-कथन के लिए आग्रह (सर्ग १५-१६)।

(२) शूर्पणखा (सर्ग १७-३४)

शूर्पणखा का विरूपीकरण—राम और लक्ष्मण से प्रवचित होकर शूर्पणखा का सीता की ओर झपटना। लक्ष्मण का उसके नाक-कान काटना (सर्ग १७-१८)। खर के भेजे हुए १४ राक्षसो का राम द्वारा वध (सर्ग १६-२०)।

खर-वध—खर के १४००० की सेना लेकर पहुँचने पर सीता और लक्ष्मण का गुफा मे जाना (सर्ग २१-२४)। राम द्वारा राक्षसो तथा दूषण, त्रिशिर और खर

का वध (सर्ग २५-३०)। अकपन का रावण को समाचार देने और सीता-हरण के लिए प्रोत्साहित करना, मारीच से मन्त्रणा (सर्ग ३१)।

शूर्पणखा-रावण-सवाद—शूर्पणखा का लका जाकर रावण की भर्त्सना करना और सीता के सौंदर्य का वर्णन करना, रावण का सीताहरण का निश्चय (सर्ग ३२-३४)।

(३) सीताहरण (सर्ग ३५-५६)

रावण-मारीच-संवाद—रावण का मारीच के सम्मुख सीता-हरण का प्रस्ताव रखना। मारीच का समझाना, वाद मे चेतावनी देकर स्वीकार करना (सर्ग ३५-४१)।

कनक-मृग—मारीच के कनक-मृग-रूप को देखकर सीता का उसके लिए प्रार्थना करना। सीता को लक्ष्मण की रक्षा मे छोडकर राम का मृग के लिए जाना। दूर जाने पर राम का मारीच को मारना। मरते समय उसका राक्षस रूप मे 'सीता-लक्ष्मण' शब्द करना, सीता की लाछना से लक्ष्मण का प्रस्थान (सर्ग ४२-४५)।

सीता-हरण—परिव्राजक के रूप मे रावण का सीता से जीवन-वृत्तान्त सुनना। प्रकट होकर रावण का वलपूर्वक सीता को अपने रथ पर ले चलना। सीता द्वारा पुकारे जाने पर जटायु का युद्ध करना और आहत होना (४६-५१)। सीता के आभूषणो का गिरना, पाँच वन्दरो की ओर सीता का आभूषण फेकना, लका मे सीता का अशोकवन मे राक्षसियो के नियत्रण मे रहना (सर्ग ५२-५६)। (एक प्रक्षिप्त सर्ग॰ इन्द्र का सीता के लिए हवि ले आना)।

(४) सीता की खोज (सर्ग ५७-७५)

शून्य पर्णशाला—लौटते समय राम का लक्ष्मण से मिलना और शकाकुल होकर लक्ष्मण को दोष देना (सर्ग ५७-५६)। शून्य कुटी देखकर राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना। गोदावरी तट पर खोज। पुष्प तथा आभूषणो का मिलना, जटायु-युद्ध के चिह्न दिखाई देना (सर्ग ६०-६४), लक्ष्मण की सान्त्वना (सर्ग ६५-६६)।

जटायु—मरण के पूर्व जटायु का रावण द्वारा सीता-हरण तथा दक्षिण की ओर प्रस्थान का उल्लेख (सर्ग ६७-६८)।

कबंध—लक्ष्मण का अयोमुखी को विरूप करना। कवध का वाहुविच्छेद, उसके विषय मे स्थूलशिर तथा इन्द्र के शाप का उल्लेख, चिता के प्रज्वलित होने पर कवध का दिव्य रूप मे सुग्रीव के पास जाने की मन्त्रणा देना (सर्ग ६९-७३)।

शवरी—पम्पासर स्थित आश्रम मे शवरी का स्वागत और उसका स्वर्गारोहण। पपा-वर्णन और राम का विलाप (सर्ग ७४-७५)।

ख । अरण्यकाड का विश्लेषण

तीनो पाठों में विभिन्नता

४५६ दाक्षिणात्य पाठ के कई पूरे सर्ग अन्य पाठो मे नही मिलते है ।

सर्ग ३१ अकपन रावण के पास जाकर राम द्वारा खर के वध का समाचार सुनाता है, और सीता के सौंदर्य की प्रशसा कर उनको हर लेने का परामर्श देता है । इसपर रावण मारीच के पास जाकर उससे सहायता माँगता है, लेकिन मारीच राम की वीरता का वर्णन कर रावण को सीताहरण करने से रोकता है । यह सर्ग न तो गौडीय पाठ मे मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे, इन दोनो मे शूर्पणखा पहले-पहल रावण को खरवध का समाचार सुनाती है ।

सर्ग ६० सीता की खोज करते हुए राम वृक्षो तथा पशुओ को सम्बोधित करते है । यह सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलता ।

सर्ग ६२ और ६३. इन दो सर्गो मे राम-विलाप तथा सर्ग ६० की पुनरावृत्ति मात्र मिलती है । दोनो सर्ग केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाये जाते है ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण द्वारा राक्षसी अयोमुखी के वध का जो वृत्तान्त दिया गया है (दे० सर्ग ६६, ११-१८) वह अन्य पाठो मे नही मिलता है । दाक्षिणात्य पाठ मे सर्ग ५६ के पश्चात् एक प्रक्षिप्त सर्ग मिलता है, जिसमे इन्द्र द्वारा सीता के पास पायस ले आने का वर्णन किया गया है । यह सर्ग अन्य पाठो मे प्रक्षिप्त नही माना गया है (दे० आगे अनु० ५००) । तीनो पाठो की शेष विभिन्नताएँ गौण है ।

प्रक्षेप

४५७ एच० याकोबी का अनुमान है कि आदिरामायण मे चित्रकूट से प्रस्थान करने के बाद अरण्यकाड के ग्यारहवे सर्ग का प्रारम्भ (श्लोक १-५) मिलता था :

अग्रतः प्रययौ राम- सीता मध्ये सुशोभना ।
पृष्ठतस्तु धनुष्पाणिर्लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ॥ १ ॥

अनन्तर पचवटी मे आगमन का वर्णन था (सर्ग १५) । इसके अनुसार **विराध-वध, शरभंग-सुतीक्ष्ण-अगस्त्य** के आश्रमो मे गमन तथा सीताहरण से पहले **जटायु से भेंट,** ये सब वृत्तान्त वाल्मीकिकृत काव्य मे नही पाए जाते थे । इनका आधिकारिक कथावस्तु के दृष्टिकोण से कोई महत्त्व भी नही है । भरत के प्रस्थान के पश्चात् शूर्पणखा के आगमन तक की ११-१२ वर्ष की अवधि का कुछ वर्णन करने के उद्देश्य से उपर्युक्त वृत्तान्त यहाँ रखे गए होंगे । एच० याकोबी का यह अनुमान न्यायसगत प्रतीत होता है । वास्तव मे अनेक ऐसी रामकथाएँ भी मिलती है, जिनमे राम केवल सीताहरण के पश्चात् जटायु से मिलते है तथा रामायण से भी ऐसी ही ध्वनि निकलती है (दे० आगे अनु० ४७०) ।

इसके अतिरिक्त परस्पर विरोधी बातो से पता चलता है कि अरण्यकाड का मूलरूप हमारे सामने नही है। सीता-रावण-सवाद मे सीता अपनी कथा सुनाती हुई कहती हैं, कि मैंने १२ वर्ष अयोध्या मे बिताये है, और राम के निर्वासन के समय मेरी अवस्था १८ वर्ष की थी। इसके अनुसार विवाह के समय सीता की अवस्था ६ वर्ष की थी (सर्ग ४७)। किन्तु रामायण के कई अन्य स्थलो पर विवाह के समय सीता के उस समय 'पतिसयोगसुलभ' वयस का उल्लेख किया गया है।

जटायु राम से स्पष्ट शब्दो मे कहता है कि रावण ने सीता का अपहरण किया है (सर्ग ६८), लेकिन आगे चलकर राम सीता के अपहर्ता के नाम से अनभिज्ञ है।

अधिक सभव है कि अरण्यकाण्ड के दो महत्वपूर्ण वृत्तान्त आदिरामायण मे विद्यमान नही थे, अर्थात् शूर्पणखा का विरूपण (दे० आगे अनु० ४८३) तथा कनकमृग (दे० अनु० ४६०)।

२—अरण्यकाड का विकास

४५८ अरण्यकाड की मुख्य कथा-वस्तु सीताहरण है, इसके विकास की रूप-रेखा अगले परिच्छेद मे प्रस्तुत की जायेगी। शेष सामग्री मे कोई विशेष परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन नही किया गया है। वाल्मीकि के कथानक के क्रमानुसार कुछ गौण बातो की ओर निर्देश करना है।

क। दण्डकारण्य-प्रवेश (सर्ग १-१६)

पहले परिच्छेद मे इसका उल्लेख किया गया है कि इस अश की अधिकाश सामग्री सभवत वाल्मीकिकृत रचना मे नही पाई जाती थी।

दाक्षिणात्य पाठ में **विराध** के वध के बाद उसके दिव्य रूप धारण करने का उल्लेख नही किया गया है। यह प्रसग गौडीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० गौ० रा० ३, ८, प० रा० ३, ५) मे तथा आगे चलकर भी प्रायः सब रामकथाओ मे मिलता है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण मे विराध राम से भक्ति की याचना करता है (दे० ३, १, ३६)। वाल्मीकि रामायण (३, ४, १६) मे वह एक तुम्बुरु नामक गन्धर्व है जो रभा के कारण कुवेर का शापभाजन बन गया था। अध्यात्म रामायण (३, १, ३८) तथा आनन्द रामायण (१, ७, १६) इसको दुर्वासा द्वारा शापित विद्याधर मानते है। **रंगनाथ रामायण** (दे० ३,३) मे वह अपना परिचय देते हुए कहता है कि मेरी माता शतह्रद और मेरे पिता जय हैं।

हिन्देशिया के **सेरीराम** मे विराध के स्थान पर एक 'पुर्वा ईता' नामक राक्षस की चर्चा है जो रावण का कृपापात्र बनने के उद्देश्य से सीता का हरण करने का निष्फल प्रयत्न करता है। **जैनी रामायणों** मे **विराधित** नामक विद्याधर को पर्याप्त महत्व दिया गया

ख । अरण्यकाड का विश्लेषण

तीनो पाठो मे विभिन्नता

४५६ दाक्षिणात्य पाठ के कई पूरे सर्ग अन्य पाठो मे नही मिलते है ।

सर्ग ३१ अकपन रावण के पास जाकर राम द्वारा खर के वध का समाचार सुनाता है, और सीता के सौदर्य की प्रशसा कर उनको हर लेने का परामर्श देता है । इसपर रावण मारीच के पास जाकर उससे सहायता माँगता है, लेकिन मारीच राम की वीरता का वर्णन कर रावण को सीताहरण करने से रोकता है । यह सर्ग न तो गौडीय पाठ मे मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ मे, इन दोनो मे शूर्पणखा पहले-पहल रावण को खरवध का समाचार सुनाती है ।

सर्ग ६० सीता की खोज करते हुए राम वृक्षो तथा पशुओ को सम्बोधित करते है । यह सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलता ।

सर्ग ६२ और ६३. इन दो सर्गों मे राम-विलाप तथा सर्ग ६० की पुनरावृत्ति मात्र मिलती है । दोनो सर्ग केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाये जाते है ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ मे लक्ष्मण द्वारा राक्षसी अयोमुखी के वध का जो वृत्तान्त दिया गया है (दे० सर्ग ६६, ११-१८) वह अन्य पाठो मे नही मिलता है । दाक्षिणात्य पाठ मे सर्ग ५६ के पश्चात् एक प्रक्षिप्त सर्ग मिलता है, जिसमे इन्द्र द्वारा सीता के पास पायस ले आने का वर्णन किया गया है । यह सर्ग अन्य पाठो मे प्रक्षिप्त नही माना गया है (दे० आगे अनु० ५००) । तीनो पाठो की शेष विभिन्नताएँ गौण है ।

प्रक्षेप

४५७ एच० याकोवी का अनुमान है कि आदिरामायण मे चित्रकूट से प्रस्थान करने के बाद अरण्यकाड के ग्यारहवे सर्ग का प्रारम्भ (श्लोक १-५) मिलता था :

अग्रतः प्रययौ रामः सीता मध्ये सुशोभना ।
पृष्ठतस्तु धनुष्पाणिर्लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ॥ १ ॥

अनन्तर पचवटी मे आगमन का वर्णन था (सर्ग १५) । इसके अनुसार **विराध-वध, शरभंग-सुतीक्ष्ण-अगस्त्य** के आश्रमो मे गमन तथा सीताहरण से पहले **जटायु से भेंट,** ये सब वृत्तान्त वाल्मीकिकृत काव्य मे नही पाए जाते थे । इनका आधिकारिक कथावस्तु के दृष्टिकोण से कोई महत्त्व भी नही है । भरत के प्रस्थान के पश्चात् शूर्पणखा के आगमन तक की ११-१२ वर्ष की अवधि का कुछ वर्णन करने के उद्देश्य से उपर्युक्त वृत्तान्त यहाँ रखे गए होंगे । एच० याकोवी का यह अनुमान न्यायसगत प्रतीत होता है । वास्तव मे अनेक ऐसी रामकथाएँ भी मिलती है, जिनमे राम केवल सीताहरण के पश्चात् जटायु से मिलते हैं तथा रामायण से भी ऐसी ही ध्वनि निकलती है (दे० आगे अनु० ४७०) ।

कृत्तिवास रामायण के उत्तरकाण्ड मे प्रस्तुत प्रसग का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० ७, २)। अगस्त्य राम से कहते हैं कि इन्द्रजित् के समान त्रिभुवन मे कोई भी वीर नही था, वही उसका वध करने मे समर्थ था, जिसने चौदह वर्ष तक निद्रा और आहार छोड दिया हो तथा उस अवधि मे स्त्री का मुख भी नही देखा हो। यह सुनकर राम को आश्चर्य होता है और वह लक्ष्मण को बुला भेजते है। अगस्त्य का कथन सुनकर लक्ष्मण स्वीकार करते है कि मुझ मे ये शर्ते विद्यमान थी। श्रीचरणो को छोडकर मैंने सीता की ओर दृष्टिपात नही किया था और इसलिए मैं नूपुरो के अतिरिक्त उनके आभरणो को पहचानने मे असमर्थ था (दे० अगला अनु०)। आपकी और माता जानकी की रखवाली करते समय जब निद्रा पहले-पहल मेरी आँखो पर छा जाना चाहती थी तब मैंने क्रोध करके उसे बाण से छेदित किया तथा १४ वर्ष तक मेरे पास न आने का उसे आदेश दिया। फल देते समय आपने खाने की आज्ञा नही दी थी, सो मैं अपना अश झोपडी मे रख कर उपवास करता रहा। इस पर हनुमान् को फल ले आने के लिए भेजा जाता है, वह फलो से भरा हुआ तरकश देखते तो है किन्तु अहकार हो जाने के कारण वह उसे उठाने मे असमर्थ हैं। बाद मे लक्ष्मण जाते हैं और बाये हाथ से तरकश धारण कर उसे राम के सामने रख देते है। गिनने पर पता चलता है कि सात दिन के फल नही हैं किन्तु लक्ष्मण अपनी सफाई देते हुए राम को स्मरण दिलाते हैं कि किस-किस दिन वे फल बटोरने नही गये थे। अन्त मे लक्ष्मण विश्वामित्र की मन्त्रदीक्षा का उल्लेख करते हैं जिसके बल पर वह चौदह वर्ष तक अन्न का त्याग कर सके।[1]

इस वृत्तान्त मे लक्ष्मण के उपवास का जो कारण दिया गया है वह गौण परिवर्तनो के साथ अन्यत्र भी मिलता है। विर्होर रामकथा के अनुसार लक्ष्मण को अन्न देते समय सीता कहती थी—"लो, यह तुम्हारा हिस्सा है।" वह इसे खाने के लिए नही कहती, इसीलिए लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते रहे। तोरवे रामायण (६, ४५) मे भी लक्ष्मण के १४ वर्ष के उपवास, ब्रह्मचर्य तथा जागरण का उल्लेख किया गया है।

कम्ब रामायण तथा द्विपद रामायण मे लक्ष्मण के जागरण की कथा मे निद्रा देवी का मानवीकरण किया गया है। कम्ब रामायण (२, ६, ५१) के अनुसार लक्ष्मण शृंगवेरपुर मे राम की रक्षा करते हुए रात भर जागते रहे। निद्रा देवी उनके सामने प्रकट हुई और लक्ष्मण ने उनसे कहा—जब हम अयोध्या लौटकर आयेंगे, तब तुम मेरे पास आना। उसपर निद्रा देवी लक्ष्मण को प्रणाम करके चली गई। द्विपद रामायण के दो स्थलों पर इस प्रसग का उल्लेख मिलता है। कम्ब रामायण

१ कृत्तिवास ने बालकाण्ड मे भी लिखा था कि इस मन्त्रदीक्षा के फलस्वरूप लक्ष्मण उपवास कर सकेंगे तथा इन्द्रजित् का वध करेंगे (दे० १, ५७)।

है। वह खरदूषण की सेना हराने में लक्ष्मण की सहायता करता है; उसके सेवक सीता की खोज करते हैं तथा लंका के युद्ध में उसकी सेना भी राम का साथ देती है (दे० पउमचरियं पर्व ४५ तथा ५८, ३६)। हेमचन्द्र (६, ५५) उसे विराध ही कहकर पुकारता है; पउमचरियं (६. २२) के अनुसार वह चन्द्रोदर तथा अनुराधा का पुत्र है।

४५३. राम के भिन्न-भिन्न आश्रमों में जाकर तपस्वियों से मिलने के वृत्तान्तों का इतना ही विकास हुआ है कि वाल्मीकि रामायण में राम का सत्कार केवल अतिथि के रूप में किया जाता है, लेकिन अर्वाचीन रचनाओं में विष्णु के रूप में राम की स्तुति की जाती है। इस प्रकार के विकास के दो उदाहरण यहाँ पर्याप्त होंगे। शरभंग के आश्रम के निकट पहुँचकर राम, सीता और लक्ष्मण इन्द्र का रथ स्वर्ग की ओर प्रस्थान करते हुये देखते हैं। उस समय इन्द्र शरभंग से यह कहकर चले जा रहे थे कि राम (रावण पर) विजय पाने के बाद ही मुझे देखने के योग्य बनेंगे।[1] अनन्तर रामादि आश्रम में प्रवेश कर शरभंग के पैरों का स्पर्श करते हैं:

> तस्य पादौ च संगृह्य रामः सीता च लक्ष्मणः।
> निषेदुस्तदनुज्ञाता लब्धवासा निमंत्रिताः ॥२६॥

राम के प्रश्न का उत्तर देते हुये शरभंग कहते हैं कि इन्द्र मुझे ब्रह्मलोक ले जाने के लिए आए थे किन्तु आप जैसे प्रिय अतिथि को देखे बिना मैं ब्रह्मलोक नहीं जाना चाहता था:

> अहं ज्ञात्वा नरव्याघ्र वर्तमानमदूरतः।
> ब्रह्मलोकं न गच्छामि त्वामदृष्ट्वा प्रियातिथिम् ॥२९॥

कंब रामायण (३, २) के अनुसार इंद्र शरभंग को ब्रह्मलोक ले जाने के लिए उनके आश्रम आए थे किंतु शरभंग मोक्ष ही चाहते थे और इसीलिए उन्होंने इंद्र के साथ जाना अस्वीकार किया। राम को आते देखकर इंद्र ने परब्रह्म तथा विष्णु अवतार के रूप में राम की स्तुति की और अनन्तर वे स्वर्ग सिधारे। राम, लक्ष्मण तथा सीता का स्वागत करने के पश्चात् शरभंग ने चिता जलाई तथा उसमें अपनी स्त्री के साथ प्रवेश कर मोक्ष प्राप्त कर लिया।

अध्यात्म रामायण में शरभंग राम को देखकर सहसा उठ खड़े हुए (संभ्रमादुत्थितः दे० ३, २, २) और आगे बढ़कर उन्होंने उनकी भली भाँति पूजा की। राम ने

---

1. दे० ३, ५, २२-२३। रंगनाथ रामायण (३, ४) में इसके विरुद्ध यह लिखा है—"इंद्र भी बहुत दुःखी होकर, भगवान के निकट आकर न देख सकने के कारण वहाँ से चले गये हैं।"

१२ वर्ष तक राम तथा सीता को नही देखा था। अन्त मे वह जैवपुर मे दोनो से मिलने जाते है। सीता उनसे कहती है कि "स्वप्न मे मैंने तुमको कलसापुर के राजा के साथ युद्ध करते देखा और उसमे तुम्हारी जीत हुई थी।" लक्ष्मण इस स्वप्न के सत्य की परीक्षा लेने के लिए कलसापुर की ओर प्रस्थान करते है। सीता सोचती है कि मैंने लक्ष्मण को मृत्यु की जोखिम मे डाल दिया है। वह महल छोडकर लक्ष्मण को रोकने का प्रयत्न करने जाती हैं। वह क्रमश लोमडी, अजीर का पेड तथा जलस्रोत बन जाती हैं और लक्ष्मण का स्पर्श पाकर अपना ही रूप धारण कर लेती हैं तथा लक्ष्मण की परीक्षा लेती है। लक्ष्मण उनकी ओर ध्यान न देकर कलसापुर की ओर आगे बढते है और सीता निराश होकर घर जाती है। बाद मे सीता स्वप्न मे देखती है कि कलसापुर मे लक्ष्मण का वध हुआ, सीता से यह जान कर राम वहाँ जाते है तथा लक्ष्मण को जिलाते है।

ग। शूर्पणखा

४६३. शूर्पणखा के विषय मे वाल्मीकीय उत्तरकाड मे लिखा है कि रावण ने कालकेन्द्र दानवेंद्र विद्युज्जिह्व के साथ अपनी बहन शूर्पणखा का विवाह कराया था (दे० ७, १२, २)। बाद मे रावण रसातल की दिग्विजय के अवसर पर अश्मनगर मे विद्युज्जिह्व[1] की सेना हराकर अपने बहनोई का भी वध करता है (दे० ७, २३, १७-१८)। शूर्पणखा लका पहुँचकर रावण की भर्त्सना करती है तथा रावण उसको दण्डकारण्य मे भेज देता है, जहाँ वह खर को १४००० राक्षसो का नायक नियुक्त करता है (दे० ७, सर्ग २४)। इस वृत्तान्त मे खर को शूर्पणखा का मौसेरा भाई (मातृष्वसेय, श्लोक ३७) माना गया है तथा दूषण को खर का सेनापति। अयोध्याकाड मे खर को रावण का अनुज (**रावणावरजः** २, ११६, ११) कहा गया है तथा अरण्यकाण्ड मे भी खर-शूर्पणखा का सम्बन्ध भ्राता-भगिनी का है (दे० १८, २५, १६, १ और २३, २०, २५, २२, ६ और २३)। शूर्पणखा एक अन्य स्थल पर खर और दूषण दोनो को अपना भाई मानती है (**भ्रातरौ खरदूषणौ;** ३, १७, २३)। अन्यत्र दूषण को खर का सेनापति माना है (३, २२, ७)। सारलादास के महाभारत मे शूर्पणखा के पति का नाम केशी है।

सेरी राम मे विद्युज्जिह्व का नाम वर्गासीगा है। किसी यात्रा से लौटकर रावण लका को चारो ओर से बर्गासीगा की जीभ[2] से घिरा हुआ पाता है, जिससे वह शहर

---

१. विद्युज्जिह्व नामक राक्षस की चर्चा युद्ध काण्ड मे भी मिलती है। दे० अनु० ५८३।

२ बहुत सभव है कि यह प्रसग उत्तरकाण्ड के इस अर्धश्लोक पर निर्भर है जिसमे कहा गया है कि जब रावण ने विद्युज्जिह्व को मारा था, तो उस

की कथा के अनुसार शृंगवेरपुर मे निद्रा देवी लक्ष्मण से मिलने आई थी और इसी अवसर पर लक्ष्मण ने उनसे कहा—"तुम दिन रात ऊर्मिला को अपनी शरण लो। (१४ वर्ष की) अवधि समाप्त होने पर मैं तुमको फिर ग्रहण करूँगा" (२, १८)। परिणाम यह हुआ कि लक्ष्मण के लौटने तक ऊर्मिला सोती ही रही। अयोध्या मे राम के राजतिलक के पश्चात् राजसभा के वर्णन के अन्तर्गत निद्रादेवी के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है (६, १६८)। उस समय निद्रा देवी लक्ष्मण को अपने वश मे कर लेने का उपक्रम करने लगी। लक्ष्मण यह देखकर अचानक सभा मे जोर से हँसने लगे। सभासदो ने लक्ष्मण का व्यवहार अपमान-जनक समझा और राम ने लक्ष्मण से हँसी का कारण पूछा। इसपर लक्ष्मण ने कहा—"वन मे निद्रा मुझपर प्रभाव डालने आई थी। मैंने उनसे कहा कि तुम चौदह वर्ष मुझ से दूर रहो। मेरी बाते सुनकर वह चली गई। अब वह फिर मेरे पास आई। यह देखकर मुझे हँसी आई।" लक्ष्मण का यह स्पष्टीकरण सुनकर सबो की शका दूर हुई।[1] रामकेर्ति मे 'निंद्रा' नामक लक्ष्मण की एक हितैषिणी की चर्चा है जो उसे नीद देने आया करती थी। गुह के मिलन के बाद वन मे प्रवेश करने के पूर्व लक्ष्मण ने इसे बुलाकर कहा—"आज से लेकर १४ वर्ष तक तुम्हे मुझे नीद नही दिलानी चाहिए। इस अवधि मे मैं भोजन भी नही करूँगा अतः तुम क्षुधा को मुझसे दूर हटाकर मुझे स्वस्थ और सबल बनाए रखो।" निंद्रा ने ऐसा करने की प्रतिज्ञा की थी (सर्ग १)। उसी रचना मे इसका भी वर्णन किया गया है कि सीताहरण के पूर्व लक्ष्मण राम की आज्ञा लेकर अकेले ही तपस्या करने गये थे (सर्ग ३)। सेरीराम मे लक्ष्मण के सयम की कथा इस प्रकार है। सीताहरण के पश्चात् राम मूर्च्छित होकर सीता के पलक पर गिर जाते हैं। लक्ष्मण चालीस दिन तक निद्रा, अन्न तथा स्त्री-प्रसग का त्याग करते हुए राम का सिर गोद मे लेकर निश्चल बैठे रहते हैं। एक आकाशवाणी लक्ष्मण के इस सयम की प्रशसा करती है तथा यह भी प्रकट करती है कि राम-सीता-वियोग १२ वर्ष के बाद समाप्त होगा।

४६२. वाल्मीकि के आदिकाव्य मे सीता-लक्ष्मण के संबंध का कोई विशेष ध्यान नही रखा गया था। लक्ष्मण राम तथा सीता, दोनो की सेवा करते हुए सीता के साथ निस्सकोच बातचीत तथा व्यवहार करते थे। एक स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि लक्ष्मण ने राम तथा सीता के पैर धोये थे (दे० २, ५०, ४६)। गगा पार

---

१. दे० चा० सूर्यनारायण मूर्त्ति, ऊर्मिला की नीद। हिन्दी अनुशीलन, वर्ष ११, अक २, पृ० ३७। उस लेख मे एक तेलुगु लोकगीत का विश्लेषण किया गया है। कथावस्तु द्विपद रामायण पर आधारित है।

शब्दो मे उल्लेख मिलता है कि राम के पास जाने के पूर्व शूर्पणखा ने मोहक रूप धारण कर लिया था (दे० ३, २३, १८-२५)। बहुत सी परवर्ती रचनाओ मे भी ऐसा कहा गया है।

निम्नलिखित रचनाओ मे राम द्वारा शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख मिलता है—भागवत पुराण (६, १०, ६), गरुड पुराण (अध्याय १४३), पद्मपुराण (पाताल खण्ड, अध्याय ३६, उत्तर खण्ड, अध्याय २६६), देवी भागवत पुराण (३, २८)। नृसिंह पुराण (अध्याय ४६) मे पहले-पहल राम के एक पत्र की चर्चा है। उस रचना मे शूर्पणखा राम को प्रलोभन देती हुई कहती है—अतीव निपुणा चाहं रतिकर्मणि।[1] राम द्वारा ठुकराए जाने तथा लक्ष्मण के पास भेजे जाने पर वह लक्ष्मण के नाम पत्र माँगती है, राम उस पत्र मे उसकी नासिका काटने का आदेश देते हैं। भावार्थ रामायण (३, ८), सेरी राम तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ (अध्याय ४) मे भी राम के पत्र का उल्लेख मिलता है। सेरी राम के अनुसार सूरापदाकी (शूर्पणखा) अनुमान करती है कि लक्ष्मण ने उसके पुत्र का वध किया था, वह अपने रिश्तेदार राक्षस राजा दर-कालहसीन (खरदूषण) के पास जाकर कहती है कि मैंने लक्ष्मण का प्रेमप्रस्ताव अस्वीकार किया था, इसीलिए उसने मेरे पुत्र का वध किया है। मन्त्री के परामर्श के अनुसार सूरापदाकी सुन्दर रूप धारण कर राम को आकर्षित करने का प्रयत्न करती है, राम उसे साधना मे लीन लक्ष्मण के पास भेजते है, किन्तु लक्ष्मण उसकी ओर दृष्टिपात भी नही करते। राम के पास लौटकर सूरापदाकी राम तथा सीता का अपमान करती है। तब राम उसकी पीठ पर पत्र लिखकर उसे लक्ष्मण के पास लौटने को कहते है। पत्र मे लिखा है कि लक्ष्मण उसकी नाक तथा हाथ काट दे। लक्ष्मण ऐसा ही करना चाहते है कि वह अपना राक्षसी रूप धारण कर लक्ष्मण को आकाश मे ले जाती है। लक्ष्मण राम की आज्ञा पूरी करके राक्षसी के साथ भूमि पर गिर जाते हैं, किन्तु देवताओ की रक्षा के फलस्वरूप चोट से बच जाते है।

शूर्पणखा के विरूपीकरण के विषय मे अन्य गौण विभिन्नताएँ भी पायी जाती हैं। भट्टि काव्य (४, ३१), महानाटक (मधुसूदन के सस्करण ३, ५३), चम्पू रामायण (३, १६), बालरामायण (५,७८) तथा प्रसन्नराघव (५, ३४) के अनुसार लक्ष्मण उसकी नाक मात्र काटते है किन्तु महावीर चरित (५, १२), अनर्घराघव (५, ५) तथा उदारराघव (६, १०६) मे लक्ष्मण कान तथा नाक के अतिरिक्त उसके होठ भी काटते है। कई रामकथाओ के अनुसार लक्ष्मण ने शूर्पणखा के स्तन भी काट दिये थे,

---

१. बलरामदास रामायण मे भी शूर्पणखा अपनी इस निपुणता का उल्लेख करती है।

की रक्षा करता है, अतः रावण अपनी तलवार से उसे काट कर अनजाने अपने बहनोई का वध करता है। उस समय मूरा पदाकी (शूर्पणखा) गर्भवती थी, बाद में वह दर्मासीगा को प्रसव करती है जो अपने पिता की हत्या का प्रतिकार लेने की शक्ति प्राप्त करने के लिए तपस्या करने जाता है। शूर्पणखा के इस पुत्र की कथा पउमचरियं पर आधारित है। इस रचना के अनुसार खरदूषण एक विद्याधर-वंशी राजकुमार है जिसका विवाह चन्द्रनखा (शूर्पणखा) के साथ हुआ है, उनका पुत्र शम्बूक लक्ष्मण द्वारा वध किया जाता है (दे० अनु० ६३१-६३२)।

सेरी राम की राफल्स हस्तलिपि में लक्ष्मण शूर्पणखा के पुत्र का वध करने के बाद उसके साथ विवाह करते है (दे० ऊपर अनु० ३१९)। इस कल्पना का आधार भारतीय कथाओं में देखा जा सकता है। **पउमचरियं** के अनुसार लक्ष्मण चन्द्रनखा का रूप देखकर अनुरक्त हुए थे और उन्होंने किसी बहाने से राम को छोड़कर वन में उसकी खोज की थी, किन्तु उसे न पाकर लौटे (दे० ४३, ४८)। **पद्मचरित** में लक्ष्मण के इस विरह तथा खोज का उल्लेख मिलता है—**पुनरालोकनाकांक्षी विरहादाकुलोऽभवत् ॥ अटवीं पादपद्माभ्यां बभ्रामान्वेषणातुरः** (दे० ४३, ११४-११५)। **उदारराघव** (६, ६६) में लक्ष्मण शूर्पणखा से कहते है कि यदि तुम सचमुच चाहती हो, तो चौदह वर्ष के बाद अयोध्या आओ और मैं स्वजनों की आज्ञा लेकर तुम से विवाह करूँगा। **आश्चर्यचूडामणि** (१, ६) में भी लक्ष्मण शूर्पणखा का सौन्दर्य देख कर विकारग्रस्त हो जाते है। **सारलादास** के महाभारत (वनपर्व) में सीता सखी पाने की इच्छा से चाहती है कि लक्ष्मण शूर्पणखा से विवाह करें और राम भी इसके लिए अनुरोध करते हैं, किन्तु लक्ष्मण अस्वीकार करते है। बाद में वह उसके कान और नाक काटते है।

४६४. शूर्पणखा के इस **विरूपीकरण** की कथा का अधिक विकास नहीं हुआ है। इसकी प्रामाणिकता के विषय में आगे विचार किया जायेगा (दे० अनु० ४८३)। **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार शूर्पणखा राम के पास आकर प्रस्ताव करती है कि वह सीता तथा लक्ष्मण का भक्षण करके उनकी पत्नी बन जाये (सर्ग १७)। राम उसको अविवाहित लक्ष्मण के पास भेज देते है, किन्तु लक्ष्मण आपत्ति करते है कि मैं राम का दास हूँ और उसको राम के पास वापस भेजते है। राम की अस्वीकृति सुनकर शूर्पणखा सीता पर आक्रमण करने पर है, किन्तु राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तलवार से उसके कान और नाक काटते है (सर्ग १८)। दाक्षिणात्य पाठ में राम के सौन्दर्य तथा शूर्पणखा की कुरूपता को विशेष महत्त्व दिया गया है, गौडीय पाठ में इसका स्पष्ट

समय विद्युज्जिह्व एक राक्षस को जीभ से चाट रहा था—**जिह्वया संलिहन्तं च राक्षसं समरे तदा** (७, २३, २८)।

ने सोते हुये जटायु को जगाकर उसको राम तथा लक्ष्मण के लिए एक सन्देश दिया था (दे० ४६, ३६-४०)। वास्तव मे आदि रामायण मे राम केवल सीताहरण के वाद ही जटायु से मिले थे। उपर्युक्त पाठ-वैभिन्य के अतिरिक्त इसका प्रमाण यह है कि सीता की खोज करते समय राम जटायु को देखकर उसे गृध्र का रूप धारण करने वाला कोई राक्षस समझते है जिसने सीता का भक्षण किया है :

> अनेन सीता वैदेही भक्षिता नात्र संशयः।
> गृध्ररूपमिदं व्यक्तं रक्षो भ्रमति काननम् ॥११॥ (सर्ग ६७)

महाभारत (३, २६३), **भट्टिकाव्य** (सर्ग ५), **रामायण ककविन** (सर्ग ५) और **उदारराघव** (सर्ग ८) के अनुसार भी सीताहरण के पश्चात् ही जटायु का उल्लेख किया गया है।

रावण-जटायु-युद्ध के वर्णन मे वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे कोई उल्लेखनीय अन्तर नही मिलता। जटायु रावण को देखकर सीताहरण के कारण उसकी निन्दा करता है तथा युद्ध के लिए चुनौती देता है (सर्ग ५०)। इस युद्ध मे जटायु अपने नखो से रावण को आहत करता है तथा उसके दो धनुप छीन कर नष्ट करता है। वह रथ के खरो का वध करके रथ तोड देता है, रथ मे वैठे हुए राक्षसो को गिरा देता है तथा सारथि को भी मार डालता है जिससे रावण सीता के साथ भूमि पर गिर जाता है :

> स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
> अङ्केनादाय वैदेही पपात भुवि रावणः ॥१६॥ (सर्ग ५१)

अव रावण के पास केवल उसकी तलवार रह गई है। वह फिर उठकर आकाश मे सीता को ले जाता है। जटायु उसकी वाई भुजाओ को काट लेता है किन्तु वे फिर उत्पन्न हो जाती हैं। अन्त मे रावण सीता को छोड देता है तथा जटायु के अग काट कर भूमि पर गिरा देता है : **पक्षौ पादौ च पार्श्वौ च खगमुद्धृत्य सोऽच्छिनत्** (५१, ४२)। सीता जटायु के पास जाकर विलाप करती है किन्तु रावण उन्हे केशो से पकड कर (**केशेषु जग्राह**; सर्ग ५२, ८) आकाश के मार्ग से लका की ओर प्रस्थान करता है। अर्वाचीन रामकथाओ मे इस युद्ध के वर्णन मे गौण परिवर्द्धन किए गए है।

काश्मीरी रामायण मे सीता यह देखकर कि रावण जटायु को खग से मारनेवाला है, रावण से कहती है—'उसे रक्त से सने पत्थर खिलाइए, वह उन्हे खाकर गिर जाएगा।' रावण ऐसा ही करता है और जटायु पृथ्वी पर गिर पडता है। इससे मिलते-जुलते अनेक वृत्तान्त पाये जाते है। **खोतानी** तथा **तिब्बती** रामायणो मे रावण जटायु को रक्त से सने धातुओं के टुकडे खिलाकर उसे मार डालता है। दक्षिण भारत की एक रामकथा मे रावण जटायु को अपनी जाँघ के रक्त से सना पत्थर खिलाता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)।

उदाहरणार्थ कंब रामायण (३, ५), आनन्द रामायण (१, ७, ५५), वासुदेव कृत राम-कथा तथा मलयालम अध्यात्म रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त १ और २०। सेरी राम की भाँति पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे भी शूर्पणखा के लक्ष्मण को ऊपर उठाने का उल्लेख है; उस वृत्तान्त मे लक्ष्मण नाक और कान के अतिरिक्त उसके स्तन तथा उसके बाल भी काट लेते है तथा यह भी लिखा है कि उसके स्तनो के रक्त से जोके उत्पन्न हुई थी (दे० पृ० ८०)। रामकियेन (अध्याय १०) के अनुसार लक्ष्मण ने उसके कान, नाक, हाथ और पैर भी काट दिए थे।

बालरामायण (अक ५) के अनुसार शूर्पणखा वनवास के पूर्व ही अयोध्या के निकट राम तथा लक्ष्मण द्वारा ठुकरायी तथा विरूपित की गई थी। वह रावण के पास जाकर कहती है कि मैंने सीता को आपके योग्य समझकर उनका अपहरण करना चाहा जिससे राम-लक्ष्मण ने मेरी यह दुर्गति कर दी है। इस पर रावण उत्तर देता है :

दाशरथिविनाशाय कारणद्वयी सम्पन्ना सीता शूर्पणखा च।

४६५ जैनी रामायणो मे लक्ष्मण अथवा राम द्वारा शूर्पणखा के विरूपण की कथा नही मिलती, गुणभद्र के उत्तरपुराण मे इसका नितान्त अभाव है, किन्तु पउमचरियं (पर्व ४४) मे इस विरूपण की प्रतिध्वनि अवश्य विद्यमान है। चन्द्रनखा अपने पुत्र शम्बूक (दे० अनु० ६३१) के लिए विलाप करती हुई वन मे घूमती थी। राम तथा लक्ष्मण को देखकर वह मोहित हुई तथा दोनो द्वारा ठुकराये जाने पर वह अपने महल लौटी। वह अपने नाखूनो से अपना शरीर विक्षत कर, अपने बाल बिखेर कर तथा धूल से धूसरित होकर अपने भवन मे विलाप करने लगी। उसके पति खरदूषण के पूछने पर उसने शम्वूक-वध का समाचार सुनाया तथा यह भी कहा कि शम्बूक के हत्यारे ने मेरा आलिंगन किया तथा मुझसे बलात्कार करना चाहा किंतु मैं किसी न किसी तरह से अपने को छुडाने मे समर्थ हुई।

ब्रह्मचक्र के अनुसार शूर्पणखा अपनी दो पुत्रियो के साथ लका-किष्किन्धा के सीमान्तो की रखवाली करती थी। किसी दिन वे राम-सीता-लक्ष्मण को देखकर उन पर आक्रमण करती है। लक्ष्मण शूर्पणखा की दोनो पुत्रियो को मार डालते हैं तथा राम शूर्पणखा को भाग जाने के लिए बाध्य करते हैं।

४६६. वाल्मीकि रामायण के अनुसार शूर्पणखा, विरूपित हो जाने के बाद, जनस्थान मे अपने भाई खर के पास पहुँचकर विलाप करती है। खर राम-लक्ष्मण का वध करने के लिए शूर्पणखा के साथ १४ राक्षसो को भेज देता है। राम सबो को मार डालते हैं तथ शूर्पणखा खर के पास लौटती है (दे० सर्ग १६-२१)। खर अब अपने सेनापति दूषण को १४००० राक्षसो को एकत्र करने का आदेश देकर उन सबो के साथ राम के पास जाता है। राक्षसो की सेना आते देखकर राम आदेश देते हैं कि सीता तथा

सीताहरण का समाचार अपने सखा दशरथ के पास भेज दिया, जिसे सुनकर दशरथ ने आत्महत्या करने का विचार प्रकट किया।

वाल्मीकि रामायण मे राम मृत जटायु के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए कहते हैं—**मया त्वं समनुज्ञातो गच्छ लोकाननुत्तमान्** (६८, ३०)। परवर्ती रचनाओं मे जटायु के दिव्य रूप धारण कर राम की स्तुति गाने तथा स्वर्ग लोक के लिए प्रस्थान करने का उल्लेख मिलता है (दे० अध्यात्म रामायण ३, ८)।

पउमचरियं के अनुसार जटायु अपने अपवित्र शरीर का परित्याग करके पुण्यो-दय के कारण देवता बन गया (**सुरो जाओ**, ४४, ५५)।

४७२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार जटायु दशरथ का सखा तथा सम्पाति का भाई है। विनता-पुत्र अरुण के दो पुत्र थे—गरुड तथा अरुण। **दाक्षिणात्य** (१४, ३३) तथा **पश्चिमोत्तरीय** (१६, ५५) पाठो के अनुसार सम्पाति तथा जटायु दोनो अरुण के पुत्र थे, **गौड़ीय पाठ** (२०, ३४) उनको गरुड की सन्तान मानता है। कृत्ति-वास तथा बलरामदास के रामायणों मे भी सम्पाति तथा जटायु, दोनो गरुड के पुत्र हैं। दोनो किसी समय सूर्य के पास पहुँच गये थे, सम्पाति ने अपने अनुज को सूर्य की किरणो से व्याकुल देखकर उसे अपने पखो से ढक लिया था। इस प्रकार जटायु तो बच गया किन्तु सम्पाति के पख जल गये और वह निस्सहाय होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर गया था।[1] सीताहरण के समय जटायु की अवस्था ६०००० वर्ष की थी (दे० ३, ५०, २०)।

सेरीराम के अनुसार कीसूनीसू नामक तपस्वी ने ३०० वर्ष तक तप करने के बाद विष्णु के तीन वाहनो को पुत्र के रूप मे प्राप्त किया था, अर्थात् गरुड, दसमपानी (सम्पाति) तथा जटायु।

महाभारत के रामोपाख्यान तथा वाल्मीकि रामायण के कई स्थलो पर जटायु को दशरथ का सखा कहा गया है।[2] **पद्मपुराण** के पातालखण्ड के गौडीय पाठ[3], **असमिया बालकांड** (अध्याय १२) और **कृत्तिवास रामायण** मे दशरथ-जटायु की इस

१ दे० ४, ५८, ४-७। इस वृत्तान्त का किंचित परिवर्तित रूप ४, ६१ मे मिलता है।

२ दे० महाभारत ३, २६३, १, रामायण ३, १४, ३-४, ३, ६७, २७, ४, ५६, २३, ४, ५७, ६।

३. दे० अध्याय १२। स्कद पुराण (नागर खड, अ० ९६), पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय ३४) तथा बलरामदास रामायण मे भी शनि से दशरथ की वरप्राप्ति का वर्णन किया गया है किन्तु इसमे जटायु का उल्लेख नही होता।

हिन्देगिया के **सेरी राम** के अनुसार रावण-जटायु-युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। सात दिन युद्ध करने के बाद दोनो एक-दूसरे को अपना मर्मस्थान बताते है। रावण धोखा देकर अपने पैर का अगूठा बताता है। इतने मे सीता पक्षियो की बोली मे जटायु से मर्मस्थान न कहने के लिए अनुरोध करती है। लेकिन जटायु सीता की बात टाल कर उसे (पख का अग्रभाग) प्रकट करता है और रावण से मारा जाता है। जटायु के गिरने के पहले सीता अपनी अगूठी उसके मुँह मे रख देती है। रावण और जटायु के मर्मस्थलो का उल्लेख भारतीय कथाओ मे भी मिलता है। **भावार्थ रामायण** (३, १७), **तत्त्वसंग्रह रामायण** (३, १५) तथा **पाश्चात्य वृत्तान्त न० १** के अनुसार जटायु रावण के धोखे मे आकर अपना मर्मस्थान (पख का अग्रभाग) प्रकट करता है और हार जाता है। रावण झूठ बोलते हुए कहता है कि मेरा मर्मस्थान पैर का अगूठा है (तत्वसग्रह रामायण) अथवा दाहिनी पिडली (पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। **तोरवे रामायण** (३, १०) मे भी इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है।

रामकेर्त्ति, रामकियेन और **रामजातक** के अनुसार रावण ने सीता की अगूठी छीनकर इससे जटायु को मारा था और वह आहत होकर भूमि पर गिर गया था।

४७१. महाभारत के **रामोपाख्यान** के अनुसार राम और लक्ष्मण कनकमृग-वध के बाद वापस आते हुये जटायु से भेंट करते हैं जो उनसे कहता है कि रावण सीता का अपहरण कर दक्षिण की ओर भाग गया है। **वाल्मीकि रामायण** मे दोनो पहले झोपड़ी को खाली पाते हैं, बाद मे सीता को खोजते समय वे रावण-जटायु युद्ध के चिह्न (टूटा हुआ रथ, मारे हुये खर और सारथि आदि) देखकर राक्षसो द्वारा सीतावध अथवा हरण की आशका करते हैं (सर्ग ६४)। आगे बढकर वे मरणासन्न जटायु से जान लेते हैं कि रावण सीता को लेकर दक्षिण की ओर चला गया है। जटायु राम-लक्ष्मण के सामने ही अपने प्राण छोड देता है। राम तथा लक्ष्मण विधिवत् उसकी अंत्येष्टि तथा उदकक्रिया पूर्ण करते हैं और सीता की खोज मे दक्षिण की ओर आगे बढते हैं। **उदात्तराघव** मे मरणासन्न जटायु रक्त से सनी हुई चोच से पत्ते पर पत्र लिखकर रावण को मारने के लिए राम से अनुरोध करता है तथा किसी ऋषि के हाथ से पत्र भेज देता है। **सेरी राम** के अनुसार राम सीता की खोज करते समय किसी नदी का जल पीते है तथा उसके स्वाद के बिगडने का कारण खोजते हैं। इस तरह जटायु का पता चलता है जो आहत होकर नदी के किनारे पडा हुआ है। वह राम-लक्ष्मण को अपने भाई दसमपानी (सम्पाति) का परिचय देकर कहता है कि वह 'गदारवानम्' नामक पहाड़ पर तपस्या करता है और मैं उसको पन्द्रह-पन्द्रह दिन पर भोजन देने जाता हूँ।

बालरामायण (६, ५६ आदि) के अनुसार मरणासन्न जटायु ने रत्नशिखंड द्वारा

किया जिसने राजा के रोष में आकर सब श्रमणों को यन्त्रों में पेरने का आदेश दिया। एक ही श्रमण उस समय बाहर गये हुए थे, लौटकर उन्होंने अपनी क्रोधाग्नि से समस्त नगर को जला दिया और वह स्थान अब दण्डकारण्य[1] के नाम से प्रसिद्ध है। दण्डक निकाला गया, पृथ्वी पर भटक कर अन्त में बहुत काल बाद में इस गीध के रूप में प्रकट हुआ। अन्त में मुनि ने गीध को उपदेश दिया जिससे वह श्रावक धर्म में सम्मिलित हुआ तथा मुनि ने सीता से निवेदन किया कि वह उसकी रक्षा करे, राम ने उसके सिर की जटायें देखकर उसका नाम जटायु रख दिया।

ड। सीता की खोज

४७३. वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के अन्तिम १८ सर्गों की कथावस्तु इस प्रकार है। स्वर्णमृग-वध के बाद राम लौटकर लक्ष्मण से मिलते हैं तथा आशंका करने लगते हैं। आश्रम में सीता को न पाकर राम सीता को अकेली छोड़ देने के कारण उनकी भर्त्सना करते हैं तथा जोर से विलाप करते हुए और कहीं भी सीता को न देखकर वह उन्मत्त होकर वृक्षों तथा पशुओं को सम्बोधित करके उन से सीता का समाचार पूछते हैं। बाद में राम मृगों से पूछते हैं, किन्तु दक्षिण की ओर संकेत करते हैं जिससे राम-लक्ष्मण भी उसी दिशा में खोज करने जाते हैं। इस खोज में वे प्रथम जटायु,

पालक नामक मन्त्री स्कन्दक मुनि से द्वेष रखता था, उसने स्कन्दक के निवासस्थान पर शस्त्र छिपाकर उनपर झूठा अभियोग लगाया जिससे राजा ने पालक को स्कन्दक तथा उनके ५०० साधियों को दण्ड देने की आज्ञा दी। पालक ने सबों को यन्त्र में पेरने का आदेश दिया। स्कन्दक ने तब वह्निकुमार के रूप में प्रकट होकर सब निवासियों के साथ दण्डक का राज्य भस्मीभूत कर दिया और इस प्रकार दण्डकारण्य उत्पन्न हुआ। इस कथा में दण्डक की रानी जैन मुनियों का पक्ष लेती है।

१ इस कथा के बावजूद अगले सर्ग में लिखा है कि दण्डकगिरि के शिखर पर दण्डक नाग का एक महानाग था जिससे यह प्रान्त दण्डकारण्य के नाम से विख्यात है (दे० ८२, १४)।

२ इस प्रसंग पर उन्मत्तराघव नामक नाटक (अनु० २८१-२८२) तथा विक्रमोर्वशीय का चतुर्थ अंक निर्भर प्रतीत होता है, अगले अनुच्छेद (४७४) की सामग्री भी इसका स्वाभाविक विकास माना जा सकता है। सर्ग ६४ में गोदावरी से निवेदन किया जाता है कि वह सीता का समाचार बता दे किन्तु वह मौन ही रहती है (भयात्तु नदी न शशंस), इसी के आधार पर प्रसन्नराघव में नदियों के मानवीकरण की कल्पना कर ली गई है (दे०अनु०२३७)।

मित्रता के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। किसी समय अयोध्या मे अनावृष्टि हुई थी। नारद से इसका कारण रोहिणी नक्षत्र पर शनि का दृष्टिपात जानकर दशरथ शनि से युद्ध करने गये। शनि की दृष्टि मात्र से दशरथ का रथ टूट गया किन्तु जटायु ने उसे सँभाला, जिससे दशरथ की विजय हुई। इसके फलस्वरूप दोनो ने अग्नि को साक्षी बनाकर मित्रता की थी—'उभये मित्रता करे अग्नि करि साक्षी' (दे० कृत्तिवास १, २७)।

पउमचरियं मे जटायु तथा दण्डक की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड[1] मे अगस्त्य दण्डकारण्य के विषय मे कहते है कि इक्ष्वाकु के १०० पुत्रो मे से सबसे छोटा मूर्ख था, और अपने भाइयो का आदर नही करता था। उसे दंडनीय समझकर इक्ष्वाकु ने उसका नाम दंड ही रखा तथा उसे विन्ध्य और शैवाल के बीच का देश प्रदान किया था। दंड ने किसी दिन अपने गुरु भार्गव (उशना) के आश्रम मे पहुँचकर तथा उनकी पुत्री अरजा को अकेली पाकर उसके साथ बलात्कार किया। भार्गव के शाप से इन्द्र ने राज्य के समस्त प्राणियो सहित दंड को भस्म कर दिया। इस प्रकार दंडकारण्य उत्पन्न हुआ।[2] पउमचरियं (पर्व ४१) के अनुसार एक गीध ने सुगुप्ति मुनि की शरण ली थी तथा मुनि ने उसके पूर्व-जन्म की यह कथा राम को सुनायी। दंडक राजा एक श्रमण का धैर्य देखकर अपनी राजधानी मे श्रमणो को बुलाकर उनको विशेष आदर देने लगा था। इसपर एक पापी परिव्राजक ने निर्ग्रथ मुनि का वेष धारणकर दंडक के अन्त:पुर[3] मे अनधिकार प्रवेश

---

१ दे० ७, सर्ग ७९-८१। पश्चिमोत्तरीय पाठ मे दण्डकारण्य की कथा अरण्यकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है, दे० ३, १७।

२ आनंद रामायण (७, १८, १००) के अनुसार मुनि ने कन्या की प्रार्थना स्वीकार कर शाप का अंत निर्धारित किया। अगस्त्य के आगमन पर वह देश फिर सजल होगा।

३ पउमचरियं के अनुसार दंडक की पत्नी साध्वी तथा जैन धर्मावलंबिनी है (दे० ४१, २०)। पद्मचरित (४१, ६१ और ७२) मे वह दुष्टा तथा परिव्राजको की भक्तिन मानी जाती है। पउमचरिउ (३५, ७-१०) के अनुसार वह अपने पुत्र की सहायता से जैन मुनियो पर राजकीय कोप की चोरी का झूठा आरोप लगाती है, बाद मे पउमचरियं के अनुसार जैनी श्रमण का रूप धारणकर दंडक के अन्त:पुर मे किसी के अनधिकार प्रवेश की कथा भी दी गई है। हेमचन्द्र के जैन पुराण (५, ३३९ आदि) के अनुसार दंडक कुंभकारकुटनामक नगर का राजा था। उनका

और इस वर के बल पर इन्द्र को चुनौती दी थी। इन्द्र ने उसके हाथ पैर काट दिये तथा सिर पर वज्र मारा जिससे उसका सिर उदर मे धँस गया था। ब्रह्मा के वरदान को सत्य प्रमाणित करने के लिए इन्द्र ने उसे एक योजन की लम्बी भुजाएँ देकर तथा उसके उदर मे मुँह बनाकर आश्वासन दिया कि राम-लक्ष्मण द्वारा भुजाएँ कट जाने पर तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे। अनन्तर राम-लक्ष्मण ने उसका शरीर जला दिया और चिता मे से एक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ जिसने आकाश मे एक विमान पर विराजमान होकर राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दिया और पम्पा सरोवर तथा ऋष्यमूक का मार्ग बताकर स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया।

महाभारत के रामोपाख्यान (३, २६३, २५-४३) के अनुसार भुजाएँ कट जाने पर कबध भूमि पर गिर गया तथा उसके शरीर से तत्काल एक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ जिसने आकाश मे स्थित होकर अपना परिचय इस प्रकार दिया—मैं विश्वावसु नामक गधर्व हूँ जो ब्रह्मा अथवा किसी ब्राह्मण के शाप[1] से राक्षस बन गया था। अनन्तर उसने बताया कि रावण ने सीता का हरण किया है तथा राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दिया।

अध्यात्म रामायण (३, १) तथा आनंद रामायण (१, ७, १५१-१६१) के अनुसार कबध 'रूपयौवनदर्पित' गधर्वराज था, जिसने ब्रह्मा से अवध्यता का वर प्राप्त किया था। बाद मे उसने अष्टावक्र[2] नामक मुनि का उपहास किया और उनसे शापित होकर राक्षस बन गया। इस कथा के अनुसार कबध के राक्षस बनने के पश्चात् ही इन्द्र ने उसके सिर पर वज्र मारा था जिससे उसके सिर तथा पैर उदर मे घुस गए थे। उसके शरीर के जल जाने के बाद उसमे से एक दिव्य पुरुष प्रकट हुआ, जो राम की स्तुति करने लगा। राम ने उसकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर उसे अपने परमधाम को भेज दिया। अन्त मे कबध ने राम को शबरी के यहाँ जाने का परामर्श दिया तथा विमान पर चढ़कर विष्णुलोक के लिए प्रस्थान किया (३, १०, १-३)। कृत्तिवास रामायण (३, २८) मे भी यही कथा है, किन्तु यहाँ वह गधर्वराज न होकर कुबेरनामक दैत्य बताया जाता है।

रामचरितमानस (३, ३) मे माना गया है कि दुर्वासा ने कबन्ध को शाप

१. 'ब्रह्मानुशापेन'; 'ब्राह्मणशापेन' पाठान्तर भी मिलता है।

२. महाभारत (३, १३२) के अनुसार अष्टावक्र कुहोड नामक मुनि का पुत्र था; कुहोड ने उसे गर्भावस्था मे ही यह शाप दिया था—वक्रो भवितास्यष्टकृत्वः। समगा नदी मे नहाकर अष्टावक्र के सीधे हो जाने की कथा पूना सस्करण के अनुसार प्रक्षिप्त है (दे० ३, १३४, ३८ टि०)।

अयोमुखी, कबंध तथा शबरी से मिलकर अन्त मे पम्पा सरोवर के तट पर पहुँचते है। बीच-बीच मे राम का विलाप तथा लक्ष्मण की सान्त्वना विस्तार सहित वर्णित है (सर्ग ५७-७५)। सेरीराम के अनुसार राम-लक्ष्मण ने सीता-हरण के पश्चात् परिचरो को (दे० अनु० ४३८) महरीसीकली के यहाँ भेज दिया, जिन्होंने दशरथ की राजधानी जाकर सीताहरण का समाचार सुनाया था।

जटायु (दे० अनु० ४७०-४७२) तथा शबरी (दे० अनु० ४७७-४८१) विषयक सामग्री का अलग विश्लेषण किया गया है। अयोमुखी का वृत्तान्त केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, वास्तव मे वह शूर्पणखा की कथा की आवृत्ति-मात्र प्रतीत होती है। लक्ष्मण उस राक्षसी का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए उसके कान, नाक तथा स्तन अपनी तलवार से काटते है और वह भाग जाती है (दे० सर्ग० ६६, ११-१८)।

कबंध का प्रसग वाल्मीकि रामायण मे अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णित है (सर्ग ६६-७३)। राम-लक्ष्मण द्वारा भुजाएँ कट जाने के बाद कबध निस्सहाय होकर भूमि पर गिर गया। अनन्तर कबध ने अपने विषय मे दो भिन्न शापो का उल्लेख किया। प्रथम शाप की कथा इस प्रकार है।[1] कबध डरावना रूप धारण कर ऋषियों को सताया करता था। इसी रूप मे उसने स्थूलशिरा पर आक्रमण किया था, जिससे मुनि ने यह शाप दिया कि तुम यह भयंकर रूप धारण किये रहो। उसके अनुनय करने पर स्थूलशिरा ने कहा—'जब राम तुम्हारी भुजाएँ काटकर तुम्हारा शरीर जला देंगे तभी तुम अपना शुभ रूप फिर ग्रहण करोगे।' दूसरी कथा के अनुसार वह दनु का सुन्दर[2] पुत्र था, जिसने उग्र तप करके ब्रह्मा से दीर्घायु होने का वर प्राप्त किया था

१ दे० ७१, २-७। यह अश स्पष्टतया प्रक्षिप्त है, इसी कारण से गोरेसियो ने उसे अपने सस्करण मे स्थान नही दिया।

२. दे० ७१, ७, बाद मे उसका नाम दनु ही माना गया है (दे० ७१, २०); एक पाठान्तर के अनुसार यहाँ पर भी दनु ही होना चाहिए। मूल के 'श्रिया विराजितम्' का अर्थ 'सौंदर्ययुक्त' न मानकर टीकाकार 'श्री नामक दनु का पुत्र' अर्थ भी देते हैं। इसी कारण से भट्टिकाव्य (६, ४८) तथा रामायण ककविन (६, ७५ आदि) मे कबंध को श्री का पुत्र माना गया है, जो किसी दिन मद्य के प्रभाव से एक मुनि का अनादर करके शाप का शिकार बन गया था। महावीरचरित मे कबंध राम को अपना परिचय इस प्रकार देता है—

दनुर्नाम श्रियः पुत्रः शापाद्राक्षसतां गतः।
इन्द्रास्त्र-कृत-कावन्ध्यः पूतोऽस्मि भवदाश्रयात्॥ (५, ३४)

वचित रहोगे, रात मे आहार खोजते-खोजते तुमको मादा से अलग रहना पडेगा। इस पर चक्रवाक पतित-पावन भक्तवत्सल नारायण के रूप मे राम की स्तुति करते हुए अनुनय-विनय करने लगा। अत मे राम ने तरस खाकर कहा कि द्वापर मे व्याध तुम्हे जाल मे फँसाएगा, तब तुम मेरे शाप से मुक्त हो जाओगे।

बलरामदास रामायण के अनुसार राम और लक्ष्मण ने पम्पा सरोवर के निकट पहुँचकर चक्रवा-चकवी के एक जोडे को क्रीडा करते हुए देखा। राम ने पास जाकर उनसे पूछा कि सीता कहाँ है। चक्रवाक ने राम की निन्दा करते हुए कहा कि क्या तुम यह भी नही जानते कि इस समय बाधा डालना अनुचित है। इस पर राम ने यह अभिशाप दिया कि तुम दोनो का मिलन फिर कभी नही होगा, किन्तु जब वे राम को भगवान जानकर उनकी आराधना करने लगे तब राम ने अपना शाप बदलकर कहा कि केवल दिन मे ही तुम्हारा मिलन हो सकेगा। बाद मे किसी व्याध ने दोनो को फँसाकर एक टोकरी मे बन्द कर दिया, वे आपस मे कहने लगे कि हमारे साथ रहने से राम का कथन असत्य ही सिद्ध होगा किन्तु रात के पूर्व ही टोकरी अपने आप से खुल गई और दोनो अलग हो गए। उपर्युक्त प्रसग अरण्यकाड मे वर्णित है, इसके अतिरिक्त किष्किन्धा मे बक तथा कुक्कुट के विषय मे भी निम्नलिखित कथाएँ मिलती है। वर्षाऋतु के अन्त मे जब लक्ष्मण किष्किन्धा चले गये थे और राम अकेले ही माल्यवन्त पर्वत पर रह गए थे तब एक बगुले ने उनका विरह देखकर कहा—"तुम कैसे महात्मा हो! मूर्ख ही रोते है, तुम क्यो रोते हो?" उत्तर मे राम ने अपनी हरण की गई पत्नी का समाचार पूछा। बगुले ने राम को आश्वासन दिया—"लका का रावण सीता को ले गया है। मैंने उन्हे रोते देखा था। उनका अश्रुजल मुझपर गिर गया था और मैं सफेद हो गया। दुर्गा तुम पर प्रसन्न होगी और तुमको सीता फिर मिल जायेगी।" राम से वर पाकर बगुले ने कहा—"वर्षा मे भोजन एकत्र करने मे कठिनाई होती है। मुझे यहाँ बैठे हुए आहार मिलना चाहिए।" इसपर राम ने उत्तर दिया—"तुम्हारी मादा तुमको बरसात मे खाना ला देगी।" बगुले ने आपत्ति की—"वह मुझसे छोटी है, उसका जूठा खाकर मैं उपहास का पात्र बन जाऊँगा।" राम ने इसका खण्डन करते हुए कहा—"पति-पत्नी एक है, कोई बडा-छोटा है ही नही।" अन्त मे राम ने कहा कि कार्तिक शुक्ला दशमी से पूर्णिमा तक कोई भी आमिप का सेवन नही करेगा और तुम्हारे आदर मे इस व्रत का नाम बकपचक रखा जायगा। बाद मे एक कुक्कट ने भी सहानुभूति प्रकट करते हुए राम से कहा कि तुम क्यो रोते हो और यहाँ पर अकेले क्यो रहते हो। राम ने उत्तर मे अपना परिचय दिया तथा वनवास, सीताहरण आदि की अपनी सपूर्ण कथा सुनाई। तब मुरगे ने कहा कि रावण ने सीता का हरण किया है। राम ने यह कहकर उसे वरदान दिया कि तुम्हारे सिर पर सप्तशाखा लाल मुकुट रहेगा

दिया था और राम के चरणो के दर्शन से वह शापमुक्त हो गया। राम ने कवन्ध को ब्राह्मणो की सेवा का महत्त्व समझाकर उसे परमपद प्रदान किया। रामचन्द्रिका (१२, ३३-३७) के अनुसार वह पहले इन्द्र के शाप के कारण गधर्व से राक्षस वन गया था तथा बाद मे इन्द्र से उसका युद्ध हुआ था। इन्द्र ने उससे कहा था कि राम द्वारा इसका उद्धार हो सकेगा।

सेरी राम मे कवन्ध का उल्लेख नही मिलता, किन्तु सुग्रीव से मिलने के पूर्व राम-लक्ष्मण एक मत्स्य-भक्षी श्यामवर्ण दाती जग्गाल नामक राक्षस से भेंट करते है, जिसकी लाल जटाएँ सात धनु लम्बी हैं। वह राम का रग देखकर उन्हे विष्णु का अवतार मानता है तथा राम-लक्ष्मण को मार्ग वताता है।

४७४. खोतानी रामायण तथा सेरी राम मे राम और लक्ष्मण सुग्रीव से मिलने के पूर्व १२ वर्ष तक सीता की खोज करते है। इस खोज के वर्णन के अतर्गत सेरी राम में दो पक्षियो की कथा मिलती है, जिनमे से एक राम का उपहास करता है और दूसरा राम का सहायक वन जाता है। प्रथम पक्षी की चार मादाएँ हैं, वह विरही राम को देखकर उनका यह कहकर उपहास करता है कि राम अपनी एक ही पत्नी की भी रक्षा नही कर पाये। इसपर राम उसे अन्धा वना देते हैं, जिससे उसकी चारो मादाएँ उसे छोडकर चली जाती है। एक अन्य पक्षी राम को वताता है कि रावण ने सीता का अपहरण किया है। वर पाकर वह एक लम्वी ग्रीव माँग लेता है, जिससे वह सुगमता से अपना भोजन प्राप्त कर सके। वाद मे एक लडका उसे फँसाकर वाजार ले जाता है। राम अपनी अँगूठी देकर उसे खरीद लेते हैं तथा लम्वी ग्रीव के स्थान पर उसे चार मादाओ को प्रदान करते है, जो उसके लिए भोजन ले आती रहेगी।

इस प्रकार की कथाओ का मूलस्रोत भारतीय ही है क्योकि वे सारलादासकृत महाभारत (गदापर्व), वलरामदास रामायण, दुर्गावर कृत असमिया रामायण तथा आदिवासी वृतान्तो मे भी पाई जाती है। वाण की कादम्वरी (कथामुख २०) मे पपसरोवर-वर्णन के अतर्गत राम द्वारा अभिशप्त चक्रवाक-मिथुनो का उल्लेख मात्र मिलता है।

कृत्तिवासरामायण (३, २५) की तत्सवधी कथा इस प्रकार है। सीताहरण के वाद आहत जटायु से मिलने के पूर्व ही एक चक्रवाक से राम-लक्ष्मण की भेंट हुई। राम ने चक्रवाक से पूछा कि जनकनदिनी को कौन ले गया है किन्तु चक्रवाक ने परिस्थिति समझने के वाद राम का इस प्रकार उपहास किया—"तुम दो मनुष्य होते हुए भी एक स्त्री की रक्षा नही कर पाये ? मैं अकेला पक्षी हूँ, फिर भी दो मादाओ को रख लेता हूँ। तुम लोगो ने स्त्री को खो दिया और अव इधर-उधर भटक कर उसके विपय मे पूछते हो, क्षत्रिय समाज तुमको क्या समझेगा।"

राम ने क्रोध मे आकर उसको यह शाप दिया कि आज से तुम रति-सुख से

दे दिया तथा अमरत्व का वरदान प्राप्त किया ।

४७५ सीता का रूप धारण कर सती द्वारा विरही राम की परीक्षा का प्रथम वृत्तान्त शिव महापुराण (दे० ऊपर अनु० १६७) मे मिलता है। बाद मे आनन्द रामायण (१, ७, १४३), भावार्थ रामायण (३, २०) तथा रामचरितमानस की भूमिका मे भी इसका वर्णन किया गया है ।

४७६ पपा-सरोवर के तट पर विरही राम से नारद के मिलने और भक्ति का वरदान प्राप्त करने का वृत्तान्त न तो वाल्मीकि रामायण मे मिलता है और न अध्यात्म रामायण मे । इसका वर्णन रामगीतगोविन्द (४, ७) तथा रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड के अन्त मे किया गया है । वालि-वध के बाद भी नारद अथवा अगस्त्य के विरही राम से भेट करने आने की कथा मिलती है (दे० आगे अनु० ५२३) । तोरवे रामायण (३, २) के अनुसार जावालि ने राम के वनवास से भरत को दुखी देखकर राम के पास जाने की प्रतिज्ञा की । उधर राम भी अयोध्या से कोई समाचार न पाने के कारण रो रहे थे जब जावालि उनके पास पहुँचे । जावालि ने राम को सान्त्वना देते हुए नल और हरिश्चन्द्र की कथाएँ सुनाई और बाद मे अयोध्या लौटे ।

च । शबरी

४७७ शबरी-प्रसग का वाल्मीकीय आधिकारिक कथावस्तु से कोई सीधा सम्बन्ध नही ज्ञात होता है । यह प्रसग महाभारत के रामोपाख्यान मे नही मिलता और अधिक सभव यह प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे भी शबरी का उल्लेख नही था । परवर्ती राम-साहित्य मे शबरी की कथा का उत्तरोत्तर विकास हुआ है, अत. इसकी रूपरेखा यहाँ अंकित करना अपेक्षित है ।[1]

वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो मे जो सामग्री समान रूप से मिलती है, उसमे शबरी की कथा इस प्रकार है । कबन्ध राम को मतगाश्रम का मार्ग बताकर शबरी का भी इस प्रकार परिचय देता है । मतगाश्रम के ऋषि तो चले गये किन्तु उनकी **'परिचारिणी श्रमणी शबरी'** अब तक वहाँ विद्यमान है और देवोपम राम के दर्शन करने के पश्चात् वह स्वर्गलोक के लिये प्रस्थान करेगी (दे० सर्ग ७३, २६-२७) । राम शबरी

---

१ आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्यकारो ने शबरी को अपनी रचनाओ की नायिका बना दिया है । दे० गोविन्ददास कृत शबरी (दिल्ली १६६०), शभुप्रसाद बहुगुना का शबरीमगल, पृ० ३-४ (मानस सघ, राम वन, १६५०) तथा आचार्य सीताराम चतुर्वेदी कृत 'शबरी' (स० २००६) । आनन्द रामायण (मनोहर काड, सर्ग १२) मे जिस शबरी से राम की भेट का वर्णन किया गया है, वह दूसरी है ।

और जो तुमको मारेगा वह मेरा शत्रु होगा।[1]

असमिया गीतिरामायण में राम द्वारा बगुले तथा पीपल वृक्ष से सीता का समाचार पूछे जाने का वृत्तान्त पाया जाता है।

संताल (दे० अनु० २७१), बिर्होर (दे० अनु० २७२) तथा मुण्डा (दे० अनु० २७३) नामक जातियो मे सीता की खोज के वर्णन मे बगुले, गिलहरी तथा बेर वृक्ष की कथा का वर्णन किया गया है। राम ने एक बगुले से सीता का पता पूछा था। बगुले ने उनकी अवज्ञा करके उत्तर दिया—"मुझे सीता से क्या, केवल पेट की चिन्ता है।" इस पर लक्ष्मण ने उसकी ग्रीव को पकड़ कर खींच लिया और उस दिन से बगुले की लम्बी ग्रीव होती है।[2] सन्ताली रामकथा के अनुसार राम ने किसी वृक्ष की डालियों पर फूट-फूट कर रोती हुई गिलहरी से सीता का समाचार पूछा था। गिलहरी ने उत्तर दिया—"उन्हीं के लिए तो मैं रो रही हूँ। रावण ने सीता का हरण किया है। वह इसी रास्ते से निकल गया है।" राम ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा—"कितनी भी ऊँची जगह से क्यो न गिरो, लेकिन तुम्हे चोट नही लगेगी।" मुण्डा तथा बिर्होर जातियों की कथाओ मे गिलहरी के रोने की चर्चा नहीं है, किन्तु उनमे राम के उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खींचने का उल्लेख किया गया है।[3] सन्ताली रामकथा के अनुसार राम ने बेर वृक्ष मे एक चिथड़ा लटका हुआ देखा। बेर ने राम से कहा—"रावण इसी रास्ते से सीता को ले गया है। मैंने सीता को छुड़ाने का प्रयत्न किया था, किन्तु मुझे उनकी साड़ी के इस चिथड़े के अतिरिक्त और कुछ नही मिल सका।" राम ने बेर को आशीर्वाद देकर आश्वासन दिया—"तुमको कितना ही क्यो न काटा जाय किन्तु कोई भी तुम्हारा नाश नही कर सकेगा।"

मुण्डा तथा बिर्होर जातियो की कथा के अनुसार बेर ने सीता को छुड़ाने का प्रयत्न नही किया किन्तु उसने राम को सीता का मार्ग बताया, उनकी साड़ी का चिथड़ा

१ सम्भवतः इसी कथा के कारण उड़ीसा मे कुक्कट रामपक्षी कहकर पुकारा जाता है।

२. बगुले की कथा असुरो के यहाँ भी मिलती है (दे० अनु० २७४)। सेरी-राम की कथा मे लम्बी ग्रीव पुरस्कार के रूप मे मिलती है; यह पुरस्कार अधिक सार्थक प्रतीत होता है। महाभारत (१२, ११६, ६) मे एक ऊँट की कथा है, जिसने भारी तपस्या के बल पर ब्रह्मा से एक 'शत-योजन' लम्बी गरदन प्राप्त की थी।

३. अन्य रामकथाओं मे सेतुबन्ध के समय गिलहरी की कथा मिलती है। दे० अनु० ५७७।

शबरी उनको सीता के विषय मे सब बातें बता देगी।[1] शबरी भक्तिपूर्वक राम-लक्ष्मण का आतिथ्य-सत्कार करती है तथा उनको अपने इकट्ठे किए हुए दिव्य फल अर्पित करती है। अनन्तर यह बताती है कि इस आश्रम मे पहले उसके जो गुरु निवास करते है, उनके आदेशानुसार वह राम का ध्यान करती हुई उनकी प्रतीक्षा करती रही। अन्त मे वह राम से पूछती है कि मैं मूढ स्त्री हीन जाति मे उत्पन्न होते हुए भी आपके दर्शनो के योग्य क्यो ठहरी। इसपर राम कहते है कि पुरुषत्व, स्त्रीत्व, जाति, नाम, आश्रम आदि का कोई महत्त्व नही है, भक्ति ही सर्वोपरि है। अनन्तर राम शबरी को नवधा भक्ति की शिक्षा देकर कहते है कि उन साधनो द्वारा प्रेमलक्षणा भक्ति का आविर्भाव होता है, जिससे इसी जन्म मे मुक्ति मिलती है। अन्त मे राम सीता के विषय मे पूछते है—**"सीता कमललोचना कुत्रास्ते केन वा नीता।"** शबरी राम को उनकी सर्वज्ञता का स्मरण दिलाकर कहती है कि आप लोकाचार का अनुसरण करते हुए सीता का पता पूछते है। तब वह प्रकट करती है कि सीता लका मे है और राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श देती है। अन्त मे वह अग्नि मे प्रवेश करती है तथा राम के प्रसाद से मोक्ष प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अध्यात्म रामायण के रचयिता ने शबरी-कथा को रामभक्ति के गुणगान मे परिणत कर दिया है। शबरी की हीन जाति को अधिक महत्त्व दिया गया है जिससे यह स्पष्ट हो जाय कि रामभक्ति भेद-भाव से ऊपर उठकर सब को मुक्ति प्रदान करती है (**भक्तिमुक्तिविधायिनो भगवतः श्रीरामचंद्रस्य;** छन्द ४४)।

परवर्ती रामकथा-साहित्य मे शबरी-कथा का रूप प्रायः अध्यात्म रामायण के अनुसार ही है, उदाहरणार्थ—आनन्द रामायण (१, ७, १६०-१६६), पद्म-पुराण (६, २६६, २६५-२६८), मजुल रामायण (दे० अनु० १६६), रामचरितमानस (३, ३४-३६), रामगीतावली (१७, १-८), रामचन्द्रिका (१२, ४३-४६)। **तत्त्व-संग्रह-रामायण** (३, १७) मे शबरी की महत्ता के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। गोदावरी ने राम को उत्तर देना अस्वीकार किया था तथा राम ने उसे यह शाप दिया था कि जो कोई तुझमे नहा लेगा वह चाण्डाल बन जायेगा। बाद मे ब्रह्मादि देवताओ ने राम से निवेदन किया था कि वह गोदावरी को पुन: पवित्रता प्रदान करे। इसपर राम ने अपने चाप से पृथ्वी पर रेखा खीच कर गोदावरी की धारा को उस कूप से मिला दिया जहाँ शबरी नित्यप्रति नहाया करती थी।

सूरदास ने शबरी के फलो के विषय मे पहले-पहल लिखा है कि ये जूठे ही थे

१. वाल्मीकि रामायण मे शबरी की कथा प्रक्षिप्त है। कबध राम को सीता-खोज की सहायता के लिए सुग्रीव के पास जाने का परामर्श दे चुका था, अतः शबरी-प्रसग मे सीता का कोई उल्लेख नही मिलता।

के आश्रम पहुँचकर तथा उसका आतिथ्य-सत्कार स्वीकार कर उसकी तपश्चर्या के विषय मे प्रश्न करते हैं। इस पर शवरी उत्तर देती है कि जिस समय राम चित्रकूट पहुँचे, यहाँ के ऋषि, जिनकी सेवा मै करती थी, स्वर्ग चले गये। जाते समय ऋषियो ने कहा था कि लक्ष्मण के साथ राम अतिथि के रूप मे यहाँ पधारेगे, उनके दर्शन करने के पश्चात् शवरी भी स्वर्ग जा सकेगी। शवरी राम से यह भी निवेदन करती है कि मैंने आपके लिए वन के विविध कन्दमूल एकत्र कर रक्खे हैं—**मया तु संचितं वन्यं विविधं पुरुषर्षभ** (७४, १७)। तब वह अपने गुरुओ का गुणगान करती हुई राम-लक्ष्मण को मतगवन के दर्शन कराती है। अत मे वह उन ऋषियो के पास जाने की इच्छा प्रकट करती है तथा राम की आज्ञा लेकर अग्नि मे प्रवेश करती है। तदनन्तर वह दिव्य रूप धारण कर उसमे से प्रकट हो जाती है और विद्युत् सा प्रकाश फैलाती हुई (**विद्युत् सौदामिनी यथा;** ७४, ३४) अपने गुरु-महर्षियो के पास पहुँच जाती है। शवरी-कथा के इस प्रथम रूप मे गुरुभक्ति तथा तपस्या की महिमा पर विशेष वल दिया गया है। शरभग (अनु० ४५६) तथा अगस्त्य (अनु० ४६०) के प्रसगो की भाँति यहाँ पर भी राम को एक महान् अतिथि के रूप मे देखा गया है।[1] **भट्टिकाव्य** (सर्ग ६, ५६-७१) मे भी शवरी-कथा का यही रूप मिलता है। राम शवरी की साधना के विषय मे प्रश्न पूछते है तथा शवरी आदरपूर्वक उनका आतिथ्य-सत्कार करके क्षत्रिय[2] के रूप मे राम की वन्दना करती है तथा यह आश्वासन देकर अतर्द्धान हो जाती है कि सुग्रीव की सहायता से मैथिली के दर्शन शीघ्र ही प्राप्त होगे।

महावीरचरित (५, २७) के अनुसार शवरी मतग-आश्रम मे रहनेवाली तपस्विनी है, जो राम के पास आकर उन्हे विभीषण का पत्र देती है। विभीषण ने खरदूषण आदि के वध का समाचार सुन कर अपने भाई को छोड़ दिया और अब वह अपने मित्र सुग्रीव के यहाँ रहता है।

४७८ **अध्यात्म रामायण** (३, १०, १-४४) मे शवरी-प्रसग इस प्रकार है। कवध शवरी की राम-भक्ति का उल्लेख करता है तथा राम को आश्वासन देता है कि

---

१ दाक्षिणात्य पाठ मे शवरी राम को 'देववर' की उपाधि देती है (सर्ग ७४, १२) और उनकी कृपादृष्टि के फलस्वरूप अपने को 'पूता' मानती है (७४, १३), राम भी अपने प्रति उसकी भक्ति की प्रशसा करते है (गोविन्द पाठ ७४, ३१)। अन्य पाठो मे इस प्रकार के उल्लेख नही मिलते।

२. **'सर्वत्राऽऽख्यदनामयम्''** (६, ७०)। मनु के अनुसार—''क्षत्रबधुमनामयम्'' (२, १२७)।

वनवास के समय किसी दिन शबरी से राम-सीता-लक्ष्मण की भेंट हुई। तीनों भूखे थे और शबरी ने उनको जंगली बेर खिलाकर तृप्त किया। इसके बाद वह प्रतिदिन अपने अतिथियों के लिये बेर बटोरने जाती थी। एक दिन उसने अन्यमनस्क होकर प्रत्येक फल का थोडा सा अंश खाकर अपनी टोकरी में रख लिया। घर पहुँचकर उसे पता चला कि मैंने क्या किया है और वह राम को जूठे बेर देने में हिचकती थी। राम ने अनुरोध किया और वह सीता के साथ वे फल खाने लगे। लक्ष्मण ने एक आदिवासी का जूठा भोजन स्पर्श करना अस्वीकार किया। इस पर एक बाण ने लक्ष्मण को आहत कर दिया, और वह तब तक अस्वस्थ रहे, जब तक उन्होंने अपना मन नहीं बदल दिया। शबरी के घर से प्रस्थान करते समय राम ने उसको वर-स्वरूप राज्य अथवा परिवार चुनने को कहा। शबरी ने परिवार चुन लिया और राम ने उसको आश्वासन दिया कि उसके असंख्य वंशजों को कभी भी भोजन अथवा कपडे का अभाव नहीं होगा।[1]

४८१ विदेश में शबरी के पूर्वचरित के विषय में दो कथाओं का पता चला है। **रामायण ककविन** के अनुसार उसने विष्णु-अवतार वाराह की लाश खाई थी जिससे उनका मुँह काला बन गया था तथा राम ने उसका मुख पोंछ कर शुद्ध कर दिया (दे० ऊपर अनु० ३१४)। **रामकियेन** (अध्याय ९६) के अनुसार शबरी वास्तव में एक अप्सरा थी, ईश्वर की सेवा में असावधान हो जाने के कारण उसे शाप दिया गया था कि वह एक जलते हुए जंगल के पास तब तक निवास करे, जब तक राम उसे आकर न बुझा दे। शबरी ने अपने अतिथि राम से निवेदन किया कि वह ऐसा करें और कृपालु राम ने उस आग को बुझा दिया, जिससे शबरी ने फिर अप्सरा के रूप में स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया।

रघुराज सिंह की **रामरसिकावली** (पृ० ११८) में शबरी एक मुनि की पत्नी थी, जो अपने पति के साथ वन में निवास करती थी। किसी अवसर पर उसका पति वन में साधना करके घर लौटा और शबरी ने उसके चरण धोए, बाद में मुनि को पता चला कि उसी दिन शबरी को पुत्र उत्पन्न हुआ। इसपर उसने अपनी पत्नी शबरी को वन में भेजते हुए यह शाप दिया—"**अरी अशौच न मोहि बतायो। कस पूजन भोजन करवायो। शबरी होसि महावन जाई।**" पत्नी का विलाप सुन कर मुनि ने उसे सान्त्वना देकर कहा—"**करिहैं संतन की सेवा, ऐहैं तुव घर रघुकुल देवा।**" एक अन्य दन्त-

---

१. यह कथा शबरी के पति के विषय में मौन है। कोल-जाति में ऋषियों के सरोवर के अशुद्ध हो जाने का वृत्तान्त भी प्रचलित है (दे० ग्रिफिस, वही, पृ० ६)।

(दे० नया संस्करण, ३११)। बलरामदास के वृत्तान्त की विशेषता यह है कि शबरी अपने पति के साथ राम-लक्ष्मण से भेंट करती है तथा इसमें भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राम वे फल नहीं खाते हैं जिनमें शबरी के दाँतों के निशान नहीं थे। आनंदतनय कृत मराठी शबर्याख्यान (१८ वीं श०) में भी शबरी के झूठे फलों की चर्चा है।

४७९. भक्तमाल की प्रियादासकृत टीका (१८वीं श० ई०) प्राचीनतम रचना है जिसमें शबरी की पवित्रता सिद्ध करने वाली निम्नलिखित कथा पाई जाती है। शबरी ऋषियों की सेवा करने की उत्कट अभिलाषा से प्रेरित होकर रात के पिछले पहर को उनके आश्रम में प्रवेश किया करती थी: वह ऋषियों के स्नान करने जाने का मार्ग झाड़-बुहार कर साफ़ करती थी तथा उनके लिए लकड़ियाँ भी लादा करती थी। मतंग के मन में यह जानने की इच्छा हुई कि कौन यह सब करता रहता है; अतः उनके शिष्यों ने रात में जागकर शबरी को मतंग के सामने उपस्थित किया; उन्होंने शबरी को राम-भक्ति की दीक्षा देकर उसे आश्रम में रहने की अनुमति दे दी। बाद में परलोक जाने के पूर्व मतंग ने शबरी को आश्वासन दिया कि वह राम के दर्शन करेगी। किसी दिन शबरी ने अनजाने ही किसी ऋषि का स्पर्श किया और ऋषि ने उस पर अपना क्रोध प्रकट किया। फलस्वरूप जब वह ऋषि स्नान करने के लिए सरोवर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह रक्त तथा कृमियों से भरा हुआ है।

बहुत दिन बीत जाने पर राम वहाँ पहुँचे तथा शबरी के यहाँ जाकर आतिथ्य-सत्कार ग्रहण किया तथा उसके झूठे फल खाये। ऋषि आकर राम से सरोवर को स्वच्छ करने का निवेदन करने लगे। इसपर राम ने सरोवर के अपवित्र हो जाने का रहस्य प्रकट किया और यह भी बताया कि वह शबरी के स्पर्श से फिर स्वच्छ हो जायगा (पद ६)। रघुराजसिंह की रामरसिकावली में वही कथा मिलती है[1] किन्तु सरोवर को स्वच्छ करने की कथा इस प्रकार है कि राम पहले उसका स्पर्श करते हैं जिससे "भयो कृम शोणित सर वारी"; तब राम प्रकट करते हैं कि शबरी ही उसे पवित्रता प्रदान कर सकती है। मुनियों के निवेदन करने पर:

शबरी सकुचि सलिल पग डारी।
तुरतहिं भो निर्मल सर वारी॥

४८०. शबरी की कथा आदिवासियों में अपेक्षाकृत लोकप्रिय है। मध्य भारत के कोल अपने को शबरी के वंशज मानते हैं। उनमें प्रचलित दन्तकथा इस प्रकार है।[2]

---

1. दे० पृ० १२२-१२३। बंबई (सं० २०१३) का संस्करण।
2. डब्ल्यू० जी० ग्रिफ़िथ्स: दि कोल ट्राइब ऑफ़ सेंट्रल इण्डिया (कलकत्ता, १९४६), पृ० २०७।

के वध का समाचार सुनाती है।[1] अनन्तर वह राम की वीरता तथा सीता के सौंदर्य का वर्णन करके कहती है कि सीता आपके योग्य है, उनको आप के पास ले आने के प्रयत्न मे मुझे विरूपित किया गया है (भार्यार्थे तु तवानेतुमुद्यताहं वरानना विरूपितास्मि; ३४, २१)। अन्त मे वह रावण को सीता का हरण करने का सुझाव देती है (दे० सर्ग ३२-३४)।

अधिक संभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे शूर्पणखा के विरूपण की कथा विद्यमान नही थी। युद्धकाड के दो स्थल इस अनुमान के आधार है। रावण की सभा (सर्ग ६) मे विभीषण ने सीताहरण के कारण के विषय मे केवल खर का ही उल्लेख किया है। विभीषण ने कहा—राम ने रावण का क्या बिगाडा था कि उसने उनकी भार्या का अपहरण किया। खर ने अपनी सीमा का उल्लघन किया था (अतिवृत्तः) और इसीलिए वह राम से मारा गया, (यह स्वाभाविक था क्योकि) हर प्राणी को यथाशक्ति अपने प्राणो की रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

> किं च राक्षसराजस्य रामेणापकृतं पुरा।
> आजहार जनस्थानाद्यस्य भार्यां यशस्विनः ॥१३॥
> खरो यद्यतिवृत्तस्तु स रामेण हतो रणे।
> अवश्य प्राणिना प्राणा रक्षितव्या यथाबलम् ॥१४॥

युद्धकाड के अन्त मे (सर्ग १२६) हनुमान द्वारा जो संक्षिप्त रामचरित सुनाया जाता है, उसमे पहले दण्डकारण्य के तपस्वियो की रक्षा के निमित्त राम द्वारा खर-दूषण-त्रिशिरा आदि राक्षसो के वध का वर्णन मिलता है और केवल बाद मे शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख होता है। अतः यह संभव नही कहा जा सकता है कि राक्षसो के वध के कारण ही रावण का विरोध उत्पन्न हुआ था। बाद मे शूर्पणखा के विरूपण की कथा प्रचलित होने लगी। परवर्ती रामकथाओ मे सीताहरण का यह कारण व्यापक रूप से प्रामाणिक माना गया है। फिर भी, अन्य कारणो की भी कल्पना कर ली गई है, उनका निरूपण नीचे किया जा रहा है।

४८४ विमलसूरिकृत पउमचरिय मे लक्ष्मण द्वारा चन्द्रनखा के पुत्र शम्बूक का वध सीताहरण का कारण माना गया है। यह कथा तेलुगु रंगनाथ रामायण, सारलादास के उडिया महाभारत, कन्नड तोरवे रामायण, हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा, स्याम के रामकियेन, आनन्द रामायण तथा मराठी भावार्थ रामायण मे भी मिलती है

---

१. ऊपर (अनु० ४५६) इसका उल्लेख हो चुका है कि दाक्षिणात्य पाठ का ३१वाँ सर्ग प्रक्षिप्त है। इसके अनुसार अकम्पन ने सबसे पहले रावण को खर-वध का समाचार सुनाया था।

कथा[1] इस प्रकार है—शबरी का जन्म एक उच्च तथा सम्पन्न परिवार मे हुआ था, किन्तु परतन्त्रता के कारण उसे सत्सग तथा साधना के लिए अवकाश नही मिलता था। अत. उसने प्रार्थना की थी कि उसका अगला जन्म किसी नीच जाति मे हो जिससे उसकी भक्ति-साधना मे बाधा न पडे। फलस्वरूप वह भीलो के यहाँ उत्पन्न हुई थी। विवाह-योग्य हो जाने पर उसने देखा कि घर मे सैकडो बकरे-भैसे इकट्ठे किये जा रहे है। पूछने पर उसे पता चला कि उसके विवाह के अवसर पर इन सब का बलिदान किया जायेगा। यह सुनकर वह बहुत घबराई तथा सब जानवरो को मुक्त कर वह जगल मे चली गई तथा पपासरोवर के निकट झोपडी बनाकर ऋषियो की सेवा करने लगी।

३—सीताहरण

४८२. बौद्ध साहित्य के दशरथ जातक और दशरथ कथानम् मे सीताहरण का उल्लेख नही किया गया है। बोधिसत्व राम द्वारा रावण का वध किया जाना बौद्ध आदर्श के प्रतिकूल था, अतः सीताहरण का और फलस्वरूप रावण का अभाव स्वाभाविक प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त दशरथ जातक के प्रसग के अनुसार इसका उल्लेख अनावश्यक भी था (दे० ऊपर अनु० ८१)। महाभारत के शांतिपर्व की रामकथा मे भी सीताहरण का वर्णन नही किया गया है। इस अत्यन्त सक्षिप्त वृत्तान्त का प्रसग है कि महान् राजा भी मर जाते है। अतः इस रामकथा मे राम तथा उनकी महिमा का ही वर्णन किया गया है, फिर भी १४ वर्ष के वनवास का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट है कि लेखक पूर्ण रामकथा से परिचित था।

इन तीनो को छोडकर सीताहरण तथा फलस्वरूप राम-रावण-युद्ध अन्य सभी रामकथाओ की मुख्य आधिकारिक कथावस्तु ही है। इसके वर्णन मे पर्याप्त मात्रा मे विभिन्नता आ गई है। प्रस्तुत परिच्छेद मे पहले सीताहरण के विभिन्न कारण दिये गए है। अनन्तर इस घटना के विभिन्न रूपो का निरूपण किया गया है, और अत मे माया-सीता के विकास की रूपरेखा अकित की गई है।

क। सीताहरण के कारण

४८३ प्रचलिति वाल्मीकि रामायण मे शूर्पणखा के विरूपण को सीताहरण का मूल कारण माना गया है। विरूपित शूर्पणखा खर-सेना की पराजय देखकर लका के लिए प्रस्थान करती है तथा रावण को जनस्थान के विनाश तथा सेना-सहित खरदूषण

---

१ दे० भागवत द्विवेदी कृत "भक्त शबरी" (मानस सघ, रामवन, स० १९९२) पृ० ४ तथा जी० ग्रियर्सन, ज० रॉ० ए० सो० १९१०, पृ० २७५।

है—अपहृता सीता त्वत्तो मरणकांक्षया (सर्ग ५,-४३)। साथ-साथ यह भी माना गया है कि रावण ने सीता को लका ले जाकर माता के समान उनकी रक्षा की थी—लंकामानीय यत्नेन मातेव परिरक्षिता (सर्ग ५, ५४)। यह सामग्री केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलती है किन्तु अन्य पाठो मे रावण-कुभकरण सवाद के अन्तर्गत (जो दाक्षिणात्य पाठ मे विद्यमान नही है) रावण कहता है कि मै विष्णु के हाथ से मरकर मुक्ति प्राप्त करना चाहता हूँ—निहतो गन्तुमिच्छामि तद्विष्णो. परमं पदम् (गौ० रा० ६, ४१, २५, प० रा० ६, ४२, २४)।

परवर्ती राम-साहित्य मे प्रायः सनत्कुमार-रावण का उपर्युक्त सवाद उद्धृत किया जाता है। अथवा यह माना गया है कि मोक्षप्राप्ति के उद्देश्य से रावण ने सीता का अपहरण किया था, उदाहरणार्थ—रामतापनीय उपनिषद् (४, १७), अध्यात्म रामायण (३, ५, ६०, ७, ३, ४०; ७, ४, १०), आनन्द रामायण (१, ११, २४४, १, १३, १२०-१२६), पद्मपुराण (६, २६६, २५५), रामचरितमानस (३, २३, ४), भावार्थ रामायण (६, २३), वलरामदास रामायण, प्रेमानन्द कृत रण-यज्ञ। शिवपुराण के अनुसार रावण ने पाताल मे विष्णु से प्रार्थना की थी कि तुम्हारे हाथ से मेरी मृत्यु हो—त्वद्धस्ताद् भगवन् मृत्युर्ममास्तु।[1]

४८६ सीताहरण के कई परोक्ष कारणो[2] का भी उल्लेख मिलता है। रामावतार के कारणो के प्रसग मे विष्णु को दिए हुए भृगु, वृन्दा और नारद के शापो की चर्चा हो चुकी है, उन शापो के फलस्वरूप विष्णु को मनुष्य वनकर पत्नी-वियोग का दुख उठाना पडा, अत. ये शाप सीताहरण के परोक्ष कारण माने जा सकते है (दे० ऊपर क्रमश. अनु० ३७०,३७२, ३७३)। लक्ष्मी के प्रति नारद के शाप का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३७३)। वह्निपुराण (पृ० १७४) मे लक्ष्मी के प्रति पृथ्वी के शाप की कथा इस प्रकार है—किसी दिन ब्रह्मा तथा पृथ्वी विष्णुलोक गये थे। उनके आगमन के समय विष्णु लक्ष्मी के साथ शयन कर रहे थे, जिससे लक्ष्मी ने उनका सत्कार नहीं किया। इस पर पृथ्वी ने लक्ष्मी को यह कहकर शाप दिया कि पति से तुम्हारा वियोग होगा।[3]

---

१ दे० शिवपुराण, गणपतिकृष्ण जी प्रेस, धर्मसहिता, अध्याय १३। रावण की मुक्ति-प्राप्ति के विषय मे दे० आगे अनु० ५९९।

२ इसी तरह सीतात्याग के विषय मे भी विभिन्न-परोक्ष कारणो की कल्पना कर ली गई है। दे० अनु० ७२५-७२६।

३ इसी श्रेणी मे देवताओ को प्रदत्त महादेव का यह वरदान रखा जा सकता

(दे० आगे अनु० ६३१–६३२)। श्याम देश की एक रामकथा मे शूर्पणखा की दो पुत्रियो का उल्लेख है, जिनका लक्ष्मण ने वध किया था (दे० नीचे अनु० ४६३)।

४८५ **महावीरचरित** से लेकर अनेक राम नाटको तथा अन्य रामकथाओ मे रावण **सीतास्वयवर** के समय से ही सीता को पत्नीस्वरूप चाहता है। वह दूत को भेजता है, अथवा स्वय सीता के स्वयवर मे आता है (दे० ऊपर अनु० ३६६)। इन रामकथाओ मे प्राय शूर्पणखा के विरूपण की कथा भी मिलती है, लेकिन ऐसे अनेक वृत्तान्त मिलते हे जहाँ स्वयवर का ही उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ—अनर्घराघव, वाल-रामायण, महानाटक, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८। राजशेखर के वाल-रामायण मे रावण का विरह प्रधान वर्ण्य विपय वन गया है। आनन्द रामायण मे उपर्युक्त तीनो कारणो का उल्लेख है।

४८६. गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** की रामकथा मे न तो शूर्पणखा के विरूपण का और न सीतास्वयवर के अवसर पर रावण का उल्लेख किया गया है। राम-सीता-विवाह के पश्चात् **नारद** रावण के पास जाकर सीता के अद्वितीय सौदर्य का वर्णन करते है जिससे रावण सीता को हर लाने का सकल्प करता है।

रामलिगामृत मे शूर्पणखा के विरूपण के वाद ही नारद रावण से सीता के सौदर्य की प्रसशा करता है (दे० सर्ग ६)।

४८७ १८वी शताब्दी के एक वृत्तान्त के अनुसार सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट मे पहुँचकर राम ने अपने वहुत से शिष्यो को पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिखाया था। उन्होने **सिहलद्वीप** मे भी अपने **सिद्धांत का प्रचार** करना चाहा, लेकिन रावण ने इसका विरोध किया और राम को पराजित कर सीता को उनसे छीन लिया। वाद मे विभीषण की सहायता से राम ने ब्रह्मा द्वारा भेजी हुई सेना से रावण को जीत लिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १२)।

४८८. राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् सीताहरण का एक और कारण दिया गया है। दाक्षिणात्य पाठ के उत्तरकाण्ड के ३७वे सर्ग के वाद जो प्रक्षिप्त सर्ग मिलते हैं, उनमे सीताहरण के कारण के विषय मे निम्नलिखित कथा दी गई है। रावण किसी दिन सनत्कुमार से मिलकर उनसे जान लेता है कि जो दैत्य, दानव, राक्षस आदि हरि द्वारा मार डाले जाते है वे उनका पद प्राप्त कर लेते है, क्योंकि उनका क्रोध भी वरदान का रूप धारण कर लेता है—**क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्यः** (सर्ग २, २२)। इसपर रावण विचार करने लगा कि मेरा तथा हरि का सघर्ष किस प्रकार छिड सकता है। तब मुनि ने उसको समझाया कि त्रेतायुग मे नारायण राम का रूप धारण कर लेंगे तथा अपने पिता की आज्ञा से वह लक्ष्मी-रूपी सीता के साथ वन मे निवास करेंगे। अतः रावण विष्णु के हाथ से मारे जाने की इच्छा से ही सीता का अपहरण करता

आगमिष्यति मे भर्ता वन्यमादाय पुष्कलम् ।
रुरुन्गोधान्वराहांश्च हत्वाऽऽदायामिष बहु ॥२३॥ (सर्ग ४७)

किष्किंधा काण्ड मे लक्ष्मण हनुमान ने राम की कथा सुनाते हुए सीताहरण के विषय मे उतना ही कहते है कि एक कामरूपी राक्षस ने आश्रम मे राम की भार्या का अपहरण किया—रक्षसापहृता भार्या रहिते कामरूपिणा (४, ४, १४)। गौडीय पाठ मे इस स्थान पर लिखा है—रक्षसापहृता भार्या छलेनास्य महाद्युतेः (४, ४, १३)।

श्री वैद्य के तर्कों की पुष्टि के लिये उन थोडी सी रामकथाओं का भी सहारा लिया जा सकता है, जिनमे कनक-मृग का उल्लेख नही किया गया है। अनामक जातकम् (३ री श० ई०) मे ऐसी कथा मिलती है कि जब राजा फल लेने चले गये थे, तब एक दुष्ट नाग ने रानी का अपहरण किया था। पउमचरियं (४थी श० ई०) के अनुसार खरदूषण अपनी पत्नी चन्द्रनखा से अपने पुत्र का वध सुनकर वन मे उसे देखने गया तथा घर लौटकर इसका समाचार रावण के पास भेज दिया। रावण के विलब करने पर उसने १४००० योद्धाओ के साथ वन की ओर प्रस्थान किया। यह सेना आते देखकर लक्ष्मण ने राम से कहा—"मेरे रहते आपको लडना उचित नही है। आप यहाँ सीता की रक्षा करे। जिस समय मैं शत्रुओ से घिर कर सिंहनाद करूँ, उस समय आप अवश्य ही जल्दी आना।" लक्ष्मण राक्षसो की सेना का सामना कर रहे थे कि रावण पुष्पक पर आ पहुँचा तथा सीता को देखकर उन पर आसक्त हुआ। 'अवलोकन' नामक विद्या से उसने तुरन्त सीता, राम और लक्ष्मण को जान लिया तथा सिंहनाद वाली वात भी उसने जान ली। अत रावण ने सिंहनाद किया जिसे सुनकर राम उनकी सहायता करने चले गये। रावण ने सीता को पुष्पक पर रख दिया तथा जटायु को भूमि पर गिराकर लका की ओर प्रस्थान किया। इतने मे राम लक्ष्मण के पास पहुँचते है तथा लक्ष्मण द्वारा वापस भेजे जाते है। राम लौटकर तथा झोपडी को खाली पाकर मूर्च्छा खाते है (दे० पर्व ४४)। कूर्म पुराण (नवी श० ई०) मे भी रावण द्वारा अकेली वन मे टहलती हुई सीता के अपहरण का उल्लेख मिलता है .

चरंती विजने वने...सीता गृहीत्वा
(उत्तर विभाग, अध्याय ३४)

उपर्युक्त अपेक्षाकृत प्राचीन वृत्तान्तो के अतिरिक्त अनेक विदेशी तथा पाश्चात्य वृत्तान्त मिलते है जिनमे कनक-मृग का निर्देश नही पाया जाता है। सिंहली रामकथा के अनुसार राम की अनुपस्थिति मे सीता का हरण राजधानी से ही होता है। अनाम के राम-चरित मे दशानन सेना-सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करता है, और विजयी होकर सीता को अपने साथ ले जाता है।

इसके अतिरिक्त रामकथा से सीधा सबध रखने वाले तीन अन्य कारणो का भी उल्लेख मिलता है। इनमे से सबसे व्यापक सीता के प्रति लक्ष्मण का शाप है। इसका मूलस्रोत वाल्मीकि रामायण मे सुरक्षित लक्ष्मण की इस उक्ति मे देखना चाहिए—आज विनष्ट होने वाली तुम्हे धिक्कार है, क्योकि तुम मुझ पर शका कर रही हो, **धिक्त्वामद्य विनश्यती यन्मामेव विशंकसे** (३,४५, ३२)। भट्टिकाव्य मे शाप का रूप इस प्रकार है—**शत्रुहस्तं त्व यास्यसि** (दे० सर्ग ५, ६०)। लक्ष्मण के इस शाप का निर्देश रामायण ककविन (सर्ग ५), देवीभागवत पुराण (३, २८, ४६), अध्यात्म रामायण (३, ७, ३६), बलरामदास रामायण आदि मे भी मिलता है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ६२) के अनुसार शूर्पणखा ने राम से ठुकराये जाने पर उनको यह शाप दिया कि तुम्हारी पत्नी का हरण होगा।

कृत्तिवास के रामायण मे राम-सीता-विवाह के अवसर पर **चन्द्रमा का नृत्य** वर्णित है। इस नृत्य के कारण मुहूर्त का ध्यान नही रखा गया था, जिससे बाद मे सीताहरण सभव हो सका (दे० ऊपर अनु० ४००)।

ख। सीताहरण का मूलरूप

४६० चिन्तामणि विनायक वैद्य का अनुमान है कि वाल्मीकिकृत आदि-रामायण मे सीताहरण के वृत्तान्त मे **कनक-मृग** का कोई उल्लेख नहीं था। यह वृत्तान्त अद्भुत रस की लोकप्रियता के कारण बाद मे रामायण मे रखा गया है। उनका तर्क यह है कि यदि कनकमृग की घटना का वर्णन सचमुच आदि रामायण मे था तो सीता-रावण-सवाद अस्वाभाविक प्रतीत होता है। यदि सीता राम के विषय मे इतनी चिन्तित थी कि उन्होने लक्ष्मण को अत्यन्त कटु शब्द सुनाकर उन्हे राम की सहायता के लिए भेजा था, तो उन्होने राम के विषय मे अपनी आशका का उल्लेख रावण से क्यो नही किया था ? यदि उत्तर दिया जाय कि उनको रावण पर विश्वास नही था, इसका प्रत्युत्तर यह है कि यदि सीता रावण पर विश्वास नही करती थी, तो उन्होने अपनी आत्मकथा विस्तारपूर्वक क्यो सुनाई होती।[१] वास्तव मे सीता-रावण-सवाद के अन्तर्गत यह स्पष्ट शब्दो मे कहा गया है कि सीता राम की प्रतीक्षा कर रही थी, जो लक्ष्मण के साथ मृगया खेलने गये थे—**ततः सुवेषं मृगयागत पतिं प्रतीक्षमाणा सहलक्ष्मणं तदा** (३, ४६, ३८)। इसके अतिरिक्त सीता रावण से कहती है कि मेरे पति मृग, वराह आदि मारकर बहुत मास लिये लौटनेवाले है

है—**"उत्पत्स्यति हितार्थ वो नारी रक्षःक्षयावहा"**। राक्षसियो के विलाप के अतर्गत इसका उल्लेख किया गया है (दे० रामायण ६, ९४, ३५)।

१ दे० सी० वी० वैद्य : दि रिडल ऑव दि रामायण, पृ० १४४।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१. [illegible]

२. [illegible]

पाश्चात्य वृत्तान्तो न० ६, ६, ११ तथा १५ मे भी कनक-मृग का उल्लेख नही मिलता। वृत्तान्त न० ११ के अनुसार राम एक पक्षी का शिकार करने गये थे और देर होने पर सीता ने लक्ष्मण को उनकी खोज मे भेज दिया था। वृत्तान्त न० १५ मे कहा गया है कि जब राम अपने किसी उपद्रवी सामन्त से युद्ध करने गए थे तब भिखारी का रूप धारण कर रावण के नौकर ने सीता को अपने मालिक के लिए हर लिया था। कथासरित्सागर (६, १, ६२) मे इतना ही लिखा है कि रावण ने माया द्वारा अर्थात् छल से सीता का अपहरण किया था—अहरत् सीतां मायया रावणः।

४६१ महाभारत के रामोपाख्यान मे सीताहरण के समय रावण के रथ का निर्देश नही मिलता। वाल्मीकिकृत रामायण के एक स्थल से भी यह आभास मिलता है कि सम्भवत मूल-कथा मे रथ का उल्लेख नही था। किष्किन्धा काड मे सम्पाति अपने पुत्र सुपार्श्व का वृत्तान्त हनुमान आदि वानरो को सुनाता है। इसके अनुसार सुपार्श्व महेन्द्र की घाटी को रोकते हुए (महेन्द्रस्य गिरेर्द्वारमावृत्य दे० रा० ४, ५६, १२) नीचे के मार्ग पर पहरा दे रहा था। उस समय उसने किसी को देखा जो एक सुन्दर स्त्री को लिए जा रहा था। सुपार्श्व ने उन दोनों को अपने पिता को देने का निश्चय किया लेकिन उस मनुष्य ने विनीत भाव से मार्ग माँगा और सुपार्श्व ने उसे जाने दिया .

तत्र कश्चिन्मया दृष्टः सूर्योदयसमप्रभाम्।
स्त्रियमादाय गच्छन्वै भिन्नांजनचयोपमः ॥१४॥
सोऽहमभ्यवहारार्थं तौ दृष्ट्वा कृतनिश्चयः।
तेन साम्ना विनीतेन पंथानमनुयाचितः ॥१५॥

ग। कनक मृग

४६२. प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे कनक-मृग का वृत्तान्त इस प्रकार है (दे० सर्ग ३५-४६)। विरूपित शूर्पणखा से खर-वध का समाचार तथा सीता के सौंदर्य की प्रशसा सुनकर रावण मारीच[1] के पास जाता है तथा उससे निवेदन करता है कि वह कनकमृग का रूप धारण कर सीताहरण मे सहायक बने। मारीच इस प्रस्ताव को राम के पराक्रम के कारण ही अस्वीकार करता है। वह इस पराक्रम के विषय मे दो आप-बीती घटनाओ का वर्णन भी करता है। विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा करते समय राम ने बाण मार कर उसे शतयोजन की दूरी पर समुद्र मे फेंक दिया था (दे० अनु० ३८६)। बाद मे मारीच ने दो राक्षसो के साथ मृग का रूप धारण कर

१ शूर्पणखा के आगमन के पूर्व मारीच से रावण की भेंट का प्रक्षिप्त वर्णन दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलता है (दे० अनु० ४५६)।

सेरीराम के अनुसार सीताहरण के ठीक पहले राम अलौकिक शक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से यज्ञ कर रहे हैं। इस समय गागकनासिर नामक राक्षस काक बनकर राम का यज्ञ भंग करने आता है और राम द्वारा वध किया जाता है। तब रावण गागकनासिर के दो पुत्रों को मृग का रूप धारण करने का आदेश देता है (एक सुवर्ण और एक रजत)।

४९३. ब्रह्मचक्र (दे० अनु० ३२८) में सीताहरण का एक सर्वथा नवीन रूप मिलता है। रावण की बहन शूर्पणखा अपनी दो पुत्रियों के साथ लंका तथा किष्किन्धा की सीमा की रखवाली करती है। किसी दिन वे राम, लक्ष्मण और सीता को देखकर उन पर आक्रमण करती है। लक्ष्मण शूर्पणखा की दोनों पुत्रियों का वध करते हैं तथा राम शूर्पणखा को हटने को विवश करते हैं। शूर्पणखा लका जाती है तथा स्वय कनक-मृग बनकर[1] सीताहरण मे रावण की सहायता करती है। राम कनक-मृग का शिकार करने जाते हैं। लक्ष्मण मृग की पुकार सुनकर तथा राम को जोखिम मे समझकर सीता को नगथोरानी (पृथ्वी) को सौंप देते हैं और चले जाते हैं। रावण सीता को ले जाने का प्रयत्न करता है किन्तु पृथ्वी देवी सीता के पैर पकड कर रोक लेती हैं, जिससे रावण कुछ नहीं कर सकता है। राम, लक्ष्मण को देखकर सीता के विषय मे चिन्ता प्रकट करते हैं किन्तु लक्ष्मण उनको आश्वासन देते हैं कि मैंने उनको पृथ्वी देवी की रक्षा मे छोड दिया है। इसपर राम कहते हैं कि मैं पृथ्वी पर विश्वास नहीं करता। राम के इन शब्दों के विषय मे जानकर पृथ्वी देवी सीता को छोड देती है और रावण उनको लका ले जाता है।

४९४ कनकमृग का एक परिवर्तित रूप इस प्रकार है—राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण आकर सीता को विश्वास दिलाता है कि अब अयोध्या जाना है। इसपर विश्वास करके सीता अपने आप रथ पर चढती हैं। कथा का यह रूप नृसिंह

---

१ बर्मा मे गाम्बी (शूर्पणखा) कनक-मृग का रूप धारण कर लेती है। सी० कोलमैन (दि मिथॉलॉजी ऑव दि हिन्दूस पृ० २४) ने एक कथा सुनी थी जिसके अनुसार रावण स्वय कनकमृग बन गया था। सेरीराम का भी एक ऐसा रूप भी मिलता है जिसके अनुसार रावण स्वय कनकमृग बन जाता है और राम को उनके राजमहल से दूर ले जाता है और तब सीता के पास लौटकर उनको अपने साथ भाग निकलने के लिए राज़ी करता है। बाद मे उसको पता चलता है कि सीता मेरी पुत्री है वह उनको अपने महल मे सुरक्षित रखता है। अत मे हनुमान सीता को फिर राम के पास पहुँचाते हैं। दे० ज० रा० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रँच, भाग ५५, पृ० १-२४।

का अनुकरण करते हुए चिल्लाता है—हा सीते लक्ष्मण। राम मायावी राक्षस को मृत छोडकर आशका करते हुए शीघ्रता से लौटते हैं।

उधर सीता मारीच की पुकार सुनकर तथा राम को संकट मे समझकर लक्ष्मण से अनुरोध करने लगती है कि वह अपने भाई की सहायता करने जायँ। लक्ष्मण पहले अस्वीकार करते हैं किन्तु सीता के कटु शब्द (दे० ऊपर अनु० ४६२) तथा आत्महत्या की धमकी सुनकर वह चले जाते है।[1] अब रावण परिव्राजक के रूप में सीता के पास पहुँचकर उनसे आतिथ्य-सत्कार ग्रहण करने के पश्चात् अपना परिचय देता है तथा सीता के सामने लका की महारानी बनने का प्रस्ताव रख देता है। सीता का कटु उत्तर सुनकर वह अपने राक्षस-रूप मे प्रकट हो जाता है तथा उनको अपने रथ[2] पर रखकर लका की ओर प्रस्थान करता है।

सीताहरण का यह रूप न केवल भारतीय रामकथा-साहित्य मे सबसे अधिक व्यापक है किन्तु विदेशो मे भी मिलता है। तिब्बत, खोतान, हिन्देशिया, स्याम और बर्मा मे कनक-मृग की कथा प्रचलित है।

महानाटक (दमोदर, ३, २७) के अनुसार राम तथा लक्ष्मण कनकमृग का शिकार करने के लिये साथ-साथ चले जाते हैं। **उदात्तराघव** मे सीताहरण का रूप इस प्रकार है। लक्ष्मण कनक-मृग को मारने चले जाते है तथा रावण आश्रम के कुल-पति का रूप धारण कर राम और सीता के पास पहुँचता तथा राम की निन्दा करता है क्योकि उन्होने तरुण लक्ष्मण को भेज दिया है। उसी समय एक अन्य छद्म-वेषी राक्षस आकर यह समाचार देता है कि कनकमृग राक्षस मे बदलकर लक्ष्मण को ले जा रहा है। इसपर राम सीता को रावण की रक्षा मे छोडकर लक्ष्मण की सहायता करने जाते हैं।

---

१ लक्ष्मण के शाप के विषय मे अनु० ४८६ देखे।

२ जैन रामकथाओ मे पहले-पहल सीताहरण के समय पुष्पक का उल्लेख है (दे० अनु० ४६०)। भरत के प्रति हनुमान द्वारा कथित राम-चरित मे दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार पुष्पक की चर्चा है (दे० ६, १२६, २६), किन्तु अन्य पाठो के समानान्तर सर्गो (गौ० रा० सर्ग ११०, प० रा० सर्ग १०७) मे ऐसा कोई निर्देश नही है। बहुत सी परवर्ती रामकथाओ मे सीताहरण के प्रसग मे पुष्पक का उल्लेख है। उदाहरणार्थ नृसिह पुराण (अनु० ४६४)। बलरामदास रामायण मे रावण रथ के टूट जाने के बाद पुष्पक का स्मरण करता है। तब वह आता है और रावण उस पर सीता को लका ले जाता है।

४६५ भासकृत प्रतिमानाटक में एक सर्वथा नवीन कथानक पाया जाता है। दशरथ के वार्षिक श्राद्ध के एक दिन पूर्व राम और सीता सोच रहे थे कि श्राद्ध कैसे योग्य रीति से मनाया जाए। इस पर रावण परिव्राजक का रूप धारण कर आता है और अपना परिचय देकर भिन्न-भिन्न शास्त्रों का उल्लेख करता है जिनका उसने अध्ययन किया है। इनमें से एक है प्राचेतसं श्राद्धकल्पम्। राम श्राद्ध के विषय में जिज्ञासा प्रकट करते हैं। तब रावण कहता है कि हिमालय में रहने वाले काञ्चनपार्श्व मृग से पितृ विशेष रूप से प्रसन्न हो जाते हैं। उसी क्षण मारीच उस प्रकार का मृग बनकर दिखाई देता है। लक्ष्मण उस समय आश्रम के कुलपति का स्वागत करने गए थे। अतः सीता को रावण के पास छोड़कर राम मृग के पीछे चले जाते हैं। तब रावण अपना रूप धारण कर सीता को लंका ले जाता है (दे० अंक ५)।

४६६ कृत्यारावण में सीताहरण का जो रूप मिलता है, उसका प्रधान उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि लक्ष्मण पर झूठा अभियोग लगाने के दोष से सीता को बचाया जाय। कनकमृग के पीछे राम के चले जाने के बाद शूर्पणखा तपस्विनी गौतमी का रूप धारण कर सीता को कहीं दूर ले जाती है। तब वह सीता के रूप में लक्ष्मण के पास लौटकर उनको अपने कटु शब्दों द्वारा राम की सहायता करने जाने के लिए बाध्य करती है (अंक १)। इतने में रावण सीता के पास आकर उनको यह कहकर पुष्पक पर चढ़ने के लिए विवश कर देता है—यदि तुम स्वेच्छा से पुष्पक पर नहीं चढ़ोगी तो मैं आश्रम के सब तपस्वियों का सिर काट दूंगा (अंक २)।

४६७ दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में सीताहरण का वर्णन इस प्रकार है—रावण स्वयं दो सिर वाले मृग का रूप धारण कर लेता है। सीता उसे देखकर उसके चमड़े के लिए इच्छा प्रकट करती है। राम मृग के पीछे दूर तक निकलकर अंत में उसे मार डालते हैं। उसी क्षण रावण का जीव एक साधु के शरीर में प्रवेश करता है। वह साधु पर्णशाला के पास आकर लक्ष्मण से कहता है 'तुम्हारा भाई वैरियों से घिरा हुआ है, उसकी सहायता करने जाओ'। सीता के अनुरोध करने पर लक्ष्मण जाते हैं और रावण सीता को लेकर लंका की ओर प्रस्थान करता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ और ४)।

४६८. वाल्मीकि रामायण में सीता को लक्ष्मण तथा जटायु की रक्षा में छोड़कर राम मृग को मारने जाते हैं। ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि आदि रामायण में सीताहरण के पूर्व सम्भवतः जटायु से भेंट नहीं हुई थी। आगे चलकर जटायु के अतिरिक्त सीता की रक्षा के प्रबन्ध के विषय में कुछ नवीन सामग्री रामकथाओं में आ गयी है।

वाल्मीकि रामायण में माना गया है लक्ष्मण सीता के कटु शब्द सुन कर (दे०

पुराण, बृहद्धर्मपुराण, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, आश्चर्य-चूडामणि नाटक तथा दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे पाया जाता है।

नृसिंह पुराण के अनुसार रावण सन्यासी के रूप मे आकर सीता से कहता है—भरत आ गए है और उन्होने आपको ले जाने के लिए मुझे भेजा है। राम भी मृग को फँसाकर अयोध्या जा रहे है। यह सुनकर सीता विमान पर चढती है। इस वृत्तान्त में पाठक का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया गया है कि रावण ने सीता का स्पर्श नही किया (दे० अध्याय ४६)। बृहद्धर्मपुराण मे रावण भिक्षु के रूप मे सीता के पास आकर कहता है कि कौशल्या आपको देखने के लिए उत्सुक है (दे० पूर्वखड, अध्याय १६)। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त (१६०६ ई०) मे रावण ऋषि के वेष मे एक रथ के साथ सीता के पास आता है। इस रथ पर अयोध्या के नागरिको का रूप धारण करने वाले राक्षस बैठते है। रावण कहता है, हम भरत की ओर से आए है। राम का राज्याभिषेक होने वाला है और राम ने स्वयं अयोध्या के लिए प्रस्थान किया है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ८५)। आश्चर्य-चूड़ामणि नाटक मे राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण और उसका सारथि क्रमशः राम[1] और लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता के पास पहुँचते है। रथ को दिखलाकर लक्ष्मण (सारथि) राम (रावण) से कहता है—'भरत का राज्य सकट मे है। उनकी सहायता करने के लिए तपस्वियो ने यह रथ भेजा है।' अनन्तर तीनो रथ पर चले जाते हैं। उधर शूर्पणखा, सीता के वेष मे, राम के साथ बातचीत कर रही है तथा मारीच, राम के वेष मे, लक्ष्मण के साथ। गुणभद्रकृत जैन उत्तरपुराण मे वनवास का उल्लेख नही मिलता। राम सीता के साथ बनारस मे निवास करते है। नगर के पास ही चित्रकूट नामक उपवन से सीता का हरण होता है। इस वृत्तान्त की एक और विशेषता यह है कि इसमें लक्ष्मण का उल्लेख नही किया गया है। मृग को मारने के लिए राम के चले जाने के बाद रावण राम के रूप मे सीता के पास आकर कहता है—'मैंने मृग को फँसाया है और उसे बनारस भेजा है। अब घर जाने का समय आ गया है।' यह सुनकर सीता रावण के पुष्पक पर बैठ जाती है (सीता को धोखा देने के लिए पुष्पक ने सीता की पालकी का रूप धारण कर लिया था)।

---

१ परिव्राजक (भिक्षु, सन्यासी, ऋषि आदि) तथा राम के रूप के अतिरिक्त रावण के और छद्मरूप मिलते हैं। तिब्बती रामायण मे रावण पहले हाथी का और इसके बाद घोडे का रूप धारण कर लेता है। हिंदेशिया के एक वृत्तान्त मे रावण पहले एक सुवर्ण अज के रूप मे आता है। दे० ज० रो० ए० सो०, स्ट्रेट्स ब्रैंच० १६१०, पृ० १५।

४९९ वाल्मीकि रामायण के अनुसार मारीच मरण के पूर्व अपना राक्षस रूप धारण कर लेता है। राम-भक्ति की प्रेरणा से लिखित परवर्ती राम साहित्य मे मारीच की सायुज्य-मुक्ति की प्राप्ति का प्राय: उल्लेख मिलता है। अध्यात्म रामायण के अनुसार मारीच के शरीर मे निकला हुआ तेज सब के देखते-देखते राम ही मे समा गया (दे० ३, ७, २०)। श्रीमद्देवीभागवत पुराण मे मारीच को वैकुण्ठ के दोनो द्वारपालो का किंकर माना गया है, राम द्वारा वध किए जाने के बाद वह वैकुण्ठ लौटता है (दे० ९, १६, ४०)।

५००. सीता का हरण करने के बाद रावण को जटायु का सामना करना पडा।[1] लका की शेष यात्रा मे एक ही घटना उल्लेखनीय है। किसी गिरिशृग पर (सुग्रीवादि) पाँच वानरो को देखकर सीता ने रावण की आँख बचाकर अपना उत्तरीय तथा अपने आभूषण उनके मध्य फेक दिए।[2]

लका पहुँचकर रावण ने सीता को अपने अन्त.पुर मे राक्षसियो की रक्षा मे छोड दिया तथा आठ[3] गुप्तचरो को जनस्थान भेज दिया कि वे राम का पता लगाकर उनकी हत्या करने का प्रयत्न करे (सर्ग ५४)। बाद मे रावण ने सीता का मन विचलित करने के उद्देश्य से उनको लका का वैभव दिखाया। सीता के दृढ रहने पर रावण ने उन्हे एक वर्ष का समय दे दिया, यदि वह इस अवधि के अन्त मे स्वेच्छा से रावण के पास नही आएँगी तो रावण उनको खा जायेगा। तब उसने भयकर राक्षसियो को बुलाकर सीता को अशोकवन मे ले जाने का आदेश दिया (सर्ग ५५-५६)।

काश्मीरी रामायण (३, २४) का वृत्तान्त इस प्रकार है। रावण ने सीता को एक वाटिका मे रखकर उनकी रक्षा का भार मदोदरी को सौप दिया। मदोदरी आकर

---

१ दे० ऊपर अनु० ४७०। माधव कदली कृत असमिया रामायण (४, २५), असमिया गीति रामायण तथा कृत्तिवास (३, २१) के अनुसार विन्ध्याचल पर रहने वाले सुपार्श्व ने रावण को रोकना चाहा किन्तु रावण ने निवेदन किया—मुझे जाने दीजिये। आपसे कोई वैर नही है। जिसने मेरी बहन का अपमान किया है, उसी की पत्नी को ले जा रहा हूँ (दे० अनु० ४९१)।

२. दे० ३, ५४, १-२। किष्किन्धा काण्ड (सर्ग ६) मे सुग्रीव राम को ये आभूषण दिखाते है। तत्वसग्रह रामायण (३, १५) के अनुसार कुछ वानरियाँ सीता की विवशता देखकर उनकी हँसी करती थी, इस पर सीता ने उनको यह शाप दिया कि उनकी छाती सदा अनाच्छादित रहेगी।

३ आनद रामायण (१, ७, १३०) मे इनकी सख्या १६ है, वे कबध द्वारा खाये जाते हैं।

ऊपर अनु० ४६२) राम की सहायता करने गये। बहुत-सी परवर्ती रचनाओ मे लक्ष्मण प्रस्थान करने से पहले सीता की रक्षा के लिये कुटी के चारों ओर धनुष से रेखा खीचते है, और देवताओ को शपथ खाकर कहते हैं कि जो कोई इसके भीतर घुसेगा उसका सिर फट जायेगा। बाद मे छद्मवेषी रावण के अनुरोध करने पर सीता उसे भोजन देने के लिये हाथ रेखा के बाहर बढाती हैं और रावण उनको खीच लेता है। इस प्रकार की कथा खोतानी रामायण, सेरीराम, हिकायत महाराज रावण, स्याम तथा बर्मा की रामकथा (तीन रेखाये), मधुसूदन[1] द्वारा सम्पादित महानाटक (अक ३, ६५), तेलुगु द्विपद रामायण (३, १८, सात रेखाये), कृत्तिवास रामायण, आनन्द रामायण (१, ७, ६८), भावार्थ रामायण (३, १५), सूरसागर (नवाँ स्कन्ध, पद ५०३ नागरी प्रचारिणी सभा सस्करण), रामचरितमानस (६, ३६, २), असमिया गीतिरामायण, रामचन्द्रिका (१२, १८) तथा पाश्चात्य वृत्तान्तो (न० ३, ४ और १३) मे पाई जाती है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे कहा गया है कि जब रावण रेखा को पार करना चाहता है, अग्नि की लपटे उठकर उसको भीतर घुसने से रोकती हैं। सारलादास के उडिया महाभारत के अनुसार ये तीन रेखाये ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव (के प्रतीक) हैं।

मधुसूदन के महानाटक (३, ६६-७२) मे रावण सीता को तुलसी देना चाहता है किन्तु सीता रेखा का उल्लघन करना अस्वीकार करती हैं, इस पर रावण रेखा पार कर सीता को ले जाता है। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार सीता रावण को एक पुष्प अर्पित करने के लिये अपना हाथ रेखा के बाहर बढाती है। धर्मखण्ड (अध्याय ८१) तथा तत्त्वसग्रह रामायण (३, १५) मे सीता अपने पति के कुशलक्षेम के विषय मे चिन्तित है किन्तु रावण उनकी हस्तरेखा देखकर ही उनको उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है।

बिर्होर नामक आदिवासी जाति की रामकथा मे लक्ष्मण जाने के पहले यह कहकर सीता को अभिमन्त्रित राई के दाने देते हैं—'यदि कोई आए तो उस पर दाने फेंकना। एक दाना फेकने से वह एक घण्टा तक मूर्च्छित रहेगा। दो दाने फेकने से वह दो घण्टे तक मूर्च्छित रहेगा, इत्यादि। रावण के आने पर सीता ने एक दाना फेक दिया और वह एक घण्टे तक मूर्च्छित रहा। इसके बाद सीता ने पुनः कई बार एक दाना फेका। अन्त मे रावण ने कहा—'इतना कष्ट क्यों करती हो। सब दाने एक साथ फेक दो जिससे मैं मर जाऊँ।' सीता ने ऐसा ही किया और रावण भस्मीभूत हो गया। लेकिन भस्म से उठकर रावण सीता के बालो को पकड कर उनको ले गया।

---

१ दामोदर के संस्करण (३, २७) मे राम स्वय यह रेखा खीचते हैं किन्तु एक अन्य स्थल (४, ३) पर वह लक्ष्मण द्वारा खीची हुई मानी जाती है।

सुन्दरकाण्ड की घटनाओं के पूर्व सीता के लंका-निवास के विषय में वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग में निम्नलिखित कथा मिलती है।[1] सीताहरण के पश्चात् ब्रह्मा ने इन्द्र को बुला कर उनको आदेश दिया कि सीता के पास अन्न ले जाकर उनके प्राण बचा दें। अतएव इन्द्र और निद्रा लंका चले गए। निद्रा ने राक्षसों को सम्मोहित किया जिससे इन्द्र सीता के पास जा सकें। इन्द्र ने सीता को राम के आगमन का आश्वासन देकर उनको क्षुधा-तृष्णा मिटानेवाला पायस खिलाया। यह वृत्तान्त थोड़े परिवर्तनों के साथ बृहद्धर्म पुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय १९), श्रीमद्देवीभागवत पुराण (३. ३०), आनन्द रामायण (१, ७), कृत्तिवास रामायण (३. २३), काश्मीरी रामायण (३, २३) आदि में भी मिलता है। श्रीमद्देवीभागवत तथा काश्मीरी रामायण के अनुसार इन्द्र ने सीता को अमृत पिलाया था।

इस कथा की प्रक्षिप्तता असंदिग्ध है। सुन्दरकाण्ड में सीता को 'उपवासकृशा' (५. १८) कहा गया है। जैनी रामायणों के अनुसार सीता ने यह प्रण किया था कि जब तक पति की कुशल वार्ता न मिल जाए, मैं भोजन नहीं करूँगी (पउमचरियं ४६. २४; गुणभद्र कृत उत्तरपुराण ६८, २२४)।

घ। छाया-सीता

५०१. वाल्मीकि रामायण में सीताहरण का जो चित्र खींचा जाता है वह किंचित् अशोभन कहा जा सकता है। रावण एक हाथ से सीता के बाल और दूसरे हाथ से उनकी जंघाओं को पकड़ कर उनको अपने रथ पर रख देता है:

अभिगम्य सुदुष्टात्मा राक्षसः काममोहितः।
जग्राह रावणः सीतां बुधः खे रोहिणीमिव ॥१६॥
वामेन सीतां पद्माक्षीं मूर्धजेषु करेण सः।
ऊर्वोस्तु दक्षिणेनैव परिजग्राह पाणिना ॥१७॥

(अरण्यकांड, सर्ग ४९)

इस वर्णन की उग्रता का निवारण करने के लिए, रामकथा-साहित्य में दो मार्ग अपनाए गए हैं। सीताहरण के वृत्तान्तों का एक ऐसा समूह मिलता है जिसमें रावण सीता का हरण करते हुए भी उनका स्पर्श नहीं करता। दूसरा मार्ग यह है कि रावण वास्तविक सीता का हरण न कर सीता की एक छाया मात्र लंका ले जाता है।

---

१. यह सर्ग दाक्षिणात्य पाठ में सर्ग ५६ के अनन्तर रखा गया है; अन्य पाठों में इसे प्रक्षिप्त नहीं माना गया है (दे० गौ० रा० तथा प० रा० सर्ग ६३)। कम्बरामायण के किष्किन्धाकाण्ड के ३४वें सर्ग में प्रस्तुत कथा का उल्लेख है, किन्तु यह सर्ग भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३७)।

अपनी पुत्री को पहचानती है जिसे उसने जन्म के बाद ही नदी मे फेकवा दिया था (दे० ऊपर अनु० ४१३)। सीता अपनी माता को अपना जीवन-वृत्त सुनाती है और दोनो मिलकर विलाप करती है।

पउमचरियं के अनुसार रावण ने सीता को पहले देवरमण उद्यान (४६, १५) और बाद मे समन्त-कुसुम उद्यान (४६,-६६) मे रख दिया था। गुणभद्र के अनुसार सीता को नन्दनवन (६८, ३०७) मे रखा गया था। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे यह माना गया है कि सीता चारो ओर से अग्नि से घिरी हुई थी, इसी कारण से रावण उनको अपने महल मे नही रख सकता था। कृत्तिवास (३, २२) के अनुसार शूर्पणखा ने अशोकवन मे सीता के पास आकर उनको मार डालने की धमकी दी थी किन्तु रावण के डर से वह कुछ कर न सकी।

हरण के पश्चात् सीता के प्रति रावण का व्यवहार समझने के लिए परवर्ती साहित्य मे कई मार्ग अपनाये गये हैं। एक के अनुसार रावण को यह शाप दिया गया कि अनासक्त पर-स्त्री के साथ सभोग करने से उसका सिर फट जाएगा (दे० अनु० ६५४)। जैनी रामायणो मे यह माना गया है कि रावण ने विरक्त पर-नारी के साथ रमण न करने का व्रत[1] लिया था। **पउमचरियं** (पर्व ४६) के अनुसार रावण मन्दोदरी के सामने स्वीकार करता है कि मैंने सीता का हरण किया है तथा यह भी कहता है कि यदि सीता मेरा तिरस्कार करती रहेगी तो मेरे प्राण नही बच सकेंगे। मन्दोदरी बलप्रयोग का परामर्श देती है जिस पर रावण उत्तर देता है कि यह मेरे व्रत के कारण असभव है। अनन्तर मन्दोदरी स्वय जाकर रावण की बात मानने के लिये सीता से अनुरोध करती है। बाद मे रावण माया की सहायता से सीता को हाथी, सिंह, बाघ, राक्षस, बेताल और सर्पो से डराता है किन्तु यह सब होते हुये भी सीता रावण की शरण नही लेती। **गुणभद्र** के उत्तर पुराण के अनुसार रावण ने हरण के समय भी सीता का स्पर्श इसीलिए नही किया था कि पतिव्रता स्त्री के स्पर्श से उसकी आकाशगामिनी विद्या शीघ्र नष्ट हो जाएगी (दे० ६८, २१३)। रावण द्वारा सीता का स्पर्श न होने के अन्य कारणो का भी उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५०२)। सेरी राम मे माना गया है कि रावण को लका मे सीता से ४० धनु दूर रहना पडता था (दे० अनु० ५२४)।

---

१. पउमचरिय के अनेक स्थलो पर इस व्रत का निर्देश मिलता है; उदाहरणार्थ पर्व १४, १५३, ४४, ४५, ४६, ३३, गुणभद्र के उत्तर पुराण मे व्रत इस प्रकार है—**नानिच्छन्ती प्रतीच्छामि**'(६८, ४८६)। बाद मे रावण ने सीता को विचलित करने की जिन युक्तियो का सहारा लिया है उनका वर्णन आगे किया जाएगा—(दे० अनु० ५४२ और ५८३)।

है और दूसरे, वास्तविक सीता अग्नि मे निवास करने जाती हैं । इन दोनो का सूत्रपात हम वाल्मीकि रामायण मे देख सकते हैं ।

लकाकाड मे सीता को विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम का एक मायामय सिर दिखलाया जाता है (सर्ग ३२) और बाद मे इन्द्रजित् वानर-सेना के सामने एक मायामयी सीता का सिर काटता है (सर्ग ८१), आगे चल कर रामकथा-साहित्य मे इस प्रयोजन का और स्थलो पर भी सहारा लिया जाता है। राजशेखर के बालरामायण में सीता और उनकी धात्रेयिका (दूध-बहन) सिंदूरिका की मूर्तियाँ बनवाकर और उनके मुँह मे सारिकाएँ स्थापित करके माल्यवान् विरही रावण का मन बहलाने का प्रयत्न करता है (अक ५) । इसी नाटक मे सेतुबध के समय राम को निरुत्साह करने के लिए सीता का एक मायामय सिर समुद्र के तट पर फेका जाता है । अत माया-सीता की कल्पना प्राचीन काल से चली आ रही है ।[1] इसके अतिरिक्त सम्भव है कि वाल्मीकि रामायण की निम्नलिखित उपमा भी माया-सीता की कल्पना के लिए सहायक हो सकी हो, 'रावण ने सीता को लका मे रख दिया मानो मय ने अपने महल मे आसुरी माया को' :

निदधे रावणः सीतां मयो मायामिवासुरीम् । (३, ५४, १४)

टीकाकारो ने इस उपमा मे मायासीता के वृत्तान्त का निर्देश देखा है । रामायण तिलक मे लिखा है—**मायामिवासुरीमित्यनेन मायारूपैवैषा सीता या लंकामागतेति ध्वनितम् ।**

इस मायासीता के हरण के पहले वास्तविक सीता अग्नि मे निवास करने जाती है । रामकथा के विकास की पृष्ठभूमि पर यह भी अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है । वाल्मीकि रामायण मे अग्निपरीक्षा के अवसर पर अग्नि सीता की रक्षा कर और उनके पातिव्रत्य का साक्ष्य देकर अन्य देवताओ से अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान लेते हैं । आगे चलकर सीताहरण के प्रसग मे भी अग्नि का उल्लेख होने लगा ।

श्रीमद्देवीभागवतम् मे सीता रावण का प्रस्ताव सुनकर गार्हपत्य[1] (अर्थात्

---

१ यह भी असभव नही है कि महाभागवत पुराण (अध्याय ११, १६) मे जो छाया-सती की कथा मिलती है वह छाया-सीता की कल्पना मे सहायक हुई हो । अद्भुत रामायण मे वास्तविक हरण को अवास्तविक सिद्ध करने का तर्क दिया जाता है । हनुमान् राम को सान्त्वना देते हुए कहते हैं, जिस तरह विश्व आभास है उसी तरह सीताहरण भी आभास मात्र है ।

तव भार्या महाभाग रावणेन हृतेति यत् ।
विश्व यथेदमाभाति तथेद प्रतिभाति मे ।।३।। (सर्ग १६)

५०२ नृसिह पुराण तथा गुणभद्र के उत्तरपुराण मे सीता के स्पर्श से बचने के लिए रावण ने एक ऐसा उपाय निकाला है, जिससे सीता अपने आप विमान पर चढती हैं (दे० अनु० ४६४)।

कई अन्य वृत्तान्तो मे सीता को रावण के स्पर्श से बचाने के लिए अलौकिकता का सहारा लिया गया है। तिब्वती रामायण (नवी शताब्दी), कम्ब रामायण, अध्यात्म रामायण, तत्वसग्रह रामायण (३, १५) आदि मे रावण पृथ्वी को खोद कर सीता को भूभाग के साथ-साथ ले जाता है।

तमिल रामायण (३, ८) के अनुसार रावण ने पृथ्वी को एक योजन की गहराई तक खोद कर सीता तथा झोपडी को अपने रथ पर रख दिया। यह इसलिए हुआ कि उसको यो शाप दिया गया था, 'परस्त्री स्पर्श करने से तुम मर जाओगे'।

अध्यात्म रामायण मे रावण केवल एक माया-सीता का हरण करता है। फिर भी यह पृथ्वी को नखो से खोद कर उस सीता का भी स्पर्श नही करता .

ततो विदार्य धरणीं नखैरुद्धृत्य बाहुभिः ॥५१॥
तोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा ययौ क्षिप्र विहायसा।

(अरण्यकाड, सर्ग ७)

प्रसन्नराघव (१४वी श०) मे गोदावरी अन्य नदियो तथा सागर को सीताहरण का वृत्तान्त सुनाती है। सागर पूछता है—'अपि नाम मम वधूटिका स्पृष्टा निशाचरेण'। इस पर गोदावरी उत्तर देती है—'न स्पृष्टा' और कहती है कि जब रावण ने सीता पर हाथ डालना चाहा तब अनसूया का दिया हुआ अगराग अग्नि के रूप मे सीता का आवरण बन गया था, तब रावण ने वरुणमत्र द्वारा बादल को बुलाया और उस बादलरूपी आंचल से सीता को ढँक कर उसे ले गया (अक ५)।

दक्षिण भारत के एक नृसिह पुराण से मिलते-जुलते वृत्तान्त में लिखा है कि रावण के रथ मे तथा लका मे भी अग्नि सीता की रक्षा करती थी। इस कारण रावण न तो सीता का स्पर्श कर पाता था और न उनको महल के भीतर ले जा सकता था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)। इसका उल्लेख सेरीराम के पातानी पाठ मे भी हुआ है।

५०३ इस प्रकार हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न युक्तियो से सीता को रावण के स्पर्श से बचाया गया है। फिर भी सीता रावण के वश मे हुई हो यह विचार भक्ति भावना के लिए असह्य और असम्भव सा प्रतीत हुआ। अत. एक मायामयी सीता को वास्तविक सीता का स्थान लेना पडा। रामकथा के इस महत्वपूर्ण परिवर्तन की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डालना अपेक्षित है।

उस वृत्तान्त मे दो तत्व आ जाते है। पहले, एक माया-सीता का हरण होता

एक मायामयी सीता बनाकर उसे राम को दे दिया। तब इस रहस्य को किसी से भी न प्रकट करने का आदेश देकर अग्नि वास्तविक सीता के साथ चले गये। अग्नि-परीक्षा के समय जब अग्नि ने वास्तविक सीता को लौटा दिया, तब माया-सीता ने पूछा कि मैं अभी क्या करूँ। इसपर अग्नि ने उसको पुष्कर भेज दिया। वहाँ तीन लाख वर्ष तक तपस्या करके मायामयी सीता भी लक्ष्मीपद प्राप्त कर सकी और बाद मे द्रौपदी के रूप मे प्रकट हुई (प्रकृति खण्ड, १४, ४८-५५)। **श्रीमद्देवीभागवत पुराण** मे भी अग्नि राम के पास जाकर उनको एक छाया-सीता देते है और वास्तविक सीता को अग्नि-परीक्षा के समय तक अपने साथ रखते है।[1]

अध्यात्म रामायण मे हमे मायामयी सीता के वृत्तान्त का विकसित रूप मिलता है। लेखक ने राम की सर्वज्ञता पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है तथा सारे वृत्तान्त मे अग्निदेव को जो प्रधानता मिली थी उसे राम और सीता को दे दिया है। कथा इस प्रकार है (अरण्यकाड, सर्ग ७)

रावण और मारीच का षड्यन्त्र जानकर राम ने एकान्त मे सीता से कहा—'रावण तुम्हारे पास भिक्षु का रूप धारण कर आवेगा, इसलिए तुम अपनी छाया को कुटी मे छोडकर अग्नि मे प्रवेश कर जाओ और मेरी आज्ञा से वहाँ अदृश्य रूप से एक वर्ष रहो।' सीता ने वैसा ही किया। मायामयी सीता को छोडकर वह स्वय अग्नि में अंतर्द्धान हो गई (**माया-सीता बहि. स्थाप्य स्वयमन्तर्दधेऽनले**)। रावण-वध के पश्चात् मायासीता अग्नि मे प्रवेश करती है (युद्धकाड, सर्ग १२) तथा अग्नि राम को वास्तविक सीता प्रदान करते हैं (सर्ग १३)। महाभागवत पुराण मे भी सीता अपनी छाया छोड़कर अन्तर्द्धान हो जाती हैं (अध्याय ११, १०८)।

५०५. अध्यात्म रामायण मे जो मायासीता का वृत्तान्त मिलता है, वह हिन्दी राम-साहित्य मे प्रामाणिक माना गया है; उदाहरणार्थ रामचरितमानस (३, २४), रामचन्द्रिका (१२, १२)। अर्वाचीन रामकथा साहित्य मे भी सीताहरण का यही रूप गौण परिवर्तनो सहित पाया जाता है। उदाहरणार्थ महेश्वरदास का टीका रामायण तथा धनंजय भजकृत रघुनाथ विलास।

भावार्थरामायण (३, १६) के अनुसार देवताओ को आशका थी कि सीता का स्पर्श करते ही रावण भस्मीभूत हो जायेगा, वे चाहते थे कि लका-युद्ध मे सभी राक्षसों का नाश हो। अत जब रावण ब्राह्मण के रूप मे सीता के पास आया और सीता भिक्षा

---

१. दे० ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृति खण्ड, अध्याय १४। श्रीमद्देवीभागवत, स्कंध ९, अध्याय १६। दोनो रचनाओं मे यह भी कहा गया है कि वह माया-सीता आगे चलकर द्रौपदी के रूप मे प्रकट हुई।

झोपडी मे स्थापित अग्नि) की ओर शरण के लिए भाग जाती हैं (स्कध ३, अध्याय २६)।

रगनाथकृत तेलुगु द्विपद रामायण (३, १८) मे लक्ष्मण अग्निदेव से प्रार्थना कर और सीता को उनकी रक्षा मे सौंपकर राम की सहायता करने जाते है। दक्षिण भारत के उपर्युक्त वृत्तान्त के अनुसार भी अग्नि सीता की रक्षा करती है और उनको रावण के स्पर्श से वचाती है। इस वृत्तान्त के एक अन्य स्थल पर सीता अग्नि की पुत्री मानी गई है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० १००)।

५०४. माया-सीता के हरण का वृत्तान्त पहले पहल कूर्मपुराण के पतिव्रतोपाख्यान मे मिलता है (७वी श०)। निर्जन वन मे टहलती हुई सीता ने रावण को आते देखकर और उसका अभिप्राय समझकर घर की अग्नि की शरण ली (जगाम शरणं वह्निमावसथ्यम्) तथा वह्न्यष्टक का जप किया (वह्न्यष्टकं जप्त्वा)।

इसपर आवसथ्य से प्रकट होकर अग्नि ने एक मायामयी सीता को बनाया और (सीतामादाय रामेष्टां पावकोऽन्तरधीयत) वास्तविक सीता को ग्रहण कर उसको छिपा दिया। तब रावण मायामयी सीता को लका ले गया। रावणवध के बाद राम ने उस मायासीता पर शका की। फलस्वरूप वह अग्नि मे प्रवेश कर जल गई। तब अग्नि ने प्रकट होकर वास्तविक सीता को दिखलाया और राम ने नतमस्तक होकर अग्नि को सतुष्ट कर दिया। इसपर अग्नि ने मायामयी सीता का रहस्य खोलकर राम से निष्कलक सीता को ग्रहण करने का अनुरोध किया तथा उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाया:

गृहाण चैतां विमलां जानकीं वचनान्मम।
पश्य नारायणं देवं स्वात्मानं प्रभवाव्ययम्॥[1]

इस वृत्तान्त के अनुसार राम केवल अग्निपरीक्षा के समय जान जाते हैं कि वास्तविक सीता का हरण नही हुआ था। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के रचयिता ने इसमे किंचित् परिवर्तन किया है। सीताहरण के पूर्व ही अग्निदेव, ब्राह्मण के वेश मे, राम के पास आकर कहते है—'सीताहरण का समय आ गया। मुझे सीता को देकर उसकी छाया अपने पास रख लो। अग्निपरीक्षा के अवसर पर मैं उसे लौटा दूंगा। देवताओ ने मुझे भेजा है। मैं ब्राह्मण न होकर अग्नि हूँ।' यह सुनकर राम सहमत हो गये और अग्नि ने

---

१ दे० कूर्मपुराण, उत्तरविभाग, अध्याय ३४ (कलकत्ता सस्करण, पृ० ६६८ आदि)। नरहरिकृत तोरवे रामायण (१५०० ई०) मे लक्ष्मण के चले जाने के बाद अग्नि और अन्य देवता सीता को अग्नि के गढ मे रखकर उनका एक अश मात्र पर्णशाला मे छोड देते है (दे० अरण्यकाड, सधि ६)।

के वध के लिए धनुष-वाण ही धारण किया था।"[1] उस सम्प्रदाय मे चित्रकूट का अत्यधिक महत्व है, राम "ब्रह्मरूप मे अपनी आह्लादिनी शक्ति सीता जी के साथ चित्रकूट मे विहार करते रहे।.......इस विहारलीला मे कैंकर्य और व्यवस्था लक्ष्मण जी करते थे, जो जीव-तत्व के प्रतिनिधि थे। चित्रकूट के आगे लक्ष्मी, नारायण और शेष उनके वेष मे गए थे और परात्पर ब्रह्म की आज्ञा से उन्होंने ही रावण का वध कर सीतारूप लक्ष्मी का उद्धार किया।"[2] बाद मे तीनो चित्रकूट लौटे।

५०८ मायासीता के इन सब वृत्तान्तो का अभिप्राय स्पष्ट है। उपास्य देवी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए भक्ति-भावना ने सीता की एक छाया मात्र का हरण स्वीकार किया और साथ-साथ राम की सर्वज्ञता को भी पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया।

अंत मे युनानी साहित्य के एक समान विकास की ओर निर्देश करना है।[3] होमर के काव्य मे हेलेन पतिता बनकर अपने अपहर्ता पैरिस के साथ स्वेच्छा से भाग निकलती है और युद्ध के बाद अपने पति मेनेलोस को पुन. प्राप्त होती है। युनानी धार्मिक विकास मे वही हेलेन बाद मे देवी मानी गई। फलस्वरूप भक्तो ने होमर का वृत्तान्त इष्टदेवी की मर्यादा के प्रतिकूल समझकर उसे इस तरह बदल दिया कि पैरिस हेलेन की एक छाया (ऐडोलोन = मायामयी मूर्ति, छाया) अपने साथ ले जाता है। इसी तरह भक्ति-भावना ने दोनो देशो मे एक ही उपाय का सहारा लिया है। फिर भी हेलेन तथा सीता की कथाओ मे किंचित् भी पारस्परिक प्रभाव मानने की कोई आवश्यकता नही। इस प्रकार इन दोनो कथाओ का स्वतत्र रूप से समानान्तर विकास हुआ है।

---

१. दे० रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृ० २८२।
२. दे० वही, पृ० २६७।
३. दे० डब्लू० प्रिट्ज : हेलेन उण्ड सीता (याकोवी मेमोरियल वाल्युम, पृ० १०३-११३)।

लाने के लिये पर्णकुटी के अन्दर चली गई तब देवताओं ने सीता को आदेश दिया कि वह स्वय रावण को भिक्षा न दे और देवताओ द्वारा निर्मित एक मायामयी सीता को भेज दे। इसपर सीता ने उत्तर दिया कि माया-सीता का निर्माण आप लोगो की शक्ति के बाहर है। मैं स्वयं अपनी छाया भेजकर देवताओ का कार्य सम्पन्न करूँगी।

बलरामदास रामायण (उत्तरकाड) मे यह माना गया है कि लक्ष्मण के चले जाने के बाद सीता ने नारद की पूर्व-शिक्षा के अनुसार अपना माया-रूप छोड़कर अग्नि में प्रवेश किया था। अग्निपरीक्षा के समय वास्तविक सीता फिर प्रकट हुई थीं।

धर्मखण्ड (अध्याय १३०) तथा तत्त्वसंग्रह रामायण (३, १३) के अनुसार नारद ने वनवास के अन्त मे राम को उनके कर्त्तव्य (अर्थात् रावण-वध) का स्मरण दिलाया। राम ने उत्तर दिया कि रावण आ रहा है। तब राम ने लक्ष्मण के अनजान में माया-सीता का निर्माण कर मृत्यु देवी से निवेदन किया कि वह सीता के रूप में लंका में प्रवेश करे। राम ने वास्तविक सीता को अपनी छाती में छिपा लिया। लंकायुद्ध के ठीक पहले राम ने सीता से कहा कि तुम्हारे रहते युद्ध मे जाना दुष्कर है। इसपर सीता अपनी माता पृथ्वी की शरण मे चली गई (तत्त्वसंग्रह रामायण ६, १४) तथा अग्नि-परीक्षा के समय लौटी (वही ६, ३४-३५)।

काश्मीरी रामायण में अग्निपरीक्षा के समय माया-सीता के प्रवेश करने के बाद अग्नि १४ दिनो तक जलती रहती है, तत्पश्चात् वास्तविक सीता उसमे से निकलती हैं (६, ५४)।

५०६ आनन्दरामायण मे माया-सीता के वृत्तान्त का एक परिवर्तित रूप मिलता है। खरादि-वध के पश्चात् राम सीता को तीन रूपो में विभक्त हो जाने का आदेश देते हैं—रजोरूप से वह अग्नि मे वास करेगी, सत्वरूप से राम के वामांग में और तमोरूप से वन मे :

> सीते त्वं त्रिविधा भूत्वा रजोरूपा वसानले ॥६७॥
> वामांगे मे सत्वरूपा वस छाया तमोमयी।
> पंचवट्यां दशास्यस्य मोहनार्थं वसात्र वै ॥६८॥ (सारकांड, सर्ग ७)

उपर्युक्त वृत्तान्त आनन्द रामायण को छोडकर और कही नहीं मिलता। जिस तरह अन्य वृत्तान्तो मे वास्तविक सीता का हरण नही होता उसी तरह इसमें सात्विक तथा रजोमयी सीता दोनो की रक्षा होती है और रावण केवल एक तमोमयी छाया हर लेता है।

५०७ रसिक सम्प्रदाय मे भी सीताहरण को अवास्तविक माना गया है। "वास्तव मे न तो सीता का हरण हुआ और न स्वय ब्रह्म राम ने एक तुच्छ राक्षस

वर्षा-ऋतु—राम का प्रस्रवण पर्वत की एक गुफा मे वर्षा-निवास । सुग्रीव का अभिषेक तथा अंगद का युवराज होना, राम द्वारा वर्षा-वर्णन तथा उनका विलाप (सर्ग २६-२८) ।

(३) वानरो का प्रेषण (सर्ग २९-४४) ।

शरद-ऋतु—सुग्रीव का वानरसेना बुलाना, राम का शरद-ऋतु वर्णन तथा सुग्रीव की कृतघ्नता का उल्लेख, क्रुद्ध होकर लक्ष्मण का सुग्रीव के पास जाना (सर्ग २९-३२) ।

लक्ष्मण-सुग्रीव-भेंट—तारा का लक्ष्मण को शात करना । लक्ष्मण का सुग्रीव की भर्त्सना करना । तारा तथा सुग्रीव की क्षमा-प्रार्थना । सुग्रीव की आज्ञा से सेना का आगमन (सर्ग ३३-३७) ।

दिग्वर्णन—सुग्रीव का सेना के साथ राम के पास पहुँचना (सर्ग ३८-३९) । दिशाओ का वर्णन करते हुए सुग्रीव का वानरसेना को चतुर्दिक् भेजना (सर्ग ४०-४३) । विश्वास-पात्र हनुमान् का दक्षिण दिशा मे भेजा जाना तथा राम का उन्हे अभिज्ञान रूप मे अगूठी देना (सर्ग ४४) ।

(४) वानरो की खोज (सर्ग ४५-६७)

असफलता—वानरो का प्रस्थान तथा पूर्व, पश्चिम और उत्तर से वानरो का निराश लौटना (सर्ग ४५-४७) । हनुमान् और उनके साथियो की विन्ध्यपर्वत मे व्यर्थ खोज (सर्ग ४८-४९) ।

स्वयंप्रभा—उनका कन्दरा मे प्रवेश, स्वयप्रभा द्वारा सत्कार तथा आँखे बद करवाकर उनको गुफा के बाहर ले जाना (सर्ग ५०-५२) ।

अंगद की निराशा—कन्दरा से निकल कर विन्ध्य-तल के सागर-तट पर उनका पहुँचना । अंगद का प्रायोपवेशन के लिये प्रस्ताव । अगद का सुग्रीव से भयभीत होना, सभी का दुःखी और निराश होना (सर्ग ५३-५५) ।

संपाति—सपाति के समुख अगद द्वारा जटायु मृत्यु का उल्लेख । सपाति का वृत्तान्त पूछना और लका की स्थिति बतलाना (सर्ग ५६-५८) । उसका अपने पुत्र सुपार्श्व द्वारा रावण को सीता ले जाते देखने का उल्लेख करना । ऋषि निशाकर के कथनानुसार सपाति के पखो का फिर से उग आना (सर्ग ५९-६३) ।

सागर का तट—सागर के तट पर पहुँचकर अगद की निराशा । जाम्बवान् द्वारा हनुमान् की कथा तथा सामर्थ्य-वर्णन । हनुमान् का महेन्द्र पर्वत पर चढकर कूदने के लिए तत्पर होना (सर्ग ६४-६७) ।

अध्याय १७

किष्किधाकांड

१—वाल्मीकि रामायण का किष्किधाकांड

५०९ क । किष्किधाकाड की कथावस्तु

(१) सुग्रीव से मैत्री (सर्ग १-१२)

हनुमान्—पपासर देखकर राम की विरह-व्यथा। सुग्रीव का हनुमान को भेजना। हनुमान का उनको सुग्रीव के पास ले जाना (सर्ग १-४)।

सुग्रीव—सुग्रीव का स्वागत तथा अपनी कथा बताना। राम द्वारा वालिवध की प्रतिज्ञा। सुग्रीव का राम को सहायता का वचन देना तथा सीता के आभरण दिखलाना (सर्ग ५-६)। सुग्रीव का पुनः सहायता के लिए वचन देना तथा अपनी कथा सुनाना (सर्ग ७-१०)।

राम की परीक्षा—सुग्रीव द्वारा वालि की शक्ति का वर्णन। राम द्वारा दुदुभि के अस्थि-ककाल का फेका जाना, अनन्तर राम से सात ताड तरुओं के एक बाण द्वारा भेदे जाने पर सुग्रीव का विश्वस्त होना। किष्किधा जाकर सुग्रीव का वालि से प्रथम द्वन्द्व-युद्ध। राम का सुग्रीव को न पहचानना। ऋष्यमूक मे लौटना (सर्ग ११-१२)।

(२) वालिवध (सर्ग १३-२८)

वालि का आहत होना—द्वितीय वार सुग्रीव का वालि को द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारना (सर्ग १३-१४)। तारा द्वारा रोके जाने पर भी वालि का युद्ध के लिये जाना तथा राम के बाण से आहत होना (सर्ग १५-१६)।

वालि की भर्त्सना—इन्द्र-माला के कारण वालि का जीवित रहना तथा राम को भर्त्सना देना, राम का प्रत्युत्तर (सर्ग १७-१८)।

तारा-विलाप—समाचार पाकर तारा का आना और विलाप करना (सर्ग १९-२०)। हनुमान का तारा को सान्त्वना देना (सर्ग २१)।

वालि-मरण—वालि का सुग्रीव के हाथ अगद को सौंपना। सुग्रीव के इन्द्र-माला उतार लेने पर उसका मरण, वानरो और तारा का विलाप (सर्ग २२-२३)। सुग्रीव का पश्चात्ताप और राम का सान्त्वना देना (सर्ग २४-२५)।

जाएगा (दे० अनु० ५२२)। प्राचीनकाल से रामायण के गायको ने राम के इस कार्य को न्यायसगत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है और महाभारत की रीति के अनुसार उन्होने अभियोग (सर्ग १७) तथा प्रत्युत्तर (सर्ग १८) को शास्त्रीय ढग से प्रस्तुत किया है।[1] इस प्रसग मे मनुस्मृति के दो श्लोको का भी उद्धरण दिया गया है।[2]

वास्तव मे वाल्मीकि ने राम को आदर्श क्षत्रिय के रूप मे प्रस्तुत किया था और आदि रामायण के अनुसार राम ने वालि को छल से नही, वल्कि युद्ध मे मारा था। यह प्रचलित रामायण की अतरग परीक्षा से प्रतीत होता है (दे० आगे अनु० ५१८) इसके अतिरिक्त अधिक सभव यह है कि आदि रामायण मे राम की वल-परीक्षा की कोई भी चरचा नही मिलती थी (दे० आगे अनु० ५१७)।

(२) दिग्वर्णन। सर्ग ४० मे पूर्व दिशा का वर्णन, सर्ग ४१-४३;४५-४७। वानरो के प्रेषण के विषय मे ४४वाँ सर्ग सवसे प्राचीन है, इसमे हनुमान राम की अगूठी लेकर दक्षिण की ओर प्रस्थान करते है। अनन्तर ४८वाँ सर्ग रहा होगा जिसमे हनुमान और उनके साथियो का विन्ध्य मे सीता की असफल खोज करने का वर्णन किया गया है। वाद मे वानरो के प्रेषण के पहले भिन्न-भिन्न दिशाओ का जो विस्तृत वर्णन किया गया है, उसका केद्र किष्किन्धा मे न होकर उत्तर भारत मे है।[3] दक्षिण दिशा के वर्णन मे (सर्ग ४१) हनुमान आदि का प्रेषण भी वर्णित है यद्यपि इसका ४४वे सर्ग मे पुन वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट है कि यह दिग्वर्णन प्रक्षिप्त है। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी इस प्रकार का कोई वर्णन नही किया गया है। सर्ग ४५ मे सभी दिशाओ मे वानरो के प्रस्थान का वर्णन किया गया है, सर्ग ४६ मे सर्ग ९-१० की पुनरावृत्ति मात्र है तथा सर्ग ४७ मे दक्षिण को छोडकर अन्य दिशाओ मे भेजे हुये वानरो का प्रत्यागमन वर्णित है। यह भी सभव है कि मूल रामायण मे हनुमान को अकेला ही सीता का अन्वेषण करने दक्षिण भेजा गया था (दे० आगे अनु० ५२४)।

(३) सर्ग ३१,३२, ३५, ३७, ३९। डॉ० याकोवी ने अरण्यकाड के एक विस्तृत अश का प्रामाणिक पाठ निर्धारित किया है, अर्थात् ३०, ६१ से लेकर ४४, १५ तक।[4] परिणाम यह हुआ कि ६०० श्लोको मे से लगभग १५० श्लोक मात्र प्रामाणिक सिद्ध

१ दे० डब्ल्यू० हॉप्किस, दि ग्रेट एपिक ऑव इण्डिया, पृ० १६। एच० याकोवी, डस रामायण, पृ० १२८।

२ दे० रा० ४, १८, ३१-३२ और मनुस्मृति ८, ३१८, ३१६।

३. दे० एच० याकोवी, वही, पृ० ३७।

४ दे० जर्मन ओरियेन्टल जर्नल, भाग ५१ पृ० ६०५।

ख । किष्किधाकांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता ।

५१०. किष्किधाकांड की आधिकारिक कथावस्तु, अर्थात् सुग्रीव से मैत्री, वालिवध और वानरों के प्रेषण तथा खोज मे कोई विशेष अंतर नहीं पाया जाता है ।

दाक्षिणात्य पाठ की निम्नलिखित सामग्री अन्य दोनो पाठो मे नहीं मिलती :

सर्ग ३, २८-३८ । राम द्वारा हनुमान् की शुद्ध भाषा और व्याकरण के अध्ययन का उल्लेख ।

सर्ग २४ । वालिवध के पश्चात् सुग्रीव का पश्चात्ताप तथा राम द्वारा तारा को सान्त्वना ।

सर्ग २७, ५-३० । प्रस्रवणगिरि का वर्णन ।

सर्ग २८, १४-५२ । वर्षाऋतु का त्रिष्टुभ मे वर्णन ।

सर्ग ३०, २८-५७ । शरत् का त्रिष्टुभ मे वर्णन ।

सर्ग ३३, २५-६२ । तारा-लक्ष्मण-सवाद । क्रुद्ध लक्ष्मण को आते देखकर सुग्रीव उनको शान्त करने के लिए तारा को भेजते है ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २१ वाँ सर्ग (हनुमान् द्वारा तारा को सान्त्वना) तथा ३९वाँ सर्ग (वानर सेना का आगमन) पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नहीं मिलते, यद्यपि दोनो गौडीय पाठ मे विद्यमान है (दे० गौ० रा० ४, सर्ग २३ और ३९) ।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे तीन वृत्तान्त मिलते हैं, जिनका दाक्षिणात्य पाठ मे अभाव है :

(१) राम के प्रति तारा का शाप । तारा का विलाप उदीच्य पाठो मे अपेक्षाकृत विस्तृत है, इसमे तारा राम को शाप देकर कहती है कि सीता थोड़े समय तक तुम्हारे साथ रहकर भूतल मे प्रवेश करेगी (गौ० २०, १५-१६, प० १६, ३९-४०) ।

(२) सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाना जो अगद को अपनी पीठ पर समुद्र के उस पार ले जाने का प्रस्ताव करता है (गौ० रा० ४, ६२ तथा प० रा० ४, ५५) ।

(३) केसरी द्वारा दिग्गज धवल का वध, जिसके लिये उसने वरस्वरूप 'मुरुत-विक्रम' पुत्र हनुमान् को प्राप्त किया था (दे० गौ० रा० ५, ३ तथा प० रा० ४, ५८) ।

प्रक्षेप ।

५११ किष्किन्धाकाण्ड की निम्नलिखित सामग्री प्रक्षिप्त है :

(१) राम का दोषनिवारण । सर्ग १७-१८ । परवर्ती साहित्य मे वालिवध के दोष से राम को बचाने के लिए जो मार्ग अपनाया गया है, उसका वर्णन आगे किया

और उसने अपना परिचय देकर कहा कि सुग्रीव आपकी मित्रता चाहता है। राम ने सुग्रीव की सहायता करने की प्रतिज्ञा की। बाद मे हनुमान् ने लक्ष्मण से सीताहरण की कथा सुनकर सुग्रीव की सहायता का आश्वासन दिया और अपने वानर रूप मे प्रकट होकर[1] तथा राम-लक्ष्मण को अपने कन्धे पर चढाकर दोनो को पर्वत के शिखर पर सुग्रीव के पास पहुँचा दिया (सर्ग २-४)।

परवर्ती साहित्य मे इस वृत्तान्त मे युद्ध का भी प्रसग आ गया है।

बगाली रामकथाओ मे 'शिव-रामेर युद्ध' का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार लक्ष्मण शिव की वाटिका मे फल तोडने जाते हैं और द्वारपाल हनुमान से युद्ध करते हैं। देर होने पर राम स्वय आते है, इतने मे शिव भी पहुँचे और राम से युद्ध करने लगते है। युद्ध के अन्त मे शिव राम को अपने द्वारपाल हनुमान् को समर्पित करते हैं और उस समय से हनुमान् शिव की सेवा छोडकर रामभक्त हो गए।[2] उत्तर भारत के एक वृत्तान्त मे लक्ष्मण राम के लिए फल तोडते समय रुद्रावतार हनुमान् से युद्ध करते है। पराजित होकर और यह सुनकर कि लक्ष्मण राम के भाई हैं, हनुमान् राम की शरण लेते हैं और राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, पृ० ३३७)।

भावार्थ रामायण (४, १) के अनुसार हनुमान् राम की शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से साल वृक्ष हाथ मे लिए राम-लक्ष्मण के पास पहुँचे और उन्होंने धमकी देकर पूछा कि तुम लोग कौन हो। राम ने हनुमान् पर बाण चला कर उसे परास्त कर दिया। तब हनुमान् ने वायु का सुझाव मानकर राम से क्षमा माँग ली।

सताली रामकथा (दे० अनु० २७१) के अनुसार हनुमान् तरबूजो की रखवाली करता था। लक्ष्मण इनमें से कुछ लेना चाहते थे जिससे लक्ष्मण और हनुमान् मे भिडन्त हुई। अत मे हनुमान ने राम तथा लक्ष्मण दोनो को तरबूज खिलाया।

कुछ अन्य रामकथाओ मे युद्ध के साथ-साथ हनुमान् के आभूषणो का भी उल्लेख होता है। सेरीराम के अनुसार हनुमान् राम का पुत्र है (दे० आगे अनु ६७५), जन्म से ही उनके कान कुण्डलो से अलकृत थे, एक आकाशवाणी ने अजना को आदेश दिया कि बालक का नाम हनुमान् रखा जाय और यह भी कहा कि जो व्यक्ति बालक के कुण्डल देख सकेगा, वही उसका पिता है। १२ वर्ष की अवस्था मे हनुमान् को यह

---

१ भिक्षुरूप परित्यज्य वानरं रूपमास्थित. (४, ३४), अगले सर्ग मे सुग्रीव के पास पहुँचने के बाद इसका पुन. उल्लेख है—ततो हनुमान्सत्यज्य भिक्षुरूपमरिन्दमः (५, १३)।

२ दे० दि० च० सेन . दि बगाली रामायन्स, पृ० ४७।

हुए। उपर्युक्त दिग्वर्णन के अतिरिक्त सर्ग ३१-३२ (लक्ष्मण के किष्किन्धा-प्रवेश का प्रथम वर्णन), सर्ग ३५ (तारा द्वारा सुग्रीव का दोष-निवारण), सर्ग ३७ (वानर-सेना का किष्किन्धा मे आगमन) और सर्ग ३९ (राम के पास वानर-सेना का आगमन) —ये सभी सर्ग डॉ० याकोवी के अनुसार प्रक्षिप्त है। ३९ वाँ सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता।

(४) ऋषि निशाकर और सम्पाति की कथा। सर्ग ६०-६३। सर्ग ५६-५९ मे सम्पाति से वानरो की भेट का वर्णन हुआ है, सम्पाति ने वानरो को अपनी कथा तथा लकेश रावण द्वारा सीताहरण का समाचार भी सुनाया। सर्ग ६४ मे वानर सागर के तट पर पहुँच कर उसे पार करने के विषय मे चिन्ता करने लगते है। बीच के सर्गो मे सम्पाति पुनः अपनी कथा अनावश्यक विस्तार के साथ दोहराते है। सर्ग ६२ मे इन्द्र द्वारा सीता के पास पायस के ले आने का उल्लेख है (दे० अनु० ५००), जिससे उस सर्ग की प्रक्षिप्तता की पुष्टि होती है।

(५) हनुमान् की जन्मकथा। सर्ग ६६। आदिरामायण हनुमान् की जन्म-कथा के विषय मे मौन था, इसके प्रमाण बाद मे दिए जाएँगे (दे० अनु० ६५९-६६१); अतः सर्ग ६६, जिसका वर्ण्य-विषय हनुमान् की यह जन्मकथा है, निश्चित रूप से वाल्मीकिकृत नही है।

(६) किष्किन्धा के अन्य सर्गो मे भी परस्पर विरोधी उल्लेखो का अभाव नही है जिनका उत्तरदायित्व वाल्मीकि जैसे प्रतिभाशाली महाकवि पर नही लादा जा सकता है। अनेक स्थलो पर कहा गया है कि राम अथवा वानर सीता के अपहर्त्ता के नाम से अनभिज्ञ है (दे० ४, १४, ७, २; ५९, ३)। यह होते हुए भी रावण का नाम (७, १६, १७, ५०, २६, १७ आदि) तथा उनकी राजधानी लका (३५, १५) का बारबार उल्लेख किया गया है। सर्ग ५८ मे सम्पाति का कहना है कि मैंने स्त्री का अपहरण करते हुए रावण को आकाश मे देखा था (श्लोक १५) किन्तु अगले सर्ग मे वही सम्पाति कहता है कि मैंने अपने पुत्र सुपार्श्व से सीता के अपहरण के विषय मे सुना था (दे० ५९, ६)। अतः यह स्पष्ट है कि किष्किन्धाकाण्ड मे उपर्युक्त प्रक्षिप्त सर्गो के अतिरिक्त और बहुत से गौण प्रक्षेप भी मिलते है।

२—किष्किधाकाण्ड का विकास

क। हनुमान्-सुग्रीव से भेंट

५१२ वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुग्रीव राम-लक्ष्मण को देखकर तथा उनको वालि का गुप्तचर समझकर भयभीत हुआ और उसने पता लगाने के लिए हनुमान् को भेजा। हनुमान् भिक्षु का रूप धारण कर राम-लक्ष्मण के पास आया

स्वामी है (इस रामायण मे यह माना गया है कि हनुमान लगोटी पहनकर उत्पन्न हुआ था)।

विर्होर-रामकथा (दे० अनु० २७२) के अनुसार सीताहरण के बाद राम-लक्ष्मण वन मे खोज कर रहे थे कि हनुमान् अपनी माता के गर्भ मे से उनको पहचानकर चिल्ला उठा—दादा, रुकिये, मैं आपके साथ जाना चाहता हूँ। इस पर उसने जन्म लिया तथा राम-लक्ष्मण के साथ चला गया।

अध्यात्म रामायण (८, १, १३-१६) के अनुसार हनुमान् ने भेट के अवसर पर राम की आराधना की थी तथा अद्भुत रामायण (सर्ग १०) मे उस प्रथम मिलन के अन्त मे राम द्वारा हनुमान् को अपना विष्णु रूप दिखलाने का वर्णन किया गया है। कब रामायण (४, २, ३४) के अनुसार प्रथम भेट के अवसर पर हनुमान ने अपना शरीर बढ़ाकर राम को अपनी शक्ति का प्रमाण दिया था।

गुणभद्र के उत्तर पुराण के अनुसार नारद ने हनुमान् और सुग्रीव को राम के पास भेज दिया, दोनों साथ-साथ उनके पास पहुँचे थे (६८, २८६)।

अन्त मे कुछ वृत्तान्तो का उल्लेख करना है जिनमे हनुमान् के प्रस्थान करने के बाद सुग्रीव से राम की भेट का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है। सेरी-राम के एक पाठ के अनुसार लक्ष्मण राम के लिए पानी लाये और राम ने पीकर उसे (सुग्रीव के आँसुओ से) नमकीन पाया। कारण का पता लगाने पर सुग्रीव से भेट हो जाती है। यही कथा रामकेर्ति (सर्ग ५) मे भी मिलती है। सेरीराम के शेलाबेर पाठ के अनुसार राम लक्ष्मण द्वारा लाये हुए पानी को पीने के बाद उसकी गोद मे सिर रखकर चार दिन और रात तक एक पेड के नीचे सोते रहे। सुग्रीव पेड पर से लक्ष्मण का यह भ्रातृ-प्रेम देखकर रोने लगा। सुग्रीव के एक आँसू ने राम की छाती पर गिरकर उन्हे जगाया। राम ने इसे लक्ष्मण का आँसू समझकर उनको घर लौटने का आदेश दिया, इस पर लक्ष्मण की प्रार्थना के फलस्वरूप पेड के पत्ते छोटे बन गए और सुग्रीव दिखाई दिया। अनन्तर राम-सुग्रीव की मैत्री का वर्णन किया गया है। सेरत काण्ड तथा हिकायत महाराज रावण के अनुसार वालि ने सुग्रीव को दूर वन मे फेक दिया था जिससे वह अधमरा होकर एक वृक्ष की शाखाओ पर गिर गया था। राम ने उसी वृक्ष के नीचे विश्राम किया और सुग्रीव के आँसू राम पर गिर पडे। इन हिंदेशियाई कथाओ का मूलस्रोत भारतीय है क्योंकि महेश्वरदास के टीका रामायण मे भी राम-सुग्रीव-भेट के प्रसग मे राम की प्यास का उल्लेख है किन्तु सुग्रीव के आँसूओ के स्थान पर उसकी लार की चरचा है।

ख] वालि-सुग्रीव-चरित

५१३. प्रामाणिक वाल्मीकिकृत आदिरामायण मे वालि-सुग्रीव की जन्मकथा

रहस्य बताया गया, उस समय से वह तपस्वी बनकर अपनी माता की देख-रेख करने लगा। बाद में अंजना के पितामह संगपरदान ने हनुमान् को वालि के दरबार में जाने का परामर्श दिया तथा दोहराया कि कुण्डलों को पहचानने वाला उसका पिता है। वालि के यहाँ जाते समय हनुमान् को भूख लगी और वह किसी पेड पर चढ़कर उसके फल खाने लगा। पेड के नीचे उसने लक्ष्मण की गोद में सिर डाले राम को सोते हुये देखा। लक्ष्मण का ध्यान आकर्षित करने के लिए हनुमान उनपर पत्ते और फल फेंकने लगा तथा अन्त में नीचे उतरकर उसने लक्ष्मण को हराया तथा राम के तीन बाण छीनकर फिर पेड के पत्तों में छिप गया। इसपर लक्ष्मण ने राम को जगाया तथा हनुमान् को देखने में अपने को असमर्थ पाकर प्रार्थना द्वारा पेड़ को छोटा बना दिया जिससे हनुमान् दृष्टिगोचर हुआ। राम ने उस सफेद वानर के कुण्डलों को देखकर उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकार किया तथा उसे उसके मामा वालि के पास भेज दिया। सेरीराम के पातानी पाठ में हनुमान् राम से युद्ध करता है तथा अन्त में राम को पहचानकर उनका सहायक बन जाता है। रामकेर्ति (सर्ग ५) के अनुसार हनुमान् वायु का पुत्र है तथा सुग्रीव द्वारा भेजा जाता है; वह लक्ष्मण को हराता है और राम उसके कुण्डल पहचानते हैं। अंजना ने उससे कहा था—जो तुम्हारे कुण्डल देख सके, वही तुम्हारे स्वामी हैं। इसके बाद हनुमान सुग्रीव को समाचार देने जाता है। रामकियेन का वृत्तान्त रामकेर्ति पर निर्भर होते हुये भी वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है—लक्ष्मण को हराने के पश्चात् हनुमान अपनी माता के दिये हुये संकेत से राम को नारायण जानकर अपने को राम की सेवा में समर्पित करते हैं और राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते हैं (अध्याय ७ और १६)।

हनुमान् के कुण्डलों का प्रसंग भारतीय कथाओं पर निर्भर है। रंगनाथ रामायण (४, ३) के अनुसार हनुमान् ने तपस्या द्वारा ब्रह्मा से वर पाकर पूछा था—इस पृथ्वी पर मेरे मोक्ष तथा इच्छित कार्यों की सिद्धि का आधार तथा मेरा आराध्य कौन होगा। ब्रह्मा ने उत्तर दिया—"जो तुम्हारे शरीर के आभूषणों को देख सकेगा, वही तुम्हारा स्वामी और प्रभु होगा।" पद्मपुराण (पाताल खंड ११२, १३५) में लिखा है कि जब राम लक्ष्मण की गोद में सिर रखकर विश्राम कर रहे थे उन्होंने एक "मणिकुंडलं हेमपिंगलं वानरम्" को देखा था। कब रामायण (४, २, ३५), बलरामदास रामायण तथा पाश्चात्य वृत्तान्तों १ और २० में भी कुण्डलों की चर्चा है। वृत्तान्त २० के अनुसार राम को देखने पर हनुमान् ने अनुभव किया कि मेरे कानों में कुण्डल आ गए हैं तथा वृत्तान्त १ के अनुसार हनुमान् ने देखा कि उसके राम-लक्ष्मण के पास पहुँचने पर दोनों के कानों में कुण्डल प्रकट हो रहे हैं। भावार्थ रामायण (४, १) के अनुसार अंजना ने हनुमान से कहा था कि जो तुम्हारी लंगोटी देख सकेगा वही तुम्हारा

१५२) में वाल्मीकीय दाक्षिणात्य रामायण के अनुसार वालि-सुग्रीव की जन्म-कथा का वर्णन किया गया है। भावार्थ रामायण (७, ३७) में ऋक्षरजा के स्त्री-रूप का कारण पार्वती का शाप माना गया है। किसी दिन कैलाश के एक सरोवर में शिवपार्वती की जलक्रीड़ा के समय वहाँ कुछ मुनि अचानक आ गये थे, जिससे शिव तथा पार्वती को अन्तर्द्धान हो जाना पड़ा था। पार्वती ने शाप दिया था कि जो कोई पुरुष इसमें स्नान करेगा वह नारी के रूप में उसमें से निकलेगा। ऋक्षरजा ने उस शाप से अनभिज्ञ होकर उस सरोवर में स्नान किया था।

बलरामदास के वृत्तान्त में कई नये तत्त्व पाये जाते हैं। ऋक्षरजा की उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है। इंद्र मदनिका नामक अप्सरा को अपनी सभा में अचानक हँसने के कारण यह शाप देते हैं कि वह वानरमूर्ति बनकर मानसरोवर के निकट पृथ्वी पर निवास करे और कश्यप से पुत्र प्रसव करने के बाद ही मुक्ति प्राप्त करे। अतः मदनिका मानसरोवर के निकट निवास करने लगती है। किसी दिन उर्वशी का सौंदर्य देखने के कारण कश्यप का वीर्यपात हो जाता है और वह अपना तेज जल में फेंक देते हैं। मदनिका उस जल का पान कर गर्भवती हो जाती है और वह यथासमय एक ऐसे पुत्र को जन्म देती है जिसका शरीर मनुष्य का है किंतु मुख वानर का है। एक शबरी उस शिशु का पालन-पोषण करती है और बाद में ब्रह्मा उसे ऋक्षनृपति का नाम देकर आरण्य के राजा के पद पर अभिषिक्त करते हैं।

ऋक्षरजा के स्त्री बन जाने की कथा भावार्थ रामायण के वृत्तान्त से साम्य रखती है। ब्रह्मा ऋक्षनृपति को पार्वती-वन के पश्चिमी भाग में प्रवेश करने से मना करते हैं किंतु ऋक्षनृपति उस निषेध की अवज्ञा करके उस वन में प्रवेश करता है और नारी के रूप में बदल जाता है। इसका कारण यह है कि शिव-पार्वती ने किसी दिन उस वन में रमण किया था किंतु पार्वती को तृप्ति नहीं मिली थी जिससे उन्होंने यह शाप दिया था कि जो कोई पुरुष उस वन में प्रवेश करेगा वह नारी के रूप में बदल जाएगा।

वालि तथा सुग्रीव का जन्म वाल्मीकीय कथा के अनुसार है; अंतर यह है कि ब्रह्मा यहाँ ऋक्षरजा को परामर्श देते हैं कि वह अपने पुत्रों को दण्डकारण्य में छोड़ दे। बाद में गौतम की पत्नी अहल्या दोनों को गौतमी नदी के तट पर पाती है, गौतम और अहल्या उन दोनों का धर्मपुत्र के रूप में पालन करते हैं (इस प्रसंग में अहल्या-गौतम का उल्लेख अनु० ५१४ की कथा का स्मरण दिलाता है)। जब ये बच्चे तीन वर्ष के हो जाते हैं किष्किन्धा का राजा खडद मृगया के अवसर पर गौतम से मिलता है और ऋषि को बताता है कि अजना नामक पुत्री को छोड़कर मुझे कोई संतान नहीं है। ऋषि वालि तथा सुग्रीव को राजा के हाथों सौंप देते हैं। बाद में खडद वालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज बनाता है।

का कोई उल्लेख नही था। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य बालकाण्ड (१७, १०) मे वालि तथा सुग्रीव को क्रमशः इन्द्र तथा सूर्य का पुत्र माना गया है। उनकी जन्मकथा दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे मिलती है, जिसके अनुसार अगस्त्य नारद से सुनी हुई कथा राम को सुनाते है।[1] अन्य पाठो मे यह कथा युद्ध कांड (सर्ग ४) मे रखी गई है, शुक उसे रावण को सुनाते हैं।

दाक्षिणात्य पाठ की कथा इस प्रकार है—"मेरु पर्वत के शिखर पर योगाभ्यास करते हुए ब्रह्मा की आँखों से आँसू निकले। ब्रह्मा के हाथ से पोंछे जाने पर ये आँसू भूमि पर गिरे और उनमे से ऋक्षरजा नामक वानर उत्पन्न हुआ जो पर्वत पर रहने लगा और प्रति दिन सध्या समय ब्रह्मा के पास आकर उनको फल-फूल चढाया करता था। किसी दिन ऋक्षरजा ने मेरु पर्वत के सरोवर मे से पानी पीना चाहा और उसने झुककर जल मे अपना प्रतिबिम्ब देखा। वह उसे अपना शत्रु समझकर सरोवर मे कूद पडा और एक अत्यन्त लावण्यमय नारी के रूप मे उसमे से निकला। इन्द्र तथा सूर्य सयोग से उस समय आ पहुँचे और उसे देखकर दोनो आसक्त हुये। इन्द्र का तेज उसके बालो पर गिरा और उससे वालि उत्पन्न हुआ, सूर्य का तेज उसकी ग्रीवा पर पडा और उससे सुग्रीव उत्पन्न हुआ। इन्द्र ने अपने पुत्र को एक अक्षय सुवर्ण माला दे दी तथा सूर्य ने अपने पुत्र की सेवा मे हनुमान् को नियुक्त किया। अगले दिन सूर्योदय होते ही ऋक्षरजा ने पुनः अपना वानर रूप प्राप्त किया और अपने पुत्रो के साथ ब्रह्मा के पास गया। ब्रह्मा ने ऋजरजा के साथ एक देवदूत को विश्वकर्मा-निर्मित किष्किन्धा भेज दिया। वहाँ पहुँचकर देवदूत ने ऋक्षरजा को वानर-राजा के पद पर अभिषिक्त किया।"

अन्य पाठो की कथा अस्पष्ट है, उसमे न तो ऋक्षरजा का नाम आया है और न वालि-सुग्रीव के वानर होने का कारण दिया गया है। किसी दिन प्रजापति की बाईं आँख मे एक रजकण पड गया था। उन्होंने उसे बाये हाथ से दूर फेक दिया था और उसमे से एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री उत्पन्न हुई। बाद मे सूर्य ने उसका आलिगन किया तथा उसे यह कहकर वरदान दिया कि तुम्हे एक वीर पुत्र उत्पन्न होगा। एक अन्य अवसर पर इन्द्र उसे देखकर आकर्षित हुए और अपने हाथ से उसका स्पर्श करके उसे आशीर्वाद दिया कि तुम से वालि-सुग्रीव नामक दो कामरूपी यमल वानर उत्पन्न होंगे जो किष्किन्धा मे राज्य करेंगे और उनमे से एक राम के साथ सख्य करेगा।

अध्यात्म रामायण (७, ३, १-२४) तथा आनन्द रामायण (१, १३, १४०-

---

१ दे० उत्तरकाण्ड, सर्ग ३७ के बाद प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग। प्रचलित रामायण के कुछ अन्य प्रक्षिप्त स्थलो पर ऋक्षरजा को वालि तथा सुग्रीव का पिता माना गया है। उदाहरणार्थ—३, ७२, २०, ४, ५७, ५, ७, ३६, ३६।

सुग्रीव, सूर्य का पुत्र।

तोरवे रामायण (४, २) के अनुसार 'किष्किधा' शब्द कश्यप और कुशस्थली के किष्क नामक पुत्र से सबध रखता है। किष्क के वश मे ऋक्षरजा उत्पन्न हुआ, उससे वालि तथा सुग्रीव का जन्म हुआ और बाद मे उसने अपनी पत्नी से अजना को भी पैदा किया था।

सेरीराम की कथा इस प्रकार है। दशरथ के द्वारपाल के पुत्र गौतम अपनी पत्नी देवी इन्द्र के साथ तपश्चर्या करते थे। देवी इन्द्र ने किसी दिन एक देवता के साथ व्यभिचार किया और फलस्वरूप वालि को प्रसव किया। अजना अपनी माता के पाप के विषय मे जानती थी किन्तु एक ऐद्रजालिक मरिण पाकर चुप रही। बाद मे गौतम-पत्नी ने किसी राजकुमार के साथ व्यभिचार कर सुग्रीव को जन्म दिया। गौतम वालि और सुग्रीव दोनो को अपनी सन्तान समझते थे। वालि ने किसी दिन अपनी बहन की मरिण हथियाने का प्रयत्न किया, जिससे अजना ने क्रुद्ध होकर अपनी माता का व्यभिचार प्रकट कर दिया। इस पर गौतम ने अपने पुत्रो की परीक्षा लेने के उद्देश्य से उनको यह कहकर सरोवर मे फेक दिया—यदि वे जारज हैं तो वानर बनकर जल से निकले। वालि तथा सुग्रीव वानर के रूप मे सरोवर से निकलकर लगुर नामक स्थान की ओर चले गए; वहाँ वालि राजा तथा सुग्रीव मत्री बन गया। गौतम अपने घर लौटे और अपनी पत्नी का परित्याग कर तथा अपनी पुत्री को शाप देकर स्वर्ग सिधारे (दे० अनु० ६७५)।

सेरत कांड के अनुसार रेसि गुतम की पत्नी देवी रोतह के दोनो पुत्र सुवालि तथा सुग्रीव वास्तव मे सूर्य की सन्तान है। उनकी बहन देवी अजनी माँ का पाप छिपाने के लिए पुरस्कार के रूप मे ऐद्रजालिक मरिण पाकर स्वर्ण-मुद्राओ की मजूषा भी चाहती है। इस पर माँ-बेटी का झगडा हुआ और गुतम ने यह कहकर मजूषा को समुद्र मे फेक दिया कि जो मजूषा निकालने मे समर्थ हो, वही मजूषा का अधिकारी बन जाय। अजना का प्रतिनिधि सुमन्दा तथा उसके भाई समुद्र मे कूदकर मजूषा तो नही ही निकाल पाते प्रत्युत वानरो के रूप मे बदल जाते हैं। प्रतिकार के उद्देश्य से वे उसी जल से अजनी का मुख धोते है जिससे अजनी को भी वानर-मुख प्राप्त हुआ। गुतम अपनी पत्नी को शिला बन जाने का शाप देकर तप करने चला गया।[1]

रामकियेन (अध्याय ६) के वृत्तान्त मे गौतम को साकेत का राजा माना गया है। निस्सन्तान होने के कारण वह अपना राज्य छोडकर वन मे तपस्या करने लगा। किसी पक्षी से यह जानकर कि निस्सन्तान होना महापाप है उसने यज्ञ का आयोजन किया, यज्ञ की अग्नि से एक सुन्दर कन्या प्रकट हुई जिसे गौतम ने अपनी पत्नी के रूप

---

१. दे० हि० भू० सरकार, इरिडयन इन्फ्लुएन्सेस, पृ० २०३-२०४।

पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ के अनुसार हनुमान् ने राम को वालि-सुग्रीव की जन्म कथा का निम्नलिखित विकृत रूप सुनाया था—अरुण किसी दिन दो स्त्रियों को सूर्य का रथ हाँकते देखकर हँस पड़ा। इस पर सूर्य ने अरुण से सूर्य-रथ हाँकने का निवेदन किया और अरुण ने इसे स्वीकार किया। अरुण बाद में अप्सराओं का नाच देखने गया और नारी में परिवर्तित हुआ था। इन्द्र ने उससे एक पुत्र उत्पन्न किया और उस पुत्र को प्रतिद्वन्द्वी की आधी शक्ति खींच लेने का वरदान दिया। अरुण पुनः पुरुष बनकर अपने पुत्र के साथ सूर्य के पास लौटा। सारा वृत्तान्त सुनकर सूर्य ने उसका स्त्री-रूप देखने की इच्छा प्रकट की तथा अरुण से एक पुत्र उत्पन्न किया। दोनों बालकों को अगस्त्य के हाथों सौंपा गया। बढ़ने पर उन्होंने तपस्या में संलग्न अगस्त्य पर पानी छिड़क दिया और अगस्त्य ने दोनों को वानर बन जाने का शाप दिया।

जैन रामकथाओं में वालि-सुग्रीव की कोई जन्म-कथा नहीं मिलती। पउमचरियं (पर्व ६) के अनुसार आदित्यरजा तथा इन्द्रमाली की तीन सन्तानें थीं—वालि, सुग्रीव तथा श्रीप्रभा। गुणभद्र के उत्तरपुराण के अनुसार वालि तथा सुग्रीव किष्किन्ध नामक नगर के राजा बलीन्द्र तथा उनकी पत्नी प्रियंगुसुन्दरी के दो पुत्र हैं (दे० ६८, २७१)।

५१४. वालि-सुग्रीव की जन्म-कथा का एक अन्य रूप मिलता है, जिसके अनुसार दोनों गौतम की पत्नी अहल्या की संतान माने जाते हैं। सारलादास महाभारत के वनपर्व में अहल्या के साथ इन्द्र के दुर्व्यवहार के विषय में निम्नलिखित कथा दी गई है। गौतम स्नान के लिए जाते समय अपनी पत्नी अहल्या का जीव अपने साथ ले जाया करते थे। किसी दिन इन्द्र और सूर्य इस निर्जीव शरीर पर आसक्त हुए। इन्द्र ने पहले उस शरीर में प्रवेश किया जिससे सूर्य उसके साथ संभोग कर सके; बाद में सूर्य ने अहल्या शरीर में प्रवेश किया और इन्द्र ने उसके साथ रमण किया। इस प्रकार अहल्या के दो पुत्र (श्यामशील तथा जयशील) उत्पन्न हुए। अंजना ने किसी दिन अपने पिता गौतम से अपने जारज भाइयों का रहस्य खोल दिया। परीक्षा लेने के उद्देश्य से गौतम ने दोनों को जल में फेंक दिया और वे वानर बन गये। गौतम ने दोनों को निस्सन्तान राजा खड्गद को प्रदान किया और राजा ने उनका नाम वालि और सुग्रीव रख दिया। अर्जुनदास कृत रामविभा में भी माना गया है कि वालि-सुग्रीव अहल्या की जारज संतान हैं (दे० सर्ग ४)। रंगनाथ रामायण के उत्तरकांड[1] में गौतम-पत्नी अहल्या की चार सन्तानों का उल्लेख है—अंजना, गौतम की पुत्री; वाली तथा शतानन्द, इन्द्र के पुत्र और

---

१. यह उत्तरकांड स्वतन्त्र रूप से छपता है। रचयिता के विषय में विवाद है। दे० चा० सूर्यनारायण मूर्ति : हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० २१८।

६-१०)। दिग्वर्णन के बाद सुग्रीव ने राम को पुनः वही कथा सुनाई। इस द्वितीय वृत्तान्त के अनुसार असुर का नाम दुंदुभि ही था, सुग्रीव के राजा बनने पर तारा तथा रुमा दोनो उसकी पत्नियाँ बन गई थी।[1] वालि ने सुग्रीव का सर्वत्र पीछा किया तब हनुमान ने सुग्रीव को मतग के शाप का स्मरण दिलाया जिससे सुग्रीव ऋष्यमूक पर रहने लगा (दे० सर्ग ४६)। अध्यात्म रामायण मे मायावी को मय दानव का परमदुर्मद पुत्र माना गया है (४, १, ४७) और आनन्द रामायण मे मय दानव के पुत्र दुर्मद की चर्चा है (दे० १, ८, १६)। सेरीराम के वृत्तान्त के अनुसार युद्ध के पूर्व ही गुफा को रगभूमि के रूप मे निश्चित किया गया था। वालि ने सुग्रीव से कहा—यदि सफेद रक्त गुफा मे से निकला तो मुझे मृत समझो, यदि लाल रक्त निकला तो शत्रु का मरण निश्चित है। वास्तव मे दोनो[2] निकले और सुग्रीव वालि को मरा समझकर लौटा। किष्किन्धा पहुँचकर सुग्रीव ने वालि की पत्नी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और उसने सुग्रीव से एक सप्ताह की अवधि माँग ली। इस अवधि मे वालि ने लौटकर सुग्रीव को दूर एक वन मे फेक दिया जहाँ सुग्रीव तपस्वी के रूप मे रहने लगा। पद्मपुराण (४, ११२, १६३) के अनुसार वालि ने ६०,००० वर्ष पूर्व दशरथ के अभिषेक के दिन ही सुग्रीव को निर्वासित किया था।

गुणभद्र के उत्तर पुराण (दे० ६८, २७१-२७५) के अनुसार वालि के पिता ने उसे राजा तथा सुग्रीव को युवराज बनाया था किन्तु वालि ने लोभवश सुग्रीव को निर्वासित किया था। पउमचरिय मे कथा इस प्रकार है। आदित्यरजा ने अपने पुत्र वालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज नियुक्त कर दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे राम के आगमन के पूर्व ही वालि को वैराग्य हुआ और उसने अपना राज्य सुग्रीव को सौंपा था (पर्व ९)। सुग्रीव ने तारा के साथ विवाह किया और उससे अगदभट तथा जयानन्द दो पुत्रो को उत्पन्न किया। साहसगति नामक विद्याधर ने भी तारा

---

१ पद्मपुराण (४, ११२, १६१), भावार्थ रामायण (४, अध्याय ४) आदि रचनाओं के अनुसार भी सुग्रीव ने वालि के लौटने के पूर्व तारा को पत्नी-स्वरूप अपना लिया था।

२ यह वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही है—सफेन रुधिरं दृष्ट्वा (९, १७)। सेरीराम मे किसी असुर का उल्लेख नही है, वालि का प्रतिद्वन्द्वी वास्तव मे महिष ही माना गया है। वह महिष अपने जनक का वध करके झुण्ड का स्वामी बन गया। वह दीमकों की बांबियाँ नष्ट किया करता था, इसलिए दीमको ने उसे वालि से युद्ध करने को प्रेरित किया। रामकेर्त्ति (सर्ग ४) मे काले तथा सफेद रक्त का उल्लेख है।

मे स्वीकार किया । कन्या का नाम कल-अचना था, उसने एक पुत्री उत्पन्न की जिसका नाम गौतम ने स्वाहा रखा । बाद मे गौतम की पत्नी के काकागवीरी तथा सुग्रीव नामक दो पुत्र हुए जिनके पिता क्रमशः इन्द्र और सूर्य थे । गौतम उनको अपनी ही सन्तान समझते थे । किसी दिन गौतम काकाश को कन्धे पर रखकर, सुग्रीव को गोद मे लिए तथा स्वाहा का हाथ पकडकर स्नान करने जा रहे थे । स्वाहा को बहुत बुरा लगा और उसने कहा—आप अपनी सन्तान को पैदल चलने देते हैं किन्तु दूसरो की सन्तान सिर पर चढाते हैं । गौतम ने इसका अर्थ पूछा और स्वाहा ने अपनी माता के व्यभिचार का रहस्य प्रकट कर दिया । गौतम को विश्वास नही हुआ और उन्होंने तीनो को यह कहकर नदी मे फेक दिया—मेरी सन्तान मेरे पास लौटे, दूसरो की सन्तान वानर बनकर वन में प्रवेश करे । इसका परिणाम यह हुआ कि काकाश तथा सुग्रीव वानर बनकर वन मे चले गए । बाद मे इन्द्र और सूर्य ने अपनी सन्तान के लिए खिदखिन नगर का निर्माण किया तथा मत्र द्वारा सब वानरो को बुलाकर काकाश को उनका राजा बना दिया ।

रामजातक तथा पालक्पालाम मे वही कथा मिलती है किन्तु स्वाहा का नाम फायेगमी तथा काकाश का नाम वालि (अथवा फालिकहन) माना गया है ।

५१५. वाल्मीकि रामायण मे वालि-सुग्रीव की शत्रुता के कारण के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है । वालि को अपने पिता[1] की मृत्यु के बाद राज्य मिला था और सुग्रीव उसके अधीन रहता था । दुदुभि के ज्येष्ठ पुत्र मायावी[2] ने किसी दिन वालि को ललकारा । वालि उसे मारने निकला और सुग्रीव उसके साथ निकल पडा । मायावी ने वालि को आते देखकर एक बिल मे प्रवेश किया । वालि सुग्रीव को बिल के द्वार पर खडा करके अन्दर चला गया । एक वर्ष बीत जाने पर सुग्रीव ने बिल में से फेन के साथ रक्त निकलते देखकर तथा असुरो का गर्जन सुनकर समझ लिया कि वालि मारा गया है । अतः उसने पत्थर से बिल का द्वार बन्द किया और वह अपने भाई की उदक-क्रिया सम्पन्न करके किष्किधा लौटा । मन्त्रियो ने सुग्रीव को राजा के रूप मे अभिषिक्त किया और वह न्यायपूर्वक शासन करने लगा । वालि अपने शत्रु को मार डालने के बाद लौटा, उसने सुग्रीव की अनुनय-विनय का तिरस्कार किया और उसकी पत्नी रुमा को ग्रहण कर सुग्रीव को निर्वासित किया । सुग्रीव सारी पृथ्वी पर भटककर अन्त मे वालि के लिये अगम्य ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगा (दे० सर्ग

१. राज्यं प्रशासतस्तस्य पितृपैतामहं महत् (६, ३), इस वाक्यांश के रचनाकाल मे उत्तरकांड की जन्मकथा प्रचलित नही थी ।

२. उत्तरकांड (सर्ग १२) मे मायावी तथा दुदुभि दोनो को मय-हेमा की संतान माना गया है ।

के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता करने की प्रतिज्ञा की और सुग्रीव ने सीता द्वारा फेंके हुए आभरण दिखलाकर सीता की खोज करवाने का वचन दिया। बाद मे सुग्रीव ने विस्तारपूर्वक वालि की शत्रुता की कथा सुनाई और राम ने उसको दण्ड देने की पुनः प्रतिज्ञा की (दे० सर्ग ५-१०)। इसपर सुग्रीव ने राम से कहा कि ध्यानपूर्वक वालि के पराक्रम का वर्णन सुनकर आगे का कार्यक्रम निश्चित कर लीजिये। तब उसने वालि की वीरता के दो उदाहरण प्रस्तुत किए।

दुंदुभि नामक असुर ने किसी समय समुद्र को चुनौती दी थी, समुद्र ने उसे शैल-राज हिमवान के पास भेजा और उसने दुंदुभि को वालि से युद्ध करने का परामर्श दिया। अतः दुंदुभि ने महिष[1] का रूप धारण कर वालि को युद्ध के लिए ललकारा। वालि ने अपने पिता महेन्द्र द्वारा प्रदत्त काचनी माला पहन कर दुंदुभि को द्वन्द्व-युद्ध मे मार डाला और उसकी लाश को एक योजन की दूरी पर फेंक दिया। उस समय दुंदुभि के कुछ रक्तकण मतग के आश्रम मे गिर पडे, जिससे मतग ने वालि (और उसके अनु-चरो) को यह शाप दिया कि आश्रम के एक योजन के निकट आने पर मृत्यु का शिकार बन जाओगे। यही कारण है कि ऋष्यमूक पर्वत वालि के लिए अगम्य है।

तब सुग्रीव ने दुंदुभि का 'अस्थिनिचय' दिखलाया और उन सात साल वृक्षो की ओर निर्देश किया, जिनको वालि एक ही समय पत्ररहित करने मे समर्थ था।[2] अन्त मे सुग्रीव ने पूछा—एतदस्यासमं वीर्यं मया राम प्रकाशितम्। कथं तं वालिनं हन्तुं समरे शक्ष्यसे नृप (११, ६८)।

---

१. सेरीराम के अनुसार वह महिष ही था, उसने अपने पिता का वध किया था। रामकियेन (अ० २०) मे माना गया है कि दुंदुभि का पिता नदकाल नामक असुर था, जिसे ईश्वर ने महिष बन जाने का शाप दिया। महिष का नाम दरव था, दरव का पुत्र दरवी (दुंदुभि) अपने पिता का वध करके स्वय वालि द्वारा मारा गया।

२. दे० ११, ६८। कुछ पक्तियो के बाद कहा गया है कि वालि ने उन सात साल वृक्षो का एक ही बाण से भेदन किया था (११, ७०)। एकाध स्थल (१२, ३, १४, १३) को छोडकर दाक्षिणात्य पाठ मे सर्वदा (अनुक्रमणिका १, १, ६६ मे भी) साल वृक्षो की चर्चा है। गौडीय पाठ तथा पश्चिमोत्त-रीय पाठ मे ताल वृक्षो का ही उल्लेख है। परवर्ती साहित्य (अध्यात्म रामायण, अग्नि पुराण, नृसिंह पुराण, महाभागवत पुराण, पद्म पुराण, आनन्द रामायण आदि) मे सर्वत्र ताल वृक्षो का ही भेदन वर्णित है। कम्ब रामायण (४, ४) मे साल वृक्षो का उल्लेख है।

से विवाह करना चाहा था किन्तु उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया गया था। साहसगति रूप-परिवर्तनकारी विद्या सिद्ध करने के उद्देश्य से हिमाचल पर साधना करने लगा। बाद मे साहसगति ने सुग्रीव का रूप धारण कर उसकी पत्नी और उसका राज्य छीन लिया था।

महाभारत के रामोपाख्यान मे रुमा का उल्लेख नही मिलता। **नृसिह पुराण** (५०, २१-२७) तथा **महानाटक** (५, ५१) के अनुसार तारा सुग्रीव की ही पत्नी थी जिसे वालि ने सुग्रीव से छीन लिया था। **रंगनाथ रामायण** (४, ४) मे तारा के विषय मे माना गया है कि समुद्रमथन के समय वालि और सुग्रीव ने देवताओ की सहायता की थी। लक्ष्मी और चद्रमा के पश्चात् देवकामिनियो की उत्पत्ति हुई। देवताओ ने उन सुन्दरियो मे से तारा को वालि-सुग्रीव को दिया था और वे अपनी राजधानी लौटकर उसके साथ रहने लगे। इसके कुछ दिनो के बाद सुग्रीव ने सुषेण[1] की पुत्री रुमा के साथ विवाह किया। **रामकियेन** (अध्याय ६) के अनुसार वालि और सुग्रीव ने ईश्वर के लिए सुमेरु पर्वत को पूर्ववत् सीधा कर दिया। पुरस्कार स्वरूप वालि को एक त्रिशूल और सुग्रीव को तारा मिल गई किन्तु वालि ने तारा को चुराकर उसके साथ विवाह किया।

वाल्मीकीय किष्किन्धाकाण्ड के अनुसार सुग्रीव ने वालि की वीरता का वर्णन करते हुए उसके दो कार्यो का उल्लेख किया है (दे० अनु० ५१६)। परवर्ती साहित्य मे **रावण की पराजय** वालि का सबसे महान् कार्य माना गया है। विदेशी रामकथाओ मे उस पराजय को एक नया रूप दिया गया है जिसके अनुसार अगद को मदोदरी तथा वालि की सन्तान माना गया है तथा उनके एक और पुत्र अनील (अनूल) की भी चर्चा है (दे० अनु० ६५५)। **सिहली रामकथा** मे वालि हनुमान् का स्थान लेकर लकादहन के पश्चात् सीता को राम के पास ले आता है। इस कथा के अनुसार वालि को विष्णु से तीन वरदान मिले थे—समुद्र पर चलने की शक्ति, अग्नि से सुरक्षा, बाण द्वारा अवध्यता।

पउमचरियं (पर्व १०३, १२५-३४) मे वालि के पूर्वजन्मो की कथा भी दी गई है। इसके अनुसार वह क्रमशः मृग, मघदत्त, राजकुमार सुप्रभ तथा वालि के रूप मे प्रकट हुआ था।

ग। राम की बलपरीक्षा

५१६ वाल्मीकि रामायण के अनुसार ऋष्यमूक पर राम-लक्ष्मण के स्वागत के पश्चात् सुग्रीव और राम ने अग्नि की प्रदक्षिणा करके सख्य कर लिया। राम ने वालि

---

१ वाल्मीकि रामायण मे सुषेण को तारा का पिता माना गया (दे० ४, २२, १३)। सुषेण के विषय मे आगे अनु० ५८६ देख ले। कम्बरामायण (४,३, ३८ और ४, ७, १८) मे माना गया है कि वालि ने अकेले ही समुद्र का मथन किया था।

देखा और उसे चोर समझकर शाप दिया कि तेरे शरीर पर सात ताल वृक्ष उगेंगे। सर्प ने यह प्रतिशाप दिया—जो पुरुष उन वृक्षों को काटेगा, वह तुझे मार डालेगा। राम ने सर्प के शरीर पर चक्राकार स्थित उन वृक्षो को देखा, तब उन्होंने शेषांश लक्ष्मण[1] के पाँव को अपने पाँव से दबाकर उस सर्प को सीधा किया और एक बाण से सात वृक्षो को काट डाला। यह देखते हुए भी सुग्रीव का सन्देह दूर नही हुआ और उसने राम से वालि की माला की कथा सुनाई। कश्यप ने कठोर तप के बल पर शिव से वह माला प्राप्त की थी और बाद मे उसे अपने पुत्र इन्द्र को दिया। इन्द्र ने किसी समय वालि को वह माला प्रदान की थी, इस माला की विशेषता[2] यह है कि उसे देखकर शत्रुगण युद्ध मे बलहीन हो जाते है। वालि उसे सदा ही पहने रहता है। इस पर राम ने जिस साँप को सात वृक्ष काट कर शापमुक्त किया उसे आदेश दिया कि वह किष्किन्धा जाकर रात्रि मे वालि के सोते समय उस माला को ले जाय। साँप ने उसे चुराकर इन्द्र को दे दिया। इसके बाद ही सुग्रीव वालि से द्वन्द्वयुद्ध करने के लिए सहमत हुआ।

तत्त्वसंग्रहरामायण के अनुसार राम ने वृक्ष-भेदन के पश्चात् सुग्रीव को अपना विश्व-रूप दिखलाया और उसे ज्ञानमुद्रा तथा रामसहस्रनामस्तोत्र भी सिखलाया (दे० ४, ३-४)।

—**सेरीराम** के अनुसार राम ने सर्वप्रथम एक ही बाण से एक समस्त वन नष्ट किया, उस समय राम-धनुष की टंकार सुनकर सुग्रीव और लक्ष्मण दोनों मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़े, बाद मे राम ने वृक्ष-भेदन तथा अस्थिककाल-निक्षेप द्वारा भी अपनी

---

१ महानाटक के अनुसार लक्ष्मण ने अपने पैर से सर्प दबाया था। सेरतकाड की कथा अनु० ३९९ मे देख ले। अन्य वृत्तान्तो मे माना गया है कि राम ने सर्प को दबाकर उसे सीधा होने के लिये बाध्य किया था, दे० पाश्चात्य वृत्तान्त १, सेरीराम, रामकीर्त्ति।

२ वाल्मीकि रामायण मे भी इन्द्र की माला का अनेक स्थलो पर उल्लेख हुआ है किन्तु इसकी इस विशेषता के विषय मे कुछ नही कहा गया। तारा की एक उक्ति के अनुसार इन्द्र ने युद्ध मे वालि से सन्तुष्ट होकर उसे यह माला दी थी—**या दत्ता देवराजेन तव तुष्टेन संयुगे** (४, २३, २८)। उत्तरकाड मे माना गया है कि इन्द्र ने उसे वालि को जन्म के बाद ही दिया था (दे० अनु० ५१३)। रंगनाथ रामायण (४, ९) के अनुसार वालि को यह माला मायावी से मिली थी। परवर्ती रामकथाओ मे माना गया है कि माला के कारण राम ने वालि को छिपकर मारा था (दे० आगे अनु० ५२२)। भावार्थ रामायण (४, ४) के अनुसार कश्यप ने वालि को यह माला प्रदान की थी।

इसपर राम ने अपने पादांगुष्ठ से दुदुभि के अस्थि-कंकाल को दश योजन की दूरी तक फेक दिया किन्तु सुग्रीव का सन्देह दूर नही हुआ (सर्ग ११)। तब राम ने **सात ताल** तरुओ का एक ही बाण से भेदन किया, रामबाण पर्वत तथा सप्तभूमि पारकर अपने आप से उनके तूणीर मे आ गया—**भित्वा तालान्गिरिप्रस्थं सप्तभूमिं विवेश ह……पुनस्तूणं तमेव प्रविवेश ह** (१२, ३-४)। यह देखकर सुग्रीव वालि को चुनौती देने को तैयार हुआ।[1]

५१७. सभव है कि आदि रामायण मे राम की बल-परीक्षा विषयक सामग्री नहीं मिलती थी। महाभारत के रामोपाख्यान, गुणभद्रकृत उत्तर पुराण और रामकियेन में राम के इन दोनो कृत्यो का कोई उल्लेख नही किया गया है। कुछ अन्य रचनाओ में केवल वृक्षो के भेदन का प्रसग उल्लिखित है; उदाहरणार्थ—नृसिंह पुराण (अध्याय ५०), भट्टिकाव्य (सर्ग ६, ११६), रामायण ककविन (सर्ग ६), तत्त्वसग्रह रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३। शेष रामकथाओ मे इन दोनो कृत्यो का प्रायः वर्णन किया गया है।

—महावीरचरित (७, १६), अनर्घराघव (अक ५) तथा कम्ब रामायण (४, ५) के अनुसार लक्ष्मण ने दुदुभि के अस्थिककाल को फेक दिया था। रगनाथ रामायण में लिखा है कि दुंदुभि-वालि का द्वन्द्व युद्ध १०० वर्ष तक चलता रहा (४, ४)। सेरी-राम मे महिष के अतिरिक्त राक्षस कर्तीविहार (कार्त्तवीर्य) की चर्चा है, जिसे वालि ने मार डाला था, राम ने अपने पादागुष्ठ से उसका अस्थिककाल समुद्र मे फेक दिया।

—ताल वृक्षो के विषय मे एक भविष्यवाणी का प्राचीन काल से उल्लेख मिलता है। नृसिंह पुराण के अनुसार पुराणज्ञो ने कहा था कि जो इन सात ताल वृक्षो का एक साथ भेदन करेगा वह वालि का वध करेगा (५०, २२)। रंगनाथ रामायण (४, ४), आनन्द रामायण और पश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी इस भविष्यवाणी की चर्चा है।

रंगनाथ रामायण मे इस पर बल दिया गया है कि वे सात ताल टेढे-मेढे ढग से खड़े थे। महानाटक (५, ४४), आनन्द रामायण, उपेन्द्र भजकृत वैदेहीश विलास, अग्नि-वेश रामायण (छन्द २६), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, सेरीराम, रामकेर्ति आदि रचनाओ के अनुसार वे सात ताल एक सर्प की पीठ पर चक्राकार स्थित थे। आनन्द रामायण (१, ८, ३५-४६) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है। वालि ने किसी गुफा मे ताल वृक्ष के फल रखे थे किन्तु कोई उनमे से सात फल ले गया। वालि ने गुफा मे एक सर्प

---

१. दे० सर्ग १२, १-१३। लका के युद्ध मे सुग्रीव का भाग अनु० ५८४ में वर्णित है। उत्तरकाड (सर्ग १०८) के अनुसार सुग्रीव ने समुद्र को राज्य देकर राम के साथ स्वर्गगमन किया।

पाठो मे भी मिलता है। इसके अतिरिक्त हनुमान दो अवसरो पर कहता है कि राम ने युद्ध मे वालि को मारा था : प्रथम वार सीता से—ततो निहत्य तरसा रामो वालिन-माहवे (५, ३५, ५०) और दूसरी वार भरत से—वालिनं समरे हत्वा महाकाय महाबलम् (६, १२६, ३८)। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी राम सुग्रीव से मैत्री करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते है कि मै वालि को समर मे मारूँगा—प्रतिजज्ञे च काकुत्स्थ समरे वालिनो वधम् (पूना सस्करण, वनपर्व २६४, १४)।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीनो पाठो मे वालि-सुग्रीव के दो द्वन्द्व युद्धो का वर्णन किया गया है। प्रथम द्वन्द्व युद्ध के समय राम दोनो भाइयो को पहचानने मे असमर्थ थे। जिससे पराजित सुग्रीव को ऋष्यमूक पर लौटना पडा। इसके बाद सुग्रीव को गजपुष्प की माला पहना दी गयी (सर्ग १२, १४-४२)।

द्वितीय द्वन्द्व युद्ध का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। सुग्रीव का आह्वान सुनकर वालि अपनी पत्नी तारा का अनुरोध ठुकराकर पुन. अपने महल से निकला, सुग्रीव से द्वन्द्व-युद्ध करते समय राम-बाण द्वारा छाती मे मारा गया और मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडा (सर्ग १३-१६)।

—प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे इसके अनन्तर दो प्रक्षिप्त सर्ग मिलते है। प्रथम सर्ग मे वालि राम को उनके अक्षत्रिय-व्यवहार के कारण दोष देता है—अधर्मेण त्वयाऽहं निहतो रणे; मैने आपके साथ कोई अन्याय नही किया था और आपने अदृश्य रहकर मुझे दूसरे के साथ युद्ध करते समय मारा है। इस पर राम अपनी सफाई मे दो तर्क उपस्थित करते हैं—(१) मैंने राजा भरत का प्रतिनिधि होकर तुमको अनुज की भार्या के अपहरण के कारण समुचित दन्ड दिया है, जैसा कि मैंने सुग्रीव को प्रतिज्ञा दी थी, (२) धर्मपडित राजर्षि तक मृगया खेलते हैं, तुम वानर मात्र हो, अतः किसी भी प्रकार से तुम्हारा वध करने का मुझे अधिकार है।

वालि यह तर्क स्वीकार कर राम से क्षमा मांगता है तथा अगद, सुग्रीव और तारा की रक्षा करने का राम से निवेदन करता है (सर्ग १७-१८)।

—तारा का आगमन, उसका विलाप तथा हनुमान् द्वारा उसको सान्त्वना तीन सर्गो मे वर्णित है।[1] इसके अनन्तर वालि सुग्रीव को सबोधित कर अपना राज्य सौप देता है और उससे अगद को पुत्र के रूप मे ग्रहण करने का निवेदन करता है, तारा के परामर्श के अनुसार चलने तथा राम की सेवा करने का उपदेश देता है और अन्त मे

१ दे० सर्ग १६-२१। सर्ग २१ की सामग्री का पश्चिमोत्तरीय पाठ मे अभाव है। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे तारा के विलाप के अन्तर्गत राम के प्रति उसके शाप का उल्लेख है (दे० अनु० ७२६)।

शक्ति का प्रमाण दिया ।[1]

—पउमचरियं(पर्व ४८) मे सुग्रीव आदि वानर रावण से युद्ध करने से बहुत डरते हैं और लक्ष्मण उनको विश्वास दिलाने के उद्देश्य से कोटिशिला उठाते है । इस कोटिशिला के विषय मे भी एक भविष्यवाणी प्रसिद्ध थी कि जो उसे उठा सकेगा उससे रावण की मृत्यु होगी ।

घ । वालिवध

५१८ यह असभव नही कहा जा सकता है कि आदि रामायण मे राम ने छल से नही, बल्कि सग्राम मे वालि को मारा था । बडौदा के प्रामाणिक सस्करण के कथा-बीज मे तत्सम्बन्धी कथन इस प्रकार है, "सुग्रीव राम के साथ वालि की गुफा के पास गया, वालि सुग्रीव का गर्जन मुनकर निकला । राम ने सग्राम मे वालि को मारा और सुग्रीव को राज्य दिया"—

किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥५३॥
ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिंगलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥५४॥
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे ।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥५५॥ ।(वालकांड, सर्ग १)

इस सग्राम के विषय मे प्रचलित रामायण मे और सामग्री विद्यमान है । वालि-वध के वाद तारा वानर-सेना को डाँटती है किन्तु वानर उत्तर मे कहते है, "आपका पुत्र जीवित है, उसी की रक्षा कीजिए । यमराज ने राम के रूप मे आकर वालि का वध किया । उसने वालि द्वारा फेंके हुए वृक्ष और पत्थर विदीर्ण किये और वालि को मारा है । वालि के मरने के वाद समस्त वानर-सेना भाग गयी"—

जीवपुत्रो निवर्तस्व पुत्र रक्षस्व चांगदम् ।
अन्तको रामरूपेण हत्वा नयति वालिनम् ॥११॥
क्षिप्तान् वृक्षान् समाविध्य विपुलाश्च तथा शिलाः ।
वाली वज्रसमैर्वाणैर्वज्रेणेव निपातितः ॥१२॥
अभिभूतमिदं सर्वं विद्रुतं वानरं वलम् ।
अस्मिन् प्लवगशार्दूले हते शक्रसमप्रभे ॥१३॥ (दा०पाठ, ४, सर्ग १९)

यह प्रसग गौडीय (४, १८, १०-१२) तथा पश्चिमोत्तरीय (४, १५, ११-१४)

---

१. हिन्देशिया की कथाओ मे विवाह के अवसर पर भी वल-परीक्षा के प्रसग मे वृक्ष-भेदन की कथा मिलती है (दे० ऊपर अनु० ३९९) ।

रक्त का अर्द्धविन्दुमात्र माँगते है और यह आश्वासन देते है कि क्षतचिह्न वाल के सप्तम अश से भी कम चौडा होगा। वालि इस प्रस्ताव को अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझकर राम-वाण अपने हृदय मे घुसा कर आत्महत्या कर लेता है।[1] उपर्युक्त कथाओ का आधार भारतीय प्रतीत होता है। **पद्मपुराण** (४, ११२, १६७) मे इसका उल्लेख किया गया है कि मरने के पूर्व वालि ने राम को उनका वाण लौटाया था। **कम्ब रामायण** के वालिवधपटल के अनुसार वालि ने आहत होने के वाद रामवाण को अपने शरीर से वाहर निकलने के पूर्व ही अपने वलिष्ठ हाथ से पकड लिया था। वाद मे उसके हाथ शिथिल पडे, रामवाण वालि का शरीर भेदित कर और समुद्र जल मे धुलकर राम के तूणीर मे जा पहुँचा।

५२० **अभिषेकनाटक** मे वालि राम से कहता है कि मैं आपसे दण्डित हो कर निष्पाप हो गया हूँ—**भवता दण्डितत्वाद् विगतपापोऽह ननु** (१, २२) और इसके वाद यमराज द्वारा भेजा हुआ विमान उसे ले जाता है—**एष सहस्रहंसप्रयुक्तो वीरवाही विमानः कालेन प्रेषितो मां नेतुमागत** (१, २७ के वाद)। अधिकाश अर्वाचीन राम-कथाओ मे वालि की **मुक्ति-प्राप्ति** का वर्णन किया गया है। वह प्रायः नारायण के रूप मे राम की स्तुति करने के पश्चात् स्वर्ग की ओर प्रस्थान करता है, दे० अध्यात्म रामायण (४, २), पद्मपुराण (४, ११२, १६६-१६६), आनन्द रामायण (१, ८, ६३), कम्ब रामायण, रगनाथ रामायण (४, ६), तोरवे रामायण (४, ४), वलरामदास रामायण, रामचरितमानस (४, १०-११), पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३, राम-कैर्ति। **सेरीराम** के अनुसार उसके शरीर से एक ज्योति निकलकर आकाश मे विलीन हो गई थी। **रामकियेन** (अध्याय ३३) मे माना गया है कि वालि देवता वन गया और उसी रूप मे उसने रावण का यज्ञ नष्ट किया था। **तिब्वती रामायण** के अनुसार राम ने ऋषियो से यह वर प्राप्त किया था कि उनके हाथ से मारा गया मनुष्य स्वर्ग मे देवता वन जाएगा और इसीलिए वालि भी देवता वन गया।

—कुछ रामकथाओ मे वालि के **अगले जन्म** के विषय मे माना गया है कि द्वापर युग के अन्त मे वालि भील के रूप मे प्रकट होकर विष्णु के अन्य अवतार कृष्ण का वध करेगा। यह कथा महाभारत के वृत्तान्त पर आधारित है। मौसल पर्व (अध्याय ५) मे इसका वर्णन मिलता है कि जरा नामक व्याध ने कृष्ण को सुप्त मृग समझकर उन

---

१. रामचरितमानस के अनुसार भी राम ने वालि को वचाने का प्रस्ताव किया था किन्तु वालि ने राम के दर्शन पाकर मरना ही श्रेयस्कर समझा। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी लिखा है कि राम ने उसी शर्त पर वालि को जीवित रखना चाहा था कि वह सुग्रीव को पत्नी और राज्य लौटा दे। वालि ने विष्णु के हाथ से मरकर स्वर्गप्राप्ति को ही चुन लिया था।

उसे अपनी माला प्रदान करता है। तब वह अंगद को सुग्रीव का आज्ञापालन करने का आदेश देकर अपने प्राण छोड देता है (सर्ग २२)। तारा-विलाप, सुग्रीव-पश्चात्ताप तथा वालि की अन्त्येष्टि के बाद किष्किन्धा मे सुग्रीव के राजा तथा अंगद के युवराज बनने का वर्णन किया गया है। राम तथा लक्ष्मण वन मे ही रह जाते हैं (दे० सर्ग २३-२६)।

५१६. महाभारत के रामोपाख्यान मे वालि की पत्नी 'सर्वभूतरुतज्ञा' (समस्त प्राणियो की बोली समझनेवाली) है और वह वालि को बताती है कि सुग्रीव को राम का सहारा मिला है और उसे बाहर निकलने से रोकना चाहती है। वालि को शका हो जाती है कि तारा सभवतः "सुग्रीवगतमनसा" है और वह उसकी हित की बातो पर ध्यान न देकर गुफा से निकलता है (पूना सस्करण ३, २६४, १६-२६)। इस मे तथा नृसिंह पुराण की रामकथा मे सुग्रीव-वालि के केवल एक ही द्वन्द्व-युद्ध का उल्लेख किया गया है।

—दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार वालि ने प्रथम द्वन्द्व-युद्ध के बाद सुग्रीव की छाती पर एक पर्वत रख दिया था जिसे राम ने उठा लिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

तिब्बती और खोतानी रामायणो मे द्वितीय द्वन्द्व-युद्ध के लिए सुग्रीव की पूँछ मे एक दर्पण बाँधा जाता है। रामकियेन मे राम अपने वस्त्र का किनारा सुग्रीव की कमर मे लपेटते है। सेरीराम के अनुसार सुग्रीव को पहचानने के उद्देश्य से उसकी कमर मे एक जड लपेटी गई और उसकी पूँछ के नीचे लाल रग चढाया गया था।

—सेरीराम, रामकेर्ति तथा रामकियेन मे यह माना गया है कि वालि ने आहत होने के पूर्व ही राम-बाण हाथ से रोक दिया था। सेरीराम के अनुसार वालि ने अपनी निर्दोषता के प्रमाण देने के बाद राम को उनका बाण लौटाना इसलिये अस्वीकार कर दिया कि विष्णु का बाण अमोघ है। तब उसने बाण छोड दिया और वह ऊपर उठकर वालि की छाती मे घुस गया। आहत वालि ने राम का हाथ पकडकर उनको अपनी पत्नी तथा अपने दो पुत्रो को सौंप दिया और हनुमान् को राम-सेवा के लिये उपयुक्त बताया। अनन्तर उसने राम का हाथ छोड दिया और चल बसा। राम किष्किन्धा जाकर वहाँ राजा के रूप मे शासन करने लगे। रामकेर्ति (सर्ग ५) मे राम ने आहत वालि को जीवित रखना चाहा किन्तु वालि ने अस्वीकार किया क्योकि पराजय तथा क्षतचिह्न के कारण अपयश होगा। उसने रामबाण छोड दिया और उस बाण से छेदित होकर वह मर गया।

रामकियेन (अध्याय २१) मे भी वालि रामबाण हाथ से सँभाल कर राम की भर्त्सना करता है जिसपर राम अपना नारायण रूप दिखलाकर वालि को उसके पापो का स्मरण दिलाते है। वालि अंगद-सुग्रीव-हनुमान् को राम की रक्षा मे छोड कर मरने के लिए तैयार हो जाता है। इसपर राम वालि का जीवन बचाने के विचार से उससे

५२२. वालिवध के दोष से राम को मुक्त करने का प्राचीनकाल से प्रयास किया गया है। वाल्मीकि रामायण के तत्सबंधी प्रक्षिप्त सर्गों का सार ऊपर दिया गया है (दे० अनु० ५१८)। कम्ब रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने वालि को यह तर्क दिया था—"राम ने सुग्रीव को शरणागत के रूप में स्वीकार किया था और वचन भी दिया कि वह तुम्हारा वध करेंगे। यदि वह सामने आते तो तुम भी उनके पाँव पकड़कर शरण की प्रार्थना करते। मेरे भाई का व्रत है कि वह शरणार्थियों को अभयदान दे, अतः सुग्रीव को दिए हुए वचन की रक्षा के लिए वह छिपकर तुम पर तीर चलाने के लिए विवश हुए।" तत्व संग्रह रामायण(४, ५) में शिव भी पार्वती के सामने यह तर्क प्रस्तुत करते हैं।

—आनन्दरामायण के अनुसार वालि की माला को देखकर शत्रु बलहीन बन जाते थे और इसीलिए राम ने सर्प को माला चुराने का आदेश दिया था (दे० अनु० ५१७)। परवर्ती साहित्य में माना गया है कि राम ने माला के कारण वालि को छिपकर मारा था।[1] वाल्मीकि रामायण के अनुसार आहत वालि नहीं मर सकता था जब तक वह उस माला को पहनता रहा (४, १७, ५), वालि ने उसे सुग्रीव को अर्पित करते हुए कहा था कि इसमें श्री का निवास है। रामायण के टीकाकार गोविन्दराज ने लिखा है कि यह माला सामने से युद्ध के लिए आये हुए प्रतिद्वन्दी (य. पुरो युद्धायागच्छति) का बल खींचकर उसे माला धारण करने वाले को प्रदान करती है (४, ११, ३६)। कम्ब रामायण (४, ७, २०, ४, ३, ४०) के अनुसार वालि को अपने प्रतिद्वन्दी के बल का अर्द्धांश मिला करता था। तत्व संग्रह रामायण (४, ६) के अनुसार वालि ने समुद्र-मथन के समय विष्णु से यह वर प्राप्त किया था कि सामने से लड़नेवाले शत्रु की अर्द्ध-शक्ति उसे मिलेगी।

—कुछ अन्य रचनाओं में वालिवध के कारण राम के दोष का प्रश्न उठ ही नहीं सकता। अनामक जातकम् में वालि राम का धनुष-संधान देखते ही भयभीत होकर भाग जाता है और उसका आगे चलकर कोई उल्लेख नहीं होता। पउमचरियं (पर्व ४७) के अनुसार वालि स्वेच्छा से सुग्रीव को राज्य दिलाकर श्रमण बन गया था किन्तु साहस-गति नामक विद्याधर ने सुग्रीव का रूप धारणकर उसकी पत्नी तथा राज्य को छीन लिया था। राम सेना को लेकर सुग्रीव के साथ किष्किन्धा के निकट पहुँचे। साहसगति ने अपनी सेना के साथ राम का सामना किया और दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। इस

१. दे० भावार्थ रामायण (४, ४)। तोरवे रामायण (४,४) में भी माना गया है कि इन्द्र द्वारा प्रदत्त माला के कारण शत्रु की आधी शक्ति युद्ध में वालि को मिला करती थी।

पर बाण चलाया था। महानाटक में इस व्याघ तथा वालि की अभिन्नता का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है (५, ५७, १४, ७५)। आनन्द रामायण (१, ८, ६६-६८) के अनुसार राम ने आहत वालि से कहा था कि तुम द्वापर के अन्त में भील होकर पूर्व-वैर के कारण बाण से मेरे पैर को छेदोगे और इसके बाद ही मेरे हाथ से मरने के फल-स्वरूप मुक्ति प्राप्त करोगे। उत्तर भारत के एक वृत्तान्त (पाश्चात्य वृ० न० १३, पृ० ३४२) में भी इसका उल्लेख किया गया है। कृत्तिवास ने इस प्रसंग को एक नया रूप दिया है। वालि के लिए विलाप करते हुए तारा ने राम को शाप दिया था कि "जन्मान्तर में वालि तुमको मारेगा" (४, १३)।

५२१ वालि-वध के कारण राम के प्रति अंगद-वैर का कई रामकथाओं में वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण में अंगद बारबार सुग्रीव की कठोरता का उल्लेख करता है तथा इस प्रसंग में राम का भी नाम लेता है—**भेतव्यं तस्य सततं रामस्य च महात्मनः** (४, ४९, ६), **इहास्ति नो नैव भयं पुरन्दराग्न राघवाद् वानर-राजतोऽपि वा** (४, ५३, २६)। परवर्ती साहित्य में अंगद के राम-वैर को सक्रिय रूप दिया गया है। अंगद ने दूतकार्य के लिये जाते समय राम के प्रति वैर तथा उनका वध करने की अभिलाषा प्रकट की थी, इसका महानाटक में स्पष्ट उल्लेख है (दे० अंक ८, ३), इसके अतिरिक्त युद्ध के पश्चात् अयोध्या में पहुँचकर अंगद ने राम को युद्ध के लिए ललकारा था किन्तु एक आकाशवाणी से यह जान कर वह शान्त हुआ कि वालि-वध का प्रतिकार मथुरावतार (अर्थात् कृष्णावतार) के समय वालि-रूपी भील द्वारा ही होने वाला है (अंक १४, ७२-७६)। हिकायत महाराज रावण के अनुसार अंगद ने राम को द्वन्द्व युद्ध में हरा दिया, तब राम ने विभीषण को वालि की कब्र पर भेज दिया और विभीषण वालि को जिलाकर उसे राम के पास लाया। अपने पिता को देखकर अंगद शान्त हुआ, वालि अंगद को राजा बनाने का आदेश देकर अंतर्धान हुआ। इस प्रकार अंगद ही वानरों का राजा बन गया।

सारलादास के महाभारत (विराट पर्व, पृ० २३) में यह माना गया है कि अंगद ही ने भील के रूप में अपने पिता वालि के वध का प्रतिकार किया था। रामचन्द्रिका (प्रकाश २९ और ३८) में अंगद के वैर तथा उसके गर्वनिवारण का वर्णन किया गया है।[1]

---

१ अंगद के विषय में अनु० ५८५ भी देख लें। विदेशी रामकथाओं में अंगद को वालि और मन्दोदरी का पुत्र माना गया है (दे० अनु० ६५५)। रामजातक में अंगद के पिता के रूप में राम का उल्लेख है (दे० अनु० ३२७)।

के बाद वानर-सेना के साथ लका के लिए प्रस्थान करते है।

कुछ अन्य रचनाओ मे राम की वर्षाकालीन शिवपूजा का वर्णन किया गया है। शिव महापुराण (वेकटेश्वर प्रेस, उमासहिता, अध्याय ३, ५३-५५) मे लिखा है कि राम ने पर्वत पर शिव की आराधना की थी तथा घोर तपस्या करने के पश्चात् शिव से धनुष, वाण तथा ज्ञान प्राप्त किया था जिससे वह रावण पर विजयी हो सके। नवलकिशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित हिन्दी शिव पुराण (शतरुद्र सहिता, अध्याय ३४-३६) मे राम की इस शिवपूजा का विस्तृत वर्णन किया गया है। अगस्त्य ने राम से कहा था कि रावण को हराने के लिये शिव की शरण लेना तथा घोर तप करना अनिवार्य है। इसपर राम ने गोदावरी के निकट रामगिरि पर शिवलिंग की स्थापना की थी और चार महीने शिवपूजा तथा तप मे विताए। तव शिव अन्य देवताओ के साथ दिखाई दिये और उन्होंने राम को धनुप तथा अस्त्र प्रदान किये। देवताओ ने शिव के आदेश पर राम को अपने-अपने अस्त्र दे दिये तथा वे राम को सहायता करने के लिए वानर और रीछ वन गये। राम ने शिव से निवेदन किया कि वह भी अवतार लेकर उनकी सहायता करे और शिव ने आश्वासन दिया कि मैं हनुमान् के रूप मे तुम्हारी सहायता करूँगा। अन्त मे शिव राम को अपनी गीता का ज्ञान देकर अन्तर्द्धान हो गये।

शिवगीता (वेकटेश्वर प्रेस) का वर्ण्य विषय उपर्युक्त वृत्तान्त से अधिक भिन्न नही है। इसके अनुसार अगस्त्य विरही राम को सान्त्वना और ससार की असारता के विषय मे उपदेश देने आए। रावण पर विजय प्राप्त करने का उपाय राम ने उनसे पूछा और अगस्त्य ने उनको पाशुपतव्रत करने का परामर्श दिया। अत राम शिवलिंग स्थापित कर चार महीने तक नित्य ही उसकी पूजा और ध्यान करते रहे। अन्त मे पार्वती तथा देवताओ के साथ शिव प्रादुर्भूत हुए और उन्होंने राम को दिव्य-धनुष के साथ महापाशुपतास्त्र प्रदान किया। तव शिव ने देवताओ को आज्ञा दी कि वे राम को अपने-अपने अस्त्र दे दे और वानरो का रूप धारण कर उनकी सहायता करे। अनन्तर भगवद्गीता के अनुकरण पर इसका वर्णन किया गया है कि शिव ने अपना विश्वरूप दिखाकर राम को ब्रह्मज्ञान के विषय मे शिक्षा दी थी।[1] अब्दरामायण (दे०अनु०१७६) मे भी माल्यवान् पर्वत पर राम द्वारा लिगार्चन का उल्लेख किया गया है।

१ रामकथा पर शैवप्रभाव के विषय मे अनु० ७८३-७८४ देख ले। वलरामदास रामायण मे भी वर्षाऋतु के अत मे राम के पास अगस्त्य के आगमन् का वर्णन किया गया है। मार्कण्डेय अगस्त्य के साथ आये थे और राम का विरह देखकर, उसने राम के भगवान होने पर सदेह प्रकट किया था : अगस्त्य ने उसका समाधान करते हुए कहा कि विष्णु ने मानव शरीर धारण कर अज्ञानी बनने और रावण को मार डालने की प्रतिज्ञा की थी।

युद्ध मे साहसगति ने सुग्रीव को आहत किया। सुग्रीव को शिविर मे लाया गया और राम ने उससे कहा कि मैंने तुम दोनो को पहचानने मे असमर्थ होने के कारण साहसगति को नही मारा है। इसके बाद दोनो सेनाओ मे फिर युद्ध हुआ जिसमे राम ने साहसगति का वध किया। गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (६८, ४४०-४६३) का वृत्तान्त इस प्रकार है। वालि ने राम के पास सन्देश भेजकर कहा कि रावण का सामना करने मे सुग्रीव और हनुमान असमर्थ है, मैं ही उसका वध कर सकता हूँ। राम ने इस प्रस्ताव का कटु शब्दो मे उत्तर देकर वालि का महामेघ नामक हाथी माँगा था। वालि ने उसे देना अस्वीकार किया जिसपर दोनो सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। अन्त मे लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण बाण से वालि का सिर काट दिया।

—रामकथा विषयक नाटको मे प्रायः राम-वालि के द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन किया गया है। महावीरचरित (अक ५) मे माल्यवान के उभाडने पर वालि राम-लक्ष्मण का मार्ग रोक लेता है और राम द्वारा द्वन्द्वयुद्ध मे मारा जाता है।[1] मायुराजकृत उदात्त-राघव मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। अनर्घराघव मे लक्ष्मण दुदुभि के अस्थि-ककाल को दूर तक फेक देते है (वालि ने उसे एक वृक्ष पर रख दिया था), इसपर वालि आकर युद्ध के लिए ललकारता है और राम द्वन्द्वयुद्ध मे उसका वध करते है (अक ५)। महानाटक (अक ५), जानकीपरिणय (अक ६) और पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे वालि का वध द्वन्द्वयुद्ध मे ही माना गया है।

ङ। राम की वर्षाकालीन साधना

५२३. वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने लक्ष्मण के साथ प्रस्रवण गिरि की एक गुफा मे वर्षा ऋतु बिताई थी (दे० सर्ग २७-२८)। अग्नि पुराण (८, ५) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि राम ने माल्यवान पर्वत पर चातुर्मास्य यज्ञ किया था। देवीभागवत (३, ३०) के अनुसार नारद ने वालिवध के पश्चात् राम के पास आकर कहा कि रावण पर विजय प्राप्त करने के लिये नवरात्रोपवास करना चाहिए। राम के इस उपवास के अन्त मे सिंहारूढा देवी भगवती राम को दर्शन देकर रावण पर विजय का आश्वासन देती हैं। अतः राम विजयापूजा सम्पन्न करने

---

१. निर्णयसागर प्रेस द्वारा प्रकाशित महावीरचरित (सन् १९०१ ई०) के अनुसार वालि भयभीत होकर सग्रामभूमि जाते समय अतर्द्धान हो जाता है। इतने मे राम धनुष का सधान करते है और एक मृग को देखकर उसका वध करते हैं। मृग दिव्य पुरुष का रूप धारण कर राम से कहता है कि 'मैं वालि हूँ, मतग के शाप के कारण मैं मृग बन गया था; अब आप की कृपा से मुझे शाश्वत पद प्राप्त है' (अक ६, ५-६)।

तथा अपनी सेना राम की सहायता मे अर्पित की। तब जाम्ववान को ज्योतिष द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सीता ने आत्महत्या का विचार छोड दिया है और रावण ४० धनु की दूरी तक सीता के निकट आने मे असमर्थ है। इसपर राम ने पूछा कि जाम्ववान के कथन की सच्चाई की परीक्षा लेने के लिये कौन लका जाने को तैयार है। सबो की अनिच्छा देखकर राम ने वालि का वचन याद किया (दे० अनु० ५१६) और हनुमान् को बुलाया। हनुमान् इस शर्त पर जाने के लिए तैयार हो गये कि उसे राम के साथ एक ही पत्तल मे खाने की अनुमति मिल जाय। राम ने हनुमान् को समुद्र मे स्नान करने का आदेश देकर इस शर्त को स्वीकार किया। इस कथा का आधार भारतीय ही है (दे० अनु० ७०७)।

गुणभद्र के उत्तरपुराण मे हनुमान् को तीन बार लका भेजा जाता है। प्रथम बार वह सीता से ही मिलकर लौटता है (६८, ३७५), द्वितीय बार वह दूत के रूप मे रावण के पास भेजा जाता है और लौटने से पूर्व सीता से पुनः मिलता है (६८,४३५), विभीषण की शरणागति के पश्चात् हनुमान् तृतीय बार समुद्र पार कर रावण की वाटिका नष्ट करता है और बहुत से योद्धाओ का वध करता है (६८, ५०६)।

५२५ वाल्मीकि रामायण मे राम हनुमान् को अभिज्ञान के रूप मे **स्वनामांकोपशोभितं अंगुलीयम्**" (४४,१२) सौंप देते हैं। अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे इस अभिज्ञान का उल्लेख नही मिलता था, सीता द्वारा दिये हुये अभिज्ञानो के अनुकरण पर (दे० अनु० ५५०) राम द्वारा भी अभिज्ञान दिये जाने की कल्पना अत्यन्त स्वाभाविक है। महाभारत के रामोपाख्यान मे राम की अगूठी की चर्चा नही मिलती है।

परवर्ती रचनाओ मे अनेक नवीन अभिज्ञानो की कल्पना कर ली गई है। **आनन्द रामायण** (१,८, ६३-६७) के अनुसार राम ने हनुमान् को अगूठी के अतिरिक्त अपना निज मत्र भी दिया और सीता के भाल पर तिलक लगाने तथा उनके कपोलो पर पत्रावली की रचना करने का वृत्तान्त सुनाया। **बलरामदास रामायण** मे काक-वृत्तान्त तथा तिलक-वृत्तान्त दोनो राम द्वारा दिये हुये अभिज्ञान माने गये है। **तोरवे रामायण** (५,६) मे अगूठी तथा काकवृत्तान्त के अतिरिक्त चित्रकूट में जलविहार की कथा भी राम द्वारा प्रदत्त अभिज्ञान माना गया है।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** तथा **रामलिंगामृत** मे अगूठी के साथ राम सीता के नाम पत्र देते हैं। **तिब्बती रामायण** मे भी राम के पत्र का उल्लेख है।

अभिनन्दकृत **रामचरित** (सर्ग ८) मे राम अपनी मुद्रिका के अतिरिक्त सीता का नूपुर तथा स्तनोत्तरीय देते है, हनुमान् को अपनी वशावली भी सिखलाते है और सीता के रूप तथा उनके गुणो का वर्णन करते हैं। **भावार्थ रामायण** (५, १२) में

च । वानरों का प्रेषण

५२४ प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे वानरो के प्रेषण का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है (सर्ग २६-४७)। इसकी अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त ही है (दे० अनु० ५१०-५११), शेष कथानक सक्षेप मे इस प्रकार है। शरत्काल के प्रारंभ मे सुग्रीव ने हनुमान के अनुरोध पर नील को सेना बुलाने का आदेश दिया (सर्ग २६)। विरही राम ने सुग्रीव की निष्क्रियता की भर्त्सना करके लक्ष्मण को किष्किधा भेज दिया (सर्ग ३०)। लक्ष्मण ने किष्किन्धा मे प्रवेश कर (सर्ग ३३) अकृतज्ञ सुग्रीव को धमकी दे दी (सर्ग ३४), सुग्रीव ने दीनतापूर्वक क्षमायाचना की और लक्ष्मण के साथ राम के पास जाना स्वीकार किया (सर्ग ३६)। राम ने सुग्रीव का प्रेमपूर्वक स्वागत किया (सर्ग ३८) और सुग्रीव ने अपने साथ आए हुए वानरो को दिखाकर राम की आज्ञा माँगी (सर्ग ४०)। सुग्रीव से हनुमान् की योग्यता जानकर राम ने उसे अभिज्ञानस्वरूप अपनी अगूठी सौप दी और हनुमान् अपने साथियो के साथ सीता की खोज मे निकल पडे (सर्ग ४४)। सभव है कि आदि रामायण मे हनुमान को ही दक्षिण की ओर भेजा गया हो। वह सीता से मिल कर कहता है कि मैं सुग्रीव की आज्ञा से अकेला ही यहाँ आया हूँ। मैं कामरूपी हूँ, मैंने आपका पता लगाने की इच्छा से घूम-फिर कर बिना किसी सहायक के (असहायेन) इस दक्षिण दिशा का अनुसंधान किया है—

अहमेकस्तु संप्राप्तः सुग्रीववचनादिह ।
मयेयमसहायेन चरता कामरूपिणा ॥७५॥
दक्षिण दिगनुक्रान्ता त्वन्मार्गविचयैषिणा । (सुन्दरकाण्ड, सर्ग ३५)

—वाल्मीकि रामायण मे सुग्रीव विलासिता के कारण निष्क्रिय है किन्तु **सेरी-राम, रामकेर्त्ति** (सर्ग ७) तथा **रामकियेन** (अध्याय २२) मे इसके लिए एक अन्य कारण दिया गया है। सेरीराम का तत्सबधी विस्तृत वृत्तान्त इस प्रकार है। सम्बूरान[1] इन्द्र के शाप के कारण वानर बन गया था, वह वालि का परममित्र था और निकटवर्ती राज्य मे वानरों पर शासन करता था। सुग्रीव सम्बूरान के कारण राम की सहायता करने से डरता था। इसपर लक्ष्मण ने एक पत्र लिखकर सम्बूरान को विष्णु-अवतार राम की अधीनता स्वीकार करने का आदेश दिया। सुग्रीव और हनुमान् यह पत्र सम्बूरान के पास ले गये किन्तु उसने राम के अवतारत्व पर अविश्वास प्रकट किया। रात्रि मे सुग्रीव और हनुमान् सम्बूरान का अपहरण करके उसे राम के पास ले गए। राम को देखकर सम्बूरान ने उनको विष्णु के रूप मे स्वीकार किया

१. रामकेर्ति मे इसका नाम महाजम्बू तथा रामकियेन मे जम्बु है।

वाद मे ब्रह्मा ने हेमा को यह वन प्रदान किया और मैं हेमा के लिये इसकी रखवाली करती हूँ।' तव स्वयप्रभा ने वानरो को भोजन दिया और आँखे वन्द कर लेने का आदेश देकर वह उनको गुफा के वाहर ले गई। वानरो को विन्ध्य, प्रश्नवण तथा समुद्र दिखलाकर उसने पुनः गुफा मे प्रवेश किया (सर्ग ४८-५२)। उत्तरकाण्ड मे मय अपनी पुत्री मन्दोदरी के साथ वन मे रावण से मिलकर अपने विषय मे कहता है कि देवताओ ने मुझे हेमा को प्रदान किया था और हम दोनो ने १००० वर्ष सुख से विताये। १४ वर्ष पूर्व हेमा "दैवतकार्येण" मुझे छोड कर चली गई। तव मैंने एक सुवर्ण नगर का निर्माण किया और अव मैं हेमा के वियोग के कारण दुःखी होकर वहाँ निवास करता हूँ। हेमा से मुझे यह पुत्री मन्दोदरी तथा दो पुत्र दुदुभि और मायावी प्राप्त हुए थे (सर्ग १२)।

परवर्ती रामकथाओ मे उपर्युक्त वृत्तान्त मे गौण परिवर्तन किये गये है। स्वयप्रभा के स्थान पर महाभारत मे प्रभावती, नृसिंह पुराण मे प्रभा, अग्नि पुराण मे सुप्रभा, कृत्तिवास मे सभवा, वलरामदास मे गिरिजा, गुजराती रामायणसार मे वदरी तथा रामकियेन मे पुष्पमाली नाम मिलता है।

रामायण ककविन (सर्ग ७) के अनुसार स्वयप्रभा वानरो को भुलाने के लिये उनको आँखे वन्द कर लेने के लिये कहती है, क्योकि वह दानवी है और राक्षसो से मैत्री रखती है। **भट्टिकाव्य** के वृत्तान्त से भी वही ध्वनि निकलती है (७, ७१)। **तिब्वती रामायण** मे भी श्री देवी की पुत्री वानरो को मोहित कर देती है जिससे उनको दिशाभ्रम हो जाता है। इस रचना मे वानर एक दूसरे की पूँछ पकडकर गुफा मे प्रवेश करते है। **कम्व रामायण** (४, १३) मे भी हनुमान् की पूँछ पकडकर वानर गुफा मे आगे वढते है।

अभिनन्दकृत रामचरित (सर्ग ११-१२) के अनुसार अगद ने गुफा के प्रवेश द्वार पर दुर्दम नामक एक राक्षस का वध किया था तथा हनुमान् ने एक वानर-वारसुन्दरी का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, तव सर्वाङ्गसुन्दरी का रूप धारण कर वह हनुमान् को मोहित करने मे पुनः असफल हुई और स्वयप्रभा के आगमन पर चली गई।[1] स्वयप्रभा ने गुफा में अपने निवास के कारण के विषय मे कहा कि मय

---

१ रामकियेन (अध्याय २३) के अनुसार हनुमान् ने गुफा से प्रस्थान करने के पूर्व पुष्पमालो (स्वयप्रभा) के साथ रमण किया था तथा उसके वाद उसे स्वर्ग भेज दिया। पुष्पमाली एक अप्सरा थी जो रभा के हरण मे मयन के राजा तवन की सहायता करने के कारण ईश्वर द्वारा अभिशप्त थी। सेरीराम की राफल्स पाण्डुलिपि मे हनुमान स्वयप्रभा के साथ विवाह करते हैं (पृ० ३७१)।

हनुमान् अभिज्ञान के रूप मे सीता से कहते है कि जब आप वल्कल पहनने मे असमर्थ थी तव राम ने आपकी सहायता की थी। रामकियेन (अध्याय २३) के अनुसार हनुमान् ने राम की मुद्रिका तथा सीता का उत्तरीय पाकर यह आपत्ति की थी कि इनसे सीता की आशका दूर नही होगी क्योकि शत्रु भी इन्हे प्राप्त कर ले सकता है। इसपर राम ने पूर्वानुराग का रहस्य प्रकट किया—"जब मैं पहले-पहल मिथिला मे प्रवेश कर रहा था, सीता ने अपनी खिडकी से मुझे देख लिया था और हम दोनो मे प्रेम उत्पन्न हुआ था। कम्ब रामायण (४, १२) तथा बलरामदास के अनुसार भी राम ने हनुमान् को पूर्वानुराग का वृत्तान्त सुनाया था, कम्ब रामायण मे दो और घटनाओ का वर्णन किया गया था—(१) वन जाने की अनुमति न मिलने पर सीता की मूर्च्छा और क्रोध, (२) नगर निकलने के पूर्व पैदल चलने वाली सीता का प्रश्न (अरण्य कहाँ है ?)।

दूसरी ओर सीता को पहचानने मे हनुमान् की सुविधा के लिये राम ने कम्ब-रामायण के अनुसार (४,१२, ३३-६६) सीता का विस्तृत नख-शिख-वर्णन किया था।[1] भावार्थ रामायण (४,-१३) मे राम हनुमान् से कहते है कि सीता की हनु पर मेरा चिन्ह अकित है।

५२६. हनुमान् तथा उसके साथी विन्ध्य की गुफाओ मे सीता की खोज करते हुये एक निर्जल तथा निर्जन वन मे पहुँच गये। कण्डु ने अपने द्वादशवर्षीय पुत्र की अकाल मृत्यु से शोकातुर होकर उस प्रदेश को शाप दिया था। इस स्थल पर अगद ने एक असुर का वध किया। तव तृषित वानरो ने विन्ध्य की दक्षिण-पश्चिम कोटि पर ऋक्षबिल नामक गुफा से जलपक्षियो को निकलते देखा। अगद ने द्वार पर पहरा देने वाले दानव[2] को मार डाला और सब वानर हनुमान् के नेतृत्व मे अधेरी गुफा मे प्रवेश कर गये। एक योजन तक आगे बढकर उन्होने एक ज्योतिर्मय सुवर्णनगरी मे एक वृद्धा तपस्विनी से भेट की। उसने अपना परिचय देकर कहा—'मैं मेरुसावर्णी की पुत्री स्वयंप्रभा हूँ, मय नामक दानव ने इस नगर का निर्माण किया था किन्तु हेमा नामक अप्सरा पर आसक्त हो जाने के कारण इन्द्र ने मय का वध किया था।

---

१ इसका आधार सुन्दरकाण्ड (१५, ४१-४३) मे हनुमान् का यह कथन है कि जिन आभरणो का वर्णन राम ने किया था वे सीता के शरीर पर विद्यमान हैं।

२. कम्ब रामायण (४, १४) मे अगद द्वारा तुमिर नामक असुर का वध स्वय-प्रभा के वृत्तान्त के बाद रखा गया है। सेरीराम की राफल्स पाण्डुलिपि (पृ० ३६५) मे यह राक्षस इन्द्र द्वारा अभिशप्त कोई राजा है।

पूछा, बाद मे उसने अपनी कथा भी सुनाई तथा वानरो से यह प्रकट किया कि सीता का अपहर्ता रावण एक सौ योजन की दूरी पर समुद्र के उस पार निवास करता है, उसके बाद वानरो ने परामर्श किया कि कौन समुद्र पार कर सकेगा; अन्त मे जाम्बवान ने हनुमान को समुद्रलंघन करने का आदेश दिया और उसकी जन्म-कथा भी सुनाई। किष्किन्धाकाड के अंतिम सर्ग मे हनुमान अपनी शक्ति का गुणगान करता है, जाम्बवान उसे आश्वासन देता है कि उसके लौटने तक सब वानर एक पैर पर खड़े होकर तपस्या करेंगे—स्थास्यामश्चैकपादेन यावदागमनं तव (६७,३४)। अन्त मे हनुमान द्वारा महेन्द्र पर्वत का आरोहण वर्णित है (सर्ग ५३-६७)।

वाल्मीकि रामायण के इस अंश मे प्रक्षिप्त सामग्री का बाहुल्य—(१) हनुमान् की जन्म-कथा (सर्ग ६६), इस पर आगे विचार किया जायगा (दे० अनु० ६५६), (२) सर्ग ५८ मे सम्पाति कहता है कि मैने रावण को एक स्त्री का अपहरण करते हुये देखा है, किन्तु अगले सर्ग के अनुसार उसने अपने पुत्र सुपार्श्व से यह वृत्तान्त सुना था, अंतिम कथन अधिक प्राचीन होगा। इन परस्पर-विरोधी उक्तियो के लिए वाल्मीकि उत्तरदायी हो ही नही सकते, (३) सम्पाति अपनी कथा को दो बार सुनाता है, द्वितीय वृत्तान्त (सर्ग ६०-६३) निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है।

विकास की दृष्टि से केवल सम्पाति की कथा का विश्लेषण अपेक्षित है। वाल्मीकि रामायण मे सम्पाति की कथा का प्रथम रूप इस प्रकार है। सम्पाति और जटायु, दोनो भाई वृत्र के वध के बाद (इन्द्र पर) विजय प्राप्त करने की इच्छा से आकाश के मार्ग से स्वर्ग जा रहे थे। सूर्यमडल के समीप पहुँचकर तथा जटायु को सूर्य की प्रचण्ड किरणो से सन्त्रस्त देखकर सम्पाति ने उसे अपने पखो से ढँक लिया। फलस्वरूप सम्पाति के पख जल गये और वह विन्ध्य पर्वत पर गिर गया। बाद मे सम्पाति को जटायु के विषय मे कभी भी कोई समाचार नही मिला था (५८, ४-७)। द्वितीय कथा कही और विस्तृत है। उसके अनुसार सम्पाति अपने भाई जटायु के साथ निशाकर के आश्रम मे जाया करते थे, अतः पख जल जाने के बाद भी सम्पाति निशाकर से भेंट करने गया था। वहाँ पहुँचकर उसने निशाकर से कहा कि हम दोनो भाई किसी समय अपनी शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से आकाश मे सूर्य की ओर आगे बढने लगे थे। सूर्य के पास पहुँचकर दोनो भयभीत हुये। जटायु पहले गिर पडा, सम्पाति के पखो से आच्छादित होकर वह जनस्थान मे सकुशल पहुँच गया। सम्पाति के पख जल गये और वह निस्सहाय होकर विंध्य पर गिर गया। उसने आत्महत्या करने का विचार किया किन्तु निशाकर ने उसे यह आश्वासन दिया—राम के दूत सीता की खोज में इधर आयेंगे, तुम उनको सीता का समाचार दोगे और तब अपने पख फिर प्राप्त करोगे। अपनी यह कथा सुनाते समय सम्पाति ने अनुभव किया मेरे पख बढ रहे हैं। तब उसने

और हेमा बहुत समय तक पति-पत्नी के रूप मे यहाँ रह चुके थे; हेमा किसी दिन स्वर्ग मे अपने पिता से मिलने गई और इन्द्र ने उसे वहाँ रोक लिया। तब हेमा ने मय को सूचना देने के लिए स्वयंप्रभा को भेज दिया, गुफा में पहुँचकर स्वय प्रभा नेमय को विरह के कारण मरा हुआ पाया, स्वयंप्रभा को लौटकर हेमा को इसका समाचार देने का साहस नही हुआ; कही ऐसा न हो कि हेमा भी मर जाय। अतः स्वयप्रभा ने मरण तक इस गुफा मे तपस्या करने का निश्चय किया था। कम्ब रामायण (४, १३) ने कथा इस प्रकार है। ब्रह्मा ने मय को यह नगर प्रदान किया था तथा स्वयप्रभा हेमा को मय की पत्नी के रूप मे वहाँ ले आई थी। थोड़े ही दिनो के बाद इन्द्र ने आकर मय का वध करके स्वयंप्रभा को दण्ड दिया कि वह राम के दूतों के आगमन तक वहाँ निवास करे। तब इन्द्र हेमा को स्वर्ग ले गये। यह वृत्तान्त सुनाने के बाद स्वयंप्रभा ने वानरों से निवेदन किया कि वे उसे गुफा से निकलने मे सहायता दे। इस पर हनुमान् ने अपना शरीर बढ़ाकर गुफा को खोल दिया और स्वयप्रभा ने स्वर्ग के लिये प्रस्थान किया। रंगनाथ रामायण (४, १७) के अनुसार भी हेमा मय की पत्नी थी; इन्द्र मय का वध कर हेमा को स्वर्ग ले गये थे। स्वयंप्रभा हेमा की सखी है जो हेमा की आज्ञा से गुफा मे तप करती है। भावार्थ रामायण (४, १४-१५) के अनुसार इन्द्र ने हेमा को भेजकर मय को गुफा के बाहर आने का प्रलोभन दिया था और इस प्रकार वह मय को मारने मे समर्थ हुए।

राम-भक्ति-भाव से ओतप्रोत अध्यात्म रामायण (४, ६, ५१-८४) में प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नवीन रूप दिया गया है। विश्वकर्मा की पुत्री हेमा ने अपने नृत्य से शिव को प्रसन्न कर उनसे वह दिव्य नगर प्राप्त किया था। ब्रह्मलोक के लिये प्रस्थान करते समय हेमा ने अपनी सखी स्वयंप्रभा (दिव्य नामक गन्धर्व की पुत्री) को आदेश दिया था—"तुम यहाँ पर तपस्या करती रहो, त्रेतायुग मे जब राम के दूत आवेंगे तब उनका आतिथ्य-सत्कार करना।" वानरों को भोजन देने के बाद स्वयप्रभा उनको गुफा के बाहर ले गई और राम के पास आ गई। उसने राम की स्तुति करने के पश्चात् भक्ति का वरदान माँग लिया और राम का आदेश पाकर बदरी-वन चली गई, जहाँ उसने अपना शरीर छोडकर परम पद प्राप्त किया। आनन्द रामायण (१, ८, १०३-१०६) तथा रामचरितमानस (४, २५) मे भी यही कथा संक्षिप्त रूप मे मिलती है।

५२७. स्वयंप्रभा की गुफा से निकलकर वानर यह जानकर निरुत्साह हो गये कि सुग्रीव की निर्धारित (एक मास की) अवधि समाप्त हुई है। अगद ने पुनः गुफा में प्रवेश कर वहाँ निवास करने का प्रस्ताव किया किन्तु हनुमान् ने इसका विरोध किया। अन्त मे सबो ने प्रायोपवेशन करने का निश्चय किया। सम्पाति ने उपवास करने वाले वानरों को अपने भाई जटायु का उल्लेख करते सुना और पास आकर इसका समाचार

तथा उसको नारायणावतार राम के दूतो की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया था। पंखों के बढ जाने पर सम्पाति ने वानरो को इस प्रकार आश्वासन दिया—"जिनके नाम के स्मरणमात्र से दुष्टजन भी इस अपार ससार-सागर को पार कर विष्णु के शाश्वत पद को प्राप्त कर लेते है उन्ही भगवान राम के तुम प्रिय भक्तगण हो। फिर इस समुद्र मात्र के पार करने मे तुम क्यो समर्थ न होगे।" इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पाति की कथा धीरे-धीरे अलौकिक घटनाओ के परिवर्तन से विकसित होकर अन्त मे भगवान राम के गुणगान मे परिणत हुई।[1]

---

१ सेरीराम के अनुसार जटायु ने मरने के पहले राम-लक्ष्मण को अपने भाई दसमपानी के पास भेज दिया था। सूर्य ने दसमपानी से कहा था कि विष्णु-अवतार राम के पुत्र हनुमान् से भेट करने पर तुम्हारे पख फिर बढ जायेंगे। महावीरचरित (अक ५) के अनुसार जटायु ने सम्पाति के पास आकर राम के पचवटी-निवास, शूर्पणखा-विरूपीकरण और खर-दूषण-वध का समाचार दिया था। सम्पाति ने रावण के प्रतिकार की आशका प्रकट कर जटायु से अनुरोध किया था कि वह रामादि की रक्षा करे। तिब्बती रामायण के अनुसार वानर पदा नामक गीध से भेट करते हैं, पदा उनको अपने पिता अगजय (जटायु) की कथा सुनाता है जो सीता को छुडाने के प्रयत्न में रावण द्वारा मारा गया है। इस वृत्तान्त मे पदा के अनुज सपदा के पख जल जाने की कथा भी मिलती है। खोतानी रामायण मे प्रस्तुत प्रसग को एक नया रूप दिया गया है। राजा ने खोज करने वाले वानरो से कहा था कि यदि तुम लोग सात दिनो के अन्दर सीता का पता नही लगा सकोगे तो मैं तुम्हारी आँखे गीधो को खिलाऊँगा। अवधि के अत मे किसी वानरी ने सुना कि एक गीध अपने वच्चो से कह रहा है—तुमको वानरो की आँखे खाने को मिलेगी क्योकि वानर यह भी नही जानते कि रावण सीता को लकापुर ले गया है।

इस चमत्कार का श्रेय निशाकर को दिया और ऊपर उठकर आकाश मे विलीन हो गया (सर्ग ६०-६३)। अन्य पाठो मे भी सम्पाति अपना स्वास्थ्य-लाभ निशाकर का प्रभाव मानता है किन्तु गौडीय पाठ के एक प्रक्षेप (६३, ७-६) मे वानर सम्पाति को अचानक स्वस्थ देखकर इस चमत्कार का श्रेय राम-लक्ष्मण को देते है—ऊचुश्च राममाहात्म्यं महावीर्यं च लक्ष्मणं। ययोः प्रभावात् सम्पातिरपक्षः पक्षवानभूत्। इसपर एक आकाशवाणी ने वानरो के इस कथन का समर्थन किया।

—गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे सुपार्श्व के आगमन का भी वर्णन किया गया है (गौ० रा० सर्ग ६२, प० रा० सर्ग ५५)। जाम्बवान ने समुद्र पार करने की सहायता माँगी और सम्पाति ने अपनी असमर्थता प्रकट कर अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाया। सुपार्श्व ने अगद को अपनी पीठ पर समुद्र के उस पार ले जाने का प्रस्ताव किया किन्तु अगद ने अस्वीकार किया। इन दोनो पाठो मे सम्पाति अन्त मे हिमालय के लिये प्रस्थान करता है। सुपार्श्व के आगमन की कथा माधव कदलीकृत असमिया रामायण, कृत्तिवास के वगला रामायण तथा वलरामदास के उडिया रामायण में भी मिलती है। माधव कदली (४, २५) के अनुसार सुपार्श्व ने अगद तथा वानरसेना को अपनी पीठ पर चढाकर समुद्र पार किया और उनको लका दिखलाई। धनजय के रघुनाथविलास तथा उपेन्द्र भज के वैदेहीविलास मे भी इसका उल्लेख है। सेरीराम की राफल्स पाण्डुलिपि (पृ० ३८४) के अनुसार सम्पाति हनुमान को अपनी पीठ पर चढा कर समुद्र पार ले गया।

—कम्ब रामायण (४, १५) के अनुसार सूर्य ने सबसे पहले सम्पाति को यह आश्वासन दिया था कि जब वानर रामनाम का उच्चारण करेगे उस समय तुम्हारे पख फिर निकल आयेंगे। भावार्थ रामायण (४, १६) मे भी सूर्य के इस आश्वासन का उल्लेख है।

—अध्यात्म रामायण (४, ८) की कथा वाल्मीकि रामायण की द्वितीय कथा पर आधारित है। निशाकर के स्थान पर मुनि का नाम चन्द्रमा माना गया है।[१] चन्द्रमा ने आहत सम्पाति को एक विस्तृत उपदेश देकर आत्महत्या करने से रोका था

१ आनन्द रामायण मे मुनि का नाम चन्द्रशर्मा है, कम्ब ने इसका नाम लोकमारग रखा है। अध्यात्म रामायण पर आधारित आनन्द रामायण की सक्षिप्त कथा (१, ८, १११-१२१) में नया तत्व यह है कि सम्पाति ने अपने पुत्र से सीताहरण का समाचार सुनकर उसे सीता को न छुडाने के कारण वहुत डाँटा था। इसपर वह क्रुद्ध होकर चला गया और फिर कभी अपने पिता सम्पाति से मिलने नही आया।

(सर्ग ३३-३५) । हनुमान् का राम-मुद्रिका देना और शीघ्र छुटकारे का आश्वासन, हनुमान् की पीठ पर जाने की सीता द्वारा अस्वीकृति । अभिज्ञान-स्वरूप सीता का काक-वृत्तान्त सुनाना तथा चूडामणि देना । विदा (सर्ग ३६-४०) ।

(४) लंका-दहन (सर्ग ४१-५५)

अशोकवन-ध्वंस—हनुमान् द्वारा अशोक-वन और चैत्य का विध्वस तथा प्रहस्त-पुत्र जवुमाली और रावण-कुमार अक्ष का वध (सर्ग ४१-४७) ।

हनुमान-बंधन—ब्रह्मास्त्र से इन्द्रजित् द्वारा बंधन । राम-दूत के रूप मे हनुमान् का रावण से सीता-मुक्ति का आग्रह । विभीषण द्वारा हनुमान् की रक्षा (सर्ग ४८-५२) ।

लंका-दहन—दड-रूप हनुमान् की पूँछ जलाई जाने की रावण द्वारा आज्ञा । हनुमान् द्वारा लकादहन । चारणो की बातचीत से हनुमान् को सीता की रक्षा का आश्वासन (सर्ग ५३-५५) ।

(५) हनुमान् का प्रत्यावर्त्तन (सर्ग ५६-६८)

समुद्र-लंघन—हनुमान् का आकाशमार्ग से अपने साथियो के पास प्रत्यागमन और अपनी सफलता का वर्णन (सर्ग ५६-५६) । अंगद द्वारा सीता-मुक्ति का प्रस्ताव, जाम्बवान् का विरोध (सर्ग ६०) ।

मधुवन—मधुवन मे पहुँच कर हनुमान् आदि का उत्पात, दधिमुख का सुग्रीव को समाचार देना (सर्ग ६१-६४) ।

सुखद समाचार—हनुमान् का राम से सीता के जीवित होने का समाचार कहना और अभिज्ञान देना (सर्ग ६५), राम का विलाप (सर्ग ६६), हनुमान् का काक-वृत्तान्त कहना और सीता-सवाद का उल्लेख करना (सर्ग ६७-६८) ।

ख । सुन्दरकांड का विश्लेषण

तीनों पाठो मे विभिन्नता

५२६. दाक्षिणात्य पाठ के दो वृत्तान्त अन्य पाठो मे नही पाये जाते हैं—लका मे प्रवेश करते समय हनुमान् का लंका देवी से युद्ध (सर्ग ३, २०-५१) तथा हनुमान् द्वारा चैत्यप्रासाद का विध्वस (सर्ग ४३) ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २३वाँ सर्ग, जिसमे सीता से अनुरोध करने वाली राक्षसियो की नामावली दी गई है, पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग १८) मे तो मिलता है, लेकिन इसका गौडीय पाठ मे अभाव है ।

अध्याय १८

सुन्दरकांड

१—वाल्मीकि रामायण का सुन्दरकांड

५२८. क । सुन्दरकांड की कथावस्तु

(१) लंका में हनुमान् का प्रवेश (सर्ग १-१७)

समुद्रलंघन—लघन करते हुए हनुमान् से मैनाक का आग्रह; सुरसा से भेंट, सिंहिका-वध (सर्ग १)।

लंका-वर्णन—विडाल जितने आकार मे हनुमान् का लका मे प्रवेश, लका-देवी को परास्त करना, नगर, महल, पुष्पक, शयनागार आदि का वर्णन, सीता का पता न मिलना (सर्ग २-१२)।

अशोक-वन—हताश होकर हनुमान् का अशोक-वन मे प्रवेश और वहाँ राक्षसो से घिरी हुई सीता को देखना (सर्ग १३-१७)।

(२) रावण-सीता-संवाद (सर्ग १८-२८)

रावण की प्रताड़ना—कामातुर रावण का सीता से अनुरोध तथा सीता की अस्वीकृति (सर्ग १८-२१)। रावण का भय दिखलाना और दो महीने की अवधि देना। सीता की भर्त्सना। सीता को समझाने के लिए रावण द्वारा राक्षसियो को नियुक्त किया जाना (सर्ग २२)।

राक्षसियों का प्रयास—राक्षसियो का प्रयास और सीता की अस्वीकृति तथा विलाप (सर्ग २३-२६)।

त्रिजटा का स्वप्न—त्रिजटा का राक्षस-पराजय-सूचक स्वप्न-वर्णन (सर्ग २७)। सीता-विलाप (सर्ग २८)।

(३) हनुमान्-सीता-संवाद (सर्ग २९-४०)

सीता को शकुन होना (सर्ग २९)। हनुमान का रामकथा-वर्णन (सर्ग ३०-३१)। सीता का भयभीत होना (सर्ग ३२)। हनुमान का प्रकट होना, सीता का सदेह; हनुमान् द्वारा राम का वर्णन; सीता का विश्वास करना,

वर्णन दुहराना समझा गया है।[1]

(२) हनुमान् दो बार सीता से भेंट का वर्णन करते है (दे० रा० ५, ६५-६८ तथा ६, १२६), लेकिन लकादहन का कोई उल्लेख नही करते। इसके अतिरिक्त लका-वरोध के समय लका के सौंदर्य का वर्णन किया गया है, जिसमे कही भी उसके दहन का निर्देश मात्र भी नही मिलता (दे० रा० ६, ३८-३६)।

(३) लकादहन के प्रसग के अन्तर्गत हनुमान् द्वारा विरूपाक्ष तथा यूपाक्ष के वध का वर्णन किया गया है (सर्ग ४६) किन्तु युद्धकाड मे पुनः दोनो का उल्लेख मिलता है (सर्ग ७६ और ६६)।

यह भी ध्यान देने योग्य वात है कि लका मे प्रवेश करते समय हनुमान् स्वय कहते हैं कि यदि मैं राक्षसो द्वारा देखा गया तो राम के कार्य मे बाधा पड जायगी :

मयि दृष्टे तु रक्षोभी रामस्य विदितात्मनः।
भवेद् व्यर्थमिदं कार्यं रावणानर्थमिच्छतः ॥४०॥ (सर्ग २)

इसके अतिरिक्त भरद्वाज ने रामायण का जो सार सुनाया था (६, १२४), इसमे भी लकादहन का अभाव है। यद्यपि लकादहन का वर्णन निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है फिर भी वह विभिन्न पाठो के पृथक् हो जाने के पूर्व प्राचीनकाल से किष्किधाकाण्ड का अग वन चुका था, इसका उल्लेख महाभारत के रामोपाख्यान (३, २६६, ६८) तथा वालकाण्ड की अनुक्रमणिकाओ (१, १, ७७, १, ३, ३३) मे भी मिलता है।

लकादहन के वाद मे अनावश्यक पुनरावृत्ति पाई जाती है। सर्ग ५६ मे हनुमान् पुनः सीता से विदा लेते हैं। सर्ग ५८ मे हनुमान् पुनः वानरो के लिये लका की घटनाओ का वर्णन करते है और लकादहन का भी उल्लेख करते हैं। सर्ग ५६-६० अस्तव्यस्त तथा पुनरावृत्ति से भरपूर है। मधुवन मे वानरो के उत्पात का वर्णन (सर्ग ६१-५४) आधिकारिक कथावस्तु की गति मे वाधा उपस्थित करता है। इसमे जो हास्यरस का प्राधान्य पाया जाता है, वह भी मूल रचना के अनुकूल नही है।[2] समुद्र-तरण की तैयारी का जो प्रस्ताव सर्ग ६५ के अन्त मे रखा गया है (**सागरजले संतारः प्रविधीयताम्**), इससे पता चलता है कि पहले इस सर्ग के बाद सेतुवन्ध का वर्णन आता था (युद्धकाड सर्ग १) ; वास्तव मे बीच के सर्गों (६६-६८) मे पुनरुक्ति मात्र मिलती है। सुन्दरकाड की निम्नलिखित शेष सामग्री अपेक्षाकृत प्राचीन है :

---

१. गौडीय पाठ मे विदा का पहला वर्णन (लकादहन के पूर्व) सर्वथा हटाया गया है, जिससे पुनरावृत्ति-दोष का निवारण हुआ है।

२. दे० एच० याकोवी, वही, पृ० ३७।

दाक्षिणात्य पाठ (सर्ग १३, ५४-६७) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग ८, ६४-७७) के अनुसार, हनुमान् अशोकवन मे प्रवेश करने के पहले देवताओ की स्तुति करते हैं। इसका उल्लेख गौडीय पाठ में नही किया गया है।

गौडीय (सर्ग ५२) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग ५१) का सरमावाक्यम् नामक सर्ग, जिसमे सरमा सीता से लका-दहन का वर्णन करती है, दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलता।

प्रक्षेप

५३०. सुन्दरकाण्ड मे बहुत-सी प्रक्षिप्त सामग्री विद्यमान हैं। समुद्रलंघन की प्रामाणिकता अत्यन्त संदिग्ध है। इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ मे इसका वर्णन अन्य पाठो की अपेक्षा अधिक विस्तृत है (दे० आगे अनु० ५३१)। लंका-वर्णन (सर्ग २-११) मे पुनरावृत्ति के अतिरिक्त दीर्घ छन्दों के कई अनावश्यक सर्ग मिलते हैं। पुष्पक का वर्णन निश्चित रूप से अपेक्षाकृत अर्वाचीन है (सर्ग ७-९)। आगे चलकर भी अनावश्यक सामग्री की कमी नही है; उदाहरणार्थ—सर्ग १४ (अशोकवन का प्रथम विध्वस), सर्ग २३-२६ (भयकर राक्षसियो का वर्णन तथा उनकी धमकियाँ); सर्ग२८-२९ (पूर्वापर सबध का अभाव; बहुत सी हस्तलिपियों मे दोनों सर्ग अविद्यमान हैं)। सीता-हनुमान्-संवाद की पर्याप्त सामग्री प्रक्षिप्त प्रतीत होती है। सर्ग ३२ का उत्तरार्द्ध (दीर्घ छन्द) अनावश्यक है, सर्ग ३३ मे सीता के विश्वस्त हो जाने के पूर्व उनका आत्मपरिचय अस्वाभाविक है, सर्ग ४० मे सीता के पुनः अभिज्ञान देने का वर्णन किया गया है (सर्ग ३८ की आवृत्ति)।

आदिरामायण मे लंका-दहन (सर्ग ४१-५५) का वर्णन नही मिलता था; यह डॉ० याकोबी के निम्नलिखित तीन तर्कों का निष्कर्ष है।[1]

(१) सीता द्वारा हनुमान् की विदा का वर्णन सुन्दरकांड में तीन बार किया गया है—लकादहन के पूर्व (सर्ग३९), लकादहन के पश्चात् (सर्ग ५६) और राम-हनुमान्-संवाद में (सर्ग ६८)। इनका मौलिक स्थान ३९ वाँ सर्ग है, क्योंकि इसमें सीता हनुमान् से एक दिन ठहरने के लिये अनुरोध करती हैं, यह लकादहन के पश्चात् स्वाभाविक नही कहा जा सकता है। लकादहन के पूर्व यह नितान्त स्वाभाविक प्रतीत होता है।

इस वर्णन की पुनरावृत्ति का कारण यह है कि लंकादहन के विस्तृत प्रक्षेप के बाद मौलिक कथावस्तु से संबंध स्थापित करना था और इसका सरल उपाय विदा का

---

१. दे० दस रामायण, पृ० ३२-३५।

कर पार करने का अर्थ लगाया जा सकता है। धूर्ताख्यान मे सुस्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि रामायण के अनुसार हनुमान ने "भुजाभ्याम्" तैर कर समुद्र पार किया था—

शृणु रामायणोदितम्।
हनुमान् राघवोदिष्टो जानकीशुद्धिहेतवे।
तीर्त्वा भुजाभ्यामम्भोधिं क्षणाल्लङ्कापुरीमगात्॥ (७३)

वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मे हनुमान् के भार से महेन्द्र-पर्वत का दोलायमान हो जाना अपेक्षाकृत अधिक विस्तार मे वर्णित है। दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के अनुसार हनुमान् समुद्रलघन के समय क्रमश. मैनाक, सुरसा तथा सिंहिका से भेंट करते है। गौडीय पाठ, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, माधव-कदलीकृत असमिया रामायण और कृत्तिवास रामायण मे क्रम इस प्रकार है—सुरसा मैनाक, सिंहिका। कम्ब रामायण, रगनाथ रामायण, वलरामदास उडिया रामायण, तोरवे रामायण, रामचरितमानस, भावार्थ रामायण आदि मे दाक्षिणात्य पाठ का ही क्रम रखा गया है। स्याम के राम जातक मे हनुमान् और अगद दोनो लका मे प्रवेश करते हैं तथा सिंहली रामकथा मे हनुमान् के स्थान पर वालि लका जाता है। शेष रामकथाओ मे हनुमान् ही समुद्र पार कर सीता का पता लगाते है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ के अनुसार हनुमान् समुद्र पर पैदल चलकर लका तक पहुँच गए थे।

सेरीराम मे हनुमान् कोई दृढ आधार न पाकर अन्त मे राम की वाहु से ही समुद्र को लाँघते हैं। इस कथा मे कहा गया है कि हनुमान् का वीर्य समुद्र मे गिर गया तथा मछलियो की रानी ने उसे खाया और गर्भवती हुई। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान् राम के कन्धे से लका-तट पर कूदते हैं।

विर्होर तथा सथाल नामक आदिवासी जातियो की रामकथा मे हनुमान् समुद्र के मध्य मे राम द्वारा चलाये हुये वाण पर विश्राम करते है। एक अन्य आदिवासी कथा के अनुसार हनुमान पहले एक वाण चलाते हैं, तब कूदकर उस पर सवार हो जाते हैं और इस प्रकार समुद्र पार करते है (दे० अनु० २७४)।

अनेक वृत्तान्तो के अनुसार हनुमान् अपने लक्ष्य को पार करके लका से बहुत दूर जाकर उतरते है। सेरीराम मे हनुमान् किसी महर्षि के आश्रम मे पहुँचकर उनका आतिथ्य सत्कार स्वीकार करते है और महर्षि के दिये हुये पथ-प्रदर्शक के साथ लका मे प्रवेश करते हैं। रामकियेन (अध्याय २३) मे उस अवसर पर हनुमान् के गर्व-निवारण के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। हनुमान् लका के उस पार नारद के आश्रम मे पहुँचे। उन्होने नारद से रात भर रहने का स्थान माँगा और नारद हनुमान् को एक कुटीर के पास ले गये। नारद की अलौकिक शक्ति की परीक्षा लेने के उद्देश्य से हनुमान् ने अपना आकार वढाया जिस पर नारद ने भी कुटीर वढाया।

समुद्रलघन—सर्ग १ (अंशत·)
लका मे हनुमान् का प्रवेश—सर्ग २, ३ (अशतः), ४
लका मे सीता की खोज—सर्ग ६
रावण के अन्त.पुर मे हनुमान् का प्रवेश—सर्ग १०-११
हनुमान् का अशोकवन मे आगमन—सर्ग १३ (अशत.) और १५
रावण-सीता-सवाद—सर्ग १८-२२
त्रिजटा का स्वप्न—सर्ग २७
हनुमान्-सीता-सवाद—सर्ग ३०, ३१, ३२ (१-५), ३४-३६
हनुमान् का अपने साथियो के पास लौटना—सर्ग ५७
राम के पास हनुमान् का प्रत्यागमन—सर्ग ६५

सुन्दरकांड का विकास

क । लंका में हनुमान् का प्रवेश

५३१. **समुद्रलंघन** । प्रचलित रामायण के तीनों पाठो मे हनुमान् का समुद्रलघन वर्णित है, अद्भुत तथा अतिलौकिक होने के कारण यह प्रसंग परवर्त्ती राम-साहित्य में लोकप्रिय रहा है। मूल रामायण के अनुसार हनुमान समुद्र लाँघ कर नही, बल्कि तैर कर लका पहुँचा था। कथावीज मे लिखा है—"**शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम्** (१, १, ७२), जिसका मुख्य तथा स्वाभाविक अर्थ है कि उसने तैर कर समुद्र को पार किया था।[1]

सुन्दरकाण्ड के दो अन्य स्थलो मे इसका सकेत मिलता है कि हनुमान तैरकर आया था। वह सीता से कहता है—**त्वां तु पृष्ठगतां कृत्वा संतरिष्यामि सागरम्** (३७, २२) और बाद मे हनुमान 'फिर' समुद्र के मध्य मे लौटने का निश्चय करता है—**प्रतिगन्तुं मनश्चक्रे पनुर्मध्येन सागरम्** (५६, २५) ।

कालिदास के रघुवश (**मारुतिः सागरं तीर्णः**; १२, ६०) तथा अग्निपुराण (**शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवेऽब्धि स मारुतिः**, ६, २) के तत्सम्बन्धी उल्लेखो का भी तैर

---

१. 'प्लु' धातु का अर्थ लाँघना भी हो सकता है किन्तु मूल रामायण मे यह 'तैरने' के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। सीता हनुमान् से कहती हैं कि समुद्र में नौका नष्ट हो जाने पर तैरने वाले वीर की भाँति राम शोक का समुद्र कैसे पार करेंगे—

शोकस्यास्य कथं पारं राघवोऽधिगमिष्यति ।
प्लवमानः परिश्रान्तो हतनौः सागरे यथा ॥ (५, ३७, ५)

—बृहद्धर्मपुराण (पूर्वखंड, अध्याय २० श्लोक २—श्रोनु भूत्वा)।

—पद्मपुराण, बंगीय पाठ, (जर्नल रो० ए० सो० १८४२, पृ० ११२६)।

—दक्षिण भारत की १७ वी शती की दो रामकथाएँ (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और ३)।

—उत्तर भारत की एक रामकथा (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३)।

—गुजराती नर्मदकृत रामायणसार।

५३३ रामचरितमानस मे हनुमान् मशक सा छोटा रूप धारण कर लका मे प्रवेश करते है :

मसक समान रूप कपि धरी।
लकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥ (५, ३, १)

भिन्न-भिन्न रामकथाओ मे हनुमान् भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लका मे घुमते हैं। उदाहरणार्थ :

भ्रमर : गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (दे० ६८, २६८), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ और १३।

मूषिका . वह्निपुराण (पृ० २६६ अ)।

ब्राह्मण : पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, सेरीराम, गणकचरित्र। महानाटक के अनुसार हनुमान् ब्राह्मण के रूप मे अशोकवन नष्ट करते हैं।

शुक : बिर्होर आदिवासी कथा।

काक : पजाब का एक लोकगीत (दे० इ० ए० भाग ३८, पृ० १५०)।

भैसा . हिंदेशिया (ज० रो० ऐ० सो० स्ट्रेटस ब्रेच १६१०, पृ० २०)।

राक्षस : रामकियेन (अध्याय २४)।

बलरामदास रामायण मे हनुमान छोटे वानर के रूप मे लका मे प्रवेश करता है और बाद मे ये रूप धारण कर लेता है—बिडाल, कुत्ता, व्याघ्र, हाथी, सिंह, मनुष्य, गाय,भैंसा, रात्रि-प्रहरी और भ्रमर।

५३४. अध्यात्म रामायण मे कहा गया है कि सीता के सामने आते समय हनुमान् ने चटक पक्षी के बराबर आकार वाले छोटे वानर का रूप धारण किया (दे० ५, ३, ३०)। आनन्द रामायण की एक कथा के अनुसार हनुमान् छोटे बालक के रूप मे सीता के सामने प्रकट हुये (दे० ८, ७, २६) तथा हिकायत महाराज रावण के अनुसार एक वृद्धा के रूप मे। बलरामदास रामायण के अनुसार हनुमान् ने भ्रमर का रूप धारण कर सीता-रावण-सवाद सुना था। माधव कंदली के रामायण के अनुसार हनुमान् अशोकवाटिका-विध्वस के पूर्व एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे रावण से मिलने गये थे (दे० अनु० ५५२)। धनजय-कृत गणकचरित्र मे हनुमान क्रमश. ज्योतिषी, भ्रमर,

यह देखकर हनुमान अपने को और वढाने लगे किन्तु नारद के तपोवल से अत्यन्त ठडी वर्षा होने लगी जिससे हनुमान् अपना स्वाभाविक आकार धारण करने के लिए वाध्य हुए। दूसरे दिन प्रात काल हनुमान् आश्रम के निकट एक सरोवर मे नहाने गये, जहाँ नारद की प्रेरणा से एक जोक हनुमान् की ठोढी मे लग गई। हनुमान् उसे हटाने मे असमर्थ थे, उन्होंने ऋषि के पास जाकर क्षमा माँगी और जोक तुरन्त ही गिर गई। इन दोनो विदेशी कथाओ का आधार भारतीय ही है। तोरवे रामायण (५, १) के अनुसार हनुमान् ने लका से ७०० योजन दूर एक टापू पर उतरकर तृणविन्दु मुनि से भेंट की तथा उनको सीताहरण का वृत्तान्त सुनाकर लका का मार्ग पूछा। मुनि ने उत्तर दिया कि मेरी समझ मे नही आता कि एक कायर कपि कैसे त्रिलोकविजेता रावण की राजधानी में प्रवेश कर सकेगा। तव मुनि ने हनुमान् की वलपरीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा—मुझे पद्मासन से ऊपर उठाओ। हनुमान् पूरी शक्ति लगाकर अन्त मे ऐसा करने मे समर्थ हुए और मुनि ने उनको वताया कि लका उत्तर मे है जिससे हनुमान् को लौटना पडा।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार हनुमान् मलय तक लाँघकर वहाँ से सिंहलद्वीप पर कूद गये थे (पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८)। आनन्द रामायण (१, ६, १७) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि हनुमान् ने परलंका मे पहुँचकर वहाँ रावण की वहन क्रौचा का वध किया था।[1] भावार्थ रामायण (५, १८) मे इस प्रसग का किंचित विस्तार सहित वर्णन मिलता है। लका के उपनगर परलका मे रावण की वहन तथा घर्घरासुर की विधवा अपनी १८००० दासियों के साथ निवास करती थी। हनुमान् ने दासियो को समुद्र मे फेंक दिया तथा क्रौचा का वध किया। यह कथा श्रीधरकृत रामविजय मे दुहराई गई है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ (पृ० ३४६) मे भी हनुमान् लका को पार करके लका द्वीप के दक्षिण तट पर उतरते है।

५३२ **हनुमान् के छद्मवेश।** वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने विडाल के आकार के छोटे वन्दर का रूप धारणकर लका मे प्रवेश किया था :

सूर्ये चास्तं गते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः।
वृषदंशकमात्रोऽथ बभूवाद्भुतदर्शनः ॥४७॥ (सुन्दरकाड सर्ग २)

वाद मे इसका स्वाभाविक विकास यह हुआ कि हनुमान् वास्तव मे विडाल वनकर लका मे प्रवेश करते हैं। इसका उल्लेख अनेक रामकथाओ मे मिलता है, उदाहरणार्थ :

---

१. इस रचना के अन्य स्थल (१, १३, ६४) पर लिखा है कि रावण ने खड्गजिह्व के साथ अपनी वहन क्रौंची का विवाह कराया था तथा दहेज मे परलका दे दी थी।

किसी से नही मिले और छिपकर अशोकवन मे चले गये । वहुत-सी परवर्ती राम-कथाओ मे उस अवसर पर हनुमान्-विभीषण की भेंट का वर्णन किया गया है । विमल-सूरिकृत **पउमचरियं** (पर्व ५३) के अनुसार विभीषण ने लका मे हनुमान् का स्वागत किया था, तथा सीता को लौटा देने के लिए रावण से आग्रह करने की प्रतिज्ञा भी की थी । गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे हनुमान् सीता से ही मिलकर राम के पास लौटते हैं, और राम द्वारा पुनः लका भेजे जाते हैं जहाँ वह पहले विभीषण से मिलते हैं । विभी-षण रावण को समझाने की प्रतिज्ञा करता है और हनुमान् को रावण के पास ले जाता है । रावण सीता को लौटा देने से इनकार करता है और हनुमान् सीता को प्रणाम करने के वाद राम के पास लौटते है (पर्व ६८, ३६०-४३५) ।

अर्वाचीन रामकथाओ मे विभीषण रामभक्त माना जाता है । **आनन्द रामा-यण** (१, ६, २४) मे लिखा है कि रात को सीता की खोज करते हुए हनुमान् ने राम-कीर्तन मे सलग्न विभीषण को देख लिया । भावार्थ रामायण (५, १) रामचरित मानस, गुजराती रामायणसार तथा उत्तर भारत के एक वृत्तान्त (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३) मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है । रामचरितमानस के अनुसार विभीषण ने हनु-मान् से वताया कि सीता कहाँ हैं । उपर्युक्त पाश्चात्य वृत्तान्त मे विभीषण स्वय हनुमान् को सीता के पास ले जाता है । काश्मीरी रामायण (न० २६) के अनुसार नारद से हनूमान् की भेंट हुई थी और नारद ने हनुमान् को लका की उत्पत्ति के विषय मे वता दिया था (दे० अनु० ६४४ टि०) ।

५३६. अनेक अर्वाचीन रामकथाओ मे हनुमान् रात को लका मे सीता की खोज करते हुए अनेक प्रकार के उत्पात करते हैं ।

आनन्द रामायण के अनुसार हनुमान् ने दीपो को बुझा दिया, वहुत-से राक्षसो तथा राक्षसियो को नग्न किया, घडो को फोड डाला (१, ६, २५-२७) तथा अन्त में रावण के वस्त्र विभीषण के पलग पर रख दिये तथा गय नामक राक्षस के वस्त्र रावण के पलग पर (दे० १, ६, ६२-६३) । **तत्त्वसग्रह रामायण** (५, ३) के अनुसार हनुमान् रावण तथा उसकी पत्नियो के सब वस्त्र समेट कर ले गये थे । दक्षिण भारत की एक रामकथा मे हनुमान् मन्दोदरी के वाल पलग के खम्भे मे बाँधते हैं, उसके आभरण चुराते हैं, रावण की छाती पर वैठ जाते हैं तथा दीपक बुझाकर चले जाते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ९६) । **रामकेर्ति** (सर्ग ६) और **रामजातक** मे हनुमान् रावण तथा मन्दोदरी के वाल साथ-साथ बाँधते है और मत्र पढकर लिखते हैं कि जव तक मन्दोदरी रावण के सिर मे थप्पड न मारे कोई भी गाँठ नही खोल सकेगा । इस प्रकार उत्पातो के उल्लेख **रामकियेन** तथा **सेरीराम** के पातानी पाठ मे मिलते है, जव

विडाल तथा फिर ज्योतिषी का रूप धारण कर लेते है (दे० अनु० ५४२)। युद्ध तथा उत्तरकाड विषयक कथाओ मे भी हनुमान् के छद्मवेषो का उल्लेख मिलता है (दे० ५६१, ५६६, ५६८, ६१४ और ७५७)।

५३५. **लंकादेवी**—वाल्मीकि -रामायण के एक प्रक्षेप मे, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, लकादेवी राक्षसी के रूप मे हनुमान् को रोक लेती है। हनुमान् से पराजित होकर वह कहती है कि स्वयभू ने उससे कहा था—तुम्हारी पराजय के वाद राक्षसो का नाश होगा (दे० ३, २०-५१)।

यह वृत्तान्त वाद की अधिकांश रामकथाओ मे मिलता है, किन्तु अर्वाचीन रचनाओ मे इस वृत्तान्त मे रामभक्ति का भी समावेश किया गया है। **आध्यात्म रामायण** (५, १, ५७) मे लकादेवी हनुमान् से कहती है—आज वहुत दिनो के वाद मुझे ससार-वन्धन से मुक्त करने वाली राघव की स्मृति हुई है और उनके भक्त का अतिदुर्लभ सत्सग हुआ है। मैं धन्य हूँ। मेरे हृदय मे विराजमान दशरथनन्दन मुझ पर प्रसन्न रहे। उस रचना मे तथा आनन्द रामायण (१, ६, २१) मे भी लंकादेवी हनुमान् से सीता के रहने के स्थान का रहस्य प्रकट करती है। **रामचन्द्रिका** (१३, ४४) मे लकादेवी हनुमान् से पराजित हो जाने के वाद सुन्दरी का रूप धारण कर लेती है—**तजि देह भई तव ही वर नारी**। लकादेवी-वृत्तान्त के दो अन्य रूप भी मिलते है।

५३६. **पउमचरियं** (पर्व ५२) मे हनुमान् लका मे प्रवेश करते समय वज्रमुख का वध करते है और इसके वाद उसकी पुत्री **लंकासुन्दरी** से युद्ध करते हैं। अन्त मे दोनो एक दूसरे की ओर आकर्षित होकर रात भर प्रेमक्रीड़ा करते हैं।

५३७. रामकथाओ का एक वर्ग पाया जाता है जिसमे लंकादेवी के स्थान पर **चण्डिका** का उल्लेख किया गया है।

वृहद्धर्मपुराण (अध्याय २०) तथा **महाभागवत पुराण** (अध्याय ३६) के अनुसार हनुमान् शिव के अवतार हैं और देवी लका मे निवास करती हैं। लंका मे पहुँचकर हनुमान् देवी के मन्दिर मे जाकर उनसे लंका को त्याग देने की प्रार्थना करते हैं। सीता के अपमान के कारण रावण से अप्रसन्न होकर देवी लका छोड देती है।

कृत्तिवासीय रामायण मे लिखा है कि शकर ने चामुण्डा को हनुमान के आगमन तक लंका मे निवास करने का शाप दिया था। गुजराती **नर्मदकृत रामायणसार** मे भी हनुमान् का उग्रचण्डिका से भेट करने का उल्लेख किया गया है।

५३८. **लंका में सीता की खोज**। वाल्मीकि रामायण मे इसका वर्णन किया गया है कि हनुमान् ने मुख्य राक्षसो के महलो में (सर्ग ६) तथा रावण के अन्तःपुर में सीता की असफल खोज की थी (सर्ग १०-११)। इस वृत्तान्त के अनुसार हनुमान्

के शाप का उल्लेख है (२, १८) ।

५४१ **वाल्मीकि रामायण** मे रावण के अशोकवन मे आगमन का कारण उसकी कामवासना ही मानी गई हैं (दे० १८, ५) । **पउमचरियं** (पर्व ५३) के अनुसार हनुमान् ने सीता की गोद मे राम की मुद्रिका फेंक दी थी, उसे देखकर सीता को आनन्द हुआ । सीता के प्रसन्न होने के विषय मे सुनकर मन्दोदरी तुरन्त उनके पास आकर अनुरोध करने लगी कि वह रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करे ।[1] सीता ने अस्वीकार किया जिससे मन्दोदरी क्रुद्ध होकर उन्हे मारने के लिए उद्यत हुई । हनुमान् ने प्रकट होकर मन्दोदरी को रोक दिया और मन्दोदरी ने जाकर रावण को यह समाचार दिया कि हनुमान् आ गए हैं ।

अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण (१, ६, ६६) तत्वसग्रह रामायण (५, ४) मे रावण के आगमन का एक नया कारण दिया गया है । **अध्यात्म रामायण** (५, २, १५-१६) की तत्सबन्धी कथा इस प्रकार है । रावण उत्सुकतापूर्वक राम की प्रतीक्षा करता था, क्योकि उसे विष्णु के हाथ से मरकर मुक्ति की तीव्र अभिलाषा थी । उसी दिन रावण ने स्वप्न मे देखा कि राम का सन्देश लेकर कोई कामरूपी वानर वृक्ष की शाखा पर बैठकर सीता को देख रहा है । रावण ने सोचा· कि यह स्वप्न सभवत. सच है । अत. उसने निश्चय किया कि मैं अब अशोकवन जाकर सीता को अपने वाग्बाणो से वेधकर दु.ख पहुँचा दूँ जिससे वानर यह सब देखकर राम को बताये और मुझे शीघ्र ही मुक्ति मिल जाय ।

धर्मखण्ड (अध्याय १०५) तथा **तत्वसंग्रह रामायण** (५, ४) मे हनुमान् सीता-रावण-सवाद के अन्त मे रावण को भगा देते हैं । धर्मखण्ड मे रावण सीता को चन्द्रहास से मार डालना चाहता है किन्तु मन्दोदरी उसको रोक देती है और हनुमान् प्रकट होकर रावण की छाती पर मुष्टि प्रहार करते है जिससे रावण भयभीत होकर भाग जाता है । तत्त्वसंग्रह रामायण के अनुसार भी हनुमान् ने विशालकाय रूप धारण कर रावण की छाती पर प्रहार कर उसे भगा दिया था । **प्रसन्नराघव** (अक ६, ३४) मे यह माना गया है कि जब रावण सीता का वध करने पर उतारु हो गया था तब हनुमान् ने रावण के हाथ मे अक्षयकुमार का मस्तक रख दिया था जिसे देखकर रावण मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर गया था । बाद मे सचेत होकर वह हनुमान् को पकड़ने के लिए सीता को छोड़कर चला गया ।

५४२ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार रावण ने सीता को प्रलोभन देने के उद्देश्य से उनको लंका का वैभव दिखाया था (दे० अनु० ५००) तथा बाद मे दीनता-

१. रविषेण के पद्मचरित मे रावण उस अवसर पर मन्दोदरी को सीता के पास भेज देता है ।

हनुमान् युद्ध के समय छिपकर लका मे प्रवेश करते हैं (दे० अनु० ५९६)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार हनुमान् ने लका मे सीता की खोज करते समय रावण का चन्द्रहास नामक खग चुराया था। **भावार्थ रामायण** (५, ३) के अनुसार हनुमान् ने सब के देखते-देखते उत्पात मचाया था तथा रावण की सभा के दीपको को बुझाया था।

ख। सीता-रावण-संवाद

५४०. वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने सीता को लका मे न पाकर अशोकवन मे प्रवेश किया था और वहाँ सीता को देखा (सर्ग १३-१७)। उसी रात्रि के अन्त मे रावण अपनी पत्नियो के साथ सीता के दर्शन करने आया तथा उसने दीनता-पूर्वक सीता से निवेदन किया कि वह उसे पति के रूप मे स्वीकार करे । सीता ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार[1] करते हुए रावण की निन्दा की और उसे परामर्श दिया कि मुझे राम के पास पहुँचा दो, नही तो राम निश्चय ही तुम्हारा वध करेगे । इस पर रावण ने क्रुद्ध होकर कहा कि निर्धारित अवधि (दे० ऊपर अनु० ५००) के दो मास रह गए, यदि तुम इसके बाद स्वेच्छा से मेरी पत्नी नही बनोगी तो रसोइये तुम्हारा शरीर काट कर मेरे प्रातः के भोजन के लिये तैयार करेगे :

द्वौ मासौ रक्षितव्यौ मे योऽव धिस्तेमया कृतः।
ततः शयनमारोह मम त्वं वरवर्णिनि ॥८॥
द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्तारं मामनिच्छन्तीम्।
मम त्वां प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यन्ति खण्डशः ॥९॥ सर्ग २२॥

यह कहकर रावण ने पहरा देनेवाली राक्षसियो को आदेश दिया कि वे सीता को उनके वश मे लाने का प्रयत्न करती रहे। तब धान्यमालिनी नामक राक्षसी ने रावण का आलिगन किया तथा सीता को त्यागकर अपने साथ रमण करने का निवेदन किया। इसके बाद रावण देव-गधर्व-नाग कन्याओ के साथ अपने महल लौटे (सर्ग १८-२२)।

अभिनन्दकृत **रामचरित** मे सीता रावण को शाप देती है कि तुम सपरिवार मर जाओगे और लका जला दिया जायेगा (१६, १६)। अभिषेक नाटक मे भी सीता

---

१. दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार सीता ने अपने तथा रावण के बीच मे तृण रखा था, "**तृणमन्तरतः कृत्वा**" (५, २१, ३)। पहले-पहल लका मे पहुँचकर सीता ने रावण को उत्तर देने के पूर्व ऐसा ही किया था (दे० ३, ५६, १) । अरण्यकाड का उल्लेख मौलिक है तथा तीनो पाठो मे मिलता है, यहाँ पर इसकी आवृत्ति प्रक्षिप्त है क्योंकि गौडीय पाठ के समानान्तर सर्ग मे (५, २३) इसका उल्लेख नही होता।

बिर्होर नामक आदिवासियो की रामकथा (दे० अनु० २७२) मे यह माना गया है कि सीता ने रावण के बलात्कार से बचने के लिए जादू द्वारा अपने शरीर मे भयकर फोडे उत्पन्न किए थे। रावण के अपेक्षाकृत अच्छे व्यवहार के कारणो का विश्लेषण ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ५००)।

५४३. वाल्मीकि रामायण के सीता-रावण सवाद के अन्तर्गत (सर्ग १८-२२) मन्दोदरी का कही भी उल्लेख नही किया गया है। सुन्दरकाण्ड के प्रक्षिप्त सर्ग ५८ मे हनुमान् वानरों के लिए पुन· लङ्का की घटनाओ का वर्णन करते हैं। सीता-रावण-सवाद के विषय मे यह कहते है कि सीता के अपमानजनक शब्द सुनकर रावण उन्हें मारने के लिए उद्यत हुआ किन्तु मन्दोदरी ने उसे रोक लिया तथा अपने साथ क्रीडा करने का रावण से अनुरोध किया था। इस वृत्तान्त के आधार पर बहुत-सी परवर्ती रचनाओ मे यह माना गया है कि मन्दोदरी सीता-रावण-सवाद के समय अशोकवन मे उपस्थित थीं, उदा०---रगनाथ रामायण (५, ७), धर्मखण्ड (अध्याय १०५), अध्यात्म रामायण (५, २, ३८), आनन्द रामायण (१, ६, ८४), भावार्थ रामायण (५, ८); तोरवे रामायण (५, ३), रामचरितमानस (५, १०), आश्चर्यचूडामणि (अक ५)। इन अधिकाश रचनाओ मे मन्दोदरी रावण को सीता-वध करने से रोक लेती है। बलरामदास रामायण के अनुसार त्रिजटा ने उस अवसर पर रावण को रोका था।

काश्मीरी रामायण के अनुसार रावण ने हरण के बाद ही सीता को मन्दोदरी की देखरेख मे छोड दिया था (दे० अनु० ५००)। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ३२८-३६४) के अनुसार रावण अपनी दूती मजरिका के असफल प्रयत्न के पश्चात् स्वय सीता के पास आकर अनुनय-विनय करने लगा। सीता का तिरस्कार-पूर्ण उत्तर सुनकर रावण को क्रोध आया था किन्तु मन्दोदरी ने उसे शान्त कर दिया तथा उसे स्मरण दिलाया कि सती स्त्रियो का अपमान करने से आकाशगामिनी आदि विद्याएँ नष्ट हो जाती हैं। इस पर रावण अपने महल लौटा, मन्दोदरी सीता के पास आई तथा यह देखकर कि मेरा स्नेह बढ रहा और मेरे स्तनो से दूध झर रहा है, उसने अनुमान किया कि यह मेरी पुत्री है जिसे मैंने जन्म के बाद ही छोड दिया था (दे० अनु० ४१२)। मन्दोदरी ने सीता से अनुरोध किया कि चाहे मरना ही क्यो न पडे किन्तु रावण का मनोरथ पूर्ण मत करना। तब उसने यह कहकर सीता को भोजन के लिए बाध्य किया कि यदि तुम नही खाओगी तो मैं भी उपवास करूँगी। मन्दोदरी के चले जाने के बाद हनुमान् ने अपने को सीता के सामने प्रकट किया।

५४४. प्रामाणिक वाल्मीकि रामायण में रावण-वध के पूर्व मन्दोदरी के हस्तक्षेप का कही भी उल्लेख नही था। सुन्दरकाण्ड के एक प्रक्षेप के अनुसार (जो

पूर्वक उनसे निवेदन किया था कि वह उसे पति के रूप मे ग्रहण करे (दे० अनु० ५४०)। परवर्ती रचनाओं के अनुसार रावण ने सीता को विचलित करने के लिए अनेक उपायो का सहारा लिया था।[1] गुणभद्र के उत्तरपुराण (६८, ३२१-३२८) में मंजरिका नामक रावण की दूती की चर्चा है, जिसने सीता को विचलित करने का असफल प्रयत्न किया था। असमीया गणकचरित मे रावण की एक अन्य युक्ति का वर्णन किया गया है, कथावस्तु इस प्रकार है। रावण ने एक मायामय राम और लक्मण की सृष्टि की और उनके साथ अशोकवन मे प्रवेश किया। रावण चाहता था कि वे मायामय राम-लक्मण रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करने का सीता से अनुरोध करे। इतने मे हनुमान चन्द्रपुर के ज्योतिषी के रूप मे लका मे प्रवेश कर गये, बाद मे वह भ्रमर बन कर और मालिनी के फूलो पर बैठकर मन्दोदरी के महल में पहुँच गए। मन्दोदरी के यहाँ हनुमान् ने बिडाल का रूप धारण कर लिया; मन्दोदरी ने उस बिडाल को खिलाया किन्तु वह उसका माणिक्य छीनकर तथा उसके स्तनो पर नखक्षत कर भाग गया। तब हनुमान् ज्योतिषी के रूप मे उस समय अशोकवन में जा पहुँचे जब माया-राम रावण से जीवन की भिक्षा माँग रहा था। रावण को ज्योतिषी के गले में मन्दोदरी का कण्ठमाणिक्य देखकर आश्चर्य हुआ। हनुमान् ने उससे कहा—मुझे यह माणिक्य एक गंधर्व से मिला था जिसने मन्दोदरी के साथ अनुचित सम्बन्ध रखा है तथा उसके स्तनो पर नखक्षत किया है। इस पर रावण ने क्रुद्ध होकर ज्योतिषी को पकड़ लिया तथा उससे कहा—यदि तुम्हारा अभियोग सच निकला तो इनाम मिलेगा; नही तो मैं तुम्हारा वध करूँगा। हनुमान् का कथन सच निकला, बाद में वह सीता के पास आए तथा उनका समाचार लेकर राम के पास लौटे। उस वृत्तान्त के अन्त मे मन्दोदरी के सतीत्व का प्रभाव वर्णित है। रावण के तिरस्कार के कारण विरक्त होकर वह नारायण की स्तुति किया करती थी। बाद मे उसने अपने सतीत्व की शपथ खाकर भूकम्प उत्पन्न किया, सूर्य को रोक लिया तथा इन्द्र द्वारा पुष्प-वृष्टि कराई। यह सब देखते हुए भी रावण का सन्देह दूर नही हुआ। मन्दोदरी की अग्नि-परीक्षा के लिए आग जलाई जा चुकी थी कि दुवरी नामक स्त्री ने आकर रावण को विश्वास दिलाया कि हनुमान् का अभियोग मिथ्या है। मन्दोदरी ने अन्त मे रावण से यह अनुरोध किया—"तुमने सीता का अपहरण किया है, इसीलिए हनुमान् ने मेरा अपमान किया है। सीता को लौटाओ।"

---

१. पउमचरिय के अनुसार रावण ने सीता को लंका मे पहुँचाकर उनको अपने वश मे करने के लिए माया का सहारा लिया था (दे० अनु० ५००), युद्ध के समय की युक्तियो का वर्णन अनु० ५८३ मे किया गया है।

काश्मीरी रामायण (युद्धकाण्ड, ५४) तथा **मसीही रामायण** (अनु० ३०६) के अनुसार मन्दोदरी रावणवध के बाद सीता को राम के पास ले गई थी किन्तु कृत्तिवास ने माना है कि जब सीता सुवर्ण पालकी मे बैठकर राम से मिलने जा रही थी उस समम मन्दोदरी ने सीता को यह शाप दिया था—तुम्हारे कारण मैंने अपने पति को खो दिया है। तुम्हारा भी आनन्द अचानक निरानन्द बन जायगा (६, ११४)।

मन्दोदरी की सृष्टि तथा विवाह विषयक सामग्री रावण-चरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६५०)। काश्मीरी रामायण के अनुसार मन्दोदरी वास्तव मे एक अप्सरा थी जो रावण के विनाश के लिए पृथ्वी पर आई थी (दे० युद्धकाण्ड, ५३)।

ग। त्रिजटा-चरित

५४५ वाल्मीकि रामायण के अनुसार त्रिजटा एक बूढी राक्षसी[1] थी जो सीता का चरित्र देखकर उनकी ओर आकर्षित हुई थी और जिसने दो अवसरो पर सीता को सान्त्वना दी थी।

सुन्दरकाण्ड (सर्ग २७) का प्रसग इस प्रकार है। रावण के चले जाने के बाद राक्षसियाँ सीता को डराने लगी थी। त्रिजटा ने उन्हे डाँटकर कहा कि मैंने एक भयानक स्वप्न देखा है जो राक्षसो का नाश तथा राम की विजय सूचित करता है। अनन्तर उसने विस्तार-पूर्वक उस स्वप्न[2] का वर्णन किया तथा अन्त मे राक्षसियो से अनुरोध किया कि वे सीता से क्षमा माँग ले। सीता ने सबो को अभयदान दिया।

युद्धकाण्ड मे जब इन्द्रजित् ने राम तथा लक्ष्मण को नागपाश मे बाँधा था (दे० अनु० ५८६) तब रावण ने सीता तथा त्रिजटा को पुष्पक पर बैठा कर रणभूमि में निस्सहाय पडे हुए राम और लक्ष्मण को दिखलाया। सीता दोनो को मृत समझ कर करुण विलाप करने लगी किन्तु त्रिजटा ने सीता को आश्वासन दिया कि राम और लक्ष्मण जीवित ही हैं। उस सर्ग मे त्रिजटा ने सीता के प्रति अपने स्नेह का उल्लेख किया—**स्नेहादेतद् ब्रवीमि ते** (४८, २८), **चारित्रसुखशीलत्वात्प्रविष्टासि मनो मम** (४८,२९)। **रामायण ककविन** (सर्ग २१) के अनुसार सीता राम को शरपाश मे

१. "राक्षसी त्रिजटा वृद्धा,' (५, २७, ४)। महाभारत (३, २६४,४) मे उसे "धर्मज्ञा प्रियवादिनी" कहा गया है।

२. परवर्ती साहित्य मे त्रिजटा के स्वप्न का कोई विशेष विकास परिलक्षित नही होता। स्वयम्भूदेवकृत पउमचरिउ (५०, ८) तथा कृत्तिवास के रामायण (५, १५) के अनुसार त्रिजटा ने स्वप्न मे हनुमान् का आगमन, लका-दहन आदि देखा था।

तीनों पाठो में मिलता है) मन्दोदरी ने सुन्दरकाण्ड की घटनाओं के समय रावण को सीता-वध करने से रोका था (दे० ऊपर अनु० ५४३)। उदीच्य पाठ में इसका वर्णन मिलता है कि मन्दोदरी ने प्रहस्त-वध के वाद रावण से अनुरोध किया कि वह राम से युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य-मात्र नही हैं (दे० अनु० ५५८)। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मे रावण के यज्ञध्वंस के प्रसंग मे मन्दोदरी के केशग्रहण का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६७)। उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) मे रावण के साथ मन्दोदरी के विवाह का भी वर्णन किया गया है (अनु० ६५०)।

परवर्ती रामसाहित्य मे मन्दोदरी को कथानक में अधिक स्थान मिला है। सीता की वहुत-सी जन्म-कथाओ मे वह सीता की माँ मानी गई है (दे० अनु० ४१२-४१७, ४२०-४२१)। सीताहरण के वाद (दे० अनु० ५००) तथा सीता-रावण-सवाद (दे० अनु० ५४१-५४३) के समय मन्दोदरी विषयक सामग्री का निरूपण हो चुका है।

युद्धकाण्ड के कथानक मे भी मन्दोदरी के हस्तक्षेप का अनेक रचनाओ मे वर्णन किया गया है। **पउमचरियं** (७०, ३१) के अनुसार अंतिम युद्ध के ठीक पहले मदोदरी ने रावण के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि मैं सीता को लेकर राम के पास जाऊँ। **भावार्थ रामायण** (६, ५५) मे इन्द्रजित्-वध के वाद रावण मन्दोदरी को धमकी देकर वाध्य करता है कि अशोकवन मे जाकर रावण की इच्छा पूरी करने का सीता से अनुरोध करे। वहुत-सी अर्वाचीन रचनाओ मे मन्दोदरी ने उसी समय रावण को सीता का वध करने से रोका था (दे० अनु० ५६३)। **अध्यात्म रामायण** (६, १०, ४४) तथा **आनन्द रामायण** (१, ११, २४१-२४२) मे मन्दोदरी रावण के यज्ञ-विध्वस के वाद फिर अपने पति से सीता को लौटाने का अनुरोध करती है। **रामचरितमानस** मे मन्दोदरी को रामभक्तिन के रूप मे चित्रित किया गया है; वह अपने पति को तीन विभिन्न अवसरो पर भगवान की शरण लेने का उपदेश देती है (सुन्दरकाण्ड ३६, युद्धकाण्ड १४-१६ और ३५)। **रामकियेन** मे मन्दोदरी के सजीवन-यज्ञ का भी वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६७)।

वाल्मीकीय युद्धकाण्ड (सर्ग १११) मे रावण-वध के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है, किन्तु आदिकाव्य मन्दोदरी के उत्तर-चरित के विषय मे मौन हैं। आनन्द रामायण और भावार्थ रामायण (६, ५५) के अनुसार मन्दोदरी रावण के वध के वाद सती वन गई थी—**तदा मन्दोदरी भर्त्रा सह देहं विसृज्य सा ययौ वैकुण्ठभवनं रावणेन मुदान्विता**।[1] अनेक रामकथाओ मे मन्दोदरी और विभीषण के विवाह का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५७२)।

१. दे० आनन्द रामायण, सारकाण्ड ११, २५५। **कंवरामायण** (६, ८५) के कुछ संस्करणो में भी मन्दोदरी के सती हो जाने की कथा मिलती है।

जाता है जिसमे सरमा सीता के लिए लङ्कादहन का वर्णन करती है।[1]

उपर्युक्त दोनो वृत्तान्तो मे सरमा तथा विभीषण के किसी सम्बन्ध का सकेत मात्र भी नही किया गया है। सुन्दरकाण्ड मे सीता-हनुमान्-सवाद के अन्तर्गत सीता-हितकारिणी के रूप मे विभीषण की पत्नी का उल्लेख था, बाद मे सीता की प्रिय सखी सरमा के उपकारो का वर्णन मिलता था, अत. उत्तरकाण्ड के व्यासो ने सरमा को विभीषण की पत्नी घोषित कर दोनो को अभिन्न माना है। उत्तरकाण्ड के अनुसार 'धर्मज्ञा' सरमा गन्धर्वराज शैलूष की पुत्री है, इसके नाम की व्युत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि उसने मानस नामक सरोवर के तट पर जन्म लिया था। वर्षा के कारण सरोवर की बाढ अपने तक आते देखकर शिशु रोने लगा था जिस पर उसकी माँ ने कहा था—**'सरो मा वर्धत'** और इसलिए शिशु का नाम **'सरमा'** ही रखा गया था (७, १२, २४-२७)।

सरमा नाम के विषय मे कृत्तिवास ने एक अन्य कल्पना की है। उन्होने सरमा को लङ्का मे सीता की एकमात्र हितैषिणी मानकर लिखा है—**सीता ओ सरमा जेन दुइटि भगिनी**। हनुमान् के प्रकट होने के पूर्व सरमा सीता से मिलने आई थी, उस अवसर पर सीता ने सरमा से कहा—मैं रमा हूँ, मेरे ही कारण तुम्हारा नाम सरमा रखा गया है (कृत्तिवास रामायण ५, १६)।

५४७. (१) रामायण अथवा महाभारत मे कही भी **विभीषण** और **त्रिजटा** के किसी सम्बन्ध का निर्देश नही मिलता। परवर्ती साहित्य मे सीता के प्रति कला तथा सरमा के उपकारो का श्रेय त्रिजटा को दिया गया, फलस्वरूप त्रिजटा को विभीषण की पुत्री अथवा उसकी पत्नी माना गया है। बहुत-सी रचनाओ मे त्रिजटा का विभीषण की पुत्री के रूप मे उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—गोविन्दराज की टीका (५, २७, ४), कब रामायण (५, ६), बलरामदास रामायण, रामायण ककविन, सेरीराम। **आनन्द रामायण** के रचयिता ने त्रिजटा को विभीषण की पत्नी माना है—**त्रिजटा नाम्नी विभीषणप्रियानुगा** (१, ६, १०१)। **वसुदेवहिण्डि** तथा **भावार्थ रामायण** (५, १०) मे त्रिजटा का विभीषण की बहन के रूप मे उल्लेख हुआ है। **रामकियेन** (अध्याय

१ कल्किपुराण (३, १७, ४०) मे कहा गया है कि सीता ने सरमा के साथ रुक्मिणी व्रत का पालन किया था। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा पउमचरिय मे कही भी सरमा का उल्लेख नही है। आनन्द रामायण (१, १२, ४४) के अनुसार सरमा तथा त्रिजटा दोनो ने सीता के साथ पुष्पक पर अयोध्या की यात्रा की थी।

बँधा हुआ देखने के वाद त्रिजटा से चिता तैयार करने का निवेदन करती हैं किन्तु त्रिजटा अपने पिता विभीषण से मिलने जाती है और राम के कुशल-क्षेम का शुभ समाचार लेकर लौटती है।

५४६. त्रिजटा-चरित का परवर्ती विकास समझने के लिए सीता की अन्य हितैषिणी राक्षसियो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का निरूपण आवश्यक है।

वाल्मीकीय सुन्दरकाण्ड मे विभीषण की पत्नी तथा पुत्री की चर्चा है। सीता इनके विषय मे हनुमान् से कहती हैं कि कला नामक विभीषण की ज्येष्ठा पुत्री ने अपनी माता के आदेशानुसार मुझसे कहा है कि विभीषण तथा अविंध्य[1] के सत्परामर्शों की अवज्ञा करके रावण ने सीता को लौटाना हठपूर्वक अस्वीकार कर दिया है (५, ३७)। विभीषण की इस पुत्री के नाम के विषय मे मतैक्य नहीं है। उदीच्य पाठ के अनुसार इसका नाम नन्दा था (गौ० रा० ५, ३५, १२, प० रा० ४, ३४, ११) और टीकाकार गोविन्दराज के पाठ मे (५, ३७, ११) तथा जानकीपरिणय मे कला के स्थान पर अनला नाम मिलता है।[2]

सीता की अन्तिम हितैषिणी सरमा का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक सर्गों मे नहीं मिलता। युद्धकाण्ड के एक प्रक्षेप के अनुसार (दे० अनु० ५८३) रावण ने सीता को विचलित करने के उद्देश्य से सीता को राम का मायाशीर्ष दिखलाया था किन्तु सरमा ने सीता के पास आकर रावण के छल-कपट का रहस्य प्रकट किया। इसके वाद सरमा ने सीता को यह शुभ समाचार दिया कि राम समुद्र पार कर लङ्का के निकट आ पहुँचे हैं। उसने राम के पास सीता का सन्देश ले जाने का प्रस्ताव किया किन्तु सीता ने यह निवेदन किया—"मेरे विषय मे रावण के निर्णय का पता लगाकर आओ।" सरमा ने ऐसा ही किया और वह सीता के पास यह समाचार लेकर आई कि रावण अपनी माता और सभासदो का अनुरोध ठुकराकर सीता को लौटाना अस्वीकार करता है। सरमा के विषय मे लिखा है कि वह सीता की 'प्रणयिनी' सखी है जिसके साथ सीता ने मित्रता की थी (सा हि तत्र कृता मित्रं सीतया, ६, ३३, ३)। उदीच्य पाठ (गौ० रा० ५, ५२, प० रा० ५, ५१) मे सरमावानयम् नामक सर्ग पाया

---

१. अविंध्य के विषय मे अनु० ४६ देख ले। विभीषण-सम्बन्धी सामग्री अनु० ५६८-५७२ मे सकलित है।

२ उत्तरकाण्ड मे एक अन्य अनला नामक राक्षसी का उल्लेख है जो माल्यवान की पुत्री, विभीषण की मौसी (७, ५, ३६) तथा कुभनसी की माता (७, २५, २४) है।

दास रामायण के अनुसार त्रिजटा ने दो अन्य अवसरो पर भी सीता के जीवन की रक्षा की थी (दे० अनु० ५४३ और ५६३)।

(५) वाल्मीकि युद्धकाण्ड के अनुसार सरमा ने सीता का **गुप्तचर** बनकर उन्हे रावण-सभा की वातो का समाचार दिया था। परवर्ती साहित्य के अनुसार त्रिजटा ने न केवल इसी अवसर पर किन्तु युद्ध छिड जाने के बाद भी सीता को समय-समय पर घटनाओ से अवगत कराया था। **बालरामायण** (अक ८) मे इसका वर्णन मिलता है कि त्रिजटा ने सुमुख तथा दुर्मुख की सहायता से नरातक-वध, कुभकर्ण-जागरण तथा इन्द्रजित् के निकुभिला-प्रवेश का समाचार सीता को पहुँचा दिया था। **आनन्दरामायण** (१, ११, १९७) के अनुसार इन्द्रजित्-वध के पश्चात् लक्ष्मण का शखनाद सुनकर सीता ने त्रिजटा को भेज दिया था और उससे युद्ध का समाचार सुनकर प्रसन्न हुई थी। **रामचरितमानस** मे भी इसका वर्णन मिलता है कि त्रिजटा ने मेघनाद-वध के बाद सीता के पास आकर युद्ध का समाचार सुनाया तथा राम की विजय का आश्वासन दिया था (दे० अनु० ५९८)। इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने त्रिजटा को रामभक्तिन माना है—**राम चरन रति निपुन बिबेका** (दे० ५, ११, १)। **भावार्थ रामायण** (६, ७१) मे भी राम-भक्ति के कारण त्रिजटा की प्रशसा की गई है।

बालरामायण (अक १०) तथा आनन्द रामायण (१, १२, ४४) के अनुसार त्रिजटा ने सीता के साथ पुष्पक पर चढकर अयोध्या की यात्रा की थी। स्वयभूदेवकृत **पउमचरिउ** (५, ८३, ४) मे कुश-लव-युद्ध के बाद अयोध्या मे त्रिजटा तथा लंका-सुन्दरी के आगमन का वर्णन किया गया है। दोनो ने सीता के सतीत्व के पक्ष मे साक्ष्य देकर अत मे राम से कहा कि यदि आपको विश्वास न हो तो दिव्य द्वारा सीता की परीक्षा लीजिए। इसके बाद पउमचरियं के अनुसार ही (दे० अनु० '६०१) पउमचरिउ मे भी सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन किया गया है।

(६) **जैनी रामसाहित्य** की प्राचीनतम रचनाओ मे अर्थात् पउमचरियं, रवि-षेणकृत पद्मचरित तथा गुणभद्रकृत उत्तरपुराण मे त्रिजटा का उल्लेख नही मिलता। स्वयभूदेवकृत **पउमचरिउ** (४९, १०) मे त्रिजटा सीता की हितैषिणी नही मानी गई है। इस रचना के अनुसार सीता हनुमान् द्वारा फेकी हुई राम-मुद्रिका देखकर जब आनन्दित हो उठती है तब त्रिजटा रावण के पास दौड कर जाती है और यह कहती है "आज आपका जीवन सफल है, आज आपकी प्रतिज्ञा पूरी होगी, भट्टारिका सीता हँस रही है।" हेमचन्द्र की रचनाओ मे भी इस तरह का उल्लेख मिलता है (योग-शास्त्र २०३ तथा रामायण ६, ३३३)। इसके अतिरिक्त हेमचन्द्र ने माना है कि सीता को उपवन मे रखने के बाद रावण ने सीता को प्रलोभन देने के लिए त्रिजटा को ही नियुक्त किया था (योगशास्त्र ११७)। कृत्तिवास रामायण (५, १४) के अनुसार

२५) के अनुसार रावण ने विभीषण को निर्वासित कर उसकी पत्नी त्रिजटा को सीता की सेवा मे नियुक्त किया था।

(२) महाभारत के रामोपाख्यान के अनुसार सीता ने हनुमान् से कहा था कि त्रिजटा ने मुझे भविष्य का यह सन्देश दिया—"राम तथा लक्ष्मण सकुशल हैं और वे वानर-सेना लेकर तुम्हे छुडाने आ रहे है। रावण से मत डरना क्योकि नलकूबर के शाप के कारण वह तुम्हारा कुछ भी नही बिगाड सकता है" (दे० ३, २६४, ५८)। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता ने उस अवसर पर कला नामक विभीषण की पुत्री की चर्चा की है।[1] त्रिजटा के स्वप्न के प्रसग के अतिरिक्त महाभारत के एक अन्य स्थल पर भी त्रिजटा का उल्लेख है, रावण-वध के बाद लङ्का से चले जाते समय राम ने त्रिजटा को अर्थ और सम्मानं प्रदान किया था—**त्रिजटां चार्थमानाभ्यां योजयामास राक्षसीम्** (३, २७५, ३६)।

(३) रघुवंश (१२, ७४), सेतुवध (सर्ग ११), बलरामदास रामायण, रामायण ककविन (सर्ग १७), सेरीराम आदि रचनाओ मे राम के मायाशीर्ष के प्रसंग मे त्रिजटा ही सरमा का स्थान लेती है (दे० अनु० ५८३)। **प्रसन्नराघव** (अंक ६) मे त्रिजटा सीता के निवेदन पर आकाश मे स्थित होकर (खेचरी भूत्वा) मेघनाद द्वारा हनुमान् के बधन तथा लकादहन का वर्णन करती है। उदीच्य पाठ मे इस प्रसग मे सरमा की चर्चा है।[2] इस प्रकार हम देखते हैं कि वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभिन्न राक्षसियों ने सीता के लिए जो कुछ भी किया था, वह सब बाद मे त्रिजटा का ही उपकार माना गया है। रामकथा के कवियो ने इतने ही से सन्तोष न लेकर कथानक मे त्रिजटा का स्थान और महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

(४) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे सीता के **आत्महत्या-विचार** का उल्लेख है (५, सर्ग २८)। प्रसन्नराघव तथा रामचरितमानस के अनुसार त्रिजटा ने इस अवसर पर सीता की रक्षा की थी (दे० अनु० ५४८)। परवर्ती साहित्य मे राम के मायाशीर्ष तथा नागपाशबधन के प्रसग मे भी त्रिजटा द्वारा सीता के आत्म-हत्या-विचार दूर करने की कथा मिलती है (दे० अनु० ५८३ और ५८६)। बलराम-

१. कम्ब रामायण (५, ६) मे भी सीता हनुमान् से कहती हैं कि विभीषण की पुत्री त्रिजटा ने मुझे रावण को दिए हुए शाप से अवगत किया है। यदि रावण उसके साथ मिलने की इच्छा न रखने वाली स्त्री का स्पर्श करे तो वह मर जायगा। बलरामदास के अनुसार सीता ने हनुमान् से कहा था—यदि मैं आज जीवित हूँ तो इसका श्रेय त्रिजटा को है।

२. इसका उल्लेख कम्ब रामायण (५, ६) मे भी मिलता है।

से अशोकवृक्ष के पास जाती हैं । इसकी एक शाखा पकडकर वह राम-लक्ष्मण तथा अपने कुल के विषय मे सोचने लगती है, उसी समय उनके शरीर मे शुभ लक्षण प्रकट होने लगते है। **अध्यात्म रामायण** (५, ३, २), **आनन्द रामायण** (१, ६, १०७) तथा अन्य परवर्ती रचनाओ मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। अभिनन्द कृत रामचरित (२०, २-३) तथा **रामकियेन** (अध्याय १४) के अनुसार सीता अपने को फाँसी लगा चुकी थी कि हनुमान् ठीक समय पर पहुँचकर गाँठ खोल देते हैं। **आश्चर्यचूडामणि** (अक ५) मे भी सीता के जल मे प्रवेश कर आत्महत्या करने के विचार का उल्लेख मिलता है। उत्तर भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार सीता ने एक वर्ष के वाद रावण की पत्नी वनने का वचन दिया था और हनुमान् के पहुँचने के समय आत्महत्या का विचार कर रही थी।[1]

प्रसन्नराघव (६, १४-३५) की तत्सवधी कथा इस प्रकार है। अशोकवन मे रावण के आगमन के पूर्व सीता और त्रिजटा वार्त्तालाप कर रही थी, रावण के चले जाने के वाद सीता ने त्रिजटा से कहा कि मैंने अग्नि मे प्रवेश करने का निश्चय किया है मुझे कही से आग ला दो—**तदुपनय अगारखंडकम्**। त्रिजटा ने यह कह कर टाल दिया कि इस स्थान मे आग सुलभ नही है। **रामचरितमानस** (५, १२) का यह वृत्तान्त प्रसन्नराघव पर ही आधारित है।

५४९ **वाल्मीकि रामायण** मे सीता से हनुमान् के मिलने की कथा इस प्रकार है।[2] सीता को अशोकवन मे देखकर हनुमान् सोचने लगते है कि मैं अव क्या करूँ और अन्त मे यह निश्चित करते हैं कि मै "**मानुषी संस्कृत**" वोलकर राम का गुणगान करूँगा (सर्ग ३०)। अनन्तर हनुमान् ने सीता के सुनने योग्य स्वर मे रामचरित का सक्षिप्त वर्णन किया। सीता को सुनकर विस्मय हुआ और उन्होने आँखे ऊपर उठाकर शिंशपा वृक्ष पर हनुमान् को देखा (सर्ग ३१) और विलाप करने लगी (सर्ग ३२, १-५)। हनुमान् ने अपने को रामदूत कहकर राम के कुशलक्षेम का शुभ समाचार सुनाया। सीता को पहले तो हर्ष हुआ किन्तु अनन्तर वह हनुमान् को कामरूपी रावण समझकर सन्देह मे पड गई (सर्ग ३४)। तब हनुमान् ने सीता को राम की मुद्रिका अर्पित की तथा आश्वासन दिया कि राम शीघ्र ही आने वाले हैं (सर्ग ३६)। सीता

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, पृ० ३५८। अन्य अवसरो पर भी सीता के आत्महत्या-विचार का उल्लेख मिलता है, दे० अनु० ५८३, ५८६ और ७४१।

२ प्रस्तुत निरूपण मे केवल प्रामाणिक सामग्री का ध्यान रखा गया है (दे० अनु० ५३०)।

त्रिजटा ने सीता से अनुरोध किया था कि वह रावण की शरण लेकर लंका की पटरानी बन जाए।

(७) भारत की अपेक्षा हिन्देशिया के राम-साहित्य मे त्रिजटा को अधिक महत्त्व दिया गया है। रामायण ककविन मे त्रिजटा-चरित इस प्रकार है। सीता-रावण-संवाद के बाद ३०० राक्षसियाँ सीता को सताने और धमकी देने लगी, एक ही त्रिजटा नामक राक्षसी ने सीता का पक्ष लिया। त्रिजटा की सहानुभूति पाकर सीता ने उसे अपने दुर्भाग्य की कथा सुनाई। बाद मे दोनो मिलकर मंदिर मे प्रार्थना करने गई (सर्ग ८)। राम-लक्ष्मण के मायामय शीर्ष देखकर सीता अग्नि मे प्रवेश करने की तैयारियाँ करने लगी; और त्रिजटा ने उनका साथ देने का निश्चय किया किन्तु वह पहले अपने पिता विभीषण को इसकी सूचना देने चली गई और सुवेल पर्वत पर अपने पिता से मिलकर यह शुभ समाचार लेकर लौटी कि राम और लक्ष्मण दोनो जीवित है। अनन्तर सीता ने राम-विजय के लिए अग्नि से प्रार्थना की; तब वह त्रिजटा और अन्य कुमारियो के साथ खेलने लगी किन्तु उनका मन राम पर ही लगा रहता था (सर्ग १७)। शरपाश मे राम को बँधा हुआ देखकर सीता ने चिता तैयार करने का त्रिजटा से निवेदन किया, किन्तु त्रिजटा ने अपने पिता से मिलकर सीता को आश्वासन दिया कि राम सकुशल हैं (सर्ग २१)। अग्नि-परीक्षा के समय त्रिजटा ने सीता के सतीत्व का साक्ष्य दिया तथा वह बाद मे सीता के साथ अयोध्या चली आई (सर्ग २४)। सीता द्वारा त्रिजटा की विदाई का वर्णन अन्तिम सर्ग मे किया गया है।

सेरीराम मे विभीषण की पुत्री त्रिजटा को सीता पर पहरा देने वाली राक्षसियो की अध्यक्षा माना गया है। राम-लक्ष्मण का माया-शीर्ष देखकर सीता आत्महत्या करना चाहती थी, उस समय त्रिजटा ने राम के पास जाकर सीता को प्रमाण दिया कि राम जीवित ही हैं (दे० अनु० ५८३)। सेरत काण्ड मे त्रिजटा तथा जाम्बवान के विवाह का भी उल्लेख किया गया है।

घ। सीता-हनुमान्-संवाद

५४८. वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त अंश के अनुसार (सर्ग २८-२९) हनुमान् के आगमन के ठीक पहले सीता आत्महत्या करने का विचार कर रही है।[1] विष अथवा किसी तीक्ष्ण शस्त्र के अभाव मे वह अपनी वेणी से फाँसी लगाने के विचार

१. सर्ग ३० मे हनुमान् आशंका प्रकट करते हैं कि यदि मैं सीता से बातचीत किये बिना चला जाऊँ तो वह अवश्य ही आत्महत्या कर लेगी (श्लोक ६ और १२)।

(३) हनुमान् की पीठ पर चढना स्वीकार करते समय सीता के उपर्युक्त तर्कों मे से अन्तिम तर्क (कुलवधू-मर्यादा) को ही परवर्ती साहित्य मे सर्वाधिक मान्यता दी गई है। फिर भी वाल्मीकि रामायण के प्रक्षिप्त सर्ग ५८ मे सीता के केवल इस क्षत्रियोचित उत्तर का उल्लेख किया गया है : राम ही रावण को परास्त कर मुझे ले जायँ—**रावणमुत्पाट्य राघवो मां नयतु** (५८, १०१)। एक अन्य प्रक्षिप्त सर्ग मे सीता पुनः इस पर बल देती है कि रावण के समान लुक-छिपकर मुझे ले जाना राम को शोभा नही देगा, उनकी कीर्ति के लिए आवश्यक है कि रावण पर विजय प्राप्त कर ले :

> **बलैः समग्रैर्यदि मा हत्वा रावणमाहवे ।।**
> **विजयी स्वपुरीं रामो नयेत्तत्स्याद्यशस्करम् ।।१२।।**
> **यथाहं तस्य वीरस्य वनादुपधिना हृता ।**
> **रक्षसा तद्भयादेव तथा नार्हति राघवः ।।१३।।** (सर्ग ६८)

काश्मीरी रामायण (५, ३४) मे राम की कीर्ति विषयक तर्क के अतिरिक्त सीता कहती है—रावण मेरे पिता है, मुझे उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नही करना चाहिये।

(४) हनुमान्-सीता-संवाद विषयक प्रामाणिक सर्गों मे सीता द्वारा दिए हुए केवल **दो अभिज्ञानो** का वर्णन है—चूड़ामणि तथा काक-वृत्तान्त (दे० अनु० ४३६)। महाभारत के **रामोपाख्यान** (३, २६६, ६६-६७) मे केवल इन दोनो का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् मैनसिल के तिलक का स्मरण दिलाकर राम को एक तीसरा अभिज्ञान देते हैं (दे० ६५, २३)। एक प्रक्षिप्त सर्ग मे भी सीता द्वारा इस घटना का वर्णन किया गया है, सीता के तिलक मिट जाने पर राम ने उनकी कनपटी पर मैनसिल का तिलक बनाया था—**मनःशिलायास्तिलको गण्डपार्श्वे निवेशितः** (४०, ५)। अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे तिलक के मिट जाने का कारण भी दिया गया है (दे० अनु० ४३६)।

परवर्ती साहित्य मे इन दो अथवा तीन अभिज्ञानो का प्रायः उल्लेख मिलता है। चूडामणि के अतिरिक्त सीता हनुमान् को **रामायण ककविन** मे एक पत्र तथा **पउमचरिय** (५३, १२) मे अपना उत्तरीय देती है। **सेरीराम** के अनुसार सीता ने हनुमान् को राम के लिए इत्र की जडाऊ मजूषा दी थी। **कंब रामायण** (५, ५) मे काक-वृत्तान्त तथा चूडामणि के अतिरिक्त सीता ने अभिज्ञान-स्वरूप हनुमान् से कहा था कि मैंने एक बार राम से पूछा था कि अपनी एक शुकी का क्या नाम रखा जाय और राम ने उत्तर दिया—'मेरी माँ दोषहीन कैकेयी का नाम रखना'। इस रचना मे ऊर्मिला आदि के प्रति यह सन्देश भी मिलता है कि राम के प्रिय वचनो से मैं अपनी वेदनाओ

अब पूर्ण रूप से विश्वस्त होकर यह सन्देश देने लगी कि यदि राम मुझे जीवित पाना चाहे तो दो महीने के अन्दर आ जाएँ। तब हनुमान् ने सीता को अपनी पीठ पर राम के पास ले जाने का प्रस्ताव किया। सीता ने पहले हनुमान् की सामर्थ्य पर अविश्वास किया—**कथं चाल्पशरीरस्त्वं मामितो नेतुमिच्छसि** (३७,३२)। इस पर हनुमान् ने अपना शरीर बढाकर अपनी शक्ति का प्रमाण दिया। अनन्तर सीता ने हनुमान् के विरोध मे पाँच तर्क प्रस्तुत किए—(१) मुझे गिर जाने का भय है, (२) तुमको जाते देखकर राक्षस आक्रमण करेंगे, तुम उनके साथ युद्ध करते समय मेरी रक्षा न कर सकोगे, (३) यदि तुम ही राक्षसो को मारोगे तो राम का अपयश होगा, (४) राक्षस सभवत: मुझे पकड़कर किसी गुप्त स्थान मे रखेंगे, (५) मैं राम को छोड़कर किसी दूसरे का शरीर नही स्पर्श करना चाहती हूँ—**भर्तुर्भक्ति पुरस्कृत्य रामादन्यस्य वानर, नाहं स्प्रष्टुं स्वतः गात्रमिच्छेयं वानरोत्तम** (३७, ६२)। हनुमान् ने सीता के तर्क मानकर एक अभिज्ञान माँगा।

> **यदि नोत्सहे यातुं मया सार्धमनिन्दिते।**
> **अभिज्ञानं प्रयच्छ त्वं जानीयाद्राघवो हि यत्** ॥१०॥ (सर्ग ३८)

सीता ने उनको काक-वृत्तान्त सुनाया, अपना चूडामणि दे दिया (सर्ग ३८) तथा हनुमान् को जाने के लिए उद्यत देखकर उनसे निवेदन किया कि वह एक दिन के लिए उनके पास ठहर जाएँ। हनुमान् राम के शीघ्र आने का आश्वासन देकर चले गए (सर्ग ३६)।

५५० इस सामग्री मे आगे चलकर अपेक्षाकृत कम परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन किया गया है।

(१) सीता के सामने प्रकट होते समय हनुमान् के विभिन्न छद्मवेषों का उल्लेख ऊपर हो चुका है (दे० अनु० ५३४)। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने ब्राह्मण के रूप मे लका मे प्रवेश किया था। वह किसी जलकूप के पास बैठकर विश्राम कर रहे थे कि ४० महिलाएँ स्वर्ण पात्रो मे जल भरने आई। हनुमान् को पता चला कि ये सीता के स्नान के लिए पानी ले जा रही हैं, अतः उन्होंने राम की मुद्रिका एक पात्र मे फेक दी। बाद मे सीता ने मुद्रिका पाकर ब्राह्मण को बुलाया।

(२) वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग के अनुसार सीता के निवेदन पर हनुमान् ने राम के शरीर का "यथातत्त्व" वर्णन किया था (सर्ग ३५)। **कम्ब रामायण** (५, ५, ३६-५८) और **रंगनाथ रामायण** (५, १४) मे यह वर्णन अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ दिया गया। राम द्वारा दिए हुए अभिज्ञानो का किष्किन्धाकाण्ड के प्रसग मे उल्लेख हो चुका है (दे० अनु० ५२५)।

५५२ अद्भुत एवं हास्यरस की सभावनाओ के कारण लकादहन कवियों का प्रिय विषय रहा है, अतः इसके वर्णन मे पर्याप्त नई सामग्री की कल्पना कर ली गई है। प्रस्तुत अनुच्छेद मे वाल्मीकि रामायण के वृत्तान्त के क्रमानुसार इस सामग्री का सक्षिप्त निरूपण किया जा रहा है।

(१) अध्यात्म रामायण(५, ३, ६७-७१) के अनुसार हनुमान् को भूख लगी थी, उन्होंने सीता की अनुमति लेकर अशोकवन के फल खाये और वाद मे प्रणाम करके चले गये। फिर कुछ दूर चलने पर उन्होंने निश्चय किया कि रावण से मिलकर जाना अच्छा है और इसलिए वे अशोकवन उजाड़ने लगे। आनन्दरामायण (१,६, १,२३-१३६) मे इस प्रसग को वढा दिया गया है: जब हनुमान् ने अशोकवन के फल खाने की आज्ञा माँगी सीता ने अपना ककरण उतारकर कहा—"यह लो और लका की दूकानो से फलो के ढेर खरीद कर खा लो।" हनुमान् ने आपत्ति करते हुए उत्तर दिया—"मैं दूसरे के हाथ के तोडे फल नही खाता, रहने दीजिए, मैं ऐसे ही जाता हूँ"। उन्हे चले जाते देख कर सीता ने कहा कि जो फल पृथ्वी पर गिर पडे है उनको चुपचाप खा लो। इस पर हनुमान् पूँछ से वाँधकर वृक्षो को हिलाने लगे और अशोकवन के सब फल खा गये। अन्त मे उन्होने वन के समस्त वृक्ष गिरा दिए। भावार्थ रामायण (५, १३) का वृत्तान्त इससे अधिक भिन्न नही है।

माधवकंदली के असमिया रामायण के अनुसार सीता ने विदा के समय हनुमान् को एक मधुफल दे दिया। हनुमान् को और खाने की इच्छा हुई और उन्होंने सीता से पता लगाया कि यह फल अशोकवन का ही है। तव हनुमान् ने एक वृद्ध ब्राह्मण के वेश मे रावण के पास जाकर अपना यह परिचय दिया—"मैं सौराष्ट्र का ब्राह्मण हूँ। कल एकादशी व्रत था, मैंने सोचा कि राजा के सामने वेदपाठ करके चला जाऊँगा"। इसके वाद हनुमान् चले गए और अशोकवन में पहुँचने पर वन्दर वन कर फल खाने तथा उत्पात मचाने लगे।[१]

सेरीराम मे तत्सवधी प्रसग इस प्रकार है। सीता से दो आम पाकर हनुमान् ने पूछा कि ये कहाँ से आये। सीता ने उन्हे रावण की अमराई का मार्ग वताकर साव-धान किया कि १०० राक्षस दिन-रात उसकी रखवाली करते हैं। हनुमान् ने वहाँ जाकर छोटे वानर के रूप मे अमराई मे पडी हुई पत्तियाँ तथा टहनियाँ वटोर कर रक्षको को प्रसन्न किया। किसी दिन सब के सब मद्य पीकर मतवाले वन गए और हनुमान् ने सब फल खाकर वाटिका नष्ट कर डाली। दूसरे दिन रक्षक हनुमान् से पूछने लगे कि यह किसका काम है। हनुमान् के चुप रहने पर रक्षक उन्हे रावण के पास ले गए।

---

१. दे० लेखारु—असमिया रामायण साहित्य, पृ० ५८।

को भूल जाती हूँ तथा सीता के इस अनुरोध का भी उल्लेख है कि उनके पालतू शुक-सारिकाओ की देख-रेख का ठीक ढग ऊर्मिला को सिखाया जाय।

ङ । लंकादहन

५५१ वाल्मीकि रामायण मे अशोकवन-विध्वस तथा लकादहन विषयक विस्तृत प्रक्षेप[1] की कथावस्तु इस प्रकार है। राक्षसो की बल-परीक्षा करने तथा रावण का मन जानने के उद्देश्य से हनुमान् ने अशोकवन नष्ट किया (सर्ग ४१)। इसके बाद उन्होंने रावण के भेजे हुए ८०००० योद्धाओ, जम्बुमाली, सात मत्रि-पुत्रो, पाँच सेना-पतियो, तथा रावणपुत्र अक्ष का वध किया।[2] अन्त मे इन्द्रजित् हनुमान् को ब्रह्मपाश से बाँध कर रावण के पास ले गया। हनुमान् ने अपने को सुग्रीव द्वारा भेजा हुआ राम-दूत कहकर रावण से सीता को लौटाने का अनुरोध किया जिस पर रावण ने क्रुद्ध होकर हनुमान् का वध करना चाहा, किन्तु विभीषण की आपत्ति पर ध्यान देकर उसने दण्डस्वरूप हनुमान् की पूँछ जलाने का आदेश दिया। अतः राक्षस हनुमान् की पूँछ मे कपास के पुराने कपडे लपेटने लगे जिस पर हनुमान् ने अपना आकार बढाया। तब राक्षसो ने तेल डाल कर हनुमान् की पूँछ मे आग लगा दी और उनको नगर मे चारो ओर घुमाया। सीता को हनुमान् की दुर्दशा का समाचार[3] जब मिला उन्होंने अग्नि से प्रार्थना की कि वह हनुमान के लिए शीतल बन जाय। फलस्वरूप हनुमान् ने अग्नि की शीतलता का अनुभव किया और उन्होंने इस चमत्कार का श्रेय सीता की दयालुता, राम के प्रभाव तथा अग्नि से अपने पिता की मित्रता को दिया। अन्त मे हनुमान् ने अपना शरीर पहले अधिक बढाकर और बाद मे घटा कर अपने को बन्धनो से मुक्त किया[4] तथा अपना आकार फिर बढाकर विभीषण के महल को छोडकर समस्त लका को भस्म कर डाला और बाद मे अपनी जलती हुई पूँछ समुद्र मे बुझा ली। तब हनुमान् को सीता के कुशल-क्षेम के विषय मे चिन्ता हुई, किन्तु शकुनो तथा चारणो की बातचीत से उन्हे उनके विषय मे आश्वासन मिला (सर्ग ४८-५५)।

१. सर्ग (४१-५५)। दे० ऊपर अनु० ५३०। युद्धकाण्ड मे रात्रि के समय वानरो द्वारा लकादहन का पुनः वर्णन मिलता है (सर्ग ७५)।

२ दे० सर्ग ४२ और ४४-४७। सर्ग ४३ (चैत्यविध्वस) केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है।

३ उदीच्य पाठ के अनुसार सरमा ने सीता के लिए लकादहन का वर्णन किया है (दे० ऊपर अनु० ५२९)।

४ सर्ग ४८ में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राक्षसो ने ब्रह्मपाश के अति-रिक्त अन्य बन्धनो को काम मे लाकर ब्रह्मपाश का प्रभाव नष्ट कर डाला था।

के वशज समझते हैं । उनमे लकादहन के विषय में निम्नलिखित कथा प्रचलित है।[1] जब हनुमान् लका आये थे रावण ने हनुमान् की पूंछ जलाने के लिए अपनी प्रजा के सब कपडे ले लिए थे और उस समय से रावण की प्रजा तथा उनके वशजो मे अपने शरीर को अच्छी तरह से ढंकने के लिए कपडो की कमी है।

(७) आनन्द रामायण (१, ६, १६२) मे सभवतः सबसे पहले इसका उल्लेख किया गया है कि हनुमान् ने तभी अपनी पूंछ बढाना बन्द किया था जब उनके सुनने मे आया कि राक्षस सीता के कपड़े भी लेने जा रहे है। **तोरवे रामायण** (५, ८), भावार्थ रामायण (५, ३३), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८, तथा सेरीराम मे भी इससे मिलता-जुलता वर्णन किया गया है।

(८) आनन्दरामायण (१, ६, १६५-१६६), तोरवे रामायण (५, ८), भावार्थ रामायण (५, १८) तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे **रावण की दाढ़ी** के जल जाने का प्रसग आया है। आनन्द रामायण की कथा इस प्रकार है। अपनी पूंछ मे आग लगाने के व्यर्थ प्रयत्न को देखकर हनुमान् ने कहा यदि रावण स्वय अपने मुँह से फूंक दे तो अग्नि प्रदीप्त हो सकती है। किन्तु ज्यो ही रावण ने फूँकना आरम्भ किया उसके दस सिरो के बालो तथा दाढी-मूँछ मे आग लग गई। इसे बुझाने के लिए रावण अपने बीस हाथो से अपने मुखो पर थप्पड मारने लगा, जिससे सभी राक्षस खिलखिलाकर हँस पड़े।

(९) अर्वाचीन रचनाओ मे लकादहन के समय **राक्षसों की दुर्दशा** का भी वर्णन किया गया है। आनन्द रामायण (१, ६, २०६-२११) मे रावण दस करोड राक्षसो को लेकर लड़ने निकला किन्तु हनुमान् ने लोहे के खम्भे से सब को मारा और अनन्तर करोडो को एक साथ पूँछ मे बाँध कर लीलापूर्वक रावण के सिर पर मारा जिससे रावण मूर्च्छित हो गया। उस अवसर पर **देवकन्याओ अथवा देवताओ की मुक्ति** का भी उल्लेख मिलता है, उदा० तत्वसग्रह रामायण (५, ९), विनयपत्रिका (३१, ३), हनुमान् बाहुक (६)। महावीरचरित (अक ७, ५) के अनुसार विभीषण ने रावणवध के बाद ही **"सुरलोकबन्दिस्त्रियः"** मुक्त कर दिया था। अभिनन्दनकृत रामचरित (सर्ग १६) मे इसका उल्लेख मिलता है कि हनुमान् ने लका मे सीता की खोज करते समय कारावास मे स्थित देवागनाओ का विलाप सुना था।[2]

---

१. रसेल ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग ४, पृ० ३२०।

२ रगनाथ रामायण (३, ११ और ३, २२) मे भी रावण के कारागार मे पडी हुई स्त्रियो का उल्लेख किया गया है। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड (सर्ग २४) मे रावण द्वारा मानव-देव-दानव-नाग-गधर्वादि कन्याओ का हरण वर्णित है।

गुणभद्र के उत्तरपुराण (६८, ५०८-५१५) के अनुसार हनुमान् के नेतृत्व मे वानर-सेना ने विभीषण की शरणागति के पश्चात् समुद्र पारकर अशोकवन को नष्ट किया तथा उसके रक्षको को मार डाला था।

(२) अशोकवन विध्वस के अनन्तर हनुमान् के विभिन्न युद्धो का कोई विशेष महत्वपूर्ण विकास नही हुआ है। आनन्दरामायण (१, ६, १५६); तोरवे रामायण (५, ६) तथा भावार्थ रामायण (५, १७ और ३२) के अनुसार ब्रह्मा ने हनुमान् से निवेदन किया कि तुम मेरे ब्रह्मास्त्र का मान रखो और उसमे बँधकर रावण के पास जाओ। दक्षिण भारत की एक कथा मे इससे मिलता-जुलता वर्णन मिलता है (पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)। एक अन्य कथा के अनुसार हनुमान् ने इन्द्रजित् के साथ युद्ध करते समय आहत होने का अभिनय किया था। वह निश्चेष्ट भूमि पर पड़े रहे जिससे राक्षसो ने आकर उन्हे बाँधा था। बाद मे वे हनुमान् को उठाकर ले जाने मे असमर्थ रहे, तब हनुमान् ने कहा कि यदि मेरे बन्धन कुछ ढीले किये जायँ तो मैं चल सकूँगा। इन्द्रजित् ने राक्षसो को वानर की पूँछ पकड़ने का आदेश दिया, किन्तु हनुमान् सब से पीछा छुड़ाकर अपने आप रावण से मिलने गये (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

(३) भावार्थ रामायण (५, १७ और ३३), दक्षिण भारत की एक राम-कथा (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १) तथा सेरी राम आदि रचनाओ के अनुसार हनुमान् रावण की सभा मे अपनी पूँछ का कुण्डल बनाकर रावण से ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार का वर्णन पहले पहल अगद के विषय मे किया गया था (दे० अनु० ५८५)।

(४) प्रायः समस्त कथाओ मे विभीषण के बीच-बचाव का उल्लेख है। सेरी-राम के अनुसार विभीषण ने रावण को एक भविष्यवाणी का स्मरण दिलाया जिसके अनुसार एक छोटे वानर की हत्या लंका के लिए अहितकर है।

(५) कुछ रामकथाओ मे हनुमान् स्वय सुझाव देते हैं कि उनकी पूँछ जलाई जाय। आनन्द रामायण (१,६, १७७-१८४) के अनुसार रावण ने हनुमान् की पूँछ काटकर फेंकने का आदेश दिया था किन्तु राक्षस के हथियार (कुल्हाडा, आरा आदि) इसमें असमर्थ सिद्ध हुए। तब रावण ने हनुमान् से पूछा कि तुम्हारी पूँछ नष्ट करने का क्या उपाय है और वानर ने उसे जलाने का परामर्श दिया। अनेक पाश्चात्य वृत्तान्त (न० १, ३, ८ और १३), भावार्थ रामायण (५, १८ और ३३), सेरीराम तथा रामकेर्ति आदि इसी प्रसग का उल्लेख करते हैं।

(६) हनुमान् की पूँछ के बढ़ जाने के विषय मे कृत्तिवास (५, २६) लिखते हैं कि वह पचास योजन लम्बी थी, उसे तीन लाख राक्षसो ने पकड़कर दबाया था और उसमे ३० मन कपडा लपेट दिया गया था। उराव नामक आदिवासी अपने को रावण

था। हनुमान् ने घर जाकर नया मार्ग [illegible] देखकर उसे खाना चाहा। मधुर दम्पति ने उसे भगाने की बड़ी कोशिश की किन्तु हनुमान् घोंसलों पर बैठकर तथा मधुों से [illegible] करके दोनों को तंग करता रहता था। अन्त में बूढ़े ने छिपकर हनुमान् की पूँछ में कपास बाँध दिया, उसकी स्त्री ने उस पर तेल डाला और आग लगा दी। हनुमान् अत्यन्त परेशान होकर इधर-उधर कूद दौड़ने लगा; इस प्रकार लङ्का पहुँच कर हनुमान् ने उसे भस्म कर डाला बाद में उसने अपनी पूँछ को किसी पेट में डुबा-कर बुझा लिया था।

ञ। हनुमान् का प्रत्यावर्तन

५५३ लङ्कादहन के वर्णन के बाद सुन्दरकाण्ड के केवल दो ही सर्ग प्रामाणिक हैं। सर्ग ५७ में हनुमान् के अपने साथियों के पास लौटने का वर्णन किया गया है। लङ्का की घटनाओं के विषय में हनुमान् केवल यही कहते हैं कि मैंने सीता को देखा है:

अशोकवनिकामध्ये दृष्टा सा जनकात्मजा ॥३८॥
रक्ष्यमाणा सुघोराभी राक्षसीभिरनिन्दिता ।
एकवेणीधरा बाला रामदर्शनलालसा ॥३९॥
उपवासपरिश्रान्ता मलिना जटिला कृशा ।

सर्ग ५८ में हनुमान् राम को सीता का सन्देश देकर अपनी लङ्कायात्रा का इस प्रकार वर्णन करते हैं—कुछ खोजकर मैंने सीता को रावण के यहाँ देखा है। वह राक्षसियों से घिरकर आपकी ही चिन्ता करती हैं। वह [illegible] समाचार पाकर प्रसन्न हुई तथा अभिज्ञान-स्वरूप उन्होंने चूड़ामणि के अतिरिक्त काक-वृत्तान्त तथा मैनसिल के तिलक के विषय में आपको स्मरण दिलाने को कहा तथा यह भी निवेदन किया कि मैं अब केवल एक महीने तक जीवित रह सकूँगी। अन्त में हनुमान् ने राम से यह अनुरोध किया कि समुद्र पार करने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जावें।

सुन्दरकाण्ड के अन्त में [illegible] सामग्री के पुनरावृत्ति के अतिरिक्त मधुवन-ध्वंस का वर्णन [illegible] तो है उसमें [illegible] का प्रस्ताव मिलता है। इस प्रस्ताव के विषय में पीछे विचार किया गया है (दे० अनु० ५११)। मधुवन-विध्वंस-वर्णन (सर्ग ६१-६४) पर कोई उल्लेखनीय विचार नहीं रहा है, अतः तत्सम्बन्धी सामग्री का विवरण अनावश्यक है।

५५४. परवर्ती रामकथा-साहित्य की [illegible] रचनाओं में हनुमान् के प्रत्यावर्तन के विषय में निम्नलिखित परिवर्तन किया गया है। आनन्दरामायण में हनुमान् कहता है [illegible] लङ्का में [illegible] हनुमान् को [illegible] दिया था जिसमें [illegible]

(१०) वाल्मीकि रामायण तथा परवर्ती कथाओ मे भी विभीषण के महल सुरक्षित रहने का उल्लेख है, सेरीराम के अनुसार केवल सीता का घर जलने से बच गया था। सीता के विषय मे हनुमान् की चिन्ता का प्रसग भी वाल्मीकि रामायण मे मिलता है किन्तु आनन्द रामायण (१, ६, २३१) के अनुसार हनुमान् को एक आकाशवाणी द्वारा सीता के कुशल-क्षेम का आश्वासन मिला था। भावार्थ रामायण (५, २०) मे वायु ने अपने पुत्र हनुमान् को सीता के विषय मे आश्वस्त किया था।

(११) वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने अपनी जलती हुई पूंछ को समुद्र मे डुबो कर बुझा लिया था। कृत्तिवास मे हनुमान् ने सीता के कहने पर उसे मुँह से बुझा कर अपना मुख जला दिया था। उन्होंने सीता से इसकी शिकायत करके कहा कि सब मेरी हँसी उडायेंगे। सीता ने उत्तर दिया—सभी कृष्णमुख बन जायेंगे। सताल आदिवासियो मे भी इस प्रकार की कथा मिलती है। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने व्याकुल होकर नारद से पूँछ को आग बुझाने का उपाय पूछा। नारद ने उत्तर दिया—क्या तुम अपने छोटे कूप का उपयोग नही जानते हो ? हनुमान् समझ गए, उन्होंने अपनी पूँछ को मुँह मे रख दिया और आग बुझ गई। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे प्रस्तुत प्रसंग का एक अन्य रूप मिलता है। सीता ने हनुमान् को जाते समय सावधान किया कि समुद्र के उस पार पहुँचने के पूर्व किसी भी तरह से मुडकर पीछे की ओर नही देखना चाहिए। हनुमान् को रास्ते मे ऐसा लगा कि प्रज्वलित लङ्का की आग धीरे-धीरे मेरे पास आ रही है, उन्होंने सिर घुमा कर देखा जिससे उनका मुँह जल गया।

अनेक रचनाओ मे हनुमान् के समुद्र मे अपनी पूंछ बुझाने के वृत्तान्त मे उनके पुत्र की उत्पत्ति का भी उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ६१५)।

(१२) सेरीराम के अनुसार रावण ने लङ्कादहन के पश्चात् स्वर्ग से एक महर्षि बुलाकर उनकी प्रार्थनाओं द्वारा लंका का जीर्णोद्धार किया था। बलरामदास रामायण मे यह माना गया है कि देवताओ ने विश्वकर्मा को भेज दिया था और उन्होंने एक ही रात मे लङ्का का पुनर्निर्माण किया था।

(१३) पउमचरिय (पर्व ५३) मे लकादहन का उल्लेख नही है। इसके अनुसार इन्द्रजित् हनुमान् को बाँधकर लाया था। रावण ने उनको नगर मे चारो ओर घुमाकर प्रजा को दिखलाने का आदेश दिया किन्तु हनुमान् अपने बन्धनो को तोडकर तथा लङ्का मे बहुत से महल गिरा कर राम के पास लौटे।

(१४) असुर नामक आदिवासी जाति (दे० अनु० २४७) मे लङ्कादहन विषयक निम्नलिखित कथा प्रचलित है। असुरवीर अपनी पत्नी के साथ लोहा गला रहा

ने ठीक समय पर पहुँचकर सुग्रीव को बचा लिया।[1]

५५५ वाल्मीकि रामायण के दो प्रक्षिप्त सर्गों के अनुसार हनुमान् तथा अंगद दोनों ने राक्षसों को हराकर सीता को राम के पास पहुँचाने का प्रस्ताव अपने साथियों के सामने रखा था किन्तु जाम्बवान ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा—एक तो हमें सीता का पता लगाने मात्र का कार्य सौंपा गया, दूसरे राम ने हम लोगों के सामने जो यह प्रतिज्ञा की है कि—"मैं सीता का उद्धार करूँगा", उस प्रतिज्ञा को हम मिथ्या नहीं कर सकते।

हनुमान् ने लङ्का में भी सीता से अपने साथ चलने का प्रस्ताव किया था। इस सामग्री के आधार पर कई रामकथाओं में माना गया है कि हनुमान् युद्ध के पूर्व ही सीता को राम के पास ले गये थे। उदाहरणार्थ उत्तर-पूर्व क्षेत्रों की आदिवासी कथा (अनु० २८८), पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ६, १० और १५ और सेरीराम की एक हस्त-प्रति (ज० म० ए० सो०, स्ट्रेट्स ब्राँच, भाग ५५, पृ० १-२४)। सिंहली रामकथा के अनुसार वालि ने हनुमान् का स्थान लेकर सीता को राम के पास पहुँचा दिया था। रामतापनीय उपनिषद् (८, २४) में सुग्रीव वानरों को सीता का पता लगाने के लिए भेजते समय सीता को ले आने का भी आदेश देते हैं।

---

1. भरत के विषय में भी इस प्रकार के वृत्तान्त मिलते हैं (दे० अनु० ६०६)।

के चरित का वर्णन था (१, ६. २८०-२८१) और जिसे हनुमान् ने बाद में राम को अर्पित किया (वही, ३०६)। भावार्थ रामायण में भी इस वक्ष-पत्र की चर्चा है; हनुमान् ने उसे जाम्बवान को पढ़ने के लिए दिया (५,२३) तथा बाद में लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार उसे सबों को सुनाया (सन्धान २६-३४)। मराठी रामविजय में इसी प्रसंग को दुहराया गया है।

सेरीराम के अनुसार राम ने लङ्कादहन के कारण हनुमान् की भर्त्सना की थी। इसका आधार संभवतः आनन्दरामायण में वर्णित हनुमान् के गर्व-निवारण की निम्नलिखित कथा है। समुद्र को पुनः पार करने के पश्चात् हनुमान् ने नीचे उतरकर एक मुनि को देखा तथा गर्वान्वित होकर उनसे कहा—मैं राम का कार्य करके आ रहा हूँ; मैं यहाँ पानी पीना चाहता हूँ। मुनि ने संकेत द्वारा जलाशय का मार्ग बतलाया। इस पर हनुमान् राम-मुद्रिका (जिसे सीता ने लौटाया था), सीता-चूड़ामणि तथा वक्षपत्र मुनि के पास रखकर जल पीने चले गये। इतने में एक वानर ने आकर राम की मुद्रिका मुनि के पास रखे हुए कमण्डलु में डाल दी। लौटने पर हनुमान् ने पूछा कि मुद्रिका कहाँ है? मुनि ने आँखों से कमण्डलु की ओर संकेत किया। हनुमान् ने कमण्डलु में हजारों मुद्रिकाएँ देखकर कहा—आप मुझे बताएँ कि मेरी लाई हुई मुद्रिका कौन है? मुनि ने उत्तर दिया—जब-जब हनुमान् ने लङ्का जाकर तथा सीता का पता लगाकर राममुद्रिका को मेरे पास छोड़ दिया है तब-तब वानरों ने इसे इस कमण्डलु में गिरा दिया है; इनमें से अपनी मुद्रिका खोज निकालो। हनुमान् ने पूछा कि यहाँ कितने राम आए हैं तथा मुनि के कहने पर मुद्रिकाओं को निकालकर गिनना आरम्भ कर दिया किन्तु उनका अन्त नहीं हुआ। तब हनुमान् ने सब को फिर कमण्डलु में भर दिया तथा यह सोचकर गर्वरहित हो गये कि मेरे जैसे सैकड़ों हनुमान् सीता का समाचार राम के पास ले जा चुके हैं तो मेरी कौन सी गिनती है—का गर्वनाश ने (१, ६. २८३-२९८)। किष्किन्धा में पहुँचकर हनुमान् ने राम को वक्षपत्र तथा सीता-चूड़ामणि अर्पित किया, काक-वृत्तान्त सुनाया तथा बाद में सलज्ज होकर मुनि द्वारा अपने गर्वनिवारण तथा मुद्रिका खो बैठने का वृत्तान्त भी कह दिया। उत्तर में राम ने मुस्कराकर कहा कि मैंने मुनि के रूप में यह कौतुक दिखलाया था—मयैव दर्शितं मार्गे कौतुकं मुनिरूपिणा (१, ६, ३१३)।

उदात्तराघव (अंक ४) में हनुमान् के प्रत्यावर्तन के विषय में राक्षसी माया का वृत्तान्त भी मिलता है। कथा इस प्रकार है—एक राक्षस हनुमान् का रूप धारण कर सुग्रीव के पास आया और यह समाचार लाया कि रावण ने सीता का वध किया है। सुग्रीव ने यह सुनकर चिता तैयार करने का आदेश दिया किन्तु वास्तविक हनुमान्

राम का मायामय शीर्ष—विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम के मायामय शीर्ष का सीता को दिखलाया जाना। सीता का विलाप तथा सरमा द्वारा रहस्योद्घाटन (सर्ग ३१-३३)। सरमा द्वारा सीता को रावण-सभा का समाचार मिलना (सर्ग ३४)। माल्यवान् का रावण को समझाना, अपशकुन होने पर भी रावण का दृढ निश्चय होकर नगर के प्रवेश-द्वारों की रक्षा की आज्ञा देना (सर्ग ३५-३६)।

लंका का अवरोध—सुवेल पर्वत से राम का लंका-दर्शन (सर्ग ३७-३६)। सुग्रीव-रावण-द्वन्द्व (सर्ग ४०)। लंकावरोध तथा अंगद का दूत-कार्य (सर्ग ४१)।

(२) युद्ध-प्रकरण (सर्ग ४२-११२)

शरपाश—रात्रि तक दोनों सेनाओं का युद्ध : अंगद द्वारा इंद्रजित् की पराजय। अदृश्य इन्द्रजित् द्वारा राम-लक्ष्मण का शरपाश में बंधन (सर्ग ४२-४५)। रावण का सीता को पुष्पक से भेजकर आहत राम-लक्ष्मण को दिखलाना। सीता-विलाप, त्रिजटा की सान्त्वना (सर्ग ४६-४८)। जगकर राम का लक्ष्मण के लिए विलाप। हनुमान् द्वारा विशल्या-ओषधि को लाने के लिए सुषेण का प्रस्ताव। गरुड का राम-लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ४६-५०)।

द्वन्द्व-युद्ध—धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र, अकंपन तथा प्रहस्त का वध। रावण-लक्ष्मण द्वन्द्व-युद्ध, लक्ष्मण का आहत होना, मुष्टिप्रहार से हनुमान् का रावण को मूर्छित करना। राम-रावण-युद्ध, रावण की पराजय और लज्जित होकर लौटना (सर्ग ५१-५६)।

कुम्भकर्ण-वध—कुम्भकर्ण का जागरण (सर्ग ६०), विभीषण द्वारा राम से कुंभकर्ण-निद्रा की कथा का उल्लेख (सर्ग ६१)। कुम्भकर्ण द्वारा रावण की भर्त्सना। कुम्भकर्ण-सुग्रीव-द्वन्द्व। राम द्वारा कुम्भकर्ण-वध। रावण-विलाप (सर्ग ६२-६८)।

द्वन्द्व-युद्ध—रावण के चार पुत्रों का (नरांतक, देवान्तक, त्रिशिर, अतिकाय) तथा दो भाइयों (महोदर महापार्श्व) का वध। रावण-विलाप, इन्द्रजित् का अदृश्य होकर युद्ध करना तथा राम और लक्ष्मण को व्यथित करना (सर्ग ६६-७३)।

लंकादहन—हनुमान् का ओषधिपर्वत लाकर आहतों तथा राम-लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ७४)। रात्रि में वानरों द्वारा लंकादहन (सर्ग ७५)। कम्पन, कुंभ, निकुम्भ तथा मकराक्ष का वध (सर्ग ७६-७६)।

इन्द्रजित् वध—यज्ञ करके इन्द्रजित् का युद्धारम्भ (सर्ग ८०)। मायामय सीता का वानर-सेना के सम्मुख वध। राम-विलाप तथा लक्ष्मण द्वारा सान्त्वना (सर्ग ८१-८३)। विभीषण द्वारा मायामय सीता का रहस्योद्घाटन तथा निकुंभिला में इन्द्रजित्-यज्ञ-ध्वंस का परामर्श, सेना सहित लक्ष्मण का यज्ञ-ध्वंस तथा इन्द्रजित्-वध करना

अध्याय १९

युद्धकाण्ड

१—वाल्मीकि रामायण का युद्धकाण्ड

५५६. क। युद्धकांड की कथावस्तु

(१) लंका का अभियान (सर्ग १-४१)

समुद्र की ओर प्रस्थान—समुद्र की बाधा के विचार से राम की निराशा तथा सुग्रीव द्वारा सेतुबंध का प्रस्ताव (सर्ग १-२)। हनुमान् द्वारा लंका का वर्णन (सर्ग ३)। समुद्र तक पहुँचना तथा राम का विरहवर्णन (सर्ग ४-५)।

रावण-सभा—सभासदो द्वारा रावण को विजय का आश्वासन तथा सीता को लौटा देने की विभीषण की मन्त्रणा (सर्ग ६-९)। दूसरे दिन विभीषण द्वारा चेतावनी, कुंभकर्ण का जगकर रावण को दोष देना लेकिन सहायता की प्रतिज्ञा करना (सर्ग १०-१२)। पुंजिकस्थला के कारण पितामह के शाप का रावण द्वारा उल्लेख (सर्ग १३)। इन्द्रजित् तथा रावण द्वारा निन्दित होकर विभीषण का रावण को छोड़कर जाना (सर्ग १४-१६)।

विभीषण की शरणागति—सुग्रीवादि के विरोध करने पर भी हनुमान् के आग्रह के कारण विभीषण को शरण मिलना, राम द्वारा विभीषण का अभिषेक, प्रायोपवेशन द्वारा समुद्र को विवश करने की विभीषण की मन्त्रणा (सर्ग १७-१९)। शार्दूल द्वारा रावण को राम-सेना की सूचना मिलना, सुग्रीव को अपनी ओर मिलाने के लिए रावण द्वारा शुक का भेजा जाना, शुक का बंधन और राम द्वारा मुक्ति (सर्ग २०)।

सेतुबंध—तीन दिन के प्रायोपवेशन के बाद राम का समुद्र पर ब्रह्मास्त्र प्रयोग के लिए तत्पर होना। समुद्र की विनय तथा द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वंस। सागर के कथन से नल द्वारा सेतुबंध और सेना का संतरण (सर्ग २१-२२)। लंका मे अपशकुन तथा शुक का रावण को समाचार देना (सर्ग २३-२४)।

शुक-सारण-शार्दूल—रावण-गुप्तचर शुक और सारण का विभीषण द्वारा बंधन और राम द्वारा मुक्ति। उनका रावण को समाचार देना। शार्दूल का रावण द्वारा भेजा जाना, उसका बंधन, मुक्ति और समाचार देना (सर्ग २५-३०)।

सर्ग २० और २४—गुप्तचरो, शार्दूल तथा शुक का वृत्तान्त जो २५ वें सर्ग के वृत्तान्त के अनुकरण पर लिखा गया है। ये सर्ग अन्य पाठो मे नही मिलते हैं।

सर्ग २२, २५-४०—द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वस। यह वृत्तान्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मे भी मिलता है (दे० प० रा० ५, ८६)। शेष निम्नलिखित सामग्री गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय दोनो पाठो मे नही मिलती है।

सर्ग २३—युद्ध के पूर्व लका मे अपशकुन (निमित्तानि)।

सर्ग ४० तथा ४१, १-१०—सुग्रीव-रावण-द्वन्द्व।

सर्ग ५३-५४—अगद-वज्रदष्ट्र-युद्ध।

सर्ग ६०, ८-१२—रावण के विरुद्ध अनारण्य, वेदवती, उमा, नन्दीश्वर, रभा तथा पुजिकस्थला के शापो का उल्लेख।

सर्ग १०५—अगस्त्य का राम को आदित्यहृदय स्तोत्र सिखाना।

सर्ग १२३, २०—सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा का निर्देश।

सर्ग १२३, २३-३८—सीता के अनुरोध से किष्किधा मे वानर-पत्नियो को पुष्पक मे साथ लेना।

५५८. उपर्युक्त सामग्री से स्पष्ट है कि उदीच्य पाठ से अलग हो जाने के पश्चात् दाक्षिणात्य पाठ मे पर्याप्त मात्रा मे प्रक्षेप जोड दिये गये हैं। दूसरी ओर अन्य पाठो मे बहुत सी सामग्री मिलती है जिसका उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ मे नही किया गया है। निम्नलिखित वृत्तान्त केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलते हैं.

(१) निकषा वाक्यम्—निकषा अपने पुत्र विभीषण से अनुरोध करती है कि वह रावण को समझावे, दे० अनु० ५६८ (४)।

(२) रावण-सभा—केवल एक बार होती है लेकिन इसके वर्णन मे गौडीय पाठ मे सात नये सर्ग जोड दिये गये है, दे० अनु० ५६८ (५)।

(३) दशरथ-सागर की मैत्री का वर्णन—(दे० गौ० रा० ५, ६४, २१-२२ तथा प० रा० ५, ८६, ४३-६६)।

(४) वालि-सुग्रीव की जन्मकथा—दाक्षिणात्य पाठ मे यह वृत्तान्त उत्तरकाण्ड के ३७ वे सर्ग के बाद के प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग मे मिलता है (दे० गौ० रा० ६, ४, ३०-५० और प० रा० ६, सर्ग ४)।

(५) रावण-मंदोदरी-संवाद—प्रहस्त-वध के पश्चात् मन्दोदरी रावण से अनुरोध करती है कि वह युद्ध न करे क्योकि राम मनुष्य नही हैं (दे० गौ० रा० ६, ३३ तथा प० रा० ६, ३५)।

(सर्ग ८४-९०)। सुषेण द्वारा लक्ष्मण की चिकित्सा (सर्ग ९१)। रावण-विलाप, सुपार्श्व का रावण को सीता-वध से रोकना (सर्ग ९२)।

विभिन्न युद्ध—विरूपाक्ष, महोदर तथा महापार्श्व का वध (सर्ग ९३-९८), राक्षसियो का विलाप (सर्ग ९४)।

रावण वध—रावण द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगना तथा हनुमान् द्वारा महोदय पर्वत से ओषधि लाना (सर्ग ९९-१०१)। इन्द्ररथ का मातलि सहित भेजा जाना, राम-रावण-युद्ध का आरम्भ (सर्ग १०२-१०४)। अगस्त्य का राम को आदित्य-हृदय नामक स्तोत्र सिखाना (सर्ग १०५), सात दिन के युद्ध के बाद ब्रह्मास्त्र से रावण वध (सर्ग १०६-१०८)। विभीषणादि का विलाप, रावण की अन्त्येष्टि (सर्ग १०९-१११)। विभीषण का अभिषेक तथा राम का सीता को बुला भेजना (सर्ग ११२)।

(३) प्रत्यावर्तन (सर्ग ११३-१२८)।

अग्निपरीक्षा—राम का सीता को अस्वीकार करना (सर्ग ११३-११५)। लक्ष्मण द्वारा निर्मित चिता मे सीता का प्रवेश (सर्ग ११६)। देवताओ द्वारा राम की विष्णुरूप मे पूजा (सर्ग ११७)। अग्नि द्वारा राम को सीता का समर्पण (सर्ग ११८)। शिव द्वारा प्रशसा, दशरथ की शिक्षा। मृत वानरो का इन्द्र द्वारा जीवित किया जाना। विभीषण का यात्रा के लिए पुष्पक प्रस्तुत करना। वानरो को दान दिया जाना (११९-१२२)।

वापसी यात्रा—आकाश मार्ग से राम का विभिन्न स्थानो का वर्णन करना। किष्किधा मे वानर-पत्नियों को साथ लेना। भरद्वाज से भेट (सर्ग १२३-१२४)। हनुमान् का गुह और भरत को आगमन का समाचार देना (सर्ग १२५-१२६)।

अयोध्या-प्रवेश—अयोध्यावासियो सहित भरत और शत्रुघ्न का राम से मिलना, नन्दिग्राम मे भरत का राम को शासन सौपना; पुष्पक का कुबेर के पास लौटाया जाना (सर्ग १२७)। रामाभिषेक, राम-राज्य-वर्णन, फलश्रुति (सग १२८)।

ख। युद्धकांड का विश्लेषण

तीन पाठो मे विभिन्नता

५५७ अन्य काडो की अपेक्षा युद्धकांड के तीनो पाठो मे कही अधिक अन्तर पाया जाता है। दाक्षिणात्य पाठ की निम्नलिखित सामग्री का गौडीय पाठ मे नितान्त अभाव है :

सर्ग १०-१५—रावण की दूसरी सभा की घटनाओ का वर्णन; दे० अनु० ५६८ (३), इसकी कुछ सामग्री (अर्थात् सर्ग १०, १४ और १५) पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलती है (दे० प० रा० ५, सर्ग ७६, ८७ और ८६)।

१५ और २० (दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलते हैं), सर्ग २१ (अनु० ५७४)। अत युद्धकाण्ड के प्रारम्भ की प्रामाणिक सामग्री इस प्रकार है .

सर्ग ४-५—वानर-सेना का अभियान, राम का विलाप।

सर्ग ६ और १६—विभीषण की चेतावनी, रावण द्वारा उसका अपमान तथा विभीषण का लका से प्रस्थान।

सर्ग १७-१६—विभीषण की शरणागति और अभिषेक। इसके सबध मे सदेह है (दे० अनु० ५३८)।

सर्ग २२ (अशत.)—सेतुबन्ध। इसकी प्रामाणिकता के सबध मे आगे (अनु० ५७४) विचार किया जायेगा।

५६२ आदि रामायण मे सेतु-विषयक वृत्तान्त के पश्चात् अगद के दूतकार्य (सर्ग ४१) का वर्णन आता था, यह डॉ० याकोबी[1] का अनुमान है; इसके अनुसार सर्ग २३-४० प्रक्षिप्त है। इस अनुमान का कारण यह है कि सर्ग २३ के कुछ श्लोक (२-१३) सर्ग ४१ मे दुहराये गये है (दे० ४१, ११-२२), यदि दोनो के बीच की सामग्री हटा दी जाय तो अधिकारिक कथावस्तु के किसी आवश्यक अश का अभाव नही परिलक्षित होगा। इस अश मे बालकाड मे वर्णित वानरो की उत्पत्ति का निर्देश मिलता है (२८, ५, और ३०, २७), प्रामाणिक सर्गों मे बालकाड की सामग्री का उल्लेख नही होता। इस प्रक्षिप्त अश की मुख्य कथावस्तु इस प्रकार है—गुप्तचरो की कथाएँ (दे० अनु० ५८२), राम के मायाशीर्ष का वृतान्त (दे० अनु० ५८३) तथा सुवेल पर्वत के चढाव का प्रसग (दे० अनु० ५८४)।

५६३ युद्ध प्रकरण (सर्ग ४२-११२) मे इतनी पुनरावृत्ति और नीरसता पाई जाती है कि यह समस्त सामग्री वाल्मीकि जैसे महान् कवि की रचना हो ही नही सकती। परस्पर विरोधी सामग्री के तीन उदाहरण यहाँ पर पर्याप्त होगे।

सर्ग ५० मे गरुड के आगमन का वर्णन किया गया है, राम-लक्ष्मण मूर्छित होकर पडे हुए है और गरुड के आने पर नागपाश से मुक्त हो जाते हैं। किन्तु सर्ग ४६ मे शर-पाश-बद्ध राम के जगने का उल्लेख हो चुका था, अत. सर्ग ५० का अनावश्यक वृत्तान्त बाद का प्रक्षेप सिद्ध हो जाता है।

सर्ग ५६ मे अकम्पन तथा नरातक दोनो को जीवित माना गया है किन्तु उनके वध का उल्लेख क्रमश. सर्ग ५६ तथा सर्ग ५८ मे हो चुका है। इसके अतिरिक्त इस सर्ग मे राम-रावण-युद्ध का वर्णन है यद्यपि आगे चलकर राम के प्रथम बार रावण से युद्ध करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया (सर्ग १००, ४६-५२)। वास्तव मे लक्ष्मण के

१. दे० वही पृ० ४३।

(६) **नारद-कुम्भकर्ण-संवाद**—नारद ने कुम्भकर्ण से विष्णु द्वारा रावण-वध का रहस्य प्रकट किया था। नारद के इस कथन का उल्लेख कर कुम्भकर्ण युद्ध न करने का रावण से अनुरोध करता है। रावण विष्णु द्वारा अपना वध तथा फलस्वरूप परम पद प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करता है (दे० गौ० रा० सर्ग ४०-४१ तथा प० रा० सर्ग ४१-४२)।

(७) **कालनेमि-वृत्तान्त**—हिमालय-यात्रा के वर्णन के अन्तर्गत हनुमान् द्वारा कालनेमि-वध, गन्धर्वो से युद्ध तथा रावण के भेजे हुए राक्षसो का वध (दे० गौ० रा० सर्ग ८२, १४२ आदि, सर्ग ८३ और ८४, प० रा० सर्ग ८१)।

५५९ दो वृत्तान्त केवल गौडीय पाठ मे ही पाये जाते हैं—

(१) **विभीषण की कैलास-यात्रा**—दे० अनु० ५६८ (६)।

(२) **हनुमान्-भरत-संवाद**—दे० अनु० ५८८।

५६०. अन्त मे उस सामग्री का उल्लेख करता है जो केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ मे मिलती है—

(१) **विभीषण-निकषा-संवाद**—दे० अनु० ५६८ (६)।

(२) समुद्र का राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना। रावण के मन्त्रियो का रावण को विजय का आश्वासन देना (दे० प० रा० ५, सर्ग ९९ और १००)।

(३) **नारद-वाक्य**—नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना (दे० प० रा० ६, २७, ७-४१)।

(४) **कुम्भकर्ण-वाक्य**—रणभूमि मे विभीषण से मिलकर कुम्भकर्ण राम की शरण लेने की उसकी दूरदर्शिता की प्रशसा करता है (दे० प० रा० ६, ४६, ८२-९१)।

(५) **केश-ग्रहण**—विभीषण के कहने पर वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँच कर उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ हैं। इस पर अगद मन्दोदरी के केशो को खीच कर उसे रावण के पास ले आता है, जिससे रावण उत्तेजित हो जाता है और फलस्वरूप उसका यज्ञ समाप्त नही हो पाता है (दे० प० रा० ६, ८२ और अनु० ५९७)।

प्रक्षेप

५६१. तीन पाठो की उपर्युक्त विभिन्नता से स्पष्ट है कि गायको ने युद्धकाड का कलेवर बढाने मे सकोच नही किया है। प्रारम्भिक सर्गो मे मे निम्नलिखित सर्ग प्रक्षिप्त प्रतीत होते है, सर्ग १-३ (अनु० ५९७), सर्ग ६-८ (अनु० ५९८), सर्ग १०-

५६५. अग्निपरीक्षा (सर्ग ११४-१२०)। सीता की अग्नि-परीक्षा के प्रक्षिप्त होने मे बहुत कम सदेह है।[1] इस प्रसग मे सीता के प्रति राम के प्रेम मे जो सहसा परिवर्तन दिखाया गया है वह अप्रत्याशित ही नही सर्वथा अस्वाभाविक भी है। सीता-हरण के बाद राम के विरह का बहुत से सर्गो मे वर्णन किया गया है, युद्धकाण्ड के प्रारम्भ मे राम स्वय कहते है कि मेरा विरह-जनित शोक दिनोदिन बढता जाता है

शोकश्च किल कालेन गच्छता ह्यपगच्छति।
मम चापश्यत कान्तामहन्यहनि वर्धते ॥४॥ (सर्ग ५)

लकावरोध के बाद भी सीता के लिए राम की अभिलाषा का उल्लेख किया गया है . जगाम मनसा सीतां दूयमानेन चेतसा (४२, ७)। इन्द्रजित् द्वारा माया-सीता के वध का समाचार सुनकर राम मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडे

तस्य तद्वचन श्रुत्वा राघव. शोकमूर्च्छितः।
निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥१०॥ सर्ग (८३)

इससे स्पष्ट है कि सीता के प्रति राम का प्रेम अपरिवर्तित बना हुआ था, किन्तु यह सब होते हुए भी रावण-वध के पश्चात् राम सीता को देखकर उनसे कहते हैं कि मैं अपने शत्रु के अपमान का प्रतिकार कर चुका हूँ, मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नही रहा, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव अथवा विभीषण किसी को भी पति के रूप मे चुन सकती हो, मुझे तुम्हारे चरित्र पर सदेह है। अग्निपरीक्षा के बाद राम अवश्य स्वीकार करते हैं कि मैंने तो तुम पर सदेह नही किया किन्तु जनता की दृष्टि से तुम्हारे इस शुद्धीकरण की आवश्यकता थी। इस प्रकार का दिखावा समस्त मूल वाल्मीकि रामायण की भावधारा के विरुद्ध है और अवतारवाद स्वीकार होने के पश्चात् ही ऐसा सभव था, परवर्ती साहित्य मे इस पर बारबार बल दिया जाता है कि राम को वास्तविक दु ख नही है, वह केवल मनुष्य-चरित करते हैं। अत आश्चर्य नही होना चाहिए कि इस प्रसग मे राम तथा सीता दोनो के अवतार होने का उल्लेख है। ब्रह्मा आदि देवता प्रकट होकर राम की विष्णु के रूप मे स्तुति करते हैं तथा सीता को लक्ष्मी से अभिन्न मानते है (११७, २७)। यह वाल्मीकि रामायण का एकमात्र स्थल है, जहाँ सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है (दे० अनु० ३६४)।

उपर्युक्त तर्क के अतिरिक्त यह भी ध्यान देने योग्य है कि युद्धकाण्ड के अन्त मे दो बार समस्त रामकथा का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है (सर्ग १२४ और १२६) किन्तु अग्निपरीक्षा का उल्लेख नही होता। बालकाड के प्रारम्भ की दोनो अनुक्रमणिकाओ

१. दे० ए० वेबर, आन दि रामायण, पृ० ३५। डब्लू० प्रिंस, याकोबी मेमोरियल वोल्युम, पृ० २०८।

शक्ति से आहत होने का जो वर्णन इस सर्ग मे किया गया है, वह सर्ग १०० का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है, अत सर्ग ५६ की प्रक्षिप्तता असदिग्ध है।

इसी प्रकार सर्ग ६६-७० को भी वाद का प्रक्षेप मानना चाहिए। यत्रतत्र इन्द्रवज्रा छन्दो के प्रयोग के अतिरिक्त इन सर्गो की कथावस्तु इन्हे प्रक्षिप्त ठहराती है, इनमे दो राक्षसो का वध वर्णित है जो पहले ही मारे जा चुके है—त्रिशिरा (३, २७) और नरातक (६, ५८, २०) तथा दो अन्य राक्षसो के मरने का उल्लेख है जिनके वध का वर्णन वाद मे फिर किया गया है—महोदर (६, ६७) और महापार्श्व (६, ६८)।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इन्द्रजित्-वध के वाद इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है कि उस समय तक युद्ध केवल तीन दिन से चल रहा है (दे० ६१, १६)। रावण-वध के लिये एक दिन और रखने पर यह अनुमान किया जा सकता है कि आदि रामायण मे समस्त युद्ध का वर्णन इस प्रकार विभक्त किया गया था :

१ला दिन—सामूहिक युद्ध और नागपाश का प्रसग।
२रा दिन—कुभकर्ण का वध।
३रा दिन—इन्द्रजित् का वध।
४था दिन—रावण का वध।

युद्धकाण्ड के समस्त प्रक्षिप्त सर्गो का ठीक-ठीक पता लगाना असभव प्रतीत होता है। कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित तीन प्रक्षिप्त प्रसग अपेक्षाकृत अधिक महत्व रखते हैं।

५६४. **हनुमान् की हिमालय-यात्रा** (सर्ग ७४ और सर्ग १०१)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् की इस यात्रा का दो वार वर्णन किया गया है। इस प्रसग के प्रक्षिप्त होने का सवसे महत्वपूर्ण तर्क हनुमान् के समुद्र-लघन का वर्णन है (दे० रा० ५, १)। हिमालय की यात्रा इस लघन से कही अधिक असाधारण है, फिर भी इस कार्य की कठिनाई का कुछ भी वर्णन नही किया गया है। यदि समुद्र-लघन तथा हिमालय-यात्रा का वर्णन दोनो एक के ही द्वारा रचित होते तो हिमालय-यात्रा को अधिक महत्व दिया जाता। महाभारत के रामोपाख्यान मे भी हनुमान् की हिमालय-यात्रा का उल्लेख नही है। सर्ग ७४ मे त्रिष्टुभ छन्दो का वाहुल्य भी प्रामाणिकता के विपय मे सन्देह उत्पन्न करता है। सर्ग १०१ को हटाने से सर्ग १०० सुगमता से सर्ग १०२ से मेल खाता है।[1] इसके अतिरिक्त सर्ग १०० के कुछ श्लोक सर्ग १०२ मे दुहराये गये हैं, इसमे भी सर्ग १०० के प्रक्षिप्त होने का निर्देश देखा जा सकता है।

---

१. १००, ५५ के वाद १० वाँ सर्ग आना चाहिए। दे० एच० याकोवी : वही, पृ० ४५।

और २०)। इस सर्ग मे बहुत-से श्लोक बाद मे जोडे गये है। बडौदा के सस्करण में श्लोक १८ प्रक्षिप्त माना गया है। युद्धकाड के अन्तिम सर्गो की अतरग परीक्षा से प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे वापसी यात्रा के प्रसग मे पुष्पक का कोई उल्लेख नही था। सर्ग १२३ के अन्त मे पुष्पक के अयोध्या के पास पहुँचने का उल्लेख किया गया है किन्तु अगले सर्ग १२४ मे वनवास की समाप्ति पर राम के भरद्वाज-आश्रम में पहुँचने का वर्णन किया गया है। लका मे राम ने विभीषण से अयोध्या के दुर्गम मार्ग का उल्लेख किया था—**अयोध्यां गच्छतो ह्येष पन्थाः परमदुर्गमः** (१२१, ७), और भरद्वाज-आश्रम मे राम ने मुनि से यह वरदान माँग लिया कि अयोध्या के मार्ग मे सभी वृक्ष अकाल मे ही फलदार हो—**अकालफलिनो वृक्षाः**।[1] इसके अतिरिक्त हनुमान् से समाचार प्राप्त करने के पश्चात् जब अयोध्यावासी राम के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तब वानर-सेना द्वारा गोमती नदी के पार करने का तथा उनके द्वारा उडाई हुई धूल का उल्लेख किया गया है :

मन्ये वानरसेना सा नदीं तरति गोमतीम् ।
रजोवर्षं समुद्भूतं पश्य सालवनं प्रति ॥२८॥ (सर्ग १२७)

इन उद्धरणो के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि आदि रामायण मे राम स्थल-मार्ग से ही अयोध्या लौटे थे, अत- युद्धकाण्ड के अन्त मे पुष्पक-विषयक सामग्री को, विशेषकर सर्ग १२३ को, प्रक्षिप्त माना जाना चाहिए।[2]

२—युद्धकाण्ड का विकास

५६७ वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री मे आगे

---

१ दे० १२४, १६। सर्ग १२४ और १२५ मे प्रत्यावर्तन के वर्णन की प्राचीनतम सामग्री सुरक्षित है। सर्ग १२५ के प्रारम्भ मे पुष्पक का जो उल्लेख है वह गौडीय पाठ के समानान्तर सर्ग १०६ मे नही मिलता।

२ महानाटक तथा कुछ अन्य रचनाओ मे राम की पैदल-यात्रा का वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६०६)। प्रचलित रामायण के अनुसार राम ने अयोध्या पहुँचकर पुष्पक को वैश्रवण के पास भेज दिया है (दे० ६, १२७)। बाद मे पुष्पक राम के पास लौटा किन्तु राम ने उसे यह कहकर फिर कुबेर के पास भेज दिया कि स्मरण किये जाने पर मेरे पास आना (दे० ७, ४१)। शम्बूक-वध के अवसर पर राम ने पुष्पक को बुलाया (दे० अनु० ६२८)। रावण ने वैश्रवण को हराकर पुष्पक प्राप्त किया था (दे० अनु० ६५१)। आनन्द रामायण (१, १२, १६१) के अनुसार राम ने पुष्पक को आदेश दिया कि वह सुग्रीव आदि को उनके स्थान पर पहुँचा दे।

(सर्ग १ और ३) का प्रामाणिक सस्करण अग्निपरीक्षा के विषय मे मौन है।[1] यही नही, उत्तरकाड भी अग्निपरीक्षा के विषय मे कुछ नही कहता, दो स्थलो पर राम सीता की निर्दोषता के प्रमाण का उल्लेख करते हैं। प्रथम बार सीता-त्याग के समय वह केवल देवताओ के साक्ष्य की चर्चा करते हैं,[2] दूसरी बार वह वाल्मीकि से कहते है कि मैंने लका-निवास के बाद सीता को तभी ग्रहण किया जब उन्होने अपने सतीत्व की शपथ खायी थी :

प्रत्ययश्च पुरा वृत्तो वैदेह्याः सुरसंनिधौ।
शपथश्च कृतस्तत्र तेन वेश्म प्रवेशिता ॥३॥

(सर्ग ६७)

यदि उस सर्ग के रचनाकाल मे अग्नि-परीक्षा का वृत्तान्त प्रचलित होता तो यहाँ पर राम द्वारा अवश्य ही सीता के सतीत्व के सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण का उल्लेख हुआ होता। अतः यह मानना पडेगा कि उत्तरकाड की आधिकारिक कथावस्तु के लिपिबद्ध होने के पश्चात् ही अग्निपरीक्षा विषयक प्रक्षेप युद्धकाड का अश बन गया है।[3]

महाभारत के रामोपाख्यान से भी हमारे निर्णय की पुष्टि होती है, रामायण के इस प्राचीनतम सक्षेप मे कही भी अग्निपरीक्षा का निर्देश मात्र भी नही मिलता (दे० अनु० ६०१)। अग्नि-परीक्षा के बाद के दो सर्ग (११६-१२०) भी अनावश्यक है और प्रायः प्रक्षिप्त माने जाते है।[4] इनमे शिव राम की स्तुति करते है, दशरथ दिखाई देते हैं तथा इन्द्र राम का निवेदन स्वीकार कर मृत वानर-सैनिको को जीवित कर देते हैं।

५६६ पुष्पक मे अयोध्या की यात्रा (सर्ग १२३)। यदि आदि रामायण के रचनाकाल मे यह मानी हुई बात होती कि रावण के पास पुष्पक है तो सीताहरण के समय अवश्य ही रावण द्वारा इसके उपयोग का वर्णन किया गया होता किन्तु अरण्य-कांड में कही भी पुष्पक का उल्लेख नही मिलता (दे० अनु० ४६२)। सुन्दरकाण्ड के पुष्पक-वर्णन विषयक सर्ग ७ और ८ भी प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५३०)। त्रिजटा-स्वप्न के विवरण (किष्किन्धा कांड, सर्ग २७) मे पुष्पक का दो बार उल्लेख है (श्लोक १८

---

१ दे० जी० एच० भट्ट ज० ऑ० इ०, भाग ५, पृ० २६२।

२ दे० गौ० रा० ७, ४८, ६; प० रा० ७, ४७, ७। दाक्षिणात्य पाठ के समानान्तर स्थल पर अग्निपरीक्षा का उल्लेख है (७, ४५, ७), जो अन्य पाठो मे नही मिलता।

३ दे० नीलमाधव सेन। ज० ऑ० इ०, भाग १, पृ० २०६।

४ दे० महाराष्ट्रीय - श्री रामायण समालोचन, भाग १, पृ० २३६।

वसुदेवहिंडि (सातवी श० ई०) मे माना गया है कि भरत ने सुग्रीव द्वारा युद्ध का समाचार पाकर एक चतुरगिनी सेना भेज दी थी जो समय पर वानर-सेना के साथ समुद्रतट पर पहुँची थी। पउमचरियं (पर्व ५५) तथा अन्य जैन रामकथाओ मे सीता का भाई भामण्डल अपनी सेना के साथ राम की सहायता करने आता है। गुणभद्र के उत्तरपुराण मे राम अपनी ही सेना तथा वानर-सेना दोनो के साथ लका पर आक्रमण करते है। सम्बूरान की सेना का उल्लेख अनु० ५२४ मे हो चुका है।

ख । विभीषण-चरित

५६८ वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग मे सेतु-निर्माण से पहले विभीषण का उल्लेख नही है तथा समस्त युद्ध-प्रकरण के विषय मे एक ही श्लोक मिलता है :

समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत् ॥ ६५॥
तेन गत्वा पुरीं लकां हत्वा रावणमाहवे ।
अभ्यषिचत्स लंकायां राक्षेन्द्रं विभीषणम् ॥ ६६॥
(बडौदा सस्करण)

द्वितीय अनुक्रमणिका मे विभीषण का उल्लेख सेतु-निर्माण तथा लकावरोध के अनन्तर रखा गया है :

सगमं च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम् ॥ २४ ॥
प्रतार च समुद्रस्य रात्रौ लकावरोधनम् ।
विभीषणेन संसर्गं वधोपायनिवेदनम् ॥ २५॥
(वालकाण्ड, सर्ग ३ । वडौदा सस्करण)

अत. यह अनुमान निराधार नही है कि विभीषण-चरित सम्बन्धी सामग्री अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और सम्भवतः इस कारण तीनो पाठो की तत्सम्बन्धी सामग्री मे इतनी विभिन्नता पायी जाती है।

सकल्प करते है (दे० ६, १६)। साकेत (सर्ग १२) मे भरत-हनुमान्-सवाद के पश्चात् भरत के आदेश पर अयोध्यावासियो की रणसज्जा का विशद वर्णन किया गया है, वसिष्ठ ने राम-विजय का आश्वासन देकर उनको जाने से रोक लिया तथा सबो को दूर-दृष्टि दिलाकर लका की घटनाओ का साक्षी बनाया। आनद रामायण (१, ११, ७२) मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि हनुमान् के चले जाने के बाद भरत ने राजाओ को बुलाकर राम की सहायता करने जाने का निश्चय किया था। बलरामदास के रामायण मे बहुत से राजा भरत के निमन्त्रण पर राम की सहायता करने के लिए अपनी सेना के साथ अयोध्या मे एकत्र हो जाते हैं।

चलकर वहुत कुछ परिवर्द्धन किया गया है तथा सर्वथा नवीन सामग्री भी जोड दी गई है। फिर भी आधिकारिक कथावस्तु का कोई विकास नही हुआ है। अधिकाश परिवर्द्धन पुनरावृत्ति मात्र ही है और इसमे वहुत उपेक्ष्य सामग्री भी मिलती है। अतः यहाँ पर कुछ अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण अथवा रोचक वृत्तान्तो का कथानक के क्रमानुसार उल्लेख अथवा निरूपण किया जाता है। अन्त मे सर्वथा नवीन सामग्री प्रस्तुत की गई है (अनु० ६११-६१५)।

क। वानर-सेना का अभियान

युद्ध-काण्ड के प्रारम्भ मे राम हनुमान् की प्रशंसा करते हुए लका-दहन का उल्लेख करते है तथा समुद्र के कारण चिन्तित हो जाते है (सर्ग १)। सुग्रीव राम को विजय का आश्वासन देकर सेतु-निर्माण का आयोजन करने का निवेदन प्रस्तुत करता है (सर्ग २)। राम से पूछे जाने पर हनुमान् लका-दुर्ग तथा राक्षस-सेना की शक्ति का वर्णन करते हुए फिर लंकादहन की ओर सकेत करते है (सर्ग ३)। इस सामग्री मे लकादहन तथा सेतु-निर्माण का जो उल्लेख मिलता है, उससे अनुमान किया जा सकता है कि ये तीनो सर्ग वाद के प्रक्षेप है। अगले सर्ग से स्पष्ट है कि सेतु-निर्माण का अव तक निश्चय नही हुआ था क्योकि राम ने समुद्र के तट पर पहुँचकर कहा कि अव हमें समुद्र पार करने के उपाय पर परामर्श करना चाहिए—**संप्राप्तो मंत्रकालो नः सागरस्येह लंघने** (४, १०१)। इस सर्ग मे सेना-अभियान का वर्णन किया गया है—राम तथा लक्ष्मण ने क्रमशः हनुमान् तथा अगद पर चढकर वानर-सेना के मध्य में समुद्र की ओर प्रस्थान किया। तट पर पहुँच कर वानर-सेना ने वृक्षो के नीचे पड़ाव डाला (सर्ग ४)। अनन्तर सीता-विरह से व्याकुल राम के विलाप का वर्णन किया गया है (सर्ग ५)।

परवर्ती साहित्य मे वानर-सेना के अभियान के प्रसग मे अन्य सेनाओ का भी उल्लेख किया गया है। वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के अनुसार भरत ने सीताहरण का समाचार सुनकर मव राजाओ को वुलाया था (सर्ग ३८, २४-२५) और वे अपनी सेनाओ के साथ अयोध्या आए भी थे किन्तु युद्ध मे भाग न ले सके—**भरतेन वयं पश्चात्समानीता निरर्थकम्** (३९, ४)। गौडीय पाठ के अनुसार हनुमान् ने अपनी हिमालय-यात्रा के समय भरत को युद्ध का समाचार दिया था जिससे भरत काशेय, जनक, कैकय आदि राजाओ को वुलाकर युद्ध की तैयरियाँ करने लगे थे—**समुद्योगं कर्तुमारभत्**।[1]

१. दे० गौ० रा० ६, ८२, १३६। **प्रतिमानाटक** मे भरत सुमन्त्र से सीताहरण का समाचार सुनकर अन्य राजाओ के साथ लका पर आक्रमण करने का

की शरणागति के विषय मे प्रक्षिप्त सामग्री पर्याप्त मात्रा मे विद्यमान है। दाक्षिणात्य पाठ के छः सर्ग गौडीय पाठ मे नही मिलते है, इनकी कथावस्तु इस प्रकार है—रावण की सभा के दूसरे दिन विभीषण ने रावण के पास जाकर अपनी चेतावनी दुहराई (सर्ग १०)। अनन्तर रावण की द्वितीय सभा[1] का वर्णन किया गया है। कुम्भकर्ण ने सीताहरण के कारण रावण की भर्त्सना करने के बाद युद्ध मे सहायता देने की प्रतिज्ञा की, सीता के साथ बलप्रयोग करने के महापार्श्व के सुझाव का उत्तर देते हुये रावण ने ब्रह्मा के शाप का उल्लेख किया (दे० अनु० ६५४), विभीषण ने फिर लका के विनाश की आशका प्रकट की तथा इन्द्रजित् ने उसे कायर कहकर पुकारा (सर्ग ११-१५)।

(४) दाक्षिणात्य पाठ मे इसका उल्लेख मात्र किया गया है कि रावण की माता ने लकावरोध के समय सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध किया था, उदीच्य पाठो के अनुसार निकषा ने रावण-सभा के पूर्व ही अपने पुत्र विभीषण के पास जाकर उससे निवेदन किया कि वह रावण को समझावे।[2]

(५) उदीच्य पाठो मे विभीषण की शरणागति के पूर्व रावण की एक ही सभा वर्णित है किन्तु इस सभा के वर्णन मे बहुत प्रक्षिप्त सामग्री है, जिसका दाक्षिणात्य पाठ मे नितान्त अभाव है। रावण-विभीषण-सवाद के अतिरिक्त इसमे पहस्त-वाक्यम्, महोदरवाक्यम् तथा विरूपाक्ष-वाक्यम् नामक सर्ग भी मिलते हैं, अन्त मे इसका उल्लेख है कि रावण ने राम की शरण लेने का विभीषण का सकल्प सुनकर उस पर पाद-प्रहार किया था।[3]

---

१. विभीषण की शरणागति के बाद सभी पाठो मे रावण की सभा के मिलने का दो बार उल्लेख किया गया है—राम के मायाशीर्ष के प्रसग के ठीक पहले (दे० सर्ग ३१) तथा इसके बाद (दे० सर्ग ३५)। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरीय पाठ मात्र मे वानर-सेना के समुद्र-तरण के पश्चात् रावण-सभा के मिलने का वर्णन किया गया है (दे० सुन्दरकाण्ड, सर्ग १००)।

२. दे० दा० रा० ६, ३४, २०, गौ० रा० ५, ७६; प० रा० ५, ७५। भावार्थ रामायण (५, ३५) तथा कृत्तिवास रामायण (५, ३७) मे भी इसका वर्णन किया गया है। रगनाथ रामायण (६, ३१) मे कैकसी का हितोपदेश लकावरोध के बाद ही रखा गया है।

३ दे० सुन्दरकाड, गौ० रा० ८१-८७, प० रा० सर्ग ८१-९०। रावण के पाद-प्रहार का उल्लेख अभिनन्द (२३, ८७), माधव कदली, कृत्तिवास, बलरामदास, रगनाथ, एकनाथ तथा तुलसीदास आदि के रामायणो मे भी मिलता है।

(१) रावण की सभा के विषय मे दो सर्ग सबसे प्राचीन है।[1] सर्ग ६ की मुख्य कथावस्तु है विभीषण द्वारा लका के विनाश की आशका तथा सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध। सर्ग १६ मे रावण मन्त्रिवियो की सामान्य निन्दा करते हुए (घोराः स्वार्थप्रयुक्तास्तु ज्ञातयो नो भयावहाः; श्लोक ७) विभीषण को राक्षस-कुल का कलक बताता है (धिक्कुलपांसन, श्लोक १३)। इस घोर भर्त्सना से घबराकर विभीषण चार[2] राक्षसो के साथ लका छोड देता है (सर्ग १६)।

(२) विभीषण की शरणागति के विषय मे वाल्मीकि रामायण का वृत्तान्त इस प्रकार है। विभीषण वानर-सेना के शिविर के पास पहुँचकर अपना परिचय देते हुये कहता है कि मैं रावण का अनुज हूँ, उसने मेरे सत्परामर्श को ठुकराकर मेरा अपमान किया है, अतः मैं अपना परिवार छोडकर राम की शरण मे आ गया हूँ—त्यक्त्वा पुत्रांश्च दारांश्च राघवं शरणं गतः (१७, १६)। तब सुग्रीव विभीषण को मार डालने का परामर्श[3] देते है किन्तु राम शरणागत को अवध्य बताकर उसे ग्रहण करते है :—

बद्धांजलिपुटं दीनं याचन्तं शरणागतम्।
न हन्यादानृशंस्यार्थमपि शत्रुं परंतप ॥२७॥ (सर्ग १८)

अनन्तर विभीषण रावण तथा उसकी सेना की शक्ति का वर्णन करता है और युद्ध मे राम की सहायता करने की प्रतिज्ञा करता है। तब राम विभीषण का राज्याभिषेक करते हैं और इसके बाद विभीषण राम को सागर की शरण लेने का परामर्श देता है (सर्ग १९)।

(३) प्रचलित वाल्मीकि रामायण के विभिन्न पाठो मे रावण-सभा तथा विभीषण

---

१. सर्ग ६ मे रावण तीन प्रकार के मन्त्रियो के विषय मे नीति की शिक्षा देता है, सर्ग ७-८ मे विभिन्न राक्षस रावण को विजय का आश्वासन देते हुए उत्तर-काण्ड मे वर्णित रावण की विजय-यात्राओ का उल्लेख करते है। सर्ग १०-१५ गौडीय पाठ मे नही मिलते।

२ युद्ध काण्ड, सर्ग ३७, के अनुसार इनके नाम इस प्रकार है—अनल, पनस, सम्पाति और प्रमाति। गोविन्दराज के पाठ मे पनस के स्थान पर शरभ नाम आया है।

३. दे० सर्ग १७। शरणागति के वर्णन मे एक विस्तृत प्रक्षेप मिलता है (१७, ३१-६८ और १८, १-२२), इसमे राम विभीषण के विषय मे प्रमुख वानरो का विचार पूछते है तथा सुग्रीव के तर्को का उत्तर देते हैं। प्रक्षिप्तता का प्रमाण इसमे है कि सर्ग १७ के चार श्लोक (२७-३०) सर्ग १८ मे दोहराये गये हैं (१७-२०)। अधिकांश सामग्री उदीच्य पाठ मे नही मिलती।

अपनी माया के बल पर इन्द्रजित् को देखने मे समर्थ था (दे० सर्ग ४६)। इसका भी उल्लेख मिलता है कि विभीषण ने सुग्रीव की (सर्ग ४६, ६) तथा बाद मे राम-लक्ष्मण की (सर्ग ५०) आँखो को जल से धोया था, महाभारत के अनुसार यह जल कुबेर का भेजा हुआ था, इससे आँख धो लेने के बाद अदृश्य प्राणी दृष्टिगोचर हो जाते थे।[1]

युद्ध के वर्णन मे विभीषण का तीन बार उल्लेख मिलता है—वह प्रथम सामान्य युद्ध मे भाग लेता है (सर्ग ४३), इन्द्रजित् की सेना का सामना करता है (सर्ग ८६-६०) तथा लक्ष्मण के विरुद्ध लडते हुए रावण के घोडे को मार डालता है (सर्ग १००)।

रावणवध के बाद विभीषण ने पहले अपने भाई की अन्त्येष्टि करना अस्वीकार किया था,[2] किन्तु राम के समझाने पर (मरणान्तानि वैराणि; १११, १००) उसने रावण का दाह-सस्कार सम्पन्न किया था। अतः रावण के वध पर विभीषण-विलाप विषयक सर्ग अस्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० दा० रा० सर्ग १०६, गौ० रा० सर्ग ६३) वास्तव मे यह सर्ग प्रक्षिप्त है और पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नही मिलता।

युद्धकाण्ड के अन्त मे राम विभीषण का अभिषेक करने के लिए लक्ष्मण को लका भेज देते हैं (सर्ग ११२), बाद मे विभीषण दूसरो के साथ अयोध्या जाकर राम के अभिषेक मे सम्मिलित होता है (सर्ग १२१ और १२८)।

(३) वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड (सर्ग ६) मे विभीषण की धार्मिकता पर विशेष बल दिया गया है। उसके जन्म के विषय मे यह कथा मिलती है—कैकसी विश्रवा के पास उस समय पहुँची थी जब वह अग्निहोत्र कर रहे थे अतः उन्होने कैकसी से कहा कि तुम्हारे पुत्र दारुण क्रूरकर्मा राक्षस होगे। कैकसी के अनुनय करने पर विश्रवा ने कहा था कि तुम्हारा अन्तिम पुत्र मेरे (ब्राह्मण) वंश के अनुरूप धर्मात्मा होगा :

पश्चिमो यस्तव सुतो भविष्यति शुभानने।
मम वंशानुरूपः स धर्मात्मा च न संशयः ॥२७॥

तदनुसार विभीषण बचपन से ही धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार तथा जितेन्द्रिय था (६, ३६)। घोर तपस्या के द्वारा वर पाकर उसने धर्मबुद्धि को ही चुन लिया था—परमापद्गतस्यापि धर्मे मम मतिर्भवेत् (१०, ३०)। इस वर के अतिरिक्त

---

१. 'अंतर्हितानां भूतानां दर्शनार्थम्' (दे० ३, २७३, १०)। आनन्द रामायण मे भी कुबेर के भेजे हुए जल का उल्लेख है (दे० १, ११, २६)।

२ दे० ६, १११ ६४। वाल्मीकि का यह यथार्थवादी दृष्टिकोण शरणागति के समय विभीषण के इस कथन से भी स्पष्ट है—राक्षसाना वधे साह्यं लकायाश्च प्रधर्षणे। करिष्यामि यथाप्राणं प्रवेक्ष्यामि च वाहिनीम् (६, १६, २३)।

(६) राम की शरण लेने के पूर्व विभीषण पहले अपनी माता से मिलने गया था इसका उल्लेख मात्र गौडीय पाठ मे मिलता है किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ मे **विभीषण-निकषा-संवाद** का पूरा वर्णन किया गया है।[1] गौडीय पाठ ही विभीषण की **कैलास-यात्रा** का उल्लेख करता है। इसके अनुसार विभीषण अपनी माता से विदा लेकर अपने भाई वैश्रवण के पास चला गया था। कैलास पर, विभीषण वैश्रवण तथा शिव दोनो से मिला और दोनो ने उसे राम की शरण लेने का परामर्श दिया।[2]

५६६. शरणागति के प्रसग के बाहर वाल्मीकि रामायण की विभीषण-विषयक सामग्री निम्नलिखित है :

(१) **सुन्दरकाण्ड** के अनुसार विभीषण ने सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध किया था (दे० अनु० ५४६) तथा बाद मे हनुमान् का वध करने से रावण को रोका था (दे० अनु० ५५१)। इसके अतिरिक्त इसका भी उल्लेख किया गया है कि लका-दहन के समय विभीषण का भवन सुरक्षित रहा (दे० ५, ५४, १६)।

(२) **युद्धकाण्ड** मे विभीषण को राम के मुख्य परामर्शदाता के रूप मे चित्रित किया गया है। उसके परामर्श के अनुसार राम समुद्र की शरण लेते हैं (सर्ग १६) तथा अंगद को रावण के पास भेज देते हैं (सर्ग ४१)। विभीषण गुप्तचरो शुक-सारण को (सर्ग २५) तथा बाद मे शार्दूल को (सर्ग २६) पहचानकर पकडवाता है, उसके मन्त्री लंका जाकर राक्षसो की सेना का समाचार ले आते है (सर्ग ३७)। वह राम को कुभ-कर्ण (सर्ग ६१) तथा प्रहस्त (सर्ग ५८) का परिचय देता है। माया-सीता के वध के अवसर पर वह रावण की माया के रहस्य का उद्घाटन करता है तथा इन्द्रजित् के यज्ञ[3] के विध्वस का परामर्श देता है (सर्ग ८४)।

परवर्ती साहित्य मे विभीषण को **ज्योतिषी तथा मायावी** माना गया है। इसका आधार युद्धकाण्ड के उस स्थल मे विद्यमान है, जहाँ कहा गया है कि विभीषण ही

---

१ दे० गौ० रा० ५, ८६, ४, प० रा० ५, ६१, ४-६२। माधव कदली (५, ४०), कृत्तिवास (५, ३६), रगनाथ (६, १४) तथा एकनाथ (५,३७) ने विभीषण और उसकी माता की इस भेट का वर्णन किया है। इसका उल्लेख तोरवे रामायण मे भी मिलता है (६, २)।

२ दे० गौ० ५, ८६, ५-४२। विभीषण की इस कैलास-यात्रा का वर्णन माधव कदली (५, ४०), कृत्तिवास (५, ४०), अभिनन्द (रामचरित सर्ग २४) तथा तुलसीदास ने (गीतावली ५, २७-२८) भी किया है।

३ पश्चिमोत्तरीय पाठ मे रावण के यज्ञ का विध्वस भी विभीषण के परामर्श से किया जाता है (दे० अनु० ५६७)।

धर्मवुद्धि ही नही अपितु भगवद्भक्ति माँग ली थी—**तोहि माँगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु** (रामचरितमानस १, १७७)। अत. जव हनुमान् सीता की खोज करते हुए लका पहुँचे उसने विभीषण को राम की स्तुति मे सलग्न देखा (दे० अनु० ५३८)। रावण की सभा मे वह भगवान की शरण लेने का अपने अग्रज से अनुरोध करता है तथा स्वय शरणागत वनकर राम की स्तुति भगवान के रूप मे करता है।[1] **आनद रामायण** (८, ७, १२४) मे समस्त रामभक्त विभीषण के अशावतार (**विभीषणांश-भूताः**) माने गए है।

सरमा के अतिरिक्त त्रिजटा (दे० अनु० ५४७), पकजसुन्दरी (दे० पउमचरिय, पर्व ८, ६२) तथा नारायण की पुत्री (सेरी राम) का उसकी पत्नी के रूप मे उल्लेख मिलता है। त्रिजटा अधिकतर उसकी पुत्री मानी गई है।[2] कृत्तिवास रामायण मे विभीषण के पुत्र तरणीसेन को रामभक्त के रूप मे प्रस्तुत किया गया है (दे० अनु० २८५, ३)।

५७१. विभीषण की शरणागति के विषय मे वहुत-सी रचनाओ मे माना गया है कि रावण ने उसे निर्वासित किया था, उदाहरणार्थ—गुणभद्र का उत्तर पुराण (६८, ४६७), रगनाथ रामायण (७, १३), सेरीराम तथा रामजातक। रगनाथ रामायण के अनुसार रावण ने खग उठाकर विभीषण का वध करना चाहा किन्तु प्रहस्त ने उसे रोका था।

शरणागति का समय प्राय वाल्मीकि रामायण के अनुसार है किन्तु पद्मपुराण के पाताल खण्ड (११२, २२०) मे माना गया है कि विभीषण ने इन्द्रजित्-वध के वाद ही राम की शरण ली थी। सेरीराम मे इस घटना को राम के समुद्र-तरण के पश्चात् रखा गया है। महावीरचरित (५, ३०) के अनुसार विभीषण खर-दूषण के वध के वाद लका छोडकर अपने मित्र सुग्रीव के यहाँ रहने लगा था तथा उसने राम-सुग्रीव-भेट के पूर्व ही राम के पास आत्म-समर्पण का पत्र भेजा था।

वाल्मीकि रामायण मे विभीषण चार मन्त्रियो के साथ राम के पास आता है। पउमचरियं (५५, २२) के अनुसार वह ३० अक्षौहिणी सेनाओ के साथ राम की शरण मे आया था। रामायण ककविन (सर्ग १५) मे भी माना गया है कि विभीषण ने अपनी

---

१ कव रामायण के अनुसार विभीषण ने राम को नारायणावतार वताकर, रावण को नृसिहावतार की कथा सुनाई थी (६, ३)। रामायण ककविन (सर्ग १३) मे विभीषण को शिवभक्त माना गया है।

२. दे० अनु० ५४७। विभीषण की पुत्री वेजकाया की कथा अनु० ५७६ मे देखे।

ब्रह्मा ने विभीषण को अमरत्व भी प्रदान किया था (१०, ३५)। सुन्दरकाण्ड मे विभीषण की पत्नी तथा उसकी पुत्री का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५४६), उत्तरकाण्ड मे सरमा विभीषण की पत्नी मानी गई है (सर्ग १२, २५)। एक अन्य स्थल पर इसका उल्लेख किया गया है कि विभीषण ने कन्याओ का हरण करने के कारण रावण की भर्त्सना की थी (दे० सर्ग २५)।

राम के अश्वमेध पर विभीषण उपस्थित था, उस अवसर पर वह ऋषियो की सेवा मे लग गया था—**पूजां चक्रे ऋषीणाम्** (९१, २६)। अपने स्वर्गारोहण के समय राम ने विभीषण को यह आश्वासन[1] दिया कि लका मे तुम्हारा राज्य चिरस्थायी होगा :

यावत्प्रजा धरिष्यन्ति तावत्त्वं वै विभीषण।
राक्षसेंद्र महावीर्य लंकास्थः स्वं धरिश्यसि ॥२४॥
यावच्चंद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावच्च मत्कथा लोके तावद्राज्यं तवास्त्विह ॥२५॥ (सर्ग १०८)

५७० वाल्मीकि रामायण तथा परवर्ती रामकथाओ मे विभीषण की वशावली तथा उसकी **जन्म-कथा** सबधी सामग्री रावण-चरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६४४-६४७)। तुलसीदास ने विभीषण को प्रतापभानु के मन्त्री धर्मरुचि का अवतार माना है (दे० अनु० ६२५), रामलिंगामृत (१, ३०) के अनुसार वह प्रह्लाद का अवतार है तथा महाभागवत पुराण की यह धारणा है कि धर्म नामक देवता विभीषण के रूप मे प्रकट हुए थे—**धर्मः स्वयं तु संजातो हि विभीषणः** (३७, १४)। दशरथ-यज्ञ का एक ऐसा रूप भी मिलता है जिसके अनुसार विभीषण विष्णु का अशावतार ठहरता है (दे० अनु० ३५७)। रामकियेन (अध्याय ४) मे लिखा है कि रावण के जन्म के बाद ईश्वर ने विस्सुज्ञन नामक देवता को आदेश दिया कि वह रावण के भाई के रूप मे नारायणावतार राम की सहायता करे। तदनुसार विस्सुज्ञन विभेक (विभीषण) के रूप मे प्रकट हुए, उनके पास एक मायावी दर्पण था जिसकी सहायता से वह अज्ञान का अन्धकार दूर करने तथा भविष्य का रहस्य प्रकट करने मे समर्थ था। सेरीराम, सेरतकाण्ड (दे० अनु० ४१५) आदि रचनाओ मे विभीषण को ज्योतिषी तथा गुप्त बातो का ज्ञाता माना गया है। पउमचरिय मे विभीषण की मायावी शक्ति का उल्लेख मिलता है।

भारत के परवर्ती राम-साहित्य मे विभीषण को मुख्यतया **राम-भक्त** के रूप मे चित्रित किया गया है। तुलसीदास के अनुसार विभीषण ने तपस्या द्वारा वर पाकर

१. उसी अवसर पर जगन्नाथ की आराधना करने के परामर्श का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ७८०)।

५७२. विभीषण के उत्तरचरित के विषय मे मन्दोदरी से उसका विवाह परवर्ती रामकथाओ का सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन कहा जा सकता है। साहित्य मे इसका प्राचीनतम उल्लेख स्वयभूदेवकृत पउमचरिउ मे मिलता है, श्रेणिक दूसरे सम्प्रदायो मे रामकथा विषयक भ्रामक धारणो के उदाहरण देते हुए गौतम से कहता है कि जिस विभीषण ने परस्त्री मे आसक्त रावण का वध कराया वह जननी-तुल्य मन्दोदरी को कैसे ग्रहण कर सकता था (१, १०, ६)। महानाटक के दोनो पाठो मे विभीषण-मन्दोदरी विवाह का प्रसग मिलता है। दामोदर द्वारा सम्पादित महानाटक मे मन्दोदरी के प्रश्न (**अतः परं मम का गति**) का उत्तर देते हुए राम उसके सहगमन का विरोध करते है तथा विभीषण के साथ राज्य करने का परामर्श देते हैं—**महाभागे न खलु राक्षसीनां सहगमने धर्मः। अतस्त्वया विभीषणालयमास्थाय लकाचले राज्य चिराय भुज्यताम्** (१४, ६०)। मधुसूदन के सस्करण मे विभीषण पूछते है—**किमपर ?** और राम उत्तर देते हैं कि मन्दोदरी तुम्हारी पटरानी बन जाय :

> **मन्दोदरी तव विभीषण पट्टराज्ञी।**
> **भूयादिमां च परिपालय वीर लकाम् ॥** (६, १०३)

सरस्वतीकंठाभरण (५, ३६४) मे विभीषण-मन्दोदरी-विवाह का उल्लेख किया गया है :

> **मयेन निर्मितां लब्ध्वा लंकां मन्दोदरीमपि।**
> **रेमे मूर्ता दशग्रीवलक्ष्मीमिव विभीषणः ॥**

बहुत सी मध्यकालीन रचनाओ मे माना गया है कि विभीषण ने मन्दोदरी से विवाह किया था, उदाहरणार्थ—कृत्तिवास रामायण (६, ११२), रामचरित-मानस (१,२६, ७), रामचन्द्रिका (३७, १८), बलरामदास रामायण, रामकियेन (अध्याय ३६), पाश्चात्य वृत्तान्त (१, ३ और १३)। बलरामदास के अनुसार राम ने यह सोचकर मन्दोदरी को दूसरे विवाह के लिये बाध्य किया कि मेरी पत्नी का जो अनादर हुआ उसका प्रतिकार होना चाहिये। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार रावण ने मरण के समय विभीषण के लिए मन्दोदरी को समर्पित किया था। रामजातक के अनुसार रावण ने राम की बहन शान्ता के साथ विवाह किया था, उस जातक का एक रूप पालक पालाम नामक रचना मे सुरक्षित है, जिसमे विभीषण तथा शान्ता (रावण की विधवा) के विवाह का उल्लेख मिलता है। सेरीराम के अन्त मे विभीषण के साथ राम की बहन कीकवी के विवाह का वर्णन किया है गया।

सेतुभग करवाने के अतिरिक्त (दे० अनु० ६०७) विभीषण के उत्तरचरित की दो नवीन घटनाओ का उल्लेख मिलता है। राम ने किसी समय दक्षिण की यात्रा की थी तथा उस अवसर पर विभीषण से मिलने गए थे। इस यात्रा का कारण यह भी

सेना के साथ राम की शरण ली थी। सेरीराम मे वह अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रो के साथ राम के पास पहुँचता है। रामजातक के अनुसार रावण के दो भाई (विभीषण और इन्द्रजित्) तथा एक पुत्र (चेतकुमार) अपने-अपने परिवार के साथ राम की शरण मे आये थे। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार रावण के आदेश से विभीषण को बाँधकर समुद्र मे फेंक दिया गया था किन्तु एक मकर से बचाया जाकर वह हनुमान् द्वारा राम के पास पहुँचा दिया गया था। दक्षिण भारत की एक कथा मे विभीषण काक का रूप धारण कर राम की शरण मे आता है (पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। एक अन्य कथा के अनुसार विभीषण तथा उसके पाँच मन्त्री वानर के वेश मे राम की सेना में पहुँचे थे (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)।

लंकादहन प्रक्षिप्त होने के कारण वाल्मीकि रामायण मे विभीषण की शरणागति के समय हनुमान्-विभीषण के पूर्व परिचय का उल्लेख नही मिलता। रंगनाथ रामायण (६, १६) के अनुसार हनुमान् ने विभीषण के पक्ष मे राम से अनुरोध करते हुए कहा था कि उसने मुझे वध किए जाने से बचाया था। बलरामदास रामायण में हनुमान् ने उसी अवसर पर राम से कहा था कि उसकी पुत्री त्रिजटा सीता के प्रति सद्भाव रखती है। भावार्थ रामायण (५, ३८) के अनुसार हनुमान् ने विभीषण की शरणागति के बाद शीघ्र माया द्वारा एक नई लंका की सृष्टि की थी और उसी मे राम द्वारा विभीषण का अभिषेक सम्पन्न हुआ था। यह कथा आनन्द रामायण (१, १०, ४१-४५) पर निर्भर है, जिसमे इसका वर्णन मिलता है कि हनुमान् ने समुद्र-तट पर रेती की लंका (सिकतोद्भवा लंका) बनाई थी, जो बाद मे हनुमल्लंका के नाम से प्रसिद्ध हुई।

युद्ध के वर्णन मे विभीषण विषयक नयी सामग्री कम मिलती है। सेतुबन्ध के अवसर पर उसने आपस में लड़ते हुए नल और नील को अलग कर दिया था (अनु० ५७६), नागपाश के प्रसंग मे राम को गरुड को बुलाने का परामर्श दिया (अनु० ५८६), और कुम्भकर्ण (अनु० ५८६) तथा रावण (अनु० ५६८) के वध करने का उपाय प्रकट किया। इसके अतिरिक्त वह लक्ष्मण की चिकित्सा मे भी सहायक बने (दे० अनु० ५६६)।

पउमचरिय मे विभीषण पहले रावण की सहायता करता है। वह राम तथा सीता के जन्म के पूर्व दशरथ तथा जनक के वध करने का विफल प्रयत्न करता है (पर्व २३) तथा सीताहरण के पश्चात् माया के बल से लंका के चारो ओर एक दुर्गम प्राकार का निर्माण करता है (पर्व ४६)। वह रणभूमि मे भी सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध करता है (पर्व ६१ और ७३) तथा रावण-वध के पश्चात् आत्महत्या करने का प्रयास करता है, किन्तु राम द्वारा रोका जाता है (पर्व ७४)। अन्त मे इसका उल्लेख मिलता है कि विभीषण ने अपने पुत्र सुभूषण को राज्य सौंपकर जैन दीक्षा ली थी (पर्व ११४)।

हनुमान् की पूंछ का उल्लेख पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ और १३ मे भी मिलता है, तथा कम्बोदिया मे इसके विषय मे एक चित्र भी सुरक्षित है।[१]

५७४ (१) प्रचलित वाल्मीकि रामायण की सेतुबन्ध विषयक अधिकाश सामग्री प्रक्षिप्त प्रतीत होती है, तत्सबधी वर्णन मे अलौकिक तत्वो का बाहुल्य तथा तीनो पाठो का वैभिन्न्य इस अनुमान का आधार है। नल के नेतृत्व मे वृक्षो तथा पत्थरो से वानरो द्वारा सेतु का निर्माण तथा बाद मे वानर-सेना का समुद्र-तरण इस प्रसग का मूल रूप रहा होगा (दे० सर्ग २२, ४१-७७)। फिर भी अपेक्षाकृत प्राचीन काल से सेतु-बन्ध के वर्णन मे अलौकिक तत्वो का समावेश किया गया है। तीनो पाठो मे राम का तीन दिन तक प्रायोपवेश करने तथा क्रुद्ध होकर समुद्र को अपने बाणो से क्षुब्ध करने का वर्णन किया गया है (दे० सर्ग २१)। सागर का प्रकट होकर विश्वकर्मा के पुत्र नल द्वारा सेतु-निर्माण का सुझाव तीनो पाठो मे समान रूप से मिलता है। प्रामाणिक सामग्री मे कही भी देवताओ से वानरो की उत्पत्ति की ओर निर्देश नही किया गया है।

कथाबीज के दाक्षिणात्य पाठ (१, १, ८०) मे लिखा है—**समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत्**। 'नल' के स्थान पर अन्य पाठो मे 'नलः' ही मिलता है (गौ० रा० १, १, ८३, प० रा० १, १, ८०) तथा कई हस्तलिपियो मे—"**समुद्रवचनाच्चैव नलसेतुमकारयत्** (दे० बडौदा सस्करण १, १, ६५ की टिप्पणी)। 'नलसेतु' प्रचीनतम पाठ प्रतीत होता है[२], जो दाक्षिणात्य तथा उदीच्य पाठो मे स्वतन्त्र रूप से बदल दिया गया है। रामायण की दूसरी अनुक्रमणिका में 'नलसेतु' सभी पाठो में रह गया है—**संगमं च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम्** (रा० १, ३, ३४)। किन्तु यहाँ पर कई हस्त-लिपियो मे महत्त्वपूर्ण पाठभेद सुरक्षित है—**संगमं च समुद्रस्य नलसेतोश्च दर्शनम्** (दे० बडौदा सस्करण १, ३, ३४ तथा प० रा० १, ४, २७ की पादटिप्पणियाँ)। इन सब पाठभेदो के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि लका के पास कोई नलसेतु (डमरू-मध्य ?) पहले से विद्यमान था, जहाँ वानरसेना पुल बना कर लका पहुँच गयी थी। 'नलसेतु' नाम के कारण प्रचलित रामायण की कथाएँ उत्पन्न हो गयी होगी।

(२) द्रुमकुल्य-विनाश का वृत्तान्त गौडीय पाठ मे नही मिलता। अन्य पाठो मे

---

१ दे० बुलेटिन एकोल फ्राजेस एक्सट्रेम ओरियाँ : भाग १२, पृ० ४७।

२ तीनो पाठो मे भरद्वाज राम से कहता है—**विदितायां च वैदेह्यां नलसेतुर्यथा कृतः** (रा० ६, १२४, १३)। दाक्षिणात्य पाठ मे हनुमान भरत से कहता है—**ततः समुद्रमासाद्य नलं सेतुमकारयत्** (रा० ६, १२६, ४६), किन्तु दोनो अन्य पाठो मे यह रूप मिला है—**ततः समुद्रमासाद्य नलसेतुमकारयत्** (गौ० रा० ६, ११०, ५६, प० रा० ६, १०७,६६,।

बताया जाता है कि द्रविडो ने विभीषण को कारागार मे बन्द किया था और राम ने उसे मुक्त कर दिया था (अनु० ६३५) । अन्य रचनाओ मे कुम्भकर्ण के पुत्र या पोता के विद्रोह तथा गतस्कध रावण द्वारा लका से विभीषण के निर्वासन का भी वर्णन मिलता है (दे० अनु० ६४० और ६४१) ।

ग । सेतुबंध

५७३. अनेक रामकथाओ मे सेतु-निर्माण का उल्लेख नहीं मिलता । विमल-सूरिकृत पउमचरियं मे समुद्र नामक राजा नल द्वारा पराजित किया जाता है ।[1] हेमचद्रकृत जैन रामायण मे राम-लक्ष्मण सेना सहित आकाश मार्ग से लका के पास पहुँचते है और नल-नील द्वारा समुद्र तथा सेतु नामक राजाओ को पराजित किया जाता है (सर्ग ७) । गुणभद्रकृत उत्तर पुराण मे भी राम और लक्ष्मण विमान से ही जाकर सेना सहित लका के पास उतरते हैं (सर्ग ६८, ५२२) ।

अभिषेक नाटक के अनुसार जब राम बाण चलाने के लिए तैयार है उस समय वरुण दिखलाई देते हैं और उनकी आज्ञा से समुद्र का जल दो भागो मे बँट जाता है जिससे राम की सेना समुद्रतल से ही पार उतरती है ।[2] भागवत पुराण (२, ७, २३) मे भी लिखा है कि क्रोधाग्नि के कारण राम की आँखें इतनी लाल थी कि उनकी दृष्टि मात्र से समुद्र के जीव जलने लगे और भय से काँपते समुद्र ने राम को तुरन्त मार्ग दिया—"यस्मा अदादुदधिः...मार्गं सपदि ।"

पद्मपुराण के अनुसार राम ने समुद्रके तट पर शिव से सहायता के लिए प्रार्थना की । प्रसन्न होकर शिव ने अजगव धनुष को दे दिया । राम ने उस धनुष को समुद्र मे फेंक दिया और उसी पर समस्त सेना ने समुद्र को पार किया (पातालखंड, अध्याय ११२) ।

बिहोर रामकथा मे हनुमान् अपनी पूँछ बढाते हैं और राम तथा लक्ष्मण उसी पर समुद्र पार करते है । रामकियेन के अनुसार सीता की खोज मे हनुमान् ने इसी तरह अपने साथियो को एक नदी के उस पार उतारा था (अध्याय २३) । सेतु के स्थान पर

---

१ दे० पर्व ५४ । मलयन सेरीराम पर जैन रामकथा की गहरी छाप है, अतः सेरीराम मे सेतु-निर्माण के अतिरिक्त उस अवसर पर नील और अंगद द्वारा अनेक राजाओ की पराजय का वर्णन किया गया है ।

२ दे० अक ४ । जावा के राम-सिन्ता नामक आधुनिक नृत्य-प्रधान नाटक मे भी सागर विभक्त हो जाता है । दे० हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड, १५ जनवरी, १९६१ ।

अद्भुत रामायण में लक्ष्मण क्रोध में आकर समुद्र में कूद पड़ते हैं तथा उनके शरीर के ताप से समुद्र सूख जाता है। अनन्तर राम सीता के लिए आँसू बहाकर समुद्र पुनः भर देते हैं (दे० सर्ग १६)।

(७) अनामकं जातकम् में इन्द्र ने लघु वानर के रूप में प्रकट होकर सेतु बनाने का परामर्श दिया। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १८ में माना गया है कि हनुमान् ने अकेले ही सेतु का निर्माण किया था। अपने शरीर पर जितने बाल थे उतने ही पत्थर वह प्रत्येक बार ले आते थे। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ के अनुसार नल ने राम के वरदान द्वारा चार हाथ प्राप्त किए जिनसे सेतु-निर्माण का कार्य शीघ्र ही समाप्त हो जाय।

(८) तत्वसंग्रह रामायण (६, ६) में इसका वर्णन किया गया है कि सेतुबन्ध के पूर्व सागर की पुत्री कन्याकुमारी ने राम के पास आकर विवाह का प्रस्ताव किया था। राम ने युद्ध का बहाना देकर उसे अस्वीकार कर दिया तथा सागर पर सेतु बनवाने की अनुमति माँगी।[1]

५७५. वाल्मीकि रामायण में समुद्र नल द्वारा प्राप्त किए हुये वर का उल्लेख करता है (पित्रा दत्तवरः; दे० ६, २२, ४१) और नल स्वयं राम से कहता है कि मुझे अपने पिता विश्वकर्मा का सामर्थ्य प्राप्त है, इसलिए मैं समुद्र में सेतु बाँध सकता हूँ। विश्वकर्मा ने नल की माता को यह कहकर वर दिया है कि तुम्हारा पुत्र मेरे समान ही होगा :

मया तु सदृशः पुत्रस्तव देवि भविष्यति ॥४७॥ (सर्ग २२)

माधव कंदली (५, ४०) इस वर के विषय में कहते हैं कि नल को यह आश्वासन दिया गया था कि तुम्हारे स्पर्श से पत्थर नहीं डूबेंगे। रंगनाथ रामायण (६, २५) में नल की वरप्राप्ति की कथा इस प्रकार है। नल ने किसी दिन पशुकण्व नामक मुनि की सभी पूजा-मूर्तियों को समुद्र में फेंक दिया : मुनि ने बालक को दंड नहीं देना चाहा, अतः उन्होंने उसे यह वरदान दिया—यह बालक जो कुछ समुद्र में फेंक देगा, वह जल पर ही तैरता रहेगा। इसके फलस्वरूप मुनि की मूर्त्तियाँ जल के ऊपर तैरने लगी। कृत्तिवास रामायण (५, ४५) में नल कहता है कि बचपन में मैं जब अपने पिता के यहाँ था ब्रह्मा मानसरोवर के तट पर सन्ध्या पूजा किया करते थे। मैं उनके जूठे बर्तन (जो केवल एक बार काम में लाए जाते थे) समुद्र में फेंक कर उनकी सहायता किया करता था। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर मुझे वरदान दिया कि मेरे स्पर्श से पत्थर भी जल पर तैरते रहेंगे। तुलसीदास ने नल और उनके भाई नील दोनों की वरप्राप्ति का उल्लेख किया है (रामचरितमानस ५, ५६, १)।

---

१. कन्याकुमारी के विषय में अनु० ६१४ देखें।

कथा इस प्रकार है। राम के ब्रह्मास्त्र का सधान करते ही सागर प्रकट हुए। राम ने कहा कि मेरा यह महाबाण अमोघ है; इसे कहाँ चलाऊँ। इसपर सागर ने राम को द्रुमकुल्य नामक देश के विनाश करने का सुझाव दिया, क्योंकि वहाँ आभीर आदि बहुत-से दस्यु निवास करते है। राम ने ऐसा ही किया और बाद मे द्रुमकुल्य देश मरुकान्तार नाम से विख्यात हुआ (दे० २२, २५-४०)।

(३) गौडीय पाठ मे दशरथ-सागर की मैत्री का उल्लेख मात्र किया गया है (दे० ५, ६४, २१-२२), किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ (५, ६६, ४३-६६ मे सागर राम से कहते है कि तेरे पिता दशरथ ने मेरे साथ असुरो को हराया था तथा देवताओ से वर पाकर वह मुझे अयोध्या ले गये थे। महीने भर उनके यहाँ रहकर मैं अन्त मे अपने घर चला गया।[1]

(४) केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ (सुन्दर काण्ड, सर्ग ६६) मे इसका वर्णन किया गया है कि समुद्र-तरण के पश्चात समुद्र ने फिर प्रकट होकर राम तथा लक्ष्मण को कवच तथा आयुध प्रदान किए थे।

(५) पद्मपुराण के उत्तरखण्ड (अध्याय २६६) के अनुसार राम ने अपने बाणो से समुद्र को सोख लिया तथा सागर के विनय करने पर वारुणास्त्र द्वारा उसमे पुनः जल भर दिया। तत्त्वसग्रह रामायण (६, ७) मे इससे मिलती जुलती कथा पाई जाती है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे भी राम-बाण द्वारा समुद्र के सूख जाने का उल्लेख है (पा० वृ० न० १)। भट्टिकाव्य तथा रामायणककविन के अनुसार राम-बाण के कारण करोडो मछलियाँ मर जाती है तथा समुद्र के विनय करने पर राम उन्हे पुनः जिलाते है (दे० सर्ग १५)। भावार्थ रामायण (५, ३६) मे द्रुमकुल्य के स्थान पर मरुदैत्य का उल्लेख है। राम के इस प्रश्न पर कि मैं अपना बाण कहाँ चलाऊँ सागर ने उत्तर दिया कि पश्चिम मे निवास करने वाले दैत्य मरु का वध किया जाय क्योंकि मरु सागर का जल अपवित्र किया करता था।

(६) महाभारत के रामोपाख्यान मे राम समुद्र मे बाण नही चलाते हैं। सागर राम को स्वप्न में दिखाई देता है तथा नल द्वारा फेके हुए पदार्थ न डूबने देने की प्रतिज्ञा करता है (दे० ३, २६७, ३२ आदि)। स्कन्द पुराण के सेतु माहात्म्य मे भी इस प्रकार का वर्णन मिला है (दे० अध्याय २)। भागवत पुराण मे तीन दिनो तक उपवास करने के बाद राम समुद्र पर कोप प्रकट करते है तथा समुद्र राम की क्रोधपूर्ण दृष्टि से भयभीत होकर प्रकट होता है (दे० ६, १०, १३)। महानाटक मे भी राम के बाण चलाने का कोई उल्लेख नही है (अक ७)।

---

१. रगनाथ रामायण (६, २४) मे इस मित्रता का उल्लेख किया गया है।

वाद मे उन गिरते हुए पर्वतों को पकड कर समुद्र में फेंक दिया तथा नल और नील को शिष्ट व्यवहार के लिए उपदेश दिया। वाद मे तीनो एक ही पत्तल मे भोजन करते हैं। सेरीराम के पातानी पाठ मे कलह का कारण यह है कि पेनिकर (नल) हनुमान् के लाए हुए पर्वत पैर से स्थान पर ढकेलता था, वाद-विवाद होने पर दोनो आपस मे लडने लगे किन्तु विभीषण ने उन्हे अलग कर दिया। रामकियेन (अध्याय २६) के अनुसार हनुमान् अपने शरीर के प्रत्येक वाल मे एक चट्टान वाँधकर आ पहुँचे तथा नीलावद को ललकारने लगे कि वह शीघ्र ही सव को ग्रहण करे। नीलावद यह नही कर सके जिससे दोनो मे लडाई हुई। राम ने दोनो को दण्ड दिया, नीलावद को सुग्रीव के स्थान पर राज्य सँभालने के लिए किष्किंधा भेजा गया तथा हनुमान् को सात दिनो मे सेतु का कार्य समाप्त करने का आदेश मिला।

नल के गर्व-निवारण के विषय मे आनन्द रामायण (१, १०, १६६-२००) की कथा इस प्रकार है। राम को नल का गर्व भली-भाँति ज्ञात था। अतः राम के विधान से समुद्र की तरगे नल द्वारा रखे हुए पत्थरो को छितरा देने लगी। इस पर नल गर्व त्याग कर अपनी कठिनाई के विषय मे राम से निवेदन करने आया और राम ने परामर्श दिया कि पत्थर मेरे नाम के दो अक्षरो से अकित किए जायँ। इस प्रकार पत्थरो का दृढ सयोग उत्पन्न हुआ था। भावार्थ रामायण (५, ४०) का वृत्तान्त इससे वहुत भिन्न नही है। नल के गर्व के कारण पत्थर डूबने लगे। हनुमान् ने कहा कि इसका कारण नल का गर्व ही है। वह राम के चरणो से पत्थरो का स्पर्श कराना चाहते थे किन्तु डर लगा कि कही वे पत्थर अहल्या के समान सुन्दरियाँ न वन जायँ। अत हनुमान् राम के राज्य से पत्थर लाए और वानरो ने अपने नखो से उन पर राम-नाम अकित कर दिया। राम-नाम के प्रभाव स पत्थर नही डूव सके।[1]

५७७. सेतुवन्ध के निर्माण मे **गिलहरी** की सहायता का प्राचीनतम उल्लेख आल्वार विप्र-नारायण (९ श० ई०) की रचना मे मिलता है।[2] रगनाथ, कृत्तिवास तथा वलरामदास आदि के रामायणो मे इसकी चर्चा है। **रंगनाथ रामायण** (६, २८) की तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। एक गिलहरी समुद्र मे गोता लगा कर तट के वालू मे लोट गई, इसके वाद वह पुल पर चढी तथा झटका देकर उसने अपने शरीर मे लगी रेत गिरायी। तब वह फिर समुद्र मे गोता लगाकर तथा रेत मे लेटकर पुल पर

---

१ ई० मूर की रचना मे भी रामनामाकित शिलाओ का उल्लेख है। दे० दि हिन्दू पैथेयॉन, लन्दन १९१०, पृ० १९३।

२. दे० एस० वैयापुरी पिल्लै, हिस्टरी ऑव तमिल लैंग्विज एण्ड लिटरेचर (मद्रास १९५६), पृ० १२१।

आनन्द रामायण, भावार्थ रामायण (६, ४०), काश्मीरी रामायण, खोतानी रामायण तथा उत्तर भारत के एक वृत्तान्त मे वर के स्थान पर शाप का उल्लेख किया गया है। **आनन्द रामायण** के अनुसार नल ने किसी ब्राह्मण का शालिग्राम गगा मे फेक दिया था; ब्राह्मण ने उसे यह शाप दिया—तेरे स्पर्श से पत्थर आदि पानी पर तैरते रहेगे—**पाषाणादि तरिष्यति त्वद्धस्तात्** (१,१०,६७)। **काश्मीरी रामायण** के अनुसार बल (नल) नामक वानर ने ऋषियो के कपडे धोने अथवा पहनने के लिए किसी धोबी से अनुरोध किया था। धोबी के इनकार करने पर बल ने उसका पत्थर पानी मे फेक दिया। इस पर धोबी ऋषि के पास गया और ऋषि ने कहा कि जो कुछ नल पानी मे फेकेगा वह नाव के समान पानी पर तैरता रहेगा। वरुण ने राम को यह कथा सुनाकर अन्त मे कहा कि यह वानर आपकी सेवा मे है (दे० युद्धकाण्ड, न० ३६ तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)। उत्तर भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार वरुण के एक सामन्त ने प्रकट होकर कहा कि सुग्रीव की सेना मे दो सेनापति विद्यमान है, वे शापवश समुद्र के तल तक पहुँचने मे असमर्थ हैं और उनके द्वारा फेकी हुई वस्तुएँ नही डूब सकती है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३)।

खोतानी रामायण मे नन्द नामक वानर राम से अपनी शाप की कथा सुनाता है। एक ब्राह्मण ने उसे शाप दिया था कि तुम पानी में मर जाओगे। अन्य ब्राह्मणो के अनुरोध करने पर उसने अपना शाप इस प्रकार बदल दिया—जो कुछ तुम पानी मे फेकोगे, वह नही डूबेगा और तुम भी नही।

५७६. अर्वाचीन रामायणो मे सेतु निर्माण के अवसर पर बहुधा **हनुमान तथा नल के कलह** का वर्णन किया गया है। **रगनाथ रामायण** (६, २७) के अनुसार नल एक हाथ से लाए हुए पर्वतो को ग्रहण करता था तथा दूसरे हाथ से समुद्र मे रखता था। उसके घमण्ड को चूर कर देने के उद्देश्य से हनुमान् सारी शक्ति लगाकर एक सात योजन लम्बा पर्वत ले आए और राम ने नल को आदेश दिया कि वह उसे दोनो हाथो से ग्रहण करे। तिब्बती रामायण, सारलादासकृत महाभारत, बलरामदास रामायण तथा कृत्तिवास रामायण मे इस झगडे का उल्लेख है। **कृत्तिवास** (५, ४३) के अनुसार कलह का कारण यह है कि नल हनुमान् द्वारा लाया हुआ पर्वत बाये हाथ से पकडता है। क्रुद्ध होकर हनुमान् एक ही बार मे चार पर्वत ले आते हैं और नल उन्हे नही पकड़ पाता है, इस पर दोनो एक दूसरे पर अभियोग लगाने के लिए राम के पास जाते हैं।

सेरीराम मे भी नल और नील हनुमान् के लाए हुए पत्थर बाये हाथ से ग्रहण करते थे। हनुमान् को इतना क्रोध हुआ कि उन्होंने अपनी पूँछ मे सात पर्वतो को लपेट कर उनको आकाश मे फेक दिया जिससे चारो ओर अधकार फैल गया। राम ने

जाती है। इसका उल्लेख हिकायत महाराज रावण मे भी मिलता है। सेरीराम के **पातानी पाठ** मे सेतु-निर्माण के समय मछलियाँ अपनी रानी की आज्ञा से सेतु को नष्ट करने लगती हैं। हनुमान् रानी के पास जाकर उससे सेतु को पुनः बनवाते हैं तथा उसके पति की अनुपस्थिति मे उससे पुत्र भी उत्पन्न करते है। **रामकेर्ति** (सर्ग ७) के अनुसार सागर ने नागो तथा मछलियो को सेतु नष्ट करने का आदेश दिया। यह जान कर राम समुद्र मे बाण चलाने के लिए उद्यत हो गए, जिस पर सागर ने प्रकट होकर क्षमा माँग ली तथा मछलियो को पत्थर ले आने को कहा। **रामकियेन** (अध्याय २६) मे रावण अपनी नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने के लिए भेजता है। सुवर्ण-मच्छा अपनी सेना के साथ सेतु नष्ट करने लगती है। बाद मे हनुमान् सुवर्णमच्छा के यहाँ जाकर उससे सेतु पुन. बनवाते हैं तथा उससे एक पुत्र मच्छानु को भी उत्पन्न करते हैं। **रामजातक** मे नागकन्याएँ सेतु नष्ट करती हैं तथा हनुमान् आदि द्वारा लुभाए जाने पर उनके साथ क्रीडा करती हैं।

सेरीराम मे एक घटना का वर्णन किया गया है जिसका अन्यत्र कही भी उल्लेख नही मिलता। सागर का एक स्थल नही पाटा जा सकता था। इसलिए क्रुद्ध होकर राम ने समुद्र मे बाण चलाना चाहा किन्तु उसी समय एक सुन्दरी ने प्रकट होकर कहा—यह स्थल पातालभूमि जाने का मार्ग है, यहाँ अमृतमय जल है, इसे पीकर आपके सैनिक अजेय बन जायँगे। यह सुनकर राम ने सब वानरो को उस स्थल के पानी को पीने की आज्ञा दी।

५७६. **बालरामायण** मे रावण सेतु-निर्माण के समय विमान पर चढकर राम के शिविर के पास पहुँचता है तथा राम के देखते एक 'यन्त्रजानकी' का वध करके तथा उसका **मायाशीर्ष** समुद्र तट पर फेंककर लका लौट जाता है (अक ७, ७१-७६)। इसके पश्चात् रावण का पुत्र **सिंहनाद** (जिसके पाँच मुख तथा दस भुजाएँ हैं) आकर राम को ललकारता है तथा राम द्वारा मार डाला जाता है (अक ७, ८१)। बाद मे एक **प्रभंजनी** नामक राक्षसी सोए हुए राम और लक्ष्मण को मार डालने के लिए आती है किन्तु अगद उसका वध करता है। महानाटक (अक ११, २-३) मे भी अगद द्वारा प्रभजनी-वध का उल्लेख है।

श्याम के **रामजातक** मे एक बनावटी सीता राम-सेना की छावनी के पास की नदी की धारा मे बहती हुई दिखलाई पडती है। बाद मे पता चलता है कि वास्तव मे यह एक केला का धड है जिसे रावण ने सीता के रूप मे बनवाया था।

रामकियेन मे इस वृत्तान्त का वर्णन सेतुबन्ध के पूर्व ही किया गय है। रावण की आज्ञा से **बेंजकाया**, विभीषण की पुत्री, सीता के रूप मे नदी पर मृतवत् बहती हुई दिखलाई पडती है। राम उसे देखकर निराश हो जाते हैं, लेकिन हनुमान के सन्देह

आती थी। राम बडी देर तक गिलहरी का यह कार्य देखते रहे, अत मे सुग्रीव राम के आदेशानुसार गिलहरी को पकड कर राम के पास ले आए और राम ने अपना सुन्दर दाहिना हाथ उसकी पीठ पर फेरा।[1] **कृत्तिवास** (५, ४७) के अनुसार गिलहरियो का एक दल सहायता करने आया था। वे गिलहरियाँ जल मे कूद-कूद कर तथा रेत मे लोट कर पुल पर वालू झाडती थी। हनुमान् उनको मारने लगे जिससे वे रोती हुई शरण के लिए राम के पास आयी। राम ने हनुमान् को समझाया तथा गिलहरियो की पीठ पर हाथ फेर दिया। डब्लू० क्रूक ने पंजाब मे भी यह कथा पाई थी, वह लिखते है—पजाव मे गिलहरी रामचन्द्र की भक्तिन मानी जाती है। सेतुवन्ध के समय उसने अपनी पूँछ हिला कर वालू के कुछ कण सेतु पर फेक दिए और राम ने पुरस्कार स्वरूप उसकी पीठ पर तीन रेखाएँ खीची।[2]

५७८ सेतु-निर्माण की **बाधाओ** का भी वर्णन किया गया है। सेतुवन्ध (७, ८), जानकीहरण (१४, ४६), वालरामायण (८, ५२), रगनाथ रामायण (६, २५), तोरवे रामायण (६, ५) तथा मराठी रामविजय मे सेतु पर **मछलियो** के आक्रमण का उल्लेख किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने सव जलचरो को रामभक्त वना दिया है। सेतु-निर्माण के वाद जब राम समुद्र पार करने लगे तव :

देखन कहुँ प्रभु करुना कन्दा। प्रकट भए सब जलचर वृन्दा॥
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे॥

(रामचरितमानस ६, ४)

विदेशी रामकथाओ मे मछलियो के आक्रमण का प्रसग अपेक्षाकृत विस्तार सहित वर्णित है।

सेरीराम मे रावण अपने पुत्र गगा-महासूरा को बुलाता है, जो समुद्र की रानी गगा महादेवी के गर्भ से उत्पन्न माना जाता है। गगा महासूरा मछलियो को सेतु नष्ट करने का आदेश देता है। उनका आक्रमण देखकर हनुमान् समुद्र मे अपनी पूँछ हिलाते हैं जिससे जल पकिल हो जाने पर मछलियाँ ऊपर आ जाती है और वानरो द्वारा फँसाई तथा खाई जाती है। वाद मे एक केकडा सेतु पर आक्रमण करता है। हनुमान् अपनी पूँछ पानी मे रखते हैं और केकडा उसे काटना चाहता है तव हनुमान् केकडे को स्थल पर पटक देते हैं। वह केकडा इतना बडा है कि समस्त सेना उसे खाकर तृप्त हो

१. पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ मे भी सेतु-निर्माण के समय गिलहरी की सहायता का उल्लेख है। सीता-खोज के प्रसग मे भी गिलहरी की चर्चा मिलती है (दे० अनु० ४७४)।

२. दे० पोपुलर रेलिजन एड फोकलॉर, भाग २, पृ० २४२।

(दे० आ० रा० १, १०, ६६-१६४)। इस कथा के अनुसार हनुमान् को काशी भेजा गया था तथा शिव ने हनुमान् को दो लिंग प्रदान किये थे तथा बाद मे समुद्र तट पर राम को दर्शन देकर बारह ज्योतिर्लिंग की कथा और रामेश्वर लिंग का माहात्म्य कह सुनाया था। भावार्थ रामायण (६, ७४-७६) की कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है किन्तु एकनाथ ने उस घटना को युद्ध के पश्चात् ही अयोध्या की वापसी-यात्रा के समय रखा है। **रंगनाथ रामायण** (६, १६०-१६१) की तत्सवधी कथा इस प्रकार है। विमान पर अयोध्या की यात्रा करते समय राम सीता को सेतु दिखला रहे थे कि उन्होंने अचानक अपने सामने रावण की भयकर मूर्ति देखी। इस पर विभीषण ने राम से कहा—"आपको ब्रह्महत्या का दोष लग गया है, आपको प्रायश्चित्त करना चाहिए। राम ने पुष्पक उतरवाया तथा ब्रह्मा का ध्यान किया। ब्रह्मा ने प्रकट होकर सेतु पर शिवप्रतिष्ठा करने का परामर्श दिया। अनन्तर हनुमान् का काशी भेजा जाना, मुहूर्त के बीत जाने के डर से राम द्वारा सैकत लिंग की स्थापना, हनुमान् का गर्व-निवारण आदि वर्णित है।

अर्वाचीन रामकथाओ मे शिवप्रतिष्ठा का वर्णन प्राय: सेतु-निर्माण के अवसर पर ही रखा गया है, उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (६, ४, १), रामचरितमानस (६, २) आदि।

एक सथाली रामकथा के अनुसार (दे० अनु० २७१) राम ने रावणवध के बाद सथालो के यहाँ रहकर एक शिवमन्दिर बनवाया था तथा उसमे नित्यप्रति सीता के साथ पूजा करने आते थे।

५८१ पाषाणभूता अहल्या के उद्धार की कथा के आधार पर **भावार्थ रामायण** (५,४१) मे माना गया है कि वानरो ने राम को उठाकर सेतु के उस पार पहुँचाया था कि कही राम के चरणस्पर्श से सेतु के पत्थरों से सुन्दरियाँ प्रकट न हो जायँ। **सेरी-राम** के अनुसार हनुमान् ने उस अवसर पर एक सहस्रस्कध सिंह का रूप धारण किया था और राम ने उस पर चढकर सेतु पार किया था। उत्तर भारत मे गोवर्द्धन-पर्वत के विषय मे एक लोककथा प्रचलित है जिसके अनुसार हनुमान् सेतु के लिए एक पहाड लिए जा रहे थे कि उन्हे अचानक ज्ञात हुआ कि सेतु का निर्माण समाप्त हो गया है अत. हनुमान् उस पहाड को वही छोडकर राम की सेवा मे उपस्थित हुए। राम ने हनुमान् से कहा कि वह पर्वत मेरा परम प्रेम-पात्र है, मैं उसे अपने कृष्णावतार मे सात दिनो तक अपनी उँगली पर रखकर ब्रजवासियो की रक्षा करूँगा।

सेतु-भंग का वर्णन प्राय युद्ध के बाद ही रखा गया है (दे० आगे अनु० ६०७)। किन्तु केवल **खोतानी रामायण** मे सेना के पार होने के बाद ही सेतु को इसलिए नष्ट किया जाता है कि कोई भी युद्ध छोडकर न भाग सके।

प्रकट करने पर बनावटी सीता प्रज्वलित चिता पर रखी जाती है। वेजकाया चिल्लाकर अपने रूप मे प्रकट हो जाती है। सुग्रीव द्वारा कोड़ो से मारी जाने पर वह अपने को विभीषण की पुत्री कहती है। इस पर राम विभीषण को उचित दण्ड देने का आदेश देते है। विभीषण के अपनी पुत्री को प्राणदण्ड की आज्ञा देने पर राम उसकी निष्पक्षता से प्रसन्न होकर वेजकाया को हनुमान् के साथ लका भेज देते है। लका पहुँचने के पहले हनुमान वेजकाया को लुभा कर उससे एक पुत्र उत्पन्न करते है (दे० अध्याय २५)।

५८०. दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार राम वापसी यात्रा मे सीता को सेतु दिखला कर कहते है कि महादेव ने यहाँ मुझ पर अनुग्रह किया था—**अत्र पूर्वं महादेवः प्रसाद-मकरोद्विभुः** (दे० रा० ६, १२३, २०)।

शिव-प्रतिष्ठा का यह निर्देश अन्य पाठो मे नही पाया जाता है। बाद की रामकथाओ मे सेतुबंध के समय शिव-प्रतिष्ठा का प्रायः उल्लेख किया गया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि पहले राम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा युद्ध के पश्चात् ही मानी जाती थी। नारदीय पुराण (उत्तरार्द्ध अ० ७६), नृसिंह पुराण (अध्याय ५२), कूर्म पुराण (अध्याय २१), सौर पुराण (अध्याय ३०), बृहद्धर्मपुराण (पूर्व खण्ड, अध्याय २२) तथा पद्मपुराण (पातालखण्ड ११२, २२२ और सृष्टिखण्ड, अध्याय ४०) मे केवल युद्ध के पश्चात् ही राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख किया गया है। **स्कन्द-पुराण** (ब्राह्मखण्ड, सेतुमाहात्म्य, अध्याय ७ और अध्याय ४४-४७) तथा **कृत्तिवास रामायण** (५, ४८ और ६, १२२) मे सेतुबन्ध के समय तथा युद्ध के बाद दोनों बार इसका वर्णन किया गया है। सेतुमाहात्म्य में द्वितीय शिव-प्रतिष्ठा का वृत्तान्त इस प्रकार है। युद्ध के पश्चात् गंधमादन पर्वत पर जाकर राम दण्डकारण्य से आए हुए मुनियो से पूछते हैं कि रावणवध का प्रायश्चित्त किस तरह किया जाय। वे रामेश्वर लिंग की स्थापना का परामर्श देते हैं। इस पर राम हनुमान् को शिवलिंग ले आने के लिए कैलाश भेज देते हैं। वहाँ पहुँचकर हनुमान को उसे प्राप्त करने के लिए तपस्या करनी पडती है। मुहूर्त बीत जाने के भय से मुनि सैकत लिंग स्थापित करने का अनुरोध करते हैं। सैकत लिंग की प्रतिष्ठा के पश्चात् पहुँचकर हनुमान् अत्यन्त दुखित हैं। राम हनुमान् को स्थापित सैकत-लिंग उठाने की आज्ञा देते हैं लेकिन हनुमान इसमे असमर्थ हैं और मूर्च्छित होकर गिर जाते हैं। बाद में हनूमान अपने लाए हुए लिंग को रामेश्वर लिंग के उत्तर मे स्थापित करते हैं।[१] इस प्रकार की कथा आनन्द रामायण मे भी मिलती है, लेकिन इसका वर्णन युद्ध के पूर्व ही रखा गया है

१ स्कदपुराण (अवन्ती खड, अवती क्षेत्र माहात्म्य, अ० २१) के अनुसार हनुमान् ने अवती में भी एक लिंग स्थापित किया।

करने लगा। विभीषण के संकेत पर हनुमान् ने उसे पकड लिया। शुक्रसार कोडो की मार खाकर रावण के पास लौटा। तब रावण सन्यासी का रूप धारण कर राम के पास आया तथा युद्ध न करने का राम से अनुरोध करने लगा किन्तु राम को दृढसकल्प पाकर रावण लका लौट गया।

पद्मपुराण के अनुसार अतिकाय तथा महाकाय वानरो द्वारा फँसाए गए थे, अतिकाय ने राम को शुक्राचार्य की एक भविष्यवाणी से अवगत किया था। शुक्राचार्य ने कहा था कि लका के द्वार पर अकित 'दारुपंचवक्त्र'[1] के विच्छिन्न हो जाने पर रावण का वध निश्चित होगा—एतेन विच्छिन्नेन रावणो हन्यते। यह सुनकर राम ने उस पचवक्त्र को अपने बाण से छिन्न-भिन्न कर दिया (दे० पाताल खण्ड ११२, २०८-२१०)।

५८३. राम के माया-शीर्ष का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६२)। महाभारत के रामोपाख्यान अथवा पउमचरिय मे इस प्रसग का वर्णन नही मिलता; वास्तव मे यह मायासीता-वध का अनुकरण मात्र है (दे० अनु० ५६१)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण का तत्सबधी वृत्तान्त इस प्रकार है। शार्दूल से सारा विवरण सुनने के बाद रावण ने मायावी विद्युज्जिह्व को आदेश दिया कि वह राम का मायाशीर्ष तथा माया-धनुष बनाकर दोनो को अशोकवन मे ले जाय। इतने मे रावण ने सीता के पास जाकर प्रहस्त द्वारा राम के वध का समाचार सुनाया, तब विद्युज्जिह्व को पास बुलाकर रावण ने सीता को राम का शीर्ष तथा धनुष दिखलाया (सर्ग ३१)। इस पर सीता करुण विलाप करने लगी, उसी समय मन्त्रियो ने रावण को बुला भेजा, रावण के चले जाने पर राम का मायावी शीर्ष और धनुष भी अन्तर्द्धान हुए (सर्ग ३२) तब सरमा ने सीता के पास आकर रावण की माया का रहस्य प्रकट किया तथा यह आश्वासन भी दिया कि राम समुद्र पार कर चुके हैं और मैंने उन्हे अपनी आँखो से देखा है (सर्ग ३३)। अनन्तर सरमा ने राम के पास सीता का सन्देश ले जाने का प्रस्ताव रखा किन्तु सीता ने उससे निवेदन किया कि वह रावण-सभा के निर्णयो का पता लगाकर आये। सरमा ने ऐसा ही किया तथा लौटकर कहा कि रावण अपनी माता तथा मन्त्रियो का सत्परामर्श ठुकराकर कर सीता को लौटाना हठपूर्वक अस्वीकार करता है (सर्ग ३४)।

परवर्ती रामकथाओ मे इस वृत्तान्त मे अनेक गौण परिवर्तन किए गए हैं। रघुवश, सेतुबंध, बलरामदास रामायण, रामायण कंकविन तथा सेरीराम मे सरमा के

१. दारुपचवक्त्र का अर्थ है—काठ का बना हुआ कीर्तिमुख, वह रुद्र का प्रतीक माना जाता है। दे० पुराणम् (वाराणसी), भाग २, पृ० ६७-१०६।

घ। लंका का अवरोध

५८२. रावण के गुप्तचरों के विषय मे जो सामग्री तीनो पाठो मे मिलती है, वह इस प्रकार है[1]। वानर-सेना के समुद्र पार करने के बाद रावण ने शुक तथा सारण को शत्रु-सेना की शक्ति का पता लगाने के लिए भेज दिया। शुक तथा सारण वानर-रूप धारण कर राम की सेना मे आ गए, विभीषण ने उनको पहचान लिया और राम के सामने उपस्थित किया किन्तु राम ने उनको रावण के पास लौटने दिया। दोनो ने लका पहुँचकर सीता को वापस देने का परामर्श दिया। (सर्ग २५)। रावण ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया और सारण तथा शुक के साथ एक ऊँचे भवन पर चढ़कर वानर-सेना का निरीक्षण किया (सर्ग २६-२८)। अन्त मे रावण ने शत्रुदल की प्रशसा करने के कारण दोनो की भर्त्सना की तथा शार्दूल के नेतृत्व मे नए गुप्तचरो को भेज दिया। पहले की भाँति विभीषण ने उनको पहचानकर पकड़वाया, वह शार्दूल को राम के पास ले गया और राम ने उनको मुक्त करने का आदेश दिया। शार्दूल ने लौटकर रावण को यह समाचार दिया कि राम की सेना ने सुवेल पर्वत पर पड़ाव डाला है (सर्ग २९-३०)।

राजशेखर ने शुक-सारण को गुप्तचर न मानकर रावणदूतो के रूप मे प्रस्तुत किया है। वे रावण द्वारा द्वन्द्वयुद्ध का प्रस्ताव राम के पास ले आते हैं, राम उस द्वन्द्व-युद्ध के लिए अपनी ओर से अगद को नियुक्त करते हैं, और रावण अपने पुत्र नरान्तक को चुन लेता है, जो अंगद द्वारा मार डाला जाता है (दे० बालरामायण अक ८, ३-४)।

अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण मे शुक को रामभक्त के रूप मे चित्रित किया गया है, जो अपने पूर्वजन्म मे एक धर्मभीरु ब्राह्मण था (दे० आगे अनु० ६२५)। रामचरितमानस मे भी इस कथा की ओर निर्देश मिलता है, इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने माना है कि शुक ने राम के यहाँ से लौटकर रावण को लक्ष्मण का एक पत्र दिया था जिसमे सीता को लौटाने की चेतावनी थी (दे० ५, ५२)।

रामकियेन (अध्याय २५) के अनुसार शुक्रसार नामक गुप्तचर गीध बनकर रामसेना के पास पहुँचा तथा अनन्तर वानर के रूप मे राम के शिविर का निरीक्षण

---

१ गुप्तचरो का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६२)। दाक्षिणात्य पाठ मे शुक को दो बार भेजा जाता है। प्रथम बार रावण उसको सुग्रीव के लिये एक सन्देश देता है, जिसे सुग्रीव ठुकराता है (सर्ग २०)। बाद मे शुक रावण को अपनी विफलता का समाचार देता है (सर्ग २४)। शुक के इस प्रथम प्रेषण का वर्णन अन्य पाठों मे नही मिलता।

बाद मे सीता ने दोनो सिर देखकर आत्महत्या करना चाहा किन्तु त्रिजटा ने उनको यह कहकर रोक दिया कि मैं पहले सच बात का पता लगाने जाऊँगी। इस पर त्रिजटा राम के पास जाती है तथा सीता द्वारा बुना हुआ राम का कमरबन्द लिए लौटती है। दूसरे दिन त्रिजटा छल-कपट के कारण रावण की निन्दा करती है तब रावण उसे मार डालने पर उतारू हो जाता है किन्तु त्रिजटा सीता की शरण लेती है। इसके बाद रावण एक लोहे के किले मे सीता को बन्द कर देता है तथा अपने किसी मन्त्री की अध्यक्षता मे एक पूरी सेना को इसके पहरे पर तैनात कर देता है।

महानाटक (अक १०) मे रावण की एक अन्य युक्ति का उल्लेख है। राम का मायामय शीर्ष दिखलाने के बाद रावण राम का रूप धारण कर लेता है तथा रावण के दस मायामय शीर्ष हाथ मे लिये सीता के पास आता है किन्तु सरमा सीता को सावधान करती है। **कंब रामायण** (६, १६) के अनुसार मायाजनक की भी चर्चा है। रावण के आदेश पर मरुत नामक राक्षस ने जनक के वेष मे आकर सीता से अनुरोध किया कि वह रावण को पतिस्वरूप ग्रहण करे।[1]

५८४ वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे अगद-दूतकार्य के वर्णन पूर्व ही सुग्रीव-रावण-द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन किया गया है। कथा इस प्रकार है— राम वानर-सेनापतियो के साथ सुवेल पर्वत पर चढकर लङ्का का निरीक्षण कर रहे थे। सुग्रीव सहसा पर्वत पर से लङ्का के गोपुर तक कूदकर रावण के पास पहुँचा तथा उसका मुकुट छीनकर भूमि पर पटक दिया। अनन्तर सुग्रीव रावण को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त कर राम के पास लौटा।[2]

सुवेल-पर्वत पर आसीन राम के एक चमत्कार का बहुधा उल्लेख होता है। **अध्यात्म रामायण** (६, ५, ४१-४५) के अनुसार राम ने सुवेल पर्वत पर से लका के राजभवन पर विराजमान रावण को उसके मन्त्रियो के साथ देखा था और उन्होंने एक ही बाण से रावण के हजारो श्वेत छत्र तथा दस मुकुट काट डाले थे। इसपर रावण लज्जित होकर अपने भवन के अन्दर चला गया था। **आनन्द रामायण** (१, १०, २४६), अग्निवेश रामायण (६५), **तोरवे रामायण** (६, ९), **भावार्थ रामायण** (६, २), रंग-

---

१. रावण की अन्य युक्तियो का ऊपर उल्लेख हो चुका है, दे० अनु० ५००,५४२।

२. दे० सर्ग ४०। कब रामायण (६, ९) रगनाथ रामायण (६, ३८), आनन्द रामायण (१, १०, २४६), तोरवे रामायण (६, ९) आदि रचनाओ मे सुग्रीव-रावण के इस द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण के सभी पाठो के अनुसार सुग्रीव ने कुम्भकर्ण का सामना किया (दे० सर्ग ६७), तथा कुम्भ (सर्ग ७६), विरूपाक्ष (सर्ग ९६) और महोदर (सर्ग ९७) का वध किया।

स्थान पर त्रिजटा का उल्लेख है।[1] महानाटक (अक १०) तथा रगनाथ रामायण (६, ३५) मे एक आकाशवाणी सीता को आश्वासन देती है कि यह राम का वास्तविक सिर नही है। **आनन्द रामायण** (१, ११, २२१) के अनुसार ब्रह्मा ने पहले ही सीता को बता दिया था कि रावण तुमको राम का कृत्रिम सिर दिखलाने वाला है। इस रचना मे राम का शीर्ष मय का बनाया हुआ माना जाता है तथा इस घटना को मेघनाद-वध के पश्चात् रखा गया है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ के अनुसार सीता ने सूर्य देवता से प्रार्थना की थी तथा सूर्य ने अपनी एक किरण राम के शीर्ष पर डाल कर उसे कृत्रिम सिद्ध किया था। अभिषेक नाटक (अक ५), महानाटक, वलरामदास रामायण, अग्निवेश रामायण (८२), रामायण ककविन (सर्ग १७), सेरीराम तथा रामरहस्य (क्रीडोपकरण ११) मे सीता को राम-लक्ष्मण दोनो के मायामय शीर्ष दिखलाए जाते है। कृत्या-रावण (अक ६) मे प्रस्तुत प्रसंग को एक नवीन रूप दिया गया है। रावण ने दारुणिका नामक राक्षसी को सीता का वध करने का आदेश दिया था। दारुणिका को इसका साहस नही हुआ, अत. वह एक ऐसा उपाय काम मे लायी जिससे सीता अपने आप आत्महत्या के लिए तैयार हो जाएँ। दारुणिका ने सीता के सामने एक माया-राम का वध कराया। अपने पति को मृत समझकर सीता ने आग मे प्रवेश करने का निश्चय किया।

हिन्देशिया की रामकथाओ मे त्रिजटा को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया गया है। **रामायण ककविन** (सर्ग १७) के अनुसार सीता ने राम-लक्ष्मण के मायामय शीर्ष देखने के पश्चात् मध्यरात्रि मे आग जलाकर आत्महत्या करना चाहा। त्रिजटा सीता का साथ देने को तैयार थी किन्तु वह पहले अपने पिता विभीषण को सूचित करने गई तथा बाद मे सीता के पास लौटकर उसने राम-लक्ष्मण के कुशल-क्षेम का समाचार सुनाया। **सेरीराम** का वृत्तान्त इस प्रकार है रावण के निरन्तर आग्रह करने पर सीता ने किसी दिन उससे कहा—जब तक राम जीवित हैं, मैं कदापि तुम्हारी पत्नी नही बन सकती और तुम्हारे हाथ मे राम का शीर्ष देखने पर ही अपने पति की मृत्यु पर विश्वास करूँगी। यह सुनकर रावण दो कैदियो का सिर काटकर[2] तथा उन पर मुकुट रखकर दोनो को सीता के पास ले आया। त्रिजटा ने रावण को सीता से भेट करने नही दिया किन्तु दोनो शीर्ष ग्रहण कर उससे कहा कि कल स्नान करने के बाद आ जाना।

---

१ तोरवे रामायण (६, १२) मे सरमा और त्रिजटा दोनो रावण के छल-कपट का रहस्योद्घाटन करती हैं।

२. वलरामदास के अनुसार भी रावण ने उसके लिए दो राक्षसो का वध किया था।

अंगद द्वारा रावण के पास यह सदेश भेज दिया कि यदि सीता को नही लौटाओगे तो मैं सब राक्षसों का नाश करूँगा। अंगद के मुँह से राम का यह सन्देश सुनकर रावण ने क्रुद्ध होकर उसका वध करने का आदेश दिया। चार राक्षसो ने अंगद को पकडना चाहा किन्तु अगद चारो को उठाकर इतने वेग से एक भवन पर कूद पडा कि ये राक्षस निस्सहाय भूमि पर गिर पडे। तव अगद उस भवन को ढहाकर राम के पास लौटा।[1]

परवर्ती रामकथा साहित्य मे अंगद के दूतकार्य को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया गया है। महानाटक (अक ८) तथा अभिनन्दकृत रामचरित (सर्ग २८) मे पहले-पहल **अंगद-रावण-संवाद** का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। महानाटक के अनुसार अगद अपने पिता के वध के कारण राम से वैर रखता है और इसीलिए रावण को फटकारता है जिससे वह राम से युद्ध करने का निश्चय करे। कृत्तिवास रामायण, रामचरितमानस तथा वलरामदास रामायण की तत्सवन्धी सामग्री महानाटक पर आधारित है।

कृत्तिवास रामायण (६, १५) के अनुसार अगद ने सभा-भवन मे पहुँच कर सैकडो रावणो को देखा था। **तोरवे रामायण** (६, १०) मे भी अगद राक्षसो की सभा मे पहुँचकर रावण को पहचानने मे असमर्थ है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ मे अगद के ११ रावणों को देखने की चर्चा है। महानाटक (अक ८, ३) मात्र मे इसका उल्लेख किया गया है कि अगद ने रावण के सिंहासन के ऊपर चढकर रावण का अपमान किया था, अन्य रामकथाओ मे वहुधा माना गया है कि अगद अपनी **पूँछ का कुण्डल** वनाकर एक सिंहासन की भाँति उस पर वैठ गया था, उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, १०; २२१), तोरवे रामायण (६, १०), भावार्थ रामायण (६, ७), कृत्तिवास रामायण (६, १५), सारलादास महाभारत (द्रोणपर्व); रामकेर्ति (सर्ग ८), रामकियेन (अध्याय २६), कविचन्द्र कृत अगद रायवार।

अगद द्वारा **वलप्रदर्शन** तथा राक्षसो की पराजय के विषय मे अनेक नई घटनाओ की कल्पना कर ली गई है। रामचरितमानस के अनुसार अगद ने प्रण करके पैर रोपा था जिसे उठाने मे कोटि सुभट असमर्थ ही रहे—**सभा माझ पन करि पद रोपा** (६, ३४)। वहुत सी रचनाओ मे अगद के रावण पर भी प्रहार करने का उल्लेख है,

१. युद्ध के वर्णन मे अगद का वारम्वार उल्लेख किया गया है। इन्द्रजित् (सर्ग ४३-४४) तथा कुम्भकर्ण (सर्ग ६६) का सामना करने के अतिरिक्त अगद ने नरांतक (सर्ग ६९), कंपन तथा प्रजघ (सर्ग ७६) और महापार्श्व (सर्ग ९८) का वध किया था। अगद द्वारा वज्रदंष्ट्र का वध (सर्ग ५४) केवल दाक्षिणात्य पाठ उल्लिखित है।

नाथ रामायण (६, ४१), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (६, १३) आदि मे भी इस घटना का वर्णन किया गया है। रंगनाथ रामायण मे माना गया है कि राम का एक ही बाण विभक्त होकर एक ही समय ८०००० छत्र, ८०००० पखे तथा ८०००० चामर काटकर पुनः राम के तूणीर मे लौट आया था। कृत्तिवास (६, ४) के अनुसार विभीषण ने रावण को पहचानकर राम को सुझाव दिया था कि रावण पर बाण चलाया जाय किन्तु ज्योही राम ने बाण चढ़ाया रावण भाग गया था। विदेशी रामकथाओ मे रावण के छत्र के विषय मे निम्नलिखित सामग्री मिलती है। सेरीराम के अनुसार जाम्बवान ने सेतु पार करने के पूर्व ही राम से कहा कि रावण ने एक नवीन भवन का निर्माण किया है और इसपर ब्रह्मा के आदर मे १७ छत्र स्थापित किए है। जाम्बवान ने यह भी सुझाव दिया कि राम उनको नष्ट कर दे। राम की इस आपत्ति पर कि ब्रह्मा कही क्रुद्ध न हो जायें, जम्बवान ने उत्तर दिया कि आप विष्णु के वशज हैं, जो ब्रह्मा से महान् हैं। रामकियेन (अध्याय २६) का वृत्तान्त इस प्रकार है। ब्रह्मा ने रावण को एक चमत्कारी छत्र प्रदान किया था। जब जब रावण उस छत्र को खोल देता था तब लका के चारो ओर गहन अधकार छा जाता था जिससे वानर-सेना का कोई भी योद्धा लका देखने मे समर्थ नही हो सकता था। सुग्रीव ने कूदकर छत्र को छिन्न-भिन्न करके लका का अन्धकार दूर कर दिया।

कृत्तिवास रामायण (६, १४) मे लकावरोध के पश्चात् शिव-पार्वती-कलह का भी उल्लेख मिलता है। प्रसग इस प्रकार है। सब देवता अन्तरिक्ष मे स्थित होकर युद्ध देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पार्वती ने शकर से अनुरोध किया कि वह अपने भक्त रावण की रक्षा करे। शकर ने उत्तर दिया—"तुम जाकर लका की रक्षा करो। हजारो वर्ष तक तपस्या करने पर भी रावण अमरत्व का वरदान नही प्राप्त कर सका। अब विष्णु अवतार लेकर उसका वध करने आये हैं। रावण नही बच सकता। तुम व्यर्थ ही मेरी निन्दा करती हो।' बालरामायण (८, २) मे माना गया है कि रावण ने शुक-सारण को भेज देने के पश्चात् शकर की पूजा करते समय पार्वती को स्त्री समझ कर उनको प्रणाम नही किया था, इसी कारण गिरिजा को क्रोध हुआ और उन्होने शकर का (वर देनेवाला) बाँया हाथ खीच लिया था।

५८५. वाल्मीकि रामायण की प्रामाणिक सामग्री के अनुसार राम ने समुद्र पार कर लका का अवरोध[1] किया था तथा विभीषण के परामर्श के अनुसार युद्ध के पूर्व

१. राम ने अगद को दक्षिण द्वार पर, हनुमान् को पश्चिम द्वार पर और नील को पूर्व द्वार पर नियुक्त करके स्वय उत्तर द्वार पर लक्ष्मण के साथ रावण को सामना करने का निश्चय किया। सुग्रीव एक विशाल सेना के साथ बीच में डट गये। प्रक्षिप्त सर्ग ३७ मे भी सेना के इस नियोजन का वर्णन है।

ङ । नागपाश

५८६. लका को वानर-सेना से अवरुद्ध जानकर रावण ने उसका सामना करने के लिए अपनी सेना को भेज दिया। इस प्रथम तुमुल युद्ध के वर्णन मे अनेक द्वन्द्वयुद्धो का भी उल्लेख है किन्तु अगद द्वारा इन्द्रजित् की पराजय तथा इन्द्रजित् के नागपाश मे राम-लक्ष्मण का बँध जाना इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है। ब्रह्मा के वरदान से अदृश्य[1] होकर इन्द्रजित् ने बहुत से योद्धाओ को तथा अन्त मे राम-लक्ष्मण को भी नागमय शरो से आहत किया जिससे राम तथा लक्ष्मण दोनो निश्चेष्ट होकर रणभूमि मे पडे रहे। इन्द्रजित् दोनो को मृत समझकर रावण को इसकी सूचना देने गया (सर्ग ४२-४६)। यह सुनकर रावण ने सीता तथा त्रिजटा को पुष्पक पर बैठाकर रणभूमि मे मूर्च्छित पडे हुए राम-लक्ष्मण को दिखलाया। सीता दोनो को मृत समझ कर विलाप करने लगी किन्तु त्रिजटा[2] ने उनके जीवित होने के निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए—(१) रक्षा करने वाले वानर अधिक व्याकुल नही प्रतीत होते हैं, (२) पुष्पक विधवाओ का वहन[3] नही करता, (३) राम तथा लक्ष्मण के मुख पर मृत्यु का विकार परिलक्षित नही हो रहा है (सर्ग ४७-४८)। बाद मे राम चेतना प्राप्त कर कर लक्ष्मण के लिए विलाप करने लगे (सर्ग ४९) और सुषेण ने यह प्रस्ताव रखा कि ओषधि ले आने के लिए हनुमान् को द्रोणाचल भेज दिया जाय। इतने मे गरुड को आते देखकर नाग भाग गए तथा गरुड के स्पर्श मात्र से राम और लक्ष्मण स्वस्थ हो गये (सर्ग ५०)।

गरुड का यह आगमन प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६३)। पश्चिमोत्तरीय पाठ मात्र मे इस प्रसग मे नारद का भी उल्लेख किया गया है—सुषेण के प्रस्ताव के बाद नारद ने राम के पास आकर उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाया तथा गरुड को

---

१. विभीषण को छोडकर कोई इन्द्रजित् को नही देख सकता था, दे० ऊपर अनु० ५६६।

२. रामायण ककविन के अनुसार वह सीता का आत्महत्या-विचार दूर करती है और अपने पिता विभीषण से मिलकर सीता के पास लौटती है तथा आश्वासन देती है कि राम सकुशल है (सर्ग २१)। अन्यत्र भी सीता के आत्महत्या-विचार की चर्चा है, दे० अनु० ४६२, ५२४, ५४८, ५८३, ७४१ और वाल्मीकि रामायण २, ३०, १६। तोरवे रामायण (६, १६) मे त्रिजटा के स्थान पर इस प्रसग मे सरमा की चर्चा है।

३ इस तर्क का उल्लेख रगनाथ रामायण (६, ४८), रामकियेन (अध्याय ३०) आदि मे भी मिलता है।

उदा० नृसिंह पुराण (५२, २०), सारलादास महाभारत (द्रोणपर्व), आनन्द रामायण (१, १०, २३६); तोरवे रामायण (६, १०), भावार्थ (६, ६), रामकेर्त्ति (सर्ग ८)। कृत्तिवास ने रावण-अंगद के मल्लयुद्ध का वर्णन किया है तथा यह भी माना है कि अगद रावण का मुकुट राम के पास ले आया था (६, १७)। भावार्थ रामायण (६, ६), वलरामदास रामायण, रामचन्द्रिका (१३, ३४) आदि रचनाओ मे भी इसका उल्लेख मिलता है। रामचरितमानस (६, ३२) के अनुसार अगद के वल-प्रदर्शन करने पर पृथ्वी हिलने लगी तथा रावण के मुकुट गिर गये। कुछ तो रावण ने उठाकर अपने सिर पर रखे, कुछ अगद ने राम के पास फेंक दिए थे। आनन्द रामायण (३, १०, २३७-२४२) तथा भावार्थ रामायण के अनुसार रावण के सभा-मण्डप की छत अगद के सिर पर अटक गई थी; और राम ने अगद को उसे वापस ले जाने का आदेश दिया था। सारलादास महाभारत के वनपर्व मे इस अवसर पर अंगद द्वारा मन्दोदरी का अपमान वर्णित है तथा द्रोणपर्व मे माना गया है कि रावण मुकुट के अतिरिक्त अगद छत को काँख मे दवा कर राम के पास ले आया था। तोरवे रामायण (६, ३०) के अनुसार रावण की सेना के साथ अंगद का युद्ध हुआ तथा राम का आदेश पाकर हनुमान् ने अगद को ले आने के लिए लङ्का मे प्रवेश किया था।

अनेक रामकथाओ मे अगद के स्थान पर **हनुमान्** को रावण के पास भेजा जाता है। गुणभद्र के **उत्तर पुराण** (दे० ऊपर अनु० ५२४) के अतिरिक्त **विलंका रामायण** तथा **सेरीराम** मे हनुमान् अगद का स्थान लेते है। **वलरामदास रामायण** मे माना गया है कि अंगद के प्रत्यागमन के पश्चात् हनुमान् राम का वाण लेकर रावण को धमकी देने गए थे। **सेरीराम** मे अगद के दूत-कार्य का उल्लेख नही मिलता किन्तु कुम्भकर्ण के वध के बाद राम हनुमान् द्वारा रावण के पास एक पत्र भेज देते हैं, जिसमे सीता को लौटाने तथा सधि करने का प्रस्ताव है। रावण राम का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत है वशर्ते कि उसकी वहन को विरूपित करने वाले लक्ष्मण को वाँध कर लङ्का भेज दिया जाय।[1] **रामचन्द्रिका** (३६, ३२) मे भी रावण निम्न-लिखित शर्तों पर सीता को लौटाने के लिए तैयार है—सुग्रीव को मारकर अगद को राज्य दिया जाय, विभीषण को वांध कर लङ्का भेजा जाय, सेतु नष्ट किया जाय, हनुमान् की पूंछ जला दी जाय तथा राम रुद्र की पूजा करे।

---

१ शेलाबेर के पाठ तथा वलरामदास रामायण मे हनुमान् के अपनी कुण्डली-कृत पूंछ पर बैठ जाने का उल्लेख है। रावण के सधि-प्रस्तावो का उल्लेख आगे किया गया है (दे० अनु० ५६७)।

की। इस पर राम ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा—मुझे उस रूप मे देखकर वानर-सेना किंकर्तव्यविमूढ हो जायगी। तब गरुड ने अपने पख पसार कर राम को छिपा लिया और राम ने कृष्ण रूप धारण कर लिया। हनुमान् ने योग के बल पर सारा वृत्तान्त जानकर कृष्णावतार के समय गरुड से बदला लेने का निश्चय किया (दे० अनु० ६८६)।

वाल्मीकि रामायण मे तारा के पिता वानर-सेनापति सुषेण को वैद्य भी माना गया है। प्रस्तुत प्रसङ्ग मे इसकी ओर सकेत मिलता है, इसके अतिरिक्त वह इन्द्रजित्-वध के पश्चात् लक्ष्मण तथा अन्य योद्धाओ की चिकित्सा करता है (दे० सर्ग ९१) तथा हनुमान् द्वारा लाई हुई ओषधियो की सहायता से रावण-शक्ति से आहत लक्ष्मण को स्वास्थ्य-लाभ प्रदान करता है (सर्ग १०१)। अनेक परवर्ती रचनाओ मे वह राक्षस-वैद्य माना गया है, जिसे हनुमान् लङ्का से ले आते है, उदाहरणार्थ—महानाटक (अङ्क १३, १७), रामचरितमानस (६, ५५), पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३। खोतानी रामायण मे जातको का सुप्रसिद्ध वैद्य जीवक सुषेण का स्थान लेता है।

च। हनुमान् की हिमालय-यात्राएं।

५८७ हनुमान् की हिमालय-यात्रा-विषयक सामग्री प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६४), फिर भी परवर्ती रामकथाओ मे इस प्रसङ्ग को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया गया है। प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे तीन अवसरो पर हनुमान् को हिमालय भेज देने की चर्चा मिलती है।[1]

(१) नाग-पाश के प्रसङ्ग मे इसका प्रस्ताव मात्र किया गया है क्योकि गरुड के आगमन के कारण हनुमान् को इस यात्रा की आवश्यकता नही होती (दे० अनु० ५८६)। **आनन्द रामायण** (१, ११, १०-१८) मे माना गया है कि उस अवसर पर भी सेना के लिए ओषधि ले आने के उद्देश्य से हनुमान् को हिमालय भेजा गया था।

(२) कुम्भकर्ण-वध के पश्चात् इन्द्रजित् के द्वितीय युद्ध का वर्णन मिलता है जिसमे वह अदृश्य होकर ब्रह्मास्त्र से राम-लक्ष्मण को आहत करता है तथा बहुत से योद्धाओ का वध भी करता है। जाम्बवान के आदेशानुसार हनुमान् रात को हिमालय जाते हैं तथा चार ओषधियो को न देखकर समस्त ओषधि-पर्वत ले आते है तथा बाद में उसे वापस ले जाते है। ओषधियो की सुगन्ध मात्र से सभी योद्धाओ को स्वास्थ्य-

१ इस महान् कार्य के अतिरिक्त हनुमान् रावण (सर्ग ५९) तथा इन्द्रजित् (सर्ग ८४, ८६, ८९) का सामना करते और निम्नलिखित राक्षस-वीरो का वध भी करते है—धूम्राक्ष (सर्ग ५२), अकम्पन (सर्ग ५६), त्रिशिरा (सर्ग ७०), निकुंभ (सर्ग ७७)।

बुलाने का परामर्श दिया[1]। सेतुबन्ध (१४, ५५) मे विभीषण राम को समझाता है कि पाश के बाण वास्तव मे सर्प ही है, जिस पर राम गरुड को बुलाते हैं।

महाभारत के **रामोपाख्यान** (३, २७३) मे विभीषण स्वय प्रज्ञास्त्र द्वारा राम और लक्ष्मण को शरपाश से मुक्त कर देता है। **गोविन्द रामायण** (पृ० १३७) के अनुसार सीता ने नाग-मन्त्र पढकर नागपाश काट दिया था :

पढ़ नाग मन्त्र संघरी पाश। पति भ्रात जिवइ चित भा हुलास॥

अनेक रचनाओ मे राम नागपाश द्वारा नही बँध जाते है। **पउमचरियं** (पर्व ६०) के अनुसार भुजङ्गपाश ने लक्ष्मण की पताका पर विद्यमान गरुड को देख लिया तथा हार मानकर भाग गया।[2] **कंब रामायण** (६, १८) मे लक्ष्मण मात्र नागपाश से बाँधे जाते तथा गरुड द्वारा मुक्त किये जाते है। **रामकियेन** (अध्याय २६) मे बहुत से वानरो के साथ लक्ष्मण के नागपाश द्वारा बँधे जाने का वर्णन मिलता है। राम आकर विभीषण के परामर्श के अनुसार गरुड को बुलाते है और गरुड के आगमन पर सभी चेतना प्राप्त कर लेते है। **अध्यात्म रामायण** मे नागपाश का प्रसङ्ग पूर्ण रूप से छोड दिया गया है।

सेरीराम मे इस प्रसङ्ग को एक नया रूप दिया गया है। इन्द्रजित् को एक विशाल सेना के साथ आकाश-मार्ग से आते देखकर हनुमान् ने राम को परामर्श दिया कि वानर सेना की रक्षा के लिए गरुड महावीरू को बुलाया जाय। गरुड महावीरू के आने के बाद इन्द्रजित् पत्थर बरसाने लगा तथा गरुड ने राम के आदेशानुसार समस्त वानर-सेना पर अपने पङ्ख फैला दिये। बाद मे गरुड ने पत्थरो के भार से व्यग्र होकर राम से सहायता माँगी जिस पर राम ने गरुड़ को ऊपर उठाकर तथा उसका शरीर हिलाकर उसको पत्थरो के भार से मुक्त कर दिया। इन्द्रजित् चालीस दिनो तक पत्थरो की वर्षा करता रहा और राम प्रतिदिन इसी प्रकार से गरुड को पत्थरो के भार से मुक्त करते रहे।

कृत्तिवास रामायण (६, २१) मे गरुड की कृष्णभक्ति तथा हनुमान् की अनन्य रामभक्ति के विषय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। राम ने शरपाश से मुक्त होकर गरुड को एक वर दिया था और गरुड ने राम का कृष्ण रूप देखने की अभिलाषा प्रकट

---

१ दे० ६, २६, ७-४१। रगनाथ रामायण (६, ५०), आनन्द रामायण (१, ११, ८), भावार्थ रामायण (६, ५०) आदि मे भी पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार नारद की चर्चा है।

२ इस रचना मे इन्द्रजित् राम-लक्ष्मण के स्थान पर सुग्रीव-भामण्डल को भुजङ्गपाश से बाँध लेता है।

राक्षसों का आक्रमण तथा पराजय। भरत-हनुमान्-संवाद का प्रसंग गौडीय पाठ मात्र में मिलता है (दे० अनु० ५८८)।

कालनेमि की कथा इस प्रकार है। हनुमान् को जाते देखकर रावण ने उनके मार्ग में विघ्न डालने के लिए कालनेमि को भेज दिया। कालनेमि ने हिमालय जाकर तपस्वी का रूप धारण किया तथा गंधमादन पर्वत के एक मायाश्रम में हनुमान् का स्वागत किया। तपस्वी ने हनुमान् को एक सरोवर के पास भेजा जिसमें एक ग्राही निवास करती थी। ग्राही ने हनुमान् को निगलना चाहा किन्तु वह स्वयं मार डाली गई, अनन्तर वह अप्सरा के रूप में प्रकट होकर तथा अपना परिचय इस प्रकार देकर वैश्रवण-आलय लौट गई—"मैं गंधकाली[1] नामक अप्सरा हूँ, एक मुनि की अवज्ञा करने के कारण मुझे ग्राही बन जाने का शाप दिया गया था।" इसके बाद हनुमान् ने आश्रम लौटकर कालनेमि का वध किया। उदीच्य पाठों की यह कथा बहुत सी परवर्ती रामकथाओं में पाई जाती है। उदाहरणार्थ—अध्यात्म रामायण (६, ६-७), रंगनाथ रामायण (६, १२४), महानाटक (१३, ३२), आनन्द रामायण (१, ११, ४७), तोरवे रामायण (६, २८), माधवकंदली रामायण (६, ४५), कृत्तिवास रामायण (६, ७३), बलरामदास रामायण, भावार्थ रामायण (६, ४५), रामचरितमानस, सेरीराम।

अध्यात्म रामायण तथा इस पर आधारित रामचरितमानस आदि रामकथाओं में कालनेमि को रामभक्त के रूप में चित्रित किया गया है। इन रचनाओं में अप्सरा प्रायः कपट-मुनि (कालनेमि) का रहस्य प्रकट करती है। अप्सरा के शाप के विषय में मतभेद है, वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठों के अनुसार उसने एक यात्रा के अवसर पर किसी मुनि को नहीं देखा था और इसी कारण अनजाने ही उसकी अवज्ञा की थी। आनन्द रामायण (१, ११, ५६) में माना गया है कि अप्सरा ने मुनि का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार किया था। रंगनाथ रामायण (६, १२६) में अप्सरा के शाप की कथा रावण से भी सम्बन्ध रखती है। धान्यमालिनी शाण्डिल्य नामक मुनि का प्रेम-प्रस्ताव स्वीकार कर उनके यहाँ चली आई थी। उस दिन रात को रावण उसे पर्वत के शिखर पर देखकर आसक्त हुआ तथा उसके साथ रमण करके अतिकाय (दे० अनु० ६७०) को उत्पन्न किया। धान्यमालिनी उस पुत्र को रावण को सौंपकर मुनि के पास लौटी जिस पर मुनि ने उसे शाप दिया। बलरामदास के अनुसार दक्षकन्या गंधमालिनी ब्रह्मा के

१. अप्सरा के कई नाम मिलते हैं, गंधकाली-गौडीय पाठ, कृत्तिवास रामायण; गंधकाली-महानाटक (१३, ३२), गंधमालिनी-बलरामदास, विद्युन्माला-पश्चिमोत्तरीय पाठ (८१, ८३), विद्युन्मालिनी-भावार्थ रामायण, धान्यमाली-अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, धान्यमालिनी-रंगनाथ रामायण।

लाभ हो गया।[1] इस प्रथम यात्रा के वर्णन मे किसी विशेष घटना का उल्लेख नही किया गया है तथा परवर्ती रचनाओ मे भी इसका कोई विकास नही हुआ। कम्ब रामायण (६, २१) तथा रामकियेन (अध्याय २६) मे माना गया है कि इन्द्रजित् ने लक्ष्मण तथा बहुत से वानरो को ब्रह्मास्त्र द्वारा आहत किया था। लक्ष्मण को आहत देखकर राम रणभूमि मे मूच्छित होकर गिर पडे। उसी अवसर पर रावण ने सीता को पुष्पक पर बिठाकर उनको निस्सहाय पडे हुए राम और लक्ष्मण को दिखलाया (दे० कम्ब ६, २२ तथा रामकियेन, अध्याय ३०)। सेरी राम के अनुसार इन्द्रजित् ने रात्रि के समय एक मायामय बाण द्वारा विभीषण को छोड़कर समस्त वानर-सेना को निद्रा मे मग्न कर दिया तथा इन्द्रजित् पास आकर वानरो का वध करने लगा किन्तु विभीषण ने उसे भगा दिया और राम, लक्ष्मण तथा ३३ सेनापतियो को जगाया। तब राम ने मलायकोरी से 'विशल्यावीनि' को ले आने के लिए हनुमान् को भेज दिया। इसी रचना के एक अन्य स्थल पर भी हनुमान् एक पर्वत हिमालय से किष्किधा ले आते है (दे० अनु० ६५५)।

(३) हनुमान् की द्वितीय यात्रा के वर्णन का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है। इसके विषय मे जो सामग्री वाल्मीकि के तीनो पाठो मे मिलती है वह इस प्रकार है। रावण की शक्ति से लक्ष्मण को आहत देखकर राम विलाप करने लगे किन्तु सुषेण ने उनको आश्वासन दिया कि लक्ष्मण जीवित है। इसके अनन्तर सुषेण के परामर्श के अनुसार विशल्याकरणी ओषधि[2] ले आने के लिए हनुमान् को भेजा गया। हनुमान् पहले की भाँति समस्त ओषधि-पर्वत ले आये और सुषेण ने ओषधि पीस कर लक्ष्मण को सूँघने को दिया (दे० अनु० ५६६)। प्रस्तुत प्रसग के वर्णन मे उदीच्य पाठों मे निम्नलिखित अतिरिक्त सामग्री मिलती है—कालनेमि और ग्राही का वृत्तान्त; हिमालय के गंधर्वों की चुनौती तथा हनुमान् द्वारा उनका वध; ओषधि-पर्वत को वापस ले जाते समय[3]

---

१ दे० सर्ग ७३-७४। अध्यात्म रामायण (६, सर्ग ५) के अनुसार इन्द्रजित् ने राम तथा लक्ष्मण को छोडकर अन्य वानर-सैनिको को ब्रह्मास्त्र द्वारा पराजित किया था और राम ने वानर-सेना को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से हनुमान् को ओषधियाँ ले आने के लिये भेजा था। मलयालम अध्यात्म रामायण के अनुसार इसी यात्रा मे हनुमान् द्वारा कालनेमि का वध हुआ था।

२. पउमचरियं मे इस विशल्योषधि का मानवीकरण किया गया है। दे० अनु० ५६६।

३. सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने समय के अभाव के कारण पर्वत को समुद्र मे फेक दिया था। तोरवे रामायण (६, २८) मे पर्वत अपने आप अंतर्द्धान हो जाता है।

संधान किया। भरत का पराक्रम देखकर हनुमान् को सन्तोष हुआ और बाण से उतर-कर उन्होंने भरत के बाहुबल की प्रशंसा की। तत्पश्चात् रुद्रावतार हनुमान् पर्वत को उठाकर चले गए और अर्द्धरात्रि में ही लंका के निकट पहुँच गए। रंगनाथ रामायण (६, १२८) के अनुसार भरत ने स्वप्न में देखा कि राम और लक्ष्मण पंक के मध्य में छटपटा रहे हैं (वाल्मीकि रामायण में उनके एक अन्य स्वप्न का उल्लेख है, दे० २, ६६, १)। जागकर घर के बाहर निकलने पर उन्होंने वहाँ भी कई अपशकुन देख लिए तथा ब्राह्मणों को बुलाकर हवन आदि के द्वारा शांतिकर्म कराया। उसी समय हनुमान् आकाश से भरत को देखकर शंका करने लगे कि यह तो राम नहीं हैं, किन्तु सीता और लक्ष्मण को राम कहाँ छोड़ सकते हैं, ऐसा सोचकर वह लंका की ओर चल पड़े। उधर भरत ने भी हनुमान् को देखकर उन्हें बाण से नीचे गिराने का निश्चय किया किन्तु आकाशवाणी ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। तोरवे रामायण (६, ४७) में कथा इस प्रकार है। भरत ने पिछली रात में लक्ष्मण की मृत्यु सूचित करनेवाला स्वप्न देखा था और वह इस कुस्वप्न की शांति के लिए धर्मक्रिया कर ही रहे थे कि उन्होंने आकाश में हनुमान् को लंका की ओर जाते देखा तथा उन्हें अपशकुन समझकर नीचे गिराना चाहा किंतु आकाशवाणी ने उन्हें ऐसा करने से रोका। रंगनाथ रामायण की भाँति हनुमान् ने भी भरत-शत्रुघ्न को देख लिया तथा वह शंका करने लगे कि ये तो राम-लक्ष्मण नहीं हैं। आनन्द रामायण (१, ११, ६२-७०) में माना गया है कि भरत ने बाण मार कर हनुमान् के हाथ से पर्वत गिरा दिया। हनुमान् ने भरत को देखकर उन्हें राम ही समझ लिया किन्तु जब भरत पुनः बाण मारने के लिये उद्यत हुए तब उनका भ्रम दूर हुआ और उन्होंने भरत को अपने परिचय के साथ-साथ युद्ध का भी हाल सुनाया। अन्त में भरत ने बाण मारकर हनुमान् को पर्वत लौटा दिया और हनुमान उसे लंका ले गए। बाद में पर्वत को पुनः अपने स्थान पर रखकर हनुमान् ने लक्ष्मण के जीवित होने का शुभ समाचार भरत को सुनाया। परवर्ती रामकथाओं में महानाटक के अनुसार प्रायः माना गया है कि भरत ने बाण मारकर हनुमान को नीचे गिराया था, उदाहरणार्थ—सूरसागर (५६४), बलरामदास रामायण, रामचरितमानस (६,५८), गीतावली (६,१०), काश्मीरी रामायण, साकेत।[1] भावार्थ रामायण (४,४६) के अनुसार भरत ने हनुमान को इन्द्र समझकर उन पर रामनामांकित बाण चलाया था किन्तु वह बाण रामभक्त हनुमान को आहत नहीं करना चाहता था। अतः वह हनुमान

१. दे० सर्ग ११। साकेत के अनुसार संजीवनी ओषधि पहले ही से अयोध्या में विद्यमान थी। इससे आहत हनुमान् की चिकित्सा हुई और इसी को हनुमान लंका ले गए थे।

शाप से ग्राही वन गई थी। महानाटक मे कवकाली को 'रजनिचरवरा' की उपाधि दी गई है (अक १३, ३२)।

गौडीय (८२, ५८) तथा पश्चिमोत्तरीय (८१, ३६) पाठो मे हनुमान् से अनुरोध किया जाता है कि वह सूर्योदय के पूर्व ही लौटें—यावद्रात्रिर्न हीयते। सूर्योदय के पूर्व ही हनुमान् के आगमन की आवश्यकता का परवर्ती रामकथाओ मे प्रायः उल्लेख किया जाता है। कृत्तिवास रामायण (६, ७३) के अनुसार रावण के आदेशानुसार मध्यरात्रि मे ही सूर्योदय हुआ था किन्तु हनुमान् ने सूर्य को अपनी काँख मे दबा लिया था। भावार्थ रामायण (६, ३३) मे सूर्य राम से भयभीत होकर हनुमान् के लका मे पहुँचने के पहले उदित होने का साहस नही करते है। बलरामदास रामायण के अनुसार किसी ब्राह्मणी ने अपने पातिव्रत्य के बल पर बहुत देर तक सूर्योदय का समय टाल दिया था।

रामकियेन मे कुभकर्ण की शक्ति से (अध्याय २८), इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र से (अध्याय ३०) तथा रावण की शक्ति से (अध्याय ३३) आहत लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए हनुमान् के तीन बार ओषधि-पर्वत ले आने का वर्णन किया गया है।

५८८. ओषधि-पर्वम के आनयन के अवसर पर भरत से हनुमान् की भेंट का प्राचीनतम वर्णन वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ मे सुरक्षित है (६, ८२, ६०-१३८)। हिमालय की ओर जाते हुए हनुमान् को देखकर भरत को कौतूहल हुआ और उन्होंने वाण मारकर हनुमान् को नीचे गिराना चाहा किन्तु हनुमान् ने अपना परिचय देकर अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रकट किया। भरत के प्रश्न के उत्तर मे हनुमान् ने वनवास से लेकर लक्ष्मण के आहत होने तक का सारा वृत्तान्त सुनाया तथा भरत को विजयी राम के शीघ्र प्रत्यावर्तन का आश्वासन देकर हिमालय की ओर प्रस्थान किया। महावीर चरित मे भरत हनुमान की इस भेट का उल्लेख है (७, ६)।

परवर्ती रचनाओ मे प्रस्तुत प्रसग मे बहुधा एक स्वप्न का उल्लेख किया जाता है तथा यह भी प्रायः माना गया है कि हिमालय से लका जाते समय हनुमान्-भरत की भेंट हुई थी। महानाटक (१३, २१-३१) की कथा इस प्रकार है। सुमित्रा ने किसी रात को यह स्वप्न देखा कि एक साँप मेरी बायी भुजा खा रहा है। उस अपशकुन की शांति के निमित्त तुरन्त यज्ञ का आयोजन हुआ। शांतिमण्डप में उपस्थित होकर भरत ने पर्वत को ले जाते हुए हनुमान् को आकाश मे देखकर उन्हे वाण से नीचे गिरा दिया था। 'हा राम लक्ष्मण' पुकार कर हनुमान मूर्च्छित हो गये तथा वसिष्ठ उनको पर्वत की ओषधियो द्वारा चेतना मे लाए। युद्ध का वृत्तान्त सुनाने के पश्चात् हनुमान् ने भरत की परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा—"मैं थक गया हूँ, आप ही यह पर्वत लका ले चले।" यह सुनकर भरत ने पर्वत के साथ हनुमान को वाण पर बिठाकर धनुष-

है, अर्थात् मूलकासुर और कुभगर्भ (दे० अनु० ६४१)।

(४) दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार कुम्भकर्ण के जागने के विभिन्न प्रयत्नो का अतिरजित वर्णन किया गया है। अन्त मे १००० हाथी कुम्भकर्ण का शरीर कुचलकर जगाने मे सफलता प्राप्त करते है। उदीच्य पाठो के अनुसार हाथी भी असमर्थ ठहरे किन्तु अन्ततोगत्वा नाग-राक्षस-गन्धर्व कन्याओ के आभूषणो की भनकार, उनके सगीत और स्पर्श से कुम्भकर्ण जाग गया था (गौ० रा० ३७, ५५-६३, प० रा० ३६, ५४-६२)। परवर्ती रचनाओ मे कुम्भकर्ण के जागरण के वर्णन मे वहुधा अप्सराओ का उल्लेख किया गया है। भावार्थ रामायण (६, २०) मे घृताची, रभा, मेनका, उर्वशी आदि आठ प्रधान अप्सराओ के वुलाये जाने का वर्णन किया गया है, उर्वशी ने नारायण से प्रार्थना की थी कि वह कुम्भकर्ण से नीद का प्रभाव दूर कर दे। सेरीराम मे चार दासियाँ कुम्भकर्ण की नाक मे प्रवेश कर वाल उखाडना ही चाहती हैं कि वे कुम्भकर्ण की छीक से वाहर फेक डाली जाती हैं। इस रचना मे कुम्भकर्ण पैरो के वाल उखाडे जाने पर जागता है।

(५) वाल्मीकि रामायण के सभी पाठ इसमे सहमत हैं कि राम ने कुम्भकर्ण का वध किया था। उदीच्य पाठो के अनुसार कुम्भकर्ण ने रावण से कहा था कि नारद ने किसी दिन मुझसे विष्णु के अवतार राम का रहस्य प्रकट किया था। इसलिए रावण को राम से सधि कर लेनी चाहिए (गौ० रा० ४०, ३०-५३, प० रा० ४१, ३३-५६)। उत्तर मे रावण ने कहा कि मैं विष्णु के हाथ से मरकर परमगति प्राप्त करना चाहता हूँ—निहतो गंतुमिच्छामि तद्विष्णोः परमं पदम्। यह प्रसग दाक्षिणात्य पाठ मे नही मिलता किन्तु वह अध्यात्म (६,७), आनन्द (१,११,१४२), रगनाथ (६, ७०), भावार्थ रामायण (६, २२) और रामचरितमानस (६, ६३) आदि रचनाओ मे पाया जाता है। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरी पाठ (४६, ८२-६१) के अनुसार कुम्भकर्ण ने रणभूमि मे विभीषण से मिलकर राम की शरण लेने के कारण उसकी प्रशसा की थी। वाल्मीकि रामायण के अन्य पाठो मे इसका उल्लेख नही मिलता है किन्तु यह प्रसग अध्यात्म (६, ८), आनन्द (१, ११, १५२), कव (६, १५), रगनाथ (६, ७६), भावार्थ रामायण (६, २५) और रामचरितमानस (६, ६४) मे वर्णित है।

(६) वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने पहले कुम्भकर्ण की भुजाये, तव उसके पैर और अन्त मे उसका सिर अपने वाणो से काट दिया था। कुम्भकर्ण का सिर सूर्योदयकालीन चन्द्रमा के समान आकाश मे दिखाई पडा और उसने पृथ्वी पर गिर कर अनेक भवनो को ढहाया था। महानाटक (अक ११) मे हनुमान कुम्भकर्ण के सिर पर ऐसा प्रहार करते हैं कि वह हिमालय पर जाकर गिरता है। अनन्तर हनुमान उसका

के पैरो को पकड कर उन्हे नीचे की ओर खीचने लगा। हनुमान ने वाण पर राम नाम देखकर समझा कि राम अयोध्या चले आए और वह भरत के पास जाकर भर्त्सना करने लगे कि आप ने अपने मित्रो को युद्ध में क्यो छोड दिया है। कृत्तिवास रामायण (६,७५) मे कथा इस प्रकार है। भरत ने लका की ओर पर्वत ले जाते हुए हनुमान पर एक अस्सी लाख मन का लोहे का गेद फेक दिया, जिससे हनुमान आहत होकर भूमि पर गिर पडे। बाद मे वसिष्ठ ने मत्र पढकर हनुमान की व्यथा दूर कर दी। हनुमान ने युद्ध का समाचार सुनाया तथा भरत की बल-परीक्षा करने के लिए उनसे कहा कि मैं अब पर्वत ले जाने मे असमर्थ हूँ, यदि आप उसे एक योजन तक ऊपर उठा सके तो काम चलेगा। इस पर भरत ने पर्वत और हनुमान को अपने वाण पर विठाकर दोनो को शतयोजन की ऊँचाई तक पहुँचा दिया। रामचरितमानस आदि अनेक रचनाओ मे भरत हनुमान को वाण पर विठाकर लका तक पहुँचाने का प्रस्ताव करते हैं किन्तु हनुमान इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते है। काश्मीरी रामायण (न० ४५) के अनुसार भरत ने वास्तव मे ऐसा ही किया था। वलरामदास रामायण मे लिखा है कि भरत और हनुमान दोनो को वड़ी लज्जा हुई थी, भरत को इसलिए कि मैंने रामभक्त पर वाण चलाया और हनुमान को इसलिए कि मैं भरत के वाण से मूच्छित होकर भूमि पर गिर गया हूँ। अतः दोनो ने किसी भी मनुष्य से इस घटना का उल्लेख नही करने की शपथ खाई थी।

छ। कुम्भकर्ण-वध

५८६ (१) दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे कुभकर्ण युद्ध-काण्ड (सर्ग १२) के प्रारभ मे सीता को लौटाने का रावण से अनुरोध करता है। अन्य पाठो मे अथवा महाभारत के रामोपाख्यान मे कुभकर्ण के इस हस्तक्षेप का उल्लेख नही होता। दाक्षिणात्य पाठ की अन्तरग परीक्षा से भी स्पष्ट है कि यह प्रसग प्रक्षिप्त है क्योकि रावण के आदेश के अनुसार जगाये जाने पर कुभकर्ण सीताहरण, लकावरोध आदि घटनाओ से अनभिज्ञ है (दे० सर्ग ५१)।

(२) कुभकर्ण की दीर्घकालीन नींद के कारण के विषय मे वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड और उत्तरकाड मे मतभेद है (दे० अनु० ६४९)।

(३) कुभकर्ण की पत्नी का नाम वज्रज्वाला था (दे० रा० ७, १२, २३)। गौडीय पाठ (७, १२, २३) तथा रामायणमजरी के उत्तरकाण्ड मे उसका नाम विद्युज्ज्वाला है। युद्धकाण्ड (७५, ४६) मे कुभ-निकुभ उसके दो पुत्रों का उल्लेख है। निकुभ को रावण का मत्री भी माना गया है।[1] कुभकर्ण के दो अन्य पुत्रों का भी उल्लेख मिलता

---

१. दे० रा० ५, ४६, ११ और ६, ८, १९। एक अन्य निकुभ का वध युद्ध काण्ड के सर्ग ४३ मे वर्णित है।

(८) प्रस्तुत वृत्तान्त के वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन उल्लेखनीय है। पद्म-पुराण के पातालखण्ड (अध्याय ११२) तथा विर्होर रामकथा मे रावण-वध के पश्चात् ही कुभकर्ण की पराजय का वर्णन किया गया है। अध्यात्म रामायण (६, ८, ३१-५२) तथा इस पर आधारित रामकथाओ मे नारद कुभकर्ण-वध के बाद आकर राम की प्रशसा करते हैं। सेरीराम मे कुभकर्ण की मृत्यु के पश्चात् युद्ध चालीस दिन तक स्थगित कर दिया जाता है। तोरवे रामायण (६, २८) के अनुसार कुभकर्ण जीवरत्न पहनकर लडता है जिससे वह अजेय बना है। विभीषण के सुझाव पर राम उस जीवरत्न को बाण से काटकर कुभकर्ण का वध करते है। रामबाण उस जीवरत्न को राम के पास लाया और राम ने उसे विभीषण को प्रदान किया। पउमचरियं (पर्व ६१) मे कुभकर्ण राम द्वारा कैदी बनाया जाता है तथा युद्ध के अन्त मे मुक्त कर दिया जाता है।

(९) रामकियेन के वृत्तान्त मे अनेक नये तत्त्व आ गये हैं। इन्द्रजित् तथा रावण के यज्ञो के अनुकरण पर माना जाता है कि कुम्भकरण ने अपनी मोक्खशक्ति नामक भाले की शक्ति जगाने के उद्देश्य से यज्ञ का आयोजन किया था, हनुमान् और अगद ने इस यज्ञ को भग किया था। लक्ष्मण को आहत करने के अतिरिक्त कुम्भकर्ण ने अपना शरीर बढाकर वानर-सेना की ओर बहती हुई नदी की धारा को रोक दिया था जिससे प्यासे वानरो को बहुत कष्ट हुआ। अन्त मे हनुमान् ने कुम्भकर्ण के पास पहुँचकर उस पर पादप्रहार किया जिससे कुम्भकर्ण भाग गया। इस रचना मे कुम्भकर्ण की मुक्ति-प्राप्ति का भी उल्लेख मिलता है (अध्याय २८)।

ज। इन्द्रजित्-चरित

५९० वाल्मीकि रामायण मे इन्द्रजित् के छ: युद्धो का वर्णन मिलता है। प्रथम युद्ध मे इन्द्रजित् ने राम-लक्ष्मण को नागपाश मे बाँधा था (दे० अनु० ५८६)। द्वितीय तथा तृतीय युद्ध उस नागपाश वृत्तान्त का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है। द्वितीय युद्ध के पूर्व इन्द्रजित् पावक को होम देकर ब्रह्मास्त्र प्राप्त कर लेता है तथा बाद मे अदृश्य बनकर वानर-सेनापतियो तथा राम-लक्ष्मण को आहत करता और विजयी के रूप मे लका लौटता है (दे० सर्ग ७३)। तृतीय युद्ध का वर्णन इससे अधिक भिन्न नही है—पावक को होम देने के पश्चात् इन्द्रजित् अपने रथ पर चढता है तथा अदृश्य बनकर राम-लक्ष्मण को आहत करता है (दे० सर्ग ८०)। इन तीनो युद्धो की सामान्य विशेषता यह है कि इन्द्रजित् अदृश्य रहता है। युद्ध मे अदृश्य रहने की इस वरप्राप्ति का उल्लेख वाल्मीकीय उत्तरकाड मे मिलता है। इसके अनुसार इन्द्रजित् ने अग्निष्टोम, अश्वमेध आदि सात यज्ञो का फल प्राप्त कर लिया था तथा कामग स्यन्दन, अक्षय तूणीर आदि के अतिरिक्त उसे युद्ध मे अदृश्य रहने का वरदान भी मिला था (दे० सर्ग २५)।

कवध पूंछ मे लपेटकर आकाश मे दूर तक फेक देते है। कंब रामायण (६, १५) के अनुसार राम ने कुम्भकर्ण का सिर काटकर उसे समुद्र मे फेक दिया था। रंगनाथ रामायण (६, ८०) मे वर्णन इस प्रकार है—"वह सिर नीचे नही गिरा, किन्तु वह लका मे बहुत सी ऊँची अट्टालिकाओ से टकराकर उन्हे चूर-चूर करके अत्यधिक ध्वनि करते हुए आगे निकल गया और समुद्र के विविध प्राणि-समूह को कुचलते हुए समुद्र मे गिरकर डूब गया।" भावार्थ रामायण (६, २८) के अनुसार कुम्भकर्ण का सिर कट जाने के वाद आगे बढ़ने लगा और राम ने वाण मारकर उसे आकाश मे पहुँचा दिया। कुम्भकर्ण को एक वर मिला था कि जब तक शत्रु उसे पीठ न दिखावे उसका शरीर नही गिर सकता था। कुम्भकर्ण का कवध लका की ओर जा रहा था और विभीषण ने राम से निवेदन किया कि वह क्षणमात्र के लिये पीठ दिखावे। राम ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया जिस पर हनुमान् ने अपनी पूंछ से राम की पीठ का स्पर्श किया। राम ने घूम कर देख लिया कि यह क्या है और उसी क्षण कुम्भकर्ण का कवध गिर गया और बहुत से राक्षस उसके नीचे दब कर मर गए। सेरीराम के अनुसार राम ने कुम्भकर्ण का सिर रावण के शिविर मे फेककर बहुत से राक्षसो का वध किया था।

(७) वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे लक्ष्मण-कुम्भकर्ण युद्ध का वर्णन किया गया है (६७, १००-११५)। सभवतः इसके आधार पर अनेक परवर्ती रचनाओ मे माना गया है कि लक्ष्मण ने कुम्भकर्ण का वध किया है, उदाहरणार्थ—महाभारत का रामोपाख्यान (अध्याय २७१), स्कद पुराण का सेतुमाहात्म्य (अध्याय ४४), विर्होर रामकथा तथा रामकेर्त्ति (सर्ग ६)। दो विदेशी रामकथाओ मे कुम्भकर्ण द्वारा लक्ष्मण के आहत होने का विस्तृत वर्णन किया गया है। रामकेर्त्ति (सर्ग ६) के अनुसार लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए ओषधियो के अतिरिक्त रावण के वेलन की भी जरूरत है। हनुमान् दोनो ले आते हैं। वेलन की खोज करते समय हनुमान् लका मे रावण तथा मदोदरी दोनो के वाल एक गाँठ मे वाँधकर दीवाल पर लिख देते हैं कि मन्दोदरी जब अपने वाये हाथ से रावण पर थप्पड मारेगी तभी गाँठ खुल सकेगी।[१] रामकियेन (अध्याय २८) का वृत्तान्त इस प्रकार है—कुम्भकर्ण ने अपनी मोक्खशक्ति नामक भाले से लक्ष्मण को मूर्च्छित कर दिया था। उनकी चिकित्सा के लिए ओषधि तथा पाँच नदियो के जल की आवश्यकता थी, जो भरत के पास है। हनुमान् पहले हिमालय से ओषधि और इसके वाद अयोध्या से वह जल ले आये।

१ अन्य रचनाओ मे रावण के द्वारा लक्ष्मण के आहत होने पर हनुमान् के इस उत्पात का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५६६)।

यह देखकर वानर भागने लगते हैं किन्तु हनुमान् का आह्वान सुनकर वे उनके नेतृत्व मे इन्द्रजित् का सामना करते है। कुछ समय तक युद्ध करने के वाद हनुमान् वानरो को वापस बुलाकर राम को सीता-वध का समाचार सुनाने जाते हैं और इन्द्रजित् निकुंभिला मे प्रवेश कर यज्ञ की तैयारियाँ करने लगता है (सर्ग ८१-८२)। समाचार सुनकर राम विलाप करते हैं किन्तु विभीषण आश्वासन देता है कि रावण सीता का वध नही करेगा, यह अवश्य कोई माया-सीता हुई होगी :

अभिप्रायं तु जानामि रावणस्य दुरात्मनः।
सीतां प्रति महाबाहो न च घातं करिष्यति ॥१०॥

× × ×

मायामयी महाबाहो ता विद्धि जनकात्मजाम् ॥१३॥ (सर्ग ८४)

अनेक परवर्ती रामकथाओ मे माया-सीता-वध के पश्चात् सच्चाई का पता लगाने के लिये किसी को लका भेजा जाता है। कम्ब रामायण (६, २५) मे विभीषण मधुमक्खी का रूप धारण कर अशोकवन मे प्रवेश कर जाता है तथा राम के पास सीता के जीवित होने का समाचार ले आता है। रगनाथ रामायण (६, १०३) मे इससे मिलता-जुलता वर्णन मिलता है, अन्तर यह है कि विभीषण लका जाने के लिए सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है। तोरवे रामायण (६, ४१) मे विभीषण के परामर्श से हनुमान् को अशोकवन भेजा जाता है। वाद मे माया-सीता का शव विभीषण के स्पर्श-मात्र से अतर्धान हो जाता है। सेरीराम की कथा इस प्रकार है। रावण के आदेश के अनुसार इन्द्रजित् एक माया-सीता की सृष्टि करता है तथा वाद मे लका मे ही उसका वध करके इसका समाचार चारो ओर फैलाता है। यह सुनकर राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर जाते हैं। विभीषण राम को चेतना मे लाकर परामर्श देता है कि उस समाचार पर तुरन्त विश्वास न किया जाय। तव हनुमान् पक्षी (एक अन्य पाठ मे मधु-मक्खी) का रूप धारण कर लका मे प्रवेश करते है तथा सीता के जीवित होने का समाचार लेकर लौटते है। रामकियेन (अध्याय ३०) मे प्रस्तुत वृत्तान्त को एक नया रूप दिया गया है। युद्ध से भाग जाने के कारण बुक्रसार नामक राक्षस को प्राणदण्ड की आज्ञा मिली थी। रावण ने उसे सीता का रूप धारण कर इन्द्रजित् के रथ पर चढने का आदेश दिया। रण-भूमि मे पहुँचकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण का सामना किया, लेकिन सीता को देखकर लक्ष्मण को वाण चलाने का साहस नही हुआ। इस पर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि युद्ध का मूल कारण, सीता को ले जाओ और लका को छोड दो। सीता को भेज देने के लिए लक्ष्मण के कहने पर इन्द्रजित् ने कहा कि सीता को तुम्हारे पास ले आना मेरे गौरव के विरुद्ध है और उसने हँसकर माया-सीता का

उत्तरकाण्ड के एक अन्य स्थल पर मेघनाद द्वारा इन्द्र की पराजय का वर्णन किया गया है। मेघनाद ने इन्द्र को पराजित करके उन्हे लका के कारावास मे रख दिया था (सर्ग २६)। वाद मे ब्रह्मा के नेतृत्व मे सभी देवता इन्द्र को मुक्त कर देने के उद्देश्य के लका चले आए। उन्होंने मेघनाद को इन्द्रजित् की उपाधि देने के अतिरिक्त एक वर भी प्रदान कर दिया। इन्द्रजित् ने यह वर माँग लिया कि युद्ध के पूर्व पावक को विधिवत् होम देने पर मेरे लिये अग्नि मे से एक अश्वयुक्त रथ उत्पन्न हो और जब तक मैं उस पर रहूँ, मैं अमर वना रहूँ (सर्ग ३०)।

इन्द्रजित्-चरित की शेष सामग्री का इस प्रकार विभाजन किया गया है—माया-रूपी सीता का वध और चतुर्थ युद्ध (अनु० ५६१), निकुंभिला मे इन्द्रजित्-यज्ञ का विध्वस (अनु० ५६२), इन्द्रजित्-वध (अन्तिम दो युद्ध, अनु० ५६३), सुलोचना का वृत्तान्त (अनु० ५६४)। इन्द्रजित् की जन्मकथा-विषयक सामग्री रावणचरित के अन्तर्गत रखी गई है (दे० अनु० ६५०)।

५६१ माया-सीता-वध का वृत्तान्त सभवतः आदि-रामायण मे नही पाया जाता था क्योंकि महाभारत के रामोपाख्यान मे इसका अभाव है।[1] गुणभद्र कृत उत्तरपुराण (६८, ६१२) तथा आनन्द रामायण (१, ११, २५०) मे रावण स्वय एक माया-सीता का वध करता है। आनन्द रामायण के अनुसार ब्रह्मा ने आकर माया-सीता का रहस्य प्रकट किया था—कृत्रिमेय हृता सीता। रामकेर्ति (सर्ग ८) मे रावण सीता को अपने रथ पर विठाकर रणभूमि मे आता है और राम इस डर से ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नही कर पाते कि कही सीता का वध न हो। अन्य रामकथाओ मे प्रायः वाल्मीकि रामायण के अनुसार माया-सीता का वध वर्णित है। इन्द्रजित् के इस **चतुर्थ युद्ध** का वृत्तान्त इस प्रकार है। इन्द्रजित् लका के पश्चिम द्वार से निकलकर हनुमान् तथा अन्य वानरो के सामने अपने रथ पर विद्यमान सीता का सिर काट लेता है।

---

१ यह असभव नही कहा जा सकता है कि माया-सीता वध के वृत्तान्त मे महाभारत के माया-वसुदेव की कथा का अनुकरण किया गया हो। शाल्व के साथ युद्ध करनेवाले कृष्ण के पास एक छद्मवेशी दूत ने आकर कहा कि द्वारका मे आपके पिता का वध हो चुका है, अब आपको द्वारका की रक्षा करनी चाहिये। इसके वाद कृष्ण ने देखा कि शाल्व के विमान से वसुदेव का मृत शरीर नीचे गिर रहा है। शाल्व की इस माया से प्रभावित होकर कृष्ण कुछ समय युद्ध न कर सके (दे० ३, २२)। अगले अध्याय मे इन्द्र-जित्-युद्ध का एक और सादृश्य पाया जाता है। शाल्व का विमान अदृश्य हो जाता है किन्तु कृष्ण शब्दवेधी वाणो से उसे पराजित करते है।

परवर्ती रामकथाओ मे इन्द्रजित्-वध के वृत्तान्त के निम्नलिखित परिवर्तन उल्लेखनीय है। **महानाटक** (१२, १६) के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् का कटा हुआ सिर रावण के हाथो मे फेक दिया था। **कंब रामायण** (६, २७) के माना गया है कि इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के साथ युद्ध करते समय समझ लिया था कि लक्ष्मण विष्णु के अशावतार है। अत. उसने युद्ध छोडकर रावण से अनुरोध किया कि सीता को लौटाया जाय और राम से क्षमा-याचना की जाय। रावण ने नही माना और इन्द्रजित् रणभूमि लौटा। युद्ध के अन्त मे लक्ष्मण ने पहले इन्द्रजित् का बायाँ हाथ और बाद मे उसका सिर काट डाला। अगद ने इन्द्रजित् का सिर उठाकर उसे राम के चरणो मे रख दिया। **आनन्द रामायण** (१, ११, १६०-१६८) के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् का दाहिना हाथ बाण से काट-कर उसी के घर मे फेक दिया और इसी तरह उसका बायाँ हाथ भी काटकर रावण के निकट डाल दिया। अन्त मे लक्ष्मण ने उसके सिर को धड से अलग कर धरती पर गिरा दिया और हनुमान् ने उस सिर को उठाकर राम को दिखला दिया। **रामचन्द्रिका** (२८, ३४) मे महानाटक के अनुकरण पर माना गया है कि लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण बाण से इन्द्रजित् का सिर धड से अलग उडा दिया और वह सिर सध्या करनेवाले रावण की अजली मे जा गिरा।

सारलादास के महाभारत (द्रोणपर्व) मे इन्द्रजित् के **मर्मस्थान** का उल्लेख है, विभीषण के परामर्श से लक्ष्मण ने इन्द्रजित् की नाभि मे स्थित अमृतलिग पर बाण चलाया। बहुत सी रचनाओ मे यह माना गया है कि १२ वर्ष तक के **उपवास** के फल-स्वरूप लक्ष्मण इन्द्रजित् का वध करने मे समर्थ हुए।[1] **पउमचरियं** के अनुसार इन्द्रजित् को कैदी बना लिया गया (पर्व ६१) तथा युद्ध के पश्चात् उसे मुक्त कर दिया गया (पर्व ७५)।

कृत्तिवास (६, ६६) मे मन्दोदरी को, अभिषेक नाटक (५, १७) मे एक राक्षस को, कम्ब रामायण (६, २८) मे महोदर को, माधव कदलीकृत रामायण (६, ३७) मे अरविन्द को और बलरामदास रामायण मे त्रिजटा को इसका श्रेय दिया गया है।

१. दे० अनु० ४६१। वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने इन्द्रजित् के अतिरिक्त अतिकाय (सर्ग ७१) का भी वध किया, वह इन्द्रजित् द्वारा तीन बार (अनु० ५६०) और रावण की शक्ति द्वारा एक बार (अनु० ५६६) आहत किए गए। प्रक्षिप्त सर्ग ५६ मे रावण-लक्ष्मण के द्वन्द्व युद्ध का वर्णन मिलता है। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे लक्ष्मण-कुभकर्ण-युद्ध का उल्लेख किया गया है (सर्ग ६७)।

सिर काटकर उसे लक्ष्मण की ओर फेक दिया। वाद में विभीषण ने रहस्य का उद्घाटन किया।

वलरामदास रामायण के अनुसार भी सिंहनाद की वहन सुकाति ने सीता का रूप धारण कर लिया और इद्रजित् ने उसका वध किया था।

५६२ वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभीषण ने राम को सावधान किया था कि निकुंभिला मे अपना यज्ञ सम्पन्न करने के पश्चात् इन्द्रजित् अजेय वन जायेगा, अतः इस यज्ञ का विध्वंस परमावश्यक है (सर्ग ८४)। विभीषण, हनुमान्, अगद आदि वानरो को साथ लेकर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् की रक्षा करने वाली सेना पर आक्रमण किया। युद्ध का कोलाहल सुनकर इन्द्रजित् अपना यज्ञ अपूर्ण छोडकर (**कर्मणि अननुष्ठिते**) युद्ध के लिए उठ खडा हुआ (सर्ग ८५-८६)। परवर्ती रामकथाओ मे प्रायः इससे मिलता-जुलता वर्णन पाया जाता है। **कम्ब रामायण** (६, २६) के अनुसार विभीषण ने मधुमक्खी के रूप मे लका मे प्रवेश कर इन्द्रजित्-यज्ञ का समाचार राम को दिया था। **सेरीराम** मे माना गया है कि इन्द्रजित् ने मृत राक्षसो को जिलाने के उद्देश्य से यज्ञ प्रारभ किया था। सीता-वध की सच्चाई का पता लगाते समय हनुमान् ने वहुत से भिक्षुओ तथा महर्षियो को एक मन्दिर की ओर जाते देखा तथा उनकी वातचीत से इस यज्ञ के विषय मे जानकारी प्राप्त कर ली थी। इसपर लक्ष्मण तथा हनुमान् के नेतृत्व में वानर-सेना ने जाकर इन्द्रजित् की सेना परास्त की थी तथा मन्दिर मे से यज्ञ करनेवाले पुरोहितो को भगाकर यज्ञ का विध्वस किया था।

५६३. वाल्मीकि रामायण मे **इन्द्रजित्-वध** का वृत्तान्त इस प्रकार है। अपना यज्ञ सम्पूर्ण किये विना इन्द्रजित् युद्ध के लिए उठ खडा हुआ और विभीषण को देखकर इन्द्रजित् ने उसकी निन्दा की (सर्ग ८६-सर्ग ८७)। अनन्तर लक्ष्मण और इन्द्रजित् ने देर तक द्वन्द्व-युद्ध कर एक दूसरे को आहत किया। इन्द्रजित् के इस **पंचम युद्ध** के अन्त मे लक्ष्मण ने इसके सारथि को मार डाला और इन्द्रजित् पैदल ही लका लौटा। इसके वाद इन्द्रजित् एक नये रथ पर चढकर **अन्तिम** वार युद्ध करने आया, इस युद्ध मे लक्ष्मण ने सारथि को और विभीषण ने घोडो को मार डाला, अन्त मे लक्ष्मण ने ऐन्द्र शस्त्र ने इन्द्रजित् का वध किया। वाद मे सुषेण ने लक्ष्मण, विभीषण आदि की चिकित्सा की। अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण ने सीता का वध करना चाहा किन्तु सुपार्श्व[1] ने उसे ऐसा करने से रोका।

---

१ रावण के इस सकल्प का प्रायः सभी रामकथाओ मे उल्लेख है किन्तु रोकने वाले के विषय में मतैक्य नही है, महाभारत (३, २७३) तथा अग्नि पुराण (अध्याय १०) मे अविध्य को, अभिनन्द कृत रामचरित (३८, ५) तथा

माँगा। राम उसकी यह प्रार्थना सुनकर इन्द्रजित् को पुनर्जीवित करने की सोच रहे थे[1] किन्तु हनुमान् ने ब्रह्मा की मर्यादा की रक्षा करने का अनुरोध किया। इसपर राम ने सुलोचना को आश्वासन दिया कि तुम अगले जन्म मे अपने पति के साथ सुखमय जीवन बिताने के पश्चात् वैकुण्ठ प्राप्त करोगी।

तब सुलोचना रणभूमि मे अपने मृत पति के पास पहुँची और उसने अपने सतीत्व की शपथ खाकर उसे जिलाया।[2] इन्द्रजित् आँखे खोलकर तथा अपनी पत्नी को सान्त्वना देकर फिर मृत्यु के मौन मे विलीन हो गया। सुलोचना उसके शरीर के साथ लका लौटी तथा पति की चिता पर चढकर सती बन गई।

आनन्द रामायण (१, ११, २०५-२१७) की कथा इस प्रकार है। सुलोचना अपने पति की कटी हुई भुजा देखकर विलाप करने लगी। तब उस भुजा ने बाण लेकर अपने रक्त से लिखा—"शेष के हाथ मरकर मैंने मुक्ति पाई है। तुम राम के पास जाकर मेरा सिर माँग लो और उसके साथ अग्नि मे प्रवेश कर मेरे पास आओ।" इसके अनुसार सुलोचना अपने पति का सिर माँगने के लिए राम के पास आई। राम ने उससे कहा—यदि तुम चाहती हो तो मैं तुम्हारे पति को जिला सकता हूँ। अग्नि मे प्रवेश करने का विचार छोड दो। सुलोचना ने लक्ष्मण के हाथ से मोक्षप्रद मरण दुर्लभ समझकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। सुलोचना ने सिर पाकर तथा लका से उसकी भुजाएँ लाकर अपने पति का समस्त शरीर मिला दिया और निकुम्भिका मे जाकर उसके साथ अग्नि मे प्रवेश किया। अनन्तर वह दिव्य देह धारण कर अपने पति के साथ वैकुण्ठ चली गई।

भावार्थ रामायण (६, ४१) के वृत्तान्त पर शिव-भक्ति का भी प्रभाव पडा है। अपने पति की भुजा को देखकर सुलोचना ने शिव की आराधना की थी और शिव ने

---

१ एक अन्य पाठ के अनुसार शेषावतार लक्ष्मण अपनी पुत्री सुलोचना को विधवा देखकर विलाप करने लगे थे तथा अन्त मे उन्होने उसे वर माँगने को कहा। इसपर हनुमान् ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह सुलोचना की जिह्वा पर बैठकर उसे पति के पुनर्जीवन का वर माँगने से रोके। सरस्वती की प्रेरणा से सुलोचना ने अपने पति के शरीर के साथ सती हो जाने का वर माँग लिया। दे० श्री बालशौरि रेड्डी, तेलुगु भाषा मे राम साहित्य। मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८०१।

२. एक अन्य पाठ के अनुसार सुलोचना ने प्रार्थना द्वारा अपने पति के शरीर के सब कटे हुए अगो को अपने पास बुलाया था। दे० बालशौरि रेड्डी, वही पृ० ८००।

सेरीराम के वृत्तान्त मे कई नये तत्व पाये जाते हैं। अपनी पत्नी कोमाल देवी से प्रेमपूर्वक[1] विदा लेकर इन्द्रजित् १००० हरे रग के घोडो मे युक्त रथ पर चढकर युद्ध करने जाता है और लक्ष्मण तथा हनुमान् का सामना करने के पश्चात् अन्त में राम द्वारा मार डाला जाता है।[2] समाचार पाकर रावण रणभूमि मे आता है तथा इन्द्रजित् का रुड गोद मे लेकर इतना हृदयविदारक विलाप करता है कि राम तथा वानर-सैनिक भी रोने लगते है, (किन्तु इने गिने वानर रावण को दस मुखो से विलाप करते देखकर अपनी हँसी नही रोक पाते हैं)। बाद मे रावण स्वय इन्द्रजित् का मृत शरीर लका ले जाता है। कोमाल देवी अपने पति की चिता पर चढकर सती हो जाती है, इन्द्रजित् और कोमाल देवी का भस्म एक स्वर्ण पात्र मे सुरक्षित रखा जाता है। इसके बाद युद्ध चालीस दिन स्थगित रहता है।

५६४. सेरीराम मे इन्द्रजित् की पत्नी के सहगमन की कथा का आधार भारतीय है। वाल्मीकि रामायण मे इस प्रसग का निर्देश मात्र भी नहीं मिलता। अपने पुत्र के लिए विलाप करते समय रावण इन्द्रजित् की पत्नियो का उल्लेख मात्र करता है—**मातरं मां च भार्याश्च क्व गतोऽसि विहाय नः** (६, ९२, १३)।

सुलोचना की कथा का प्राचीनतम वर्णन तेलुगु द्विपद रामायण (६, १११-११३) मे मिलता है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्रकाशित हिन्दी अनुवाद मे कथा इस प्रकार है। इन्द्रजित् के वध का समाचार सुनकर[3] सुलोचना मूर्च्छित होकर गिर पडी तथा सखियो की सेवा से चेतना पाकर विलाप करने लगी। इस विलाप मे वह प्रकट करती है कि मेरे पिता आदिशेष ने मुझे एक मणि सौंपकर आश्वासन दिया था कि तुम युद्ध के लिए जाते समय अपने पति की इस मणि से आरती उतारोगी तो वह अजेय होगा। किन्तु इन्द्रजित् लक्ष्मण से युद्ध करने जाते समय अपनी पत्नी से नही मिला था।

सुलोचना रावण की अनुमति लेकर आकाशमार्ग से राम के पास चली आई तथा उसने शरणागत-वत्सल राम की स्तुति करके अपने पति के लिए जीवन-दान

---

१. सीता स्वयवर के प्रसग मे भी अपनी पत्नी के प्रति इन्द्रजित् के प्रेम का उल्लेख हुआ है (दे० अनु० ३९७)।

२ शेलावेर पाठ के अनुसार राम ने इन्द्रजित् के तीनो सिर राक्षसो की सेना के बीच मे फेक दिये।

३. एक प्राचीन हस्तलिपि के अनुसार इन्द्रजित् की बायी भुजा आकाशमार्ग से सुलोचना के सामने आ गिरी और उसने अपनी तर्जनी से अपनी मृत्यु का समाचार लिख दिया। दे० अनुशीलन, वर्ष १२, पृ० १५।

मे लौटने का आदेश दिया और फिर राम का सामना करने आया।[1] राम-रावण के इस अन्तिम युद्ध के वर्णन मे इसका उल्लेख मिलता है कि रावण के सिर पुनः-पुन उत्पन्न होते थे यहाँ तक कि राम ने रावण के एक सौ सिर काट दिए—**एवमेव शत छिन्न शिरसां तुल्यवर्चसाम्** (१०७,५७)। अन्त मे मातलि के परामर्श के अनुसार राम ने अगस्त्य द्वारा प्रदत्त (दे० अनु० ४६०) ब्रह्मास्त्र से रावण की छाती को विदीर्ण कर दिया जिससे रावण निष्प्राण होकर भूमि पर गिर पडा।[2] परवर्ती साहित्य मे रावण के इस अन्तिम युद्ध के वर्णन का जो परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है उसका सिंहावलोकन नीचे दिया जा रहा है।

५९६. लक्ष्मण को रावण की शक्ति लगने का प्रसग महाभारत मे नही मिलता। वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभीषण ने रावण-रथ के घोडो का वध किया था जिस पर रावण ने रथ से उतरकर एक शक्ति नामक वरछी को विभीषण की ओर फेक दिया किन्तु लक्ष्मण ने उस शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके वाद लक्ष्मण ने रावण की एक दूसरी शक्ति से विभीषण को वचाया जिससे रावण ने अन्त मे मय द्वारा निर्मित अमोघा शक्ति (दे० ७, १२, २१) से लक्ष्मण की छाती को छेद दिया। राम ने इस शक्ति को निकाल कर तोड दिया तथा लक्ष्मण को हनुमान् आदि वानरो की रक्षा मे छोड़कर रावण को रणभूमि से भागने के लिए वाध्य कर दिया (सर्ग १००)। तव लक्ष्मण के पास लौटकर राम विलाप करने लगे किन्तु सुषेण ने उन्हे लक्ष्मण के जीवित होने का आश्वासन दिया। अनन्तर हनुमान् हिमालय जाकर विशल्याकरणी ओषधि ले आये[3] और सुषेण ने ओषधि को पीसकर लक्ष्मण को सूँघने के लिये दिया जिससे लक्ष्मण स्वस्थ हो गए (दे० सर्ग १०१)।

---

१ दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे यहाँ परइसका उल्लेख किया गया है कि अगस्त्य ने राम के पास पहुँचकर उनको विजय प्रदान करनेवाले आदित्यहृदय नामक स्तोत्र सुनाया और राम ने इसका पाठ किया था (दे० सर्ग १०५)।

२. दे० सर्ग १०४-१०८। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने रावण के अतिरिक्त कुभकर्ण (सर्ग ६७), कमराक्ष (सर्ग ७९) तथा वहुत के अन्य राक्षसो (सर्ग ९३) का भी वध किया। उन्होने प्रथम तुमुल युद्ध मे भाग लिया (सर्ग ४४) तथा वे दो वार इन्द्रजित् द्वारा आहत किए गए थे (सर्ग ४५ और ७३)। सर्ग ५९ (राम द्वारा रावण की पराजय का वर्णन) प्रक्षिप्त है।

३ दे० अनु० ५८७-५८८। गौडीय पाठ (८२, ४९) मे केवल इसी ओषधि का उल्लेख हैं। अन्य पाठो मे विशल्याकरणी के अतिरिक्त सावर्ण्यकरणी, सजीवकरणी तथा सधानी की भी चर्चा है, दे० दा० रा० १०१, ३१; प० रा० ८१, ३२।

इन्द्र की भुजा मे प्रवेश करने तथा युद्ध का समाचार लिखने का आदेश दिया। शेष कथा आनन्द रामायण से मिलती-जुलती है किन्तु सुलोचना की सखी शातिमती उसे सती वन जाने का परामर्श देती है।

सुलोचना के सहगमन की कथा अनेक अर्वाचीन रामकथाओ मे विस्तारपूर्वक वर्णित है, उदाहरणार्थ—जगत राम कृत वगाली रामायण, रामलिगामृत (सर्ग ६), १८ वी शताब्दी का मागुणीकृत उडिया रसामृत रामायण, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८, रसिक विहारी का रामरसायन (३, १६), विश्रामसागर (अध्याय २७), माइकेल मधुसूदन का मेघनाद-वध (सर्ग ६, इन्द्रजित् की पत्नी का नाम प्रमीला है)। जावा के **रामायण ककविन** के अनुसार इन्द्रजित् की सात पत्नियाँ उसके साथ ही युद्ध मे चली गयी थी तथा रणभूमि मे ही मारी गयी (सर्ग २३)।

भ । रावण-वध

५६५. खोतानी रामायण मे रावण का वध नही होता, राम द्वारा आहत होकर दशग्रीव राजकर देने की प्रतिज्ञा करता है जिससे युद्ध स्थगित किया जाता है। **जैन रामकथाओं, उन्मत्तराघव** (अनु० २४२) और विर्होर रामकथा मे लक्ष्मण ही रावण का वध करते है। शेष रामकथाओ मे राम द्वारा रावण-वध का वर्णन किया गया है। **वल्मीकि रामायण** का वृत्तान्त इस प्रकार है। महोदर, महापार्श्व और विरूपाक्ष के वध के अनन्तर रावण ने स्वय रणभूमि मे प्रवेश किया।[1] इस युद्ध मे उसने लक्ष्मण को अपनी शक्ति से आहत किया किन्तु राम द्वारा पराजित होकर वह भाग गया (दे० सर्ग ९९-१००)। बाद मे रावण एक नये रथ पर चढकर राम से युद्ध करने आया और इन्द्र ने राम के पास अपना रथ तथा अपने सारथि मातलि को भेज दिया।[2] द्वन्द्वयुद्ध फिर प्रारभ हुआ; इसमे अपने स्वामि को मूच्छित देखकर रावण का सारथि रथ को रणभूमि से दूर ले चला (सर्ग १०२-१०३)। चेतना प्राप्त कर रावण ने अपने सारथि को युद्ध

---

१ प्रक्षिप्त सर्ग ५९ (दे० अनु० ५६३) तथा सर्ग ९५ मे भी रावण के युद्ध मे भाग लेने का उल्लेख किया गया है। कम्बरामायण मे रावण के तीन युद्धो का वर्णन किया गया है। वह लक्ष्मण को दो वार शूल से आहत करता है (पटल ३५)।

२. मातलि का प्रसग प्रक्षिप्त है क्योकि रावण के लिए विलाप करते समय उसकी पत्नियाँ कहती हैं "जिसे देवता भी पराजित नही कर पाते हैं वह एक पैदल लडने वाले मनुष्य से मारा गया"—**अवध्यो देवतानां यस्तथा दानवरक्षसाम्। हतः सोऽयं रणे शेते मानुषेण पदातिना** (११०, १५)।

का चौका और रावण का वेलन। हनुमान् तीनों ले आते हैं तथा मैरीराम के वृत्तान्त की भाँति रावण का वेलन ले जाते समय रावण-मन्दोदरी के बाल एक गाँठ मे बाँध देते हैं। अन्य रचनाओं मे हनुमान् सीता की खोज करते समय (अनु० ५३६) अथवा कुंभकर्ण द्वारा आहत लक्ष्मण की चिकित्सा के लिये रावण का वेलन ले जाते समय (अनु० ५८६, ७) इस प्रकार का उत्पात करते हैं।

५६७ वाल्मीकि रामायण के पश्चिमोत्तरीय पाठ मे (दे० अनु० ५६०) इन्द्रजित्-वध के पश्चात् रावण होम करने जाता है। विभीषण यह जानकर राम को सावधान करता है कि इस यज्ञ को भग करने की अत्यंत आवश्यकता है, नही तो रावण शिव के प्रसाद से अजेय हो जायेगा।[1] हनुमान् के नेतृत्व मे वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँचते हैं लेकिन वे उसका ध्यान भग करने मे असमर्थ है। तव अगद हनुमान् की आज्ञा से मन्दोदरी के केशो को खीचकर उसे रावण के पास ले आता है जिससे रावण उत्तेजित होकर यज्ञ को अपूर्ण छोड देता है और अगद पर आक्रमण करता है। यह प्रसग इन्द्रजित्-यज्ञ-विध्वस (दे० अनु० ५६२) की पुनरावृत्ति मात्र प्रतीत होता है फिर भी यह असभव नही कहा जा सकता कि इसका आधार पउमचरियं मे वर्णित रावण की विद्या-साधना ही है।

पउमचरियं (पर्व ६६-६८) की कथा इस प्रकार है। रावण बहुरूपिणी विद्या की सिद्धि के लिये शातिनाथ के मदिर मे साधना करने जाता है तथा मन्दोदरी लका के सभी नागरिको से आठ दिन तक अहिंसा का पालन करने का आवेदन करती है। विभीषण यह सुझाव देता है कि राम जाकर रावण को मन्दिर मे से निकालकर कैदी बना ले किन्तु राम यह प्रस्ताव अस्वीकार करते हैं। तव वानरो का एक दल ध्यानस्थ रावण को क्षुब्ध करने के उद्देश्य से लका मे प्रवेश करता है और शातिनाथ के मन्दिर मे निवास करने वाले देवताओ द्वारा नष्ट किया जाता है। इस के बाद अगद एक दूसरे दल को लेकर मन्दिर मे प्रवेश करता है। उसने रावण को बाँधा, उसके अन्त.पुर की स्त्रियो का अपमान किया तथा अन्त मे मन्दोदरी को खीचकर रावण के सामने लाया किन्तु रावण विचलित नही हुआ और उसने बहुरूपिणी विद्या प्राप्त कर ली। गुणभद्रकृत उत्तर पुराण (६८, ५१६-५२६) के अनुसार रावण विद्याएँ सिद्ध करने के लिए आदित्यपाद नामक पर्वत पर साधना करने गया था। विभीषण के परामर्श के अनुसार राम और

१ जानकीहरण (१७, २) मे रावण की अग्नि-पूजा का उल्लेख मात्र है। अनेक रामकथाओ मे युद्ध से पहले राम की देवी-पूजा का वर्णन किया गया है, दे० अनु० ७८५। रावण की देवी-पूजा की कथा का एक आधुनिक रूप आगे (अनु० ७४१) देख ले।

महानाटक (अंक १३) मे हनुमान् पहले रावण की शक्ति रोक लेते है किन्तु रावण का अनुरोध मान कर ब्रह्मा नारद को भेज देते हैं कि वह किसी-न-किसी तरह से हनुमान् को रणभूमि से हटा दे। नारद ऐसा ही करते है और रावण लक्ष्मण को आहत करने मे समर्थ हो जाता है। **रामचन्द्रिका** (१३, ४०), पाश्चात्य-वृत्तान्त न० १३ आदि मे भी हनुमान् द्वारा शक्ति को रोकने की कथा मिलती है।

पउमचरियं (पर्व ६४-६५) मे विशल्यौषधि का मानवीकरण किया गया है। लक्ष्मण को शक्ति लगने के पश्चात् एक विद्याधर राम से कहता है कि द्रोणमेघ की कन्या विशल्या के स्नानजल से ही लक्ष्मण की चिकित्सा हो सकती है। इसपर हनुमान्, भामण्डल तथा अगद अयोध्या जाकर भरत को सीता-हरण तथा युद्ध का समाचार सुनाते है तथा विशल्या के साथ लका लौट आते है। विशल्या की चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ होने पर लक्ष्मण उसके साथ विवाह भी करते है।

सेरीराम के अनुसार रावण के रथ मे १०० सिह तथा १००० अश्व जुते हुए थे। लक्ष्मण ने उसका सामना करना चाहा किन्तु रावण ने बाण मार कर लक्ष्मण को आहत कर दिया। लक्ष्मण को रणभूमि से हटा कर राम ने विभीषण के परामर्श[1] से हनुमान् को औषधि ले आने के लिये भेज दिया और हनुमान् ने अजानी नामक ओषधि-पर्वत राम के पास पहुँचा दिया। तब विभीषण ने कहा कि औषध तैयार करने के लिये रावण के पलग के नीचे पडे हुए चौके की जरूरत है। हनुमान् को उसे ले आने के लिये भेजा जाता है। हनुमान् हरा भ्रमर बनकर रावण के महल मे प्रवेश कर जाते हैं और रावण तथा मन्दोदरी के बाल एक गाँठ मे बाँधकर उस चौके को ले जाते है। उसके सहारे विभीषण औषध तैयार करता है तथा लक्ष्मण को स्वास्थ्यलाभ प्रदान करता है। प्रातः काल हनुमान् रावण को सबोधित कर कहते हैं कि जब मन्दोदरी तुम्हारे सिर पर प्रहार करेगी तभी तुम दोनो के बालो की गाँठ खुल सकती है और रावण मन्दोदरी को ऐसा करने देता है। एक स्त्री द्वारा मारे जाने के फलस्वरूप रावण अब अजेय नही रहा। शेलावेर पाठ के अनुसार हनुमान् ने चींटी के रूप मे रावण के महल में प्रवेश किया तथा रावण के पलंग के चारो ओर फैले हुए साँप की पीठ पर गाँठ खुल जाने का उपाय लिख दिया था। सेरीराम के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान् पिस्सू के रूप मे एक दासी की साडी पर बैठ कर रावण के महल के भीतर चले गये।

रामकियेन (अध्याय ३३) मे माना गया है कि हनुमान् द्वारा लाई हुई ओषधि तैयार करने के लिए निम्नलिखित वस्तुओ की आवश्यकता है—इन्द्र की धेनु का गोबर, कालनाग

---

१. रामचन्द्रिका (१७, ४०) के अनुसार भी विभीषण ने यही परामर्श दिया था।

अनुसार हनुमान् ने मन्दोदरी को रावण के पास ले जाकर उसका पहला यज्ञ भग किया था। बाद मे रावण ने अपनी कपिलवद नामक भाले की शक्ति जगाने के उद्देश्य से यज्ञ प्रारभ कर दिया किन्तु देवताओ ने वालि को उसके पास भेज दिया, जो राम के हाथ से मरकर देवता के रूप मे उत्पन्न हुआ था। वालि ने मेरु पर्वत को रावण के अग्निकुण्ड मे डालकर रावण को परास्त कर दिया (अध्याय ३३)। रामकियेन मे एक तीसरे यज्ञ का वर्णन है। मन्दोदरी ने उमा से सजीव-यज्ञ का रहस्य जान लिया था जिसके द्वारा अमृत प्राप्त होता है। हनुमान् रावण का रूप धारण कर मन्दोदरी के पास गये तथा उसे अपने बाहुपाश मे बद्ध करके उसका सतीत्व नष्ट किया जिससे उसका यज्ञ असफल हुआ (दे० अध्याय ३४)। इस रचना के एक अन्य स्थल पर हनुमान् तथा मन्दोदरी के रमण का भी वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३२६)।

काश्मीरी रामायण के अनुसार (दे० न० ४७) इन्द्रजित् तथा कुभकर्ण के वध के अनन्तर रावण निराश होकर कैलास पर शिव की सहायता माँगने गया था। शिव ने उसे मकेश्वर लिंग देकर आश्वासन दिया कि इस लिंग के लंका मे स्थापित हो जाने पर राम की विजय हो ही नही सकती तथा रावण को सावधान किया कि इस लिंग को कही भी पृथ्वी पर नही रखना चाहिये। मार्ग मे रावण को लघुशका लगी और उसने मकेश्वर लिंग को नारद के हाथ मे थमा दिया जो वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे आ पहुँचे थे। नारद लिंगको भूमि पर रख कर चले गये तथा रावण लौट कर लिंग को उठाने मे असमर्थ हुआ।[1]

अगद-दूत-कार्य के वर्णन मे इसका उल्लेख किया गया है कि सेरीराम तथा रामचन्द्रिका के अनुसार रावण किन शर्तो पर सीता को लौटाने के लिए तैयार था (दे० अनु० ५८५)। अनेक रामकथाओ मे रावण के सन्धि-प्रस्तावो की चर्चा है। पउमचरियं (पर्व ६५) मे लक्ष्मण के शक्ति-भेद के पश्चात् रावण दूत भेज कर राम को अपना आधा राज्य तथा ३००० कन्याओ को प्रदान करने का प्रस्ताव करता है, बशर्ते कि राम भानुकर्ण, इन्द्रजित् आदि कैदियो को लौटाये और सीता को त्याग दे। किन्तु राम इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं। महानाटक (१४, १-२) के अनुसार रावण ने अपने दूत लोहिताक्ष के द्वारा राम से कहा था कि परशुराम से प्राप्त हरप्रसादपरशु के बदले मे मैं सीता को लौटाने के लिए तैयार हूँ।[2] राघवाभ्युदय मे रावण के एक अन्य सधि-प्रस्ताव की चर्चा है (दे० अनु० २३६, ६)।

---

१ कर्मनासा नदी की उत्पत्ति की कथा उस घटना से संबध रखती है। दे० डब्ल्यू० क्रूक रेलिजन एड फॉल्कलॉर (१९२६), पृ० ५६। अन्य अवसरो पर भी रावण को इस प्रकार धोखा दिए जाने का वृत्तान्त मिलता है; दे० अनु० ६५०।

२. इस प्रस्ताव का उल्लेख रामचन्द्रिका (१६, १७) मे भी मिलता है।

लक्ष्मण एक विशाल सेना के साथ विमान पर आरूढ़ होकर लका के निकट पहुँच गए तथा अन्य विद्याधरो को पर्वत पर जाकर उपद्रव करने का आदेश दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि रावण अपनी साधना अपूर्ण छोड़कर लका चला आया।

बहुत सी परवर्ती रामकथाओ में पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार मन्दोदरी के केश-ग्रहण तथा रावण के यज्ञ-भग का वर्णन मिलता है। उदाहरणार्थ—कृत्यारावण(अंक ६), खोतानी रामायण, द्विपद रामायण (६, १३३-१३५), अध्यात्म रामायण (६, १०), आनन्द रामायण (१, ११, २२६), पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, अध्याय २६६), रामचरित मानस (६, ८५), तोरवे रामायण (६, ४८), भावार्थ रामायण (६, ५६-५७), रामचन्द्रिका (प्रकरण १६), विश्वनाथ खूँटिया कृत विचित्र रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण (६, २७), नर्मदाकृत रामायण नो सार, काश्मीरी रामायण (न० ४८), सेरीराम, रामकेर्ति (सर्ग १०), रामकियेन, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३, आदि। सारलादास के उड़िया महाभारत मे उस केशग्रहण को अंगद के दूतकार्य के वर्णन के अंतर्गत रखा गया है।

अनेक रामकथाओ मे इसका उल्लेख किया गया है कि रावण ने दैत्यगुरु शुक्राचार्य के परामर्श से अपना यज्ञ आरभ किया था, उदाहरणार्थ—रगनाथ रामायण, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, काश्मीरी रामायण, तत्त्वसग्रह रामायण। रगनाथ रामायण तथा तत्त्वसग्रह रामायण में यह माना गया है कि सरमा ने वानरो को रावण के यज्ञस्थल का मार्ग दिखलाया था। कृत्तिवास का वृत्तान्त मौलिक प्रतीत होता है (दे० ६, १०३)। रावण ने शातिकर्म का आयोजन किया और इसके प्रारंभ के चण्डी-पाठ के लिए बृहस्पति को बुलाया। इसपर देवताओ ने पवन को राम के पास भेजकर चण्डीपाठ अशुद्ध करने का परामर्श दिया। विभीषण के सुझाव के अनुसार हनुमान् को भेजा गया। हनुमान् ने मक्खी का रूप धारण कर चण्डी-पाठ के दो अक्षर चाट कर मिटाए लेकिन बृहस्पति ने अभ्यासवश शुद्ध ही पढ कर सुनाया। तब हनुमान् अपने विक्रम रूप मे प्रकट हुए जिससे बृहस्पति डर गए और पाठ भग हो गया था। अनन्तर हनुमान् ने ग्रन्थ छीनकर प्रथम माहात्म्य के तीन श्लोक मिटाए, चण्डीपाठ इस प्रकार अशुद्ध देखकर महेश्वरी ने कैलास के लिए प्रस्थान किया। तोरवे रामायण के अनुसार रावण ने अपना यज्ञ अपूर्ण छोड़कर अगद के शरीर के दो टुकड़े कर दिये किन्तु वानर अंगद को ले गए और सुषेण ने उसे जिलाया। विदेशी रामकथाओ मे भी रावण के असफल यज्ञ का उल्लेख मिलता है। सेरीराम के अनुसार रावण अपने यज्ञ के धूम्र से राम की साँस रोकना चाहता था। रामकेर्ति (सर्ग १०) मे माना गया है कि रावण के पास विष था; वह विष रावण की प्रार्थना पूर्ण होते ही अजेय बनने वाला था। रावण मन्दोदरी के साथ किसी पर्वत पर चला गया था किन्तु हनुमान् ने मन्दोदरी के वस्त्र छीनकर रावण का ध्यान भंग किया तथा विष का पात्र भी उलट दिया। रामकियेन (अध्याय ३१) के

मर्मस्थान है।[1] सेरीराम मे सीता हनुमान को बताती है कि रावण के दाहिने कान के नीचे जो छोटा सा सिर है उसमे रावण का जीव निवास करता है। पंजाब मे रावण की गर्दन उसका मर्मस्थान मानी गयी है।[2]

कृत्तिवास रामायण (६, १०४) के अनुसार रावण ने तपस्या करने के पश्चात् ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान माँगा था। ब्रह्मा ने उसे आश्वासन दिया कि तुम्हारे सिर और भुजाये कट जाने पर फिर उत्पन्न होगी तथा रावण को ब्रह्मास्त्र देकर कहा—इस ब्रह्मास्त्र से तुम्हारा मर्मस्थान छेदित हो जाने पर ही तुम मर सकोगे। रावण ने बाद मे यह ब्रह्मास्त्र मन्दोदरी की रक्षा मे छोड दिया। विभीषण ने इस रहस्य का उद्घाटन किया तथा हनुमान् ने राम की अनुमति से ब्राह्मण वेश मे मन्दोदरी के पास पहुँचकर कहा कि जब तक ब्रह्मास्त्र तुम्हारे पास है रावण नही मर सकता किन्तु मुझे आशका है कि विभीषण कही यह न जान ले कि तुमने उसे कहाँ छिपा लिया है। मन्दोदरी ने उत्तर दिया कि मैं बहुत ही सावधान हूँ, मैंने उसे इस खभे मे छिपाकर रखा है। इसपर हनुमान् ने स्फटिक का खभा लाठी से तोड दिया तथा ब्रह्मास्त्र लेकर राम के पास लौटे। सेरीराम का वृत्तान्त कृत्तिवास रामायण की कथा से साम्य रखता है। सीता ने हनुमान् से कहा था कि मन्दोदरी के पास रावण का मायावी खग है, जिसकी पूजा मन्दोदरी किया करती है। हनुमान् ने सीता के परामर्श के अनुसार मन्दोदरी के पास जाकर रावण की मृत्यु का झूठा समाचार सुनाया, शोकसतप्त मन्दोदरी ने अपना सिर झुका लिया और उस क्षण से लाभ उठाकर हनुमान् ने रावण का खग चुरा लिया जिससे रावण शक्तिहीन हो गया था।

विर्होर रामकथा के अनुसार रावण का जीव उसके महल के भीतर एक मजूषा मे सुरक्षित था। हनुमान् और लक्ष्मण दोनो ने लका मे प्रवेश कर तथा उस मजूषा को खोलकर रावण का जीव मुक्त कर दिया था। रामकियेन (अध्याय ३५) की कथा इस प्रकार है—रावण का जीव गोपुत्र नामक रावण-गुरु के पास एक मजूषा मे बन्द था और हनुमान् ने अगद के साथ गोपुत्र के पास जाकर उस मजूषा को छल से प्राप्त कर लिया। ब्रह्मचक्र के अनुसार रावण ने लङ्कादहन के पश्चात् ही अपना हृदय किसी ऋषि के यहाँ सुरक्षित रखा था, हनुमान् ने रावण का रूप धारण कर उसे प्राप्त किया था तथा राम को दे दिया। सेरीराम के पातानी पाठ की तत्सबधी कथा इससे मिलती-जुलती है।

---

१ दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १। अन्य रचनाओ मे रावण के चित्र मिलते है जिनमे दस साधारण सिरो के ऊपर गधे का एक सिर भी चित्रित किया गया है। दे० पा० वृ० ३ और ४।

२ दे० इ० एँ० भाग २०, पृ० २८६।

रामकियेन मे युद्ध टालने के लिए रावण के दो अन्य प्रयत्नो का वर्णन किया गया है। सेतु-निर्माण के पूर्व रावण तपस्वी के रूप मे राम के पास आ पहुँचता है और युद्ध छोड देने के लिए उनसे अनुरोध करता है (दे० अ० २५)। इन्द्रजित्-वध के पश्चात् रावण अपने पितामह ब्रह्मा को बुला भेजता है तथा बाद मे सीता को भी। उनकी गवाही सुनकर ब्रह्मा सीता को लौटाने का आदेश देते है तथा रावण के अस्वीकार करने पर उसे राम के अस्त्र से मर जाने का शाप देते है (अध्याय ३२)।

पउमचरियं (पर्व ६९) तथा इस पर आधारित अन्य जैन रामकथाओ मे भी रावण के पश्चात्ताप का वर्णन किया गया है। बहुरूपा विद्या सिद्ध करने के पश्चात् रावण सीता से मिलने आया। सीता ने उसे ठुकराया तथा यह कहकर मूर्च्छित हो गई थी कि मैं तभी तक जीवित रहूँगी जब तक राम, लक्ष्मण और भामण्डल की मृत्यु का समाचार नही पाती। रावण सीता का पातिव्रत्य देखकर दयार्द्र हो गया और सोचने लगा कि मैंने उसका अपहरण करके पाप किया है। फिर यह समझ कर कि बिना युद्ध किये सीता को लौटाने मे मेरा अपयश होगा रावण ने सकल्प किया कि मैं राम तथा लक्ष्मण को हराकर उन्हे सीता को सौप दूंगा। रावण के चरित्र के इस उदात्तीकरण का प्रभाव अन्य रामकथाओ पर भी पडा। तोरवे रामायण के अनुसार रावण युद्ध के लिए प्रस्थान करने के पूर्व अपनी सारी सम्पत्ति दरिद्रो मे बाँट देता है, जेल के सभी कैदियो को रिहा करता है तथा यह आदेश निकालता है कि यदि मैं युद्ध मे मारा गया तो विश्वासपात्र विभीषण को गद्दी पर बैठाया जाय।[1]

५९८. रावण-वध के परवर्ती वृत्तान्तो मे बहुधा रावण के मर्मस्थान अथवा रावण की मृत्यु की किसी गुप्त युक्ति का उल्लेख है। अध्यात्म रामायण (६, ११, ५३) के अनुसार रावण के नाभि-प्रदेश मे अमृत रखा हुआ है, विभीषण से यह जानकर राम ने आग्नेयास्त्र से उस अमृत को सुखाया था। रावण के शरीर मे स्थित अमृत का उल्लेख बहुत सी अन्य रामकथाओ मे भी किया गया है, उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, ११ २७८), रगनाथ रामायण (६, १४५), धर्म-खण्ड (अध्याय १३०), तत्वसग्रह रामायण (६, २९), रामचरितमानस (६, १०२), भावार्थ रामायण (६, ६३), नर्मदाकृत रामायण नो सार, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६, ८ और १०।

सेरीराम तथा तत्वसंग्रह रामायण के अनुसार रावण ने जटायु से युद्ध करते समय धोखा देकर कहा था कि मेरा मर्मस्थान पैर का अँगूठा है (दे० अनु० ४७०)। खोतानी तथा तिब्बती रामायणो मे वही रावण का वास्तविक मर्मस्थान माना गया है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार रावण का हँसने वाला सिर उसका

---

१ दे० मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७५५।

रावण ने राम से एक ऐसा वर माँगा था जिससे लोग उसका स्मरण किया करे। राम ने उत्तर मे कहा था—तुम्हारा शरीर जलाने वाली आग की आवाज सप्तद्वीप के लोगो को सुनाई देती रहेगी।

कृत्तिवास रामायण (६, १०६) मे भी जलती चिता का उल्लेख है। रणभूमि मे मन्दोदरी को देखकर तथा उसे सीता समझकर राम ने उसे "सौभाग्यवती" होने का आशीर्वाद दिया। वास्तविकता ज्ञात होने पर राम ने कहा—"चिता सदैव प्रज्वलित रहेगी, इससे तुम्हारा सौभाग्य चिरस्थायी होगा।"

हिन्देशिया की रामकथाओ मे रावण के जीवित रहने का उल्लेख है। **सेरीराम** मे राम द्वारा पराजित तथा आहत रावण रणभूमि मे पडा रहता है। सीता की अग्नि-परीक्षा के बाद भरत और शत्रुघ्न लङ्का पहुँचते है तथा रावण को देखने की इच्छा प्रकट करते हैं। राम अपने भाइयो के साथ रावण से मिलने आते है तथा उसके साथ बातचीत भी करते हैं। यह प्रसग महाभारत का स्मरण दिलाता है जहाँ पाण्डव मरणासन्न भीष्म के दर्शन करने आते है। **हिकायत महाराज रावण** मे भी माना गया है कि रावण जीवित है और कल्प के अन्त मे पुन. भगवान के शत्रु के रूप मे प्रकट होने वाला है।

अर्वाचीन रामकथाओ मे प्रायः अध्यात्म रामायण के अनुसार रावण की **सायुज्य मुक्ति** का उल्लेख है, उदाहरणार्थ आनन्द (१, ११, २८३) और भावार्थ (६, ६३) रामायण। **अध्यात्म रामायण** (६, ११, ७८) मे रावण का जीव ज्योति का रूप धारण कर राम के शरीर मे प्रवेश करता है, देवताओ के आश्चर्य करने पर नारद उनको समझाते है कि रावण ने द्वेषभाव से निरन्तर हृदय मे राम का स्मरण किया था और इस कारण उसने मुक्ति प्राप्त की है। मुक्ति-प्राप्ति के उद्देश्य से ही रावण ने सीता-हरण किया था (दे० अनु० ४८८)।

पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ के अनुसार राम रावण के नौ सिर तथा १८ भुजाये काटकर उसे इस शर्त पर जीवित रहने देना चाहते थे कि रावण सीता को लौटाये। इसपर रावण मन्दोदरी के पास गया और मन्दोदरी ने उसे राम के हाथ से मरकर मुक्ति प्राप्त करने का परामर्श दिया। स्कद पुराण (माहेश्वर खण्ड, अध्याय ८, १३३) मे रावण की शिव-सायुज्यमुक्ति का उल्लेख मिलता है।

ञ। अग्निपरीक्षा

६०० प्रचलित वाल्मीकि रामायण (सर्ग ११२-११३) मे अग्नि-परीक्षा की कथा इस प्रकार है। रावण-वध तथा विभीषण के अभिषेक के बाद राम ने हनुमान् द्वारा सीता को अपनी विजय का समाचार भेज दिया, हनुमान् सीता का यह

पद्मपुराण (पातालखण्ड, अध्याय ११२, २०२-२२५) के अनुसार अतिकाय तथा महाकाय गुप्तचर के रूप मे राम की सेना मे प्रवेश कर पकडे गए थे, उन्होंने शुक्र की इस भविष्यवाणी का उद्घाटन किया कि लङ्का द्वार पर जो लकडी का कीर्ति-मुख है (दारु पंचवक्त्रं), उसके छिन्न-भिन्न हो जाने से रावण की मृत्यु अवश्यभावी है। राम ने बाण मार कर उस कीर्तिमुख को नष्ट कर दिया था।

महानाटक (१४,२६) के अनुसार राम ने विश्व का कल्याण दृष्टि मे रखकर रावण के वक्षस्थल पर बाण नही चलाया, राम जानते थे कि रावण के हृदय मे सीता का निवास था, सीता के हृदय मे राम तथा राम मे समस्त भुवनावली विद्यमान थी। **रामचरितमानस** (६, ६६) मे भी इसकी चर्चा की गई है, उस रचना मे त्रिजटा सीता को आश्वसान देती है कि सिरो के कट जाने पर रावण व्याकुल होकर तुमको भूल जायगा, तभी राम उसके हृदय मे बाण मार कर उसका वध करेगे।

रावण-वध के वर्णन मे अनेक गौण परिवर्तन किए गए हैं जिनका उल्लेख यहाँ आवश्यक है। **महाभारत** (३, २७४, ८) के अनुसार रावण ने अन्तिम युद्ध के समय राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण करनेवाले बहुत से मायामय योद्धाओ को उत्पन्न किया था, रावण की इस माया का उल्लेख कुछ परवर्ती रामकथाओ मे भी मिलता है; उदाहरणार्थ रामचरितमानस (६, ८६)। **महाभारत** (३, २७४, ३१) मे माना गया है कि राम का ब्रह्मास्त्र रावण को इस प्रकार जला देता है कि राख भी शेष नही रही। वलरामदास रामायण मे राम रावणवध के समय अपना शरीर वढाकर कृतान्तक रूप धारण कर लेते है। **तत्वसंग्रह रामायण** (६, ३१) के अनुसार राम ने रावण का वध करने के लिए परमेश्वर का रूप धारण कर लिया, **तोरवे रामायण** (६, ५१) मे भी माना गया है कि रावण ने अपने वध के पूर्व राम का विश्वरूप देखा था। उस रचना के अनुसार अगस्त्य ने युद्ध के समय ही राम को त्रिमूर्ति नामक बाण दिया और राम ने उसी बाण से रावण को मार डाला था।

५६६. वाल्मीकि रामायण के अनुसार विभीषण ने राम के अनुरोध से अपने भाई रावण का **दाह-संस्कार** विधिवत् सम्पन्न किया था (दे० ऊपर अनु० ५६६, २)। एकाध रामकथाओ मे **मन्दोदरी** रावण की चिता पर चढकर सती हो गई थी (दे० अनु० ५४४)। एक अन्य परम्परा के अनुसार रावण की **चिता** जलती रही। **आनन्द रामायण** (राज्यकाण्ड, सर्ग २०) मे तत्संबंधी कथा इस प्रकार है। रावणवध के बहुत काल बाद तक अयोध्या मे रात को एक आवाज सुनाई दिया करती थी जिसका रहस्य वसिष्ठ ने यह कहकर प्रकट किया कि रावण ने जिस शरीर से बारम्बार ब्रह्महत्या की थी वह शरीर आज भी जल रहा है। हनुमान् प्रतिदिन लकडी के सौ भार (**प्रत्यहं काष्ठभारशतम्**) उसकी चिता पर डाला करते हैं। इसका एक अन्य कारण यह है कि

प्राप्तचारित्रसन्देहा मम प्रतिमुखे स्थिता ॥१७॥
कः पुमांस्तु कुले जातः स्त्रियं परगृहोषिताम् ।
तेजस्वी पुनरादद्यात् सुहृल्लोभेन चेतसा ॥१९॥
नास्ति मे त्वय्यभिष्वंगो यथेष्टं गम्यतामिति ॥२१॥
लक्ष्मणे वाथ भरते कुरु बुद्धिं यथासुखम ॥२२॥
शत्रुघ्ने वाथ सुग्रीवे राक्षसे वा विभीषणे ।
× × ×
नहि त्वा रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम् ।
मर्षयत्यचिरं सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम् ॥२४॥

(सर्ग ११५)

राम के ये कठोर शब्द सुनकर सीता ने अपने सतीत्व की शपथ खाई तथा लक्ष्मण द्वारा चिता तैयार कराकर वे उसमे तुरन्त प्रवेश कर गईं (सर्ग ११६)। अनन्तर देवता प्रकट हुए तथा सीता के पक्ष मे साक्ष्य देकर विष्णु के रूप मे राम की स्तुति करने लगे (सर्ग ११७)। अन्त मे अग्नि देवता ने सीता के साथ आग मे से निकलकर तथा उनके सतीत्व का साक्ष्य देकर सीता को ग्रहण करने का राम से अनुरोध किया। उत्तर मे राम ने कहा कि मुझे सीता के चरित्र के विषय मे सन्देह नही था किन्तु एक तो रावण के यहाँ रहने के बाद सीता को इस शुद्धि की आवश्यकता थी, दूसरे, यदि मैं सीता को यो ही ग्रहण करता तो लोग मुझ पर कामात्मा होने का आक्षेप लगाते :

अवश्यं चापि लोकेषु सीता पावनमर्हति ।
दीर्घकालोषिता हीयं रावणांतःपुरे शुभा ॥१३॥
बालिशो बत कामात्मा रामो दशरथात्मजः ।
इति वक्ष्यति मां लोको जानकीमविशोध्य हि ॥१४॥

(सर्ग ११८)

६०१. सीता की अग्निपरीक्षा का यह वर्णन वाल्मीकि रामायण मे प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६५)। अत- महाभारत मे सीता की अग्नि परीक्षा का अभाव स्वाभाविक ही है। रामोपाख्यान (अध्याय २७५) मे विभीषण तथा अविध्य[1] सीता को राम के पास ले आते हैं, और राम सीता की शपथ तथा वायु, अग्नि, वरुण और ब्रह्मा के साक्ष्य से सन्तुष्ट होकर सीता को ग्रहण करते हैं तथा देवताओ ने तीन वर प्राप्त

---

१. सूरसागर मे लक्ष्मण सीता को राम के पास ले जाता है। आश्चर्यचूडमणि मे सीता को ले आने का भार सुग्रीव को सौंपा जाता है।

सन्देश लेकर लौटे—द्रष्टुमिच्छामि भर्तारं भक्तवत्सलम् (११३, ४७)। अगले सर्ग मे राम का रुख अचानक वदलता है, वह विभीषण को आदेश देते है कि सीता को मेरे पास ले आओ—दिव्यांगरागां[1] वैदेहीं दिव्याभरणभूषिताम्। इह सीतां शिरःस्नातामुपस्थापय मा चिरम् ॥७॥ विभीषण से राम की यह आज्ञा सुनकर सीता कहती है—अस्नात्वा द्रष्टमिच्छामि भर्तारं राक्षसेश्वर (११); किन्तु विभीषण राम की आज्ञा के पालन के लिये अनुरोध करता है। अत- स्नान के पश्चात् ही सीता मूल्यवान् वस्त्र तथा आभूषण पहने शिविका पर चढकर राम से मिलने आती हैं। विभीषण ध्यानस्थ[2] राम के पास पहुँचकर सीता के आगमन का समाचार देता है। तव शिविका को पास लाने के लिए विभीषण के अनुचर वानरो की भीड हटाने लगे; इस पर राम क्रुद्ध होकर विभीषण को आदेश देते है कि सीता सब वानरो के देखते पैदल ही मेरे पास आवें। राम की यह आज्ञा सुनकर लक्ष्मण, सुग्रीव तथा हनुमान् को वहुत दु.ख हुआ (वभुवुर्व्यथिता भृशम्)। अनन्तर सीता अत्यन्त लज्जित होकर तथा विभीषण के पीछे-पीछे चलकर अपने पति के पास आई—लज्जया त्ववलीयन्ती स्वेषु गात्रेषु मैथिली, विभीषणेनानुगता भर्तार साम्यवर्तत (११४, ३३)। सीता को अपने पास खडी हुई देखकर राम उनसे कहने लगे—मैने तो अपने शत्रु के अपमान का प्रतिकार किया है किन्तु मुझे तुम्हारे चरित्र पर सन्देह है। जिस स्त्री ने दूसरे के घर मे निवास किया है उसे कौन पुरुप ग्रहण कर सकता है। मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नही रहा, तुम जहाँ चाहो चली जाओ :

---

१. 'दिव्यागरागा' अनसूया द्वारा सीता को प्रदत्त अगराग का स्मरण दिलाता है। यह प्रसग प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ४३१) और सभवतः सीता सावित्री की कथा पर आधारित है (दे० अनु० ८)। कालिदास ने भी इस अगराग का उल्लेख किया (दे० रघुवश १२, २७)। आश्चर्यचूडामणि मे माना गया है कि अनसूया सीता को यह वरदान देती है कि तुम अपने पति के सामने आते ही अपने आप पूर्णमडित हो जाओगी। रावण-वध के वाद जब सीता पालकी पर वैठी पहुँचती हैं, तो राम कहते है—सर्वे पश्यन्तु जानक्या रूपं चारित्रभूषणम् (७, १४)। किन्तु सीता को पूर्ण रूप से अलकृत देख कर वह उनके चरित्र पर सदेह करने लगते हैं और सीता कहती हैं कि अनुसूया का वरदान मेरे लिए शाप वन रहा है—हा धिक् अनसूयाया अनुग्रहोऽपि मे इदानीं शापः संवृतः।

२ राम का उस समय ध्यानस्थ होना अस्वाभाविक तथा मूल रामायण की भाव-धारा के प्रतिकूल है।

निर्माण किया था। उस टीटिभ-सरोवर के तट पर जाकर सीता अपने सतीत्व की शपथ खाकर जल मे प्रवेश करती है। इस पर पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को अपनी गोद मे ले लेती हैं, और सरोवर के उस पार पहुँचाती है (दे० ६, ५१)। यह देखकर ऋषि राम को शाप देना चाहते है, लेकिन सीता के अनुरोध पर ऐसा नही करते।

६०२. अन्य रचनाओ मे प्रायः वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता की अग्नि परीक्षा का वर्णन किया गया है। एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि अधिकाश मध्यकालीन रामायणो मे माया-सीता (दे० अनु० ५०४-५०६) अग्नि मे प्रवेश करती हैं और वास्तविक सीता उसमे प्रकट हो जाती हैं। **आनन्द रामायण** के अनुसार सीता अपने हरण के पूर्व तीन रूपो मे विभक्त हो गई थी, वह उस अवसर पर फिर एक हो जाती है (१, १२, ११)। **कृत्तिवास रामायण** (६, ११४) मे मन्दोदरी का शाप अग्निपरीक्षा का कारण माना गया है। मन्दोदरी ने राम के दर्शनो की आशा से आनन्दमग्न सीता को यह कहकर शाप दिया—तुम्हारा यह आनन्द अकस्मात् निरानन्द हो जाएगा। लङ्का की स्त्रियो ने भी उस अववर पर सीता को शाप दिया। इसकी कल्पना वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठो मे उल्लिखित तारा-शाप पर आधारित है (दे० अनु० ७२६)।

रामायण मसीही मे मन्दोदरी सीता को राम के पास ले आती है और राम स्वयं सीता को आग मे डालते हैं। **सेरीराम** मे हनुमान् चिता तैयार करते हैं, चिता की सारी लकडी जल जाने के बाद तक सीता निरापद खडी रहती हैं। **ब्रह्मचक्र** के अनुसार सीता ने राम का सन्देह देखकर आग जलाने का आदेश दिया। सीता के अग्नि मे प्रवेश करते ही अग्नि बुझ गई।

६०३ अन्य वृत्तान्तो मे सीता की निम्नलिखित परीक्षाओ का उल्लेख मिलता है—विषैले साँपो से भरे हुए घडे मे हाथ डालना; मस्त हाथियो के सामने फेंका जाना, सिंह और व्याघ्र के वन मे त्याग किया जाना, अत्यन्त तप्त लोहे पर चलना (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त ३ और १३)।

कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित भोजपुरी ग्रामगीत (पृ० १३७) मे सीता की अन्य परीक्षाओ का भी वर्णन किया गया है। उस सग्रह के एक गीत के अनुसार सीता ने,

(१) अग्नि को हाथ मे लिया तब वह बिल्कुल ठडी हो गई।
(२) सूर्य को अपने हाथ मे उठा लिया और वह हाथ मे उठाते ही अस्त हो गया।
(३) सर्प को अपने हाथ मे लिया तब वह फन फैलाकर बैठ गया।
(४) गगा को हाथ मे लिया, तब गगा बिल्कुल सूख गई।
(५) तुलसी को अपने हाथ मे लिया तब तुलसी जी बिल्कुल ही सूख गई।

कर लेते है—(१) धर्म मे स्थिर बुद्धि, (२) शत्रुओ से अजेयता, (३) मृत वानरो का पुनर्जीवन ।

महाभारत के अतिरिक्त प्राचीन पुराणो मे भी अग्निपरीक्षा का निर्देश नही मिलता, उदाहरणार्थ हरिवंश, विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण, नृसिंह पुराण । इसी तरह निम्नलिखित रचनाओ मे सीता की अग्निपरीक्षा का अभाव है—अनामक जातकम्, श्याम का राम जातक, खोतानी और तिब्बती रामायण, गुणभद्रकृत उत्तरपुराण ।

पउमचरिय (पर्व ७९) मे भी राम और सीता के पुनर्मिलन के समय देवताओ की पुष्पवृष्टि तथा सीता की निर्मलता के पक्ष मे उनके साक्ष्य के अतिरिक्त किसी भी परीक्षा का उल्लेख नही मिलता किन्तु इसका वर्णन एक अन्य अवसर पर रखा गया है। सीता-त्याग तथा सीता के पुत्रो द्वारा राम-सेना से युद्ध के पश्चात् राम उन पुत्रो के साथ अयोध्या लौटे । वहाँ पहुँचकर सुग्रीव, हनुमान् आदि राम से अनुरोध करने लगे कि वह सीता को पुन: ग्रहण कर ले । राम ने उस प्रस्ताव को स्वीकार किया बशर्ते कि सीता लोगो को अपने सतीत्व का प्रमाण दे । तब सुग्रीवादि सीता को अयोध्या ले आये और सीता ने कहा—मैं तुला पर चढ सकती हूँ, आग मे प्रवेश कर सकती हूँ, लोहे की तपी हुई लम्बी छड धारण कर सकती हूँ अथवा मैं उग्र विष भी पी सकती हूँ (दे० पर्व १०१, ३९) । राम ने अग्निपरीक्षा को ही उचित समझा और तीन सौ हाथ गहरा अग्निकुण्ड खोदने का आदेश दिया । आग प्रज्ज्वलित होने पर सीता ने अपने सतीत्व की शपथ खाकर उसमे प्रवेश किया । सीता के प्रवेश करते ही अग्निकुण्ड स्वच्छ जल से भर गया, जो धीरे-धीरे उमड कर सर्वत्र फैल गया और बढता गया । यह देखकर जनता सीता से प्रार्थना करने लगी और सीता ने जल छू कर उसे सीमित कर दिया । तब सबो ने बावडी के मध्य मे सहस्रदल कमल पर विराजमान सीता को देखा । राम ने पास जाकर सीता से क्षमा-याचना की तथा अपने साथ अयोध्या मे निवास करने का अनुरोध किया किन्तु सीता उस प्रस्ताव को ठुकराकर जैन दीक्षा लेने के उद्देश्य से चली गई (दे० पर्व १०१-१०२) । पद्मचरित (१०४, ७४-७९) तथा पउमचरिउ (५, ८३, ९) मे भी यह कथा मिलती है ।

कथासरित्सागर मे राम द्वारा सीता की परीक्षा का तो उल्लेख नही किया गया है, लेकिन त्याग के पश्चात् वाल्मीकि आश्रम मे पहुँचकर सीता की परीक्षा का निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है । आश्रम के अन्य ऋषि सीता के सतीत्व पर सन्देह करते हैं और अपने चले जाने का संकल्प वाल्मीकि से प्रकट करते हैं । यह सुनकर सीता स्वय कोई भी परीक्षा लेने का प्रस्ताव करती है । इसपर ऋषि टीटिभा की कथा सुनाते हैं, जिसके सतीत्व को प्रमाणित करने के लिए लोकपालो ने टीटिभ सरोवर का

६०६ गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (६८, ६५६) के अनुसार राम-लक्ष्मण की वापसी यात्रा दिग्विजय का रूप धारण कर लेती है, जिससे वे केवल ४० वर्ष बाद अपनी राजधानी पहुँच पाते हैं। शेष रामकथाओ मे प्रायः वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही अयोध्या की यात्रा का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार सुग्रीव अपने वानरो के साथ तथा विभीषण अपने मत्रियो के साथ राम-सीता-लक्ष्मण से मिलकर अयोध्या की यात्रा करते हैं। दक्षिणात्य पाठ मात्र (६,१२३, २३-३८) मे सीता के अनुरोध करने पर तारा आदि वानरियाँ भी पुष्पक पर चढकर राम की राजधानी जाती हैं। अध्यात्म रामायण (६, १४, ८), आनन्द रामायण (१, १२, ५६) आदि रचनाओ मे भी वानरियो की इस यात्रा का उल्लेख है। बालरामायण (अक १०) और रामायण ककविन (सर्ग २४) के अनुसार त्रिजटा ने सीता के साथ अयोध्या की यात्रा की थी। आनन्द रामायण (१, १२, ४४) मे कृतज्ञ सीता त्रिजटा और सरमा दोनो को अपने साथ अयोध्या ले जाती हैं।

वाल्मीकि रामायण की अतरग परीक्षा से स्पष्ट है कि आदि रामायण पुष्पक के विषय में मौन था (दे० अनु० ५६६)। निम्नलिखित रचनाओ मे रामादि स्थल से ही अयोध्या लौट जाते है—महानाटक (१४, ६६), पाश्चात्य वृत्तान्त (न० २, ३ और ४), रामकियेन (अध्याय ३८), ब्रह्मचक्र, सथाली रामकथा (अनु० २७१)। सारलादास के उडिया महाभारत (सभापर्व) के अनुसार राम, सीता तथा लक्ष्मण के साथ, गिरि पर्वत के पास किला बना कर रहने लगे। वहाँ सीता के ऋतुपर्ण नामक पुत्र हुआ और वह उस किले का राजा बना।

६०७ बहुत सी रामकथाओ मे सेतुभंग का उल्लेख है। खोतानी रामायण के अनुसार सेतु को पार करने के पश्चात् ही उसे नष्ट किया गया था जिससे राम-सेना का कोई भी योद्धा युद्ध छोडकर भाग न सके। सेतुभग प्राय. रावण-वध के बाद अयोध्या की यात्रा के समय वर्णित है, उदाहरणार्थ—स्कन्दपुराण का सेतुमाहात्म्य (अध्याय ३०), रगनाथ रामायण (६, १६१), आनन्द रामायण (१, १२, ४८), तोरवे रामायण (६, ५४), कृत्तिवास रामायण (६, १२१), तत्वसग्रह रामायण (६, ३५), पाश्चात्य वृत्तान्त न० २, ३, ४, ६, अलबरूनी का भारत (अग्रेजी सस्करण १, ३०७)। स्कन्द पुराण के नागर खण्ड (अध्याय १०१) तथा पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड (अध्याय ३५, १३५) मे रावण-वध के बहुत काल बाद राम की लङ्का-यात्रा के अवसर पर सेतुभग का वर्णन किया गया है। इस घटना मे कई कारणो का उल्लेख मिलता है। सेतुमाहात्म्य मे विभीषण लङ्का की सुरक्षा को दृष्टि मे रख कर राम से निवेदन करता है कि सेतु का भजन किया जाय। रगनाथ रामायण तथा तत्वसग्रहरामायण मे भी यही कारण दिया गया है। स्कन्द पुराण के नागर खण्ड तथा पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड

ट | वापसी यात्रा

६०४. प्रचलित वाल्मीकीय युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्गों की सक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है। अग्निपरीक्षा के पश्चात् राम विभीषण का आतिथ्य-सत्कार अस्वीकार कर उससे अयोध्या की यात्रा का प्रबन्ध करने का निवेदन करते है। विभीषण पुष्पक प्रस्तुत करता है, राम की अनुमति पाकर सुग्रीव अपने वानरो के साथ तथा विभीषण अपने अमात्यो के साथ पुष्पक पर चढ़ते हैं (सर्ग १२१-१२२)। अगले सर्ग मे राम सीता को सम्बोधित करके लङ्का से अयोध्या तक की समस्त यात्रा का वर्णन करते है। भरद्वाज-आश्रम मे पहुँचकर राम अयोध्या का समाचार प्राप्त कर लेते है तथा हनुमान् को गुह और भरत के पास भेज देते हैं (सर्ग १२४-१२५)। हनुमान से सक्षेप मे राम-चरित सुनकर भरत राम के आगमन के लिये अयोध्या सजाने का आदेश देते हैं। जनता भरत के साथ नन्दिग्राम मे राम का स्वागत करती है। भरत राम को राज्य-भार सौंप देते है तथा राम का अभिषेक विधिवत् सम्पन्न किया जाता है (सर्ग १२६-१२८)।

६०५. **पउमचरिय** (पर्व ७७-७८) के अनुसार राम तथा लक्ष्मण ने रावणवध के बाद लका मे प्रवेश कर वहाँ के राजमहल मे ६ वर्ष बिताए। अन्त मे नारद ने राम के पास आकर पुत्र-वियोग के कारण शोकसन्तप्त अपराजिता की दयनीय दशा का वर्णन किया, इसके फलस्वरूप राम-लक्ष्मण ने साकेत की यात्रा करने का निश्चय किया। **सेरीराम** मे भी राम बहुत समय तक लका मे निवास करते हैं, जहाँ ससार भर के राजा आकर राम को सम्मान देने आते है। भरत, शत्रुघ्न तथा राम की बहन किकेवी देवी भी लका मे राम से मिलने आते है तथा वही विभीषण का किकेवी देवी के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है। बाद मे महरीसी कली आकर सीता के जन्म का रहस्य प्रकट करते है (दे० अनु० ४२८) और मन्डूदाकी अपनी पुत्री सीता को पहचान लेती है। एक वर्ष तक लका मे रहकर राम के सभी भाई विभीषण के साथ अयोध्या लौटते है। विभीषण अयोध्या से वापस आते समय एक रम्य पर्वत देखते है, और राम के सामने इसका गुणगान करते हैं। फलस्वरूप राम उस पर्वत पर दुर्यापुरी नामक नगर बनवा देते हैं और रावण के मत्री को लका मे छोडकर लका के चुने हुए लोगो के साथ अपनी इस नयी राजधानी को बसा लेते हैं। राम लक्ष्मण को युवराज, हनुमान् को सेनापति तथा विभीषण को वजीर नियुक्त कर तथा ससार भर से धन, कला अथवा विज्ञान से सम्पन्न लोगो को बुलाकर न्यायपूर्वक राज्य करने लगते हैं। **रामकियेन** (अ० ३८) के अनुसार राम ने प्रस्थान करने के पूर्व आशाकर्ण नामक राक्षस का वध किया तथा सेतु पार करने के पश्चात् हनुमान् ने रावण के पुत्र प्रलयकल्प को मार डाला। वह पाताल-वासिनी कला-अग्गी का पुत्र था, जो पाताल से निकलकर अपने पिता के वध का प्रतिकार करना चाहता था।

यह समाचार देता है कि राम-लक्ष्मण का वध करने के पश्चात् रावण पुष्पक पर चढकर अयोध्या पर आक्रमण करने वाला है। इसपर सेना को बुलाया जाता है तथा कौशल्या और सुमित्रा चिता पर चढने की तैयारियाँ करने लगती हैं। पुष्पक के आने पर भरत विभीषण पर बाण चलाना ही चाहते है किन्तु वशिष्ठ सब जानकर उनको रोक लेते हैं (अक ८)।

अनेक अन्य रामकथाओ के अनुसार भरत चौदह वर्ष की समाप्ति पर राम को न पाकर तथा उनको मृत समझकर आत्महत्या की तैयारियाँ करने लगे थे कि हनुमान् ने आकर उनको रोका था; उदाहरणार्थ आनन्द रामायण (१, १२, ६५), कम्ब रामायण (६, ३७), रगनाथ रामायण (६, १६३), भावार्थ रामायण (६, ७८)। रगनाथ रामायण मे गुह तथा शत्रुघ्न के आत्महत्या-विचार का भी उल्लेख है। राम-कियेन (अ० ३८) के अनुसार भरत और शत्रुघ्न दोनो चिता मे प्रवेश करने के लिए तैयार थे।

६१० युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्ग मे वाल्मीकि ने सक्षेप मे अपने काव्य का निर्वहण प्रस्तुत किया है। भरत ने राम को राज्य लौटाते हुए कहा कि मैं चोरो आदि के कारण दु:सह राज्यभार सभालने मे असमर्थ हूँ :

किशोरवद्गुरु भार न वोढुमहमुत्सहे ॥३॥
वारिवेगेन महता भिन्नः सेतुरिव क्षरन्।
दुर्बन्धनमिदं मन्ये राज्यच्छिद्रमसवृतम् ॥४॥

राम ने समारोह के साथ नगर मे प्रवेश किया तथा वसिष्ठ ने अगले दिन राम तथा सीता का राज्याभिषेक सम्पन्न किया। अनन्तर राम पहले ब्राह्मणो को तथा बाद में विभीषण, सुग्रीवादि वानरो को दान देकर निष्कटक राज्य करने लगे। राम ने लक्ष्मण को युवराज बनाना चाहा किन्तु लक्ष्मण ने उस पद को अस्वीकार किया जिससे भरत युवराज बन गए। राम १०,००० वर्ष तक राज्य करते रहे और उन्होंने अन्य यज्ञो के अतिरिक्त अपने पुत्रो के साथ दस बार अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किया था। रामराज्य के गुणगान तथा रामायण की फलश्रुति पर वाल्मीकिकृत आदिकाव्य समाप्त हो जाता है। उत्तरकाण्ड (सर्ग ३७-४०) में रामाभिषेक के लिए आमन्त्रित राजाओ तथा सुग्रीव, विभीषण, हनुमान् आदि की विदा का पुनः वर्णन किया गया है।

उत्तरकाण्ड के दो अन्य स्थलो पर रामराज्य की सुखशान्ति का विवरण दिया गया है—सर्ग ४१, १७-२२ और सर्ग ६६, १०-१३। महाभारत (द्रोणपर्व, दे० ऊपर अनु०,४४; शातिपर्व, २६, ४७-५२) तथा रघुवश (१४, २३-२४) मे इसका वर्णन मिलता है। परवर्ती रचनाओ मे प्रजा के धर्माचरण पर भी विशेष बल दिया जाता है,

मे विभीषण राम से कहते है—"जिज्ञासा से प्रेरित होकर मनुष्य लङ्का आयेगे और मेरी आज्ञा का तिरस्कार करके राक्षस उन्हे खा जायेगे।" कृत्तिवास रामायण मे सागर स्वय निवेदन करता है कि मेरा वन्धन अव तोड दिया जाय। पाश्चात्य वृत्तान्त न० २ मे राम इसीलिये सेतु नष्ट करते है कि कोई भी राक्षस उनका पीछा न कर सके। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ४ के अनुसार यह इसलिये हुआ कि कोई भी लङ्का का सोना न चुरा ले जाय।

६०८ यथार्थवादी वाल्मीकि के अनुसार राम ने भरद्वाज-आश्रम मे पहुँचकर हनुमान् को इसलिये भरत के पास भेज दिया था कि वह राम के प्रति भरत के भावो की परीक्षा ले सके, क्योकि यह सर्वथा सभव था कि राज्य करते-करते भरत का मन वदल गया हो—**कस्य नावर्तयेन्मनः** (१२५, १६)। यदि भरत वास्तव मे अपने लिए राज्य चाहते हैं तो राम उनका विरोध नही करना चाहेगे—**प्रशास्तु वसुधां सर्वामखिलाम्** (१२५, १७)। राम की यह आशका निर्मूल सिद्ध हुई, राम के आगमन का समाचार सुनकर भरत आनन्दित हुए।

वलरामदास के रामायण मे इस अवसर पर **हनुमान् के गर्वनिवारण** की कथा मिलती है। राम के साथ भरद्वाज आश्रम मे पहुँचकर हनुमान् को यह सोचकर गर्व उत्पन्न हुआ था कि मैं राम के लिये कितने महान कार्य कर चुका हूँ। राम ने यह जानकर हनुमान् को किसी वहाने आश्रम के पास के वन मे भेज दिया। उस वन मे अष्टेकि अथवा अष्टक नामक असुर (वैष्णवी माया के अवतार) ने हनुमान् को परास्त कर उन्हे तभी जाने दिया जब हनुमान् नम्रतापूर्वक राम का स्मरण करने लगे।

६०९. राम-नाटको मे पहले-पहल **रावण-वध के पश्चात् राक्षसों के छल-कपट** का वर्णन किया गया है, जिससे भरत आत्महत्या का विचार करने लगे। **उदात्तराघव** (८वी श०) मे तीन छद्मवेशी राक्षसो का अयोध्या मे आगमन वर्णित है। पहला राक्षस वसिष्ठ के शिष्य का रूप धारण कर भरत के पास यह कहने आता है कि मैंने सुना है कि लक्ष्मण युद्ध मे मारे गये हैं। अनन्तर एक दूसरा राक्षस नारद के रूप मे आकर कहता है कि राम का भी देहान्त हुआ है और सीता अकेली ही अयोध्या आ गई है। अन्त मे एक राक्षसी सीता का रूप धारण कर भरत को अपने पति तथा देवर की मृत्यु का समाचार सुनाती है। यह सुनकर भरत सरयू मे अपना शरीर त्याग देने का सकल्प करते हैं किन्तु हनुमान् ठीक समय पर पहुँचकर उनको ऐसा करने से रोक लेते है। हनुमान् राक्षसो की माया का एक और उदाहरण देते है—एक राक्षस ने सुमन्त के रूप मे राम को भरत के मरणासन्न होने का समाचार दिया था (अक ६)। **जानकीपरिणय** मे छद्मवेशी शूर्पणखा अयोध्या मे राम-वध का मिथ्या समाचार फैलाती है (दे० अनु० २४४)। **उल्लाघराघव** मे रावण का कापरिक नामक गुप्तचर मुनि का रूप धारण कर भरत को

सर्वथा नवीन सामग्री भी मिलती है जिसका यहाँ उल्लेख करना उचित होगा। **पउमचरियं** मे पहले-पहल युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो तथा रावण-मन्दोदरी की शृंगारपूर्ण चेष्टाओ का वर्णन किया गया है (दे० पर्व ५६, १३-२६ और पर्व ७०, ५१-६१)। सभवतः पउमचरिय के अनुकरण पर अनेक अन्य महाकाव्यो मे युद्धकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत **राक्षस-राक्षसियों का सभोग-शृंगार** वर्णित है, उदाहरणार्थ सेतुबन्ध (सर्ग १०), भट्टिकाव्य (सर्ग ११), रामायण ककविन (सर्ग १२); जानकी-हरण (सर्ग २६), अभिनन्द कृत रामचरित (सर्ग १८), कम्ब-रामायण (६, २४), रामलिंगामृत (सर्ग ८)।

६१२. **भानुराज** की कथा अब तक केवल श्याम के **रामकियेन** (अध्याय २६) मे मिली है। समुद्र पार करने के पश्चात् रामसेना ने लङ्का के निकट पहुँचकर एक मनोहर माया-वन देखा था। रामसेना को आकर्षित करने तथा भूमि के नीचे खीच लेने के उद्देश्य से भानुराज ने यह मायावन अपने सिर पर धारण किया था। हनुमान् ने उसकी माया जानकर भूमि मे प्रवेश किया तथा उसे मार डाला।

६१३ **भस्मलोचन** की कथा कई रूपो मे प्रचलित है। यह हरिवंश (२, ५७), विष्णुपुराण (५, २३) आदि के मुचुकुद-वृत्तान्त से साम्य रखती है। **कृत्तिवास रामायण** (५, ४७) के अनुसार भस्मलोचन नामक राक्षस की दृष्टि जिस पर पडती थी वह उसी क्षण भस्मीभूत हो जाता था। इस कारण भस्मलोचन प्राय: अपनी आँखो को चमडे के परदे से ढके रखता था। जब राम-सेना समुद्र पार कर लङ्का की ओर बढ रही थी तब रावण ने उसके विरुद्ध भस्मलोचन को भेज दिया। विभीषण के परामर्श से राम ने ब्रह्मास्त्र छोडकर भस्मलोचन के सामने असख्य दर्पण रख दिये थे जिन पर दृष्टि डालकर भस्मलोचन जल गया था। **सेरीराम** मे बीलावीस को रावण का पुत्र माना गया है। कुभकर्ण-वध के बाद रावण ने उसे पाताल से बुलाकर रामसेना को नष्ट करने का आदेश दिया। विभीषण से बीलावीस की विनाशक दृष्टि के विषय मे जानकर राम ने लोहे का एक विस्तृत दर्पण बनवाया और हनुमान् ने अपनी पूँछ से इस दर्पण को बीलावीस के सामने रख दिया। उसमे अपना प्रतिबिंब देखकर बीलावीस भस्मीभूत हुआ।

रामकियेन (अध्याय ३१) मे कई **मायावी योद्धाओं** की चर्चा है। **सहस्सतेज** नामक राक्षस अपनी गदा के अग्रभाग से जिसकी ओर इशारा करता था, वह तत्काल मर जाता था।[1] हनुमान् अपने को वालि का दास कहकर सहस्सतेज का विश्वासपात्र बन जाते हैं,

---

१. यह गदा शिव द्वारा मधु को प्रदत्त शूल का स्मरण दिलाती है, जो मधु के प्रतिद्वन्द्वी को भस्मीभूत कर देता था (दे० वाल्मीकि रामायण ७, ६१, ६)। इस कथा का एक अन्य रूप भी रामकियेन मे मिलता है (दे० अन० ६४८, ४)

दे० भागवत पुराण (६, १०, ५१-५५); पद्मपुराण (पातालखण्ड ४; ४६-५४ और ५, २२-५५), ब्रह्मपुराण (१२३, १४५-१५५)।

आनन्द रामायण (१, १२, ८४) के अनुसार राम भरत का आलिंगन करने के पश्चात् बहुत से रूप धारण कर एक ही समय सबो से मिले थे। प्रायः समस्त राम-कथाओ मे वाल्मीकि के अनुसार ही **राम का अभिषेक** वर्णित है, किन्तु देवताओ की उपस्थिति को अधिक महत्व दिया गया है, उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (६, १५, ५०), आनन्द रामायण (१, १२, ११५)। अभिषेक नाटक (अक ६, ३२) के अनुसार राम का अभिषेक लङ्का मे अग्निदेव द्वारा सम्पन्न हुआ था तथा प्रतिमा नाटक (अक ७, ५-६) के अनुसार जनस्थान मे, जहाँ भरत तथा शत्रुघ्न माताओ तथा एक विशाल सेना के साथ पहुँचे थे।

अध्यात्म रामायण (६, १६, २६) तथा आनन्द-रामायण (१, १२, १६६) के अनुसार राम ने लक्ष्मण को **युवराजपद** पर अभिषिक्त किया था। पउमचरिय (पर्व ८०-८५), गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (६८, ६६३) आदि जैन रामकथाओ मे लक्ष्मण तथा राम दोनो का अभिषेक किया जाता है। पउमचरिय के अनुसार इस अभिषेक के पूर्व ही भरत विरक्त होकर जैन दीक्षा लेते है। बहुत सी मध्यकालीन रचनाओ मे विदा के अवसर पर हनुमान्[1] की राम भक्ति-विषयक सामग्री मिलती है जिसका निरूपण हनुमच्चरित के अन्तर्गत रखा गया है (दे० ७०६-७०७)। **बलरामदास** रामायण के अनुसार सीता ने रामाभिषेक के भोजन के अवसर पर अनेक रूप धारण कर, सब अतिथियो को परोसा था। रामचद्रिका (प्रकाश २५) मे अभिषेक के पूर्व वसिष्ठ द्वारा राम के वैराग्य का निवारण वर्णित है। पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, २७०, ४२) मे राम ने अभिषेक के अवसर पर अतिथियो को अपना दिव्य रूप दिखलाया था।

रामकियेन (अध्याय ३८) के अनुसार राम अपने अभिषेक के पश्चात् भरत तथा शत्रुघ्न को युवराज पद पर नियुक्त करते है और लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, अगद, जम्बवान, गुह आदि सहयोगियो मे अपना विशाल राज्य बाँटते हैं। वह हनुमान के लिए एक नयी राजधानी का निर्माण करते हैं। समस्त राजा राम के अधीन रह कर शासन करते है और सर्वत्र शाति का साम्राज्य है।

ठ। नवीन सामग्री

६११. वाल्मीकि रामायण के बाद की रामकथाओ मे युद्धकाण्ड के कथानक मे

---

१. भावार्थ रामायण में हनुमान् को उसी समय स्त्रीराज्य भेजा गया (दे० अनु० ६८७)।

की वहिन दुर्दण्डी के जलपात्र मे छिपकर राजभवन के अन्दर जा पाते है। जब हनुमान् मैरावण को चुनौती देकर उसका वध नही कर पाते है तब दुर्दण्डी हनुमान् के लिए इस रहस्य का उद्घाटन करती है कि मैरावण के प्राण राजधानी से ३० योजन की दूरी पर रहनेवाले सात भृंगो मे निवास करते हैं। हनुमान् जाकर उनका वध करते है तथा वाद मे मैरावण को परास्त कर दुर्दण्डी के पुत्र नील-मेघ को कैद से छुडाता है। नील-मेघ मैरावण की पुत्री नीलकेशी से विवाह कर राजा वन जाता है तथा हनुमान् अव तक सोये हुए राम-लक्ष्मण को लङ्का ले जाते हैं।

आनन्द रामायण के अनुसार अश्विनीकुमार शापवश राक्षस-योनि प्राप्त कर ऐरावण-मैरावण के रूप मे प्रकट हुये और दोनो रावण के मित्र वन गए थे (दे० ७, सर्ग १४)। लङ्का-युद्ध के समय उनके हस्तक्षेप का वृत्तान्त उपर्युक्त मैरावण-चरित से निम्नलिखित बातो मे भिन्न है। ऐरावण तथा मैरावण दोनो आकाशमार्ग से हनुमान् की वढाई हुई पूंछ के दुर्गम परिघ को पारकर निद्रामग्न राम तथा लक्ष्मण को ले जाते है। हनुमान् अपने पुत्र मकरध्वज से यह जानकर कि राम-लक्ष्मण कामाक्षा-देवी के मन्दिर मे हैं सूक्ष्म रूप धारण कर उस मन्दिर मे प्रवेश करते हैं। वह देवी की वाणी का अनुकरण करके आदेश देते है कि राम तथा लक्ष्मण को जीवित ही मेरे सामने उपस्थित किया जाय। इस प्रकार मुक्ति पाकर राम-लक्ष्मण ऐरावण-मैरावण को एक सौ वार मार डालते है किन्तु दोनो पुनः-पुनः पुनर्जीवित हो जाते है। अन्त मे ऐरावण की भोगपत्नी हनुमान् को इस शर्त पर दोनो की मृत्यु का उपाय प्रकट करने के लिये तैयार है कि राम उसे पत्नीस्वरूप ग्रहण करे। हनुमान् यह प्रस्ताव स्वीकार करते है वशर्ते कि उसका पलक राम के भार से न टूटे। तव वह कहती है कि ऐरावण-मैरावण के शयनागार मे जो भ्रमर रहते है, वही अमृत लाकर दोनो को पुनर्जीवित करते हैं। हनुमान् एक भ्रमर को छोडकर सव को मार डालते है, वह भ्रमर हनुमान् के आदेश पर ऐरावण की भोगपत्नी के पलक की लकडी को भीतर से खाकर खोखला वना देता है। अन्त मे राम ऐरावण-मैरावण दोनो का वध करते हैं तथा ऐरावण की भोगपत्नी को आश्वासन देते हैं कि अगली वार कन्याकुमारी के रूप मे प्रकट होकर वह तीसरे जन्म मे द्वापर मे उनकी पत्नी वन सकेगी।[1] इसके वाद हनुमान् राम को तथा मकरध्वज लक्ष्मण को लङ्का पहुँचा देते हैं (दे० १, ११, ७३-१३०)।

---

१. आनन्द रामायण के अन्य स्थल (याजाकाण्ड, सर्ग ७) के अनुसार कन्या-कुमारी जाम्बवन्ती के रूप मे प्रकट होगी। तत्वसंग्रह रामायण (६, ६) मे भी इसकी ओर निर्देश किया गया है।

वह उसकी गदा प्राप्त कर लेते हैं तथा सहस्रतेज के सहस्र सिर काटकर राम के पास लौटते हैं। अनन्तर साग आदित्य राम-सेना का सामना करने आता है। सांग आदित्य के पास मायावी दर्पण था, जिसपर उस दर्पण का प्रतिबिम्बित प्रकाश पड़ता था वह तुरन्त मर जाता था। वह दर्पण ब्रह्मा की रक्षा मे था। यह जानकर कि रावण ने साग आदित्य को बुलाया है अगद ने साग आदित्य के राज्यपाल का रूप धारण कर लिया तथा ब्रह्मा के पास जाकर उस दर्पण को प्राप्त किया। इस प्रकार अपने दर्पण से वंचित होकर साग आदित्य राम द्वारा मारा गया। रामकियेन के उसी अध्याय मे रावण के असफल यज्ञ के पश्चात् हनुमान् दो अन्य मायावी योद्धाओ का वध करते है। सद्धासुर युद्ध करते समय देवताओ के आयुध अपने पास बुला सकता था। यह जानकर हनुमान् ने वानरो को आदेश दिया कि वे बादलो मे छिपकर देवताओ द्वारा सद्धासुर के लिये भेजे हुए आयुध छीन ले। तब हनुमान् ने सद्धासुर को युद्ध के लिये आह्वान किया। सद्धासुर ने देवताओ के आयुध बुलाये किन्तु बादलो मे छिपे वानरो ने सबको हथियाया जिससे हनुमान् उसे मार डालने मे समर्थ हुए। अनन्तर विरुचंवग के युद्ध का वर्णन किया गया है, वह एक अदृश्य घोड़े पर चढकर स्वय अदृश्य बन सकता था। राम ने उसका सामना किया तथा उसका अदृश्य घोडा मार डाला किन्तु विरुचवग एक माया-विरुचवग की सृष्टि कर स्वय आकाश नामक पर्वत की ओर भाग गया। वहाँ पर उसकी भेट एक वानरी से हुई जिसने उसे समुद्र की फेन मे छिप जाने का आदेश दिया। वह वानरी वास्तव मे एक शापित अप्सरा थी जो विरुचवग की खोज मे हनुमान् की सहायता करने के पश्चात् ही अपने शाप से मुक्ति पा सकती थी। हनुमान् ने उसके साथ रमण किया तथा उसकी सहायता से विरुचवग का पता लगाकर उसका वध किया।

६१४. महीरावण की कथा अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित है। जैमिनी भारत के मैरावणचरित (दे० अनु० १८६) के अनुसार मैरावण रावण का सखा है। वह रावण को आश्वासन देता है कि मैं राम-लक्ष्मण को पाताल-लङ्का ले जाकर दुर्गा को बलि के रूप मे समर्पित करूँगा। विभीषण यह जानकर वानरो को सावधान करता है जिसपर हनुमान विशाल रूप धारण कर अपने शरीर से समस्त रामसेना की रक्षा करते हैं। मैरावण पहले दो गुप्तचरो को भेज देता है तथा बाद मे माया-विभीषण के रूप में आकर वानरो को माया-चूर्ण से सुलाता है तथा राम-लक्ष्मण को एक पेटिका मे बन्द कर दोनो को पाताललङ्का के भद्रकालीगृह में रख देता है। बाद मे हनुमान सूक्ष्म रूप धारण कर पद्मनाल मार्ग से पाताल मे प्रवेश करते हैं। वहाँ वह बहुत देर तक द्वन्द्वयुद्ध करने पर भी द्वारपाल को परास्त करने मे असमर्थ हैं, अन्त मे पता चलता है कि यह द्वारपाल मत्स्यराज नामक उनका पुत्र है (दे० अनु० ६१५)। तब हनुमान् फिर सूक्ष्म रूप धारण कर मत्स्यराज की सहायता से पाताललङ्का में प्रवेश करते हैं। बाद मे हनुमान् मैरावण

कम्बोडिया का एक प्राचीन चित्र।[1] सेरीराम की कथा इस प्रकार है। रावण का पुत्र पाताल महरायन हनुमान् का रूप धारण कर वानर-सेना मे प्रवेश कर जाता है और राम को माया-लेप से निद्रामग्न कर उन्हे अपने भवन ले जाता है। बाद मे हनुमान राम की खोज मे पाताल जाकर एक राजकुमारी से भेट करते हैं जो अपने पुत्र के स्नान के लिये जल ले जानेवाली है। ज्योतिषियो ने बताया था कि वह पुत्र पाताल महारायन का उत्तराधिकारी बनेगा, अतः महारायन ने उसे राम के साथ मार डालने का निश्चय किया है। हनुमान् उसके पुत्र को राजा बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं और वह हनुमान् को छिपकली के रूप मे अपने जलपात्र मे छिपाकर किले के अन्दर ले जाती है। फाटक पर हनुमान् अपने पुत्र हनुमान तूगग से द्वन्द्वयुद्ध कर उसकी सहायता अस्वीकार करते है तथा पाताल महारायन को हराकर सोये हुये राम को लङ्का ले जाते हैं। राम तभी जागते हैं जब विभीषण उनके चेहरे पर से माया-लेप धो डालता है। अगले दिन राम रणभूमि मे ही पाताल महारायन का वध करते है। सेरीराम के शेलावेर पाठ की कथा कही अधिक विस्तृत है। मैरावणचरित के अनुसार पाताल महारायन पहले दो सेनापतियो को भेज देता है; बाद मे वह कीट का रूप धारण कर हनुमान का शरीर पार कर जाता है तथा क्रमशः सुग्रीव, जाम्बवान तथा विभीषण के वेश मे महल मे घुसने का असफल प्रयत्न करता है। रात के पिछले पहर वह राम को ले जाकर पद्मनाल के मार्ग से पाताल मे प्रवेश करता है। जिस राजकुमारी से हनुमान की भेट होती है वह अमीर अरब (अहिरावण ?) की बहन है। अमीर अरब रावण का मामा है जिसने अपने भानजे को कैद मे रख दिया है। हनुमान पक्षी का रूप धारण कर राजकुमारी के जलपात्र मे छिप जाते है तथा बाद मे अमीर अरब का वध कर उसके भानजे को राजा बनाते हैं।

रामकियेन मे मैयरब को सहमालिवन (माल्यवान ? दे० वा० रा० ७, सर्ग ५) का पोता माना गया है, उसके गुरु सुमेघ ने उसका जीव मक्खी के रूप मे चित्रकूट पर्वत पर छिपा दिया था। वह मायाचूर्ण से वानरो को सुलाता है और राम को हनुमान् के मुँह से निकालकर पाताल ले जाता है। हनुमान् वहाँ जाकर पहले अपने पुत्र मच्छानु तथा बाद मे विरक्वन नामक मैयरब की बहन से भेट करते है। विरक्वन को आदेश मिला कि वह एक हण्डा जल से भर दे, उसमे उसका पुत्र उबाला जाने वाला है। विरक्वन हनुमान् को पद्मतनु के रूप मे अपने दुपट्टे मे छिपाकर राम के पास पहुँचाता है तथा मैयरब के वध की युक्ति भी बताता है। हनुमान् राम के साथ लका लौटने के पहले विरक्वन के पुत्र वैयविक को राजा तथा मच्छानु को युवराज नियुक्त करते हैं।

---

१. बुलेटिन एकोल फ्रासेस एक्स्ट्रेम ओरियन, भाग १२, पृ० ४७।

कृत्तिवास (६, ७६-८८) ने महीरावण की कथा का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से वर्णन किया है। इस वृत्तान्त की विशेषता यह है कि इसमे हनुमान् के पुत्र की चर्चा नही होती और महीरावण को रावण तथा मन्दोदरी का पुत्र माना गया है। महीरावण शक्रधनु नामक गधर्व था जो अष्टावक्र के शाप के कारण राक्षस वन गया था। रावण ने उसे निकषा के परामर्श से बुलाया था किन्तु विभीषण ने पक्षी के रूप मे दोनो की मत्रणा सुनकर राम को सावधान किया था जिसने हनुमान् पूंछ वढाकर चारो ओर से लङ्का की रक्षा करते थे; इसके अतिरिक्त राम ने आकाश मे विष्णु-चक्र रख दिया तथा नल ने पाताल मे माया का विस्तार किया। महीरावण ने क्रमशः दशरथ, कौशल्या तथा जनक के रूप मे आकर हनुमान् को धोखा देने का असफल प्रयत्न किया; अन्त मे वह विभीषण के रूप मे शिविर मे प्रवेश कर तथा मायाचूर्ण से राम-लक्ष्मण को निद्रामग्न करके दोनो को अपने भवन मे ले गया। पातालपुरी मे पहुँचकर हनुमान् ने किसी बूढी से जान लिया था कि राम-लक्ष्मण कहाँ हैं। अतः उन्होंने मक्खी के रूप मे महीरावण के महल मे जाकर राम-लक्ष्मण को प्रणाम किया तथा वाद मे महामाया मन्दिर मे देवी को राम का समाचार सुनाया। देवी ने राम-शिव की अभिन्नता का उल्लेख करके महीरावण के वध की युक्ति वताई। जव राम तथा लक्ष्मण देवी के सामने उपस्थित किये जायँगे, उनको महीरावण से कहना चाहिये कि हम साष्टांग प्रणाम करना नही जानते हैं, हमे दिखलाइये। महीरावण के प्रणाम करने पर उसे देवी की तलवार से मार डालना चाहिए। देवी के इस निर्देश के अनुसार हनुमान् ने महीरावण का वध किया। इसके वाद महीरावण की पत्नी युद्ध करने आई; हनुमान् ने उस पर पाद-प्रहार किया जिससे उसके गर्भ से चार सिर वाले अहिरावण का जन्म हुआ जो तुरन्त हनुमान् का सामना करने लगा तथा हनुमान् से मारा गया।

महीरावण का वृत्तान्त निम्नलिखित रचनाओ मे भी पाया जाता है—भावार्थ रामायण (६, ५१-५४), कन्नड मैरावण कालग, गुजराती नर्मकथा कोश (पृ० २२३), विक्रम नरेन्द्र कृत रामलीला, पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३, काशीराम कृत वगाली दानपर्व। रामलिंगामृत (सर्ग ८) के अनुसार अहिरावण तथा महीरावण राम-लक्ष्मण को पाताल ले गये थे और हनुमान् ने अपने पुत्र मकरध्वज की सहायता से दोनो का वध किया। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ में रावण स्वय राम-लक्ष्मण का हरण करता है। विर्होर रामकथा के अनुसार कुभकर्ण राम-लक्ष्मण को ले जाकर उनको काली को समर्पित करना चाहता था किन्तु लक्ष्मण ने कुभकर्ण को मार डाला।

विदेशी वृत्तान्तो मे केवल राम को पाताल ले जाने की कथा मिलती है; उदाहरणार्थ सेरीराम, रामकियेन (अध्याय २७), रामजातक, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ तथा

अध्याय २०

उत्तरकांड

१—वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड

३१६. क । उत्तरकांड की कथावस्तु

(१) रावण-चरित (सर्ग १-३६) (उत्तरकाड का यह भाग अगस्त्य द्वारा कथित है)।

वैश्रवण—विश्रवा-देववर्णिनी के पुत्र वैश्रवण का चतुर्थ लोकपाल तथा धनेश बनना और पुष्पक प्राप्त कर उनका लङ्का-निवास (सर्ग १-३)।

राक्षस-वंश—प्रहेति तथा हेति के वंश मे उत्पन्न राक्षसो का लङ्का निवास तथा विष्णु द्वारा पराजित होने पर उनका पाताल-प्रवेश (सर्ग ४-८)।

रावण का जन्म—विश्रावा-कैकसी से दशग्रीव, कुभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म। वैश्रवण से ईर्ष्या होने के कारण तीनो भाइयो की तपस्या तथा ब्रह्मा से वरप्राप्ति (सर्ग ६-१०)। रावण की आशका से वैश्रवण का लङ्का-त्याग तथा कैलास पर निवास, राक्षसो का लङ्का मे प्रवेश। मय-सुता मदोदरी से रावण का विवाह (सर्ग ११-१२)।

रावण की प्रथम विजय-यात्रा—वैश्रवण को पराजित कर रावण का पुष्पक को प्राप्त करना (सर्ग १३-१५)। रावण को नन्दि-शाप। रावण का कैलास को उठाना तथा शिव से 'रावण' नाम तथा चन्द्रहास खग को प्राप्त करना (सर्ग १६)। वेदवती का रावण को शाप देना (सर्ग १७)। रावण द्वारा अनेक राजाओ की पराजय तथा राजा अनारण्य का उसे शाप देना (सर्ग १८-१६)। नारद की प्रेरणा से रावण का यम पर आक्रमण तथा ब्रह्मा द्वारा यम से रावण की रक्षा (सर्ग २०-२२)। शूर्पणखा के पति विद्युज्जिह्व का रावण द्वारा वध और वरुण-पुत्रो की पराजय (सर्ग २३)। (पाँच प्रक्षिप्त सर्ग : बलि से रावण की भेट, सूर्य तथा चन्द्र-लोक की यात्रा और कपिल से भेट)।

रावण के अन्य युद्ध—रावण द्वारा अनेक कन्याओ और पत्नियो का हरण और शूर्पणखा को खर तथा दूषण के साथ दडकारण्य भेज देना। कुभनसी के द्वारा मधु की रक्षा। नलकूबर का शाप (सर्ग २४-२६)। मेघनाद द्वारा इन्द्रबधन तथा देवताओ की प्रार्थना से मुक्ति। देवताओ से मेघनाद की वरप्राप्ति—किसी भी युद्ध के पूर्व

६१५. हनुमान् के पुत्र की उत्पत्ति के विषय मे भिन्न-भिन्न वृत्तान्त मिलते हैं। **जैमिनी भारत**, गुजराती **नर्मकथाकोश** आदि के अनुसार लंकादहन के पश्चात् जब हनुमान् समुद्र मे नहाने गए थे, तब एक मछली (अथवा मकरी) ने उनका स्वेद पान कर लिया, जिसके कारण वह गर्भवती हो गई। **आनन्द रामायण** (१, ११, ८८) और **भावार्थ रामायण** (५, २०) के अनुसार उस अवसर पर हनुमान् का श्लेष्मा एक मकरी के द्वारा खाया गया था और फलस्वरूप उसे एक पुत्र मकरध्वज उत्पन्न हुआ। अन्य रामकथाओ के अनुसार लका की वापसी मे हनुमान् ने मकरी के साथ संभोग किया था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८)।

सेरीराम मे माना गया है कि समुद्र-लङ्घन के समय हनुमान् का वीर्य गिर गया था और मछलियो की रानी उसे खाकर गर्भवती हो गई। सेरीराम के **पातानी पाठ** तथा **हिकायत महाराज रावण** मे सेतुबन्ध के समय मछलियाँ अपनी रानी की आज्ञा के अनुसार सेतु को नष्ट करने लगती हैं। इसपर हनुमान् उसके पास जाकर और सेतु को पुनः बँधवाकर उससे पुत्र उत्पन्न करते हैं। **रामकियेन** (अध्याय २६) के अनुसार रावण ने अपनी पुत्री नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने के लिये भेज दिया और हनुमान् ने उससे मच्छानु नामक पुत्र उत्पन्न किया। इसी रचना (अंक २५) मे विभीषण की पुत्री वेजकाया तथा हनुमान् के असुराफद नामक पुत्र का भी उल्लेख है।

सुनाना (सर्ग ८३-८६)। राम द्वारा इला के अश्वमेध से पुरुषत्व प्राप्त करने की कथा (सर्ग ८७-९०)।

अश्वमेध में सीता का पृथ्वी-प्रवेश—नैमिष वन मे अश्वमेध के अवसर पर कुश-लव का सभा के सामने रामायण-गान करना (सर्ग ९१-९४)। कुश-लव को सीता-पुत्र जानकर राम का वाल्मीकि के पास सदेश भेजना और सभा के सम्मुख अपनी शुद्धि का साक्ष्य देने के लिए सीता से अनुरोध करना (सर्ग ९५)। सीता की शपथ; पृथ्वी का सीता को अपने साथ ले जाना, राम द्वारा सीता को लौटा देने का व्यर्थ अनुरोध (९६-९८)। कुश-लव द्वारा उत्तरकाड का गान, सभा-विसर्जन, माताओ की मृत्यु (सर्ग ९९)।

विजय-यात्राएँ—भरत के पुत्रो (तक्ष-पुष्कल) का तक्षशिला तथा पुष्कलवती मे राज्य-स्थापन (सर्ग १००-१०१)। लक्ष्मण के पुत्रो (अगद-चन्द्रकेतु) का अगदीप और चन्द्रकान्त मे राज्य-स्थापन।

लक्ष्मण-मृत्यु—काल का राम को अपना विष्णुरूप प्राप्त करने का स्मरण दिलाना। दुर्वासा के आग्रह से लक्ष्मण का राम तथा काल के पास जाना और इसके कारण लक्ष्मण का सरयू-प्रवेश (१०२-१०६)।

स्वर्गगमन—राम का कुश को कुशावती मे और लव को श्रावस्ती मे राज्य देना। अपने पुत्रो (सुबाहु और शत्रुघातिन्) को राज्य देकर शत्रुघ्न का अयोध्या आना। सुग्रीव और वानरो का आना। विभीषण और हनुमान् को अमरत्व का वरदान (१०७-१०८)। राम का अपने भाइयो के साथ विष्णुरूप मे तथा वानरो का अशानुसार देवताओ मे प्रवेश। नागरिको की स्वर्गप्राप्ति। फलश्रुति (सर्ग १०९-१११)।

ख। उत्तरकांड का विश्लेषण

तीनो पाठो में विभिन्नता

६१७ उत्तरकाड के तीन पाठो मे इतनी ही विभिन्नता पायी जाती है, कि दाक्षिणात्य पाठ मे भृगु द्वारा विष्णु को शाप सीतात्याग का कारण माना गया है (दे० अनु० ७२५)। इतनी कम विभिन्नता से पता चलता है कि उत्तरकाड की रचना अन्य काडो के बाद हुई है। इसका उल्लेख दूसरे अध्याय मे हो चुका है (दे० अनु० २२)।

दाक्षिणात्य पाठ के सस्करणो मे उत्तरकाड के २३वे सर्ग, ३७वे सर्ग तथा ५९वें सर्ग के पश्चात् क्रमशः पांच, पांच तथा तीन प्रक्षिप्त सर्ग उद्धृत किए जाते हैं, जिनकी गणना अन्य सर्गों के साथ-साथ नही की गई है। इनकी अधिकाश सामग्री अन्य पाठो मे नही मिलती।

उत्तरकाड की उत्पत्ति

६१८. समस्त उत्तरकाड प्रक्षिप्त है। इसके प्रमाण आठवे अध्याय मे दिये

यज्ञ कर लेने पर वह अजेय होगा (सर्ग २७-३०)। अर्जुन कार्त्तवीर्य तथा वालि द्वारा रावण की पराजय (सर्ग ३१-३४)।

हनुमत्कथा—हनुमान् की जन्म-कथा और चरित (सर्ग ३५-३६)।

(२) सीतात्याग (सर्ग ३७-८२)

अतिथियो का प्रस्थान—अभिषेक के दूसरे दिन राम का ऋषियो, राजाओ, वानरो तथा राक्षसो द्वारा अभिवादन (सर्ग ३७)।

(पाँच प्रक्षिप्त सर्ग : वालि और सुग्रीव की जन्म-कथा, रावण का मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीताहरण का निश्चय, श्वेतद्वीप मे स्त्रियो द्वारा रावण की पराजय)।

जनक, युधाजित् तथा प्रतार्दन का प्रस्थान। दो मास पश्चात् सुग्रीव, अगद, हनुमान्, विभीषण तथा वानरो, राक्षसो और ऋक्षो का प्रस्थान (सर्ग ३८-४०)। पुष्पक का प्रत्यागमन तथा राम द्वारा विदा (सर्ग ४१)।

सीतात्याग—आश्रमो को देखने जाने की सीता की दोहद। लोकापवाद के कारण वाल्मीकि आश्रम मे सीता को छोडने की राम की आज्ञा (सर्ग ४२-४५)। गंगा के उस पार लक्ष्मण का सीता को त्याग का समाचार देना, सीता का विलाप (सर्ग ४६-४८)। वाल्मीकि का सीता को आश्रय देना (सर्ग ४९)। सुमन्त्र का लक्ष्मण को सीता-त्याग का कारण बतलाना (सर्ग ५०-५२)।

नृग, निमि और ययाति की कथाएँ—राम द्वारा लक्ष्मण को नृग, निमि तथा ययाति की कथाओ का सुनाया जाना (सर्ग ५३-५९)।

(तीन प्रक्षिप्त सर्ग : राम से न्याय माँगने की श्वान की कथा, गृध्र तथा उलूक की कथा)।

शत्रुघ्न-चरित—भार्गव च्यवन के आग्रह से राम का लवण का वध करने के लिए शत्रुघ्न को भेजना (सर्ग ६०-६४)। शत्रुघ्न का वाल्मीकि-आश्रम मे रात्रि व्यतीत करना तथा उसी रात्रि मे कुश-लव का जन्म (सर्ग ६५-६६) शत्रुघ्न द्वारा लवण-वध और मधुपुरी का बसाया जाना। बारह वर्ष बाद राम के पास लौटते समय वाल्मीकि के आश्रम मे शत्रुघ्न का रामायण-गान सुनना। राम से मिलकर उनका अपने राज्य मे वापस जाना (सर्ग ६७-७२)।

शम्बूक-वध—ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु पर नारद का शूद्र की तपस्या को उसका कारण बताना। राम का दक्षिण जाकर शम्बूक-वध करना, अनन्तर अगस्त्य से दण्डक-अरण्य की कथा सुनना (सर्ग ७३-८२)।

(३)अश्वमेध (सर्ग ८३-१११)

अश्वमेध-माहात्म्य—राजसूय-यज्ञ का भरत द्वारा विरोध। लक्ष्मण का अश्वमेध का प्रस्ताव तथा उसके माहात्म्य मे ब्रह्महत्या से अश्वमेध द्वारा इन्द्र की शुद्धि की कथा

ने शत्रुघ्न द्वारा लवण-वध तथा मधुपुरी की स्थापना का वर्णन किया है (सर्ग ६०-७२)। कथा इस प्रकार है। भार्गव च्यवन के नेतृत्व मे यमुनातट-निवासी तपस्वी किसी दिन राम के पास पहुँचकर लवण नामक राक्षस से रक्षा माँगने लगे। लवण का पिता मधु धार्मिक था, उसने शिव से एक अजेय शूल प्राप्त कर लिया था और उसे यह वरदान मिला था कि जब तक यह शूल उसके पुत्र के हाथ मे रहेगा वह अवध्य होगा—**अवध्यः सर्वभूतानां शूलहस्तो भविष्यति (६१, २४)**। इस शूल के बल पर लवण अब तपस्वियो को सताया करता था। राम ने शत्रुघ्न का अभिषेक कर उनको लवण का वध करने तथा यमुना पर राजधानी बसाने का आदेश दिया। शत्रुघ्न ने एक विशाल सेना को मधुवन की ओर भेज दिया तथा बाद मे अकेले ही वाल्मीकि के आश्रम होकर मधुवन की यात्रा की। शत्रुघ्न ने वाल्मीकि के यहाँ एक रात बिताई, वाल्मीकि ने उन्हे सौदास की कथा सुनाई (अनु० ६२१-६२७) तथा उसी रात्रि मे कुश-लव का जन्म हुआ (दे० अनु० ७३६)। दूसरे दिन शत्रुघ्न ने पश्चिम के लिए प्रस्थान किया, उन्होने च्यवन से मिलकर लवण द्वारा मान्धाता-वध की कथा सुन ली तथा लवण का वध करने के पश्चात् वह मधुपुरी मे राज्य करने लगे। बारह वर्ष बीत जाने पर शत्रुघ्न ने राम से मिलने जाने का निश्चय किया। अयोध्या की यात्रा करते हुए वह फिर वाल्मीकि के यहाँ ठहरे तथा उन्होने इस अवसर पर रामचरित का गान सुन लिया।[1] अयोध्या पहुँचकर शत्रुघ्न ने राम के पास रहने की इच्छा प्रकट की किन्तु राम ने क्षत्रिय-धर्म का उल्लेख करके (**प्रजा हि परिपाल्या क्षत्रधर्मेण ७२, १४**) उन्हे केवल सात दिन तक अयोध्या मे रहने की अनुमति दी।

उत्तरकाड मे दो अन्य अवसरो पर शत्रुघ्न का उल्लेख किया गया है। उन्होंने राम के अश्वमेध मे भाग लिया (सर्ग ९१) तथा लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अपने पुत्र सुबाहु को मथुरा मे तथा शत्रुघाती को वैदिश मे राज्यसिहासन पर बैठाकर (सर्ग १०७-१०८) राम तथा भरत के साथ वैष्णव तेज मे प्रवेश किया (सर्ग ११०)।

ख। सौदास की कथा

६२१ वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड के अनुसार वाल्मीकि ने शत्रुघ्न को सौदास की कथा सुनाई थी। इस कथा का विकास अत्यन्त रोचक है।[2] ऋग्वेद के

---

१. वाल्मीकि तथा शत्रुघ्न की इस द्वितीय भेट के वर्णन मे न तो सीता और न पुत्रो का उल्लेख है।

२ विस्तृत विश्लेषण के लिए प्रस्तुत लेखक का 'पुरुषाद सौदास' नामक निबध देख ले। भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष ५, अक २, पृ० ७-२७।

गये हैं (दे० अनु० ११५)। उत्तरकांड की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि इसकी रचना भिन्न-भिन्न कवियो द्वारा हुई है। प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे दो ही विस्तृत अश ऐसे है, जिनमे अशुद्ध श्लोको का वाहुल्य पाया जाता है, अर्थात् विश्वामित्र की कथा (वालकाड, सर्ग ५७-६५) तथा रावण-चरित (उत्तरकांड, सर्ग १-३६)। अशुद्धियो का यह वाहुल्य इन दोनो वृत्तान्तो को प्रक्षेप सिद्ध करता है।[1]

रावणचरित के वाद राम के अभिषेक के लिए आये हुए अतिथियो की विदाई का पुन. वर्णन किया गया है (सर्ग ३७-४०), इसका प्रथम वर्णन युद्धकाड के अत मे हुआ था। रावणचरित जैसे विस्तृत प्रक्षेप जोडने के पश्चात् आधिकारिक कथावस्तु से सवध स्थापित करने के लिए इसकी यहाँ पुनरावृत्ति की गई है। अतः उत्तरकाड का मूल-रूप सीतात्याग के वर्णन से प्रारम्भ हुआ होगा (सर्ग ४२-५२)। शेप सामग्री से पौराणिक कथाओ को तथा शम्बूक-वध की कथा[2] को हटाने पर जो वृत्तान्त रह जाता है, वह उत्तरकाड का प्रारम्भिक रूप प्रतीत होता है, अर्थात् शत्रुघ्न-चरित तथा कुश-लव-जन्म, राम का अश्वमेध तथा कुश-लव द्वारा रामायण-गान, सीता का भूमि-प्रवेश, रामादि के पुत्रो की राज्यस्थापना, लक्ष्मण की मृत्यु तथा राम का स्वर्गारोहण।

२—उत्तरकांड का विकास

६१९. उत्तरकाड के प्रथम ३६ सर्गो मे रामायण की आधिकारिक कथा-वस्तु से भिन्न एक स्वतन्त्र कथानक का वर्णन किया गया है। तत्संबंधी सामग्री दो अलग परिच्छेदो मे रखी गई है (दे० नीचे ३, रावण-चरित और ४, हनुमच्चरित)। सीता-त्याग तथा कुश-लव-चरित का विकास अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है। अतः इन दोनो वृत्तान्तो का वर्णन अलग किया गया है (दे० परिच्छेद ५ और ६)। रामकथा की समाप्ति अनेक रूपो मे वर्णित है। इस महत्वपूर्ण विषय का विश्लेषण 'रामकथा का निर्वहण' नामक अतिम परिच्छेद मे किया जायेगा। प्रस्तुत परिच्छेद मे उत्तरकांड की शेष कथा-वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली गौण सामग्री का वर्णन करना है। उत्तरकांड की नृग, निमि आदि विषयक पौराणिक कथाओ का रामकथा से कोई सम्बन्ध नही है और इनका अर्वाचीन रामकथाओ मे प्रायः अभाव है।

क। शत्रुघ्न-चरित

६२०. वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक कांडो मे शत्रुघ्न-विषयक सामग्री नगण्य है। सभव है कि इस अभाव की पूर्ति करने के उद्देश्य से उत्तरकांड के रचयिताओ

---

१. दे० एच० याकोवी; इस रामायण, पृ० २६।

२. शम्बूक-वध एक स्वतन्त्र कथा प्रतीत होती है, जो वाद मे जोड दी गई है।

तुझे भारतवर्ष भर के १०१ राजकुमारो को अर्पित करूंगा। सात दिन मे उसका घाव भर गया (इसका वास्तविक कारण यह था कि उसने इस अवधि भर मे अनशन किया था); इसे वनदेवी का वरदान समझकर वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए तैयार हो गया। अपने पूर्वजन्म के साथी यक्ष से मन्त्र पाकर वह शीघ्रगामी बन गया और उसने एक सौ राजाओ को कैद कर लिया। इसके बाद उसने वृक्षदेवता के आदेश से सुतसोम को भी पकड लिया। सुतसोम ने उस दिन जाते समय किसी ब्राह्मण को आश्वासन दिया था कि स्नान से लौटकर मैं आपकी बात सुन लूंगा, अतः उसने नरभक्षक से निवेदन किया कि मुझे ब्राह्मण के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने का अवसर दिया जाय। नरभक्षक ने उसको ब्राह्मण के पास जाने की अनुमति दी। सुतसोम ब्राह्मण के पास जाकर, उनसे चार गाथाएँ सीखकर और बदले मे ब्राह्मण को चार हजार मुद्राये देकर, कल्माषपाद के पास लौटा। कल्माषपाद ये चार गाथाएँ सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने सुतसोम को चार वर माँगने की अनुमति दी। सुतसोम ने निम्नलिखित चार वर उससे माँगे—(१) मैं आपको एक सौ वर्ष तक जीवित देख सकूं, (२) आप उन एक सौ राजकुमारो को न खाये, (३) आप उनको उनके राज्य मे वापस भेज दे, (४) आप नर-मास-भक्षण त्याग दे। तब दोनो मे देर तक वार्तालाप हुआ, इसके फलस्वरूप कल्माष-पाद ने अपनी आदत को छोडना स्वीकार कर लिया। सुतसोम के अनुरोध पर राजाओ ने कल्माषपाद के विरुद्ध कुछ नही करने की प्रतिज्ञा की; अन्त मे सुतसोम ने कल्माषपाद को उसका राज्य वापस दिला दिया। जिस स्थान पर नरभक्षक के हृदय का परिवर्तन हुआ, वहाँ कम्मासदम्म नामक नगर बस गया।

बौद्ध साहित्य की परवर्ती रचनाओ मे ब्रह्मदत्त के पुत्र मासाहारी कल्माषपाद को तथा सुदास के पुत्र सौदास को अभिन्न माना गया है और सौदास के मासाहारी बनने का कारण यही बताया गया है कि वह सिंहनी की सन्तान है। कथा का यह रूप जातकमाला के सुतसोमजातक, लङ्कावतारसूत्र, सिंहसौदास-मासभक्षनिवृत्ति के चीनी अनुवाद, भद्रकल्पावदान आदि मे सुरक्षित है। जैनी ग्रन्थो मे भी सिंहसौदास की चर्चा है (दे० पउमचरियं २२, ७२-९५)। महाभारत के अश्वमेध पर्व (अध्याय ५६-५८) मे सत्यसध उत्तक तथा सौदास के विषय मे जो कथा मिलती है उसपर बौद्ध सुत-सोम जातक की छाप स्पष्ट है।

६२३. महाभारत के आदिपर्व (अध्याय १६६-१६८) मे सौदास की कथा इस प्रकार है। राजा कल्माषपाद किसी दिन मृगया के समय वन मे वसिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र शक्ति से भेट करते हैं। मार्ग देने के प्रश्न पर विवाद छिड जाने पर राजा शक्ति पर कोडे का प्रहार करते है, जिस पर शक्ति राजा को पुरुषाद बन जाने का शाप देते हैं। वसिष्ठ के वैरी विश्वामित्र छिपकर दोनो का विवाद सुन लेते हैं तथा वसिष्ठ का अनर्थ

अनुसार सुदास् नामक राजा के दो पुरोहित थे—विश्वामित्र तथा वसिष्ठ। उन दोनों पुरोहितो मे वैर उत्पन्न हुआ, वैदिक साहित्य के कई स्थलो पर (विश्वामित्र की प्रेरणा से) सौदासो द्वारा वसिष्ठ के पुत्र का वध तथा यज्ञ के प्रभाव से सौदासो पर वसिष्ठ की विजय उल्लिखित है, बृहद्देवता (अध्याय ६) मे यह माना गया है कि वसिष्ठ ने सुदास को राक्षस बन जाने का शाप दिया था। "सौदासाः" का मूल अर्थ है सुदास के अनुचर किन्तु बाद मे सौदास का अर्थ सुदास का पुत्र माना गया और सुदास् के स्थान पर सौदास को शाप दिये जाने की कथा प्रचलित हुई। इस कथा पर बौद्ध संसार मे सुप्रसिद्ध सुतसोम नामक जातक का प्रभाव पडा, अतः यहाँ पर सर्वप्रथम सुतसोम विषयक सामग्री का सिंहावलोकन किया गया है (दे० अनु० ६२२)। ब्राह्मण धर्म के ग्रंथो में सौदास की कथा के दो रूप मिलते है—एक महाभारत का रूप, जिसमें वसिष्ठ दूसरो द्वारा अभिशप्त सौदास को मुक्त करते हैं (अनु० ६२३), दूसरा, रामायण का रूप, जिसके अनुसार वसिष्ठ ने सौदास को राक्षस बन जाने का शाप दिया था (अनु० ६२४)। दोनो मे समान रूप से यह तत्व विद्यमान है—नरमांसाहार खिलाने के कारण सौदास को १२ वर्ष तक राक्षस बनना पडा। सौदासीय कथा के कई रूपान्तर भी मिलते है जिनके द्वारा राम का महत्व तथा उनकी दयालुता का प्रतिपादन किया गया है (अनु० ६२५)।

६२२ सुतसोम की कथा समस्त बौद्ध ससार मे व्याप्त है। पाली तथा संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त इस नाटक के कई रूप चीनी अनुवादो मे सुरक्षित हैं। तिब्बत तथा हिन्देशिया मे भी सुतसोम की कथा पाई जाती है। यहाँ पर केवल पाली महासुत सोम जातक का साराश दिया जायगा। सुतसोम इन्द्रप्रस्थ के राजा कौरव्य का राजकुमार था जो तक्षशिला मे ब्रह्मदत्त के पुत्र कल्मापपाद का सहपाठी होने के बाद अपने पिता के स्थान पर राजा बन गया। कल्माषपाद भी वाराणसी का राजा बन गया। वह अपने पूर्वजन्म मे नरभक्षक यक्ष था ; इस कारण वह नित्यप्रति मांसाहार किया करता था। किसी दिन कुत्ते राजा का भोजन ले गये और रसोइये ने हाल में मरे हुए मनुष्य की जाघ पकाकर परोस दी। राजा ने उस भोजन को पसन्द किया तथा रसोइये ने इसका रहस्य प्रकट किया। इस पर राजा ने प्रतिदिन नरमांस तैयार करने का आदेश दिया। राजा ने पहले सब कैदियो को खाया; इसके बाद रसोइया नागरिको का वध करने लगा जिससे जनता मे खलबली मच गई। अन्त में रसोइया रगे हाथो पकड़ा गया और उसने कहा कि राजा को नरमास की जरूरत है। तब राजा तथा रसोइये दोनों को निर्वासित किया गया। राजा वन मे मनुष्यो का वध किया करता था और रसोइया इनका मांस भूनकर परोसता था। किसी दिन राजा अपने रसोइये को भी खा गया। एक बार ऐसा हुआ कि एक ब्राह्मण के अपहरण के कारण लोगो ने राजा का पीछा किया जिससे राजा के पैर मे चोट लगी। राजा ने एक वृक्ष-देवता से यह प्रतिज्ञा की—अच्छा होने पर मैं

के पुत्रों का भक्षण करता है जैसा कि सुतसोमजातक मे कल्माषपाद, नरभक्षक बनने के बाद ही, १०१ राजाओ का बलिदान तैयार करता है। जातक मे बोधिसत्व सुतसोम नरभक्षक को उपदेश देकर व्यसन छोड देने के लिए प्रेरित करता है, जैसा कि महाभारत की कथा के अनुसार वसिष्ठ ने अभिमन्त्रित जल छिडककर कल्माषपाद को शाप-मुक्त किया था। इस प्रकार हम देखते है कि महाभारत की कथा पर सुतसोमजातक की गहरी छाप है।

कल्माषपाद नाम का वैदिक साहित्य मे सर्वथा अभाव है। यह नाम महासुतसोमजातक (गाथा ४७२), महाभारत तथा रामायण के उत्तरकाण्ड तीनो मे समान रूप से मिलता है। इन रचनाओ मे से महासुतसोमजातक की गाथाएँ सब से प्राचीन है, अतः अधिक संभव यही प्रतीत होता है कि कल्माषपाद का नाम बौद्ध साहित्य मे पहले-पहल प्रयुक्त हुआ था। महाभारत, रामायण तथा पुराणो मे सौदास, मित्रसह तथा कल्माषपाद तीनो नाम दिये गये है।[1] सुदास के पुत्र सौदास का निजी नाम मित्रसह था, बाद मे बौद्ध साहित्य के प्रभाव से उनको कल्माषपाद का नाम भी मिला होगा। हरिवंश पुराण[2] मे इस पर बल दिया गया है कि सौदास दो नामो से विख्यात था :—

सुदासस्य सुतस्त्वासीत् सौदासो नाम पार्थिवः।
ख्यातः कल्माषपादो वै नाम्ना मित्रसहस्तथा ॥

भागवत पुराण (९, ९, १८) मे कहा गया है कि सौदास को कही मित्रसह तथा कही कल्माषाङ्घ्रि के नाम से पुकारा जाता है :

ततः सुदासस्तत्पुत्रो मदयन्तीपतिर्नृप।
आहुर्मित्रसहं यं वै कल्माषाङ्घ्रिमुत क्वचित् ॥

---

१. रामायण के बालकाण्ड (७०, ४०) मे कल्माषपाद, अयोध्याकाण्ड के एक प्रक्षिप्त स्थल पर (११०, २९) कल्माषपाद तथा सौदास और उत्तरकाण्ड की कथा मे तीनो नाम आये है। दाक्षिणात्य पाठ मे (७, ६५, १० और १७) सौदास के पुत्र को वीर्यसह तथा मित्रसह कहा गया है किन्तु वह लिपिक की भूल होगी क्योकि रामायण के अन्य पाठो मे सौदास ही को मित्रसह का नाम दिया गया है (दे० गौडीय पाठ ७, ७१, ११, पश्चिमोत्तरीय पाठ ७, ६८,१०)।

२. दे० १, १५, २१। यह श्लोक ब्रह्माण्ड पुराण (३, ६३, १७६), लिंग पुराण (पूर्वार्द्ध ६६, २७), वायु पुराण (२, २६, १७६) आदि मे भी मिलता है।

चाहकर किंकर नामक राक्षस को आदेश देते हैं कि वह कल्माषपाद के शरीर मे प्रवेश करे।

बाद मे किसी दिन एक ब्राह्मण ने कल्माषपाद से सामिष भोजन माँगा। अपने रसोइये से यह जानकर कि मांस अप्राप्य है राक्षस-ग्रस्त राजा ने ब्राह्मण को नर-मास खिलाने का आदेश दिया। रसोइये ने ऐसा ही किया, जिससे ब्राह्मण ने शक्ति के शाप का स्मरण दिलाकर राजा को पुरुषाद राक्षस बनने का पुनः शाप दे दिया। राक्षस के ग्रहण तथा उपर्युक्त दो शापो के फलस्वरूप कल्माषपाद वास्तव में नरभक्षक बन गया। उसने सर्वप्रथम शक्ति का भक्षण किया, अनन्तर विश्वामित्र के आदेश से किंकर राक्षस ने राजा को वसिष्ठ के सौ पुत्रो को खाने के लिये प्रेरित किया। अपने समस्त पुत्रो की हत्या का समाचार सुनकर वसिष्ठ ने आत्महत्या का अनेक प्रकार से असफल प्रयत्न किया। बहुत समय बाद वन मे कल्माषपाद से वसिष्ठ की भेंट हुई और वसिष्ठ ने अभिमंत्रित जल द्वारा राजा को, जो १२ वर्ष राक्षस-ग्रस्त रह चुका था, मुक्त कर दिया। इसपर कल्माषपाद ने वसिष्ठ से निवेदन किया कि वह उसके लिए संतति उत्पन्न करे।[1] वसिष्ठ राजा के साथ अयोध्या आकर तथा रानी का गर्भाधान कराकर अपने आश्रम लौटे। बाद मे महिषी ने एक पुत्र प्रसव किया जिसका नाम इसलिए अश्मक रखा गया कि १२ वर्ष तक गर्भ धारण करने के पश्चात् माता ने 'अश्म' से अपना उदर खोल दिया था।

वैदिक साहित्य मे वसिष्ठ-विश्वामित्र का पारस्परिक वैर प्रसिद्ध है; महाभारत की उपर्युक्त कथा मे भी इस वैर को सोदास की कथा का आधार बना दिया गया है। वैदिक साहित्य तथा महाभारत की कथा का एक महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि महाभारत के अनुसार वसिष्ठ शाप नही देते; उलटे वह कल्माषपाद को शाप से मुक्त करते हैं। अत. कल्माषपाद के राक्षस बन जाने के तीन अन्य कारण दिये जाते हैं—(१) शक्ति का शाप, (२) विश्वामित्र की प्रेरणा से किंकर नामक राक्षस का आवेश; (३) नरमांसाहार के कारण किसी ब्राह्मण का शाप। इस अन्तिम कारण मे सुतसोमजातक का प्रभाव देखा जा सकता है; सुतसोमजातक मे साधारण मांस के अभाव मे राजा को नरमास परोसा जाता है जैसा कि यहाँ पर अन्य मास अप्राप्य होने पर ब्राह्मण को नरमास दिया जाता है।

बृहद्देवता मे माना गया है कि वसिष्ठ ने अपने सौ पुत्रो के वध के कारण सुदास को शाप दिया था किन्तु महाभारत मे सौदास शापग्रस्त हो जाने के पश्चात् ही वसिष्ठ

---

१ इस निवेदन का कारण अन्यत्र स्पष्ट किया गया है (दे० आदिपर्व, अध्याय १७३)।

धानी लौटता है तथा वसिष्ठ द्वारा संतति प्राप्त कर वह पुन वन के लिए प्रस्थान करता है, जहाँ मूर्त्तमती ब्रह्महत्या पिसाची के रूप मे उसे सताती रहती है। वर्षों तक विभिन्न तीर्थो का भ्रमण करने पर वह मुक्त नही हो पाता। अन्त मे गौतम के परामर्श के अनुसार वह गोकर्ण मे शिवलिंग-दर्शन के फलस्वरूप ब्रह्महत्या दोष से मुक्त हो जाता है।

मराठी भावार्थ रामायण (७,५६), कृत्तिवास रामायण (१,१६) आदि परवर्ती रचनाओ मे भी वाल्मीकि रामायण के वृत्तान्त को सौदास की कथा का आधार माना गया है।

कृत्तिवास (१,४३) ने सौदास की शापमुक्ति को नवीन रूप दिया है। इसके अनुसार वसिष्ठ ने कहा था कि ११ वर्ष तक राक्षस होने के बाद सौदास गगा-दर्शन द्वारा शाप-मुक्त होगा। इस अवधि के अन्त मे एक ब्रह्मदैत्य से सौदास की भेंट हुई, दोनो छ महीने तक द्वन्द्व युद्ध करने के पश्चात् मित्र बन गये। वह ब्रह्मदैत्य शापवश दैत्य बन गया था और सौदास की भाँति गगाजल द्वारा ही मुक्ति पाने वाला था। तब ऐसा सयोग हुआ कि किसी दिन भार्गव ऋषि सिर पर गगाजल का घटा लेकर दोनों के सामने से ही जा रहे थे। सौदास के अनुरोध पर ऋषि ने कुश से दोनों अभिशप्तो के शरीर पर गगाजल छिडककर उनको शाप-मुक्त कर दिया।

६२५. रामकथा-साहित्य मे सौदास की कथा के तीन रूपान्तर मिलते है। इनकी सामान्य विशेषता यह है कि कोई व्यक्ति अनजान मे मांसाहार परोसने के कारण ब्राह्मण का शाप-भाजन बन जाता है तथा राम द्वारा मुक्त किया जाता है। अन्तिम दो कथाओ के अनुसार किसी शत्रु के षड्यन्त्र के कारण नरमांस परोसा गया था तथा तीसरी कथा मे यह माना गया है कि राजा प्रतापभानु ब्राह्मणो का कोपभाजन बनकर रामायण के प्रतिनायक राक्षस-रावण के रूप मे प्रकट हुआ था।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे सर्ग ५६ के अनन्तर तीसरे प्रक्षिप्त सर्ग मे निम्नलिखित कथा मिलती है। गौतम नामक ब्राह्मण ने किसी दिन राजा ब्रह्मदत्त के यहाँ जाकर भोजन माँगा। सयोगवश गौतम के आहार मे कुछ मांस पड गया जिससे गौतम ने राजा को गीध बन जाने का शाप दिया। राजा के सविनय निवेदन करने पर गौतम ने कहा कि इक्ष्वाकुवश के यशस्वी राजा राम के स्पर्श से तुम मुक्त हो जाओगे। गौतम के शाप के कारण ब्रह्मदत्त गीध बन गया और राम का स्पर्श पाकर वह दिव्य-रूपधारी पुरुष के रूप मे परिणत हो गया।[1]

१ यह कथा किंचित परिवर्तन सहित पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३४, ११८-१२६) मे मिलती है।

६२४ परवर्ती पुराणो तथा रामकथा-साहित्य मे महाभारत की कथा की अपेक्षा **रामायण की सौदासीय कथा** को प्रमाणिक माना गया है। इस कथा की विशेषता यह है कि इसमे विश्वामित्र का उल्लेख तक नही होता। सौदास की दुर्गति का कारण यह माना जाता है कि उसने मृगया के समय किसी राक्षस को मार डाला था तथा उस राक्षस के साथी के षड्यंत्र के कारण उसने अनजान मे वसिष्ठ को नरमांस परोसा था और फलस्वरूप वसिष्ठ का कोप-भाजन बन गया। रामायणी कथा की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमे सौदास के दूसरे नाम **'कल्माषपाद'** की व्युत्पत्ति के विषय मे एक सर्वथा नवीन कथा मिलती है। रामायण का वृत्तान्त इस प्रकार है।

सौदास ने मृगया के समय व्याघ्र का रूप धारण करने वाले दो राक्षसो को देख कर उनमे से एक का वध किया।[1] प्रतिकार का सकल्प करके दूसरा राक्षस अन्तर्द्धान हो गया। बाद मे सौदास ने वसिष्ट द्वारा अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के अन्त मे उस राक्षस ने वसिष्ठ का रूप धारण कर सामिष भोजन माँगा तथा राजा ने इसे तैयार करने का आदेश दिया। बाद मे राक्षस नरमास का भोजन हाथ मे लिए रसोइये के रूप मे राजा के सामने उपस्थित हुआ। राजा ने अपनी पत्नी मदयन्ती के साथ वसिष्ठ को यह भोजन परोस दिया। इसे सामिष जानकर वसिष्ठ ने राजा को यह शाप दिया—**भोजनमेतत्ते भविष्यति**। शाप सुनकर निर्दोष सौदास को क्रोध हुआ और वह हाथ मे जल लेकर वसिष्ठ को प्रतिशाप देने को उद्यत हो गया किन्तु मदयन्ती ने उसे रोक लिया। इस पर सौदास ने सह **'क्रोधमय, तेजोबलसमन्वित'** जल अपने ही पैरो पर छिडक लिया। फलस्वरूप उसके पैरो पर धब्बे पड गए और उस समय से सौदास कल्माषपाद के नाम से विख्यात हो गया। राक्षस के कपट के विषय मे सुनकर वसिष्ठ ने अपने शापके प्रभाव को १२ वर्ष तक ही सीमित कर दिया। अतः कल्माषपाद ने १२ वर्ष तक शाप का दण्ड भोगने के बाद अन्त मे पुनः अपना राज्य पाप्त कर लिया।

तीन पुराणो मे सूर्यवश के वर्णन के अन्तर्गत सौदासीय कथा रामायण के अनुसार दी गई है, अर्थात् **विष्णु पुराण** (४,४,३८-५८), **भागवत पुराण** (६,६,२०-२५), **स्कंद पुराण** (३, ३, २)। भागवत तथा स्कन्द पुराणो मे किसी यज्ञ की चर्चा नही होती, राक्षस रसोइये के रूप मे सौदास के घर मे निवास करता है तथा भोजन मे निमंत्रित कुलगुरु वसिष्ठ के लिए नरमास तैयार करता है। स्कन्द पुराण के अनुसार कथा का निर्वहण इस प्रकार है—शाप समाप्त होने पर कल्माषपाद अपनी राज-

१. "राक्षसद्वय" (दे० ६५, ११)। भागवत पुराण, स्कन्द पुराण तथा भावार्थ रामायण के अनुसार दोनो मे भ्रातृत्व का सम्बन्ध था। कृत्तिवास ने उनको दम्पति माना है।

भानु ने कालकेतु के एक सौ पुत्रो तथा दस भाइयो का वध किया था)। मुनि के आदेशानुसार राक्षस ने सोये हुए राजा को घर पहुँचा दिया और राजा के पुरोहित का हरण कर उसे किसी पहाडी गुफा मे रख दिया। तब वह पुरोहित के रूप में राजधानी मे रहने लगा। तीन दिनो के बाद प्रतापभानु ने एक लाख ब्राह्मणो को भोजन का निमत्रण दिया और राक्षस ने भोजन मे ब्राह्मण का मास मिला दिया। राजा परोसने लगा था कि आकाशवाणी सुनाई पडी और उसमे सब ब्राह्मणो को घर जाने का परामर्श दिया गया क्योकि रसोई 'भूसुर मासू' की बनी थी। इस आकाशवाणी को सुनकर ब्राह्मणों ने प्रतापभानु को चार दिन मे मरकर परिवार सहित राक्षस बन जाने का शाप दे दिया। तदनन्तर पुन आकाशवाणी हुई कि राजा निर्दोष है। राजा ने रसोईघर मे जाकर देखा कि भोजन और रसोइया दोनो वहाँ से गायब हैं। उसने ब्राह्मणो की बहुत अनुनय-विनय की किन्तु उन्होने कहा कि ब्राह्मणो का शाप नहीं टल सकता।

कालकेतु पुरोहित को फिर राजमहल पहुँचाकर कपटमुनि के पास लौटा। तब मुनि ने प्रतापभानु के समस्त शत्रुओ को बुलाकर उसकी राजधानी पर आक्रमण किया। उस युद्ध मे प्रतापभानु अपनी सेना तथा परिवार सहित मारा गया। समय पाकर प्रतापभानु रावण के रूप मे प्रकट हुआ, अरिमर्दन कुभकर्ण हुआ तथा धर्मरुचि ने विभीषण का रूप धारण किया। राजा का शेष परिवार और परिचर लका के राक्षस बन गए।[1]

६२६. सौदास तथा सुतसोम की कथाएँ मूलतः दो सर्वथा भिन्न तथा एक दूसरे से पूर्णरूपेण स्वतत्र वृत्तान्त हैं। महाभारत की सौदासीय कथा पर सुतसोम जातक के कथानक का प्रभाव सुस्पष्ट है (दे० अनु० ६२३), किन्तु रामायणीय कथा मे जो नरमासाहार-प्रदान वसिष्ठ के शाप का कारण माना गया है यह भी बौद्ध-साहित्य का प्रभाव प्रतीत होता है। महाभारत तथा रामायण की सौदासीय कथा मे तथा उस कथा के तीनो रूपान्तरो मे भी किसी ब्राह्मण का शाप सौदास की दुर्गति का कारण माना गया है। अत. जहाँ बौद्ध सुतसोम जातक के विभिन्न रूपो का प्रधान उद्देश्य **मासाहार के कुपरिणाम** का प्रतिपादन है वहाँ सौदासीय कथा का लक्ष्य **ब्राह्मण-शाप का महत्व** दिखलाना है। सौदासीय कथा के तीन रूपान्तरो के नायक (ब्रह्मदत्त, शुक और रावण) राम के सम्पर्क से शापमुक्त हो जाते है। प्रतापभानु की कथा के अनुसार

१ दे० बालकाण्ड, दो० १५३-१७६। रामदास गौड का कहना है कि अगस्त्य रामायण तथा मजुल रामायण मे भानुप्रताप अरिमर्दन की कथा का वर्णन किया गया है (दे० हिन्दुत्व, पृ० १३७)। दोनो रामायण अप्राप्य हैं।

अध्यात्म रामायण (६, ५, ५-२४) तथा आनन्द रामायण (१, १०, २१५-२१६) मे रावण के गुप्तचर शुक के पूर्वजन्म के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। शुक नामक वनवासी ब्राह्मण देवताओ के हित मे लगे रहने के कारण राक्षसो का शत्रु बन गया था। एक दिन अगस्त्य मुनि उसके आश्रम पधारे; इस अवसर से लाभ उठाकर वज्रदंष्ट्र नामक राक्षस ने अगस्त्य का रूप धारण कर लिया और सामिष भोजन के लिए शुक से आग्रह किया। अनन्तर वज्रदंष्ट्र ने शुक की पत्नी को मूर्च्छित कर दिया और स्वय उसी का रूप धारण कर अगस्त्य को नरमास परोसा और बाद मे अन्तर्द्धान हो गया। इस पर अगस्त्य ने शुक को यह कहकर शाप दिया—"तुमने मुझे अभक्ष्य नरमास खाने को दिया, अतः तुम नरभक्षी राक्षस बन जाओ।" शुक द्वारा इस शाप का कारण पूछे जाने पर मुनि ने राक्षस की करतूत को जान लिया। उनका शाप व्यर्थ तो नही हो सका, किन्तु अगस्त्य ने शुक को आश्वासन दिया कि तुम राक्षस के रूप मे रावण के सहायक बन जाओगे, राम के आगमन पर तुम रावण का दूत होकर राम के दर्शन पाओगे और शापमुक्त हो जाओगे। तब रावण के पास लौटकर तथा उसे तत्व-ज्ञान का उपदेश देकर परमपद प्राप्त करोगे। तदनुसार लकायुद्ध के समय शुक ने रावण-दूत बनकर राम के दर्शन पाये तथा रावण के पास लौटकर उसको सदुपदेश दिया। इसके अनन्तर वह फिर ब्राह्मण शरीर प्राप्त कर वन चला गया।[१]

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के बालकाण्ड मे रामावतार-हेतु के रूप मे पाँच कथाओ का वर्णन किया है। अन्तिम कथा इस प्रकार है—

"केकय देश का राजा सत्यकेतु अपने ज्येष्ठ पुत्र प्रतापभानु को राज्य देकर वन चला गया। प्रतापभानु अपने मन्त्री धर्मरुचि तथा अपने अनुज अरिमर्दन की सहायता से समस्त राजाओ को हराकर पृथ्वीमण्डल का एकमात्र राजा बन गया। किसी दिन मृगया के समय प्रतापभानु अपने साथियो से अलग होकर एक आश्रम मे पहुँचा जहाँ मुनि के छद्मवेश मे एक राजा रहता था जिसका देश प्रतापभानु ने छीन लिया था। कपट-मुनि ने राजा का आतिथ्य-सत्कार किया तथा उसे यह परामर्श दिया कि वह वर्ष भर नित्यप्रति एक लाख ब्राह्मणो के लिए भोजन का प्रबन्ध करे। मुनि ने राजा को आश्वासन दिया कि वह स्वय रसोइया बनकर अपने पुण्य के बल पर ब्राह्मणो को खिलायेगा और तीन दिन के बाद राजपुरोहित का रूप धारणकर राजा की सेवा मे उपस्थित होगा। मुनि का आश्वासन पाकर राजा निश्चिन्त होकर सोने लगा। अब कालकेतु नामक राक्षस कपटमुनि के पास आया। (कालकेतु ही शूकर के रूप मे राजा को भटकाकर कपटमुनि के पास ले गया था, उसके वैर का कारण यह था कि प्रताप-

१. रामचरितमानस मे इस कथा का निर्देश मात्र किया गया है, दे० ५, ५७।

अधिकार प्राप्त न कर सका—**स्वर्गभाड् नहि शूद्रोऽयं त्वत्कृते रघुनन्दन** (७६, ८)। राम मृत ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन का वरदान माँग लेते हैं तथा अगस्त्य से मिलकर अयोध्या लौटते है। अगस्त्य उस अवसर पर राम को श्वेत राजा (अनु० ६२७) तथा दण्डकारण्य (अनु० ४७२) की कथा सुनाते हैं।

पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३२, ८६) तथा उत्तरखण्ड (अध्याय २३०, ४७) मे भी देवताओ के वरदान से द्विजपुत्र के पुनर्जीवित हो जाने का उल्लेख है।

'अप्राप्तयौवन' ब्राह्मणपुत्र की अवस्था के विषय मे दाक्षिणात्य पाठ मे लिखा है कि वह पाँच हजार वर्ष का था (पचसहस्रक: ७,७३,५)। अन्य पाठो मे वह पाँच (गौ० रा० ७,७६,५) अथवा पन्द्रह (प० रा० ७,७६,५) का माना गया है। आनन्द रामायण (राज्यकाण्ड १०,५०) तथा पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ३२,३७ और उत्तरखण्ड २३०,७) मे भी पाँच किन्तु दशावतारचरित (रामावतार छन्द २७८) मे आठ लिखा है।

६२६ **महाभारत** के एक श्लोक मे शम्बूक-वध का उल्लेख किया गया है जिसमे ब्राह्मण-पुत्र देवताओ के वरदान से नही किन्तु राम के धर्म से पुनर्जीवत माना गया है

श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारकः।
जीवतो धर्ममासाध्य रामात्सत्यपराक्रमात् ॥६२॥

(शातिपर्व, अध्याय १४६)

कालिदास के **रघुवंश** तथा भवभूति के **उत्तररामचरित** के अनुसार शम्बूक-वध के द्वारा ही ब्राह्मण-पुत्र पुनर्जीवन प्राप्त करता है।

रघुवंश मे इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राजा के द्वारा दड दिये जाने के कारण[1] वह शूद्र मुक्ति प्राप्त कर सका है :

कृतदंड स्वय राज्ञा लेभे शूद्रः सतां गतिम्।
तपसा दुश्चरेणापि न स्वमार्गविलंघिना ॥५३॥ (१५ वाँ सर्ग)

उत्तररामचरित के द्वितीय अक मे शम्बूक अपने वध के अनन्तर दिव्य पुरुष के रूप मे प्रकट होकर राम से कहता है कि मैं आपके प्रसाद ही से शाश्वत पद प्राप्त करूँगा।

---

१. रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे एक श्लोक पाया जाता है जिसमे राजा द्वारा दडितो की स्वर्ग-प्राप्ति का उल्लेख है। :

राजभिर्धृतदडाश्च कृत्वा पापानि मानवा.।
निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ॥३१॥

(किष्किधाकाड, सर्ग १८)

यह श्लोक मनुस्मृति (८,३१८) मे भी मिलता है।

रावण वास्तव मे एक धर्मभीरु राजा था जिसने अपने शत्रु के षड्यंत्र से ब्राह्मणो का शापभाजन बनकर अपनी दयनीय दशा द्वारा भगवान को अवतार लेने के लिए बाध्य किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक दीर्घकालीन विकास के अन्त मे सौदास की कथा भक्त-वत्सल भगवान राम के गुणगान मे परिणत हो गई है।

६२७. वाल्मीकि रामायण के दो अन्य स्थलो पर **नरमास-भक्षण** का उल्लेख है। **अरण्यकाण्ड** (११, ५५-५६) मे निम्नलिखित कथा मिलती है। इल्वल नामक असुर ब्राह्मण का रूप धारण कर ब्राह्मणों को श्राद्ध के लिए निमन्त्रण दिया करता था तथा उनको अपने भाई वातापि का मास खिलाया करता था। भोजन के अनन्तर वह यह कहकर अपने भाई को बुलाया करता था—**वातापे निष्क्रमस्व**। ये शब्द सुनकर वातापि ब्राह्मणो के शरीर से निकलकर उनका वध किया करता था। इस प्रकार सहस्रो ब्राह्मणो की हत्या हुई, अन्त मे अगस्त्य ने दोनो असुरो को मार डाला। **उत्तर-काण्ड** (सर्ग ७७-७८) मे श्वेत की कथा इस प्रकार है। विदर्भ के राजा श्वेत ने बिना भिक्षादान दिये तपस्या की थी जिससे ब्रह्मलोक प्राप्त करने के पश्चात् भी उसे पृथ्वी पर लौटकर अपने ही मृत शरीर से अपनी भूख शान्त करने का आदेश मिला। अगस्त्य ने श्वेत से एक आभूषण का दान स्वीकार कर उसे उस घृणित कार्य से मुक्त किया।[1] जावा के **रामायण ककविन** के अनुसार शवरी का मुख मास-भक्षण के कारण काला पड गया तथा राम ने उसे शुद्ध किया था (दे० अनु० ४८१)।

ग। शम्बूक-वध

६२८ शम्बूक-वध के वृत्तान्त के दो सर्वथा भिन्न रूप मिलते है। एक वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड पर निर्भर है और दूसरा जैन पउमचरिय के वृत्तान्त पर।

(अ) **उत्तरकाण्ड की कथा** (सर्ग ७३-८२)

राम नारद से जान लेते हैं कि एक शूद्र की तपस्या ही किसी ब्राह्मणपुत्र की अकाल मृत्यु का कारण है, अतः वह पुष्पक के सहारे उस शूद्र का पता लगाकर उसका वध करते हैं। उसी क्षण देवता प्रकट होकर राम की प्रशसा करते हैं और राम को वर प्रदान कर इसका स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख करते है कि राम के कार्य से वह शूद्र स्वर्ग पर

---

१. पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड ३३, ६०-१३२) तथा आनन्द रामायण (राज्य काण्ड १७, ५४-८५) मे भी श्वेत की कथा मिलती है। अद्भुत रामायण (सर्ग ६) मे श्वेत की कथा का परिवर्तित रूप पाया जाता है। भुवनेश नामक राजा उल्लू के रूप मे जन्म लेकर अपने शव को खाने के लिए बाध्य किया जाता है।

(आ) पउमचरिय की कथा

६३१ पउमचरियं (पर्व ४३) के अनुसार खरदूषण, रावण का भाई न होकर, किसी अन्य विद्याधरवश का राजकुमार है, जिसने रावण की बहन चद्रनखा से विवाह किया है। उन दोनो का पुत्र शम्बूक सूर्यहास नामक खग प्राप्त करने के उद्देश्य से साधना करता है। १२ वर्ष की तपस्या के पश्चात् खग प्रकट होता है। सयोग से लक्ष्मण, जो राम तथा सीता के साथ वन मे निवास करते हैं, वहाँ पहुँचते हैं। खग को देखकर वह उसे उठाते है और पास के बाँस को काटकर शम्बूक का सिर भी काट देते है। चद्रनखा अपने पुत्र मे मिलने आया करती है। उसे मरा हुआ देखकर वह विलाप करते-करते वन मे भटकती फिरती है और राम तथा लक्ष्मण के पास पहुँचती है। उन दोनो पर आसक्त होकर तथा दोनो से अस्वीकृत होकर वह अपने पति खर-दूषण तथा रावण को लक्ष्मण द्वारा शम्बूक-वध की सूचना देती है। इस प्रकार शम्बूक-वध राम-रावण-युद्ध तथा सीता-हरण का कारण बन गया है।

६३२ पउमचरियं का यह वृत्तान्त किंचित परिवर्तन सहित अनेक राम-कथाओं मे पाया जाता है। तेलुगु **रंगनाथ रामायण** मे शूर्पणखा का पति विद्युज्जिह्व रावण के विरुद्ध विद्रोह करने के कारण रावण द्वारा मारा जाता है। बाद मे उसका पुत्र जम्बुमाली अथवा जम्बुकुमार अपनी माता शूर्पणखा से समस्त वृत्तान्त सुनकर रावण से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से एक दिव्य खग की साधना करने जाता है। खग प्रकट होने पर लक्ष्मण उसे देखते है और बाँस की झाडी पर वह यह खग चलाकर सयोग से तपस्या करते हुए जम्बुकुमार का वध करते है (दे० अरण्यकाड, १०)। सारलादास कृत **महाभारत** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र जपासुर का वध उल्लिखित है। एक अन्य उडिया रचना भुइया माधवदास कृत **विचित्र रामायण** मे भी इस पुत्र का नाम जपासुर है।

आनन्द रामायण मे भी शूर्पणखा के पुत्र साव राक्षस का उल्लेख है, जो ब्रह्मा से एक दिव्य खग प्राप्त कर उसी खग से लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है (दे० १, ७, ४१-४३)। **भावार्थ रामायण** (३, ८) की कथा आनन्द रामायण पर निर्भर है। कन्नड **तोरवे रामायण** मे प्रस्तुत वृत्तान्त का परिवर्तित रूप मिलता है। शम्बूक राक्षस इन्द्र-पद प्राप्त करने के लिए वन मे इतने काल से तपस्या कर रहा था कि एक वल्मीक उसके शरीर के चारो ओर बन गया था। इन्द्र और नारद व्याध के रूप मे लक्ष्मण के पास आकर उनको मृगया खेलने का निमन्त्रण देते हैं। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इन्द्र एक वराह की सृष्टि करते हैं जो इन्द्र की प्रेरणा से शम्बूक के वल्मीक की ओर जाता है। लक्ष्मण उसे देखकर एक बाण से वराह तथा शम्बूक दोनो का वध करते हैं (दे० अरण्य-काड, सधि ३)।

परवर्ती रामकथाओ मे भी देवताओ के वरदान का उल्लेख नही है। किन्तु राम द्वारा शम्बूकवध की क्रिया ही ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन तथा शम्बूक की स्वर्गप्राप्ति दोनो घटनाओ का कारण मानी गई है।[1]

६३०. **आनन्द रामायण** (७,१०,५०-१२२) मे प्रस्तुत कथा का परिवर्द्धित रूप मिलता है। पचवर्षीय ब्राह्मण बालक के माता-पिता को प्रतिज्ञा दी गयी कि यदि उनका पुत्र पुनर्जीवित नही होगा तो बदले मे उनको कुश और लव मिल जायेंगे। इस प्रतिज्ञा के बाद राम ने बहुत से लोगो के साथ पुष्पक पर चढकर अपने राज्य मे अधर्म का पता लगाना चाहा। इतने मे शृगवेरपुर की ओर से एक ब्राह्मण विधवा अपने पति के शव के साथ आ पहुँची। राम ने उसे जिलाने की प्रतिज्ञा की तथा प्रस्थान करने के पूर्व घोषित किया कि जब तक मैं लौट न आऊँ कोई भी शव न जलाया जाय। तपस्या करने वाले शूद्र के पास पहुँच कर राम ने उसे वरदान दिया, शूद्र ने अपने उद्धार के अतिरिक्त अपनी जाति के लिए सद्गति माँगी। राम ने राम-नाम का जप और कीर्त्तन शूद्रो की सद्गति का उपाय बताया। इस पर शूद्र ने उत्तर दिया कि कलियुग मे शूद्र लोग बडे मूर्ख होगे, सदा खेतीबारी के कामो मे व्यस्त रहकर उनको जप-कीर्त्तन आदि के लिए समय कहाँ मिलेगा। राम ने उत्तर दिया कि वे लोग एक-दूसरे से मिलकर नमस्कार करते हुए राम-राम कहेगे और इसी से उनका उद्धार होगा और तुम भी आज मेरे हाथ से मरकर वैकुण्ठ जाओगे। इतने मे आयोध्या मे पाँच शव और एकत्र हुए—एक क्षत्रिय, एक वैश्य, एक तेली, एक लोहार की पुत्र-वधू तथा एक चमार की लडकी। राम ने शूद्र का वध करके सबो को जिला दिया।

६३०अ कन्नड राष्ट्रकवि कुवेपु ने "शूद्रतपस्वी" (काव्यालय, मैसूर १६४४) मे इस कथानक का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया है। कोई वृद्ध ब्राह्मण अपने पुत्र के साथ सयोग से एक शम्बूक नामक तपस्वी के आश्रम पहुँचता है। ब्राह्मण अपने पुत्र को तपस्वी को प्रणाम करने से रोकता है, जिसके फलस्वरूप पुत्र किसी सर्प के दश से मर जाता है। ब्राह्मण राम को शूद्र के आश्रम ले जाकर अनुरोध करता है कि उसका वध किया जाये। राम उस पर ब्रह्मास्त्र चलाते है किन्तु शूद्र को इससे कोई हानि नही होती। इस तरह राम को पता चलता है कि ब्राह्मण ही दोषी है। अत मे ब्राह्मण तपस्वी को प्रणाम करता है और उसी क्षण उसका पुत्र पुनर्जीवित हो जाता है।

---

१ उदाहरणार्थ अध्यात्म रामायण (७,४,२३) तथा आनन्द रामायण (राज्य काण्ड १०, ११५)। दे० डब्लू० प्रिंज, राम एण्ड शम्बूक, जर्मन जर्नल ऑव इन्डोलोजी एन्ड इरानिस्तिक, भाग ५, पृ० २४१।

किये थे जिनके लिए एक काचनी सीता का निर्माण हुआ, क्योकि राम ने सीता के भूमि-प्रवेश के पश्चात् अन्य विवाह नही किया :

न सीतायाः परां भार्या वव्रे स रघुनन्दनः ॥
यज्ञे यज्ञे च पत्न्यर्थं जानकी कांचनीभवत् ॥७॥

(सर्ग ९९)

रघुवश (सर्ग १४, ८७) से लेकर परवर्ती रामकथाओ मे प्रायः इस स्वर्णमयी सीता का उल्लेख है। **अग्नि पुराण** मे लिखा है कि राम ने अश्वमेध द्वारा अपनी ही आराधना की—**वासुदेव स्वमात्मानमश्वमेधैरथायजत्** (१०, ३३)। **आनन्द रामायण** के यागकाड के अनुसार राम ने सीता के रहते भी अश्वमेध का आयोजन किया था। इस रचना के जन्मकाड (सर्ग ४) मे इसका भी उल्लेख मिलता है कि राम ने सीता-त्याग के पश्चात् एक सौ अश्वमेध करने का सकल्प किया था। इसके अतिरिक्त **अध्यात्म रामायण** (७, ४, २७) तथा **आनन्द रामायण** (१, १३, २००) के अनुसार राम ने कोटि-कोटि शिवलिंग स्थापित किए थे—**कोटिशः स्थापयामास शिवलिंगानि सर्वशः।**

६३४ **वाल्मीकि रामायण** मे कही भी राम के **ब्रह्महत्या-दोष** का निर्देश नही मिलता, किन्तु पौराणिक साहित्य मे इसका उल्लेख किया गया है कि रावण-वध के कारण राम को ब्रह्महत्या का दोष लगा था और उसी दोष के प्रायश्चित्त-स्वरूप उन्होने अश्वमेध किया था।

स्कन्द पुराण मे सभवत पहले पहल राम की ब्रह्महत्या का उल्लेख किया गया हो। सेतुमाहात्म्य के अनुसार ब्रह्महत्या से विमोक्ष प्राप्त करने के लिए कोटितीर्थ मे (अध्याय २७) तथा गधमादन मे (अध्याय ४४) राम ने शिवलिग की स्थापना की थी। ब्रह्मखण्ड मे राम वसिष्ठ से कहते हैं कि मेरे द्वारा बहुत से ब्रह्मराक्षसो की हत्या हुई है, इस पाप की शुद्धि के लिये कौन तीर्थ श्रेष्ठ माना जाता है

मया तु सीताहरणे निहता ब्रह्मराक्षसा.।
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं वद तीर्थोत्तमोत्तमम् ॥२॥

इस पर वसिष्ठ धर्मारण्य का निर्देश करते हैं और राम वहाँ जाकर उस तीर्थ का जीर्णोद्धार करते है (दे० धर्मारण्यखण्ड, अध्याय ३१)।

जैमिनीय अश्वमेध (अ० २९) मे इसका प्रथम उल्लेख किया गया है कि राम ने ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्त-स्वरूप अश्वमेध करने का सकल्प किया था।

पद्मपुराण के पातालखण्ड के अनुसार राम ने अपने को ब्रह्महत्या का दोषी मानकर वसिष्ठ से निवेदन किया कि वह उस पाप के प्रायश्चित्त का उपाय बता दे

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार शूर्पणखा का पुत्र किसी तपस्वी के आश्रम मे जाकर पेडो का फल खाने लगा। तपस्वी ने उसे पेड़ बन जाने का शाप दिया। शूर्पणखा के बहुत विनय करने पर तपस्वी ने शाप इस प्रकार बदल दिया कि जब विष्णु राम के रूप मे आकर उस वृक्ष की एक शाखा काट लेंगे तब शूर्पणखा का पुत्र मुक्ति प्राप्त करेगा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६, भाग १३, पृ० १७२)।

जावा के **सेरतकांड** मे एक बाण द्वारा सुरपन्दकी के पुत्र के वध का उल्लेख मिलता है। **सेरी राम** के अनुसार शूर्पणखा का पुत्र दर्सासीगा (दे० अनु० ४६३) अपनी तपस्या द्वारा चद्रवाली नामक खग प्राप्त करता है तथा सयोग मे लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है।

श्याम के **रामकियेन** (अध्याय १७) मे सेरी राम से मिलता जुलता वृत्तान्त मिलता है। अन्तर यह है कि सदा की भाँति राम कियेन की कथा पर रामायण का प्रभाव अधिक स्पष्ट है। रावण की बहन का नाम सम्मनक्खा है, जिसका पति जिह्व तथा पुत्र कुभकश है। कुभकश ने गोदावरी के तट पर एक दिव्य खंग की प्राप्ति के लिए साधना की थी जिस पर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उस खग को कुभकश के सामने गिराया था। ब्रह्मा ने प्रकट होकर कुंभकश को यह खग हाथ में नही दिया इस कारण कुभकश ने उसे नही ग्रहण किया। बाद मे लक्ष्मण वहाँ आकर उसे उठाते है। यह देखकर कुभकश लक्ष्मण से युद्ध करने लगता है और मारा जाता है। इस घटना के पश्चात् ही रावण किसी दिन सयोग से जिह्व का वध कर डालता है। जिह्व-वध का वृत्तान्त सेरी-राम के अनुसार है (दे० अनु० ४६३)। **ब्रह्मचक्र** मे लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की दो पुत्रियो के वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ४६५)।

घ। राम का अश्वमेध

६३३ वाल्मीकीय युद्धकाण्ड के अन्तिम सर्ग के अनुसार राम ने दस बार अश्वमेध-यज्ञ का आयोजन किया था (दे० अनु० ६१०)। उत्तरकाण्ड (सर्ग ८३-९९) मे राम के प्रथम अश्वमेध का विस्तृत वर्णन मिलता है। राम ने पहले राजसूय सम्पन्न करना चाहा किन्तु भरत ने इसका विरोध किया। अश्वमेध-यज्ञ के द्वारा इन्द्र के ब्रह्म-हत्यादोष-निवारण तथा इल-इला की वर-प्राप्ति के वर्णन के बाद गोमती के तट पर नैमिष वन मे रामाश्वमेध के लिये यज्ञभूमि को तैयार किया गया तथा सुग्रीव, विभीषण, शत्रुघ्न आदि को निमत्रण दिया गया। इस यज्ञ के अवसर पर कुश और लव ने रामायण का गान किया (दे० अनु० ७३७) तथा सीता ने अपने सतीत्व की शपथ खाकरकिया भूमि में प्रवेश (३५७ ० नुग्र ०दे) । बाद मे राम ने और बहुत से यज्ञ

श्रीरग के कारावास मे विभीषण से मिले । वहाँ पता चला कि विभीषण ने अनजान मे एक विप्र को पैरो से कुचलकर मार डाला था, इसके बाद विभीषण एक पग भी आगे नही बढ सका था किन्तु ब्राह्मणो से मारे जाने पर वह नही मर सका था । अब ब्राह्मण लोग राम से निवेदन करने लगे कि वह विभीषण का वध करे । राम ने विभीषण को अपना भक्त कहकर उसे छुडाया तथा विभीषण '*अज्ञान ब्रह्महत्या*' का उचित प्रायश्चित करके अपनी राजधानी लौटा । आनन्द रामायण के अनुसार राम तथा सीता ने शतस्कध रावण तथा मूलकासुर द्वारा पराजित विभीषण की सहायता के लिए लका की यात्रा की थी ।[1]

६३६. **वाल्मीकि रामायण** मे भरत द्वारा गधर्व देश की विजय-यात्रा का वर्णन मिलता है (सर्ग १००-१०१) । इसके बाद लक्ष्मण के पुत्रो के लिए कारुपथ तथा मल्ल देश को भी वश मे कर लिया गया (सर्ग १०२), इस विजययात्रा का उल्लेख मात्र किया गया है । तिलक नामक टीका मे माना गया है कि लक्ष्मण ही के द्वारा राम ने उन देशो को अपने अधिकार मे किया था । आनन्द रामायण मे भी इन विजययात्राओ का वर्णन है—भरत गधर्वो को तथा लक्ष्मण मल्लो को परास्त करते हैं (राज्यकाण्ड, सर्ग ६) । इसके बाद राम स्वय पृथ्वी के समस्त राजाओ पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से विमान पर चढकर भारत, जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप आदि सात द्वीपो की विजय-यात्रा करते है (दे० राज्यकाण्ड, सर्ग ७-९) ।

आनन्द रामायण के 'देहद्वयकरण' नामक सर्ग (राज्यकाण्ड, सर्ग २१) मे निम्नलिखित कथा मिलती है । एक बार ऐसा सयोग हुआ कि वाल्मीकि और विश्वामित्र दोनो ने एक ही समय दूत भेजकर राम को अपने यज्ञ के लिए निमन्त्रण दिया । राम ने दोनो का निमन्त्रण स्वीकार किया तथा पुरवासियो को विभिन्न सवारियो पर बैठाकर अयोध्या से निकले । जहाँ विश्वामित्र और वाल्मीकि के मार्ग अलग थे, वहाँ से राम ने सबो के दो रूप बनाये और इस प्रकार वह एक ही समय दोनो मुनियो के यज्ञ मे उपस्थित हुए ।

---

१. दे० अनु० ६४०-६४१ । रामकियेन (अध्याय ३९) मे भी विभीषण दो बार सहायता माँगता है । प्रथम बार रावणसखा महापाल देवासुर ने लङ्का का अवरोध किया था और हनुमान् ने राम के आदेशानुसार वहाँ जाकर उसका वध किया । दूसरी बार रावण का पुत्र वैनासूरिवश विभीषण को कारावास मे रखकर स्वय लका का राजा बन गया । राम ने भरत तथा शत्रुघ्न के नेतृत्व मे अपनी सेना भेज दी, वैनासूरिवश तथा उसके सहायक मारे गये और विभीषण ने पुनः लका का राज्य प्राप्त किया ।

और वसिष्ठ ने अश्वमेध के आयोजन का परामर्श दिया।[1] इस अश्वमेध के विस्तृत वर्णन के अंतर्गत हनुमान् द्वारा शिव की तथा बाद मे इंद्रादि देवताओ की पराजय का उल्लेख किया गया है (दे० अध्याय ४४)। रामचन्द्रिका (प्रकाश ३५) के अनुसार राम ने सीतात्याग के पाप के प्रायश्चित्त के लिए अश्वमेध किया था।

ङ। नवीन सामग्री

राम की यात्राएँ

६३५. अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे राम के अभिषेक के पश्चात् उनकी अनेक यात्राओ का उल्लेख मिलता है। उनमे से लंका की यात्रा सब से अधिक प्रसिद्ध है। नृसिंहपुराण (अध्याय २७) के अनुसार राम ने उस अवसर पर लंका मे पुण्यारण्य की स्थापना की थी। स्कन्दपुराण के नागरखण्ड (अध्याय १०१) मे माना गया है कि राम ने लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात सुग्रीव को साथ लेकर लका की यात्रा की थी तथा विभीषण को देव-पूजा का उपदेश देकर सेतुप्रांत मे तीन रामेश्वर स्थापित किए तथा विभीषण के अनुरोध पर सेतु नष्ट किया था। पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड (अध्याय ३५) मे इस यात्रा का विस्तृत वर्णन किया गया है। सीता के भूमि-प्रवेश के बाद राम ने लक्ष्मण को अयोध्या का राज्यभार सौप दिया और वह भरत के साथ पुष्पक पर चढ कर पश्चिम मे भरत के पुत्रो से तथा अनतर पूर्व मे लक्ष्मण के पुत्रो से मिले। बाद मे दोनो दक्षिण की ओर चले गये तथा सुग्रीव को साथ लेकर लका में पहुँच गए। विभीषण ने राम को वामन की वैष्णवी मूर्ति प्रदान की तथा सेतुभग के लिए राम से निवेदन किया। राम ने उस निवेदन को स्वीकार किया तथा शत्रुघ्न से मिलकर कान्यकुब्ज मे वामन की स्थापना की।

ऐसे वृत्तान्त भी मिलते है जिनमे राम विभीषण को सहायता देने के उद्देश्य से लका की यात्रा करते हैं। नारद पुराण (पूर्व खण्ड ७९, २९) मे इसका उल्लेखमात्र किया गया है कि राम ने द्रविड़ देश मे विभीषण को मुक्त किया था किन्तु पद्म पुराण के पातालखण्ड (अध्याय १००) मे तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। शंकर किसी दिन शभु नामक ब्राह्मण के रूप मे अयोध्या आ गए थे कि राम को यह समाचार मिला कि द्रविडो ने विभीषण को कैदी बना लिया है। इसपर राम शभु के साथ दक्षिण जाकर

१. दे० अध्याय ८। शिवप्रतिष्ठा (अनु० ५८०) के प्रसग मे भी राम के ब्रह्म-हत्या दोष का उल्लेख है। स्कद पुराण (अवतीखण्ड, रेवा खण्ड अध्याय ८३) मे हनुमान् भी राक्षसो के वध के कारण ब्रह्महत्या-दोषी माने गए हैं। इस दोष के निवारणार्थ उन्होने नर्मदा तीर्थ पर बहुत वर्षो तक शिव की उपासना की।

आनन्द रामायण के विलासकाण्ड (सर्ग ५) मे राम-सीता की जलक्रीडा तथा जन्म काण्ड (सर्ग २) मे दोनो के वनविहार का वर्णन मिलता है। इस सामग्री पर कृष्ण-कथा का प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है, राम बहुत-सी स्त्रियो को आश्वासन देते हैं कि वे कृष्णावतार मे उनकी पत्नियाँ बन सकेगी (दे० अनु० ७८७)।

अन्यत्र भी राम की इन विलास-क्रीडाओ का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ—रामलिंगामृत (सर्ग १३), तुलसीदास कृत गीतावली के उत्तरकाण्ड मे राम-हिंडोला, होलिकोत्सव, केशवदास की रामचन्द्रिका मे वाटिका-विहार ('प्रकाश ३१) तथा जल-विहार (प्रकाश ३२)।

आनन्द रामायण (राज्यकाण्ड सर्ग ११-१२, मनोहरकाण्ड सर्ग १२) मे राम की मृगया तथा रामचन्द्रिका (प्रकाश २६) मे राम के चौगान का भी उल्लेख मिलता है।

सीता द्वारा रावण-वध

६३६ बहुत सी अर्वाचीन रामकथाओ मे सीता द्वारा **सहस्रस्कन्ध रावण** के वध का वर्णन मिलता है,[1] **अद्भुत रामायण** (दे० सर्ग १७-२७) की तत्सम्बन्धी विस्तृत कथा इस प्रकार है। सहस्रस्कध रावण विश्रवा तथा कैकसी का पुत्र है जो पुष्कर मे राज्य करता है। किसी दिन विश्वामित्र आदि मुनि अयोध्या आकर रावण-वध के कारण राम की प्रशसा करते है। इस पर सीता मुस्कराकर सहस्रस्कध रावण की कथा सुनाती हैं, जिसने इन्द्र आदि देवताओ को पुष्कर मे कारागार मे रख दिया है। यह सुनकर राम-सीता सेना के साथ पुष्कर जाते हैं। रावण वायव्य शर से समस्त सेना अयोध्या तक उडाता है तथा द्वन्द्व युद्ध मे राम का वध करता है। तब सीता देवी का महाविकट रूप धारण कर सहस्रस्कध रावण तथा उसके योद्धाओ का भी सिर काट कर नाचने लगती है, जिससे समस्त सृष्टि सकट मे पड जाती है (**ननर्त जानकी देवी घोरकाली महाबला २३, ६३**)। ब्रह्मा आदि देव आकर नृत्य समाप्त करने का सीता से अनुरोध करते हैं। सीता उनके अनुरोध को अस्वीकार करती है क्योंकि राम मारे गये हैं। इस पर ब्रह्मा राम को पुनर्जीवित करते हैं और राम परमशक्ति के रूप मे सीता की स्तुति करके उनसे अनुरोध करते है कि वह अपना विकट रूप त्याग दे। तब सीता अपना साधारण रूप धारण कर लेती हैं और राम के साथ पुष्पक पर चढ कर अयोध्या लौटती है।

---

१ जैमिनी भारत के आश्रमपर्व मे इसके विषय मे जो कथा मिलती है, वह सहस्रमुखरावण-चरित्र के नाम से प्रचलित है। दे० मद्रास कैटालाग न० डी० २०६८।

आनन्द रामायण (राज्यकाण्ड, सर्ग २४) के एक अन्य स्थल पर राम की **यम-पुरयात्रा** के विषय मे लिखा है कि सुमन्त्र अपनी आयु के ६ दिन रहते मर गया था। राम ने यमपुर के लिए प्रस्थान किया, मार्ग मे सुमन्त्र को ले जाने वाले यमदूतो से भेट हुई। राम ने उनको परास्त कर दिया तथा सुमन्त्र को मुक्त कर अयोध्या लौटे।

आनन्द रामायण के पूर्णकाण्ड (सर्ग १-४) मे सोमवशी राजाओ के आक्रमण का भी वर्णन किया गया है। राम अपनी सेना के साथ उनका सामना करने गए, हस्तिनापुर मे छः महीनो तक भीषण युद्ध जारी रहा। अन्त मे सीता के अनुरोध पर सधि कर ली गई।

६३७. वालकाण्ड तथा अयोध्याकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत राम की **तीर्थ-यात्राओं** का उल्लेख हो चुका है (दे० अनु० ३८५ और ४३५)। अभिषेक के पश्चात् भी राम की अनेक तीर्थयात्राओ का वर्णन मिलता है। **स्कन्द पुराण** के ब्राह्मणखण्ड (धर्मारण्य खण्ड, अध्याय ३३) के अनुसार राम ने धर्मारण्य की तीर्थयात्रा के अवसर पर वहाँ के निवासियो की रक्षा के लिए हनुमान् को नियुक्त किया था। **आनन्द रामायण** के यात्राकाण्ड मे राम द्वारा गगा-सरयू-सगम (सर्ग ३-५) के वाद क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर (सर्ग ६-६) के तीर्थो की यात्रा का वर्णन किया गया है। इस रचना के विलासकाण्ड (सर्ग ६) के अनुसार राम ने सूर्यग्रहण के उपलक्ष मे कुरुक्षेत्र की यात्रा की थी।

राम का विहार

६३८. वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ४२) मे रामाभिषेक के पश्चात् तथा सीतात्याग के पूर्व अयोध्या की अशोकवाटिका मे राम और सीता के विहार का वर्णन किया गया है। इसमे अप्सराओ के नृत्य के अतिरिक्त मदिरा तथा मांस के सेवन का भी उल्लेख मिलता है :

सीतामादाय हस्तेन मधु मैरेयकं शुचि ॥१८॥
पाययामास काकुत्स्थः शचीमिव पुरन्दरः।
मांसानि च सुमृष्टानि फलानि विविधानि च ॥१६॥

वाद मे राम-सीता के इस विहार की अवधि १०००० वर्ष तक वढा दी गई।[1] फिर भी १५वी शताब्दी तक इस विहार के विषय मे नवीन सामग्री का अभाव है।[2]

---

१. सभी पाठो मे तत्सम्बन्धी अर्द्धश्लोक प्रक्षिप्त माना गया है, दे० ७,४२,२६।

२. विवाह के पूर्व (अनु० ३८७), विवाह के अनन्तर (अनु० ३५३, ६) तथा चित्रकूट (अनु० ४४० और ५०७) मे राम के विहार का उल्लेख हो चुका है।

६४०. **आनन्द रामायण** के राज्य काण्ड (सर्ग ४, ८०-८५) के अनुसार **शतशीर्ष रावण** श्रोण नदी के तट पर मायापुरी मे निवास करता था। कुभकर्ण का पोता निकुभ-पुत्र पौड्रक उससे सहायता माँगने गया, दोनो ने मिलकर विभीषण को परास्त कर दिया और लका मे राज्य करने लगे। विभीषण सहायता के लिए राम के पास आया। राम सीता तथा विभीषण के साथ लका चले गये। राम युद्ध मे परास्त हुए किन्तु सीता ने शतशीर्ष रावण तथा पौड्रक दोनो का वध किया। अशोकवन में रावण से सवाद करते समय सीता ने इस घटना के विषय मे भविष्यवाणी की थी (दे० १, ६, ६३)। **तत्त्वसंग्रह रामायण** (७, १-२) मे निम्नलिखित कथा मिलती है। मुनि किसी दिन अयोध्या आकर राम से कहने लगे कि एक शतानन रावण रक्तबिन्दु नामक असुर के साथ सप्त समुद्र के उस पार निवास करता है। सीता ने उस रावण का वध करने की इच्छा प्रकट की, राम ने उस प्रस्ताव को स्वीकार किया और सीता तथा हनुमान् को एक विशाल सेना के साथ पुष्पक पर भेज दिया। सीता ने युद्ध मे १८ भुजाओ वाला विकट रूप धारण कर शतानन रावण का वध किया। शतस्कध रावण के वध की कथा अन्यत्र भी पाई जाती है, उदाहरणार्थ—सीताविजय (मद्रास कैटालॉग, न० आर० १४८ और ६६४), शतमुखरावणचरित (वही न० आर० ६४७), अमृतराव ग्रोक कृत मराठी शतमुखरावणवध, राममोहन वन्द्योपाध्याय कृत वगाली रामायण।

उडिया **विलका रामायण** के उत्तरखड का वर्ण्य-विषय है काली का रूप धारण करने वाली सीता द्वारा लक्षशीर्ष रावण का वध।

६४१ **आनन्द रामायण** (७, सर्ग ४-६) के अनुसार शतशीर्ष-रावण के वध के कुछ समय बाद विभीषण फिर राम की सहायता माँगने के लिए अयोध्या आया। अब की बार कुभकर्ण के **मूलकासुर** नामक पुत्र ने पाताल-निवासी राक्षसो की सहायता से छः महीने के घमासान युद्ध के बाद विभीषण को लका से निकाल दिया था। राम ने अपनी तथा सुग्रीव की सेना के साथ विमान पर चढकर लका के लिए प्रस्थान किया। लका मे सात दिन तक मूलकासुर के साथ युद्ध हुआ जिसमे हनुमान् ने पहले की भाँति द्रोणाचल ले आकर मृत वानरो को जिलाया। इसके बाद ब्रह्मा ने आकर राम से कहा कि एक तो मैंने मूलकासुर को यह वर दिया है कि वह किसी वीर के हाथ से नही मरेगा, दूसरे, किसी ऋषि ने उसको सीता के हाथ से मरने का शाप दिया। यह सुनकर राम ने गरुड को आदेश दिया कि वह सीता को ले आएँ। सीता ने लका पहुँचकर अपनी तामसी छाया को युद्ध के लिए प्रेरित किया। इतने मे वानर मूलकासुर का यज्ञ विध्वस करके लौटे। अब सीता की तामसी छाया ने चडी का रूप धारण

बगाली रामकथा साहित्य में सहस्रस्कध रावण के वध का वर्णन अद्भुत रामायण पर आधारित है (दे० अनु० २८६-२८७)।

उडिया रामसाहित्य मे प्रस्तुत प्रसग के दो अन्य रूप मिलते हैं। **बिलका रामायण** के पूर्व-खण्ड के अनुसार विलंका लका के दक्षिण मे एक सौ बीस योजन की दूरी पर स्थित थी। जब वहाँ के राजा सहस्रस्कध रावण ने राम, लक्ष्मण तथा हनुमान को परास्त किया था, तब सीता ने मगला देवी से पुष्प-धनुष तथा पाँच शर प्राप्त कर रणभूमि मे प्रवेश किया। उन्होंने मनोहर रूप धारण कर पुष्प-धनुप के पाँच शर रावण पर चलाये और राम ने कामातुर रावण के समस्त सिर काट दिये। **बिलंका-खण्ड** की कथा इस प्रकार है। दशस्कध रावण के वध तथा विभीषण के अभिषेक के बाद, पहले अगद को तथा बाद मे हनुमान को सहस्रस्कध रावण के पास सधि करने के उद्देश्य से विलका भेजा गया। सहस्रस्कन्ध रावण सधि का प्रस्ताव ठुकराकर युद्ध करने आया। उसने राम तथा लक्ष्मण को शक्ति-प्रहार द्वारा मूर्च्छित करके सीता का हरण करना चाहा किन्तु सीता के शरीर से एक गधर्व-सेना निकली जिसने रावण का वध किया।

अगारिया नामक आदिवासी जाति मे (दे० अनु० २७७) सहस्रस्कध रावण के विपय मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है। रावण-वध के वाद सीता ने राम से कहा कि पाताल मे एक सहस्रस्कध रावण निवास करता है। इस पर राम ने वाण मार कर उस रावण को आहत तो किया किन्तु उसने रामवाण को अपने पैर से निकालकर कहा—जिसने तुमको भेजा है उसी के पास जाकर उसे मार डालो। वाण के आघात से राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडे। तब सीता ने राजा लोगुन्दी के पास जाकर उससे कोयले का एक पात्र माँग लिया और यह निवेदन किया कि आग्रासुर तथा लोहासुर मेरे साथ भेज दिये जायँ। राजा की स्वीकृति प्राप्त होने पर सीता एक हाथ मे कोयले का पात्र तथा दूसरे मे तलवार लिये उन दोनो के साथ चल पडी। कोयले के धुएँ के कारण सीता का रग काला पड गया। उन्होंने रावण के पास पहुँचकर उसके सिर काट डाले और आग्रासुर-लोहासुर ने रावण का रक्त पी लिया।[1]

१ व्रजलोक साहित में प्रचलित एक कथा के अनुसार सीता ने पलका-निवासी सहस्रस्कध रावण का वध किया और इसके वाद कलकत्ते मे काली माई हो गयी। दे० भारतीय साहित्य वर्ष २, अक ३, पृ० ६४। मौलाना दाऊद कृत चन्दायन (३५१, ५) मे उल्लिखित मुहावरा (लका छाडि पलका जाऊँ) जायसी की पदमावत (२०६, ३) मे भी मिलता है और आजकल तक बोलियो मे प्रचलित है।—'पलका' पाताल लका से विकसित हुआ होगा। कुतुवन कृत मिरगावती (१०५, ३) मे पलका का भी उल्लेख है।

५४३. रावण-चरित भिन्न-भिन्न रामकथाओं में विभिन्न स्थलों पर रखा गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण के वध के कारण राम की प्रशंसा करने के लिए अगस्त्य रामाभिषेक के पश्चात् अयोध्या आते और उसी अवसर पर अगस्त्य ने राक्षस-वंश का इतिहास सुनाया था। तदनुसार अधिकांश रामकथाओं में रावण की कथा उत्तरकाण्ड के अन्तर्गत मिलती है। महाभारत में रावण-चरित का संक्षिप्त वर्णन रामोपाख्यान के आरम्भ में रखा गया है। जैन पउमचरियं राक्षस तथा वानरवंश के इतिहास से आरम्भ होता है तथा निम्नलिखित रामकथाओं में भी रावण-चरित का कुछ वर्णन भूमिका में ही किया गया है—तिब्बती तथा खोतानी रामायण, हिन्देशिया के सेरीराम तथा सेरत काण्ड, स्याम के रामकियेन तथा रामजातक।

काश्मीरी रामायण में प्रस्तुत सामग्री सुन्दरकाण्ड के अन्तर्गत रखी गई है। लंका में सीता की खोज करते हुए हनुमान् नारद से मिलते हैं और नारद हनुमान् को लंका की सृष्टि तथा राक्षसवंश की कथा सुनाते हैं।

कठिर, नाटक के एक वृत्तान्त के अनुसार अगस्त्य ने सीताहरण के पूर्व वनवासी राम से रावणचरित का वर्णन किया था (दे० परिशिष्ट वृत्तान्त नं० १)।

क। वंशावली

५४४. वाल्मीकि के प्रामाणिक भाग राक्षसवंश के इतिहास के विषय में मौन है। शूर्पणखा, रावण की बहन और कुंभकर्ण तथा विभीषण उसके दो भाइयों के अतिरिक्त एक तीसरे भाई खर का भी उल्लेख है, जिसका सेनापति दूषण था[1]। दाक्षिणात्य पाठ में रावण की माता का नाम कैकसी है; अन्य पाठों के अनुसार निकषा उसका नाम था (दे० दा० ३, ३३; प० पा० ३, ३३); भागवत पुराण (७,१,४३) में केशिनी तथा अद्भुत रामायण में नकषेशी का उल्लेख है।

युद्धकाण्ड में रावण को नैर्ऋत की उपाधि दी गई है (दे० ६, १०६, १६) किन्तु रामकथा के विकास के साथ-साथ रावण का भी महत्त्व बढ़ने लगा था जिससे उत्तरकाण्ड के रचना-काल के समय तक रावण को ब्रह्मा का वंशज माना गया है। उत्तरकाण्ड में राक्षसवंश की उत्पत्ति तथा रावण की वंशावली की कथा इस प्रकार है।

प्रजापति ने जल की सृष्टि करने के अनन्तर कुछ प्राणियों की सृष्टि की (सत्त्वान् असृजत्: ४, ९) तथा उनको जल की रक्षा करने का आदेश दिया। इनमें से कुछ ने उत्तर दिया—रक्षामः; दूसरों ने कहा—यक्षामः (४, १२)। अतः ब्रह्मा ने पहले वर्ग को राक्षस तथा दूसरे वर्ग को यक्ष का नाम दिया। राक्षसों के दो नेता थे—हेति और

1. दूषण-रावण का खर-दूषण के साथ जो संबंध था, इस पर अन्यत्र (अनु० ५३३) विचार हो चुका है।

कर लिया तथा साल दिन तक युद्ध करने के पश्चात् मूलकासुर का वध किया। आनन्द रामायण (१,६,६४) मे सीता-रावण-सवाद के अन्तर्गत भी इस घटना का उल्लेख मिलता है। **भावार्थ रामायण** (७, अध्याय ७०-७२) के अनुसार कैकेयी ने मूलकासुर की माता को परामर्श दिया कि वह अपने पुत्र को तपस्या तथा प्रतिकार के लिए प्रेरित करे। वर-प्राप्ति के वाद मूलकासुर ने विभीषण को लका से निकाल दिया तथा सीता ने पुरुष का रूप धारण कर उसको मार डाला। **रामलिगामृत** (सर्ग १५) मे भी सीता द्वारा कुभकर्ण के पुत्र **कुंभगर्भ** के वध का उल्लेख किया गया है।

३. रावण-चरित

६४२. उत्तरकाण्ड के प्रारम्भ मे जो विस्तृत रावण-चरित पाया जाता है उसे प्रक्षिप्त उत्तरकाण्ड का एक नया प्रक्षेप मानना चाहिए (दे० अनु० ६१८)। प्रस्तुत निवन्ध के सातवे अध्याय मे यह भी दिखलाया गया है कि रामचरित से अलग रावण के विषय मे प्राचीन स्वतन्त्र काव्य का कही भी निर्देश नही मिलता (दे० अनु० १०२)। वैदिक साहित्य मे रावण, कुवेर, विश्रवा, वैश्रवण आदि का सकेत नही किया गया है। पाली जातकट्ठवण्णना मे वेस्सवण (यक्खो के राजा) का वहुत से स्थलो पर उल्लेख किया गया है, रावण का कही भी नही। महाभारत मे रावण का उल्लेख केवल राम-कथा के प्रसग मे आया है, किन्तु धनेश, कुवेर, वैश्रवण आदि का उल्लेख स्वतन्त्र रूप से असख्य स्थलो पर किया गया है। इससे यह अनुमान दृढ हो जाता है कि वैश्रवण अथवा कुवेर रावण-कथा से पूर्व ही प्रसिद्ध हो चुके थे। वाद में ही रावण के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित किया गया है। मूल रामायण के अनुसार रावण प्रसिद्ध नही था। राम जव जटायु से यह सुनते हैं कि रावण ने सीता का अपहरण किया है, तो पूछते है कि उस राक्षस का पराक्रम और रूप कौन सा है? वह क्या करता है? कहाँ रहता है?—

कथंवीर्यः कथंरूपः किंकर्मा स च राक्षसः।
क्व चास्य भवनं तात ब्रूहि मे परिपृच्छतः॥७॥

(अरण्यकाण्ड, सर्ग ६८)

सस्कृत हस्तलिपियो की सूचियो मे रावण के नाम वहुत सी अर्वाचीन रचनाओ का उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थ—अर्कप्रकाश (वैद्य), कुमार-तन्त्र (वैद्य), इन्द्रजाल (उड्डीश), प्राकृतकामधेनु, प्राकृतलंकेश्वर, ऋग्वेद-भाष्य, रावणभेट (यजुर्वेद) आदि। वलरामदास रामायण मे माना गया है कि रावण ने वैदिक मन्त्रो का सम्पादन करके वेदो की एक नई शाखा चलाई।

वैश्रवण को (दे० अनु० ६४६) पुष्पक पर विराजमान देखकर अपनी पुत्री को विश्रवा[1] के पास भेज देने का निश्चय किया। अपने पिता के आदेशानुसार कैकसी विश्रवा के यहाँ चली गई। विश्रवा उस समय अग्निहोत्र कर रहे थे, उन्होंने कैकसी को पत्नी के रूप मे स्वीकार करके कहा कि तुम इस दारुण वेला मे (**दारुणायां तु वेलायम्** ६, २२) आई हो, इसलिए तुम्हारे पुत्र क्रूरकर्मा राक्षस होंगे। कैकसी के अनुनय करने पर विश्रवा ने उसे आश्वासन दिया कि उनका अन्तिम पुत्र धर्मात्मा होगा (दे० अनु० ५६६)। अतः कैकसी ने क्रमशः **दशग्रीव**, **कुम्भकर्ण**, **शूर्पणखा** तथा **विभीषण** को जन्म दिया। दशग्रीव तथा कुम्भकर्ण शीघ्र ही लोगो को सताने लगे (**लोकोद्वेगकरौ**) किन्तु धर्मात्मा विभीषण वेदो के अध्ययन मे अपना समय लगाकर नियताहार तथा जितेंद्रिय था (सर्ग ६)।

६४५. महाभारत के **रामोपाख्यान** (अध्याय २५६) मे पुलस्त्य वैश्रवण के पिता वन जाने के बाद स्वयं विश्रवा का रूप धारण कर लेता है तथा **विभिन्न पत्नियों** से रावणादि को उत्पन्न करता है—पुष्पोत्कटा से रावण तथा कुभकर्ण को, मालिनी से विभीषण को तथा राका से खर तथा शूर्पणखा को।[2] **कूर्म** पुराण (पूर्व विभाग, अ० १६) के अनुसार विश्रवा ने देववर्णिनी से वैश्रवण को, कैकसी से रावण, कुभकर्ण शूर्पणखा तथा विभीषण को, पुष्पोत्कटा से महोदर, प्रहस्त, महापार्श्व, खर तथा कुभीनसी[3] को, राका से त्रिशिरा, दूषण तथा विद्युज्जिह्व को उत्पन्न किया था।

---

१. ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य ने तृणविन्दु की पुत्री से विश्रवा को उत्पन्न किया था (दे० सर्ग २)।

२. तुलसीदास ने भी विभीषण को रावण की विमाता की सन्तान माना है—भयउ विमात्र वधु लघु तासू। नाम विभीषण (रामचरितमानस १, १७६, ४)।

३ वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षिप्त अश मे (युद्धकाड, सर्ग ६६-७०) महापार्श्व और महोदर दोनो रावण के भाई माने गए है। उत्तर-काड (सर्ग ५)के अनुसार महापार्श्व कैकसी का भाई तथा रावण का मामा था, अन्यत्र वह रावण का मत्री मात्र माना जाता है (सुन्दकाड सर्ग ४६, युद्धकाड, सर्ग १३ और ६८)। युद्धकाड के अनेक स्थलो पर **महोदर** की चर्चा है किन्तु रावण के साथ किसी रिश्ते का निर्देश नही मिलता (दे० सर्ग ६४, ६५ और ६७)। उत्तरकाड मे महोदर को पहले सुमाली का सचिव (सर्ग ११) तथा बाद में रावण का सचिव (सर्ग १४ और २३) कहा गया है। वाल्मीकि रामायण मे दो **कुंभीनसी** नामक राक्षसियो का उल्लेख है। पहली कुभीनसी सुमाली-केतुमती की पुत्री तथा कैकसी की बहन है (७, ५, ४०), दूसरी माल्यवान्

प्रहेति। हेति के पुत्र विद्युत्केश से सुकेश उत्पन्न हुआ (सर्ग ४)। सुकेश के तीन पुत्र उत्पन्न हुए—माल्यवान्, सुमाली और माली। तीनो ने तपस्या करके ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया तथा विश्वकर्मा ने उनके लिए त्रिकूट पर लका का निर्माण किया।[1] तब तीनो भाई देवताओ तथा तपस्वियो को सताने लगे, विष्णु ने माली का वध करके राक्षसो को परास्त कर दिया और वे सुमाली के नेतृत्व मे लका छोडकर रसातल चले गये (सर्ग ५-८)। कुछ समय बाद सुमाली किसी दिन अपनी पुत्री कैकसी के साथ पृथ्वी पर भ्रमण करने निकला। सुमाली ने विश्रवा के पुत्र

---

१ लका के वर्णन मे स्वर्णप्राकारसंवीता' तथा 'हेमतोरणसवृता' के विशेषणो का प्रयोग हुआ है (दे० ७, ५, २५)। इसके आधार पर स्वर्णलका विषयक कथाओ की उत्पत्ति हुई होगी। आनन्द रामायण (१, ६, २३३-२७६) की तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। विष्णु की कृपा से किसी दिन एक गज और एक ग्राह अपने-अपने शरीर छोडकर मुक्त हुए; विष्णु ने गरुड को उनके शरीर खाने की अनुमति दी। गरुड़ ने एक गृध्र का भी वध किया तथा गज-ग्राह-गृध्र के शव उठाकर क्षीरसागर के एक स्वर्ण वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। शाखा टूट गई और गरुड उसे उठाकर लका ले गया। वहाँ पहुँचकर उसने तीन का शव खा लिया, गज-ग्राह-गृध्र की हड्डियो से वहाँ तीन शिखर बन गए जिससे त्रिकूट नाम चल पडा। गरुड उन शिखरो पर स्वर्ण शाखा रखकर चले गए। यह शाखा पाषाण के समान बन गई, राक्षस उसे न पहचान सके थे किन्तु लकादहन के समय वह द्रवित होकर गिर गयी और इससे लका की भूमि स्वर्णमयी बन गई। वाल्मीकि रामायण (३, ३५, २७-३२), कथा-सरित्सागर (द्वितीय लबक की चतुर्थ तरंग १४१-१४४), कृत्तिवास रामायण (७, ८) तथा काश्मीरी रामायण (सुन्दर काण्ड न० २६) के तत्सबधी वृत्तान्त इससे अधिक भिन्न नही हैं। उन कथाओ मे गरुड प्राय. हाथी और कच्छप का भक्षण करता है। महाभारतीय कथा (आदि पर्व, २५-२६) मे लका की ओर निर्देश नही मिलता। रगनाथ रामायण (६, १८) मे माना गया है कि वायु ने किसी समय हेमाद्रि के शिखर को उडा दिया था और वह समुद्र मे गिरकर त्रिकूट के नाम से विख्यात हुआ, सारलादास के महाभारत (वनपर्व) मे हेमाद्रि के स्थान पर मेरु का उल्लेख है। भागवत पुराण (८, २) मे गज-मोक्ष की कथा के अतर्गत क्षीरसागर मे स्थित त्रिकूट नामक पर्वत का उल्लेख तो किया गया है किन्तु इसमे लका का निर्देश नही मिलता।

तथा दूसरी पत्नी सुकेशी से अम्बकर्ण (कुम्भकर्ण), सर्पणखा (शूर्पणखा) तथा विभीषण को। इस वृत्तान्त मे कुम्भकर्ण तथा शूर्पणखा यमल हैं। श्याम के **रामकियेन** मे (अध्याय ३) चतुरवक्त्र के पुत्र लस्तियेन (पुलस्त्य) की पाँच पत्नियो का उल्लेख किया गया है—(१) श्री सुनन्दा, कुवेर की माता, (२) चित्रमाली, देवनासुर की माता, (३) सुवर्णमाला, अशधाता की माता, (४) वरप्रभा, मारण की माता, (५) रजता जो दशकठ, कम्भकर्ण, विभेक (विभीषण), दूषण, खर और सम्मक्खा (शूर्पणखा) की माता है।

६४७. **रामजातक** मे दशरथ तथा वैश्रवण का एकीकरण किया गया है तथा रावण को दशरथ का भतीजा माना गया है (दे० अनु० ३३६)। **पालकपालाम** के अनुसार ब्रह्मा ही दशरथ की देवरानी के गर्भ मे प्रवेश करते हैं और हाथ मे धनुष तथा तलवार लिये जन्म लेकर रावण कहलाते है। **ब्रह्मचक्र** मे, रावण की जन्मकथा इस प्रकार है। लका के महाराज की पुत्री विवाह करना अस्वीकार करती है और किसी ऋषि के यहाँ वन मे साधना करने जाती है। किसी दिन ब्रह्मा उसके पास आकर कहते हैं कि तुम तीन पुत्रो की माँ वनने वाली हो तथा उसकी नाभि तीन वार हाथ से छूकर चले जाते है। वाद मे वह ब्रह्मचक्र (रावण), कुम्भकर्ण तथा विभीषण को जन्म देती है, तीनो ब्रह्मा की सन्तान माने जाते हैं। वाद मे ब्रह्मा मे वर पाकर रावण पृथ्वी पर का सबसे वडा योद्धा वनना चाहता है, कुम्भकर्ण नीद चुनता है और विभीषण प्रज्ञा तथा धार्मिकता माँग लेता है। ब्रह्मा ने रावण को आश्वासन दिया कि तुम वुद्ध तथा वानरो को छोडकर सबो पर विजय प्राप्त कर सकोगे।

६४८. वाल्मीकि रामायण अथवा महाभारत मे रावण-कुम्भकर्ण के पूर्वजन्म अथवा शाप के कारण उनकी राक्षस-योनि-प्राप्ति का कही भी उल्लेख नही मिलता। अर्वाचीन रामकथाओ मे इसके विषय मे सबसे व्यापक वृत्तान्त यह है कि विष्णु के द्वारपाल जय-विजय शापवश तीन वार क्रमशः हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष, रावण-कुम्भकर्ण तथा शिशुपाल-दन्तवक्त्र के रूप मे पृथ्वी पर प्रकट हुए। रावण-कुम्भकर्ण के अगले जन्म के विषय मे एक अर्वाचीन वृत्तान्त आगे (अनु० ७४१) देख ले।

(१) हिरण्यकशिपु विषयक प्राचीनतम कथाएँ जय-विजय के सम्बन्ध मे मौन हैं। **महाभारत के आदिपर्व** (६१, ५) मे दिति-पुत्र हिरण्यकशिपु का उल्लेख है, जो

पास तीन कमल भेजकर उनको यह सन्देश दिया कि इन फूलो को खाने से दो पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न होंगे। जन्म के वाद ही उनको लङ्का भेजना चाहिए नही तो उनके माता-पिता मर जाएँगे। चित्रवहा तथा उसकी पत्नी ने अपनी सन्तान को लङ्का नही पहुँचा दिया जिससे दोनो मर गये।

सौरपुराण (अ० ३०) की वशावली कूर्म पुराण के अनुसार है, अन्तर यह है कि इसमे पुष्पोत्कटा के पुत्र खर का उल्लेख नही मिलता। क्षेमेन्द्र कृत **दशावतारचरित** मे रावणादि को विश्रवा तथा पुष्पोत्कटा की सन्तान माना गया है। **आनन्द रामायण** (१, १३, २४) मे विश्रवा तथा कैकसी के तीन पुत्रो और तीन पुत्रियो का उल्लेख है—रावण, कुभकर्ण, क्रौंची, शूर्पणखा, कुभनसी तथा विभीषण। **काश्मीरी रामायण** (सुन्दर काण्ड, न० ३०) मे रावण, खर, शूर्पणखा, कुभकर्ण, विभीषण तथा वैश्रवण ये सब सहोदर भाई-बहन माने जाते है। **अद्भुत रामायण** (दे० अनु० ६३६) के अनुसार सहस्रस्कंध रावण भी विश्रवा तथा कैकसी का पुत्र था।

इतनी विभिन्नता से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही कोई एक प्रामाणिक राक्षस वशावली प्रचलित नही है।

६४६. जैन तथा विदेशी रामकथाओ मे रावण की वशावली और अधिक भिन्न है। **पउमचरियं** के अनुसार सुकेश के तीन पुत्र हैं—माली, सुमाली और माल्यवान्। सुमाली का पुत्र रत्नस्रवा अपनी पत्नी केकसी से क्रमश. दशमुख, भानुकर्ण, चन्द्रणखा तथा विभीषण को उत्पन्न करता है (पर्व ७)। वैश्रवण को यक्षपुर के राजा विश्वसेन तथा केकसी की बहन कौशिकी का पुत्र माना जाता है।

गुणभद्र के **उत्तरपुराण** मे रावण के पूर्वजो की नामावली इस प्रकार है—सहस्रग्रीव, शतग्रीव, पचासद्ग्रीव, पुलस्त्य और रावण। सघदास की **वसुदेवहिण्डि** मे क्रम इस प्रकार है—बलि, सहस्रग्रीव, पञ्चशतग्रीव, शतग्रीव, पञ्चासद्ग्रीव, विंशतिग्रीव। विंशतिग्रीव की चार पत्नियाँ हैं—देववर्णिनी, वक्रा, कैकेयी तथा पुष्पकूट। कैकेयी (यह कैकसी ही होगी) से रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, त्रिजटा तथा शूर्पणखा जन्म लेते हैं।

सेरीराम के अनुसार ब्रह्मराज नामक इन्द्रपुर का राजा ब्रह्मा का वशज था, उसके एक पुत्र का नाम चित्रवहा (विश्रवा) था। चित्रवहा ने दतिआ कूअच नामक राक्षस को परास्त कर उसकी पुत्री रक्षपन्दी से विवाह किया, रक्षपन्दी से दशस्कन्ध रावण का जन्म हुआ। रावण दुराचार के कारण निर्वासित होकर लका पहुँच गया, इसके बाद ही कुम्भकर्ण, विनुसनम (विभीषण) और सूर पन्दाकि (शूर्पणखा) उत्पन्न हुए।[1] सेरत काण्ड मे चित्रवहा एक पत्नी इन्द्रतनी से रावण को उत्पन्न करता है

की नतिनी तथा विश्ववसी-अनला की पुत्री है (७, २५, २३)। मधु ने अनला की पुत्री कुभीनसी का हरण करके उससे लवण को उत्पन्न किया (७, ६१, १७)।

१. राफल्स की हस्तलिपि के अनुसार उनकी जन्मकथा इस प्रकार है। लका मे पहुँचने के बाद रावण ने अपने साथियो के हाथ से अपने माता-पिता के

रावण-कुंभकर्ण तथा शिशुपाल-दंतवक्त्र के रूप मे जन्म लेने का उल्लेख किया गया है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (कृष्णजन्मखण्ड ५६, ४६-४६), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड २६६, ४), तत्वसग्रह रामायण (१, १०-११) मे भी इस कथा का निर्देश मिलता है। सारलादास के उडिया चडीपुराण के अनुसार मनु ने जय-विजय को यह शाप दिया था।

(३) भागवत पुराण के उपर्युक्त वृत्तान्त मे **लक्ष्मी** के शाप का उल्लेख है। **बलरामदास** (युद्धकाण्ड) की तत्सबधी कथा इस प्रकार है। किसी अवसर पर चण्ड और प्रचण्ड नामक नारायण के द्वारपालो ने लक्ष्मी को नारायण की सभा मे प्रवेश करने से रोका जिसपर लक्ष्मी ने क्रुद्ध होकर दोनो को राक्षस बन जाने का शाप दिया। नारायण ने उनको सान्त्वना देते हुए कहा कि तुम दोनो राक्षस बनकर पृथ्वी को जीत लोगे जिससे जय-विजय के नाम से तुम प्रसिद्ध हो जाओगे। लक्ष्मी ने शाप देकर तुम्हारे साथ जो अन्याय किया है इसके कारण वह सीता के रूप मे जन्म लेगी।

अनेक रचनाओ के अनुसार **वृन्दा** (दे० अनु० ३७२) ने जय-विजय को राक्षस बन जाने का शाप दिया था। **आनन्द रामायण** (७, १४, १-२७) मे यह शाप **अश्विनीकुमारों** द्वारा दिया जाता है। इस रचना के अनुसार विष्णु ने जय-विजय से कहा था कि यदि तुम लोग मेरी भक्ति का विरोध करोगे तो शीघ्र ही तुम्हारी मुक्ति हो पाएगी। यदि भक्ति-भाव अपनाओगे तो सात बार जन्म लेना पडेगा। **रामलिंगामृत** (सर्ग १) में जय-विजय के प्रति भृगु के शाप का उल्लेख है जिसके फलस्वरूप वे रावण-कुभकर्ण बन गए। **बलरामदास** (युद्धकाण्ड) **दुर्वासा** के शाप की कथा का वर्णन करते हैं। दुर्वासा नारायण से उस समय भेंट करने आए थे जब वह एकान्त मे लक्ष्मी के साथ थे। द्वारपालो ने उनको भीतर जाने से रोका तथा अन्त मे हठ करने वाले दुर्वासा को गले से पकडकर निकाल दिया। दुर्वासा ने उनको १०० बार तक जन्म लेने का शाप दिया, बाद मे नारायण ने इस शाप को तीन बार तक सीमित कर दिया।

(४) जय-विजय के अतिरिक्त रावण-कुभकर्ण अनेक अन्य प्राणियो के अवतार माने गए हैं। **शिवमहापुराण** के अनुसार **दो शिवगण** नारद के शाप से रावण-कुभकर्ण बन गए (दे० अनु० ३७३)। **वह्निपुराण** (पृ० १७१) मे यह माना गया है कि **मधु-कैटभ**[1] शापवश पहले हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष तथा बाद मे रावण-कुभकर्ण के रूप मे प्रकट हुए। रामचरितमानस मे रावण के पूर्वजन्म के विषय मे दो अन्य

---

१. महाभारत (३, १६४, ३०) तथा हरिवश (१, ४१, २५, ३, १३, २८) मे विष्णु द्वारा मधु-कैटभ के वध की कथा मिलती है किन्तु उन रचनाओ मे इनका रावण-कुभकर्ण के साथ कोई सबध निर्दिष्ट नही है।

शिशुपाल के रूप मे जन्म लेता है। वह नृसिंह द्वारा नही मारा जाता है, इसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु-भक्त नही होता तथा इसके भाई हिरण्याक्ष का निर्देश मात्र भी नही मिलता। शांतिपर्व (३२६, ७३) मे नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु का वध तथा वाराह द्वारा हिरण्याक्ष का वध उल्लिखित है किन्तु दोनो मे किसी सम्वन्ध का उल्लेख नही है। हरिवंश के प्रथम पर्व (अध्याय ४१) मे दैत्यराज हिरण्यकशिपु की कथा इस प्रकार है। वह ११५०० वर्ष तक तपस्या करके ब्रह्मा से देव-असुर-गन्धर्वादि द्वारा अवध्यता का वर प्राप्त कर लेने के पश्चात् अत्याचार करने लगा जिससे विष्णु ने नृसिंह का रूप धारण कर उसका वध किया। द्वितीय पर्व के अनेक स्थलो पर (अर्थात् अध्याय २२, ४८ और ७१ मे) नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु के वध तथा वाराह द्वारा हिरण्याक्ष के वध का उल्लेख है। अन्तिम पर्व (अ० ३६, ३२) मे हिरण्यकशिपु तथा हिरण्याक्ष दोनो दिति के पुत्र माने गये है। हिरण्यकशिपु की वरप्राप्ति तथा अत्याचार की कथा दुहराई गई है तथा प्रह्लाद के विषय मे कहा गया है कि उसने नृसिंह का दिव्य रूप देखकर अपने पिता को सावधान किया था (अध्याय ४३)। हरिवंश मे कही भी हिरण्यकशिपु तथा रावण के किसी सबध का उल्लेख नही होता। विष्णु पुराण (१, अध्याय १७-२०) मे पहले-पहल हिरण्यकशिपु तथा उसके विष्णुभक्त पुत्र प्रह्लाद के सघर्ष की कथा मिलती है। इसके अतिरिक्त यह भी माना जाता है कि हिरण्यकशिपु ने पहले रावण के रूप मे तथा इसके वाद शिशुपाल के रूप मे जन्म लिया था।[1]

(२) भागवत पुराण प्राचीनतम रचना है जिसमे विष्णु के द्वारपालो तथा हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष का सवध उल्लिखित है। कथा इस प्रकार है (दे० ३, अध्याय १५-१६)। ब्रह्मा के चार पुत्र सनकादि किसी दिन वैकुठ मे विष्णु से मिलने आए किन्तु जय-विजय द्वारपालो ने उनको प्रवेश करने से रोका। इसपर सनकादि ने जय-विजय को असुर-योनि प्राप्त करने का शाप दिया। विष्णु ने इस शाप को स्वीकार करते हुए जय-विजय से कहा कि एक वार जव मै योगनिद्रा मे मग्न था तुम दोनो ने लक्ष्मी को अन्दर जाने से रोक दिया जिससे उन्होने तुमको शाप दिया था। अव दैत्य-योनि मे जन्म लेकर क्रोध-भाव से मेरा ध्यान करो। इससे तुम विप्र-तिरस्कारजनित पाप से मुक्त होकर फिर मेरे पास लौटोगे। फलस्वरूप जय-विजय दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष बन गए। भागवत पुराण के एक अन्य स्थल पर (दे० ७, १, ३५-४६) सनकादि के शाप के कारण जय-विजय के तीन वार अर्थात् हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष,

१. दे० ४, अध्याय १५। सेरीराम के राफल्स हस्तलिपि के अनुसार रावण अपने पूर्वजन्म मे सीरचक कहलाता था। सीरचक हिरण्यकशिपु का विकृत रूप है।

मे अपना एक सिर अग्नि मे समर्पित करता था, वह अपना दसवाँ सिर भी काटने वाला ही था कि ब्रह्मा सन्तुष्ट होकर वर देने के उद्देश्य से प्रकट हुए। रावण ने पहले अपने लिए अमरत्व माँगा किंतु ब्रह्मा के अस्वीकार करने पर उसने यह वर माँग लिया कि मैं सुपर्ण-नाग-यक्ष-दैत्य-दानव-राक्षस तथा देवताओ द्वारा अवध्य[1] हो जाऊँ। इसके अतिरिक्त ब्रह्मा ने उसके नव शीर्ष लौटाये तथा उसे कामरूपी होने का वर प्रदान किया। विभीषण ने धार्मिकता का वर माँग लिया और ब्रह्मा ने उसे अमरत्व भी दे दिया। कुंभकर्ण ने सरस्वती की प्रेरणा से निद्रा ही माँग ली—**स्वप्तुं वर्षाण्यनेकानि देव देव ममेप्सितम्** (१०,४५)। वर प्राप्त करने के पश्चात् दशग्रीव ने सुमाली के अनुरोध पर प्रहस्त को वैश्रवण के पास भेजकर राक्षसवंश के लिए लंका की माँग की। अपने पिता का परामर्श स्वीकार कर वैश्रवण कैलास[2] पर निवास करने चले गये और दशग्रीव ने राक्षसो के साथ लंका को अपने अधिकार मे ले लिया (सर्ग ११)। इसके बाद कुंभकर्ण रावण से एक भवन बनवा कर उसमे सहस्रो वर्षों तक बिना जागे सोता रहा—**बहून्यब्द सहस्राणि शयानो न च बुद्धयते** (१३, ७)। कुंभकर्ण की नींद के विषय मे वाल्मीकीय युद्धकाण्ड (सर्ग ६१) मे माना गया है कि ब्रह्मा ने कुंभकर्ण के अत्याचार के कारण उसे यह शाप दिया कि वह छ: महीनो तक सोकर एक ही दिन जग सकेगा और उस दिन भूखा होकर पृथ्वी पर विचरते हुए बहुत से लोगो को खा जायेगा। महाभारत (३, २५९, २८) के अनुसार कुंभकर्ण की नींद वरदान का परिणाम तो है किन्तु कुम्भकर्ण ने सरस्वती की प्रेरणा से नहीं वरन् अपनी ही तामसी बुद्धि[3] के कारण वह वर माँग लिया—**स वव्रे महतीं निद्रां तमसा ग्रस्तचेतनः**। आनंद रामायण (१, १३, ५५) में वाल्मीकीय युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड की कथाओ का समन्वय किया गया है—सरस्वती से मोहित होकर कुंभकर्ण ने छः महीनो तक सोकर भोजन के लिए एक दिन जागने का वर माँग लिया। कृत्तिवास रामायण (७,११) के अनुसार ब्रह्मा ने रावण से यह कहकर वरदान दिया था कि वानर और नर को छोडकर कोई भी तुम्हारा वध नही कर पायेगा; सिर कट जाने पर भी तुम नही मरोगे और तुम्हारे कटे हुए सिर फिर जुड जाएँगे। कुम्भकर्ण ने सरस्वती की प्रेरणा

१. युद्धकाण्ड (१६, ६) तथा बालकाण्ड (१५, १३) मे भी ब्रह्मा के इस वरदान का उल्लेख है।

२. शिव तथा वैश्रवण के सख्य का वर्णन उत्तर काण्ड के १३ वे सर्ग मे मिलता है।

३. सेरीराम मे यह माना गया है कि कुम्भकर्ण स्वभाव से ही निद्राव्यसनी और पेटू था।

वृत्तान्त भी मिलते हैं, एक के अनुसार **जलंधर** ने रावण के रूप मे जन्म लिया (दे० अनु० ३७२) तथा दूसरे वृत्तान्त के अनुसार रावण-कुंभकर्ण-विभीषण क्रमशः **प्रताप-भानु-अरिमर्दन-धर्मरुचि के** अवतार हैं (दे० अनु० ६२५)। **रामकियेन** (अध्याय ४) के अनुसार **नन्दक** ने रावण के रूप मे जन्म लिया था। नदक कैलास-पर्वत-निवासी ईश्वर के गणो मे से एक था, उसने ईश्वर से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिसकी ओर मैं इशारा करूँ वह मर जाय। इस वर से अनुचित लाभ उठाकर नन्दक ने बहुत से देवताओ का वध किया। अन्त मे नारायण अप्सरा का रूप धारण कर नन्दक को नृत्य सिखलाने लगे, जिसमे नन्दक उँगली से अपने शरीर की ओर इशारा करके मर गया और दशग्रीव के रूप मे प्रकट हुआ। **रामजातक** (पृ० ६) की कथा इससे अधिक भिन्न नही है।

(५) **पउमचरियं** की वेदवती विषयक कथा के अनुसार रावण अपने पूर्वजन्म मे एक **श्रीकान्त** नामक सेठ था जो अनेक जन्मो मे लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है (दे० अनु० ४१०)। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८,७२८) के अनुसार रावण पूर्वजन्म में सारसमुच्च देश मे **नरदेव** नामक राजा था। बौद्ध साहित्य मे उसे देवदत्त से अभिन्न माना गया है (दे० अनु० ३२७)।

(६) दीन कृष्णदास के उडिया **रसविनोद** के अनुसार निराकर ब्रह्म ने सनातन ब्रह्मा को एक लाख बार रावण के रूप मे जन्म लेने का अभिशाप दिया था। जावा के सेरत काण्डो मे माना गया है कि रावण वास्तव मे **वातुगुनुंग** का अवतार है। दशमुख, कस आदि के रूप मे वातुगुनु ग विष्णु के अवतार का प्रतिद्वन्द्वी बन जाता है। वातुगुनु ग की कथा सभवतः हिरण्यकशिपु के वृत्तान्त पर आधारित है क्योंकि हिरण्यकशिपु भी तीन भिन्न जन्मो मे विष्णु के अवतार द्वारा मारा जाता है।

ख। तपश्चर्या और वरप्राप्ति

६४६. वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्रवा ने कैकसी को अपनाने के पूर्व भरद्वाज की पुत्री देववर्णिनी से वैश्रवण को उत्पन्न किया था। वैश्रवण ने तपस्या करके ब्रह्मा से चतुर्थ लोकपाल (धनेश) का पद तथा पुष्पक भी प्राप्त किया था। विश्रवा ने उसे लका मे निवास करने का परामर्श दिया क्योंकि राक्षस विष्णु के डर से लका छोडकर रसातल चले गये थे (सर्ग ३)। वैश्रवण किसी दिन पुष्पक पर चढकर अपने पिता विश्रवा से मिलने आये, कैकसी ने दशग्रीव का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करके कहा कि तुम भी अपने भाई के समान बन जाओ। अत. दशग्रीव अपनी माता की प्रेरणा से अपने भाइयो के साथ गोकर्ण मे तपस्या करने लगा (सर्ग ६)। तीनो भाई १०००० वर्ष तक घोर तप करते रहे। दशग्रीव प्रति सहस्र वर्ष के अन्त

था जिसके फलस्वरूप वह जीवित रहते हुए अपना जीव अपने शरीर से अलग करने मे समर्थ हुआ। अतः रावण अपना जीव गुरु की रक्षा मे छोड़कर अत्याचार करने लगा।

ग। विवाह और संतति

६५० (१) वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) मे रावण-मन्दोदरी के विवाह का वृत्तान्त इस प्रकार है। रावण ने किसी दिन मृगया के समय दिति के पुत्र मय को देखा जो अपनी पुत्री मन्दोदरी के साथ वन मे टहल रहा था। रावण द्वारा परिचय पूछे जाने पर मय ने अपनी कथा सुनाई (दे० अनु० ५२६) तथा रावण का परिचय प्राप्त करने के पश्चात् उसके सामने मन्दोदरी के साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। रावण ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया, मय ने उस अवसर पर रावण को अमोघ शक्ति भी दे दी जिससे वह बाद मे लक्ष्मण को आहत करने वाला था।

(२) आनन्द रामायण (१, ६, ३३-५७) मे रावण-मन्दोदरी के विवाह के विषय मे एक सर्वथा भिन्न कथा मिलती है। इसके अनुसार रावण ने अपने गायन द्वारा शिव को प्रसन्न करके उनसे दो वर माँग लिए अर्थात् अपनी माता कैकसी के लिए आत्मलिंग तथा अपने लिए पार्वती को। शिव ने रावण को सावधान किया कि इस लिंग को मार्ग मे कहीं भी पृथ्वी पर रख देने से वह वहीं अटल हो जायगा। इसके बाद रावण लिंग तथा पार्वती को लेकर चला गया। पार्वती ने अपनी विपत्ति मे विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने अपने अंग के चन्दन से सुन्दरी मन्दोदरी की सृष्टि करके उसे मय के घर मे रख दिया, तब वह ब्राह्मण का रूप धारण कर मार्ग मे रावण से मिले तथा उन्होंने रावण से कहा कि शिव ने धोखा देकर वास्तविक पार्वती को पाताल मे मय के यहाँ छिपाया है। यह सुनकर रावण ने शिव के पास जाकर वास्तविक पार्वती को लौटाया और पाताल जाने को उद्यत हुआ। रास्ते मे लघुशंका करने की इच्छा से उसने आत्मलिंग उस ब्राह्मण (विष्णु) के हाथ मे दे दिया। देर हो जाने पर विष्णु आत्मलिंग गोकर्ण में भूमि पर रख कर अंतर्द्धान हो गये। रावण आकर आत्मलिंग उठाने मे असमर्थ हुआ, तब उसने मय के घर जाकर विष्णु द्वारा निर्मित मन्दोदरी को प्राप्त किया।[1] भावार्थ रामायण (५, ६) का वृत्तान्त उपर्युक्त कथा पर आधारित है। आनन्द रामायण के एक अन्य स्थल (१, १३, २६-४४) के अनुसार

१ काश्मीरी रामायण (युद्धकाण्ड, न० ४७) मे भी रावण के शिवलिंग खो बैठने की कथा मिलती है। गोकर्ण के स्थान पर अन्य तीर्थों का भी उल्लेख मिलता है। बिहार मे प्रस्तुत कथा का घटनास्थल वैद्यनाथ मंदिर (देवघर) माना जाता है।

से निरन्तर सोते रहने का वर माँग लिया किन्तु रावण ने ब्रह्मा के पास जाकर आपत्ति की थी। तब ब्रह्मा ने कुम्भकर्ण को छः महीनो की निद्रा तथा एक दिन का जागरण प्रदान कर कहा कि उस दिन कुंभकर्ण का बल और भक्षण दोनो अद्भुत होंगे किन्तु यदि उसे कच्ची नीद से जगाया जायेगा तो वह निश्चय ही मर जायगा।

प्राचीनकाल से ही रावण को शिवभक्त माना गया है (दे० अनु० ६५३), इस कारण से अनेक रचनाओ मे वरप्राप्ति के वृत्तान्त मे शिव ही ब्रह्मा का स्थान लेते हैं। **रघुवंश** (सर्ग १०) तथा **दशावतारचरित** के अनुसार रावण ने शिव को अपने नौ सिर समर्पित किये थे किन्तु ब्रह्मा ने वर प्रदान किया था। **स्कंदपुराण** के महेश्वरखण्ड (अ० ८), **पद्मपुराण** के उत्तरखण्ड (अ० २६६), पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ आदि मे शिव ही रावण और उसके भाइयो का वरदान देते है। पद्मपुराण मे केवल रावण-कुम्भकर्ण की तपस्या की चर्चा है (दे० उत्तरखण्ड २६६, २०-२४)।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० ४ के अनुसार भी रावण ने महादेव से राज्य वैभव प्राप्त कर लिया था। रावण नित्य प्रति महादेव की पूजा करते हुए उन्हे १०० फूल अर्पित किया करता था। किसी दिन ईश्वर ने एक फूल चुराकर रावण से पूछा—मुझे आज क्यो केवल ९९ फूल मिल रहे हैं? रावण अपनी आँख निकाल कर उसे महादेव को अर्पित करने ही वाला था कि महादेव ने रोककर वरदान दिया। इस प्रकार रावण को समस्त पृथ्वी पर अधिकार प्राप्त हुआ। इसके बाद ही रावण लका मे राज्य करने लगा।[1]

पउमचरियं (पर्व ७) के अनुसार रावणादि अपने मौसेरे भाई का विभव देखकर विद्याएँ सिद्ध करने के लिए साधना करने लगे थे। रावण ने पचपन, भानुकर्ण ने पाँच और विभीषण ने चार विद्याओ को सिद्ध कर लिया। तीनो ने आकाशगामिनी प्राप्त कर ली थी। इस वृत्तान्त मे किसी वरदान का उल्लेख नही है।

सेरीराम मे रावण की ही तपस्या का वर्णन किया गया है। अपने निर्वासन के बाद सिहलद्वीप मे पहुँचकर रावण ने बारह वर्ष तक तपस्या की थी। अन्त मे अल्लाह ने नबी आदम का निवेदन स्वीकार कर रावण को चार लोको मे अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल तथा महासागर मे राज्य स्थापित करने का अधिकार दिया बशर्ते कि रावण निष्पाप होकर न्यायपूर्वक शासन करे। **रामकियेन** (अ० ९) मे रावण की अवध्यता की कथा इस प्रकार है। रावण ने अपने गुरु के परामर्श से एक ऐसा यज्ञ सम्पन्न किया

१. राम की देवी पूजा के वृत्तान्त मे भी आँख समर्पित करने का उल्लेख है (दे० आगे अनु० ७८५)। इस प्रसग का मूल रूप महिम्नःस्तोत्र (छन्द १९) में सुरक्षित है।

वालि का रूप धारण कर कन्या को ले गया और वालि बाद मे पहुँचकर और रावण का छल-कपट सुन कर उसकी खोज मे निकला। भेट होने पर वालि ने कन्या को छीनना चाहा और खीचतान मे कन्या दो टुकडे हो गयी जिससे अगद (अगच्छेद से उत्पन्न) का जन्म हुआ। इतने में देवता पहुँचे। यम ने कन्या को फिर एक कर दिया और पवन ने उसमे प्रवेश कर उसे पुनर्जीवित किया। उसका नाम मदोदरी (मद अर्थात् बुराई से प्राप्त) रखा गया और वह रावण की पत्नी हो गयी। इन कथाओ से स्पष्ट है कि दक्षिण-पूर्व एशिया मे प्रचलित मदोदरी की उत्पत्ति विषयक कथाओ का आधार भारतीय ही है।

सेरीराम के **पातानी पाठ** के अनुसार महासिकु की दत्तक पुत्री मदुदकी मड्डक से उत्पन्न हुई थी। श्री अचप अपनी चाची मुतुगिरि पर आसक्त था, महासिकु ने श्री अचप को धोका देकर मुतुगिरि के स्थान पर मदुदकी को दे दिया तथा श्री अचप को सुलतान महाराज वन की उपाधि भी प्रदान की।

रामकियेन (अध्याय ५) मे मदोदरी की कथा का एक अन्य रूप मिलता है। किसी मड्डक ने चार ऋषियो का जीवन बचाया था और पुरस्कार-स्वरुप ऋषियो ने उसे मंडो नामक एक अत्यन्त सुन्दर युवती मे बदलकर उसे ईश्वर को समर्पित किया। ईश्वर ने उसे उमा को दिया। बाद मे ईश्वर के दिए हुए वर के बल पर रावण ने उमा को प्राप्त किया (दे० अनु० ६५३)। तब नारायण ने माली का रूप धारणकर रावण के सामने एक वृक्ष उलटे ढग से रोपने का प्रयत्न किया। रावण उसकी मूर्खता की टिप्पणी करने लगा, जिस पर नारायण ने कहा कि जिसने मडो को छोडकर उमा को चुन लिया वह मुझसे अधिक मूर्ख है। यह सुनकर रावण ईश्वर के पास गया और उसने उमा को लौटाकर मण्डो को ले लिया।

हिन्देशिया की रामकथाओ मे रावण दशरथ के पास जाकर वास्तविक मन्दोदरी के स्थान पर जादू द्वारा निर्मित एक अन्य मन्दोदरी को ले जाता है (दे० ऊपर अनु० ४२८)। यह कथा उपर्युक्त वृत्तान्त का विकृत रूप मात्र प्रतीत होती है।

(३) मन्दोदरी के अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे रावण की केवल एक और पत्नी अर्थात् **धान्यमालिनी** का नाम दिया गया है, सुन्दरकाण्ड (सर्ग २२) और युद्धकाण्ड (सर्ग ७१) मे धान्यमालिनी (अतिकाय की माता) का उल्लेख है। रगनाथ ने उसका सबध कालनेमि वृत्तान्त की ग्राही से स्थापित किया है (दे० अनु० ५८७)। वाल्मीकि रामायण के अनेक स्थलो पर रावण की बहुसख्यक पत्नियो की चर्चा की गई है जिनमे देव-गधर्व-नागादि कन्याये भी सम्मिलित थी (दे० सुन्दरकाण्ड, सर्ग १०-११, १८ और २२, युद्धकाण्ड, सर्ग ११०, उत्तरकाण्ड, सर्ग २२)। कृत्तिवास (६, ५६) के अनुसार देवकन्याओ की सख्या १४,००० थी।

रावण ने अपने शरीर से वीणा बनाकर शिव के आदर मे गायन किया था। शिव ने आत्मलिंग तथा पार्वती के अतिरिक्त रावण को उस अवसर पर दस सिर भी प्रदान किए थे।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त मे प्रस्तुत कथा का एक अन्य रूप मिलता है। विष्णु के स्थान पर नारद रावण के पास जाकर कहते हैं कि वास्तविक पार्वती एक तालाब मे छिपी हुई है। इस पर रावण मन्दोदरी को तालाब से निकाल कर उसे लका ले जाता है। उस वृत्तात के अनुसार मन्दोदरी वास्तव मे एक मण्डूक है, जिसने नारी का रूप धारण किया था।[1]

रगनाथ रामायण के उत्तरकाण्ड मे मन्दोदरी की उत्पत्ति विषयक निम्नलिखित कथा मिलती है। पार्वती ने किसी दिन स्नान करने के बाद अपने शरीर के चन्दन से एक पुतली बनायी और शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर पुतली मे प्राण डाले। वह उसका सौन्दर्य देखकर आसक्त हो गये, किन्तु पार्वती के आग्रह पर उन्होंने उसे मडूक मे बदल दिया और कहा कि जब मय सन्तति के लिए तपस्या करेगा, तो मैं उसे फिर कन्या का रूप देकर मय को प्रदान करूँगा। बाद मे मय ने उसका विवाह रावण के साथ कराया।[2] दीनकृष्णदास (१८ वी श०) के उडिया **धर्मपुराण** (अध्याय ५) मे कथा इस प्रकार है। मदर और उदर नामक मुनि ब्रह्मा के पुत्र थे, जो किसी आश्रम मे रहते थे। वे अपनी गाय दूहते समय पृथ्वी को कुछ नही देते थे। धरणी ने क्रुद्ध हो कर अपने पुत्र मणिनाग को भेजा और उसने, जब मुनि स्नान करने गये, उनके दूध मे विष डाला। काठवेग जाति की एक मडूकी उसी आश्रम मे रहती थी और वह मुनियो की जान बचाने के लिए दूध मे कूद कर मर गयी। मुनियो ने लौट कर तथा दूध मे मडूकी पडी देखकर उसे कन्या बनने का शाप (!) दिया और उसका नाम वेगवती रखा। बाद मे उन्होंने वालि से उसके विवाह का प्रबध किया और वालि ने विवाह से पहले ही मुनियो की अनुपस्थिति मे आश्रम मे आकर उसके साथ रमण किया। जिससे वह गर्भवती हो गयी। रावण ने भी कन्या को माँगा किन्तु मुनियो ने उसे समझाया कि वालि के साथ उसका विवाह निश्चित हो गया है। विवाह के दिन रावण

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, अध्याय ४। पार्वती के स्थान पर मन्दोदरी को प्राप्त करने की उपर्युक्त कथा अन्यत्र भी पायी जाती है। दे० पाश्चात्य वृत्तान्त १६, पृ० २६१ तथा पी० थोमस, एपिक्स एन्ड लेजेण्ड्स ऑव इण्डिया पृ० ५२।

२ दे० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति : हिन्दी और तेलुगु मध्यकालीन राम-साहित्यो का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० २१७।

सेरीराम मे इन्द्रजित् के अतिरिक्त वीलावीस (दे० अनु० ६१३) **पातालमहारायन** (परतीवि देवी के पुत्र) तथा गगामहासूरा (गगा महादेवी के पुत्र) को भी रावण की सन्तान माना गया है। पाताल महानारायण भारतीय साहित्य का महिरावण है (दे० अनु० ६१४), गगामहासूरा अपने पिता के आदेशानुसार सेतु को नष्ट करने का प्रयत्न करता है (दे० अनु० ५७८)। सेरीराम के शेलावेर पाठ मे तूरीकाय (अतिकाय), तूरीसिरह (त्रिशिरा), नारनन्ताक (नरातक) तथा देवानताक (देवातक) की भी चर्चा की गई है। राम, कियेन मे रावण की पातालवासिनी पत्नी के पुत्र का नाम **प्रलयकल्प** है (दे० अनु० ६०५)। इसके अतिरिक्त मन्दोदरी ने रावण-वध के बाद रावण के एक और पुत्र को जन्म दिया, इसका नाम **बैनासूरिवंश** रखा गया और इसने विभीषण के विरुद्ध विद्रोह किया (दे० अनु० ६३५, पाद-टिप्पणी)।

रामकियेन मे रावण की नाग-कन्या **सुवर्णमच्छा** (दे० अनु० ५७८) के अतिरिक्त उसके दो और पुत्रो की कथा मिलती है, इसके अनुसार रावण ने हाथी का रूप धारण कर एक हथिनी से किरिधर तथा किरिवन नामक दो पुत्रो को उत्पन्न किया था, जिनका मुख हाथी के समान था। प्राचीन रामकथाओ मे रावण की सतति के विषय मे किसी निश्चित सख्या का उल्लेख नही होता। बलरामदास (युद्ध काण्ड, पृ० ६२) रावण के ७२ पुत्रो तथा १३०० पौत्रो की चरचा करते हैं, महानाद ही बच गया और उसने अपने पिता की अंत्येष्टि सम्पन्न की। हिन्दी पाठक इस पक्ति से परिचित होगे—एक लाख पूत सवा लाख नाती, ता रावन घर दिया न बाती।

घ। विवाहोत्तर चरित

६५१ वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ६) के अनुसार रावण वर-प्राप्ति के पहले से ही लोगो को सताया करता था,[1] बाद मे भी उसके **अत्याचार** का बारबार उल्लेख किया गया है। लका पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् वह देव-ऋषि-यक्ष-गधर्वों का वध करके उनके उद्यानो को नष्ट करने लगा। यह सुनकर वैश्रवण ने दूत भेजकर रावण को सदुपदेश दिया तथा उसे सावधान किया कि देवता उसके विरुद्ध समुद्योग कर रहे है। रावण ने अपनी तलवार से उस दूत का वध किया तथा वैश्रवण पर आक्रमण करने के उद्देश्य से अपने मन्त्रियो के साथ कैलास की यात्रा

---

१. हिन्देशिया का रामकथाओ के अनुसार रावण को अत्याचार के कारण निर्वासित किया गया, दे० अनु० ६४६।

पउमचरियं (पर्व १०) मे वालि-सुग्रीव की बहन **श्रीप्रभा** के साथ रावण के विवाह का वर्णन मिलता है। इस रचना मे उसकी ६००० विद्याधरवंशीय पत्नियो का उल्लेख है (पर्व ८)। बलरामदास रावण की साढे तीन करोड स्त्रियो की चर्चा करते हैं। मदोदरी के अतिरिक्त उडिया साहित्य मे शुभ्रकेशी (बलरामदास), इन्दुमती तथा कातिमाला (उपेंद्र भज) नामक पत्नियो का उल्लेख है। **सेरीराम** के अनुसार रावण ने चार लोको मे राज्य का अधिकार प्राप्त कर स्वर्गलोक मे **नील उताम** (तिलोत्तमा) से, पाताल मे **परतीवि** (पृथ्वी) देवी से, तथा महासागर मे **गंगा महादेवी** से विवाह किया। बाद मे उसने लका का निर्माण किया और दशरथ की पटरानी **मन्दोदरी** को भी प्राप्त किया (दे० अनु० ४२८)। **राम-कियेन** (अ० ५) में दशकठ की पाताल-निवासिनी पत्नी का नाम **कला अग्गी** है।

(४) रावण के पुत्रो मे से **इन्द्रजित्** सर्वाधिक प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग १२) के अनुसार मन्दोदरी के पहलौठे पुत्र ने जन्म लेने के पश्चात् ही मेघगभीर नाद किया था जिससे उसके पिता ने उसका नाम मेघनाद ही रखा था। इन्द्र के परास्त करने के कारण ब्रह्मा ने उसे इन्द्रजित् की उपाधि प्रदान की (सर्ग ३०)। **सेरीराम** के अनुसार रावण ने स्वर्गलोक की नील उताम से इन्द्रजित् को उत्पन्न किया था, इस रचना मे इन्द्रजित् को उत्पन्न किया था, इस रचना मे इन्द्रजित् के तीन शीर्ष होते हैं। जावा के **सेरतकाण्ड** के अनुसार विभीषण ने मेघनाद की सृष्टि की थी (दे० अनु० ४१५)। इन्द्रजित-विषयक शेष सामग्री का विश्लेषण युद्धकाण्ड के अन्तर्गत हो चुका है (दे० अनु० ५६०-५६४)।

(५) वाल्मीकि रामायण मे रावण के अन्य पुत्रो का भी उल्लेख मिलता है। **अक्ष** (सुन्दरकाण्ड, सर्ग ४७) तथा **अतिकाय** (युद्धकाण्ड, सर्ग ७१) के अतिरिक्त युद्धकांड के एक प्रक्षिप्त अश (सर्ग ६६-७०) मे रावण के चार पुत्रो अर्थात् अतिकाय, **त्रिशिरा**, **नरांतक** तथा **वेदान्तक** के वध का वर्णन किया गया है।[1]

परवर्ती भारतीय साहित्य मे रावण की सतति के रूप मे **सीता** (अनु० ४१२-४१७), महानाद और **सिंहनाद** (बालरामायण, अनु० ५७६), **वीरबाहू** (कृत्तिवास रामायण ६, ५४) तथा **महीरावण** (कृत्तिवास ६, ७६) का उल्लेख मिलता है। पउमचरिय (पर्व ६५) मे **इन्द्रजीत** तथा **मेघवाहन** नामक रावण के दो पुत्रों की चरचा है।

---

१. एक त्रिशिरा नामक राक्षस के वध का उल्लेख आरण्यकाण्ड (सर्ग २७) में भी मिलता है। नरांतक को अन्यत्र (युद्धकाण्ड, सर्ग ५७-५८) प्रहस्त का सचिव माना गया है।

उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त उत्तराकाण्ड के सर्ग २३ के पश्चात् के प्रक्षिप्त सर्गों मे रावण की सूर्यलोक तथा चन्द्रलोक की विजययात्रा का भी वर्णन किया गया (सर्ग २-४)। सूर्य-लोक की यात्रा का गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मे उल्लेख नही है।

पउमचरिय मे भी रावण द्वारा सहस्रकिरण, नलकूबर, इन्द्र, वरुण आदि की पराजय वर्णित है किन्तु इस रचना मे यम, इन्द्र, वरुण आदि देवता न होकर साधारण राजा माने गये है। इन्द्र की पराजय का वर्णन अहल्या-चरित के अन्तर्गत हो चुके है (दे० अनु० ३४४)।

६५३. अनेक रचनाओ के अनुसार रावण ने ब्रह्मा के स्थान पर शिव से ही वरदान प्राप्त किया था (दे० अनु० ६४६), वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे **शिव-रावण-संबंध** के विषय मे निम्नलिखित सामग्री पाई जाती है। वैश्रवण को पराजित करने के बाद जब रावण पुष्पक पर चढकर कैलास के ऊपर जा रहा था तो पुष्पक अचानक रुक गया। रावण पुष्पक से पृथ्वी पर उतरा तथा नन्दि का उपहास करके उसने कैलास पर्वत को ऊपर उठाया।[1] पर्वत हिलने लगा किन्तु महादेव ने अपने पादागुष्ठ से पर्वत को दबाया जिससे रावण की भुजाये कैलास के नीचे जकड गई और वह क्रोध तथा पीडा से चिल्ला उठा। तब अपने मत्रियो का परामर्श स्वीकार कर रावण विविध स्तोत्रो द्वारा महादेव का गुणगान करने लगा और एक सहस्र वर्ष तक विलाप करता रहा। अन्त मे महादेव प्रसन्न हुए, उन्होंने दशग्रीव की भुजाये मुक्त कर उसका नाम रावण ही रखा क्योकि उसने पर्वत से आक्रान्त होकर भीषण चीत्कार (**रावः सुदारुणः**) किया था।[2] दाक्षिणात्य पाठ मात्र के अनुसार शिव ने उस अवसर पर रावण को चन्द्रहास नामक खग प्रदान किया था (सर्ग १६)। उत्तरकाण्ड मे अन्यत्र रावण द्वारा शिवलिग की पूजा का वर्णन मिलता है तथा इसका भी उल्लेख मिलता है कि रावण सदा ही एक सुवर्ण लिंग अपने साथ रखा करता था (सर्ग ३१)।

पउमचरियं मे जो कथा मिलती है उसमे वालि शिव का स्थान लेता है। (अनु० ६५५, २)। चन्द्रहास के विषय मे लिखा है कि रावण ने उस-खग से अपनी

---

१. ब्रह्मपुराण (अ० १४३) के अनुसार रावण कैलास को लका ले जाना चाहता था।

२. रामायण मे रावण का अर्थ 'रुलाने वाला' है—दे० लोकरावण (३, ३३, १) और शत्रुरावण (३, ५६, २६)। रावण के नामो के विषय मे ऊपर देखे—दशमुख (अनु० ६०), दशग्रीव (अनु० ११२), आदिवासी गोत्र रावना (अनु० ११०)।

की। वहाँ पहुँचकर उसने पहले यक्ष-सेना को तितर-वितर कर दिया; बाद मे उसने वैश्रवण को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त किया तथा उससे पुष्पक प्राप्त कर लंका लौटा।[1]

बाद मे रावण ने वेदवती (दे० अनु० ४१०) तथा रम्भा (दे० अनु० ६५४) के साथ भी अत्याचार किया। इसके अतिरिक्त उसने बहुत सी अविवाहित अथवा विवाहित सुन्दर स्त्रियो का हरण किया जिससे उसके अन्तःपुर मे सैकडो राज-ऋषि-देव-नाग-दानव-राक्षस-दैत्य-असुर-यक्ष-गधर्व कन्याये निवास करती थी (सर्ग २४)।

६५२. रावण की **विजय-यात्राओ** के वर्णन का परवर्ती साहित्य मे कोई विशेष विकास नही हुआ है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार रावण ने अपनी एक **विजय-यात्रा** मे (सर्ग १८-२३) निम्नलिखित राजाओ को पराजय स्वीकार करने के लिए बाध्य किया—मरुत्त, दुष्यन्त, सुरथ, गाधि, पुरूरवा और अनरण्य। इसके बाद रावण ने नारद के परामर्श से **यमलोक** पर आक्रमण किया। अपनी सेना रावण द्वारा पराजित देखकर यम ने रावण का वध करना चाहा किन्तु वह ब्रह्मा का अनुरोध स्वीकार कर अन्तर्धान हो गए और रावण अपने को विजयी मानकर यमलोक से निकल गया। अनन्तर रावण ने **वरुणालय** मे नागो के राजा वासुकि को परास्त किया, दैत्यो के साथ सधि कर ली, अश्मनगर मे अपने बहनोई विद्युज्जिह्व का वध किया तथा वरुण की सेना हराकर लका लौटा।

रावण की एक अन्य **विजय-यात्रा** (सर्ग २५-३०) का वर्णन इस प्रकार है। रावण की अनुपस्थिति मे मधु ने कुभीनसी का अपहरण किया था। यह सुनकर रावण ने एक विशाल सेना के साथ मधुपुर के लिए प्रस्थान किया। कुभीनसी ने मधुपुर मे रावण का स्वागत करके अपने पति के लिए अभयदान की याचना की। रावण कुभीनसी की प्रार्थना अस्वीकार न कर सका, अतः वह मधु के यहाँ एक रात बिताकर अगले दिन **कैलास** की ओर अग्रसर हुआ। वहाँ पहुँचकर वह रभा के साथ व्यभिचार करने के कारण नलकूबर का शाप-भाजन बन गया। इसके बाद रावण ने कैलास पार कर **इन्द्रलोक** मे प्रवेश किया। वहाँ राक्षसो तथा देवताओ का घोर युद्ध हुआ, जिसमे सुमाली मारा गया। तब मेघनाद ने जयत को परास्त कर दिया तथा इन्द्र को कैद कर उन्हे लका ले आया। अन्त मे ब्रह्मा ने मेघनाद को वरदान तथा इन्द्रजित् की उपाधि देकर इन्द्र को छुडाया (दे० अनु० ५६०)। हेमचद्र के जैन रामायण (२, ५७८-६६३) मे रावण स्वय इन्द्र को परास्त करता है।

---

१. दे० सर्ग १३-१५। पुष्पक के विषय मे अनु० ६४६ और ५६६ देख ले। सेरत काण्ड के अनुसार ब्रिलमनरज नामक वैश्रवण का पुत्र रावण का वाहन बन जाता है (दे० अनु० ३२२)।

यदि ह्यकामामासेवेत् स्त्रियमन्यामपि ध्रुव शतधास्य फलेद्द हः (३, २७५, ३३)। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग २६) मे नलकूवर के इस शाप की कथा का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। इन्द्रलोक की यात्रा के समय रावण ने कैलास-पर्वत पर रात विताई। उस रात्रि मे वह रभा को देखकर उस पर आसक्त हुआ। रभा ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं आपकी पुत्रवधू हूँ। मैं आपके भाई वैश्रवण के पुत्र नलकूवर की पत्नी हूँ। रावण ने उत्तर दिया कि अप्सराओ के कोई पति होता ही नही (पतिरप्सरसां नास्ति) और उसने रभा के साथ वलात्कार किया। वाद मे नलकूवर ने अपनी पत्नी के मुँह से सब सुनकर रावण को यह शाप दिया कि न चाहने-वाली स्त्री के साथ रमण करने से उसके मस्तक के सात टुकड़े हो जायँगे—**यदा ह्यकामा कामार्तो धर्षयिष्यति योषितम् ॥५५॥ मूर्धा तु सप्तधा तस्य शकलीभविता तदा।**

पउमचरिय (पर्व १२) मे प्रस्तुत वृत्तान्त को एक सर्वथा नवीन रूप दिया गया है। इसके अनुसार रावण ने नलकूवर की पत्नी उपरभा का प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था और वाद मे उसने अनन्तवीर्य का धर्मोपदेश सुनकर विरक्त परनारी के साथ रमण न करने का व्रत लिया था।[1]

(२) वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग १६) मे नन्दि-शाप की कथा इस प्रकार है। पुष्पक के रुक जाने के वाद रावण कैलास-पर्वत के सामने पृथ्वी पर उतरा और नदि का वानर-मुख देखकर उसका उपहास करने लगा। तव नदि ने उसे यह शाप दिया कि तुम्हारे कुल के नाश के लिए मेरे समान रूप और वल से सम्पन्न वानर उत्पन्न होंगे—**तस्मान्मद्वीर्यसयुक्ता मद्रूपसमतेजसः। उत्पत्स्यन्ति वधार्थं हि कुलस्य तव वानराः** (१६, १७)। दाक्षिणात्य पाठ के लकादहन के वर्णन के अन्तर्गत नदि-शाप का जो उल्लेख मिलता है वह अन्य पाठो के समानान्तर स्थल पर विद्यमान नही है।

सेरी राम मे नन्दिशाप का एक परिवर्तित रूप मिलता है। जटायु के पिता, कीसूग्रीसू (कश्यप) नामक मुनि ने किसी अवसर पर रावण का सत्कार नही किया था। रावण ने क्रोध मे आकर उनसे पूछा कि तुम मनुष्य हो अथवा वन्दर हो। तव मुनि ने उसे यह शाप दिया—तुम मनुष्यो और वानरो द्वारा मार डाले जाओगे।

(३) **वेदवती** के शाप का प्राचीनतम वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड मे सुरक्षित है (दे० अनु० ४१०)।

---

१. इसका कारण यह है कि पउमचरिय मे रावण को धर्मभीरु जैनी के रूप मे चित्रित किया गया है (अनु० ६०)।

भुजा काटकर और उसकी शिराओ से वीणा का तार बनाकर जिन की स्तुति की थी। यह देखकर धरणेद्र मुनि ने रावण को अमोघ-विजया शक्ति का वरदान दिया (पर्व ९)। अन्य रचनाओ के अनुसार रावण ने अपने गायन द्वारा शिव को प्रसन्न कर उनसे पार्वती को प्राप्त किया था (दे० अनु० ६५०)। पाश्चात्य वृत्तान्तो नं० ६ और १० के अनुसार शिव ने रावण को अपनी उंगलियो से दवा लिया था, इसपर रावण ने एक सिर तथा एक भुजा को मुक्त कर दिया तथा उस सिर से वीणा बनाकर शिव को अपने गायन से प्रसन्न कर दिया। इस प्रकार रावण को त्रिलोक पर अधिकार मिल गया था। रामकियेन के अनुसार एक देवता ने किसी दिन कैलास पर एक छिपकली पर इतना प्रवल प्रहार किया था कि पर्वत एक ओर झुक गया। देवता कैलास को सीधा करने मे असमर्थ निकले, तब ईश्वर ने रावण को बुलाया जिसने कैलास उठाकर उसे पूर्ववत् सीधा कर दिया। वर पाकर रावण ने उमा को माँग लिया (दे० अनु० ६५०)।

परवर्ती रचनाओ मे रावण की शिव-भक्ति विषयक बहुत ही सामग्री मिलती है। ब्रह्मपुराण (अध्याय १४३) के अनुसार ब्रह्मा ने रावण को एक अष्टोत्तरशतशिव-नाम मंत्र प्रदान किया था। रावण द्वारा रचित बहुत से शिव- स्तोत्रो का भी उल्लेख मिलता है।[1] शिव-पार्वती-कलह के प्रसग मे रावण की शिवभक्ति पर विशेष बल दिया गया है (दे० अनु० ५८४)। लकादेवी की कथा का ऐसा रूप भी मिलता है जिसमे देवी लकेश्वरी मानी जाती है (दे० अनु० ५३७)।

६५४. वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक सर्गो मे कही भी रावण के प्रति किसी शाप का उल्लेख नही होता। युद्धकाण्ड (सर्ग ९४, ३५) के अनुसार महादेव ने देवताओं को आश्वासन दिया था कि एक स्त्री के कारण रावण का नाश होगा—उत्पत्स्यति हितार्थं वो नारी रक्षःक्षयावहा। परवर्ती साहित्य मे रावण को प्रदत्त शापो के विषय मे पर्याप्त सामग्री मिलती है।

(१) महाभारत के रामोपाख्यान मे दो बार नलकूबर के शाप का उल्लेख किया गया है। सुन्दरकाण्ड के कथानक के अन्तर्गत त्रिजटा सीता से कहती है कि रभा के कारण अभिशप्त रावण किसी अनिच्छुक नारी का कुछ भी विगाड नही सकता (३, २६४, ५६)। रावण-वध के वाद जब राम को सीता के विषय मे सन्देह हो रहा है और देवता प्रकट हो जाते हैं तब ब्रह्मा कहते हैं कि मैंने नलकूवर के शाप के द्वारा सीता की रक्षा का प्रबन्ध कर लिया था। नलकूबर का शाप यह था कि उसे न चाहने-वाली पराई स्त्री का सेवन करने पर रावण के शरीर[2] के सैकडो टुकडे हो जायँगे—

१. दे० मद्रास कैटालॉग नं० १०६१३, ११९४१-११९४४ और ७६१।

२. अनेक हस्तलिपियो मे देह के स्थान पर मूर्धा पाठ मिलता है।

उल्लेख मिलता है कि कार्त्तवीर्य ने सेनासहित रावण को परास्त कर उसे अपनी राजधानी माहिष्मती में कैद कर लिया था किन्तु पुलस्त्य की प्रार्थना से उसे मुक्त किया था। अन्त में परशुराम द्वारा कार्त्तवीर्य के वध का वर्णन किया गया है।

रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ३१-३३) में कार्त्तवीर्य द्वारा रावण की पराजय का अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। रावण किसी दिन माहिष्मती के पास पहुँच कर तथा अर्जुन की अनुपस्थिति के विषय में सुनकर विन्ध्य की पर्वतश्रेणी की ओर चल दिया। नर्मदा के पास पुष्पक से उतर कर रावण नदी में स्नान करने के बाद उसके तट पर शिव की पूजा करने लगा। उसी समय अर्जुन कार्त्तवीर्य अपने अन्त:पुर के साथ नर्मदा में जलक्रीडा कर रहा था, उसने अपनी सहस्र भुजाओं से नर्मदा की धारा रोक दी जिससे नदी विपरीत दिशा में बहकर रावण द्वारा चढ़ाए हुए फूल ले गई। कारण का पता लगवा कर रावण अर्जुन से लड़ने आया किन्तु वह द्वन्द्वयुद्ध में पराजित होकर अर्जुन द्वारा माहिष्मती के कारावास में रखा गया। बाद में अर्जुन ने पुलस्त्य के अनुरोध पर रावण को छुड़ा कर उसके साथ "अहिंसक सख्यम्" कर लिया।

विमलसूरि ने नलकूबर-शाप की कथा की भाँति प्रस्तुत वृत्तान्त में भी आमूल परिवर्तन कर दिया है। पउमचरिय (पर्व १०) के अनुसार महेश्वर के राजा सहस्रकिरण किसी समय अपनी सहस्र पत्नियों के साथ नदी में जलक्रीडा करने गये और इस प्रकार उसने रावण का ध्यान भङ्ग किया था जो स्नान के बाद जिन मूर्त्तियों की उपासना कर रहा था। रावण द्वारा परास्त किये जाने पर सहस्रकिरण ने संन्यास लिया।

(२) उत्तरकाण्ड (सर्ग ३४) में वालि द्वारा रावण की पराजय का वर्णन इस प्रकार है।[1] कार्त्तवीर्य के कारावास से मुक्त होकर रावण फिर योग्य प्रतिद्वन्द्वियों की खोज में पृथ्वी पर भ्रमण करने लगा। किष्किधा पहुँचकर उसने सुन लिया कि वालि दक्षिण समुद्र के तट पर सन्ध्या कर रहा है। इस पर रावण पुष्पक पर चढ़कर वालि के पास आया। वालि रावण को अपनी काँख में दबा कर आकाश-मार्ग में क्रमश: पश्चिम, उत्तर तथा पूर्व सागर गया और इस प्रकार अपनी सन्ध्या समाप्त कर किष्किन्धा लौटा। तभी उसने रावण को मुक्त कर दिया, रावण ने वालि के पराक्रम की प्रशंसा करने के बाद उसके साथ सख्य करने की इच्छा प्रकट की। वालि ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और रावण महीने भर अपने नये मित्र वालि के यहाँ रहा। परवर्ती रचनाओं में रावण की मानहानि को कहीं और बढ़ा दिया गया है। आनन्द रामायण (१,

---

१. गौड़ीय पाठ मात्र में इस प्रसंग को किष्किन्धाकाण्ड (सर्ग १०) के अन्तर्गत रखा गया है।

(४) वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड (सर्ग १९) के अनुसार अयोध्या के राजा अनरण्य द्वन्द्व-युद्ध मे रावण द्वारा मारा गया था। उसने प्राण छोड़ते समय रावण को यह शाप दिया कि इक्ष्वाकुकुल मे उत्पन्न राम द्वारा तुम्हारा वध किया जायगा—**उत्पत्स्यते कुले ह्यस्मिन्निक्ष्वाकूणां महात्मनाम्। रामो दाशरथिर्नाम यस्ते प्राणान्हरिष्यति** (१९, ३०)।

(५) **पुंजिकस्थला** के कारण रावण के प्रति ब्रह्मा के शाप का उल्लेख वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलता है। युद्ध-काण्ड के प्रारंभ मे (सर्ग १३) रावण की द्वितीय सभा के अन्तर्गत जब महापार्श्व ने सीता के साथ बलप्रयोग करने का परामर्श दिया तब रावण ने स्वीकार किया कि मैंने बहुत समय पहले पुंजिकस्थला नामक अप्सरा के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध रमण किया था, ब्रह्मा ने पुंजिकस्थला से सारा हाल जानकर मुझे यह शाप दिया कि पुनः किसी नारी के साथ बलात्कार करने पर तुम्हारे मस्तक के सैकड़ो टुकड़े हो जायँगे—**अद्यप्रभृति यामन्यां बलान्नारीं गमिष्यसि। तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः** (१३, १४)।

(६) इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य[1] पाठ के एक प्रक्षिप्त स्थल पर (६, ६०, ८-१२) निम्नलिखित लोगो द्वारा रावण को शाप दिए जाने का उल्लेख किया गया है—*अनरण्य, वेदवती, उमा, नंदीश्वर, रंभा, वरुणकन्यका* (पुंजिकस्थला)। उमा को छोड़कर सबो का उल्लेख ऊपर हो चुका है। रामायण-तिलक मे माना गया है कि जब रावण ने कैलास को ऊपर उठाया (**कैलासशिखर-चालनवेलायाम्**) तब उमा ने यह शाप दिया था कि स्त्री के कारण रावण की मृत्यु होगी—**रावणस्य स्त्रीनिमित्तं मरणम्**। उत्तरकाण्ड के वृत्तान्त मे शाप का उल्लेख नही है, इतना ही कहा गया है कि उस समय उमा ने काँपते हुए महेश्वर का आलिंगन किया था—**चचाल पार्वती चापि तदाश्लिष्टा महेश्वरम्** (७, १६, २६)।

६५५ वाल्मीकीय उत्तरकाण्ड के रावणचरित मे उसकी अनेक पराजयों का भी वर्णन किया गया है। उनमे से वालि द्वारा रावण की पराजय का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है।

(१) **महाभारत** मे परशुराम द्वारा कार्त्तवीर्य के वध का उल्लेख है (दे० अनु० ३४९)। **हरिवंश पुराण** (१, अध्याय ३३) मे अर्जुन कार्त्तवीर्य की कथा इस प्रकार है। उसने तप द्वारा एक सहस्र भुजाये तथा अन्य वर पाकर समस्त पृथ्वी को जीत लिया था। नर्मदा तथा समुद्र मे उसकी जलक्रीडा के वर्णन के बाद ही इसका

---

१. समानान्तर स्थल पर गौडीय पाठ (६, ३७, ८) नंदिशाप मात्र का उल्लेख करता है किन्तु पश्चिमोत्तरीय पाठ मे किसी शाप का निर्देश नही मिलता।

रावण छिपकर किष्किन्धा आया किन्तु सैनिको ने उसे पकड लिया। तब वालि ने रावण को द्वन्द्वयुद्ध मे परास्त कर दिया, उसने रावण को कैदी के रूप मे अपने पास रक्खा। रावण सात दिन तक किष्किन्धा मे अपमान सहकर लंका लौटा (अध्याय ८)। इस रचना मे वालि द्वारा रावण की एक अन्य पराजय भी वर्णित है (दे० अनु० ५६७)।

पउमचरिय (पर्व ८) के अनुसार दशमुख ने किसी दिन दूत भेजकर वालि को आदेश दिया कि वह आकर प्रणाम करे। वालि ने उत्तर दिया कि मेरा मस्तक जिन-वरेंद्र को छोडकर और किसी के सामने नही झुकता। इस पर दशानन आक्रमण की तैयारियाँ करने लगा। वालि ने सोचा कि मैं न तो राक्षसराजा के सामने झुक सकता और न जीवो का नाश करने वाला युद्ध कर सकता हूँ, अत: उसने सुग्रीव को राजा वनाकर दीक्षा ले ली। वाद मे दशानन का विमान किसी अवसर पर तपोधन वालि के प्रभाव से अष्टापद पर्वत (कैलास) के ऊपर रुक गया। रावण उतरा तथा पर्वत को उठाकर उसे ले जाने लगा। वालि ने यह देख कर कि जीवो को कष्ट हो रहा है पैर के अगूठे से शिखर को दवाया जिससे दशानन पर्वत के नीचे कुचलकर चिल्लाने लगा, उस समय से उसका नाम रावण पड गया। अन्त मे वालि ने अपना अगूठा खीच कर रावण को छुडाया और रावण ने वालि को प्रणाम कर उसकी स्तुति की।

(३) वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षेप (उत्तरकाण्ड के सर्ग २३ के वाद प्रथम प्रक्षिप्त सर्ग) के अनुसार रावण ने यमलोक से निकलने के वाद अश्मनगर पहुँचकर एक भवन मे प्रवेश किया जहाँ वलि कैदी था। वलि ने रावण को वता दिया कि भवन के द्वार पर जिस श्याम पुरुष से रावण की भेट हुई, वही विष्णु हैं। यह सुनकर रावण लडने के लिए उद्यत हुआ किन्तु ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए विष्णु अंतर्द्धान हो गए। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे इस वृत्तान्त के अन्तर्गत रावण की पराजय का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार वलि ने अपने यहाँ पडा हुआ चक्र दिखाकर रावण से कहा कि उसे उठाकर मेरे पास आओ। रावण पहले उसे हिलाने मे असमर्थ हुआ, अन्त मे उसने सारी शक्ति लगाकर उसे ऊपर उठाया किन्तु वह तुरन्त मुर्च्छा खाकर गिर गया। तव वलि ने प्रकट किया कि वह चक्र वास्तव मे मेरे किसी पूर्वज का कुण्डल है। **आनन्द रामायण** (१, १३, १०७-११५) मे इस कथा को एक नवीन रूप दिया गया है। इसके अनुसार रावण ने घर मे प्रवेश कर वलि को पत्नी के साथ चौंसर खेलता देखा था। वलि के हाथ से एक पासा गिर गया और वलि ने रावण को उसे उठा लाने का आदेश दिया। रावण अपने वीसो हाथो से प्रयत्न करने पर भी पासा उठाने मे असमर्थ रहा। तव एक दासी ने झट पासा उठाकर राजा को दे दिया।

१३, १००) के अनुसार रावण को अङ्गद के पालने के नीचे बाँधकर रखा गया था जिससे वह "अङ्गदमूत्रस्य धाराधौतानन" बन गया। सेरीराम मे निम्नलिखित कथा मिलती है। रावण पुष्पक पर चढकर मन्दूदाकी के साथ स्वर्गलोक-निवासी इन्द्रजित् से मिलने गया। बालि ने पुष्पक अपने राज्य के ऊपर जाते हुए देखकर रावण पर आक्रमण किया तथा मन्दूदाकी को छीनकर रावण को पुष्पक के साथ समुद्र मे फेंक दिया। बालि ने अपनी राजधानी मे पहुँच कर मन्दूदाकी से विवाह कर लिया। कुछ समय के बाद उसने हनुमान् को आदेश दिया कि वह गर्भवती मन्दूदाकी की सेवा के लिए २४ राज-कुमारियो को ले आये। इतने मे रावण ने बालि के गुरु (नील चक्रू) के पास जाकर मन्दूदाकी के हरण का समाचार कह सुनाया। गुरु ने रावण को आश्वासन दिया कि उसे मन्दूदाकी वापस मिल जायगी बशते कि वह तपस्वियो के आश्रम नष्ट न करे। तब बालि के गुरु, रावण के साथ, बालि के यहाँ आये। गुरु का निवेदन सुनकर बालि ने आपत्ति की कि मन्दूदाकी गर्भवती है। इस पर गुरु ने मन्दूदाकी का गर्भ निकाल कर उसे किसी बकरी के शरीर मे रख दिया और रावण मन्दूदाकी के साथ अपने भवन चला गया। तब गुरु ने हनुमान् को इन्द्र पवानम नामक पर्वत से फूल ले आने का आदेश दिया। हनुमान् समस्त पर्वत ले आये और उस पर से गुरु के शिष्यो ने आवश्यक फूल चुन लिये। अनन्तर गुरु ने मन्त्रो की सहायता से इन फूलो से एक मण्डूक की और इसके बाद मण्डूक से एक सुन्दर स्त्री की सृष्टि की। गुरु ने उसका नाम देवी बरमा कोमाल रख दिया तथा उसे बालि की पत्नी के रूप मे प्रदान किया। बकरी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम श्री अग्गाद रखा गया, बाद मे देवी बरमा कोमाल ने अनूल नामक पुत्र को जन्म दिया। अन्त मे हनुमान् तथा बालि दोनो वन मे अलग-अलग स्थान पर तपस्या करने चले गये।[1] सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार मन्दुदकी के हरण के बाद महाराज बन भी बालि के भवन मे कैदी के रूप मे रखा जाता है। महासिकुल के अनुरोध पर बालि ने दोनो को मुक्त कर दिया। इस कथा मे भी अग्गाद एक बकरी से जन्म लेता है। रामकियेन के अनुसार रावण ने मन्डो को लेकर लङ्का की ओर प्रस्थान किया था और बालि ने रास्ते मे रावण को पराजित करके मडो का हरण किया। बाद मे बालि ने गुरु का निवेदन स्वीकार कर मडो को लौटाया (अध्याय ४)। जब अगद की अवस्था १० वर्ष की थी, तो रावण ने उसे मार डालने का निश्चय किया क्योंकि अङ्गद म डो के अपमान का स्मरण दिलाता है।

१. तपस्या का उल्लेख पउमचरियं का प्रभाव माना जा सकता है। इस कथा का आधार भारतीय है। दे० ऊपर (अनु० ६५०) उडिया धर्मपुराण की कथा।

तथा खण्डन हो चुका है (अनु० १०१, १०३)। प्रस्तुत हनुमच्चरित के अन्त मे इस लोकप्रियता के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला जाएगा (अनु० ७१०)।

वाल्मीकीय रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे हनुमान् का स्थान अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है। वे राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते हैं, वर्षाऋतु के पश्चात् सुग्रीव को राम के प्रति उनके कर्त्तव्य का स्मरण दिलाते है, राम की अगूठी लेकर सीता की खोज मे अन्य वानरो के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करते हैं, समुद्र लाँघकर लका मे सीता का पता लगाते है तथा उनका सन्देश लेकर राम के पास लौटते हैं। वास्तव मे हनुमान् ही सुन्दरकाण्ड के नायक है। वे युद्ध मे भी एक प्रमुख भाग लेते है (अनु० ५८७) तथा रावण-वध के पश्चात् वे ही सीता के पास और बाद मे भरत के पास राम-विजय का शुभ-सदेश ले जाते है। हनुमान् के दो अन्य कृत्य अत्यधिक प्रसिद्ध है, अर्थात् लकादहन तथा औषधि-पर्वत का आनयन, दोनो को समीचीन कारणो से बाद के प्रक्षेप मानना चाहिए (दे० ऊपर अनु० ५३० और ५६४)।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के विभिन्न पाठो के प्रक्षेपो मे अथवा परवर्ती रामकथाओ मे हनुमान् के विषय मे जो सामग्री रामायणीय कथावस्तु से सीधा सम्बन्ध रखती है, उसका निरूपण यथास्थान किया गया है।[1]

६५७. वाल्मीकिकृत आदिकाव्य मे हनुमान् की जन्मकथा का तो अभाव रहा होगा, किन्तु प्रचलित रामायण इसका साक्ष्य है कि आगे चलकर रामायण के कुशीलवो ने इस अभाव की प्रचुर मात्रा मे पूर्ति की है, बाद मे भी इस कथा का विकास होता रहा। अत. 'हनुमान् की जन्मकथा तथा बालचरित' नामक प्रथम परिच्छेद मे यह दिखलाया जाता है कि किस प्रकार हनुमान् को क्रमश. १) वायुपुत्र, (२) आजनेय, (३) रुद्रावतार, (४) राम का पुत्र तथा (५) विष्णु का अशावतार माना गया है।

द्वितीय परिच्छेद मे हनुमान् के चरित्र-चित्रण का विकास प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। इसमे राम-कथा से सीधा सम्बन्ध रखने वाली सामग्री के अतिरिक्त हनुमद्विषयक सभी अन्य अर्वाचीन कथाओ का भी ध्यान रखा जाएगा। हनुमान् के निम्नलिखित गुणो का क्रमश. अध्ययन होगा—(१) पराक्रम, (२) बुद्धिमत्ता, (३) चिरजीवत्व, (४) ब्रह्मचर्य, (५) रामभक्ति, (६) देवत्व।

इसके पूर्व यहाँ पर जैनी रामकथाओ के हनुमच्चरित की कुछ विशेषताओ का उल्लेख आवश्यक है। पउमचरिय के अनुसार हनुमान् को रावण तथा सुग्रीव दोनो

१. निम्नलिखित अनुच्छेद विशेष रूप से द्रष्टव्य है—३८२, ५१२, ५२५, ५३१-५३६, ५४१, ५४२, ५४८-५५५, ५७६-५८१, ५८७-५८८, ६०४, ६०५, ६०८, ६१४, ६१५, ६३४, ६५५, ७४६, ७५७।

रावण के चले जाने पर वलि के परिचरो ने उसे पकड लिया और उसे घोडो की लीद उठा-उठा कर बाहर फेकने का काम दिया। कुछ समय बाद रावण ने द्वार पर स्थित विष्णु से नगर से निकलने की प्रार्थना की। विष्णु ने उसे पैर के अंगूठे से आकाश मे उछाल दिया और रावण लका की ओर चल दिया। भावार्थ रामायण (७, २७) का वृत्तान्त स्पष्टतया आनन्द रामायण पर आधारित है।

(४) कपिल तथा विष्णु द्वारा रावण की पराजय की निम्नलिखित कथा का कोई विकास नही हुआ है। रावण ने किसी दिन पश्चिम सागर के तट पर भीषणाकार कपिल को देखकर उसके साथ युद्ध करने की इच्छा प्रकट की। कपिल ने रावण पर प्रहार कर उसे भूमि पर गिरा दिया और पाताल मे प्रवेश किया। रावण ने उसका पीछा किया किन्तु पाताल मे कपिल के समान तीन कोटि पुरुषो को देखकर वह शीघ्रता से उस स्थान से निकल गया। एक अन्य स्थल पर रावण ने शयन करने वाले विष्णु को तथा उनके पास बैठने वाली लक्ष्मी को देख लिया। रावण ने लक्ष्मी को पकडने के लिए हाथ बढाना चाहा किन्तु विष्णु सब जानकर अचानक जोर से हँसने लगे जिससे रावण भूमि पर गिर पडा। तब विष्णु ने रावण को अभयदान दिया तथा परिचय पूछे जाने पर रावण को अपना विराट् रूप दिखलाया (सर्ग २३ के पश्चात् पचम प्रक्षिप्त सर्ग)।

(५) रावण की एक अन्य पराजय की कथा दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे मिलती है (दे० उत्तर काण्ड, सर्ग ३७ के बाद ५वां प्रक्षिप्त सर्ग)। रावण किसी दिन नारद के परामर्श के अनुसार **श्वेतद्वीप** चला आया। वहाँ की युवतियो ने रावण को लीला-पूर्वक एक दूसरे के पास फेक दिया—हस्ताद्धस्तं स च क्षिप्तो भ्राम्यते भ्रमलालस: (श्लोक ३६)। अन्त मे भयातुर रावण सागर के मध्य मे गिर गया। आनन्द रामायण (१, १३,-१३५) के अनुसार श्वेत द्वीप की एक स्त्री ने रावण को परलका तक फेक दिया और वह अपनी बहन कौंचा के शौचकूपक मे जा गिरा। भविष्य पुराण मे हनु-मान् द्वारा रावण की पराजय का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ६६८)।

४—हनुमच्चरित

६५६ उत्तरकाण्ड मे रावणचरित के अनन्तर हनुमान् के जन्म तथा बालचरित का दो सर्गों मे वर्णन किया गया है, अतः यहाँ पर हनुमच्चरित विषयक सामग्री का निरूपण तथा आवश्यकतानुसार उसके विकास का दिग्दर्शन करना अपेक्षित है।

हनुमान् की अत्यन्त लोकप्रियता को ध्यान मे रखकर अनेक विद्वानो ने यह अनुमान किया है कि हनुमत्कथा रामायण के पूर्व ही प्रचलित थी, इस मत का विश्लेषण

(अ) वायुपुत्र

६५६. प्रचलित वाल्मीकि रामायण में हनुमान् की जो जन्मकथा मिलती है उसकी प्राचीनता तथा प्रामाणिकता के विरुद्ध दो तर्क प्रस्तुत किए जा सकते है। एक तो वाल्मीकि रामायण मे केसरी अथवा अंजना के उल्लेखो की कमी, दूसरा, हनुमान् की उपाधि 'वायुपुत्र' का निरन्तर प्रयोग।

हनुमान् की जन्मकथा के बाहर प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे केवल एक ही स्थल है जहाँ तीनो पाठो मे केसरी का हनुमान् के पिता के रूप मे उल्लेख हुआ है,[1] और यह स्थल स्पष्टतया प्रक्षिप्त है। सीता-हनुमान्-संवाद मे हनुमान् सीता से कहते हैं—अहं सुग्रीवसचिवो हनुमान् नाम वानरः (५, ३४, ३८)। अगले सर्ग मे वह पुन अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि मैं केसरी की पत्नी से उत्पन्न हनुमान् हूँ :

माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः ॥ ७९ ॥
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः।

× × ×

यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि।
हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा ॥ ८१ ॥ (सर्ग ३५)

प्रचलित रामायण मे केसरी का नाम मात्र भी बहुत कम मिलता है। हनुमान् की जन्मकथा तथा उपर्युक्त प्रक्षिप्त उद्धरण के अतिरिक्त उनका नाम किष्किन्धा अथवा सुन्दरकाण्ड मे कही भी नही आया है। इस अभाव की अर्थपूर्णता स्पष्ट है जब इसका ध्यान रखा जाता है कि उन काण्डो मे चार बार मुख्य वानरो की लम्बी सूचियाँ दी गई हैं (दे० किष्किधा के सर्ग ४, ५० और ६५ और सुन्दरकाण्ड का सर्ग ३)। प्रामाणिक काण्डो मे से युद्धकाण्ड मे सबसे अधिक मात्रा मे प्रक्षिप्त सामग्री पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० ५६१-५६६), उस काण्ड के एक स्थल पर केसरी को वानरमुख्य की उपाधि मिल गई है—मुख्यो वानरमुख्यानां केसरी नाम यूथपः (दे० २७, ३८)। फिर भी इस उद्धरण के अतिरिक्त समस्त युद्धकाण्ड मे केसरी का नाम केवल तीन बार आया है—दो बार अन्य नामो के साथ उनके नाम का उल्लेख मात्र मिलता है (दे० ४, ३३ और ७३, ५६) और एक अन्य स्थल पर यह कहा गया है कि केसरी तथा सपाति

१. दाक्षिणात्य तथा गौडीय-पाठ का एक पूरा सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ मे नहीं मिलता, इसमे वानर-सेना के आगमन का वर्णन किया गया है। दाक्षिणात्य पाठ के उस सर्ग में केसरी का उल्लेख इस प्रकार है - पिता हनुमतः श्रीमान्केसरी (दे० ४, ३९, १८), गौडीय पाठ भिन्न है—पितामहसुतः श्रीमान्केसरी (४, ३८, २६)।

का रिश्तेदार माना गया है। रावण ने अपनी बहन चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा का तथा सुग्रीव ने अपनी पुत्री पद्मरागा का हनुमान् के साथ विवाह सम्पन्न किया था (अनु० ६६६)। युद्ध के बाद राम ने हनुमान् को राजा बनाकर उन्हे श्रीपर्वत के शिखर पर स्थित श्रीपुर प्रदान किया।[1] अन्त मे हनुमान् ने दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त किया[2]। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (६८, ७२०) मे भी हनुमान् की इस सिद्धि का उल्लेख है।

क। जन्मकथा तथा बालचरित

६५८ हनुमच्चरित की सबसे बडी विशेषता उनकी जन्मकथा के विविध रूपो का बाहुल्य है। रामायणीय कथा जिसके अनुसार हनुमान् अजनी के पुत्र हैं निर्विवाद रूप से सर्वाधिक प्रचलित है किन्तु इसकी प्रामाणिकता सदिग्ध है। अतः प्रस्तुत परिच्छेद मे सर्वप्रथम रामायणीय जन्मकथा की प्राचीनता पर विचार किया गया है, अनन्तर हनुमान् की विभिन्न जन्मकथाओ का क्रमिक विकास प्रस्तुत किया जायेगा।

हनुमान् के अवतारत्व के विषय मे **अध्यात्म रामायण** (४, ७, १६-२१) मे माना गया है कि हनुमान् अगद आदि पूर्वकाल मे तपस्या द्वारा नारायण की आराधना करके उनके पार्षद बन गए थे और अब उनकी मायाशक्ति के प्रभाव से वानर के रूप मे उत्पन्न हो गए हैं। दीनकृष्णदास कृत उडिया **रसविनोद** (रचनाकाल १७०० ई० के लगभग) के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और सदाशिव तीनो ने मिलकर हनुमान् का रूप धारण कर लिया था।

पउमचरिय (पर्व १७) के अनुसार हनुमान् के तीन पूर्वजन्मो का उल्लेख है, उसके अनुसार वह हनुमान् बन जाने के पूर्व क्रमश. दमयत, सिहचद्र तथा राजकुमार सिहवाहन के रूप मे प्रकट हुए थे।

---

१. दे० पर्व ८५। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने बीरूहशा पुर्वा का राज्य अस्वीकार करते हुए राम के पास रहने का निवेदन किया था। रामकियेन (अ० ३८) मे इसका वर्णन मिलता है कि राम ने विष्णुकर्मा द्वारा नवपुरी का नगर बनवाकर उसे हनुमान् को प्रदान किया था।

२. दे० पर्व १०८। रामकियेन (अ० ३६) मे भी हनुमान् के तपस्वी बन जाने का उल्लेख है। अध्यात्म रामायण (७, १६, १५) के अनुसार हनुमान् कल्पान्त मे सायुज्य मुक्ति प्राप्त करेंगे। अच्युतानन्दकृत उडिया हरिवश के अनुसार हनुमान ने कृष्णावतार के समय राधा के पति के रूप मे जन्म लिया। नीचे ६६१ मे श्री हनुमान के आगामी जन्म की चर्चा है।

की प्राचीनता के विरुद्ध जो दूसरा तर्क है वह कहीं और महत्वपूर्ण है। यह तर्क प्रचलित रामायण मे प्रयुक्त हनुमान् की उपाधियो पर आधारित है।

६६०. वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् को प्राय. वायुपुत्र अथवा इसके पर्यायवाची शब्द की उपाधि दी जाती है। महाभारत मे भी हनुमान् को पाँच बार **मारुतात्मज**, तीन बार **पवनात्मज**, दो बार **अनिलात्मज**, एक बार **वायुपुत्र** तथा एक बार **वायुतनय** कहा गया है। किन्तु केसरीपुत्र अथवा अजनापुत्र इस प्रकार का विशेषण कहीं मिलता ही नही। अत. यह अनुमान सहज ही मन मे उत्पन्न होता है कि सभवत. हनुमान पहले वायुपुत्र के नाम से विख्यात थे, बाद मे ही केसरी-अजना के पुत्र के रूप मे। रामायण मे हनुमान् के निम्नलिखित नाम सर्वाधिक प्रयुक्त हुए हैं—**मारुतात्मज, मारुति, पवनात्मज, वायुपुत्र, वायुसूनु, वायुसुत,** और **अनिलात्मज**। इनके अतिरिक्त **वातात्मज, मारुत, पवनसुत, अनिलसुत,** ये नाम भी कई बार आए हैं। कुछ अन्य नाम केवल एक ही बार प्रयुक्त हुए, अर्थात **वायुनन्दन** (५, ५७, १०), **वायुसभव** (५, ३५, ८८), **पवनसंभव** (५, १५, ५४), **मारुतनन्दन** (५, १८, २०), **वासवदूतसूनु** (६, ७४, ५८), **गधवहात्मज** (एकही सर्ग मे दो बार, अर्थात् ६, ७४, ६६ और ७३)।

हनुमान् की उत्पत्ति-विषयक उपाधियो का यह बाहुल्य दृष्टि मे रखकर तथा इसमे केसरी अथवा अजना के उल्लेख का अभाव देखकर उपर्युक्त अनुमान सुदृढ धारणा मे परिणत हो जाता है कि वाल्मीकि रामायण के कुशीलव बहुत समय तक हनुमान् को वायुपुत्र ही मानते थे, और उस कथा से अनभिज्ञ थे, जिसके अनुसार हनुमान् केसरी की पत्नी अजना की सन्तान हैं। दाक्षिणात्य पाठ के बालकाण्ड मे जहाँ देवताओ द्वारा अप्सराओ, गधर्वियो और वानरियो से वानरो तथा ऋक्षो की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, वहाँ भी मारुत को ही हनुमान् का पिता माना गया है (दे० सर्ग० १७, १६)।

६६१. बाद मे **आंजनेय** (दे० महानाटक १४, ६४), **अंजनीसुत** आदि नाम भी प्रचलित होने लगे, उत्तरकाण्ड की जन्मकथा मे अजनीसुत मिलता ही है किन्तु ध्यान देने योग्य है कि यह केवल दाक्षिणात्य पाठ मे पाया जाता है, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो के समानान्तर स्थलो पर इसका अभाव इस नाम को प्रक्षेप सिद्ध कर देता है।

उद्धरण इस प्रकार हैं:

तथा केसरिणा त्वेष वायुना सो ऽञ्जनीसुतः ॥३१॥
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादां लंघयत्येव वानरः। (दा० रा०, सर्ग ३६)

ने घोर युद्ध किया था—युद्धं केसरिणा संख्ये घोर सम्पातिना कृतम (दे० ४६, २६)। यह ध्यान देने योग्य है कि किष्किन्धा तथा सुन्दरकाण्ड की भाँति युद्धकाण्ड मे भी मुख्य वानरो की बहुत सी लम्बी सूचियाँ मिलती है, जिनमे केसरी का नाम नही है, उदा० सर्ग ३, २६, ३०, ३१, ४२, ४३ और ४७। युद्धकाण्ड के अन्त मे भरत द्वारा अयोध्या मे वानरो का स्वागत वर्णित है; इस प्रसङ्ग मे हनुमान् के अतिरिक्त तेरह वानरों के नाम आये हैं किन्तु केसरी का कही भी उल्लेख नही हुआ है (दे० १२७, ४२ आदि)। दाक्षिणात्य पाठ के बालकाण्ड मे भी वानरो की उत्पत्ति के प्रसङ्ग मे बारह नाम उल्लिखित हुए हैं (दे० सर्ग १७), वालि और तार को छोडकर सब नाम युद्धकाण्ड के अन्त मे भी आए है। ये ही प्रमुख माने जा सकते हैं किन्तु केसरी उनमे नही है।

उत्तरकाण्ड के निरीक्षण से भी वही निष्कर्ष निकलता है। हनुमान् की जन्म-कथा (सर्ग ३५-३६) को छोडकर उत्तरकाण्ड का केवल एक ही स्थल है जहाँ तीनो पाठ केसरी का नाम लेते हैं, दान-वितरण के प्रसङ्ग मे केसरी का अन्य वानरो के साथ उल्लेख हुआ है।[1] स्वर्गारोहण के वर्णन मे कही भी केसरी का नाम नही आया है (दे० सर्ग १०८)। इन सब बातो को ध्यान मे रखकर स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ मे केसरी का मुख्य वानर के रूप मे चित्रण नही हुआ था, अधिक सभव यही प्रतीत होता है कि आदि रामायण मे इसका उल्लेख तक नही किया गया था। महाभारत के रामोपाख्यान मे केसरी का कही भी उल्लेख नही मिलता, इससे भी हमारे निष्कर्ष की पुष्टि होती है।[2]

अंजना का नाम प्रचलित वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् की जन्मकथा के बाहर केवल एक ही बार आया है (६, ७४, १८), किन्तु जिस सर्ग मे अंजना का यह उल्लेख मिलता है, वह निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है (दे० अनु० ५६४)। महाभारत मे अंजना का नाम एक बार भी नही पाया जाता है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि आदि रामायण मे केसरी अथवा अंजना का कही भी उल्लेख नही हुआ था। हनुमान् की जन्मकथा

१. दे० ३९, २०। अगले सर्ग मे वानरो की विदा का वर्णन किया गया है, इस प्रसङ्ग मे गौडीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ तथा दक्षिण के संस्करण (दे० गोविन्द पाठ) केसरी का उल्लेख नही करते, अतः बम्बई संस्करण मे जो उल्लेख मिलता है (दे० ४०, ७) उसे परवर्ती प्रक्षेप मानना चाहिए।

२. महाभारत के एक ही स्थल पर केसरी का नाम मिलता है, हनुमान्-भीम-संवाद के अन्तर्गत हनुमान् को केसरी की पत्नी से उत्पन्न माना जाता है (दे० ३, १४७, २४)।

६६४ प्रचलित रामायण के किष्किन्धाकाण्ड (सर्ग ६६) के अनुसार हनुमान् की जन्मकथा इस प्रकार है। पुंजिकस्थला नामक अप्सरा को शापवश[1] वानर-योनि प्राप्त हुई थी। वह कुंजर (पश्चिमोत्तरीय पाठ में विरज) की पुत्री अंजना के रूप में प्रकट होकर केसरी की पत्नी बन गई। कामरूपिणी होने के कारण उसने किसी दिन रूपयौवनसम्पन्न मानव शरीर धारण कर लिया। मारुत ने उसे इस रूप में देखा तथा उस पर आसक्त होकर उसका आलिंगन किया। अंजना के आपत्ति करने पर मारुत ने उसको एक वीर्यवान बुद्धिसम्पन्न पुत्र को उत्पन्न करने का वरदान दिया, जिसकी गति वायु के समान होगी :

मनसाऽस्मि गतो यत्त्वां परिष्वज्य यशस्विनि।
वीर्यवान् बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति ॥१८॥
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।
लंघने प्लवने चैव भविष्यति मया समः ॥१९॥

इस वरदान के फलस्वरूप अंजना गर्भवती हुई और उसने एक गुफा में हनुमान् को जन्म दिया। उदयमान् सूर्य को देखकर तथा उसे फल समझकर शिशु उसे पकड़ने के लिए आकाश में कूद पड़ा। इन्द्र[2] ने उसे वज्र से मारा तथा पर्वत के शिखर पर गिरने के कारण शिशु की बाईं ठोड़ी (हनु) टूट गई। इससे उसका नाम हनुमान् पड़ा :

तदा शैलाग्रशिखरे वामो हनुरभज्यत।
ततोऽभिनामधेयं ते हनुमानिति कीर्तितम् ॥२४॥

अपने पुत्र की यह दशा देखकर वायु ने क्रोध में आकर अपनी गति बन्द कर दी (न ववौ वै प्रभंजनः), जिससे समस्त प्राणी अत्यन्त व्याकुल हुए और देवता आकर

१. ब्रह्मपुराण में इन्द्र के शाप का उल्लेख है (दे० ८४, १४)। तेलुगु द्विपद रामायण (४, २२) के अनुसार अग्नि ने यह शाप दिया था। कृत्तिवासीय रामायण में विश्वामित्र का शाप उल्लिखित है जिसके फलस्वरूप हनुमान् की नानी वानरी बन गई थी। एक लोककथा के अनुसार पुंजिकस्थला के बहुत अनुनय-विनय करने पर उसे कामरूपिणी होने का वरदान मिला था। दाक्षिणात्य पाठ के दो स्थलों पर कहा गया है कि रावण को पुंजिकस्थला के कारण शाप दिया गया था (दे० अनु० ६५४)।

२. पश्चिमोत्तरीय पाठ में यहाँ पर राहु का भी उल्लेख है। यह प्रसंग उत्तरकाण्ड से लिया गया है। (दे० आगे अनु० ६६६)।

यदा केसरिणा ह्येष वायुना ऽञ्जनया तथा ।
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादां लंघयत्येष वानर ॥३१॥(प० रा०, सर्ग० ३६)
यदा केसरिणा त्वेष वायुना स्वजनैः सह ।
प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादां लंघ्यत्येष वानर. ॥७॥ (गौ० रा०, सर्ग० ४०)

६६२. 'वायुपुत्र' नाम की उत्पत्ति के विषय मे निम्नलिखित कल्पना निराधार नही कही जा सकती है । रामायण की रचना के पहले ही 'वायुपुत्र' शब्द एक निश्चित अर्थ मे प्रचलित था । 'सुसग्गा' जातक मे एक 'वायुस्स पुत्त' अर्थात् विद्याधर की कथा मिलती है जिसमे न तो हनुमान् का उल्लेख है और न किसी अन्य वानर का । यह विद्याधर ऐन्द्रजालिक है और 'वायुस्स पुत्त' का अर्थ अन्यत्र भी विद्याधर अथवा जादूगर है, महाभारत मे भी 'वातिक' (दे० ३, २४३, ३) इससे मिलता-जुलता अर्थ रखता है । रामायण मे हनुमान् समुद्र लाँघते हैं, सीता का पता लगाते है और अन्य वानरो की अपेक्षा बुद्धिमान तथा कार्यकुशल माने जाते है । अद्‌भुत रस से परिपूर्ण उनके उस चरित्र-चित्रण का ध्यान रखकर उनको 'वायुपुत्र' (अर्थात् विद्याधर, ऐन्द्रजालिक) की उपाधि मिल गई होगी ।[1] बाद मे 'वायुपुत्र' नाम के आधार पर प्रचलित जन्मकथा विकसित हुई होगी, इसके अनुसार वायु ने किसी शाप-भ्रष्टा अप्सरा से हनुमान् को उत्पन्न किया है ।

(आ) आंजनेय

६६३. हनुमान् की जन्मकथा दाक्षिणात्य पाठ मे (तथा अन्य पाठो के समानान्तर स्थलो पर) तीन बार मिलती है—प्रथम बार किष्किन्धाकाण्ड मे जहाँ जाम्बवान् अन्य कपियो को समुद्र लांघने मे असमर्थ समझकर हनुमान् की कथा तथा उनके सामर्थ्य का वर्णन करता है, दूसरी बार, युद्धकाण्ड के एक प्रक्षेप मे, जिसमे गुप्तचरो को द्वारा राम की सेना का निरीक्षण करने भेजा जाता है (दे० अनु० ५६२), तीसरी बार अपेक्षाकृत अर्वाचीन उत्तरकाण्ड मे । गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठो मे जाम्बवान् के भाषण के बाद हनुमान् स्वय अपने पिता केसरी के एक वरदान का उल्लेख करते हुए अपनी ही जन्मकथा का पुन. विवरण करते हैं । इन चार जन्मकथाओ का कालक्रम निर्धारित करना असभव है, फिर भी किष्किधाकाण्ड की कथा सबसे प्राचीन प्रतीत होती है, अतः सर्वप्रथम इसका निरूपण करना उचित होगा ।

---

१. दे० जर्मन ऑरियेंटल जर्नल, भाग ६३, पृ० ८६ । विनय-पत्रिका मे तुलसी दास भी हनुमान् को 'काव्य कौतुक कलाकोटि सिंधो' कहकर पुकारते हैं (दे० २८, ५) ।

पर टूट पड़े और इन्द्र ने हनुमान् को वज्र से मार गिराया। वायु ने अपने आहत पुत्र को उठाकर किसी गुफा मे प्रवेश किया तथा वर्षों तक सब प्राणियो को "निरुच्छ्वास" करते रहे। अन्त मे देवता, असुर, मनुष्य, गधर्व सब मिलकर ब्रह्मा की शरण मे आ पहुँचे, ब्रह्मा उनके उस कष्ट का रहस्य प्रकट कर सबो को साथ लिए वायु के पास गए (सर्ग० ३५)।

ब्रह्मा ने सबसे पहले हनुमान् को स्पर्शमात्र द्वारा पुनर्जीवित किया। अनन्तर उन्होने देवताओ से निवेदन किया कि इस शिशु के भावी महान् कार्यो को ध्यान मे रखकर वे उसे विभिन्न वर प्रदान करे। देवताओ ने इन्द्र की प्रार्थना स्वीकार की (दे० आगे अनु० ६६४)।

सब के चले जाने के पश्चात् वायु ने अजना को अपना पुत्र को सौप दिया। बढने पर शिशु महर्षियो के आश्रमो मे निर्भय होकर विचरने लगा तथा केसरी आदि की मनाही पर ध्यान न देकर अनेक प्रकार से उत्पात मचाने लगा :

स्रुग्भण्डान्यग्निहोत्राणि वल्कलानां च संचयान्।
भग्नविच्छिन्नविध्वस्तान् संशान्तानां करोत्ययम्॥ २९ ॥

अन्ततोगत्वा महर्षियो ने हनुमान् को शाप दिया कि तुमको दीर्घकाल तक अपने बल का ज्ञान नही होगा।[1] हनुमान् बचपन से ही सुग्रीव के अन्तरग सखा थे किन्तु अपने बल का ज्ञान न रहने के कारण वे वालि के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता नही कर सके।

कथा के अन्त मे दीर्घ छन्दो मे इसका वर्णन किया गया है कि हनुमान् ने सूर्य की सहायता से व्याकरण का अध्ययन किया (दे० आगे अनु० ६८६)।

६६७. जाम्बवान् से अपनी जन्मकथा सुन लेने के पश्चात् हनुमान् विशाल रूप धारण कर तथा समुद्रलघन के लिए उद्यत होकर अपने ही बल का गुणगान करने लगते है। यहाँ तक रामायण के तीनो पाठ सहमत हैं, किन्तु पश्चिमोत्तरीय तथा गौडीय पाठो के अनुसार हनुमान् ने उस अवसर पर अपनी जन्मकथा का पुनः विवरण करके अपने पिता केसरी के एक वरदान का भी उल्लेख किया है। पश्चिम

१. दाक्षिणात्य पाठ (३६, ३४) के अनुसार शाप के अनन्तर मुनियो ने यह और जोड दिया—यदा ते स्मार्यते कीर्त्तिस्तदा ते वर्धते बलम्। रामकियेन (अ० ७) के अनुसार हनुमान् एक दिन उमा के उद्यान मे उत्पात मचाने लगा था और उमा ने उसे यह शाप दिया कि तुम्हारा आधा बल लुप्त हो जाय। हनुमान् के विनय करने पर उमा ने कहा कि नारायणावतार राम के स्पर्श से तुम्हारा शरीर अपना पूर्व बल प्राप्त कर सकेगा।

वायु को मनाने लगे। ब्रह्मा ने हनुमान् को 'अशस्त्र-वध्यता' का तथा इन्द्र ने इच्छानुसार मरण (स्वच्छन्दतश्च मरणम्) का वरदान दिया।[1]

अगले सर्ग मे भी जाम्बवान् हनुमान को फिर **'वीरकेसरिणः पुत्र'** कहकर सबोधित करता है (दे० ६७, ३१)।

६६५. **युद्धकाण्ड** की सक्षिप्त हनुमत्कथा एक विस्तृत प्रक्षेप मे आई है। उसमे हनुमान को केसरी का **ज्येष्ठ पुत्र** बताया गया है। इसके बाद हनुमान के सूर्य की ओर लपकने की कथा मिलती है और कहा गया है कि वज्र से आहत होकर शिशु **'भास्करोदय'** नामक पर्वत पर गिर गया था। (दे० ६, २८, १०-१५)।

६६६. **उत्तरकाण्ड** (सर्ग ३५-३६) मे हनुमान् की जन्मकथा तथा बालचरित का प्रसग इस प्रकार है। राम ने अगस्त्य से रावणचरित सुनने के पश्चात् पूछा था—'हनुमान् इतने शक्तिशाली होते हुए भी वालि के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता करने मे असमर्थ थे, मेरा तो विचार यह है कि हनुमान् अपना बल जानते ही नही थे।" इस पर अगस्त्य ने इसका रहस्य खोलकर उत्तर दिया कि मुनियो के शाप के फलस्वरूप—**"न वेत्ता हि बलं सर्वबली सन्।"** अनन्तर अगस्त्य ने हनुमान् की पूरी कथा सुनाई। यह कथा किष्किन्धाकाण्ड के वृत्तान्त से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है, किन्तु इसमे इसका उल्लेख नही किया गया है कि अजना वास्तव मे एक शापग्रस्ता अप्सरा थी। केसरी सुमेरु पर्वत के राजा हैं, वायु उसकी पत्नी अजना से हनुमान् को उत्पन्न करते हैं। प्रसव के बाद ही अजना फल बटोरने के उद्देश्य से वन चली जाती है। माता की अनुपस्थिति मे भूख से व्याकुल होकर तथा सूर्य को फल समझकर शिशु बालसूर्य पकडने के लिए आकाश मे कूद पडता है। सूर्य उसे बच्चा समझकर तथा उसका भावी कार्य-कलाप जानकर उसको नही जलाते हैं। सयोग से राहु उसी दिन सूर्य को ग्रहण करना चाहता था, जब वह सूर्य के पास पहुँचा और हनुमान् ने उसका स्पर्श किया तब राहु भयभीत होकर इन्द्र के यहाँ दौड़ा तथा शिकायत करने लगा—"आपने भूख मिटाने के लिए मुझे चद्र और सूर्य को प्रदान किया है; अब आपने किसी दूसरे को सूर्य क्यो दे दिया है। आज मैंने एक अन्य राहु को सूर्य को पकडते देखा।" यह सुनकर इन्द्र हाथी पर सवार होकर सूर्य की ओर चल दिए। राहु पहले ही सूर्य के समीप पहुँचा, हनुमान् उसे एक दूसरा फल समझकर उसकी ओर कूद पडे, जिस पर राहु इन्द्र की दुहाई देने लगा, इन्द्र उसी समय आ पहुँचे कि हनुमान् ऐरावत को एक बडा फल समझ कर उस

१ पश्चिमोत्तरीय पाठ मे इन्द्र के वरदान का उल्लेख नही है। गौडीय पाठ मे कोई भी वरदान उल्लिखित नही है तथा वायु के न चलने का प्रसग भी नही है।

स्कन्द पुराण शैवो का ग्रन्थ है, अत वहाँ शिशु हनुमान् के स्वास्थ्यलाभ का श्रेय शिव को दिया गया है। हनुमत्केश्वर माहात्म्य नामक अध्याय मे लिखा है कि पवन ने पहले शिव की आराधना की थी तथा इसके बाद अपने पुत्र को शिवलिंग-स्पर्श द्वारा स्वस्थ बना दिया था। इस कारण से उस लिंग का नाम हनुमत्केश्वर रखा गया। अनन्तर देवताओ के आगमन तथा उनके वरदानो का वर्णन किया गया है (दे० अवती-खण्ड, चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य, अध्याय ७६)।

भविष्य पुराण (प्रतिसर्गपर्व, चतुर्थ खण्ड, अध्याय १३, ३७-४५) के अनुसार वज्र से मारे जाने पर भी हनुमान् ने सूर्य को हाथ से नही जाने दिया। सूर्य का आर्त-वचन सुनकर रावण आ पहुँचा तथा हनुमान् की पूँछ खीचने लगा। इसपर हनुमान् ने सूर्य को छोड दिया तथा एक वर्ष तक रावण के साथ मल्लयुद्ध करते रहे। अन्त मे रावण की हार हुई और हनुमान् उस पर प्रहार करने लगे। तब विश्रवा ऋषि ने आकर रुद्रावतार हनुमान् को सन्तुष्ट किया और उन्होने रावण को छोड दिया। **आनंद रामायण** (१, १३, १६४-१६८) तथा **भावार्थ रामायण** (७, ३५) के अनुसार वायु अपने पुत्र को सूर्य की ओर बढते हुए देख कर उसे प्रचण्ड ताप से बचाने के लिए दौडे। किन्तु वह उसे रोकने मे असमर्थ होकर समीर द्वारा उसे ठढा करने लगे। सूर्य के पास पहुँचकर तथा राहु को सूर्य निगलते देखकर हनुमान् ने अपनी पूँछ के प्रहार से राहु को अचेत कर दिया। तब केतु राहु की सहायता करने आया, किन्तु हनुमान् ने दोनो को परास्त कर दिया। अन्त मे राहु और केतु ने इन्द्र की शरण ली। **माधव कंदली** के सुन्दरकाण्ड (अध्याय ३) के अनुसार हनुमान् सूर्य के तेज के कारण पर्वत-शिखर पर गिर गया, जिससे उसकी हनु टूट गई।

सेरीराम मे तत्सबधी कथा इस प्रकार है। वन मे फल खोजते समय हनुमान् उदीयमान सूर्य को लाल फल समझकर उसकी ओर कूद पडा जिससे वह जल कर मरा और उसकी हड्डियाँ समुद्र मे गिर गई। बाद मे मछलियो ने इन हड्डियो को एकत्र कर लिया और सूर्य ने अजना के पितामह का अनुरोध स्वीकार कर हनुमान् को जिलाया और उनको युद्ध-माया के अनेक मत्र प्रदान दिए। **ब्रह्मचक्र** के अनुसार किसी ऋषि ने तपस्या का जीवन त्याग कर जादू से एक कन्या की सृष्टि की और उससे दो पुत्रियो को उत्पन्न किया था। एक पुत्री वानरी के रूप मे प्रकट हुई, उसने पवन नामक वानर-राजा के साथ विवाह करके हनुमान् को जन्म दिया।

६६६. जैनी रामायणो की जन्मकथा रामायण पर आधारित होते हुए भी इससे बहुत भिन्न है। **पउमचरियं** (पर्व १५-१८) के अनुसार आदित्यपुर के राजकुमार पवनजय (अथवा वायुकुमार) ने महेन्द्रपुर की राजकुमारी अजना कुमारी से विवाह

समुद्र के तट पर प्रभासतीर्थ मे एक महागज[1] ऋषियो को तग किया करता था। केसरी ने उसका वध किया तथा वरदान प्राप्त कर वायु के समान वीर्यवान्, कामरूपी[2] तथा अव्यय पुत्र माँगा। शेष जन्मकथा जाम्बवान् की कथा के सदृश है, किन्तु इसमें पुंजिकस्थला का उल्लेख नही है तथा जिस पर्वत के शिखर पर अजना मारुत से देखी गई उसका नाम मलय बताया गया है। इस कथा मे हनुमान् के बालचरित का वर्णन नही मिलता (दे० गौ० रा० ५, ३, ७-३४, प० रा० ४, सर्ग ५८)।

६६८ हनुमान् की उपर्युक्त जन्मकथा तथा बालचरित प्राय. सभी अर्वाचीन रामकथाओ मे न्यूनाधिक परिवर्तन सहित विद्यमान है। वह कथा स्वतंत्र रूप से भी पुराणो मे मिलती है, वहाँ इसका उद्देश्य प्राय: किसी तीर्थ अथवा इष्टदेव का गुणगान है।

ब्रह्मपुराण (अध्याय ८४) मे हनुमान् की जन्मकथा पैशाचतीर्थ के माहात्म्य-वर्णन मे आई है। कथा इस प्रकार है—अजनपर्वत के शिखर पर केसरी निवास करता था। उसकी दोनों पत्नियाँ वास्तव मे अप्सराएँ थी, जो इन्द्र के शाप से पृथ्वी पर प्रकट हुई। एक का नाम था अंजना, और उसका मुख वानरो का सा था, दूसरी का नाम अद्रिका था और उसका मुख मार्जारो जैसा था। किसी दिन केसरी की अनुपस्थिति मे दोनो ने अगस्त्य का अच्छा आतिथ्य-सत्कार किया तथा यह वरदान माँग लिया—**"पुत्रौ देहि मुनीश्वर सर्वेभ्यो बलिनौ श्रेष्ठौ सर्वलोकोपकारकौ"**। अगस्त्य के चले जाने के बाद वायु तथा निर्ऋति अजना तथा अद्रिका को देखकर उन पर आसक्त हो गए तथा उनके साथ रमण किया।[3] फलस्वरूप अजना-वायु से हनुमान् उत्पन्न हुए और अद्रिका-निर्ऋति से अद्रि पिशाचो का राजा। बाद मे अद्रि अजना को गौतमी नदी के किसी तीर्थस्थान पर ले गया और वहाँ वह स्नान करके शापमुक्त हो गई. उस तीर्थ का नाम अजनम् अथवा पैशाचम् रखा गया। हनुमान् अद्रिका को एक दूसरी जगह ले गए जहाँ वह भी शाप मुक्त हो गई, उस तीर्थ का नाम मार्जार, हनुमन्त अथवा वृषाकपि रखा गया। **आनन्द रामायण** (१, १३, १५८-१६१) मे भी इस कथा का अत्यन्त सक्षिप्त रूप मिलता है।

१. बगीय पाठ मे इसका नाम धवल है, पश्चिमोत्तरीय पाठ मे शखशबल।

२ प्रचलित वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत मे सभी वानर और राक्षस कामरूपी तथा आकाशगामी माने जाते है। जैनी रामकथाओ के विद्याधर भी इन गुणो से सम्पन्न है।

३. बलरामदास रामायण (उत्तरकाण्ड) मे भी पवन तथा अजना के रमण करने का उल्लेख है।

तुम्हारी सहायता करूँगा—अहं **वानररूपेणसंभूय पवनात्मज- साहाय्य ते करिष्यामि।** **बृहद्धर्म पुराण** (अ० १८) की रामकथा महाभागवत पुराण की रामकथा से बहुत भिन्न नही है, इसमे भी शिव की इस प्रतिज्ञा का उल्लेख है। **नारद पुराण** (पूर्वखण्ड, अ० ७६) और **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (कृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ६२, ६२) मे हनुमान् को शिव के अंश से उत्पन्न माना गया है—**रुद्रकलोद्भवः**। **महानाटक** (६, २७) मे रावण यह देखकर कि रुद्रावतार हनुमान् द्वारा लका जलाई जा रही है, कहता है—"मैंने अपने दस सिर चढाकर दस रुद्रो को प्रसन्न किया था, यह हनुमान् ग्यराहवे रुद्र के अवतार हैं। **कम्ब रामायण** (५, १३) तथा **तत्त्वसंग्रह रामायण** (७, २) मे रुद्रावतार के रूप मे हनुमान् का उल्लेख किया गया है। **कृत्तिवासीय रामायण** (६, १२६) के अनुसार सीता रामाभिषेक के बाद हनुमान् को अन्न परोसती थी। हनुमान् को भोजन से तृप्त करने मे अपने को असमर्थ पाकर वह आश्चर्यचकित हुईं तथा ध्यान लगाकर समझ गई कि हनुमान् शिव के अवतार है। शिव की वन्दना करके ही वह हनुमान् को तृप्त करने मे समर्थ हुई। आनन्द रामायण (१, ११), तुलसीकृत दोहावली (१४२-३), विनयपत्रिका, हनुमान् बाहुक, राममोहन वन्ध्योपाध्याय कृत रामायण आदि रचनाओ मे भी हनुमान् के रुद्रावतार होने का उल्लेख है।

६७१. **भविष्य पुराण** (प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थखड अध्याय १३, ३१-३६) मे भी हनुमान् की जन्मकथा को एक ऐसा रूप दिया गया है कि केसरी ही हनुमान् के पिता बन जाते है किन्तु साथ-साथ रुद्र तथा वायु दोनो भी हनुमान् की उत्पत्ति मे सहायक है। रावण से त्रस्त होकर देवताओ ने ग्यारह वर्ष तक शिव की पूजा करने के बाद यह वरदान प्राप्त किया था कि शिव रावण का विरोध करने के उद्देश्य से अवतार लेगे। शिव ने इस प्रकार अवतार लिया। अजना गौतम की पुत्री थी, शिव ने रौद्र तेज के रूप मे उसके पति केसरी के मुख मे प्रवेश किया। इसके फलस्वरूप केसरी ने स्मरातुर होकर अपनी पत्नी के साथ सभोग किया। इतने मे वायु ने भी केसरी के शरीर मे प्रविष्ट होकर अजना के साथ रमण किया। दम्पति के बारह वर्ष तक सभोग करने के बाद अजना गर्भवती हुई तथा उसने एक 'वानरानन' पुत्र को जन्म दिया। अपने पुत्र को कुरूप देखकर अजना ने उसे पर्वत पर से नीचे फेक दिया।

नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित **शिवपुराण** (शतरुद्र खण्ड, अध्याय ३६-४२) मे जो विस्तृत हनुमच्चरित मिलता है वह भविष्य पुराण का स्मरण दिलाता है। इसके अनुसार प्रभजन ने केसरी की पत्नी अजनी से रुद्रांशावतार हनुमान् को उत्पन्न किया था। अंजनी ने अपने पुत्र का वानर मुख देखकर उसे जन्म के पश्चात् ही पर्वत के शिखर से नीचे गिरा दिया जिससे भूकम्प हुआ।

किया था, विवाह के पूर्व ही पवनजय ने अजना कुमारी की सखी के मुँह से अपनी निन्दा सुन रखी थी, इसलिए वह २२ वर्ष तक अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रहा। तब वह रावण की ओर से वरुण के विरुद्ध युद्ध करने गया, किसी संध्या को अजना के प्रति उसका अनुराग जाग्रत हुआ जिससे वह आदित्यपुर लौटा और छिपकर अपनी पत्नी से मिला। उसने उसी रात को पुनः युद्ध के लिए प्रस्थान किया। इस गुप्त मिलन के फलस्वरूप अजना कुमारी गर्भवती हुई, पति की अनुपस्थिति मे गर्भ होने के कारण अजना कुमारी को अपनी सखी वसन्तमाला के साथ ससुराल तथा मायके दोनो से निकाल दिया गया। इस निष्कासन का परोक्ष कारण यह माना गया है कि पूर्वजन्म मे उसने एक सपत्नी की जिन-प्रतिमा उठाकर घर के बाहर रख दी थी। उसने एक गुफा मे पुत्र को जन्म दिया। बाद मे अजना का मामा प्रतिसूर्यक उसे पुत्रसहित हनुरुहपुर ले गया। हनुरुहपुर की ओर जाते समय बालक अपनी माता की गोद से उछलकर पर्वत की शिला पर जा गिरा। विमान से उतरकर अजना ने देखा कि बालक के गिरने से पहाड चूर्ण-चूर्ण हो गया है, इससे उसका नाम श्रीशैल रखा गया। युद्ध से लौटकर पवनजय ने अपनी पत्नी के सतीत्व का साक्ष्य दिया और अजनाकुमारी पुत्रसहित अपनी ससुराल लौटी, हनुरुहपुर मे रहने के कारण बालक का हनुमान् नाम प्रचलित होने लगा।[1] गुणभद्र के **उत्तरपुराण** (पर्व ६८, २७५-२८०) के अनुसार विद्युत्कान्त नगर के राजा प्रभजन ने अपनी पत्नी से अमिततेज नामक पुत्र उत्पन्न किया। अमिततेज ने किसी दिन विजयार्थ पर्वत पर दाहिना पैर रखकर बाएँ पैर से सूर्य पर प्रहार किया, अनन्तर त्रसरेणु जैसा अपना छोटा-सा शरीर बना लिया जिससे उसका अणुमान नाम चल पडा।

(इ) रुद्रावतार

६७० अनेक शैव पुराणो मे तथा बहुत सी अर्वाचीन रचनाओ मे हनुमान् को शिव का अवतार माना गया है। प्रारभ मे उनके **रुद्रावतार** अथवा रुद्राश होने का उल्लेख मात्र मिलता है किन्तु परवर्ती रचनाओ मे इसके विषय मे विभिन्न कथाओ की कल्पना कर ली गई है। **स्कंदपुराण** की अधिकाश सामग्री आठवी शताब्दी के बाद की है, उस पुराण के अवन्तीखण्ड (चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य, अ० ७९) तथा रेवाखण्ड (अ० ८४) मे हनुमान् को रुद्रांश कहा गया है। **महाभागवत पुराण** (अ० ३७) के अनुसार, जिस समय विष्णु रावण के नाश के लिए अवतार लेने की प्रतिज्ञा करते हैं, उस समय शिव ने विष्णु से कहा था कि मैं वायु का पुत्र बनकर वानर के रूप मे

---

१. हस्तिमल्लकृत अजनापवनजय मे प्रस्तुत कथा को एक किंचित् भिन्न रूप दिया गया है। (दे० अनु० २३९)।

६७४. उड़िया साहित्य मे हनुमान् की जन्मकथा मे **पार्वती** का भी उल्लेख किया गया है। सारलादास के **महाभारत** (वनपर्व) के अनुसार अहल्या ने अपनी पुत्री को यह शाप दिया था—तुम्हारा लड़का बन्दर ही होगा (दे० अनु० ५१४)। इस कारण से अजना ने विवाह करना अस्वीकार कर दिया और तपस्या का जीवन अपनाया। उसके शरीर के चारो ओर वल्मीक बन जाने के बाद पवन देवता, गौतम के अनुरोध पर सप्ताह मे एक बार अजना को भोजन देने लगे। उधर शिव और पार्वती अपने विवाह के पश्चात् वन मे विभिन्न पशुओ का रूप धारण कर क्रीडा करते थे, इस प्रकार उन्होने ब्रह्मा का वाहन तथा जाम्बवान् को उत्पन्न किया। अन्त मे वानर-वानरी के रूप मे रमण करते समय पार्वती शिव का तेज सहन न कर सकी। तेज पृथ्वी पर गिर गया और उससे विभिन्न धातुएँ उत्पन्न हुई। शिव ने तेज का थोडा सा अश पवन को दिया, पवन ने उसे अजना को प्रदान किया और वह हनुमान की माता बन गई। अर्जुनदासकृत **रामविभा** (सर्ग ४) मे जो हनुमत्कथा मिलती है वह सारलादास के महाभारत पर आधारित है। अन्तर यह है कि यहाँ अहल्या अजना को अधी बन जाने का भी शाप देती है, अजना प्रतिदिन पवन का स्मरण करती है और वह उसे भोजन दिया करते है। १६वी शताब्दी के प्रारभ मे दक्षिण भारत मे निम्नलिखित कथा प्रचलित थी—किसी दिन ईश्वर और परमेश्वरी ने अपने नृत्य मे देवताओ को निमन्त्रित किया था। अतिथि आने लगे थे कि परमेश्वरी ने दो वानरो को क्रीडा करते हुए देखा और ईश्वर से वानर-वानरी के रूप में क्रीडा करने की प्रार्थना की। ईश्वर ने इसे स्वीकार किया और दोनो वन की ओर सिधारे। देर हो जाने पर देवताओ ने वायु को दोनो की खोज मे भेज दिया। इतने मे ईश्वर-परमेश्वरी ने फिर अपना प्राकृतिक रूप धारण कर लिया था। क्रीडा के फलस्वरूप परमेश्वरी का गर्भाधान हुआ, एक वानर को जन्म देने की आशका से उन्होने वायु से निवेदन किया कि वह भ्रूण को निकाल कर किसी अन्य स्त्री को प्रदान करे। इसपर वायु ने वह भ्रूण अजना के गर्भ मे पहुँचाया, जिससे उसने बाद मे एक वानर को प्रसव किया। (पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ४२-४४)। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ और ४ मे वही कथा मिलती है।

रामब्रह्मानन्दकृत **तत्वसंग्रह रामायण** (४, १२) मे इस कथा का सक्षिप्त रूप मिलता है, किन्तु उसमे शिव और पार्वती के वानर-वानरी का रूप धारण करने का उल्लेख नही है। कालिका पुराण (अध्याय ४८-५२) मे इस वृत्तान्त का पूर्व रूप सुरक्षित है। उसके अनुसार पार्वती ने भृगी तथा महाकाल नामक शिवगणो को वानरमुख मनुष्य के रूप मे जन्म लेने का शाप दिया। उन दोनो का अनुरोध स्वीकार कर शिव

६७२. भविष्य पुराण की उपर्युक्त कथा मे अजना गौतम की पुत्री मानी जाती है। वास्तव मे हनुमान् की बहुत सी जन्मकथाओ के अनुसार **गौतम-पुत्री अंजना** शिव के वरदान से हनुमान् की माता बन गई थी। इन जन्मकथाओ के विकास की रूप-रेखा इस प्रकार है। **कथासरित्सागर** पर आधारित अनेक कथाओ मे गौतम अपनी पुत्री को गर्भवती बन जाने का शाप देते है क्योकि उसने अपनी माता अहल्या का व्यभिचार प्रकट नही किया था (दे० अनु० ३४७)। एक **गुजराती दन्तकथा** के अनुसार अजना अपने पिता का शाप सुन कर शिव से वरदान प्राप्त करने के उद्देश्य से तपस्या करने लगी। शिव की आज्ञा से नारद ने अजनी के कान मे मत्र कह दिया जिसके प्रभाव से उसने हनुमान् को जन्म दिया। उसका पुत्र इसलिए वानर के रूप मे प्रकट हुआ कि अजनी मत्र ग्रहण करते समय कैशी नामक वानर की ओर देख रही थी।[1] श्याम के **रामकियेन** मे अजनी का नाम स्वाहा है। वह अपने पिता गौतम से अपनी माता का व्यभिचार प्रकट करती है, जिसपर उसकी माता उसे पुत्र प्रसव करने तक एक पैर पर खडा रहने का शाप देती है। शिव स्वाहा की दयनीय दशा पर तरस खाते हैं और अपनी शक्ति तथा अपने अस्त्रो की शक्ति के साथ वायु को स्वाहा के पास भेजकर उन्हे स्वाहा के मुँह मे रखने का आदेश देते है। फलस्वरूप तीन महीने के बाद हनुमान् स्वाहा के मुँह से वानर के रूप मे निकलते हैं। **धर्मखण्ड** (अ० १८) तथा सारलादास के **उड़िया महाभारत** के आदि-पर्व (पृ० ६०) के अनुसार भी हनुमान् शिव के अवतार तथा गौतम की पुत्री अजनी की सन्तान हैं।

६७३ **शिवमहापुराण** की शतरुद्रसहिता (अ० २०) के अनुसार विष्णु को **मोहिनी** के रूप मे देखकर शिव का वीर्यपतन हुआ था। सप्तर्षियो ने उस वीर्य को गौतम की पुत्री अजना के कान मे रख दिया था और बाद मे अजना ने हनुमान् को जन्म दिया। इस वृत्तान्त से मिलती-जुलती कथाएँ अन्यत्र भी पाई जाती है।[2]

---

१. ई० एटहोवेन-फॉकलोर आव गुजरात, इ० ए० भाग ४०, सप्लेमेट, पृ० ५४।
२. उदाहरणार्थ--एशियाटिक रिसर्चस्, भाग ११, पृ० १४१. इडियन एटिक्वरी, भाग ११, पृ० २२९, डब्लू० क्रूक, ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग १, पृ० २६९, एच० ए० रोस, ए ग्लॉसरी ऑव दी ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स, भाग २, पृ० ३९१; सेरीराम की स्फल्स पाण्डुलिपि (बुलटिन स्कूल ऑफ ओरियेंटल स्टडीस, भाग २६, पृ० ५३४)। बैगा-भूमिया जाति की एक दन्त-कथा के अनुसार भगवान ने पार्वती का रूप धारण कर महादेव को मोहित कर दिया। इस कथा मे सप्तर्षियो के स्थान पर भीमसेन का उल्लेख है जिसने महादेव का तेज करिअन्दनी के कान मे रख दिया और उस करि-अन्दनी से हनुमान् का जन्म हुआ (दे० अनु० २७६)।

आनन्द रामायण (१,१,१०४-१०७) मे एक सुवर्चला नामक अप्सरा की कथा मिलती है। नृत्य-दोष के कारण ब्रह्मा ने उसे गृध्री बन जाने का शाप दिया था तथा उसे यह भी वरदान दिया था कि कैकयी का पायस अजनिपर्वत पर फेंकने पर वह फिर अप्सरा बन जाएगी। समय आने पर गृध्री ने कैकेयी के हाथ से पायस छीन लिया तथा उसे अजनी पर्वत पर फेक कर तथा अपना निज स्वरूप प्राप्त कर फिर स्वर्ग चली गई।[1] उसी रचना के अन्य स्थल के अनुसार केसरी की पत्नी अजनी ने गृध्री के मुख से गिरा हुआ पायस तो खाया किन्तु बाद मे उसने वायु के साथ भी रमण किया था (दे० ऊपर अनु० ६६८)।

६७७. मराठी भावार्थ रामायण पर आनन्द रामायण की गहरी छाप है। इसमे उपर्युक्त कथा का किंचित् परिवर्तित एव विकसित रूप मिलता है। सुवर्चसा नामक अप्सरा शापवश गृध्री बन गयी थी। उसने कैकेयी के हाथ से पायस छीन लिया तथा उसे खाकर वानरी मे बदल गई। वानरी के रूप मे वह अजनी, गौतम की पुत्री तथा केसरी की पत्नी बन गयी। पायस खाने के फलस्वरूप उसने हनुमान् को जन्म दिया (दे० बालकाण्ड, अध्याय २ तथा किष्किधा काण्ड, अध्याय १ और १०)।

६७८ गुजरात की एक दन्तकथा के अनुसार भी गृध्री ने पायस को अजनी के हाथ मे गिराया था।[2] एक अन्य कथा मे अजनी नामक ब्राह्मणी शिव से सतति का वरदान प्राप्त कर तथा उनके आदेशानुसार चील द्वारा गिराया हुआ पायस खाकर गर्भवती हुई और हनुमान की माता बन गई। इस कथा के अनुसार मारुत नामक पवन के एक दूत ने पायस की रक्षा की तथा उसे अजनी के हाथ पर गिरने मे सहायता की थी, इसलिए अजनी के पुत्र का नाम मारुती रखा गया था।[3]

(ऊ) उपसहार

६७९ प्रस्तुत परिच्छेद से स्पष्ट है कि शताब्दियो से चली आती हुई हनुमान् की जन्मकथा विभिन्न रूप धारण करती रही। फिर भी इन कथाओ की उत्पत्ति और विकास की रूपरेखा अस्पष्ट नही है।

प्रारभ मे हनुमान् के चरित्र की विशेषताओ को दृष्टि मे रखकर उन्हे वायुपुत्र (अर्थात् ऐद्रजालिक अथवा विद्याधर) की उपाधि से विभूषित किया गया।

---

१. सी० कोलमैन के ग्रन्थ (पृ० ५८) मे इस कथा का सकेत मिलता है—दे० दि मिथालॉजी ऑव दि हिन्दूस (लन्दन १८३२)

२. दे० आर० ई० एण्टहोवेन, इ० ए०, भाग ४०, सप्लेमेट, पृ० ५४।

३ दे० ई० मूर, दि हिन्दू पैंथियान, पृ० ३१६। पी० थोमस की 'लेजेड्स [illegible] था पाई जाती है।

और पार्वती ससार मे उतर कर चद्रशेखर तथा तारावती के रूप मे जन्म लेते हैं और वेताल तथा भैरव नामक दो वानरमुखी पुत्रो को उत्पन्न करते हैं।

(ई) राम के पुत्र

६७५. हिन्देशिया मे जो हनुमान् की जन्मकथा प्रचलित है, वह प्रधानतया दो भारतीय वृत्तान्तो के मिश्रण से उत्पन्न हुई है, अर्थात् गौतम की पुत्री अजनी की कथा (दे० ऊपर अनु० ६७२) तथा शिव-पार्वती के वानर-वानरी के रूप मे हनुमान को उत्पन्न करने की कथा (दे० अनु० ६७४)। इस अंतिम वृत्तान्त मे शिव-पार्वती के स्थान पर राम-सीता का उल्लेख हुआ है, जिसके फलस्वरूप वहाँ की सभी अर्वाचीन रामकथाओ मे हनुमान् को राम का पुत्र माना गया है।

हिकायत सेरीराम के अनुसार गौतम ऋषि ने अपनी पुत्री अजनी को १०० वर्ष तक मुह बाये एव सूई की नोक पर, समुद्र के बीच खडी रहने का शाप दिया (दे० ऊपर अनु० ५१४)। अपने वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता किसी दिन एक स्थल पर पहुँचे जहाँ दो सरोवर थे। एक ऋषि ने लक्ष्मण से कहा था कि स्वच्छ जल वाले सरोवर मे नहाने वाले मनुष्य पशु-रूप धारण कर लेते हैं और पकिल जल वाले सरोवर मे नहाने पर पुन. मनुष्य बन जाते हैं। लक्ष्मण का कहना न मानकर राम और सीता पहले सरोवर मे प्रवेश कर उसमे से वानर-वानरी के रूप मे निकले और वृक्षो पर क्रीडा करने लगे जिसके फलस्वरूप सीता गर्भवती हो गई। बडी कठिनाई से दोनो को फँसाकर लक्ष्मण ने उन्हे दूसरे सरोवर मे डुबा दिया जिससे वे पुनः मनुष्य का रूप प्राप्त कर सके। अनन्तर राम ने सीता का भ्रूण निकाल दिया और वायु ने उसे सुई की नोक पर खडी हुई अजनी के मुँह मे रख दिया। बाद मे अजनी ने कुण्डलो से अलकृत हनुमान् को जन्म दिया (अनु० ५१२)।

इस कथा मे राम-सीता दोनो मिलकर हनुमान् को उत्पन्न करते है। 'सेरीराम' के एक दूसरे पाठ के अनुसार सीता हनुमान् की माता नही है। तपस्या करती हुई अजनी को देखकर राम अनुरक्त हो जाते है और वीर्यपतन होने पर अपने वीर्य को पत्ते मे लपेट कर वायु के द्वारा अजनी के मुँह मे रखवाते है। श्याम के रामजातक मे राम सीता की खोज करते समय एक फल खाते है जिससे वह तीन वर्ष तक वानर ही बन जाते हैं। फायेंगसी (अजनी) ने भी वह फल खाया था। दोनो वानर-वानरी के रूप मे हनुमान् को उत्पन्न करते है।

(उ) विष्णु के अंशावतार

६७६. अनेक अर्वाचीन रामकथाओ से ऐसी ध्वनि निकलती है कि हनुमान विष्णु के अंशावतार है; यद्यपि इसका कही भी सुस्पष्ट उल्लेख नही होता।

भ्राता मम गुणश्लाघ्यो बुद्धिसत्वबलान्वितः ।
रामायणेऽतिविख्यात' शूरो वानरपुंगवः ॥११॥ (अध्याय १४७)

प्रचलित रामायण मे कई स्थलो पर हनुमान् की प्रशसा की गई है तथा प्राय. उनकी वीरता तथा प्रज्ञा पर विशेष बल दिया गया है ।[1] प्रस्तुत परिच्छेद मे सर्वप्रथम हनुमान् के इन दो गुणो से सबध रखने वाली सामग्री का विश्लेषण किया जायगा ।

परवर्ती साहित्य मे हनुमान् के चिरंजीवत्व, ब्रह्मचर्य तथा रामभक्ति का प्रायः उल्लेख मिलता है । अत' हनुमान् की उन विशेषताओं के क्रमिक विकास का निरूपण अपेक्षित है ।

अन्त मे हनुमान् के चरित्र-चित्रण के विकास की चरम सीमा, अर्थात् उनके देवत्व पर विचार किया जायगा ।

(अ) पराक्रम

६८२. प्रारभ से ही बल तथा पराक्रम हनुमान् की प्रमुख विशेषता मानी जाती थी । इसका प्रमाण हमे प्रचलित रामायण मे मिलता है जहाँ उनको प्रायः कोई पराक्रम-सूचक विशेषण दिया जाता है, सर्वाधिक प्रयुक्त विशेषण ये हैं—वीर, वीर्यवान, महाबल, महातेजाः, महाबाहु, महावेग, भीमविक्रम, अरिन्दम । इनके अतिरिक्त हनुमान् के लिए निम्नलिखित विशेषणो का भी प्रयोग हुआ है—बलवान्, बली, अतिबल, अतिमहाबल, बलवीर्यसवृत, महासत्त्व, सत्त्वसम्पन्न, सत्त्वान्, समर्थ, दुर्धर्ष, गतश्रम, जितश्रम, अपरिश्रान्त, वज्रसहनन, महाभुज, सुमहाबाहु, महाकाय, भीम, महोत्कट, भीमकर्मा, दुर्निवारण, तेजस्वी, सुमहातेजाः, अमितौजसा', वेगवान्, अतिवेग, वेगसम्पन्न, मारुततुल्यवेग, तरस्वी, मारुतवेगविक्रम, मनोजव, आशुचर, घनतुल्यनिःस्वन, मेघस्वनमहास्वन, घननादनि'स्वन, महावीर, महावीर्य, महोत्साह, विक्रान्त, चण्डविक्रम, अमितविक्रम, उत्तमविक्रम, विक्रम, पितृतुल्यविक्रम, वायुविक्रम, पितृतुल्यपराक्रम, मारुतविक्रम, गरुडानिलविक्रम, धीरपराक्रम, चण्डपराक्रम, रणचण्डविक्रम, मनःसतापविक्रम, परन्तप, अरिमर्दन, अरिसूदन, शत्रुकर्षण, परवीरघ्न, परवीरहन्ता, शत्रुविनाशन, शत्रुसैन्यानां निहन्ता, शत्रुपराजयोचित ।

---

१ उदाहरणार्थ बालकाण्ड (सर्ग १७) का यह उद्धरण:

मारुतस्यौरसः श्रीमान् हनुमान्नाम वानरः ।
वज्रसंहननोपेतो वैनतेयसमो जवे ॥१६॥
सर्ववानरमुख्येषु बुद्धिमान् बलवानपि ।

सुग्रीव (५, ६३), सीता (६, ११३ और १२८) और अगस्त्य (७, ३५) सभी हनुमान् के पराक्रम तथा प्रज्ञा का विशेष रूप से गुणगान करते हैं ।

प्रचलित रामायण की कथा 'वायुपुत्र' नाम पर ही आधारित है, इसके अनुसार हनुमान् वास्तव मे वायु देवता के पुत्र है और केसरी की पत्नी अजना से जन्म लेते हैं। हनुमान् की यह जन्मकथा सबसे प्राचीन है, सब से व्यापक है तथा अन्य जन्मकथाओ का मूलस्रोत भी है। जैन रामायणो मे जो जन्मकथा विद्यमान है, वह स्पष्टतया रामायणीय कथा पर निर्भर है।

सभवतः आठवी शताब्दी और निश्चित रूप से दसवी शताब्दी से लेकर हनुमान् शिव के अवतार माने जाने लगे। हनुमान् की जन्मकथा का यह विकास स्वाभाविक प्रतीत होता है। रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे शिव के लिए कोई स्थान नही था। रामकथा की बढती हुई लोकप्रियता को देखकर शैव इसकी अवहेलना न कर सके, अत. उन्होने सुन्दरकाण्ड के नायक हनुमान् को रुद्रावतार मान लिया। इस वर्ग की जन्मकथाओ का प्रारभिक रूप रामायणीय वृत्तान्त से सीधा सबध रखता है, किन्तु आगे चलकर रुद्रावतार हनुमान् की अन्य जन्मकथाओ की कल्पना कर ली गई है। हनुमान् की जन्मकथाएँ जो दशरथ-यज्ञ के पायस से सम्बन्ध रखती है अर्वाचीन है और कम प्रचलित है। विदेश मे ही हनुमान् को राम का पुत्र माना गया है।

इन समस्त कथाओं मे हनुमान् की माता अजना (अजनी) ही है और एकाध वृत्तान्त को छोड़कर वायु भी उनकी उत्पत्ति मे सहायक माने जाते हैं। अतः यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि हनुमान् की कोई ऐसी जन्मकथा नही मिलती जो रामायणीय कथा से अलग, स्वतत्र रूप से उत्पन्न हुई हो।

ख। चरित्र-चित्रण का विकास

६८०. हनुमान् की जन्मकथा की तरह उनके चरित्र-चित्रण का विकास भी अत्यन्त रोचक है। वह वानर-गोत्रीय आदिवासी थे (दे० ऊपर अनु० ११०), किन्तु आगे चलकर उन्हे रामकथा के अन्य आदिवासियो के साथ वानर भी माना गया है। प्रचलित रामायण मे हनुमान् के वानरत्व-विषयक विशेषणो का बाहुल्य देखकर प्रतीत होता है कि वाल्मीकि के समय के पूर्व ही यह धारणा मान्यता प्राप्त करने लगी थी।

६८१ वाल्मीकि ने आदि रामायण मे हनुमान् को सुग्रीव[1] के पराक्रमी तथा बुद्धिमान मत्री के रूप मे प्रस्तुत किया था। फलस्वरूप बाद के राम-साहित्य मे भी हनुमान् के पराक्रम तथा बुद्धिमत्ता को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। महाभारत के आरण्यक पर्व मे भीम हनुमान् का इस प्रकार परिचय देते हैं:

१. उत्तरकाण्ड के अनुसार हनुमान् के गुरु सूर्य ने दक्षिणा के रूप मे हनुमान् से निवेदन किया कि वह उनके पुत्र सुग्रीव की सहायता करे (दे० अनु० ६८६)।

ने उत्तर दिया—"मैं अभी शरसेतु बना देता हूँ। यदि वह आपके भार से जलमग्न हुआ तो मैं अग्नि मे प्रवेश करूँगा।" हनुमान् ने अपनी ओर से यह प्रतिज्ञा की—"यदि मेरे अगूठे के भार से सेतु नही नष्ट हुआ, तो मैं आपकी ध्वजा पर बैठकर आपकी सहायता किया करूँगा।" इस पर अर्जुन ने समुद्र पर 'शतयोजनविस्तीर्ण' शरसेतु बना दिया तथा हनुमान् ने अपने अँगूठे से उसको समुद्र मे मग्न कर दिया। यह देखकर अर्जुन चिता तैयार करने लगे कि कृष्ण वटु के रूप मे वहाँ पहुँचे। सारा हाल सुनकर वटु ने कहा—"साक्षी के अभाव मे आप दोनो का कार्य व्यर्थ हुआ। मेरे सामने ही अपना सामर्थ्य दिखाइये।" अबकी बार कृष्ण ने सेतु के नीचे अपना चक्र रख दिया जिससे हनुमान् कुछ न कर सके। वे तुरन्त ही समझ गये कि वटु भगवान ही है। इस पर वटु ने कृष्ण का रूप धारण कर हनुमान् का आलिगन किया। तब भगवान् ने सेतु भी जल मे डुबाकर अर्जुन का गर्व दूर किया। उस समय से हनुमान् अर्जुन की ध्वजा पर विराजमान है (दे० अनु० ७१३)।

प्रस्तुत कथा का एक दूसरा रूप तत्वसग्रह रामायण (७, ४) मे मिलता है। इसके अनुसार अर्जुन ने एक बार कृष्ण से कहा—"मै तो समुद्र पर शर-सेतु बना सकता हूँ, राम ने वानरो द्वारा सेतु क्यो बनवाया था?" कृष्ण ने उत्तर दिया कि यह महाकाय वानरो के कारण हुआ, जो उस पुल पर समुद्र पार करने वाले थे। इस पर अर्जुन ने गर्व मे कहा—मेरा शरसेतु कोई भी बोझ सहन कर सकता है। तब कृष्ण ने अर्जुन द्वारा सेतु बनवाकर हनुमान् को बुलाया। यह सेतु हनुमान् के चढते ही टूटने लगा किन्तु भगवान् ने वाराह का रूप धारण कर उसे सभाला। इसके बाद हनुमान् ने कृष्ण का अनुरोध स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि मैं महाभारत के युद्ध के अवसर पर अर्जुन के झण्डे पर विराजमान रहूँगा। सारलादास के महाभारत (मध्य पर्व) मे भी उपर्युक्त कथा पाई जाती है, गोस्वामी तुलसीदास ने बाहुक (छन्द ७) मे इसकी ओर सकेत किया है। बलरामदासकृत उडिया 'कर्णदान' काव्य की कथा 'आनन्द रामायण' के वृत्तान्त से मिलती-जुलती है। पद्मवन मे हनुमान् तथा अर्जुन की भेट हो जाने पर दोनो अपनी-अपनी महिमा का वर्णन करने लगते है। हनुमान् से सेतु का उल्लेख सुनकर अर्जुन ने तीस योजन का शरसेतु बना दिया। सेतु को हनुमान् के विश्वरूप का भार सहन करने मे असमर्थ देखकर अर्जुन ने भगवान् का स्मरण किया तथा भगवान् ने रोहू बनकर शरसेतु को नीचे से सभाल लिया और बाद मे हनुमान् तथा अर्जुन का मेल कराया।

महाभारत के युद्ध के अवसर पर अर्जुन के गर्वनिवारण की प्राचीनतम कथा **सारलादासकृत महाभारत** के कर्णपर्व मे सुरक्षित है। कर्ण के साथ युद्ध करते समय अर्जुन को गर्व हुआ कि कर्ण के बाण मारने पर मेरा रथ थोडा सा ही हट जाता है किन्तु

इस विस्तृत शब्दावली को ध्यान मे रखकर हमे आश्चर्य नही होगा कि हनुमद्विषयक परवर्ती कथाओ मे से अधिकाश कथाएँ उनके पराक्रम से ही सम्बन्ध रखती है। **आनन्द रामायण** (८, ७, १२३) मे माना गया है कि सभी वीर हनुमान् के अवतार ही हैं—**ये ये वीरास्त्वत्र भूम्यां वायुपुत्रांशरूपिण**।

६८३. रामायण की आधिकारिक कथावस्तु मे हनुमान् के महत्त्वपूर्ण कार्यों का सिंहावलोकन ऊपर हो चुका है (अनु० ६५६)। यहाँ पर इनकी वीरता के वर्णन मे बढती हुई अतिशयोक्ति तथा अलौकिकता की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करना उचित होगा। उनके समुद्रलघन की कथा सभवतः किसी आश्चर्यजनक तथा असाधारण लघन के आधार पर उत्पन्न हुई है (दे० ऊपर अनु० ११२)। लङ्का-दहन, ओषधि-पर्वत का आनयन, जन्म के बाद ही सूर्य तक लाँघना, ये सब वृत्तान्त प्रचलित रामायण मे प्रक्षिप्त हैं। परवर्ती रामकथाओ मे भी बहुत से नये वृत्तान्त हनुमान् की वीरता पर बल देते है। उनमे जो वृत्तान्त रामकथा से सीधा सम्बन्ध रखते है, उनका यथास्थान निरूपण हो चुका है। इनके अतिरिक्त भीम, अर्जुन तथा गरुड से हनुमान् की मुठभेड के वृत्तान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

६८४. महाभारत मे **हनुमान्-भीम-संवाद** का प्राचीनतम रूप सुरक्षित है। इस प्रसङ्ग मे हनुमान् की विद्वत्ता के अतिरिक्त उनके बल का विशेष ध्यान रखा गया हैं। हिमालय के मार्ग मे सोये हुए हनुमान् को जगा कर भीम उनसे हट जाने का निवेदन करते हैं। हनुमान् उत्तर मे कहते है—कृपया मेरी पूँछ हटाकर निकल जाइए। यह सुनकर भीम अपने बाये हाथ से पूँछ उठाने लगे। किन्तु उसे हिलाने मे असमर्थ होकर उन्होंने दोनो हाथ लगाए, फिर भी पूँछ टस से मस नही हुई। अन्त मे भीम ने अपनी हार मानकर क्षमा माँगी और हनुमान् ने अपना परिचय दिया तथा भीम का अनुरोध स्वीकार कर उनको समुद्रलघन के समय का अपना रूप भी दिखलाया। इसके बाद उन्होंने भीम को चार युगो तथा चार वर्णो का धर्म सिखलाया तथा महाभारत के भावी युद्ध मे सहायता करने का आश्वासन दिया (दे० आरण्यक-पर्व, अध्याय १४७-१५०)।

६८५. हनुमान् द्वारा **अर्जुन** के गर्व-निवारण के विषय मे अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। **आनन्द रामायण** के मनोहरकाण्ड के 'हनुमता शरसेतुभङ्ग' नामक १८वे अध्याय मे निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। विष्णुदास ने रामदास से पूछ लिया कि अर्जुन का **'कपिध्वज'** नाम क्यो रखा गया। इस पर रामदास उत्तर देते हैं कि द्वापर के अन्त मे अर्जुन किसी दिन रामेश्वर के पास धनुष्कोटितीर्थ पर हनुमान् से भेट होने पर कहने लगे—"सेतु-निर्माण मे व्यर्थ परिश्रम हुआ। शरसेतु क्यो नही बना था ?" हनुमान् ने कहा—"मुझ जैसे कपियो के भार से सेतु समुद्र मे डूब जाता।" अर्जुन

लिया तथा सत्यभामा को सीता का रूप धारण करने को कहा। सत्यभामा सीता का रूप बनाने मे असमर्थ हुई ; रुक्मिणी को सीता का भाग लेना पड़ा और सत्यभामा की सखियाँ उसकी हँसी उड़ाने लगी। हनुमान् ने 'राम' के चरणो पर नील कमल रखकर गरुड़ को अपनी काँख से निकलने दिया। उससे मिलती-जुलती कथाएँ अन्यत्र भी पाई जाती हैं (दे० ई० मूर, वही, पृ० २१८)।

६८७ हनुमान् के पराक्रम के विषय मे अन्य सामग्री का अभाव नहीं है। **पउमचरियं** (पर्व १६) के अनुसार हनुमान् ने रावण के साथ वरुण के विरुद्ध युद्ध करते हुए वरुण के सौ पुत्रो को कैद कर लिया। इस रचना के अन्य स्थाल पर (पर्व ५०) इसका वर्णन किया गया है कि किस प्रकार हनुमान् ने अपने दादा महेन्द्र को सेना सहित परास्त किया था। स्कंदपुराण (ब्राह्मखण्ड, धर्मारण्य, अध्याय ३६-३८) मे हनुमान् के प्रभाव से धर्मारण्य के निवासियो की सुख-शांति तथा हनुमान् द्वारा कुंभीपाल की पराजय से वहाँ के ब्राह्मणो की सुरक्षा का वर्णन किया गया है। आनन्दरामायण के राज्यकाण्ड (सर्ग १८) के अनुसार राम ने ब्राह्मणो को रामनाथपुर का राज्य प्रदान किया तथा हनुमान् को उनकी सहायता के लिए नियुक्त किया। बाद मे हनुमान् ने देवालय की पाषाण-मूर्ति से प्रकट होकर एक दुष्ट राजा को शूली पर चढाया और इस प्रकार रामनाथपुर की रक्षा की थी। मनोहर काण्ड (सर्ग १२२) मे स्त्रीराज्य की कथा मिलती है। एक रामभक्त ब्राह्मण की सहायता के लिए प्रकट होकर हनुमान् ने अपने गर्जन से सब पुरुषो को मार डाला जिससे उस देश का नाम स्त्रीराज्य रखा गया। **भावार्थ रामायण** (७, १) मे भी राम द्वारा हनुमान् को स्त्रीराज्य भेजे जाने का वृत्तान्त मिलता है।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ मे[1] वीरमाता अजना के विषय मे माना जाता है कि उसने अपने दूध की धारा से एक पर्वत-श्रेणी को बहा दिया था। जनता मे प्रचलित दन्तकथा के अनुसार लका से अयोध्या जाते समय पुष्पक अजना के यहाँ उतरा था, उस अवसर पर अजना ने लक्ष्मण का सन्देह दूर करने के लिए इस कार्य के द्वारा हनुमान् के पराक्रम का प्रमाण दिया।

बगाल मे मनसा देवी की कथा अत्यन्त लोकप्रिय है, इसमे भी हनुमान् की वीरता का वर्णन किया गया है। मनसा देवी हनुमान् की सहायता से ही चाँद सौदागर का मधुकर नामक जहाज डुबाने मे समर्थ हुई।[2]

१. दे० सी० कोलमैन, दि मिथोलॉजी ऑव दि हिन्दूस (लन्दन १८३२) पृ० ५८।

२ दे० डी० सी० सेन, हिस्टरी ऑव दि बगाली लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर (कलकत्ता १९११), पृ० २५२।

मेरे बाण से कर्ण का रथ चौगुनी दूर तक पीछे हट जाता है । किन्तु कृष्ण ने यह कहकर कर्ण की ही प्रशसा की कि कर्ण का रथ हलका है, और यह रथ मेरु मन्दर की तरह भारी है, इसपर सभी देवता विद्यमान हैं और हनुमान् झडे पर विराजमान है, फिर भी कर्ण इसे अपने बाणो से पीछे हटा देता है । परवर्ती कथाओ मे हनुमान् कृष्ण का सकेत पाकर रथ से अलग हो गये जिससे कर्ण के बाण मारने पर अर्जुन का रथ दूर तक हट गया था ।

६८६. गरुड़ के गर्वनिवारण की कथाएँ अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रतीत होती हैं । फिर भी कृत्तिवास (दे० अनु० ५८६) तथा तुलसीदास ने (दे० विनयपत्रिका २८, ३) इसकी ओर सकेत किया है । गरुड के साथ-साथ प्रायः सुदर्शन चक्र तथा सत्यभामा के गर्वनिवारण का भी वर्णन मिलता है । इसके विषय मे सबसे प्रचलित कथा इस प्रकार है ।

"कृष्णावतार के समय भगवान् ने हनुमान् को बुलाकर उनको द्वारका के पास किसी उपवन मे निवास करने का निमत्रण दिया था । किसी दिन कृष्ण ने सत्यभामा, सुदर्शन तथा गरुड तीनो का गर्व दूर करना चाहा । उन्होने गरुड से कहा—अमुक वन मे रहनेवाले वन्दर को पकड लाओ । गरुड हनुमान् के पास पहुँचे और हनुमान् ने उन्हे ६०,००० योजन पर समुद्र मे फेक दिया । बाद मे कृष्ण ने गरुड को पुन: भेज दिया कि वह हनुमान् को द्वारका के राजभवन मे पधारने का, निमत्रण दे दे । इतने मे वह स्वय धनुर्धारी राम बन गए तथा सत्यभामा को सीता का रूप धारण करने को कहा । सुदर्शन से उन्होंने कहा—'सावधान रहो, कोई भी प्रवेश करने न पावे ।' हनुमान् गरुड से बहुत पहले द्वारका पहुँच गए तथा उन्होने सुदर्शनचक्र को मुँह मे डालकर राजभवन मे प्रवेश किया । उन्होंने रामरूपी कृष्ण के सामने नतमस्तक होकर तुरन्त पहचान लिया कि सत्यभामा सीता नही है, जिससे सत्यभामा को हार माननी पडी । उसी अवसर पर कृष्ण ने हनुमान् को अपना द्वारपाल नियुक्त किया ।"

बगाल मे एक अन्य कथा प्रचलित है । दाशरथि राय (१८०६ ई०-१८५७ ई०) की पचाली के 'सत्यभामा, सुदर्शनचक्र ओ गरुडेर दर्पचूर्ण' नामक अध्याय के अनुसार कृष्ण ने किसी अवसर पर गरुड को हिमालय से एक नील कमल ले आने का आदेश दिया । गरुड हिमालय सिधारे, जहाँ उनका और हनुमान् का युद्ध हुआ । हनुमान् ने गरुड़ को काँख मे दबाकर एक नील कमल के साथ द्वारका के लिए प्रस्थान किया । सुदर्शन ने हनुमान् को महल के द्वार पर रोकने का प्रयास किया किन्तु हनुमान् के शरीर का एक बाल भी काटने मे असमर्थ होकर उन्होंने अपनी हार स्वीकार कर ली । इतने मे कृष्ण ने यह देखकर कि हनुमान् भीतर आ रहे है, राम का रूप धारण कर

प्रतिज्ञा कराई कि मैं सुग्रीव की सहायता करूँगा। दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे उनके द्वारा पठित व्याकरण-विषयक ग्रन्थो का उल्लेख है अर्थात सूत्र (अष्टाध्यायी), वृत्ति (सूत्रवृत्ति), अर्थपद (वार्तिक), महार्थ (महाभाष्य)। उसी छन्द मे शास्त्र, वैशारद तथा छन्दगति मे हनुमान् की अद्वितीय पहुँच का उल्लेख भी केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है (दे० ३६, ४५)। गोविन्ददास के पाठ मे हनुमान् को नवव्याकरणवेत्ता कहा गया है।

महाभारत का आरण्यक पर्व उत्तरकाण्ड के रचनाकाल मे लिखा गया होगा। इसमे भी हनुमान्-भीम-सवाद मे हनुमान् को शास्त्रज्ञ के रूप मे प्रस्तुत किया गया है, वह भीम को चार युगो (अध्याय १४८) तथा चार वर्णों (अध्याय १४९) का धर्म सिखलाते हैं।

दाक्षिणात्य पाठ मात्र मे राम-लक्ष्मण से हनुमान् की प्रथम भेट के अवसर पर हनुमान् के विषय मे तीन वेदो तथा व्याकरण का ज्ञान उल्लिखित है। अन्य पाठो मे इस उल्लेख का अभाव सिद्ध करता है कि यह अश बाद का प्रक्षेप है। उद्धरण निम्नलिखित है :

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेव विभाषितुम् ॥२८॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहुव्याहरताऽनेन न किंचिदपशब्दितम् ॥२९॥

(किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग ३)

६९० इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीनकाल से ही रामायण के कुशीलव हनुमान् का ज्ञान-भण्डार बढाते रहे है। परवर्ती साहित्य मे हनुमान् की विद्वत्ता का बहुधा उल्लेख मिलता है। दाक्षिणात्य उत्तरकाड मे हनुमान् को छन्द-शास्त्र का विशेषज्ञ कहा गया है। सम्भवतः इसी कारण से उनको महानाटक (हनुमन्नाटक) की रचना का श्रेय दिया गया है। उस नाटक के अन्त मे लिखा है कि हनुमान् ने वाल्मीकि के अनुरोध से अपनी रचना को शिला पर लिखकर समुद्र में फेक दिया था तथा राजा भोज ने उसे निकलवाकर दामोदर मिश्र द्वारा इसका सम्पादन कराया था (दे० महानाटक, अक १४, ९४-६)। इसके सम्बन्ध मे कई कथाये प्रचलित है। एक वृत्तान्त के अनुसार वाल्मीकि ने राम से कहा—"हनुमान् के नाटक के रहते मेरे रामायण का आदर नही होगा। हनुमान् तो प्रत्यक्षदर्शी हैं, मुझे केवल ध्यान मे ही आपकी कथा का परिचय मिला। इसपर राम ने हनुमान् से कहकर महानाटक समुद्र मे फेकवा दिया। एक अन्य कथा मे वाल्मीकि तथा हनुमान् के वाद-विवाद का वर्णन है। वाल्मीकि ने रामायण मे लिखा है कि रावण के बाणो से आहत होकर राम के शरीर पर रक्त के कण दिखाई

(आ) बुद्धिमत्ता—

६८८ आदिकवि वाल्मीकि ने हनुमान् को पराक्रमी योद्धा के अतिरिक्त सुग्रीव के बुद्धिमान मन्त्री के रूप मे चित्रित किया था। फिर भी आदि रामायण मे संस्कृत तथा प्राकृत की जानकारी के अतिरिक्त हनुमान् के ज्ञान के विषय मे कोई विशेष विवरण नही दिया गया था। वाद मे वह बुद्धिमान् मन्त्री विद्वान् तथा शास्त्रज्ञ भी माने जाने लगे।

प्रचलित रामायण मे हनुमान् के मन्त्रित्व विषयक निम्नलिखित विशेषणो का प्रयोग मिलता है—सचिवोत्तम, मन्त्रिसत्तम, सुग्रीवसचिव, पिंगाधिपमन्त्री, कपिराजहितकर, प्लवगाधिपमन्त्रिसत्तम, पिंगाधिपति का आमात्य।

प्रज्ञा-सूचक विशेषणो मे से मतिमान् तथा महामति का सर्वाधिक प्रयोग हुआ; इनके अतिरिक्त ये भी आये हैं—प्राज्ञ, महाप्राज्ञ, सुमहाप्राज्ञ, मेधावी, बुद्धिमता वरिष्ठ, धीमान्, तत्त्ववित्, साधुवुद्धि, अचिंत्यवुद्धि; वाक्यज्ञ, वाक्यकोविद, वाक्यविशारद, वाक्यविदां श्रेष्ठ, प्रियवादी, कार्यविदा वर। हनुमान् के संस्कृत तथा प्राकृत दोनों भाषाओं पर अधिकार का उल्लेख सुन्दरकाड मे किया गया है। अशोकवन मे सीता को देखकर वह इसलिये संस्कृत नही वोलने का निर्णय करते हैं कि सीता उनको कही रावण न समझे :

वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम् ॥१७॥
यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ॥१८॥
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।

(सुन्दरकाड, सर्ग ३०)

६८९ संस्कृत तथा प्राकृत की इस जानकारी का निर्देश आदि रामायण में मिलता था अथवा नही, इसका निर्णय करना असभव है, किन्तु हनुमान् की विभिन्न शास्त्रो मे पहुँच का उल्लेख मूल-रामायण मे नही रहा होगा। हनुमान् की जन्मकथा मे उनको 'सर्वशास्त्रविदां वर' की उपाधि दी गई है (दे० ४, ६६, २), परन्तु ऊपर के विश्लेषण से यह जन्मकथा वाद का प्रक्षेप सिद्ध हुई है। एक अन्य स्थल पर भी उनको एक वार और 'सर्वशास्त्रविशारद' (दे० ४, ५४, ५) कहा गया है, इसके अतिरिक्त प्रचलित रामायण के किष्किंधाकाड मे उनके विषय मे लिखा है—निश्चितार्थोऽर्थतत्त्वज्ञ कालधर्मविशेषवित् (४, २९, ६) और 'विदिताः सर्वलोकास्ते' (४, ४४, ४)। अधिक संभव है कि ये उद्धरण वाद के प्रक्षेप हो।

उत्तरकाण्ड के रचनाकाल मे यह माना जाने लगा था कि हनुमान् ने सूर्य की सहायता से व्याकरण का अध्ययन किया था और सूर्य ने दक्षिणास्वरूप हनुमान् से यह

महायशा, कीर्त्तिमान्, यशस्वी आदि कहा गया है तथा भीम भी अपने भाई का परिचय देते हुए कहते है कि हनुमान रामायण मे अति विख्यात हैं (दे० महाभारत ३, १४७, ११)। महाभारत का **रामोपाख्यान** रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है, उसमे राम अथवा देवताओ द्वारा हनुमान् को प्रदत्त किसी भी वरदान का उल्लेख नही है। युद्ध के अन्त मे सीता हनुमान् से कहती हैं कि राम की कीर्ति के समान तुम भी जीवित रहोगे, अर्थात् तुम्हारी भी कीर्त्ति अमर होगी—**रामकीर्त्या सम पुत्र जीवितं ते भविष्यति**।[1] बहुत सभव है कि इस उक्ति के आधार पर हनुमान् के विषय मे यह माना जाने लगा कि वह वास्तव मे जीवित रहकर हिमालय पर निवास करते हैं। इस विश्वास का प्राचीनतम उल्लेख हनुमान्-भीम-सवाद मे सुरक्षित है। इस संवाद मे हनुमान् कहते है कि मैंने राम से यह वरदान माँग लिया है कि जब तक रामकथा पृथ्वी पर प्रचलित रहेगी, तब तक मैं जीवित रह सकूँ :

यावद्रामकथा वीर भवेल्लोकेषु शत्रुहन्
तावज्जीवेयमित्येवं तथास्त्विति च सोऽब्रवीत् ॥

(महाभारत ३, १४७, ३७)

तदन्तर हनुमान् भीम को बताते हैं कि इस स्थान पर गधर्व तथा अप्सराये रामचरित गाकर मुझे आनदित करते रहते हैं।

रामायण के उत्तरकाण्ड मे राम द्वारा हनुमान् को वर-प्रदान का दो बार उल्लेख हुआ है। यह ध्यान देने योग्य है कि वहाँ पर भी रामकथा का प्रचलन ही हनुमान् की अमरता का आधार माना गया है। स्वर्गारोहण के पूर्व राम यह कहकर हनुमान को चिरजीवत्व प्रदान करते है :

मत्कथः प्रचरिष्यंति यावल्लोके हरीश्वर।
तावद्रामस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन् ॥३०॥ (सर्ग १०८)

प्रस्तुत प्रसग का सबसे विस्तृत रूप उत्तरकाण्ड के ४०वे सर्ग मे मिलता है। महाभारत मे हनुमान् ने कहा था कि हिमालय के जिस स्थान पर वह रहते थे, वहाँ गधर्वादि रामचरित गाया करते थे; अब रामचरित का यह गान वरदान का रूप धारण

---

१ दे० ३, २७५, ४३। इस सबध मे नीति का यह वाक्य भी द्रष्टव्य है—स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति। अयशो कीर्त्तिसयुक्तो जीवन्नपि मृतोपम ॥ रामशेखर वसु के अनुसार हनुमान् ने इसीलिए अमरत्व का वरदान माँगा कि वह चिरकाल तक पितरो के पिण्डोदक का विधान कर सके। दे० परशुराम की चुनी हुई कहानियाँ। साहित्य अकादेमी (१९६०), पृ० ९७१।

देने लगे। हनुमान ने कहा कि मैंने तो यह कभी नही देखा था। दोनो राम के पास आये और राम ने वाल्मीकि का कथन ठीक ही माना था। इस पर हनुमान् ने अप्रसन्न होकर अपने नखो से शिला पर लिखी हुई अपनी रचना समुद्र मे फेंक दी।

६६१. तुलसी ने **विनयपत्रिका** (२३, ८) मे हनुमान् को 'वेदवेदान्तविद्' की उपाधि दी है। वास्तव मे कई रचनाओ मे हनुमान् दार्शनिक विषयो[1] की जिज्ञासा प्रकट करते है तथा राम से तत्सवधी शिक्षा ग्रहण करते है। **अध्यात्म रामायण** (१, १, ३२-५२) के अनुसार सीता और इसके अनन्तर राम ने भी हनुमान् को रामतत्व का रहस्य प्रकट किया था। **मुक्तिकोपनिषद्** तथा **रामगीता** (दे० अनु १४८) मे हनुमान् को दर्शन-विषयक शिक्षा दी जाने की कथा मिलती है। **अद्भुत रामायण** (सर्ग १०-१२) मे राम हनुमान् को अपना विष्णु रूप दिखाकर उनको भगवद्गीता के अनुकरण पर सांख्ययोग, भक्तियोग आदि समझाते हैं।

अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचनाओ में हनुमान को रामभक्ति के आचार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। **रामरहस्योपनिषद्** मे वह सनकादि मुनियो को रामोपासना की पद्धति सिखलाते हैं। रसिक सम्प्रदाय मे हनुमान् को माधुर्य भक्ति का प्रवर्तक अथवा आचार्य माना गया है; **हनुमत्संहिता** मे हनुमान् राम की प्रधान सखी चारुशीला का रूप धारण कर अगस्त्य को भक्ति की शिक्षा देते हैं और **शिवसंहिता** हनुमान्-अगस्त्य-सवाद के रूप मे लिखा गया है। हनुमान को अन्य साम्प्रदायिक रामायणो का भी वक्ता माना गया है (दे० अनु० २०१ और २०२)।

६६२. श्री दिनेशचन्द्र सेन का कहना है (दे० दि बगाली रामायण्स पृ० ५१) कि बगाल मे हनुमान् को **ज्योतिषी** तथा **संगीतज्ञ** भी माना गया है। महाभारत के हनुमान्-भीम-संवाद के अनुसार हनुमान् गधर्वों तथा अप्सराओ द्वारा रामायण का गान नित्य ही सुनते हैं। सभवतः उस वृत्तान्त के आधार पर सगीत मे उनकी निपुणता का विश्वास उत्पन्न हुआ है। तुलसीदास ने भी विनयपत्रिका मे हनुमान् को 'गान-गुनगरवगधर्वजेता' (दे० २६, ४), 'सामगायक' (२८, ५), 'सामगाताग्रनी' (२७, ३) आदि कहकर पुकारा है।

(इ) चिरंजीवत्व—

६६३. अर्वाचीन राम साहित्य मे हनुमान् को बहुत से वरदान प्राप्त होने का उल्लेख है। उनमे से उनका चिरजीवत्व सबसे प्राचीन प्रतीत होता है : हनुमान् के इस चिरंजीवत्व की उत्पत्ति सभवतः उनकी कीर्ति से सम्बन्ध रखती है। रामायण मे उनको

---

१. इसके आधार पर सभवतः यह विश्वास उत्पन्न हुआ कि मध्वाचार्य हनुमान् के अवतार हैं।

ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि हनुमान् का चिरजीवत्व रामकथा के प्रचलित रहने पर निर्भर है, सभवतः इसी कारण से यह विश्वास उत्पन्न हुआ है कि जहाँ कहीं रामकथा का पाठ हो रहा है, वहाँ हनुमान् अदृश्य रूप से विद्यमान हैं। इस विश्वास का प्राचीनतम उल्लेख आनन्द रामायण तथा कृत्तिवासीय रामायण मे मिलता है (दे० आगे अनु० ७२३)।

(ई) ब्रह्मचर्य

६६६ महीरावण-वध की कथा मे हनुमान् के एक पुत्र का भी प्रायः उल्लेख होता है। लकादहन के बाद समुद्र मे स्नान करते हुए हनुमान् का स्वेद अथवा श्लेष्मा निगलकर एक मत्स्या गर्भवती हुई और इस प्रकार हनुमान् को एक पुत्र उत्पन्न हुआ था (दे० अनु० ६१५)। **मैरावणचरितम्** (अ० १०) के अनुसार उस पुत्र का नाम मत्स्यराज है, वह हनुमान् को अपना परिचय देते हुए कहता है—**तिमिगला हि मन्माता पिता च हनुमान्**। इसपर हनुमान् यह कहकर आपत्ति करते हैं—**हनुमान् ब्रह्मचारीति विख्यातं भुवनेष्वपि**।

हनुमान् के इस ब्रह्मचर्य का प्राचीनतम उल्लेख स्कन्द पुराण (अवन्ती खण्ड, रेवाखण्ड, अ० ८३) मे मिलता हैं, हनुमतेश्वरतीर्थमाहात्म्य नामक अध्याय मे कहा गया है कि वहाँ का शिवलिंग हनुमान् के ब्रह्मचर्य के प्रभाव से तथा ईश्वर के प्रसाद से कामप्रद है :

आत्मयोगबलेनैव ब्रह्मचर्यप्रभावतः।
ईश्वरस्य प्रसादेन लिंगं कामप्रदं हि तत् ॥२३॥

पद्मपुराण (पातालखण्ड, अ० ४५) के रामाश्वमेध-वृत्तान्त मे हनुमान् अपने आजीवन ब्रह्मचर्य के बल पर शत्रुघ्न को पुनर्जीवित करते हैं :

यद्यहं ब्रह्मचर्यं च जन्मपर्यन्तमुद्यतः।
पालयामि तदा वीर· शत्रुघ्नो जीवतु क्षणात् ॥३१॥

(पातालखण्ड, अध्याय ४५)

६६७ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् के ब्रह्मचर्य का प्रायः ध्यान रखा जाता है। **लांगूलोपनिषद्** (दे० अप्रकाशिता उपनिषदः, अडयार, पृ० २१३) तथा **आनन्द रामायण** (मनोहर काण्ड, सर्ग १३) मे हनुमान् को कुमार ब्रह्मचारी की उपाधि दी गई है; **श्री हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम्** मे भी ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय आदि नाम आये हैं। तुलसीदास ने हनुमान् को 'मनमथमथन ऊर्धरेता' कहकर पुकारा है (दे० विनयपत्रिका २९, ३)। इस सम्बन्ध मे उनके प्राकृतिक कौपीन का भी उल्लेख मिलता है। सारलादास के **उड़िया महाभारत** के वनपर्व मे जो जन्म-कथा मिलती है (दे० अनु० ६७४) उसके अनुसार हनुमान् ने अपनी माता से कहा था कि जब तक मुझे वज्रकौपीन न मिले मैं जन्म नही

कर लेता है। अभिषेक के बाद अयोध्या से विदा लेते समय हनुमान् ने राम से तीन वर माँगे थे, अर्थात् अनन्य रामभक्ति, चिरजीवत्व तथा रामकथा-श्रवण .

स्नेहो मे परमो राजस्त्वयि तिष्ठतु नित्यदा।
भक्तिश्च नियता वीर भावो नान्यत्र गच्छतु ॥१६॥
यावद्रामकथा वीर चरिष्यति महीतले।
तावच्छरीरे वत्स्यन्तु प्राणा मम न संशयः ॥१७॥
यच्चैतच्चरितं दिव्यं कथा ते रघुनन्दन।
तन्मयाप्सरसो राम श्रावयेयुर्नरर्षभ ॥१८॥

६६४. हनुमान की जन्मकथा मे देवताओ द्वारा उनको अनेक वर दिये जाने का वर्णन किया गया है। आदि रामायण मे इस जन्मकथा का अभाव था और इसीलिए वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक काण्डो मे हनुमान् के इन वरो का उल्लेख नही किया गया है, अपवादस्वरूप प्रक्षिप्त लकादहन (अनु० ५३०) के अन्तर्गत उन वरदानो का सकेत मिलता है (दे० ५, ४८, ४०. ४३, ५, ५०, १६)।

हनुमान् की जन्मकथा का प्राचीनतम रूप सभवतः किष्किन्धाकाण्ड मे मिलता है। वगीय पाठ मे इस प्रसग मे किसी भी वरदान का उल्लेख नही होता, पश्चिमोत्तरीय पाठ मे ब्रह्मा हनुमान् को 'अशस्त्रवध्यता' प्रदान करते है तथा दाक्षिणात्य पाठ (४, ६६, २६) मे ब्रह्मा के इस वरदान के अतिरिक्त इन्द्र का भी उल्लेख है जो हनुमान् को 'इच्छानुसार मरण' का वर देते हैं। उत्तरकाण्ड की जन्मकथा मे इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, यम, कुबेर, शिव तथा विश्वकर्मा सभी हनुमान् को अपने-अपने अस्त्रो द्वारा अवध्यता प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त हनुमान को सूर्य से सूर्यतेज का शताश तथा शास्त्र के अध्ययन मे सहायता, यम से अरोगत्व, कुबेर से अविपाद, विश्वकर्मा से चिरजीवत्व तथा ब्रह्मा से कामरूपत्व दिया जाता है (दे० ७, ३६, १२-४०)। इस प्रकार हम देखते है कि हनुमान् को प्राप्त वरो की सख्या वढती जाती रही। ध्यान देने योग्य है कि ये वरदान प्रायः हनुमान् के चिरजीवत्व ही से सवध रखते है। गौडीय तथा पश्चिम-उत्तरीय पाठ मे जो अतिरिक्त जन्मकथा मिलती है उसमे भी केसरी के कामरूपी तथा अव्यय पुत्र का उल्लेख किया गया है (दे० ऊपर अनु० ६६७)।

६६५ परवर्ती रामकथाओ मे हनुमान् के उन वरो के वर्णन मे कोई विशेष विकास परिलक्षित नही होता किन्तु प्राय. उनकी रामभक्ति पर वल दिया गया है। उदाहरणार्थ भविष्य पुराण तथा आनन्द रामायण मे ब्रह्मा ही हनुमान् को रामभक्ति का वरदान देते हैं (दे० आगे अनु० ७०४)। इसके अतिरिक्त भावी हनुमत्पूजा के विषय मे भी हनुमान् को प्रदत्त वरो की कथा स्कन्द पुराण तथा आनन्द रामायण मे मिलती है (दे० आगे अनु० ७०८)।

७००. हनुमान् की अन्य विशेषताओ की भाँति उनके ब्रह्मचर्य का मूलस्रोत वाल्मीकि रामायण को माना जा सकता है। रावण के अन्तःपुर मे प्रविष्ट होकर तथा वहाँ की सुप्त अर्धनग्न ललनाओ को निहारकर उनके सुव्यवस्थित मन मे कोई विकार नही उत्पन्न हुआ था, इसका रामायण मे स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख है :

कामं दृष्टा मया सर्वा विश्वस्ता रावणस्त्रियः ।
न तु मे मनसा किंचिद्वैकृत्यमुपपद्यते ॥४१॥
मनो हि . . . .मे सुव्यवस्थितम् ॥४२॥

(सुन्दरकाण्ड, सर्ग ११)

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे हनुमान् के सयम तथा धार्मिकता की ओर बहुधा सकेत किया गया है तथा उनको महात्मा, महामनः, सस्कारसम्पन्न, सुवर्त्मना, कृतात्मा आदि विशेषणो से विभूषित किया गया है। रावण के अन्त.पुर मे प्रवेश करने पर उनको पापशका होती है—**जगाम महतीं शकां धर्मसाध्वसशंकितः** (दे० ५, ११, ३७)। सीता के साथ बातचीत करने के कारण वह भी अपने को दोषी मानते हैं—**एष दोषो महान्हि स्यात्मम सीताभिभाषणे** (दे० ५, ३०, ३६)। अत. बहुत सम्भव है कि वाल्मीकि रामायण मे जो पापशकालु तथा सयमी हनुमान् का चित्र प्रस्तुत किया गया है, उसी के आधार पर उनके ब्रह्मचर्य की कल्पना उत्पन्न हुई।

(उ) रामभक्ति

७०१ रामभक्ति का भाव समस्त मध्यकालीन रामसाहित्य मे व्याप्त है। अतः यह स्वाभाविक ही था कि आदि रामायण के उत्साही एव विश्वस्त राम-सेवक हनुमान् को उस साहित्य मे आदर्श रामभक्त के रूप मे प्रस्तुत किया जाय। शिवमहापुराण की शतरुद्र सहिता (अ० २०) मे हनुमान् को भक्तवर के अतिरिक्त रामभक्ति के प्रवर्त्तक होने का श्रेय दिया गया है :

स्थापयामास भूलोके रामभक्तिं कपीश्वर. ।
स्वयं भक्तवरो भूत्वा सीतारामसुखप्रद. ॥३६॥

बहुत सी रचनाओ मे हनुमान् को रामभक्ति का आचार्य माना गया है, रसिक सम्प्रदाय उनको अपना प्रवर्त्तक मानता है (अनु० ६६१)।

हनुमान् की रामभक्ति का प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ४०) मे मिलता है, जहाँ हनुमान द्वारा राम से तीन वरदान प्राप्त करने का वर्णन किया गया है, किन्तु राम से वरप्राप्ति की कथा के प्रारभिक रूप मे रामभक्ति का उल्लेख नही है (अनु० ६६३)[१]। इसी तरह देवताओ से हनुमान् की वरप्राप्ति का प्राचीनतम वृत्तान्त रामभक्ति के विषय मे मौन है (अनु० ६६४), किन्तु परवर्ती साहित्य मे उस अवसर पर प्रायः रामभक्ति की भी चर्चा है (अनु० ७०४)।

लूंगा। पवन ने इसका समाचार शिव को कह सुनाया और शिव ने अजना को खिलाने के लिए कपडे दिये। इसके फलस्वरूप हनुमान् ने कौपीन पहनकर जन्म लिया। अर्जुनदासकृत **रामविभा** मे इससे मिलती-जुलती कथा पाई जाती है। **भावार्थ रामायण** (७, ३५ और ४, १०) के अनुसार भी हनुमान् कौपीन पहनकर उत्पन्न हुए थे। अन्य रचनाओ मे प्रायः हनुमान् के कौपीन का उल्लेख है, **पद्मपुराण** (पाताल खण्ड ११२, १३५) मे हनुमान् को **'सुदृढ़बद्धमौंजीकौपीन'** और **श्रीमारुतिस्तवराज** (वेकटश्वर प्रेस) मे **मलमल्लकी** (कौपीनधारी) की उपाधि दी गई है। इस कौपीन के विषय मे निम्नलिखित दन्तकथा प्रचलित है। हनुमान् ने किसी ऋषि के पास कौपीनमात्र छोड कर उनका सर्वस्व लूट लिया था। ऋषि ने उनको यह कहकर शाप दिया—तुम्हारे पास भी कौपीन के अतिरिक्त कुछ नही रहेगा, तुम कभी भी दूसरे कपडे नही पहन सकोगे।[1]

६९८. हिन्देशिया तथा स्याम की रामकथाओ की एक सामान्य विशेषता यह है कि उनमे हनुमान् की प्रेमलीलाओ का कई अवसरो पर वर्णन किया गया है। सेतुबन्ध के समय मछलियो की रानी, रावण की नागकन्या तथा वेञकाया के साथ हनुमान् की क्रीडा का उल्लेख हो चुका है (दे० अनु० ५७८-५७९)। इसके अतिरिक्त **रामकियेन** मे स्वयप्रभा (अनु० ५२६), एक अप्सरा-वानरी (अनु० ६१३) तथा मन्दोदरी (अनु० ५९७) के साथ हनुमान् के रमण का वर्णन किया गया है। **सेरीराम** के अनुसार हनुमान् ने लव की द्वितीय पत्नी (विभीषण तथा कीकवी देवी की पुत्री) के साथ भी व्यभिचार किया था।

६९९. इन विदेशी कथाओ का मूलस्रोत भारतीय ही है। **पउमचरियं** (१९, ४२) मे हनुमान् की एक सहस्र पत्नियो का उल्लेख किया गया है, जिनमे से वरुण की कन्या सत्यवती, चन्द्रनखा की पुत्री अनगकुसुमा, नलनदिनी, हरिमालिनी तथा सुग्रीव की पुत्री पद्मरागा प्रधान है। इस रचना के एक अन्य स्थल पर हनुमान् तथा लकासुन्दरी की प्रेम-क्रीडा का वर्णन किया गया है (अनु० ५३६)। स्वयभूदेव के **पउमचरिउ** (२२, १२, १०) मे हनुमान् की पत्नियो की संख्या ८००० तक बढा दी गई है। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७ और ८ के अनुसार हनुमान् ने लकादहन के पश्चात् समुद्र मे नहाकर मकरी के साथ सभोग किया था (अनु० ६१५)।

वाल्मीकि रामायण (६, १२५, ४४) मे भी इसका उल्लेख मिलता है कि हनुमान् ने विजयी राम के प्रत्यागमन का शुभ समाचार सुनकर भरत ने उनको दस हजार गायों तथा एक सौ गाँवो के अतिरिक्त १६ कन्याओ को भी पत्नीस्वरूप प्रदान किया था—**शुभाचारा भार्या. कन्यास्तु षोडश।**

---

१. दे० मैकॉलिफ, दि सीख रेलिजन, भाग ६, पृ० ८२ टि०।

प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे कहा कि त्रेतायुग मे राम प्रकट होंगे, तुम उनकी भक्ति प्राप्त कर पूर्णकाम बन जाओगे—**तस्य भक्तिं च सम्प्राप्य कृतकृत्यो भविष्यसि** (दे० प्रतिसर्गपर्व, चतुर्थ खड, अध्याय १३, ४६-४७)।

७०५. उपर्युक्त कथाओ के अतिरिक्त हनुमान् की रामभक्ति के विषय मे और भी बहुत सी सामग्री मिलती है। **भागवत पुराण** (५, १६, १-५) मे इसका उल्लेख किया गया है कि हनुमान् हिमालय के किंपुरुषवर्ष मे अन्य किन्नरो के साथ अविचल भक्ति-भाव से राम की उपासना करते रहते हैं। उनकी रामभक्ति की उत्पत्ति के विषय में बगाल की रामकथाओ मे (दे० अनु० ५.१२) निम्नलिखित वृत्तान्त पाया जाता है—लक्ष्मण शिव की वाटिका मे फल तोडने गये, वहाँ के द्वारपाल हनुमान् थे, लक्ष्मण उनसे युद्ध करने लगे। बाद मे शिव और राम भी आ पहुँचे और इन दोनो का भी युद्ध हुआ। अन्त मे शिव अपने द्वारपाल हनुमान् को राम के हाथ सौंपते हैं, उस समय से लेकर हनुमान् शिव को छोडकर राम-भक्त बन गए। पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे भी इससे मिलती-जुलती कथा मिलती है। **स्कन्द पुराण** के कई स्थलो पर हनुमान् द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ५८०)। हनुमान् की शिवभक्ति के विषय मे पद्मपुराण (पाताल खण्ड ११०, १७०-१८१) मे एक अन्य घटना का वर्णन किया गया है। इस सम्बन्ध मे राम-शिव की अभिन्नता (अनु० ३६२) तथा हनुमान् का रुद्रावतारत्व (अनु० ६७०) भी विचारणीय है।

७०६ **वाल्मीकीय रामायण** (६, १२८, ७८-७६) के अनुसार रामाभिषेक के अवसर पर सीता ने, राम से जो माला मिली थी, उसे हनुमान् को प्रदान किया। हनुमान् की रामभक्ति सिद्ध करने के उद्देश्य से इस घटना को अर्वाचीन राम-साहित्य मे एक नवीन रूप दिया गया है। **कृत्तिवास रामायण** (६, १२८) के अनुसार हनुमान् ने माला हाथ मे लेकर उसे ध्यान से देखा और तदनन्तर वह उसकी बहुमूल्य मणियाँ तोड कर खाने लगे। अपने व्यवहार का कारण पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि इस माला मे राम-नाम अंकित नही है, इसीलिये मेरी दृष्टि मे इसका कोई मूल्य नही है। इस पर लक्ष्मण ने पूछा कि तुम अपना शरीर क्यो नही छोड देते हो। यह सुनकर हनुमान् ने अपने नखो मे छाती फाड कर दिखलाया कि उनकी हड्डियो पर राम का नाम लिखा है।[१] **भावार्थ रामायण** (६, ८७) मे प्रस्तुत कथा का एक अन्य रूप मिलता है। माला ग्रहण करने के बाद हनुमान् ने विचार किया कि इस माला के कारण मेरे हृदय मे

---

१. भक्तमाल (२३) और रघुराजसिंह कृत रामरसिकावली मे भी यही कथा मिलती है। एक अन्य दन्तकथा के अनुसार हनुमान् ने अपना हृदय दिखलाया जहाँ सीता-लक्ष्मणादि सहित भगवान् विराजमान थे।

७०२ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् को प्रदत्त वरदानो मे से उनकी रामभक्ति को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है, यहाँ तक कि उनके चिरजीवत्व का प्रयोजन रामभक्ति ही वन जाता है। तत्त्वसग्रह रामायण (७, १५) मे स्वर्गारोहण के अवसर पर राम हनुमान् को यह कहकर आशीर्वाद देते हैं—तुम सदा जीते रहो और रामभक्ति वनाये रखो। अध्यात्म रामायण के युद्धकाण्ड के अनुसार रामाभिषेक के पश्चात् हनुमान् ने यह वरदान माँग लिया कि मैं राम-नाम का निरन्तर स्मरण करते हुए सशरीर जीवित रह सकूँ, हनुमान् का निवेदन कोमल भक्ति-भाव से ओत-प्रोत है :

त्वन्नाम स्मरतो राम न तृप्यति मनो मम ।।१२।।
अंतस्त्वन्नाम सततं स्मरन्स्थास्यामि भूतले ।
यावत्स्थास्यति ते नाम लोके तावत्कलेवरम् ।।१३।।
मम तिष्ठतु राजेन्द्र वरोऽयं मेऽभिकांक्षितः । (सर्ग १६)

आनन्द रामायण, भावार्थ रामायण (६, ८१) आदि रचनाओ मे हनुमान् के इस निवेदन का भी उल्लेख है कि जहाँ कही भी रामचरित का वर्णन हो रहा हो मैं वहाँ उपस्थित रह सकूँ। आनन्द रामायण (१, १२, १४३) का उद्धरण इस प्रकार है :

यत्र तत्र कथा लोके प्रचरिष्यति ते शुभा ।
तत्र तत्र गतिर्मेऽस्तु श्रवणार्थं सदैव हि ।।१४३।।
(सार काण्ड, सर्ग १२)

७०३. तत्त्वसंग्रह रामायण (५, ११) का-निम्नलिखित प्रसग आनन्द रामायण पर आधारित प्रतीत होता है, जव हनुमान् सीता का पता लगा कर राम के पास लौटे तव राम ने उनको हृदय से लगाकर यह आशीर्वाद दिया—जहाँ कही मेरे नाम का उच्चारण होगा वहाँ तुम भी उपस्थित रहोगे। अततोगत्वा तुम चतुरानन ब्रह्मा वनकर संसार की सृष्टि करोगे और तदन्तर मुझमे मिल जाओगे। तुम वास्तव मे शिव हो जो काशी मे आने वालो को मेरा मत्र प्रदान करते हो। कृत्तिवासीय रामायण (६, १२७) मे राम के अभिषेक के अवसर पर सीता हनुमान् को चिरजीवत्व का वरदान देने के पश्चात् उनसे कहती है कि जहाँ कही राम-नाम का प्रसग हो तुम वही जाकर उपस्थित रहो।

७०४ परवर्ती साहित्य मे हनुमान् की जन्मकथा के अन्तर्गत रामभक्ति का प्रायः उल्लेख होता है। आनन्द रामायण (१, १३, १७६-१७७) की जन्मकथा के अनुसार ब्रह्मा हनुमान् को यह वरदान देते है—तुम अमर और अवाधगति होगे, तुम हरि के भक्त वन जाओगे तथा विष्णु की सहायता करोगे। भविष्य पुराण मे भी ब्रह्मा के इस वर-दान का उल्लेख है। जन्म के वाद माता द्वारा परित्यक्त हनुमान् ने रावण को पराजित किया था (दे० ऊपर अनु० ६६८) और अनन्तर तपस्या करने लगे थे। इस तपस्या से

परवर्ती साहित्य के अनुशीलन से प्रतीत होता है कि १०वी तथा १५वीं शताब्दी[1] के बीच हनुमद्भक्ति का पूर्ण विकास हुआ है। १५वी शताब्दी के बाद साहित्य मे उनकी मूर्ति की पूजा का स्पष्ट उल्लेख है तथा उनके कवच, मत्र, स्तोत्र आदि भी मिलते है। **आनन्द रामायण** (१, १२) के अनुसार सीता ने हनुमान् को आशीर्वाद देते हुए कहा कि गाँव-गाँव मे विघ्नशाति के उद्देश्य से तुम्हारी मूर्ति की पूजा की जायगी :

ग्रामारामपत्तनेषु व्रजखेटकसद्मसु ।
वनदुर्गपर्वतेषु सर्वदेवालयेषु च ॥१४७॥
नदीषु क्षेत्रतीर्थेषु जलाशयपुरेषु च ।
वाटिकोपवनाश्वत्थवटवृन्दावनादिषु ॥१४८॥
त्वन्मूर्ति पूजयिष्यंति मानवा विघ्नशांतये ।
भूतप्रेतपिशाचाद्या नश्यति स्मरणात्तव ॥१४९॥

इस उद्धरण मे विघ्नशाति तथा भूत-प्रेतो का नाश हनुमत्पूजा का उद्देश्य कहा गया है। हनुमत्पूजा-संबधी साहित्य मे इसी उद्देश्य का प्रायः उल्लेख मिलता है। वास्तव मे पन्द्रहवी शताब्दी से लेकर हनुमान् का **संकटमोचन** रूप सब से लोकप्रिय है। **आनन्द रामायण** के मनोहर काण्ड (सर्ग १३) मे राम द्वारा विभीषण को प्रदत्त एक हनुमत्कवच-उद्धृत है जिसमे भूतो तथा ज्वरो की ही चर्चा है। उसी काण्ड के एक अन्य स्थल (सर्ग १६) पर गरुड राम को कपिपूजन का विधान समझाते है तथा यह भी कहते है कि यह पूजा महामारी के अवसर पर करनी चाहिए—**जनमारे समुत्पन्ने ग्रामे।** आनन्द रामायण के राज्यकाण्ड (५, ५) मे सीता की हनुमत्पूजा का भी वर्णन किया गया है—**गोमेयांजनेयं सा कुड्यां कृत्वार्च्य जानकी। अकरोत्प्रत्यहं पुच्छवृद्धि स्वांगुलिमात्रतः।**

लांगूलोपनिषद् हनुमान् के मत्रो का सग्रह है जिसमे एकादशरुद्रावतार, श्री-रामसेवक, कुमारब्रह्मचारी हनुमान् को भूत प्रेत पिशाचो का उच्चाटक, समस्त ज्वरो का विनाशक तथा सर्वशूलो का उन्मूलक माना गया है। उन शूलो मे से एक बाँझपन है, जिसे दूर करने के लिए हनुमान् की पूजा होती है, अत **श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्र** मे उनको गर्भदोषघ्न तथा पुत्रपौत्रद का नाम भी दिया गया है। तुलसीदास ने अपनी

१. हनुमत्पूजा ठीक किस शताब्दी मे प्रारम्भ हुई मै नही कह सकता। १६वी शताब्दी के पूर्व ही उनकी मूर्तियो तथा मदिरो के अस्तित्व के प्रमाण मिलते है (दे० तुलसीकृत बाहुक २१, २९, ३४) किन्तु विष्णुधर्मोत्तर पुराण तथा बृहत्संहिता के 'प्रतिमालक्षण' नामक खण्ड मे हनुमान् का निर्देश नही मिलता।

अहकार उत्पन्न हो सकता है अतः उन्होने दाँतो से मणियाँ फोडकर कहा—हम वानरों को भोजन छोडकर और कुछ नहीं चाहिए। सेरीराम मे हनुमान् के घमण्ड के उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। विजय के बाद राम ने हनुमान् को एक बहुमूल्य रत्नो की माला प्रदान की थी किन्तु हनुमान् ने उसे चवा कर नष्ट किया था। लक्ष्मण के आपत्ति करने पर हनुमान् ने कहा कि मैं राम का ईमानदार तथा बुद्धिमान सेवक उन रत्नो से कही अधिक मूल्यवान् हूँ।

७०७. वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड (सर्ग ३९) मे इसका उल्लेख किया गया है कि रामाभिषेक के पश्चात् वानर सैनिक एक महीने तक अयोध्या मे मधु-मांसादि का सेवन करते रहे, और वह महीना रामभक्ति मे लीन रहने के कारण उनको मुहूर्त मात्र प्रतीत हुआ :

ते पिवन्तः सुगंधीनि मधूनि मधुपिंगलाः।
मांसानि च सुमृष्टानि मूलानि च फलानि च ॥२६॥
एवं तेषां निवसतां मासः साग्रो ययौ तदा।
मुहूर्तमिव ते सर्वे रामभक्त्या च मेनिरे ॥२७॥

परवर्ती साहित्य मे उस प्रसग के वर्णन मे हनुमान् की रामभक्ति का विशेष ध्यान रखा गया है। आनन्द रामायण (१, १२, १५२-१५६) के अनुसार हनुमान् ने स्वय राम का उच्छिष्ट खाया तथा दूसरे वानरो को खिलाया। रङ्गनाथ रामायण (६, १६८), तोरवे रामायण (६, ५५) तथा भावार्थ रामायण (६, ८८) मे इससे मिलती-जुलती कथाएँ पाई जाती हैं। सेरीराम के अनुसार हनुमान् ने सीता की खोज करने के पूर्व राम के साथ एक ही पत्तल मे भोजन किया था (दे० अनु० ५२४)। कृत्तिवासीय रामायण मे गरुड के आगमन की कथा मे हनुमान् की अनन्य रामभक्ति का वर्णन किया गया है (अनु० ५८६)।

(ऊ) देवत्व

७०८. अब हनुमान् की अन्तिम विशेषता अर्थात् उनके देवत्व की उत्पत्ति और विकास का निरूपण करना है। सभवतः आठवी शताब्दी से लेकर हनुमान् रुद्र के अवतार माने जाने लगे। इसके फलस्वरूप उनके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हुआ और धीरे-धीरे विकसित होने लगा। शैव ग्रन्थों मे इस विकास के लक्षणो का प्रथम दर्शन स्वाभाविक है। स्कन्द पुराण (अवन्ती खण्ड, रेवा खण्ड) मे शिव हनुमान् को आशीर्वाद देकर कहते है कि तुम्हारे नाम कल्याणकारी होते है—उपकाराय लोकानां नामानि तव मारुते (८३, २९)। उस स्थल पर हनुमान् के वारह नाम उद्धृत हैं; इससे पता चलता है कि रेवाखण्ड के रचनाकाल मे हनुमान् के नामो का जप प्रचलित होने लगा था।

पद्धति से सबध हो जाने पर हनुमान् की लोकप्रियता वहुत ही बढ गई और उस समय तक जिस उद्देश्य से और जिस रूप मे यक्षो की पूजा होती रही अब उसी उद्देश्य और उसी रूप मे महावीर हनुमान् की भी पूजा होने लगी । हनुमान् के सकटमोचन तथा द्वारपाल वाला रूप वीरपूजा से सबध रखता है । प्राचीन वीरपूजा तथा हनुमत्पूजा के उद्देश्यो मे जो सादृश्य है वह उपर्युक्त विकास की वास्तविकता को प्रमाणित करता है । डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसका एक और प्रमाण उपस्थित किया है । उन्होने दिखलाया है कि आजकल तक हनुमान् की पूजा के दो रूप प्रचलित हैं—एक वीरपूजा जिसमे कोई मूर्त्ति नही होती और जो यक्षपूजा से सम्बन्ध रखती है तथा एक दूसरा रूप जिसमे वानर की मूर्त्ति है और जो रामकथा पर निर्भर है ।[1]

(ऋ) उपसंहार

७११ ऊपर के निरूपण से स्पष्ट है कि किस प्रकार रामकथा की लोकप्रियता के साथ-साथ हनुमान् का भी महत्व शताब्दियो तक बढता रहा और फलस्वरूप उनके चरित्रचित्रण मे अतिशयोक्ति तथा अलौकिकता की मात्रा मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही फिर भी यह विकास अत्यन्त स्वाभाविक और आनुक्रमिक ही प्रतीत होता है ।

रामायण मे हनुमान् अपने सखाओ की अपेक्षा पराक्रमी तथा बुद्धमान अवश्य हैं, किन्तु वह निश्चित रूप से अन्य वानरो मे से एक है । अतः यह मानना तर्कसगत है कि हनुमान्[2] रामकथा के अन्य वानरो के समान वानर-गोत्रीय आदिवासी ही थे ।

हनुमान्, अजनीसुत, वायुपुत्र, महावल, रामेष्ट, फाल्गुनगोत्र, पिंगाक्ष, अमितविक्रम, उदधिक्रमणश्रेष्ठ, दशग्रीवस्य दर्पहा, लक्ष्मणप्राणदाता, सीताशोकनिवर्त्तन (दे० अवती खण्ड, रेवाखण्ड अ० ८३) । इसमे से एक भी नाम यक्षपूजा से सम्बन्ध नही रखता । ये १२ नाम आनन्द रामायण (मनोहरकाण्ड १३, ८-६) मे दुहराये गये है । स्कद पुराण के एक अन्य स्थल पर (ब्राह्मखण्ड, धर्मारण्य, अध्याय ३७) हनुमान् की स्तुति मे १६ विशेषण मिलते है, उनमे से एक ही अर्थात् सर्वव्याधिहर हनुमान् के सकटमोचन रूप से सम्बन्ध रखता है ।

१. दे० वीर बरह्म, जनपद, खड १, अक ३, पृ० ६४-३ ।

२. उनके नाम एक द्राविड शब्द 'आण्-मति' (नर-कपि) का सस्कृत रूपान्तर प्रतीत होता है (दे० अनु० १०३) । उस नाम पर अनेक कथाये आधारित हैं । सबसे प्रचलित कथा के अनुसार इन्द्र ने इसीलिए उनका नाम हनुमान् रखा था कि पर्वत के शिखर पर गिरने पर उनकी ठोडी (हनु) टूट गई थी । पउमचरिय के अनुसार अजनाकुमारी ने पुत्रसहित हनुरुहपुर नामक

विनयपत्रिका (३०, २) मे हनुमान् के सकटमोचन रूप को बहुत महत्व दिया है—"संकटसोच विमोचनी मूरती"।

७०९. अर्वाचीन साहित्य मे हनुमान् की महिमा और बढ गई है और उनको पाप-मोचक, मुक्तिदायक भगवान् की उपाधि मिल गई है। श्रीमारुतिस्तव मे हनुमान् को पापतापसुसमापनतापरः (दे० ६) कहा गया है तथा श्रीहनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र (वेंकटेश्वर प्रेस) मे उनको परम्परागत विशेषणो (अर्थात् १. महावीर २ सर्वविद्या-विशारद, वेदवेदागपारग ३. चिरजीव ४. जितेंद्रिय, ब्रह्मचारी ५. रामसेवक, रामभक्ति-विधायक ६. रुद्र, महेश्वर) तथा सकटमोचन—सूचक नामो (आरोग्यकर्त्ता, पिचाशग्रह-घातक, अपस्मारहर) के अतिरिक्त ये भी नाम दिए जाते हैं-संसारभयनाशक, शरणा-गत-वत्सल, भगवान्, जगन्नाथ, जगदीश, अनादि, परब्रह्म। फिर भी इस शब्दावली को अधिक महत्व नही दिया जाना चाहिए; पूजा की दृष्टि से हनुमान का सकटमोचन रूप प्रधान ही है, भूतो, बीमारियो तथा बाँझपन से छुटकारा पाने के लिए उनकी अधिकतर शरण ली जाती है। इसके अतिरिक्त हनुमान् मन्दिरो के द्वारपाल तथा गाँवों के सरक्षक के रूप मे प्रसिद्ध हैं। गुजरात मे उनका वृक्षो मे निवास माना जाता है।[1]

७१० अन्त मे हनुमत्पूजा के कारणो पर विचार करना है। हनुमान् को रुद्र-अवतार माने जाने के फलस्वरूप उनके प्रति श्रद्धा का जाग्रत होना स्वभाविक ही था; किन्तु दसवी तथा पन्द्रहवी शताब्दी के बीच मे हनुमत्भक्ति का पूर्ण विकास आश्चर्य-जनक ही है और उनकी सकटमोचन के रूप मे जो आजकल तक व्यापक रूप से पूजा प्रचलित है इसका मुख्य आधार रामायण मे चित्रित (राक्षसो का वध, ओषधि पर्वत का आनयन आदि) उनका चरित्र नही हो सकता है। इसका वास्तविक कारण यह है कि हनुमान् का सबन्ध यक्षपूजा से स्थापित किया गया है। अत्यन्त प्राचीनकाल से गाँव-गाँव मे यक्षो की पूजा चली आ रही है—वे रक्षक देवता (जातक ५४५), द्वारपाल, सतान देने वाले तथा वृक्षो मे निवास करने वाले (जातक ३०७ और ५०९) माने जाते थे।[2] यक्ष तथा वीर पर्यायवाची ही हैं। उधर महावीर हनुमान् की ख्याति रामायण की लोकप्रियता के द्वारा शताब्दियो से चली आ रही थी। अतः अन्य यक्षो अर्थात् वीरो के साथ महावीर हनुमान् की पूजा भी होने लगी।[3] इस अत्यन्त प्राचीन पूजा-

१. दे० एण्टहोवन, इ० ए० भाग ४०, सप्लेमेट, पृ० ८५। हिन्दी साहित्य की हनुमद्भक्ति विषयक सामग्री पाठक अनु० ३०० मे देख ले।

२. दे० आनन्द कुमार स्वामी, यक्षस् (वाशिंगटन १९२८-१९३१)।

३. वीरपूजा के साथ सम्बद्ध हो जाने के पूर्व ही हनुमान् की पूजा होने लगी थी। स्कन्द पुराण मे हनुमान् के १२ नामो की सूची इस प्रकार है—

वाल्मीकि रामायण में निहित तत्वों का स्वाभाविक विकास प्रतीत होती है। अतः वाल्मीकि के पूर्व रामकथा में स्वतन्त्र हनुमद्विषयक गाथाओं की कल्पना (दे० ऊपर अनु० १०३) निराधार ही नहीं अनावश्यक भी है। दूसरे, उस सामग्री के विश्लेषण में स्पष्ट है कि हनुमान् का महत्त्व बढता ही जा रहा था। अत हनुमान् वास्तव में किसी प्राचीन देवता[1] से अभिन्न है, यह कल्पना उपलब्ध सामग्री से प्रतिकूल ही है। हनुमान् के चरित-चित्रण में शताब्दियों तक अतिशयोक्ति का प्रयोग होता रहा, किन्तु आठवी शताब्दी में ही उनको पहले पहल देवत्व की उपाधि से विभूषित किया गया है।

७१३ अर्जुन के गर्वनिवारण (अनु० ६८५) की कथाओं के निरूपण में इसका उल्लेख हुआ है कि हनुमान् उनकी ध्वजा पर विराजमान हैं। महाभारत से पता चलता है कि प्रायः सब योद्धाओं के झण्डों पर पशुओं के चित्र अंकित थे; उदाहरणार्थ दुर्योधन की ध्वजा पर नाग (६, १७, २५), भीमसेन की ध्वजा पर केसरी (६, ६१, ७०), घटोत्कच के झंडे पर गृध्र (७, १५०, १५), वृषसेन के झंडे पर मयूर (७, ८०, १६)। इसी तरह जयद्रथ को वराहध्वज (७, १२१, ११), अश्वत्थामा को सिंहलांगूलकेतन (६, १७, २१), कृष्ण को गरुडध्वज (७, ५७, २), प्रद्युम्न को मकरध्वज (७, ८६, २५) या मकरकेतु (३, १६, ११) कहा गया है। उन्नू हॉप्किन्स[2] की धारणा है कि इन चित्रों का प्रयोजन पूजा न होकर प्रोत्साहन तथा अलंकरण मात्र ही था।

महाभारत के प्रामाणिक संस्करण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यद्यपि अर्जुन की ध्वजा पर अन्य पशु भी अंकित थे (दे० २, २२, २३) किन्तु उनमें से कपि ही प्रमुख था। अत. अर्जुन को प्रायः कपिराजकेतु (दे० ६, ५६, २६), वानरध्वज (६, ११२, ११४), वानरप्रवरध्वज (७, १७, २१), कपिप्रवरकेतन (७, २६, १५) कपिकेतन (८, ६३, ७८) आदि कहा गया है। द्रोणपर्व (अध्याय ६४) के अनुसार अर्जुन ने रणभूमि में प्रवेश करते समय शंख बजाया, उसी समय अर्जुन की ध्वजा पर विराजमान भूतगणों के साथ कपि ने मुँह बाकर शत्रुओं को भयभीत करते हुए बडे जोर से गर्जना की :

तत कपिर्महानादं सह भूतैर्ध्वजालयैः।
अकरोत् व्यादितास्यश्च भीषयंस्तव सैनिकान् ॥२५॥

उद्योग पर्व (अ० ५५) में अर्जुन की ध्वजा के विषय में कहा गया है कि विश्वकर्मा, ब्रह्मा और इन्द्र ने मिलकर इसमें छोटी-बडी अनेक प्रकार की बहुमूल्य एव दिव्य मूर्तियो का निर्माण किया है :

---

१ वर्षा के कोई अधिष्ठाता देवता अथवा इन्द्र (दे० अनु० ६५) अथवा एक प्राचीन अनार्य देवता वृषाकपि (दे० अनु० १०३)।

२. दे० एपिक मिथोलॉजी, पृष्ठ ७३।

आदिवासी गोत्रो के रहस्य के अज्ञान के कारण, नाम के आधार पर ही सत्रो को वास्तविक वानर समझ लेना अस्वाभाविक नही कहा जा सकता है।

हनुमान् के चरित्र की विशेषताओ को ध्यान मे रखकर उनको वाल्मीकि के समय के पूर्व ही 'वायुपुत्र' (विद्याधर) की उपाधि मिली होगी (दे० ऊपर अनु० ६६२)। वाल्मीकि के बाद ही अवतारवाद की भावना को रामायण मे स्थान मिल सका, उसके फलस्वरूप हनुमान् को अन्य वानरो के साथ देवताओ की सन्तान माना गया है। उनका वायुपुत्र नाम पहले ही से विख्यात था, अतः उनको वास्तव मे वायु का आत्मज माना गया है और तत्संबंधी विभिन्न जन्मकथाएँ प्रचलित होने लगी (दे० ऊपर अनु० ६६३-६६६)।

ऊपर यह दिखलाया गया है कि हनुमान् की वीरता, बुद्धिमत्ता, चिरजीवत्व, ब्रह्मचर्य तथा रामभक्ति, इन विशेषताओ का सूत्रपात प्रचलित रामायण मे विद्यमान तत्त्वों से माना जा सकता है। आठवी शताब्दी से लेकर वह बहुधा रुद्रावतार माने जाने लगे। उनकी जन्मकथा के इस विकास के कारणो तथा उसकी स्वाभाविकता पर ऊपर विचार हो चुका है (दे० अनु० ६७६)। बाद मे महावीर हनुमान् का संबंध अत्यन्त प्राचीन यक्षपूजा (वीरपूजा) के साथ जोडा गया और इस कारण उनकी लोकप्रियता तथा उनकी पूजा की व्यापकता और बढ गई।

डॉ० याकोबी का कहना है कि हनुमान् की असाधारण लोकप्रियता का आधार रामायण मे अंकित उनका चरित्र-चित्रण मात्र नही हो सकता। वास्तव मे उनकी यह आश्चर्यजनक लोकप्रियता शताब्दियो तक बढते हुए विकास का परिणाम है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् ने प्रथम बार राम-लक्ष्मण से मिलकर दोनो को अपने कन्धे पर चढाकर मलय पर्वत के शिखर पर सुग्रीव के पास पहुँचा दिया था (दे० ४, ४, ३४)। रामकथा-साहित्य का अनुशीलन करने पर डॉ० याकोबी के मत के विपरीत मन मे यह विचार अनायास उत्पन्न होता है कि रामकथा ने ही हनुमान् को अमरत्व के शिखर पर पहुँचा दिया है और आजकल राम की अपेक्षा रामसेवक हनुमान् की पूजा कही अधिक व्यापक रूप से हो रही है।

७१२. हनुमच्चरित के विकास के अध्ययन से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते है। हनुमान् के विषय मे जो विस्तृत सामग्री परवर्ती रामकथाओ मे मिलती है, वह

एक नगर मे शरण पाई थी जिससे उनका पुत्र हनुमान् के नाम से विख्यात है (दे० ऊपर अनु० ६६९)। गुणभद्र के उत्तरपुराण के अनुसार प्रभंजन का पुत्र अपना शरीर 'अणु' सा छोटा बना सकता था और इसीलिए उसका नाम 'अणुमान' ही रखा गया था (दे० पर्व ६८, २८०)।

ख सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारण

(अ) लोकापवाद

(१) वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड, रघुवश, उत्तररामचरित, कुन्दमाला,

(२) पउमचरिय, पद्मचरित ।

(आ) धोबी की कथा

(१) कथासरित्सागर, भागवत पुराण ।

(२) जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण आदि ।

(३) तिब्बती रामायण ।

(इ) रावण का चित्र

(१) उपदेशपद, कहावली, हेमचद्रकृत जैन रामायण

(२) कृत्तिवास और चद्रावती के बगाली रामायण, सेरीराम, काश्मीरी रामायण, लोकगीत, रामायण मसीही, गुजराती रामायणसार, सेरत काण्ड, हिकायत महाराज रावण, आनन्द रामायण ।

(३) सिहलद्वीप की रामकथा, कम्बोदिया की रामकेर्ति, श्याम का रामकियेन, रामजातक, ब्रह्मचक्र ।

(ई) परोक्ष कारण

(१) भृगु का शाप—वाल्मीकि रामायण

(२) तारा का शाप—वाल्मीकि रामायण

(३) शुक्र का शाप—पद्मपुराण

(४) लक्ष्मण का अपमान, लोमश का शाप, सुदर्शन मुनि की निन्दा

(५) वाल्मीकि को प्रदत्त वरदान

ग अवास्तविक सीतात्याग

(१) गीतावली (२) अध्यात्म रामायण (३) मधुराचार्य (४) आनन्द रामायण

क. सीतात्याग का अभाव

७१५. विशेषज्ञो की सर्वसम्पति के अनुसार प्रचलित वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाड प्रक्षिप्त माना जाता है, अत वाल्मीकिकृत आदिरामायण मे रामकथा राम के अभिषेक तथा उनके सुखद राज्य के सक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होती थी और इसमे सीतात्याग का उल्लेख नही था (दे० ऊपर अनु० ११५)। इस निर्णय की पुष्टि महाभारत से प्राप्त होती है जिसमे सीतात्याग की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है, विस्तृत रामोपाख्यान मे भी नही जो रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है। प्राचीन पुराणो मे जहाँ रामकथा मिलती है, सीतात्याग का सकेत मात्र भी नही किया गया है,

ध्वजे हि तस्मिन्रूपाणि चक्रुस्ते देवमायया ।
महाधनानि दिव्यानि महान्ति च लघूनि च ॥८॥

प्रामाणिक सस्करण मे इस स्थल पर हनुमान् का उल्लेख नही है, प्रचलित पाठ में यहाँ पर एक प्रक्षिप्त श्लोक मिलता है जिसमे लिखा है कि भीम के अनुरोध पर हनुमान् भी इस ध्वजा पर युद्ध के समय विराजमान होंगे ।[1]

हनुमान् की कीर्त्ति तथा लोकप्रियता के कारण यह अनिवार्य ही था कि अर्जुन की ध्वजा के कपि के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित किया जाय । इस अभिन्नता की ओर हनुमान्-भीम-सवाद मे प्रथम बार निर्देश किया गया है । यद्यपि जिस श्लोक मे यह सकेत मिलता है वह महाभारत की सब हस्तलिपियो मे विद्यमान नही है (दे० ३, १५०, १५ पादटिप्पणी के पाठान्तर) । परवर्ती साहित्य मे यह अभिन्नता सर्वमान्य ही है ।

५—सीता-त्याग

७१४. प्रस्तुत परिच्छेद मे सीतात्याग के विकास की रूपरेखा अकित करने का प्रयत्न किया जायगा । प्रथम उन रचनाओ का उल्लेख होगा जिनमे सीतात्याग का अभाव है । तत्पश्चात् साहित्य मे उनके आगमन के कालक्रमानुसार सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारणो का निरूपण किया जायगा । अत मे इस वृत्तान्त की चरम सीमा का वर्णन होगा, जिसके अनुसार रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सीता-त्याग अवास्तविक माना गया है ।

निम्नलिखित तालिका से प्रस्तुत वृत्तान्त के विकास के भिन्न-भिन्न सोपान स्पष्ट होंगे :

क सीतात्याग का अभाव

(१) आदिरामायण, महाभारत; प्राचीन पुराण—हरिवश, वायु पुराण, विष्णु पुराण और नृसिह पुराण ।

(२) अनामक जातक; गुणभद्रकृत उत्तरपुराण ।

---

१. दे० पूना सस्करण, पादटिप्पणी । सारलादासकृत उडिया महाभारत (उद्योगपर्व) के अनुसार कृष्ण ने भीम को हनुमान् के पास भेज दिया था । हनुमान् ने उत्तर दिया कि मैं राम को छोडकर किसी को नही जानता; मेरे कौपीन का तागा कृष्ण के पास ले जाओ । भीम उसे छूकर मूर्च्छित हो गए । बाद मे भीम यह तागा कृष्ण के पास ले गए; कृष्ण ने उसे देखकर हनुमान् का ध्यान किया और हनुमान् आकर अर्जुन के रथ पर बैठ गए ।

सीता तथा भरत आदि के विषय मे लोग क्या कहते हैं।' तब भद्र सीता के कारण हो रहे लोकापवाद और जनता के आचरण पर पडने वाले उसके कुप्रभाव का उल्लेख करता है। लोग कहते है—'हमको भी अपनी स्त्रियो का ऐसा आचरण सहना होगा':

अस्माकमपि दारेषु सहनीय भविष्यति।
यथा ही कुरुते राजा प्रजास्तमनुवर्तते ॥१६॥ (सर्ग ४३)

यह सुनकर राम लक्ष्मण को बुलाते है और सीता को गगा के उस पार छोड़ आने का आदेश देते है। तपोवन दिखलाने के बहाने लक्ष्मण सीता को रथ पर ले जाते हैं और वाल्मीकि के आश्रम के समीप छोड देते हैं। इस आश्रम मे सीता की परीक्षा की एक कथा का ऊपर उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ६०१)।

वाल्मीकीय कथा कालिदास के **रघुवंश** (सर्ग १४) मे भी मिलती है, अन्तर यह है कि इसमे भद्र मित्र न होकर गुप्तचर बताया गया है। **उत्तररामचरित, कुन्दमाला, दशावतारचरित** आदि प्राचीन रचनाओ मे इस प्रकार का वर्णन किया गया है। **उत्तररामचरित** (अंक १) मे गुप्तचर का नाम दुर्मुख है। **अध्यात्म रामायण** (७, ४, ४७) तथा **आनन्द रामायण** (५, ३, २१) मे इसका नाम विजय माना गया है।

छलित राम के अनुसार दो छद्मवेशी राक्षस राम को सीता के विरुद्ध उकसाते हैं (दे० अनु० २३६) तथा असमिया **लवकुशर युद्ध** मे राम के एक स्वप्न की चर्चा है (दे० अनु० २८५)।

७१८. विमलसूरिकृत **पउमचरियं** (पर्व ६२-६४) मे सीतात्याग का विस्तृत तथा किंचित परिवर्द्धित वर्णन किया गया है।

राम स्वय गर्भवती सीता को वन मे विभिन्न चैत्यालय दिखला रहे थे कि राजधानी के नागरिक उनके पास आये और अभयदान पाकर उन्होने अपने आने का कारण बताया। पहले वे साधारण जनता के दुष्ट स्वभाव का वर्णन करते है, जिनके निम्नलिखित अवगुण होते है—पावमोहियमई (पापमोहितमति), परदोसग्गहणरउ (परदोषग्रहणरत), सहाववको (स्वभाव-कुटिल), सठसीलो (शठशील)। और ऐसी जनता मे सीता के अपवाद[1] को छोड कर किसी और बात की चर्चा नही होती। नागरिको का यह भाषण सुनकर राम ने लक्ष्मण के साथ परामर्श किया किन्तु लक्ष्मण ने सीतात्याग का विरोध किया। राम को सीता पर सन्देह हुआ, अतः उन्होंने अपने सेनापति कृतान्तवदन को बुलाकर आदेश दिया कि जिन-मन्दिर दिखलाने के बहाने सीता को गगा के पार भया-

---

१. पउमचरिय (८०, १६) मे लका से लौट आने के समय भी जनता के अपवाद की चर्चा की गई है।

उदाहरणार्थ—हरिवंश (१, अध्याय ४१), वायुपुराण (अध्याय ८८), विष्णुपुराण (४, ४) तथा नृसिंह पुराण (अध्याय ४७-५२)।

७१६ बौद्ध **अनामकं जातकम्** का अनुवाद २५१ ई० मे चीनी भाषा मे हुआ था। इसमे तो सीता-त्याग का वर्णन नही किया गया है, फिर भी अयोध्या लौटने के बाद सीता के विषय मे लोकापवाद का उल्लेख मिलता है। सम्भव है लोकापवाद के कारण सीतात्याग के वृत्तान्त का पूर्व रूप **अनामकं जातकम्** की निम्नलिखित कथा मे सुरक्षित हो।

'राजा ने रानी से कहा—पति से अलग दूसरे के घर मे निवास करने के कारण स्त्री के चरित्र पर संदेह किया जाता है। तुम्हे स्वीकार करने मे परम्परा के अनुसार कहाँ तक औचित्य है।

रानी ने उत्तर दिया—मैं एक नीच की गुफा मे थी, किन्तु फिर भी मैं उसमे पंकज की तरह रही थी। यदि मुझ मे सतीत्व हो तो पृथ्वी फट जाय।

पृथ्वी फट गई और रानी ने कहा—मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ। इसके बाद राजा और रानी सुखपूर्वक राज्य करने लगे और सब वर्ण अपने-अपने धर्म का पालन करते रहे।'

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे लका से अयोध्या लौटने के बाद सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होते हैं और सीतात्याग की ओर कही भी निर्देश नही किया गया है।

ख. सीतात्याग के भिन्न-भिन्न कारण

७१७. रामकथा के अधिकाश लेखको ने प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाड के अनुकरण पर सीतात्याग का वर्णन किया है। परित्याग के विभिन्न कारणो के अनुसार ये वृत्तान्त तीन वर्गों मे विभक्त किये जा सकते है।

(अ) लोकापवाद

उत्तरकाड (सर्ग ४२-५२) की कथा इस प्रकार है। गर्भवती सीता[1] किसी दिन राम के सामने तपोवन देखने की इच्छा प्रकट करती है। उनको अगले दिन भेज देने की प्रतिज्ञा करके राम अपने मित्रो के साथ बैठकर परिहास की कहानियाँ सुनते हैं—**कथा बहुविधाः परिहाससमन्विताः** (४६, ३)। सयोगवश राम भद्र से पूछते है—'मेरे,

---

१. सेरीराम के अनुसार राम के बहुत समय तक कोई सतति नही थी। अन्त मे उन्होंने महरीसी कली के पास दूतो को भेज कर सहायता माँगी, ऋषि ने दो 'बा-जहर' नामक पत्थर (दे० अनु० ३५४) भेज दिए—एक राम के लिए और एक सीता के लिए। इसके फलस्वरूप सीता गर्भवती हुई।

शाब्दिक समानता के अतिरिक्त एक नया तत्त्व मिलता है—जिस पुरुषों ने अपनी पत्नी को निकाला वह धोबी[1] कहा जाता है।

आगे चलकर धोबी की यह कथा व्यापक हो गई है। तमिल रामायण का उत्तरकांड (७, ७), आनन्द रामायण (५, ३, २८-३०), नर्मदकृत गुजराती रामायणसार, रामचरितमानस के प्रक्षिप्त लवकुशकाड आदि मे इसका वर्णन किया गया है।[2]

७२१. तिब्बती रामायण का वृत्तान्त कथासरित्सागर तथा भागवत पुराण की कथा से विकसित प्रतीत होता है। उसमे जनश्रुति का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। राम किसी पुरुष[3] को अपनी व्यभिचारिणी पत्नी से झगडा करते सुनते हैं। पति कहता है—'तुम अन्य स्त्रियो की तरह नही हो'। इस पर पत्नी उत्तर देती है—'तुम स्त्रियो के विषय में क्या जानते हो। सीता को देख लो, एक लाख वर्ष तक वह दशग्रीव के साथ रही, फिर भी राम ने उसे ग्रहण कर लिया'।

यह सुनकर राम को सीता के विषय में सदेह उत्पन्न होता है और वह छिपकर उस स्त्री से मिलते हैं। स्त्रियो का स्वभाव समझाते हुए वह राम से यो कहती है—

---

१ एक आदिवासी कथा के अनुसार वह कुम्हार था। दे० वी० एलविन, बोडो हाइलैंडर (१९५० ई०), पृ० ६३।

२. पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ६, ७, ८ तथा १३ और लोकगीतों मे भी धोबी की कथा का निर्देश मिलता है। दे० दुर्गाप्रसाद सिंह द्वारा संग्रहीत भोजपुरी लोकगीत, पृ० ११०। पाश्चात्य वृत्तान्त न १८ के अनुसार राम धोबी के शब्द सुनने के बाद सीता को महल ही मे त्यागकर साधू बन जाते हैं और दुनिया भर घूमते-फिरते हैं (भाग ३, पृ० १४)। धोबी के पूर्वजन्म (अनु० ७२७) के अतिरिक्त उसके अगले जन्म का भी ध्यान रखा गया है। आनन्द रामायण (६, ५, ३४) के अनुसार इस धोबी को अन्य अयोध्यावासियो के साथ स्वर्गारोहण करने की अनुमति नहीं मिली। वह पुनः जन्म लेकर कंस का धोबी बन गया तथा कृष्ण के द्वारा मारा गया। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १४ के अनुसार राम लक्ष्मण को बुलाकर सीता को ले जाने तथा मार डालने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण अपने बाण पर किसी वृक्ष का लाल रंग चढ़ाकर राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता का वध हुआ है। इस कथा में सीता वसिष्ठ के यहाँ ठहरती हैं (दे० पृ० ६१६)।

३. डॉ० एफ० डब्लू० थोमस का अनुमान है कि यह संभवतः एक लिच्छवी रजक है।

नक (निमानुष) वन मे छोड दो। सेनापति ने ऐसा ही किया। सयोग से पुडरीकपुर के राजा वज्रजघ ने उस वन मे सीता का विलाप सुन लिया। वह सीता को अपने भवन ले आया और उसके यहाँ सीता के दो पुत्रो का जन्म हुआ।

रविषेण के **पद्मचरित**(पर्व ६६) मे सीता को ग्रहण करने के दुष्परिणाम के वर्णन मे परिवर्द्धन किया गया है। समस्त प्रजा मर्यादा-रहित वताई जाती है। स्त्रियो का हरण हुआ करता है और वाद मे वे पुनः अपने-अपने घर लौट कर स्वीकृत की जाती हैं :

> प्रजाधुनाखिला जाता मर्यादारहितात्मिकता ॥४०॥
> स्वभावादेव लोकोऽयं महाकुटिलमानसः।
> प्रकटं प्राप्य दृष्टान्तं न किंचित्तस्य दुष्करम् ॥४२॥

हेमचन्द्रकृत **योगशास्त्र** मे सीतात्याग के पश्चात् की एक घटना का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार राम अपनी पत्नी की खोज मे वन गए थे किन्तु सीता का कही भी पता नही चल सका। राम ने सोचा कि सीता किसी हिंस्र पशु द्वारा मारी गई है; अतः उन्होंने घर लौटकर सीता के श्राद्ध का आयोजन किया।

(आ) धोवी का वृत्तान्त

७१९ सीतात्याग की कथाओ का एक दूसरा वर्ग मिलता है जिसमे लोकापवाद का एक विशेष उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। एक पुरुष (वाद मे यह धोवी कहा जाता है) अपनी पत्नी को, जो घर से निकली थी, वापस लेने से इनकार करते हुए, कहता है—मैं राम की तरह नही हूँ जिन्होने दीर्घकाल तक दूसरे के घर मे रहने के पश्चात् सीता को ग्रहण किया।

इस वृत्तान्त का सर्वप्रथम वर्णन सम्भवतः आजकल अप्राप्य गुणाढ्यकृत वृहत्कथा मे विद्यमान था और अव सोमदेवकृत **कथासरित्सागर** (९, १, ६६) मे सुरक्षित है। कथा इस प्रकार है—'एक दिन अपने नगर मे गुप्तवेश मे घूमते हुए राजा ने देखा कि एक पुरुष अपनी स्त्री को हाथ से पकड कर अपने घर से निकाल रहा है और यह दोष दे रहा है कि तू दूसरे के घर गई थी। इसपर वह स्त्री कहती है—राम ने सीता को राक्षस के घर रहने पर भी नही छोडा, यह मेरा पति राम से वढकर है, क्योंकि यह मुझे वधु के गृह जाने पर ही अपने घर से निकाल रहा है। यह सुनकर राम को वहुत दु:ख हुआ और उन्होंने लोकापवाद के भय से गर्भवती सीता को वन मे छोड दिया'।

भागवत पुराण (९, ११) मे जो वृत्तान्त मिलता है वह **कथासरित्सागर** की उपर्युक्त कथा से वहुत कुछ मिलता-जुलता है।

७२०. **जैमिनीय अश्वमेध** (अध्याय ३६) तथा **पद्मपुराण** (४, ५५) की सीतात्याग विषयक कथाओ का मूलस्रोत एक ही प्रतीत होता है, क्योंकि दोनो मे

लोगो ने जो कुछ सुना है उसका निस्सकोच विवरण दो। गुप्तचरो ने लोकापवाद की चर्चा की। यह सुनकर लक्ष्मण को अत्यन्त क्रोध हुआ किन्तु राम ने गुप्तचरो का समर्थन करते हुए अपने अनुभव का भी वर्णन किया। लक्ष्मण ने सीता का पक्ष लिया किन्तु राम ने कृतान्तवदन को आदेश दिया कि वह तीर्थयात्रा के बहाने सीता को ले जाकर वन मे छोड दे। सीता को छोडकर कृतान्तवदन के लौटने के बाद राम ने लक्ष्मण और अन्य विद्याधरो के साथ विमान पर चढकर वन मे सीता की खोज की और उन्हे कही न देखकर समझ लिया कि वह किसी हिंस्र पशु की शिकार बन गई है।

हेमचन्द्र के **जैनरामायण** मे वही कथा किंचित परिवर्तित रूप मे पाई जाती है—सीता के गर्भवती हो जाने के बाद उनकी तीन सपत्नियाँ उनसे पहले से अधिक ईर्ष्या करने लगी। इन तीनो के अनुरोध से विवश होकर सीता ने यह कह कर कि मैंने रावण की ओर कभी दृष्टिपात नही किया, रावण के चरणो का चित्र बना दिया। तदुपरान्त सपत्नियों ने राम को वह चित्र दिखलाया और उसका समाचार दासियो द्वारा जनता मे फैला दिया।[1] इसके थोडे समय बाद नागरिको ने राम के पास आकर सीता के विषय मे लोकापवाद की चर्चा की। उसी रात को राम-गुप्त वेश धारण कर नगर मे घूमने गए और उन्होंने सीता के कारण अपनी निन्दा सुन ली। फलस्वरूप उन्होने अगले दिन सीता को वन मे छोड देने का आदेश दिया।

७२३. **कृत्तिवास रामायण** (७, ४४-४५) मे सीतात्याग के तीन कारणो का सम्मिलित वृत्तान्त इस प्रकार है। भद्र से लोकापवाद की चर्चा सुनकर राम सरोवर मे नहाने चले गए। रास्ते मे उन्होने किसी धोवी के मुँह से अपनी निन्दा सुन ली तथा घर पहुँच कर सीता द्वारा अकित रावण का चित्र देख लिया। सीता की सखियो ने जिज्ञासा से प्रेरित होकर सीता से रावण का चित्र खीचने का अनुरोध किया था। सीता ने फर्श पर रावण का चित्र बना दिया था और बाद मे थकित होकर वह उस चित्र के पास सो गई थी। राम के आगमन पर सखियाँ चली गईं, रावण का चित्र देखकर राम का सन्देह और दृढ हो गया और वह सीता को त्याग देने का सकल्प करके चले गए। चन्द्रावली कृत रामायणगाथा मे सीता कैकेयी की पुत्री कुकुआ के बहकावे मे आकर रावण का चित्र खीचती है। **सेरीराम** के अनुसार कीकवी देवी भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी है। सीता ने किसी दिन कीकवी देवी का अनुरोध स्वीकार कर एक पखे पर रावण का चित्र खीच दिया। बाद मे कीकवी देवी ने उस चित्र को सोती हुई सीता की छाती पर

---

१. देवविजयगणि (१५९६ ई०) के जैनरामायण मे स्त्रियाँ राम से कहती है कि सीता रावण के चरणो की पूजा करती है—स्वामिन् एषा सीता रावणे मोहिता रावणाङ्घ्री भूमौ लिखित्वा पुष्पादिभिः पूजयति।

'ज्वर-पीडित मनुष्य जिस प्रकार शीतल सरिता का निरन्तर स्मरण करता है, ऐसे ही काम-पीडिता स्त्री रूपवान् पुरुष का निरन्तर स्मरण करती रहती है। जब तक उसे कोई देखता अथवा सुनता हो वह निंदनीय आचरण नही करती, लेकिन एकान्त मे, बधन से मुक्त होकर वह परपुरुष के साथ भी अपनी काम-पीडा शान्त कर लेती है।'

यह सुनकर राम के मन मे शका सुदृढ हो जाती है। वह घर जाकर सीता को कही भी चले जाने की आज्ञा देते हैं और सीता अपने दो पुत्रो के साथ किसी आश्रम के लिए प्रस्थान करती हैं।

(इ) रावण का चित्र

७२२. पउमचरिय के अनुसार राम को सीता के चरित्र पर सदेह हुआ (अनु० ७१८)। परवर्ती साहित्य मे राम के इस सदेह को अधिक युक्तिसगत बना देने के लिए एक सर्वथा नवीन तत्त्व की कल्पना कर ली गई है, अर्थात सीता के पास रावण का चित्र। रावण-चित्र की कथा जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल होने के कारण अत्यन्त लोकप्रिय बनी। गुजरात से बंगाल तक, और कश्मीर से सिहलद्वीप तक समस्त भारतवर्ष मे फैलकर वह हिन्देशिया, कम्बोडिया और श्याम मे पाई जाती है।

रावण-चित्र का प्राचीनतम उल्लेख जैन-साहित्य मे मिलता है। हरिभद्र सूरि (८ वी श० ई०) के **उपदेशपद** की एक सग्रह गाथा (न० १४) मे सीता द्वारा रावण के चरणो का चित्र बनाने का सकेत मात्र किया गया है। उपदेशपद के टीकाकार मुनि-चन्द्रसूरि (१२वी श० ई०) लिखते हैं कि सीता ने अपनी ईर्ष्यालु सपत्नी की प्रेरणा से रावण के चरणो का चित्र बना लिया था, सपत्नी ने राम को यह चित्र दिखाया और राम ने सीता को त्याग दिया। भद्रेश्वर की कहावली[1] मे रावण-चित्र के विषय मे निम्नलिखित कथा मिलती है। सीता के गर्भवती बन जाने के पश्चात् उनकी सपत्नियो की ईर्ष्या बहुत ही बढ़ गई। उनके अनुरोध पर सीता ने रावण के चरणो का चित्र बनाया, इसपर सपत्नियो ने राम के पास जाकर सीता पर यह अभियोग लगाया कि वह रावण का स्मरण किया करती है और उन्होने प्रमाण के रूप मे रावण का वह चित्र दिखाया। राम ने उनके इस अभियोग पर अधिक ध्यान नही दिया जिससे सपत्नियो ने रावण चित्र-की कथा दासियों द्वारा जनता मे फैला दी। वसन्त के आगमन पर सीता ने देवपूजा करने की दोहद प्रकट की। बाद मे राम गुप्त वेश धारण कर नगर के उद्यान मे टहलने गए और वहाँ उन्होने लका-निवास के पश्चात् सीता को ग्रहण करने के कारण अपनी निन्दा सुन ली। राम किंकर्त्तव्यविमूढ होकर घर लौटे। तब उन्होने लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, हनुमान् आदि को बुलाकर गुप्तचरो को आज्ञा दी कि तुम

---

१. दे० ज० ऑ० इ० (बड़ौदा), भाग २, पृ० ३३६।

यह सुनकर राम कैकेयी को विश्वास दिलाते हैं कि लक्ष्मण कल सीता को वन मे छोड देगे और उसकी दाहिनी बाहु को काटकर अयोध्या ले आयेंगे क्योकि उसी से सीता ने रावण का चित्र बनाया होगा।

लक्ष्मण ने सीता को वाल्मीकि आश्रम के निकट जगल मे छोड दिया तथा उनकी भुजा काटने के विषय मे राम के आदेश का उल्लघन करने के कारण आत्महत्या का विचार किया। इसपर विश्वकर्मा ने प्रकट होकर तथा लक्ष्मण से सारा वृत्तान्त सुनकर सीता का हाथ बनाकर उन्हे दे दिया।

हिन्देशिया के **सेरीराम** तथा **सेरत काण्ड** का उल्लेख ऊपर हो चुका है। वहाँ के **हिकायत महाराज रावण** मे रावण के चित्र के वृत्तान्त का एक किंचित परिवर्तित रूप मिलता है। रावणवध के बाद राम को लका मे रहते हुए सात महीने हो गए हैं। रावण की एक पुत्री के पास उसके प्रिय पिता का एक चित्र है जिसे वह सोती हुई सीता की छाती पर रख देती है। सीता नीद मे इस चित्र का चुम्बन कर रही हैं, उसी समय राम उनके पास आते है और उस दृश्य को देखकर क्रोध से सीता को कोडो से मारते है, उनके बाल काटते हैं और लक्ष्मण को बुलाकर सीता को मार डालने और प्रमाण स्वरूप उनका हृदय ले आने का आदेश देते है। लक्ष्मण सीता के साथ चले जाते हैं। वह सीता को नैहर भेज देते है और एक बकरी मारकर राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता को मारा गया है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत वृत्तान्त का इतना उग्र रूप केवल वहाँ सभव है जहाँ रामचरित्र का आदर्श क्षीण हो गया है।[1]

७२४. रावण-चित्र सम्बन्धी कथाओ का एक अन्तिम रूप मिलता है, जिसमे अलौकिकता आ गई है। **सिंहलद्वीप** की रामकथा मे उमा सीता के यहाँ आकर उनसे केले के पत्ते पर रावण का चित्र खिचवाती हैं। राम के अचानक दोनो के पास आने पर सीता इस चित्र को पलग के नीचे फेक देती है। राम उस पलग पर बैठ जाते हैं और पलग काँपने लगता है। कारण का पता लगाकर राम अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते हैं और अपने भाई को सीता की हत्या करने की आज्ञा देते है। वन मे अपना खग किसी पशु के रक्त से रगकर लक्ष्मण वापस आते हैं और राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता मर गई हैं।

रामकेर्ति (सर्ग ७५) मे अतुलय नामक राक्षसी, रावण की कुटुम्बिनी, सीता की एक सखी का रूप धारण कर उनसे रावण का चित्र खिचवाती है और इस चित्र में प्रवेश कर जाती है, फलस्वरूप सीता प्रयत्न करने पर भी इस चित्र को नही मिटा पाती और

---

१. गोविन्द रामायण तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे रामकथा के निर्वहण के प्रसग मे रावण के चित्र का उल्लेख किया गया है, दे० अनु० ७५३।

रख दिया तथा सीता पर यह अभियोग लगाया कि सो जाने के पूर्व उन्होने उस चित्र का चुम्बन भी कर लिया था। राम ने कौकवी देवी पर विश्वास कर सीता को अपने घर से निकाल दिया और सीता परिचरी के साथ महरीसी कुली के यहाँ चली गईं। प्रस्थान करने के पूर्व सीता ने परमात्मा से प्रार्थना की कि मेरे सतीत्व के प्रमाण स्वरूप कौकवी देवी गूँगी बन जाए तथा सभी पक्षी मौन रहे। परमात्मा ने इस प्रार्थना को सुन लिया जिससे कौकवी देवी १२ वर्ष तक गूँगी ही बनी रही।

काश्मीरी रामायण मे राम की एक सहोदरी बहन का उल्लेख किया गया है। लोकगीतो में भी सीता की ननद उनसे रावण का चित्र खिचवाती है।[1] **रामायण मसीही** के अनुसार राम की बहन ने सीता से दशमुख का चित्र खिचवाकर राम से कहा था कि सीता रात-दिन इस चित्र की पूजा करती हैं। इस कारण राम को सीता पर सन्देह हुआ और उन्होंने जनता के मत का पता लगाने के लिए लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को भेज दिया। उन्होने लौटकर राम को धोबी का प्रसग सुनाया। इसपर राम ने सीता को त्याग दिया। नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार** के अनुसार राम सीता को रावण का चित्र खीचते हुए और अपनी दासी से रावण का वर्णन करते हुए सुनते है। नीलाम्बरदास कृत ठिका रामायण मे भी रावण-चित्र के कारण सीता-त्याग का वर्णन मिलता है।

जावा के **सेरतकाण्ड** मे कैकेयी स्वय सीता के पखे पर रावण का चित्र खीचती है और सोती हुई सीता के पलग पर रख देती है। आनन्द **रामायण** (जन्मकाण्ड, सर्ग ३) मे भी कैकेयी सीता से रावण का चित्र खीचने की प्रार्थना करती है। 'मैंने केवल उसके दाहिने पैर का अँगूठा देखा है' यह कहकर सीता दीवाल पर अँगूठे का ही चित्र अकित करती हैं। बाद मे कैकेयी उस पर रावण का पूरा चित्र बनाती है और राम को बुलाकर स्त्री-चरित्र की आलोचना करते हुए कहती है :

यत्र यत्र मनोलग्नं स्मर्यते हृदि तत्सदा।
स्त्रियाश्चरित्रं को वेत्ति शिवाद्या मोहिताः स्त्रिया ॥४६॥

---

१. दे० सत्येद्र, व्रज लोकसाहित्य का अध्ययन (पृ० १३७)। भारतीय साहित्य (आगरा), वर्ष २, अक ३, पृ० ७६। दुर्गाशकर प्रसाद सिंह : भोजपुरी लोकगीत, पृ० २७। कृष्णदेव उपाध्याय · भोजपुरी ग्रामगीत, पृ० ५६। रामनरेश त्रिपाठी, लोकगीतो मे रामकथा, मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ६६१। रामदास गौड कृत हिन्दुत्व (पृ० १४१) मे कहा गया है कि सुवर्चस रामायण मे रावण के चित्र के कारण शान्ता की चुगली, शान्ता के प्रति सीता का शाप, उसकी पक्षीयोनि की प्राप्ति आदि विषय पाये जाते है।

शाप का सकेत नही है। पौराणिक साहित्य मे भृगु-शाप विष्णु के अवतार धारण कर लेने का कारण बताया गया है (दे० ऊपर अनु० ३७०)।

७२६. वाल्मीकि रामायण के उदीच्य पाठो (गौ० रा० ४, २०, प० रा० ४, १६) मे तारा का शाप सीता-त्याग का परोक्ष कारण माना गया है। वालि-वध के बाद तारा ने राम से कहा था कि मेरे शाप के कारण तुमको सीता की सगति कम समय तक प्राप्त हो सकेगी :

अचिरेण तु कालेन त्वया बाणैरुपार्जिता।
न सीता मम शापेन चिरं त्वयि भविष्यति ॥१५॥
आत्मनः शौचमाधार्य पतिव्रतगुणा सती।
याच्यमाना त्वया सीता पुनर्यास्यति भूतलम् ॥१६॥ (गौ० रा०)

तारा-शाप का उल्लेख निम्नलिखित रचनाओ मे भी मिलता है—रामायण मजरी (४, १६०), माधव कदली कृत असमिया रामायण (४, १६), कृत्तिवास रामायण (४, १३), वलरामदास रामायण, भावार्थ रामायण (४, ७), विलका रामायण।

७२७ पद्म पुराण (पाताल खण्ड, अ० ५७) मे सीतात्याग के एक अन्य परोक्ष कारण का वर्णन मिलता है। किसी दिन अविवाहित सीता उद्यान मे शुको के एक जोडे से रामकथा सुनती है। इस कथा को विस्तार से सुनने की इच्छा से प्रेरित होकर वह दोनो पक्षियो को फँसाती है। वे दोनो वाल्मीकि आश्रम मे रहकर सीखे हुए रामायण का गान करते हैं। कथा समाप्त होने पर सीता अपना परिचय देकर उनसे कहती हैं कि जब तक राम मुझे ले जाने नही आते, मैं तुम दोनो को यहाँ बन्द कर रख लूंगी। पक्षी विनयपूर्वक मुक्त होने की प्रार्थना करते है, विशेषकर इसलिये कि शुकी गर्भवती है। सीता केवल नरपक्षी को मुक्त कर देती हैं। बाद मे शुकी यह शाप देकर पिंजडे मे मर जाती है :

यथा त्वं पतिनां सार्धं वियोजयसि मामितः।
तथा त्वमपि रामेण विमुक्ता भव गर्भिणी ॥५६॥

अपनी मादा की मृत्यु के विषय मे जानकर शुक ने सकल्प किया कि मैं राम के नगर मे जन्म लेकर सीता के वियोग का कारण बन जाऊँगा—**मद्वाक्यादियमुद्विग्ना वियोगेन सुदुःखिता**। तब वह गगा मे डूब मरा और रजक के रूप मे अयोध्या मे प्रकट हुआ और उस रजक की निन्दा के कारण राम ने सीता का त्याग किया।[1]

---

१. 'हिन्दुत्व' (पृ० १४१) मे कहा गया है कि सौर्य्य रामायण मे निम्नलिखित विषयो का वर्णन किया गया है—शुक-चरित, शुक के रजक होने के कारण, उसके द्वारा जानकी निस्सारण।

निराश होकर इसे पलंग के नीचे छिपा देती है। बाद मे राम के इस पर लेट जाने पर उनको तीव्र ज्वर उत्पन्न होता है। जब चित्र का पता चलता है, राम लक्ष्मण को आदेश देते हैं कि वह वन में सीता को मार डाले और परिणामस्वरूप उसका कलेजा ले आवे। जब लक्ष्मण वन मे सीता पर खग चलाते हैं, तब वह खग सीता के गले मे पुष्पो की माला के रूप मे परिणत हो जाता है। सीता लक्ष्मण को वह माला देती हैं और वह फिर खग बन जाती है। तब इन्द्र मृग का रूप धारण कर लक्ष्मण के सामने मर जाते है। लक्ष्मण उसका कलेजा निकाल कर राम को लाकर देते हैं। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इन्द्र भैस का रूप धारण कर सीता को वाल्मीकि के आश्रम ले जाते हैं। रामजातक तथा रामकियेन मे रामकेर्त्ति की उपर्युक्त कथा से मिलता-जुलता वृत्तान्त पाया जाता है। रामकियेन (अ० ४०) के अनुसार अदुल नामक शूर्पणखा की पुत्री सीता से रावण का चित्र खिचवाती है और बाद मे इसी चित्र मे प्रवेश करती है, जिससे सीता उसे मिटा देने मे असमर्थ हो जाती हैं। ब्रह्मचक्र की कथा मे शूर्पणखा स्वय छद्मवेश मे सीता के पास आती है।[1]

(ई) परोक्ष कारण

७२५ रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ५१) मे सीतात्याग का परोक्ष कारण भी उल्लिखित है। सीतात्याग के पश्चात् लक्ष्मण को सान्त्वना देते हुए सुमन्त्र दुर्वासा-दशरथ-सवाद उद्धृत करता है। दुर्वासा ने दशरथ से कहा था कि विष्णु ने भृगु-पत्नी की हत्या की थी फलस्वरूप भृगु ने विष्णु को शाप दिया था कि तुमको भी मनुष्य बनकर पत्नी-वियोग का दुख भोगना पडेगा :

तस्मात्त्वं मानुषे लोके जनिष्यसि जनार्दन ॥१४॥
तत्र पत्नीवियोगं त्वं प्राप्स्यसे बहुवार्षिकम्।

सीतात्याग के इस परोक्ष कारण का उल्लेख रामायण के गौडीय तथा पश्चिम-उत्तरीय पाठो मे नही मिलता। भृगुशाप अथवा भृगु-पत्नी-वध का उल्लेख न तो वैदिक साहित्य मे पाया जाता है और न महाभारत मे। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में ताडकावध के अवसर पर भृगु-पत्नी की ओर निर्देश किया गया है, किन्तु वहाँ किसी

---

१. पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३ के अनुसार सीता ने एक तख्ते पर रावण की छाया का चित्र खीच लिया था। पा० वृ० न० ५ मे यह भी कहा गया है कि जब राम उस तख्ते पर बैठ गए, वह तख्ता काँपने लगा था। राजस्थान के एक प्रसिद्ध लोकगीत मे कौशिल्या-सीता (सास-वधू) का झगडा वनवास का कारण बताया गया है। दे० मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८२७।

लोगो को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी मे प्रवेश करके वैकुंठ चलोगी।"

७३२. रसिक सम्प्रदाय के मधुराचार्य ने सीताहरण की भाँति सीतात्याग को भी अवास्तविक माना है (दे० अनु० १५०)।

७३३. आनन्द रामायण (५, सर्ग २-३) के सीतात्याग का वृत्तान्त मिश्रित है। इसमे अन्य पूर्वोक्त तीन प्रसिद्ध कारणो के साथ-साथ एक नवीन कारण का भी उल्लेख हुआ है, अर्थात् गर्भवती सीता के प्रति राम की कामपीडा। किन्तु इस वृत्तान्त की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे वास्तविक सीता का त्याग नही होता। कथा इस प्रकार है:

'गर्भवती सीता के सीमन्तोन्नयन के लिए जनक और उनकी पत्नी सुमेधा दोनो अयोध्या आकर वहाँ कुछ काल तक रह जाते है। किसी दिन दोनो को बुलाकर राम अपनी कामपीडा समझाते हुए कहते हैं—सीता को अपने समीप न देखकर मैं विरह के कारण विह्वल हो जाता हूँ और इस समय काम-पीडित होकर उनके पास रहना अनुचित है:

आत्मानं विह्वलं दृष्ट्वा सीतासान्निध्यमाश्रये ॥३५॥
अधुना जानकीं दृष्ट्वा कामो मेऽतीव बाधते।
पंचमासोर्ध्वतः संगं गर्हयन्ति मुनीश्वराः ॥३६॥

यदि मैं सीता को मिथिला भेज दूँ तो मैं भी अवश्य मिथिला आ जाऊँगा। अतः एकमात्र उपाय यह है कि मैं लोकापवाद और धोबी के कथन के कारण सीता को वाल्मीकि के आश्रम मे त्याग दूँ। आप भी सीता के साथ वाल्मीकि के यहाँ निवास कीजिए।'

तदन्तर जनक मिथिला मे एक मन्त्री को नियुक्त करके अपनी पत्नी और एकाध परिजनो के साथ वाल्मीकि के आश्रम मे जाते हैं। बाद मे राम परिस्थिति को समझकर सीता से कहते हैं—'तुम पाँच वर्ष तक वाल्मीकि के यहाँ रहोगी, तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होंगे और अत मे तुम यहाँ आकर जनता को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी देवी से सतीत्व का प्रमाण पाओगी। हरण के समय की भाँति तुम सत्व-गुण से मेरे साथ रहोगी और अन्य दो गुणो से समन्वित होकर चली जाओगी।'

इस पर सीता रजस्तमोमयी स्वकीय छाया बनाकर अपने सत्वगुण से अदृश्य रूप से राम के वामाग मे निवास करने लगती हैं:

रजस्तमोमयीं स्वीयां छायां निर्माय सादरम् ॥१७॥
श्रीराघवस्य वामांगे सत्त्वरूपा लयं ययौ। (सर्ग ३)

७२८. **पउमचरियं** (पर्व १०३) के अनुसार सीता ने अपने पूर्वजन्म मे मुनि सुदर्शन की निन्दा की थी और इसके फलस्वरूप वह स्वय लोकापवाद की शिकार बनी (दे० अनु० ४१०)। **भावार्थ रामायण** (७, ४८) मे सीता अपने निर्वासन के विषय मे कहती है कि मैंने वन मे लक्ष्मण पर आक्षेप किया था। बगाल मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है—सीता के बचपन के समय लोमश ऋषि जनक के राजभवन मे आये थे। ऋषि ने सीता को स्नेह से अपनी गोद मे रख लिया किन्तु लोमश के रूखे बालो के कारण सुकुमार सीता की त्वचा से रक्त बहने लगा। ऋषि को बहुत क्रोध हुआ और उन्होंने सीता को वन मे कष्ट भोगने का शाप दिया।

७२९. **तत्त्वसंग्रह रामायण** (७, ६) मे सीतात्याग के कारण के विषय में वाल्मीकि को प्रदत्त वरदान की कथा मिलती है। वाल्मीकि किसी समय क्षीरसागर के तट पर तपस्या करने गये थे। क्षीरसागर की लहरो के कारण वाल्मीकि को कष्ट हुआ। उन्होंने कहा—लक्ष्मी के जन्मदाता होने के कारण क्षीरसागर अभिमानी है, मैं भी तपस्या द्वारा लक्ष्मी के पिता बनने का वरदान प्राप्त करूँगा। तब वाल्मीकि गगा के तीर पर तपश्चर्या करने लगे। लक्ष्मी प्रकट हुईं और वाल्मीकि का निवेदन सुनकर उन्होंने कहा : त्रेतायुग मे विष्णु दशरथ के यहाँ जन्म लेगे; उस समय मैं पृथ्वी से प्रकट होकर जनक की पुत्री बन जाऊँगी। अन्त मे लोकापवाद से लाभ उठाकर मैं पुत्री की तरह तुम्हारे आश्रम मे शरण लेने आऊँगी।

ग. अवास्तविक सीता-त्याग

७३०. रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अनेक अर्वाचीन राम-कथाओ मे सीतात्याग के वृत्तान्त को एक अन्य रूप देकर उसे अवास्तविक बनाने का प्रयास किया गया है।

तुलसीकृत **गीतावली** मे राम की आज्ञानुसार लक्ष्मण सीता को वन मे न छोडकर उनको वाल्मीकि के हाथो मे सौप देते है। इस वृत्तान्त मे त्याग का कारण इस प्रकार है—दशरथ अपनी आयु के पूर्ण होने के पहले स्वर्गवासी हो गये थे और राम को उनकी शेप आयु मिली थी। परन्तु सीता के साथ पिता की आयु भोगना अनुचित समझकर राम ने अपनी आयु के समाप्त होने पर सीता का निर्वासन किया (दे० ७, २५ आदि)।

७३१. **अध्यात्म रामायण** (७, २) मे भी सीतात्याग वास्तविक नही कहा जा सकता है। इसके अनुसार देवताओ ने सीता के पास आकर कहा—'यदि तुम पहले वैकुठ चली जाओ तो श्री रघुनाथ भी वहाँ आकर हमे सनाथ करेंगे।' सीता से देवताओ की प्रार्थना सुनकर राम ने कहा—"मैं यह सब जानता हूँ। मैं लोकापवाद के बहाने तुम्हें त्याग दूंगा। वाल्मीकि के आश्रम में तुम्हारे दो पुत्र होंगे। बाद मे तुम मेरे पास आकर

७३६. वालकाड के चौथे सर्ग मे कुशीलवौ भ्रातरौ राजपुत्रौ की कथा का प्रथम रूप मिलता है। राम के अयोध्या लौटने के पश्चात् वाल्मीकि ने समस्त रामचरित के विषय मे काव्यरचना की थी और उसे दो कुशीलव राजपुत्रो को सिखाया था। वाद मे ये दोनो जाकर सभाओ मे रामायण का गान करने लगे (**ऋषीणां च द्विजातीनां साधूनां च समागमे**)। किसी दिन राम ने दोनो को अयोध्या के राजमार्ग मे देखा और महल ले जाकर भरत आदि भाइयो के साथ रामायण का गान सुना।

इस सर्ग मे कही भी कुश तथा लव का अलग उल्लेख नही है, केवल दो भाइयो का वर्णन है जो राजपुत्र तथा कुशीलव अर्थात् गायक हैं। रामायण के तीनो पाठो मे तो ये दोनो राम के पुत्र माने गए हैं, लेकिन जिस श्लोक मे इसका उल्लेख किया गया है, वह तीनो पाठो मे भिन्न है। अत ऐसा प्रतीत होता है कि यह तथ्य वाद मे स्वतन्त्र रूप से तीनो पाठो मे जोड दिया गया है। उपर्युक्त वृत्तान्त के उत्तरार्द्ध मे, जहाँ राम दोनो का गान सुनते हैं कही भी इसका निर्देश नही किया गया है कि ये उनके पुत्र हैं। इससे यह अनुमान दृढ हो जाता है कि पहले इन दोनो 'कुशीलवौ' तथा राम के पिता-पुत्र सवध का उल्लेख नही किया गया था।[1]

७३७. उत्तरकाड मे सीता के वाल्मीकि के आश्रम मे दो पुत्रो को जन्म देने का वर्णन मिलता है, जिनका नाम वाल्मीकि ने कुश और लव रखा था (दे० सर्ग ६६)। वाद मे दोनो वाल्मीकि के शिष्य वन जाते हैं और राम के अश्वमेध के अवसर पर रामायण का गान करते हैं। तत्पश्चात् राम दोनो का परिचय प्राप्त कर सीता को बुला भेजते हैं। सीता के भूमि-प्रवेश के वाद कुश-लव रामायण का उत्तरकाड भी सुनाते हैं (दे० सर्ग ९३-९९)। रामायण के अन्त मे ऐसा उल्लेख है कि कुश को कोशल देश तथा राजधानी कुशवती दी जाती है और लव को उत्तर कोशल तथा श्रावस्ती प्राप्त होती है (दे० सर्ग १०७-१०८)।

७३८. रघुवश (१६, ३८) के अनुसार कुश ने अयोध्या का जीर्णोद्धार किया था यद्यपि रामायण (सर्ग १११) मे इसका श्रेय ऋषभ को दिया गया है।

वाद की रामकथाओ मे कुश तथा लव के विवाहो का भी वर्णन मिलता है। **रघुवंश** (सर्ग १६) तथा सध्याकरनदिकृत **रामचरित** (सर्ग ४) मे कुश तथा कुमुद्वती के विवाह का उल्लेख मिलता है। **आनन्द रामायण** के विवाहकाड मे दोनो के कई विवाहो का वर्णन किया गया है, इस काण्ड के अन्त मे राम के २००० पौत्रो तथा

---

१. डॉ० ए० वेवर का मत है कि गायको ने अपने नाम "कुशीलव" की व्युत्पत्ति (कु-शील) को छिपाने के उद्देश्य से उपर्युक्त कथा की कल्पना की है। दे० आन दि रामायण, पृ० ९६।

तत्पश्चात् राम विजय नामक मित्र से लोकापवाद और धोबी की कथा सुनते हैं। इतने मे सीता कैकेयी के अनुरोध से रावण के अंगूठे का चित्र खीच लेती है, जैसे ऊपर इसका वर्णन हुआ है। अगले दिन सीता लक्ष्मण के साथ वाल्मीकि आश्रम की ओर प्रस्थान करती हैं।

उपसंहार

७३४. सीतात्याग की उपर्युक्त कथाओ मे बहुत अन्तर पाया जाता है। फिर भी इस वृत्तान्त के विकास की रूपरेखा स्पष्ट है। इस त्याग के तीन बहुत व्यापक कारण माने गये हैं और उन तीनो कारणो मे क्रमिक विकास देखा जा सकता है। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। अनेक रचनाओ मे सीता-चरित्र पर राम के सदेह का उल्लेख है। इस शंका को युक्तिसगत बना देने के लिए रावण के चित्र की कथा की कल्पना कर ली गई है। चित्र की कथा का उद्‌गम तो भारतवर्ष मे हुआ, लेकिन इसका उग्र रूप विदेश मे मिलता है। कालक्रम के अनुसार भी उपर्युक्त विकास की पुष्टि होती है।

जिस प्रकार अर्वाचीन रामकथा-साहित्य मे माना गया है कि सीता की एक छाया मात्र का हरण हुआ था, उसी प्रकार सीतात्याग के विकास की परिणति यह है कि सीता की रजस्तमोमयी छाया मात्र का परित्याग हुआ था।

६—कुश-लव-चरित्र

क. कुश-लव-चरित्र का विकास

७३५. प्राचीनतम रामकथाओ मे कुश-लव सम्बन्धी सामग्री का नितान्त अभाव था, वाल्मीकीय युद्धकाड के अंत मे राम के १०,००० वर्ष के राज्यकाल और उनके पुत्रो तथा भाइयो के साथ बहुत से यज्ञ करने का उल्लेख किया गया है[1] किन्तु कुश-लव का सकेत मात्र भी नही पाया जाता है। वाल्मीकि रामायण के प्रामाणिक काडो (२-६) मे कही भी कुश-लव का निर्देश नही किया गया है।

महाभारत की चारो रामकथाओ मे तथा हरिवंश, ब्रह्मपुराण और नृसिंह पुराण मे भी लव-कुश का उल्लेख नही हुआ है, रामोपाख्यान को छोडकर इन रचनाओ मे राम की मृत्यु स्पष्ट शब्दो में उल्लिखित है।

---

१. ईजे बहुविधैर्यज्ञैः ससुतबान्धवः (१२८, ६७)। गोविंदराज के पाठ तथा दक्षिण के सस्करणो मे राम के पुत्रो का उल्लेख नही मिलता, उद्धरण इस प्रकार है—ससुहृज्ज्ञातिबांधवैः।

पडी। जल ही मे उन्होने दो पुत्रो को जन्म दिया। तदुपरान्त पृथ्वी तथा गगा देवियाँ सीता को पुत्रो के साथ रसातल ले गई। वाद मे कुछ वडे होने पर गगा ने दोनो पुत्रो को शिक्षा के लिए वाल्मीकि के हाथो सौप दिया। इस वर्णन के अनुसार कुश तथा लव अपने माता-पिता के विषय मे कुछ नही जानते हैं। अतिम अंक मे वाल्मीकि की आज्ञा से सीता प्रकट होकर राम के साथ अयोध्या लौटती हैं। रगनाथ रामायण के उत्तर-काण्ड के अनुसार सीता ने अगस्त्य द्वारा राम को प्रदत्त दो वाणो का चूर्ण वनाकर खाया और इस प्रकार गर्भवती हो गयी।[1] कन्नड राष्ट्र कवि कुवेपु की कल्पना और विचित्र है। रावण ने अपने वध से पहले काली की पूजा की और दो वर प्राप्त किए। एक तो राम पर विजय और दूसरा, सीता का प्रेम। ये वर उसके अगले जन्म मे पूरे हो गये, वह कुभकर्ण के साथ लव और कुश के रूप मे उत्पन्न हुआ। दे० रामायण दर्शनम् (काव्यालय, मैसूर)।

७४२ गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे सीता के विजयराम आदि आठ पुत्रो का उल्लेख किया गया है, जिनमे से कनिष्ठ अजितजय युवराज पद पर नियुक्त किया जाता है। इस कथा मे सीतात्याग का निर्देश नही है।[2] सारलादास के महाभारत मे सीता के एक ऋतुपर्ण नामक पुत्र की कथा का उल्लेख ऊपर (अनु० ६०६) हो चुका है।

(आ) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि।

७४३. **तिब्बती रामायण** प्राचीनतम रचना है जिसमे वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि का वृत्तान्त सुरक्षित है। **कथासरित्सागर** का तत्सम्बन्धी वृत्तान्त इस प्रकार है। सीता ने वाल्मीकि के आश्रम मे एक पुत्र को जन्म दिया था, जिसका नाम वाल्मीकि ने लव रखा। एक दिन सीता लव को लेकर नदी मे स्नान करने गई। कुछ देर वाद वाल्मीकि कुटी मे लौटे। यह जानकर कि सीता स्नान करते समय लव को झोपडी मे छोड दिया करती है, वाल्मीकि को भय हुआ कि कोई हिंस्र पशु वालक को उठा न ले गया हो। इस पर उन्होने तपोवल द्वारा 'कुश' घास से एक वालक की सृष्टि की। लौटने पर सीता ने उस वालक को पुत्रवत् ग्रहण किया। इस प्रकार सीता के लव तथा कुश दो पुत्र हो गए। (दे० ६, १, ८३-६३)।

---

१. दे० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति, हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम साहित्यो का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० २२१।

२. जावा के सेरत काड तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३ मे सीता के केवल एक पुत्र का उल्लेख किया गया है। ये वृत्तान्त कुश-लव की जन्मकथा के द्वितीय वर्ग से सम्बन्ध रखते है, जिसमे सीता केवल एक पुत्र को जन्म देती है।

२४ पौत्रियो का उल्लेख है (दे० ९,१८)। सेरीराम के अनुसार लव ने इन्द्रजित की पुत्री तथा इसके वाद विभीषण की पुत्री से विवाह किया, कुश ने रावण के पुत्र गगा महासुर की पुत्री से विवाह करके लका का राज्य स्वीकार किया। कुशलव के विषय मे जो नवीन सामग्री व्यापक रूप से प्रचलित है वह उनकी जन्मकथा तथा उनके युद्ध से सबध रखती है। इसका निरूपण अगले दो परिच्छेदो मे किया जाएगा।

कुश-लव की जन्मकथा

(अ) यमल कुश-लव

७३९ कुश-लव की जन्मकथा का प्राचीनतम रूप वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड मे प्रस्तुत है। राम द्वारा परित्यक्त किए जाने के पश्चात् सीता वाल्मीकि के आश्रम मे शरण पाकर वहाँ दो यमल पुत्रो को जन्म देती हैं (सर्ग ६६)।

वाल्मीकि ने कुश से अग्रज के निर्मार्जन करने की आज्ञा दी थी तथा अनुज को लव[1] से, जिससे उनका नाम क्रमश: कुश और लव रखा गया था·

यस्तयोः पूर्वजो जातः स कुशैर्मन्त्रसत्कृतैः।
निर्मार्जनीयस्तु तदा कुश इत्यस्य नाम तत् ॥७॥
यश्चावरो भवेत्ताभ्यां लवेन सुसमाहितः।
निर्मार्जनीयो वृद्धाभिर्लवेति च स नामतः ॥८॥

७४०. उत्तरकाड की उपर्युक्त कथा सवसे प्रामाणिक मानी गई है। इसका वर्णन अधिकाश रामकथाओ मे मिलता है। जैन पउमचरिय के अनुसार राजा वज्रजंघ परित्यक्त सीता को वन मे देखकर उनको अपने महल ले गया, जहाँ सीता ने लवण तथा अकुश को जन्म दिया। हेमचन्द्र के जैन रामायण मे दोनो का नाम अनगलवण तथा मदनाकुश माना गया है।

७४१. भवभूति के उत्तररामचरित मे कुश-लव के जन्म का किंचित परिवर्तित रूप मिलता है। लक्ष्मण के चले जाने के वाद परित्यक्त सीता वन मे प्रसवपीडा का अनुभव करने लगी। उस पीडा से निराश होकर वह आत्महत्या के विचार से गगा मे कूद

---

१ टीकाकारो के अनुसार काटे हुए कुश का अग्रभाग कुश है तथा उसका अधोभाग लव। रघुवश (सर्ग १५) मे लिखा है:

स तौ कुशलवोन्मृष्टगर्भक्लेदौ तदाख्यया।
कविः कुशलवावेव चकार किल नामतः ॥३२॥

रघुवश के टीकाकारो ने लव का अर्थ गोपुच्छलोम वताया है। वलरामदास ने माना है कि राम ने सीतात्याग के पूर्व ही अपने भावी पुत्र का नाम इसीलिए 'कुश' रखा कि वह कुशलपूर्वक जन्म लेने वाला था।

चाहते थे किन्तु सीता ने अपने बालक के एक सखा के लिए उनसे अनुरोध किया, तब वाल्मीकि ने सीता के इस निवेदन को पूर्ण कर दिया।

७४५. हिन्देशिया के **सेरीराम** तथा **हिकायत महाराज रावण** मे महरीसी कली बालक के साथ नहाने जाते है। बालक छिपकर अपनी माता के पास लौट जाता है और महरीसी कली उसे मृत समझकर एक दूसरे बालक की सृष्टि करते हैं। **सिंहली रामकथा** के अनुसार वाल्मीकि ने सीता के पुत्र को न देखकर तालाब के एक कमल से एक दूसरे बालक को बनाया। बाद मे सीता को विश्वास नही हुआ और उन्होने वाल्मीकि से एक तीसरे बालक की सृष्टि करने का अनुरोध किया। वाल्मीकि ने पहले इनकार किया। अन्त मे सीता ने जब यह प्रतिज्ञा की कि मैं अपनी उँगली से तीसरे बालक को दूध पिलाऊँगी तब वाल्मीकि ने कुश से एक तीसरे बालक की सृष्टि कर दी।

ग। कुश-लव-युद्ध

७४६ वाल्मीकि रामायण मे राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि मे कुश-लव रामायण का गान करते है और इस तरह राम अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त करते है। बहुत सी रामकथाओ मे कुश-लव के राम की सेना तथा राम से भी युद्ध करने का वर्णन किया गया है। उस युद्ध के भिन्न-भिन्न कारण बताए जाते हैं, किन्तु सब से प्रचलित कारण यह है कि कुश-लव ने राम के अश्वमेध के घोडे को बाँध लिया था।

विमलसूरि का **पउमचरिय** (पर्व ९७-१००) प्राचीनतम सुरक्षित रचना है जिसमे सीता के पुत्रो के युद्ध का वर्णन किया गया है। उसके अनुसार लवण तथा अकुश अपनी माता के साथ पुंडरीकपुर के राजा वज्रजघ के यहाँ रहते हैं और सिद्धार्थ से शिक्षा पाते है। उनके विवाह तथा दिग्विजय के पश्चात् नारद उनके पास आकर उनसे उनकी माता के परित्याग की कथा सुनाते हैं। इसपर राम तथा लक्ष्मण से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से दोनो सेना लेकर अयोध्या पर आक्रमण करते हैं। लवण राम से युद्ध करते हैं तथा अकुश लक्ष्मण से। युद्ध के अनिश्चित होने पर सिद्धार्थ और नारद लवण तथा अकुश के जन्म का रहस्य राम-लक्ष्मण से प्रकट करते हैं। इसपर राम अपने पुत्रो से मिलकर दोनो को अपने पास रखते हैं। बाद मे सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन मिलता है(दे० अनु० ६०१)। रविषेणकृत **पद्मचरित** (पर्व १०२) मे हनुमान् पुत्रो का पक्ष लेकर राम के विरुद्ध लडते हैं।

कुश-लव-युद्ध का यह रूप केवल जैन सहित्य मे ही मिलता है। **रामलिंगामृत** (सर्ग १४) मे नारद राम के पास जाकर कुश-लव के पराक्रम का वर्णन करते हैं, जिससे राम सेना लेकर दोनो के पास पहुँचते हैं। नारद का उल्लेख पउमचरिय का प्रभाव सूचित करता है।

कुश के जन्म का यह वृत्तान्त **काश्मीरी रामायण** (न० ६६), रामायण मसीही, गोविन्द रामायण (पृ० २०६) और पाश्चात्य वृत्तान्तो (न० ८ और १७) मे भी मिलता है। **काश्मीरी रामायण** मे लव का जन्म भी अपने ढङ्ग का है। दशरथ राम को स्वप्न मे दर्शन देकर सन्तान न होने के कारण उनकी भर्त्सना करते है। इस पर राम वसिष्ठ से परामर्श करने के वाद अश्वमेध यज्ञ करते है, जिसके अन्त मे सीता को प्रसाद दिया जाता है। फलस्वरूप सीता गर्भवती हुई और वाद मे उन्होने वाल्मीकि के आश्रम मे लव को जन्म दिया।

तिव्वती रामायण मे लव-कुश के जन्म का वर्णन सीतात्याग के पूर्व किया गया है। राम किसी विद्रोही सामन्त से युद्ध करने गए थे। वहुत समय वीत जाने पर सीता ने उनकी खोज मे निकलकर मार्ग मे अपने पुत्र लव को ऋषियो की रक्षा मे छोड दिया किन्तु लव छिपकर अपनी माता के पीछे चला गया। तव ऋषियो ने कुश से एक नये वालक की सृष्टि की, लौटने के वाद सीता ने उसे भी ग्रहण कर लिया।

७४४. उपर्युक्त कथा का एक ऐसा रूप भी मिलता है, जिसमे सीता अपने पुत्र को वाल्मीकि की रक्षा मे छोडकर जाती हैं किन्तु मार्ग मे वानरियो का उपदेश सुनकर लौट आती हैं और वाल्मीकि से विना कुछ कहे अपने पुत्र को अपने साथ ले जाती हैं। **आनन्द रामायण** (५, ४, ६२-६८) मे सीता ने मार्ग मे एक वानरी को पाँच वालक ढोते हुए देखकर अपने पुत्र का स्मरण किया। इस पर वह लौटी और वाल्मीकि से कुछ कहे विना अपने पुत्र को साथ लेकर स्नान करने गई। रामकेर्त्ति (सर्ग ७५) तथा रामकियेन मे भी वानरियो से सीता के मिलने का वृत्तान्त दिया गया है। **रामकियेन** (अध्याय ४१) मे सीता वानरियो को अपने वच्चो के साथ-साथ एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूदते हुए देखती हैं और वच्चो की समुचित रक्षा न करने के कारण उनकी भर्त्सना करती है। इस पर वानरियो ने उत्तर दिया कि तुम अपने पुत्र को ध्यानमग्न ऋषि के पास छोडकर हमसे कही अधिक असावधान हो। यह सुनकर सीता अपने पुत्र को ले आने के लिए लौट पडती है। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सुग्रीव की सेना के वानर वन मे सीता की सेवा करते थे तथा उनके पुत्र को टहलाने के लिए ले जाया करते थे। किसी दिन सीता अपने पुत्र के साथ नदी तट पर सो गई, इतने मे एक वानरी उनके पुत्र को टहलाने के लिए ले गई। वाद मे सीता के दु.ख से द्रवित होकर वाल्मीकि ने एक वालक की सृष्टि की (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७)। इन सब कथाओ मे तथा **राम जातक** और **ब्रह्मचक्र** मे भी वाल्मीकि एक दूसरे वालक की सृष्टि करते है। **रामकेर्त्ति** (सर्ग ७६) तथा **रामकियेन** (अ० ४१) के अनुसार वाल्मीकि ने सीता के वालक का चित्र वना लिया था तथा उसमे जीवन लाने के लिए धर्मक्रिया कर रहे थे कि सीता अपने वालक के साथ लौटी। वाल्मीकि धर्मक्रिया को अपूर्ण छोड देना

उत्तररामचरित (अङ्क ५-६) मे लव पहले यज्ञाश्व की रक्षा करने वाली राम-सेना से यथा वाद मे लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु से युद्ध करता है। राम पहुँचकर लव-चन्द्रकेतु का युद्ध रोकते हैं और लव तथा कुश से मिलकर उनका परिचय प्राप्त करते हैं। अन्त मे वह सीता को पुनः ग्रहण करते है।

७४९. परवर्ती रचनाओ मे कुश-लव-युद्ध का विस्तृत तथा परिवर्द्धित वर्णन किया गया है। **जैमिनीय अश्वमेघ** (अ० २९-३६) मे इस प्रकार का प्राचीनतम वृत्तान्त मिलता है। लव राम के यज्ञाश्व को बाँधकर तथा बहुत से सैनिको का वध करके शत्रुघ्न द्वारा पराजित किया जाता है। इस पर कुश शत्रुघ्न को पराजित करता है। वाद मे कुश-लव लक्ष्मण, हनुमान् तथा भरत पर विजय प्राप्त करते है तथा अन्त मे राम को भी आहत करते हैं। तदनन्तर वाल्मीकि राम की समस्त सेना को अमृत जल से पुनर्जीवित करते है। **पद्मपुराण** (पाताल खण्ड अ० ६०-६४) का वृत्तान्त इससे मिलता-जुलता है किन्तु राम-लक्ष्मण-भरत युद्ध के लिए नही आते है और सीता अपने सतीत्व की शपथ खाकर राम-सेना को पुनर्जीवित करती हैं।

निम्नलिखित रचनाओ मे राम के यज्ञाश्व को लेकर कुश-लव-युद्ध का गौण-परिवर्तनो के साथ वर्णन किया गया है—छलित राम (दे० अनु० २३६), कृत्तिवास रामायण (७, ५७-६५), राम-चन्द्रिका (प्रकाश ३५-३९), गोविन्द रामायण, रामायण मसीही, नर्मद कृत गुजराती रामायण सार, काश्मीरी रामायण (७१-७७), पाश्चात्य वृत्तान्त न० ७, ८ तथा १४।

७५० **रामकेर्ति** (सर्ग ७६-७९) तथा **रामकियेन** (अध्याय ४२) मे लव-कुश-युद्ध की कथा इस प्रकार है। दस वर्ष की अवस्था मे सीता के पुत्रो ने वाल्मीकि से धनुर्विद्या की शिक्षा पाई,[1] किसी दिन उन्होने अपने वाणो से एक विशाल वृक्ष नष्ट किया जिससे अयोध्या मे भूकम्प हुआ। ज्योषियो ने कहा कि यह भूकम्प एक महान् राजा की धनुर्विद्या का परिणाम है। उस राजा का पता लगाने के उद्देश्य से एक अश्व छोड दिया गया (इसका शरीर श्वेत था, चेहरा काला तथा मुँह लाल) और हनु-मान् भरत तथा शत्रुघ्न ने उसका अनुसरण किया। सीता के पुत्रो ने अश्व को अपने अधिकार मे किया तथा हनुमान् को हराकर उसके हाथ बाँध लिए तथा उसके चेहरे पर गोदना गोदकर लिख दिया कि उस वानर का स्वामी ही उसके हाथ खोलने मे समर्थ होगा। भरत और शत्रुघ्न ने गाँठ खोलने का असफल प्रयत्न किया जिससे हनुमान् को अयोध्या जाकर राम की शरण लेनी पडी। वाद मे हनुमान् लौटे और सीता के पुत्र

१ रामकेर्ति मे सीता के पुत्र रामलक्ष्मण और जपलक्ष्मण कहलाते है, राम-कियेन मे मकुत और लव नाम दिये गये हैं। श्याम के रामजातक तथा ब्रह्मचक्र मे भी कुश-लव-युद्ध का वर्णन किया गया है।

७४७. कथासरित्सागर (६, १, ६५-११२) मे उस युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। कुश तथा लव किसी दिन वाल्मीकि द्वारा पूजित शिवलिंग से खेलते हैं। प्रायश्चित्त के लिए वाल्मीकि लव को कुवेर के सरोवर से स्वर्ण कमल तथा उनकी वाटिका से मदार फल ले आने और उनसे लिंगपूजा करने की आज्ञा देते हैं। लक्ष्मण उस समय राम के पुरुषमेध के लिए शुभलक्षणसपन्न पुरुष की खोज कर रहे थे। उन्होंने लव को कुवेर के यहाँ से लौटते देखा और उसे कारागार मे वन्द कर दिया। इस पर वाल्मीकि ने कुश को अयोध्या भेज दिया। वाल्मीकि के दिव्य अस्त्रो से कुश ने लक्ष्मण को और इसके वाद राम को भी पराजित किया। इसके वाद राम ने अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त कर दोनो को अपने साथ रखा तथा सीता को भी वाल्मीकि के आश्रम से वुला भेजा।

आनन्द रामायण (जन्म काण्ड, सर्ग ६-८) का वृत्तान्त उपर्युक्त कथा से प्रभावित प्रतीत होता है, यद्यपि इसमे भवभूति के अनुसार रामाश्वमेध के घोडे का भी उल्लेख किया गया है। वाल्मीकि के आश्रम मे अपने पुत्रो के साथ रहने वाली सीता नौ दिन तक सयोगकरणव्रत करना चाहती हैं। इस व्रत के लिए अयोध्या के सरोवर के स्वर्ण कमलो की आवश्यकता है। पचवर्षीय लव उन्हे प्रतिदिन छिपकर ले आता है। आठवें दिन वह चौदह पहरेदारो को परास्त करके उनसे कहता है कि मैं वाल्मीकि के आज्ञानुसार ये कमल ले जाता हूँ। नवे दिन लव १००० रक्षको को पराजित करता है और सीता अपना व्रत पूरा करने मे समर्थ होती हैं। तदुपरान्त राम वाल्मीकि को अपने वीर शिष्य के साथ अश्वमेध के लिए निमन्त्रण भेज देते हैं। वाल्मीकि सीता तथा लव-कुश के साथ जाकर यज्ञभूमि के दो कोस की दूरी पर डेरा डालते हैं। इतने मे यज्ञाश्व वहाँ पहुँचता है और लव उसे वाँध कर राम की समस्त सेना को हरा देता है। वाद मे लक्ष्मण लव को पराजित कर उसे ले जाते हैं। लव को मुक्त करने के लिए कुश जाकर लक्ष्मण को हराता है और देर तक राम से युद्ध करता है, इस युद्ध मे किसी की भी जीत नही होती। जव राम वाल्मीकि से पूछते हैं कि ये दोनो कौन हैं, तो वाल्मीकि उत्तर देते हैं कि कल यह रहस्य खुलेगा। दूसरे दिन कुश तथा लव आनन्द रामायण का जन्मकाण्ड गाकर अपना परिचय देते हैं। इस पर सीता को भी वुलाया जाता है और सतीत्व का साक्ष्य देने के पश्चात् वह राम तथा कुश-लव के साथ अयोध्या मे निवास करने लगती हैं। **भावार्थ रामायण** (७, ६६-६६) का वृत्तान्त आनन्द रामायण पर आधारित है।

७४८. भवभूति का उत्तररामचरित प्राचीनतम रचना है जिसमे राम के यज्ञाश्व के कारण सीता के पुत्रो के युद्ध का उल्लेख किया गया है। सम्भव है कि उपर्युक्त कथासरित्सागर की कथा अधिक प्राचीन हो और भवभूति ने उसके तथा उत्तरकाण्ड के वृत्तान्तो का समन्वय करने का प्रयत्न किया हो।

वाल्मीकिकृत आदि-रामायण राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वर्यशाली राज्य के संक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होता था। सीतात्याग के विकास के निरूपण मे उन प्राचीन रचनाओ की नामावली दी गई है, जिनमे न तो सीतात्याग और न सीता के भूमिप्रवेश की ओर संकेत किया गया है। अत. राम द्वारा रावण की पराजय तथा सीता की पुन.प्राप्ति उन समस्त रामकथाओ का अन्तिम वर्ण्य विषय है (दे० अनु० ७१५)। अनामकम् जातकम् (और सम्भवत. गुणाढ्यकृत बृहत्कथा) मे भी रामकथा सुखान्त है।

गुणभद्रकृत उत्तरपुराण की रामकथा मे भी सीतात्याग का उल्लेख नही है, लेकिन कथा का निर्वहण जैन परम्परा के अनुकूल है जिसमे नारायण के मर जाने पर बलदेव जैन दीक्षा लेते हैं। अत: लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते है तथा मोक्ष प्राप्त करते हैं। सीता भी राम की अन्य पत्नियो के साथ आर्यिका बनकर अच्युत स्वर्ग प्राप्त कर लेती है।

ख। दुःखान्त रामकथा

७५२. वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड की रामकथा दुखात है। लोकापवाद के कारण अपनी निर्दोष पत्नी को त्याग देने के पश्चात् राम अश्वमेध के अवसर पर अपने पुत्रों को देखकर सीता को भी बुला भेजते है। वाल्मीकि सीता के साथ सभा मे पहुँच कर सीता के सतीत्व का साक्ष्य देते है। तदनन्तर राम जनता को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से सीता से अनुरोध करते है कि वह अपने सतीत्व का प्रमाण दे। इस पर सीता शपथ खाती हैं:

यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१४॥
मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१५॥
यथैतत्सत्यमुक्तं मे वेद्मि रामात्परं न च।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१६॥ (सर्ग ९७)

पृथ्वी देवी एक दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भूमि से प्रकट हो जाती हैं और सीता को अपनी शरण मे लेकर पुनः भूमि मे प्रवेश करती है। राम विलाप करते हैं तथा पृथ्वी देवी से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते हुए समस्त पृथ्वी को प्लावित करने की भी धमकी देते हैं। अत मे ब्रह्मा स्वर्ग मे पुर्नमिलन का आश्वासन देकर राम को सान्त्वना प्रदान करते है।

सीता का भूमिप्रवेश उत्तरकाण्ड के निर्वहण का प्रथम सोपान कहा जा सकता है। द्वितीय सोपान राम द्वारा लक्ष्मण-त्याग पर समाप्त हो जाता है। सीता के अत-

को कैदी बनाकर अयोध्या ले गये किन्तु जपलक्ष्मण अपनी माता से एक मायामय अंगूठी पाकर अपने भाई को छुड़ाने चला गया। अयोध्या में पहुँचकर जपलक्ष्मण ने छद्मवेशी रम्भा की सहायता से उस अगूठी को रामलक्ष्मण के पास पहुँचा दिया। अगूठी के प्रभाव से उसके बन्धन छूट गए। बाद में राम ने वन मे उन बालको का सामना किया किन्तु युद्ध अनिश्चित रहा। अन्त मे रामलक्ष्मण के बाण ने पुष्पमाला बनकर अपने को राम के प्रति समर्पित किया। तब राम ने यह कह कर ब्रह्मास्त्र चलाया—यदि ये बालक पराये हैं तो ब्रह्मास्त्र उनको नष्ट करे, यदि ये सम्बन्धी हैं तो ब्रह्मास्त्र बालको के लिए मिष्ठान्न मे बदल जाय, और वह मिष्टान्न बन गया। इस प्रकार उनको अपने सम्बन्धी जानकर तथा लक्ष्मण से सीतात्याग की वास्तविक कथा सुनकर राम सीता के पास चले गये और उन्होंने सीता से क्षमा-याचना की। सीता ने राम की भर्त्सना करते हुए अयोध्या लौटना अस्वीकार किया किन्तु उन्होंने दोनो बालको को राम के साथ जाने दिया।

७५१. अनेक विदेशी रामकथाओ मे कुश-लव-युद्ध के प्रसङ्ग मे राम के यज्ञाश्व का उल्लेख नही मिलता। एक पाश्चात्य वृत्तान्त (नं०९) के अनुसार राम के पुत्रो ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया किन्तु राम ने दोनो को परास्त कर दिया; एक पुत्र रणभूमि मे मर गया तथा दूसरा राम का उत्तराधिकारी बना। सिंहली राम-कथा के अनुसार राम ने किसी दिन सीता के पुत्रो से भेंट की थी। बालको ने उनको प्रणाम नही किया जिससे राम ने उन पर बाण चलाया। अपना बाण बालको को आहत करने मे असमर्थ पाकर राम को जिज्ञासा हुई और इस प्रकार उनके जन्म का रहस्य प्रकट हुआ। सेरीराम की तत्सम्बन्धी कथा इस प्रकार है। सीता के पुत्रों ने किसी दिन मृगया खेलते समय एक हिरण का वध किया जिसे राम ने पहले ही बाण से आहत किया था। लक्ष्मण उस आहत हरिण का पीछा करते हुए बालकों के पास पहुँचे, हरिण को लेकर झगडा हुआ और बालक लक्ष्मण को बांधकर महरीसी कली के यहाँ ले गये। बाद में राम ने लक्ष्मण की खोज मे महरीसी कली के पास पहुँचकर अपने पुत्रो का परिचय प्राप्त किया। जावा के सेरत काण्ड के अनुसार सीता के पुत्र बुतलव ने विभीषण की सेवा करने वाले दो राक्षसो के साथ झगडा किया; उन्होंने विभीषण के पास जाकर शिकायत की जिससे युद्ध छिड गया और उसमे बुतलव ने विभीषण और लक्ष्मण को कैदी कर लिया।

७—रामकथा का निर्वहण

क। प्राचीन सुखांत रामकथा

७५२. प्रस्तुत निबन्ध के कई स्थलो पर इसका उल्लेख किया गया है कि

किया तथा ब्रह्मा ने विष्णु के अनुरोध को स्वीकार कर राम की प्रजा को 'सन्तानक' लोको मे स्थान दिलाया। सबो ने सरयू मे अपना शरीर त्याग कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान किया (सर्ग १०७-११०)।

रामकथा का उपर्युक्त निर्वहण रघुवंश, अध्यात्म रामायण आदि अधिकांश रामकथाओ मे पाया जाता है: यहाँ पर केवल उन रचनाओ का उल्लेख होगा जिनमें सीता के भूमि-प्रवेश की कथा मे कोई विशेष परिवर्तन किया गया है।

(१) अनेक रचनाओ के अनुसार सीता वाल्मीकि-आश्रम के निकट ही भूमि मे विलीन हो गई थी। भागवत पुराण (९, ११, १५-१६) की सक्षिप्त रामकथा में लिखा है कि पति द्वारा निर्वासित सीता ने अपने पुत्रो को वाल्मीकि के हाथो मे सौंपकर राम के चरणो का ध्यान करती हुई भूमि मे प्रवेश किया, राम यह समाचार सुनकर अत्यन्त दु:खी हुए। रामायण मसीहो के अनुसार वाल्मीकि ने लव-कुश-युद्ध के पश्चात् राम को सचेत कर दिया। इसके बाद राम ने सीता की झोपडी के पास जाकर नम्रतापूर्वक क्षमायाचना की। वाल्मीकि का अनुरोध स्वीकार कर सीता झोपडी मे से निकली। किन्तु यह सुनकर कि राम पुन. परीक्षा चाहते हैं, सीता वही शपथ खाकर भूमि मे विलीन हो गईं।[1]

(२) अन्य रचनाये सीता के भूमि-प्रवेश के प्रसग मे रावण के चित्र का उल्लेख करती हैं। गोविन्द रामायण (पृ०२३६) के अनुसार सीता ने किसी दिन स्त्रियो का अनुरोध मानकर एक दिवार पर रावण का चित्र बना दिया। राम को सीता पर सदेह हुआ जिससे सीता विरक्त हुईं और अपने सतीत्व की शपथ खाकर पृथ्वी मे लीन हो गईं। उत्तर भारतकी एक रामकथा (पाश्चात्य वृतान्त न० १३) के अनुसार राम ने सीता को निर्वासित करने के बाद उनको अपने गुणसपन्न एकमात्र पुत्र के कारण पुनः ग्रहण किया था। किन्तु सीता ने बाद मे महल की स्त्रियो के कहने से रावण के १० सिरो और २० बाहुओ की चर्चा करते हुए दीवार पर उसका चित्र भी बनाया। राम ने चित्र देखकर सीता के सतीत्व पर सन्देह किया और क्रुद्ध सीता ने शपथ खाकर भूमि प्रवेश किया।

---

१. लोकसाहित्य मे भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। दे० रामनरेश त्रिपाठी, लोकगीतो मे राम-कथा (मैथिली शरणगुप्त, अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ०६६१), डा० सत्येन्द्र, व्रजलोक साहित्य मे राम-कथा (भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष २ अंक ३, पृ०९४)। अन्य लोकगीतो मे सीता राम का निवेदन ठुकराकर अयोध्या लौट जाना अस्वीकर करती हैं (दे० इन्दुप्रकाश पाण्डेय, अवधी लोकगीत और परम्परा (इलाहाबाद १९५८) पृ० २२६।

द्धान हो जाने के बहुत काल बाद क्रमश: कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी का देहान्त हुआ (सर्ग ९९)। अनन्तर भरत तथा लक्ष्मण के पुत्रो को राज्य दिलाने के उद्देश्य से अनेक विजय-यात्राओ का उल्लेख मिलता है (सर्ग १००-१०२)। तब लक्ष्मण के त्याग का इस प्रकार वर्णन किया गया है—काल तपस्वी के रूप मे राम के पास आकर एकान्त मे ही उनके साथ बातचीत करना चाहते हैं और राम से यह प्रतिज्ञा कराते हैं कि जो कोई हम दोनो को देखे अथवा सुने वह राम द्वारा वध किया जाय—**यः शृणोति निरीक्षेद्वा स वध्यो भविता तव** (१०३, १२)। राम लक्ष्मण को समझाकर द्वार पर खडा रहने का आदेश देते है। एकान्त पाकर काल राम को ब्रह्मा का यह सन्देश देते हैं कि रामावतार का समय समाप्त हो रहा है। इतने मे दुर्वासा लक्ष्मण के पास आ पहुँचते है और राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न और उनकी सन्तति को शाप देने की धमकी देकर तुरन्त ही राम से मिलने के लिए अनुरोध करते हैं। लक्ष्मण वश के नाश की अपेक्षा अपना ही मरण श्रेष्ठ समझकर राम के पास अन्दर जाते है—**एकस्य मरणंमेऽस्तु मा भूत्सर्वविनाशनम्** (१०५, ९)। बाद मे राम अपनी प्रतिज्ञा के वशीभूत होकर लक्ष्मण का परित्याग करते हैं :

विसर्जये त्वां सौमित्रे मा भूद् धर्मविपर्ययः ।
त्यागो वधो वा विहितः साधूनां ह्युभयं समम् ॥ १३ ॥ सर्ग १०७)

इस पर लक्ष्मण सरयू के तट पर जाते है और कृताजलि होकर अपना श्वास रोक लेते हैं। इन्द्र लक्ष्मण को सशरीर स्वर्ग ले जाते हैं, देवता विष्णु का चतुर्थांश पाकर प्रसन्न है और लक्ष्मण की पूजा करते हैं (सर्ग १०६-१०६)

निर्वहण का अन्तिम सोपान राम का **स्वर्गारोहण** है। लक्ष्मण के वियोग के कारण दुःखी होकर राम ने भरत को राज्य सौंपने और स्वय वन जाने की इच्छा प्रकट की किन्तु भरत तथा अयोध्या की प्रजा ने राम के साथ जाने की अनुमति माँग ली। तब राम ने अपने पुत्रो को कुशावती तथा श्रावस्ती मे राजसिंहासन पर बिठाकर शत्रुघ्न को बुला भेजा। अयोध्या के दूतो से यह जानकर कि राम और भरत प्रजा के साथ स्वर्गगमन की तैयारियाँ कर रहे हैं शत्रुघ्न ने अपने पुत्रो को राज्य सौंपकर अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। राम ने शत्रुघ्न को अपने साथ जाने की अनुमति प्रदान की। इतने मे सुग्रीव और विभीषण के नेतृत्व मे वानर, ऋक्ष और राक्षस भी पहुँचे।

राम ने सबो को अपने साथ जाने को कहा किन्तु विभीषण, हनुमान्, जाम्बवान्, मैंद, द्विविद को कलियुग के अन्त तक जीवित रहने का आदेश दिया। दूसरे दिन प्रातः राम सबो के साथ सरयू के तीर पर पहुँचे, ब्रह्मा ने प्रकट होकर राम से निवेदन किया कि वह अपने भाइयो के साथ अपने विष्णुरूप मे प्रवेश करे। राम ने ऐसा ही

ब्रह्म पुराण (अ० १५४) के अनुसार अंगद और हनुमान् राम के अश्वमेध के अवसर पर अयोध्या पहुँचकर तथा सीता-त्याग का वृत्तान्त सुनकर गोदावरी की ओर प्रस्थान करते हैं। इसपर राम भी सीता का स्मरण करते हुए अयोध्यावासियों के साथ गोदावरी के तट पर तपस्या करने जाते हैं। राम की तपस्या का उल्लेख पउमचरिय का प्रभाव प्रतीत होता है।

ग । अर्वाचीन सुखांत रामकथा ।

७५४ अधिकांश रामकथाओं में सीतात्याग के साथ सीता के भूमिप्रवेश की कथा का भी वर्णन किया गया है, जिससे रामकथा प्रायः दुःखान्त रह गई है। फिर भी बहुत सी रामकथाओं को सीतात्याग के रहते हुए भी सुखांत बना दिया गया है।

भवभूति ने **उत्तररामचरित** के अंतिम सम्मेलन नामक अंक में राम-सीता के सम्मिलन का विस्तृत वर्णन किया है। इसके अनुसार वाल्मीकि ने राम तथा अयोध्या-वासियों को अपने एक नाटक का अभिनय देखने का निमंत्रण दिया था। उस नाटक का वर्ण्य-विषय त्याग के पश्चात् सीता का चरित तथा उनके दो पुत्रों का जन्म है। उस करुणात्मक कथा का अभिनय देखकर समस्त सभा सीता के सतीत्व पर विश्वास करती है और राम अपने पुत्रों तथा सीता के साथ अयोध्या लौट जाते हैं। क्षेमेंद्रकृत **बृहत्कथामंजरी** में भी एक अत्यन्त संक्षिप्त रामचरित पाया जाता है जिसका निर्वहण सुखान्त है।

पुत्रौ कुशलवाभिख्यौ उक्तौ वाल्मीकिना स्वयं।
तौ प्राप्य रामो दयितां विशुद्धामानिनाय ताम्॥

७५५ **कुन्दमाला** के अन्तिम अंक में सीता अपनी निर्दोषता की शपथ खाकर पृथ्वी से प्रार्थना करती हैं कि वह प्रकट होकर साक्ष्य देने की कृपा करे। इसपर पृथ्वी देवी प्रकट होती हैं और सीता के सतीत्व का साक्ष्य देकर लुप्त हो जाती हैं। तदुपरान्त राम सीता और पुत्रों के साथ अयोध्या लौटते हैं।

आनन्द रामायण के जन्म काण्ड (८, ६१-७३) में वाल्मीकीय उत्तरकांड के वृत्तान्त को किंचित बदलकर उसे सुखान्त बना दिया गया है। जब पृथ्वी देवी सीता के साथ भूमि में प्रवेश कर रही थी, राम ने असफल विनय करने के पश्चात् धनुष पर बाण रखकर समस्त सृष्टि का संहार करना प्रारम्भ किया। यह देखकर भयभीत पृथ्वी देवी ने सीता को लौटा दिया। पूर्णकाण्ड (सर्ग ४-६) में कथा का निर्वहण इस प्रकार है—सोमवंशी राजाओं के आक्रमण तथा उनके साथ संधि के वर्णन के पश्चात् ब्रह्मा ने हस्तिनापुर में ही राम के पास आकर वैकुण्ठ

(३) **आनन्द रामायण** (७,७३) मे सीता के भूमि-प्रवेश की कथा इस प्रकार है। कुश-लव-युद्ध के बाद सीता अपने पुत्रो के साथ अयोध्या लौट कर राजमहल मे रहने लगी थी। कैकेयी ने किसी दिन समस्त राजसभा के सामने सीता के सतीत्व पर सन्देह प्रकट किया। इसपर सीता ने पृथ्वी देवी से प्रार्थना की और वह प्रकट होकर सीता को अपने साथ ले गई।

(४) भुइञा माधवदास के **विचित्र रामायण** मे प्रस्तुत प्रसग को एक अन्य रूप दिया गया है। सीता ने कुश और लव को भीख माँगने भेज दिया। रास्ते मे झगडा हुआ और दोनो अलग हो गये। लव ने अयोध्या जाकर राम के सामने रामायण का गान किया और वह चावल लेकर सीता के पास लौटा। बाद मे दोनो ने जाकर राम के सामने सीता-त्याग तथा अपने जन्म की कथा सुनाई। इसपर राम ने सीता को बुलाया, सीता तो चली आई किन्तु अपने सतीत्व की शपथ खाकर पाताल मे प्रवेश कर गई।

(५) **पउमचरियं** के निर्वहण मे उत्तरकाण्ड के तीन सोपानो को एक नया रूप दिया गया है। सीता ने कुश-लव-युद्ध के पश्चात् अयोध्या लौटकर अग्नि-परीक्षा द्वारा अपने सतीत्व का प्रमाण दिया (अनु० ६०१)। तब राम ने अनुरोध किया कि वह उनके साथ अयोध्या में निवास करे किन्तु सीता ने हाथ मे अपने सिर के बाल काटकर जैन दीक्षा लेने का संकल्प प्रकट किया। इसपर राम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडे और सीता ने सर्वगुप्त नामक मुनि के पास जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। बाद मे राम चेतना पाकर सीता की खोज मे निकले किन्तु सकलभूषण मुनि से यह आश्वासन सुनकर कि तुम किसी दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लोगे राम अयोध्या लौटे (पर्व १०२)। लक्ष्मण की मृत्यु की कथा इस प्रकार है—रत्नचूल और मणिचूल नामक देवताओ ने राम-लक्ष्मण के प्रेम की परीक्षा लेने के उद्देश्य से लक्ष्मण को राम की मृत्यु का मिथ्या समाचार सुना दिया जिससे तत्काल लक्ष्मण का देहान्त हुआ। राम के पुत्र लवण और अकुश लक्ष्मण की मृत्यु के कारण विरक्त होकर तपस्या करने चले गए। लक्ष्मण की अत्येष्टि के पश्चात् राम लवण के पुत्र अनगरुह को राज्य सौंपकर तपस्वी के रूप मे भ्रमण करने लगे। राम किसी दिन कोटिशिला के स्थान पर पहुँचे। वहाँ उन्होने सीता द्वारा उत्पन्न प्रलोभनो को ठुकराया जिससे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। उन्होंने १७००० वर्ष तक जीवित रह कर अन्त मे निर्वाण प्राप्त किया।[1]

---

१ दे० पर्व ११०-११८। अन्तिम पर्व मे इसका भी उल्लेख हुआ कि सीता आगे चलकर चक्रवर्त्ती राजा के रूप मे उत्पन्न होगी और अनेक जन्मो के बाद निर्वाण प्राप्त कर सकेगी। लक्ष्मण तथा रावण भी कई बार जन्म लेकर निर्वाण प्राप्त करेंगे।

साथ परलोक सिधारे । सेरतकाण्ड मे भी सीता-त्याग के बाद राम-सीता-सम्मिलन का वर्णन किया गया है । अपने पुत्र कुतलव को उत्तराधिकारी बनाकर राम ने सीता, लक्ष्मण और विभीषण के साथ तपोमय जीवन अपनाया । अन्त मे अनल वानर ने अपने को अग्नि मे बदल दिया, राम, सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अगद आदि उसमे प्रवेश कर जल गए । इस प्रकार राम और सीता पुनः स्वर्गवासी विष्णु और श्री बन गए ।

७५७. तीन रामकथाओ मे सीता के भूमिप्रवेश के पश्चात् भी सीताचरित का चित्रण किया गया है । रघुनाथ महत के अद्भुत रामायण मे तत्सबधी कथा इस प्रकार है । पाताल-प्रवेश के बाद सीता को अपने पुत्रो को देखने की इच्छा हुई और उन्होंने वासुकि को उन्हे ले आने के लिए भेज दिया । वासुकि ब्राह्मण का वेश धारण कर तथा बालको को अस्त्र-विद्या सिखलाने का बहाना देकर उनको सीता के पास ले गए । बाद मे राम ने उन्हे वापस ले आने के लिए हनुमान् को भेज दिया । हनुमान् ने स्त्री का रूप धारण कर पाताल में प्रवेश किया और अपने को रत्नमजरिणी नामक सीता की सखी कह कर सीता के पास आने का प्रयास किया । सीता ने नागो को आदेश दिया कि वह उस स्त्री को पकड ले आएँ । तब हनुमान् ने वानर का रूप धारण कर नागो को परास्त कर दिया और सीता से मिलकर लव-कुश को राम के पास भेजने का निवेदन किया । सीता सहमत हुईं, वह स्वय सिंहासन पर विराजमान पृथ्वी में से राम के सामने प्रकट हुई और उन्होने राम के हाथो लव-कुश को समर्पित कर दिया । सीता यह प्रतिज्ञा करती हुई अतर्द्धान हो गईं कि मैं प्रतिदिन नित्यक्रिया के पश्चात् आपकी सेवा मे उपस्थित हो जाऊँगी ।

रामकेर्ति (सर्ग ७९-८०) तथा **रामकियेन** (अ० ४३-४५) का निर्वहण इस प्रकार है । कुश-लव-युद्ध के बाद सीता ने दोनो को राम के हाथ सौंपकर स्वय अयोध्या लौटना अस्वीकार कर दिया । बाद मे राम ने अपने पुत्रो को सीता के पास भेजकर उनसे लौटने का अनुरोध किया किन्तु सीता ने यह सन्देश भेज दिया कि मैं राम की अन्त्येष्टि के लिए ही अयोध्या जाऊँगी । तब राम ने हनुमान् द्वारा अपनी मृत्यु का मिथ्या समाचार सीता के पास भेज दिया । सीता लौटकर राम के मृत शरीर के पास विलाप करने लगी । राम एक परदे की ओट से कुछ देर तक उनका विलाप सुनकर सीता के पास आए और उनको सान्त्वना देने लगे । राम को जीवित देखकर सीता को क्रोध हुआ और वह राम की भर्त्सना करने के बाद नागराज विरुण की शरण लेकर पृथ्वी मे प्रवेश कर गईं । बाद मे हनुमान् ने पाताल जा कर सीता से लौटने का

पधारने का निवेदन किया और राम ने उत्तर दिया कि मैं कल ही सीता तथा अपने भाइयो के साथ वैकुण्ड जाऊँगा। राम ने कुश को एक विशाल सेना के साथ राजधानी भेज दिया, मथरा और धोवी को स्वर्ग जाने की अनुमति नही मिली, अतः इन दोनो को भी कुश के साथ लौट जाना पडा।[1] विभीषण, जाम्बवान् तथा हनुमान् को पृथ्वी पर रहने का आदेश मिला। दूसरे दिन राम विष्णु भगवान् के रूप मे परिणत हुए, सीता लक्ष्मी मे, लक्ष्मण शेष भगवान् मे, भरत और शत्रुघ्न शख और चक्र मे। वानर देवताओ के शरीर मे प्रविष्ट हुए और अयोध्यावासी अपना शरीर त्याग कर दिव्य देहधारियो के रूप मे स्वर्गगामी विमानो पर सुशोभित होने लगे।

७५६. **कथासरित्सागर** (६, १, ११२), **जैमिनीय अश्वमेघ** (अध्याय ३६), **पद्मपुराण** (पातालखण्ड, अध्याय ६७), **रामचन्द्रिका** (प्रकाश ३६), **रामलिंगामृत** (सर्ग १४), **रामजातक**, **ब्रह्मचक्र**, **सिंहली रामकथा** तथा एक पाश्चात्य वृत्तान्त (न० १७) मे कुशलव के युद्ध के अवसर पर सीता राम से मिलकर उनके साथ अयोध्या लौट जाती हैं। इन रामकथाओ मे सीता के पुनः सतीत्व का प्रमाण देने का प्रायः उल्लेख नही किया गया है।

तिब्बती रामायण के अनुसार हनुमान् अन्य वानरो के साथ अयोध्या आने का निमत्रण पाकर राम से मिलते हैं। सीता-त्याग का वृत्तान्त सुनकर वह वर्णन करते है कि किस परिस्थिति मे उन्होंने सीता को लका मे देखा था। हनुमान् का प्रणाम स्वीकार करके राम सीता को बुला भेजते हैं, जिसपर सीता अपने पुत्रो के साथ लौटती है।

सेरीराम मे राम-सीता-सम्मिलन का इस प्रकार वर्णन किया गया है। सीता की सत्यक्रिया के फलस्वरूप किकवी देवी तथा सब जानवरो को बारह वर्ष तक गूँगा देखकर राम को विश्वास हुआ कि सीता निर्दोष है (दे० अनु० ७२३)। अतः वह सीता को अयोध्या ले आने के लिए महरीसी कली के यहाँ चले आए। महरीसी कली ने राम का अभिप्राय जानकर राम-सीता के १४ दिवसीय विवाहोत्सव का आयोजन किया जिसके अन्त में सीता अपने पुत्रो के साथ राम की राजधानी लौटी। वहाँ काकवी देवी ने क्षमा-याचना की जिससे उसका तथा सब जानवरो का गूँगापन समाप्त हो गया। अपने पुत्रो के विवाह के बाद राम ने किसी तपस्वी के पास 'अयोध्या पूरी नगार' नामक एक छोटी-सी नगरी बनवाकर अपनी राजधानी 'दूर्या पूरी नगार' लव को सौप दिया और वह लक्ष्मण, सीता तथा हनुमान् के साथ अयोध्या मे तपस्वी का जीवन बिताने लगे। वहाँ ४० वर्ष तक तपश्चर्या करने के पश्चात् राम सीता के

---

१ उन दोनो के विषय मे इसका भी उल्लेख है कि वे कृष्णावतार के समय कस के रजक और पूतना के रूप मे प्रकट होंगे।

अध्याय २१

उपसंहार

७५८. निबन्ध के प्रथम तथा तृतीय भागो मे क्रमश प्राचीन तथा अर्वाचीन रामकथा-साहित्य का निरूपण किया गया है। द्वितीय भाग मे रामकथा की उत्पत्ति तथा प्रारम्भिक विकास की रूपरेखा अङ्कित की गई है और चतुर्थ भाग मे रामकथा के विभिन्न प्रसङ्गो का क्रमिक विकास दिखलाया गया है। प्रथम और विशेष कर तृतीय भाग की सामग्री से रामकथा की अद्वितीय व्यापकता प्रमाणित होती है [इस व्यापक प्रसार के साथ-साथ कथानक में परिवर्द्धन तथा परिवर्तन भी होते रहे है जिसके फल-स्वरूप विविध रामकथाओ की उत्पत्ति हुई है जो एक दूसरी से सर्वथा भिन्न प्रतीत होती हैं। किन्तु इन विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता ही हमारे अध्ययन का सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। अत. प्रस्तुत उपसहार मे पहले रामकथा की व्यापकता और तदनन्तर समस्त रामकथाओ की मौलिक एकता पर विचार किया जाएगा। विभिन्न रामकथाओ मे जो मुख्य परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किए गए हैं उनकी सामान्य विशेषताओ का तीसरे परिच्छेद मे निरूपण किया जाएगा। अवतारवाद तथा राम-भक्ति के अतिरिक्त रामकथा के विकास पर कुछ अन्य वहिरग तत्वो का भी प्रभाव पडा है, इनका चौथे परिच्छेद मे वर्णन किया जाएगा। अन्तिम परिच्छेद मे रामकथा के समस्त विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जायगा।

१—रामकथा की व्यापकता

७५९. आदि-कवि वाल्मीकि के पूर्व की रामकथा विषयक गाथाओ तथा आख्यान-काव्य की लोकप्रियता तथा व्यापकता निर्धारित करना असम्भव है। बौद्ध तिपिटक मे जो एकाध रामकथा सम्बन्धी गाथाएँ मिलती है और सम्भवत. महाभारत के द्रोण तथा शातिपर्व मे जो सक्षिप्त रामकथा पाई जाती है, वह उन प्राचीन गाथाओ पर समाश्रित हैं (दे० अनु० १३०, ४४, ४५)। इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह अनुमान दृढ हो जाता है कि जिस दिन वाल्मीकि ने इस प्राचीन गाथा-*साहित्य को एक ही कथासूत्र मे ग्रथित कर आदिरामायण की सृष्टि की थी, उसी दिन* से रामकथा की दिग्विजय प्रारम्भ हुई। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड तथा

राम विभीषण[1] को बुलाकर उनके परामर्श के अनुसार एक वर्ष तक वन मे राक्षसो का वध करने के बाद अयोध्या लौटे। उस समय देवताओ की सभा मे इन्द्र ने राम के विरह का वर्णन किया और ईश्वर ने राम तथा सीता दोनो को कैलास आने का निमत्रण दिया। वहाँ राम ने नम्रतापूर्वक सीता से क्षमायाचना की तथा ईश्वर ने सीता से राम के पास लौटने का अनुरोध किया। अन्त मे सीता ईश्वर का अनुरोध मानकर अपने पति के साथ अयोध्या लौट गई।

---

१. रामकेलि की अपूर्ण हस्तलिपियो मे राम के विभीषण को बुला भेजने के उल्लेख के बाद और कुछ सामग्री नही मिलती।

लिए विशेष स्थान नही था। वैदिक साहित्य मे रामकथा का नितान्त अभाव है (दे० अनु २०)। हरिवंश तथा प्राचीनतम महापुराणो मे विष्णु के अन्य अवतारो के साथ-साथ राम का नाम भी लिया गया है और इसमे जो सक्षिप्त रामकथा मिलती है वह आदिरामायण पर समाश्रित प्रतीत होती है (दे० अनु० १५१-१५६)। बाद के महापुराणो तथा उपपुराणो मे रामकथा विषयक सामग्री बढने लगी, विशेष कर **स्कंदपुराण, पद्मपुराण तथा महाभागवत पुराण** मे (दे० अनु० १६१, १६२, १६६)। राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् असख्य साम्प्रदायिक रामायण तथा सहिताएँ प्रचलित होने लगी जिनमे से **अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण,** तत्वसंग्रहरामायण और विभिन्न कालनिर्णय रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं (दे० अनु० १७५-१७६)।

७६१. संस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल मे प्रायः समस्त कवियो ने राम-कथा को लेकर अमर रचनाओ की सृष्टि की है। निम्नलिखित महाकाव्य तथा नाटक उल्लेखनीय हैं—**रघुवंश, रावणवह, भट्टिकाव्य, महावीरचरित, उत्तररामचरित, जानकीहरण, कुन्दमाला, अनर्घराघव, बालरामायण, महानाटक**। बाद मे संस्कृत साहित्य बहुत कुछ निर्जीव कृत्रिमता की शृखलाओ मे बँध गया; किंतु रामकथा विषयक श्लेष-काव्य, विलोमकाव्य, चित्रकाव्य, शृगारिक खडकाव्य आदि इस बात का प्रमाण देते हैं कि रामकथा की लोकप्रियता अक्षुण्ण रही। पद्रहवी शताब्दी के पश्चात् के बहुत से रामकथा सबधी महाकाव्यो तथा नाटको का उल्लेख मिलता है किंतु यह सामग्री अधिकाश अप्रकाशित है।

७६२. आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य मे रामकथा की व्यापकता अद्वितीय है। इन सब भाषाओ का सर्वप्रथम महाकाव्य प्राय. कोई रामायण है तथा बाद की बहुत सी रचनाओं की कथा-वस्तु भी रामकथा से सबध रखती है। इसके अतिरिक्त इन भाषाओ का सबसे लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ प्राय कोई रामायण ही है। निबध के बारहवे अध्याय मे इस विस्तृत साहित्य का किंचित् निरूपण किया गया है। यहाँ पर केवल मुख्य रचनाओ के नाम दिए जाते हैं—कवनकृत **तमिल रामायण** (१२वी श० ई०), तेलुगु **द्विपद रामायण** (१३ वी श० ई०), मलयालम **रामचरितम्** (१४वी श० ई०), कन्नड **तोरवे रामायण** (१६ वी श० ई०), असमिया **माधवकंदली रामायण** (१४वी श० ई०), बगाली **कृत्तिवास रामायण** (१५ वी श० ई०), हिन्दी **रामचरितमानस** (१६ वी श० ई०), उड़िया **बलरामदास रामायण** (१६ वी श० ई०) और मराठी **भावार्थ रामायण** (१६ वी श० ई०)।

७६३. भारतीय साहित्य मे रामकथा की व्यापकता की अपेक्षा विदेश मे उसकी लोकप्रियता एक प्रकार से और आश्चर्यजनक है। बौद्धो ने पहले पहल विदेश मे

उत्तरकाण्ड मे इसका प्रमाण मिलता है कि काव्योपजीवी कुशीलव समस्त देश मे जाकर चारो ओर आदिकाव्य का प्रचार करते थे। वाल्मीकि ने अपने शिष्यो को रामायण सिखलाकर उसे राजाओ, ऋषियों तथा, जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया था।

इस प्रकार रामकथा की लोकप्रियता तथा व्यापकता दिनो दिन बढती जा रही थी। महाभारत के रामोपाख्यान मे, जो स्पष्टतया आदि-रामायण पर निर्भर है, इस व्यापक प्रचार का निर्देश मिलता है। हरिवंश (विष्णुपर्व, अध्याय ९३) से पता चलता है कि रामायण के कथानक को लेकर प्राचीन काल में नाटको का अभिनय भी हुआ करता था। ये नाटक अप्राप्य है किंतु हरिवश के इस उद्धरण से रामकथा की उत्तरोत्तर बढती हुई लोकप्रियता स्पष्ट है। रामावतार की भावना भी धीरे-धीरे दृढ होती गई (दे० अनु० १४२) और बौद्धो तथा जैनियो ने भी रामकथा को अपनाना प्रारम्भ कर दिया। बौद्धो ने ईसवी सन् के कई शताब्दियो पहले राम को बोधिसत्व मानकर रामकथा को अपने जातक-साहित्य मे स्थान दिया था। आगे चलकर बौद्धो मे रामकथा की लोकप्रियता घटने लगी, अर्वाचीन बौद्ध साहित्य मे रामकथा का उल्लेख नही मिलता (दे० अनु० ५४)।

बौद्धो की अपेक्षा जैनियो ने बाद मे रामकथा को अपनाया, लेकिन जैन साहित्य मे इसकी लोकप्रियता शताब्दियो तक बनी रही जिसके फलस्वरूप जैन कथा-ग्रथो में एक अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य पाया जाता है। इसमे राम, लक्ष्मण तथा रावण केवल जैन-धर्मावलबी ही नही माने जाते प्रत्युत उन्हे जैनियो के त्रिषष्टि महापुरुषो मे भी स्थान दिया गया हे (दे० अनु ५५)। इस प्रकार रामकथा भारतीय सस्कृति मे इतने व्यापक रूप से फैल गई कि राम को उस समय के तीन प्रचलित धर्मों मे एक निश्चित स्थान प्राप्त हुआ—ब्राह्मण धर्म मे विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म मे बोधिसत्व तथा जैन धर्म में आठवे बलदेव के रूप मे। आगे चलकर सस्कृत धार्मिक साहित्य मे, संस्कृत ललित साहित्य की प्रत्येक शाखा मे, अन्य भारतीय भाषाओ के साहित्य मे और भारत के निकटवर्ती देशो के साहित्य मे भी रामकथा एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है। इस अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य से रामकथा की व्यापकता तथा लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। वास्तव मे उस समय समस्त भारतीय संस्कृति इतनी राममय बन गई थी कि इन विभिन्न रामकथाओ की वंशावली निर्धारित करना नितान्त असम्भव हो गया है। अतः निबंध के तृतीय भाग मे रामकथा-विषयक सामग्री का भाषा तथा साहित्य के विविध रूपो के अनुसार वर्गीकरण किया गया है।

७६०. संस्कृत धार्मिक साहित्य मे रामकथा का स्थान अपेक्षाकृत कम व्यापक है। कारण यह है कि एक तो वैदिक साहित्य के निर्माणकाल मे रामकथा प्रचलित नही थी। दूसरे, रामभक्ति की उत्पत्ति के पूर्व जनसाधारण के धार्मिक जीवन मे रामकथा के

इस व्यापकता तथा लोकप्रियता का श्रेय वाल्मीकिकृत रामायण को है। यह अगले परिच्छेद से और स्पष्ट होगा। अत यह नि सकोच कहा जा सकता है कि विश्व-साहित्य के इतिहास मे शायद ही किसी ऐसे कवि का प्रादुर्भाव हुआ हो जिसने भारत के आदि कवि के समान इतने व्यापक रूप से परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया हो।

२—विभिन्न रामकथाओ की मौलिक एकता

७६५. निबंध के द्वितीय भाग मे रामकथा के मूलस्रोत के विषय मे विविध मतो का विश्लेषण किया गया है। रामकथा का मूलरूप बौद्ध दशरथ-जातक के गद्य मे सुरक्षित है, इस जातक मे सीता-हरण तथा युद्ध-वर्णन का अभाव है अत. इन दोनो का आधार सभवत. होमर के काव्य मे ढूंढना चाहिए, यह डॉ॰ वेबर का विचार है। श्री दिनेशचन्द्र सेन की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले पहल (दशरथ, रावण तथा हनुमान सबधी) तीन नितान्त स्वतत्र वृत्तान्त मिलाकर रामकथा की सृष्टि की है। डॉ॰ याकोवी के अनुसार रामायण की कथावस्तु के स्पष्टया दो स्वतत्र भाग हैं—प्रथम भाग अयोध्या से सम्बन्ध रखता है और ऐतिहासिक घटनाओ पर निर्भर है, द्वितीय भाग की आधिकारिक कथावस्तु (सीताहरण तथा रावणवध) का मूलरूप वैदिक साहित्य मे विद्यमान है। सीता, राम तथा रावण का व्यक्तित्व क्रमश वैदिक सीता (कृषि की अधिष्ठात्री देवी), इन्द्र तथा वृत्रासुर से विकसित हुआ है। सीताहरण का मूलस्रोत पणियो द्वारा गायो का अपहरण है तथा रावणवध वृत्रासुर-वध का विकसित रूप मात्र है।

उपर्युक्त मतो की सामान्य विशेषता यह है कि रामकथा का मूलस्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतत्र वृत्तान्तो की कल्पना की जाती है। दशरथ-जातक के विषय मे डॉ॰ वेबर का मत ही इस प्रवृत्ति का मूल कारण प्रतीत होता है। दशरथ-जातक की रामकथा वाल्मीकि के शताब्दियो बाद सिंहलद्वीप मे मौखिक परम्परा के आधार पर लिखी गई है (दे॰ ऊपर अनु॰ ६६)। इस बौद्ध वृत्तान्त के विश्लेषण से स्पष्ट है कि यह ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप है (दे॰ अनु॰ ८०-८१)। रामकथा के पूर्व रावण अथवा हनुमान् के विषय मे स्वतत्र आख्यान-काव्य प्रचलित था, दिनेशचन्द्र सेन के इस मत के लिए कोई भी आधार नही मिलता (दे॰ अनु॰ १०२-१०३)। अन्तरङ्ग समीक्षा के आधार पर रामायण के (एक ऐतिहासिक तथा एक अलौकिक) दो स्वतन्त्र भाग मानना आवश्यक है क्योकि दूसरे भाग की घटनाओ का मूलरूप वैदिक साहित्य मे सुरक्षित है इसके लिए कोई प्रमाण नही दिया जाता है (दे॰ अनु॰ ६६) और इस भाग की प्रधान कथावस्तु (स्त्रीहरण तथा इसके कारण युद्ध) असाधारण तथा अलौकिक नही कही जा सकती है (दे॰ अनु॰ १०४)। राम के

रामकथा का प्रचार किया था। अनामक 'जातकम्' तथा दशरथ कथानम् का क्रमशः तीसरी तथा पाँचवी श० ई० मे चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था। इसके बाद रामकथा की एक अन्य धारा उत्तर की ओर फैलने लगी थी। इसका प्रमाण नवी श० ई० तिब्बती तथा खोतानी रामायणो मे मिलता है जिनकी कथावस्तु ब्राह्मण रामकथा पर आधारित है, यद्यपि खोतानी रामायण पर बौद्ध प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई पडता है। दोनो रचनाएँ एक दूसरे से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं और इनका गुणभद्रकृत उत्तरपुराण तथा काश्मीरी रामायण से सम्बन्ध असदिग्ध है (दे० अनु० ३११-३१२)।

हिंदेशिया तथा हिंदचीन मे वाल्मीकि रामायण प्राचीन काल से ज्ञात है। चम्पा राज्य के सातवी श० ई० के एक शिलालेख मे वाल्मीकि द्वारा श्लोकोत्पत्ति का उल्लेख मिलता है (दे० अनु० ३२३) तथा जावा के नवी शताब्दी के एक शिव-मदिर मे रामायण की समस्त घटनाएँ भित्ति-चित्रो मे अकित की गयी है (दे० अनु० ३१७)। उस प्राचीन काल का कोई साहित्य सुरक्षित न रह सका किंतु बाद मे जावा तथा मलय मे एक विस्तृत रामकथा-साहित्य की रचना हुई है। इसमे रामकथा के दो भिन्न रूप मिलते है—(१) जावा के १०वी श० ई० के रामायण ककविन का रूप जिसका प्रधान आधार भट्टिकाव्य है (दे० अनु० ३१४), (२) अर्वाचीन सेरी राम का रूप जो वाल्मीकीय कथा से बहुत भिन्न है (दे० अनु० ३२०)। फिर भी सेरीराम की आधिकारिक कथा-वस्तु मे कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अथवा परि-वर्द्धन नही मिलता जो भारत की रामकथाओ मे न मिलता हो। वाल्मीकि रामायण से भिन्न सामग्री भारत के पूर्व क्षेत्रो के राम-साहित्य मे प्रायः विद्यमान है। रामकथा का यह अर्वाचीन रूप हिंदेशिया मे अधिक लोकप्रिय है और इसके आधार पर आधुनिकतम समय तक रामकथा विषयक नाटको का अभिनय होता रहा। सेरीराम हिंदचीन, स्याम तथा बर्मा मे प्रचलित रामकथाओ का मुख्य आधार है। फिर भी कबोदिया की रामकेर्ति तथा श्याम के रामकियेन की एक विशेषता यह है कि इन दोनो मे वाल्मीकि रामायण तथा सेरीराम का अनेक स्थलो पर समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है (दे० अनु० ३२४-३२५)। १८वी शताब्दी ई० मे बर्मा के एक राजा ने श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर बहुत से कैदियो को अपने साथ ले लिया था जो बर्मा में स्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। इस तरह स्याम की रामकथा बर्मा मे फैल गई जिसके फलस्वरूप राम-नाटक वहाँ आज तक बहुत लोकप्रिय हैं (दे० अनु० ३२६)।

७६४ प्रस्तुत सिंहावलोकन की सामग्री से स्पष्ट है कि रामकथा न केवल भार-तीय वरन् एशियाई सस्कृति का भी एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन गई है। रामकथा की

पुनः पुनः कल्पभेदाज्जाताः श्रीराघवस्य च ।
अवताराः कोटिशोऽत्र तेषु भेदः क्वचित्क्वचित् ॥ २६ ॥
(आनन्द रामायण, पूर्ण काण्ड, सर्ग ७)

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि को इन विभिन्न रामकथाओं का रचयिता कहा गया है। **मत्स्यपुराण** (५३, १०), **अद्भुत रामायण** (सर्ग १), **आनन्द रामायण** (यात्रा काण्ड, सर्ग २, राज्य काण्ड, सर्ग १), **पद्मपुराण** (४, १, २४) आदि मे एक वाल्मीकिकृत **शतकोटिश्लोक रामायण** का उल्लेख मिलता है, जिसके विभाजन से विभिन्न **रामायणों** की उत्पत्ति मानी गई है। इस प्रकार साम्प्रदायिक साहित्य मे रामकथाओ का मूलस्रोत एक ही शतकोटिश्लोक रामायण माना गया है[1] किन्तु विभिन्न अवतारो के कारण रामकथाओ मे मौलिक भेद स्वीकार किया गया है। कई आधुनिक समालोचको की भी यह धारणा है कि प्राचीन काल से अनेक सर्वथा स्वतंत्र रामकथाएँ प्रचलित थीं। किन्तु एक ओर इस प्रकार की रामकथाओ के अस्तित्व के **बहिरंग** प्रमाण नही दिए जा सकते है, दूसरी ओर अतरग प्रमाण भी नही मिलते क्योकि प्रस्तुत निबंध मे जो अत्यन्त विस्तृत रामकथा साहित्य की समस्त विभिन्नताओ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है उससे स्पष्ट है कि वाल्मीकिकृत रामायण के तत्वो को लेकर ही इनका धीरे-धीरे क्रमिक विकास हुआ है। अतः **वाल्मीकिकृत रामायण** ही समस्त प्रचलित रामकथा साहित्य का मूलस्रोत प्रमाणित होता है।

७६८. रामायण के **प्रामाणिक काण्डों** (अर्थात् अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक) के कथानक पर आदिकवि की छाप इतनी स्पष्ट है तथा इनमे आधिकारिक कथावस्तु की गति इस प्रकार अबाध रूप से आगे बढ रही है कि बाद की रामकथाओं मे इन काण्डो के कथानक का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। अर्वाचीन रामकथा साहित्य मे वास्तविक सीता के स्थान पर एक माया-सीता का हरण वर्णित है, किन्तु इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का कारण स्पष्टतया आदर्शवाद तथा भक्ति-भावना है। इसके अतिरिक्त माया-सीता के इस वृत्तान्त का क्रमिक विकास देखकर किसी स्वतन्त्र रामकथा की कल्पना नितान्त निर्मूल सिद्ध हो जाती है (दे० अनु० ५०१-५०८)।

रामायण के **प्रक्षिप्त काण्डो** (अर्थात् बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड) की कथावस्तु की अर्वाचीन रामकथाओं मे अवश्य बहुत कुछ विभिन्नता पाई जाती है, विशेषकर सीताजन्म, हनुमान् की जन्मकथा, सीतात्याग, कुशलव-चरित तथा रामकथा के निर्वहण मे। किन्तु इन प्रसगो से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री के अध्ययन से यह धारणा दृढ़ हो जाती है कि वाल्मीकीय कथा से ही उनका क्रमिक विकास हुआ है।

१. विष्णुपुराण (३, ४, १) मे वैदिक मत्रो की सख्या 'शतसहस्र' मानी गई है तथा मत्स्यपुराण (५३, १०) मे 'शतकोटिप्रविस्तर' पौराणिक साहित्य की चर्चा है।

निर्वासन की भाँति सीताहरण तथा रावणवध अर्थात् रामकथा की समस्त आधिकारिक कथावस्तु का ऐतिहासिक आधार मानना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० अनु० १०५)। अतः रामकथा के दो अथवा तीन स्वतन्त्र भागो की कल्पना का कही भी समीचीन आधार नही मिलता। इस तरह रामकथा विषयक आख्यान-काव्य का एक ही मूल-स्रोत रह जाता है अर्थात् एक ऐतिहासिक घटना। इस प्राचीन आख्यान-काव्य के आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की है (दे० अनु० १३०)।

७६६. **बौद्ध तिपिटक** की एकाव गाथाएँ और सम्भवतः **महाभारत** के द्रोण तथा शान्तिपर्व की अत्यन्त सक्षिप्त रामकथाएँ वाल्मीकि के पूर्व के रामकथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य पर निर्भर है। बौद्ध रामकथाओ के केवल पाली अथवा चीनी भाषाओ मे सुरक्षित रहने के कारण इनका रामकथा के विकास पर कोई प्रभाव नही पड़ सका। इनका मूलस्रोत ब्राह्मण रामकथा ही है, किन्तु एक तो वे अत्यन्त सक्षिप्त हैं, दूसरे ये गद्य मे लिखी हे, इससे इन पर वाल्मीकि रामायण की छाप स्पष्ट नही है। इनका आधार प्राचीन आख्यान-काव्य हो सकता है। शेष प्राचीन रामकथा साहित्य रामायण पर समाश्रित है। महाभारत का रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत आदिरामायण पर निर्भर है (दे० अनु० ४८)। जैन रामकथा मे न केवल मिथ्या ब्राह्मण रामकथा का उल्लेख है (दे० अनु० ५७) वरन् इनके कथानक के निरीक्षण से स्पष्ट है कि जैन कवि वाल्मीकि रामायण से भली भाँति परिचित थे तथा उन्होंने इसकी कथावस्तु के कई प्रसङ्गो को जान बूझकर वदलकर एक नया रूप दिया है। उदाहरणार्थ—वज्रमुख की कन्या लका-देवी का वृत्तान्त (दे० अनु० ५३६), नल के द्वारा समुद्र, सेतु तथा सुवेल नामक राजाओ की पराजय (दे० अनु० ५७३), द्रोणमेघ की कन्या विशल्या द्वारा लक्ष्मण की चिकित्सा होने का प्रसङ्ग (दे० अनु० ५९६)। सस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य पर वाल्मीकि के प्रभाव के विषय मे किसी सन्देह का अवकाश नही रह जाता। विदेशी रामकथा साहित्य का मूल-स्रोत भी वाल्मीकीय रामकथा ही है किंतु इस पर वाल्मीकि के वाद भारत मे विकसित रामकथा का सीधा प्रभाव पडा है अतः इन विदेशी रामकथाओ मे वाल्मीकि से पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। इन रचनाओ के विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है कि उनमे कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नही किया गया है, जिसका सूत्रपात भारतीय साहित्य मे विद्यमान न हो।

७६७. अत्यन्त विस्तृत भारतीय तथा विदेशी रामकथा साहित्य मे कही-कहीं परस्पर विरोधी वातें मिलती हैं। इस विरोध का साम्प्रदायिक साहित्य मे इस प्रकार समन्वय किया गया है कि विभिन्न कल्पो में कोटि-कोटि रामावतार प्रकट हुए हैं और इन असख्य अवतारो के कारण राम-चरित मे विभिन्नता आ गई है:

जन्मकथा नहीं मिलती जो वाल्मीकि रामायण की कथा से अलग, स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई हो।

७७१. सीतात्याग की कथाओ मे पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है, किन्तु इनके विकास की रूपरेखा इतनी स्पष्ट है कि इनके लिए स्वतन्त्र रामकथाओ का आश्रय लेना नितान्त अनावश्यक है। इस त्याग के तीन व्यापक कारण माने गए हैं। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। बाद की अनेक रामकथाओ मे जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल एक नई कथा की कल्पना कर ली गई है, अर्थात् सीता के पास रावण का चित्र। सीताहरण के अंतिम रूप मे केवल एक माया-सीता का हरण होता है, इसी तरह सीता-त्याग की कथा की परिणति भी यह है कि सात्विकी सीता अदृश्य रूप से राम के वामाग मे निवास करती है और केवल इनकी रजस्तमोमयी छाया का परित्याग होता है (दे० अनु० ७१४-७३४)।

७७२. कुश-लव-चरित तथा रामकथा के निर्वहण मे जो विभिन्नता पाई जाती है वह भी स्वाभाविक विकास का परिणाम मानी जा सकती है। 'कुश' शब्द के कारण ही वाल्मीकि द्वारा कुश घास से कुश की सृष्टि की कथा उत्पन्न हुई होगी (दे० अनु० ७४३-७४५)। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार कुश-लव वाल्मीकि के साथ राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि मे पहुँचकर रामायण का गान करते हैं। इनके वहाँ पहुँचने का कोई विशेष कारण नही बताया जा सकता है। बाद की रामकथाओ मे कुश-लव की वीरता दिखलाने के उद्देश्य से रामाश्वमेध के पूर्व राम-सेना से इनके युद्ध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ७४६-७५१)।

वाल्मीकिकृत आदि रामायण राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वर्यशाली राज्य के वर्णन पर समाप्त होता था। इस सुखात कथावस्तु मे आगे चल कर उत्तरकाण्ड जोड दिया गया जिससे प्रचलित वाल्मीकि रामायण दुःखात हो गया। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि बाद की कई रामकथाओ को पुनः सुखात बना देने का प्रयत्न किया गया है (दे० अनु० ७५२-७५७)।

अतः अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य मे जो वैभिन्न्य आ गया है वह वाल्मीकिकृत रामायण के विकास तथा उसके कथानक पर विभिन्न प्रभावो का परिणाम माना जा सकता है। वाल्मीकि रामायण से स्वतन्त्र, प्राचीन काल से जन-साधारण मे प्रचलित, सर्वथा भिन्न कथाओ का अस्तित्व मानने की कोई आवश्यकता नही प्रतीत होती है।

३—प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ

७७३. निबन्ध के द्वितीय भाग मे प्रचलित वाल्मीकि रामायण के मुख्य प्रक्षेपो

७६९ सीताजन्म-विषयक अनेक प्रकार की सर्वथा विभिन्न कथाएँ प्रचलित हो गई है। जनक, रावण और दशरथ, तीनो सीता के पिता माने गये हैं। विभिन्न रामकथाओ की प्राचीनता का ध्यान न रखने के कारण अनेक विद्वानो ने इस समस्या को सुलझाने के लिए बहुत चित्य मत प्रस्तुत किए हैं। इनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री, इसके बाद रावण की पुत्री मानी गई है, और अन्त मे अयोनिजा सीता की कल्पना की गई है।

दशरथ-जातक के अनुसार सीता दशरथ की औरस पुत्री तथा राम-लक्ष्मण की सहोदरी बहन हैं। इस जातक की समस्या का पूरा विश्लेषण प्रस्तुत निबन्ध के छठे अध्याय मे किया गया है। इससे स्पष्ट हुआ है कि दशरथ-जातक की रामकथा न केवल ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप है, वरन् उसका रचनाकाल वाल्मीकि के बहुत सी शताब्दियो बाद माना जाना चाहिए। सीता की जन्म-कथाओ का एक अन्य वर्ग मिलता है जिसमे सीता या तो रावणात्मजा मानी गई है या जनक को प्राप्त होने के पूर्व इनका किसी न किसी तरह लका से सबध स्थापित किया गया है। इन जन्म-कथाओ पर रामायण के उत्तरकाण्ड मे वर्णित वेदवती के वृत्तान्त की गहरी छाप प्रायः स्पष्ट दिखलाई पडती है। इसके अतिरिक्त ये सभी जन्म-कथाएँ रामायण मे वर्णित भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म-वृत्तान्त को स्वीकार करती हैं अतः यह सिद्ध होता है कि वाल्मीकि रामायण की सामग्री से ही सीता की विभिन्न जन्म-कथाओ का क्रमिक विकास हुआ है (दे० अनु० ४०५-४२८)।

७७०. हनुमान् के जन्म के विषय मे भी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं जो सर्वथा भिन्न प्रतीत होती है, किन्तु इनका क्रमिक विकास अस्पष्ट नही है। हनुमान् की जन्म-कथा का प्राचीनतम तथा सबसे व्यापक रूप **वाल्मीकि रामायण** मे सुरक्षित है, इसके अनुसार वह वायु तथा अजना के पुत्र है। सम्भवत· आठवी शताब्दी और निश्चित रूप से दसवी शताब्दी से लेकर हनुमान शिव के अवतार माने जाने लगे। इस कथा की उत्पत्ति अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होती है। रामायण की आधिकारिक कथा-वस्तु मे शिव के लिए कोई स्थान नही था। रामकथा की लोकप्रियता को देखकर शैव इसकी अवहेलना न कर सके, अत· उन्होंने हनुमान को शिव का अवतार मान लिया। हनुमान की इस जन्मकथा का प्रारंभिक रूप रामायण के वृत्तान्त से सीधा सबध रखता है, लेकिन आगे चलकर शिव से हनुमान के उत्पन्न होने की अन्य कथाओ की भी कल्पना कर ली गई है।

इन समस्त जन्म-कथाओ मे हनुमान की माता अजना (अजनी) हैं और एकाध कथाओ को छोडकर वायु उनकी उत्पत्ति मे सहायक माने जाते है (दे० अनु० ६६३-६७६)। अतः हम निश्चयपूर्वक कह सकते है कि हनुमान की कोई ऐसी

७७६ अतिशयोक्ति का अभाव[1], सन्तुलन तथा स्वाभाविकता वाल्मीकिकृत आदिरामायण के विशेष गुण है किन्तु नवीन सामग्री मे कृत्रिमता, अद्भुत रस की प्रधानता तथा अलौकिक घटनाओ का वाहुल्य पाया जाता है। उदाहरणार्थ (१) प्रक्षिप्त बालकाण्ड मे दशरथ-यज्ञ, पौराणिक कथाएँ; भूमिजा सीता की जन्म-कथा तथा परशुराम-तेजोभङ्ग, (२) प्रामाणिक काण्डों मे ये प्रक्षेप—काक, जयन्त तथा कनक-मृग के वृत्तान्त, लकादेवी से हनुमान् का युद्ध, लङ्कादहन, हनुमान् की हिमालय-यात्राएँ, राम के माया-शीर्ष का वृत्तान्त, सीता की अग्नि-परीक्षा, पुष्पक मे अयोध्या की वापसी-यात्रा, (३) प्रक्षिप्त उत्तरकाण्ड मे रावण की विजय-यात्राएँ, हनुमान् तथा वालि-सुग्रीव की जन्म-कथाएँ, शम्बूकवध, सीता का भूमि-प्रवेश। यहाँ तक कि उत्तरकाण्ड को अलौकिक कथाओ का सग्रह कहा जा सकता है।

परवर्ती रामकथाओ मे भी वही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। उदाहरणार्थ—रामजन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाएँ (अनु० ३७५), राम का अपना दिव्य रूप प्रकट करना (अनु० ३७५, ३७६, ६६१, ३५१, ५१२, ५६८, ३८१); पद्म, रक्त, अग्नि, फल अथवा वृक्ष से सीता की उत्पत्ति (अनु० ४१८-४२५), वालि-सुग्रीव (अनु० ५१३-५१४) तथा हनुमान् की विविध जन्म-कथाएँ (अनु० ६६८, ६७०, ६७४, ६७८), राक्षसो का रामकथा के अन्य पात्रो का रूप धारण करना (४५२, ४६४, ४६६, ६०६), शूर्पणखा (अनु० ४६३) अथवा रावण (अनु० ४६७) का कनकमृग वन जाना, सरस्वती का हस्तक्षेप (अनु० ४५२, ४५४, ५६४ टि०, ६४६), मायासीता का हरण (अनु० ५०४-५०७) तथा अवास्तविक सीता-त्याग (अनु० ७३०-७३३), वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (अनु० ७४३-७४५), सीता द्वारा सहस्रस्कन्ध रावण आदि का वध (अनु० ६३६-६४१), लक्ष्मण का १४ वर्ष तक उपवास और जागरण (अनु० ४६१), भानुराज, भस्मलोचन आदि का युद्ध (अनु० ६१२-६१३), महीरावण का वृत्तान्त (अनु० ६१४); हनुमान् की वीरता विषयक कथाएँ (अनु० ६८४-६८७), हनुमान् के जन्मजात आभूषणो का वृत्तान्त (अनु० ५१२); जटायु (अनु० ४७०), रावण (अनु० ५६८) और इन्द्रजित् (अनु० ५६३) के मर्मस्थानो की कल्पना।[2]

---

१. पात्रो की आयु-विषयक अतिशयोक्तियाँ प्रायः बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड मे ही मिलती है। अयोध्याकाण्ड के दाक्षिणात्य पाठ मे दशरथ को अनेक वर्षसाहस्र' (सर्ग २, २१) कहा गया है किन्तु अन्य पाठो के समानान्तर स्थलो पर 'अनेकवर्षशतिक' (गौ० रा० २, १, २५) अथवा गतश्च सुमहान् कालो वृद्धश्चासि' (प० रा० २, ३, ४२) पाठ मिलता है।

२ यह सूची सुगमता से वढाई जा सकती है। निम्नलिखित अनुच्छेदो की सामग्री मे अलौकिकता अधिक स्पष्ट है—३३७, ३८१, ४४७, ४७५, ४७६, ५००, ५०२, ५७३-५७६, ५६४, ५६६, ६५०, ७२४।

का उल्लेख तथा उनकी सामान्य विशेषताओ का वर्गीकरण किया गया है (दे० अनु० १३८)।

निम्नलिखित **प्रक्षेप** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—समस्त वालकाण्ड और उत्तरकाण्ड, रामावतार विषयक सामग्री, कनकमृग का वृत्तान्त, वानरो के प्रेषण के पूर्व का दिग्वर्णन; लङ्का-दहन, हनुमान् की हिमालय-यात्रा, सीता की अग्निपरीक्षा, पुष्पक मे अयोध्या की वापसी यात्रा। प्रामाणिक काण्डो के मुख्य प्रक्षेपो का यथास्थान निरूपण किया गया है (अनु० ४३१, ४५७, ५११, ५३० और ५६१-५६६)। प्रत्येक काण्ड के विश्लेषण में वाल्मीकि रामायण के तीन पाठो की विभिन्नता का भी ध्यान रखा गया है क्योकि इससे भी प्रक्षेपो का पता चलता है (अनु० ३३२, ४३०, ४५६, ५१०, ५२६ और ५५७-५६०)।

७७४. प्रबन्ध के चतुर्थ भाग मे रामकथा के विभिन्न प्रसङ्गो तथा उपकथाओ के विकास का निरूपण किया गया है। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दृष्टिकोण से मुख्य **परिवर्तन** तथा **परिवर्धन** निम्नलिखित है। **वालकाण्ड** के कथानक मे—अहल्या-उद्धार का विकास (अनु० ३४४-३४८), अवतारवाद का विकास (अनु० ३५६-३६५); राम का वालचरित तथा उस पर कृष्ण की वाललीला का प्रभाव (अनु० ३७५-३८६); सीता-स्वयवर का नवीन रूप जिसके अनुसार राम अन्य राजाओ की और वाद मे रावण की उपस्थिति मे धनुष चढाते हैं (अनु० ३६४-३६६); राम-सीता के पूर्वानुराग का वर्णन (अनु० ४०३), सीता-जन्म विषयक कथाओ का बाहुल्य (अनु० ४०५-४२८)। **अयोध्याकाण्ड** से **युद्धकाण्ड** तक के कथानक मे—माया-सीता का हरण (अनु० ५०१-५०८), वालि-सुग्रीव की जन्मकथा (अनु० ५१३-५१४), महीरावण का वृत्तान्त (अनु० ६१४)। **उत्तरकाण्ड** के कथानक मे—सौदास की कथा (अनु० ६२१-६२६); शम्बूक-वध (अनु० ६२८-६३२), सीता द्वारा सहस्रस्कन्ध रावण का वध (अनु० ६३६), **रावण-चरित** (अनु० ६४२-६५५), हनुमान् की जन्म-कथा तथा उनके चरित्र-चित्रण का विकास (अनु० ६५६-७१३), सीतात्याग की कथा का क्रमिक विकास (अनु० ७१४-७३४); कुश-लव-चरित (अनु० ७३५-७५१); रामकथा के निर्वहण के विभिन्न रूप (अनु० ७५२-७५७)।

७७५ प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के प्रामाणिक काण्डो मे जो प्रक्षेप किये गये है, वे (कनकमृग की कथा, लङ्कादहन तथा अग्नि-परीक्षा को छोड कर) अधिकाश पुनरुक्ति मात्र है। वाद की रामकथाओ मे भी माया-सीता-हरण को छोडकर इस सामग्री मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही मिलता। इसका कारण यह है कि प्रामाणिक काण्डो की सुव्यवस्थित कथावस्तु पर वाल्मीकि की प्रतिभा की गहरी छाप थी। **वालकाण्ड** तथा **उत्तरकाण्ड** के कथानक का अत्यधिक विकास हुआ है क्योकि इन प्रक्षिप्त काण्डो की प्रारम्भ से ही कोई विशेष एकता नही थी।

की कल्पना की गई है जिसके अनुसार सीता एक फल से उत्पन्न हुई थी (दे० अनु० ४२३)। अवतारवाद के विकास मे लक्ष्मी सीता के रूप मे अवतरित मानी गई हैं, अतः पद्मा (लक्ष्मी का एक नाम) के कारण पद्मजा सीता की कथा उत्पन्न हुई है (दे० अनु० ४१६)। जैन साहित्य के अनुसार जनक की पुत्री मे गुणरूपी धान्य (गुणसस्य) का बाहुल्य था, अतः भूमि की समानता होने के कारण उसका नाम सीता रखा गया—**भूमिसाम्येन सीता** (पद्म-चरित २६, १६६)। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के प्रक्षेपो में निम्नलिखित नामो का कारण-निर्देश मिलता है—हनुमान (अनु० ६६४), रावण (अनु० ६५३), राक्षस और यक्ष (अनु० ६४४), मेघनाद और इन्द्रजित् (अनु० ६५०), कुश-लव (अनु० ७३६), वालि-सुग्रीव (अनु० ५१३), कल्माषपाद (अनु० ६२४), दण्ड (अनु० ४७२), सरमा (अनु० ५४६), अहल्या (७, ३०, २२), क्षुप (गोविन्द पाठ ७, ७६, ४२), निमि (७, ५७, १४), मिथि (६, ५७, १६), विश्रवा (७, २, ३१), वेदवती (७, १७, ६), सगर (१, ७०, ३७), सुर और असुर (१, ४५, ३६-३७)।

परवर्ती रामकथा साहित्य मे भी नामो की व्युत्पत्ति पर आधारित अनेक कथाएँ मिलती हैं, उदाहरणार्थ हनुमान् (अनु० ६६६ और ७११), वाल्मीकि (अनु० ३२), वेदवती (अनु० ४१०), कुश (अनु० ७४३) तथा पउमचरिय मे रावण (७, ६३), विराधित (६, २२) और भामण्डल (२६, ८७) के नामो का कारण-निर्देश।

७८० तीर्थों का माहात्म्य दिखलाने के उद्देश्य से उनका सम्बन्ध रामकथा के प्रधान पात्रो के साथ स्थापित किया गया है। राम की तीर्थयात्राओ के अतिरिक्त (अनु० १७८, ३८५, ४३५, ६३७) रामकथा-साहित्य मे गोकर्ण, श्रीरङ्गम् (अनु० ६३५) आदि तीर्थों के विषय मे अनेक वृत्तान्त मिलते है।

रावण ने अपने भाइयो के साथ गोकर्ण मे तपस्या की थी (अनु० ६४६) तथा महादेव से आत्मलिङ्ग प्राप्त कर उसे गोकर्ण मे पृथ्वी पर रखकर खो दिया था (अनु० ६५०)।

वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार राम ने विभीषण को उपदेश देकर कहा कि इक्ष्वाकुकुल के देवता जगन्नाथ की आराधना करो—**आराधय जगन्नाथमिक्ष्वाकुकुलदैवतम्** (७, १०८, २७)। परवर्ती साहित्य मे माना गया है कि राम ने विभीषण को रङ्गनाथ की मूर्त्ति प्रदान की थी और विभीषण ने उसे श्रीरङ्गम मे छोड दिया था[1]।

वाराहपुराण (अनु० १५७) तथा आनन्द रामायण (७, ३, ४२-४५) के अनुसार रावण ने इन्द्र को पराजित कर उनके यहाँ से **वाराहमूर्त्ति** को ले जाकर उसे लका

१. दे० पद्मपुराण (६, २७१, ६४), तत्वसग्रह रामायण (७, १४), पाश्चात्य वृत्तान्त न० २, रामलिगामृत सर्ग १६।

७७७ अवतारवाद एव भक्ति के विकास के कारण रामकथाओ मे अलौकिकता की मात्रा वहुत ही वढ गई है । राम को मुक्तिदाता के रूप मे चित्रित करने के उद्देश्य से विभिन्न पात्रो के उद्धार का अथवा उनके शाप की अवधि के अन्त का सम्वन्ध राम से (अथवा राम-दूतो से) स्थापित किया गया है । इस प्रकार निम्नलिखित पात्रो की मुक्ति का उल्लेख किया गया है—अहल्या (३४८), ब्रह्मराक्षस वात्था (३८०), मृगया मे मारे पशु (३८३), गुह (३८४), ताटका (३८६), जटायु (४७१), विराध (४५८), कवन्ध (४७३), मारीच (४६६), शवरी (४७८), वालि (५२०), स्वयप्रभा (५२६), सम्पाति (५२७), शुक और गौतम (६२५), लङ्कादेवी (५३५), ग्राही (५८७), कुम्भ-कर्ण (५८६), इन्द्रजित् और सुलोचना (५६४), रावण (५६६), रावण का पुत्र वीरवाहु तथा विभीषण का पुत्र तरणीसेन (अनु० २८५,३), हनुमान् (६६६ टि०), शम्वूक (६२६, ६३०) ।

७७८. नवीन सामग्री की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमे कथा-वस्तु की मुख्य घटनाओ का कारण-निर्देश करने का प्रयत्न किया गया है। रामावतार (अनु० ३६६-३७३), राम-वनवास (अनु० ४३३), सीताहरण (अनु० ४८६), रावण-वध (अनु० ४१०-४२५) और सीतात्याग (अनु० ७२५-७२६) के परोक्ष कारणो के विषय मे विभिन्न शापो और वरो की कल्पना कर ली गई है । प्रायः सभी मुख्य पात्रो को वर अथवा शाप दिये जाने की कथाएँ मिलती ही हैं, उदाहरणार्थ विष्णु (३७०-३७३), राम (४४६, ४६६ ७२६), लक्ष्मी (३७३), सीता (७२७-७२८, ४८६), दशरथ (४३३), कैकेयी (४४७-४४६, ४५१), रावण (६५४), कुभकर्ण (६४६), हनुमान् (६६६, ६६३-६६५), अहल्या (३४६), नल (५७५), सौदास (६२४) । पात्रो के पूर्वजन्म की कथाएँ भी कारण-निर्देश विषयक सामग्री के अन्तर्गत रखी जा सकती है, जैसे निम्नलिखित पात्रो के पूर्वजन्म से सम्वन्ध रखने वाले वृत्तान्त : राम-लक्ष्मण (अनु० ३६३), सीता (४१०), रावण-कुम्भकर्ण (६४८), दशरथ-कौशल्या (३६७-३६६), काक भुशुण्डी (३८१), गुह (३८४), मन्थरा (४५४), शुक (६२५), अन्धमुनि (४३३), जटायु (४७२) तथा शवरी (४८१) ।

७७६. विश्व भर के कथा-साहित्य मे पात्रो के नामो पर आधारित विविध वृत्तात मिलते है जिनमे नाम का कारण-निर्देश किया जाता है (एटिमोलोजिकल लेजे-न्ड्स) । नाम पहले ही प्रसिद्ध हो जाता है, कथा की कल्पना वाद मे की जाती है । अतः वास्तव मे कथा नाम का कारण नही होती, प्रत्युत नाम ही कथा का कारण होता है । सीता की विभिन्न जन्म-कथाओ मे इस प्रवृत्ति के अनेक उदाहरण मिलते हैं । 'सीता' शब्द का अर्थ है लागल-पद्धति, भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा इस अर्थ पर आधारित प्रतीत होती है (दे० अनु० ४०८) । 'सीताफल' के आधार पर एक कथा

इसके अतिरिक्त वसुदेवहिण्डि प्रचीनतम रचना है जिसमे सीता रावण की पुत्री मानी गई है (अनु० ४१२) और उपदेशपद मे पहले पहल सीतात्याग के वृत्तान्त मे रावण के चित्र का उल्लेख किया गया है (अनु० ७२२)।

ख. शैव प्रभाव

७८३. वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड मे राम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा का जो निर्देश किया गया है वह केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है और इसलिए प्रक्षिप्त माना जाता है। उत्तरकांड मे रावण के शिव-भक्त होने का उल्लेख है (अनु० ६५३) किंतु यह उल्लेख भी प्रक्षिप्त प्रतीत होता है क्योंकि रावण तथा उसके भाइयो की तपस्या के अन्त मे ब्रह्मा उनको वरदान प्रदान करते है (अनु० ६४६)। अत. अधिक सभव यह है कि रामायण मे पहले शिव का कोई उल्लेख नही था, उत्तरकाण्ड के अंतिम रूप से रामकथा के विकास पर शैव प्रभाव पडने लगा था। बाद मे यह प्रभाव विशेष रूप से निम्नलिखित प्रसंगो मे स्पष्ट दिखाई देने लगा—ब्रह्मा के स्थान पर शिव से ही रावण की वर-प्राप्ति (अनु० ६४६), राम द्वारा सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा (अनु० ५८०), शिव का हनुमान् के रूप मे अवतरित होना (अनु० ६७०)।

प्रायः समस्त परवर्ती रामकथाओ मे रावण की शिवभक्ति का उल्लेख किया गया है (अनु० ६५३ और ५८४)। बहुत से अन्य पात्रो का शैव होने अथवा शिवलिंग की पूजा करने का भी निर्देश किया गया है, उदाहरणार्थ – अहल्या (अनु० ३४८), परशुराम (अनु० ३५०), दशरथ (अनु० २१५), विभीषण (रामायण ककविन, सर्ग १२)।

७८४. सेतु पर शिवप्रतिष्ठा के अतिरिक्त राम की शिवभक्ति के विषय मे पर्याप्त सामग्री मिलती है। **शिवमहापुराण** के अनुसार विष्णु ने शिव की आज्ञा से अवतार लिया था (अनु० १६७)। **पद्मपुराण** (पातालखड, अ० ११३) तथा **सत्योपाख्यान** (उत्तरार्द्ध, अ० १६) मे राम शिव से शिव-भक्ति का वरदान माँगते है। कई रचनाओ मे राम की वर्षाकालीन शिवपूजा का वर्णन किया गया है (अनु० ५२३)। **पद्मपुराण** के अनुसार राम ने शिव की सहायता से समुद्र पार किया था (अनु० ५७३)। **रामलिंगामृत** (सर्ग ६ और १०) मे रावण का कहना है कि शिव की पूजा करने के फलस्वरूप राम विजय प्राप्त करने मे समर्थ हुए। **आनन्द रामायण** तथा अनेक अन्य रामकथाओ मे राम तथा शिव की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है (अनु० ३६२)। **रामलिंगामृत** (सर्ग १०) के अनुसार राम ने युद्ध के पूर्व अपना शिवरूप प्रकट किया था तथा **सौरपुराण** (अध्याय ३०) मे कहा गया है कि राम ने शकर के प्रसाद से अपना विष्णुपद पुनः प्राप्त किया था।

में स्थापित किया था। विभीषण ने उसे राम को प्रदान किया तथा राम ने उसे मथुरा में स्थापित करने के लिए शत्रुघ्न को दे दिया। ब्रह्मपुराण (अनु० १५६) के अनुसार रावण ने अमरावती से वासुदेवप्रतिमा की चोरी की थी, राम ने उसे अयोध्या ले जाकर अपने स्वर्गारोहण के पूर्व समुद्र को अर्पित किया था। कृष्णावतार के समय सागर ने उसे निकाल कर पुरुषोत्तमक्षेत्र मे स्थापित किया था।

पद्मपुराण मे वामन की मूर्त्ति के विषय मे लिखा है कि राम ने उसे विभीषण से प्राप्त कर कान्यकुब्ज मे स्थापित किया था (अनु० ६३५)।

७८१ आदि रामायण के वक्ता वाल्मीकि ही है किन्तु प्रचलित बालकाण्ड के प्रथम सर्ग के अनुसार नारद ने वाल्मीकि को रामकथा का सक्षिप्त वर्णन सुनाया था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी। बाद की रामकथाएँ प्रायः सवाद के रूप मे प्रस्तुत की गई है। महात्मा बुद्ध जातको के वक्ता हैं (अनु० ५१), रामोपाख्यान मार्कण्डेय द्वारा युधिष्ठिर को सुनाया गया था (अनु० ४७) और जैन पउमचरिय भी सेणिय-गोयम-सवाद के रूप मे दिया गया है (अनु० ६०)। इसी तरह साम्प्रदायिक सस्कृत रामायण तथा अन्य भारतीय भाषाओ के राम-काव्य प्रायः सवाद तथा उपसवाद के रूप मे मिलते हैं। उदाहरणार्थ—योगवासिष्ठ, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, सत्योपाख्यान, 'हिन्दुत्व' मे उल्लिखित रामायण (अनु० १६२-२१०), काश्मीरी रामायण, रामचरितमानस, रंगनाथ रामा,-यण, बलरामदास रामायण।

४—विविध प्रभाव

क. जैनी रामकथाओं का प्रभाव

७८२. जैनी रामकथाओ का आधार स्पष्टतया प्रचलित वाल्मीकि रामायण है किन्तु जैनी कवियो ने ब्राह्मण रामकथा को अपना कर उसमे बहुत से परिवर्तन किए हैं। इनमें से कई परिवर्तन आगे चलकर अन्य रामकथाओ मे भी आ गए है। पउम-चरियं के निम्नलिखित वृत्तान्त अर्वाचीन रामकथाओ में व्यापक रूप मे पाए जाते हैं।

—सीतास्वयवर के अवसर पर अन्य राजाओ की उपस्थिति में राम द्वारा धनु-भंग (अनु० ३६४)।
—कैकेयी का पश्चात्ताप (अनु० ४५२, ४५३)।
—लङ्का मे विभीषण से हनुमान् की भेट (अनु० ५३८)।
—लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र का वध (अनु० ६३१)।
—युद्ध के पूर्व राक्षस-राक्षसियो के सभोग-शृगार का वर्णन (अनु० ६११)।
—राम-सेना से कुश-लव का युद्ध (अनु० ७४६)।

लगी तथा जनता की धार्मिक चेतना में इसका महत्त्व बढ़ने लगा। बाद मे राम भी कृष्ण की भाँति विष्णु के अवतार माने जाने लगे (अनु० १४३)। अवतारवाद की तरह भक्तिमार्ग कृष्ण को लेकर विकसित तथा पल्लवित हुआ । बहुत बाद मे रामभक्ति का आविर्भाव हुआ और जिन रचनाओ मे इसका प्रारम्भिक शास्त्रीय प्रतिपादन किया गया वे प्रायः कृष्ण-भक्ति-विषयक भक्तिशास्त्रो, सहिताओं तथा उपनिषदो के आधार पर लिखी गई है (अनु० १४६-१४८)। कृष्ण-भक्ति-सम्प्रदायो के अनुकरण पर ही रसिक सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई है (अनु० १५०)।

७८७ कृष्ण-भक्ति के इस सामान्य प्रभाव के अतिरिक्त रामायण की कथावस्तु पर कृष्णचरित का अनेक प्रकार से प्रत्यक्ष प्रभाव भी पडा है । राम की बाललीला के वर्णन मे बहुत से कवियो ने कृष्ण की बाललीला का सुस्पष्ट अनुकरण किया है (अनु० ३७५, ३७६, ३७९, ३८०)। राम के विहार के चित्रण पर भी कृष्ण-चरित का प्रभाव पडा है (अनु० ३५३ और ६३८)। कुछ रचनाओ मे कृष्णलीला का अनुकरण और बढा दिया गया है और राम की रासलीला तक का वर्णन किया गया है (अनु० १५०, ३८७ और ४४०)। उडिया नृसिंहपुराण (१८ वी श० ई०) मे भी विवाह के पूर्व सरयू-तट पर राम की रासलीला का वर्णन किया गया है (दे० तृतीय रत्नाकर)। राम के मुरलीधर-रूप की कथा (अनु० ५८६) और अयोध्या मे आगमन के अवसर पर राम के बहुत से रूप धारण करने के वृत्तान्त (अनु० ६१०) पर भी कृष्ण-कथा का प्रभाव माना जा सकता है।

रामकथा के बहुत से पात्रो का सम्बन्ध कृष्णचरित के पात्रो से स्थापित किया गया है। राम तथा कृष्ण की अभिन्नता के अतिरिक्त सीता-सुभद्रा तथा लक्ष्मण-बलभद्र की अभिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है (अनु० ३६२)। सीता के विषय मे माना गया है कि वह कृष्णावतार मे कृष्ण की पत्नी (रुक्मिणी) बनकर दस पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न करेगी (दे० आनन्द रामायण ७, १९, १३८)। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पात्रो की अभिन्नता का उल्लेख मिलता है—मन्थरा और पूतना (अनु० ७५५ टि०), शूर्पणखा और कुब्जा (अनु० ४६९), वालि और भील (अनु० ५२०), अयोध्या का धोबी तथा कस का धोबी (अनु० ७५५ टि०), जाम्बवान् और जाम्बवती का पिता (तत्त्वसग्रह रामायण ७, १५ तथा बलरामदास रामायण), वानर और गोप (आनन्द रामायण ९, ५, ४२)। अनेक रचनाओ मे इसका उल्लेख मिलता है कि राम ने दण्डक-अरण्यवासी कामातुर ऋषियो को आश्वासन दिया था कि वे कृष्णावतार के समय गोपियाँ बनेंगे, उदाहरणार्थ पद्मपुराण का उत्तरखण्ड (२७२, १६६-१६७), बलरामदास रामायण, गर्गसहिता (गोलोक खण्ड, अध्याय ४ और माधुर्य खण्ड, अध्याय २), कृष्णोपनिषद् (रामचन्द्रस्य कृष्णावतार प्रतिज्ञा), श्रीहरिभक्तिरसामृतसिन्धु (पूर्व भाग

ग. शाक्त प्रभाव

७८५. शैव प्रभाव की अपेक्षा रामकथा पर शाक्त प्रभाव कम प्राचीन और कम व्यापक है। इसके विषय मे निम्नलिखित प्रसग उल्लेखनीय हैं—(१) सीता-पार्वती की अभिन्नता (अनु० ३६५); (२) लकादेवी-वृत्तान्त का शाक्त रूप (अनु० ५३७), (३) सीता द्वारा रावण तथा अन्य राक्षसो का वध (अनु० ६३६-६४१), (४) राम की विजय के लिए देवी की पूजा।

महाभागवत पुराण (अध्याय ४४, ४६, ४७), **बृहद्धर्म पुराण** (अध्याय २२) तथा **कालिका पुराण** (अध्याय ६२) मे राम की विजय के लिए ब्रह्मा द्वारा देवी की पूजा का वर्णन किया गया है। अन्यत्र राम द्वारा देवी-पूजा का उल्लेख मिलता है। **देवी-भागवत पुराण** मे प्रस्रवण-गिरि पर राम की वर्षाकालीन देवी-पूजा का वर्णन पाया जाता है (अनु० ५२३)। **महाभागवत पुराण** (अध्याय ३६, ४४, ४७ और ४८) मे युद्ध के पूर्व राम द्वारा देवी की पूजा का उल्लेख है। **कृत्तिवास रामायण** (६, ६२-१०२) मे राम की देवी-पूजा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस पूजा के लिए १०८ नील कमलो की आवश्यकता थी, देवी ने इनमे से एक को चुरा लिया था। इसके स्थान पर राम अपनी आँख समर्पित करने के लिए उद्यत हुए जिससे देवी ने प्रसन्न होकर राम को विजय का आश्वासन दिया।[1] रसिक सम्प्रदाय (अनु० १५०) के राम-साहित्य पर भी शाक्त प्रभाव पडा है।

घ. कृष्ण कथा का प्रभाव

७८६. रामकथा के विकास मे दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व (अवतारवाद और भक्ति) आ गए जिनके कारण कथा का समस्त वातावरण धीरे-धीरे बदलता गया। कृष्णावतार तथा कृष्ण-भक्ति के अनुकरण पर ही इन दोनो तत्त्वो का रामकथा मे प्रवेश हुआ है।

अवतारवाद का सूत्रपात वैदिक साहित्य मे हुआ था, किन्तु उस साहित्य मे न तो अवतारवाद मे विष्णु का प्राधान्य है और न अवतारो की कोई विशेष पूजा का निर्देश है। कृष्णावतार के कारण अवतारवाद की भावना विष्णु मे ही केंद्रीभूत होने

---

१. दे० निरालाकृत 'राम की शक्तिपूजा'। इस प्रसग का प्राचीनतम रूप महिम्न स्तोत्र (छन्द १६) मे मिलता है। इसके अनुसार हरि शिव को एक सहस्र कमल अर्पित करता था और एक कम पडने पर हरि ने अपना 'नेत्र कमल' निकाल कर शिव को चढाया था। रावण को भी इस प्रसग का नायक बना दिया गया है (अनु० ६४६)। **मेघनादवध** (सर्ग ५) में लक्ष्मण द्वारा देवी-पूजा का वर्णन है।

का वर्णन था (दे० अनु० ११५-११६); बौद्ध अभिधर्ममहाविभाषा के अनुसार इसका विस्तार केवल १२००० श्लोक था (दे० अनु० ७६)। आजकल वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ प्रचलित हैं—दाक्षिणात्य, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। यद्यपि इन तीनो पाठो मे कथानक के दृष्टिकोण से बहुत अन्तर नही है, किन्तु जो श्लोक तीनो पाठो मे पाए जाते है वे एक तिहाई से भी कम है, इसके अतिरिक्त इनका पाठ भी पूर्णतया एक नही है (दे० अनु० २२-२६)। इसका कारण यह है कि प्रारम्भ मे वाल्मीकिकृत आदि-रामायण का कोई प्रामाणिक लिखित रूप नही मिलता था। वह कई शताब्दियो तक मौखिक रूप से ही प्रचलित था जिससे उसका पाठ स्थिर न रह सका। काव्योपजीवी कुशीलव अपने श्रोताओ की रुचि का ध्यान रखकर लोकप्रिय अश बढाते रहे। इस प्रकार आदिरामायण का कलेवर बीच के प्रक्षेपो के कारण बढने लगा। इसके अतिरिक्त, राम कौन थे ? सीता कौन थी ? इनका जन्म तथा विवाह कब और किस प्रकार हुआ ? रावण कौन था ? रावण-वध के बाद राम-सीता का जीवन कैसे बीता ? उन्हे कितनी सन्तान उत्पन्न हुई ! आदि, ये अत्यन्त स्वाभाविक प्रश्न थे। बालकांड तथा उत्तरकांड के प्रारम्भिक रूपो की रचना जनता की उपर्युक्त जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए ही हुई है। **अतः विकास का प्रथम सोपान** यह है कि रामकथा की कथावस्तु रामायण (राम+अयन अर्थात् राम का पर्यटन) न रहकर पूर्ण रामचरित के रूप मे विकसित हुई। उस समय तक रामायण नर-काव्य ही रहा और राम आदर्श क्षत्रिय के रूप मे भारतीय जन-साधारण के सामने प्रस्तुत किए गए थे। इसका आभास भगवद्गीता के उस स्थल से मिलता है जहाँ कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शस्त्र धारण करने वालो मे मैं राम हूँ—**रामः शस्त्रभृतामहम्** (दे० १०, ३१)।

७८६ भागवतो के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण सम्भवतः तीसरी शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार माने जाने लगे थे, जिससे अवतारवाद की भावना को बहुत प्रोत्साहन मिला था (दे० अनु० १४२)। दूसरी ओर रामायण की लोकप्रियता के साथ-साथ राम का महत्व भी बढने लगा था, उनकी वीरता के वर्णन मे अलौकिकता भी आ गई थी। इस प्रवृत्ति की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाँति राम भी संभवतः पहली शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार के रूप मे स्वीकृत होने लगे (दे० अनु० १४३)। फलस्वरूप प्रचलित वाल्मीकि रामायण के कई स्थलो पर रामावतार-विषयक प्रक्षिप्त सामग्री का समावेश हो गया है। इसके अतिरिक्त बालकाड तथा उत्तरकाड मे बहुत सी पौराणिक कथाएँ भी जोड दी गई हैं जिनमे ब्राह्मणो का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है, विशेषकर ऋष्यशृंग तथा विश्वामित्र के वृत्तान्तो और शम्बूक-वध, रामाश्वमेध आदि प्रसङ्गों मे (दे० अनु० १३४)। किन्तु उस समय का सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि राम विष्णु के अवतार माने जाने लगे। अतः

२, ८४)। गर्ग संहिता (गोलोक खण्ड, अध्याय ४ तथा माधुर्य खण्ड, अध्याय ३-७) के अनुसार राम ने मिथिला, कोसल देश तथा अयोध्या की स्त्रियो को गोपियाँ अथवा कृष्ण की पत्नियाँ बन जाने का आश्वासन दिया था। सत्योपाख्यान (पूर्वार्द्ध, अध्याय ३०) मे रत्नालका तथा उसके पति को अगले जन्म मे यशोदा और नन्द के रूप मे जन्म लेने का वरदान मिलता है। उडीसा की रामकथाओ मे नन्द के विषय मे माना जाता है कि वह अपने पूर्वजन्म मे दशरथ (सारलादास कृत महाभारत, वनपर्व) अथवा एक गोपाल था जिसने सीता की खोज करने वाले भूखे राम-लक्ष्मण को दूध देने से यह वरदान प्राप्त किया था कि राम-लक्ष्मण उसके अगले जन्म मे उसके पुत्र बन जाएँगे।[1] आनन्द रामायण के अनुसार राम ने नागकन्या, गुणवती विधवा, पिंगला वेश्या तथा सुगुणा दासी को आश्वासन दिया कि वे क्रमशः जाम्बवती (अनु० ६१४), सत्यभामा (४,८,४३), कुब्जा (४,८, ५७) तथा राधा (७,२१,३८) के रूप मे प्रकट होगी। इसके अतिरिक्त राम ने बहुत सी अन्य स्त्रियो को भी गोपी अथवा कृष्णपत्नी बन जाने का वरदान दिया था, उदाहरणार्थ —देवकन्याएँ (६,७,४८), १०० कामपीडित स्त्रियाँ (७,४,४५-४७), चार ब्राह्मण कन्याएँ (राज्यकाण्ड, सर्ग ११), १६००० क्षत्रिय और वैश्य कन्याएँ (राज्यकाण्ड, सर्ग १२), यमुना (७, १२, ११७)। आनन्द रामायण (४, ७, २१) मे यह भी माना गया है कि एकपत्नीव्रत का पालन करने के कारण कृष्णावतार मे राम की बहुत सी पत्नियाँ होगी तथा इसका भी उल्लेख किया गया है कि ब्राह्मणो को सोलह (४, ७, २६) अथवा एक सौ (५,४,५१) सुवर्ण मूर्त्तियाँ प्रदान करने के पुरस्कार-स्वरूप राम को कृष्णावतार मे १६००० पत्नियाँ मिलेंगी। गर्गसंहिता (माधुर्यखंड, अध्याय ८) के अनुसार रामाश्वमेध की स्वर्ण सीताएँ भी गोपियो के रूप मे प्रकट हुईं।

५— विकास का सिंहावलोकन

७८८ इक्ष्वाकु-वंश के सूतो द्वारा जिस रामकथा-संबंधी **आख्यान-काव्य** की सृष्टि प्रारंभ हुई थी, वह चौथी शताब्दी ई० पू० के अंत तक पर्याप्त मात्रा मे प्रचलित हो चुका था (दे० अनु० १३१)। तब वाल्मीकि ने उस स्फुट आख्यान-काव्य के आधार पर रामकथा विषयक एक विस्तृत प्रबंध-काव्य की रचना की। इस वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** मे अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक की कथावस्तु

[1] दे० बलरामदास का आरण्यकाण्ड। सारलादास के महाभारत (सभापर्व और वनपर्व) मे इस कथा का पूर्वरूप सुरक्षित है—एक नेत्रहीन गोपाल ने वनवासी राम को दूध पिलाया और पुरस्कार-स्वरूप राम ने उसे चंगा कर दिया। सारलादास ने दोनो कथाओ के अन्य पात्रो को भी अभिन्न माना है (दे० अनु० २६२)।

तम उद्‌गारो के दर्शन नगिल आल्वारो की रचनाओ मे मिलते हैं। इसके बाद १२वी शताब्दी मे रामानुज-सम्प्रदाय के अन्तर्गत राम-भक्ति तथा रामोपासना-विषयक संहिताओ तथा उपनिषदो की रचना प्रारम्भ हुई। आगे चलकर रामानन्द तथा रामावत सम्प्रदाय द्वारा राम-भक्ति जनसाधारण की धार्मिक चेतना का केन्द्र बन गई। उस समय बहुत से साम्प्रदायिक रामायणो की रचना हुई, जिनमे अध्यात्म रामायण निर्विवाद रूप से सबसे महत्वपूर्ण है (दे० अनु० १४६-१४६)। १४वी शताब्दी से समस्त भारतीय रामकथा-साहित्य भक्ति-भाव से ओत-प्रोत होता गया और इसका समस्त वातावरण बदल गया। राम विष्णु के अंशावतार न रह कर परब्रह्म के पूर्णावतार माने जाने लगे, रामायण की आधिकारिक कथावस्तु अर्थात् सीताहरण तथा रावण-वध को एक नया रूप दिया गया और कथानक के अन्य गौण प्रसङ्गो का दृष्टिकोण भी बदलने लगा।

वाल्मीकि रामायण, हरिवंश, विष्णुपुराण, वायुपुराण आदि के अनुसार राम, भरत आदि चारो भाई विष्णु के एक-एक चतुर्थांश से समन्वित है। भक्ति-भाव के पल्लवित होने के पश्चात् राम परब्रह्म के पूर्णावतार माने जाने लगे और लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न क्रमशः शेष, शंख तथा सुदर्शन के अवतार (दे० अनु० ३६१)। प्राचीन महापुराणो मे सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का निर्देश नही मिलता है। आगे चल कर लक्ष्मी सीता के रूप मे अवतरित मानी गई है, किन्तु राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् सीता परमशक्ति अथवा मूलप्रकृति के रूप मे स्वीकृत होने लगी (अनु० ३६४)।

भक्ति भाव के कारण रामकथा की आधिकारिक कथावस्तु मे भी महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगे। सीता राक्षस रावण के वश हुई थी, यह विचार भक्तो को असह्य और असम्भव सा प्रतीत होने लगा। अतः उपास्य देवी की मर्य्यादा की रक्षा के लिए भक्ति-भाव ने सीता की एक छाया मात्र का हरण स्वीकार किया (दे० अनु० ५०४-५०८)। इसी तरह सीतात्याग को भी अवास्तविक बना दिया गया है (दे० अनु०-७३०-७३३)। मूल रामकथा मे रावण ने कामवासना से प्रेरित होकर सीता का हरण किया था और दण्डस्वरूप राम द्वारा पराजित होकर मारा गया था। रामकथा के विकास के द्वितीय सोपान मे भी दुष्ट राक्षस रावण का नाश ही रामावतार का मुख्य उद्देश्य है। भक्ति के पल्लवित होने के साथ ऐसी भावना भी उत्पन्न हुई कि कृष्ण अथवा राम का स्मरण मात्र मुक्ति प्रदान करता है चाहे वह वैर भाव से ही क्यो न हो। इसके अतिरिक्त जो कोई कृष्ण अथवा राम द्वारा मारा जाता है वह परम पद प्राप्त कर लेता है। अतः यह माना गया कि रावण ने मोक्ष पाने के उद्देश्य से सीता का अपहरण किया था तथा राम के हाथ से मर कर सायुज्य मुक्ति प्राप्त की थी (दे०

रामकथा के विकास का द्वितीय सोपान है—रामकथा का आदर्श क्षत्रिय राम का चरित्र मात्र न रहकर विष्णु की अवतार-लीला के रूप मे परिणत हो जाना। बौद्ध तथा जैन साहित्य को छोडकर रामकथा का यह स्वरूप सर्वत्र स्वीकृत हुआ।

फिर भी ध्यान देने योग्य बात यह है कि रामकथा के विकास के इस द्वितीय सोपान मे जनसाधारण की धार्मिक चेतना में न तो राम के लिए कोई विशेष स्थान था और न राम के प्रति भक्ति का आविर्भाव हुआ था। राम की भाँति उनके भाई भी विष्णु के अशावतार माने जाते थे, यद्यपि प्रधान नायक होने के कारण राम को अधिक महत्व दिया जाता था। अतः एक ओर उस समय के धार्मिक साहित्य मे रामकथा का स्थान अपेक्षाकृत गौण है, दूसरी ओर तत्कालीन ललित साहित्य मे इसकी व्यापकता तथा लोकप्रियता अद्वितीय है (दे० अनु० ७६०-७६१)।

अवतारवाद के कारण कथावस्तु मे अलौकिकता की मात्रा अवश्य धीरे-धीरे वढने लगी, फिर भी रामकथा का मुख्य दृष्टिकोण धार्मिक न वनकर शताब्दियो तक साहित्यिक ही रहा। यह सस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल के महाकाव्यो तथा नाटको से स्पष्ट है। राम-भक्ति के आविर्भाव के पूर्व रामकथा का यह साहित्यिक रूप विदेश मे फैल गया और उस पर वाद मे रामभक्ति का प्रभाव नही पड़ा, इसीलिए समस्त विदेशी रामकथा साहित्य मे रामभक्ति का प्रायः अभाव है।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाड मे राम-सीता के विहार का उल्लेख किया गया है। आगे चलकर इस प्रकार के शृगारिक वर्णनो को अधिक स्थान दिया गया है (दे० अनु० ६३८)। वास्तव मे शृगार-रस की वढ़ती हुई व्यापकता विकास के द्वितीय सोपान के रामकथा-साहित्य की विशेषता है। तत्सम्वन्धी निम्नलिखित प्रसङ्ग अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है—युद्ध के पूर्व राक्षसों की केलि (अनु० ६११); राम-सीता का पूर्वानुराग (अनु० ४०३) तथा सम्भोगवर्णन (अनु० ३५३)। जानकीहरण, कम्वन-रामायण तथा चक्र कवि कृत जानकीपरिणय मे दशरथ की क्रीड़ाओ का भी विस्तृत वर्णन किया गया है और वालरामायण की कथावस्तु का मुख्य दृष्टिकोण रावण का विरह है। इसके अतिरिक्त गीतगोविन्द तथा मेघदूत के अनुकरण पर भी रामकथा-विषयक शृगारिक खंडकाव्य की रचना की गई है (दे० अनु० २४६-२५०)।

७९०. भारतीय भक्तिमार्ग का वीजारोपण वैदिक साहित्य मे ही हो चुका था किन्तु वह शताब्दियो के पश्चात् ही भागवत धर्म मे पल्लवित हो सका। भागवतों के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण विष्णु के अवतार माने जाने लगे जिसके फलस्वरूप भक्ति-भावना इन्ही विष्णु-वासुदेव-कृष्ण मे केन्द्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। वाद मे राम भी विष्णु के अवतार माने गये, किन्तु अवतार के रूप मे राम के स्वीकृत हो जाने के शताब्दियो वाद रामभक्ति का आविर्भाव हुआ। प्रौढ रामभक्ति के प्राचीन-

कल्याणकारी प्रभाव की जितनी प्रशसा की जाय थोडी है।[१] फलस्वरूप काव्य की कथावस्तु मात्र न रहकर, रामकथा आदर्श जीवन का दर्पण सिद्ध हुई, जिसे भारतीय प्रतिभा शताब्दियो तक परिष्कृत करती चली आ रही है। रामकथा के विकास पर इस आदर्शवाद की भावना का गहरा प्रभाव पडा है। उदाहरणार्थ, वाल्मीकि कृत रामायण मे कैकेयी की कुटिलता का स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया गया है। आगे चलकर कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिए अनेक उपायो का सहारा लिया गया है (दे० अनु० ४५१-५५३)। वालिवध को न्यायसगत सिद्ध करने का रामायण के दो प्रक्षिप्त सर्गों मे प्रयत्न किया गया है। आगे चलकर राम के दोषनिवारण के लिए महावीरचरित, अनर्घराघव आदि नाटको मे वालिवध को एक नया रूप दिया गया है। इसके अनुसार वालि राम को ललकारता है तथा राम से द्वन्द्वयुद्ध मे ही मारा जाता है (दे० अनु० ५२२)। राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् रामकथा का समस्त वातावरण बदल दिया गया तथा विभिन्न पात्रो की उग्रता तथा कुटिलता राम-भक्ति मे लीन कर दी गई है। यहाँ तक कि आदि रामायण का दुष्ट राक्षस रावण भी पतितपावन राम के प्रभाव से पवित्र हो जाता है।[२] इस प्रकार भारत की समस्त आदर्श-भावनाएँ रामकथा मे, विशेष-कर मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्रचित्रण मे केन्द्रीभूत हो गई हैं। फलस्वरूप रामकथा भारतीय सस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वलतम प्रतीक बन गई है।

॥ इति ॥

---

१. दे० रामचरितमानस मे अनुसूया का यह कहना—"सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं" (अरण्यकाण्ड, सो० ५)।

२. "कल्याण" (दे० सितम्बर १६३८, पृ० ६३६) मे म० म० गगानाथ झा ने एक छद उद्धृत किया था, जिसमे रावण कुम्भकर्ण से कहता है कि सीता को विचलित करने के उद्देश्य से मैंने तो राम का रूप धारण किया था, किन्तु ऐसा करने पर मन मे पापबुद्धि नही रह जाती :

अह्लाय प्रतिबुध्यता किमभवद्रामागना ह्याहृता।
भुक्ता नैव कुतो यतो न भजते रामात्परं जानकी॥
रामः किल भवान् यतः सुरुचिरं तालीदलश्यामलं।
रामाकं भजतो ममापि कलुषो भावो न सजायते॥

इससे मिलते-जुलते एक अन्य छद के लिए, दे० कल्याण, जुलाई १६३८, पृ० १५८३।

अनु० ४८८) । इसी तरह बहुत से अन्य पात्रो की मुक्ति का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ७७७) ।

ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि रामकथा का मुख्य दृष्टिकोण शताब्दियो तक साहित्यिक ही रहा था । प्रस्तुत निरूपण से स्पष्ट है कि १४वी शताब्दी से इसका समस्त वातावरण धार्मिक हो गया है और राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के बाद रामकथा की सम्पूर्ण कथावस्तु एक नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई है । यह रामकथा के विकास का **तृतीय सोपान** है जहाँ पहुँचकर रामकथा विष्णु की अवतार-लीला मात्र न रहकर भक्त-वत्सल भगवान् राम के गुण-कीर्त्तन मे परिणत हो जाती है ।

७६१. इस प्रकार रामकथा अनेक रूप धारण करते हुए शनैः शनैः सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गई है । उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरन्तर अक्षुण्ण ही नही वरन् शताब्दियो तक बढती रही है । कारण स्पष्ट है—मानव हृदय को आकर्षित करने की जो शक्ति रामकथा मे विद्यमान है वह अन्यत्र दुर्लभ है । इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे कला तथा आदर्श का जो समन्वय मिलता है उससे आदर्शप्रिय भारतीय जनता प्रभावित हुए बिना न रह सकी ।

भारतीय साहित्य मे रामकथा के इस आदर्शवाद का बहुधा उल्लेख किया गया है । **जैमिनीय अश्वमेध** (३६, ४४) मे रामचरित स्वच्छ मनोवृत्ति प्रदान करने वाला माना गया है—**रामचरितं सन्मनोवृत्तिप्रदम्** । **बृहद्धर्म-पुराण** (२६, १) मे कहा गया है कि रामकथा मे वर्णाश्रम के अनुसार सबो के कर्त्तव्य का स्पष्टीकरण किया जाता है—**सर्वे धर्म्माः समुद्दिष्टा वर्णाश्रमविभागतः** । मम्मट ने माना है कि कवियो को यह उपदेश देना चाहिए कि राम हो अनुकरणीय है, रावण नही—**रामादिवद्वर्त्तितव्यं न रावणादिवत्** (काव्यप्रकाश १, २) । **पद्मपुराण** के पातालखड (अध्याय ६६) के अनुसार रामचरित मे पतिव्रत्य, भ्रातृस्नेह, गुरुभक्ति, स्वामिसेवा आदि साक्षात् आदर्श प्रस्तुत हैं :

यस्मिन्धर्मविधिः साक्षात्पातिव्रत्यं तु यत्स्थितम् ।
भ्रातृस्नेहो महान्यत्र गुरुभक्तिस्तथैव च ॥१२८॥
स्वामिसेवकयोर्यत्र नीतिर्मूर्त्तिमती किल ।
अधर्मकरशास्तिर्वै यत्र साक्षाद्रघूद्वहात् ॥१२६ ॥

लोकसंग्रह का भाव एक प्रकार से रामकथा का सर्वस्व है, जिससे समस्त कवि प्रभावित हुए हैं । अत्यन्त विस्तृत रामकथा-साहित्य में कथावस्तु का पर्याप्त मात्रा मे परिवर्द्धन तथा परिवर्तन हुआ है, किन्तु सीता का पातिव्रत्य, राम का आज्ञापालन, भरत तथा लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, दशरथ की सत्यसंधता, कौशल्या का वात्सल्य आदि ये आदर्श समस्त रामकथाओ मे विद्यमान हैं । जनसाधारण पर इन जीते जागते आदर्शों के

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२. संस्कृत धार्मिक साहित्य
६०० ई० पू०	रामकथा-विषयक आख्यान-काव्य	
४००-३०० ई० पू०		
३०० ई० पू०	वाल्मीकि रामायण (२-६)	
१०० ई० पू०-१०० ई०	प्रचलित बालकाण्ड रामोपाख्यान	
२००-३०० ई०	प्रचलित उत्तरकाण्ड	
३००-४०० ई०	प्रतिमा नाटक (?) अभिषेक नाटक (?)	विष्णु पुराण ब्रह्माण्ड पुराण
४००-५०० ई०	रघुवंश कुन्दमाला (?)	हरिवंश पुराण वायु पुराण नृसिंह पुराण
५००-७०० ई०	रावणवह भट्टिकाव्य	मत्स्य पुराण कूर्म पुराण भागवत पुराण विष्णुधर्मोत्तर पुराण
७००-८०० ई०	महावीरचरित उत्तररामचरित उदात्तराघव	

परिशिष्ट

क—रामकथा-साहित्य की तालिका

(मोटे टाइप में छपी रचनाओं का समस्त कथानक रामकथा से संबंध रखता है)

काल	१. संस्कृत ललित साहित्य	२. संस्कृत धार्मिक साहित्य
८००-९०० ई०	जानकीहरण रामचरित (अभिनन्द) कुन्दमाला (?)	अग्नि पुराण स्कंद पुराण वाराह पुराण
९००-१००० ई०	अनर्घराघव बालरामायण आश्चर्यचूडामणि (?)	नारदीय महापुराण गरुड पुराण ब्रह्म पुराण लिंग पुराण
१०००-११०० ई०	महानाटक रामायणमंजरी दशावतारचरित कथासरित्सागर चम्पूरामायण	महाभागवत पुराण देवीभागवत पुराण सौर पुराण कालिका पुराण
११००-१२०० ई०	प्रसन्नराघव रामचरित (सध्याकरनंदि) राघव-पाण्डवीय	पद्मपुराण का पातालखण्ड वृहद्धर्म पुराण जैमिनीय अश्वमेध योगवासिष्ठ रामायण
१२००-१३०० ई०	उल्लाघराघव मैथिली-कल्याण दूतांगद हंससंदेश	मैरावणचरित अगस्त्य संहिता रामतापनीय उपनिषद्
१३००-१४०० ई०	उदारराघव उन्मत्तराघव (भास्कर भट्ट)	अध्यात्म रामायण अद्भुत रामायण शिवमहापुराण सहस्रमुखरावणचरित

३ आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४. बौद्ध और जैन साहित्य	५. विदेशी साहित्य	काल
			६०० ई० पू०
	दशरथ-जातक की गाथाएँ		४००-३०० ई० पू०
			३०० ई० पू०
	अनामकम् जातकम्		१०० ई० पू०-१०० ई०
			२००-३०० ई०
	पउमचरिय दशरथकथानम		३००-४०० ई०
	दशरथजातक का गद्य वसुदेवहिण्डि		४००-५०० ई०
	पद्मचरित (रविषेण)		५००-७०० ई०
	पउमचरिउ (स्वयम्भूदेव)		७००-८०० ई०

काल	१. संस्कृत ललित साहित्य	२ संस्कृत धार्मिक साहित्य
१४००- १५०० ई०	रामाभ्युदय उन्मत्तराघव (विरूपाक्ष) रघुनाथचरित	आनन्द रामायण पद्मपुराण का उत्तरकाण्ड धर्मखंड वह्निपुराण
१५००- १६०० ई०	राघव-नैषधीय रामकृष्णविलोम काव्य	ब्रह्मवैवर्त पुराण तत्वसंग्रह रामायण अग्निवेश रामायण सत्योपाख्यान भुशुण्डी रामायण महारामायण हनुमत्संहिता बृहत्कोशलखंड

३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४. बौद्ध और जैन साहित्य	५. विदेशी साहित्य	काल
	उत्तरपुराण (गुणभद्र) रामलक्खणचरियं	तिब्बती रामायण खोतानी रामायण	८००-६०० ई०
	महापुराण (पुष्पदत) त्रिषष्टिशलाका महापुरुष पुराण (चामुण्डराय)	रामायण ककविन (जावा)	६००-१००० ई०
	पंपरामायण (कन्नड) कहावली (भद्रेश्वर)		१०००-११०० ई०
तमिल कंब रामायण	जैन रामायण (हेमचंद्र) योगशास्त्र (हेमचंद्र)		११००-१२०० ई०
तेलुगु निर्वचनोत्तर रामायण रंगनाथ रामायण उत्तररामायण	अंजनापवनांजय जीवनसंबोधन (कन्नड)		१२००-१३०० ई०
तेलुगु भास्कर रामायण मलयालम् रामचरितम् रामकथप्पाट्टु असमिया माधवकंदली रा० लवकुशर युद्ध गुजराती राम लीला ना पदो	पुण्याश्रवकथाकोष पुण्याश्रवकथासार (कन्नड़)		१३००-१४०० ई०

काल	१ संस्कृत ललित साहित्य	२. संस्कृत धार्मिक साहित्य
१६००–१७०० ई०	रामलिंगामृत राघवोल्लास रामरहस्य जानकीपरिणय –चक्रकवि –रामभद्र दीक्षित अद्भुतदर्पण रामकथा (वासुदेव) राघवपाण्डवयादवीय यादवराघवीय	

३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	जैन साहित्य	विदेशी साहित्य सिंहली रामकथा	काल
बंगाली कृत्तिवास रामायण उड़िय—महाभारत (सारलादास) मलयालम—कण्णश्श रामायण गुजराती—रामविवाह रामबालचरित सीताहरण	रामदेव पुराण बलभद्र पुराण	मलय— सेरीराम	१४००-१५०० ई०
तेलुगु-मोल्ल रामायण कन्नड—तोरवे रामायण मैरावण कालग मलयालम— अध्यात्म रामायण मराठी-भावार्थ रामायण सीतास्वयंवर (२) असमिया-गीतिरामायण रामविजय नाटक श्रीरामकीर्तन उत्तरकाण्ड, बालकाण्ड उड़िया—बलरामदास रा० रामविभा ठिका रामायण हिन्दी—सूरसागर भरत मिलाप रामजन्म, अंगदपैज रामचरितमानस तुलसीदास की अन्य रचनाएँ गुजराती-रावणमंदोदरी-संवाद, सीताहनुमानसंवाद लवकुशाख्यान	रामचरित (पद्मदेवविजयगणि) रामचरित (सोमसेन) पुण्यचन्द्रोदय पुराण रामविजय चरित रामायण (कुमुदेन्दु)	जावा— रामकेलिंग सेरतकाण्ड कम्बोडिया— रामकेर्ति स्याम— रामकियेन रामजातक	१५००-१६०० ई०

ख-सहायक ग्रंथ

१. प्राचीन ग्रन्थ

—वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदे, कल्पसूत्र, महाभारत, पुराण, उपपुराण।

—वाल्मीकि रामायण। ओरियेंटल इंस्टिट्यूट बडौदा (१९६०...) अपूर्ण।

(१) दाक्षिणात्य पाठ। गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई)।

(२) गौड़ीय पाठ। गोरेसियो (पैरिस) तथा कलकत्ता संस्कृत सीरिज के संस्करण।

(३) पश्चिमोत्तरीय पाठ। दयानन्द महाविद्यालय (लाहौर)।

—रामकथा-विषयक महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य, विविध रामायण, दे० अनुक्रमणिका।

२. भारतीय भाषाओं के आधुनिक ग्रंथ और लेख

मै० गु० अ०—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन-ग्रंथ। कलकत्ता, १९५९।

अगरचन्द नाहटा। राजस्थानी भाषा मे रामकथा सम्बन्धी ग्रंथ। मै० गु० अ०, पृ० ८४०-८४३।

अमरपाल सिंह। तुलसीपूर्व रामसाहित्य। रचना प्रकाशन। इलाहाबाद, १९६८।

इन्द्रप्रकाश पाण्डेय। अवधी लोकगीत और परम्परा। इलाहाबाद, १९५८।

उदयशंकर शास्त्री। ईश्वरदास या सूरजदास। नागरी प्रचारिणी पत्रिका। वर्ष ६१, अङ्क १, पृ० ७१-८०।

उपेन्द्र चन्द्र लेखारु। असमिया रामायण साहित्य। गौहाटी (१९४८)।

कामिल बुल्के। पुरुषाद सौदास। भारतीय साहित्य (आगरा)। वर्ष ५, अंक २, पृ० ९-२७।

—वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५८, अंक १-२, पृ० १-३५।

कृष्णदेव उपाध्याय। भोजपुरी ग्रामगीत। प्रयाग, सं २०००।

क्षेमकरणदास द्विवेदी। अथर्ववेद भाष्य। प्रयाग, सं १९८२।

गोपाल लाल वर्मा। संथाली लोकगीतों मे श्रीराम। सारंग (दिल्ली), ७ फरवरी १९६०, पृ० ४३-४५।

चन्द्रभान। वैदिक साहित्य मे रामकथा का बीज। नागरी प्रचारिणी पत्रिका। वर्ष ५५, पृ० ३०१-३०५।

चावलि सूर्यनारायण मूर्त्ति। सती सुलोचना : एक क्षेपक कथा। हिन्दी अनुशीलन। वर्ष १२, पृ० १३-१६।

३. आधुनिक भारतीय भाषाएं	४ जैन साहित्य	५ विदेशी साहित्य	काल
तेलुगु—द्विपद रामायण (कट्टवरद)			१६००-१७०० ई०
मराठी—सीतास्वयंवर (४)			
लघु रामायण		पाश्चात्य वृत्तान्त	
संक्षेप रामायण			
हिन्दी-रामचन्द्रिका			
अवध विलास			
गोविंद रामायण			
असमिया—गणकचरित			
कथारामायण			
बंगाली—अद्भुताश्चर्य रा०			
रामायणगाथा		फारसी—	
अद्भुत रामायण		रामायण मसीही	
अध्यात्म रामायण			
उड़िया-रघुनाथ विलास			
टीकारामायण			
अध्यात्म रामायण			
गुजराती—रणयज्ञ,			
सीता विरह			

राघवप्रसाद पाण्डेय। तुलसीदासकालीन राघवोल्लास काव्य। मै० गु० अ०, पृ० ७०२-७०८।

राम इकबाल सिंह राकेश। मैथिली लोकगीत। प्रयाग, स० १९९९।

रामकुमार वर्मा। हिन्दी साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास। प्रयाग, सन् १९३८।

रामचन्द्र अग्रवाल। उत्तर भारत की मूर्तिकला मे रामकथा। राजस्थान भारती (बीकानेर) भाग ११, अङ्क १, पृ० ५१।

—राजस्थान के शिलालेखो व मूर्तिकला मे रामकथा की अभिव्यक्ति। मैथिली शरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ। पृ० ८५५।

रामगोविन्द द्विवेदी। ऋग्वेद सहिता। सुलतानगज, स० १९९२।

रामचद्र शुक्ल। हिन्दी साहित्य का इतिहास। काशी, स० १९९९।

रामदास गौड़। हिन्दुत्व। काशी, स० १९९५।

रामनरेश त्रिपाठी। ग्रामगीत। इलाहाबाद, स० १९८६।

—लोकगीतो मे रामकथा। मै० गु० अ०, पृ० ६६१।

रामसिंह तोमर। प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य। हिन्दी परिषद्, प्रयाग, १९६४।

राय कृष्णदास। राम-वनवास का भूगोल। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५४ अङ्क १ और ३।

—आर्ष रामायण का आमुख। वही, भाग ६७, अङ्क ३।

—ऋष्यमूक-किष्किधा की भौगोलिक अवस्थिति। वही, भाग ५२, अङ्क ४।

—वाल्मीकिकृत आदिरामायण। भारती (बनारस), अङ्क ६, पृ० १०५-१३१।

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय। ईस्ट इण्डिया कम्पनी-कालीन रामकाव्य। मै० गु० अ०, पृ० ८२१-८२६।

वासुदेवशरण अग्रवाल। वीर वरह्म। जनपद (काशी), खण्ड १, अङ्क ३, पृ० ६४-७३।

विपिनविहारी त्रिवेदी। पृथ्वीराजरासो मे रामकथा। मै० गु०अ०, पृ० ६७७।

विष्णुकान्त शास्त्री। असमिया मे राम-साहित्य। मै० गु० अ०, पृ० ८३१।

शभुप्रसाद बहुगुणा। शबरी-मङ्गल। रामवन, सन् १९५०।

शातनु विहारी द्विवेदी। भक्तराज हनुमान्। गोरखपुर, स० १९९५।

शाति आंकड़ियाकर। मध्यकालीन गुजराती साहित्य का तिथिक्रम। साहित्य (पटना), अङ्क १, पृ० ५२-५७।

—ऊर्मिला की नींद । वही, वर्ष ११, अङ्क २, पृ० ३७।
—हिन्दी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन । हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, १९६६ ।
जयदेव शर्मा । अथर्ववेदसंहिता । अजमेर, सं १९८५ ।
दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह । भोजपुरी लोकगीत । प्रयाग, सं० २००१ ।
देवीप्रसन्न पट्टनायक । उड़िया में राम-साहित्य । मै० गु० अ०, पृ० ७७०-७७७ ।
धीरेन्द्र वर्मा । अहल्या-उद्धार की कथा । विचारधारा (इलाहाबाद, सं० २००१), पृ० २९-३४ ।
—हिन्दी साहित्य, द्वितीय खण्ड । भारतीय हिन्दी परिषद् । प्रयाग, १९५९ ।
नरसिंहाचार्य आर० । कर्णाटक कवि चरिते ।
नाथूराम प्रेमी । जैन साहित्य और इतिहास । बम्बई, सन् १९४१ ।
नायडू, सु० शंकर राजू । कम्बर और तुलसी । मद्रास, सन् १९५६ ।
पणिक्कर आर० एन० । भाषा-साहित्य-चरित्रम् ।
प्रह्लाद चन्द्रशेखर दीवान जी । गुजरात में रामायण । 'कल्याण' का रामायणांक, पृ० ३९८ ।
बदरीनारायण श्रीवास्तव । रामानन्द सम्प्रदाय । प्रयाग, सन् १९५७ ।
बलदेवप्रसाद मिश्र । तुलसीदर्शन । प्रयाग, सन् १९४२ ।
बालशौरि रेड्डी । तेलुगु भाषा में रामसाहित्य । मै० गु० अ०, पृ० ८०१ ।
बेनीप्रसाद । हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता । प्रयाग, सन् १९३१ ।
भगवती प्रसाद सिंह । रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय । बलरामपुर, सं० २०१४ ।
भागवत द्विवेदी । भक्त शबरी । रामवन, सं० १९९२ ।
भास्कर मिश्र । देवगढ और इलोरा के रामायण संबन्धी दृश्य । मैथिली शरण अभिनन्दन ग्रंथ । पृ० ८०६ ।
भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' । रामभक्ति-साहित्य में मधुर उपासना । पटना, सन् १९५७ ।
मंजुलाल मजूमदार । शामलाजी मन्दिर में रामायण से सम्बन्धित दृश्य । मैथिली शरण अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ८१४ ।
मनोहर शर्मा । राजस्थानी लोकगीतों में उत्तररामचरित । मै० गु० अ०, पृ० ८२७ ।
महाराष्ट्रीय । श्रीरामायण समालोचना । पूना, सन् १९२७ ।
माताप्रसाद गुप्त । तुलसीदास । प्रयाग, सन् १९४२ ।

३. विदेशी भाषाओं के ग्रन्थ और लेख

Abbreviations

ABORI Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute.
BEFEO Bulletin de l'Ecole Francaise d'Extreme Orient.
BSOS Bulletin of the School of Oriental Studies.
IA Indian Antiquary.
IHQ Indian Historical Quarterly.
JAOS Journal of the American Oriental Society.
JRAS Journal of the Royal Asiatic Society.
JOI Journal of the Oriental Institute (Baroda).
JOR Journal of Oriental Research (Madras).
ZDMG Zeitschrift der Deutschen Morgenlaendischen Gesellschaft.

ABIDI A. S. H The Story of Ramayan in Indo-Persian Literature. Indo-Iranica (Calcutta) Vol. XVII (1964), pp. 17-29.

AGRAWAL, V. S The Panchavaktra or Kirtimukha Motif. Purāṇa (Vārānasī). Vol 2, pp. 97-106.

AIYAR, B V. KĀMESHVAR Solar Signs in Indian Literature Quarterly Journal of the Mythic Society. Vol. 12, p. 73 ff.

ALSDORF, L. Eine neue Version der verlorenen Brhatkathā 19th Intern Congr. of Orientalists pp 344-349

ANANDCOOMAR SWAMI. Yaksas 2 vol. Washington 1928-1931

ATTAGARA Of King KEO

BAILEY, H. W. The Rāmastory in Khotanese. JOAS. Vol 59, pp 460-468.

— On Rāmāyana and Rāma in Khotanese. BSOS. Vol. 10, pp. 365 ff, 559 ff.

BALDAEUS, PH Afgoderey der Oost-Indische Heydenen. Ed. Dr. A. J De Jong. The Hague 1917.

BARNETT, L D Alphabetical Guide to Sinhalese Folklore from Ballad Sources. IA Suppl. Vol. 44 ff.

BARRETT, E. C. G. Further Light on Sir R Windstedt's 'undescribed Malay versions of the Ramayan'. BSOS Vol. XXVI, Part 3 (1963), pp. 531-543.

BARTH, A Bulletin des Religious de l'Inde. Paris 1894.

BARUA, B. K Assamese Literatnre Bombay 1941.

— Śankaradeva his poetical works. Aspects of Early Assamese Literature. Gauhati University 1959. pp 65-125.

शिवनन्दन सहाय । श्री गोस्वामी तुलसीदास । पटना, सन् १६१६
सत्यदेव चतुर्वेदी । अमितवेग । जौनपुर, १६५८ ।
सत्येन्द्र डॉ० । ब्रजलोक-साहित्य मे रामकथा । भारतीय साहित्य (आगरा), वर्ष २ (जुलाई १६५७), अङ्क ३, पृ० ६५-६४ ।
सातवलेकर । श्रीरामायण महाकाव्य का बालकाण्ड । सन् १६४३ ।
सुदर्शन सिंह । श्री हनुमान्-चरित । रामवन ।
✓हजारीप्रसाद द्विवेदी । प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद । बम्बई, सन् १६५२ ।
हरदेव बाहरी । लालवेग की उत्पत्ति । जनपद (काशी), भाग १, अङ्क ३, पृ० १६-२१ ।
✓हरिवंश कोछड़ । अपभ्रंश साहित्य । दिल्ली, स० २०१३ ।
हिरण्मय । कन्नड साहित्य मे रामकथा-परम्परा । मै० गु० अ०, पृ० ७५१ ।
हृदयनारायण सिंह । क्या उत्तरकाण्ड वाल्मीकि-रचित है ? नागरी प्रचारिणी पत्रिका । भाग १७, पृ० २५६-२८६ ।

CHATTOPADHYAYA, K. C. The Vṛṣākapi hymn. Allahabad University Studies. Vol. I (1925), pp. 97-156.

CHATTOPADHYAYA, S. The Problem of Śāntā's Parentage. Our Heritage (Calcutta). Vol. 2 (1954), pp. 353-374.

— Śāntā's Parentage. IHQ. Vol. 33, pp. 146-151.

CHAUDHURY, H RAY. Early History of the Vaiṣṇava Sect, Calcutta 1920.

CHENCHIAH, A. A History of Telugu Literature. Heritage of India Series. Calcutta s. a.

COEDES, G, Les états Hindouisés d'Indochine et d'Indonesie. Paris 1948.

COLEMAN, C. The Mythology of the Hindus. London 1932.

CONNOR, J. P. The Rāmāyaṇa in Burma. Jonrn. of Burma Research Society. Vol. 15 (1915), p. 80 ff.

COWELL, E. B The Buddhacarita of Aśvaghosa. Oxford 1893.

— The Jātaka. Vol. I VI.—Cambridge 1895-1907.

COYAJEE, J. C. Cults and Legends of Ancient Iran and China. Bombay 1936,

CROOKE, W. Tribes and Castes of N., W. Provinces and Oudh. Calcutta 1896.

— The Popular Religion and Folklore of Northern India. Westminster 1896.

DALTON, E T. Descriptive Ethnology of Bengal. Calcutta 1872

DAPPER, O. Asia. Amsterdam 1676.

DARMESTETER, J. Etudes Iraniennes. Paris 1883.

— Le Zend Avesta. Paris 1893.

DAS. A. C Rigvedic India. Calcutta 1927.

DASGUPTA, S. N. History of Indian Philosophy. Vol. 2 Calcutta 1932

DATT, K. K. Kundamālā, Sanskrit College Calcutta 1964.

DE, S. K. History of Sanskrit Kāvya Literature. Calcutta 1948.

— On Kundamālā ABORI, Vol 16, p. 158.

— The Problem of the Mahānāṭaka. IHQ Vol. 7 p. 537 ff.

DEHON, P. Religion and Customs of the Oraons Memoirs of the As. Soc. of Bengal. Vol. I, p. 130 ff.

BAUMGARTNER, A. Das Rāmāyana und die Rāma-Literatur der Inder. Freiburg 1894.

BELVALKAR, S. K. Uttararāmacarita. Harvard Oriental Series Vol. 21. Cambridge Mass. 1915.

BHANDARKAR, R. G. Vaisnavism, śaivism and minor religious systems. Strassburg 1913.

BHATT, G. K. The Fire Ordeal of Sita—an interpolation in the Vālmīki Rāmāyana. JOI. Vol. 5, p. 292.

BHATTACHARYA, S. P. The Emergence of an Adhyātma śastra or the Birth of the Yogavāśiṣtha Rāmāyaṇa. IHQ Vol. 24, pp. 201-212

BHATTACHARYA, H. Nārāyaṇas, Pratinārāyaṇas and Balabhadras. The Jain Antiquary. Vol. 8, p. 8 ff.

BLOOMFIELD, M. The Kaucika Sutra of the Atharva-Veda. JAOS. Vol. 14 (1890), p. 1 ff.

BOULAYE LE GOUZ, Fr. de La. Reyze en Opteekeningh. Amsterdam 1660.

BUEHLER, G Alberuni's India. IA. Vol. 19 (1890), p. 381 ff.

BULCKE, C. The Genesis of the Vālmīki Rāmāyaṇa Recensions. JOI. Vol. 5, pp 66-94.

— About Vālmīki, JOI. Vol. VIII, pp. 121-131.

BURLINGAME, E. W. Buddhist Legends. Harvard Oriental Series Vol. 28-30 Cambridge Mass. 1921.

CALAND, W. Twee oude Fransche Verhandelingen over het Hindoeisme (Relation des Erreurs; La Gentilité du Bengale). Amsterdam 1923.

— Drie oude Portugeesche Verhandelingen over het Hindoeisme. Amsterdam 1915.

CHAKRAVARTI, A. Buddhistic and Jain versions of the Story of Rāma. The Jaina Gazette. Vol. 22 (1926), p. 117 ff.

CHAKRAVARTI, CHINTAHARAN. Tradition about Vānaras and Rāksasas. IHQ. Vol. I (1925) p. 779 ff

CHARPENTIER, J. Studien ueber die Indische Erzaehlungsliteratur. ZDMG Vol. 62 (1908), p 725 ff.

— Zur Geschichte des Cariyapiṭaka. Wiener Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes. Vol. 24 (1910), p. 397 ff.

CHATTERJI, S K. Krishna Dvaipāyana Vyāsa and Krishna Vāsudeva. Journ. As. Soc. Beng. Vol. 16 (1950), pp. 73-87.

GHOSH, MANMOHAN. On the Source of the old Javanese Rāmāyaṇa-Kakavin Journ. of Greater India Society. Vol. 3. p. 113 ff.

GLASENAPP, H von Der Jainismus. Berlin 1925.
— Zwei Philosophische Rāmāyanas. Wiesbaden 1951.

GODAKUMBURA, C., E. The Rāmāyaṇa. A version of Rāma's story from Ceylon. JRAS 1946, p. 14 ff.

GONCALVES, D. Historia do Malavar. Ed. J. WICKI, S. J. Munster 1955.

GORE, N. A. A Bibliography of the Rāmāyaṇa. Poona 1943.

GRASSMANN, H. Rigveda. Leipzig 1876.

GRIERSON, G. A. The Kāshmīrī Rāmāyana. Bibl. Ind. Calcutta 1930.
— Gleanings from the Bhakta-Māla. JRAS. 1910, pp. 269-306.
— Sīta's Parentage. ib 1921, p. 422 ff
— The Bengali Rāmāyaṇas (D. C. Sen). A Review. ib. 1922, p. 135 ff.
— Indian Epic Poetry. IA. Vol. 23, p. 52 ff.
— On the Adbhuta Rāmāyana. BSOS. Vol 4, pp. 11 ff
— Sītā Forlorn. A specimen of the Kāshmīrī Rāmāyaṇa. ib. Vol. 5, p. 285 ff.
— Bhaktimārga. Encycl. of Religion and Ethics.

GRIFFITHS, W G The Kol Tribe of Central India. Calcutta 1946.

GURNER. C. W. Aśvaghosa and the Rāmāyaṇa. Journ. and Proceedings of the As. Soc. of Bengal Vol. 23. pp. 347- 367.

HAZRA, R. C. Puranic Records on Hindu Rites and Customs. Dacca 1940.
— Studies in the Upapurāṇas. Vol. I and II. Calcutta 1958 and 1963
— Some minor Purāṇas. ABORI. Vol. 19, p. 69 ff.
— The Upa-Purāṇas. ib Vol. 21, p. 38 ff.
— The Varāha-Purāṇa. ib. Vol. 18, pp, 321-337.
— The Apocryphal Brahma Purāṇ. Indian Culture. Vol. 2, p 237 ff.
— The Bṛhannāradīya and the Nāradiya Puraāṇ ib. Vol. 3, p. 477 ff.

DEUSSEN, P. Sechzig Upanisads des Veda Leipzig 1897.

DEYDIER, H. The Rāmāyaṇa in Laos. JOR. Vol. 22, p. 64 ff.

— Les Origines et la Naissance de Rāvaṇa dans le Rāmāyaṇa Laotien. BEFEO Vol. 44, p. 141 ff.

DHANI, PRINCE. The Rāma Jātaka. A Lao version of the Story of Rāma. The Journal of the Siam Society. Vol. 36, p. 1 ff.

DIVANJI, P. C. Influence of the Rāmāyaṇa on the Gujarati literature JOI Vol 4 (1954), pp 46-57.

DUBOIS, J. A Hindu Manners, Customs and Ceremonies. Oxford 1906.

DUSSAUD, R. Les decouvertes de Ras Shamra. Paris 1941.

— Les Religions de Babylone et d'Assyrie. Paris 1945.

DUTT, R, C. A History of Civilisation in Ancient India. Calcutta 1899.

ELWIN, V. The Bondo Highlander 1950.

— Myths of the N E. Frontier of India Shillong 1958.

ENTHOVEN, R. E Folklore of Gujarāt. IA. Vol. 40 Supple.

ESTELLER, A Die Aelteste Version des Mahānātaka Leipzig 1936.

FARIA Y SOUZA, M. de Asia Portuguesa. 3 Vol. Lisbon 1666-1675.

FAUSBOLL, V. The Jātaka. I—VII. London 1877-1897.

FENICIO, J. S Livro da Seita. Ed. J. Charpentier Upsala 1933.

FINOT, LOOIS Recherches sur la literature lastienne. BEFEO Vol XVIII, Fok 5, pp. 1-128.

FOUCHER, A The influence of Indian Art on Cambodia and Java Sir Asutosh Mookerjee Silver Jubilee Vol. III Or. Pt. I, p. 1 ff.

FRANCISCO, JOAN R. The Rāma Story in the Post-Muslim Malay literature of South-East Asia. The Sarawah Museum Journal. Vol. X (Nos 19-20) ff. 468-485.

FUCHS, S The Gond and Bhumia of Eastern Mandla. Bombay 1960.

FUEHRER-HAIMENDORF, C von. The Reddis of the Bison Hills. London 1945.

IYER, L. K. Ananthakrishna. The Cochin Tribes and Castes. 2 Vol. Madras 1909-1912.

JACOBI, H. Das Rāmāyaṇa. Bonn 1893.

— War das Epos und die profane Literatur Indiens urspruenglich in Prākrit abgefasst. ZDMG. Vol. 48 (1894), pp. 407-417.

— Ein Beitrag zur Rāmāyaṇa Kritik. ib. Vol. 51 (1897), p. 605 ff.

— Brahmanism. Encycl. of Religion and Ethics. Vol. II.

— Incarnation. ib. Vol. VII.

JOHNSTON, E. H. Buddhacarita. Calcutta 1935.

JUYNBOLL. Dutch translation of Rāmāyaṇa Kakawin, Cantos 7-26. Dutch Oriental Journal Vol. 78-94.

KAṆE, P. V. History of the Dharmaśāstra. Vol. I—II. Poona 1930-1941.

— The Two Epics, ABORI, Vol. 47, pp. 11-58.

KANGA, E. M. F. The Age of Yasts. A Volume of Eastern and Indian Studies (Bombay 1932), pp. 134-140.

KARPELES, S. The Influence of Indian Civilisation in Further India. Indian Art and Letters. Vol. I pp. 30-39.

KARPELES, S. Un episode du Rāmāyaṇa Siamois. Etudes Asiatiques. Paris 1925 p 315 ff.

KATS, J. The Rāmāyaṇa in Indonesia. BSOS Vol. IX (1926-28), pp 279-285.

KEITH, A. B. The Age of the Rāmāyaṇa, JRAS 1915, pp. 218-228.

— Indian Epic Poetry, IA. Vol 23, p. 52 ff.

— Sanskrit Literature. Oxford 1928.

— Sanskrit Drama. Oxford 1924.

KERN, H. Manual of Buddhism. Strassburg 1896.

— Dutch Translation of Rāmāyaṇa Kakawin. Cantos I—VI. Dutch Oriental Journ. of Vol. 73.

KIBE, M. V Rāvaṇa's Laṅkā located in Central India. IHQ. Vol. 4 (1928), pp 693-702.

KINGKEO ATTAGARA. The Rāmāyaṇa Epic in Thailand und S. E Asia. Journal of the Assam Research Society (Gauhati) Vol. XV (1963) pp. 3-21.

KIRFEL, W. Rāmāyaṇa Bālakāṇḍa und Purāṇa. Die Welt des Orients 1947. pp. 113-128.

KRISHNADAS, RAI. Ikshvāku Genealogy in the Purāṇas. Purāṇa (Vārāṇasi). Vol. 2, pp. 128-150.

HAZRA, R. C. The Padma Purāṇa. ib. Vol. 4, p. 73 ff.
— Discovery of the genuine Āgneya Purāṇa. JOI. Vol. 5, pp. 411-416.
— The Problem relating to the Sivapurāṇa. Our Heritage (Calcutta). Vol. 1, p. 65 ff.
— The Bhāgavata Purāṇa. New Indian Antiquary. Vol. 1, p. 522 ff.
— The Saura Purana ib. Vol 6, p. 103 ff.
— The Smrti Chapters in the Purānas. IHQ. Vol. 11, p 120
— Our present Agni-Purāṇa. ib. Vol. 12, p. 683 ff.
— The Mahābhāgavata Purāṇa. ib. Vol. 28 (1952), pp. 17-28
— The Brhaddharma-Purāṇa. The Journ. of the Univ. of Gauhati. Vol. 6, p. 245 ff.
— The Devī-Bhāgavata. JOR Vol. 21, pp. 49-79.

HERTEL, J. Kleine Mitteilungen. ZDMG, Vol. 60 (1906), p. 399 ff.

HIRALAL, Dr. The Situation of Lankā Ganganatha Jha Comm. Volume. pp 151-163. Poona 1937.

HIVALE, SHAMRAO. The Pardhans of the Upper Narbada Valley. Bombay 1947.

HOFFMANN, J. Encyclopaedia. Mundarica Vol. VIII Patna 1933

HOOYKAAS, C. The Old Javanese Rāmāyana. Amsterdam 1958.

HOPKINS, E. W The Great Epic of India New York 1902.
— Epic Mythology. Strassburg 1915
— The Original Rāmāyaṇa JAOS. Vol 46 (1926) pp. 202-219.
— Pragathikani. ib Vol. 17 pp. 23-92.
— Allusions to the Rāmastory in the Mahābhārata. ib. Vol. 50 (1930). pp 85-103.

HUBER, E La Legende du Rāmāyaṇa en Annam. BEFEO. Vol. 5, p. 168 ff.
— Etudes de Litterature bouddhique. ib. 1904, p. 698 ff.

IBBETSON, D A Story of Vālmīki. IA. Vol 24 p. 240.

IYER, K. B. Yama-Pwe or the Rāmāyaṇa Play in Burma. Triveṇi (Bangalore). Vol. 14, pp. 239-245.

MAXWELL, W. E Sri Rama. JRAS. Straits Branch. Vol. 17 1886, p. 85 ff. and Vol. 55, pp. 1-24.

MENON, C A. Ezuttacchan and his age. University of Madras 1940.

MITRA, S. C. The Munda Legend about Sitā and Sitali. Journ. of the Department of Letters. Calcutta. Vol. 4, pp. 303-304.

MOJUMDAR, A. K The Rāmāyaṇa. A Criticism. IA. Vol. 31, pp 351-353.

MONIER-WILLIAMS, M. Indian Epic Poetry. London 1863.

— Indian Wisdom. London 1893.

— Brahmanism and Hinduism. London 1891.

MOOR, E. The Hindu Pantheon. London 1910.

MORET, A. Histoire de l'Orient. Paris 1936.

MUIR, J. Original Sanskrit Texts. Vol. 4 (2nd Ed.) London 1873.

MURTHY, T. S. KRISHNA. A Detailed Study of thi. Uttarakānḍa of the Rāmāyaṇa of Vālmīke Thesis. University of Mysore 1966. Unpublished.

NAIK, T. B. Rāmkathā among the Primitive Tribes of India. Bulletin of the Tribal Research Institute. Chhindwara (Madhya Pradesh). Vol. I. Nos. 2 and 3.

NARASIMHACAR, D. L. The Jaina Rāmāyaṇas. IHQ. Vol. 15 (1939), pp. 574-594.

NEGELEIN, J. von. Eine epische Idee im Veda. Wiener Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes. Vol. 16 p. 226 ff.

NEOG, M. Assamese Literature before Śaṅkaradeva. Aspects of Early Assamese Literature (Gauhati 1959), pp. 17-64.

NIEBUHR, C. Voyage en Arabie et en d'autres pays circonvoisins. 2 Vol. Amsterdam 1776-1780.

NORMAN, H. C. Commentary on Dhammapada. 5 Vol. Pali Text Society. London 1906-1915.

OLDENBERG, H Die Religion des Veda Berlin 1894.

— Jātakastudien. Nachrichten v. d. Koenigl. Gesellschaft der Wissensch. zu Goettingen. Phil-Hist. Klasse 1918, p. 456 ff

— Das Mahābhārata. Goettingen 1922.

OVERBECK, H. Hikāyat Mahārāja Rāvaṇa. JRAS, Malayan Branch. Vol. 11 (1933), part two. pp. 111-132.

PARGIETER, F. E. Vrsakapi and Hanumant. JRAS. 1911, p. 803 ff; 1913, p. 397 ff.

KULKARNI, V. M. The Rāmāyaṇa Version of Saṅghadāsa as found in the Vasudevahiṇḍi. JOI. Vol. 2, pp. 128-138.
— The Rāmāyana of Bhadreśvara as found in his Kahāvalī. ib pp. 332-338.
LAFONT, P. B. P'a Lak P'a Lam. Ecole France, d'Extreme-Orient. 1957.
— P'ommachak. Ecole France. d'Extr. Orient. 1957.
LALOU, M. L. Historie de Rāma en Tibetain. Journ. Asiatique. 1936, p. 560 ff.
LASSEN, C. Indische Altherthumskunde. 2nd Ed. Vol. II. Leipzig 1874.
— On Weber's Dissertation on the Rāmāyana. IA. Vol. 3, pp. 102-103.
LEKHARU, U. C. Assamese Versions of the Rāmāyaṇa. Aspects of Early Assamese Literature. Gauhati University 1959 pp. 219-229.
LESNY, V. Ueber das Purāṇa-artige Gepraege des Bālakāṇḍa. ZDMG. Vol. 67, pp 497-500.
LETTRES EDIFIANTES. Vol. 13. Paris 1718.
LEVI, S. Le Theatre Indien. Paris 1890
— Sanskrit Texts from Bāli. Baroda 1933.
— Pour l'histoire du Rāmāyaṇa. Journ. Asiatique. 1918, pp. 1-160.
— La légende de Rāma dans un avadan chinois. Album Kern, p. 279 ff.
LUDWIG, A. Der Rigveda I-VI. Prag 1876-1888.
— Ueber das Rāmāyaṇa Prag 1894.
LUEDERS, H. Die Jātakas and die Epik. ZDMG. Vol. 58 (1904), p. 687 ff.
— Die Vidyādharas in der Buddhistischen Literatur und Kunst. ib. Vol. 93 (1939), p. 89 ff.
— Die Sage von Ṛṣyaśṛṅga Nachrichten v. d. koenigl. Gesellschaft der Wissensch zu Goettingen Phil Hist. Klasse 1897, pp. 87-135.
MACAULIFFE, M. A. The Sikh Religion. Oxford 1909
MACDONELL, A A. Sanskrit Literature. London 1928.
MACDONELL-KEITH Vedic Index. London 1912
MAHALINGAM, T. V. A Rāmāyaṇa Panel at Conjeevaram. JOR. Vol. 28, pp 68 ff.
MAJUMDAR, R. C. The Classical Age. Bombay 1954.
MANUCCI, N. Storia do Mogor Engl. Transl. London 1907-1908.

REAMKER. Text and French Summary. Introduction by S. Karpeles. Fasc. 1-10 and 75-80. Phnom-Penh 1937.

RHYS DAVIDS, W. Buddhist India. London 1903.

RICE, E. P. Kanarese Literature. Calcutta 1921.

ROGERIUS, A. De open Deure tot het verborgen Heydendom. Ed. W. Caland. The Hague 1915.

ROORDA VAN EYSINGA, P. P. Geschiedenis van Sri Rama. Amsterdam 1843.

ROSE, H. A. A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and the North-West Frontier Province. 3 Vol. Lahore 1919.

ROY, S. C. The Birhors. Ranchi 1925.

— The Oraons of Chotanagpur. Ranchi 1925.

ROY, SUNIL CHANDRA. The Author of the Rāmābhudaya. IHQ. Vol. 30, pp. 371-381.

RUBEN, W. Studien zur Text-Geschichte des Rāmāyaṇa. Stuttgart 1936.

— Eisenschmiede und Daemonen in Indien Leiden 1939.

— Ueber die Religion der vorarische staemme Indiens. Berlin 1952

RUSSELL, R. V. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India. London 1916.

SAHOO, K. C. Rāmkathā in Sārladās Mahābhārata. Journ of Historical Research (Ranchi) Vol. 1, No. 2, p. 56, ff.

— Oriya Rāma-Literature (1450-1800). Thesis, Ranchi University 1965 (unpublished).

— Literature and social life in Mediaeval Orissa. Pustak Sadan, Ranchi 1971.

SANDESARA, B. J. The Ullāgharāghava. Proceedings All-India Oriental Conference. 16th Session, Lucknow 1955. Vol, 2, pp. 105-112.

SANKALIYA, H. D. Kundamālā and Uttrararāmacarita. JOI (Baroda) Vol. 15, pp. 322-334.

SARKAR, H. B. Indian Influences on the Literature of Java and Bali Calcutta 1934.

SASTRI, K A. NĪLAKĀNTHA The Rāmāyaṇa in Greater India. JOR. Vol. 6 (1932), p. 117 ff.

SASTRI, K, S. RAMASWAMI. Studies in Rāmāyaṇa. JOR. Baroda 1944.

PICKFORD, J. Mahāvīra Carita. London 1871.
PILLAI, M S. Purnalingam. Tamil Literature. Tinnevelly 1929.
PILLAI, S. VAIYAPURI. History of Tamil Language and Literature. Madras 1956
POLIER, M E. de. Mpthologie des Hindous. 2 Vol. Paris 1809.
PRINTZ, W. Rāma und śambūka. Zeitschrift fuer Indologie und Iranistik. Vol. 5, p. 241 ff.
— Helen und Sita Beitrage zur Literaturwissenschaft und Geistesgeschichte Indiens. Festgabe Jacobi. Bonn 1926, pp. 103-123.
PRZYLUSKI, J. Epic Studies. IHQ. Vol. 15, pp. 289-299.
PURI, SWAMI SATYANANDA. Rāma-Kīrti (Rāmakien). Birla Oriental Series. Bangkok 1940.
PUSALKER, A. D. Twenty-five years of Epic and Purāṇic Studies. Progress of Indic Studies (Poona 1942), pp. 101-151.
— Geneology of the Solar Dynasty in the Purāṇas and the Rāmāyaṇa. Purāna (Vārānasī), Vol. IV, No. 1, pp. 24-33.
— Bhāsa. A Study. Delhi 1968.
RAGHAVAN, V. The Tattvasangraharāmāyaṇa of Rāmabrahmānanda Annals of Oriental Research (Madras). 1953, pp. 1 55.
— Some old lost Rāma Plays. Annamalai 1961.
— Date of Yogavāsistha. JOR. Vol. 13, pp. 100-128.
— Music in the Adbhuta Rāmāyaṇa. Journ. Music Academy Vol. 16, p. 66 ff.
RAGHUVIR. Dr. The Rāmāyaṇa in China. Lahore 1938.
RAMADAS. G. Aboriginal Names in the Rāmāyaṇa. Journ. of the Bihar and Orissa Research Institute. Vol. 11 (1925). pp. 41-53.
— The Aboriginal Tribes in the Rāmāyaṇa. Man in India (Ranchi) Vol. 5, pp. 28-55.
RAMASWAMI SASTRI, K. S. Studies in Rāmāyaṇa. Baroda 1944.
RAO, N. VENKATA. Sri Ramayanamu by Kattavaradaraju. Critically edited with Introduction and Notes. Madras 1950.
RAO, T. A GOPINATH. History of the Śri Vaiṣhṇavas. Madras 1914.
RAVENSHAW, E. C. The Avatārs of Vishnoo. An abstract translation from the Padma Pooran Journ. of the As. Soc. of Bengal. 1842, pp. 1112-1130.

SUZUKI, D. T. Studies in the Laṅkāvatāra Sūtra. London 1930.

TAVARNIER, J. B. Travels in India. Oxford Un. Press 1925.

TELANG, K. T. Was Rāmāyaṇa copied from Homer. Bombay 1873.

TEMPLE, R. C. A Popular Legend about Vālmīki. IA. Vol. 27, p. 112.

— A Punjab Legend. IA. Vol. 11, pp. 281-91.

— The Legends of the Punjab. Bombay 1884.

THOMAS, F. W. A Rāmāyaṇa Story in Tibetan from Chinese Turkestan. Indian Studies (Lanman Comm. Vol.) 1929. pp. 193-212.

THOMAS, P. Epics, Myths and Legends of India. Bombay s. a.

UNGNAD, A. A Babylonian-Assyrian Dictionary.

UTGIKAR, N. B. The Story of the Daśaratha Jātaka and of the Rāmāyana. JRAS. Cent. Suppl. 1914, pp. 203-221.

VAIDYA C. V. The Riddle of the Rāmāyana. Bombay 1906.

VANDIER, J. La Religion egyptienne. Paris 1944

VARADĀCĀRI, K. C. Sri Kulaśekhara's Philosophy of Devotion. Journ. Sri Venkateśvara Oriental Institute. Vol. 3, pp. 1-22.

VENKATARATNAM, M. Rāma, the greatest Pharaoh of Egypt. Rajamahendri 1934.

VENKATARĀMA SĀSTRI, T. R. The Rāmāyaṇa. JOR. Vol. 18, pp. 157-169.

VIGNĀNĀNANDA. The śrimaddevī Bhāgavatam Sacred Books of the Hindus. Vol. 26.

VIGOUROUX, F. Dictionaire de la Bible. Paris 1895.

VINCENZO MARIA DI CATERINA DA SIENA, P. F. Viaggio all Indie Orientali, Roma 1672.

VYAS, S. N. The Civilisation of the Rāksasas in the Rāmāyana JOI Vol 4, p. 1 ff

WARD, W. A View of the History, Literature and Religion of the Hindoos. 3 vol. London 1877.

WATANABE, K The oldest Record of the Rāmāyana in a Chinese Buddhist Writing. JRAS 1907, pp 99 ff.

SASTRI T. R. VENKATARAMA. The Rāmāyaṇa JOR Vol. 18, pp. 157-169.

SCHLEGEL, W. Date of the Rāmāyaṇa. ZDMG. Vol. 3, p. 379.

SCHRADER, F. O. Introduction to the Pancarātra and the Ahirbudhnya Samhitā. Madras 1916.

SCHWEISGUTH, P. Etude sur la Litterature Siamoise. Paris 1951.

SEN, D. C. The Bengali Rāmāyanas. Calcutta 1920.
— History of Bengali Language and Literature. Calcutta 1921.

SEN, NILMADHAV. The Fire Ordeal of Sītā—a later interpolation in the Rāmāyaṇa. JOI. Vol. 8, pp. 201-206.

SHAH, U. P. Vrsakapi in Rgveda. JOI. Vol. 8, pp. 41-70.

SHARMA, RAM. A little known Persian version of the Rāmāyaṇa. Islamic culture, Vol. 8, pp. 673-678.

SHASTRI, M. Narayana. On the Indian Epics. IA. Vol. 29, pp. 8-27.

SHASTRI, Raghuvar Mitthulal. The authorship of the Adhyātma Rāmāyaṇa. Journ. G. N. Jha Research Institute Vol. 1, pp. 215-39.

SHELLABEAR. Hikāyat Sri Rāma. JRAS. Straits Branch Nos. 70 and 71.

SMITH, H. Sutta-Nipāta Commentary. Pali Text Society. London 1916.

SONNERAT, M. Voyage aux Indes Orientales et a la Chine. I-II. Paris 1872.

SORENSEN, S. Index to the names of the Mahābhārata. London 1904.

SRIKANTHIA, B. M. Tragic Rāvaṇa. Mysore University Magazine. Vol. VII.

STUTTERHEIM, W. Rāma-Legenden und Rāma-Reliefs in Indonesian. Muenchen 1924.

SUKTHANKAR, B. M. The Rāma-Episode (Rāmopākhyāna) and the Rāmāyaṇa. Kane Comm. Volume. Poona 1941, pp. 422-88.
— The Nala-Episode and the Rāmāyana. A Volume of Eastern and Indian Studies. Bombay 1939, pp 294-303.
— The Bhrgus and the Mahābārata. ABORI. Vol. 18, pp. 1-76.

ग—अनुक्रमणिका

(ग्रंथ, लेखक, विषय)

सूचना (१) अक अनुच्छेदो के द्योतक हैं।

(२) रचनाओ के नाम **मोटे टाइप** मे छपे है।

(३) वाल्मीकि, वाल्मीकिकृत रामायण तथा पाश्चात्य भाषाओ के ग्रंथो को छोडकर अन्य लेखको तथा रचनाओ के सभी उल्लेख निर्दिष्ट हैं किंतु अनुक्रमणिका मे उल्लिखित अनुच्छेदो मे यदि किसी रचना के परिचय के अतर्गत अन्य अनुच्छेदो का निर्देश किया गया है तो उन्हे अनुक्रमणिका मे नही दुहराया गया है।

(४) नितात गौण पात्रो को छोडकर अन्य पात्रो से सबध रखने वाली सामग्री उनके नामो के साथ निर्दिष्ट है। कथा-वस्तु के कुछ प्रसगो का अलग उल्लेख किया गया है, अर्थात् अधमुनिपुत्रवध, काकवृत्तात, कनकमृग, दिक्-वर्णन, अभिज्ञान, लकादहन, मधुवन-ध्वस, वानर-सेना का अभियान, सेतु-निर्माण, गिलहरी, सेतुभग, शवप्रतिष्ठा, गुप्तचर, मायाशीर्ष, सुवेल, नागपाश, सधि-प्रस्ताव, अग्निपरीक्षा।

(५) अन्य द्रष्टव्य विषय—रामकथा, रामायण, आख्यान-काव्य, लोकगीत, अवतारवाद, भक्ति, दोषनिवारण, कामरूपत्व, कामगामिता, मायावी पात्र, पूर्व जन्म, आगामी जन्म, वरप्राप्ति, शापभाजन, स्वप्न, आकाशवाणी, सत्यक्रिया, भविष्यद्वाणी, यज्ञ, तपस्या, वैराग्य, आत्महत्याविचार, ब्रह्म-हत्यादोष, गर्वनिवारण, अप्सराएँ, वानर, राक्षस, यक्ष, अगराग, धनुष, पुष्पक, मर्मस्थान, समुद्रमथन, नरमासभक्षण, लका, दण्डकारण्य, द्रुमकुल्य पचाप्सर-सरोवर, कर्मनासा, तीर्थ।

(६) सकेत-चिह्न रा० = रामायण, पा० वृ० = पाश्चात्य वृतान्त, उप० = उपनिषद्।

अगकोरवाट ३२३

अगद ५२१, ५२४-५२७, ५८५, २४०, ५१८, ५१६, ५७३टि०, ५७६, ५८२, ५६२, ५६७, ६३६, ६५५(२), ६५८,

अगदपड़ि २६१

अंगदपैज २६८

अंगदरायबार २८८, २८६, ५८५

अंगराग ८-१०, ५०२, ६०० टि०

WEBER, A. Ueber das Rāmāyaṇa. Abhandlungen der koenigl. Akademie der Wissensch zu Berlin. 1870, pp 1-83. English Transl. by D. C. Boyd. Bombay 1873.

— Zwei Vedische Texte ueber Omina und Portenta. ib. 1858, p 368 ff.

— Die Rāma-Tāpanīya Upanisad. ib 1864, p. 279 ff.

— History of Indian Literature. London 1890.

— Episches in Vedischen Ritual Sitzungsberichte der Berliner Akademie 1861.

— Rāmāyaṇa und Vedica ib. 1891, p. 818 ff.

— Die Pāli-Legende von der Entstehung des Sakya- und Koliya-geschlechtes. Indische Studien. Vol 5 (Berlin 1862), p. 412 ff.

WHEELER, J. T. History of India. Vol. II. London 1869.

WHITNEY, W. D. Atharvaveda Samhitā. Harvard Oriental Series Vol. 7-8. Cambridge Mass. 1905.

WILSON, H. H. Rigveda Samhitā London 1854.

WINSTEDT, R. O. A Patani Version of the Rāmāyaṇa. Royal Batavian Society Feestbundel. Batavia 1929.

— An undescribed Malay Version of the Rāmāyaṇa. JRAS. 1944, pp. 62-73.

— The Malay Version of the Rāmāyaṇa B C Law Vol. Pt. II, 1 ff

WINTERNITZ, M. A. History of Indian Literature. 2 vol Calcutta 1927.

— Jātaka Gāthās and Jātaka Commentary. IHQ. Vol 4, p. 1 ff.

WOOLNER, A. C Introduction to Prākṛit 1939.

— The Date of the Kundamālā. ABORI. Vol 15, p 236 ff.

ZIEGENBALG, B Genealogy of South-Indian Gods. English Transl. Madras 1869.

ZIESENISS, A. Die Rāma-Sage bei den Malaien. Hamburg 1928.

५४८, ५५२, ५८०, ५८२, ५८४, ५८६, ५८७, ५८६, ५६७-५६६, ६०६, ६१०, ६२५, ६३०, ६३३, ६५८, ६६१, ७०२, ७१४, ७१७, ७३१, ७५३, ७६०, ७८१, ७६०, टि० में—३४४, ३५६, ४६२, ५१६, ६२६
—(उड़िया) २६१
—(गुजराती) ३०६
—(बंगाली) २८६, २८८
—(मलयालम) २६७, ४६४, ५८७ टि०
—(हिन्दी) ३००
अध्यात्म रा० पांचाली २८६, २८८
अनंगनरेद्र २६१
अनंगहर्ष मायुराज २३०
अनंत कदली २८४
अनंतकृष्ण अय्यर ४६६ टि०
अनंत भट्ट २५६
अनर्घराघव २३२, ११५, २२५, २३७, २३८, ३५०, ३५१, ३६१, ४४४, ४५२, ४६४, ४८५, ५१७, ५२२, ७६१
अनला ५४६, ६४५ टि०
अनसूया ६, ४०६, ४३१, ५०२, ६०० टि०
अनाम (हिन्दचीन) ३२२, ४४२, ४६०
अनामकं जातकम् ५२; ७७, ७८ टि०, ३११, ३६२ टि०, ३६०, ४४३, ४४६, ४६०, ५२२, ६०१, ७१८, ७१६, ७५२, ७६३
अनारण्य ६५२, ६५४ (४)
अनुराधपुर ६६
अप्सराएँ ३६, ६८, १६१, २०४, ३४६ टि०, ३५५, ४०६, ४५८, ४५६ टि०, ४८१, ५१३, ५१५, ५२६, ५४४, ५५२ (६), ५८७ (३), ५८६ (४), ६१३, ६३८, ६५० (२), ६५१, ६५२, ६५४ (१ और ४), ६६४, ६६८, ६७६, ६७७
अनोदी ३०८ टि०
अब्द रा० १७६, ५२३
अब्दुल कादिर ३०८
अभिजातजानकी २३६
अभिज्ञान ५२५, ५५०
अभिधर्ममहाविभाषा १६, ७७, ७६, १३३, ७८८
अभिनन्द २१७ दे० रामचरित
अभिनवराघव २३६
अभिषेक नाटक २२७, ११५, २२६, ३१४, ३६८, ५२०, ५४०, ५७२, ५८३, ५६३ टि०, ६१०
अमरदास ५६
अमरपाल सिंह २६७
अमरावती ८४, १५६, ७८०
अमरेश्वर ठाकुर ३४३
अमितगति ५६
अमितवेग ३८२ टि०
अमृतराव ओक ३०५, ६४०
अमोघराघव चंपू २५५
अयुतिया (श्याम) ३२६, ७६३
अयोध्यासिंह उपाध्याय ३०१
अयोमुखी ४५६, ८७३
अय्यि पिल्लै २६४
अरिमर्दन १६५, १२६, ६२५
अर्कप्रकाश ६४२

अजना ६६४, ६६६-६६६, ६७१-६७६; २३६, २६२, ३४७, ३५७, ५१२-५१४, ६५८-६६०, ६८७
अंजनापवनंजय २३६; ५८, ६६६ टि०
अधमुनिपुत्र-वध ८४, ३२७, ३५६, ४३१, ४३३, ४३५, २३६ (७)
अकपन ४५६, ५६३, ५८७ टि०
अकबर ३०८
अक्ष ५५१, ६५० (५)
अगरचन्द नाहटा २६६ टि०
अगस्त्य ४६०, ५२३, ५६५, ५६८, ६२७, ६४३, १ टि०, ३६, १७४, १६०, १६५, २४१, २६२, ४५७, ४६१, ५१३, ६२५, ६२८, ६६६, ६६८
अगस्त्य-रा० १६५, ६२५ टि०
अगस्त्य-संहिता १४८
अगारिया रामकथा २७७, ६३६
अग्नि ११, १७, ३५५, ५०२-५०४, ६००, ६१०, ६६४ टि०
अग्निपरीक्षा ५६५, ६००-६०३
अग्निपुराण १५७; १४७, ३३६, ३४१, ४३३, ४५४, ५१६ टि०, ५२३, ५२६, ५३१, ५६३ टि०, ६३३
अग्निवेश रा० १७६; ५१७, ५८३, ५८४
अग्रदास २६६
अच्च तेलुगु रामायण २६३
अच्युतानन्द ३६७, ४२४, ६५७ टि०
अजातशत्रु ६
अतिकाय २६६, ५८२, ५८७ (३), ५६३ टि०, ५६८, ६५० (५)
अत्रि १६७, ४३१, ४३६
अथर्ववेद २, १३, १११, ११२, १२६; टि० मे—४, ७, १७, १८
अथर्ववेद-भाष्यम् १३ टि०
अदिति ३६७
अद्भुतदर्पण २४४, २२५
अद्भुत ब्राह्मण १८
अद्भुत रा० (सस्कृत) १७६; १४६, १८७, २८६, २८७, ३५१, ३६१, ३६५, ४०६, ४२०, ४२१, ५०३ टि०, ५१२, ५७४, ६२७ टि०, ६४४, ६६१, ७६०, ७६७, ७८१
—(असमिया) २८४
—(बगाली) १५०, २८६, २८७
अद्भुताचार्य २८५, २८६, ३४३
अद्भुताश्चर्य रा० २८६
अद्रि-अद्रिका ६६८
अद्वैत (कवि) २२२, २२३
अध्यात्म रा० (सस्कृत) १७५, ६, ३१, ३५, १४८-१५०, १७७, १८८, २२४, २५७, २७६, २८६, २६१, २६५, २६८, ३००, ३०४, ३०६, ३४६, ३४८, ३५०-३५२, ३५५, ३५६, ३५८, ३६१, ३६२, ३६४, ३६५, ३६७, ३७४, ३७५, ३७७-३७६, ३८३, ३८६, ३६२, ३६५, ४०१, ४३२, ४३३, ४३६, ४४१, ४४३, ४४७, ४५२-४५४, ४५८-४६१, ४६६, ४७१, ४७३, ४७६, ४७८, ४८८, ४८६, ४६६, ५०२, ५०४, ५०५, ५१२, ५१३, ५१५, ५२०, ५२६, ५२७, ५३१, ५३४, ५३५, ५३८, ५४१, ५४३, ५४४,

अर्जुन २९२, ३७६, ६८५, ७१३
अर्जुन कार्त्तवीर्य ३४६, ३५१, ५१७, ६५५
अर्जुनदास २९१, ३५०, ६७४, ६९७
अर्जुनविजय ३१५
अर्थशास्त्र ४० टि०
अलबुस जातक ३५५ टि०
अलवदायूनी ३०८
अलवरूनी ६०७
अवती ५८०
अवतारवाद (१) उत्पत्ति और विकास १४०-१४४, ७८६; (२) कृष्णावतार १४२, १४४, १४६-१४८, ७८६, (३) रामावतार ४६, ११५ (४), ११७-१२८, १३६, १४३, १४४, १४७, १४८, ३२२, ३३३, ३५४-३७६, ७८९
अवतारचरित २९९
अवदान-शतक ५४
अवध-विलास (लालदास) २९९
—(बाघेली कुँवरि) ३०१
अवना-रस-तरंग २९१
अविध्य ४९, ५४६, ५९३ टि०, ६०१
अश्वघोष ३२, ७७, ७८
अश्वपति ५, २०
अश्विनीकुमार ३४६, ६१४, ६४८
अष्टयाम २९९
असमिया रामकथा २८२-२८४
असाइत ३०६
असुर जाति की रामकथा २७४
अहल्या ३४४-३४८, ५१३, ५१४, ६७४, ७९३
अहिमहिरावणवध ३०५
अहिरावण २९६, ३०४, ६१४
आडाल १४७ टि०
आकाशवाणी ३६, ३५६, ३७५, ३९२ टि०, ४०६, ४३४, ५१२, ५२१, ५२७, ५५२ (१०), ५८३, ५८८, ६२५
आख्यान-काव्य (रामकथा विषयक) २१, ६७-७२, ८२, ९१, १२९-१३२, १४५, ७५६, ७६५, ७६६, ७८८
आगामी जन्म : कौशल्या २२४, दशरथ २२४, ७८७, मथरा ४५४, ७५५ टि०, राम ५१-५३; रावण ६४८, ६०, ७४१, लक्ष्मण ६०, वालि ५२०, ५२१, विभीषण ५७१, शूर्पणखा ४९९; सीता ७५३ टि०, ७८७; सुलोचना ५९४, हनुमान् ६५७ टि०; अन्य १८८, ६१४, ७२० टि०, ७२७, ७५५ टि०, ७८७
आगारिया जाति की रामकथा २७७
आग्निवेश्य गृह्यसूत्र १६
आत्मबोध १०८
—(जगतराम राय) १५०
आत्महत्या-विचार : अर्जुन ६८५; कौशल्या-सुमित्रा ६०९; गुह ६०६, दशरथ ४७१, भरत २४४, ६०९; राम ३४८; लक्ष्मण ४६२, ७२३; वसिष्ठ ६२३; विभीषण ५७१; वालि ५१९; शत्रुघ्न २४४, ६०९; सीता ५४८, ५८६ टि०; सुग्रीव ५५४; सम्पाति ५२७; दे० प्रायोपवेशन
आदम ३२२, ३३६, ६४९
आदिच्चुपट्ठान जातक ८८
आदित्य मित्र २७१ टि०

इद्रजित् ५९०-५९४; ३१४, ३९७, ५५१, ५८६, ५८७, ६५० (४); ६५२
इंद्राणी ४१७
इक्ष्वाकु २, २०, ४७२
इरामचरित २६४
इल्वल ६२७
ईश्वरदास (उड़िया) २९१
—(हिन्दी) २९८
उंगनद ए० १०० टि०
उड़िया रामकथा २९१-२९३, ७९६
उत्तिगकर एन० बी० ६७ टि०
उत्तंक ६२२
उत्तरकाण्ड (असमिया) २८३, २८४
—(जावा) ३१५
उत्तराकण्डचम्पू २५५
उत्तरपुराण ६४, ५५, ६२, ६३, २५३, ३१४, ३३७, ३४१ ३६२, ३७३ टि०, ३७५टि०, ३९०, ४००, ४०४, ४०६, ४१२, ४१६, ४४२, ४६५, ४६८, ४८६, ४९४, ५००, ५०२, ५१२, ५१३, ५१५, ५१७, ५२२, ५२४, ५२५, ५३३, ५३८, ५४२, ५४३, ५४७, ५५२, ५६७, ५७१, ५७३, ५८५ ५९१ ५९७, ६०१, ६०६, ६१०, ६४६, ६४८, ६५७, ६६९, ७११ टि०, ७१४, ७१६, ७४२, ७५२, ७६३
उत्तररामचरित २२९, १०, १०६, १५०, २२५, २२८, २३१, ३१७, ३४३, ७१४, ७१७, ७६१
उत्तररामचरित चम्पू २५५
उत्तररा० २५९
उदात्तराघव २३०;२२५, २३८, ४७१, ५२२, ५५४, ६०९
उदारराघव २१९; ३३६, ३४६, ३४८, ३६१, ३८६, ४००, ४३२, ४३३, ४४३, ४४४, ४६३, ४६४, ४७०
उद्धव (कवि) ३०६
उन्मत्तराघव (भास्कर भट्ट) २४१; २२५, ४७३ टि०
—(विरूपाक्ष) २४२; ४७३ टि०, ५९५
उपदेशपद ६१, ३४२, ७१४, ७२२
उपेंद्रभज २९१; ४००, ४०३, ५२७, ६५० (३)
उमा; दे० पार्वती
उरांव रामकथा ५५२ (६)
उल्लाघराघव २३८, ६०९
ऊर्मिला १०६, ११६, २२८, ३०१, ३९० टि०, ३९१, ४००, ४०२, ४३१, ४४३
ऊर्म्मिला ३०१
ऋक्षरजा ५१३
ऋग्वेद १ टि०, २-४, ७, ८, ११, १२, १७ टि०, १९, २ , ३२, १११, १२९, १४१, ८२, ३४४ टि०, ६२१
ऋग्वेदभाष्य ६४२
ऋष्यशृंग ३४३, ३५५, ३५८, ३८३
एटहोवन, टि० में—६७२, ६७८, ७०९
एकनाथ १७५, १७७, ३०४; दे० भावार्थ रा०
एकोजी रामायण २६३
एर्रन्न ३४५

६४५
कूर्मावतार १४०
कृत्तिवास रा० २८५; ३२, २८२, २८३ २८८, २९२, २९३, ३३६, ३३८—३४०, ३४५, ३४८-३५१, ३५३, ३५८, ३६७, ३७७, ३७८, ३८३, ३८६, ३९२, ४१०, ४३२, ४३४ ४६७, ४७२-४७४, ४८६, ५००, ५२६, ५२७, ५३१, ५४४, ५४६, ५४७, ५५२, ५७०, ५७७, ५८४, ५८५, ५९७, ६१३, ६२४, ६४६, ६५०, ६८६, ६९५, ७०३, ७१४, ७२३, टि० मे— ३४४, ३५६, ५४५, ५९३, ६४४, ६६४,
कृत्यारावण २३६; २२५, ४६८, ५८३, ५९७
कृपानिवास १५०, ३०० टि०
कृष्ण २४५, २४७, ३६४, ३७६, ६८५, ६८६; दे० अवतारवाद, भक्ति
कृष्णकथा ७८६, ७८७; ४०४, ५९१ टि०
कृष्णकान्त न्यायभूषण २८७
कृष्णचंद्र तर्कालंकार २४९
कृष्णचरण पट्टनायक २९१
कृष्णचरण साहु, टि० मे—२९१, २९२, ४३५
कृष्णदास कवि ६३
कृष्णदास मुद्गल ३०५
कृष्णदेव उपाध्याय ६०३, ७२३ टि०
कृष्णनाथ भट्टाचार्य २४९
कृष्णमोहन २४८
कृष्णेंद्र २५१
कृष्णोप० १४८, ७८७
केदारनाथ मिश्र ३०१
केरल वर्मा रा० २६८
केर्न एच० १९ टि०, ७९ टि०
केवट २०२, २२२, २९५, २९८, ४३२
केशव कवि ३००
केशव त्रिपाठी २९१
केशवदास ३०२, दे० रामचद्रिका
केशव पट्टनायक (हरिचदन) २९१
केशव रा० २९१
केसरी २३, ५१०, ६५९, ६६०, ६६४-६६८, ६७१, ७७८
कैकसी ५९९ (३), ६३९; ६४४-६४६, ६४९, ६५०(२), ३५७ दे० निकषा
कैकेयी ३३८, ४४७-४५४, ७५३; २७, ३०१, ३७५ टि०, ३७८, ४००, ४०४, ४३०, ४३४, ६४१, ७२३
कैकेयी (काव्य) ३०१
कोकिलसदेश २४९
कोयाजी, जे० सी० १४० टि०
कोलमैन; टि० मे—४९३, ६७६, ६८७
कोशलकिशोर ३०१
कौशल्या ३३७, ६०९, ७५३; २७, ५१, २२९, ३७५, ३७८
कौशिक सूत्र ४ टि०, १७, १८
कौषीतकी उप० ६
कौषीतकी गृह्यसूत्र १७ टि०
क्रूक डब्लू० ३८, ५७७, ५९७ टि०, ६७३ टि०
क्रौंचा ६४५, ६५५ (५)
क्षीरस्वामी २३६
क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय १०३ टि०

काठक गृह्य सूत्र १३, १६, १७
काठक संहिता ८, १२६, १४०, टि० मे—४, ७, १४
काणे पी० वी०; टि० मे—४१, १४०, १४४
कात्यायन श्रौतसूत्र १४ टि०
कादम्बरी २५२, ४७४
कॉनर जी० पी० ३२६ टि०
कान्हुदास २६१
कामगामिता ५६, ६४६
कामरूपत्व ५६, ६४६, ६६४, ६६७
कार्तवीर्य ३४६, ३५१, ५१७, ६५५
कालनिर्णय रा० १७६, ४०१, ७६०
कालनेमि २३, ५५८, ५८७
कालनेमिर रायबार २८६
कालिका पुराण १७२; ४०७, ६७४, ७८५
कालिदास २७, १३२, २१३, २२६; दे० रघुवंश
कालीकुमार दत्त २३१
कालेड ३३०
कावेल ३२ टि०, ७८ टि०
काशीराम ३८६, ६१४
काश्मीरी रा० २८१; २७६, ३१२, ३४८, ३५८, ३६१, ३६७, ३६२, ४०६, ४१३, ४३३, ४३५, ४३६, ४४३, ४५४, ४७०, ५००, ५०५, ५३८, ५४३, ५४४, ५५०, ५७५, ५८८, ५६७, ६४३, ६४४ टि०, ६४५, ६५०, ७१४ ७२३, ७४३, ७४६, ७६३, ७८१
किर्फ़ल २७ टि०
कीकवीदेवी ३४३, ५७२, ६०५, ६६८, ७२३
कीथ ए० बी० २७; टि० मे—१७, ५८, ७८, ७६, ६२, १०६, १३५, २११, ३४४
कीबे एम० वी० ११३ टि०
कुन्ती २६२
कुन्दमाला २३१; २२५, ७१४, ७१७, ७५५, ७६१
कुंभकर्ण ५८६, ६४०-६४६
कुंभीनसी ६४५, ६५२
कुकुआ दे० शावा
कुणाल जातक ७४, ८१
कुप्पुस्वामी शास्त्री २२६ टि०
कुबेर ४५८, ६४२, ६६४, दे० वैश्रवण
कुब्जा ४५४, ४६६, ७८७
कुमार तन्त्र ६४२
कुमारदास २१६, दे० जानकीहरण
कुमारलाल ७६
कुमारसंभव ३२ टि०
कुमुदेंदु ५६
कुरुक्षेत्र ६३७
कुलकर्णी वी० एम० २५३ टि०
कुलशेखर १४७
कुवेंपु ६३०अ, ७४१
कुश ७३५-७५१, ७७२
कुशध्वज ६, ४००, ४१०
कुशीलव ४०, १३७, ७३६, ७५६ ७८८
कूचिभट्टारक ६२
कूर्मपुराण १५६; १४०, १५२, ३४१, ४०६, ४०७, ४६०, ५०४, ५८०,

गोभिल गृह्यसूत्र १७ टि०
गोरेसियो २२, २७
गोवर्द्धन ५८१
गोवर्द्धन दास २६१
गोविंददास ४७७ टि०
गोविंदराज ३१, १८२, ३४३, ४०६, ४१६, ५२२, ७३५ टि०
गोविंद रा० ३०३, ५४७, ७२३ टि०
गोविंद सिंह ३०३
गोस्वामीनन्दन ३०५
गौतम ३४४-३४८, ५१३, ५१४, ६२४, ६२५, ६७२, ६७४, ६७५, ७६३
ग्रासमैन १२ टि०
ग्रिफित्स ४८० टि०
ग्रियरसन; टि० में—६५, १७६, २८१, ४८१
घट रा० १०८
चंडी पुराण (उड़िया) २६१, ६४८
चंदा झा ३०१
चन्दायन ६३६ टि०
चंद्रकीर्ति ५६
चंद्रदूत २४६
चंद्रभान ६३ टि०
चंद्रभान बेदिल ३०८
चंद्रमा ४८०, ४८६
चंद्रसागर वर्णी ५६
चंद्रावती २८६; दे० रा० गाथा
चम्पा राज्य ३२३, ७६३
चम्पू रा० २५५, २६१, ४३४
चउपन्नमहापुरिसचरिय ५६
चक्र कवि २२१
चक्रवर्ती ए ५६ टि०
चक्रवर्ती सी० २१२ टि०
चक्रवाक ४७४, ७६५
चरित रा० ३१५
चरियपिटक ८४, ८५ टि
चांद्र रा० २०२, ४३२
चामुण्ड राय ६२, ६३
चावलि सूर्यनारायण मूर्ति टि० में २५६, ४६१, ५१४, ६५०, ७४१
चिंतामणि विनायक वैद्य २७, ११०, ११२ ४६०; टि० में – ६५, ८०, १४२
चिंताहरण चक्रवर्ती ११२ टि०
चित्रकूट माहात्म्य १८०
चित्रबंध रा० २४८
चिदंबर २४५
चिरकारी ३४५
चिलुस्की ६५ टि०, ४२७ टि०
चीगनवाल्ग ३३०; दे० पा० वृ० नं० १७
चीसनिस ३१६ टि०
चेंचिया २५६
च्यवन ३२, ३८, १३०, ६२०
छलितराम २३६, २२५, ७१७, ७४६
छान्द रामायण, २६१
छांदोग्य उप० ५, १२६
जगतराम राय १५०, २८७, ५६४
जगत् मोहन राम २६०
जगन्नाथ खुस्तर ३०७
जगमोहन रा०; दे० बलरामदास रा०
जटायु ४७०- ४७३, ५२७
जनक ६, ८६ टि०, ४०७-४०६, ४३४, ७३३; २०, १०६, २०८, २०६, २२६, ३३८, ७६२
जनी जर्नादन ३०५

क्षेमकरणदास द्विवेदी १३ टि०
क्षेमेन्द्र २१८, २३६, २५२; दे० दशावतारचरित, रा० मंजरी
खदिर गृह्यसूत्र १६ टि०
खर ४६३, ४६६, ६४४, ६४५
खरदूषण ६०, ४६५, ४९०, ६३१
खुद्दक निकाय ६६
खुमान ३००
खोतानी रा० ३१२; ५४, ३१०, ३३६, ३४०, ३४२, ३५१, ३५४, ३६२ टि०, ३८० टि०, ३९०, ४००, ४०४, ४०६, ४१४, ४६२, ४७०, ४७४, ४९८, ५१९, ५७५, ५८१, ५८६, ५९७, ५९८, ६०१, ६०७, ६४३, ७६३
ख्मेर रा० दे० रामकेर्त्ति
गंगाधर महाडकर २४५
गंगानाथ झा ७९१ टि०
गंगारामदास २८४
गणकचरित २८४, ५३३, ५३४
गणेश (कवि) ३००
गणेश पुराण ३४६
गया १७८, ४३५
गरुड १९८, ५६३, ५८६, ६४१, ६४४ टि०, ६८६
गरुड पुराण १९०, ३५४, ३६८ टि०, ४३५, ४६४
गर्ग संहिता ७८७
गर्नर ७८ टि०
गर्वनिवारण; अगद ५२१; अर्जुन ६८५; गरुड (सत्यभामा, सुदर्शन) ६८६; नल ५७६; परशुराम ३५१ टि०; हनुमान् ४६१, ५३१, ५५४, ५८०, ६०८
गवव ३०४
गायत्री रा० १८२
गिरधरदास (गुजराती) ३०६
गिरिधरदास ३०८
गिलहरी २७२, २७३, ४७४, ५७७
गीतगोविंद २५०, ७८९
गीतराघव २५०
गीतावली २९४, ३४६, ३७९, ४०३, ५६८ टि०, ५८८, ६३८, ७१४, ७३०
गीति रा० २८४; १५०, ४७४, ४९८ ५०० टि०
गुजराती रामकथा ३०६
गुणभद्र ५७, ६२; दे० उत्तरपुराण
गुणभद्र (अनुवादक) १०२
गुणाढ्य २५२, ७१९
गुप्तचर ५६२, ५८२
गुह ३८४, ४३२, ६०९
गोसाल्वेस ३३०; दे० पा० वृ० न० २८
गोकर्ण ६२४, ६४९, ६५०, ७८०
गोदा-गीतावली १४७ टि०
गोनबुद्ध रेड्डी २५८
गोपाल ३०८
गोपाल कृष्णाचारियर २५७ टि०
गोपाल लाल वर्मा २७१ टि०
गोपालोत्तरतापनीय उप० १६८
गोपियाँ ७८७
गोपीनाथ कविभूषण २९१
गोपीनाथ रा० २९३
गोपीनाथ राव १४७ टि०
गोपीवल्लभ नेमा ३०० टि०

ठिका रामायण २६१, ७२३
डारमेस्टटेर ६६ टि०
डॉल्टन ११० टि०
डुब्वा जे० ए० ३३०; दे० पा० वृ० न० १४
डुसो आर० १०० टि०
डे नोबिले ३३०
डे पोलिये ३३०; दे० पा० वृ० न० १३
डे फारिया ३३०; दे० पा० वृ० न० ५
डेह्रो पी० ११० टि०
डैप्पर ओ० ३३०; दे० पा० वृ० न० ४
तंत्र वार्तिक ५१४ टि०
तत्त्वसंग्रह रा० १७८; ३६, १८२, १८६, ३४५, ३४६, ३६१, ३६२ ३६८, ३७२, ३७५, ३६८, ४००, ४४३, ४५२, ४६०, ४७० ४७८, ४६८, ५०० टि०, ५०२, ५०५, ५११, ५२२, ५३६, ५४१, ५५२, ५७४, ५६७, ५६८, ६०७, ६१४ टि०, ६४०, ६४८, ६७०, ६७४, ६८५, ७०२, ७०३, ७२६, ७६०, ७८० टि०, ७८७
तत्त्वसारायण १४८
तपस्या; अंजना ६७२, ६७४, अहल्या ३४६, ३४८, गौतम ३४५, ५१४; जनक ३६५, दशरथ ३५४; परशुराम ३५१; राम ३८५, ४३८, ४४६ ५२३, ७५३ (५), ७५६, रावणादि ६४६; लक्ष्मण ३८५, ४६१; वानर ५२७; वालि ६५५; वाल्मीकि ३४-३८; वेदवती ४१०, ४२३; वैश्रवण ६४६, शम्बूक ६२८-६३२; शूर्पणखा ४६६; सीता ७५३ (५), ७५६; हनुमान् ५१२, ५८०, ६५५ (२), ६५७, ७०४, ७५३, अन्य ५६, ३६७, ३६८, ४२२, ४७२, ६२७, ६४१, ६४४, ६४८
तमिल रामकथा २५७; दे० कब रा०
तरणीसेन २८५, २८८
तर्जुमा-इ-रा० ३०८
ताटका ३८६
तारसार उप० १४८
तारा २०६, ५१५, ५१७ टि०, ५१८, ५२०, ६०६, ७२६
ताराचाद दास ४०६ टि०
तिक्कन्न २५६
तिपिटक ६६, ६६, ८२-८६, ६०, १०३, १३०, १३१, ७५६, ७६६
तिब्बती रा० ३११; २३६, ३१०, ३१२, ३४०, ३४२, ३५४, ३६१, ३६० ४००, ४०६, ४१४, ४४३, ४४५, ४६४ टि०, ५१६, ५२०, ५२५, ५२६, ५२७ टि०, ५७६, ५६८, ६०१, ६४३ ७१४, ७४३, ७५६, ७६३,
तिलक ३५८, ४०४ टि०
तिलोयपण्णत्ति ५५
तीर्थ १७८, ६३७, ७८०; दे० अमरावती, अवंती, कुरुक्षेत्र, गया, गोकर्ण, गोवर्द्धन, देवघर, धर्मारण्य, पुष्कर, मथुरा, रामगिरि, श्रीरंगम्
तुंबुरु ४५८
तुआलाफी ३२८
तुर्किस्तान ३१२
तुलसीदर्शन १४६ टि०
तुलसीदास (माताप्रसाद) २६५ टि०

जयंत २०७, ४३९, ६५२
जय-विजय ३६६ टि०, ३७२, ६४८
जयदेव (गीतगोविन्द) २५०
—(प्रसन्नराघव) २३७
—जी० शर्मा १३ टि०
जयद्दिशजातक ८३
जयरामसुत ३०४
जयराम स्वामी वडगाँवकर ३०५
जलधर ३७२, ६४८ (४)
जलक्रिया ६८, ८६; दे० पिंडदान
जहाँगीर ३०८, ३०९
जाबवती ६१४ (टि०), ७८७
जाबवान् ५२४, ५२७, ५४७ (७), ५५५, ५८४, ५८७ (२), ६६३, ६६४, ६७४, ७५५, ७८७
जास्टन ३२ टि०, ७८ टि०
जातक-साहित्य ५०-५३
जातकट्ठ-कथा ६६ टि०,
जातकट्ठवण्णना ५१, ६५, ६६, ६८, ७३, ७५ टि०, ७७, ८१, ८३, ८४, ८५ टि०, ६४२
जातकमाला ५४, ६२२
जानकी गीता २५०
जानकी परिणय (चक्रकवि) २२१, ३४८, ७८६
—(रामभद्र) २४४, ३५३, ४६८, ५२२, ६०६
जानकीमंगल २६४, ३६७
जानकीराघव २३६, ३६७
जानकीहरण २१६, ११५, १५० २१२, २१४, २२१, २५७, ३४६, ३५३, ३५६, ४०३, ४५२, ५७८, ५६७
टि०, ६११, ७६१, ७८६
जाबालि ६०, ४३१, ४७६
जायसी ६३६ टि०
जावा ३१३-३२२
जिनदास ५६
जिनरामायण ५६
जिनसेन ५५, ६२, ६३ टि०
जीवक ३१२, ५८६
जीवस्तुति रा० २८४
जेंद अवेस्ता ६६, १४० टि०
जैन रामकथा ५५-६४; ३५४, ४४६, ४६२ टि०, ५७३ टि०, ५६५, ६५२, ७५६, ७६६, ७८२
जैन रा० (हेमचंद्र) ५६, ६१, ४७२ टि०, ५७३, ७१४, ७२२, ७४०
जैन साहित्य और इतिहास ५८, ६२ टि०
जैमिनी गृह्यसूत्र १६ टि०
जैमिनी पुराण ३००
जैमिनी ब्राह्मण ६, ३४४
जैमिनी भारत १८५-१८७; २६६, ६१५, ६३६ टि०
—(कन्नड) २६६
जैमिनी रा० ३५ टि०
जैमिनीय अश्वमेध १८५; २२५, ३०२, ६३४, ७१४, ७२०, ७४६, ७५६, ७६१
जैमिनीय उप० ब्राह्मण ४
जोन्म १३०
टार्वानिये ३३०; दे० पा० वृ० न० ११
टीका रा० २६१, ३१७, ५०५, ५१२
टेम्पल आर० सी० ३६ टि०
टोटम ११०

३४५, ४०९, ५१२, ६८७
दिलीप ३३६, ३५४ टि०
दिवाकर २५५
दिवाकर प्रकाश भट्ट २८१
दिव्यावदान ५४
दीनकृष्णदास ३६१, ६४८ (६), ६५० (२), ६५८
दीपवंश १०२, ११३
दुंदुभि ५१५-५१७, ५२६
दुंदुभी ४५४
दुरंत रा० २०९
दुर्गाचरण वन्द्योपाध्याय २८७
दुर्गावर २८४
दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह ७२० टि०, ७२३ टि०,
दुर्वासा २४१, ४५८, ४७३, ६४८, ७५३
दूतांगद २४०, २२५
दूषण ४६३, ४६६, ६४४, ६४५
दे, एस० के०, २९
देदिए एच० ३२८, ३२७ टि०
देवकी २२४, ३६८, ३७५
देवघर ६५० टि०
देवचन्द्र ५२
देवधम्म जातक ७३ टि०
देवपाल १७ टि०
देवप्प ५९
देव रा० २०७, ४३९
देववर्णिनी ६४५, ६४९
देवविजयगणि ५९, ६१, ७२२ टि०,
देवी (चंडिका) ७८५, ५३७, ३४६, ५२३, ५९७; दे० पार्वती
देवीदास ३०८ टि०
देवीपाद भट्टाचार्य १५० टि०
देवीप्रसन्न पट्टनायक २९१ टि०
देवीपूजा ७८५
देवीभागवत पुराण १६८; ३२, १६३, ३९१, ३६४, ३६८, ३७०, ३९१, ४१०, ४.४, ४८९, ४९९, ५००, ५०३, ५०४, ५२३, ७८५
दोषनिवारण : कैकेयी ४५०-४५३; मथरा ४५४, राम ५११, ५१८, ५२२, ७३०-७३४; रावण ४८८, ५४१; सीता ४९६
दोहावली ६७०
दौलतराम ५८, ३००
द्रुमकुल्य ५७४ (२)
द्रौपदी २९२, ४२४, ५०४ टि०
द्वारकानाथ कुंडू २८७
द्वाविंशति अवदान ५४
द्विज तुलसी २८९
—भवानीदास २८६
—राम २८९
—श्री लक्ष्मण २८६
द्विपद रा०; दे० रंगनाथ रा०
—(कट्टवरदराजु) २६२
धनंजय (राघव पाडवीय) २१२, २४५
—(गणकचरित) २८४, ५३४
—भज २९१; ४००, ४०३, ५२७
धनराज शास्त्री १८४
धनुष (१) शिव—३५०, ३९१, ३९२, ५२३, ५७३; (२) विष्णु—३५०, ४६०
धम्मपद ७३, ७५

तुलसीदास २६४; २२२, २६७-२६६, ३०२, ३०८; दे० रामचरितमानस, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, हनुमानवाहुक
तुलसी साहब १०८
तेलाग के० टी० ६२ टि०
तेलुगु रामकथा २५८-२६३
तेलेगा गोपाल २६१
तैत्तिरीय आरण्यक ४, १५, १६, १४०, १४१, १४२ टि०
—उप० ३६८ टि०
—प्रतिशाख्य २६
—ब्राह्मण ४ टि०, ६-१०, २० टि०, १४०, १४१, ४०८
—संहिता ४ टि०, ७ टि०, ८, १४टि०, १४०, १४१
तोरवे रा० २६६; ३८, ३२०, ३७४, ४०६, ४१८, ४३६, ४४३, ४८४, ५७८, ५६८, ६३२, टि० मे—५०४, ५८३, ५८४, ५८६
त्रिजटा ५४५-५४७, ३१४, ६५४ (१)
त्रिपादविभूत महानारायण उ० १४८
त्रिपुरारिदास २९१ ४०३
त्रिषष्टिलक्षण महापुराण ५५, ६२
—शलाका पुरुषचरित ५६
—शलाका पुरुषपुराण ६३
—स्मृतिशास्त्र ६३ टि०
त्रिशिरा ४६६, ५६३, ५८७ टि०, ६४५, ६५० (५)
त्सा-पौ-त्सग-किग ५३
थोनबुरी ३२५
थोमस, एफ० डब्लू० ३११ टि०, ७२१ टि०
थोमस, पी०; टि० मे—३५६, ३५७, ६५०, ६७८
दण्डकारण्य ४७२, ६१०
दशकुमारचरित २५२
दशरथ ३३३, ३३६-३४३, ३५४-३५८, ४४५-४४६; ३, २०, ५१, २२१, ३२७, ३२८, ३५३, ३५४, ४३३, ४३५, ४७१, ४७२, ५७४ (३), ७४३, ७७६ टि०, ७८३, ७८७
दशरथ-कथानम् ५३; ७७, ३११, ३४०, ३४१, ३६२ टि०, ३६०, ४४३, ४४५, ४४८, ४८२, ७६३
दशरथ-जातक ५१, ६५-८१; ५०, ८२, ८३, ६०, ६२, १०१, १०४, १३०, ३४०-३४३, ३६२ टि०, ३६०, ४०५, ४०६, ४२७, ४२८, ४३६ ४४३, ४४५, ४४८, ४८२, ७६५, ७६६
दशावतार-चरित २१८; ४०६, ६२८, ६४५, ६४६, ७१४, ७१७
दांडि रा०, दे० बलरामदास रा०
दानपर्व ६१४
दामोदर मिश्र २३४
दाशरथि राय ६८६
दास ए० सी० २६
दासगुप्त, एम० एन० १७४
दिनाग २३१
दिग्वर्णन ५११
दिनेशचन्द्र सेन ६५, ७६, ७७, ८६, ६०, १०१-१०३, १०८, २७६, ६६२, ७६५; टि० मे—३, ८४, २८५,

नीलमाधव सेन ५६५ टि०
नीलाम्बर दास २९१, ७२३
नृत्यराघवमिलन ४०४ टि०
नृत्यरा० २९१
नृसिंह पुराण १६५, १७०, ३४६, ३५०, ३५२, ३५५, ३५६, ३६१, ३९५, ४०२, ४३[illegible], ४६४, ४९२ टि०, ४९४, ५०२, ५१५, ५१६ टि०, ५१७, ५१९, ५२६, ५८०, ५८५, ६०१, ६३५, ७१४, ७१५, ७३५
—(उड़िया) ३५३, ३८७, ७८७,
नृसिंहावतार १४१, १४४, २५७, ५७० टि०, ६४८
पंचतंत्र (लोम्रो) ३२७, ४३३
पचाप्सर-सरोवर ४५९ टि०
पपरा० ५९
पउमचरिउ ५९, ३९४ टि०, ४४३, ४७२ टि०, ५४५ टि०, ५४७, ५७२, ६०१, ६९९
पउमचरिय ६०; ५५, ५६, ५८, ५९, २१४, २३९, ३०४, ३३६-३४१, ३४४, ३४९, ३६३, ३७३ टि०, ३७४, ३७५, ३८३, ३९२, ३९४, ४००, ४०४, ४०६, ४०७, ४१०, ४१२ टि०, ४३२, ४४३, ४४६, ४४८, ४५२, ४५३, ४५८, ४६३, ४६५, ४६६, ४७१, ४८४, ४९०, ५००, ५१३, ५१५, ५१७, ५२२, ५३६, ५३८, ५४१, ५४४, ५४६ टि०, ५४७, ५५०, ५५२ (१३), ५६७, ५७०, ५७१ ५७३, ५८३, ५८६, ५८७ टि०, ५८९ (८), ५९३, ५९६, ५९७, ६१०, ६११, ६२२, ३२८, ६३१, ६३२, ६४३, ६४६, ६४८-६५०, ६५२-६५८, ६८७, ७११ टि०, ७१४, ७२२, ७२८, ७४०, ७८१, ७८२
पचौसा पोइ २९१
पणिक्कर आर० एन० २६४ टि०
पतजलि ८८, १३२
पदमावत ६३९ टि०
पदावली २९९
पद्मचरित्त ५८, ५९, ३३६ टि०, ३९४ टि०, ४०० टि०, ४६३, ४७२, ५४१ टि०, ५४७, ६०१, ७१४, ७१८, ७४६
पद्मदेवविजयगणि ५९, ७२२ टि०
पद्मनाभ ५९
पद्मपुराण (जैन) ५९
—(रइधू) ५९
—(हिन्दी) ३००
—(संस्कृत) १६२; ९, १०, ३२, १७९, १८५, २२५, २८५, ३०२, ३३६, ३४०, ३४१, ३४३, ३४६, ३४८, ३५२-३५४, ३५६, ३५८, ३६१, ३६२, ३६४, ३६८, ३६९, ३७२, ३७४-३७७, ३७९, ३८०, ३८९, ३९२, ३९५, ३९७, ३९८, ४००-४०२, ४०८, ४३३, ४३५, ४३९, ४४७, ४४८, ४५४, ४५९, ४६२, ४६४, ४७२, ४७८, ४८८, ५१२, ५१५, ५१९, ५२०, ५३२, ५७१, ५७३, ५७४, ५८०, ५८२, ५८९, ५९७, ५९८, ६०७, ६१०,

धर्मकीर्ति ५६, १०१
धर्मखंड १८६; ३६२, ३६७, ३६८, ४३२, ४५२, ४६८, ५०५, ५४१, ५४३, ५६८, ६७२
धर्मपरीक्षा ५६
धर्मपुराण (उडिया) ६५०(२), ६५५ टि०
धर्मारण्य ६३४, ६३७
धान्यमालिनी ५४०, ५८७, ६५०
धीरनाग २३१
धीरेन्द्र वर्मा ३४४ टि०, ३४८ टि०
धूर्ताख्यानम् ५६, ५३१
धोबी ७१६-७२१, ७२३, ७२७, ७५५
ध्यानमंजरी २६६
ध्वन्यालोक २२५ टि०
नन्द १८८, ३६७, ७८७
नन्दि ६५३, ६५४ (२)
नन्दिमुनीश्वर ६२
नरमासभक्षण ६२१-६२७
नरसिंहाचार डी० ए० ६५ टि०
नरसिंहाचार्य आर० २६६
नरहरि २६६
नरहरिकविचन्द्र २६१
नरहरिदास २६६
नरांतक ५६३, ५८२, ५८५ टि०, ६५० (५)
नर्म कथाकोष ६१४, ६१५
नर्मदा ३०६ दे० रा० नो सार
नल ५७३-५७६, ६१४
नलकूवर ६५२, ६५४
नल रामचरित (उड़िया) २६१
नलिनिका जातक २५५ टि०
नलिनीकांत भट्टशाली २८५
नलोपाख्यान ४१ ४२, २४५
नाकर ३०६
नागचन्द्र ५६
नागपाश ५८६
नागराज ६३
नागेश ३०५
नाथूराम प्रेमी ५८, ६२
नानक ३८
नाभादास २६६
नाम पर आधारित कथाएँ ७७६
नायक टी० वी० २७७
नायुडू मु० शकर राजू ४०३ टि०
नारद ३७४; ४४, १६३, २०४, २१०, ३७३, ३८३, ४३१, ६४३, ६७२
नारदीय पुराण १५८, ३६०, ५८०, ६३५, ६७०
—भक्तिशास्त्र १४६
नारायण शास्त्री १०५ टि०
नार्मन, एच० सी० ७३ टि०
नालायिर प्रबन्ध १४७
निंबार्क १४६
निकषा ५५८, ५६०, ५६८,(४ और ६) ६४४; दे० कैकसी
नित्यानन्द २४६
निद्रा देवी ४६१, ५००
निमि जातक ८६ टि०
निराला ७८५ टि०
निर्वचनोत्तर रा० २५६
निशाकर ५११ (४), ५२३
नीबुहर सी० ४१३ टि०
नील ५७३, ५७५, ५८५ टि०
नीलकंठ १८२

५९८, ६५३
(११) ट्रावल्स ३४०, ४९०
(१२) वोयाज ४४६, ४८७
(१३) मिथोलोजी ३८, ३३७, ३५१, ३५२, ३६१, ३६८, ३९२; ३९७, ४२१, ४४३, ४४७, ४६१, ४९८, ५१२, ५१७, ५२०, ५३१-५३३, ५३८, ५५२, ५७२, ५७३, ५७५, ५८६, ५९६, ६०३, ६१४, ७०५, ७५३; टि० मे—३५६, ५१९,५४८, ७२०, ७२३, ७४२
(१४) हिन्दू मैनर्स ३४०, ४४६, ५३१, ५७४, ७२० टि०, ७४९
(१५) राइजे ४९०, ५५५
(१६) इल वियाजियो, ४०६, ४१३, ६५० टि०
(१७) जेनेआलोजी ४१२, ७४३, ७५६
(१८) स्टोरिया ३४१, ७२० टि०
(१९) लेट्रस ४०६, ४२३ टि०, ६३२
(२०) हिस्तोरिया ४६४, ५१२
पिंगलि सूरनार्य २६१
पिंडदान ४३५ दे० जलक्रिया
पिक्फर्ड १०६ टि०
पिटर्सन २५६
पिल्लै २५७ टि०
पीतांबर राजेन्द्र २९१
पुंजिकस्थला ६५४ (५), ६६४
पुण्यचन्द्रोदयपुराण ६३
पुण्याश्रव कथाकोष ५९
पुण्याश्रवकथासार ६३
पुनम् नपूतिरि २६६
पुलस्त्य ६४५, ६४६, ६५५
पुष्कर ६३९
पुष्पक ५६६; ५३०, ५८६, ६४९, ७९२
पुष्पदत ६३
पुष्पोत्कटा ६४५
पुसलकेर २२६ टि०
पूतना ४५४
पूर्णचन्द्र दे २८५ टि०, ४०९ टि०
पूर्णचन्द्रशील ४०९ टि०
पूर्ण रा० २९१
पूर्णलिंग पिल्लै २५७ टि०
पूर्वजन्म, अगद ६५८; अजना ६६९; अधमुनि ४३३; कल्माषपाद ६२२; काक भुशुण्डी ३८१, केवट २०२; कैकेयी ३६९; कौशल्या ३३७; गुह ३८४, जटायु ४७२; दशरथ ३३६, धोबी ७२७, नद १८८, ३६७,७८७, मथरा १८८, ४५४, राम ३६३; रावण-कुभकरण-विभीषण ६४८; लक्ष्मण ३६३, वालि ५१५; वाल्मीकि ३७, शवरी ४८१; शुक ६२५, श्रवण ४३३; सीता ३७३, ४१०, ४१२; हनुमान् ६५८
पृथ्वी देवी ३५८, ४८९, ५०५, ६०१, ६५० (३), ७४१, ७५३, ७५५
पृथ्वीराजरासो २९८
पोम्मचका ३२८ दे० ब्रह्मचक्र
पौराणिक साहित्य १५१-१७३
प्रकाशधर्म ३२३
प्रजापति १४०, ६४४
प्रतापभानु ६२५, ६४८
प्रतिमानाटक २२६, २२५, २२७, ३३६, ३४१, ४३५, ४४३, ५६७ टि०,

६२८, ६३४, ६३५, ६४८, ६४९, ६५९, ६९७, ७०५, ७१४, ७२०, ७२७, ७४९, ७५६, ७६०, ७८०, ७८४, ७८७, ७९१; टि०में—१९, १९४, २४५, ५१६, ६२५, ६२७
परघान रामकथा २७५
परमत्थजोतिका ७३ टि०
परमेश्वर कवि ६२
परशुराम ३४९-३५२; ४, १०, ११८, १४१, १४४
पवनजय ६६९; दे० हनुमान
पाञ्चजन्य ३६१
पाञ्चरात्र १४६, १४७, १५८, ३६०
पाणिनि २७, ४१
पातानी रामकथा ३२१; ३१९, ३४१, ३९७, ३९९, ४०६, ४१५, ४१९, ४९८, ५०२, ५१२, ५३१, ५३९, ५७१, ५७६, ५७८, ५९६, ५९८, ६१५, ६५०, ६५५,
पातालखड रा० २८४
पायस ३५९, ३७८, ६७६, ६७७, ६७८
पारस्कर गृह्यसूत्र १७
पार्गीटर १०३ टि०
पार्वती १९१, ३६५, ४७५, ५०३ टि०, ५८४, ५९७, ६५०, ६५३, ६५४ (६), ६६६ टि०, ६७३ टि०, ६७४, दे० देवी
पालक पालाम ३२७; ३३६ टि०, ३४२, ३४३, ३६५, ४०६, ४१७, ५१४, ५७२
पाश्चात्य वृत्तान्त ३३०
(१) लिव्रो डा सँटा ३४४, ३५७, ३५८, ३६१, ४०६, ४२४, ४४३, ४४६, ४६१, ४६४, ४७०, ४९४, ५००, ५०२, ५०३, ५१२, ५१३, ५१७, ५१९, ५२०, ५३२, ५३३, ५३९, ५५२, ५७१-५७४, ५७७ टि०, ५८३, ५९८, टि०, ५९९, ६१४, ६४३, ६५०, ६७४
(२) दि ओपन डोरे ४४३, ६०६, ६०७, ७८० टि०
(३) आफगोदरँय ३९७, ३९९, ४४३, ४४७ टि०, ४६४, ४७०, ४९७, ४९८, ५२२, ५३२, ५३३, ५५२ (११), ५७१, ५७२, ५७५, ५८५, ५९७, ५९८, ६०३, ६०६, ६०७, ६४९, ६७४, ७२४ टि०
(४) असिया ३९७, ४९७, ४९८, ५९८, ६०६, ६०७, ६४९, ६७४
(५) असिया पोर्तुगेसा ४६१, ७२४ टि०
(६) रलासियो ४४३, ४९०, ५५५, ५९८, ६५३, ७२० टि०, ७५१
(७) ला जानटिलिटे ३९७, ४४३, ४८५, ६१४, ६१५, ६९९, ७२० टि०, ७४४, ७४९
(८) पुर्त्तगाली वृ० (क) ३९७, ४८५, ५३१, ५५२, ५९४, ५९८, ६१५, ७२० टि०, ७४३, ७४९
(९) पुर्त्तगाली वृ० (ख) ४२२ टि०, ४४३, ४९०, ६०७
(१०) पुर्त्तगाली वृ० (ग) ३४६, ५५५,

वार्थ ए० १३५ टि०
बालकाण्ड (असमीया) २८३; २८४, ३३८-३४०, ३४३, ३४५, ३५०, ३५४, ३७८, ३८८, ३८९, ४०२, ४०३, ४३३, ४४७, ४७२
बालकृष्ण शर्मा ३०१
बालरामायण २३३; ११५, २२५, ३१७, ३५०, ३५१, ३७४, ३९२, ३९७, ४४३, ४५२, ४६४, ४७१, ४८५, ५०३, ५४७, ५७८, ५७९, ५८२, ५८४, ६०६, ६६१, ७८६
बालशौरि रेड्डी ५९४ टि०
बिर्होर रामकथा २७२; ३४०, ३५४, ३९२, ४२१ टि०, ४६१, ४७४, ५१२, ५३१, ५३३, ५४२, ५८९ (७), ५९५, ५९८, ६१५
बुद्ध ४३१; ५०, ५१, ५४, ७५, ७४, ७८, ८१, ९०, १०१, १०२, १४४, ३१२, ३२७, ६४७, ७८१
बुद्धघोष ७३, ७५ टि०, ९२
बुद्धचरित ७८, ३२, १३२
बुद्धस्वामी २५२
बुल्के सी ७२ टि०, ६२१ टि०
बृहत्कथा २५२; ५६, २५३, २५६, ७१९, ७५२
—मंजरी २५२, ७५४
—श्लोकसंग्रह २५२,
बृहत्कोशलखंड १९१; १५०, ३५३, ३७४, ३८३, ३८७, ३९२, ४०३, ४०४
बृहत्संहिता ११३, १४७, ७०८ टि०
बृहदारण्यक उप० ६
बृहद्देवता ६२१, ६२३
बृहद्धर्मपुराण १७०; ३९, २११, ३५८, ४९४, ५००, ५३२, ५३७, ५८०, ६७०, ७८५, ७९१
बृहद्राघवसंहिता १४८
वेणीप्रसाद ११ टि०
बेल्वलकर ९३ टि०, १०५ टि०, १०६
बंगा रामकथा २७६ टि०
बोडो रामकथा ७२० टि०
बोधायन गृह्यसूत्र १६
बोले ले गोज ३३०; दे० पा० बृ० नं० १५
बौद्ध रामकथा ५०-५४, ६५-९०; ३५४, ७६६
ब्रजवधू सामंत राय ७९१
ब्रह्मचक्र ३२८; ५४, ३४२, ३९२, ३९७, ४०६, ४२५, ४६५, ४६८, ४९३, ५९८, ६०२, ६०६, ६३२, ६४७, ६६६, ७१४, ७२४, ७४४, ७५६
ब्रह्मदत्त ७३ टि०, ६२२, ६२५
ब्रह्मनेमिदत्त ५६
ब्रह्मपुराण १५६; १०३ टि०, ३३६, ३४३-३४६, ३४८, ३५६, ३६४, ४३३, ४३५, ४४७, ४४९, ६१०, ६५३ (५), ६६४ टि०, ६६८, ७३५, ७५३, ७८०
ब्रह्मरा० १८०, १९१
ब्रह्मवैवर्त्त पुराण १६३; ३४५, ३४६, ३४८, ३६७, ४१०, ४६६, ४६९, ४८९, ५०४, ६४८, ६७०
ब्रह्महत्यादोष; इन्द्र ६३३; राम ५८०, ६३४, रावण ५९९; विभीषण

६१०
प्रभजनी २३३, २३४, ५७६
प्रभाकर २५०
प्रभावती (महारानी) १४७
प्रवरसेन २१४
प्रश्नोपनिषद् ३६८ टि०
प्रसन्नराघव २३७; २११, २२५, ३०२, ३५०, ३५१, ३६७, ४०३, ४६४, ४७३ टि०, ५०२, ५४१, ५४७(३), ५४८
प्रहस्त ५६८ (५), ५७१, ६४५, ६४६, ६५० (५) टि०
प्रहेति ६४४
प्रह्लाद ६४८
प्रह्लादशेखर दीवानी ३०६ टि०
प्राकृतकामधेनु ६४२
प्राकृतलंकेश्वर ६४२
प्रायोपवेशन; भरत ४३४; राम ५७४; वानर ५२७
प्रिंज डब्लू; टि० मे—५०८, ५६५,६३०
प्रियादास ४७६
प्रेमानन्द ३०६, ४८८
फकिर राम २८६
फॉमवाल ५१ टि०, ६७ टि०
फुक्स २७६ टि०
फुत्तायोत्फा ३२५
फुत्तालेउत्ला ३२५
फुशे ३२३ टि०
फेनिच्चियो ३३०; दे० पा० वृ० न० १
बंगाली रामकथा २८५-२९०, ५१२, ७२३
बघूवर्मा ६३
बड़ु नित्यानन्द २८६
बदरीनारायण श्रीवास्तव १५० टि०
—वर्मा ३२६, ४६८, ४९८
बर्लिनगेम ७३ टि०
बलडेयूस ३३०; दे० पा० वृ० न० ३
बलदेव ५५, १४५
बलदेवप्रसाद मिश्र १४६ टि०, ३०१
बलभद्र २६३, ३६२
बलभद्र पुराण ५६
बलराम ४, १०, ६४, १०६, १०७
बलरामदास २६१; १०८, ४००, ६८१
बलरामदास रा० २६३; ३८, २८२, २६१, ३४३, ३४६, ३५८, ३६१, ३७५, ३८४, ३८६, ३६८, ४०३, ४०६-४११, ४३२(३), ४३५,४३६, ४५२, ४५६, ४६१, ४७२, ४७४, ४७८, ४८८, ५१२, ५१३, ५२०, ५२४-५२७, ५३१, ५३३, ५३४, ५४३, ५४७, ५५२ (१२), ५७१, ५७२, ५७६, ५७७, ५८३-५८५, ५८७, ५८८, ५६१, ५६८, ६०८, ६१०, ६४२, ६४८, ६५०, ७२६, ७६२, ७८१, ७८७, ७६६; टि० मे—३४५, ४६४, ४७२, ४६२, ५६७, ५६८, ५६३, ६६८, ७३६
बलि ६५५
बहराम यश्त १४० टि०
बाँकेबिहारी लाल ३०७
बाघेली कुँवरि ३०१
बाण ४७४
बाणासुर ३६७
बारमासी कोइली २६१

भागवत धर्म १४२, १४६
भागवतपुराण १५५; ३२, १५२, १८५, २४५, २९५, ३४३, ३४४, ३५२, ३५४, ३५८ टि०, ३६४, ३६७, ३६८, ३७५, ३७६, ३७९, ३९५, ४०४, ४६४, ५७३, ५७४, ६०१, ६१०, ६२३, ६२४, ६४४, ६४८, ७०५, ७१४, ७१९, ७२१, ७५३
भानुप्रताप १९५, १९६, ६२५, ६४८(४)
भानुभट्ट २७९
भामण्डल ६०, ३९४, ४०७, ४१२ टि०, ५६७, ५९६
भारद्वाज गृह्यसूत्र १६ टि०
भालण ३०६
भावार्थ रा० ३०४, १७५, २६९, ३०५, ३४९, ३५७, ४०६, ४३३, ४६७, ४७०, ४८४, ४८८, ५१२, ५४३, ५४७, ५७५, ५८७, ५८९, ५९४, ५९७, ६०९, ६२४, ६५५, ६६८, ७०६, ७०७ ७६२; टि० में—३५१, ३५६, ५१५, ५१७, ५२२, ५६८, ५८६
भावी रा० ३८
भाषा योगवासिष्ठ ३००
भाषा वाल्मीकि रामायण २९८
भाषासाहित्यचरित्रम् २६४ टि०
भास २२६, दे० अभिषेक नाटक, प्रतिमा नाटक
भास्कर भट्ट २४१
भास्करनाथ मिश्र १४७ टि०
भास्कर रा० २६०, ४५४
भिलोदी रा० २७७
भीम कवि २१७
भीम (गुजराती) ३०६
भीमट २३६
भीमसेन ६८१, ६८४, ६८९, ६९३, ७१३
भुइआ माधवदास २९१; दे० विचित्र रा०
भुवनतुग सूरि ५९
भुवनेश्वर कविचद्र २९१
भुशुण्डी ३८१, १८०, १९८, ३७५, ३७६
भुशुण्डी रा० १८०; १५०, १८१, ३८०, ४०३, ४०४
भृगु ३७०, ४८९, ६१७, ६४८, ७२५
भोज (देव) २३१, २५५, २९१
भ्रमरदूत २४९
मजुल रा० १९६, ४७८ ६२५ टि०
मजुलाल र० मजूमदार १४७ टि०
मंत्र रा० १८२,
मत्रीकर्मण ३०६
मथरा ४५४, २०८, ४३४, ४४६, ७५५
मदाकिनी ४३४
मदोदरी ५४१-५४४, ५९६, ६०२, ६५०, ६५५
मखादेव जातक ८९ टि०
मतग ४७९, ५१६, ५२२ टि०
मत्स्य पुराण ३२, १४०, १४३, १५२, ३४३, ३४४, ३६८, ३७०, ७६७
मत्स्यावतार १४०
मथुरा ६२०, ७८०
मधु ६१३ टि०, ६२०, ६४५ टि०, ६४८, ६५२

६३५; सौदास ६२४; हनुमान् ६३४ टि०
ब्रह्मांड पुराण १५२; ६, १४३, ३६४, ३६७, ३७०, ४०७, ६२३ टि०
ब्रह्मांड भूगोल १०८, २९१
ब्रह्मा ३८, ३९, ३३७, ३४४, ३५५, ३५८, ४५४ ५००, ५५४, ५८०, ५८३, ५९१, ५९६, ५९७, ६३९, ६४७, ६५४, ६६६, ७५३, ७५५, ७८५; वरदाता—१७२, ५१२, ५२६, ५५२ (२), ५७५, ५८४, ५९०, ५९८, ६३२, ६४१, ६४४, ६४८, ६४९, ६५२, ६६४, ६९४, ७०४, गौण उल्लेख—२०४, ३९१, ३९२, ४००, ५६५, ६०१, ६४८, ६५८, ७१३, ७९४
ब्लुमफील्ड १८ टि०
भंडारकर ५९, १४७
भक्तमाल ३९, १४९, ४७९, ७०६ टि०
भक्तराज हनुमान ३८२ टि०
भक्तशबरी ४८१ टि०
भक्ति कृष्ण—१४६, १५०, ७८६; राम—१४६-१५०, ७०१-७०७, ७९०, २८५, १७८; शिव-७८३, ७८४; देवी—७८५, हनुमद् ७०८-७१०; द्वेष—४८८
भक्तिसूत्र १४६
भगवत राय खीची ३००
भगवती प्रसाद सिंह १५०, १८०, २९७, टि० में—३८०, ४०३, ४०४
भगवद्गीता ७०, १४८, २९५, ३६६, ७८८
भट्ट जी० एच० ५६५ टि०
भट्टिकाव्य २१५; ११५, २१२, २१४, २३६, ३१४, ३१५, ३५६, ३५८, ३८९, ३९२, ४००, ४४४, ४६४, ४६६, ४७०, ४७३ टि०, ४७७, ४८९, ५१७, ५२६, ५७४ (५), ६१५, ७६१, ७६३
भद्र ७१७, ७२३
भद्रकल्पावदान ६२२
भद्रेश्वर ५९; दे० कहावली
भरत ३५९-३६१, ३९०-३९१, ४००, ४३४-४३६, ४५२, ५६७, ५८८, ६०४, ६०५, ६०९, ६१०, ६३५, ६३६, ७५३, ५१, १६४, २०९, २९२, ३०१, ३४१, ३४२, ३५१, ३७७, ३८८, ४०४, ४४६, ६९९
भरतज्येष्ठत्वनिर्णय ३४१
भरतमिलाप २९८
भरद्वाज १ टि०, ३८३, ४५१, ५६६, ६०४, ६०८
भवदेव विप्र २८४
भवभूति ११३, २२८ २२९, २३३; दे० उत्तर-रामचरित, महावीर-चरित
भविष्यद्वाणी ३३, ३९, ३३७, ३५७, ४१३, ४१८, ५१७ ५३५, ५५२ (४), ५६९ (३), ५८२, ५९८ ६१४, ६२५, ६४०, ६४१, ६४४, ६९३
भविष्यपुराण १५७; ३३६, ६५५ (५), ६६८, ६७१, ६९५, ७०४
भस्मलोचन ६१३
भागवत द्विवेदी ४८१ टि०

महाराष्ट्रीय; टि० मे— ११७, १६२, १७७, ५६५
महारासोत्सव १६०
महावस ६२, १०२, ३२०
महावस्तु ८४
महावीरचरित २२८; १०, २२५, २३२ २३४, ३४४, ३५०, ३५१, ३६१, ४०३, ४३४ ४४४, ४५२, ४६४, ४७३ टि०, ४७७, ४८५, ५१७, ५२२, ५२७ टि०, ५५२, ५७१, ५८८, ७६१, ७९१
महासुतसोम जातक ८७, ८६, ६२१, ६२३, ६२६
महिम्नः स्तोत्र ६४६ टि०, ७८५ टि०
महीरावण ६१४, ६५०
महीरावण-वध २८४
महेश्वरदास २६१, ३१७
महोदर ५६३, ५६८ (५), ५८४ टि०, ५६५, ६४५
माडण वधाणी ३०६
माडवी ३०१, ३६१, ४००
माइकल मधुसूदन २९०, ५६४
मागुणी ५६४
मागुणी पट्टनायक २६१
मानलि ५६५
माताप्रसाद गुप्त २६५ टि०, २६७ टि०
माधवकंदली रा० २८३; २८२, २८४, ५३४, ५६३ टि०, ६६८, ७६२
माधवदेव २८३, २८४; दे० बालकाण्ड (असमिया)
माधव भट्ट २४५
माधव स्वामी ३०५
मानव गृह्यसूत्र १७
मानसाहि कायस्थ २२३
मानुच्ची एन० ३३०; दे० पा० वृ० न० १८
मायापुष्पक २३६
मायावी (असुर) ५१५, ५२६
मायावी पात्र
—मायाजनित; मंदोदरी ४२८; राम ५४२, ५८३, ५६८, रावण ५८५; लक्ष्मण ५४२, ५६८; सीता ५०१-५०८, ५७६, ५६१, ६०२, ७३३, ७६८
—अन्य पात्रों के वेश में, रावण (राम के वेश में) ४६४, ५८३; शूर्पणखा (सीता) २४४, ४६४, ४६६; सती (सीता) ४७५; रावण (इंद्र) ४१७; रावण (वालि) ६५० (२); इंद्र (गौतम) ३४५; जालिनी (सीता) ७६२; सुकांति (सीता) ५६१, हनुमान् (रावण) ५६६; सीता (राम) १६१; साहसगति (सुग्रीव) ५१५; राक्षस (रामपक्ष) २४४, ४५२, ४६४, ४६६, ५५४, ५७६, ५८३, ५६१, ६०६, ६१४, ७१७, ७२४, ७६२; नारायण-लक्ष्मी-शेष (राम-सीता-लक्ष्मण) १५०, अंगद ६१३
—छद्मवेश में; राम ५५४, ७१६, ७२२; रावण ४६२, ५८२, ५६७; हनुमान् ५३२-५३४, ५१२; विभीषण ५७१, ५६१, ५६२, ६१४; शूर्पणखा ७२४; कालनेमि

मधूराचार्य १५०
मधुवन (१) ५३०, ५५३; (२) ६२०
मधुसूदन २३४
मध्वाचार्य १४६, ६६१ टि०
मनमोहन घोष ३१४ टि०
मनसा देवी ६८७
मनियार सिंह ३००
मनु ३६८
मनुस्मृति ८७, ४७३ टि०, ५११, ६२६ टि०
मम्मट ७९१
मय ४१२, ५२६, ५८३, ५९६, ६५०
मराठी रामकथा ३०४-३०५
मर्मस्थान; इन्द्रजित् ५६३; जटायु ४७०; रावण ४७०, ५६८
मलय की रामकथा ३१३-३२०
मलयालम रामकथा २६४-२६८
मल्लयाचार्य (मल्लाचार्य) २१६
मल्लिनाथ २२० टि०
मल्लिषेण ६३ टि०
महाकाय ५८२, ५९८
महाकुणाल जातक ७४
महाजनक जातक ८६ टि०
महादेव (कवि) २४४
महानाटक (हनुमन्नाटक) २३४; १५०, २२२, २२४, २२५, २२७, ३०२, ३१२, ३१४, ३१७, ३४६, ३४८, ३५०, ३५१, ३५३, ३६६, ४००, ४०३, ४३२, ४४३, ४४४, ४८५, ४९२, ४९८, ५१५, ५१७, ५२०, ५२२, ५३३, ५६६ टि०, ५७२, ५७४ (६), ५७६, ५८३, ५८५-५८६, ५९३, ५९६-५९८, ६०६, ६७०, ६९०, ७९१
महापार्श्व ६४५; ५६३, ५६८ (३), ५८५ टि०, ५९५, ६५४ (५)
महापुराण (पुष्पदत) ६३
महापुराण (मल्लिषेण) ६३ टि०
महाभागवत पुराण १६६; १७०, ३६५, ३७३, ४०६, ४१२, ५०३ टि०, ५०४, ५१६ टि०, ५३७, ५७०, ६७०, ७६०, ७८५
महाभारत ४१-४६; ४, ६, १०, १६, २१, २७, २६, ३२, ३३, ४०, ५६, १३१, १४०, १४१, १४३-१४५, १४७, १६०, १७०, २४५, ३०६, ३२३, ३३३, ३४३-३४६ ३४८, ३४६, ३५०, ३५१, ३५२. ३५५ टि०, ३५६ ३६७, ३६८ टि०, ३७३, ४०६, ४०७, ४२४, ४८२, ५११, ५२०, ५४७, ५९६, ६१०, ६२१-६२३, ६२६. ६२६, ६४२, ६४८, ६५५, ६५६, ६६०, ६६२, ६८१, ६८४, ६८५, ६८६, ६९२, ६९३, ७१३-७१५, ७२५, ७३५, ७५६, ७६६; दे० रामोपाख्यान
—(उड़िया) २६२; ३६, २६१, २६३, ३४०, ३५४, ३५८, ३६१, ४३२, ४३५, ४६३, ४६६, ४७४, ४८४, ४९८, ५८५, ५९३. ५९७, ६०६, ६३२, ६४४, ६७४, ७१३ टि०, ७८७ टि०
महाभाष्य ८८, १३२
महारा० १८१; १५०, १९२

यजुर्वेद १३, १४
यज्ञ; राम ४९२, ५२३, ६१०, ६३३, ७४६, ७४८, ७४९, ७५३; दशरथ ३३३, ३५४-३५८; जनक ३९१, ४०८-४०९, ४१६, ४२१ टि०, ४२४; विश्वामित्र ३८८; भरत ५८८; विश्रवा ६४४; रावण ५९७, ६४९; कुम्भकर्ण ५८९ (९); मंदोदरी ५९७; इन्द्रजित् ५९०, ५९२; गौतम ५१४; सौदास ६२४
यज्ञफल २२६, ३५१, ४४१
यम ६५२, ६९४
यशोदा १८८, ३७६
यशोवर्मा २३६, २२५ टि०
यस दि पुरा ३१५
याकोबी, एच० ९३-९७; २७, २९, ४८, ५८, ६५, ७१, ९९, १०१, १०५, ११६, १२३, १३५, १३६, ४३१, ४५७, ५११, ५३०, ५६२, ७६५; टि० मे—१०, २२, ५६, ७०, ८०, ९०, ९२, १०७, ११३, ११५, ११७, १३७, १४०, ३३३, ५६४, ६१८
याज्ञवल्क्य ६
यादवराघवीय २४७
याम प्वे ३२९
यास्क १२, १३ टि०
युद्धकाण्ड (मराठी) ३०५
युधिष्ठिर ४४, ४५, १८५, ७८१
यू तो (कवि) ३२९
येदातोरे सुब्ब राव १०८
योगवासिष्ठ १७४; २००, ३०२, ३०४, ३०६, ३४६, ३७०-३७२, ३८१, ३८५, ३८६
योगशास्त्र ५९, ५४७, ७१८
योगीश्वर ३१४
रंगनाथ रा० २५८; ११५, २५७, २५९, २६०, २६९, ३२०, ३४५, ३४६, ३५०, ३९५, ४१२, ४३३, ४४७, ४५८, ४८४, ५०३, ५१४, ५१७, ५२६, ५४३, ५५०, ५७१, ५७८, ५८३, ५८६-५८९, ५९१, ५९७, ६०९, ६५० (२), ७४१, ७६२, टि० मे—४५९, ५५२, ५६८, ५७४, ६४४, ६६४
रंभा ४५८, ५८९ (४), ६५२, ६५४(१)
रइधू ५९
रघुनन्दन गोस्वामी २९०
रघुनाथ उपाध्याय २२०, २७९
रघुनाथचरित २२०
रघुनाथदास (उड़िया) २९१
रघुनाथदास (हिन्दी) ३०१
रघुनाथ महन्त २८४, ७५७
रघुनाथ रामायण २६२
रघुनाथविलास २९१, ४०३, ५०५, ५२७
रघुराजसिंह ३९, ३०१, ४७९, ४८१, ७०६ टि०
रघुवंश २१३; ८४, १६२, २५५, २६९, २८३, ३३६, ३४१, ३४६, ३५३; ३५६, ३६४, ३७५, ३९१, ४३३, ४३९, ४६६, ५३१, ५४७, ५८३, ६२९, ६३३, ६४९, ७१४, ७१७, ७३८, ७५३, ७६१; टि० मे—२८५, ३५४, ३५९, ६००, ७३९

५८७ (३); राक्षस ६०६, ६२४, ६२५; गुप्तचर ५८२; इंद्र ८५, ५७४ (७), ६३२, ७२४, ७६३; नारद ५६७, ६३२; कृष्ण ६८५; शिव ६३५; रंभा ७५०
मायाशीर्ष ५६२, ५८३
मायुराज २३०
मारटिनी एफ० ३२४ टि०
मारीच ३८३, ३८८, ३८६, ४१२, ४६२, ४६४, ४६५, ४६६
मारीचवंचित २३६
मारुत; दे० वायु
मार्कण्डेय ४१, ४७, १८८, ७८१
मार्कण्डेय पुराण १५२
माली ६४४, ६४६
माल्यवान् ६१४, ६४४, ६४५ टि०, ६४६
मितघ्नि ३
मित्र एम० सी० २७३ टि०
मिरगावती ६३६, टि०
मिलिंद पान्ह ८५ टि०
मिश्र १०६
मुंडा रामकथा २७३, ४७४
मुक्तिकोप० १४८, ६६१
मुक्तेश्वर ३०५
मुचुकुद ६१३
मुद्गल भट्ट २५१
मुनिचंद्र सूरि ३४२, ७२२
मुरारि ११३, २३२, २३३, दे० अनर्घ—राघव
मुरारि (अद्वैत) २२३
मुल्ला मसीह ३०८, ३०६
मूर, ई० १०८, ६८६; टि० मे—३५६, ३५७, ५७६, ६७८
मूलकासुर ५८६ (३), ६४१
मूल रामायण १८०
मेक्तिकी ११२
मेघदूत २४६, ७८६
मेघनाद; दे० इंद्रजित्
मेघनादवध २६०, ५६४, ७८५ टि०
मेघविजयगणि ५६
मेनका २४४, ४०६, ५८६ (४)
मेंढ़ रा० २०३, ४०३
मेकडॉनल ए० ए० २७; टि० मे ६२, १०७, ३४४; पृ० ८१६
मेकॉलिफ एम० ए० ३४७, ६६७ टि०
मेकेंजी १८०
मैक्सवेल ३१६
मैत्रायणि संहिता ७ टि०, ८, १४ टि०
मैथिली-कल्याण २३६; ५८, २२५, ३६५, ४०३
मैथिली लोकगीत ३६२ टि०
मैथिलीशरण गुप्त ३०१; दे० साकेत
मैरावण; दे० महीरावण
मैरावणकालग २६६, ६१४
मैरावणचरित १८६, ३२०, ६१४, ६६६
मोनियेर विलियम्स २७; टि० मे—१०, ६५, ६२, १०५, १४०, १४२, २५०
मोरे, ए० १०६ टि०
मोरोपंत ३०५
मोल्ल रा० २६१, २५८
मोहनस्वामी २२४
म्यूर, जे० ११७ टि०
यक्ष ६४४, ७१०

१४३-१५०, ७०१, ७०७, ७९०, -२८५, १७८
(३) चरित वंशावली ३३६; बाल-चरित ३७५-३८९, विवाह ३९१-४०२; अवस्था ४०१; निर्वासन ४३२, ४४२-४५४; चित्रकूट ४३७-४४१; दण्डकारण्य, ४५८-४६०; खरदूषण-वध ४६६; मारीच-वध ४९२; सीता की खोज ४७१-४८०; सुग्रीव से भेंट ५१२; बलपरीक्षा ५१६-५१७; बालिवध ५१८-५२२; वर्षाकालीन साधना ५२३;लंका युद्ध ५८४-५८६; कुंभकर्ण-वध ५८९; शक्तिपूजा ७८५; रावण-वध ५९५; वापसी यात्रा ६०४-६०९; अभिषेक ६१०; रामराज्य ६१०; ७१; सीता त्याग ७१४-७३४, अश्वमेध ६३३-६३४, ७४६-७५०; संतति ७३७-७४२, ६७५; पुत्रों से युद्ध ७४६, विजय-यात्राएँ ६३५-६३६, पराजय ६३९-६४०; तीर्थयात्राएँ ३८५, ६३७, १७८, स्वर्गारोहण ७५३; निर्वाण ७५२, ७५३ (५)
(४) चरित्रचित्रण : पूर्वानुराग ४०३, एकपत्नीव्रत ४०४; विरह ५६५, ५६७; विलाप ५६७, ५८६, ५९१, ५९६; आत्म-हत्या-विचार ३४८; विहार ३५३ (६), ६३८, २१९, ३००, ३८७, ४४०, ५०७; रास-लीला १५०, ७८७, २९९, ३८७, ४४०; वैराग्य और तपस्या ३८५, ३८६, ४३८, ४४६, ५२३, ६१०, ७५२, ७५३ (५), ७५६; शिवभक्ति ५८०, ७८३, ७८४, ६३३, ६३४, १७१,
(५) गौण सामग्री : नाम १०, ३७७; पूर्वजन्म ३६३; आयुध ३८९, ४६०; ब्रह्महत्यादोष ५८०, ६३४; हनुमत्पिता ६७५; अंगद-पिता ३२७; शिव से युद्ध ७०५; शापभाजन ४४६, ४६९, ५२०, ७२६
राम (ऋग्वेदीय राजा) ४, १०
राम (कोलिय राजा) ७४
राम (कवि) २४६
राम (मलयालम कवि) २६४
राक इकबाल सिंह ३९२ टि०
राम औपतस्विनी ४, २०
राम क्रातुजातेय ४, २०
राम मार्गवेय ४, २०
राम हुवास्त्र ९९
राम की शक्ति पूजा ७८५ टि०
रामकथप्पाट्टु २६४
रामकथा
(१) मूलस्रोत ९१-१०४; २१, ६५-८१, १३०, १३१, ७६५-७६७
(२) मौलिक एकता ७६८-७७२
(३) ऐतिहासिकता १०५-१०९;भूगोल ११३
(४) आदर्शवाद ७९१, १४३, २२५, ४०४, ४६१; दे० दोष निवारण
(५) विकास १२९-१३१; ७८८-७९०, ७५९, ७७३-७८०
(६) निर्वहण ७५२-७५७, ७७२
(७) व्यापकता १४५, ७५६, ७६४

रघुवंश, डॉ० २१४ टि०
रघुविलास २३६
रघुवीरचरित २२०
रणयज्ञ ३०६, ३६७, ४८८
रत्नाकर (वाल्मीकि) ३८
रत्नचंद्र अग्रवाल १४७ टि०
रत्नावदान माला ५४
रमेशचंद्र दत्त ९३ टि०, १०६ टि०
रम्मन रम्मानु १००
रविषेण ५८, ५९, ३४०; दे० पद्मचरित
रस विनोद ३९१, ६४८ (६), ६५८
रसामृत रामायण (उड़िया) ५९४
रसिक बिहारी ३०१, ५९४
रसिक सम्प्रदाय १५०, ४०४, ५०७, ७३२
रसेल ११०, ५५२ टि०
राक्षस ५६, ११०, १११, ६११, ६४४
राघवगीतम २५०
राघवन वी० १७४, १७६ टि०, १७८, २३० टि०, २३६
राघव नैषधीय २४५
राघवपाण्डवयादवीय २४५
राघवपाण्डवीय २१२, २४५
राघवपाण्डवीय (तेलगु) २६१
राघवप्रसाद पाण्डेय २२३ टि०, ४०३ टि०
राघवयादवीय २४७
राघवविलास २५१
राघवानन्द (आचार्य) १४९
राघवानन्द (नाटक) २३८
राघवाभ्युदय (रामचंद्र) २३६
राघवाभ्युदय २३६ ५९७
राघवीय २२०
राघवीय संहिता १४८
राघवोल्लास २२३; ३४६, ३४८, ३५१, ३७५, ४०३
राजशेखर ११३, २३३; दे० बाल-रामायण
राजशेखर बसु २९०, ६९३ टि०
राजेन्द्रलाल मिश्र ५९, १४८, १७९, १९०, १९१
राजेन्द्र हाजरा १५२, १५७, १६९, १७२; टि० में—१४४, १५१, १५८-१६७, १७०, १७१, १७३
राधा १४७, १५०, ७८७
राफल्स ३१९, ३२० टि०, ३४२, ५२६ टि०, ५२७, ६४६ टि०, ६४८ टि०, ६७३ टि०
राम (दाशरथि)
(१) अन्य पात्र से अभिन्नता ? इन्द्र ९४, ९६, ९७, ९९; सोम १०; पृथु ९८, बलदेव ५५, १४५, बलराम १०६, १०७; बुद्ध ५१-५२, १४५, ३२८, ३६०, रैमसेस १०९; शिव १८६, ३६२, ७८४
(२) अवतारण ४३, ११५, ११७-१२८, १३९, १४३, १४४, १४७, १४८, १७८, ३२२, ३३३, ३५४-३७६, ७८९। मुक्तिदाता ७७७, ३८३। दिव्यरूप-प्रदर्शन कौशल्या ३७५, ३७६; परशुराम ३५१; भुशुण्डी ३८१; हनुमान् ५१२; सुग्रीव ५१७; बालि ५१९; रावण ५९८, अतिथि ६१०। रामभक्ति

रामचरित (अभिनन्द) २१७; ११५, २१४, ३५९ टि०, ५२५, ५२६, ५४०, ५४८, ५६८, टि०, ५९३ टि०, ६११
—(पद्ममदेवविजयगणि) ५६, ६१, ७२२ टि०
—(मोहनस्वामी) २२४
—(सन्ध्याकरनंदि) २४५, ४३६, ७३८
—(सदलमिश्र) ३००
—(सोमसेन) ५६, ४१२ टि०
—(मलयालम) २६४, ७६२
रामचरित उपाध्याय ३०१
रामचरितचिन्तामणि ३०१
रामचरितमानस २९५; ६, ३१, ३५, १४९, १७५, २५०, २९४, २९६, ३०६, ३०७, ३३७, ३४१, ३४६, ३४८, ३५०, ३५१, ३५५, ३५६, ३६१, ३६७, ३७४-३७६, ३८२, ३८९, ३९७, ३९८, ४००-४३२, ४३४, ४३९, ४४१, ४५२-४५४, ४७३, ४७५, ४७८, ४८८, ४९८, ५२०, ५२६, ५३१, ५३३, ५३८, ५४३, ५४४, ५४७, ५४८, ५७०, ५७२, ५७५, ५७८, ५८०, ५८२, ५८४-५८९, ५९७, ५९८, ६२५, ६४८, ७२०, ७६२, ७८१; टि० में—१९४, ३५९, ३७७, ४६२, ५१९, ५६८, ६४५, ७९१; फारसी अनुवाद ३०८ टि०
रामचरित्र ५९
रामजन्म २९८
रामजातक ३२७; ५४, ३२८, ३३६, ३४२, ३४३, ३६५, ३९७, ४०४, ४०६, ४१७, ४७०, ५१४, ५३१, ५३९, ५७१, ५७२, ५७८, ५७९-६०१, ६१४, ६४३, ६४७, ६४८-६७५, ७१४, ७२४, ७४४, ७५६-टि० में—३६२, ५२१, ७५०
रामजातकम् १७९
रामतापनीय उप० १४८, ३६२, ३६· ४८८, ५५५
रामदास (उड़िया) २९१
रामदास (मराठी) ३०५
रामदास गौड़ १८४, ७२३ टि०
रामदास सी० ११० टि०
रामदेव पुराण ५६
रामनरेश त्रिपाठी ३५४; टि० में—३९२, ४४७, ७२३, ७५३
रामनाथ ज्योतिषी ३०१
रामनारायण २८९
रामपाणिवाड २२०
रामपाल (राजा) २४५
रामपूजापद्धति १४८
रामपूर्वतापनीय उप० १४८
रामप्रसाद निरंजनी ३००
रामबालचरित ३०६
रामब्रह्मानन्द १७८, दे० तत्वसंग्रह रा०
रामभक्ति, दे० भक्ति
रामभक्तिरसामृत २८७
रामभद्र दीक्षित २४४
रामभद्र (तेलुगु) २६१
राममड़ैया ३०१
रामभावना (असमिया) २८४
राममोहन वन्द्योपाध्याय ६४०, ६७०
रामयागन ३२६
रामरसामृत २९१

(८) वक्ता ७८१
(९) विविध प्रभाव - जैन ७८२; शैव ७८३-७८४, ५९४, ५९७, ५९९, ६६८; शाक्त ७८५, ५९७, ६१४; बौद्ध ३१२, ९०; कृष्णकथा ७८६-७८७ ४०४, ५९१ टि०; रामभक्ति ७९०, १५०, २६९, २८५ (३), ५२७, ५३५, ५३८, ५४१, ५४७ (५), ५७०, ५७६, ५७८, ५८७ (३), ५८८, ६२५, ६२६, ७६८, ७०१-७०७
(१०) वेदमूलत्व १८२
रामकथा (वासुदेव) २५६, ४५४, ४६४
रामकथावतार ५९
रामकल्पद्रुम २५६
रामकियेन ३१५-३२६; ३२४, ३२७-३२९, ३३० (२०), ३४६, ३५१, ३५६ ३५७, ३६१, ३६४, ३८८, ३९२, ४००, ४०३, ४०६, ४१६, ४१९, ४३९, ४४७, ४४८, ४५४, ४६०, ४६४, ४७०, ४८१, ४८४, ५१२, ५१४, ५१५ ५१७, ५१९, ५२०, ५२४-५२६, ५३१, ५३३, ५३९, ५४४, ५४७ (१), ५४८, ५७०, ५७२, ५७३, ५७६, ५७८, ५७९, ५८२, ५८४-५८७, ५८९, ५९१, ५९६-५९८, ६०५, ६०६, ६०९,-६१५, ६३२, ६४३, ६४६, ६४८-६५०, ६५३, ६५५, ६७२, ६९८, ७१४, ७२४, ७४४, ७५०, ७५७, ७६२; टि० मे—३४४, ३९४, ५१६, ६३५, ६५७, ६६६
रामकीर्ति; दे० रामकेर्ति, रामकियेन
रामकुमार वर्मा २९७ टि०
रामकृष्ण केलिकल्लोल २९१, ४०३
रामकृष्ण विलोम काव्य २४७
रामकेर्ति ३२४; ३२६, ३३० (२०), ३५०, ३५१, ३६२ टि०, ३८८, ३८९, ३९२ ३९५, ३९८, ४००, ४०६, ४१६, ४३९, ४४४, ४६१, ४७०, ५१२, ५१५, ५१९, ५२०, ५२४, ५३९, ५५२ (५), ५७८, ५८५, ५८९, ५९१, ५९७, ७१४, ७२४, ७४४, ७५०, ७५७, ७६३
रामकेलिग ३१९, ४०६, ४२८
रामगिरि ६०, १४७, ७८०
रामगीतगोविंद २५०, ३५०, ३९८, ४३९, ४७६
रामगीतम् २५०
रामगीता १४८, ६९१
रामगीतावली ४७८
रामगोपाल भडारकर ५९, १४७
रामगोविंद द्विवेदी १२ टि०
रामचद्र (कवि) २३६
रामचद्र (बगाली) २८९
रामचन्द्रचरितपुराण ५९
रामचंद्र मुमुक्षु ५९
रामचद्रविहार २९१
रामचंद्र शुक्ल २५९
रामचद्रिका ३०२; २९९, ३५१, ३५२, ३८६, ३९७, ४३४, ४६१, ४७३, ४७८, ४९८, ५०५, ५२१, ५३५, ५७२, ५८५, ५९३, ५९६, ५९७, ६१०, ६३४, ६३८, ७५६

१३७-१३६, ३३३, ४३१, ४५७, ५११, ५३०, ५६१-५६६, ६१८, ७७३, ७७५, ७७६

(८) अवतारवाद ११७-१२८, १३६, ३३३, ३५४, ३५५, ३५६, ३६६, ७८६

(६) अनुक्रमणिकाएँ २३, ११५, ११६, ३३२

(१०) पौराणिक कथाएँ २६, ११५, ११६, १३६, ३३२-३३३, ३८६, ६१८, ६१६, ७६६, ७८६

(११) निर्वहण ६१०, ७५२-७५७

(१२) फलश्रुति ११५, १२३;(७), १३७

(१३) भाषा १३५

(१४) प्रभाव . ब्राह्मण १३४, १३६, बौद्ध ६०

(१५) प्रतीकात्मकता ६०, १०६. १०८, वेदमूलत्व १८२; गायत्रीस्वरूप १७८, १८२, काव्यत्रोत २११, आदर्शवाद · दे० रामकथा

रा० अमर प्रकाश ३०८

रा० इकबिन ३१४, ११५, २१४, २२७, २३३, ३१६-३२०, ३५६, ३५८, ४००, ४३०, ४६६, ४७०, ४७३ टि०, ४८१, ४८६, ५१८, ५२३, ५४५, ५५०, ५७०, ५८१, ५७४, ५८३, ५८६ टि०, ५६४, ६०६, ६११, ६२७, ७६३

रामायणकथानकम् ५६

रा० गुह्यतर ३०७

रा० गाथा २८६, ३४३, ७२३

रा० चम्पू (संस्कृत) २१०

—(मलयालम) २६६

रा० तत्त्वदर्पण १७८

रा० तात्पर्यदीपिका १७६

रामायणदर्शनम् ७४०

रा० नाटक २३८

रा० नौ सार ३०६, १७६, ५२६, ५३२, ५३७, ५३८, ५६७, ५६८, ७१४, ७२०, ७२३, ७४६

रा० पुराण ५६

रा० फैजी ३०८

रा० बहार ३०७

रा० मजरी २१८, ३५६ टि०, ३४१, ४०६, ४३३, ४३६, ४५४, ५८६(३), ७२६

रा० मजूम ३०७

रा० मणिरत्न २००

रा० मसीही ३०६, ३०८, ४१२, ५४४, ७१४

रा० महामाला १६८

रा० मेह्ल ३०७

रा० रहस्य (अग्निवेश) १७६

—(विद्यारण्य) १८२

रा० संग्रह १७६

रा० सार १७६

रा० सुन्दरकाण्ड २७६

रामार्चनपद्धति १४८

रामार्चनसोपान १४८

रामार्याशतक २५१

रामावत सम्प्रदाय १४६, १७५, ७६०

रामावतारकालनिर्णयसूचिका १७६

रामावतारचरित २८१

रामरसामृतसिन्धु (उड़िया) २६१
रामरसामृतसिन्धु (हिन्दी) ३०० टि०
रामरसायन (रघुनन्द) २६०
रामरसायन (रसिक विहारी) ३०१, ५६४
रामरसिकावली ३६, ४७६, ४८१, ७०६
रामरहस्य २२४, ३५८, ३६१, ३६८, ३७५, ३७६, ३६६, ४३२, ४४३, ५८३
रामरहस्योपनिषद् १४८, ६६१
रामराज्य ६१०
रामलक्खणचरियम् ५६ (१)
रामलिंगामृत २२२, २२३, ३४८, ३६२, ३७५, ३७६, ३८७, ३६७, ३६८, ४००, ४३२, ४५२, ४५३, ४८६, ५२५, ५७०, ५६४, ६११, ६१४, ६३८, ६४१, ६४८ (३) ७४६, ७५६, ७८० टि०, ७८४
रामलीला (उड़िया) २६१, ६१६
रामलीला (बंगाली) २८७
रामलीला नो पद्दो ३०६
रामलीलामृत (कृष्णमोहन) २४८
रामलीलामृत (उपेंद्र भज) २६१
रामलीलामृत (ब्रजवन्ध) २६१
रामवल्लभाशरण १६१
रामविक्रम २३६
रामविजय (असमिया) २८४, ३५१, ३६२ टि०
रामविजय (मराठी) ३०५, ५३१, ५५४, ५७८
रामविजयचरित ५६
रामविजयमहाकाव्य २२०
रामविभा २६१, ५१४, ६७४, ६६७
रामविलास २५०
रामविवाह ३०६
रामविहारकाव्यम् २१२
रामशतक २५१, ३४३
रामशेखर वसु ६६३ टि०
रामसिन्ता ५७३ टि०
रामसिंह तोमर ५६
रामस्वयंवर ३०१
रामस्वामी शास्त्री १८२ टि०
रामहृदय १७६
रामाज्ञाप्रश्न २६४
रामानन्द (आचार्य) १४६, १७५, २६८, ७६०
रामानन्द (घोष, यति) २८७
रामानन्द (नाटक) २२५, २३६
रामानुज १४६, १४८, १६६, १७५, ७६०
रामाभ्युदय (यशोवर्मा) २३६, २२५ टि०
रामाभ्युदय (व्यास मिश्र) २४३
रामाभ्युदयम् २६१
रामायण (वाल्मीकि)
(१) रचनाकाल २७
(२) उत्पत्ति ३०, १३२-१३६, १७०, १७७, २११
(३) विकास १३७-१३६, ३३३, ६१८
(४) विस्तार ७६, ११५ टि०, १३३
(५) कथावस्तु ३३१, ४२६, ४५५, ५०६, ५२८, ५५६, ६१६
(६) तीन पाठ २२-२६, ३८२, ४३०, ४५६, ५१०, ५२६, ५५७-५६०, ६१७, ७७३
(७) प्रक्षेप ११४-१२८, १३३, १३४,

रुद्र वाचस्पति २४९
रुमा ५१५
रूबेन डब्लू ११० टि०, १३४, २७४
रैमसेस १०९
रैस ई० पी० २६६ टि०
रोजेरियुस ३३०; दे० पा० वृ० नं० २
रोमपाद ३४३
रोरडा वान ऐसिंगा ३१९
रोस एच० ए० ६७३ टि०
लंका ११३, ६४४, ६४६, परलंका ५३१, ६५५ (५); पलंका ६३९ टि०; पाताललंका ६१४; विलंका ६३९, हनुमल्लंका ५७१
लंकादहन १३८, ५३०, ५५१-५५२
लंकादहन १३८, ५३०, ५५१-५५२
लंकादेवी ५३५-५३७, ५२९
लंकानोय ३२८
लंकावतारसूत्र ५४, १०१, १०२, १०४, ६२२
लक्ष्मण
(१) अवतारत्व ३५९-३६२; अन्य पात्रों से अभिन्नता,. मित्र ९५, अर्जुन २९२, शिव २९२; बलभद्र २९३, वासुदेव ५५; आनन्द ३२७, ३२८; पूर्वजन्म ३६३; नाम ३७७
(२) चरित : जन्म ३७५, ३४१ ३४२, बाललीला ३८३, ३७८; विवाह ११६, ३९०, ३९१, ४००, ४०३, ४३१; शम्बूक-वध ६३१, शूर्पणखा-विरूपण ४६४, युद्ध ५९३, ५९६, ५८६, ५८९ (७), ५९१, ५९२, ५९५; अभिषेक ६१०; विजययात्रा ६०६, ६३६; मृत्यु ७७३, नरकवास, आगामी जन्म, निर्वाण ६०, ६४, अन्य उल्लेख ४३२, ४३४, ४६६, ४८९, ४९३, ४९८, ५१२, ५७४ (४ और ६), ७०६, ७१७-७१८, ७२२-७२४,७४६,७४७,७४९,७५१
(३) चरित्र-चित्रण : संयम ४६१-४६२, ४०३, बहुपत्नीक ६०, ६४; आशंका ४९२ टि०, काव्यनायक ३०१, आत्महत्या विचार ४६२, ७२३, तपस्या ४३८, ४४६, ४६१
लक्ष्मणभट्ट २५५
लक्ष्मणाध्वरि २१२
लक्ष्मणायण २९९
लक्ष्मी १२३, १२४, १४९, १९१, ३२२, ३६४, ३६५, ३७२, ६४८, ६५५ (४), ७२९
लक्ष्मीवरदास २९१
लक्ष्मीश २६९
लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ३००
लघु रामायण ३०५
लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित ५९
लव ७३५-७५१, ७७२
लवकुशर युद्ध २८४, ७१७
लवकुशाख्यान ३०६
लवण ६२०
लांगूलोप० ६९७, ७०८
लाओ रामकथा ३२७, ३२८
लाफो पी० बी० ३२७ टि० ,३२८ टि०
लालदास २९९
लाला अमरसिंह ३०८
लाला अमानत राय ३०८

रामाश्वमेध ३००
रामेश्वर दत्त २८६
रामोत्तरतापनीय उप० १४८
रामोपाख्यान ४७-४६; ४१-४३, ४६, ११५, २५६, ३४६, ३५४, ३६०, ४०७, ४३२, ४४१, ४४३, ४४८, ४५४, ४६२, ४७०-४७३, ४७७, ४६१, ५११, ५१५, ५१७-५१६, ५२५, ५२६, ५३०, ५४८ टि०, ५४७, ५५०, ५६४, ५६५, ५६६ (२), ५७४ (६), ५८३, ५८६, ५८६, ५६१, ५६३ टि०, ५६८, ६०१, ६४३, ६४५, ६४६, ६५४, ६५६, ६६३, ७१५, ७३५, ७१६, ७६६, ७८१; दे० महाभारत।
रायकृष्णदास ११३ टि०, १३३, १३६ ३३६, ३५४
रायमुंशी परमेश्वरी सहाय ३०८ टि०
रावण
(१) कौन ? आदिवासी ११०, क्षत्रिय ६४४, ब्राह्मण ६४४, प्रतिवासुदेव ५५, ब्रह्मावतार ६४७; प्रतापभानु ६२५; जलंधर ३७२; शिवगण ३७३, हिरण्यकशिपु, जय, मधु, नदक, नरदेव, श्रीकांत, वानुगुनुग ६४८; वृत्र ६४, ६६; देवदत्त ३२७
(२) चरित; वंश और जन्म ६४४-६४७, तपस्या ६४६, अत्याचार ३३७, ४२०, ६५१, शाप ६५४; विवाह और संतति ६५०; विजय-यात्राएँ ६५१, ६५२, पराजय ६५५, ६६८, सीतास्वयंवर २३६ (५), ३६७, ३६६, सीताहरण ४६०-५००; जटायु ४७०; सीता-रावण-संवाद ५४०-५४३; सभा ५५८, ५६८ (१, ३); युद्ध ५८४, ५६५-५६६; होम, सन्धिप्रस्ताव ५६७; वध ५६८, मुक्ति ५६६
(३) चरित्रचित्रण : दोषनिवारण ४८८, ५४१, ६२६, विद्वान् ६४२; शिव-भक्त ६४६, ६५०, ६५३, ७८३; उदारता, पश्चात्ताप ५६७, विलाप ५६३; व्रत ५००, धर्मभीरु जैन ६०
(४) गौण सामग्री : नाम ६०, ११०, ११२ ६५३, आख्यान-काव्य १०१, १०२, १०४, १३३; रावण-चरित ६४२, ६४३, ६१६; मर्मस्थान ४७०, ५६८; दाढी ५५२ (८); छद्मवेश ४६२, ४६४, ५८२, ५८३, ५६७; हनुमान-रावण द्वन्द्व ६६८; सहस्र-स्कंध ६३६, ६४०, ६४५, ६४६, २६२; पूर्व जन्म ६४८ (५), आगामी जन्म ६०, ६४८, ७४१; शापभाजन ६५५, ५६७
रावणभेंट ६४२
रावणमंदोदरी संवाद ३०६
रावणवध दे० भट्टिकाव्य
रावणवह (सेतुबंध) २१४; ११५, २१२, २१६, २५७, ३१७, ५४७, ५७८, ५८३, ५८६, ६११, ७६१
राहु ६६६, ६६८
रिसडेविज ६६ टि०
रुक्मिणी ६८६
रुद्र—दे० शिव

वायुपुत्र १०३, ६५९-६६२
वायुपुराण ११४; ६, १४३, १५२, ३४३, ३५४, ३५६, ३६४, ३७०, ४०७, ६०१, ६२३ टि० ७१४, ७१५, ७६०
वारानिधिदास २६१
वाराहगृह्यसूत्र १६ टि०
वाराह पुराण १५७, ४०, १३६, ३५४, ७८०
वाराहावतार १४०, १४४, ६४८ (१), ६८५
वार्ड डब्लू ३६२ टि०
वालि ५१३-५२२, ६५५ (२); २६२, ३२१, ३२७, ५५५, ५६७, ६५० (२), ६५३, ६५५ (२), ७७६
वाल्मीकि २८-४०; १३२, ३२३, ४३२, ४३४, ६०१, ६३६, ६६०, ७२६, ७३७, ७३६, ७४३-७४५, ७४७, ७५३, ७५४, ७६४
वासवदत्ता २५२
वासिष्ठोत्तर रा० १८७
वासुकि ३२२, ६५२, ७५७
वासुदेव २५६
वासुदेवशरण अग्रवाल ११२ टि०, ७१०
विजेनजो मरिया ३३०; दे० पा० वृ० न० १६
विंटरनित्स, एम० २७, ५६, ७०, १७४; टि० में—४१, ४८, ५५, ६५, ६६, ७८, ७६, ८४, ८५, ८६, ६०, ६४, ६८, १०२, १२६, १८५, २६१
विंस्टेड ३१६ टि०
विक्रमनरेंद्र २६१, ६१४
विक्रमोर्वशीय २४१, ४७३ टि०
विगुरु एफ० १०० टि०
विचित्र रा० (माधवदास) २६१, ३५७, ३५८
—(खुँटिआ) २६१, ५६७
विजय (विष्णु के द्वारपाल) ३६६ टि०, ३७२, ६४८
—(राजा) २८०, ३२०
—(गुप्तचर) ७१७, ७३३
विट्ठल ३०५
विट्ठलराजू २५६
विठा रेणुकानन्दन ३०५
विद्याधर ५६, ६६२
विद्यारण्य १८२
विद्युज्जिह्व ५८३, ६३२, ६४५, ६५२, ४६२ टि०
विनयपत्रिका ३६, ५५२(६), ६६२ टि०, ६७०, ६८६, ६६१, ६६२, ६६७, ७०८
विनयपिटक ६६
विप्रनारायण ५७७
विभीषण ५६८-५७२; ४८३, ४८७, ६००, ६०५, ६३५, ७५५, ७५७
विभीषणेर रायबार २८६
विमलसूरि ५७, ५८, ६०, ६२, २३६; दे० पउमचरियं
विराध ४५७, ४५८, ४६६
विरूपाक्ष ५६८ (५), ५६५, ५८४ टि०
विरूपाक्षदेव २४२
विलंका खण्ड २६१, ६३६
विलंका रा० २६१, ६३६, ७२६
विलसन, एच० एच० १२ टि०
विशल्या ५६६
विश्रवा ६४४-६४६, ६४६, ६६८

लालाचंदा मलचंद ३०८ टि०
लालू एम० ३११ टि०
लिंग पुराण १५७, ३३६, ३४६, ३६१, ३७०, ३७३ टि०, ६२३ टि०
लियेङ तू-त्सो किंग ५२
लुडर्स रा०; टि० में—५६, ६७, ७०, ७१
लुड्विग, ए० ४ टि०, १२ टि०, ४८
लेवि, एस० २३, टि० में—५३, ७६, २२५
लेस्ली, वी० ११६ टि०
लैस्मन सी० ८५ टि०, ११३ टि०
लोकगीत ३५४, ६०३, टि० में—२७१, २६२, ४४७, ७२३, ७२४
लोमश १७६, १६४, ३८१, ७२८
लोमश रा० १६४, ३७२
लोमश संहिता १६४
वंशीधर शुक्ल ३०१
वनमालीदास २६१
वरप्राप्ति : राम ५२३, ५६६, ६०१, ६२८, ७८४; रावण-कुंभकर्ण-विभीषण ६४६, ६४७; रावण ५६६, ६५०-६५३; अंजना ६६८, ६७२, ६७८, इंद्रजित ५६०, ६५२; कश्यप-अदिति ३६७; केसरी ६६७; कैकेयी ५१, ५३, ४४७-४४६; कौशल्या-कैकेयी ३३८, दशरथ ३५४, ५७४ (३); नल ५७४ (७), ५७५; परशुराम ३४६; मनु-शतरूपा ३६८; वालि ५१५; वाल्मीकि ३४, ७२६; वैश्रवण ६४६; शम्बूक ६३०-६३२; शूर्पणखा ४६६; सुलोचना ५६४, हनुमान ५१२, ६६६, ६६३-६६५, ७०४, हिरण्यकशिपु ६४८; अन्य—७३, ७४, ३६७, ३६६, ४७२, ६३०, ६३३, ६४१, ६४४, ६६८, ६७६
वराहमिहिर ११३, १४७
वरुण ३६२, ४१०, ६५२, ६८७, ६६४
वल्लभाचार्य १४६
वसिष्ठ १ टि०, ३६, १७४, २००, २०६, ३८४, ६१०, ६२१, ६२३, ६२४, ६३४, ७२० टि०
वसुदेव २२४, ३६८, ३७५
वसुदेवहिण्डि २५३, ५८, ६२, २५२, ३४१, ४०६, ४४३, ४५२, ५४७, ६४६, ७८२
वसुबंधु ७६
वह्निपुराण १६६, ३४६, ३७०-४००, ४८६, ५३३, ८४८
वांडिये जे० १०६ टि०
वाजसनेयि संहिता १४
वातदूत २४६
वातानवे के० ७६ टि०
वातापि ६८७
वातुगुनुग ६४८
वान ग्लासनैप ५५ टि०
वान नेगेलैन ६६ टि०, ६८
वान फूरर हाइमेनडार्फ ११० टि०
वानर ५६, ११०, ६८०, ७८७
वानर-सेना का अभियान ५६७
वामदेव ३८४
वामन (कवि) ३०५
वामन पुराण १५७, ३६७
वामन भट्ट बाण २२०
वामनावतार १४१, १४४, ३६७,
वायु ६४४ टि०, ६६४, ६६६, ६६८, ६७१, ६७२, ६७४, ६७५, ६७८, ६७६

वैष्णव धर्म० १४८ टि०
वैष्णवमताब्जभास्कर १४६
व्यास ४९, १९९
व्यास, एच० एन० १११ टि०
व्यास मिश्रदेव २४३
शंकर (आचार्य) १०८
शंकर चक्रवर्ती ७८८
शंकरदयाल फरहत ३०७
शंकरदास २११
शंकरदेव २८३, २८४, ३०१, ३६२ टि०
शंबूक ३१८, ७२८-७३२
शंभुप्रसाद बहुगुना ४३७ टि०
शचीन्द्र ७१५
शतश्लोकी १४७ टि०
शतकोटिश्लोक रा० ७३३, ७३७
शतपथ ब्राह्मण ४, ५, ६, १४, १४०, १४१, ३४८, ३६८ टि० में—७, १५, ३२, १२६
शत्रुघ्नरावणचरित १८७ ६२०
शत्रुघ्नरावणवध ३०५, ६१०
शत्रुघ्ना ३६८
शतानन्द ३४४, ३८६
शत्रुञ्जयमाहात्म्य ४६
शत्रुघ्न ६२०; २६२, ३४२, ३५१, ३५६-३६१, ३७७, ३८१, ४००, ४३४, ४४३, ६०४, ६०६, ७४३
शबरी ४७७-४८१
शबरी (गोविन्ददास) ४३७ टि०
शबरीमंगल ४३७ टि०
शब्दार्थचिंतामणि ४७८
शरच्चंद्र राय ११० टि०, ७३२
शरभंग १२८, १९६, ४३३ ४५७, ४८६
शशांक चट्टोपाध्याय ३४३ टि०
शांखायन आरण्यक ६
—गृह्यसूत्र टि० में—१७, २१, १२६
शांडिल्य भक्तिसूत्र १४६
शान्तिविहारी द्विवेदी ३८२ टि०
शांता २५३; ३१७, ३१८, ३८३, ५७२, ६०५, ७२३; दे० कौकवी
शांति ओंकाड़ियाकर ३०६ टि०
शांतिसूरि ३६
शांवन्द १७ टि०
शापमोचन ७७८, राम ५४६, ४६६, ५१०, ७२६; सीता २६४, ४८६, ५५४, ६०२, ७२६-७२८; रावण ६५४, ६६७; विष्णु ३७० ३७३, ७२५; लक्ष्मी ३७३, ४८२, ३४८ (३); अंजना ३४७, ३७२, ६७४, ६७५; इन्द्र, ऍ४८७ (३), ६१३ ६६४, ६६८, ६७६, ६७७; अहल्या-इंद्र ३४६-३४७; कबंध ४७३; कुंभकर्ण ६४६; कैकेयी ५१४; चक्रांक ४७४; जय-विजय ३७२, ६४८; दशरथ ३४३, ३५४, ४३३; नल ५०५; नारद ३७३; वामदेव (गुह) ४३२; वालि-सुग्रीव ५१३; बालि ५१६, ५१७, ५२० टि०; शंबूक ६३२; शांता २०६, ७२३ टि०; शिवगण ३७३; शुक ६२५; शबरी ४८१; स्वयंप्रभा ५०६ टि०; हनुमान् ६६६, ६६७, अन्य ३७३, ३८१, ३८३, ४३४, ४५८, ४७२, ५१३ टि०, ५१७, ५३७, ६१४, ६२१, ६२३-६२४, ६४१, ६४८ (४)
शामराव हिवाले २७५ टि०
शारदातनय २३६

विश्रामसागर ३०१, ३४५ टि०, ३८२, ५९४
विश्वकर्मा १९१, २२२ ५२६, ५५२ (१२), ५७४, ५७५, ६४४ ६९४, ७१३, ७२३, ७९४
विश्वनाथ (साहित्यदर्पण) २५१
विश्वनाथ खुँटिया २९१, ५९७
विश्वनाथ सिंह (संगीत रघुनन्दन) २५०
विश्वनाथ सिंह (हिन्दी) ३००
विश्वामित्र १ टि०, ३४६ टि०, ३५८, ३८८, ३८९, ३९१, ४०३, ६१८, ६२१, ६२३, ६३६, ६३९, ६६४ टि०
विष्णु १२६, १४०-१४४, १४६, ३२२, ३५०, ३५५, ३५८, ३७०-३७३, ६४४, ६४८, ६५०, ६५५, ६५८, ६७३, ६७६
विष्णुदास ३०६
विष्णुदास (हिन्दी) २९८
विष्णुधर्मोत्तर पुराण १६४, ३९, १४७, ३६०, ७०८ टि०
विष्णुपुराण १५३; ६, ३२ १४०, १४१, १४३, १४४, १५२, १५३, ३३३, ३४१, ३४३, ३४४, ३५२, ३५४, ३५८ टि०, ३५९, ३६४, ३६८, ४०७, ४०८, ६०१, ६१३, ६२४, ६४८, ७१४, ७१५, ७६७ टि०, ७९०
विष्णुपुरी रा० २८८
वीरकेरल वर्मा २६८
वीरलाग २३१
वीरबाहु २८५, ६५० (४)
वूलनर ए० सी० ५८ टि०
वृन्दा ३७२, ४८९, ६४८
वृषाकपि १०२
वृहत् दे० वृहत्
वृहस्पति ३६, ५९७
वेंकटदेशिक (वेंकटनाथ, वेंकटाचार्य) २४९
वेंकटाध्वारिन् २४७, २५५
वेंकटरत्नम्, एम० १०९
वेंकटेश २४८
वेणाबाई ३०५
वेदवती ४१०, ११५, १५७, ७६९, ७७९
वेदान्त रा० १८३, ३४९
वेदान्ताचार्य २४९
वेबर, ए० ४, १०, २७, २९, ४८ ६५, ७३, ७४, ७६, ९०, ९२, ९३, १०१, १०४, १०६, १०७, १४८, ४७७ ७६५; टि० में—१३, १८, १४८, ५६५, ७३६
वेस्सन्तर जातक ८३, ८५, ८९
वैखानस गृह्यसूत्र १६ टि०
वैताल सूत्र १४ टि०
वैदेही वनवास ३०१
वैदेहीशविलास २९१, ४०३, ५१७, ५२७
वैद्य; दे० चिंतामणि विनायक
वैपुरी पिल्लै २५७ टि०
वैराग्य . राम ३८६, ७५२, ७५३ (५); सीता ६०१, ७५२, ७५३ (५), भरत ६०, ४५२. ६१०, दशरथ ६०; वालि ६५५ (२); विभीषण ५७१; हनुमान् ६५७, वाल्मीकि ३४-३८; महलकिरण ६५५ (१); स्वायभू ३६८
वैश्य सदाशिव २९१
वैश्रवण ५६८ (६), ६४२, ६४४-६४७, ६४९, ६५१

श्रीहरिभक्तिरसामृतसिंधु ७८७
श्रीहर्य्याचार्य २५०
श्रुतकीर्ति ३९१, ४००
श्लेगेल ७७
श्वाइत्सगुट, पी० ३२५ टि०
श्वेत (राजा) ६२७
श्वेतद्वीप ६५५ (५)
षड्विंश ब्राह्मण ३४४
षोलपोइ ७९१
संकल्पसूर्योदय १०८
संकष्टनाशनस्तोत्र २४५
संकाजिया, एच० डी० २३१ टि०
संक्षेप रा० ३०५
संगीत रघुनन्दन १५०, २५०
संघदास ५८, ६२, २५३; दे० वसुदेवहिंडि
संताली रामकथा २७१, ३४१, ५८०, ६०६
संधिप्रस्ताव ५८५ ५९७
संध्यानरनंदि २४५, ४३९, ७३८
संपाति (वानर) ६५९
—(गीध) ४७०, ४९१, ५१०, ५११, ५२७
संबुला जातक ८६, ८९
सबूरान ५२४
संवृत रा० १९३, ३६६
सती; दे० पार्वती
सत्यक्रिया, सीता ६००, ६०१, ७१६, ७२३, ७४९, ७५३, ७५५, ७५६, मदोदरी ५४२, सुलोचना ५६४; हनुमान् ६९६; अन्य ८४, ८६
सत्यदेव चतुर्वेदी ३८२ टि०
सत्यभामा ६८६, ७८७
सत्येद्र ७२३ टि०, ७५३ टि०
सत्योपाख्यान १८८; १५०, १६४ टि०, ३३८, ३४६, ३५३, ३६१, ३७६, ३८१, ३८३-३८५, ३८८, ३९१, ३९२, ४५४, ७८१, ७८४, ७८७
सदल मिश्र ३००
सद्धर्मलंकावतारसूत्र १०२
सद्धर्मस्मृत्युपाख्यान ७९
सनकादि ६४८ (२)
सनत्कुमार १७४, ३७१
सन्नीति रा० २४६
समयनिरूपण रा० १७९
समयसुन्दर २९९
समयादर्श रा० १७९
समर्थ रामदास ३०५
समुद्रमंथन १४०, ३८९, ५१५, ५२२
सरमा ५४६, ५६९, ५८३, ५९७, ७७९
सरस्वती १९१, २११, २९५, ४५२, ४५४, ५६४ टि०, ६४९
सरस्वतीकंठाभरण ५७२
सर्वसिद्धान्त १४८
सहस्रगीति १४७ टि०
सहस्रमुखरावणचरित्रम् १८७, ६३९ टि०
साँची ८४
साकल्यमल्ल २१९
साकेत ३०१, ४०३ टि०, ५६७ टि०, ५८८,
साकेत सत ३०१
सागर ५७४, ५७८
सातवलेकर ३४६ टि०
सात्वत संहिता १०८
सादुल्लाह कैरानवी ३०९ टि०

शार्दूल ५८२, ५८३
शार्पेंटिये जे० ६६ टि०, ८४ टि०
शाल्व ५९१ टि०
शाहजहाँ ३०८
शिव ७८३-७८४, ६७०-६७४; १८६, ३५०, ३७५, ३८२, ३९२, ४२२ (५), ५६८ (६), ५९७, ६३५, ६५० (२), ६६८, ७०५; ३८, २९२, ३८१, ३८८, ३९८, ४००, ४८६ टि०, ५२६, ५९४, ५९९, ६२०, ६३३, ६३४, ६५४, ६५८, ६७८, ६९४, ७९४
शिवगण ६४८ (४), ३७३
शिवनन्दन सहाय ११० टि०, ३९२ टि०
शिवगीता ५२३
शिवपुराण १६७, ४८८, ५२३, ६७१
शिवप्रतिष्ठा ५८०
शिवप्रसाद भट्टाचार्य १७४ टि०
शिवमहापुराण १६७, ३१६, ३७२, ३७३, ४३५, ४७५, ५२३, ६४८ (४), ६७३, ७०१, ७८४
शिवरत्न शुक्ल ३०१
शिव संहिता ६९१
शिशु ईश्वरदास २९१
शिशुपाल ६४८ (२)
शीलाचार्य ५९
शुक (राक्षस) ३७५, ५८२, ६२५
शुक (पक्षी) ३०१, ७२७
शुक्राचार्य ५८२, ५९७, ५९८
शूद्रतपस्वी ६३०अ
शूर्पणखा ४६३-४६९, ४८३-४८६, ४८९; २७, ६०९, ६४४ ६४६
श्रृंगार प्रकाश २३१
शेलावेर ३१९
शेष ३६१, ५९४
शौनक १२
श्यामक जातक ८४
श्रवण ४३३, ३५६
श्रवणरा० २०८, ४३३, ४३४
श्राडर १४७, १४८ टि०
श्रीकृष्ण भट्ट २५०
श्रीचद्र ५९
श्रीचद्र भारती २८४
श्रीधर ३०५
श्रीनिवास राघव १७९
श्रीभाष्य १४८
श्रीमती (अंबरीष-पुत्री) २८७, ३७३
श्रीमद्देवीभागवत; दे० देवीभागवत
श्रीमारुतिस्तवराज ६९७,७०६
श्रीरंगम् १७८, ६३५; ७८०
श्रीराम ३१९
श्रीरामकीर्तन २८४
श्रीरामगीता १४८
श्रीरामचद्र अश्वमेध २८४
श्रीरामचंद्रोदय ३०१
श्रीरामपांचाली २८५, दे० कृत्तिवास
—(द्विज भवानीदास) २८६
—(रामानन्द) २८७
श्रीरामविलास २९१
श्रीरामार्चनपद्धति १४९
श्रीरामवतार ३०१
श्रीवेदांतदेशिक २४९
श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्र ६९७, ७०८, ७०९
श्रीहनुमान् चरित ३८२ टि०

सीताविरह ३०६
सीतास्वयवर ३०५
सीता-हनुमान-सवाद ३०६
सीताहरण ३०६
सीतेशविलास २६१
सीतोपनिषद् १४८
सीयाचरियं ५६
सीरध्वज ६
सुन्दर काण्ड (मराठी) ३०५
सुकठणकर, वी० एस० ४१ टि०
सुकुमार सेन २८५ टि०
सुकेश ६४४, ६४६
सुग्रीव ५१२-५१६, ५८४; २०६, २६२, ३२१, ५२४, ५५४, ५८५ टि०, ७७६
सुग्रीव विजयक २६१
सुचित्र रा० २६१
सुजुकि डी० टी० १०२
सुतसोम जातक ८७, ८६, ६२१-६२३, ६२६
सुतीक्ष्ण १७४, १६६, ४५७
सुत्तनिपात-टीका ७३, ७५
सुत्तपिटक ६६
सुदर्शन (चक्र) ६८६, ३६१; (मुनि) ७२८
सुदर्शन सिंह ३८७, टि०
सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या १०५
सुपार्श्व ४६१, ५०० टि०, ५१०, ५२७ ५६३
सुबाहु ३८८, ३८६
सुबोधचन्द्र मजूमदार ४०६ टि०
सुब्रह्मरामायण २०५
सुभट्ट २४०
सुभद्रा २६३, ३६२
सुमत्र ३३७, ३४३, ३५५, ४३२, ६३६, ७२५
सुमग्ग जातक १०३, ६६२
सुमनसातक ककविन ३१५
सुमाली ६४४, ६४५ टि०, ६४६, ६४६, ६५२
सुमित्रा ३३६, ३५६, ३७५, ३७८, ६०६ ७५३
सुलोचना ५६४; २०६, ३६७, ५६३
सुवण्णसामचरियम ८४
सुवर्चस रा० २०६, ३४३, ७२३ टि०
सुवेल पर्वत ५८४, ५६२
सुशील कुमार दे २१४; टि० में—२११, २२०, २३४, २३५
सुषेण ३१२, ५१५, ५८६, ५८७ (३), ५६३, ५६६, ५६७
सूरजनारायण ३०७
सूरदास २६८
सूरसागर २६८, ३४६, ३७६, ३६५; ४३२, ४७८, ४६८, ५८८, ६०१ टि०
सूर्य २०१, ३६२, ५१३, ५१४, ५२७ टि०, ५८३, ६६६, ६८६, ६६४
सूर्यदिव (कवि) २४७
सूर्यमणि च्याउ पट्टनायक २६१
सेतु-निर्माण ५७३-५८१
सेतुबंध दे० रावणवह
सेतुभग; ५८१, ६०७, ६३५
सेरत काण्ड ३२२, ३१६, ३४०-३४२, ३५४, ३६१, ३६४, ३६२, ३६७, ३६६, ४०६, ४१५, ४२८, ४३६, ५१२, ५१४, ५१७ टि०, ५४७, ५७०, ६३२,

साम जातक ८४, ८६, ४२३
सामवेद १६ टि०, १७ टि०
सायण ८, १२, ६४, ३४४ टि०
सारण ३७५, ५८२
सारलादास ३६, २६१, २६२, ३८० टि०; दे० महाभारत (उड़िया)
साहसगति ५१५, ५२२
सिंहनाद ५७६, ५६१
सिंहलद्वीप ६०, १०२, ११३, १३३
सिंहली रामकथा २८०; २७६, ४०६, ४२१, ४२६ टि०, ४४३, ४४६, ४६०, ५१५, ५३१, ५५५, ७१४, ७२४, ७५६,
सिंहसौदासमांसभक्षणनिवृत्ति ६२२
सिद्धान्त तत्वदीपिका ४०४ टि०
सिद्धेश्वर दास २६१
सिद्धेश्वर परिडा २६१
सीतांक बारमासी भावना २६१
सीता (कृषि की अधिष्ठात्री) ७, १०-२०, ६३, ६७, १०६, २७६, ४०८, ४२६
सीता सावित्री ७-११, ४०८
सीता (वैदेही)
(१) अन्य पात्रों से अभिन्नता ? अप्सरा ६८, द्रौपदी २६२; सुभद्रा २६३, ३६२; यशोधरा ५१; उप्पलवण्णा ३२७; कृषि की अधिष्ठात्री ६३, ६७; रुक्मिणी ७८७; वेदवती ४१०; श्रीमती ३७३
(२) अवतारत्व १४८, १५५, ३६२, ३६४, ३६५, ४१७
(३) चरित : जन्मकथा ४०५-४२८, ७६६; स्वयंवर २६३-५०२; अवस्था ४०१; वनवास ४४३, ४३०; पिण्डदान ४३५; हरण ४८८-५०८; रावण से संवाद ५४०-५४४; हनुमान् से संवाद ५४६-५५०; अग्निपरीक्षा ६००-६०३, ६६५, त्याग ७१४-७३४, ७७१; सन्तति ७३६-७४५; भूमिप्रवेश ७५३
(४) चरित्रचित्रण : पातिव्रत्य ४४३, ५००, ५४२, ५८३; पूर्वानुराग ४०३; आत्महत्याविचार ५८६ टि०, ५४८, ७४१, ४६०, ५७४, ४४३, ४६२, वैराग्य और तपस्या ४३८, ४४६, ६०१, ७५२, ७५३ ५), ७५६, शक्तिरूपा ६३६-६४१
(५) माया-सीता ५०१-५०८, ५७६, ५६१, ६०७, ७३३, ७३८, ४७५, २४४, ४६४, ४६६, २३६ (६), १५०, २४०; स्वर्णमयी ७३६ (३), ६३३
(६) गौण सामग्री : नाम ७७६, ३११, पूर्वजन्म ३७३, ४१०, ४१२, आगामी जन्म ७५३ टि०, ७८७, हनुमान् को माता ६७५; चापभाजन २४१, ४८६, ५४४, ६०२, ७२७, ७२८
सीताकथानकम् ५६
सीताचरित्र ५६
सीतार पतालप्रवेश नाटक २८४
सीताराम चतुर्वेदी ४७७ टि०
सीतारामचौपाई २६६
सीतारामविहार काव्य २१२
सीतारावणकथानकम् ५६, ६१
सीतावनवास २८४
सीताविजय १८७, ६४०

हनुमत्संहिता १५०, १६०, ३५३, ६६१
हनुमद्दूत २४६
हनुमद्विजय १८५
हनुमन्नाटक, दे० महानाटक
हनुमन्नाटक (हिन्दी) २६६
हनुमान्
(१) कौन ? आदिवासी ११०, ६८०, ७११, वैदिक देवता ६५, ६६, ७१२, वृषाकपि १०३; वायुपुत्र ६५६-६६२, रुद्रावतार ६७०-६७४, ६७६, रामपुत्र ६७५; विष्णु-अवतार ६७६-६७८; नारायण-पार्षद ६५८, त्रिमूर्ति के अवतार ६५८
(२) चरित : सिंहावलोकन ६५६-६५७, जन्मकथा और बालचरित ६५८-६७६; बालक राम से मैत्री ३८२, लक्ष्मण से युद्ध ५१२, सीता की खोज ५२४-५२७; समुद्रलंघन ५३१, ११२; लंका में ५३२-५३६, ५८६ (७), ५६६, सीता-रावण-संवाद में हस्तक्षेप ५४१-५४२; सीता से संवाद ५४६-५५०; लंकादहन ५३०, ५५१, ५५२; नल से संघर्ष ५७६, पर्वत-आनयन ५८७, ५८८, ६४१, ५८१, ६५५ (२), पाताल-प्रवेश ६१४, ७५७; राज्याभिषेक और निर्वाण ६५७; सायुज्य मुक्ति ७०३; गौण हस्तक्षेप ४६३ टि०, ५०३ टि०, ५७३, ५७४ (७), ५७८, ५८०, ५८५, ५६१, ५६२, ५६४ टि०, ५६६, ५६७, ६००, ६१२, ६१३, ६३५ टि०, ७४६, ७५०
(३) चरित्रचित्रण ६८०-७१३; वैराग्य और तपस्या ५१२, ६५५ (२), ६५७, ७०४, ७५३; गर्वनिवारण ४६१, ५३१, ५५४, ५८०, ६०८
(४) गौण सामग्री . नाम १०३, ६६०, ६६१, ६६४ ६६६, ६७८, ७११; पूर्वजन्म ६५८; आगामी जन्म ६५७ टि०, सतति ६१५, ६६६; ब्रह्म-हत्यादोष ६३४टि०; आभूषण ५१२, छद्मवेश ५१२, ५३६-५३४; शापभाजन ६६६, ६६७; रावण से सवध ६५७, ६६६; अर्जुन की ध्वजा पर ६८५, ७१३, आख्यान काव्य १०१, १०३, १०४, १३३, ७ २,
हनुमान बाहुक ५५२ (६), ६७०, ६८५, ७०८ टि०
हरदत्तसूरि २४५
हरदेव बाहरी ३६
हरप्रसाद शास्त्री २४८-२५०
हरिदत्त २३८
हरिदास ३०६
हरिनाथ २५०
हरिभद्र सूरि ५६, ६१, ३४२, ७२२
हरिमोहन गुप्त २८७
हरिवंश १५१; १६, ४१, ७१, १३०, १४०, १४१, १४३-१४५, १४७,

६४३, ६४६, ६५० (४), ६५१ टि०, ७१४, ७२३, ७४२ टि०, ७५१, ७५६
सेरत राम ३१६
सेरीराम ३२०; २२७, ३१७, ३१६, ३२१, ३२२, ३२४, ३२६, ३२७, ३३० (२०), ३३६, ३४०-३४३, ३५०, ३५१, ३५४, ३५६, ३५७, ३८५, ३८८, ३८६, ३६२, ३६७, ३६६, ४००, ४०२, ४०६, ४२८, ४३२-४३४, ४३८, ४३६, ४४६, ४४७, ४५४, ४५८, ४६१, ४६३, ४६४, ४६६, ४७०-४७४, ४६२, ४६८, ५००, ५१२, ५१४, ५१५, ५१७, ५१६, ५२०, ५२४, ५२७, ५३१, ५३३, ५४७, ५५०, ५५२, ५५४, ५५५, ५७०-५७२, ५७६, ५७८, ५८१, ५८३-५८७, ५८६, ५६१-५६३, ५६६-५६६, ६०२, ६०५, ६१३-६१५, ६३२, ६४३, ६४६, ६४६, ६५०, ६५४, ६५५, ६६८, ६७५, ६६८, ७०६, ७०७, ७१४, ७२३, ७३८, ७४५, ७५१, ७५६, ७६३, टि० में—३६१, ४६३, ५१६, ५२६, ५२७, ५७३, ६४८, ६५७, ६७३, ७१७
सोढ़ी मेहरबान २६६
सोनेरा ३३०, दे० पा० वृ० न० १२
सोमदेव २५४, दे० कथासरित्सागर
सोमप्रभ ५६
सोमसेन ५६, ४१२ टि०
सोमेश्वर २३८, २५१
सौंदरनन्द ७८
सौदास ६२१-६२६
सौपद्य रा० १६७, ४०३
सौर पुराण १७१, ३२५, ५८०, ६४५, ७८४
सौंदर्य रा० २०१, ७२७ टि०
सौहार्द रा० १६६
स्कंद पुराण १६१; ३२-३४, १४८, १६७, १७६, १८६, २८५ टि०, ३४३, ३४६, ३४८, ३५४, ३६२, ३६५, ३६६, ३७२, ४०१, ४३५, ४६२, ४७२ टि०, ५७४ (६), ५८०, ५८६ (७), ५६६, ६०७, ६२४, ६३४, ६३५, ६३७, ६४६, ६६८, ६७०, ६८७, ६६५, ६६६, ७०५, ७०८, ७१० टि०, ७६०
स्टुटरहाइम टि० में—६५, ३१६, ४२७
स्मिथ एच० ७३ टि०
स्याम ३२५-३२८, ४६८
स्वप्न : राम ३८६, ४३५, ५७४ (६), ७१७, ७४३; सीता ४०३; जनक ३६२; कौशल्यादि ३७५, त्रिजटा ५४५; रावण ५४१, भरत-सुमित्र ५८८; नन्द १७३; दशरथ ६४
स्वप्नदशानन २३६
स्वयंभूदेव ५६, ६६८
स्वयंप्रभा ५०६, २३६
स्वायम्भू मनु ३६८
स्वायम्भू रा० २०४, ३३७, ४१२
हंसदूत, हंससंदेश २४६
हजारीप्रसाद द्विवेदी ४४० टि०
हवीस-इ-राम-उ-सीता ३०६ टि०
हनुमतचउतीसा २६१

हिन्दी परिषद् प्रकाशन के कतिपय अन्य ग्रन्थ

१ तुलसीदास : डॉ० माताप्रसाद गुप्त, चतुर्थ सं०, मूल्य १६ रु० ।

२ कवित्त-रत्नाकर : सं० प० उमाशंकर शुक्ल, छठां सं०, मूल्य १० रु० ।

३. सूरदास : डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, तृतीय सं०, मूल्य १२ रु०, सूर से सम्बन्धित उपलब्ध सामग्रियों का वैज्ञानिक विश्लेषण ।

४ आधुनिक हिन्दी साहित्य (१८५०-१९००) : डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, चतुर्थ सं०, मूल्य १५ रु०; आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन ।

५. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास (१९००-१९२५ ई०) डॉ० श्रीकृष्ण लाल, तृतीय सं०, मूल्य १२ रु० ।

६. वीसलदेव रास : सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त व अगरचन्द नाहटा, मूल्य ७ ५० ।

७ हिन्दी साहित्य (१९२६-१९४७ ई०) : डॉ० भोलानाथ, तृ० सं०, मूल्य १८ रु० ।

८ गुजराती और ब्रजभाषा कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ० जगदीश गुप्त, प्रथम सं०, मूल्य १२ रु०, भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक ।

९ कबीर-ग्रन्थावली : सं० कम डॉ० पारसनाथ तिवारी, द्वितीय सं० (प्रेस में); कबीर की वाणी का भूमिका, टीका-टिप्पणी सहित प्रामाणिक सम्पादन ।

१०. रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव : डॉ० बदरी नारायण श्रीवास्तव, प्रथम सं०, मूल्य १२ रु० ।

११ आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प (१९००- ९५० ई०) ; डॉ० मोहन अवस्थी, मूल्य १२ रु०, आधुनिक हिन्दी कविता के शिल्प पक्ष का सर्वाङ्गीण विवेचन ।

१२ प्राकृत अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव : डॉ० रामसिंह तोमर, मूल्य १२ रु० ।

१३ हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद का विकास : डॉ० वीरेन्द्र सिंह, मूल्य १६ रु० ।

१४ हिन्दी कोश साहित्य : डॉ० अचलानन्द जखमोला, मूल्य १८ रु०, हिन्दी साहित्य में कोश रचना के उद्भव तथा विकास का तुलनात्मक अध्ययन ।

---

१ प्रयाग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, को, जो हिन्दी परिषद् के सदस्य हैं, सभी पुस्तकों पर २०% कमीशन मिलेगा ।

२. पुस्तक विक्रेताओं के लिए अतिरिक्त कमीशन की व्यवस्था है जिसकी जानकारी कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

पुस्तकें मिलने का पता | हिन्दी परिषद् प्रकाशन
हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

१५३, १६०, २२५, ३२३, ३३२, ३३६, ३४३, ३४४, ३५२, ३५४, ३५६, ३६४, ३६७, ४०६, ४०७, ६०१, ६१३, ६२३, ६४८ (१), ६५५ (१), ७१४, ७१५, ७३५, ७५६, ७६०, ७६०
हरिवंश (उड़िया) ३६७, ४२४, ६५७ टि०
हरिवंश कोन्छड ५६
हरिशंकर २५०
हरिश्चंद्र की कथा २८५ (२), ४७६
हरिश्चय कवचिन ३१५
हरिषेण ५६
हरिसत्य भट्टाचार्य ५५ टि०
हरिवर (हरिहर) विप्र २८४, २८२
हर्षचरित २५२
हलिश्रा रा० २६१
हस्तिमल्ल ५८, २३६
हाजरा दे० राजेंद्र
हाप्किंस ई० डब्लू० ४८, ६७, ७१३; टि० में—४१, ४२, १०७, ११७, ५११
हॉयकास ३१४ टि०
हारा धन दास २८६
हिंदचीन की रामकथा ३२३-३२४
हिन्दी रामकथा २६४-३०३
हिंदेशिया की रामकथा ३१३-३२२; ५४७ (७), ६७५
हिकायत सेरी राम; दे० सेरी राम
हिकायत महाराज रावण ३१६, ३४०, ३४१, ३६६, ४०६, ४२८, ४४८टि०, ४६८, ५१२, ५२१, ५३४, ५७८; ५६६, ६१५, ७१४, ७२३, ७४५
हिटेंट १०६
हिमांशुभूषण सरकार ३१५, ५१४ टि०
हिरण्यकशिपु ६४८
हिरण्यकेशिन् गृह्यसूत्र १६ टि०
हिरण्याक्ष ६४८
हीरालाल ११३ टि०
हीरालाल चोपड़ा ३०६ टि०
हृदयनारायण सिंह ११५ टि०
हृदयराम २६६
हेति ६४४
हेमचंद्र ५६, १०१, २३६, ३४०, ४५८, ५४७, ७१८; दे० जैन रामायण
हेमचंद्र राय चौधुरी १४० टि०, १४२,
हेमा ५२६
हेर्टल, जे० ६६ टि०
होमर ७५, ६२, ५०८, ७६५
ह्विटनी, डब्लू० १३ टि०
ह्वीलर, जे० टी० २७, ६०, १०८